



# NILES'

# Weekly register,

CONTAINING

POLITICAL, HISTORICAL, GEOGRAPHICAL, SCIENTIFICAL, STATISTICAL, ECONOMICAL AND BIOGRAPHICAL

DOCUMENTS, ESSAYS AND FACTS,

TOSETHER WITH

NOTICES OF THE ARTS AND MANUFACTURES.

AND A

RECORD OF THE EVENTS OF THE TIMES.

H. NILES, EDITOR.

THE PAST-THE PRESENT-FOR THE FUTURE.

'ROM SEPTEMBER, 1831, TO MARCH, 1832—VOL. XLI. OR, VOLUME V.—FOURTH SERIES.

Baltimore:

PRINTED BY THE EDITOR,
AT THE FRANKLIN PRESS, WATER-STREET, EAST OF SOUTH-STREET

Digitation by Google

## INDEX TO VOLUME XLL

TA reference to the items under the editoriol head, will healthate the finding of many things.

Adams, Julin Q at the literary convention 221; at Washington 240; con 328 337 pliments to Addendum an, or reports of the N.

York Convention, containing 64 pages Air gun-a new invention

Alabama—lections 1, 18; gold dis-covered in 224; governor's message 315, 352; resolutions of 47.3

Algiers —wars with the Arabs 23. of the people Amanda brig AAD

American System. Gen. Harrison's

vention of May 25; do of ditto October 204; markets and effects of 149,

American institute American, the singer 240, 254 475
American Convention at Bal-Autt masonic. timore, proceedings, &c: 83, 85, 107, 166; cor. with gav. Lucon 85; with Mr. Clay 260; nom. in Mass. 152; judge McLean's letter 259; various

Appnintments by the president, 154, 151, 152, 162, 339, 341 377, 380

Arabia, the cholers in 438

Arkansas-legislature and the gov. 356; election Army U. S. deaths, &c.

Augusta Courier Austria-cholera in Gilliela, 22; risings in Hungary 22, 163; alliance with Sardinia 23; determines to in-

vade Italy 135 Bahamas, American slaves in

Baltunore-volunteers 132; navigagation 378, nums in 71; compliment to H. Niles 151; price of wood 282; bills of mortality 356; mayor's message 375; produce arriving 593; river navigation 379, 393; centennal celebration 413

Balloon ascension Banks - United States' bank, trien-nial report 30, 112; Monroe's letter 82; decisions on counterfeiting drafts of 134, 231; meering at Nashville 153; dolars value of 432 duties on advis. 32s glislative proceedings 162; price of stock 252; Mr. Crawford's letter 301; 437; catest and population 32; extirements and population 32; extirements Mr. Ritchie on 325; the president and the charter \$38; anti-political tenden- finances

ey of 478; banks in New York, various Baptist society and Sunday mail 480 Burbudoes -- hurricane at 27, 35, 153 Barbour, P. P.
Barbour, James
Barry, W. T. and S Gwin 238 259 333 Batuvia -- declares for Belgium Beanharnois, Hortense Beanmarchais' claim 23 Bell's Messenger 255

Belgium - relations and war with ents Holland 22, 71, 72, 78, 201; deputa-329 tion at Landon 4; Leopold inst Bed 22 on a tour 22; his speech 30; displays American claims on France 24, 25; energy 71; Brussells 22, 104; regent's specen 29; ilissatisfactums 22, 329; duke of Saxe Weimar 104; protocols

duke of Saxe Weimar [64, protocols and proceetings of the five powers, 8c. 30, 155, 268, 358, 473, French troopty 81, Laxenshown; [55], mundation [53], the legislature [62] army [78, 268] ermatice.

18, 100, Mr. 436, 444
Bernard, gen. 8, 28
Berrien, John McP. note of 54; reply of 12, letter from 372
Bertoulin, Mr. 872
Bertoulin, Mr. 884

478

254

26-

259

211

954

Bulille, major Bulille, Nichalas' letter &c. 37, 76, 165 Bite, a severe one Blackmure, J. A. Blair, James

Bissing of rocks, essay on the Boat building Bonsparte and Mad. Carden

Boston-commerce 191 prosperny 20, 251; price of wool at 191 Mr. Otis 104; import of flour 149; custom house se zure 110; ancient pear tree 153; cable case 273; elections 326, 339; offical wag in 162; first printing press,

Bradstreet, Mrs. suits of 94 Branch, John his exposition 5; compliment to 39; reply to Mr. Eston 144; correspondence with Mr. Forsyth 430 Brazil-insurrection in Rio

Britzit — insurrection in Rio 23
Britzit — Britzih Agiler,
Bank 23, Britzih Agiler,
Billon 125, 2, 30 blerk lin 140, Britzih 227,
228; Broughens 125, 2, 30 blerk lin 140, Britzih 227,
228; Broughens 125, 2, 30 blerk lin 140, Britzih 227,
0 pinion 327; burking 2, 37, 37, 37, 37,
Case of gaznen at N. O. 15; cholerts 232
241, 359, 376, 351, 437; clergy 325, 357; Counite to the Britzih 2, 30 blerk William 21; com a captured 223, Counite to the William 21; com a captured 223, Counite 200, Counity 20 153: frown jeweis
Derry bishop of 133: Digby eastle
dollars value of 437: duties on advts, 325:
71, 135

Female dresses 252: females exported 347:

Guy Faux's day Hailtord Sir Henry 271; haivest 21, 60, 78 Ireland—manacres, &c. 2; famine 14; mar-riages 2; disturbances, abuses and distresses 71, 107, 155, 437, 448; bishop of Derry 1527 Mr. O'Council 328, 2412 (1) thes 370; paspera

fron manufacture 221, 236; church, 438; king Wm. 1V. 21, 158,

Laboring poor 355: lace trade Lanoring poor 3252: late trade 4352 pool 31 London, reform procession in 4382: bridge 21: failure in 2622. Londonarquis 2622: lond Wellington's moti lord Palmerston Maetelsfield rions 3282: Manchest ministers 104, 163, 341: mint 1852.

News, &cc. 447: Nottingham

O'Connel Mr. 2672 his partia Parliament 135, 267: postage 22 adopted 328, 370; Don Petro's Queen Adelaide

Huid roads 236; reform bill 3, 21, 7 104, 135, 135 163, 178, 229, 241, 286, 261 1599, 437; representation 279; riors, &c 148; Hobertson Mr. 139; Russell lord.

322: Robertson Mr. 159: Russell bord Jac. 35 Sinceures 254: slavery in W. L. Zh: Seotch reform bill 135: Scott Sir Walter B: saw 178 Theatrical piece 379: ten party 328, trade,

Warsaw effect of the fall of 711 wire ties 3: Wellington duke of 178, 307; W clarises lord 379 Broom corn Brown, Mr. of Boston Brown, Mr. of Philadelphia Bulls 2: hull fights 104 Burrows, Silas E.

Cabinet—Branch's exposition 51 foreign views of the dissolution of the 71 W. B. Lewis' letter 31; Mr. Craw-71 W. B. Lewis' letter 31, Mr. Graw-iord's exposition 41; Mr. Eaton's re-ply 49; Mr. Lumpkin's reply 64; Mr. Deshis's letter 55; "Gilobe's' defiance 76; Mr. Berrien's reply 79; Messrs, Speer's and Miller's letters, &c. 141; 10. Unable code: 44, Mr. Pypan's Mr. Branch's reply 144; Mr. Evans letters 180, 230; movements of certain members of the 66; Mr. Calloun'a reply 178, Mr. Brent's certificate 230; Mr. Deslin's reply 263; Mr. Berrien's

letter Calcuta-American goods at Calhonn, John C. 101, 178, 272
Canada-seizure of smuggleil goods Cathonn, John C.

commerce 238; population 327, 357; asle of ships 327; emigration to 341; Mr. Mackenzie 380, 437 Canala-Ohio 37, 163, 219; Rappa-hannock 163; Illinois 224; Morris 225;

Blackstone 327; in England and France 691 Chesapeake and Delaware Canton, improvements

Canton, (India) customs of Cape Girardeau
Capitol U. S. description of Carara-case of Carey, Mathew Carroll, W. on manufactures Carroll, M. B. death of Cartwright, C. W. on fisheries Casks, the making of Catholies, Turkey Chapman, W. and his wife 105, 240 Chargenal Coarles II.

Charleston (S. C.) custom house boul cases 14, 68, 70, 119, Mercury 7, 221; McDuffie's visit 76, 101 251; McDuffie's visit 76, 101 China - rebellion in 72; difficulties 238; consumption of cutton in 328 154 Chief cities

Cholera morbus - progress of 3, 70, 134, 152, cessay on 15, 36, 152, 162 164, 241 571, 578; opinions concern-ing 371, 435, 437; sir H. Halford's cir. cular 371; at Sinyrus 393, 438 393, 43 v Churches, number in the U. S.

Clay Henry, at Vincennes 226; clerted a senator 237; correspondence with the auti-masons 260; at Terre-Haute 261; spe-ch 385; whidrawal from masonry 346; not see of speech 355. Chapton, judge—chancellor Kent's

257 opinion, &c. 429, 452

Cl. ments Samuel E. Citton, Viss

133 Coul-used for steam engines 211; prices 374; of datles on 374; essay and statement 375; veins of 978 444 Condition-charge of a

Coffee-traile 32, prices 158; in pub. stores, 163; of duties on, 236, 574; great sale of 265; stock of 338 225 Coms-sectent

Colleges-Amherst 252; Yale, 105 282 Columbia - affires of 23, 103

Columbia telescope 164 Colonization anciety 77, 103
Colonization - Mr. Jefferson's opi-247 368 1.0

Coloured population 254, 358 134, 217 Comets

231, 201, 202; sawy uffler: 500, auster third and all the second 396; brevet rank-476; le 339; Briggs Mr. 385,

| Burkers W. 133 | 702 | 312 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 | 320 |

current hours bond 32 and 32 and 32 and 32 are traction, 467 cut on hours offer 57 30 and 32 and 32

ne's sill

Elisot's, de bates on the fed-ral constitu-tion 453, 344; Elia Mr. 312, 475; Kilworth Mr. 213, 324, 285, 285, 285, 245; capt. Mr. 213, 324, 285, 285, 285, 285, 285; capt. 295, 284, 419; Kreett Mr. H. 349; Ferrett Mr. E. 385, 425, 344, 345, 345, 395, 285, 415, 477; Kwing Mr. 203, 365, 361, 351, 394, 414 477; Kwing Mr. 203, 365, 361, 351, 394, 414 478; Kwing Mr. 203, 365, 361, 391, 394, 414 479; Kwing Mr. 203, 385, 381, 391, 394, 414 479; Mr. 203, 381, 384, 391, 395, 394, 395, 414, 419, 489, 475; executive pournal 429, exploring expedition. Foreign 429; Függe-nal Mr. 203, 235, 237; Floriah-had claims

ties in France 200; Minmi exporting company 301; Michigan—land office in 320; roots in 323; Indium ties to and si 133; 319; mindings of members 451; Michigan Mr. 325; Vil more age of members 451; Michigan Mr. 325; Vil more age 320; Michigan Mr. 325; Vil more age 320; Michigan Mr. 325; Michigan Mr. 325; Michigan V. 325; Michigan Mr. 32

sion and hospital tubia 2802; c-mainsioners 271, 342, 362; safe one pay 935; hospitals, &c. 300; funds 426; marine corps 300; arrearages 330; 411, 473, 476; arrearages luraureys 330; rope-walks 330; corps 330; seam batteries 330; naval. nurery a 20 repressible 21; seames 350; tanks 320; or artison 350; for artison 450; for art

Rail-road memorial of Balt, and Ohio 261, 439; Randolph Martha 290; Raritan riv. r, sorvey of the 440; ratio of representation 284, 345, 384, 395, 390; receipts and expen-ditures 246; redemption of public lands 244, refuse lands in Tennessee 2 register of de bates 383; registering of vessels 440; remov-al of free blacks 350, 415; removal of public al of Iree blacks 225, 415; remaral of purific officer 234, 425; reports of departments—post officer 234, 425; reports of departments—post officer 244, 265, 75; also 435, 645; secretary of the mary 254, 321, 435, 347; secretary of the mary 254, 321, 435; secretary of the mary 254, 321, 435; secretary of the single global 405; restraining debate 235; revenue, core ring 331, 336; Whode Island, prockey commenced and the single debate 325; revenue, core criming 331, 336; Whode Island, prockey commenced and the single as committee of the single si tion to organize a committee for 284, 280; roads-tron Lime creek to Chatahu 329, 343, 361; from Detroit to Grand river of the Chicago road 33/; from Washington to Jackson, in Arkaness 345; from fort How-ard to fort Crawford 384; from Zaneville, Ohio, to Florence, Alabama 451; from Ports

iii. 201, 182; Russell Mr.
Satt and the prices 115 Southy river 301; In the house of representatives—reference
Swat and the prices 115 Southy river 301; In the house of representatives—reference
Debates in congress 377, 402; defeat
App, servatory of the treaty 229; recipity relative to the Cheksawa treaty
420; defeat
N. 1.5.1 disconninuances 221 defeat

and expenditures 252; appropriations 264; duties and drawbacks 256; annual report 256; teas and duty 257; certain annual drawbacks 343; returned duties 252; intolevant debtors 361; instructions to collectors 261; recertary 361; instructions to collectors 341; searchary of the may—annual report of 394; contingent express; 384; 384; 384; contracts and purchases 394; 384; 384; contracts and purchases 394; 384; contracts and report 315; plan, Re. of fort Grinwold 246; case of Ephraim Shaker 314; beretary of state—contingent expenses of the 343; report 

3322, 322; Virginia, Clim of 129; Vinton Mr. 331, 324 Walash river 223, 345, 351; Waggaman Mr. 343, 351; Wardwell Mr. 430; Ward Mr. 371, 365; Warbington Mr. 330, 481; Washing-

271, 362; Washington Mr. 320, 481; Washington Go, Good Control of West Proof multrary acad, 3.3, 4.20. West Indirect-scall for inframation concerning the
trade with the British 20, 316. Mr. Sungar-'e
resolutions 32, 462. Mr. Holmer' 40.4, 32.
24, 252. 462. Mr. Holmer' 40.4, 32.
24, 252. 462. Mr. Holmer' 40.4, 32.
24, 252. 462. Mr. Holmer' 40.4, 32.
244, 252. 462. Mr. Holmer' 40.4, 32.
244, 252. 462. Mr. Holmer' 40.4, 32.
244, 252. 462. Mr. Holmer' 40.4, 32.
245, 462. Mr. Holmer' 40.4, 32.
246, 462. Mr. Holmer' 40.4, 32.
247. Mr. Holmer' 40.4, 32.
248. 462. Mr. Holmer' 40.4, 32.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463.
248. 463. 463. 463.
248. 463. 463.
248. 463. 463.
248. 463. 463.
248. 463. 463.
248. 463. 463.
248. 463. 463.
248. 463. 463.
248. 463. 463.
248. 463. 463.
248. 463. 463.
248. 463. 334, 345, 381 Sec

Teas and nays.

In the senate-Armaniest of fortifications
330; reference of atom sale bil 342; an Indian
blackets bill 344. Hector's resolution concerning U. S. bank, 321; delay in publishing
the commercial tables 475; delay in furnish-Month J. Florence, Alabama 311; from rotte; page 144; Becton's resolution con mouth, Orio, to the Ludent sountains, N. bla-kets bill 144; Becton's resolution con mouth, Orio, to the Ludent sountains, N. bla-kets bill 144; Becton's resolution con Carting U. S., bank, 223; delay in publishing on Mr. 130, 142; Rubbam Mr. 199, 230, 231; the counterparist table 473; delay in furnishing of the Carting U. S. and Mr. 332, 333, 341, 255, 344; Ruggle's ing certain minimation 373; rejection of M. Albaria.

Contee, lieut 074 Connecticut-project of a college in 88, Yale College negro . Constitutional amendments 445 Cooper L F. to Lalayette 00 Cooper Dr. of S. C. 900 Cutton-consumed at Providence 149; crop 34; nunkin 149; supply and price 164; growth &c. 222; exports 224, 435; new kind 258; cotton renort 441 224 Cotton goods experted 251 Counterfeiting, a case of Cows—great involuce of Crawford W. H. his address exposition 41; letter relative to U. 33: Ctim. con. case of Crocker cant. 155 Ccockett Mr. Croxall Charles, dies n Danville Va. Register Deaths 24 103, 104, 105, 183, 154, 225, 254, 528, 356 Dee, ship, explosion of. Deluware-slarms of negro risings in, 131; election 131; convention 266; law concerning free negries Denmark-s new constitution sales of borses Destra Robert, letters from 65, 263 Diving bell Dig fish-ahundance of 105 154 Dogs killed in New York. Digs and sheep Donelson Mr. and the U. S. Telgraph Du-ls S7, 240, 448, 472 Duties--certain decreased 373; view

Congressional representation

to be established in Constant Benjamin

Constantinople-Pera, 224; a paper

376

Earth, its distance from the sun 162 Eaton, J. H. reply of 49; at Nush-978 -Economy, definition of

Editorial-othless to members N. Y, convention 41tt; addendum 441; afflictions of an 33; Albany can manulactory 149: American Institute 73, 147: ancient prices 132: Anderson, anti tariff in etings

Biltimore and Ohio rail road 9 149, 177, 248, 326, 337, 378: Baiti-mure, the see at 378: b-lance of trade 131: Benton col 444: Boston and the toriff 251; Benton col 490: persons 2: reform 77, 134; curn laws, 23th money mar-

12. 1993 curn jawa, 230 money ma-ket 379; berom corn manufactures 149 Cabinet non 377; appro. 377 Cal-honn J. C. 444; Cambreleng's tonover 468 canal and rad road 321; Charleston custom house bond 76: Choli ra 472: Chesapeake canal 472: charch establishment in England, 343: enculation of values 325: Clay Henry 409, 413: closing of the navigation 325: congress men—increase of ferters to 321: constitutional amountments 444; oncested election in Florida 18: conclusion of the volume 466: Cooner Dr. 326; cotton-injury to crop of 34; crop and consumption 222-shipments of 435; new kind of, 238; on the re-Crawforil's reply noticed

duty on tea and sugar, Eaton and Coffee Messrs, and the Chickasaw treaty 4702 Edelen Juo. death of 472: Edge tools -manufacteath of \$4.22 range tools—manufac-tory of 14.82 editor—address of as chairman per. com. 4102 expects to attend free trade con. 172 prop. to 66: intended absence 145; compliments to the 151: effects of the American Sys-tem 217, 219: election returns 1: es-say on domestic manufactures and internal improvements 234: Europe-

prospects of war in 473
Falkland islands 298; Florida Gazette, 151: flour--(British) market for Institute 99, 147: free trade—of the convention 33, 73, 97, 105, 129, 152, 153, 442: glories of 218: Fredericktown Herald, 265: foreign news-on Live

Girard's bank 379: Greeks-relie! to the 340

Hamilton gov. and Mr. Madison tot: Harrisburg Intell. 447: hat manufectures-value of 54; Hayne Mr. 393, 409, 434, 445; hemp, culture of 218; "hep-hurrals," 298; high pressure statements refuted 67; home market

Impressment of seamen and Mr. Van Buren 435: impresonment of mesa onaries 701 incentiary publications 162: Indiana senstor 74: indisposition of editor and death of son It injustice of garbieil quotations 17: increased patrouage 17: internal improvements in Virginia 379: incrnal improvements in Virginia 379: iron manufactures, ma-terials for history 17: abstract of re-port on 232: Ireland, condition, &c 102

Laboring poor of England---essay on the 3212 concerning the 355: Lea-ther manufactures 147: Leon, count de 76: letters to the editor 99: do. from 177, 250: Liberia 251: Liberator, of the

Majority system in the east, 151, his reports 442 meeting at hatters 466: military power of France 77: military tem 238: minister to Russia 76: do. to Naples 152: Monroe, Mr. 443; money. sessents of 98, 236, 468; mulberry seed

and ank 356 Nantucket and its trade 218: mvigation and commerce 17: negroes, insur-rection of 19, 35, 67, 74, 130, 131, 221: of free 340: negro college 74: negro clothing 147; new inventions 47; new cabinet arrangements 470; New York convention 73, 99, 201; new party name 76, new-year's empliments 37: New Hampshire Pat. tot 353: N. York purpers 356: North Caroton Inedities for insunfacturing 2512 notices "mid Mr. Carey's essays L7: of foreign was 65: of New York American Advance 66: of U. S. baok report fife of of the Encyclo, Am. 69, of the Polish standards 69: at the Register 73: of Mr. Monrae's letter on the bank of the United States 73: of the anti-masonic convention 74: to readers 97: of the Franklin Institute 39, 147; of the el-binet controversy 129; of the tardf convention 129; of the anti-masome aildress 129; of Mr. Wirt 131; of the tree traile address 145; of British

ficulty in pleasing 218: distribution of porcelain manufactures 34: of Messrs. convention address &c. 297: disture Brown and Ellsworth's speeches 201: at the publication of the thriff address 223 17, 242; of Mr. Randolph 222; to the readers 265, 281; of the secretary of Jun. the treadery's report 265, 281; of the lae-press of matter 65; of the iron report 233, 265: of projects for rail-roads m New York 337: of a rail-road journal 337: of certain speeches 393: nullfi-

Poor in England 470: president of the U. States, renorks on the message of the 265; on the health of

Rail road business 472: remarks on excitement in England 297; do on Holland, Belgium, Greece, France Holland, Belgium, Greece, and Poland 297; reduced duties 217; religious exertements 102: reform in England 77, 134; Register, closing the volume 434, 466; reports on navigation and commerce 17: review of southern policy 234: Rhode Island lace school 38th do manufactures 44: Rduche Thomas 76, 97, 130, 145, 219, 220, 249, 265, 3.11: riots in England

Salem hank note 436: Salem Ga-zette 442: scarcity and supply: 238: secretary of the senate 323; secretary of the treasury's report 265; do war 328: seizures in Montreal Z7: sheep in the U. S. 321; stop budding 101 470; sik manufacture 100; do consumption 251: slave question 130, 378, 472: Smith geu. 409: southern insurrections and floods 66, 67, 221: southern tracts 991 do depression and its causes, 445; do calculations 217 218: specie 146, 265: state rights tracts 98; statistics 467; St. Louis Beacon 151; subsistence and its cost 446; spurious note 436; sugar, sinus, on 161; supply and price 236; Susquehannah rail read

Tariff—its effects, convention meetings, &c. 19, 65 73, 99, 145, 161, 201 249, 265, 463: tanner as in New York 236, the three days in Paris 131: "the robbing policy," and free labor 354: Thompson's ditcher and fencer 92: toasis at Edgefichi Life tobacco consamption in England 350; tomage of Charles on

rarles:on Van Buren, Mr. <u>297,</u> 393, <u>425, 434,</u> 441

Wages, essay on 353r Washington city, notice of 132; Washington George 236, 466; Webb's alventures 462; West India trade 446; western Washington floods 467: of Wickliffe's exposition 468: West india harricane 10.2 whate fishery, 218: winter, 325: Wolf gov. 378: Woodman Ira 162: wool, proc. Sec. 152, 161, 218, 251, 339, 435; duty on do.

Yankee doings Egypt-cholera 371, 438; fleet 438 Ethatt, commodore 26 Ellsworth, Mr. 202 Emmett Luoneas A. 70, 77 E orgrants Encyclopedo Americana 69 Equestran performances 372 Evans, French S. 180, 23. Events of a year Everett Mr. 101, 147, 338 239 248

Favette ville Fullle-veneration for a 23 Fires 154, 225, 282 Fisheries

Fitzgerald, lord E's widow Fluods , 467 Florida-election 18, 222; climate

Flour-price of 101; in Causals 165; British market 219; do duty on Forsyth John and Mr. Branch 430 Franking-abuse of 66

Frauds on the revenue 202 203; decisions concerning 125, 152, 273, 385, Fretinghny sen Mr.

Free trade-Mr. Robertson's speech on, Free trade" convention-com-"Free trade" convention—comments on 33; Dr. McConnell un 92; proceedings 105, 135, address 136, yea and nays 156, 157; resolutions and memorial 127; judge Barbour's address 137; the N. Y. delegation 158; is of the legate 166; ancedides 238, 239; Richmond Enquirer on the memorial, 367; editorial 442

memorial, 367; editorial
Fresh office,
Army 31, 72, 115; 155, 435; Austriau Bage
31; Algien 25; 165; Beaubranies, Hotense
Fili, Berri, dutches 3, 22, 155; Bourban,
dirke 435; bodge; 104; Charles X. 41; elergy
222; Comstant B. 362; depuire—debates and
actission 22, 199, 253, days "the three" 20,
decission 22, 199, 253, days "the three" 20,
decission 22, 199, 253, days "gein off-bource
243, Lyous 341; minuterre—various acts 31, 26,
decission 22, 23, 104; 122, 203; Egon off-bource
244, Lyous 341; minuterre—various 22, 7, 15,
decission 22, 23, 104; 122, 203; 206, 390; na100al guarde 153; Nyy, merchal, he tons of
cretning the 125, 200; For r. 175, 244, 504, 320,
decission 25, 250; For r. 175, 244, 504, 320,
decission 25, 250; For r. 175, 244, 504, 320,
decission 25, 250; For r. 175, 244, 504, 320,
decission 25, 250; Roupeyrous 356; revenue
252; slave trade, to be suppressed 4; war
speculation. sp-culations

French claims Friends-yearly meeting of Fugitives from England Galloway, Benj dies Geninger capt. "Gen. Nat." capinred 273 162 Geographical dimensions

Geographical informations
Georgia—floods 35; Cherokee gold
mines 37, 127; concerning the missionaries 70, 102, 174, 227, 267; Macon schulds 195; electrons 149, 237, 326; mstailation of gov. 224; the gov. and judge 102; cultivation of nankin cutton 149; ile of sugar 328 concerning slaves &c. 267, 321; explosion of a magazine 241; concerning gen. Jackson and Mr. Callman 272, citations from S. court 313, 335; about the ta-riff, &c. 392; freights at Savannah 327;

gov. Gibber Giant-hig Som the, 155 Ginseng OOL Gerard, Stephen, various 326, 368, 347, 368, 390

Gerard Journal &c. 449 "GI she"--- xtracts from the, 7, 8, 77, 133 152, 224 230, 238, 474 Guld--product 2; unpured 162; medical use of 163; in Abs. 224; in

N. Carolina 237; manag for, Grapes, cutture of Greece. Minutes and the fleet 2011. 211; assussmation of Capo il' Istrus 329, 340

Green, general

Gutt estand

Gun locks 154 Gwin, Samuel 333 Gwynne, Nell

Hail, ravages by Hallowell, Benjamin 96 Hamilton, Alexander 153 Hamilton-essay of

340

105

	******	
Hamilton gov. 101	brombeloths 125, 535; U. S. ve. Irane	Mexico-congress meet 25, 87: py-
Hore, Robert 39, 475	K Smith 127; crushed sugar case 159:	ramids 21; specie from 357; state of
Harrison gen speech of 12	Georgia vs. the missionaries 174: the	the country. 23, 77, 414: Vera Cruz
Huiti-storm in SS	Bult, and Ohio rad road co, ve. the	114: Tumpico 23
Heads of families, prolific 104	Chesnpeake and Ohio canal 219: the	Miles, length of
Hemp, concerning 218	U. States ve. B. Shelmire 231r erim.	Mublicton, Mr. letter of \$45
llessians 153	con. 247; duty on iron 261; calde case	Military cute 95
Higgins, Mary Ann 154	273: rail road decision 327: Hastings	Miller, S. D. letter of 143
Highlander—an aucient one	et al. vs. Pepper, 341: Joliff vs. Ben-	Milehell, T. R. of S. C. Z
Holmes, John 336, 467	dell 373	Mitchell, Saml L. Dr. 19, SZ
Holtand-army 22; king reluses to	Lead, in Maine 221: produce 340	Mississer County
Hounud -army 221 king refuses the	Leather, value of its manul.	Missinnara s-see Georgia.
acknowledge Leopold, and prepares for war 22; beats the Belgians 71;		Mississippi-elections 66: census
for war 22; beats the Belgians (1)		
hoses Batavia 72; aff-irs with B. Ljinn	Leon, count de 70, 76	Missouri-election 237, 328; Bidelle
205; 323, 342	Lowis, W B, and Mr. Bronch 32:	and Petto, latal ducl 37, 76, 150
Horses, new drink for 105	Laberia description of 71: allusion	Molasses, duty and price 374
Hopkins Samuel, speech of 18	to 133: improvements 238: condition	Money, its value, &c. 98, 236; Bri-
Howard, governor 272	251, 448; notices 339, 473	tish market 379
Hurricanes at Barbadoes 27; New Orleans Sás Parma 35; in H-in 35,	Lincoln, gov. and anti-masons &5	Monroe, James on the U. S. bank
Orleans 54: Parma 35: in H-in 35,	Literary convention 226	82; Mr. McLesn's eulogy un 373
70: West Indies generally 27, 70, 103	Livingston, Mr. 66	Monre, Mr. sard of 451
Hydrophoba, case of 3.7	Long Island Patriot Z	Morocco-insurrection in 201
,,,	Langevity 254, 328 448	Marris, John B. 221
lee, breaking 327	Louisiana-in favor of the twiff 12:	Morris, Governour 251
Illinois-project of a canal in 223;	against it 66; British ship masters 14:	Murst, Lucien 24
elections	hurricane 35: Dr. McConnell 42: riot	Murat, Achille 253, 449
Imlay, Mr. and rail road cars 224	at a church '41: election of a senator	Murder 449
Impressment of seamen 435	266: concerning slaves 239, 267: gr-	Mutiny
Indiana—Mr. Clay in 226, 261, 297;	a many a manager Till Sample of Name	N
	vernor's message 314: Sumby at New Orleans 378: election 473	
gov. Noble's address 376; elections L.		
17 <u>36,</u> 297		Naples-muister to 152: clauns
Indians—gold mines 37, 127; mis-		ng≍inst 248
sinnaries 70, 102; see Georgia. Che-	Lumpkia, Wilson 65, 144	National association address 25
rakees 313; Choctaws 133, 358, 480;	M	National Intelligeneer 160, 392, 451
Wyandots 252; small nox among 327; delegations at Washington 328; Chick-	Madison, Mr. health of 2 Madi, U. S. robbery 133: despatch	Naturnal Rep. conven. notice of, 7,
delegations at Washington 328; Chick-	Mail, U. S. robbery 133: thespatch	Navy-the Pennsylvania 19: the
assw treaty 4:35; Washington's prn-	995	Navy-the Pennsylvania 19: the
elamatum concerning 334	Maim, serious cases of 70	Rantan 12: commodores' fligs 23;
Jufluenza 283 339	Maine-elections 66, 74: territoral	Raritan 19: commodores' fligs 23; Natchez 23: Porpoise 23: Patomat
Insunity, cases of 102	dispute 103, 156, 227, 252; silver in 224; of sheep in 324; weather 449	21: stations of vessels 37: the Mor-
Internal improvements 161	224: of sheep in 324: weather 449	res 104: monthly register 135: Fair-
hon-air lurnaces 78; traile of in	Mandia, imports at 72	field 163: Brands wine 163: Guerriere
England 236; ore discovered 327; see	Manufactures lists 34; porcelum	and St. Louis 328: Peacock 337: ves-
Addendiam.	34: eilge timbs 147: leather 147: value	sels on foreign stations, 350
Irvine, Washington 178	of 148; caps 149; various 224, 225; ef-	Negroes-insurrections in Virginia
1-land, a new one 77, 327, 4.38	tect of 250; do, in purchases 413; sale	4, 19, 35, 221, 414: various rumors regulations &c. See the several states
Haly-Austria and Sardinia 23; dis-	of Amer'n goods in Calentia 265; pro-	regulations by See the several states
turkenne 98 79 941 lavergroup 35	fits 538; lead 340; extracts concerning	and 35, 340, 368; college, 88; clothing
turbaners 25, 72, 241; hurricane 35; the pope 163; tranquillay 163; rumor	16th extent of cotton 441; are editori-	147
ot a revolution reported 458	al, &c.	New Hampshire Woodman's case
ot a revolution reported 4.58	Manusana 9 NI 106 905 911 051	
1ham Andrew seminutions of 7	Marriages 3, 24, 106, 225, 241, 254, 255; jubilee of 449	162: Patriot 132, 218, 222, 352, 474
Jackson, Andrew nominations of Z	255: jubilee of 449 Maryland-elections 17, 36, 66,	New parts name Z6
272; cor. with gen B rourd 92; health	Maryuna-elections 17, 30, 00,	New York Am. Ad. 66; Age 101;
ot 104, 266; at Carroll's manor 105;	101, 356: finances 356: Cambridge 151:	Conrier 220, 474
and the nullifiers 110; message on S	Princess Ann, court house at 282: le-	New York state-parisoning power
Carolina claims 143: visits to 337:	gislatiure 333: guvernor's message	in 24: Bradstreet saits 94: rail road projects, &c., 132, 337; silver ore in
letter to certain ladies 358; ball ex-		projects, &c., 132, 337; silver ore in
tracted from 377		Line Albuny cup factory 142: tanne-
Jamaica, 437, 448, 475	more.	ries 236; eanula 266; elections 237;
Jefferson, I on colonization 247		
Jeffers, W. N. 239, 266		
Johnson, R. M. 237		Saratoga 328: statistics 333, 356, 390:
Johnson, Dr. and A. South 23	131, 259; health of 153; recovery of	Dr. Wilson 449
K	222: on the letteral government 358	
Keau, Thomas and James 21	Masome 238: Mount Marah lodge	tariff convention 99; ship building 13;
Kensington trigate 135, 153		sings killed 24: robberies 101: affairs
Kent, chancellor 257		
Kentucky-elections 1, 17: shiel and	Chambersburg 332: Buston declara-	at 125; 127; Park theatre 152; of a
steam bost explosum 240; legislature	tion S45	statue of Hamilton 153: value of pro-
69, 224: elect U. S. senator 237: inter-	Mason, Mr. secretary of Alichigan	perty 154; markets 217; the mayor
nal improvement 253: Louisville 447	territory	282: hterary convention 221, 226:
Dr. Pierce kills Robertson 247		church destroyed 225; monument to
Kirk of Scotland 22		Emmett 225; mlamous praerices 254;
Kissing, a ilear case of 15		
Kutzebue's new voyages 133		
L	tucket 218: see Boston.	New York conventions, Address of
Laboring poor of England 321, 355	McKim, Issue 325	the May (turiff) convention 25; Octo-
Lafavelle, gen concernue Poles du	McLone, Louis on public deht 147:	her conventum - necessations of 180
Lafayette, gen concerning Poles 20: letters to H. Niles 39	relative to steam boilers 198; duty on	ber convention - proceedings of 180; speeches at 202, 242; address of 204,
Lamb, Mrs. E IL F. 225	lajunt sugar 924	Vin Sahmadania mas un 905 m marte
Law cases—Stacy, jr. vs. Wetherell		
16: Mrs. Bradstreet's 14: Charleston	McLean, judge letter to anti ma	of Richmond Enquirer and N. Y.
bond cases 119: U. S. vs. packages of		Courier 220: cotton report 441: see
none cases Livi U. S. ve. packages of	McDuffle, G. 76. 124	Addendum.

	INDEX.	
	******	
New Jersey-legislature 142: gov.	72: Warsaw 78, 135, 156, 163: (appitulates) 177; Russian gov. of 201, 202; census 371; animation of the	of prisoners
Message 228 New Olive Branch 52	202: census 971: suimution of the	bitsch
Noah, M. M. &c. 239		Sabel Pete
Nobilitywealth of 105	Denibinski 155: dictator appointed	Sailor, an
North Carolina rections 1, 328:	163: monitesto against 164: prisoners killed 202: Grand duke Michael at	Salt, duty
Mr. Branch 38, concerning the blacks	Warsaw 2011: Roziski 231: Krukowie-	Sampson, Santander,
35, 240, 266, 282; finances 339; Fayettevill: 222, 248, 326; Newbern 338; bishop of 76; Mr. Potter 70, 252; go-	cki 268: Czartoryski 268: gloomy ac-	Sa denia-
bishop of 76: Mr. Potter 70, 252: go-	counts from 359, 371; Poles seek re-	S.ratoga s
vernor's message 312 statue of Washington 449; facilities for manufactures	luge in France 359, 380: Poles in exile	Sc. reity at
mgton 3491 inclines for manuscrires	Portugal the queen of 21: state of	Schoolmas
Nuisances-presented 153	trade 156; relations with France, &c.	Scutland,
Nullification-tossts concerning &	23, 38, 78, 164, 241; outrageous pro-	Schroeder
Nullification—toosts concerning & threat 101; C. Webb's correspondence 110; judge Smith's letter 258; Mr. Blair's 258; bushop England on,	23, 38, 78, 164, 241; outrageous proceedings of Mignel 23, 70, 201; denounces Pedro 104; insurrections, re-	Scala, slau
Mr. Rhir's 258; hishou England on	volts. &c. 104 156 901 381; revolt	Seamen, is
349: definition &c. 349: gov. Floyd's	volts, &c. 104, 156, 201, 381: revolt at Madeira 178: relations with Great	Sharp, Mr Sheep in
349: definition &c. 349: gov. Floyd's message 350: message of gov. of Ala-	Britain 164, 241: exceutions suspend-	Saxon bre
bams, 352; gov. Gilmer's nullifica- tion 128; gov. Gayles' anti 150	Porter, commodore 222	219; in Mass 435. See A
Nuns at Baltimore 71	Post offices 923	Shipwreck
0	Potter Robert 70, 252	Ship build
Ohioagricultural address 12; bish-	1 (311. 3011)	Sicily-co
on Chase 153; rev. Mr. Melivaine 133	Presidential calculation, 152 President's message 282, 327	Silk, conce
growth of 225: Wells and Co's wool-	President's message 282, 327 Prices ancient, in England 132	Slave ship,
len factory 966: governor's message	Priests—marriages of 328	domestie 239
len factory 266; governor's message 313; sugar cane cultivated 328; salt at Zaneswille 328; Canennati 447; of the	Prolific tailors 104	Slavery, fir
	Prussta-declaration of 22, Cholera in 22; concerning,	of 130, 266: Tennessee
Jackson convention in 474 Onium—the culture of 475	R	Small nox
Opium—the culture of 47.5 O. P. O —extracts from 24, 370	Rail road Journal 337	Smith judg
O. P. Q —extracts from 24, 370 Orange, princess of 24, 178, 449 Orthodoxy—defaution of 220	Rad roads-preferred in England	Smith, S. Smoot, be
	69: projected in New York 102, 132	Smuggling
Ordnance of the U. S. 339 Osbaldestone, the equestrian 372		Solar pher
Osbaldestone, the equestrian 372		Soldiers, r
Panther killed 474	98, 149, 177, 192, 219, 251, 326, 337, 347, 369, 377, 393, 449; Delaware and Rartan 229; Camden and Amboy 229;	South Cur
Pardoning power, abuse of 94	Raritan 229: Camden and Amboy 229:	proceedings
Parkinsonarrested 70, 76		13, 124, 253:
Past and the present 18 Patent planeing machine 224	Ranisey, Wm. dies 104	nood in
Patents 357	Ransey, Wm, dies 104 Randolph, Mr. cost of mission of 59: arrives at N. Y. 131: allusion to 145: departs for Richmond 150: ad-	McDuffie at borough 110
Paupers, concerning 356	145: departs for Richmond 150; ad-	Sec. 65: pro
Pear tree-the Endicott, 153	dresses his constituents 929	tariff lot: tre
Pensioners, U. S., 327 Pennsylvania. Political move- ments and parties 7, 18, 282, 356, 436:	Randolph, Dr. 221 Rapp, Mr. present from 100	132: militia e ner 150: pe
ments and parties 7, 18, 282, 356, 436;	Rano of representation 376	tederal relat
elections, various relating to 131, 149,	Rattle snake 254	Charleston 4
elections, various relating to 131, 149, 153, 161, 267, 282; large deer killed 225; Chambersburg 147; Mr. Chapman and his wile 105; 240; governor's	Red river pavigation 475	cendary pul
man and his wile 105: 240: gavernor's	Reed, John dies 105 Retort, a sharp 254	South An
message noticed zazz canala 279: COM	Rhode Island-elections 17: law	gen. Bermu
trade 328; finances 354; of free ne-	against slavery 58: cotton consumed 149: grain and flour do 149: banks 252:	South sea
groes Sain gov. Woll on the tariff \$49:	lace school 380: theatre sold 475	Sovereign
	Richmond Enquirer 76: 151: 220:	Spain n 71, 241, 342
\$771 sheep and dogs in Chester county 447: Pittsburg 447, 449: "Tulpehocken" 472 the Harmonists 472	Riehmond Whig 249, 325, 369, 474 99, 325, 369	241-bull fi
hocken" 472: the Harmonists 472	Riehmond Whig 99, 325, 369	C
Philadelphia—fire in 24: election	Ritchie, Thomas 76, 97, 130, 145, 220	Specie, re Speer Ale
Philadelphia-fire in 24: election 131: Franklin Institute 147: mayor	Rives, Mr. 25	St. Louis
elected 162: Pa. society revived 251:	Robinson, Alex.	St. Clair's
ease of piracy 76: political liattle cries 251: gamblers 254: judge Marshall at	Robertson, Mr. speech of 159 Rocks, blasting of 39	St. Thom:
259: journeymen tailors 435; profes-	Rogue, ingenious 327	Statistics-
aor Hare 475	Ross, eaptsin 475	European p
Pigmies 104 Pleasants John H. 340	Runaway, a reverend one 154	of Manches
Poindexter Mr. 222, 451	Russia - cholers in 3, 4, 22, 152, 163, 241, 268: mutiny and murder of	Charleston 1
Poison 23, 104, 154	physicians 152; death of Constantine 4:	chief cities
Political pocket handkerchiefs 163	disturbances 22, 156: of the emperor	fishery 218:
Poland-appeals in behalf of and relief 3, 20, 78: battles and military	22, 71, 163; the army 438; exports 22; manufactures 24; loan 102; war in Po-	Upper Can
movements, various 4, 22, 72, 104, 135.	land, movements of troops, battles, &c.	390: finance
163, 201: army dispersed 241: the	4. 22, 72, 78, 104, 163, 201, 202: Pas-	447: do. of
Skrysneski 10, 79, 135, 155, 259, 250	kewitch 72: losses in Poland 342, 438;	Maryland
movements, various 4, 22, 72, 104, 135, 163, 201: army dispersed 241: the Russians 22, 72: general order 155; Skryzneck; 40, 72, 135, 155, 268, 359; proclamation 40: a generaleus 70:	pardon offered to certain Poles 104: French ambassador 145: a lady's bird!	Hampden o
standards 69: Lithuania and Volhynia	151: military colonies 156: slaughter	453: see M

of prisoners 241: Constantine 371: Deibittch  S  Sabel Peter, dies  S. Sabel Peter, dies  S. Silor, an old one  Soll, duty and price of  Soll, duty and price of  Sompson, connsellor  234  Somet and the sold of		
Sabel Peter, dies 24 Sailor, au old one 155 Salt, duty and price of 374 Sampson, connection 374 Sampson, connection 374 Sampson, connection 254 Sampson, connection 254 Sampson, connection 254 Sampson, connection 254 Samtander, general 475 Sandiniar—army of 254 Sarchity and supply 253 Secretary of war and the Indian 333 Schoolmaster punished 152 Secretary of war and the Indian 333 Schoolmaster punished 152 Secretary of war and the Indian 333 Schoolmaster punished 152 Seal, a slaughtr of 243 Seamen, impressment of 243 Seamen, impressment of 243 Samp, Mr. of New York 255 Samp, Mr. of Ne	of prisoners 241: Constantine 371:	Dei-
Sabel Peter, dies Sailor, an oil one Sailor, duty and price of Sailor, duty and price of Sampson, connaction 234 Santander, general Samtander, general Santander, general Sartoga aprings Se-reity and supply Sertoga aprings Sec-reity and supply Secretary of war and the Indiana Schoolmaster punished 152 Seutland, the kink of Schoreder rev. Mr. 225 Scala, slougher of Samen, impressment of Samen of i		268
Sempson, connection 224 Semistoner, general 423 Semistoner, general 423 Semistoner and supply 233 Sementy and supply 233 Sementy and supply 233 Sementy and supply 233 Sementy of war and the Indians 333 Schoolmaster jumished 153 Semistoner of 434 Schweder rev. Mr. 224 Schweder rev. Mr. 225 Semistoner of 243 Singer of 243 South Junger letter of 243 South Junger letter of 243 South Carolina of 243 South Singer of 243 South	S	
Sempson, connection 224 Semistoner, general 423 Semistoner, general 423 Semistoner and supply 233 Sementy and supply 233 Sementy and supply 233 Sementy and supply 233 Sementy of war and the Indians 333 Schoolmaster jumished 153 Semistoner of 434 Schweder rev. Mr. 224 Schweder rev. Mr. 225 Semistoner of 243 Singer of 243 South Junger letter of 243 South Junger letter of 243 South Carolina of 243 South Singer of 243 South	Sabel Peter, dies	144
Sempson, connection 224 Semistoner, general 423 Semistoner, general 423 Semistoner and supply 233 Sementy and supply 233 Sementy and supply 233 Sementy and supply 233 Sementy of war and the Indians 333 Schoolmaster jumished 153 Semistoner of 434 Schweder rev. Mr. 224 Schweder rev. Mr. 225 Semistoner of 243 Singer of 243 South Junger letter of 243 South Junger letter of 243 South Carolina of 243 South Singer of 243 South	Salt data and using of	974
Santisander, general  Sandriar—army of 234  Saratoga apprags 328  Sec-retary and supply 238  Sec-retary of war and the Indians 338  Secholmaster punished 224  Sealus alsugher of 433  Sharp, Mr. of New York 245  Sharp, Mr. of New York 245  Sheep in U. Sistee, &c. 324a the Sacre breed 32, 475  Sirely in Massascia, 422; and vermont 242; in Massascia, 422; in Common 24, 28, 28, 475  Ship budding 101, 317, 223  Sirky—condemnations in 438  Sirk, concerning 100, 231  Sirke mines, discovery of 133  Share ship, loss of a 152; slave trade, domestic 239; toreign 318x chirp, loss of a 152; slave trade, domestic 239; toreign 100, 231  Sirky solvers and 100, 232  Small pux 162, 326  Small pux 162, 326  Small pux 162, 326  Smith judge, letter of 245  Smith judge, letter of 336; of 402  Smoth, lett. 223  Smith judge, letter of 346  Swith and 100  Silk solvering and various anecting, 12, 13, 124, 236  tertar deal of 132  Section of 132  Smith judge, letter on fasting, &c. 62: proceedings concerning the tariff 101: trade in horses 132: exports 132  mith and 132: proceedings concerning the tariff 101: trade in horses 132: exports 132  Smith judge, letter of 146, 565, 336  Spec Alexander, letter of 147  St. Louis Beacon 146, 585, 338  Spec Alexander, letter of 147  St. Louis Beacon 146, 585, 338  Spec Alexander, letter of 147  St. Louis Beacon 146, 585, 338  Spec Alexander, letter of 147  St. Louis Beacon 146, 585, 338  Spec Alexander, letter of 147  St. Louis Beaco	Sumpson convertion	254
So dutitie—army of 254 Soratoga aprongs 2328 Sor-cetty and supply 233 Sorbolomaster punished 233 Schoolmaster punished 243 Schoolmaster 243 Schoolmaster 243 Schoolmaster 243 Schoolmaster 243 Schoolmaster 243 Sheep in U. Stotes, &c. 324 the Saxen breed 373, 422; in Vermont 219; in Massachusetti 325 sonocrama 219; in Massachusetti 325 sonocrama 210, 317, 235 Ship building 210, 317,	Suntander general	475
Sreity and supply  Sc-reity and supply  Sc-reity and supply  Sc-reity and supply  Schoolmaster junished  133  Sentiland, the kink of  Schoolmaster junished  Sitip verks  Sitip	Sandania-print of	254
Se-reity and supply Se-reity of war and the Indians 338 Sehoolmaster punished Sentland, the kink of Settland, the kink of Sentland, the light of Singe med 373, 4272 in Vermont Sings recks  323, Sec Addenium. Sings recks  324, 282, 475 Ship building Sink, concerning 100, 231 Silve mine, loss of a 1252 slave trad, sold, concerning 100, 231 Silve mine, loss of a 1252 slave trad, domestic 259 to trade 100, 231 Silve mens, loss of a 1252 slave trad, domestic 259 to trade 100, 231 Silve mens, loss of a 1252 slave trad, sold the law general 33; question of 130, 5550 in the law general 32; ease in of 130, 5550 in the law general 32; ease in of 130, 5550 in the law general 32; ease in of 130, 5550 in the law general 32; ease in of 130, 5550 in the law general 32; ease in of 130, 5550 in the law general 32; ease in of 250 sound, beut, Small puz 102, 235 Smith, law general 32; ease in of 103, 5550 in the law general 32; ease in of 104, 5550 in the law general 32; ease in of 105, 5550 in the law general 32; ease in of 105, 5550 in the law general 32; ease in of 105, 5550 in the law general 32; ease in of 105, 5550 in the law general 32; ease in of 105, 5550 in the law general 32; ease in of 105, 5550 in the law general 32; ease in of 105, 5550 in the law general 32; ease in of 105, 5550 in the law general 32; ease in of 105, 124, 235, the bond ease 14, 68, 70, 112; flood in 33; elections 36, 143; Mr. hDoffle at law general 32; ease in of 105, 124, 235, the bond ease 136; ease of 131 of 105, 124, 134; and 105, 105, 105, 105, 105, 105, 105, 105,	S. ratora antings	328
Secretary of warm the relation of Secretary of the Secret	Sc. reity and supply	238
Schoolmaster punished Schuland, the kink of Schuland, the kink of Schuland, the kink of Schueder rev. Mr. Scal, a slaught of Scamen, impressment of Starp, Mr. of New York Small pux 162, 326 Smith Judge, letter of Smith, S. speech of 336; of Smith, S. speech of		358
Semin, saughter of 253 Sean, saughter of 253 Sean, saughter of 253 Sean, Mr. of New York 253 Sincep in U. States, &c. 324 the 352 Saren breed 373, 427: in Vermont 219. in Massachusetti 325 concerning 219. in Massachusetti 325 concerning 219. Sea 245 Sean Sea 245 Sean Massachusetti 325 concerning 219. Sea 245 Sean Massachusetti 325 concerning 219. Sea 245 Sean Massachusetti 325 concerning 219. Sea 245 Sink, concerning 101, 317, 325 Sean Massachusetti 325 concerning 219. Sea 245 Silver mene, discovery of 133 Slave ship, loss of a 153; slave trade, domestic 239 to resign 436 Slavery, first law against 83: question of 139, 286; memorial on 273; case in Tennessee 326 Smith judge, letter of 336; of 499 Smooth, lieut, 536 Smith, S. speech of 336; of 499 Smooth, lieut, 536 Smith, S. speech of 336; of 499 Smooth, lieut, 536 Smith, S. speech of 336; of 499 Smooth, lieut, 536 Smith, S. speech of 336; of 499 Smooth, lieut, 536 Smith, S. speech of 356; 1432 Smith Carolina—concerning 143 South Carolina—concerning 143 South Carolina—concerning 143 Side 131 St. Lieuting the St. St. blavership 131 St. millian claim 543; Edglied discussion 1432 Smith actions 333, 321; errisals at Charleston 334, 321; errisals at Charleston 252. Copper 326 South America—77, 95, 103, 393, 393, 394 Speech, remarks on 146, 565, 338 Speec	Schoolmaster punished	153
Semin, saughter of 253 Sean, saughter of 253 Sean, saughter of 253 Sean, Mr. of New York 253 Sincep in U. States, &c. 324 the 352 Saren breed 373, 427: in Vermont 219. in Massachusetti 325 concerning 219. in Massachusetti 325 concerning 219. Sea 245 Sean Sea 245 Sean Massachusetti 325 concerning 219. Sea 245 Sean Massachusetti 325 concerning 219. Sea 245 Sean Massachusetti 325 concerning 219. Sea 245 Sink, concerning 101, 317, 325 Sean Massachusetti 325 concerning 219. Sea 245 Silver mene, discovery of 133 Slave ship, loss of a 153; slave trade, domestic 239 to resign 436 Slavery, first law against 83: question of 139, 286; memorial on 273; case in Tennessee 326 Smith judge, letter of 336; of 499 Smooth, lieut, 536 Smith, S. speech of 336; of 499 Smooth, lieut, 536 Smith, S. speech of 336; of 499 Smooth, lieut, 536 Smith, S. speech of 336; of 499 Smooth, lieut, 536 Smith, S. speech of 336; of 499 Smooth, lieut, 536 Smith, S. speech of 356; 1432 Smith Carolina—concerning 143 South Carolina—concerning 143 South Carolina—concerning 143 Side 131 St. Lieuting the St. St. blavership 131 St. millian claim 543; Edglied discussion 1432 Smith actions 333, 321; errisals at Charleston 334, 321; errisals at Charleston 252. Copper 326 South America—77, 95, 103, 393, 393, 394 Speech, remarks on 146, 565, 338 Speec	Scutland, the kark of	201
Scamen, impressment of Starp, Mr. of New York 245 Sheep in U. States, &c. 324 the Saxen breed 373, 427; in Vermont 219, in Massachusetts 325 concerning 435. See Addendum.  Ship breeds 233, 427; in Vermont 219, in Massachusetts 325 concerning 435. See Addendum.  Ship breeds 233, 427; and 100, 247, 243 Ship building 101, 247, 243 Sridy—condemnations in 100, 241 Silk concerning 100, 241 Silk concerning 100, 241 Silk concerning 100, 243 Silk concerning 100, 243 Ship by the silk and 124 Ship by the silk and 124 Santil pux 210 Smith Junge, letter of 243 Smith Carolina—concerning 144 Smith, S. speech of 336; of 424 Smith Carolina—concerning 145 Smith Carolina—concerning 145 Smith Carolina—concerning 147 Smith Carolina—concerning 148 Smith Junges 146, 88, 70, 112; flood in 32; elections 36, 142; Mr. hDuffle at Claratestor T& Walter-borough 110; gov. letter on fasting, &c. 62; proceedings concerning the tariff 101; trade in horses 132; exports 132; mittals atoms 133, 251; errivals at Charleston 433; Dr. Cooper 326 mechany publications 162; S. C. blander 132; mittals claims 143; Edglied dinary 131; mittals claims 143; Edglied dinary 141, 342; triendly to Miguel 23, 241—301; fights 104; gen. Torrion Speeck, firm 134; proceedings concerning the 135; charles 144, 88, 70; 131 Speeck, premarks on 146, 565, 338 Speeck, premarks	Schroeder fev. Mr.	225
Sheep in U. States, &c. 324: the Saxen breed 373, 427: in Vermont 219: in Massachusetts 325: concerning 435. See Addendum.  Ships recks 23, 282, 475 Ship building 101, 277, 273 Sicily—condemnations in 438 Silk, concerning 100, 231 Silver mines, discovery of 133 Slave ship, loss of a 152: slave trade, domestic 239: toreign 152: slave trade, domestic 239: toreign 152: slave trade, domestic 239: toreign 162, 336 Slaver ship, loss of a 152: slave trade, domestic 239: toreign 162, 336 Slaver ship, loss of a 152: slave trade, domestic 239: toreign 162, 336 Slaver ship, loss of a 152: slave trade, domestic 239: toreign 162, 336 Slaver ship, loss of a 152: slave trade, domestic 239: toreign 162, 336 Slaver ship, loss of a 152: slave trade, domestic 239: toreign 162, 336 Smith, S. apecah of 336; of 256 Smith, Carolina—concerning presidential nominations 7, 272: toasta 2: proceedings of various meetings 12, 13, 124, 134; the band case 14, 68, 70, 112; flood in 33: elections 36, 142! Mr. McDuffle at Clararleator & 158 McDuffle at Clararleator & 158 Smith, S. apecah of 336; in 419: gov. letter on fasting, &c. 62: proceedings concerning the tariff 101: trade in horses 132: exports 132: milliate slaims 143: Edglied dinar- 180: pocket handkerehiefs 153: tederal relations 334, 331: arrivals at Charleaton 433: Dr. Cooper 336 meenlary publications 162: S. C. blancetta south America—77, 95, 103, 393, 394.—bull fights 104: gen. Forrior Speech, remarks on 146, 565, 338 Speech, remarks	Scala, slaugher of	254
Sheep in U. States, &c. 324: the Saxen breed 373, 427: in Vermont 219: in Massachusetts 325: concerning 435. See Addendum.  Ships recks 23, 282, 475 Ship building 101, 277, 273 Sicily—condemnations in 438 Silk, concerning 100, 231 Silver mines, discovery of 133 Slave ship, loss of a 152: slave trade, domestic 239: toreign 152: slave trade, domestic 239: toreign 152: slave trade, domestic 239: toreign 162, 336 Slaver ship, loss of a 152: slave trade, domestic 239: toreign 162, 336 Slaver ship, loss of a 152: slave trade, domestic 239: toreign 162, 336 Slaver ship, loss of a 152: slave trade, domestic 239: toreign 162, 336 Slaver ship, loss of a 152: slave trade, domestic 239: toreign 162, 336 Slaver ship, loss of a 152: slave trade, domestic 239: toreign 162, 336 Smith, S. apecah of 336; of 256 Smith, Carolina—concerning presidential nominations 7, 272: toasta 2: proceedings of various meetings 12, 13, 124, 134; the band case 14, 68, 70, 112; flood in 33: elections 36, 142! Mr. McDuffle at Clararleator & 158 McDuffle at Clararleator & 158 Smith, S. apecah of 336; in 419: gov. letter on fasting, &c. 62: proceedings concerning the tariff 101: trade in horses 132: exports 132: milliate slaims 143: Edglied dinar- 180: pocket handkerehiefs 153: tederal relations 334, 331: arrivals at Charleaton 433: Dr. Cooper 336 meenlary publications 162: S. C. blancetta south America—77, 95, 103, 393, 394.—bull fights 104: gen. Forrior Speech, remarks on 146, 565, 338 Speech, remarks	Scamen, impressment of	435
219. in Massachusetti 323 concerning 433. See Addientum. Sitips recks 23, 282, 475. Ship building 101, 317, 235. Ship building 101, 317, 235. Ship building 101, 317, 235. Ship building 102, 318. Shik, concerning 100, 231. Slike, concerning 100, 231. Slike, concerning 100, 231. Slike, concerning 112, 236. Shike, concerning 112, 236. Shike, concerning 12, 235. Smith, S. speech of 336, of 429. Smith, January 102, of 429. Smith,	Sharp, Mr. of New York	200
219: in Anassenueuti 323 concerning 323. Sec Addendum. Sinja recks 23, 282, 475 Ship building 101, 317, 235 Ship building 101, 317, 235 Ship building 101, 317, 235 Ship building 100, 231 Slike, concerning 100, 231 Slike, concerning 100, 231 Slike concerning 100, 231 Slike concerning 112, 236 Slike concerning 112, 236 Slike concerning 123, 236 Smith judge, letter of 237 Smith judge, letter of 238 Smith Carolina—concerning 142 South Carolina—concerning 143 Subject of 238 Spect Alexander, letter of 138 State right-tracts	Suren beaut 973 477; in Vern	nont
Ship breks 25, 282, 473 Ship building 101, 277, 273 Ship building 100, 231 Ship building 100, 231 Ship condemnations in 438 Ship, concerning 100, 231 Ship condemnations in 100, 231 Ship chip, loss of a 152, slave trade, domester 2591 to tright 251 Shaver mine, loss of a 152, slave trade, domester 2591 to tright 273 Shave ship, loss of a 152, slave trade, domester 2591 to tright 273 Shave ship, loss of a 152, slave trade, slave trade, slave trade, slave trade, domester 2591 to tright 273 Smith, Sangling 161 South puter of 273 Smith, Sangling 161 Solders, ratio of 273 Smith, Sangling 161 Solders, ratio of 273 Smith Carolina—concerning presidential mominations 7, 272; to sate 8; proceedings of various meetings 12, 13, 124, 253, the bond case 14, 68, 70, 112; flood in 33; elections 36, 149; Mr. McDuffle at Claratestor & Walter-burough 110; gov. letter on fasting, &c. 62; proceedings concerning the tariff 101; trade in horses 132; exports 132; militate slavins 143; Edglied dinart 180; pocket haudkerehiefs 153; tederal relations 334, 331; arrivals at Charleston 433; Dr. Cooper 326 meenhary publications 162; S. C. blanckets South America—77, 95, 103, 393; gen. Bernudes assassinated 133 Speck, Permarks on 146, 565, 338 Speck, Rexander, letter of 131 St. Louis Bracon 111 St. Louis Bracon 112 State right-tracts 143 Specket premarks on 146, 505, 338 Specket premarks	910 in Massachusetts 325; concer	nont.
Ship breks 25, 282, 473 Ship building 101, 277, 273 Ship building 100, 231 Ship building 100, 231 Ship condemnations in 438 Ship, concerning 100, 231 Ship condemnations in 100, 231 Ship chip, loss of a 152, slave trade, domester 2591 to tright 251 Shaver mine, loss of a 152, slave trade, domester 2591 to tright 273 Shave ship, loss of a 152, slave trade, domester 2591 to tright 273 Shave ship, loss of a 152, slave trade, slave trade, slave trade, slave trade, domester 2591 to tright 273 Smith, Sangling 161 South puter of 273 Smith, Sangling 161 Solders, ratio of 273 Smith, Sangling 161 Solders, ratio of 273 Smith Carolina—concerning presidential mominations 7, 272; to sate 8; proceedings of various meetings 12, 13, 124, 253, the bond case 14, 68, 70, 112; flood in 33; elections 36, 149; Mr. McDuffle at Claratestor & Walter-burough 110; gov. letter on fasting, &c. 62; proceedings concerning the tariff 101; trade in horses 132; exports 132; militate slavins 143; Edglied dinart 180; pocket haudkerehiefs 153; tederal relations 334, 331; arrivals at Charleston 433; Dr. Cooper 326 meenhary publications 162; S. C. blanckets South America—77, 95, 103, 393; gen. Bernudes assassinated 133 Speck, Permarks on 146, 565, 338 Speck, Rexander, letter of 131 St. Louis Bracon 111 St. Louis Bracon 112 State right-tracts 143 Specket premarks on 146, 505, 338 Specket premarks	435 See Addendum.	uma
Secily—condemnations in 423 Silk, concerning 100, 231 Silve mines, discovery of 100, 231 Silve mines, loss of a 152; slave trade, domestic 239; torcign 243 Slave ship, loss of a 152; slave trade, domestic 239; torcign 243; slave trade, domestic 239; torcign 243; slave trade, of 150, 256; slave, first law agoinst 24; question of 150, 256; slave, first law agoinst 243; see in 162, 236 Smith, law general on 274; case in 162, 236 Smith, law general on 274; case in 162, 236 Smith, law general on 274; case in 162, 236 Smith, law general on 274; case in 162, 236 Smith, law general on 274; case in 162, 236 Smith, law general on 274; case in 162, 236 Smith, law general on 274; case in 162, 236 Smith, law general on 274	Shinarecks 23, 282,	475
Secily—condemnations in 423 Silk, concerning 100, 231 Silve mines, discovery of 100, 231 Silve mines, loss of a 152; slave trade, domestic 239; torcign 243 Slave ship, loss of a 152; slave trade, domestic 239; torcign 243; slave trade, domestic 239; torcign 243; slave trade, of 150, 256; slave, first law agoinst 24; question of 150, 256; slave, first law agoinst 243; see in 162, 236 Smith, law general on 274; case in 162, 236 Smith, law general on 274; case in 162, 236 Smith, law general on 274; case in 162, 236 Smith, law general on 274; case in 162, 236 Smith, law general on 274; case in 162, 236 Smith, law general on 274; case in 162, 236 Smith, law general on 274; case in 162, 236 Smith, law general on 274	Ship building 101, 217.	225
Silk, concerning 100, 231 Silver mines, discovery of 153 Slave ship, loss of a 153; slave trade, domestic 239 to crisin Slavery, first law against 83; question of 130, 263; memorist on 273; case in Tenne size Small pax 162, 236 Smith judge, letter of 252 Smith judge, letter of 336; of 492 Smooth, heut. 326 Smith judge, letter of 326 Smith, S. speech of 336; of 492 Smooth, heut. 273 Smith, S. speech of 336; of 492 Smooth, result of 336; of 492 Smooth Carolina—concerning presidential mominations 7, 272; toasts 2: Smooth Carolina—concerning presidential mominations 7, 272; toasts 2: proceedings of various meetings 12, 13, 124, 253; the bond case 14, 68, 70, 112: flood in 33: elections 56, 143; Mr. McDuffle at Clarietator 7fix Walter-borough 110; gov. letter on fasting, &c. fix proceedings concerning the tariff 101; trade in borses 132; exports 132; miltas elaims 143; Edglield diagnostic 143; and 144; a		
of 189, 2561: memorial on 2732: ease in Temastee 3246 Small pux 162, 326 Small pux 162, 326 Smith judge, letter of 2758 Smith, S. speech of 3361 of 2758 Smith, But. 273 Smuggling 161 Smort, heut. 273 Smuggling 161 Smith publication of 24 Smort phenomenon 26 Soldhers, ratin of 24 Smuth publication of 24 Smuth Carolina—concerning presidential nominations 7, 272; toasts 2: proceedings of various meetings 14, 13, 124, 252s the bond once 14, 65, 70, 1128 flood in 35s elections 36, 132; Mills 1128 flood in 35s elections 36, 132; mills electropheropheropheropheropheropheropherophe	Silk, concerning 100,	951
of 189, 2561: memorial on 2732: ease in Temastee 3246 Small pux 162, 326 Small pux 162, 326 Smith judge, letter of 2758 Smith, S. speech of 3361 of 2758 Smith, But. 273 Smuggling 161 Smort, heut. 273 Smuggling 161 Smith publication of 24 Smort phenomenon 26 Soldhers, ratin of 24 Smuth publication of 24 Smuth Carolina—concerning presidential nominations 7, 272; toasts 2: proceedings of various meetings 14, 13, 124, 252s the bond once 14, 65, 70, 1128 flood in 35s elections 36, 132; Mills 1128 flood in 35s elections 36, 132; mills electropheropheropheropheropheropheropherophe	S.lver mines, discovery of	153
of 189, 2561: memorial on 2732: ease in Temastee 3246 Small pux 162, 326 Small pux 162, 326 Smith judge, letter of 2758 Smith, S. speech of 3361 of 2758 Smith, But. 273 Smuggling 161 Smort, heut. 273 Smuggling 161 Smith publication of 24 Smort phenomenon 26 Soldhers, ratin of 24 Smuth publication of 24 Smuth Carolina—concerning presidential nominations 7, 272; toasts 2: proceedings of various meetings 14, 13, 124, 252s the bond once 14, 65, 70, 1128 flood in 35s elections 36, 132; Mills 1128 flood in 35s elections 36, 132; mills electropheropheropheropheropheropheropherophe	Slave ship, loss of a 155; slave tr	ade,
of 189, 2561: memorial on 2732: ease in Temastee 3246 Small pux 162, 326 Small pux 162, 326 Smith judge, letter of 2758 Smith, S. speech of 3361 of 2758 Smith, But. 273 Smuggling 161 Smort, heut. 273 Smuggling 161 Smith publication of 24 Smort phenomenon 26 Soldhers, ratin of 24 Smuth publication of 24 Smuth Carolina—concerning presidential nominations 7, 272; toasts 2: proceedings of various meetings 14, 13, 124, 252s the bond once 14, 65, 70, 1128 flood in 35s elections 36, 132; Mills 1128 flood in 35s elections 36, 132; mills electropheropheropheropheropheropheropherophe	domestie 239: toreign	436
Small pax Smith judge, letter of 2356 Smith, S. speech of 336 of 402 Smooth, beut. 273 Smuggling 191 St. Letter of Smooth, beut. 273 Smuggling 191 St. Letter of Smooth, beut. 273 Smuggling 191 Swiler phenomenon 295 Swiler phenomenon 295 Swiler of 295 Smooth, beut. 295 Smooth, 295 S	Slavery, first law against 81: que:	Hion
Small pax Smith judge, letter of 2356 Smith, S. speech of 336 of 402 Smooth, beut. 273 Smuggling 191 St. Letter of Smooth, beut. 273 Smuggling 191 St. Letter of Smooth, beut. 273 Smuggling 191 Swiler phenomenon 295 Swiler phenomenon 295 Swiler of 295 Smooth, beut. 295 Smooth, 295 S	of 130, 266: memorial on 273; car	e in
Smith, S. speech of 3369 of \$20 Smoot, heut. 273 Smogling 161 Solar phenomenon 261 Soldhers, ratin of 24 South Jenenomenon 262 Soldhers, ratin of 24 South Jenenomenon 27, 222; toasts 2; proceedings of various meetings 13, 13, 23, 23a; the bond one 24, 243; toasts 2; proceedings of various meetings 13, 13, 23, 23a; the bond one 25, 243; toasts 2; proceedings concerning the tariff 101; trade in horses 132; exports 132; mittal esisms 143; Edgfield dimart 150; pocket haudkerehiefs 153; tederal relations 334, 351; arrivals at Charleston 435; Dr. Cooper 326 meenlaary publications 162; S. C. blanckta 25, 25, 25, 25, 25, 25, 25, 25, 25, 25,	l ennissee	996
Smith, S. speech of 3369 of \$20 Smoot, heut. 273 Smogling 161 Solar phenomenon 261 Soldhers, ratin of 24 South Jenenomenon 262 Soldhers, ratin of 24 South Jenenomenon 27, 222; toasts 2; proceedings of various meetings 13, 13, 23, 23a; the bond one 24, 243; toasts 2; proceedings of various meetings 13, 13, 23, 23a; the bond one 25, 243; toasts 2; proceedings concerning the tariff 101; trade in horses 132; exports 132; mittal esisms 143; Edgfield dimart 150; pocket haudkerehiefs 153; tederal relations 334, 351; arrivals at Charleston 435; Dr. Cooper 326 meenlaary publications 162; S. C. blanckta 25, 25, 25, 25, 25, 25, 25, 25, 25, 25,	Small plix	958
Somgling 161 Solar phenomenon 26 Solders, ratin of 24 Sonth Carolina—concerning presidential nominations 7, 272; tonats 2: proceedings of various meetings 14, 13, 124, 252; the bond case 14, 68, 70, 112; flood in 32; elections 36, 143! Mr. McDuffle at Charleston 76: White-borough 110; gov. letter on fasting, &c. 62: proceedings concerning the tariff 101; trade in hores: 132; exports 132; miltita claims 143: Edgfield dinart 150; pocket handkerelisfe 152; tedd-ral-relations 334, 351; arrivals at Charleston 432: Dr. Cooper 326 memlary publications 162: S. C. blankets and 432: Dr. Cooper 326 memlary publications 162: S. C. blankets and 432: Dr. Cooper 326 memlary publications 162: S. C. blankets 250; dr. Cooper 326 memlary publications 162: S. C. blankets 250; dr. Cooper 326 memlary publications 162: S. C. blankets 250; dr. Cooper 326 memlary publications 162: S. C. blankets 250; dr. Cooper 326 memlary publications 162: S. C. blankets 250; dr. Cooper 326 memlary publications 162: S. C. blankets 251; dr. Cooper 326 memlary publications 162: S. C. blankets 251; dr. Cooper 326 memlary publications 162: S. C. blankets 252; S. Thomas, fire at 524: canals in England and France 51: of Manchets 103: conimerce 51: S. 251; dr. Cooper 52: S. C	Smith S appeal of 136 of	Arvo
Somgling 161 Solar phenomenon 26 Solders, ratin of 24 Sonth Carolina—concerning presidential nominations 7, 272; tonats 2: proceedings of various meetings 14, 13, 124, 252; the bond case 14, 68, 70, 112; flood in 32; elections 36, 143! Mr. McDuffle at Charleston 76: White-borough 110; gov. letter on fasting, &c. 62: proceedings concerning the tariff 101; trade in hores: 132; exports 132; miltita claims 143: Edgfield dinart 150; pocket handkerelisfe 152; tedd-ral-relations 334, 351; arrivals at Charleston 432: Dr. Cooper 326 memlary publications 162: S. C. blankets and 432: Dr. Cooper 326 memlary publications 162: S. C. blankets and 432: Dr. Cooper 326 memlary publications 162: S. C. blankets 250; dr. Cooper 326 memlary publications 162: S. C. blankets 250; dr. Cooper 326 memlary publications 162: S. C. blankets 250; dr. Cooper 326 memlary publications 162: S. C. blankets 250; dr. Cooper 326 memlary publications 162: S. C. blankets 250; dr. Cooper 326 memlary publications 162: S. C. blankets 251; dr. Cooper 326 memlary publications 162: S. C. blankets 251; dr. Cooper 326 memlary publications 162: S. C. blankets 252; S. Thomas, fire at 524: canals in England and France 51: of Manchets 103: conimerce 51: S. 251; dr. Cooper 52: S. C	Smoot heut	27.9
Solr phenomenon Solders, rain of Lordina—concerning presidential mominations 2, 222: toasts 8: proceedings of various meetings 12, 13, 124, 235; the bond ones 14, 68, 70, 112: Rood in 33: elections 56, 143: Mr. McDuffie at Claritation The Walter-borough 110: gov. letter on fasting, &c. fis: proceedings concerning the tariff 101: trade in horses 132: exports 132: militate claims 143: Edglied dinary 120: pocket shudkerelairis 153: reteral relations 143: Edglied dinary 120: pocket shudkerelairis 153: reteral relations 143: Edglied dinary 120: pocket shudkerelairis 153: reteral relations 143: D. Coope 336 Lordinary publications 162: S. C. blancher, pocket shudkerelairis 153: reteral relations 143: P. Coope 336 South America—77, 95, 103, 993, gen. Bernudez assassinated 154 South America—77, 95, 103, 993, gen. Bernudez assassinated 154 South sea islands So	Surgeling	161
Soldiers, rain of Sonth Carolina—concerning presidential nominations 7, 222; tonsts 2: proceedings of various meetings 14, 15, 124, 253; the bond case 14, 68, 70, 112; flood in 32: elections 36, 144! Mr. McDuffle at Charleston 7£: Walterborough 110; gov. letter on fasting, &c. 64: proceedings concerning the tariff 101: trade in hores 132: exports 132: minta claims 143: Edgfield dimart 150: pocket handkerchiefs 153: tederal relations 334, 351: arrivals at Charleston 434: Dr. Cooper 326: membrary publications 162: S. C. blankets  Kata 2-1, 10, 10, 10, 10, 10, 10, 10, 10, 10, 1	Solar phenomenon	96
dential nominations 7, 222; tosits 8: proceedings of various meetings 14, 13, 124, 252; the bond case 14, 68, 70, 112; flood in 32: elections 36, 143! Mr. McDuffle at Cliarleston 76: Walterborough 110; gov. letter on fasting, &c. 62: proceedings concerning the tariff 101: trade in hores: 132; exports 132; milita claims 143: Edgfield dinart 150: pocket handkerchiefs 152: tederal relations 334, 351: arrivals at Charleston 432: Dr. Cooper 326 membrary publications 162: S. C. blanckta Asia: Dr. Cooper 326 membrary publications 162: S. C. blanckta South -Imerica—77, 95, 103, 565 South -Imerica—77, 95, 103, 503, gen. Bernudez assassinated 438 Sovereign, nurders by 425 Spains—military movement 4, 23, 71, 241, 342 Irlendly to Mayuel 23, 231—bull fights 104; gen. Torripo Speice, remarks on 146, 265, 338 Spece Alexander, letter of 131 St. Louis Beacon 151 St. Clair's defeat 225 St. Thomas, fire at State right-tracts State galt-tracts 252 States and State galt-tracts 253 Latic canals in England and France 51: of Manchester 103: continered U. S. 134 chief diete 154: census 176 whates	Soldiers, ratio of	24
dential nominations 7, 222; tosits 8: proceedings of various meetings 14, 13, 124, 252; the bond case 14, 68, 70, 112; flood in 32: elections 36, 143! Mr. McDuffle at Cliarleston 76: Walterborough 110; gov. letter on fasting, &c. 62: proceedings concerning the tariff 101: trade in hores: 132; exports 132; milita claims 143: Edgfield dinart 150: pocket handkerchiefs 152: tederal relations 334, 351: arrivals at Charleston 432: Dr. Cooper 326 membrary publications 162: S. C. blanckta Asia: Dr. Cooper 326 membrary publications 162: S. C. blanckta South -Imerica—77, 95, 103, 565 South -Imerica—77, 95, 103, 503, gen. Bernudez assassinated 438 Sovereign, nurders by 425 Spains—military movement 4, 23, 71, 241, 342 Irlendly to Mayuel 23, 231—bull fights 104; gen. Torripo Speice, remarks on 146, 265, 338 Spece Alexander, letter of 131 St. Louis Beacon 151 St. Clair's defeat 225 St. Thomas, fire at State right-tracts State galt-tracts 252 States and State galt-tracts 253 Latic canals in England and France 51: of Manchester 103: continered U. S. 134 chief diete 154: census 176 whates	South Carolina-concerning p	resi-
tariff 101: reade in horses 132: exports 132: militia claims 143: Edg&eld dimart 131: bedeckt haufkerelisfs 152: tederal relations 334, 351: arrivals at Charleston 435: Dr. Cooper 336 membrary publications 162: S. C. blankets  South - 100: 100: 100: 100: 100: 100: 100: 10	dentral nominations 7, 272: toss	s <u>8:</u>
tariff 101: reade in horses 132: exports 132: militia claims 143: Edg&eld dimart 131: bedeckt haufkerelisfs 152: tederal relations 334, 351: arrivals at Charleston 435: Dr. Cooper 336 membrary publications 162: S. C. blankets  South - 100: 100: 100: 100: 100: 100: 100: 10	proceedings of various meetings	12,
tariff 101: reade in horses 132: exports 132: militia claims 143: Edg&eld dimart 131: bedeckt haufkerelisfs 152: tederal relations 334, 351: arrivals at Charleston 435: Dr. Cooper 336 membrary publications 162: S. C. blankets  South - 100: 100: 100: 100: 100: 100: 100: 10	13, 124, 253: the bond case 14, 68	, 70,
tariff 101: reade in horses 132: exports 132: militia claims 143: Edg&eld dimart 131: bedeckt haufkerelisfs 152: tederal relations 334, 351: arrivals at Charleston 435: Dr. Cooper 336 membrary publications 162: S. C. blankets  South - 100: 100: 100: 100: 100: 100: 100: 10	112: flood in 35: elections 36, 149:	Mr.
tariff 101: reade in horses 132: exports 132: militia claims 143: Edg&eld dimart 131: bedeckt haufkerelisfs 152: tederal relations 334, 351: arrivals at Charleston 435: Dr. Cooper 336 membrary publications 162: S. C. blankets  South - 100: 100: 100: 100: 100: 100: 100: 10	McDuffie at Charleston Zh: Wa	lier-
tariff 101: reade in horses 132: exports 132: militia claims 143: Edg&eld dimart 131: bedeckt haufkerelisfs 152: tederal relations 334, 351: arrivals at Charleston 435: Dr. Cooper 336 membrary publications 162: S. C. blankets  South - 100: 100: 100: 100: 100: 100: 100: 10	borough 110; gov. letter on las	ting,
and minter erain 1532 Degeter than 1532 Degeter 1534 Degeter 1535 Degeter 15	acc. the proceedings concerning	THE
gen. Bernudez assasinated 3.132 gen. Bernudez by 47.5 Spainin- nulliary movements 4, 23, 71, 241, 342 friendly to Myuel 23, 241—bull fights 104; gen. Torripo Sper Alexander, letter of 1.13 St. Lunis Beacon 1.15 St. Clair's defeat 2.25 St. Thomas, fire at 2.25 St. Tamas in England and France 61: of Manchester 10.15: exports from Charleston 1.25: continered 0.15 Of Manchester 10.15: exports from Charleston 1.25: continered 0.15 chief cities 1.54: census 1.76: whale	139: militia eluima 143: Edefield	due
gen. Bernudez assasinated 3.132 gen. Bernudez by 47.5 Spainin- nulliary movements 4, 23, 71, 241, 342 friendly to Myuel 23, 241—bull fights 104; gen. Torripo Sper Alexander, letter of 1.13 St. Lunis Beacon 1.15 St. Clair's defeat 2.25 St. Thomas, fire at 2.25 St. Tamas in England and France 61: of Manchester 10.15: exports from Charleston 1.25: continered 0.15 Of Manchester 10.15: exports from Charleston 1.25: continered 0.15 chief cities 1.54: census 1.76: whale	per 150: pocket handkerchiefs	153:
gen. Bernudez assasinated 3.132 gen. Bernudez by 47.5 Spainin- nulliary movements 4, 23, 71, 241, 342 friendly to Myuel 23, 241—bull fights 104; gen. Torripo Sper Alexander, letter of 1.13 St. Lunis Beacon 1.15 St. Clair's defeat 2.25 St. Thomas, fire at 2.25 St. Tamas in England and France 61: of Manchester 10.15: exports from Charleston 1.25: continered 0.15 Of Manchester 10.15: exports from Charleston 1.25: continered 0.15 chief cities 1.54: census 1.76: whale	tederal relations 334, 351; arriva	ls at
gen. Bernudez assasinated 3.132 gen. Bernudez by 47.5 Spainin- nulliary movements 4, 23, 71, 241, 342 friendly to Myuel 23, 241—bull fights 104; gen. Torripo Sper Alexander, letter of 1.13 St. Lunis Beacon 1.15 St. Clair's defeat 2.25 St. Thomas, fire at 2.25 St. Tamas in England and France 61: of Manchester 10.16; exports from Charleston 1.25; continered 0.15 Of Manchester 10.16; exports from Charleston 1.25; continered 0.15 Charleston 1.25; continered 0.15 Charleston 1.25; continered 0.15 Charleston 1.25; continered 0.15	Charleston 435: Dr. Cooper 326	in-
gen. Bernudez assasinated 3.132 gen. Bernudez by 47.5 Spainin- nulliary movements 4, 23, 71, 241, 342 friendly to Myuel 23, 241—bull fights 104; gen. Torripo Sper Alexander, letter of 1.13 St. Lunis Beacon 1.15 St. Clair's defeat 2.25 St. Thomas, fire at 2.25 St. Tamas in England and France 61: of Manchester 10.16; exports from Charleston 1.25; continered 0.15 Of Manchester 10.16; exports from Charleston 1.25; continered 0.15 Charleston 1.25; continered 0.15 Charleston 1.25; continered 0.15 Charleston 1.25; continered 0.15	cendary publications 162: S. C. t	lan-
Sovereign, murders by 425 Spains-military movements 4, 23, 71, 241, 342; Iriendly to Miguel 23, 241-bull fights 194; gen. Torrigo 438 Specie, remarks on 146, 265, 338 Speer Alexander, letter of 141 St. Lusis Bracon 141 St. Lusis Bracon 141 St. Lusis Bracon 141 St. Lusis Bracon 141 St. Lusis Grand 141 St. Lusis St. Thomas, fire at 438 State right-tracts 90 Statistics—churches in the U. S. 22 European powers 21 coffee trade 32, 147: canals in England and France 511 of Manchester 1043: exports from Charleston 1521 commerce U: S. 134 chief cities 1541 census 1756 whale		266
Sovereign, murders by 425 Spains-military movements 4, 23, 71, 241, 342; Iriendly to Miguel 23, 241-bull fights 194; gen. Torrigo 438 Specie, remarks on 146, 265, 338 Speer Alexander, letter of 141 St. Lusis Bracon 141 St. Lusis Bracon 141 St. Lusis Bracon 141 St. Lusis Bracon 141 St. Lusis Grand 141 St. Lusis St. Thomas, fire at 438 State right-tracts 90 Statistics—churches in the U. S. 22 European powers 21 coffee trade 32, 147: canals in England and France 511 of Manchester 1043: exports from Charleston 1521 commerce U: S. 134 chief cities 1541 census 1756 whale	South America-77, 95, 103,	393,
Sovereign, murders by 425 Spains-military movements 4, 23, 71, 241, 342; Iriendly to Miguel 23, 241-bull fights 194; gen. Torrigo 438 Specie, remarks on 146, 265, 338 Speer Alexander, letter of 141 St. Lusis Bracon 141 St. Lusis Bracon 141 St. Lusis Bracon 141 St. Lusis Bracon 141 St. Lusis Grand 141 St. Lusis St. Thomas, fire at 438 State right-tracts 90 Statistics—churches in the U. S. 22 European powers 21 coffee trade 32, 147: canals in England and France 511 of Manchester 1043: exports from Charleston 1521 commerce U: S. 134 chief cities 1541 census 1756 whale	gen. Bermudez assassinated	438
Specie, remarks on 146, 265, 338 Speer Alexander, letter of 131 St. Lusis Beacon 151 St. Clair's defeat 225 St. Thomas, fire at 438 State right-tracts 90 Statistics—churches in the U. S. 2 European powers 21 coffee trade 32, 147: canals in England and France 521 Official State 132: commerce U. S. 134 chief ditter 154: census 176 kmalexter 154: census 176	South sea islands	154
Specie, remarks on 146, 265, 338 Speer Alexander, letter of 131 St. Lusis Beacon 151 St. Clair's defeat 225 St. Thomas, fire at 438 State right-tracts 90 Statistics—churches in the U. S. 2 European powers 21 coffee trade 32, 147: canals in England and France 521 Official State 132: commerce U. S. 134 chief ditter 154: census 176 kmalexter 154: census 176	Sovereign, murders by	47.5
Specie, remarks on 146, 265, 338 Speer Alexander, letter of 131 St. Lusis Beacon 151 St. Clair's defeat 225 St. Thomas, fire at 438 State right-tracts 90 Statistics—churches in the U. S. 2 European powers 21 coffee trade 32, 147: canals in England and France 521 Official State 132: commerce U. S. 134 chief ditter 154: census 176 kmalexter 154: census 176	71 Ott 240 Islandin to 34	23,
Specie, remarks on 146, 265, 338 Speer Alexander, letter of 141 St. Luuis Beacon 151 St. Clair's defeat 225 St. Thomas, fire at 438 State right-tracts 90 Statistics—churches in the U. S. 2 European powers 21 coffee trade 32, 147: canals in England and France 521 O Manchester 104: exports from Charleston 152: commerce U. S. 134 chief dittes 154: census 176: whale	71, 241, 342 Triendly to Miguel	23,
Specie, remarks on 146, 265, 338 Speer Alexander, letter of 131 St. Louis Beacon 151 St. Clair's defeat 225 St. Thomas, fire at 245 St. Thomas, fire at 245 State right-tracts 245 State right-tracts 25 Lucopean powers 25 coffee trade 32, 142; canals in England and France 50: of Manchester 104: exports from Charleston 132; commerce U: St. 134 chief cities 134; census 126 whale	241-buil agais 104: gen. 1 or	130
St. Luvis Beacon  \$1, Clair's defeat  \$25  St. Thomas, fire at  \$25  State right-tracts  \$438  State right-tracts  \$25  S	Specie remarks on 146 C65	998
St. Luvis Beacon  \$1, Clair's defeat  \$25  St. Thomas, fire at  \$25  State right-tracts  \$438  State right-tracts  \$25  S	Speer Alexander letter of	141
St. Thomas, fire at \$438 State right—tracts \$99 State right—tracts \$90 Statestics—churches in the U. S. 2 European powers 31 coffee trade 32, 132; canals in England and France 60: of Manchester 1012; exports from Charleston 152; commerce U. S. 134; chief dives 154; census 175s whale		151
St. Thomas, fire at \$438 State right—tracts \$99 State right—tracts \$90 Statestics—churches in the U. S. 2 European powers 31 coffee trade 32, 132; canals in England and France 60: of Manchester 1012; exports from Charleston 152; commerce U. S. 134; chief dives 154; census 175s whale	St. Clair's defeat	925
Statistics—churches in the U. S. 2: European powers 3: coffee trade 32, 132: canals in England and France 60: of Manchester 104: exports from Charleston 132: commerce U: S. 134: chief cities 154: census 176: whale	St. Thomas, fire at	438
Statisticschurches in the U. S. 2: European powers 2: coffee trade 32, 152: canals in England and Prance 50: of Manchester 104: exports from Charleston 152: commerce U: S. 134: chief cittes 154: census 176: whale	State right - tracts	99
European powers 31 coffee trade 32, 152; canals in England and France 612; of Manchester 1043; exports from Charleston 1529; commerce U: S, 134; chief cities 154; census 176; whale fishery 218; production and consumption of cotton 224; of Cuba 254; of Upper Canada 327; New York 353, 3184; finances of Pennsylvania, 534, 442; do. of North Carolios 339; of Maryland 356; French elergy 372; Hampden county Mass.  Steam boats—the "Royal William" 453; see Mr. McLanc's letter con-	Statistics churches in the U.	S. 👱
13.2: canals in England and France 612: of Manchester 1032: exports from Charleston 13.2: commerce U: S. 13.4: chief cities 15.4: census 17.6: whate failer 24.8: production and consumption of cotton 252: of Cuba 253: of Upper Canada 32.1: New York 33.3, 340: finances of Pennsylvanis, 33.4. 44.2: do. of North Carolina 32.9: of Maryland 35.6: French elergy 37.2: Hampden county Mess.  Steam boats—the "Royal William" 453: see Mr. McLanc's letter con-15.5: see Mr. McLanc's letter co	European powers 31 coffee trade	32,
on maneletter 1112: exports from Charleston 152: connerce U: S. 132: chief cities 154: census 176: whale shiery 218: production and consumption of cotton 222: of Cuba 253: of Upper Canada 327: New York 333, 300: finances of Penusylvania, 334, 447: do. of North Carolios 335: of Maryland 356: French elergy 272: Hampden county Mass.  Steam boats—the "Royal William" 453: see Mr. McLanc's letter con-	canals in England and Franc	e 69:
Constresson 1.221 Consideree U.S. 1.524 chief cities 1.54; census 1.76; whale failery 21.8; production and consumption of cotton 223; of Cuba 2.53; of Upper Canada 3.27; New York 3.33, 310; finances of Pennsylvanis, 3.34, 442; do, of North Carolion 3.26; of Maryland 3.56; Prench clergy 3.72; Hampden county Msss.  Steam boats—the "Royal William" 4.53; see Mr. McLane's letter consumptions of the consumption of	Charlesten 192 commer 1	rom
sinery 218: production and consump- tion of cotton 2222 of Cuba 2532 of Upper Canada 327: New York 333, 300; finances of Pennsylvania, 534, 442: do. of North Carolio 3352 of Maryland 356: French elergy 272; Hampden county Mass. 152am boats—the "Royal William" 453: see Mr. McLanc's letter con-	charteston 1321 commerce U: S.	134
ton of cotton 222: of Cuba 253: of Upper Canada 227: New York 333, 380: finances of Pennsylvania, 334, 447: do. of North Carolion 359: of Maryland 356: French elegy 322: Hampden county Msss.  Steam boats—the "Royal William" 453: see Mr. McLane's letter con-	School Ols production and service	nale
Upper Canada 322: New York 333, 3BB: finances of Pennsylvania, 334: Ac. do. of North Carolioa 359: of Maryland 326: French elergy 372: Hampden county Mass.  Steam busts—the "Royal William" 533: see Mr. McLanc's letter con-	tion of cotton 993; of Cube 90	amp-
3lbb finances of Fennsylvania, 534, 447; do. of North Carolina 356; 447; do. 356; French elergy 372; Hampden county Mass. 413 Steam bouts—the "Royal William" 453; see Mr. McLanc's letter con-	Unner Canada 327: New Vork	333
447: do. of North Carolios 339: of Maryland 356: French elergy 372: Hampden county Mass. 412 Steam boats—the "Royal William" 453: see Mr. McLane's letter con-	390: finances of Penusylvania.	334
Maryland 35ft: French elergy 372: Hampden county Mass.  Steam boats—the "Royal William" 453: see Mr. McLane's letter con-	447: do. of North Carolina 3:	9: 0
Hampden county Mass.  Steam boats—the "Royal William"  453: see Mr. McLane's letter con-	Maryland 356: French elergy	372:
Steam boats-the "Royal William"	Hampden county Mass.	412
453: see Mr. McLane's letter con-	Steam boats-the "Royal Wil	liam"
	162 and Mr. Malana's letter	con-

#### INDEX.

to total and the section waters	state bank 237, 339: slave case in \$27;	ı W
cerning botter 128; western waters	excitement 340	
"Steel ore" 558		Ward, Mr. 271
Storms 35, 66, 20		
Sub-marine explosion 71		family 19: installation suit of 236: on
Sugar—duty on Equid 223, 161: sup-		the rights of Indiana 334: ancolote of
ply and price 236		340 of the centennial celebration of
Summers, judge L. 228		his birth-day 413, 444; life of 475
Sunday schools in the United States		Weather, certain cold winters 341
254 mail 480. See Addendum.	Treasury, restitution at 236	Webb, Lanes W. 452
Supreme court—citations from, to		Webster, Daniel 282, .97
Georgia 313: meeting of the 377	Turkey 479	West, advancement of the 267
Swindling case of 405		West Inches American slaves in
Switzerland 201	Turkey-Cutholie bishop in 32: dis-	
G Bert 201 (Bert C	satisfactions in 2.ir Pera 156, 224, 225:	
_ T	hail storm 342: cholers 381, 393: trea-	
Tailors, journeymen 435	ty with U. S. 479: relations with Rus-	
Talimadge, gen James 8, 37.3		Jamaica 393, 437, 448; fire at St. Tho-
Taney, Roger B. 154, 338		mas 393; general Vives resigns 448
Tanneries in N. Y. 236	U	West India trade-British views of
Tarif - Louisiana memorial 9: gen.	United States Gazette 325	111: operation of the arrangement of
Harrison's views of 12: proceedings	v	the 111, 165; speeches on 336; arri-
and addresses of the New York con-	Variek, col. Richard dies 19	vals at New York and Boston 378: of
ventions of May and October 25, 161.		the value of the 446
180, 202, 204, 242; effects illustrated	of his rejection 434, 474	Whate fishery, &c. 218, 241
69; becoming popular 99: constitution-	Ven Courtlandt, gen. 222	Wingate, J. jr. 324
al 130: on a reduction of the duties	Vermontelections 66, 74, 237, 356:	Winters of the olden time 341
249: Mr. Clay's remarks on 337: address of H. N. 410, "free trade" ad-	legislature 149, 161; governor's ad-	Wirt, William 83, 131
dress 136: Russian and Prussian ta-	dress 228: sheep in 219: season in 435	Wood, price of 282
riffs noticed 453: see addenda, edito-	V ce presidency 2	Woodbury, Levi 150
rial, manufactures, and particular	Virginia-relative to the insurree	Woodman, Ira 162
heads.	tion of the blacks 4, 19, 35, 162; fresh	Woolprices and sales of 19, 66,
Ten-party of women 328	disturbances 413: elections 1,36: Rap-	104, 132, 161, 163; concerning 218,
Temperance, experiment of 326	pahannock canal 163: judge Summers	251, 282, 339, 379, 435
	227: James Barbour 259: Wheeling	Worcester, Mr. see Georgia.
	447: militia law 449: extract from go-	Working men 132
elections 1, 17, 36, 15th various pro-	vernor's message 250: concerning the	Wreck of a slave ship 155
ceedings about the U.S. bank 153	stave question, tree negroes, &c. va-	Y Y
162, 266, 326: resolution on the tariff	rions 266, 273, 340, 368, 393, 473	Yankees, doings of 149
253: major Eaton at Nashville 221:	Voyage, rapid 449	Youthful depravity 224

## NILES' WEEKLY REGISTER.

FOURTH SERIES. | No. 1-VOL. V.

BALTIMORE, SEPT. 3, 1831,

[Vol. XLI. WHOLE No. 1,041

THE PAST-THE PRESENT-TOR THE PUTTINE

#### EDITED, PRINTED AND PUBLISHED BY H. NILES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN ADVANCE.

Br P Because that the editor has been for several days ! much indeposed, and on account of the sudden and awhitly severe illness and consequent decease of a much beluved son, Robert Duer Nites, aged nearly 22 years, who died on Friday morning last—he has not been enwho died on Friday morning last—he has not been en-abled to do more than give general directions as to the business of the present sheet, and was compelled also to defer a notice of very many communications of a private nature, and of others concerning matters of public interest.

The paper, (for the sake of uniformity), is dated on Saturday, the 3rd Sept. though not really published un-til Tuesday the 6th-and contains only articles of intelligence up to its date, all the matter being prepared at the usual period.

ELECTIONS. The following is the result of the late congressional elections in North Carolina-

Next congress. Last congress. William B. Shepard, Wm. B. Shepard, John Branch, Thomas H. Hall, Willis Alston, Thomas H. Hall. Jesse Speight, Robert Potter, Jesse Speight, Robert Potter, Hobert Potter, James J. McKay, Lauchlin Bethune, Daniel L. Barringer, Edward B. Dudley, Edmund Deberry, Daniel L. Barringer, Augustin H. Shepherd, Augustin H. Shepherd, Abraham Renctier, Henry W. Conner, Samuel P. Carson, Abraham Rencher. Henry W. Conner, Samuel P. Carson, Lewis Williams, Lewis Williams.

Mr. Conner beat his opponent, Mr. Shipp, 854 votes— Mr. Bethune beat Mr. Deberry, late member, by only 9 votes; and Mr. W. B. Shepard beat Mr. Wheeler by 1,121 votes. In the other districts the opposition to the 1,121 votes. In the other districts the opposition to the gentlemen elected was not very large. Kentucky election. The Lexington (Kentucky) Reporter gives the final results of the Kentucky election

to this effect:-

Con	gressional districts.	Members	of the Leg	sesature
			Clay.	lackson
1. M	arshall's district (1	senator C.)	6	1
2. A	llan's district (1 sen	ator C.)	6	0
3. La	tcher's district,		9	1
4. T	ompkins' district,		6	3
5. CI	silton's district (1 se	enator C.)	5	5
6. Le	compte's district (1	senator J.)	6	3
7, 1)	miel's district (2 ser	ators; 1 J.,	1 C.) 5	4
	schliffe's dist. (2 se			3 3 4 4
9. G	sither's district,		3	5
	huson's district.		2	6
	dair's district.		2	5 6
12. Ly	on's district, (1 sen	ator C.)	2	6
			_	_
	Representatives		56	44
	Senators		6	3
	Members of congr	ess .	4	8
			_	_
	FF7 - 4 - 8			

The member from Davis and one member from Hardin and Mead, are pledged to vote for Mr. Crittenden, for the United States senate.

Senators elected. 6 National republicans. 3 Jackson. John Rodman, Robert Taylor, David Harris," W. P. Fleming. Benjamin Hardin, James Guthrie." James Clark,"

James Gholson." Wm. R. Griffith,\*

[It turns out that Mr. Chilton has not been elected, though bitherto elected by a Jackson majority of 1,900

\*New senators. Vol. XLI.-No. 1. votes. He has now been beaten by Mr. Hawes, by a majority of 9 votes. For Hawes 3,861; Chilton 3,852.] The following is a complete list of the representation

in the next congress from the state of Tennessee, 1st district John Blair. Re-clected. 2nd do. Thomas D Arnold. In place of Lea. and do. James Standiler. Re-elected.

Jacob C. Isaacks. William Hall. Do. Ath ilo. In place of Desha. Sil ilo. Gete do John Bell. Re-elected. 71h

do. James K. Polk. Do. Cave Johnson. Sth do. 1)0. do.

9th William Fuzgerald. In place of Crockett, Mr. Blair was strongly opposed by Mr. Carter, but the latter was beaten by a majority of more than 500

Alabama elections .- Mr. Lewis is re-elected to con-Mardes 4,247—Garth 3,597—Baylor (late member) 2,749. Mr. Mardes supposed to be elected. Mr. Clay, the former representative, is re-elected in the remaining district.

Indiana election. The Lawrenceburg Palladium, a Indiana election. The Lawrenceburg Palladium, a very decided administration paper, gives us the follow-ing additional returns of the late election in Indiana— 39 Clay members of the house of representatives and f of the senate, and 30 Jackson of the house and 5 of the

senate have been chosen.

In the first district for congress, Mr. Boon received 10,530 votes and Mr. Law 10,306; in the second district, Mr. Carr had 4,843 votes, and Mr. Wick 4,539; in the Mr. Smith, (also Clay) 4,846 votes—and Mr. McCarty, Jackson, 5,970 votes. The latter eleved, though the other two had 2,000 votes more than he. The returns are not complete, but the Palladium says that Messra.

Boon, Carr and Mc Carty are chosen.

We have already mentioned the election of Mr. Noble, as governor; the Palladium supposes that Mr. lace, also a friend of Mr. Clay, has been elected lieut, governor by a majority of from 2,000 to 3,000.

The "Illinois Intelligencer" of the 13th Aug. says that Mr. Duncan has been re-elected to congress by a large NIT. Difficial has been re-elected to congress by a large majority—bit, as there were several candidates, nothing certain can be inferred, as to rational politics, from this election. There were six candidates, Mesara. Dunean, Coles, Breeze, Turney, Field and Bond—three or four of whom polled heavily in certain counties of the state. For instance in Madison, the first on the list, the whole number of votes was 845, of which Mr. D. had only 255, being beaten by Mr. Coles and nearly equalled by Mr. Breeze, and two others received 102 votes. Nothing is said of the political character of the legislature.

Mr. Newton has been elected to congress from the Nortolk district, Virginia, by a majority of 61 votes, over Mr. Loyall, late member.

The fullest return that we have seen, shews that Mr. Fuzgeruld had obtained 7,647 votes, and Mr. Crockett 7,098 in Tennessee,—three small counties were yet to be heard from. The former is elected.

BUTWE have often eautioned our readers as to the difficulty of ascertaining truth in the various articles of news that we are in the habit of publishing. We must altogether retrain from giving information on any sub-ject until it becomes stale, by undoubted results,—or measurably incur the risk of error, like other publishers of periodical papers. It is sufficient that we endeavor to collect the facts-and every body knows that errors to contect the instem-and every body know that errors in fact, (no matter by whom made), are never permitted to remain one publication uncontradicted, if observed by the editor. This note is added because of a rude remark, and fulse insinuation, made in another paper—which, perhaps, may be mentioned hereafter.

The "Standard" says-The collowing ridiculous tirade, respecting the state of civili-zation in this country, is from the July number of the London Monthly Magazine. The harangues alluded to, are those spoken at a recent meeting of the Prison Discipline society:

"Passing over the worn-out common-places of those harangues, the praise of American prison affairs, as if there could be any rational comparison between England, crowned as she is with temptations to pillering, and loaded with a population of six millions of a mercantile and manufacturing race; and America, where is cantile and manulacturing race; and America, where in nothing to steal but grass or water; where the spade is the only thing of value, and the land the only thing out of which a men can live; America, where every man must be his own tailor, carpenter, lawyer, and rearer of eabhages; where, if a man must devise the stealing of a pair of bi ecches, he must first stay and strip the weater, indemuch as no man, from the president downwards, has a second pair; where the arts of life consist in planting maize and potatoes, and the luxuries of life consist in boiling them into puddings; where there are more acres of land than knives and forks; a looking glass is a show that congregates the population of a province; a picture has never been seen; a salt spoon is a phenomenon which no American traveller, who values his reputation for veracity in the states, has ever ventured to announce; and it is notorious, that a ten service of French plate accumulated the unpopularity of the Ademses to such a degree,

Glorious John Bull! "Chaos would come again" without thee! and "the stars grow ilim with age" with thy decline in pomposity. In contrast with the preceding, it is pleasing to observe such generous remarks as the following, from our English brethren. They are copied from the London World. While they show the powerful action of good men on a community, they in ite the union of the pious on both sides the Atlantic in noble efforts for the salvation and liberties of the world:

that it overthrew that ancient dynasty, and federalism along with it, forever."

"Who taught the proud king of Egypt, and through him all the monarchs of the earth, the folly of trusting to arts and arms as the means of keeping those in cruel bondage who ought to be free, but the meekest of men? Who taught the haughty and vain Nebuchadnezzar, and his still weaker successors, that there is a greater power than that which belongs to great armies and vast dependencies, but the pious yours who despised the com-mands of kings when they interfered with the commands of God? And who are now disconcerting all the wily politicians in the world, and presenting an example of good government, which is drawing under its protection the most enterprising, skillul, and industrious families of the indiversely and acting bounds to tyranny every where, but the descendants of the pilgrim lathers, whin, driven from their own land, became blessings to that new world in which frections and pure christianity appear at length to have found a resiting place, a secure abode?

"Let no triend of freedom complain of our attention to our brethren of America. They are enlightened, gener-ous and free, and must guide the destinies of the world, ous and free, and must grade the descenses of the word, unless we can provoke m our countrymen a spirit of no-ble and generous emulation. We would have England and America stimulate each other, and combine their influence to extend to all mankind the blessings of Christian tian knowledge, and its fruit, universal liberty. To this end, both countries must educate the young, promote the observance of the Sabbath, honor the faithful ministers of religion, and abolish slavery all over the world. They may give law to mankmil, if they please; but they must be just laws, and promotive of universal love. What are the United States of America but a part of England across the seas? They form the habitations of our brothers and our sons. Theirs is the land of freedom, and we may well be proud of our connection with it. We exactly the season of the s tian knowledge, and its fruit, universal liberty. us, and together we are struggling against the usuried and hateful, but short-lived, dominion of brute lorce over intellect and science; of craft and despotism, where wis-dom and virtue should reign supreme, And we know

we shall triumph. The darkness must be dispelled by the light, falsehood give way to truth, and righteous government prevail over ounression; for the influence of our Redeemer begins to be felt, and "the Light of Israel shall be for a fire, and his floty One for a flame, and it shall burn and devour the thorns and briers in one day,"

THE GOLD REGION. The Charleston Gazette says-We have been favored by a friend with the following extract of a letter from Charlotte, N. C. dated June 14, which gives us a brief and passing glimpse into the gold region of that quarter. The writer says-"The amount of money expended here is enormous, and the works are now yielding a handsome supply of gold. I went down a ladder about one hundred feet, perpendicular, and thence along galleries well-braced on the sides, and roofed with boards over-head, for some hundred feet further. I then lullowed, in a slanting direction, the vein to the apot where the miners were taking the ore from the earth, and sending it aloft by means of buckets which are drawn up by mules. Two hands did about 60 bushels of one per diem, and the chevalier Rivafanoli, informs me that when he gets his new mill into opera-tion, he will make about \$500 worth of gold every day."

THE VICE PHESIDENCY. The exclusive republicans of New York, and the exclusive republicans of Pennsylvania, are on the verge of a violent quarrel for the vice-presidency—the first being for Mr. Yan Buron, and the last for almost any one clse.

Mn. Mauison. We had the pleasure of conversing, a day or two age, with a gentlemen who had just before spent a day in the company of Mr. Madison, at his seat in Orange county, Virginia. Our readers will be glail to learn, that the venerable ex-president is in fine health, and in full possession of all his faculties of mind and body, with musbated cheerfulness of spirits, having before body, with managed electriumers of aprile, having before him the prospect of living to a good old age. His years at present number more than eighty; but his mother lived, if we mistake not, to nearly a hundred years, and we have reason to hope that her son will for many years continue to exhibit to the present generation, an illustri-ous living example of the pure and virtuous character of the statesmen to whom we are indebted for our present admirable frame of government. It is, indeed, a glori-ous moral spectacle, to see the father of the constitution receiving the homoge of the respect and veneration of the children of those who have grown up and prospered under its wings.

There are many of our readers who will rejoice to learn, that their old unvarying and kind friend, the exlearn, that their old industrying and the same health collect consort of Mr. Madison, is in the same health and suigsts as himsell.

[Nut. Intel.

CHURCHES IN THE UNITED STATES IN 1831. It has been ascertained that there are now in the United States more than 12,000 churches. The principal religious denominations are Baptists and Methodists, who have tonommations are Dajitites and Memodists, who have to-gether 4,484 churches; the Presbyterians lave 1,472 eliurches; the Congregationalists lave 1,381 churches; the Episcopalisms are also numerous, and have 922 churches; the Roman Catholies have 783 churches; the Dutch reformed have 602 churches; the Friends have 462 societies; the Universalists have 296 churches; the Lutherans have 240 churches; the Unitarians have 127 churches; the Jews have 96 synagogues; the Calvinistic Bantists have 84 churches; the Swedenborgians have 73 churches; and the Moravians 56 churches.

IRELAND. We have many "tales of horror" from this

IRELAND. We have many "tales of horror" from this unhappy country—the following is a specimen: A summary of trish intelligence given in a London paper presents a frightful picture of the state of some parts of that country. In the country of Galway, a man suspected of being an informer, was murdered and his eyer taken out by the assassims. A Mr. Shiel, of Shandarry, in the same country, was wylaul and bester with stones till his skull was tractured. He was left for dead, and shortly afterwards expired. The magistrates of the county of Galway hall a meeting in which it was unani-mously resolved, that the ordinary administration of the

CURIOUS MARRIAGES IN IRELAND. In the course of a trial at the Roscommon special commission, evidence was given relative to the marriage of a Catholic female with a man who had been a Protestant, which, under the extraordinary (still existing) law in Ireland, subjects a Catholic priest to a penalty of five hundred pounds. The witness thus described the curious evasion of the law adouted on this occasion: - "He was married at twelve o'clock at night; did not see the priest, who was in one room (the vestry) and he in another; the words of marriage, "for better for worse," were said in the room, and saw only the hand of a man put through an aperture of the door; saw a stole and a white shirt on the man; the elerk of the chapel was present; the ring was put on his wife's finger by the clerk, and not by the priest .-Went to mass to please his wile, or he would get 'tuckass' (hard treatment.) Saw no white shirt, but 'luckas' (hard treatment.) Saw no write surt, our part of his arm, which was put through the opening of the door, in giving aspergos in water.
[We had thought that the act of emancipation had done away with all despotisms in religious matters.]

RUSSIA. This mighty empire is said to be much dis-turbed by the discontents of the people. The day, we trust, is at hand when the terrible despotiam and abject winevery that prevails, will be abolished. Poland may feare

THE CHOLERA MORBUS has broken out at St. Peters-burg—the imperial family had abandoned the eity, and the population was in "a state of complete conster-nation."

THE POLES. We translate the following address of the French central committee, in layor of the Poles, to the electors of France, from the supplement to the Cour-rier Francais of the first of June last.

"Gentlemen: Preparatory assemblies are taking place mong you, in order to fix your choice between the different candidates for the deputation; the day of election will, also, soon arrive, and you will meet in order to give deputies to France. We imagine, gentlemen, that we should be conforming to your feelings by asking of you to cause these different meetings to result profitably for the Polish cause. It is not necessary for us to explain to the flower (l'elite) of the French nation the right which our Polish brett:ren possess to our affection. It is the desire of all in France who are the friends of honor and their country, to seize every opportunity of showing to the world our admiration of Poland, and our wishes for her triumph. By this strong claim, the committee has reckoned on your co-operation. They propose to you to open subscriptions, the produce of which shall be deatined to aid the cause of the Polish heroes, in the dreadful contest which they are waging so gloriously. It will not be useless to unite with the nomination of

It will not be useless to unite with the nomination of men who are about to give a constitution to France, an action serviceable to that generous nation, who are contending so courageously for independence and liberty."

[This address is signed by seventy-four of the most crainent names of modern France, including that of the patriarch of liberty—LATATETE.]

GEOGRAPHICAL ITEMS. Amount of the population and of the extent of territory of the five principal monarchies of Europe:

	Square miles.	Population.
Russia, in Europe,	75,154	47,660,000
Out of Europe,	292,339	11,714,000
England, in Europe,	5,554	21,400,000
Out of Europe,	176,971	115,141,000
France, in Europe,	10,086	30,749,000
Out of Europe,	667	469,000
Austria,	12,265	29,691,000
Prustis,	5,014	11,400,000
Total,	578,044	268, 224,000

Supposing the earth's surface to be 2,125,000 square miles, and its inhabitants to amount to 938,000,000, then

laws was not enough to put down the disturbances in these five monarchies occupy nearly a fourth part of the that county. rope having 155,220 square miles, and a population of 206,780,000 souls, the five powers possess more than two-thirds of its territory and of its population. The two-thirds of its territory and of its population. The empire of China, however, is more extensive and more densely peopled than all Europe. The Spanish monarchy before its dissolution, reckoned more than 30 millions of people.

	1					
t		NATIO	NAL MILES			
8	Mile of Russia	750	geometrica	paces.	or 1,100	vds.
ŧ	" Italy	1,000	44	44	1,467	***
,	" England"	1,150	44		1,760	44
	Scotland & Ireland	2	** .	**		**
١	The small league	2.000	**	68	2,953	66
-	The mean league	2,500	66	٠,	3,666	64
1	The great league	3,000	**	**		**
1	Mile of Poland	3,000	44	4.6	4,440	66
.	" Spain	3,348	4.6	44	5,028	44
Ч	" Germany	4.000	44	4.6	5,866	66
ı	" Sweden	5,000	44	44	7,233	44
1	" Denmark	5,000	44	44	7,233	66
١	" Hungary	6,000	44	66	8, 84)0	64
.						

THE EVENTS OF A YEAR. Fraser's Magazine for July has "a word at parting," which shows how much more durable that publication is, in these days of change, than thrones and sceptres.

than thrones and seeptres.

A little year ago, and George IV. ruled in England and Hanover-Clustles X. in France-Pius VIII. in Rome-Charles Felix in Sardinia-Francis Janvier in Naples—Anthony in Saxony—Pedro in Brazil—Charles in Brunswick—William had the kingdom of the Netherlands-Nicholas was undisputed autocrat of Poland. Where are they now?-in the grave-in exile-or shorn Where are they now in the grave-in calle-or shorn of their dominions. And yet the revolution has not much more than begun. A new apirit has been unchained, and he hovers over the world, whether for good or for evil. We have had no comet shaking its horrid hair for evil. We have had no comet shaking its horrid hair above us, but earthly portents of direr kind, with fear of

abore us, but earthly portents of direr kind, with change, are perplexing monsrchs.

"New powers from home, and discontents at home, Meet in one line: and vast confusion with kinds (As doth a raven on a sick-fallen heat!)

The immisent deesy of wetched pomp.

How happy he, whose cloak and cincture can Hold out this tempset."

#### FOREIGN NEWS.

An arrival at New York, brings Liverpool dates to the 14th July, inclusive.

#### ENGLAND.

The reform bill was strongly opposed in every stage of its progress, though the opposition seem to decrease, in numbers, if the successive votes upon its details are to be taken as the criterion.

I ne circumstances of the massacre at Newtownbarry, was to be inquired into on the 13th July. It was contemplated to equalize the duty on wines. Mr. Brougham had for the present abandoned his bankrupt court bill. Lord John Kussell has been honored with the freedom of the city of London, Sir Walter Scott was dangerously ill. The trade of Liverpool was remarkably brisk. The circumstances of the massacre at Newtownbarry,

FRANCE.

It is reported that the French ministry intend to declare in favor of Poland alter the elections are completed, and that they will give up and renounce hereditary peer-age. These movements have rendered them very popular, and will enable France to assume an attitude worthy of her character and the expectations which the revolution of July 1830 gave birth to.

A proclamation had been circulated by the agents of the dutchess of Berri, in France, from Charles the X. enjoining upon the French to rally round the standard of Henry V. The Carlists were making great exertions to concentrate a force in La Vendee.

<sup>&</sup>quot;In surveying, called eighty chains.

Great numbers of French people of rank have gone to mounted inditionen from North Carolina, who repaired England, in consequence of which the government ento Mrs. Whitehead's to view the havoe which these forces the streets earth at the ports. The coins struck wretches had made, on being assured of the fact, fired in England, for circulation in France, amount to £500,000: 150 Carlists had been arrested in Paris.

The governments of England and France are about to apply themselves seriously to the adoption of measures for the suppression of the slave trade.

BELGIUM.

The Belgian deputation, charged with the definitive offer of the erown to prince Leopold, had arrived in London. In their passage through the towns of Flanders. they were every where enthusiastically received by the people.

RUSSIA AND POLAND.

The cholers is spreading over Europe. It had appeared at Twer, Jarozlaw, Nesbury, Novogorod and in the government of Witepsh. The defeat of general Rudiger is confirmed. The death of Constantine is considered a fortunate event in Poland.

SPAIN. A Spanish army of 20,000 men has been ordered to the frontiers of Portugal.

INSURRECTION OF THE BLACKS.

We shall proceed to lay before the readers of the Register, all the additional particulars which have reached as since our last, on the subject of the insurrection in Southampton county, Virginiag and we are happy to inform them that, through the energetic measures adopting the configuration measures adopting the configuration of the configura ed by the executive, and the prompt and efficient steps taken by the authorities of the neighboring counties in that state, those in North Carolina, and by the officers and men of the army and navy of the United States on the Norlolk station—the insurrection has been complete-ly put down; all of the negroes engaged in it, with the by put down; an of the negroes engaged in it, with the exception of two or three, being either killed or captured. Those who had, up to the latest advices, cluded the vigilance of their pursuers could not much longer escape, and have ere this doubtless been taken. There seems to be some discrepancies in the several accounts as to the origin or object of this bloody movement among the blacks. A letter from Winton, N. C. in the vicinity of the disaffected district, states that from the best information then in possession of the writer, three white men and four slaves, the latter the property of a gentleman by the name of Travers, rose upon him about an hour before day on Monday morning, the 22:1 ult. and killed him and every other white member of his family thence proceeded to the residence of Mrs. Catharine Whitehead, a lady of wealth, and murdered her and all viniteriou, a rang of weatto, and murdered ner and air the white members of her family, in all evern persons. The eries of Mrs. Whitehead and her family brought to their assistance a near neighbor, Mr. Williams, who found Mrs. W. butchered with an axe, her son, (a minister of the goipel), with his head severed from his budy, and a young lad lying dead in the fire place of her chan-ber. Mr. Williams immediately returned to his own dwelling; but before he reached it he met one of his negro boys coming with the horrible iddings, that the flends had been there, and murdered his wife and chil-flends had been there, and murdered his wife and children in his absence!

The Norfolk Herald states that it originated in the party of whites and blacks alluded to above—that they were mere marauders bent on plunder; but having steeped their hands in human sacrifice, became inturisted, and, like blood hounds, pursued the game of murder, in mere wanton sport. As they followed their desolating career from family to family, they pressed all the negro men whom they found into their ranks, and thus accumulated a force of between one and two hundred.

A more recent account from Winton, N. C. states that the insurrection commenced with, and was arranged that the studie-claud commenced with, and was arranged by, four engro presshers, who had been permitted to hold their meetings by day and by night, and who sought the production of the studies of the slaves. As a superconduction of the studies of the slaves. As a superconduction of the studies of the stud where one of the skirmishes occurred; and after being repulsed he returned home and pleaded that he had

wretches had made, on being assured of the fact, fired on him, and he fell dead near the remains of his mistress.

The writer of the Winton letter states that the number of victims had been reduced to 55, many heretolore sunnosed to have been murdered, being secreted in the

woods and subsequently found.

The troops from Norlolk, Riehmond, fortress Monroe, and other remote places, had returned to their respective residences. The marines and seamen under commodore Elliot, from the U. S. ships Natchez and Warren, had also returned to their vessels. The leaders of the insurrectionary band were nearly all taken prisoners or killed. The general feeling and conduct of the slaves in the neighboring states, seem to indicate that there was no concert. A full disclosure had been made by a negro by the name of Youn, who was badly wounded and capected to due, he, however, he on the receivery. The editor of the Norlolk Heraldy who is a very discreet and sound judging gentleman, inclines to the opinion that the insurrection dri not rest, on any previous combination, and maintains that this is evident from the small number of adherents which the ringfrom the small number of adherents which the ring-leaders, with all their threats and persuasions, were ens-bled to enlist in their cause. The slaves, he affirms, throughout the country are generally well affected and even shitful to their masters. He relates the following instance of fidelity in the slaves of one gentlemen whose house was attacked; remarks that he gives the story as it was related to him, and it true, "great indeed will be the desert of these noble hearted Africans."

"A pleasing instance of this is said to have occurred while the black demons of slaughter were executing their horrid work. Before they had received any considerable increase, and in the early stage of their butcheries, they approached the dwelling of Dr. Blount, with the fell purpose of murdering him and his family, when the fell purpose of murdering him and his family, when they were met by the doctor's own servants, who re-solutely opposed their entrance, declaring that they would lose every drop of blood in delence of their ma-ter and family. The brigands still persisting, a battle ensued in which they were finally routed, leaving one of their party and two horses behind them."

On the night of the 23d ult, the Southampton militia had three skirmishes with a gang of from 40 to 50 ne-groes, the latter retreating each time. In one account it is stated, that one of the militia, of the name of Pope, it is stated, that one of the militis, of the name of Pope, was killed, in another that the whites sustained no loss whatever. The negroes made three attempts to cross whatever. The negroes made three attempts to cross a party of militia who were stationed on the opposite sade with a piece of artillery. A party of 4 militiantes, who had been sent to reconnotire the blacks, came up with a party of about 20 of them, and after a sharp engagement, succeeded in killing three or lour, and taking several prisoners, when the remainder fled. The great several prisoners, when the remainder fied. The great object of the negroes, after the rallying of the milias, object of the negroes, after the railying of the minus, appeared to be to reach the Dismis Swamp, but such was the vigilance of the lormer that nearly every one was either shot down or captured. Many of the blacks were well mounted, and armed with bind and other guns, and axes. The roads were strewed with the car-eases of the negroes killed, and up to the 25th ult. neither these nor the corpses of the unfortunate whites had been buried; arrangements were, however, making for their interment.

The different accounts are conflicting as to the num-ber of negroes killed, and, indeed, under the circum-stances in which they have been written, it is not to be

stances in which they have been without wondered that they should be so.

We gather from letters published in the Richmond Whig of the 29th ultimo, the lullowing statements. A letter from the senior editor of that paper, who is on the spot, states that the number of the insurrectionary nespot, states that the number of the insurrectioning acroes had been greatly exaggerated, but that it was hardly within the power of rumor itself to exaggerate their atrocities: whole families, father, mother, daught ters, sons, sucking babes and school children, were butch-ered by them, thrown into heaps, and left to be devourrepulsed no returned nome and pleaded that he had ered by them, thrown into heaps, and lett to be devou-been pressed into the ranks of the negroes; but being ed by hogs and dogs, or to putrify on the apot. At Mr. recognised by some gentleman from Southampton, as Levi Wallers, his wife and ten school children were the leader of the gang mentioned above, a party of ten murdered—he himself was absent, but approaching while the dresillul scene was acting, was pursued and escaped the could be willing to subject gen. Jackson to such a with difficulty into a march. How, or with whom, the state of things:—that he could not have forgotten ho insurrection originated, is not certainly known. The much gen, Jackson had been distressed by the calumprevalent belief is, that on Sunday the 14th ult. at Barnes hurch, near the Cross Keys, the orgroes who were observed to be disorderly, took offence at something, and that the plan was conceived and matured in the course of the week. At Mr. Wallers' one child escaped from the ruthless fangs of these monsters by concealing her-self in the fire place, and another was found alive who was badly wounded and left for dead by them. He has accompanied his letter with a list of the killed, amounting to 62, but it is not yet ascertained to be correct. He thinks that the insurgents never exceeded 60, and that twelve well armed and resolute men were competent to have quelled them at any time.

Gen. Eppea, who is in command of the troops, reports under date of the 28th ult. that all the insurgents except Nat Turner, the leader, had either been taken or killed. On the 29th Gen. Broadmax reports to the governor that all was quiet and free from visible marauders; he thinks all have been killed or taken except four or five. He states that Nat, the ringleader, who calls himself general, and pretends to be a Baptist preacher, declares to his comrades that he is commissioned by Jesus Christ, and proceeds under his inspired directions-that the late singular appearance of the sun was the sign for him—be is not taken, and the account of his being killed at the affair of the bridge is not correct. The general thinks "that there has existed no general concert among the slaves-eircumstances impossible to have been feigned, demonstrate the entire ignorance on the subject of all the slaves in the counties around Southampton, among whom he has never known more perfect order and quiet to prevail." He believes "that at any time 20 resolute men could have put them down."

He compliments, in terms of strong approbation, "the admirable conduct and spirit of the militis, who have every where turned out with the utmost promptitude, and given the most unquestionable evidence of their ability, isstantly and effectually to put down every such attempt. The samilies who had sought safety by flight had generally returned to their homes.

#### MR. BRANCH'S EXPOSITION. From the Rounobe Advocate.

Enfield, August 22, 1831.

Dram sim: Of the causes which led to the dissolution of the late cabinet, I have never entertained a opinion, and leave you to judge of them as well or ill founded. Before the president had nominated major Eaton for the war department, and while the subject might be supposed to be under consideration, I took the liberty of stating to gen, Jackson candidly my rea-sons for believing the selection would be unpopular and unfortunate. I reminded the president that he knew I was the friend of major Eston, and personally prefered him to either of the others proposed for his eabinet, and, of course, nothing I should say on the subject ought to be construed into an intention to injure him. (maj. Eaton), but, on the contrary, to save him from in-finite vexation and annoyance, which, it was too plain, were in store for him, if he took a seat in the cabinet under the circumstances in which he was placed. The president admitted that charges had been made against the character of Mrs. Eaton, but insisted on it they were slanders, and that he ought not to notice them. did not perceive at the time that he was hurt by the frankness or nature of my communication, though I at-terwards learned that he had become offended with, and had disearded from his acquaintance several of his old and best friends who had used the like freedom of speech on this subject. My remonstrances, it is known, were without effect, and maj. Eaton was soon after for-mally appointed secretary of war. Belore this was done, however, I made an appeal to major Eaton himwelf, and without reserve disclosed my apprehensions to him, adding that I did not pretend to intimate that there was the least truth in these reports, but, if utterly false, was the less truin in these reports, but, if accerty since, they would still have an effect on the president's peace and quiet, as he must know what use the opposition would make of it:—that I believed it was impossible,

state of things:-that he could not have forgotten how nies and ill reports which had been formerly circulated about Mrs. Jackson:—that, since the death of that lady, those reports had subsided, and would soon be heard of no more:—that general Jackson knew the same kind of reports and imputations had prevailed with respect to M. s. Euton:-that if he (major Eaton) entered into the eabinet, the enemies of the president would not fail to make a handle of it, and thus revive, in the general's bosom, recollections which could not be but painful and distressing, and which could not fail to disturb the tranquility and usefulness of his administration. My re-marks were received apparently with the same kindness and courtesy which characterised my manner; but they no doubt laid the foundation of that hostility which afterwards became active and unextinguishable. From the moment of major Eaton's appointment, gen. Jack-son began to use his utmost efforts to bring Mrs. Eston into public favor and distinction. He frequently spoke of the neglect Mrs. Eston received when she attempted to appear at public places. He did not fail to intimate that it would be a most acceptable service rendered him, that it would be a most acceptable service rendered hun, if the members of his cabinet would sid in promoting this object. I felt greatly embarrassed by such appeals to myself. It was mapossible for me to comply with his wishes on this point, but it was, nevertheless, painful for me to say so. In any other matter [in] which I for my with a proper respect for myself and the feeling of my family, have complied with an intimation of his desire, no one would have done so more cheerfully than myself. By way of diverting his mind, I several times spoke of the difficulty he would experience in attempting to regulate the intercourse of the ladies; that they were, in matters of that kind, uncontrollable and omainotent; that he would find less difficulty in fighting over again the battle of New Orleans. Soon after it was as-certained that Mrs. Eaton could not be received into the society of the families of the members of the cabinet, major Eaton's conduct to me discovered an evident change in his friendly feelings, and became cold, formal and repulsive. I repeatedly threw myself into his company, and endeavored to assure him that I still had him, and wished for opportunities to convinee him of the sincerity of my professions. In this course there was no gnile—no view but that which my words fairly imported. the most sincere desire to be on friendly terms with

I most sincerely regretted the state of public feeling towards Mrs. Eston, but it was not within my power to control or soften it. It was a sentiment resting in the breast of the temale community of Washington city and the nation, which was not to be suppressed or obliterated. After this, major Eaton's enmity to myself became every day more and more apparent. I could hear frequently of declarations to this effect, and of his detramination to be revenged. It is true these reports came to me circuitously and indirectly, but I could not, from circumstances, doubt their truth

At length came the mission by col. Johnson, the substance of which has already been given to the public by Messrs. Ingham and Berrien. I will only add to their statements that I distinctly understood col. Johnson to say that he came to us from the president of the United States, authorized by him to hold the interview; and unless our difficulties in reference to Mrs. Eston could be adjusted, that Mr. Ingham, judge Berrien, and my-self must expect to retire. When he closed his rebe adjusted, that Mr. Ingnam, judge occired, and my-self must expect to retire. When he closed his re-marks, I well recollect rising from my seat, and with an earnestness of manner which the extraordinary character of the communication was so well calculated to produce, observed, among other things, that no man had a right to diotate to me and my family in their domestic relations, and that I would submit to no control of the The colonel undertook to reason the matter with us, by observing that although it might be impracticable to establish intimate and social relations between our to enablish browner and secur relations overwen our families and Mrs. Ecton, he could see no reason why she should not be invited to our targe parties, to which every body was usually invited, Tom, bick, Harry, &c. With this concession, he said, the president would be satisfied. We protested against the interference of the

I waited until Friday, a day having intervened, in ex-pectation of hearing from the president, but receiving no message, I walked over, in hopes that an opportunity would offer to put an end to my unpleasant state of feeling. I found the president alone. He received me with his wonted courtest, though evidently but ill at ease. In a few minutes the absorbing subject was introduced. Among other things, he spoke in strong language of the purity of Mrs. Eston's character and the baseness of her slanderers, and presently mentioned a rumor which he said had been in circulation, of a combination to exclude her from society. Several parectionination to execute ner from society. Several par-ties, he said, had been recently given, among others, three by Mr. lightam, judge Berrien, and myself, to which she had not been invited; and from this it was strongly inferred that we had combined to keep her out of society. I told him, that, so far as I was concerned, 1 believed my family were doing no more than the members of congress, the citizens of Washington, and visiters to the seat of government, had a right to expect from me as a member of his cabinet. It was certainly in accordance with universal custom; and that, as to a combination, I knew of none; that I could never acknowledge the right of any one to interfere in matters affecting the private and social arrangements of my family; and that, before I would be dietated to, or con-trolled, in such matters, I would abandon his cabinet, and was ready to do so whenever he desired it, and added several other strong remarks of a similar character. He assured me, in ceply, that he did not desire it; that he was entirely satisfied with the manner in which I had discharged my official duty, and that he did not claim the right to dictate to us in our social relations, but that he felt himself bound to protect the family of major Eaton, as he would mine under similar circumstances. I then informed him that col. Johnson had formally announced to Mr. Ingham, judge Berrien, and myself, that nonnecu to Nar. negrossin, judge Detrach, and myseut, mas it was his intention to remove us from office for the cause mentioned, and I had learned from Mr. I. the censing before, who derived his information from the colonel, that he had gone so far as to make temporary arrangements for the departments, viz. Mr. Dickins for arrangements for the departments, viz. Mr. Dickins for arrangements for the departments, via. A some one else for attorney general. This the president denied, and said he would send for colone! Johnson, and for that purpose called for a servant. When the servant that purpose carried to a sunnecessary to send for the co-come, I observed it was unnecessary to send for the co-lonet—his word was sufficient. Well, said he, if you are satisfied. I told him I was. We continued our conversation for some time. I attempted on that occa-sion, as I had done several times before, to convince him of the impropriety of his interfering at all in a question of such a delicate character, but his feelings were evidently too much entisted to weigh any reasons which might be offered.

I have already informed the public that no paper was presented to me, or read to me, or altuded to having re-ference to the future conduct of the members of the enbinet. On this head I cannot be mistaken. I may add, that the president constantly insisted on the necessity of harmony among the members of the eabinet. eannot refrain from a remark upon this injunction of the president, that major Eston was the only dissatisfied member of the cabinet, the only one who carried complaints to the president of the conduct of others-the only one who employed his efforts to bring us to disonly one wine captured in current or using as to unseredit with the public or the president. Among the others the utmost civility and sociability prevailed. No one annoyed him, (major Eaton), or made any effort to embarrass the operations of his department or in any emonrass the operations of the department of a sin manner setted towards him as inimical, or deficient in respect; and yet, we are to be punished for the discor-dances of the cabinet. Can any decision he more arbitrary and union?

A tew days after this interview with the president, col. Johnson came into the navy department, and as he entered I rose to recieve him. With his wonted cordia-

president in any manner or form whatever, as it was a lity of manner he expressed his satisfaction at the pacific matter which did not belong to our official connexion aspect of our relations. I observed to him, with a smile, with him. Soon after which, soil, Johnson expressed that the president desired having authorised him to make his deep regret at this failure of his mission, and we separated. moredly replied, "Let it pass; I presented it to you in the most favorable light;" and, as he was hurried, here the conversation ended.

About the same time I had an interview with major Eaton, in the presence of judge Berrien and major Barry. This was brought about by the president. Major Eston, it seems, had complained to him, either directly or indirectly, that at a party given by my family, the last of September or the first of October, 1829, to the family of a most estimable friend and relation of nine, from Nashville, Tennessee, who was on a visit to Washington eity, the rev. J. N. Campbell, then of that place, now of Albany, N. Y. was among the invited guests. The circumstances were these:—Mr. Campbell who had resided in the city for some years previous to gen. had resulted in the enty nor some years previous to gen-plesson's inauguration, was the pastor of a church, and such was his reputation, that the president and three members of his subinet, viz: Mr. Inglanm, judge Ber-rien and myself, took pews, and became regular atten-dants at his church. In the course of his ministry he formed an acquaintance with my family, and occasionally visited them. He happened there while my friend Hill and his family were with us, contracted an acquaintance with them, and when the party alluded to was given, my daughters invited him. He attended, and took the erty of carrying with him his friend Dr. Ely, of Phis ladelphia, who had just arrived. I knew no more of his being invited than of any other person who happened to be present. He was, however, not the less welcome to be present. He was nowever, not the less were ontended on that account, nor was his friend Dr. Ely. Neither of these gentlemen require a recommendation where they reside. Mr. Campbell is known to be a learned, tiley resule. Dir. campuen a anowa to we a nearrent, pious, and most eloquent divine. Some short time after the party, I heard very much to my aurorise, that major Eaton and some of his partiasns were enraged with me, and threatened my destruction, because Mr. Campbell and Dr. Ely were at my house as shore stated. I could scarcely credit the report, until it was mentioned to me by the president, when I emphatically asked him who questioned my right to invite whom I pleased to my house. He testily observed, no person: but as there was some misunderstanding between major Eaton, Mrs. E. and Mr. Campbell, that he, (major É.) betton, offer. E. and ser. Composit, tust ne (major E.) thought it evinced hostility to him. At the interview above alluded to, between major Eston, judge Berrien, major Barry and myself, major Eston mentioned the circumstances of Mr. Campbell and Dr. Ely being at my house on the occasion referred to. I asked major Eaton in the most frank and friendly manner, if this was his only complaint, and if he would be satisfied provided I convineed him that he was in error, assuring him at the same time, that he had no right to consider me as being under the influence of unfriendly feelings towards bring that, on the contrary, he ought to know, my per-sonal attachment for him, before the cabinet was formed; and, further, if he would obtain the consent of his brotherin-law major Lewis, to read a confidential corresponthe taw major Leaves to read a continuous to respondence which passed between major L. and myself, in the winter of 1827 '25, on this disturbing subject, he would then be convinced of the disinterestedness and correctness of my course, and of its entire conformity to that triendship and good will which had so long subsisted between us. I might have gone further and said, that major Lewis, in the winter of 1827 '28, when there could be no unworthy motive to mislead either of us, considered Mrs. Eaton an unsafe associate for his daughter, although he was now endeavoring to induce gen. Jackson to drive me out of the cabinet, because I would not compel my daughters to associate with her. Major Eaton would not say whether he would be satisfied or not, and the explanation was withheld. But as we were about to separate, he offered me his hand in a more cor-dial manner than he had done for some months previous. I have no doubt that major Eston, in tendering his resignation, stipulated for the dismissal of the three offensive members of the cabinet.

Mr. Van Buren, also, I have reasons to believe, urged the adoption of this measure. This gentleman had discovered that the three members of the cabinet, (af-

terwards ejected), disdained to become tools to subscrie his ambitious asprings, and he determined to leave them as little power to defeat his machinations as possible. It is said to be a part of his character to tolerate politically no one, who will not enter heart and soul into measures for promoting his own aggrandizement: He had become latterly the almost sole confident and adviser of the president. How he obtained this influence might be a aubject of curious and cutertaining biquiry. But I shall not pursue it. I may add, however, that amongt the means employed, were the most devoted and assiduous attention to Mrs. Eston, and unceasing efforts to bring her into notice, especially with the families of the foreign Dinisters.

Finally, when the president found that his efforts to introduce Mrs. Eston into society proved abortive, be became every day, less communicative, and more and more formal in his hospitalities, until, liere could be no doubt, that, as to myself, an unfriendly induced had obtained an ascendency in his private connects, and the result shows that he had determined to sacrifice and the result shows that he had determined to sacrifice me to gratify the feelings of those whom I had offended, as stated above.

I may at some future time add to these views. At present I take my leave, with assurances of great respect and esteem. Yours, &c. JOHN BRANCH.

and enterm. Voirs, &c. JOHN firth North.
To Edmind B. Freeman, esq. Halifax town.
P. S. I have not considered it necessary to notice a clarge made in the Globe, against judge. Berrien, of suppressing a material part of a letter which I wrote to him, and my substituting another in its stend. If any person has been misled by this bold accusation of the editor of the Globe, and is desirous of obtaming correct information, he has my permission to read the whole letter, although it was not intended to be made public.

#### POLITICAL ITEMS.

The London Atlas gives a brief notice of the dissolution of our late cabinet, and condenses the whole subthe United States is in the fever of disunion. The president had two favorite secretaries, it appears, and two of whom he nothing thought. To get rid of the two last he pretented to discharge the first."

The Charleston Mercury of Aug. 1, says-We commence to-day, and shall conclude to-morrow, the exposition of Mr. Berrien, the late attorney general of the United States, in relation to the causes which produced the dissensions and the dissolution of the late cabinet. It presents a humiliating series of facts well calculated to humble us at home, and to dispurage us abroad, and, we are constrained painfully to say, to bring the administration of our government into contoniely and re-The circumstances thus disclosed are the natural and bitter fruits of the existence of a sceret cabal, destitute of all capacity and virtue, owing its origin to intrigue, corruption and favoration, and exercising, without a just responsibility, all the high functions of government. Mr. Berrien, we conceive, as a man of honor, having a just regard (as he very correctly avows) to the best inheritance he can leave his children, (an unspotted reputation) was compelled by the overruling necessities of self defence to make this disclosure. He has accomplished a most painful task in a manner highly has accomplished a most painful task in a manner highly creditable to his ability, integrity, and honor. His morrative bears the stamp not only of the most securacy of memory, and is sustained throughout by a moderation, dignity, and forbearance, which harmonise, power, with which, as a literary effort, his communication has been conceived and executed. We retrain the harmonise of the control tion has been conceived and executed. We refrain, however, from further comment; nor will we longer detam our resilers from a portion of our history which they cannot fail to peruse with intense and mortifying interest.

Delegates are being appointed in Pennsylvania to at-tend the national republican convention at Baltimore.

president. He was attended to the ship by a large number of his friends, and much feeling was manifested by her of his friends, and much teching was manufacted by them on parting with him, and coasigning to much of worth and talent to the merey of the elements. He takes with him the synpathies and kind feelings of the people; and if fate should deeree him a leep grave in the bosom of the ocean, the affections and the tendered sympathies of an American republic will be buried with

From the Washington Globe The following extract is taken from the speech of Mr. Mirchell, delivered at

the 4th of July celebration, at Charleston:

"Do not mistake me when I speak thus of the Carolina doctrines. 1 am, and have ever been, through good lina doctrines. I am, and have ever been, through good report and through evi report, without change or deviation, openly and above board, an advocate of state rights, as understood and explained by Jefferson and Madison. I was proud to be an humble disciple in that school when the majority of the delegation with which I then served, denounced them as radical, and Cathorn and McDiffe sitgmatical them as the worst and most supplied of all herence."

From this it annears that Mr. Calhonn and Mr. Me-

From this it appears that Mr. Calhoun and Mr. Me-Duffie once stigmatised the Virginia and Kentucky doctrines, as expounded in the resolutions written by Mr. there, so exponented in the resolutions written by Mr. Madison, in vindication of state rights. They now seize on the principles of these resolutions, and seek by a strained construction to make them broad enough for a basis to the new doctrine of nullification. In the introductory remarks to Mr. Mc-Duffie's pamphlet, written to sustain the latitudinarian and consolidating principles then avowed by Mr. Cal-leon and himself, the voice which Virginia raised in fa-vor of state rights, is called "the locain of state sove-reignty, a note which has been sounded in the ancient dominion with such an ill-omened blust."

annuar with such an ut-omena oters. Mr. McDuffer, in these essays, which were written in 1821, not only gives his own faith, last speaks out that of his friend, Mr. Calshoun. He says—"He (Mr. Calshoun) was from the first, a decided advocate of the navy. the bank, internal improvements, internal taxes when necessary, and liberal principles in constraing the con-stitution for great, useful and sufe national purposes."

The Quebec Guzette says-"The United States papers are again filled with further correspondence respecting the resignation of the American estinet. Mr. Berrien, late attorney general, has published notes of an interview with col. Johnson, who acted as mutual friend of the president and the members who resigned, in which the first cause of difference is represented with much detail to be the reputed private conduct of Mrr. Eaton, and in which president Jackson is exhibited as a whimsical, violently passi nate old gentleman, insisting with extreme arrogance on subjects altogether out of decoram and common behavior. Whatever may be the decorum and common behavior. Whatever may be the truth, and it appears difficult to ascertain it, private or party feeling appears to have deprived the public men in the administration of the affairs of that country of all the tact for which they were sclebrated."

At a late meeting in South Carolina, in which judge Smith, late a senstor of the United States, took a lending part, the following preamble and resolution was adopted:

And whereas, the time is last approaching when the people of these United States will be called upon to reelect the chief executive magistrate, over our free and happy nation, and as we believe that it is a subject of magnitude and importance to every individual member of our government, that this right and power should be exercised in a manner becoming freemen and republicans, that the voice of the people should be obeyed and their wishes respected, and believing, as we do, that there is a party formed within our state who will pursue measures in relation to this matter contrary to our wishes, and, as we think, in direct opposition to the interests of the great body of the people of South Carolina, that the claim of an individual to that high, dusting uthered and responsible station, will be urged before the people, an individual whose political course we do not admire, whose The "Long Island Patriot" says.—"The hon. Marpolitical decrines and opinions we can be summer, where
political decrines and opinions we can be prove, and
tin Van Buren, our envoy extraordinary and minister
whose policy, if adopted, would bring rain and destruction on our happy country; deeply impressed with the
parture for England on Tuesday last in the packet ship
importance of these subjects, we, the citizens of Spartanburgh district, claim it as our right, and feel it our duty to declare, First, That never in the course of our political history has there been a crisis of more magnitoile and importance; nor one which required so much firmness, honesty and political integrity in our rulers, as the present. Second. That though we cannot approve of some of the measures which general Jackson's administration has originated, yet upon the whole, we cordially approve of his nomination for another presidential term, and will use our best endeavors to secure his re-election.

Therefore be it Resolved, That gen. Jackson is the choice of the people of this district.

A planter of easy circumstances, living snugly in the pine land near Pocotaligo, has made so good a toast as to be thought worthy of publication. Here it is:—
"The constitution of the United States—It has received a severe wound which is full of proud flesh-may the state doctors cut it out with the knile of nullification, and, should they despair of their patient and bleeding be thought necessary, let them use the lancet." That is, in plain language, let the state nollify the tariff law, and if that won't do, draw the sword. It will all come This sturdy old inhabitant of the pine land out at last. knows no disguise—he does not understand saying and unsaying in a breath. He thinks nullification is just what it is, something in the shape of a knife or a lancet. In return we offer him another sentiment:- The constitution of the United States-It has received a wound which is full of proud flesh-eall in the quack doctors of nullification, and they will soon convert a curable wound into downright mortification.

Georgetown, (S. C.) Union.

From the National Journal. In a somewhat mystieal article concerning Mr. Mason, who has been a pointed secretary of the Michigan Territory, the Glob of Monday contends that he noght not to be removed from office, unless he should commit some act of misconduct, and adds-

"But till then, it would evince an utter disregard of the plainest dictates of justice, to remove from office a person who has done nothing to deserve it, merely because apprehension was entertained or affected, that he

would do wrong."

Nothing can be more unquestionable than the general rooming can be more unquestromate trains the general proposition here laid down. The only surprising ca-cumstance about it is, that it appears in the official organ of the present administration. Looking at it in this view, and reflecting on the removals by wholesale, which general Jackson has maile of persons who had odone nothing to deserve" them, we most regard the passage eited as a public confession, by general Jackson, that he has "evinced an utter disregard of the plainest diotates of justice." After such a declaration, his formal renunciation of all pretensious to a re-election may be daily expected.

The Augusta Courier of the 15th inst. says-"We admost glad Mr. Calboun is a nuttifier. It has made are almost glad Mr. Calhoun is a nutlifier. Georgia the most thorough-going state against nultificution, in the whole outon.

NEW YORK NATIONAL INSTITUTE. Address of gen. Tallmadge, delivered before the American Institute of the city of New York, at Clinton Hall August, 1831.

New York, August 12, 1831. SIR-We have been appointed a committee of the American Institute to request for publication a copy of the address delivered by you on the 11th inst, on taking your sent as president of that body.

In making this communication, we cannot avoid expressing our gratification at the sentiments you advanced on that occasion, with so much truth and leeling, and at the course which you pointed out to the institute as most conducive to unanimity and success in its opera-We have the honor to be, sir, your most obedient servants,

H. M. WESTERN. JAMES, LYNCH, DAVID GRAHAM, jr.

Gen. James Tullmadge.

New York, August 12, 1831.

Gentlemen-In compliance with your request, a copy of my remarks addressed to the American Institute, is herewith enclosed. I am, with respect yours, &c.

JAMES TALLMADGE.

H. M. Western, James Lynch, David Gruham, ir. esqs.

committee, &c.

GENTLEMEN-Allow me to express to you the obligation which I feel for the honor you have conferred, in selecting me for the presiding officer of "The American Institute of the city of New York."

Permit me also to express my gratification for the very complimentary manner in which your committee communicated to me the information of my election.

This distinguished mark of your favor was unexpectd by me, and being conferred by your own voluntary act, considerably enhances the value of the distinction. It commands my utmost efforts to perform the duties of the station-while all my feelings are awakened to reciprocate your generous kindness.

Your committee were pleased to suggest a belief that my acceptance of the place of presiding officer of the the institute, and especially useful in securing harmony among its members. These considerations have indume to yield a cheerful compliance with your request. These considerations have induced

The set of the legislature declares you were incorporated "for the purpose of encouraging and promoting domestic industry, in this state, and in the United States, in agriculture, commerce, manufactures, and the arts. In thus declaring the purpose of this incorporation, the le-gislature have explicitly defined your powers, and marked out your doties. Any purpose not within the purview of this incorporation, must consequently here be illegal of this incorporation, must consequently here so energias and impropers. Allow use to titledsim for myself, and according to my hope and belief for the members of this insistate, all intention to pervert its purposes to publicar objects; and further, to arow that any such object cannot have my portropation. The legitimate purpose of this institute is so noble, and so important, is must not be degraded as an instrument for other ends.

The sentiments entertained by this association have long been cherished by me; and my efforts on various public occasions have heretolore been devoted to their

support.

It is matter of considerable gratification that I am enabled to come among you as a practical agriculturist. In the theory of expanded reason, of free interchange of the products of different countries, would naturally become the principle of national intercourse, and the basis of commercial regolations. It has ever been the culightened policy of our government to hold out to other countries a just reciprocity in commercial regulations. But narrow views and objects of selfish aggrandizement, have rejected the offers of such a system of liberal policy, and thereby compelled our government to resort to countervailing duties as a just encouragement to the domestic labor of the country, and as a mean of national defence. It is therefore, on our part, a measure of necessity, not of choice. Hence the incensiderate folls of those who prate about the abstract propositions of "free trade," and "the burthening the many for the benefit of the few." But there is a great consolution in the truth, demonstrated by experience, that such has been found the irrepressible spirit of the American character, and the productive genius of American industry, that protected articles have been unifrican industry, that protected articles have been un-formly supplied to the consumer at a cheaper rate. It is a balin of consolation and will be a circomstance

on siderably in mitigation of the imaginary violation of rights, that the system of encouragement of domestic labor, has provided articles of home production at a realuced price to the consumer, while it has exhibited our cuturtry in a condition of improvement and prosperity without a parallel in the annals of mankind.

Had the early protection which was given to cotton, and cotton tabrics, and which has reduced their price to less than one half to the consumer, been at the same time extended to wool and woollens, it would have pro-doced some arrangement by which our ships could have taken out our own products as an equivalent for foreign merchandise, or, as a consequence, our hills would long

shuttle and the loom would have resounded in the vallies; agriculture would have found a ready market for its abun-dant products, and commercial enterprize would have been put in greater requisition to supply the materials for manufacture, and hear the products to foreign markets.

This system of encouragement and protection, and which sprung from necessity as a measure of self defence, has been recognized and adopted by every administration since the adoption of our constitution; and has now become the settled policy of our country. be fairly assumed that no administration can hereafter abandon it: While a just and proper modification of the system and the application of its details to the ever varying times and peculiar circumstances of the country, has become a necessary duty of the statesman and the patriot. They will always remember what enemies realize; that every manufactory erected in our land, is a fortress in defence of agriculture, and in support of com-

When we read of the reduction of wages, and the con-sequent distress and risings of the populace of the manu-facturing towns in England, and of their suppression by military force, we do but read of the injuries inflicted abroad, by the encouragement of our own domestic

When we wipe the tear from the eye of sympathy, and cust a look upon the condition of oppressed and afflicted Ireland, we shulder with emotions of horror and pity, to learn that there are one hundred and fifty thousand inhabitants in the single county of Mayo, now suftering by famine. In another county more than three thousand human beings encamped on the sea shore gathering sea weed for food; while their criminal sourts are busied in the prosecution of necessitous beings for the erme of endeavoring to sustain life in themselves, and their famishing offspring, by the "bleeding of cattie!" The fountains of our grief are not even dried up by the reflection that those are the sub-jects of that government which refuses to receive our bread stuffs on equal terms for their manufactures, while they exact an annual income of about thirteen millions of dollars for taxes upon the admitted importation of American tolaceo.

Under circumstances of such complicated error and abuse, there is no cause to envy the leelings of that man blessed with an American birth, who can clamor against his own government, about "free traile," and by withholding just encouragement and protection to domestic industry reduce the freemen of this country, to an unequal competition with the mendicant mots of Europe.

The encouragement of domestic production should command the attention, and will be the sphere of the more immediate usefulness of this institute. It will be my endeavor, and my happiness, at all times to aid your efforts in a purpose so commendable, and so replete with public benefit.

LEGISLATURE OF LOUISIANA. The following memorial presented by Mr. Porter, of the house of representatives of the state of Louisiana, on the part of the joint committee, appointed to drast a memorial and remonstrance to congress, against the repeal of the duties on foreign brown sugars imported into the United States, was ununimously adopted by both houses of the trgislature.

To the senate and house of representatives of the United

States of America in congress assembled:—
The general assembly of the state of Louisiana, have learned with considerable surprise, and regret, and some alsrm, that a resolution, having for its object to reduce the duty on foreign brown sigar, has been considered during the present session of congress, by a majority of the house of representatives as a proper subject of in-quiry. With the motives of this resolution, the people quiry. With the motives of this renorman, and professional firm of Louisiana have no concern, but its effects, should it ripen into a law, cannot be mistaken. It will give a latal blow to their prosperity. It consequently involves a question, to them of the most perilous import. Nothing less than the destruction of half the capital of the state, and the total rum of a large unjority of those who have embarked their fortunes in the cultivation of cane,

since have been animated with abundant flocks; the and the manufacture of sugar. They cannot believe that a measure fraught with so much injustice to them, and bringing with it no corresponding benefit to the other sections of the union, will receive the sauction of your honorable body. But the number of votes assenting to the proposed inquiry shows, that a great misapprehengress on this subject. To produce sounder views in relation to it, is one object of this memorial.—And if the general assembly of Louisians fad in the attempt, they have another. They desire at present a solemn remonstrance sgainst the injustice threatened to the state they represent. This is the only mode of detence open to them. Should the proposed inquiry be followed up by a law, corresponding in character and spirit, the people of this state have not the power to resist it, and their devotion and attachment to the union are too great to permit such a measure, even could they do so with success. This true exposition of their feelings will not, they hope, diminish the weight of their remonstrance. that the time is distant, when concessions will be made to threats and violence; and justice refused to those, who address the councils of the union, in the language of respect and affection. The general assembly cannot refrain from the expression of their assonishment that the manufacture of sugar should be singled out as the object of such persevering hostility in congress, while other objects of national industry, protected by duties, are left unnoticed, or assailed with less zeal. They know nothunnoticed, or assured with less zeal. I key know notaing of the circumstances by which this branch of industry was first created in the United States, and they are
unnequainted with any thing in the influence it exercises
on the confort or wealth of their sister states which jusis not, nor has been, any thing in the conduct of the pro-ple of Louisiana which authorises it. They have been true to the union, and to their duties at all times; in peace, and in war. To those unsequainted with her history, it might appear as if something therein had rendered Louisiana obnoxious to her sister states. A stranger would find it otherwise difficult to account for a proposed legislation which would be at once partial, and oppressive: One which contemplates leaving them subject to the duties imposed on all other seticles of home manulscture, while it deprives them of a market for the productions of their own soil; or if it has not precisely that effect, at least expose them to a ruinous competition with the foreigner in selling, and refuses them the bencfit of that foreigner's competition with the home manufacturer in those objects they are compelled to purchase.

The general assembly are not to be understood in these remarks, as complaining of the duties by which other branches of industry are protected; but it is proper to recall to the recollection of congress, the causes which first induced the inhabitants of Louisiana, to enter on the cultivation of sugar cane. A slight historical re-trospect, will prove that it was in a great measure, an involuntary direction of their industry. The general government, if it did not compel them to the pursuit, into this production as a means of revenue, the capital of the planter on the banks of the Mississippi, was principally employed in the cultivation of meligo, rice and cotton, which afforded him a fair profit, without the necessity of incurring heavy dehts to construct the establishments and provide the machinery requisite to the cultivation and manufacture of the cane. The high price of sugar in the West India islands, at that time, increased The high price of by the duty imposed on it, coming into the United States, offered to our citizens a temptation to turn their labor into other channels. A few attempts were made. were not very successful, but were sufficient to induce a hope that in future time, with increased experience, and more capital, something beneficial might be accomplished. From every quarter of the union, this attempt to remier the republic independent of foreign nations, in an article now become a necessary of life, was hailed with satisfaction, and the planter, deluded by the apparent universal acquisecence in the policy of encouraging him, entered more largely into business, and incurred heavy debts to extend the culture. Until the close of the late war, however, [and for some time siter], the cultivation was comparatively limited, and had the government then changed its policy, no extensive injury would have been littery one: for the last twenty years, it is a correct inflicted on the state. But at that time the subject was attement of what has occurred two years in five; and taken up by congress, and instead of dimenishing the duty, they sugmented it. They substituted the principressly embodied the article of sugar among the objects to which it should be applied. A conviction was thus forced on the minds of all men in this section of the at higher and more extended views than the mere collection of revenue, entered into the considera-tion of the people of the United States. It was believed here, that it was regarded by our sister states, as a mat-ter of great national policy to raise the article within ourter of great national policy to ratve the article within ourselves, and until the time should come when we could successfully compete with more lavored regions, in the poduction of sugar, the home market would be secured to us. Under the conviction thus produced by opinions which the people of Louisians did not, and could not, control, hundreds embarked their whole fortunes in the business. Capital to the amount of about 6,000,000 dollars, it is believed, is now due by planters; and for which their property is under mortgage. Thus they are bur-dened with debts to an amount which, under the most favorable circumstances, it will take years to discharge; and all are placed in a situation which forbids a change of pursuit, without a loss, arising from the adaptation of their buildings, machinery and plantations to the culture of cane, amounting to nearly half their capital.

It will, therefore, not appear surprising to congress, that the people of this state should feel deeply sensible to the attempt now made to bring rum upon them, for following up the views, and adopting the policy which their fellow eitizens of the other states pointed out to them. The destruction of a vested right to property, would not be a more direct violation of good faith; for it is conceived, there is lattle or no difference in taking from the citizen that which he has acquired under the laws, and made his, or in legislating in such a manner as tempts him to embark in expensive speculations, by an mulied promise of protection, and then, by a sudden change of policy, not merely depriving him of the profit he hoped to gain, but ilestroying the capital, which, through the faith of government, he embarked in the enterprize.

The general assembly understands that the most exaggerated ideas pervade the minds of the citizens of other sections of the union, respecting the profits which the sugar planters of Louisiana realize Ironi the cultivathe soil. It the misapprehensions which prevail on this subject, be as extensive as there is reason to believe, it affords some explanation of the vote of those who have sought to reduce these profits. This assembly can with great tinth, however, assure your honora-ble body, that all idees of that kind, which proceed on the assumption that the sugar plantations of Louisians have yielded, for the last filteen years, or can be exsix per cent, profit on the capital employed, are failaand unsound. Some of them, with soil peculiarly adapted to the culture, fortunately located, and skillully managed, do give more. Others not possessing such advantages, afford less. Nearly all, in seasons wel adapted for raising and manufacturing the cane, give a large profit. Last season the crop was good, and the profit fair. The year preceding, a great number did not pay more than their expenses; some not so much. There is little probability that the future will differ from the past. All agricultural pursuits are uncertain, because they depend on the seasons for success. But when the ney septing on the seasons for success. But when the productions of the tropies are attempted to be forced in latitudes not congenial to them, this uncertainty is cru-elly increased. The planter of Louisiana has not only to run the same risks with other cultivators, viz: too much rain, or drought—but he is exposed to the casualty of losing by premature frosts, tornadoes, and cretural labors of the year are finished, a mild autumn and winter, by which the cane can stand uninjured in the field, while the manufacture of it into sugar is progressing, is indispensable to the planter's complete success. An early frost last year, in a single night, diminished the crop probably one-fifth. This example is not a soin many this injury has been more extensive than that of

The exaggerated statements which have been circulated on this subject, the legislature are sorry to say, have sometimes originated at home; but the source of these delusions is well understood here, and exeites no other feeling but pity for the authors, and regret for the unhappy influence their misstatements exercise on our interests abroad. They can be almost invariably traced to one cause; the enpidity of speculators, who are anaious to attract purchasers for their lands. The information which has been furnished the preceding year, from various parishes of this state, in reply to the circular of the secretary of the treasury, gives a faithful secount of the profits made on the sugar estates; and carries with it internal evidence of the truth. It is however unnecessary to produce detailed statements and arithmetical calculations, to show the unfounded character of the representations of the profits of sugar estates. The single reflection that Louisiana has an extent of soil, and a slave population capable of producing double the quantity of sugar she now does, and that she does not do it, is conclusive! It cannot be believed for one moment, that if the sugar planters had been making the immense profits spoken of for the last twenty years, that the cotton planter would not have changed his pursuits. to participate in the more lucrative culture of his neighto participate in the more interaive culture or ins negati-bor. Not only the cotton planters of our own state, but the extensive slave holders of the adjoining states, would have rushed into this business. No one will ima-gine that they would have been content all this time with the moderate return yielded by their cotton farms, with the prospect before their eyes of inordinate profits made by those following a different agriculture.

But if the condition of Louisiana was as flattering as those who are pleased to think so, state, far from stirring up feelings of envy and exciting a disposition to rering up teerings of enty ann exercing a disposition to re-duce her profits, it should only produce pleasure in the mind of the statesman, because he cannot but see in it an increase of national wealth, by which the whole union is benefitted. An opinion, the general assembly under-stand, is beginning to be cherished in certain quarters, that in looking at the operations of industry in any quarter of the union, it is not to be favored, or rather it is not to be discouraged, it all parts of the republic do not share alike in it. With such a sentiment, the state of Louisiana has no feeling in common. She believes that whatever benefits a part, promotes the interest of the whole, unless the other states are materially injured by the duty on sugar; she thinks it is susceptible of satisfactory proof. She rejoices as much in whatever promotes the wealth of Massachusetts, Pennsylvania, Vicginia, South Carolina, or any other of her sisters, as ginia, South Carolina, or any other or ner sisters, as she would at the prosperity of any portion of herself. Connected with the other parts of the nation, by the which she hopes may be enduring, she feels that what-ever adds to the glory, the wealth, or the atrength of the union, and because while it lasts, no increase of prosperity to any one portion of it, can fail to be shared by her, either directly or indirectly,

The general assembly are however unwilling to trust alone to the influence of these sentiments on others. They think they can satisfactorily establish that the industry of their sister states, derives as much support from the duties on sugar, as Louisiana does. They greatly mistake the facts, and they reason most inaccurately from the premises, if there he any branch of trade in the world, in which the henefits of a home market, in all circumstances which render a home market valuable, can be more distinctly traced, or more clearly proved It is literally (not metaphorically) true, that there is not an acre of land in Louisiana, brought into the cultivation of cane, which iloes not put in motion an additional plough, shuttle, or hammer, in some other part of the union; and that does not bring more land into cultivasugar; the farming utensils employed in the cultivation of the soil; the horses and mules that work on it; the food for ourselves, slaves and cattle; the elothing for our negroes; the machinery lor our manufactories; the

Hime used in building our houses; the lumber used in amount of money now furnished by Louisiana shall be their construction and even the shingles that cover them, withdrawn. are in a great proportion brought from abroad. Threes fifths of the products of our soil, go for the purchase of these and other articles which we need not enumerate; and it cannot be doubted that the makers and producers of these, derive as much profit on the capital they employ, as the planters of Louisiana do on the sugar they

give in exchange. This great and beneficial interchange of commodities, ins grown entirely out of the sugar produced in this state. With the exception of machinery, there is not one of the articles already mentioned, Louisiana could not prepare for hersell. She formerly raised her food, vegetable and animal, in abundance; and all working animals necessary for her own use. Her domestic manufactures supplied with the coarser srtieles of clothing, to the whole extent with the coarser pricies of clothing, to the whole catent of her wants, and she purchased little. She could still do ao; indeed, such is the happy position of these states, both as it relates to soil and elimate, that there is scarcely one in the union that could not produce enough of the necessaries of life, and live without intercourse of a commercial kind, with the other states, if it were desirable for communities to seek nothing further than the bare supply of animal existence. But this assembly thinks that such a state of things is not to be sought for, nor likely to be attained. The land and climate of Louisiana are better adapted to the culture of came tann under the ton of bread-stuffs, and she raises it. The western at tes on the contrary, are admirably suited to the growing of all kinds of grain. Each finds its reward in raising those articles which its soil produces in the greatest abundance, articles which its soil produces in the greatest abundance articles which the strong them. The general assembly the strong the articles which its soil produces in the greatest abundance, and mutually interchanging them. The general assembly are fully convinced that, if congress should destroy the trade by which Louisiana sells to the western states, sugar to the amount of three millions of dollars annually, and buys in return, corn, oats, pork, bacon, horces, mules, lumber, lime, whiskey and machinery, to the same, or a greater amount, that she would inflict a lasting injury on the prosperity of both. They dare to af-firm that their sister states on the waters of the Mississippi would be the greatest sufferers. Louisiana could raise provisions for herself; but sugar and molasses, now become almost necessaries of life, the western states could not dispense with, except by a serious sacrifice of their somforts. If they purchase them, they would be compelled to do so, without the home market by which they are now enabled to pay for them; and whether a small diminution in the price of sugar, [supposing such a diminution to ensue | would compensate for the complete destruction of this home market, is a question, which those most interested in it, can best answer.

The same course of reasoning, with some slight modifications, applies to our trade with the northern and midfications, applies to our trade with the northern and mid-dle states; they have in us, a sure and steady market for a variety of their productions, which is constantly in-ercasing, in which they have no foreign competition, and in which they are secure against the caprice and injus-tice of foreign regulations, which so often affect those concerned in the shipping trade. The value of the pro-ductions of the northern and middle states, brought here sunually, is not less than two millions of dollars.

Although Louisiana does not buy from the southern Although Louisians coes not buy from the southern states, articles produced by their industry, as she does from the other portions of the union, still this assembly believes that there is no section of the United States more directly interested than the slave holding states are, in directly interested than the stave folding states are, in the maintenance of the duty on sugar; or who, this day, reap a richer harvest from it. It is the production of this article in Louisians, which gives the actual value to slave property. The price of those brought here annuslave property. The price of those brought here annually, is probably not much less than two millions of dollars; estimating them at the first cost in Virginia, Maryland, and the other states where they are purchased.
If this money was withdrawn from the market, the value
of the slave could have no other standard than the worth of the state cours nave no other standard than the worth of fis labor at home. How much that would be, this assembly cannot say, but if correctly informed, it would not be half that which is now given to that property. This portion of the union, if she succeeds in foreing Louisiana from the cultivation of the cane, will find too late,

The general assembly has not dwelt on these facts, nor entered into this reasoning, for the purpose of instructing other states as to their interests. They are, no doubt, fully competent to judge for themselves. when Louisiana sees exaggerated accounts of her prosperity are perpetually sounded in the public ear, and jealousies attempted to be excited by representing the duty on sugar as a tax laid on other portions of the union, for her benefit, she is compelled to remind them of the real state of things. If a fair profit be derived from the cultivation of the cane, a small portion of it remains with her; the larger part goes to reward the industry of those who supply her with food, clothing and machinery; or if both derive profit from the trade, and the slaves purchased, it only proves the value of a home market, from which all parties derive benefit, and the nation at the same time draws wealth and strength.

And after all, it is not believed that the duties laid on foreign sugars, augments the price to the consumer in the United States; or if at all, by no means to the amount of that duty. It is a great mistake to suppose that the sugar of the West Indu islands, could be afforded at present prices, if the competition created by the productions of Louisiana, ceased in the market. That competition withdrawn, the foreign article would rise to the level, to which all objects of commerce reach, viz: that produced which all objects of commerce reach, viz: that produced by the cost of production, and the mutual wards of the seller and buyer. The price has fallen one half since Louisians commenced making sugar. In the British West India islands, according to the information possessed, her sugar sells nearly as high as it does in New Orleans. Lorge capital, as it is well known, has been invested in Porto Rice and Cubs, in the manufacture, with a view to the United States market. Our domestic supply, far exceeding their calculation, leaves them with an unexpected surplus on hand, which they are compelled to discose of at any price. This market recompelled to dispose of at any price. This market re-stored to them, the commodity would in a very short period rise to its true value. It is clear that no safe reliance can be placed on obtaining for any length of time, an article of commerce below the price at which it can

be produced.
The general assembly have also another representation to make of the evil Louisiana sustains from the culture of cane in those islands. Information has been reseived here, and is believed to be true, that a method has been discovered and is daily practised, of avoiding the laws of the United States, and indicting serious injury on the interests of this state. The eane juice is boiled almost to the point of granulation, and is then introduced into the eastern states, under the name of molasses; from this syrup refined sugar is made, in perhaps nearly as large quantities as could be made from an equal weight of brown sugar. A simple statement of this fact, must be sufficient to show at once, how the revenue of the general government is defrauded, and the prosperity of our

etizens sacrificed to the cupidity of loreigners.

If regard too, be had for the condition of the neighboring islands, it cannot escape the sagacity of those who have control over the subject, that the probability is, that some of the finest, will belore a distant day, cease to be slave holders. When this happens, like St. Domingo, they will no longer cultivate cane, and the withdrawal of any part of the producers, will naturally enhance the price of the product.

If in time of peace an augmentation of the price of West India sugar would certainly follow the discontinunnee of the culture of the cane in Louisiana, how much greater would that augmentation be in seasons of war with any maritime power possessing a naval superiority?

The general assembly might present many other views tending to show the impolicy and injustice of withdrawing the protection of government from the culture of the sugar cane; but they will restrict themselves to the exhibition of only one or two more. That the navigation of the United States, and especially the most important branch of it, that concerned in the coasting and river trade, has been greatly benefitted and extended by the cultivation of the cane, cannot be doubted; the amount that sugar will be wanted as formerly, and the means of employed in transportation coastwise, and on the Mis-paying for it will be greatly diminished, when the large sissippi and its various tributaries, is very great. Nearly one half of the whole steam boat tonnage of the United States is engaged on the latter theatre. The advantages of this domestic navigation, great as they are in elter-rishing and stimulating a trade at home tree from all foreign competition, are not limited to commerce. It adds to the general security, and that especially of Louisinan in a period of war. Without the ateam boats of the Mississippi, the condition of this exposed state, would, at such a time, be extremely hezardous. With them it is perfectly asie in all exigencies; they afford the sure means of bringing rapidly to the defence of New Orleans and Louisana, the brave and gallant sons of the

The legislature of Louisiana has deemed it inexpedient to pursue the suggestions made in this memorial through all the illustrations of which they are susceptible; the wasdom of congress renders it unnecessary, and the last consideration deemed material to bring under their notice, will be briefly touched on, and dismissed. If the planting capital of Louisians be driven from the cultivation of each, it must seek occupation in some other pursuit. To no other is our soil and climate so well adapted as that of cotton; and the great adhitional quantity which our rieh land is susceptible of producing, brought into market, could only have the effect of reducing the price below its present great depression, and foreing altogether from its cultivation, the comparatively poor soil on which it is now raised.

The legislature of Louisiana has thus placed before congress, the reasons which she considers of sufficient importance to prevent the repeal of the duties on forcegn brown sugar. The great and paramount interests now involved in the measure, will, no doubt, be gravely considered; and above all, the obligations to the people of this state, which good laith imposes, it is hoped and believed, will achieve be forgotten, or violated.

#### THE AMERICAN SYSTEM,

OR THE WHOLE MATTER IN A NUT SHELL.

Extract from the address of general Harrison to the
Hamilton county (Ohio), Agricultural society.

"Among the objects to be accomplished by the establishment of such societies as your's, gentlemen, one not the least important, is the influence they may exert to procure the enactment of laws which may advance, or to procure the encettering to have under may be considered prejudicial to the interests of agriculture. There are two subjects coming under this description which may possibly require the interference of the society. There is no perwestern country, that does not know how much the prosperity of the agricultural and mechanical interests of this section of it depends on the trade to the Mississippi. We may multiply our means of communication with the eastern ports, as much as we may by means of canals and rail roads; still from this part of the Ohio, and below us, for many of our articles, we must mainly slepend on the states of the lower Mississippi. This market will be a good or a bad one, in proportion to their wants or their ability to purchase. Their wants will be in proportion to the increase of their population; and their ability to purchase will depend upon the suc-ess of their agricultural pursuits. It is obvious, there-fore, that we have a deep interest in whatever concerns their interest. Their prosperity must be our prosperity; their adversity must inevitably bring a correspondent depression upon us. One of the principal articles, (per-haps the most important), of the produce of Louisana, is sogar. Its cultivation to any considerable extent, is posterior to the cession of the country to the United States. Under the fostering care of our government. posterior to the ecosion or in country of the Onice States. Under the fostering care of our government, which afforded it a protecting duty, it has been greatly extended, producing advantages to the country as well as to the planters. Among the former is the abstraction of a large amount of labor, from the cultivation of other articles which half been produced to an amount beyond In this way the southern states, particuthe demand. larly the enitivators of cotton, were greatly benefited. While the western states reaped the advantage of an inereased demand for almost every article of their agricultursl and manufacturing products, and a diminution in the price of sugar, in the last twenty years, of at least three hundred per cent.

Before a sugar manufactory can be put in operation, as immense amount of iron work, machinery and castings, as well as wagons, carts, drays, &c. must be procured. These are purchased at Pattsburgh, Cincinneti, or Louisviile. Horses, oxen and a supply of provision's must be obtained; and these are purchased of the western farmer. Sparingly and economically perhaps at first, but always mereasing as the cultivation and manufacture progresses. If the enterprise is successful, where are the sur plus gains of the planter expended? Who is there in this part of the country so ignorant as not to know, that a large por-tion of them comes into the pockets of the farmers and manufacturers of the upper western states? As his means manufacturers of the upper western states? As his means increase, the sugar planter makes a more ample provision for the support of his family and laborers; the comforts of the negto are increased, by the allowance of a larger portion of better food. By these additions to the expenses of the planter, the western farmer and mechanic are benefitted. When enabled to obtain better, the planter is no longer contented with the homely fur-nitive of his first establishment. Orders are given for nure costly and elegant arcides. And on what places are the orders given? Not on London or Liverpool, or even on New York or Philadelphia, but to some city on the Ohio. And this is one, not by any means the least, of the vents for those splendid articles which are poured out in such quantities from the shops of our Wards, Porters, Lehmans, Skinners, McAlpins, Lees, James, and hundreds of others. The trade of the lower Mississippe. is peculiarly beneficial to the farmers on the Ohio and its navigable tributaries. From their situation, hundreds, I may say thousands, are enabled to dispose of their products in that distant, but convenient market, without the intermediate sale to a merchant, or the employ meat of a factor or carrier. They manage the whole matter of transportation and sale themselves; effecting the laster immediately to the consumer upon his plantation, or to the exporter at New Orleans. There is not one that has engaged in this business, that does not know, that it is frequently the want of the means of purchasing, which prevents the planter from buying a whole boat load of provisions rather than a small portion of one; and that if he would take sugar and molasses from the planter, in exchange for his own commodities, he could sell the latter at a higher price, and obtain the former at a cheaper rate than by eash sales. This fact was stated to me s few days ago by an intelligent farmer of my neighborhood, who has for many years been engaged in that trade, and sliews that the planter finds great difficulty in dis-posing of his erops, even at the most reduced prices, and that he is willing to reduce them still lower to obtain the produce of our soil.

the produce of our soil.

If the facts I have stated are true and the deduction I have drawn from them are correct, it would appear very extraordinary that any southern or western man should have supported the proposition to remove the protecting duty, and phase the sugar planter of Louisians precisely on a footing with those of Cuba, in which island all the products of the United States are subject to a most onerous duty, which, in relation to some of them, alone, amounts to prohibition. Apart from the impoliey of taking off the protecting duty, the measure to the people of Louisana, would be full of injustice. Their caltination of sugar was commenced under the protection of the duty, and there was nothing that could have indicated any change in the policy which dictated it. Protecting duties are given in every instance where they are necessary to the staples of the other states; to the tobacco of Virguia and Maryland, the hemp of Kentucky, the wool of Uhio, and why not the sugar of Louisians?

#### PATRIOTIC RESOLUTIONS.

We so call the following, though, in several matter of principle, we differ entirely from those at forth in thein—but they contemplate such proceedings as normatican patriot can disapprove of. We regret the belief that the tariff is either unconstitutional or opportive, on the south—we think that, in both respects, a great mistake prevails; but every man is entitled to the same freedom of pointon that we entertain—and we shall always stand prepared, with our humble aid, to secure him in that right.

state rights and union party of St. John's, Colleton, South Carolina, assembled on Tuesday, the 9th inst. 1. Resolved, That we contemplate, with the most live-

ly anxlety, the existence and probable issue of the angry political excitement which prevails in this state; and that we recognize as the principal course of our unlisppy divisions, the indiscreet attempt of a certain party to force upon their fellow citizens an highly dangerous potitical measure, extremely repugnant to the feelings of the latter, and which it is justly believed by them, will be extremely permissions to the well-being of the common wealth.

2. Resolved, That we believe the tariff law of 1828, passed by congress for the protection of manufactures, to be unequal and unjust in its operation upon the varito be inequal and unjust in its operation upon the vari-ous sections of the union—that it is oppressive and bur-thensome upon the south in particular—that it violates the essential principles of equity, lorbearance, and compromise, which form the basis of our federal compact, and therefore is unconstitutional—and that it is, as a measure of national policy, unwise and impolitic and ought to be repealed.

3. Resolved, That we are willing to oppose it, and have hitherto opposed it, in common with our lellow citizens, by every means which can be employed by the atate, consistently with the constitution, and our relations to the other parties to the compact as a member of the union, but that we do not think ourselves justified in opposing it, or any other unconstitutional law, by un-

constitutional means.

4. Resolved, That we do not consider the right of a state, to "nullify," or foreibly arrest and make void a state, to "nuttify," or toreinty arrest ante make row-law of congress, as a constitutional right, but as a right of "sovereignt," paramount to the constitution, that is-though such a right might be exercised by a state "in its sovereign capacity," after it shall have recalled to it-self those powers which it has delegated to the federal government, and thus have made itself (what no state now is) a perfect sovereign and independent nation, yet auch a power evidently cannot be rightfully exercised, so long as a state continues a member of the union, and avails itself of its protection and the benefit of its laws.

5. Resolved, As the opinion of this meeting, that the right of nullification is no where asserted in the Virginia and Kentucky resolutions of '98, nor is it by any fair inference deducible from them; that it is expressly disavowed by Mr. Madison, the author of the former, and is no where sanctioned by Mr. Jefferson, the author of the latter; - and that there is nothing in any act or resolution of this state, either in substance or in name, to

warrant such a doctrine,

6. Resolved, That, viewing the proposed remeily of nullification, as an highly irregular and unconstitutional measure, and as leading by an inevitable tendency, either to civil war, to disgraceful retreat, or to disunion, we feel ourselves called upon by every motive which can actuate us as citizens, as men, and as heads of families, most earnestly to oppose it, and by every fair and honorable means to prevent its adoption, no matter under what disguise of seducing recommendation it may ap-

- 7. Resolved, That we deprecate as a great public calamity, the existence of that wide surrading discontent, which it appears to be the policy of some of our citizens to cherish and increase; and which is unhappily estab-lishing an impression on the minds of our people that the government of the union is hostile to their interests, and that the authorities of South Carolina are of them-and that the authorities of South Carolina are of them-aelves sufficient, and are alone willing to preserve our liberties, protect our lives and property, and secure our public happiness.
- 8. Resolved, That we regard the agency of the two governments (general and state), each operating within its respective sphere, as an essential element towards our political well-being, and that whilst we are resolved to vindicate and preserve the rights of the state from all encroachment, by all proper and constitutional means, we nevertheless think it necessary at this time explicitly we nevertheless thank it necessary at this time explicitly to declare, that "we feel a warm attachment to the union, with our sister states, and to the instrument and principles by which we are united; that we are willing

Resolutions adopted at a meeting of "the constitutional | to sacrifice to this every thing but the rights of self-government in those important points which we have never yielded, and in which alone we see liberty, safety, and happiness; that, not at all disposed to make every measure of error or wrong a cause of acission, we are willing to look on with indulgence, and to wait with patience, till those passions and delusions shall have passed over, which the federal government have artfully excited, to cover its abuses and conceal its designs-fully confident that the good sense of the American people, and their attachment to those very rights which we are now vindicating, will, before it shall be too late, rally with us round the true principles of our federal compact."-(Jefferson.)

9. Resolved, That our confidence continues undiminished in the disinteresteriness, patriotism, firmness, and intelligence, of the chief executive magistrate of the union: that in the manly stand which he has taken against the wasteful expenditure of the public money on internal improvements, and in the pledge which he has given to the American people that the tariff will be reduced to an equitable standard as soon as the public debt shall be paid off, we have the most reasonable ground to hope, that the evils of the miscalled "American System," will soon be corrected, and harmony restored to our distract-

ed country.

od sountry.

10. Resolved, That, cherishing towards our fellow citizens in all parts of the union, the feelings of confidence and cordial good-will, which ought to subsist between brethren of the same great political family, and relying on the like feelings on their part, we are slow to believe, that they harbor against us any settled designs of injustice or injury, or, that they will pursue those designs after they shall have been convinced of their pernicious tendency. We therefore conjure them, by all the sanctions of patriotism, by all the dictates of holy justice, by the leclings of brotherhood, and by the claims of common country-to examine attentively into claims of common county—to examine attentively into the effects of a policy, which a small, but well organis-ed party amongst them, is preating most grievously upon us, for their exclusive benefit; and we call upon them to unite with us, in effecting a repeal of laws, which are considered generally by our citizen to be un-constitutional—which are believed by most to be oppressive in their present operation—which are apprehended by many, as likely to entail upon them future poverty and ruin-and the evils of which, if they be not correct ed, may drive our civizens in despair to the adoption of revolutionary measures for redress.

11. Resolved, That we feel towards the president of the United States, the high respect which, as citizens, we ought to entertain towards the chief magistrate of our choice; and that in the exalted station which he occupies, as mediator between rival interests, we rely upon his impartiality and high sense of justice, fur an attentive

and parental regard of our own.

### OTHER RESOLUTIONS, &c.

A very large and respectable number of the state rights and free trade party of Beaulort district, assem-bled in Coosawhatchie, on Monday, the 8th inst. came to the following resolutions:

"Resolved, That the state rights and free trade party of South Carolina cherishes a warm and proud attachment to the union as framed by their sires-and that they will sacrifice all but liberty, to preserve it.

"Resolved, That the charge that this party entertains designs hostile to the union, is an unfounded and wilful calumny, which even its authors and publishers dis-

"Hesolved, That the conduct of the union party in Charleston, in soliciting the interference of the federal executive in the party differences of the federal recentive in the party differences of this state, and in publishing before the nation the charge of dismining against their fellow eitzens, ealls loudly for the reprobation of every true Carolinan.

"Resolved, That the course of general Jacksun in lending the influence of his name to the purposes of a local party is a condescension alike unworthy of his office and character-and that his indirect menace of the force of the government against the advocates of the "Carolina doetrines" as set lurth by our state legislature is an outrage upon the leelings of a sovereign state-and an insult to the freemen of this party, which should be met with a just and lofty indignation."

These resolutions are accompanied by a long preamble, in which we are sarry to discover the following em-

phatic passage:

We believe that the legislature of South Carolina, which can of all other sovereign states, has, and of necessity must have, the right of protecting her oftzens, in person and property, from grievances and injuries of all kinds which can be worked upon them by their fellow men; and as that body has already declared the tariff an unconstitutional and oppressive grievance, we conceive it their duty to protect us from its effects, by making it penal to enforce it within the limits of this state. This interposition of her sovereignty, we consider an set of protective justice. Nor do we recognize in congress, nor in any power on earth, the right of interfering with this course of internal resultation.

this course of internal regulation."

The same No. of the Charleston Mercury which publishes the proceedings of the citizens of Beaufort, contains the following sign in the shape of a communication:

The enforcement of the tariff at a halt!

"Mr. Holmes' bond has not yet been used! After the resignation of Mr. Froat, the new district attorney, it is said, was directed to consult with the attorney general of the United States, before he proceeded on the bond!? What! is the government of the union at such a stand that it ensured use on a common custom house bond, without all this advisement and machinery? It amercly is not afraid to proceed! If there is this pause in its enforcing an unconstitutional law in its own sourt, what will be the state of things when the agents of the general government for enforcing federal usurpation are carried into our courts."

Come, Uncle Sam, go on—exact the penalty of your bond to the last pound—don't hang back—it will lead to unpleasant suspicions.

SHYLOCK."

unpleasant suspicions. SHYLOCK."
We suppose that the writer of this communication would challenge to mortal combat any one who should insinuate that he is not a friend of the union!

### BRITISH SEAMEN IN THE U. STATES.

The following is a copy of an address of the masters of British vessels at New Orleans to the consul of their nation. If the facts are stated fairly—the procedure which they complain of ought to be promptly corrected.

TO GEORGE SALKELD, ESQ.

His Britannic majesty's consul at N. Orleans:

Sit: We, the undergraph commanders of british ressels, in the port of N w ob-least the street of the street, that we are suffering under grievous imposition, in consequence of a late decision of the city court, respecting the descrition of our erews; whereby we are compelled to pay them, although descriter, according to the tenor of their agreement, their wages up to the time they may think proper to demand them.

We are sensible, that according to the laws of Great Britain, and the contract entered into between scamen and their commanders, that, 1st. No seaman can demand, or be enritled to his wages, or any part thereof until the completion of the voyage. 2dly. That, if any seaman absents himself forty-eight hours from his duty, without leave, he forfeits not only the wages due to him, but his goods and chartest also, to the owner or owners of the vessel to which he may belong. 3dly. That it is contrary to a decision of congress, in which a reluctance to interfere between foreign seamen and their enaployers is manifested; but which directs the aggrieved to their own courts of justice to seek for redress. 4dily. That such a claim on the part of the crews, is st variance with the judgment of commercial men in this or any other maritime country; and to the opinions of the most emisting decided that such a power given to seamen, would be nothing less than a death blow to commerce.

Now, are, untier these circumstances, we beg leave to inflorm you, that we cannot submit to a decision, the evil inflorm you, that we cannot submit to a decision, the evil it effects of which we have already are daily experiencing. There is scarcely a British vessel now in port, that can muster laif her regular crew; consequently matters of n of flour, 12,60 rigging of our vessels is rotting for the want of our crews to reft it — our ships and their cargoes are plundered (it is not butter.

want of our men to guard them—our freight are reduced by the enormous price paid for laborers, and our mainds constantly harrassed by the insolence and disobetience of the few of our crews who remain on board, by threatening us with writs of compulsion for their wages, in the "sailor's court," as they term it, if we even dare rebuke them for their neglect of duty.

We therefore, sir, appeal to you, as the representative of our government, for redress, and beg you to see that justice is meted out to us according to the laws of our country; for we e-most consent that a foreign power should interfere with the internal government of our ships, while the peace of that power remains unbroken

by us. New Orleans, June 22d, 1831.

## FAMINE IN IRELAND. From Cobbett's Register.

A sort of circular has been sent to all the public prints. I suppose from a committee that there is in London for the relief of the poor in Ireland; and a copy of this circular has been sent to me. The peture speak to itself. The causes we know to be that the cool of the country of the control of the country of the cause of the country of the countr

In these documents, signed by Edmund French, as Roman Catholic bishop, at its started that fourteen out of fifteen of the land proprietors, both in number and value, are permanent absentees; that is to say, fourteen of the land to see the same of them out of fifteen five constantly out of Ireland, and draw away the fruits of the land to spend either in this part of the kingdom or in foreign countries. This is such a state of things as never can exist without producing beggary and famine. The Duke of Devonshire, one of the great whigs, has according to his own statement, the longe of lords some years ago, the greak tythes of twenty parishes in Ireland, consequently he draws away all these great tythes. They may come in different shapes; but it is no matter whether they come in corn, in butter, in bacon, or live cattle; still they come. A drove of logs, or a flock of sheep, or a barrel of butter, none of these are sent to Deconshire-house; but they are sold here, and the money is paid in at Devonshire-house; but they are sold here, and the money is paid in at Devonshire-house; and here they are to be eaten by the swarms of idlers assembled in this great place.

The country parts of England and Scotland are drain-cdin like manner; but not in a like degree; and here are the poor laws, which though chipped away by Sturgess Bourne's bulls and other cuactments, still give the working people a claim, and show them the way to prevent actual starvation. I had just closed this article when a friend sent me, at my request, an ascount of the imports of food from Ireland, during the present year, up to the first of June. It is importect; because it only gives an account of the imports in London and Liverprod, leaving out Bristol, Gisgow, and several other places. It is also imperfect in that it does not include become allow animals, nor poultry, nor eggs. Here as the second in the imports of the first five months of this year of taments of each of the places. It is also imperfect in that it does not include become and live animals, nor poultry, nor eggs. Here as the second in the imports of the first five months of this year of taments of each of the places. It is also imperfect in that it does not include become and five animals, nor poultry, nor eggs. Here as the second in the imports of the first five months of this year of taments. It is also imperfect in the second of the imports of the first five months of this year of taments. It is also in the second of the places of the

PROGRESS OF THE INDIAN CHOLERA.

From the Englishman's Magazine.
Indian or spasmodic chotera, is a plague of modern It is in its principal symptoms altogether untike the English cholera, yet many persons not acquainted with the nature of both species, have confounded them. In Hindostan, spasmodic cholera has probably always existed as a comparatively mild climatic disease, affecting at certain seasons of the year a small number of indi-viduals in various parts of the country. But there is no evidence to show that it ever bore the epidemic character until the year 1817. However this question may be disposed of, it is at least certain that the Indian cholera was not entitled to be classed with pestilential sconrges of the worst description, previous to the beginning of Au-gust, 1817, when it auddenly broke out with unpreceden:

ed malignity. Commencing among the inhabitants of Jessore, a town 100 miles N. E. of Calcutta, in less than a month it travelled along the course of the river to that city, having desolated the intervening villages. Before the expiration of Angust, the native population of Calcutta were attacked, and early in September the disease was also ma-

nifested among the Europeans.
From January to May, 1818, the pestilence raged with extreme violence, extending its destructive influence across Bengal, from Silbet to Cuttack; and towards the interior, from the mouth of the Ganges to its confluence with the Jumna, a space including 450 square miles.

Leaving Bengal, the disease retired for some time to the western bank of the Ganges and Jumns. In its most malignant form it appeared at Benares, where in two months 15,000 persons perished. At Allahsead forty or fifty died daily. To other locations situated on either bank the disease soon spread, and the mortality was equally great. In the district of Gorrakpore \$0,000 were carried off in a month Then suffered in succession Lucknow, Cawapore, Delhi, Agra, Muttra, Meerat and

Between the 6th and 7th of November the epidemic had reached the grand army, which, on the approach of the Pindarrenwar, had been concentrated at Jubbulpore, Mundellah and Sauger, under the command of the marquis of Hastings. It consisted of 10,000 troops, and 80,000 lollowers. To the different divisions of this force the cholera proved more fatally effective than could the shot of the enemy in a well contested field. In twelve days nearly 9,000 men had fallen to rise no more. At this time the thermometer ranged from 90° to 100° Fahrenheit. The heat was moist and suffocating, and the atmosphere a dead calm. The progress of the chothe atmosphere a dead estim. The progress of the cub-lera in the centre division of the army was as follows:— After creeping insidiously for a few days among the lower classes of the camp followers, it seemed instantaneously to gain fresh vigour, breaking out with irresistible force in every direction. Previous to the 14th it had overspread the earnp, sparing neither age nor sex in the indiscriminating violence of its attack. The old, and the young, the European and the native, fighting men, and camp followers were alike selected, and all equally sank within its death-grasp. From the 11th to the 20th, the mortality had become so extensive that the stoutest the mortally had become as a catching to that the sources hearts were yielding to despair. The camp wore the aspect of a general hospital. The medical officers, night and day at their posts, were no longer able to administer to the numerous sack who continued to pour in from every quarter.

cholers now directed its course across the Doccan, advancing, in many instances, at the rate of fifteen or eighteen miles a-day, and remaining at various posts during a period of from two to as weeks. In this way it reached Hussensban, where the mortality was rightful for several daya. It then followed to the banks of the Nerbaddah to Tanah, and afterwards traversed to Aurungabad, Ahmednugger, and Poonah. Taking the direction of the coast, it arrived at Bombay, August, 1818, having erossed the Indian peninsula in twelve months from the date of its appearance in Calcutta.

We have thus been able to trace the footsteps of this destructive traveller through the country of its birth. Its measured rate of progression and the occasional halts which it made for definite periods in thickly inhabited

towns, are worthy of remark, as the epidemic still recourse has been at times direct or devious, uniform or temporardy interrupted; appearing at various places, not at the same period, but in succession, either by the gradual advance of the main current, or of some of its distributive branches.

While the interior of Hindostan was submitting this, the pestilence had spread along the coast of Malabar and Coromandel, reaching Madras the 8th of October. With its progress here, a new and alarming feature was developed. The possibility of transporting the conta-gion by sea was evinced in its transit from Coromandel to the Island of Ceylon. In Candia, the capital, it broke out, December, 1818, with even greater violence than

upon the continent.

By the 15th Sentember, 1819, Mauritius was included By the 15th September, 1819, Mauritus was nestuded in the islands infected. The disease did not appear until after the arrival of the Topaz brigate from Ceylon, where the epidemic was then raging. The vessel at the time of sailing seemed healthy, but during the passage the cholers had appeared among the erw. In Port Louis fity persons died daily. The malaily, however, was chiefly confined to the coast; for though the deaths in the hospital of the town amounted to 94 eases of 133, on the plantation the mortality was not higher than ten or fifteen per cent.

In the adjacent island of Bourbon, the disease began early in December, 1819. The governor had adopted measures to interdict all communication with Mauritius; but notwithstanding this, two boats from the different islands held clandestine intercourse, and the contagion was imported. Of 257 persons seized with the distemper,

178 died.

During the last six months of 1819, the cholera, pursuing its route to the south and cust, had also invaded the Indo-Chinese peninsula. Siam received more than a proportional share of misfortune. In Bankoe alone 40,000 individuals are said to have fallen victims. The contagion marched on to Malaga and Sing spore. By the end of April it was announced on the northern coast of Java. During May it extended with violence in the interior of this Island.

Cochin-China and Tonquin were invaded in 1820. In December, of the same year, it entered China, beginning its ravages at Canton. Pekin admitted the enemy in 1821, and during that and the following year the mortality was so enormous, that coffins and other funeral requisites were necessarily furnished at the expense of the public treasury, for the interment of the poorer classes. Numbers of people engaged in the pursuit of business or pleasure, riding or walking, were seen to fall in the streets, exhausted by the sudden impression of the dis-ease, which carried them in a lew hours alterwards to eternity.

We shall now return to Bombay, and describe the course which the epidemic took to the north and west, in its approaches from that island towards the confines of Europe; and the route by which at last it was enabled to traverse the Russian empire, threatening in the present day, the neighboring European states.

In July, 1821, through the intercourse maintained by ships trading between Bombay and Muscat, in Arabia, the contagion was exported to the latter. Here the disthe contagion was exported to the latter. Serve the ma-case destroyed 60,000 persons. Many expired ten mi-nutes after the infection. The cholera now spread to different parts of the Person guilt—to Bahrein, Busheer and Bassora. In Bassora, 18,000 individuals perished, of whom 14,080 died in a fortught.

From the Persian gulf the cholers extended, inland, in two directions, following the line of commercial intercourse. On one hand it ascended the Euphrates, traversing Mesopotamia, into Syris; and the Tigris, from Bassors to Bagtlad. On the other, the disease was propagated into Persia. In the city of Shiraz, the population of which is 40,000, there died 16,000 in the first lew days. Among the victims was the East India company's resident, Claudius James Rich, esq. He had retired to rest, but slightly indisposed. In the morning he was found dead in his bed.

Extending through Persia, the contagion visited several districts in the north and south of the kingdom. Ispahan escaped in consequence of the caravans from Shiraz bewas abstracted any through rezo. I me town hald dearly for the vicarious visitation, as 7,000 persons were afterwards swept away by the cholera. During the succeeding winter, the contagion became dormant both in Persia and Syrm.

In the spring of 1822 the Syrian and Persian streams of contagion had their frozen energies restored to activity. They quickly spread in their primitive vigor, Mosul, Beri, Achtab and Aleppo, were infested. In Persia, during September, the disease spread to the northward of Teheran, throughout all Kurdistau and Tauris.

In the spring and autumn of 1823, Disrbekr and An-tioch were attacked, and the disease ravaged many of the towns along the Asiatic side of the Mediterranean. It also extended in an opposite course, attaining, in the month of August, Baku, upon the borders of the Cas-pian sea. At length, in September, it reached the Rusain city of Astracan, at the mouth of the Volga. It first broke out in the marine hospital. From the 25th of September to the 9th of October, there died 144 patients, nearly two-thirds of all who had been attacked. Rigorous measures were enforced by the authorities for checking the contagion, but it continued to manifest it-aelf until the severity of winter had set in. During the ensuing summer it did not return. The winter of this year was also destructive of the Syrian branch before it could reach Egypt. Sanatory precautions, however, in expectation of its arrival, had been prescribed by the

Although Europe was relieved from the impending danger, by the complete destruction or exhaustion of those parts of the contagious currents which had peneto Astracan, and to the borders of Egypt, yet the cholera continued to re-appear, every aummer, in the cold of winter had, in general, power to check its morbid influence upon the human body, but not to deatroy the miasm altogether.

In 1822 it re-appeared in Java, and carried off 100,000 In 1832 Recappeared in Java, and carried in 1823, people. After visiting Ternat, Celebes and Banda, in 1823, it first reached Amboyna. The inhabitants had no recollection of the disease ever having been in the Spice islands before. Afterwards it committed great havos in Timor. For several years the cholera pursued its destructive course through China. After desolating several eities in Mongolia, it had reached the frontiers of Siberia at the end of the year 1826. In February, 1828, the disease fortunately received a check during the prevalence of a strong north wind,

Alter the first invasion, Persia had several returns of cholers. In October, 1829, a very serious inroad commenced in Teheren, the royal residence. But the oc-eurrence of winter stopped its progress for the time. The contagion, however, was again resuscitated towards the middle of June, 1830, in the provinces of Mazanderan and Shirvan, upon the southern shore of the Caspian sea. From the latter it passed through the town of Taurus, and destroyed 5,000 of its inhabitants. Crossing the Russian frontier, it rapidly advanced towards the interior. In two provinces 4,557 persons were seized with the malady, of whom more than a third died. The 8th of August it entered This. The population was soon diminished from 50,000 to 8,000, by ileaths, and migration to avoid the distemper. To avert the spread ing mortality, the inhabitants had recourse to religious ceremonies and processions, which, by collecting crowds, only served to extend the disease.

In the mean time, by the 1st of July, the malady had ached Astracan. Ten days afterwards, 1,229 indivireached Astracan. duals had been seized, of whom more than a third died, including the ervil governor, and nearly all the officers of police.
This was the second time the devoted city of Astra-

can had been visited by the contagion.

The contagion, in penetrating to the heart of the Russian empire, from Astracan, pursued the course of the Volga, which spreads its navigable waters over the most populous provinces. Considerable havee was made among the Cossaeks of the Don. The capitals of the several districts between that and Moscow were ravaged in succession. In the city the appearance of the de-

ing prohibited from entering the city. The route that stroyer was announced the 28th of Scatember, having was substituted by through Yezd. This town haid dearly travelled from Astracan, a distance of 200 miles in less than three months.

In Moscow, energetic messures were instantly instituted by the government to afford every assistance to the sick, and to oppose the progress of the mulaily. The 11th of October, twelve sky safter the invasion, 216 cases of cholers had occurred, and of these 75 were fatal. The mortality, however, exceeded even the proportion with the extension of the disease. By the 10th of November, 6,50fi cases were returned, and the deaths amounted to 2,908, or more than a half.

Before closing the account of the progress of Indian cholers, and in order to submit to a glance the magni-tude of the evil, we shall point out the geopraphical limits of its past career in the various directions along which it has been propagated. From Bengal, its abortginal province, it travelled southward to Mauritms and to the island of Timor, near Holland; eastward to Kuku-choton, a Chinese, town situated east of Peking westward to the eity of Moscow, (it is well known, that the disease has since extended from Moscow to Poland, where it attacked both the Russian and Polists rmund, where it stacked out the Russian and Forsay arms, many officers have fallen victims, and the sudden death of count Dicbitach is ascribed to it. The latest European silvices apprises us of its appearance at Archangel. At Rigs, Dantzie, and in Gallieis, it is committing leightful ravages, and gradually extending ksell to the southward and westward, and may be expected in France at its present rate of travelling in 1832], a portion of the globe, in extent, about equal to seventy degrees of latitude, and one hundred degrees of long

> INTERESTING LAW CASE. Reported for the United States Gazette. BTACY, JR. VS. WETHERILL & CO.

ATACY, JR. VS. WETHERLE, & CO.

In the district court for the city and county of Philadelphia, tried on the 18th of October, 1850, before the president of the court, and a special jury.

This was an action on the case, and the plaintiffs claimed to This was an action on the case, and the plaintiffs claimed to the property of the county of the property of the plaintiffs the property of the property of the property of the county of the property of the plaintiffs the contents of the basis without communicating to the plaintiffs the contents of the basis without communicating to the plaintiffs the contents of the basis without communicating to the plaintiffs the contents of the basis were as follows.

In May, 1820, the Heroine was in the port of Philadelphia, and was receiving freight for New Orleans. The defendant shipped of the transport of the contents of the county of the property of the transport.

The boxes were received by the nate, and sarefully stowed by the steredore.

the contents. The boxes were received by the mate, and earse-lith; stowed by the steredore.

The brig sailed for New Orients and when a breast of Bombay.

The brig sailed for New Orients and the sail of the content of the content

by defendants were brought on deck, opened, and found to contain bottles of aquaforiis.

The vessel was detained off Bombay hook for some houry; proceeded on her voyage, and arrived at New Orieans. The eargo was lauded under the inspection of the wardens of the port; as the process of the wardens of the port; as the process of the wardens of the port; as the process of the vessel and at considerable expense to the owners, the brig was repaired, after some detention. To recover damages for the injury thus suffered this action was brought. A number of winteste were examined on the part of the defendant, for the purpose of proving that the goods were skillfully and perivatly packed—that when in the very set of rowing them and not been the practice of the defendants, or of others, evending this article shroad, to mark the convents on the box, or to committee to the owner or master of the vessel, the nature of the municate to the owner or master of the vessel, the nature of the

contenties.

Evidence was given on the part of the phintiffs, to show that is was the practice of several individual druggists, to mask on the both the nature of the contents, or to laws to inserted in the bill master, the character of the article, and also, that when the article is known to be shipped it is usually earried on deek.

The court charged the jury, that the role of law is not have the article, and the character of the waster, the character of the waster of the does not, and it is received in ignorance of its character, the shipper is responsible for whatever damage may ensure from it. The sole question for the jury was, whether they not we have the received the content of the contents. of the contents.

The jury found a verdict for the plaintiffs for the sum of 357 dollars and 9 cents damages, and six cents costs.

Chauncey for the plaintiffs, A. A. Browne and Randall for de-

# NILES' WEEKLY REGISTER.

FOURTR SERIES.] No. 2-Vol. V.

BALTIMORE, SEPT. 10, 1831.

[Vol. XLI. WHOLE No. 1,042

THE PAST-THE PRESENT-FOR THE FUTURE.

EDITED, PRINTED AND PUBLISHED BY H. NILES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN ADVANCE.

PThe causes stated in our last paper, have delayed | eighth number of a new series. It is made up cheifly of the publication of the title page and index for the last facts hitherto stated and ably urged, but now collected volume, and also materially affected the contents of the land published in a formulable arrayment against the bresent sheet, so far as they depend upon the personal dabor of the aditor, though filled with a close mass of very interesting or important matter, on various sub-

The much increased public support which has been extended to the REGISTER in the last and current year, especially the latter, will enable the editor to show his gratitude by his works. He intends to give many extra sheets, or supplements, that the long and importhat ascets, or supprements, mat the forg not impor-tant papers yet to appear may be published and pre-served. And for the sake of reference, (never yet hav-ing justicated those celebrated articles, and that co-ples of them may be easily accessible to the people generally, he will soon make room for the Firghnia and generally, he will soon make room for the Firghnia and Kentucky resolutions, about which so much is now said an political discussions.

Some valuable materials for the proposed history and present state of the iron manufacture, have latterly reached us. The collection, however, is yet very inreached us. The collection, however, is yet very in-adequate to the fulfilment of our original design—but be held at Philadelphin, has menerity said, THE IT THE THE IRON ARCH OF PENNSYLVANIA, AND WITH IT THE THE HOW ARCH OF FERNSYLVANIA, AND WITH IT THE WHOLE STRYEM WILL YALL TO THE GROUND." This foreigner, (we hope to be excused for saying, what we should not say of a person having a right to speak on the subject), ought to have been bred a brazier—because of his supershundance of the raw material. The people of South Carolina would soon nutlificate such a man, were he to speak of the interest of the cotton blumtrain, we're see speak of the interest of the corion pain-cers of that state, as he does of the iron makers and manufacturers of Pennsylvania—and yet the latter is, by for, the most valuable concern. The iron business of Pennsylvania employs many times more of the people of the United States than the cotton business of South Carolina. And if the slaves must be considered with respect to the one, they may be balanced by the horses in the other, required for the various transportations of materials and productions. Either are mere workingmachines.

We have much wished for a full account of the iron works and manufactures of iron in Pennsylvania, to demonstrate the facts suggested—of the truth of which we have no manner of doubt. Cotton is a great and valuable staple, and it never entered into our heart to injure its producers to the value of one cent-but cotton isn't every thing. The world is not made of cotton!

We expect to attend the convention spoken of-but We expect to attend the conventions spower to solve shall not, like the New York Courier and Enquirer, (in respect to the one held in that eity, in May Iaul, pub-lish speceles not delivered in it, nor mis-taste any thing which we shall see or hear. We shall, perhaps, and when we shall see or lear. We shall, perups, and probably, do for this convention what no anti-tariff paper had the fairness or courage to do in respect to the Marrieburg convention—publish the memorial and address that may be agreed on, unless of an unreasonable lengths for, as it is most likely we shall have something to say about the matters set forth, we shall not, like Mr. Thomas Ritchie, make our comments on an article which we are afreid that our readers should see and judge of for themselves!

"new lights," who recently discovered that those who made the constitution of the United States, (with father at their licad, the truly venerable MADISON)—those who acted under it in the first congress, and every president of the United States, as well as every congress, preference of the Content States, as well as every congress, to the present day, were, or are, wholly ignorant—gross-ty ignorant—miscrably ignorant, of the true meaning of the great lederal sompset. And, that the delicate moderly of the disciples of the 'new school' may be more conveniently manifested, we shall, (as soon as relieved of the extra labor caused by getting-out the index of the last volume), incur the expense of an extra half sheet for the purpose of giving a place to this very valuable and timely essay, and some other articles which have been delayed for a suitable opportunity to afford them a place.

\*\*All is not fair in politics." I have suffered enough by wilfrilly failer quotations, and garbled and forced extracts from my writings, made by opponents of the great system to which I am closely united-and am leas disposed to bear with such proceedings on the part of those who should be regarded as my friends. If those think there is any good in what I say—they should permit me to be heard in my own words. Temporary purposes ought never to be subserved by a violation of truth. And, in respect to the particular case now before me, the effect must needs be not other. case now before me, the effect must needs be not only injurious to myself, but prejudicial in things of much higher interest than the success of transient political party-supposing that any sort of influence may attach itself to my opinions.

NAVIGATION AND COMMERCE. There has been much and a just complaint of the delay in furnishing the anand a just compliant of the delay in infrasting the animal report on the navigation and commerce of the United States. We are glad to learn that R is now printed, and will soon be published. This delay was caused by a want of the returns, probably eaused by the numerous changes of officers in the custom houses.

ELECTIONS. Mr. Sevier has been re-elected the delegate from Arkanata, after a sharp contest, by a majority of 453 votes. He was opposed by Mr. Desha. Mr. Isaass, of Tennessee, re-elected after a violent opposition by 470 votes, is called in some of the papers a "national republican." He was opposed because of his want of adhesion to the administration. Mr. Crock-

his wait of adhesion to the administration. Mr. Croek-ett obtained considerably more than 7,000 votes, and yet was beaten by a majority of 596. The Indiana "Clarron" says, that the senate has a large majority of national republicans, probably two to one; and it is admitted, by the other side, that there will be a considerable majority of such in the house of representatives. The exact returns from the 1st congressional district, stiew 11,284 for Mr. Boon, J, and 10,823 for Mr. Law, C.

Mesers. Burgess and Pearce have been re-elected in

Rhode-Island, without any regular opposition.

We have not yet received returns from Kentucky that clearly show the state of parties, as exhibited by the votes given for members of congress, at the late election.
The Frankfort "Commentator" claims a majority of 1,300 votes for the Clay candidates, though only one third of the representation—the majorities of several of the successful administration candidates being very small.

\*\*Substitute of the public attention—has recently published his! "National Republicans." The vote in Allegany county Vot. XLI.—No. 2.

has probably been tied.

The confidence in its strength held by one party, and the confidence in its strength field by one party, and the extraordinary efforts of the other, (because that, as to the latter, the issue settled the political character of the state for the ensuing five years) has caused the loss of one or two counties to the former that might have some of was confirmed to the former that make now been retained, had a corresponding zeal existed, and the same degree of energy been exerted. The college will consist of 27 or 28 National Republicans, and 12 or 13 Jacksonians, according to the result in Allegany counfor five years. We shall give the returns of the votes hereafter, so far as the particulars are obtained.

The following table is believed correct, with the blank

left for Allegany.

0 ,	Nut. Repub.	Juckson
Allegany,	1	-
Washington,	0	2
Frederick,	1	1
Montgomery,	2	t)
Prince George's	2	0
Calvert,	2	0
Charles,	2	()
St. Mary's,	2	U
Anne Arnodel.	2	U
Annapolis,	1	U
Baltimore city,	()	1
Baltimure county,	U	0
Harford,	2	0
Cecil.	0	2
Queen Anne,	0	2
Kent,	0	2
Talbot,	2	0
Caroline,	2	0
Dorchester,	2	0
Worchester,	2	0
Somerset,	2	0
	27	_
	27	12

There are four tickets getting up in Chester county, Pennsylvania--the Wolf Jackson, the anti-Wolf Jack-sun, the National Republican and the anti-masonic.

John Gayle, esq. has been elected governor of the state of Alabama, by a large majority of the votes of the people. The Planters' Gazette of that state characterises him as the uncompromising opponent of "nullification," and considers his election "as a trimmph of the principles of our forefathers over the new-broached heresics of the disunionists of the day."

THE FLORIDA ELECTION of a delegate to the congress of the United States, will, probably, result in one of the most interesting discussions of various important suljeets involved in such proceedings, that ever took place in our country-and on many points.

We shall not pretend to enter into the facts, but these are some of the leading things which appear.

The opposing candidates were col. White, late tle-

legate, and col. Gadaden-and for the former there anpeared a majority of 101 votes; but the governor of the peared a majority of 101 votes; but the governor of the territory, Mr. Duval, for reasons which we do not re-collect to have seen fully stated, objecting to certain votes given to col. White, made a tie between him and his opponent, and ordered a new electron. Col. White requested his friends to treat this order "with contempt,"

saying that congress, and not the governor, has the right of investigating the business of the election; and it seems that the presiding justices of some of the counties, whose duty it is to issue orders for appointing inspectors, or judges, of election, have positively relused to respect the governor's proclamation, for reasons

ed to respect the governor's proclamation, for reasons assigned—among them is David B. Macomil, eag. presiding justice of Leon county. He flenies all 'color of authority' in the governor, with relation to this matter. One curious case is fully stated. It acems clearly proved that, at a certain election district called 'slubury Precinet," col. White received a majority of voirs, and that the returns were regularly made up and carefully forwarded; and it is admitted by the secretary of the

is not fully ascertained. It is known that one of the territory that they were regularly received; and yet it also "Jackson" and dates has been defeated, and the other lannears that the "molt hand" which it is decreased. appears that the "poll book," which, it is deposed on oath was enclosed, was absent from the office of the se-

cretary, when making up the whole return.

Col. White has broadly charged certain officers of go-

vernment with a direct and grossly unwarrantable interference in this election. If he can sustain these charges, it is his duty to bring them before congress-if they are incorrect, the officers charged should seek and obtain a speedy relief from them; for their character is of the most

pernicious tendency.
The "Floridian," of August 10, however says-"We learn that the long expected return from Sandy creek precinct, Walton county, accumpanied by a "poll book," and giving col. White a majority of sixteen votes, was received by the last western mail, and has thus untied the "Gordien knot."

But whether the governor will revoke his proclama-

tion for a new election, is not stated.

"THE PAST AND THE PRESENT." On the 18th of October 1820, before the passing of the "accurred tariff." Samuel Hopkins, erq. of Gennesce, thus described

the state of the country;

"We have probably four or five hundred thousand dollars of annual interest accumulating against us—ex-clusive of our commercial dobt—and so totally has moncy disappeared, that it may be doubted whether there is enough to pay the interest on the amount of interest. We may be said to have but three articles of any moment for exportation—namely, floor, earlier and parameters and parameters and a series of the succession of the prices of these without a parallel. Last year we talked of the difficulty of paying for our land. This year the question is now To kxist. The struggle is not now for property. now To Exist. The struggle is not now for property. From this time onward we shall have to contend for clothing, without which we shall become a miscrable. and I fear a barbarous people.

and I feer a unit route people. The cities are eating up their capital, the country is wearing out clothes without sufficient means to get new ones, either by meantacture or produce. Meantine our importations go on. Specie is plenty in a fee bandle, but the country at Enge, though overflowing with abundance. dance of its products, has nothing with which to ner NONEY; and all the ordinary pursuits of life are palsied for want of a medium of exchange."

On the 12th day of the previous February, the secre-lary of the United States' treasury, stated to congress, that "few examples have accurred of a distress so general and so severe, as that which has been exhibited in

Wm. Carroll, esq. governor of Tennessee, thus expressed himself as to the remedy of the evils of the erree traile" system under which we were then laboring:

"A determination on the part of the people to promote agriculture and domestic or household manufacture, AND TO LESSEN THE CONSUMPTION OF FURIERS GOODS OF EVERY DESCRIPTION, will soon relieve the community from the pressure." [ N. Y. Amer. Advocate.

Ship building. From the New York Evening Post of May 6, 1831—The ship yards in this city have assumed a look of notivity which has not been seen in them too five years past. One first cate thip was launched a day or two since, and contracts are shready entered into for building ten others, of which six are already on the stocks, and the others will be begun as soon as the ship yards can be made ready for them. This is a greater number than has been under contract at any time since the year 1826. Besides these large vessels, great numbers of small craft and steambasts are constructing all along the shores, and vessels of every burden are undergoing repairs. The Kensington, so rudely used in our waters last year, with the Russian ambassador on board, has just been repaired and hes in all her fair proportions in the slip below Mr. Eckford's ship yard. By its side is another vessel of wor, the United States, the construction of which is nearly completed. In the mean time the ship vards are alive and noisy with the star and sounds of business. You hear every where the strokes of the carpenter's axe and plane, of the blacksmith's and caulker's hammer, and see men of the various other occupations, which minister to the construction of vessels, actively employed. The

<sup>&</sup>quot;Governor of the state.

large merchant vessel, drawn by huge chains, mounts slowly up the inclined plane, and you are reminded of Horace's

Trabuntque siecas muchinae carinas:

Which is nearly as good a specification of the machinery of this invention as the mechanic who devised it could have lodged in the natent office-Wait until the keel is drawn up high and dry, and you will see a whole army of Isborers pouring out of the building where they have

been employed in giving motion to the machinery.

A year since our ship yards presented a very different aspect; silent, almost descried—a single ship on the stocks and two or three repairing, a few tars sunning themselves, and here or there a carpenter or a stevedore sauntering listlessly about where he once found constant employment. The reality and strength to this new impulse to commerce, may be judged of from the remarkable fact, that within two months the value of shipping has risen in this port from twenty-five to thirty per cent. In the mean time we are glad to hear of similar activity in other cities, in Boston and Baltimore, a circumstance which proves that this renovated prosperity of commerce is general and not local-as to its causes, they are doubtless various."

COMMERCE OF BOSTON. The amount of revenue se-

eured on merchandise, from January 1, to March 31, 1830, April 1, to June 30, 1830,

\$454,667 99 1,096,458 79

From January 1, to March 31, 1831, From April 1, to June 30, 1831,

1,551,156 78 930,027 17 1.213,559 51

2,143,586 68 592,459 90

Excess over last year, 592,459 90 The number of arrivals into this port from the British West Indies and British American colonies, from Jan. 1, to August 24, of this year, was 73, and the number of elearances about the same. The total number of arrivals from foreign ports, 486. [Statesman.]

We shall here repeat some remarks that we

have oftentimes made, that the facts may be familiar to every body. One great point of opposition to the tariff was, that it would run the revenue; but its friends said, that the revenue must be increased, as the tariff would supply means to enable the people to indulge themselves in the free use of foreign goods; and now, the opponents of the tariff calculate, upon the increased revenue to break down the tariff. These are queer things-but true.

VIRGINIA. The troops that marched from Richmond to Southampton have returned. Several of the blacks taken prisoners have already been condemned to death. There is a great deal of forse, and truth too, in the fol-lowing remarks from the Boston Courier on this sub-

"We infer, from the tone of the newspapers in Virginia, that the public will not be satisfied with any thing ginis, that the public will not be satisfied with any sing less than the total extermination of the murderers. Public justice would strike only at the leaders, for they, and those whose injudicious philanthropy excites their disaffection still more than they, are fairly accountable for the mischief; but oppressed as Virginia is with the tremendous evil of slavery, it is to be expected that men reason."

At an entertainment given at Petersburg to the Richmond light dragoons, John H. Pleasants, esq. offered the following toast: Henry B. Vaughan—the Jerusalem publican, who speculated upon the bones of his kindred, which the dragoous went to bury and to avence.

change is felt in thousands of workshops in this vast metropolis.

Even the hauling up of vessels on the dry docks to be
repaired, gives employment to numbers of laborers.

Fass by the dry dock in that part of the eity called Manlastun island, when the heavy and mmense mass of some
lastun island, when the heavy and mmense mass of som
lastun island, when the heavy and manners mass of som
they attempted to run avay. There is nut fear and
feeding in several of the lower counties of the state; and
they may be the seem to be in a constant excitethe white inhabitants seem to be in a constant excitethe white inhabitants seem to be in a constant excitethe white inhabitants seem to be in a constant excite-

DR. SAMUEL L. MITCHELL died at New York on the 7th inst. Some particular notices of his life and character hereafter.

WOOL AT BOSTON, remains at a high price, though the importations have been heavy. American full blooded, washed 65 to 70; do, three-fourths 58 to 62; do, hall, 53 to 56; half and common 48 to 53. The

prices, generally, being as last quoted.

The import of foreign wools were 315 bales from Smyrna, 202 from Hamburg, and 700 from Londonwhich are said to embrace nearly all the foreign wool ordered for the Boston market.

Sarp nouses. It has been stated that the great ship Pennsylvania, built and remaining in one of the ship-bouses at Philadelphia, had settled; and that it would be necessary to launch her-this report brought about the following statement, which we copy to shew on what a large scale works of this kind are constructed-

The Philadelphia Chronicle contradicts the statement made in the New York Journal of Commerce, upon the authority of an intelligent officer of the navy, that the Pennsylvania had settled on the stocks. According to the Chronicle, the ship was never more secure and erect in her station than at the present; and her actual condition, as well as her immense size and perfect workmanship, excites the admiration of all who inspect her. She has never settled even in the slightest degree, and there is no reason whatever to apprehend such an occurrence. is no reason wineseer to apprehen user an occurrence. She is supported by a stone wall, under the whole length of her keel, of four feet in breadth, on each side of which are two walls of equal length and also of sold manory, their thickness being each three feet; with thirty-two transverse walls of similar construction, four feet apart, solid ground, and are Isid, wherever this was necessary, in water cement. The interstices are filled with rubble in water cement. The interstices are filled with rubble stone, well rainmed in; and the whole forms a mass not to be shaken by any thing less powerful than an earthquake.

The informant of the New York paper observed the guns of the ship lying near her; but his earelessness is proved by his statement that they are all forty-two nounders. She is to have these on the lower gun dean only, ers. She is to have these on the lower gun tests only, with thirty-we's above. She is calculated for one hundred and thirty-eight; but may early two more.

The Rartan lag testinale upon a similar structure.

This information is derived from an officer whose pro-

tessional knowledge and skill are well known, and whose post requires him to be thoroughly acquainted with every thing connected with the navy yard.

WASHINGTON FAMILY. The lamented col. Variek was the last of the military secretaries, associated with Harrison, Hanson and Jonathan Trumbull, in the war of the revolution.

Of the aids de-camp, col. Juhn Trumbull, (aid before Of the akin-us-camp, cot. Junn 1 rumbuts, tau octors Boston, in 1775), alone survives the long and bonored list of Mifflin, Reed, Johnson, Bland, Taylor, Grayson, Smith, Fuzgerald, Meade, Pinckney, Hamilton, Lauress, Humphries, Colb, Tilgham, &c. &c. Trumbull, with the venerated Lafayette, form the "time honored" remains of the many and the worthy who were attached to the mercal and of the remainment of the mercal and of the remainment.

to the personal saude of the commander-in-chief in the days of Irial.

Of the officers of the guard, Colfax, Gibbs, Grimes, Nieholas, &c. all are stricken from the muster roll of the—publishly not a single soldier of the body guard now answers to his name.

Of the officers of the first president of the U. States, The idea prevails that, because of the terrible events. The idea prevails that, because of the terrible events comprising from 1789 to 57 the secretaes Lear, Human Southsumpton, the white population, in case of like politrees, Jackson, Lewis, Nelson, Craik, Dandridge, all outrages in future, will retaliate by an indiscriminate lar egone! The adopted children, Mr. Coutis, of Arlington, and Mrs. Lewis, of Wood Lawn, are all that exist of Washington's family at the outset of the present government. Not a servant of that period is living, although one, a very aged fernale, atill lives, who was at the eamp of Morristown, 1777, and the Valley Forge, 1777-8. Such is the unsparing seythe of time!

THE POLES. There was a meeting of the Americans in Paris on the 9th July to raise subscriptions for the aid of the Poles. Mr. J. Penimore Cooper presided, and J. A. Washington, of North Carolina, acted as seen the property of the property eretary. A subscription was forthwith opened, and 6,300 franca subscribed. A spirited address to the American people was also agreed to, and has been pub-lished, on behalt of the Poles.

Letter of the chairman to gen. Lafayette, with an ex-tract from the Journal enclosed.

Paris, July 10. My dear sir-A meeting of Americans, on the sub-ject of the Poles, was held last evening in the Rue Richelicu, and I hasten to send you an account of the pro-ceedings. You will see that I had the honor to preside, and it has become my duty, as the organ of the meetand it has become my duty, as the organ of the meeting, to request you will consent to receive, not only our own contributions, but any others that may be the consequence of our efforts, and to remit them to the people for whom they were intended. It was desided that an appeal should be made to the American people, in this cause, and we have dared to hope you will give the whole proceedings the high sanction of your name.

I am dara is, warp faithfully and interrely worse.

I am, dear sir, very faithfully and smoerely yours,
J. FENIMORE COPER.

General Lajayette, La Grange.

Answer of gen. Lafayette. La Grange, July 14, 1831. My dear sir-I have had the pleasure to receive your My dear sy — I nave had the pleasure to receive your favor of the 10th inst. including your resolutions adopt-ed at the meeting in behalf of admirable Poland. Per-mit me, although I did not attend it, to proclaim may right of citizenship and to become one of the aubscri-

It is to me a source of patriotic enjoyment to see the sympathies of the United States mingle with those which the cause and heroism of the Poles have excited in Europe, particularly throughout France. Instances of American feeling on the subject we may already reof American needing on the suppert we may aircany re-cord. Whatever is collected in Paris, or other parts of Europe, or from the United States, I shall be happy and proud to transmit to the Polish authorities. With the highest regard, I am, my dear sir, your affectionate LAFATETTE.

ro Mr. J. Fenimore Cooper, Rue St. Dominique, Paris.

From the United States Gazette.

The attention of the passengers on board of the ateam boat Swan, from New York to Brunswick, was called by Mr. P. Olangen of New York, to the condition of the Poles. After explaining the object of by Mr. P. Jonge of New York, to the condition of the Poles. After explaining the object of the meeting, B. W. Richards, eq. (mayor) of Philadelphia, was called to the obsir, and David Hofman, of Baltimore, was appointed secretary—the following resolutions were suggested, and unanimoult slopted. 1. Resolved, That we heartily sympathise with the Polish action in their sufferings in the cause of liberty, and admire the heroism which has been displayed in the resistences of their circles.

maintenance of their rights.

2. That we highly approve of the objects of the meeting of our countrymen in Paris, on the 9th of July, and trust that their call will be responded to in every quarter of our country.

- 3. That a subscription be now made, with the hope that this example will be followed throughout the upion by all travellers, and that this humble commencement may be followed by a large aggregate result.
- 4. That a committee of three, consisting of Moncure Robinson, of Virgnia, Siephen Baldwin, of Pennsylva-nia, and David Hofman, of Baltimore, collect the pro-posed subscriptoe, and place the same in the hands of capitain Degrav, to be kanded ever to such agents as

may be appointed in New York, to transmit what may be there collected in behalf of the same cause.

5. That captain Degraw be requested to suggest simi-

during the remainder of this season.

Mr. Abruham Payne, of the island of Madeira, addressed the meeting in an animated and foreible manner, and closed his excellent remarks by tendering as a present, for the benefit of the Polce, a pipe of his best Manies. sent, tor the bencht of the Potes, a pipe of his best Ma-deria wine, now in Baltimore—the proceeds of which will be paid to Mr. Hoffman, for that object. The plot and engineer, and three deck hands of the steam bost Swan, gave three dollars. Total collection in money short \$50. B. W. Richards, chairman.

DAVID HOFFMAN, secretary.

(T) A general meeting has been held in New York, W. A. Duer, chairman, to raise money for the relief of the Poles. It is probable that a handsome amount will be collected in the United States.

ANTHRACITE COAL FOR STEAM ENGINES. The experiments in the use of the anthracite coal for steam enriments in the use of the antiractic coal for steam ca-gines are matters of public interest, and we are happy to perceive by the following extract of a letter with which we have been politicly favored, from a gentleman in Baltimore to another in this city, will probably be successful.

Baltimore, 22d August, 1831.

My dear sir-Peeling an interest in the prosperity of every thing relating to rail roads, I made it my business, on my return here, to enquire into the success of the use of anthracite coal in our locomotive engine; and believing that it might be of some service to your read, I will detail such information as I have obtained.

on the first trial it packed as it does with you; but by creating a powerful artificial draft (with a lan) and en-larging the gate below, they now meet with ecomplete success. Our engine is of four horse power, and can success. Our engine is of four norse power, saw cameerry 100 passengers twenty miles per hour, but, owing to the curvature of our road, it is not advisable to go over thirteen miles the hour, which it now does, over-coming an elevation of from 12 to 20 feet the mile. She goes and returns 15 miles (making 26) in 2 hours, and consumes but one quarter of a ton of coal, at an expense of \$2.

Our wheels will run 1,000 miles with one oiling.
To the wheels of the locomotives upon the Mohawk
and Hudson rail road, is attached a self-oiling box; invented by Mr. Jarvis, the ingenious and able engineer of the company.

DECLINE OF BOSTON. The Patriot states that the duties upon the goods entered at the custom house on Fri-day amounted to upwards of three hundred thousand dollars. These goods could not have arrived here withuousar. These goous count not have arrived here wan-out our ships, and if our ships are in port they cannot, of course, be doing a profitable business elsewhere—we believe this is the argument, and a very logical one it is. The fact is but one of the many indications of a declining rade, which are shown in the eyes and grieve the hearts of many pairiots in our city. Boston was never before so near the brink of destruction; much of her little business. ness is like to die a natural death, for want of nurses. ness is like to one a natural ocean, for want of numerical territories are lumbered up with goods; the people who have not left her in despair are jostling each other about the streets, and hurrying to and ire, like men demented; her manufacturers make few or no goods except to order; real estate has not risen more than thirty-three per eent. within the last eight months; and, in abort, con-sumption stalks through the streets in such a palpable shape, that even the prophetic croakers who erst made the city musical, though melancholy, with their lamea-tations, have laid aside their harps, and want with gloomy satisfaction to have their predictions verified. We are convinced that Boston will soon lose a good portion of her business-for want of people to transact it.

MOHAWK RAIL ROAD. On Thursday the locomotive De Witt Clinton came down from Schenectady, on her first regular trip in 50 minutes, with a train of ears behind her. Yesterday a friend of ours left with a small train of cars at 28 minutes past 10-eight coaches having preceded. The engine went at the rate of nine miles an hour up to the long inclined plane of three miles an hour up to the long inclined plane of three miles in extent, with a descent of about 21 feet per mile. The last seven miles on a level were passed in thirty minutes exactly.

The engine left Schenectady with another train of the engine sert Somenectary with anomer train of four loaded coaches, at ten minutes past 12, and came the first 7 miles in 35 minutes, stopped 5 minutes, and came the last 4½ miles in about 17 minutes, being less came the last 42 miles in about 17 minutes, being less than an hour coming the whole distance. Pine wood was used on this occasion, but it cannot be made to pro-duce an uniform heat, and the velocity at some portions of the route was greater or less accordingly. Several miles, however, were run at a rate of from 20 to 23 an hour, which fact can be easily known from the number of strokes of the piston per minute.

The cars now leave Schenectady at a little after 12 M. So that our citizens can take a morning ride with great comfort. The sensation is delightful; a velocity of 20 miles an hour is very agreeable and novel. There has been more travelling yesterday and the day before than at any other preceding period.

The new locomotive from England is arrived. The inclined plane at Schenectady is nearly finished, and is an object of great euriosity. Albany Adv.

PARIS GAMING HOURS. The number of these licensed enfers is seven, viz. four in the palais royal, one in the Rue Marivaux, Francati, and the Cerole. They conthis seventeen tables for play, and 150 employers, ex-clusive of spies, flat-catchers, and decoy-ducks. The administration of these infernal regions pay annually to the city of Paris, six millions, fifty-five thousand, and one hundred france, for the exclusive privilege of ruining twenty or thirty thousand families every year; the eity has, more or less, a certain per centage upon three-fourths of them; the bankers of the tables are relieved fouring of them; the bankers of the thouse are releven every three quarters of an hour, and each, in his turn, is obliged to enter in the cubinet of his chief, to make his report, viz. whether there are any new faces—how much a new comer has lost-whether he played with much a new comer has lost—whether he played with gold, silver, or bank notes, and displayed much money— whether he has a distinguished appearance, is tall or short—what his age may be—his residence—whether he is of Paris, or from the country, or a foreigner. The chef de partie, (so this privileged inquisitor is styled), writes these particulars in a register kept for that purose. If the name of the player is not soon ascertained. they give him a supposed one, a sobriquet, ad interim.
[London paper.

FOREIGN NEWS.

From London papers to Aug. 2, inclusive, received at New York, &c. GREAT BRITAIN.

The reform bill was still in the house of commons, and proceeds slowly, because of the special opposition which the disfranchisement of every borough causes. The ministers held a large majority, and the work will be

The British crops promised a bountiful harvest. foreign grain, it was expected, would be immediately ex-eluded, unless some from the United States, passing through Canada.

The ceremony of erowning the king, it is expected, will speedily take place—but a great part of the usual ceremonies will be omitted because of the bad state of his health. The small sum of 100,000 pounds a year has been settled, by parliament, on his wie, in case she survives him. She attended with her husband, when he signed the bill, which was presented by the speaker in the following humble terms:

"May it please your majesty, we your majesty's most faithful commons appear before you with respect and atinfalui commons appear verore you wan respect and are techment to your majesty; abouse, and beg most humbly to announce to your majesty, that in conformit to your majesty's recommendation last parliament, we have pas-sed a bill, (and with dutiful respect we now present sech bill to your majesty) to make provision for her most gracious majesty, in the event of your majesty's decesse, and of which bill we beg your majesty's acceptance."

A new bridge over the Thames, at London, has been opened. It is a magnificent structure, and, with the ground required for its location and accommodation, cost two millions of pounds.

The young queen of Portugal has returned to England from an excursion to France, and, by express com-mand, was received with regal honors.

Lord Brougham has done himself great credit by the reforms which he has accomplished in the court of chancery, and by the industry and energy with which he has

despatched the business—incre are new north colored to before the king's bench about a Cobbett was tried bench about a Cobbett w week ago for a libel for a seditious publication. week ago for a note for a sections pushesion. I are trial excited a good deal of interest, as being directed against the press, and by a liberal ministry. Cobbest laud cited all the ministers as witcessees, and in his speech lashed them very severely. The attorney general, sie Thomas Demann, was evidently sfraid of him, and handled him lightly, calling him a perfect master of the En-glish language. He was virtually acquitted, the jury not being able to agree upon a verdict

PRANCE.

FRANCE.

The king opened the chambers on the 22nd July with a speech, inserted in page 28. He is evidently gaining popularity and strength—if we may judge by what we see stated.

The anniversaries of the three days were celebrated with great pomp. The first with funeral ecremonies in honor of the dead—the second by magnificent games and than 100,000 men. All passed off well, and in excellent order, though disturbances were feared. The king laid the corner stone of a monument to be raised to the memory of those that fell in the revolution. He was attended by Don Pedro, ex-emperor of Brazil. There is a report that the latter has offered his daughter, the young queen of Portugal, to the second son of Louis Philip.

The French army is in fine order. The country was generally tranquil.

The following circumstance is related in one of the London papers-and whether it shall or not lead to serious consequences, the anecdote will serve as an illustra-

"An incident rather of a curious than an important nature, attended the first sitting of the French chamber of peers. As soon as the members and the public were admitted, a number of Austrian flags, which were recognised as those that Bonsparte had sent to the senate aft nised as those that Bonsparte had sent to the senate after the battle of Ulm, in 1805, were seem conspicuously placed upon the tribune, with statues of victory inter-mixed with them. The count de Semonville, the grand referendary, explained that these ensigns had been now, for the first time, disinterred from one of the vaults of the chamber, where he had preserved them with a jealous care, from the period of the restoration up to that lous care, from the person of the restoration up to amoment. His reason for producing them then was, that he thought France was in a condition to reclaim all its ancient mittary glory, without caring who was offended at the revival of it. This affair, which was purile and the retiral or at the sat degree, excited cheers from the au-dience in the chamber; but out of doors, coupled with the declarations of the duke of Orleans, it has produced a more serious impression—that was with Austria is not a more serious impression—that war wan Austra is not improbable. There seems no good reason why such a piece of charlataneric should be played off, unless to give gratuitous offence to that cabinet. It is reported that the Austrian minister has already claimed the standards, and perhaps the foolish transaction, if it was not preconcerted, may lead to serious consequences. It is a denied that the Russian ambassador had left Paris.

At the grand review on the last of the three days, the At the grann feview on the last of the three days, the king announced the reception of a report that the Poles had obtained a great victory. It produced a mighty season among the troops—"long live Poland" burst, at once, from the lips of 120,000 men—and particular were chanuted by them under arms! The effect was worderful. The soldiers embraced one another, and shouted and damed; and an abundance of wine was suddealy presented, in which they drank success to the Poles - success to the Poles.

The duchess of Berri was at Lucca, on her way to Naples.

The London Sun of Aug. 2, says-We have no news from Paris to-day. The question of peace or war mainly depends upon the fate of the election of the presidency of M. Lafitte, or the nominee of the minister. One thing is, however, very clear, that if France do not go to war at present to support the Poles, she will be compelled in a short time to resort to it in vindication of her own institutions, which can never be deemed safe after the triumph of Russia in Poland. If Louis Philippe thinks otherwise he will be grievously disappointed.

M. de Plaffenhoffen, who, it will be recollected, is prosecuting a claim for debt against Charles X. in Scotland, obtained, in the tribunal de premiere instance, of Paris, a judgment by which the ex-king is condemned by default, to reimburse a sum that, including interest and charges, amounts to upwards of 1,000,000 francs.

RUSSIA. The cholera was raging dreadfully at St. Peterburg and many other places. Hardly one half of those attacked with this disease survive.

The following is an official statement of the progress

of the disease for three days at St. Petersburg. Remaining from New preceding day cases. 61 99 Likely to Deaths. Recovered. July 2 57 19 102 159 67 9 16

185 223 106 Letters from St. Petersburg of July 6th, communicate some particulars of a disturbance which had broken out there among the poorer classes respecting the measures taken by the Russian government to prevent the extension of the cholera morbus. In various parts of St. Petersburg places have been appropriated for the reception of persons attacked by the disease, around which cordons had been placed. The poor people were imcordons had been placed. pressed with an idea that their friends who were taken into these hospitals were unfairly dealt with--that instead of measures being adopted to restore the sick, they were buried alive or poisoned. The fact that admission was not freely granted, strengthened the opinion that something improper was going on within the liospitals. A great body of persons, in consequence, forcibly enter-A great tonly in persons, in consequence, notion y candid the hospitals, and dragged out their friends, many of whom were in the last stage of the disorder; they killed the medical men in attendance, and great disorder prevailed. An express was sent off to the emperor, who was near Peterhoff, and Nicholas soon arrived at the spot. He expostulated with the people on their conduct, and said they ought rather to implore God to put an call to the prevalency of the malady. The emperor then fell on his knees, and was joined in prayer by all the people. Thus the disturbance was quelled without any further outrages being committed.

There was a report at Loudon that the emperor Ni-

cholas had died at St. Petersburg of the cholera.

That of imports,

The value of goods exported from Russia in 1850, was 274,312,128 rubles,

198 132 812

76,179,316

Excess of export to DENMARK,

Frederick VI. king of the Dancs, the Vandals, and the Goths, and the duke of Sleswick, Holstein, Stomarn, Lurenberg and Oldenberg, has given a new constitu-tion to his subjects. Two elective chambers; voters, all householders and landholders; the qualified to sit all householders, elergy, and, (with leave), ollicers of the government. Meetings of the states once in two years. Minor matters to be declared in luture proclamations.

PRUSSIA.

It is stated that Prussia has declared that her inactivity is not neutrality, with respect to the contest be-tween the Russians and the Poles; and that she will assist the former by facilitating the passage of provisions and the munitions of war. There is much speculation as to events that may grow out of this position.

Berlin was threatened with the cholers, and the peo-

ple was flying from the city in great numbers.

It seems certain that the Polish general Gielgud had lieen compelled to fly belore the Russians in Lithuania into the Prussian territories, when he was assassinated by another Polish officer. Such appear to be the facts-but particulars are not given. The troops remain in but particulars are not given.

Prussia, about 2,500 men.

It was stated at London on the 27th July that the Russians had crossed the Vistuls, and were expected to invest Warsaw. Much sympathy was lelt for the existing condition of the Poles. There were reports of several small battles near Warsaw—in which the Russaw-in which which the Russaw-in which sians appear to have suffered the most; but they were concentrating their forces. The Poles were resolute,

gathering strength and preparing for a terrible contest.

The Russian army in Poland is not of that immense overwhelming force as to exote as the sole one apprehensions for the late of that country. The whole amount is sons for the sace of that country. In a whole amount of 65,000 infantry, 19,000 eavalry, and 332 pieces of cannon. OI this force there are with gen. Toll 26,500 infantry, 7,900 cavalry, and 132 pieces of cannon; the remainder of the army is in Lithuania, Vollynia, &c.

The emperor contines to fulminate his ukases sgainst those districts of ancient Poland which have risen. Podolia, Volhynia, Grodno, Wilna and Bislystee, are all

declared in a state of war. In Volhynia the insurrec-tionary spirit is said to be burning with great fierceness. There was a report by way of Metz that the great battle which was expected near Warsaw had taken place, and that the Russians were utterly defeated with the loss of 16,000 men and 80 pieces of cannon. We regret that we cannot place much reliance on this report; but it is well known that the Poles had resolved on "victory or death," in the literal meaning of these words; and they will surely fight desperately, well knowing that a general massacre will follow the success of the Russians.

AUSTRIA. Vienna, July 7. According to a report of the board Figure 3, July 7. According to a report of the board of health of Gallieia, the number of persons attacked by the cholera in that province, from the first appearance of the disorder to the end of June, was 37,000; of whom 19,655 had recovered, 13,356 died, and 5,989 still remained Ill.

There is a strong report of a general rising in Hun-gary, in favor of the Poles.

BELGIUM.

Leopold had arrived at Brussels, taken the oaths, and been installed king—to the great apparent satisfaction of the people. The speech of the regent in laying down his power, and of king Leopold in assuming it, are given

in pages 29 and 30 .

At the latest advices, things appeared quite satisfactory at Brussels, and the new ministers appointed were agreeable to the people. The king of Holland, however, will not acknowledge the new king of Belgium—and threatens hostilities. His army, well appointed, is 100,000 strong.

So great was the influx of strangers at Brussels on the arrival of the king, that nearly 4 dollars were given for a bed room, and more than 20 for a window Place Royale to behold the ceremony of his installation. The streets through which he passed were splendidly decorated. Report has assigned one of the daughters of the king of France as a wife for Leopold.

The Belgians have taken offence at that part of the speech of the king of the French, announcing that the fortresses of Belgium would be demolished; and the Belgian government has officially declared, that no overture had been made to it upon the subject, and that that clause is not found in the conditions which it has accepted.

BELGIUM AND ROLLAND.

The Dutch appear to be very seriously preparing for war on Belgium, which it will require all the address of the other powers to prevent. Leopold is in the war on the grown, when the composition of the other powers to prevent. Leopold is in the mean time rendering himself popular by a general tour in the provinces. On the 28th he arrived at Antwerp, where his reception was a brilliant pageant. A warmhearted congratulatory address was presented to him, to which he made an appropriate response. In the evening he visited the theatre, and on the following morning reviewed the troops. His majesty seemed determined to be popular with all classes. He has formally announced his intention of espousing a Catholic Paris, in the presence of lieutenant-general Pelet and wife, and of raising up his children in the Catholic faith. Several generals and superior officers of artillery. This SPAIN

It appears that much attention is latterly paid to the army. army. One strong corps was to proceed towards the French frontier, and another towards that of Portugal. The latter supposed to assist Dan Mignet in his need if driven from Lisbon, either by the French or his own subjects.

Private accounts from Genoa state that the new alliance between Sardmia and Austria is no longer a mystery, and the king of Sardinia is assembling an army at Navarre, of 60,000 men, which is to join the Austrian army in the neighborhood of Milan, which is to consist of 140,000 men, under the command of Charles Albert.

It appears that Italy was on the eve of another revo-The papal troops had refused to act against their countrymen-the tri-colored flag was flying at several places, and the national guard was re-organizing, the Austrians having retired.

PHETTICAL.

France has completely humbled the tyrant of Portugal. The squadron under admiral Roussin gallantly forced a passage to Lisbon, took possession of all the Portuguese ships, and dictated what Miguel should do, allowing him only two hours to decide. The prisons of Lisbon are said to contain 40,000 persons! The reign Lisbon are said to contain 40,000 persons! The reign of Miguel is terrific. He appears to be a perfect savage. Miguel had not yet fulfiled the terms dictated at the

last advices, and the tri-colored flag still floated on the Portuguese vessels of war. There are reports of a ge-

neral insurrection at Lisbon.

TURKEY.

Much fermentation is said to exist because it is supposed that the sultan intends to diminish the power and revenue of the priests. He has made many important reformations in the allairs of his empire, and contemplates other great innovations on the old customs of his people.

COLOMBIA.

The black population at Caracas had risen—taken possession of the jail and liberated the prisoners—killing many persons who opposed them; but they were subdued and 30 of them (including two women) immediately shot.

BRAZIL.

There has been great disturbances at Rio Janciro and other places in Brazil. We may expect that this fine country, like High, will speedly pass into the dominion of the colored population, and that the slave trade will be avenged. Assassination was the order of the day, and many persons have been killed in the different fights that the people have had with one another. A letter saysthe state of allairs is wretched in the extreme, no one will may his debts, and there is no law to compel payment; all the wealthy people are desirous of leaving. ALGIERS.

The French have not reduced the interior, and the Arabs, assembling in numerous bodies, were yet tron-blesome. Indeed, they lately attacked a strong French force, and killed and wounded 6 or 700 men. not to be supposed that this state of things will last long. Algiers was becoming a French city-the adjacent parts of the country were very rapidly improving, and population was advancing, by the nithex of emigrants; and if the possession by France be undisturbed by the European powers for a lew years, the colony will supply im-mense quantities of grain, sotton and sugar. [We hope that our cotton planters will not ascribe the effects of these things to our tariff.]

#### BRIEF NOTICES.

Ballooning. Mr. Durant lately ascended to the height of 3,600 feet, from Castle Garden, New York-when the balloon, containing 10,000 square feet, had only the dapparent size of a water melon;" and such was his command over the balloon, that (aided by a boat which towed it along after it had approached close to the water) he landed on the very spot from whence he started about an hour before.

A new air gun. A trial of a new air gun, the inven-

terrible instrument of destruction is mounted on rollers or little curriages. The guis can be fitted on one carriage, and each pointed in a different direction. They are discharged by means of a wheel, wheel an infant would be able to move. Each cannon free off five lundred balls a minute, and 5,000 balls can be discharged without its being uccessive to let in a fresh supply of compressed air. All the apparatus required for the three cannons can be suried by one house. A bottery of those guns to an indefinite length may be formed, and their effects upon a mass would be to ent them through as a saw cuts a plank.

Amiabilities between Johnson and Adam Smith. Mr. Baswell has chosen to deny, for reasons which will be presently obvious, that Johnson and Adam Smith met at Glasgow; but I have been assured by professor John Miller that they did, and that Smith leaving the party in which he had met Johnson, happened to come to another company where Miller was. Knowing that Smith had been in Johnson's society, they were anxious to know what had passed, and the more so as Dr. Smith's temper seemed much ruffled. At first Smith would only answer, "he's a brute-he's a brute!" bul on closer examination, it appears that Johnson no sooner saw Smith than he attacked him for some points of his famous letter on the death of Hume, (ante v. ii. p. 267 n.) Smith vindicated the truth of his statement. "What did Johnson say? "was the inquiry. "Why the said," replied Smith, with the deepest impression of reactiment, "the said, you lie?" "And shat did you reply?" "I said, you are a son of a ——." "O such terms did these two morshists meet and part, and such was the classical ilislogue between two great teachers of philosophy.

[Walter Scott.-From Croker's Boswell's Johnson.

A handsome fee. Charles the second had a narrow

escape from apoplexy in the spring of 1655, and was only saved by the resolution of air Edmund King, who bled him on the spot, and without waiting the arrival of

bled him on the piot, and without waiting the arrival of the other physicians. For this broseth of etiquette a pardon was formally made out, and a thousand pounds granted to the practitioner, "but,"—there is always a but—"it was never pisit."

Feneration for a fiddle. A German writer, of whom Inferentials knew a little, was in some respects an original worth stunlying, though not imitating. He loved nothing so well as fiddling, and had two violins, a best and a second best, on the first of which, I firmly believe the would not have allowed his own latter to draw a bow when the would not have allowed his own latter to draw a bow he would not have allowed his own lather to draw a bow. Quitting England to set le in South America, he tore houself from his beloved instrument for the first time; but it was only to export it, highly insured, in a different, and, as he thought, a sufer ship, than the one he was to (Harmonicon. sail supercargo in!

Mexico At New Orleans papers have been received from Mexico up to the 5th July, and letters from Tampico to the 23rd. Congress was to have met on the 21st of July, in extraordinary session. The tranquility reigned throughout the republic. The greatest A conducta had arrived at Tampico with \$700,000, and 38 bars of silver-and two others were on their way with 100,060 dollars cach.

Blue, red, and white. Commodore Chauncey hoists the blue pennant, at the navy yard, as senior officer. Commodore Downs of the Potomac the red, and commodore Cassin of the Hudson, the white. [N. Y. Standard.

The U. S. ship Nutchez, bearing the broad pennant of com. Elliott, recently arrived at Nortolk. This ship is commanded by capt. Newton.

Singular case. In a neighboring town a few days

since, a man who had been engaged in the operation of skinning a cow, which had died probably by the bite of a saming a cow, which and deed probably by the offer of a rattle snake, gave sudden indications of having been mor-tally poisoned. His arm has since swollen to a consi-derable size, and but slight hopes are entertained of his

The crew of the U. S. schooner Porpoise have contributed \$200 for the relief of the sufferers by the late fire at Fayetteville.

Distressing shipwreck. The Lady Sherbrook, from Londonderry for Quebec, was lost on the night of the

19th ult. on Cape Ray, N. F. and out of 15 seamen and 285 passengers, only the captain, mate, three seamen

and twenty-seven passengers were saved.

Pyramids of Teotihualcan in Mexico. At a recent meeting of the London Geographical society, a commumeasion was read from heut. Gennis, descriptive of these interesting memorials. The village of Teothual-la, the lat. 19 deg. 43 min. and in lon. 98 deg. 51 min. But the lat. 19 deg. 43 min. E. The village in clerated 7,492 feet above the level of the The pyramids are distant about a mile and a half from it; the largest is 727 teet square at its base, and 221 feet high, with two of its sides parallel to the meridian. A rampart of about 30 feet in height surrounds this pyra-A rampart of about 30 feet in negget surrounds the pyra-mid, at the distance of 550 feet from its base, on the north side of which are the remains of a flight of steps, with a road leading from them in a northerly direction, win a road reading from them in a naturally accounted with a white cement. The remains of steps were also found on the pyramids, which were covered with the same sort of white cement, as well as broad terraces extending across the aides. The number of pyramids, and the number of pyramids are settled in the number of pyramids. races extending across the aides. The number of pyra-mids surrounding the large one was estimated by Mr. mus surrouncing the large one was estimated by man. Glennie at above two hundred, varying in their dimensions. They are all constructed with volcanic stones, and plaister from the adjacent soil, all coated with white cement, and the ground between their bases seems forseement, and the ground octween their oases beems homerly to have been occupied as streets, being also expered with the same sort of cement. One of the smaller pyramids was covered with a kind of broken pottery, ornamented with curious figures and devices; and in the neighborhood of these cilifices abundance of small figures were found, such as heads, arms, legs, &c. moulded in

clay, and hardened by fire. Pardoming power. The New York Commercial states that "such is the facility with which pardons are obtained in that state, that there are at this time ffleen hundred convicts loose upon the community, who have been pardoned, and whose terms of imprisonment, as

adjudged by the courts, have not yet expired."

Dogs. It appears that 2,865 dogs have been killed in Logs. It appears that 2,865 dogs have been killed in the sity of New York, since certain cases of hydrophobia happened there. We have a strong hope that they will be, at least, much reduced in all our large cities and

towns.

Philadelphia. Twenty-two houses on Shippen street
were destroyed by fire, on the 28th uit together with
an infunt—caused by "a uscless burning of shavings." Four of the buildings were of stone-the rest of wood. Several firemen were much injured.

Proportion of soldiers to the inhabitants of various

states, is nearly as follows:-

n England 1 soldier to	
Parante : sordiel to	140
France	110
Austria	100
Russia	100
D	90
Bayaria.	69
Prussia	Co
Poland	
Winternation	
Wirtemberg.	59
Sweden	60
Denmark.	
Honey Il	57
Hease Dariustadt	49

In the United States, there is I soldier to 2,074
Married, on Thursday, the 18th ult, in St. Michael's
beureh, Treton, New Jersey, by the rev. Dr. Bensley,
prince Lucien Murat, second son of Joschim Murat,
the late ex-king of Naples, to Carolina Georgina,
youngest daughter of the late major Thomas Frozer, South Carolina.

Died, recently at New Castle, Del. Thomas Kean, aged 15, and James Macomb Kean, aged 13—only sons of Mathew Kean, eq. recorder of the county. These amiable youths died of the searlet fever, in consequence of having gone to bathe when over-heated.

at Frederick, at a very advanced age, Benjamin Galloway, esq. first attorney-general of Mary land under the constitution of the state.

in York county, Pennsylvania, Peter Sabel, aged 73-he weighed 400 lbs.

The Potomac frigate, capt. Downes, with a fine crew of 500 men, sailed to on New York 2 weeks since, for a 3 years cruize in the Pacific. She will touch at Rio Janeiro, and proceed by the way of the Cape of Good Hope, productions,

visiting several of the East India islands, to look after the interests of our commerce.

Russian manufactures. During the month of June there was an exhibition at Moscow of the productions of the arts and manufactures, methodically arranged in eight rooms. Among a great number of machines was one by Ivan Gourchkoff, for making shawls in imitation of Cashmires, which worked in presence of the public. There were 5,800 different articles, sent by 480 artists, manufacturers, and workmen.

### AMERICAN CLAIMS ON FRANCE.

It appears by the subjoined article that our minister, Mr. Rives, has succeeded in making an arrangement with the government of France for the liquidation and ultimate payment, (in pari, at least, in out the whole), of the claims of our citizens for the illegal capture and confiscation of their property some thirty years ago. We expressed the opinion, soon after the occurrence of the Prench revolution of 1830, that that event was decidedly suspicious to the adjustment and final allowance of these long standing claims: and we are now to find that our anticipations have been realized. The concession which our minister has stipulated on our part, of a reduction of the duty on French wines, however valuable it may be to France, is one which we should have been willing to see made without any equivalent; and the other, the payment of the alaim of Beaumarchain, is only performing an act of justice which, in the opinion of many of our most enlightened countrymen, ought to have been rendered by our government long ago.
[Nat. Int.

From the New York Mercantile Advertiser. Simon Draper, esq. of this city, passenger in the ship Formosa, capt. Orne, arrived on Thursday evening, is the bearer of despatches from Mr. Rives to our gorernment. Among the despatches is the treaty lately concluded with the French government by our minister conclude with the French government of all Mavre of 5th July on the subject of this treaty, which is not only present and unauthorized, but incorrect in many of its details. We learn by Mr. Draper, who obtained his information from Mr. Rives, that the amount of the present of the Mary of the Present for subjections of American claims to be paid by France for spolutions of American claims to be paid by France for a spotiations of American property, in twenty-five millions of france, payable in six equal yearly instalments, with interest at the rate of 4 per cent. per annum, from the date of the treaty being ratified by our government, which interest with swell the amount to about twenty-eight millions five hundred thousand francs.

Mr. Rives has stipulated, on behalf of our government, the payment of one million five hundred thousand france, in settlement of the Beaumarchain claims; That wines, (white and red) shall be admitted in our

country on the following terms:

Wines in bottles shall pay 20 cents, in place of S0, in casks 10

All other wines, now paying 10 cents, shall be ad-

mitted at 6 cents duty. The French government, on their part, stipulate to reliminish all the Louisiana claima; that American long staple cotton shall be admitted at 20 frances per 100 kil. (the same duty as short staple pays), in place of 40 tranes, as now charged.

We have yet no positive information as to the classes of claims that are admitted, and therefore prefer not to touch upon the subject, though we are well aware that

much anxiety prevails on this head,

The famous O. P. Q. correspondent at Paris, of the London Morning Chronicle, pays a high and well deserved compliment to Mr. Rives, for his zealous attenserved compinment to AIT. Alves, or the actions accu-tion to the interest, of his country, He "serized the lucky moment," and has met with much, if not com-plete success—the recolution of three days having intro-duced new men and new rules of action mto the government of France.

We are at a loss to understand the part which relates to a regulation of our tariff-though entirely willing that French wines should be introduced on the most liberal terms, a rightful reciprocity being extended towards our

rica in this country, has just concluded, on the behalf of his government, a treaty with France, on the subject of the elaims of the former on the latter state, in respect of American merchant vessels seized and confiseated in execution of the decrees of Berlin and Milan. This execution of the decrees of Berlin and Manus. And Claim has been made by the American government ever since 1810, but always without effect. Napoleon evaded it; Louis XVIII shuffled it off; Charles X always talked of a more convenient season: but the government of of a more convenient season; but the government of Louis Philip has done justice to the claims of the federal government. These claims have been ably asserted and vigorously defended by Mr. Rives, who, although he labours under the disadvantage of speaking the French language most imperfectly, has yet written the most able and convincing letters, and which, when published, will do him great justice, so they have done the state some

service.

The claim, as you know, is not made on behalf of the state, but on behalf of American merchants, and has been finally settled at one million aterlung; from this £50,000 will be deducted to repay certain French citizens for the loses they also sustained in consequence of seizures made by the American government. In return for these concessions on the part of Forms, the American for these concessions on the part of France, the Amerinor three concessions on the part of France, the Ameri-can government has consented, by its minister, to a re-duction for 10 years on the importation duty on French wines, and to further proportional reduction, should the American government reduce the duties on other foreign wines. France, on the other hand, is to admit long and which silks in her ports on paying the same duty, which will be advantageous to American commerce. The bawill be advantageous to American commerce. The ba-sis of this treaty is mutual concession. It is just, hon-orable and wise. The American government will ratify it with pleasure, and the French chambers should reseive it with autisfaction. It is the first act of M. Sebastiani that I can unhesitatingly approve since he has been named minister of foreign affairs, and it is a treaty which reflects great credit on the zeal, patriotism, and talent of the American minister at Paris, Mr. Rives. This treaty will have the effect of yet further endearing France to America, and will tend to cement that which ought to exist between two free and enlightened nations. I will hope that France and Great Britain will soon be bound together by a treaty of commerce on a broad and liberal principle, which shall destroy jealousies, remove prejudices, and lead to an alliance in favor of liberty and civilization.

The Salem (Mass.) Gazette says that the 5,350,000 dollars, which France has by treaty agreed to pay in full satisfaction of the claims of our merchants for spoliasatisfaction of the claims of our merchants for spoits-tions, "will probably give but a small per centage upon "the actual amount of the claim. The capture, plus-der, and wanton destruction of American ships and merelandise by the Fresch, were estimated, some imperiancise by the Iste Thomas Fitzsimons, of Philadel-inghia, at fity millions of dollars: to wit—twenty mil-lions under the orders of the directory and their " sgents, and thirty millions during the imperial reign Bonaparte. These estimates were made with great " care, by a well informed and judicious merchant, and probably approach the truth."

NATIONAL ASSOCIATION,
Of friends of the American System.
The attention of the friends of the American System, (says the Boston Courier), is solicited to the following document. The free trade party are using great exertions to produce an excitement that shall cause a reaction, if possible, in the public mind and reduce the country back to its state of colonial vassalage—rendering it dependent on Great Britain for the supply of its most ordinary wants. These efforts ought to be met by most ordinary wants. I ness culture ough to be many of corresponding efforts on the part of those who live by the labor of their hands, the farmer, the mechanic, the manufacture—of all who feel it a duty and a pleasure to eberish the institutions of their own country in preference to those of foreign nations, and to reciprocate the benefits of trade and commerce with their neighbors rather than with smugglers and the agents of foreign manufacturers. It is important that the recommendation in proportion. By their personal efforts they swell to an

Paris, July 16. Mr. Rives, the talented, amiable, the letter of the committee, to form a state association, and respectable minister of the United States of Ame- auxiliary to the national society, be acted unon without auxiliary to the national society, be acted upon without delay. The enemy is in the field, and has grown bold in consequence of the apparent indifference of our triends. Let us not be overpowered without an attempt to preserve existence.

#### TO THE FARMERS, MECHANICS AND MANUFACTURERS OF THE UNITED STATES.

Fellow-citizens—On the 18th May, 1831, delegates from several of the states, representing the interests of wool growers and manufacturers, assembled in the city wool growers and manufacturers, assembled in the city of New York and organized a convention, by the appointment of the hon. NATHAN WILLIAMS, of Utics, New York, as president, and Messrs. HENRY SHAW, of Massachusetts, and SAMURL D. HUBBARD, of Connecticut, secretaries. The deliberations of the convention resulted in the adoption of two reports, with accompanying resolutions, which have been spread before the

nying resolutions, which have been spread before the public.

The first of these reports disclosed an examination into alleged frauds upon the revenue in the importation of woollen goods, and consulted by the appointment of a committee, to investigate and expose the daring attempt to evade the laws of the land, by foreign agents and their affliated associates in this country. That committee is now executing its trust. Agents are on the alert both in Great Britain and elsewhere, and facts the alert both in Great Britain and elsewhere, and facts have already come into their possession involving extensive trauds; elsewly demonstrating that a course of deception and perjury is systematically pursued, the inevitable effect of which is to undermine the industry and blight the prospects of the manufacturer and wood grower. The brief allusion to the labors of the committee, seemed but an act of justice, while the nature of its pursuits forbids, for reasons which the public will approve, a more detailed account of its plans and operations.

The second report adopted by the convention, enumerated some of the various reasons for the organization of a national association of farmers, mechanics and manufacturers, with branches in the states, and conclud-ed with a resolution appointing the undersigned a committee to address the public on the object and design of the proposed association. In discharging the duty confided by the resolution, the undersigned would in the first instance refer to the principle and practice of our government, as a full and complete institution of the annvention. But who that reflects will require us to sonvention. But who that reflects will require us to justily! Our government rests upon the principle that the people possess the sovereignty, and our practice under that government, as well as in all the mixed relations of society illustrates it. Feeling the influence of government so slightly, whenever our rights are invadgovernment so slightly, whenever our rights are annu-ed, our interests threatened, or our advance in improve-ment impeded, we as a people, naturally fall back upon ourselves, and in the elements of society, combined in primary assemblies or associations, gather up and em-body opinion as the appropriate means of redress. We body opision as the appropriate means of redress. We take inpoi overalves a responsibility in this way, which in all other governments the people have confided to their rulers, and acting under its just obligations, secomplish purposes towards which the government has been found earcless or indifferent. How delightful is the theory of that government which admits the right to associate without the imputation of revolt, and finds itself strength—the without the imputation of revolt, and finds itself strength—the properties of the properties of the control of the properties of the pr ened by any legitimate movement of the people. Justified by considerations of this nature, the convention re-solved to form a national association of agriculturalists. mechanics and manufacturers.

In extending an invitation to these several branches of industry to assemble for the purpose of organizing an association, it becomes us to explain its object. It is simply this:-to develope the resources and increase of the prothist—to develope the resources and increase of the production and ductive industry of the country by the protection and improvement it will afford. Protection, by the continuance of the American System on its broadest principles. Improvement, by the maintenance of social intercourse on the footing of equality. The mechanics of this country constitute a body of intelligent and industrious men—they are scattered over the whole land—trious men—they are scattered over the whole land—to branch of industry can prosper without their agency. To the stock of a nation's wealth, they bring their full proportion. By their personal efforts they swell to an Immeasurable extent the stock of a nation's comforts, secuation will contribute to this object. It will exert a The values which the mechanic produces are, from the very nature of his situation, small in the detail, but the aggregate swells beyond computation. Though so csaggregate awens beyond compositions of society as sential, he is so mixed with all the relations of society as bring this class of working men up to a level of perfect equality with their feltow-citizens; to apprise them of their importance in society; to enable them to compare their labors, and thus to improve them; to make them acquainted with each other, and thus give them identity as a body; to imprire how and to what extent they are protected by the laws, are among the objects of the ma-

tional association. To the manufacturers, little need be said to enlist them in the support of an institution designed to establish a brotherhood of laborers on the principle already suggested. The capital they employ; the deep dependence of that capital upon the movements of the government; the emburrassments witnessed and felt by the evasions of the law designed to sustain them, and through them the other branches of industry, must admonish them that any measure which combines in harmonious action the industry of the country, must, in the nature of things, add to their security. Nor is this general con-sideration the only obvious inducement. The reasons urged to the mechanics apply equally to them. manulacturers, like the mechanics, of whom they form a part distinguished only by the greater extent of their la-bors, are spread through the country without a medium of communication and ignorant of each other's wants, capacities and pursuits. The present state of the cotton manufacture, arising from the diversified labor of the looms, compared with what it was two years since, when nearly all were employed on the same fabric, might autfice to illustrate our position; but we would call to the recollection of the manufacturer and the wool-grower recontection to the manufacturer and the wood-grower the price of wool three years since, reduced below the cost of prollucing, and compare it with the present ad-vance. Fluctuations like these result from a total ignorance of the supply to meet the demand, and are not more disastrous in the low years to the producer, than in the high years to the consumer. To prevent evils of this description, by a frank disclosure of each other's pursuits, by collecting the facts that belong to the subject, and diffusing them, will form a prominent object of the association.

To the great body of the agriculturalists, the association will be the medium of communicating the wants of the manufacturer. But more especially to that portion of them engaged in the growing of wool. It will affiliate them with those employed in manufacturing, and by placing them both in possession of each other and capacities, create an identity and uniformity of interests, a confidential relationship, which all the base insinuations of wayward and interested speculators will be unabled to shake. By reaching with all necessary acunance to snake. By reaching with MI necessary ne-centrely the amount of wood manufactured, and the amount produced, both interests will be enabled to adjust, with-out loss to either, the supply to the demand. It will bring each acquainted with the cost of producing, and thus enable them to settle the scale of prices upon the basis of reciprocal profit. It will extinguish a race of hungry speculators who thrive the best upon execusive ations, and therefore contrive to create them-who gamble in the productions of the farmers, and raise or depress the prices as best suit the game they are playing, and who violate every moral principle by endeavoring to excite prejudice between those, who, if they thrive at all, must thrive by mutual confidence. To the farmers, therefore, and particularly the wool growers, the un-dersigned appeal, confident that they will not refuse to unite in the councils of their fellow laborers.

It cannot be concealed, even if it were desirable, that in the great branches of manufactures of iron, cotton and wool, reliance is placed upon the fidelity of the government, not only in maintaining in all its parts, the present judicious tariff, but in a vigilant execution of its provisions. But in our country experience has evinced that all laws, however judicious, can only be executed by the sgeney of public opinion. This is the police that directs its sleepless energies to the detection of offenders. It will ever continue layed a is indispensable that its agents be enlightened. The as-

vig-lance in detecting the movements of those who seek to abulish a system by which the capital and labor of miltons in amount is now sustained.

By its suggestions it will aid the government in detecting those frauda through which the treasury is annually robbed of mittions. Through the medium of its reports it will collect and diffuse a vast body of statistical facts, not more important to the members of which it is composed, than to the government itself. It will afford a medium of communication and farnish facilities for social intercourse and the interchange of kind offices between the farmer, mechanic, and manufacturer that

cannot fail to be mutually useful. Such, in brief, are among a multitude of considerations that led the convention to recommend the organi-The undersigned zation of a national association. would beg leave to direct the attention of the friends of the American System to the efforts, the unprecedented efforts which their opponents are now making, as an additional reason for rallying in defence of their principles, the hearest interests of the country. Incompect is obvious, and will those by whose labor the nation is not only sustained but enriched, gainty allow themselves to be deprived of those rights to which they are believes to be deprived of those rights to which they are entitled in return for the blessings they confer? nonneing all political action, except so far as a maintenance of the tariff as now adjusted may be deemed political, the committee respectfully, but earnestly call upon agriculturalists, mechanics, and manufacturers, to assemble in the capitals of the several states, districts, or territories, on the last Wednesday of September next, by delegation or otherwise, there to appoint delegates three times the number of the state delegation in congress, and in equal proportions among the three great Haboring interests of agriculture, mechanics, and minufactures, to meet in Chinton Hall, in the city of New York, on the second Wednesday of October following, for the purpose of organizing a national association, and also to establish branches in the several states,

districts and territories represented. HENRY SHAW,
PETER H. SCHENCK,
SAM'L D. HUBBARD,

New York, August 15, 1831.

Resolved, That the hon. N. Williams, Jacob T. Walden, Zucharlah Allen, and E. H. Robbins, be a committee respectfully to invite the mechanics, manufacturers, and the agriculturalists in the several states, and in the District of Columbia, to appoint delegates to assemble in the city of New York on the accord Wednesday of October next, for the purpose of organizing a NA-TIONAL ASSOCIATION.

New York, May 30, 1831. In conformity to the above resolution, appointing us a committee for that purpose, we have the honor to transmit herewith a statement of the proceedings of a

convention of manufacturers and others, recently held in this city, to which we invite the attention of the friends of the cause of national industry in your state. We hope that you will personally take the proper steps to organize a state association, auxiliary to the national association, and that your state will send delegates to meet in this city, in October next, in conformity to the recommendation of the convention on that subject.

Very respectfully, N. WILLIAMS N. WILLIAMS,
JACOB T. WALDEN,
ZACHARIAH ALLEN,
DORRINS,

COMMODORE ELLIOTT.

We copy from the Pensacola Gazette the following address made by judge Brackenridge to com, Elliott, on his departure from that station, with the reply. It is alof respect, as we have generally observed, (and we say it with national pride) that the urbanity of manners, the firminess of character, and the correct deportment of most of our paval officers, make them popular (and we think deservedly so) wherever they are, and we trust they will ever continue loved and respected by our friends,

Departure of commodore Elliott. This distinguished officer, on his embarkation, was

necompanied to his boat by a numerous cortege, consist-ing of the most respectable inhabitants of the city. Just before stepping into his boat, he was addressed in the

following terms by judge Brackenridge.

"Commodore In behalf of the gentlemen present, perwait me to express their regret, and to which I will add sny own, that you are about to bid us adieu, and to quit the station, where you have commanded with so much honor to yourself and to your country. Your deportment as an officer and a gentlemen, has been such as secure our respect and esteem. In your transactions, and in your local intercourse, we have ever found you just and liberal, as well as affable and conciliatory. In your official character, we are sensible, that you have been a warm and sincere friend to Pensacola, and that you have earnestly recommended this place as the most suitable situation for a unval depot, upon which it must chiefly depend for its future growth and prosperity. For this you are entitled to the thanks of all its citizens.

"We are aware, sir, of no circumstance which can justly subject you to blame, much less to censure. Perreturn to the bosom of your family. We sincerely hope that, in our bidding you farewell, it is not for the last time, but that we may again have the pleasure of taking you by the hand on this spot."

The commodore made the following reply:-

"Gentlemen-The mark of respect which as citizens of Pensacola, you have been pleased to tender me, on a temporary absence, called for by a discharge of my pubis duty, cannot but leave in my mind a favorable impres-sion. I pray you, therefore, gentlemen, to feel assured, and to carry the expression to each of your tamilies, that I shall look back with pleasure to the time I have sojourned among you. I trust the day is not distant, when every cause calculated to retard the prosperity of your town will be removed. I have been delighted with its splendid situation, and have done all in my power to do justice to its naval advantages. Accept my best wishes that, at some future day, if kind Providence should spare

as, we may meet again on this spot."

After the boat bad put off, three cheers were given from the wharf, and returned by the brave tars.

TERRIFIC HURRICANE AT BARBADOES. The New York Post contains a letter from the consulate of the United States at Martinique, just received by the collector of New York, accompanied by a ga-zette extraordinary, issued from the Barbadoes Mercusy office, bearing date August 13, giving an account of the ravages of one of the most terrible hurricanes of which we remember to have heard. It passed over the ill fated island of Barbadoes on the night of the 10th inst, and in eight hours left it desolate, covered with at Martinique, dated August 15th, says—"This island, I much fear, is runed, and it will be impossible for us to recover.

Consulate of the United States of America.

St. Pierre, Martinique, 18th Aug. 1831.
Sin—The British government brig, the "Duke of York," has this moment arrived from Barbadoes, bringing the painful intelligence that that island had been almost entirely destroyed by a burricane on the 10th inst. Fortunately I have obtained a paper, which I now forward. It, however, gives but a poor idea of the damages and losses sustained, as appears from the me-morandum on the back by a gentleman of high respectability. Private letters estimate the number of lives lost at between lour and five thousand; and great lears are entertained lest the cliluvia from the bodies under the ruins, (patrefaction having already commenced), may add disease to famine and want. Many of the inotants who have ever been accustomed to the luxuries of life, are now without clothing or shelter. Referring you to the newspaper, I have the honor to be, sir, in laste, your obedient servant.

JOHN S. MEIRCKEN.

To the collector of any port in the United States.
The following is a description of the hurricane and its devastations, which we copy from the gazette above mentioned.

"On Wednesday evening the 10th, about 7 o'clock, the wind blew very fresh at north, the clouds began to collect thick in the N. E. passing away in scuda as fast as they collected, with a rapidity of motion almost incredible. They continued to do so until about 9 o'clock, when the sky became bright, and almost a perfect calm succeeded. At about half past 10 o'clock the same fatal night, the wind sgain began to spring up, blowing pretty fresh from the S. W. shifting backwards and forwards from this point to N. W. and increasing in violence every instant, and continued till about five the following morning, (by which time the work of destruction had been completed), when it shifted again to S. E. and blew exceedingly strong till about half past eight, when it somewhat abated in violence and gradually died away, leaving the whole island one unvaried scene of desola-tion and distress. In Bridgetown there is scarcely a house which has escaped injury—hundreds have been razed to the ground, and many of the inhabitants buried under the ruins, others unroofed and partly thrown down so as to be completely untenantable. Trees of Immense size and strength were either uplified by the roots or bereft of their branches. All the vessels in Carliste's bay were driven from their moorings and thrown on shore. At the out ports in Speights, the Hole and Oistin's towns, every house has either been thrown down or rendered untenantable-their inhabitants share ing the fate of the numberless victims who have been erushed to death. In the country, the whole face of nature is changed—on the plantations, almost without a single exception, the buildings, mills and negro houses have been destroyed, and many of them have suffered materially in slaves and cattle.

"The provisions which had been housed, as well as the standing corn and canes in the fields, have been so completely destroyed as scarcely to leave a vestige be-hind, and to add to the heart-rending picture, at this moment, many of the estates are without a single article of food of any kind. No force of language can indeed convey an idea of the horror and distress every where convey an idea of the norror and distress every where observable throughout the island; and which, every way the eye is turned, the head grows dim and the heart becomes faint at the saddening and sorrowful picture. Many of the opulent and respectable families, as well as those of the middling and poorer, by this melancholy estastrophe, having thus been driven out, destitute of a covering-many who the day before were surrounded by their familes and comforts, have no where to lay their heads.

"Up to this moment the number of killed has not been ascertained, nor all the unfortunate creatures who have been inhumed in the fallen dwellings taken from be-neath them. The interval of time between Thursday morning and the present, has been employed by the living in burying the ilead. The bodies which have been iliscovered have been borne through the streets to their silent and narrow homes in coffins, trees and whatever else could be obtained for them. Amidst numberless other distressing cases of this kind, it is our painful duty to notice the melancholy late of deputyassistant-commissionary-general Flanuer, who, with his wife, five children, his niece and two servants, were all buried under the ruins of their dwelling on Wednesday night, from which they were not taken until the following morning—his muhappy wife and two of the children alone have survived. At St. Ann's, many of his majesty's troops have been killed and upwards of 100 wounded by the falling of the barracks.

The most remarkable phenomenon attending the storm of Thursday morning, was the sudden gusts of wind, which, instead of thumber, invariably accompanied the most vivid flashes of lightning, and came with a force not to be withstood-Hollow, subterranch noises were also heard, and some imaging we were also visited during the night with earthquakes—this, however, we do not youch for, as we were not sensible of them.

"We have hastily thrown together these few particulars, amid the scenes of indescribable hor for and confusion, and shall continue to furnish such additional ones as may reach us. The following is a list of the vessels have very deeply touched my heart. The wishes of stranded in the bay:—Barks Irelam and Arctitusa; brigs France are present to my thoughts: you will aid me to Etchange. Quebec, Decagon, Mary, Kezish, Alliance, accomplish them. Order shall be protected, liberty be stranded in the bay:—Barks Irelam and Arethusa; brigs Exchange, Quebec, Decagon, Mary, Keziah, Alliance, Antoinette, Horatio Nelson, Elire; brigantines Samuel Hinds and Heroine; schra. Ark and Perseverance, mail boats Barbadoes and Montague."

Here ends the account of the Barbadoes paper, but the letter of the 15th says, of one of the vessels above mentioned:-"The American brig Antoinette is on the beach, with 200 puncheons of meal entirely lost."

SPEECH OF THE KING OF THE FRENCH. From the Messager des Chambres, dated July 24.

CHAMBER OF DEPUTIES - HOYAL SITTING. As early as eight o'clock in the morning, the crowd assembled round the chamber, the doors of which were not opened till noon; the two first rows of the reserved galleries were occupied by elegantly dressed ladies, the gentlemen were seated behind. The hall was fitted up in the same manner as for the royal sitting in 1830. the right and left of the throne, which was erected in the place of the president's bureau, were seated the dukes of Orleans and Nemours. Below the throne, to the right and left, were the seats of the ministers, and immedistely below them the marshals of France. of peers were but seastily occupied. We remarked Messra de Broglie, de Cases, Pasquier, Roy, Portal, the duke le Choiseul, Simonville, Talaru, &c. The left side, The seats allotted to the deputies, was entirely filled. Mears, La-fayette, Guizot, Dupin, Lafite, Royer, Gillard, Mauguin, Ch. de Remusst, Thiers, Vicennet, and a great many other deputies took their usual seats.

A great number of strange faces was observed on all A great author of attange more was observed on an the bundles. Among the new deputies we particularly remarked Messra Arago, Paufrede, Merilhou, &c. At one o'clock, a salute of artillery announced the ar-

rival of the king: the deputations went to meet him.

The queen, accompanied by her children, and madame Adeliade, was introduced into the gallery reserved for

her near that of the diplomatic body.

Immediately alterwards the king, dressed in the uniform of the national guard, entered, preceded by the deputations of the two chambers, and followed by a numerous staff. Cries of "vive le roi" rose in the hall, merous stan. Cires of vive ic roi rose in the nam, this majesty having uncovered, took his place on the throne, having on his right hand the duke of Orleans in the uniform of a colonel of hussars, and the duke of Neanours in that of a colonel of lancers.

The king, still uncovered, said to the peers and depu-tics, "gentlemen, be seated." He then put on his hat, and delivered the opening speech in a firm voice. "Mesers, the peers and gentlemen deputies-

"I am happy to find myself amongst you, in the centre of this place where France has received my oaths.

"Penetrated with the duties which they have imposed upon me, I shall always give effect to the national will, of which you are the constitutional organs, and I expect on your part the frank and entire co-operation which will assure to my government that strength, without which it will be impossible to answer the expectations of the na-

"I have said, gentlemen, that the charter shall be a truth: what I have said is accomplished; the charter is the constitutional monarchy with all its conditions loyally maintained, with all its consequences frankly accept-

(Lively applause.)

is true that by the uniform action of all the powers of the state, we shall put an end to those prolonged agiof the state, we shall put an end to those protouged ag-tations which leed the guilty hopes of those who work for the return of the fallen dynasty, or of those who for the return of the fallen dynasty, or of those who the chamber here interrupted his majesty, and loud eries of 'long live the king!') Divided upon the object, they agree, however, in the will to overthrow, no matter at what price, the public order, founded by the revolution of July, but their efforts shall be disconcerted or punish. (Fresh applause.)

"In calling me to the throne, France has willed that the royalty shall be national; it did not desire that royal-ty should be powerless. A government without strength would not suit the sesires of a great nation.

guaranteed; and every factious effort confounded and re-Thus, that confidence will be renewed for the pressed. luture which alone can re-establish the prosperity of th

"It is to carry this into effect, it is to consolidate more and more the constitutional monarchy, that I have caused to be prepared the different projects of laws which

will be proposed to you.

with one proposed to you.

'You will, I hope, recognize in that which has for its
object the decision of a great constitutional question reserved by the charter for the examination of the charter bers, that I always seek to put our institutions in harmony with the interests and wishes uf the nation, enlighten-

ed by experience and matured by time.

"You will have likewise to examine, conformably to the promise of the charter, the projects of the laws destined to complete the departmental and municipal organization, to determine the responsibility of ministers, and of other agents of government, and to regulate the liberty of

instruction.

"Some other projects of laws upon the recruiting of the army, upon the penal code, upon finance, and on different public interests, will be equally submitted to

"I admit the whole extent of the sufferings which the actual commercial crisis has caused to the nation: I am afflicted at it, and I admire the courage with which they have been borne. I hope that they now approach their determination, and that soon the consolidation of order will give the necessary security to the circulation of capital, and restore to our commerce and industry that spirit and activity which, under a government always guided by the national interests, can only be momentarily interrupted.

"The state of our finances is satisfactory: if our wants are great, abundant resources are exhibited for their aid.
"The annual budgets for 1831-1832 will be present-

ed to you in the opening of this session.

"Reductions have been made in the different branches of the administration. They would have been carried still farther, if the increase of our means of defence, and this artner, a the sucress of our means of merice, and the development of our military lores, had not, up to this time, imposed upon us great sacrifices. [Pavos.] "I shall hasten to diminish this burden as soon as a have acquired the certainty of accomplishing it without

nave acquired the occusing of accomprising a wanded compromising the dignity and safety of France. "This certainly will depend upon a general disarming. France desires this, the governments of Europe will feel

its necessity, - the interest of all requires it.

"I have the satisfaction to announce to you, that up to the present time I have not been under the necessity of employing all the resources which the chamber had placed at my disposal.

ed at my disposal.

"Since the revolution of July, France has regained in
Europe the rank which belongs to her. Nothing, henceforth, shall wrest it from her. (Bravos.) Never was her independence better guaranteed; our national guards, who are worth armies—our armies, the fit depositories of the inheritance of our ancient glory—will defend this independence as they have hitherto protected our internal peace and liberty.
"I have to telicitate myself upon the amicable relations

which foreign governments preserve with mine

"We ought to seek to preserve the bonds of friendship, so natural and so ancient, which unite France to the United States of America. A treaty has terminated a controversy for a long time pending between two coun-

tries which have such claims for mutual sympathy.
"Other treaties have been concluded between the Mexican and Haytian republica,

"All these acts shall be communicated to you as soon as they have been ratified, and when the financial stipulations which they contain shall be submitted to your sanc-

"I have given new orders to our cruisers to assure the execution of the law of last session, for the more effecwould not sure the searces of a great nation.

"I have just returned from travelling in France; the proofs of affection which I have received in this journey of Austria have evacuated the Roman states. A real am-

"As soon as I demanded it, the troops of the emperor

uesty, the abolition of confiscation, and important changes (sion to the principles of our revolution, and of my firm resoluin the administrative and judicial system, have been given. Such are the ameliorations which will, we hope, assure to those states, that their tranquillip shall be no longer troubled, and that the equilibrium of Europe will

be preserved by the maintenance of their imlependence.
"The kingdom of the Low Countries, as constituted by the treaties of 1814 and 1815, has ceased to exist. The independence of Belgium, and her separation from Holhad, have been asknowledged by the great powers. The king of the Belgians will not form part of the German confederacy. The fortresses raised to menace France, consideracy. I he forcresses raised to menace ranke, and not to protect Beigium, will be demolished. (Loud applause here again interrupted the speech.) A neutralay recognized by Europe, and the friendship of France, will assure our neighbors an independence of which we

have been the first support.
"The power which rules in Portugal has committed outrages on Prenchmen-it has violated against them the laws of justice and humanity; to obtain redress vainly demanded, our ships appeared before the Tagus. I have received intelligence that they have lorced the entrance of that river; satisfaction, up to that time refused, has been since offered. The Portuguese ships of war are sow in our power; and the tri-colored flag floats under the walls of Lisbon. (Great applause, and cries of 'long

live the kine!")

"A sanguinary and furious conflict is prolonged in Po-nd. The conflict excites the liveliest emotions in the hand. The commerce exercising in present and to it.

After having offered my mediation, I have sought to induce that of the great powers. I have wished to stop the effusion of blood; to preserve the south of Europe from the evils of the contagion which this war is propagating; and, above all, to assure for Poland, whose courage has recalled the old affections of France (eries of 'bravo,') the nationality which has resisted all time and its vicissi-

tides. (Loud applause.)

"You will doubtless judge, that in these difficult negotiations, the true interests of France, the interests of the interest of the interests of the interest of prosperity, of her power and her honor, have been de-lended with perseverance and dignity. Europe is now convinced of the loyalty of our disposition, and of the sincerity of our wishes for the preservation of peace; but it is also with the demonstration of our strength to sustain

a war, that we rely, should we be called upon to resist unjust aggression.

"It is in persisting in the political system followed up to this time, that we shall be able to assure our country of the benefits of the revolution which has saved our liberties, and to preserve them from new commotions, which would at once compromise our existence and the civilization of the world.

"We approach gentlemen, the great anniversary. I shall with satisfaction see you joined with me in its so-tematics. May they be grave and touching commemo-rations, to awaken sentiments of union and concord, which can alone constitute our triumph."

The speech appeared to produce a great effect upon the assembly.

The sitting was closed in the midst of eries of "long live the king.

The king was received throughout his passage from the palace to the chamber with great popular applause. He was dressed in the national guard's uniform, and at-tended by a grand military cortege, composed of the marshals of France, and a number of the other general officers.

The king left the palais royal at one o'clock and de-parted from the chamber of Paris at two o'clock.

## END OF THE BELGIC REPUBLIC.

The Name of the Company of the Compa

or social compact,
"My first cares were to compose a ministry. I called to it the "Any drit early were to compose a ministry. A carred or it use sense individuals to whom the preceding government had en-trusted the branches of the general administration. It was in confirming in their high functions the same men who had so powerfully aided in acquiring and consolidating our liberty that I whisted to give to the nation a first pledge of my entire adhe-ly whether the control of the property of the control of the con-

sion to the principles of our revolution, and of my firm resolu-tion to recurre the enjoyment of all its consequences.

"I caused to be holified to the governments of France and England the decree of the 24th February, which nominated me regent of Belgium, and eredential letters were delivered to Belgie agents at these two courts with the title and rank of ministers

plenipotentiary.

"The Fraceh
of Serventh admitted, without hesitation, our
minister, who took rank along with foreign diplomatic agents
accredited to the courts of the palsis royal. His majesty Louis
Philip, did me the honor of addressing to me by his sutograph
eletter of the 19th of March lant, congratualization on my accession
to the regency, and expressed to me at the same time, and in
formal terms, the lively and invariable interest which be takes in enipotentiary.

to the regency, and expressed to me at the same time, and in formal terms, the lively and invariable interest which he takes in Tornal terms, the lively and invariable interest which he takes in Plant promises which he had made me in February last, when I had the bonor of taking leave of him. He then said on taking me promises which he had made me in February last, when I had the bonor of taking leave of him. He then said on taking me had in the period of the president of the congress, and that he Belgians may always reckon on my friendship.

"We were not to fortunate with the cabinet of St. Lames's.—Our minister was not received with any thing but evility foffs permitting me to leave him longer in an equivocal situation, I ordered him to be recalled.

"The ministry, in the mean time, withing to put as end to the close the revolution by a definitive government, had seat to our agent in Loudon instructions to sound the dispositions of his royal highrest the prince of State Coburg, but obtatele of mere required than the properties of the prop

DIE, with the initiational water are destined to complete the work of nur political regeneration.

work of nur political regenerations with our neighbors, the government was under the necessity of devoling its their attention to the army. The inflattry has been considerably increased and organized, the formation of the cavalry has been completed, the artillery has been put on a respectable footing, the service of the comminarist, of the hospitals, and of transports, has been as the formed in the ranks of the civic guard, equally impatient to measure its strength with the enemy.

"The concrete of all the citizens, who, forgetting the spirit of party, are going to range themselves round the throne, will not contribute less than the course and excellent spirit of our army, and the contribute less than the course and excellent spirit of our army, date our independence, and, if need be, to defend the integrity of our territory.

"Our finances are in as prosperous a state as circumstances
would permit, and the levy of the taxes is effected as easily as in

would permit, and the levy of the taxes is effected as easily as in profound peace.

"If I have been, genitemen, happy enough to aid in leading into port the vested of the state, (for I regard the accession of prince Leopold to the throne of Belgium, and the recognition of min by the majority of evolution and the restabilishment of our liberties,) if I have been able to accomplash any good, far be it from to asked the three to access the major of could it have directed them in the interests of our country.

"It was likewise in the noble firmness of the congress, and in

"It was likewise in the noble firmness of the congress, and in the windom of our deibrasions, that I have found the most powerful support. Permit me, therefore, gentlemen, to address to you the expression of my lively and sincere graitude.
"But, gentlemen, let us declare that our twik has been rendered every easy, by the excellent qualities of the likely people—a produce of the produce sensitially moral, of whom history will say, that during eleven months of revolution, and of privations among the most namerous class, with the ce fewer crimets, of that people whose devotion and love will always be the recompense of a good government.

It is with the most perfect security, gentlemen, that I commit the destinies of this good people into the hands of a prince, whose noble character and private virtues are the best guarantees

"With the most healf-it emotion I may now say, I have seen the dawn of happiness opening on my country. I have lived

the wawn or nappiness opening on my country. I have lived long enough.

"I deposit in your hands, gentlemen, the powers which you had confided to me, and I beg you to be so good as to record my declaration."

### BELGIC FORTBESSES.

A line of strong fortresses on the southern frontier of Belgium, had been catabilished by the great allied powers to keep France in check. There are to be razed, as appears by the following protocol, officially transmitted to the plenipotentiary from France:

Protocol of a conference held at the foreign office, April 17, 1831, between the picnipotentiaries of Austria, Great Britain, Prussia,

and literia.

The pleuiopentainties of Anstria, of Great Britain, of Prusia, and of Russia, having met, have directed their attention to the fortresses constructed since the year 1818, in the kingdom of the Netherlands, at the expinse of the four courts; and to the determination which it would become necessary to take with respect innations which it would become necessary to take with respect land shall have been definitively effected.

Having carefully examined this question, the plenipotentiaries of the four courts were unanimously of opinion, that the new situation in which Belgium would be placed, with her neutrality asknowledged and quaranteed by Prance, ought to change the dom of the Netherland; that the forteress in question would be and Russia.

ayatem of military decince which had been adopted for the Kinje dom of the Netherland; that the fortrense in question would be for their maintenance and defense; that, moreover, the unani-monally admitted inviolability of the Helgian territory offered a security which did not previously evil; finally, that a part of these fortrense, constructed under different retremstances, might

at present be razed. at present be razed.
In consequence, the plenipotentiasive have finally decided, that
In consequence, the plenipotentiasive have finally decided, that
In consequence that the present the present that the present that the present that the present the present that the present the pres

(Signed)

ESTERHAZY, WESSENBERG, PALMERSTON, BULOW, LIEVEN, MATUSZEWIC.

SPEECH OF KING LEGFOLD.

Prince Leopold, on his way to Brussels, was every where re-erived with the highest marks of respect. The following ac-count of his installation, and report of his speech on the occa-sion, is copied from the Monitenr Belge:

son, is copied from the Mointen Belge: Brusels, July 22. After the king with the procession had arrived at Brussels, and proceeded to the platform, where the congress was ready to receive him, according to the programme before published, the president of the congress having caused mechanisms of the multitude to cease, declared the sitting opened, and addressing the king, said-

"Sire-We are met to receive the oath presented by the consti-tion. I shall first invite the regent to speak, who will resign his authority into the hands of the congress."

attority into the hands of the congress."
The regent then rose, and turning towards the king, delivered as following speech which has been already published.
M. de Gertache standing opposite to M. S. de Chokier, replied when in the hallowing tractice.

The regent then rote, and turning towards are asserting to the following parcels which has been aireally published, the following parcels which has been aireally published to him in the following terms:—

"Sir, the regent—When I told you five months ago, in the midst of the congress that elected the temporary bread of the midst of the congress that elected the temporary bread of the midst of the congress and the whole Belgie autonoments of your former colleagues, and the whole Belgie autonoments this spontaneous elevation was a tribute paid to your virtues this spontaneous elevation was a tribute paid to your virtues this spontaneous elevation was a tribute paid to your virtues this spontaneous elevation was a tribute paid to your virtues this your expectation of products of the control of

The nine scats which were in front of the throne were removed The mile reals which were in front of the introduced regent was and his majecty was alone on the upper platform; the regent was below; to the right and left of the king were the generals and uninteer, who were at first behind his arm chair. The members are the control of the control of the right and left of the through the members of the congress were standing and attentive. The receive was entirely changed, and the new coup dreit gravity struck the crowd, whose acctanations redoubled. Silence being proclaimed, his majesty delivered the following speech:—
"Gentlement—The solemn act which has been performed com-

"Grattlemen.—The solomi act which has been performed com-plete the social educe commenced by the partitions of the ma-tion and its representatives. The state is definitively constituted in the form preservised by the constitution itself. This constitu-tion examates entirely from your and this circumstance, owing to

the situation in which the country has been placed, seems to me to be fortunate. It prevents collisions which might arise between the different powers and impair the harmony that ought to prevail between them. The promptuess with which I have repaired to Helgium must have can vitined you that, faithful to my word, opposed my accession to the throne could be removed by your ediver.

"The various considerations which have been adduced in the im-"The various considerations which have been adduced in the im-portant discussion which produced this result, will be the subject of my most serious deliberation.
"I have received, from my entrance on the Belgic territory, marks of affection and good will, for which I still feel equal emo-

marks of affection and book it in an appropriate in an appropriate in a fact the sight of the population, ratifying by their acclamation and the sight of the national representation, I could not but be appropriate in a sight of the propriate in a sight of the sight "At the eight of the population, ratifying by their acclaimations the act of the national representation, I could not but be convinced that I was called by the wish of the country, and I felt all the duties that such a reception impures on me.

"A Belgian by your adoption, I shall also make it my duty to be so always by my policy."

ne to always by my policy.

"I have also been received with extreme kindness in that part
of the French territory through which I passed, and I have considered these testimotics of good will, which I highly value, a
presspe of the relations of conflictness which ought to subsist between the two committees.

presage of the relations of soundation which ought to subsist be "The result of very policial commotion is to affect for a time the welfare of the people. I am too sensible of its importance not odirect my immediate attention and motacitic solicitude to revive commerce and manufactures, which are the vivifying principal to the properties of the people of the peopl

themselves that a nave arready origin to us no, and that a mecha-tic collect the information which is the best calculated to guide the cause of the government in this respect. "Gentlemen, I have accepted the crown which you offered me

"Gentlemen, I have accepted the crown which you offered menly with a view be perform a task equally nother and used—that of consolidating the institutions of a generous people, and to the contract of the co

"I shall esteem myself happy to concur in this noble result, which has been so well prepared by the wisdom of the venerable man, who has devoted himself with such noble patriotism in the

salisation of his country.
"Gentlemen, I hope to be a pledge of peace and tranquillity to "Gentlemen, I hope to be a pledge of peace and tranquillity to ledgium; but the expectation of man are not unfaithle. If not the peace of the peace of the peace we should be not steened, with war, I should not be the peace we should be grain people, and I hope that it will, without exception, rally around its sovereign for the defence of the country, and the sa-tional independence."

mal independence. The project of the procession only to procession the procession of the procession of the palace. His majesty would not again mount to return to the palace. about to return to the palace. His majesty would not again mot his horse, but proceeded to his palace ou loot, amidst the acclase tion of the crowd.

tions of the crowd.

After the inauguration, the deputies met at the palace of the nation. M. de Gertache announced that the king would receive the deputies, (those of one province at a time), at 8 o'clock; and that the congress is invited to be present at a te deum at St. Gudule to-murrow at noon.

### BANK OF THE UNITED STATES.

BANK OF THE UNITED STATES,

On the limit at the transial increasing of the stockholders of
the Bank of the United States, Stephen Girard, eqs. officiated as
chairman, and John Fotter, esp. of South Corolina, as accetary,
the state of the State of the State of the State of the State
by Nicholas Hiddle of the State of A comprehensive and luminous report was submitted in writing, by Nicholas Biodle, etg., the president, in behalf of the directors of the bank, showing, in a maskerly manner, the condition, the harmeter, and the importance of this great antional institutions of the president of the president of the problem. After it was heard, the following/recolotion was problem. After it was heard, the following/recolotion was recordingly appointed a committee, made, in the alternoon, the annexed report, which was adopted without five-11. Reselved, That the communication made by the board of directors to this meeting, her referred to a committee of acten to report upon such matters as they may deem to be interesting to referred upon such matters as they may deem to be interesting to the

The committee appointed were—H. Binney, Robert Ralston, R. L. Colt, Paul Beck, Manuel Eyre, Joseph Hemphill, James Ronaldron.

The committee to whom was referred the communication from the board of directors-

## REPORT:

That they have verified by a comparison with the tabular statements of the bank, the material lacts reported in this inte-resting paper, and find them to be correct. The reasoning by which the board of directors has deduced from them the connection between the bank and the present prosperity of our country, and has sustained the principles which have regulated the administration of its concerns for many years, requires no comment. All who read the communication, which it is presumed will be given to the public, will discrept, for themselves, not mened will be given to the public, will discrept, for themselves, not mened the public and private transit have been performed, its public trows a performed the public and private transit have been performed, its public trows immediate private transit toward the stockholders, and those who immediate private trust toward the stockholders, and those who have confided to it their funds and their croft. The private transition as the flam to fit Chinel States has been by law, and soliminatered as it now is, is believed to be demonstrated; and it would not the stockholders and the work of the conjuctive of the private transition of the states of the states of the states and the states have been always to the states of the states which the board of directors has completed the demonstration. The committee will not, however, deep themselves the satisfaction of abbuilting to the stockholders a lew of the inferences, with the communication, taken in connection with the past and known history of the United States and the bank, appears to

jurify.

1st. That the bank, at its origin, and at great cost and sacrifice. Int. That the hank at its origin, and at great cost and serifler, effectually promoted the restoration of species powers; and that its able administration for geveral years past, has finally established of secretary, as universally sounds within the chance forces are not seen be expected, or as is essential to the general welfarer and that this has occurred in a commonity, whose extractery, but come and that this has occurred in a commonity, whose extracted he come, has jot the influence of artice, those extracted by the come, has jot the influence of active, those of the proof to danger, but the annihis are and second of all the highlight and the proof to the combine and second of all the highlight and the combine for annihilation of the combine and second of all the highlight and the second of a common of an incident of the combine and second of all the highlight and the second of a common of an incident of the combine and second of all the seconds of an incident of the combine and second of an incident of the second of a common of an incident of the combine and the combine and the combine and an incident of the combine and the combine and an incident of the combine and the combine and an incident of the combine and the comb

wiy easies of dirrangement, and is at all time exposed to danger, by the number and variety of its banking infetitutions.

3d. That the lanks, through the whole course of its operations, has effectually assisted the treasury in the culiettoni and distribution of the public revenue; and lint of late years it has distribution of the public revenue; and lint of late years it has been considered to the public defended of the public distribution of the public defended of the public distribution of the course and value of peruniary investments.

3d. That the bank, by its publicious intervention in the busicas of domestic exchanges, has given such lacinty and regularity to this indispensable instrument of intering track, that necessaries are to the course of it any longer exists, to embarrais any eds. That by its extensive procession in forcing exchanges, the

operation whatever,
the That vectories operations in foreign exclange, the
the That visit is a reason in its lands, and has at times
used, with striking effect, the tim its lands, and has at times
used, with striking effect, the time to the visit of the
visited fluctuations in this branch of commerce; and promise, by
the same means, greatly to economize the use of the precision
metals in the future trade of the United States with Claim or
metals in the future trade of the United States with Claim or

5th. That these public services of the Bank of the United

State, are the peutiliar result of an institution organized and administered as this has been; that the organization of any bank or obly whatever, essentially different, would fail in the attainment of most or all of the great objects adverted to; and that an efficiency of the state of the peutiliar of the peut

money inverted at the lowest rate of Interest—the original subsenders not having realized an interest reput to five per cent. per annual, pand continued an interest reput to five per cent. per annual, pand continued annually, and subsequent purchasers of the per annual per a

some recommunical project the deep and critical interest whose powers, or planns, classifishe societies, and other trusts, have in 4th. that the welfare of this bank is now identified with that of the people of the United States, from those who whell the largest operations of commerces to him whose interest in the cur-racy does not go beyond the just compensation for his daily labor

There inferences your committees believe to be comed, and that no partial interest which they may have as stockholders, ought to prevent them from using these processes them from using these processes them from using these processes the proof may be used manifest to all who know the bistory of the bank and the country, by perusing the countranication of the year of directors.

tion of the board of directivit.

There is no cuber subject within range of the reference to the committee, upon which they derive it their duty to report. See the committee, upon which they derive it their duty to report. See the committee of the dead of their seed of the dead of their seed of

which is properly characteristic of a bank of the United States; and that to the present able administration of the bank, the stock-holders and the public are indebted for the full, efficient, and

holders and the potents are motivated for the full, efficient, and profitable devicement of such a system, one provides the properties to the board of directors for their comprehensive and luvel report upon the operations and present condition of the bank, with an as-surance that the stockholders place an unabating confidence in their wisdom and fidelity in the further administration of its

thrittee tour on the feeling in the forther administration on the concern.

Reselved, That the confidence of the totelkholders continues to the due to the able and fishibit president of the institution, and that this thanks be given to him for the enlarged and likewed and the state of the state of the state of the state of the and lor the stall with which be has united in its operations, a regard to the public welfare with a steady support of the right and interests of the stockholders before the next trienish meeting.

Reselved, That if at any time become the next trienish meeting.

Reselved, That if a say time become the next trienish meeting and directors to apply to enorgers for a renewal of the charter of the lank, they are hereby authorized to make such applications to the mane and leasted of the stockholders, and to accept such terms of renewal and leasted of the stockholders, and to accept such terms of renewal and leasted of the stockholders, and to accept such terms of renewal such that the stockholders, and to accept such terms of renewal such that the stockholders, and to accept such terms of renewal such that the stockholders, and to accept such terms of renewal such that the stockholders, and to accept such terms of renewal such that the stockholders, and to accept such terms of renewal such that the such such terms of the such terms of the such terms of the such terms of the support of the such terms of the such t

The New York Daily Advertiser says, that the following is the substance of the report of Mr. Biddle to the stockholders of the Bank of the United States, at their late triennial meeting in

Number of stockholders, 4145. The government stockholders having paid for their stock have taken it up. 140 stockholders own from one to ten shares each; 900 females

14(9) stockholders own from one to ten shares each; 900 females own 30,000 share; 3300 tratees and executors, 20,600; 176 corporations and charitable societies, 14,200. More than one-fourth is held in the above manner. The capital is distributed between the bank in Philadelphia and 25 branches. Since 1817, two branches have been discontinued, and time new ones created—making an interest of seven in fourteen years. These proceeded from thirty eight supplications of the proceeding of the proceed

The situation of the bank on the 1st of August, 1831, was as follows: Public debt, fund, 3.500.000

Discounted on personal security. on funded security,
on demostic exchange, 800,000 99 300 000 16 300,000 Demonits. Specie, -Notes of state banks, equal to specie, 11,500,000 2 109,000 Notes of state mans, equal to specie, Surplus provision for had debts, Bonds for bank and 5 per cent. from government, paid and liquidated, 1,750,000 1.705.000

Increase of investments since 1622, Nett profits for January and July, 1822, 32,250,000 Same for 1831. 2,935,000 Amount of bills bought and sold, and treasury

transfers, Domestic bills bought, 40,572 000 In August, 1822, a mount of discounts of bank and branches for domestic purposes, 15 700 000 Same in 1831, 53,000,000

> A LETTER FROM MAJOR LEWIS. Washington, 31 st August, 1831.

TO THE ERITOR OF THE GLOBE:

TO THE ENITOR OF THE GLOIN:

Sir,—Mr. Hranch, in a letter dated 22d inst, to the editor of the "Ranole Advocate," written for publication, says he told the "Ranole Advocate," written for publication, says he told the property of the prope

wo near the expiration of the present cluster, to sutherise message and the expiration of the present cluster, to sutherise message and the expiration of the present cluster than the such contract the such cluster than the board of director, to promote them if they think proper to solicit research, but to abide, if they think right, by the terms white soggests may impose. A board of director, who have administered the bank in the manist clutted in their research contracts as the major to clutter of the article of a renewal of the charter of the article of the contract the contract their darty. The offering to the adoption of the meeting the following resolutions:

We will not stop to impure by what it intended to the stop that the stop that the stop that the stop that the sto

Ja St Bi Sp Ci Po St Bi

F Т ы G

When I came here, in 1819, I found Mrs. Timberlake the wife of major Eaton, whom I believe to be one of the purest men for many the major Eaton, whom I believe to be one of the purest men the had joined himself for life to that lady, was, to me, the strongest evidence of her purity; and having here an opportunity to inquire into the reports I had heard, I satisfied I many the major of the strongest evidence of her purity; and having here an I many the major of the same daughter to the strongest here disposed to tell the whole truth, he would have said, that I had become so completely satisfied, with regard to the subject of my inquiry, that when I brought the same daughter to this city again, one of my list actume to our time.

The honor of attempting to degrade and drive from society to use his own inaquage, "he did me pretend to intimate that to wise the wife of a condining and deterving friend upon reports, which to use his own inaquage, "he did not pretend to intimate that I do not envy the hear, who, under such eiternmentances, would not only ascriftee the "sie of a friend, but the mother of two or plant daughters, whose reputations would be destroyed with hers. I do not envy the hear, who, under such eiternmentances, would not only ascriftee the "sie of a friend, but the mother of two or plant daughters, whose reputations would be destroyed with hers. delive him (Mr. Branch.) out of the cabinet, because he would not compel his daughters to associate with Mrs. Katon," is wholly unfounded, and if Mr. Branch did not know it to be to, he might lave home in it, if he had make the proper inquiry.

D. LEWIS.

## CATHOLICS IN TURKEY.

CATHOLICS IN TURKEY.

To those sequained with the exercise herefolire committed, upon the slightest pretexts, in the name of religion, upon the Catholics in the Turkish empire, and the fantactism which often excluded them from the exercise of their religious corremonies in places constructed by them for religious worship, as well as the exactions practiced upon them by the subordinate of the state of the constant faiship of their property, and their constant faiship referent, the following document, will be read with supprise and pleasure.

pusces constructed upon them by the subordinate officers of the profit, and their comants liability of being deprived of their property without the possibility of redrest, the following document, will be read with surprise and pleasure:

\*\*Translation of the imperial diploma, divisored by the sublime ports in the Armenian Calabale Character, 1230 corresponding to Armenia Character, 1230 corresponding to Arme

other things as are usually given by virtue of the title of per-tession. No duties of gents or storic, nor any other dusies, shall be levied, either on the person of the bishop or on any others who may visit the porte by his order, nor upon any individual in his review. Suits brought against him shall only be heard and decid-ed in the audience room of the sublime ports. The bishop will, exceeding to ensure, the possession of the vinegrant, gardens and of effects belonging to the church, and no one shall meddle with them. If there should be any among the priest, who remove from one place to another without the permission of the bishop, or create any distorbance, they shall be reprimanded and punished through the intervention of the bishop. The Greek and Arma-nian patraction, or any of their dependents, shall in no manner with his other affairs. Let it so be known and full faith given to the imperial west. the imperial seal.

THE COFFEE TRADE.

We have been favored by a very intelligent correspondent in Borton, with the nunreed statement of the growth and consumptions of the statement of the growth and consumptions of the statement of the statement can well be made to the statement of the statement can well be made it was prepared some three months since, when you loaned me the London brukers' pamphlet concerning coffee, and its accuracy that been tested by every subsequent arrival from Europe, bring-that been tested by every subsequent arrival from Europe, bring-

g accounts of the reduced stocks of coffee in a orts."	il the European
COFFEE FOR 1831.	
Annual production.	
re now produces	Ibs. 37,000,000
umatra and other parts of India	12,000,000
razile	60,000,000
panish Main	8,000,000
(clara	48,000,000
orto Rica	10,000,000
	28.060.000
. Domingo	28,000,000
ritish West Indies	
uteh West Indies	10,000,000
rench West and East Indies	15,000,000
otal yearly production  Annual consumption.	lbs. 250,000,000
olland and the Netherlands consume	Ihs. 88,000,000
reat Britain and Ireland	22,000,000
ermany and the Baltic	85,000,000
rance, Spain, Portugal, and the Mediterrantan	60,000,000
rance, Spain, Portugal, and the Mediterrantau	60,000,000

Present yearly consumption lbs. 305,000,00
The atocks of coffee in Europe, Dec. 31, 1830, were lbs. 80,000,00
Do. do. in the United States, less than 10,000,00 The. 30 5 000 000 20,000,000 Together 90,000,000

Whole growth of 1831 250,000,000 lbs. 340,000,000 Consumption in Europe and America, 1831 205,000,000

Estimated stocks in Europe and America at end of year 35,000,000 Of which there will be locked up in the United States 20,000,000

Leaving in all Ecrope, 31st Dec. 1831, only

The growth of coffee has yearly decreased from five to eight militon pounds since 1282 (when it was greatest), and must continue to decrease two or three years more. It cannot be much increased until three of four years after it reaches 100 r18 dollars in the West Indies. The very low price of sugar is all countries adds to the increase of coffee contomption.

Impert. 153,000,000 £ 1896 141,000,000 202,000,000 181,000,000 | 18±7 < 1828 Import of coffce in Europe" 205 008 000 210,000,000 1830 214,000,000 228 000 000 198,000,000 The increase of production of coffee from 1826 to '30, was 30

The increase of consumption from 1826 to 1830, was 60 per cent-

The increase of consumption from 1820 to 1830, was ob per cert. The increase of production has stopped, while the increase of set sumption gors on and will go on, till checked by high prices. In 1810 coffice in Hamburg was fonk beep per lb, being 12 ets. per last? if rose in Hamburg to 8 being 10 ets. Is 1818 it rose in Hamburg to 10 being 30 ets.

1818 if rose in Hamburg to 10
It thence gradually fell to 3
And did not go below 10 (iii after 34) bring 30 etc.
Coffee continued to fall in Hamburg till 1830, when it was worth
3 1-2 mk beo per ib.
In February 1831, it was worth 4 1-2mk beo
And had not then reached by 30 per cent. the price from which it
started in 13 The stocks of coffee in Europe.

1818 74,000,000

1826 87,000,000 107,000,000 1828 121,500,000 1829 1830 And as shown in the foregoing will be in 1831, only 15,000,000

By Europe is meant the Netherlands, England, France, Ham-gurg, Bremen, Copenhagen, St. Petersburg and Trieste.

# NILES' WEEKLY REGISTER.

FOURTH SERIES.] No. 3-Vol. V. BALTIMORE, SEPT. 17, 1831. (Vot. XLI, WHOLE No. 1.043

THE PAST-THE PRESENT-FOR THE PUTURE.

EDITED, PRINTED AND PUBLISHED BY H. NILES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN ADVANCE.

Our afflictions! We have been sorely distressed because of the great amount of matter on hand, that must be published---and, in rilding ones less of one infliction, by disposing of Mr. Crawford's long statement, we hoped much!—but he major Eston has published an address two or three times as long as Mr. Crawford's, and others must follow it! What can we its? We will do all that we can; and, with the aid of extra sheets and a close type, preserve the record of things as they happen, "without favor or affection."

We owe ilgerespects to the efficer of the Albany Argus, and shall fully pay them—as soon as time is al-lowed to seek for and obtain certain papers.

Mr. Crawford's long expected reply has ap-Mr. Crawford's long expected reply has appeared. We feel but little, it any, interest in the third blacksessed—but, judging from what we hear, this paper seems to have falken much short of the expectations of all the various parties to its contents. We insert it of maccessity, that the record may be kept nj, but do of observe that it has a single fact of striking importance, though redundant with severe expressions and rather coarse terms-and some impeachments that seem altogether uncalled for. In our poor judgment—and in this matter we certainly speak without feeling—the friends of Mr. Crawford ought to have suppressed this publication, in respect to the character and standing which he once held before the people of the United States; and it is probable that the delay has been caused by atand always ready to sacrifice the most sacred principles to self-gratification, in the pursuit of pcl.tiest opponents.
"Who shall decide when doctors disagree?" Since

writing the preceding paragraph, we meet with the fol-

lowing on the same subject:

From the National Guzette-"Mr. Crawford's reply eron me vacational Gazette—"Mr. Crawford's reply to Mr. Califoun is really pitiable. His understanding and taste must be greatly impaired, or he was much overrated when he was a party-idol. Our realiers would not think the reply entitled to the space which it

would occupy in our paper."

From the Richmond Whig. "We finish Mr. Crawford's address to-day, and to do so, are obliged to ex-clude much other matter. We have had time only to give a hasty glance at it, and do not mean therefore speak of its merits—we however, have seen enough of its style, to authorise us to express our gratification, that Mr. Crawford has recovered the dignity befitting the oceasion and his character."

From the New York Commercial Advertiser. "The residue of Mr. Crawford's strictures upon the vice prereamon of Mr. Cawforn's arriculars upon the vice pro-sident arrived this morning, and the publication there-fore is completed in this pajer. We have not publish-ed this precious specimen of imbecile garruity be-cause it possesses either interest or value, but simply to maintain our own character for impartiality, which must not be questioned. Fortunately this country is

"THE PREE TRADE" CONVENTION. "In the midst of counsellors there is safety." No less than thirty de-legates to the convention, to be held at Philadelphia, have been appointed at a meeting held in the city of New York—and a legion 6ft delegates have been named from the little counties, of Virgina heated on tide-water, some of which hardly contain more citizens than are employed at many of our manufacturing establishments. So there will be a large gathering."

We all recollect the abuse that was heaped upon the We all recollect the abuse that was heaped upon the "Harrisburg Convention," because of its proposed in-terference with, or dictation to, the congress of the United States! The present proceeding is justified by the same men on the plea of necessity, to counteract the doings of that convention, and the effects that succeeded it; and it is again stated as if this was the first time in which the ofree trade" lolks have moved in this way.

This class of persons are blessed with weak memories! How is it! Have we not had secret and irresponsible "chambers of commerce" for many years, which modestly interfered to regulate the whole exterior and interior business of the country—whose operations were simul-toneous and combined? which have asked for and generally obtained almost every thing they desired, to protect the navigating interest, by enormous discriminatory duties, by squadrons of vessels of war, by the thunder of the nation's cannon, supported at the national expense?
We have said that these things are right—that the splendid frighte Potomac has lately sailed to the East Indies, to protect a trade, the whole depreducions on which have hardly amounted to as much as her cruize will cost us. hardly amounted to as much as her cruize wat con us.
And this is right. But why is property affoat, far out of the jurisdiction of the United States, more seen-4 than property at home? Why the business of ship owners and seature more precious in our eyes, than that of the owners of furnaces and forges, and of the people of the owners of lurinaces and lorges, and of the people who labor in or are subsisted by them? And how is it that the merchants, perpetually asking and always obtaining protection in their proper pursuits, have been so rank and wroth at others, (having twenty times a greater interest than their own), accking like shelter under the laws of a paternal government? How is 17? Look at the statute book!-it is filled with acts to favor American merchants; and why, except on the broad ground that we stand upon, may not American products as well that we stand upon, may not American products as well be exported in foreign ships, by foreign merchants, as in American ships and by American merchants? \(\frac{1}{2}\) Let him who dures answer this question? And may not that protection which has rendered us the second navigating nation in the world, not be exerted to render us the second manufacturing? Every argument that can be used for the one, must equally apply to the other. The principle or operation of both is the same.

The righteous and patriotic resolution, to export our own products in our own shipping and cause the banner" to be respected, -in the support of diplomatic agents, of the navy on foreign stations, and expense of the last war, (PURELY ONE ABOUT NAVIBATION), have cost the people of the United States not less than two cost the people of the Oldras-and we say it is well; for national independence may not be valued by dollars and cents. And see!—we keep up a feet in the Mediter-ranean that costs more than a million of dollars a year and yet the whole value of our domestic exports to countries within the straights of Gibraltar in 1829--- (the last

year reported), was only as follows: To Epanish ports 185,924 French, 886,112 289,755 Italy and Malta, Trieste, &c. Turkey, Levant, &c. 409,288 27,600 1,798,680

France might nearly as well have received her sunples through her Atlantic ports, and could, at least, have protected her own commerce. So the navy for the protection of our trade in the Mediterranean has cost the 

The meeth g at New York at which the thirty de-legates were appointed, seems to have been a "mighty small" concern, though there had been much drumming to cause a large collection. Vox. XLE Wa.

But to return to the abuse of the "Harrisburg Conrention," for the reasons assigned. Has every body forgotten that the convention-system began with the "merchants and others interested in commerce?" That "merchants and others interested in commerce?" That a convention was breuzed secrety. I believe, through the "chambers of commerce," and met at Philadelphia in November 1829, of which William Bayard, of New York, was charman, and Juhn Vaughan, of Philadelphia, secretary—whose memorial may be found in the 19th volucie of the Registers, may be found in the 19th volucie of the Registers, may be found in the 19th volucie of the Registers, mage 257? This memorial has the whole row of the 19th volucies. rial has the whole ring of bells about "free trade," and angested the rdin of the revenue, if increased duties were imposed on foreign productions! Yet the mem-bers of this convention had enjoyed the protection of 100 cents per ton on loreign vessels, against 6 cents per ton
on the entry of their own—with the payment of 10 per
cent. less duty than goods imported in loreign bottoms were required to may, at our custom linuses! - and this it was that built up the navigation of the United States, and made these men rich! As to the ruin of the revenue-events have laughed at the prediction. We intend not, however, at present, to go into a discussion of these things, our object being only to offer certain facts which excessive "tree trade" modesty would Zealously conceal. From 1789 to 1816, a period of twenty seven respect to others), a "monopoly" in the foreign trade and navigation of the United States—let the "Ankhican Style Bry 20 on with the sense time! twenty-seven years, and then may the merchants fairly interfere with it; but until then, let them do unto others as they have been done by. Isn't THIS HONE T? It is -or the merchants are a superfor-a privileged class! Will this be claimed, or admitted? We think not. They are as we are -not wiser or better than other folks. The greatest merchant in New York, unless he lives more prodigally than I do-(he does not live better), pays no produgaty tash 1 do enter cores not tree better, pays no more revenue, in proportion to his family, than the editor of the Register, except in his own will to favor British rather than American working people.

British rather than ...merican working people.

Albert Gallatin and chancellor Kent, were appointed by the "free trade" meeting at New York, and Thomas P. Cope and Samuel Archer, by that held in Publishelphia, as delegates to the convention. It is believed that neither of these distinguished gentlemen will attend.

THE HAT MANUFACTURE in the United States probably has a present value of not less than fifteen miltions of tollars a year, equal to fully one hall the whole product of cotton—the domestic consumption being added to the foreign export. Before the revolution, there was a law of the "mother country" that forbade our hatters from taking more than two apprentices, and certain regulations by which the hatters of one "province" were prohibited from sending their products into vince" were prohibited from sending their products into a neighboring province. Such was the early jealousy and rank monopoly of John Bulli-sthat our fathers might be kept poor, and the pendent inport fain for all the necessories of life which he dared refuse, notes profitable to humelf in the supply; but our pointiest Sampsims burst the cords that bound them, and accomplished a revolution unprecedented for its grandeur and effect. tion was not over," in the ACKNOWLEDGEMENT of our in-ED except in the encouragement of labor and profit of production, and hence the prompt institution of many associations for the consumption of "home made" goods -and we have the lofty authority of Mr. Manisun for saying, that this purpose was the leading one that brought out our lederal union and built up the present constitution of the United States-and PROTECTION WAS AND tended by many acts of the first congress.

We will remember when great quantities of English has arrived at Philadelphia-where "English has torived were pretty numerous---where large part of the weather clean used English has, and many dunes, who could not afford it, bought them: but after a while, a protecting duty of 50 per sent, was haid upon hists, and a wholesome impulse was given to hatting---the quality of our home-made hats instantly improved, and the quanty rapidly increased and the convergence of the protection of the protect

that the daty on this branch of industry has need as a norxyx, (not as a law.), to consumers—"tripping up the heels" of the new light political economists, and sustaining the just judgment of Frankin, Hamilton, Madison, and the host of sound statesmen, who rendered as much good to their country by the labor of their munds, as Il takington, Green, Wayne, and the rest, bestowed by the power of arms.

These brief remarks suggested themselves on seeing the fullowing, extracted from the London Morning He-

rald.

The progress which the Americans have made in several branches of manufacture is really astonishing. A few years ago there was not a laster in the United States who could make a hot fit to be worn by a well-dressed man, and consequently all lasts of a superior quality were imported from this country. A great change, however, has taken place. We have seen a specimen of gentlemen's hast, manufactured in New York, which are equal, if not superior, both as respects stape and quality, to the very best made in any part of this country. Although the materials are chiefly sent from England, [2] they are sold, tetal, as low as 17s. or 18s. each,—that is, about one-third cheaper than in London?

"PThe shew of very fine lasts, at the last fair of the American Institute at New York, in exceeded any thing of the kend that we ever expected to sees—and we made as to them, "me plate attivation between any special to the most extensive manufactory of such hats as pass into the general communition of the United States, as that of our neur and cild neighbors, Messys, Jacob Hogere and some Baltimore.

Corrox. By the hosy rains and mighty floods in the sonthern states, generally, it acems highly probable that the erop of cotton will tall much short of its last year's amount. The long set weather has caused much of it to rot. A letter from Mississippi says there has been nothing like it since 1813-14. Perhaps a diminished quantity of cotton may not reduce the value of the cropic We have produced much more than the market would rectly take, at lair prices, and forced sales have materially diminished the profits of cultivators.

PORCEAIN. The British manufactures of porcelain are very important. The product of the potteries, for home two or exportant or the worth several midrous of pounds annually. In the world—and in the most delicate and the potteries of the world—and in the most delicate manufactures of China and Japan, and rival the most exquisite productions of France—which, for exames, smoothness and taste, can hardly be excelled. It is a business in which not much has yet been done in the United States, though there is one pretty extensive factory. Prindelephon, it which to autiful and good wares are manufactured. The common kinds, however, will be added to various pursuits of the American people, as population presses upon labor—for we have an abundance of the proper clays not materials for glovag. Indeed, large quantities of the Jaster are exported to England.

A late Loudon paper at ya—We have been favored by Messra. Flight and Barr, with the sight of a magnificent display of Worecater problam, manufactured by them for the packs of Egypt. The disone review is sufficiently gorgous—its pattern being formed entirely of gold in a light ground, surrounding is crossent and star, the symbols of Turco Egyptian power. But it is in the deserts service that the superiority of British manufacture has been evinced. Around, and in the centre of its various articles, flowers of every variety, beautifully grouped, and exquintely drawn, on a cryam colored ground, are gracefully arranged in compartness, surrounded by a splendid seroll pattern of emboased gold; the whole cannelled on a bright Pomons green, and fully sustaining, in clusteness of design and beauty of execution, the high character of this splendid manufacture.

our bome-made hat instantly improved, and the quaintay rapidly mercassol---so that we now export many times believe that we import; which conclusively shear inglet of the 16th ult. If generally damage d the shipping in port—blew down many chimnics and some small a report that the Dismal Swamp is to be accured, for € houses, and unroofed others, and caused several creatives in the levee. Some plantations were nearly destroyed—the canc and corn being completely prostrated, to stroyed—the canc and corn being completely prostrated, to stroyed—the canc and corn being completely prostrated, to said the contain from 2 to 3,000 blacks, and that these were in concert with the murderers in Southampton; at stroyed—the number of south as more of the back broken ones and it is well known that the white people may be considered to the plantations were all under water, it some places to the depth of five feet! A fearful epidemic is expected.

It was reported at New Orleans, that a number of fishermen and their families, amounting to 150 persons, had disappeared in the late gale at Barratam—their huts were washed away, and they fied to their boats, and had not been since heard of. A large number of

cattle were ilrowned.

In the night of the 12th August and on the moraing of the enuing day, a terrolled horizone was felt in the town of Aux Cayes only eight houses were left standing, and it was thought that 1,000 persons lost their lives, the bodies of 700 being lound just after the storm subaided? The vessels in the larshor were sill destroyed, and the crews of most of them perished. The kee flets thereme and Jacond—both town destroyed, and the vessels in their larshors totally lost, and than you have been destroyed, and the vessels in their larshors totally lost, and tany other piaces. Pearlul necuonts of these hursi-senses are yet to reach us. The coffee plantations have sufficient much, and the price of coffee is said to have risen lower cents ser by a some of \$1.00 km and to have risen lower cents ser by a some of the islands.

FLOOR, South Carolini, Georgia, and the other southern crunity generally has soft-seed mask from excessive heavy rains and mighty floods. The courses of the Savanuali, the Pedrey, and many other rivers, are marked by imprecedented desolutions—some of the streams, an confined places, rising 31½ text, and distroying the growing crops of corn, cotton, &c. The aggregate loss will be mighty. Many bradges, some of them important and coarly structures, have passed away without casing "a wreak behan" to mark the place where they stond. Much sickness is anticipated because of the raises and floods.

Hall. The duchy of Parma was disturbed on the 17th June by a hurrane, the ravages of which have no parallel in history, at the very eve of a harvest, which was in the lighest degree promising; every thing has been destroyed in a part of the country thirty miles in length, and from ten to fitteen miles in breadth. All was buried and destroyed under heaps of hall somes. According to the Italian journals, the smollest hall stones. According to the Italian journals, the smollest hall stones. According to the Italian journals, the smollest hall stones registed half a pound; the largest, which were in great quantities, weighted three pounds. They were of distributed by the form one to three inches thick, and from two to eight miches broad. Thirty villages, between San Donino and Parma, are ruined by this storm. The description of the tare of and the Parma. The description of these disasters, given the Parma. The description of these disasters, given

Barbados. We have additional details of the effects of the hurricane felt on this island; but the account published in our last accens sufficient to give a general idea of the highly waste of life and property which it caused—to be compared only with the situation of the island after the famous hurricane of 1780. The howings of the wind, the crash of houses, the tercams of the affrighted, and the groans of the wounded, were in terrific discord—and a deadly pestitence was expected to follow, though famine may be swerted by supplies from the neighboring islands. Barbadoes, theretalore much impoverished, will not easily recover from this wind daspen station.

THE SOUTH. The people in lower Virginia and the [adjoining that in which Radeigh stant adjacent parts of N. Carolina, are excessively agitated, arms and ammunition! Wulmington was, because of the latte massacre in Southempton. There is a large town, and had a great commerce.

were in concert with the munlerers in Southampton; if is said that troops were marching for Newbern, N. where an manrrection was expected, or had actually broken out; and it is well known that the white people in all this section of country are arming themselves, and that suspicion and lear prevails to an unprecedented extent. Five full and ellicient volunteer companies have been formed, or renewed, at Petersburg, Va. Great apprehension prevads that inflammatory papers have been distributed among the negroes in North Carolina, but no fact has yet been discovered to sustain the supposition. It such are discovered, we hope that the authors of them may be designated, and blasted by the contempt and seorn of every honest man. We hate--- without reservation hate, negro slavery, and regard it as the supreme curse of our land--- but we have the blacks, and must make the best of the unhappy condition in which we are placed that we can. And this we think is cer-lam---that a large majority of the slaves are better fed and clothed, more comfortable and virtuous, than the free negroes, who are the very pests of society in Baltimore, Pailadelphia, New York, Providence, &c. Much experience has taught us that emancipation, without removul, adds to the grievance under which we are suflering; and it is this belief that prevents thousands of lering; and it is this benefit that prevents industrial of humane misters from liberating their people, learing that too many of them would become vagabines and thieves, if cast upon the taking care of themselves. We have such a surfeit of them, as to make us many thousand times wish that we had a home almost any where---if relieved from seeing black faces, though some very worthy persons have them; and, with much revulsion of feeling, we see it proposed to drive mit the first surviver persons out of Virgina! Verily, we have enough of them, and out on vaginia; versay, we have enough of them, and one jail, pententiary and poor house, are besides chiefly filled with them. We cannot accept any more-we have much more than our share already! We are willing to bear our own part of the evil, or relieve it by supportto sear our own part of the even, or extere to by supporting the Arterna colonization society, and must misst that Virginis shall bear her part, also. She should do unto others as she would that they should do unto her. A man cannot be justified in placing his own incumbrance upon his neighbor's ground. It is a procedure that should be nutlificated. But does it not appear that those who talk so much about "nullification," are like idle boys playing with squibs and crackers, in a powder magazine?

(A negro man supposed to be the famous gen. Natof the Southampton negroes, arrested and detahed at Battmore as a runnawa slavee—has been demanded by and given up to the executive of Virginia. Many of the prisoners have sleredy been executed.)

The Fredericksburg Arena has the following remarks—It is greatlying to state that the language held by our editorial brethren of the north, in relation to the late disastrous occurrences, is entirely unobjectionable. We have seen no taunts, no eanily, no emplacent dwelling upon the superior advantages of the nou-slave of generous sympathy, an unequivocal expression of horror at the seenes enacted by the debuded wretches. We have no doubt, that should it ever be necessary, the extraons of the northern states would prompth \$h\$ to the assistance of their southern brethren—we speak of the wast majority—lanates three are, doubtless, who so far from thus acting would not very much scruble to foment disaffection, and excite servide insurrection.

13, was received by Mr. Barnum, of the Gry Hotel, 13, was received by Mr. Barnum, of the Gry Hotel, 13, was received by Mr. Barnum, of the Gry Hotel, 18 baltimore, by yesterlay's seuthern mail, saying that expresses had arrived announcing that Witnington was in the hands of the blacks and burn!!—that it was reported they were advancing on Raleigh—that the eitzens had been all night under arms—and the women, almost distracted, were flying all directions. All business was stopped, except in preparation for events. At the instant of writing an express arrived from Johnson county, (adjoining that in which Haleigh stands), demanding arms and ammunition! Wilmington was, (must we say!) a large town, and had great commerce.

ELECTIONS. Other trials have been made in the Bristol and Essex North districts, Massachusetts, to elect members of congress, and also in the yet vacant district in Vermont, without success. It is not worth while to give the particulars.

Maryland election of electors of senate.

The names printed in italic were the allministration candidates, and those marked \* are elected.

Annapolis city-Mr. Claude, no opposition. Alleghany county-Mr. Raigley 688, 669-Mr. Swan 668, Mr. McMahon 664. 688, Mr. Shaw\*

Anne Arundel county - Messrs. Hood' and Stewart,"

without opposition. Baltimore city-Mr. Heath\* 4,434-Niles† 3,738.
Baltimore county-Messes. Stansbury\* and Worthing-

-unopposed.

Cecil county-Mr. Evans 1,059, Mr. Thomas 1,019; Mr. Howard 979, Mr. Grubb 705.

Caroline county-Mr. Burchensle 615, Mr. Cartere 613-Mr. Turner 563, Mr. Lynden 560, Calvert county-Messrs. Jame Kent' and George W. Weems,

Charles county—Mr. Chapman\* 648, Mr. Weems\*
646—Mr. Stoddert 560, Mr. Queen 548.
Dorchester county—Messrs. Thomas Hicks and John
N. Steele, elected. No returns.

N. Steele, elected. No returns. Frederick county—Mr. Beall\* 3,431, Mr. Potts\* 3,410—Mr. Kenp 3,402, Mr. Dorzey 3,397. Harford county—Mr. Montgomery\* 1,113, Mr. McKenney\* 1,070—Mr. Hope 973, Mr. Stump 927. Montgomery county—Mr. Harding\* 926, Mr. Gitting\* 902—Mr. Duval 743, Mr. Peter 667. Kent county—Mr. Reduc\* 509, Mr. Comegys\* 500—Mr. Oaborn 497. Mr. Hunon 486.

Mr. Osborn 497, Mr. Hynnon 486.
Disconnection of the Mr. Kent 736, Mr. Edelen 735—Mr. Somerville 605, Mr. Semmes 399.

Queen Ann country—Mr. Grayson, 687, Mr. Newman, 673—Mr. McKenney 633, Mr. Emory 631, Mr. Standary 8 country—Mestre. Gerard N. Causiu and Cornelina N. Causiu and Cornelina N. Causiu and F. Tackle 887, Mr. Bell 987, Mr. Bell 987, Mr. Standard 1884, Mr. Standard

Somerect county -- AIT. 1 execute vor, Data Bell Mr. Steam 827, Mr. Polk 812.

Talbot county -- Mr. Dokknoon\* 656, Mr. Hughlett\* 643-- Mr. Steem 445, Mr. Reardon 433.

Washington county -- Mr. Waton\* 1,937, Mr. Magilt\*

Wosington county—Ar., mason 1,301, Ar., magair-1,905—Mr. Clagett 1,528, Mr. Tilghman 1,424.
Woreestir county—Mr. W. A. Purnell\* 1,160, Mr. Spence\* 1,159—Mr. E. K. Wilson 1,103, Mr. C. Purnell 1.023.

Recapitulation-Jackson 12, anti-Jackson 28.

Charleston election. The election for municipal officers in the city of Charleston, which has been so warmly cerva and only of constraints, and an active converge converges of the converge converges of the converge converges of the co of votes being greater than ever given at any preceding election.

The Louisville Focus, says the Nashville Herald, in publishing a list of the members of congress from this state, has the name of Jacob C. Jacace as opposed to the present all ministration. This is an error. Mr. Issaes is a thorough going Jackson man, but is in favor of internal improvement.

Virginia representation in congress. It appears from the Abbington Republican, that Charles C. Johnson, esq.

†It is not much our practice to assign causes for particular results of elections, and especially such as can excite political discussions-but it may be observed, that while Mr. Heath received the full number of his partyvote, his opponent did not, for peculiar ressons, or pre-ceedings hard to be justified—which cannot be stated in this work, without ileviating from its usual course; but which may be presented in another way, for the pub-lic reflection. A comparison of the votes of the two A comparison of the votes of the two highest on the delegate tickets in October last, with the highest on the delegate tiekets in October 1978, Notes at the late election, will shew this:

Oct. 1830 Mr. Hunt, (J) 4,471 Mr. Steuart (C.) 4,087

Sept. 1831 Heath 4,434 Niles 3,738

has evicted the late member, Mr. Draper, in the Washington district, by a majority of 57. It is thought that Mr. Draper will contest,

It also appears that Mr. Coke is re-elected by a majority of about 1,100.

The Kenhawha district only remains to be definitely eard from. The contest has been close between Mesars. Maxwell and Smith, (both Clay men), though it is sup-posed that gen. Smith is chosen.

[We have the returns-Mr. Maxwell appears to be

elected by a majority of 378 votes. ?

The representation in congress, will then stand thus: Re-elected-Messrs. Alexander, Archer, Bouldin, Re-elected—Messir. Alexander, Archer, Boundon, Davenport, Craig, Gordon, Dodridge, Armstrong, Patton, Stevenson, Coke, Barbour, MeCoy, Allen, Claiborne, Mercer, [Maxwell.]

Newton in the place of Loyall; John J. Ronne, for

John Rosne; Johnson for Draper; Chion for Talialerro; John Y. Mason for Trezvant. [Richmond Whig.

ohn Y. Mason for Trezvant. [Richmond Whig. Indiana—Indianapolis, Sept. 3.—The returns heretofore published, which embraced all the counties except Allen, Elkhardt, and St. Joseph, gave to each of the candidates for governor the following vote:

Elkhardt Allen St. Joseph	Noble. 23,282 159 193 111	Read. 20,954 21 9	Stapp. 6,870 2 6	
	23,745	20,984	6,890	

The official returns for representatives to congress have now been received from all the counties in the state. The round numbers, if we have added them correctly, are as follows:

First district,	
Rateliff Boon	
John Law	
Second district.	
John Carr	
William W. Wick4,610	
James B. Ray	
Ionathan In	
Jonathau Jennings	
John H. Thompson	
Isaac 110wk	
Third district	
Jonathan McCarty 6,243	
Oliver H. Smith	
John Test	
The 6P	

'Farmers Journal," of Tenucesee, corrects an error into which we lell, respecting Mr. Blair, re-elected to congress, though strongly opposed—saying he is "a zealous friend of the president," "though a consistent advocate of internal improvements by the general government, which by some has been considered the test of opposition to the present administration." The time was, when opposition to the leading measures of an administration, was regarded as an opposition to the presidenty but now persons who have voted against every proposition of the administration, may still be "true and zeslous friends of it!" Hence our error.

CHOLFRA MORBUS. The authorities in various cities of the United States are adopting measures to prevent the introduction of this fearful disease, which many think is contagious—which others pronounce it not to be so, and say that it exists because of a peculiar state of the atmosphere. The latter, opinion, probably, has the most friends.

The landing of many kinds of foreign goods at New York, is forbidden, unless under special permission from the board of health-and vessels arriving from places where the Cholers prevails, are not allowed to approach the wharves nearer than 300 yards-subject to the orders of the board of health.

Our accounts of the ravages of this disease are dreadful. Between the 27th June and 10th July, 2,850 cases occurred at St. Petersburg, with hardly a single cure; and, at the last advices, the new cases were between 550 to 600 a day, and on the mercuse. The imperial family, and nearly all who were masters of their own move-ments, had fied from the city-20,000 of the laboring classes had taken out pages to depart! and the city had a dismal appearance. The Swedes and Danes have many armed vessels stationed to prevent the approach of lugitives from the diseased places.

GRADOTA AND THE CHEROKES. We understand, say the Milledgeville Recorder, that at the late sating of the superior court in Walton county, judge Clayton, delivered an opinion, the substance of which, as well as our informant could understand it, was to this effect—that the Cherokee Initians have the right, notwithstanding the set of the last session, to dig gold on the lands in their occupancy.

FATAL DUEL. From the Missouri Republican of August 30—The personal controversy which was carried on for some time previous to the election, in the other papers of this city, between major Biddle and Mr. Spenters of this city, between major Biddle and Mr. Spenters of the state o

The remains of Mr. Pettis were attended to the place of interment, in the eig grave pard, on Sounday after about, with every demonstration of respect. An immense concourse of our most respectable eitzens joined in these last, and duties. Maj. Biddle's funeral takes place to-dray, at 10 o'clock.

mense concourse of our most respectable citizens joined in these last, and duties. Maj. Biddle's tuneral takes place to-day, at 10 o'clock.

[Maj. Biddle was a pay master in the srmy, and brother of Mr. Biddle, president of the bank of the United States, and soon. Biddle, or the navy. Mr. Pettis was the member-elect to congress from Missouri. The parties had long been in a state of bitter contention, and not long since, major Biddle inflated a severe personal abstancement on Mr. Pettis, for which the latter was tendered "satisfaction." Major Biddle was a married man, but had no children—Mr. Petti was unmarried. Both seemed to believe that the duct would have the stat termination that ensued.]

NAVY OF THE U. S. A good practice has been introduced by Mr. Seeretary Woodbury—that of publishing, on the 1st of every Woodbury—that of publishing, on the 1st of every month, all material changes that take place in the condition or position of the vessels of the United States, in commission—and because of the decease, transfer, &c. of officers in service. The following was last started—

The following was last issued—

Naval register. Vessels on each foreign station of last advices:

Pacific. Frigate Guerriere, sloop St. Louis, and schooner Dolphin. The two former to be relieved by the frigate Potomac and sloop Falmouth.

Brazil. Sloop Vandalia, sloop Lexington on her way to join this station.

West Indies. Sloops Erie and Vincennes, schoopers

Grampus and Porpoise.

Mediterranean. Frigates Brandy wine and Constellation, sloops John Adams, Ontario, Boston and Con-

eord.

Frigate Constellation, esptain Wadsworth, and sloop

Boston, were at Vourla, near Smyrna, on the 22d May, offisers and men all well.

Stoop Natchez, capt. Newton, arrived at Norfolk on the 22d glt.

the 22d ult.
Schooner Shark, lieut. com. Boerum, arrived at Nor-

folk on the 23th uit.

The two last named vessels are undergoing repairs, and will, it is presumed, in a few weeks, be in a situation to resume their stations in the West India squadra.

Navy department, Sept. 1, 1851.

Onto CANAL. The water was let into the canal at Circleville, on the 1st inst., and in 3 or 4 days had reached the aqueduct on Deer creek. The water was expected to reach the locks near Chilicothe about the middle of the month. The Chilicothe Gazette says, in the course of a few weeks boats may be expected in that town from the waters of Lake Eric.

DR. MITCHELL. We alluded briefly vesterday to the Dn. MITCHELL. We allided orieny pesierusy to the death of this distinguished scientific man, which was announced to us but a short time previous to the publication of the paper. He died in his sixty-eighth year, aftion of the paper. He died in his sixty-eighth year, af-ter an illness which afforded little room to hope for his ultimate recovery; but still his departure was sudden and unexpected. He was a man who with wonderful iaculty of retention, and untiring industry, had accumulated more knowledge as to facts, books and natural history than most men, however celebrated, of this or any There were few subjects on which he could other age. other age. I here were two subjects on which is the input on a furnish such information as would lead the input or right to his researches. He enterged the boundaries of discovery in natural science, and stimulated and assisted all who were pursuing the same objects. He was, for a great number of years, professor of various branches in the college of physicians and surgeons, and was dean of the faculty. His labors are dispersed in was dean of the faculty. His labors are dispersed in many volumes. Many cabinets are enriched by his colmany volumes. Many embinets are enriched by his col-lections. And there are few philosophical societies of note in the world, of which he was not a member. He was elected to the assembly of this state soon after the revolution, and was alterwards a senator in congress, and the colleague of De Witt Clinton. His acquaintand the colleague of De Witt Cinton. His acquaint-ance with history, and with civil and international law, was extensive and accurate. There was an amiable simplicity in his character, connected with a consciousness of his own acquisitions, which was confounded with vulgar vanity only by the vulgar mind. He did much to promote the cause of science; and science must regret his loss.

[N. Y. Com. Adv. Sept. 7.

LONDON TEARLY MEETING OF FATENDS.—The editor of the Philadelphia Friend, gives the following summary notice of the proceedings of the late yearly meeting of Friends in Loudon, derived from the letter of a respectable correspondent in that city.

The society's ancient testimony against tithes and other eccleziastical demands, was a subject which gained large attention; and a lively exercise pervaded the meeting, that friends might be found especially faithful herein in this day, when, perhaps more than at any former period in modern times, such impositions are called in question; at the same time members were cautional, that, while in noble simplicity and firmness, they adhered to our testimonies, they should avoid any participation in the popular slamor of the day.

"One sitting of the yearly meeting was pretty much occupied with the suit-slavery subject, and some other matters connected with it. A further grant by voluntary contribution] to Iriends of North Carolina was agreed upon, to enable them to remove the colored people under their care to Iree states. Friends seemed sipsoed to encourage one another to perseverance in the abolition of slavery, hopeful in the apprehension that the work was making progress.

The situation of the aborigines of the British colonies especially those of Australasis, claimed some notice as objects of sompassion for their sufferings from oppressive settlers; and I was ready to say, a burst of indignation escaped, but friends though strong in expression, were temperate), when they heard of the attempts to supplant the poor Cherokees, the particulars of which were received from the meeting for sufferings of Philadelphia.

The lamentable prevailing vice of drinking ardent spirits, and the unlawful use or occupation of the first day of the week, were both subjects which occupied the meeting's attention.

On the reading of the American epistics, and other information which reached the meeting, a subscription was recommended throughout the yearly meeting, in and of the funds of their transationtic bre thren for furnishing a supply of bibles, Friends' books, school books, as well as to assist in fitting up meeting houses, within those partial the American yearly meetings where as-

sistance may be needed.

Elizabeth Ronson was set at liberty by the select yearly meeting, to perform a religious visit to some part of the continent of Europe, and in pursuance of this prospect, with her husband, she had left London, in the steam packet, for Calais. Also, James Backhouse obtained the approbation of the same meeting, to enter upon his arduous prospect of paying a visit, in the love of the gospel, to the settlement of New-Holland.

PORTUGAL. A London paper gives us the following as the condition to which France has reduced Don Misquel. It is, nulced, a must humilating one—and can be regarded out; as a pretude to his exputision. The regal humor secently paid to the laughter of Don Pedro, as queen of Portugal, in England and France, we regard as settling the late of the worthers and wiekel regard as settling the late of the worthers and wiekel regard as esting the late of the worthers and wiekel regard of the properties of the regard as esting the late of the worthers and wiekel regard of the properties of the same at a hear 1st, and upon Don Mgnel, are smeat as her 1st, and upon Don Mgnel, are smeat as her 1st, at the reversal of a population of the smeath of the properties of the special of the street of the French blemands, and the so-ceptance thereof by the Portuguese government, together with plesserals containing these lacets posted on the streets through which Bonhomme was parreded.

TREATY WITH FRANCE From the Boston Duily Advertiser.

We translate the bilowing article from the French government paper (the Moniterr) giving what may probably be regarded as an official exposition of the stipul-tions contained in the treaty lately negotiated between France and the United States. The simulation for a reduction of duties on French wines obvously exceeds the competency of the treaty-making power, and will require the action of both houses of congress, either helore it can be rathfied, or belove it can take effect. The Moniteur states, that the treaty cannot be rathfied until the close of the y tear or the beginning of the next.

1. The United States, since 1810, have demanded an indemnity of France, for the whole of American weeks actived and confusented under the Berlin and M-landerees. The amount of this claim was severify five in lion france. The French government, not inclining to admit any claims sexe in those which applied to vessels illigally serzed or confuserate, has agreed to pay to the United States an indemnity of twenty five millions, and has reserved the right of making a deduction from this amount of a million and a ball, as an indemnity to some French

attrans for their claims upon the lederal government.
2. On the other hand, France, relying on the 3d artisle of the trenty of cession of Louisiann, which had placed the French navigation in that country on the footing of that of the most tavored nation, demanded that her shipping, on entering the ports of Louisiana, should be exempt from the payment of extra duties, as the English shipping has been since the treaty of Ghent, in all the ports of the union. But the federal government insisted that we gave too absolute a construction to the 8th article of the treaty of Louis ans, and opposed our views the more strenuously, because the advantages which our shipping would thus have enjoyed, not in all the ports of the union, but in those of Louisians only, would have given that state a monopoly of French commerce altogether at variance with the spirit of the institutions of the United States, - Under these circumstances, the king's government, wisting to reconcile those national interests which it is bound to maintain, with the just and benevolent sentiments which it must ever entertain inwards the tederal government, has thought proper to abandon its interpretation of the treaty of Louisians, and in lieu thereof, to stopulate for a specific and lavorable rate of duties on our wines.

From the exchange of the rathfestion of the treaty, therefore the wates of France which will be admitted into the ports of the union, on payment of duties which are nnt to exceed the following rates; aix cents for red wins in easks, 10 cents for white wine in easks, and 22 cent for wine of all kinds in bottles; the present rate of duties on these several kinds of wine being respectively 10, 15 and 50 cents. This atjointation is to be obligatory on the federal government for the term of ten years and it is further speech, that if this government shall reduce the duties imposed by the existing tarif on wines in general, it shall at the same time cause a proportional reduction to be made in favor of the wines of France, so that the latter may retain the same relative advantage which is secured to them by the rates specified in the treaty.

It is also agreed, that the long staple cottons of the U. States shall in future pay in France the same duty as the short staples. This equalization, which has existed since 1826 in regard to the long staple cottons of Brazil, will prove equally advantageous to the American

planter and our own manufacturers.

RESPECT TO GOV. BRANCH.
Windsor, 18th Aug. 1851.

Dan Sin—The undersigned committee, appointed by a respectable meeting of the director of Bertie, assembled for the purpose of expressing their high regard for your private virtues, as well as the high opmon which they entertain of your firm and understaing course, prominently displayed by the many important services rendered your state, and more especially by your late demonstration of intachment to those principles which have slavaps governed you, are instructed to oil end you in layor them by particking of a dinner to be given as Windson, at such time as may sail your convenience.

The committee will further say, that they amorely hope no private execumatance may occur to deprive them of the pleasure they anticipate in meeting your

around the social heard.

occal loard.
With due regard, we are, &c.
ALEX. W. MEBANE,
GEO. B. OU LLAW,
JNO. E. WOOD,
JOS. D. WHILE,
THEO. G. PETERS,
THO AS BOND,

To the Han. John Branch, Enfield.

Eightel, Jug 20th, 1831.
GENTLINEN—Your invitation of the 11th inst. to unite with a partian of my (clinw-citizens of lifetic county with a partian of my (clinw-citizens of lifetic county invariant to social binary). This been duly received. Under the most amplicious circumstances of my life, such marked kindness, connected with the flattering manner in which allusion has been made to my private and public character, could not tail to be highly seceptable. But situated as I sm—recently expelled from the cabinate of gen. Dackstan by the ascendency of certain "maintain of my latter of gen. Dackstan by the ascendency of certain "my reirestent with a feed-tike vings ance, which, is seems, cannot be satisfied but by the destruction of my good name—no-suitant duty by the destruction of my good name—no-situated but by the general confidence and support of those who have known me from my earliest cutsues into public have known me from my earliest cutsues into public

With a purpose bent on their own selfah gains, and the gardies at the fame of the chief magistrate, or the best interests of the country, these influences are untiring in their efforts to direct jum the administration most at at old and long tried supporters; and gladly would they force me from my principles into the support of the recent associate and lender of a part of them, well-knowing that be could not expose this case without the run and thisgrace—all this and more besoles is attempted; under the fasts delivious that the name of the "here of New-Orleans" has a mage in at to hellow any thing and every thing. With the technique inquired by such an extraordinary state of things, you can well imagine the pleasure! I should derive trom accepting your invitation and mingling treely with tellow existence animated by meth noble semidatices. But gentlement, I regret to inform you that the indisposition of my lamby requires my undivided attention, and I will make it my duty, the first moment their attength will permit, to remove that me a climate more favorable to the restora-

tion of their health. I am therefore constrained to fore- thy a new application of galvaniam. I was led to make go the high eratification I should otherwise derive from making my acknowledgement in person while partaking with you at the lestive hoard.

I pray you, gentlemen, to accept for yourselves, and those you represent, my cardal assurances of respect, Most touly your's, &c. esteem and gratitude.

To Messrs. Alex. W. Mebane, Gro. B. Outlaw, Se.

## LETTERS FROM LAFAYETTE.

It will be recollected that the editor of the REGISTER was designated to transmit the flags mentioned below to the veneralde Lafayette; and by one of the late arrivals, Cheir reception has been acknowledged as follows:

La Grange, June 28, 1831. My dear sir-The celebration so affectionate and splendil, which in honor to our great week of July, was performed at Baltimore, has been iluly published in France, where it has excited high pleasure and graci-The flags serived much later, and were disposed of agreeably to the kind intention of the donors.

My connexion with the first company of the 5th regiment, Maryland volunteers, is builded not only upon lute grateful remembrance, but upon the pleasing recollection of public and personal obligations during our revolutionary war. The national guard of Paris being divided into legions, I have thought the company of greaters of the fall of the company of the mailers of the 5th legion was the company or granulers of the 5th legion was the corps to which the Bag ought to be presented. The resolvtion of the officers of the company has occasioned a delay until 1 know to what captain, after the ballot, I was to send the flag. I know it has been received with feelings of prafe and gratitude of which I can already be the interpreter, although the official answer has not reached me.

As to the flog of the Printers' association which has seted a conspicuous part in the grand eclebration, and is, in their name, by a unanimous vote, presented to me, I have the honor to acknowledge it in the cuclosed letter.

Your most valued Register is in my possession down the 37th volume. February 20th. No man can, betto the 37th volume, February With. Permit me to enter than I do, esteem its excellence. elose a document that may throw some light on the present state of French politics.\* With the most affectionate regard, I am, my dear sir, your succere, obligations of the state of the st LAFAYETTE. ed friend,

MB. NILES, Register office, Baltimore.

La Grange, June 28, 1831.

My dear sir-Amidst my obligations to the citizens, and particularly to the printers of Baltimore, and in addition to the proud and grateful leelings which the grand celebration in honor to the Parisian week of July has excited in my heart, I have been happy to receive the tri-colored flag used on that occasion, and so kindly pre-sented to me by an unanimous vote at the printers' association. It holds at La Grange a conspicuous part in a trophy, each standard of which recalls to the mind an honorable event of the French revolution. I beg you, my dear sir, to present the association with the high respect and most affectionate acknowledgement of their and your obliged friend, LAFAYETE.

MR. NILES.

## BLASTING OF ROCKS.

From the Phitadelphia Chronicle. The subjoined paper suggests a practicable and effectool method of guarding against a species of accident which has been frequent and fittal in this country. It will be sufficiently recommended to public attention by the distinguished using attached in it.

For the Daily Che onicle. I have observed in the newspapers an account of the death of a workman dreadfully facerated and bruised by

the blusting of a rock. This, and many other like occurrences will, I presume, create sufficient interest in the totlowing communication

to justify its appearance in a newspaper.

I have ascertained that the process for blasting rocks may be rendered safer than the firing of a lowing piece,

"It is the general's address to the electors of Mesux.

this improvement in consequence of an application by a patentee (Mr. Moses Shaw) for assistance in perfecting his patented mode of blasting rocks by an electrical

ing the parenter of man, and the system of the discharge from a Leyden Jane. In a letter dated June lost, 1831, he says, "I have been engaged in this tag rocks by me-ni of a full maning powder; introduced into several carules, and ignited in all of them simultaneously, by a spark from an electrical machine, by which means masses of a much larger size, and of a much more suitable shape for any object in view, may be procured, than by the old plan I have, however, to lament my inability to succeed in this method of blasting during a great part of the year, when, in consequence of the unlavorable state of the weather, the ignition cannot be effected by electricity in any mode which I have devised, or which has been suggested by others, although I have consulted all the

best informed professors to whom I have had access." It occurred to me as soon as this statement was made If occurred to me as soon as this satement was more by Mr. Shaw, that the signifion of gunpowder, for the purposes he had in view, might be effected by a galvanted discharge from a deflagrator, or calorimotor, in a mode which I have long used in my eudometrical expension. perments to ignite explusive gaseous mixtures. process is free from uncertainty which is always more or less attendant upon the employment of mechanical electricity for similar purposes.

The expectation their section has along been fully well-field. I have updied as many as twelve charges of gun-powder at a distance of one hundred and thirty feet from the galvanic machine employed. This distance is much greater than is necessary to the salety of the operator, as the deflagrator may be shielded so as not to be injured by the explosion, and by means of levers and pulleys, it may be made to act at any distance which

may be preferable.
There is no limit to the number of charges which may be thus ignited, excepting those assigned by coonsmy, to the size of the apparatus employed.

These remarks have reference to the principal and highly important abject of Mr. Shaw's project; which is, to again at once a great unmber of charges in as many perforations so drilled in a rock as to co-operate simultaneously in the same plan. By these means it is conceived that the stone may be as parated into large prisonate or tabular masses, instead of being reduced to arregular fragments of an inferior size. The object to which I propose now to call attention more particu-larly, is a modification of the common process of blasting by one charge, which renders that process periestly sale.

This part of the subject I shall introduce by premising that almost all the accidents which have taken place in blasting rocks, have occurred in one of the three following modes:

1st. The explosion has taken place prematurely, before the operator has had time to retire.

one the operator was not time to retire.

2ml. A premature explosion has ensued from a spark
produced by the collision arising from ramming into
the orifice of the perforation, containing the powder, the brick dust or sand employed to close it.

3rd. The fire not reaching the charge after the expiration of a period unusually long, and the operator return-ing to ascertain the cause of the supposed failures, an explusion ensues which he is so near as to suffer, by et-plusion ensues which he is so near as to suffer by it, as in the instance near Norristuwa, lately published. The means of communicating ignation, to which I

have resorted, are as follows:--

Three iron wires, at which one is of the smallest aize used for wire gauze, the others of the size (No. 24) naed by bottlers, are firedly twisted together. This is best accomplished by attaching them to the centre of the mandril of a bathe, which is made to revolve while the other ends of the wires are held by a vice so as to keep them in a proper state of tention. ing thus twisted a small portion is untwisted, so as to get at, and divide the larger wires by means of a pair of nappers. In this way the smaller were is rendered the sole mean of metalin connexion between the larger These are tied in a saw kerf, or made in small piece of dog wood, to secure them from working;

which if permitted, would cause the smaller wire to which a permitten, would cause the smaller wire to break apart. At one end, the twist formed of the wires is soldered to the bottom of a bin tube of a size to fill sa sattlered to the portorn of a bill tube of a size to bill the perforation in the rock to such a height as may be deemed projec. This tube being supplied with gun-powder, the orifice is closed with a cork, perforated so that the twisted wire may pass out through it without touching the tube, at any point above that where the finer portion alone intervenes. er portion alone intervenes. To the outside of the tube a copper wire about No. 16 is soldered, long enough to extend to a stout copper wire proceeding from one of the poles of a galvanic deflagrator or calorimotor.

The wire passing thre' the cork, from the inside of the tube, is in like manner made to communicate with the The connections between the wires, and the poles, should be made by means of soft solder, previpores, should be made by means of soft softer, previously to which we must haggine that the tube has been introduced into a perforation made for its reception in a rock to be blasted. The tin tube may be secured withrock to be binated. I ne un tube may be secured within in the rock by the usual method of rationing in brick dust or sand, by means of a punch, having holes for the protection of the wires of communication already de-

The apparatus being thus prepared, by a galvanic discharge, produced by the movement of a lever through a quarter part of a circle, the finer wire is ignited in the place where it intervenes solely in the circuit, so as to set fire to the surrounding gunpowder.

render it impossible that it should be effected by a spark elicited by ramming, as no means of ignition can have access to the charge besides the galvanic discharge; and as this can only occur by design, without an intention to commit murder or suicide, or unpartionable neglect, it is inconceivable that an explosion can take place in this method of blasting, when any person is so situated as to suffer by it.

It must be obvious that in all cases of blasting under water, the plan of the tin tube, and ignition by a galvanie

eircuit, must be very eligible.

Mr. Shaw is now in Philadelphia, and I hope he Mr. Shaw is now in runnucipum, and pay meet with the patronage which his project merits.

ROBERT HARE.

## PRUSSIA AND POLAND.

Paris, July 21. It is not true that the king of Prass's sent any answer to the letter of the Polisk general-inelitef complaining of the scandalous violation of neutralienter compraising of the scandarous violation of neutran-ty by the Prussian authorities: the king returned the brave general's letter unopened and in stlence. This at

Berlin was dignity!

General Jean Skryzuecki, commander-in-chief of the Polish army, has felt limself under the necessity of writing the following letter to the king of Prussia:

"Stark: I take the liberty of addressing you, with the hope that your majesty will design to admit that my character of commander-in-chief of the Polish army, and "Stennica, July 9, 1831. the importance of the subject to which I am about to call

your majesty's attention, warrant my adopting this course. "Sire, smee your elevation to the throne, justice and uprightness have never ceased to illustrate your pateralreign. In appealing to those sublime virtues, I ex-perience some relief, anidst the vexations and annoyance occasioned to us Poles by the civil and military authooccasioned to us roles by the civin and minary annio-rities of Prussia. In conjunction with several European eabinets, you have proclaimed the principle of non-in-tervention, and I have no doubt but the ministers of your majesty have received instructions in accordance with your royal wishes. The Polish army would consequently be wrong were it to complain of your majesty. They

are only anxious to acquaint you with their grievances. Every day we witness occurrences which convince us that in spite of the neutrality your majesty officially agreed to observe towards Poland, the civil and military Pressian authorities not only violate the spirit of the laws of neutrality, but what is more they afford direct and efficacions assistance to the Russian army, without which the latter would have been long since compelled to retire from our country.

41. The Prussian authorities supply the Russians from the magazines of Thorn, and the vicinity of that place,

"2. Prussun artillerists have been admitted into, and embodied in, the Russian army, and fight against us. 13. The Russian forces draw warlike stores from the

Prussian fortresses. 44. The clothing of several Russian regiments were

made in Prussia.

"5. The Prussian engineer from Mariemwarder was commissioned to collect the necessary materials for the construction of bridges, to coable the Russiau army to cross the Vistula at Zlotorya.

"I could refer to various other circumstances to show the hostile intentions and acts of the Prussian authorities. I confine myself to the facts I have mentioned, persuaded as I am, that as soon as your majesty shall have been ed as 1 am, and as soon as your mayers; annu nave been made acquanted with them, you will deign to prevent the recurrence of practices which, no doubt, take place unknown to your majesty, because they are directly in contradiction with the sentiments of political probits which you have ever professed.

which you have ever processes.

"Begging your mighty to excluse my troubling you with this despatch, I entreat, are, you will laten to the voice of humanity, addressed to you through the organ of those whom, be they ever so weak, giants would be of those whom, be they ever no wear, grants would be unequal to overcome, were they not secretly assisted by the civil and military Prussian authorities."

That letter was returned to general Skryznecki, with this declaration, "that his majesty the king of Prussia could not enter into correspondence with a power that was not acknowledged by the emperor Nicholas."

## POLISH PROCLAMATION. Proclamation of the national government to the Polish

nation. "Fellow countrymen-lu the contest which must eventually decade between the existence of Poland or her entire destruction, the nation trusts to the heroism and devotion of the army. The army has justified this confidence, and has exceeded the expectation of the people auxious for the result of our exertions. From people analogs for the result of our exercising a rough that motion the glory of Poland, which for a time had been humilated, and even largotten, having attained a rigour not to be produced by ages, has made itself known beyond the bounds of Europe. The enemy, irritated, has summoned furth all his energy, and become even more barbarous. We have been signally successful against him, but we must aim at his entire destruction. It is to cosure this that we must make yet further efforts. It is for this the national government myokes the Most High, who will never cease to protect us, so long as we struggle to defend our spotless country. long as we struggle to acteur our spotters country. We invoke our astonal liberty, which now stands on a point from which it may be plunged into eternity or destruction. We invoke all the kings and heroes who have ever perished for taith, loyalty or the welfare of mankind. We invoke the salety of Europe, the future race, and eternal justice; and, strong in the example of our diustrious incestors, we proclaim the levy en masse of the nation, (nos pointe ruszeme) that this appeal may be heard in the remotest points of our beloved country, so that the inhabitants of the small portion called the kingdom of Polund may be animated by the same saered flame which burns so trillmully in Samogitia, Lia thumbs, and Vollayon, the shutton of which was infantely more entharrassing. They have revived the deeds of our fathers: let us not allow them to excel in this konorable rivatry.

"Ministers of religion!-Our struggle is for our country, for our faith, and for virtue. It is the truggle of children for their lathers, and of fathers for their children. Invoke God, that He may inspire you with emotion. Invoke 5004, took rice may report you had lot \$5000, the aprile of the promittee Christians, and with that spirit strengthen you in the mortanites, in the burying places, and on the field of battle. Do not abandon your flocks, secanip with them in the fields and the forests; suffer with them, and, by your exhorts-

tions, strengthen them.

Fellow countrymen,—Our enemy has vowed our annificiation, but he cannot attain it but by your nedifference. Strengthen the ranks of our army with your soms and your brothers, revenge those who have fallen, and let every hillock, every tree, every highway, every foot path, contain for that enemy vengeance. Perish not path, contain for that enemy vengeance. Perish those hordes that only seek pillage or murder, and let and our blood.

"Villagers:-The martyrdom of your brothers, the holy faith, and holy Poland, call upon you at once: it is holy faith, and holy Poland, call upon you at once: it is time to put an end to this sanguinary war. The invading army has ruined your erops, has destroyed your properties, and the second of the properties of t and your mothers-that they should exterminate your children? No: you will be more prompt than he will children? No: you will be more prompt than he will be. Whenever your ficlids do not need your labor, arm yourselves with every thing within your reach; throw yourselves on the enemy. His ranks are al-ready thinned, and your courage will precipitate his Hight. Belore beginning your harvest you will place it out of the sight of the enemy. A just God will sid you in expelling the intraders and will eause the blessings of peace to descend upon you, and liberated Poland awaits with frankness to bestow those rewards that you so highly mer.t.

"Chiefs of every rank, destined to command the levy en masse, be impressed with all the sanctity of your high calling. Here awaits you the recompense worthy ligh calling. Itere awaits you the recompense wormy of a loyal and patriotic heart. After the example of our forefathers, your occupation should be to join mittary heroism with civil energy. This is what eivilized Europe expects, being convinced that in her actual situation, every soldier should be a citizen and every citi-zeu a soldier. It is the force of great national calami-ties that an intimate union of all classes is required, for there is no class before death, before God, and before

country.

"Poles,—At this holy call of a levy en masse, invoke, after the custom of your ancestors, the all-powerful name of God. It is lie who has covered with imperishname of God. It is lie who has covered with imperiabable glory our heroic chiralry under the Piast and the
Jagillons. Think of what will happen if we were now
to yield. Shall those hopes be destroyed which the
third generation has cherrished in their hearts, which
will become the glory of Polani? Revived with so
many charms, and so much blood lately applit, consult
on the means which locality, the wants and the national
genius present. Let the whole country become one
camp—let all the energy of force and all the destrenty
of intellect be constitued. greatest activity and the most discerning circumspecand the desperation of the liones. Such are the characteristics of your calling—a brotherly feeling in its most extensive sense. One for all—all for one. To arms, l'oles! to arms!

"I'rince A. CZARTORISKI, president. "PHIPTA, secretary. " Warsaw, July 1, 1831."

## MR. CRAWFORD'S EXPOSITION. From the Georgia Journal. TO THE CITIZENS OF THE UNITED STATES.

The appearance of the address of the vice president of the United States remiers it unnecessary to offer any of the United States renters it unnecessary to oner any apology for the following address. The review of the correspondence, signed A. B., originally published in the Georgia Journal of the 21st of April last, and several articles in the Globe and other newspapers, have, in my judgment, sufficiently explained my conduct to all im-partial and unprejudiced minds; and those of a different description it is improbable that any thing that I can urge description it is improbable that any thing that I can urge will convinee. Besides, it is not very important to the people of the United States, before whom there is no probability I shall ever again be placed, to form any de-finite upinion of my motives or conduct in the transac-tions developed in the correspondence between the pre-sident and vice president. I say it is not very impor-tant to the chizens of the United States but it is impor-

them not find sleep in that country which these barba- tant to me individually, to have my conduct correctly rians have sullied for half a coutury with their crimes junderstood; for no man, however retired he may live, ought to be indifferent to public opinion. It also appears, from the newspapers, that an explanation from me is expected and desired. I therefore submit to the apparent necessity of appearing before the public,

I understood from letters received during the last session of congress, that the vice president and his triends were endeavoring to make the impression that the diffi-culty between him and the president had been produced by me, from a desire on my part to ingratiate myself with the president. It this impression had been made by their joint efforts, the vice president has dispelled the illusion, for, by his publication, it is clearly esta-blished that the measure did not originate with me; but that in the whole affair I have been passive. In fact, I assert, without the fear of contradiction, that no interasseri, without the lear of contraction, and no inter-course, either verbal or written, has taken place be-tween the president and myself, since a lew days after the presidential election in the house of representa-tives, in February, 1825. During the call gen. Jackson then made upon me, no reference whatever was made to what had passed in relation to the general or myself. I considered the call as evidence of a better state of feeling on his part than had been understood to have recring on map part tasa mast seen uncerstood to have previously existed; and as I had never cherished any kelings of hostility towards him, I was perfectly willing that the past should be buried in oblivion. But the pub-lication of the correspondence has relieved me from the necessity of an jug any thing more upon this subject.

Two other charges have been made against me: 1st. That the confidential letter of gen. Jackson, which I say was produced and read in the cabinet, was not produced and read. And 2d. That I have improperly dis-

closed cabinet secrets.

Upon the first objection, negative testimony is relied upon. Mr. Monroe, Mr. Adams, and Mr. Wirt, do not recollect that it was produced and read: or rather Mr. Adams and Mr. Wirt do not recollect it; for it is manifest that Mr. Monroe has no recollection upon the subject, having relied wholly upon Mr. Wirt. But Mr. subject, having relied wholly upon Mr. Wirt. But Mr. Calhoun has a distinct recollection that it was not produced and read. Without relying upon that rule of legal evidence, which dealerse that one affirmative winness countervails many negative ones, there is, I believe, abundant evidence in the correspondence itself to support my statement. Here I beg leave to transcribe an article from the Globe of the 20th Febraary last, which has much force and eogency, and proves, at least presumptively, that my statement concerning the confi dential letter is correct. The Globe says: "After all dential letter is correct. In Globe approvater all white statements, and retractions, about the production "of general Jackson's letter before the cabinet in July," #1815, Mr. Monroe's letters, published by Mr. Calchoun, go far to confirm Mr. Crawford's statement. In "houn, go tar to confirm Mf. Crawford's statement. In "the conclusion of Mr. Monroe's letter to gen. Jack-"son, dated December the 21st, 1818 (print d 1839 by "mistake in the pamphlet) Mr. Monroe thus speaks of "the confidential letter; your letter of the 6th of Janu-"ary was received whilst I was seriously indisposed "observing that it was from you, I handed it to Mr. "Calhoun to read, after reading one or two lines myself, "The order to take command in that quarter had before "then been issued. He remarked, after reading the "letter, that it was a confidential one relating to Flori-"letter, that it was a confidential one relating to Flori-vida, which I must answer. I asked him if he had for-"warded to you the orders that had been given to ge-"neral Gaines on that subject. He replied that he had. "Your letter to me, with many others from friends was "put aside in consequence of my indisposition, and the "great pressure upon me at the time, and never recur-"red to until after my return from Loudoun, on the re-"eeipt of yours by Mr. Hambly, and then on the sug-"gestion of Mr. Calhoun. Now, when did Mr. Mon-"roe return from Loudoun, and when was the letter by "Mr. Hambly received? Mr. Calhoun has given us the "Mr. Hambly received? Mr. Calhous has given us the revidence to show. In one of his notes he tells us that "the first eakinet meeting on that autject took place on 'the 15th or 16th of July, 1818, Mr. Monroe having "returned on the 14th from his residence in Loudoun. "Mr. Monroe's letter to general Jackson, dated 19th "July, 1818, begins thus: 'I received lately your letter

Thus, the time when the confidential letter was "looked up, on the suggestion of Mr. Calhoun, is iden-"theil within a lew days. It was after Mr. Monroe's "return from Londoun, on the 14th, and before the 19th Of July, 1818, the very period at which the cabinet "were deliberating about the Seminale war, and at the "very time Mr. Crawford says it was produced before "them. There is a remarkable considence between "the details of Mr. Crawford's recent systement and "Mr. Monroe's account of this affair, nade in 1818, "which proves the identity of the meidents alluded to: "Mr. Crawford says Mr. Calhoun made some allusion oto a letter the general had written to the president, "who had forgotten that he had received such a letter, "but said if he had received such a one he could find it, "and went directly into his calenet and brought the letter Mr. Mouroe, in his letter of the 21st December, "1818, sayst your letter, &c. was put aside, &c. and "never recuired to until after my return from Lou-"doun, &c. and then on the suggestion of Mr. Culhoun. "Here is conclusive proof of two things, 1st, the confi-"dential letter was produced on the suggestion of Mr. "Calhoun, after Mr. Monroe's return from Loudenn, "on the 14th, and before the writing of his letter to "gen. Jackson on the 19th of July, 18t8. 2d, Mr. "Crawlord was present when the suggestion was made Sand the letter produced. The cabinet, it seems, Owere several days in deliberation, anot have been present when the letter was produced, "At any rate, the proof is conclusive that the letter was "produced to Mr. Crawford on Mr. Calloun's suggescition. Mr. Calhoun's own account of that letter is in-"correct. He says -noy recollection in relation to it "accords with Mr. Monroe's attainent. I came into "the room when he had apparently just received the letter. He was indisposed at the time. I think he Onpened the letter in my presence, and finding that it "was from you, he gave to me the letter to read. I teast my eyes over it, and remarked that it related to "the Senduole war, and would require his attention, or "something to that effect. I thought no more of it. "Long ofter, I think it was at the commencement of the senext session of congress, I heard some allusion which "brought the letter to my recollection. It was from a "quarter that induced me to believe it came from Mr. 4 Crawford. I called and mentioned it to Mr. Monroe. "and found that he had entirely forgotten the letter. "After searching some time, he loned it amongst some "other papers, and read it, as he told me, for the first Mr. Monroc's account of the matter, written "in December, 1818, shortly after the meeting of con-"gress, proves that this story, as to time, is entirely fa-"bulous. That letter, connected with that of the 19th "of July, proves that the hunting up of the letter on "the suggestion of Mr. Cothorn, and the reading for the first time, took place directly after Mr. Monroe's "return from Loudoun, on the 14th July, 1818, during "the deliberations of the cabinet. Upon this evidence "may Mr. Crawford turn round and pity suil trunt Mr. "Cathoun for decay of his memory. He has notori-"ously published to the world a gross misrepresenta-"rion of this affair with the evidence of its incorrectness

"of June 21st, by Mr. Hambly, at my farm in Londoun, land every thing relating to that war baving been previously arranged, it was forgotten, and never read by me until after the meeting of the administration, and the decision as to the course to be pursued in reference to its management. My impression is, that I read it then on a suggestion of Mr. Calhoun, that it required my attention. all I read it when I received it, I should have considered it confidential, and mever have shown it to any one, however great my confidence in them might be." is somewhat difficult to ascertain what Mr. Monroe's meaning in the foregoing quotation is. He states that "every thing relating to that war having been previously arranged, the letter was removed and forgutien, and never read by me (Mr. Monroe), until after the meeting of the administration, and the decision as to the course to be pursued in reference to its management." It is manifest that the first part of the foregoing sentence remanificat that the first part of the letters and papers con-cerning the Seminole war. The second member seems to present the idea, that the letter was produced and read on the suggestion of Mr. Calhoun, after the deci-sion of the administration in reference to its manage-ment. The management of what! Of the Seminole ment. The management of what! Of the Seminole war? That had terminated before the meeting. If Mr. Monroe intended to state that the letter was produced and read upon the suggestion of Mr. Calhoun, that it required his attention, after the decision of the administration upon the course to be pursued towards Spain and towards gen. Jackson, then it is manufest that he is mis-taken. It is impossible, in the nature of things, that Mr. Callioun could have believed or suggested, that that letter required the president's attention, after the decision of the administration upon the events of the carepaign had been formed.

It was impossible, in the nature of things, that the president's attention could be necessary to that letter after the decision had been made on the events of the campaigit. I have before me a letter from a member of congress from this state, in which he urges that "the confidential letter must have been before the cabinet, as it was necessary to a correct decision of the questions growing out of the Seminole war, and that the president and secretary of war ought to have been impressed if it had been withheld." When Mr. Calhoun referred to the letter, my impression was, and is now, that he wished it produced, to prove that gen. Jackson, instead of acting in conformity to the orders of the war department, had determined to take the Spanish posts before he received orders to take the management of that war. It is probable that when he referred to that letter, he was not aware that it had not been answered. It is easy to understand why Mr. Calhoun should call the pressdent's attention to that letter, before the cabinet had deeided upon the course to be pursued towards Spain, and especially towards gen. Jackson-but after that decision had been made, it is impossible to conceive a motive for bringing it under consideration. Mr. Monroe is then evidently mistaken in stating that the letter was produced and read apon the suggestion of Mr. Calhoun, after the decision of the cabinet upon the events of the Seminote campaign. It is a little remarkable, however, that the confidential letter is always produced upon the suggestion of Mr. Calhoun.

which is fining in the sort determents. I memory had alled hom, he might have relief, lor correct information on this at secount given by Mr. Monroe, in 1818, "which is certainly more likely to be correct than any statement made by him now. He, Mr. Monroe, "feeuld not have forgotten the facts. Thus vanishes one "fol Mr. Calhoun's clunded of dust, which he had riside "wards gen. Jackson."

I shall not, however, turn upon Mr. Calhoun and reproach how with his decay of memory, for if he is to be believed, he never had any to decay, as I shall show he fore this review is closed. No, it is the want of verseit by which must be reproached to Mr. Calhoun, and not be decay of his memory. In support of the argument of the Globe, tounded on Mr. Monroe's letters of the 31th of July and 21st of December, 1818, it shall produced an passage from Mr. Monroe's letters of the 31th of July and 21st of December, 1818, it shall produced a passage from Mr. Monroe's letters of the state of the decay of the more than a week, during which that letter (the confidential letter, of which is the state of the confidential letter, it is worthy which that letter (the confidential lone), was removed, of remark, too, that in his letter of the 31st December, when is

is more fikely that his resollection was correct, than in the spring of 1850, he today got, Jackson that the better was given to Mr. Callman, but does not rainer me with Mr. Unknown and that letter; and I have a distinct re-election at hearing his give the same account of it, every finist, in mone of which do be connect me in the affair of the letter. The wire president level to think he has dispared of Mr. Call 1 conjugating the two letters, it will be wern that the laters to limit does not contraded; a single symbols of his pression is that for me. Mr. Callson, to a root to Mr. Crownindiedd's letter to him, soys—Nor could have been present at any nevering of the exhaust on the subject of the capture of St. Marks or Festing of the exhaust on the subject of the meaning of the writes in the month of February 1801-1900 ed that the official news of the rapture of Steed that the official news of the rapture of Steed that the official news of the rapture of May 1900 ed.

we have the month of a tenury here. That it is now accertained that the inflead news of the reputer of M. Masks was reversed at Washington in the varly part of May." He had particularly examined the records of the war hapartness, and hand that the tenure the records of the war hapartness, and hand that the tenure that the same that the

\* Gen. A. Jackson to the secretary of war, Hend quarters, civinon touth, camp near St. } Marks, April 8tn. 1818.

Reports his attack on the Vekasukean village-his taking the

Reports in a tites on the 'examinent map for at 31. Marks. &cc.

The above cummunication is on file in the war department—
port-marks few Orleans, Aprill 30, 1818, and was received in the
mouth of May, as appears from the record, from which the above
transcript is taken.

ameript is taken.

Department of war, July 19, 1831.

[Offin ROBB, rb. clerk.

[From the National Intelligencer of April 29th, 1818.]

\*\*INDIAN BATTLE.\*\*

Milledgeville, April 17.

\*\*APINA\*\* DATES.\*\*

Captain Callin, who his just arrived in this plate from list Hawkins, his politiely founded us with the following logisty many politics of the plate from list of the plate of the logists in not stated. Per soon attacked and burnt the otion, a sumber of the enemy incredered themselver prosumers—All their resources (among which were the plate of the protection of the prot

at an end, and the Georgia militia will soon return to their

From the same paper, of the 30th April.]

EDITIONAL. We have a tra in the particular of the late progress of the notion of the progress of the product of the late of the product of the late o We have a frw further particulars of the late progress of the

Crowninshield sworted the accuracy of every fact in his letter Crownisshield secreted the accuracy of every fact in his letter to you, [ren, and then related to me error analistic has proved in the radicat consultation to the second of the relation to the relatio main use of on that occasion. He well recollects that a certain private letter was asked for, that Mr. Mouroe had forgateful, but went to look for it, in some cabinet or retired place, from which he herogete trought for remaining the trought of the herogete trought for the main how, or transk, fried to blorg, think he said), in this was usual the letter. Mr. Crosminshield's recollection is in this was bound the letter. Mr. Crowninshirle's recollection is minutely exact. He recollects as though he now could are the entire of the small box in which the letter was faund, the very place in the room where he limited 1 ast during the distrission, and all similar details." Mr. Calhoun must, therefore, resort to some other shift or desire to get rid of Mr. Crownshield's evidence, more deceptive, than his naked assertion, that Mr. Calhouse which he was, on the berminder energies. The records of the war depart-ment show that this assertion is univue.

must show that this ascertion is unitare. The declarations before suited by Mr. Erving, were made subsequent to the slate of Mr. Crowninshalu's letter to Mr. Cathoun He is a man of modulated venerating and atthough my memory does not enable me to offer any explanation upon this sobject. I have no doubt that his statement in his letter one interest that the property of the state o

stance a conclusive, and must prevail with an unprejudices in index, the proper here to state, that I lives no distinct recollection whether Mr. Crownmahrd or Mr. Watt were present in the earlier counted of July, 1815, or were absent from it. Mr. Caibourn and Mr. Arlams I know were present. If I lind recollected that Mr. Crownmishid data detect about a 1 to two suppose him to have been, I creating should not have applied to him for information. But the information given, 6 trainly applie to a walk-match. But the information given, 6 trainly applie to a walk-match, the information given, 6 trainly applie to a walk-match. But the information given, 6 trainly applie to a walk-match, and the information of the information given, 6 trainly applie to a walk-match in the consideration letter was produced. It is then demonstrated that the furth written by Mr. Crowninsheld to the report of the cabout connect to which it relevant on dates and reference where the cabout connect to which it relevant on dates and reference where the prevention of the two preventions, that Wr. Crowninsheld to the way, upon the crima of the Someonic campage.

It remains for me to say a few words on the charge of disclos-g rabinet serrets. I have but hitle to add to what I have riged It remains for me to my a few vorus on ex-ing rabinet vertex. Have but that let and to what I have urged in my letter of the 2d October. The princephrs stated in sta-letter are believed to be orthodo. In this republir, the president is appointed by the nation, and he appoints his cabinet by and with the advice and consent of the so nate. The president and his cabinet are therefore reputable to the republic to their acts. Those acts to which they are responsible, ought, therefore, according to the principles of the government, to be known-otherwise the lightest public homeitonaris known to the constitu-tion are frequential. tion are irresponible. To this responsibility, inherent in our constitution, there is but one exception sanctioned by transit. If the averets of the rabinst are disclosed while the cabinet is in If the secrets of the radius as a disclosic while the calourer is in exist one and rharged with the management of the unifound concerns, the calinet night be reinfered incapable of conducting those affairs successfully. This is the broader ground upon which the secrecy of the cabinet transactions can be placed. By which the servey of the cabing transarious can be placed. By some it is contended, that in a government like owns, screep should not be extended bryond the accomplishment of the object which have been the subject of the cabing deliberation. That which have been the subject of those deliberawhich have been to mogere on the contractive of those above rations have been reflected, if they are beneficial to the republic, the people ought to know the extent of their obligations to their public functionarie; and if they are business to the community ought to be placed in a situation to form a community ought to be placed in a situation to form a contract of the community ought to be placed in a situation to form a contract of the contractive of the contract

on the Appallecherds, which was first optably our forth under all clients. St. Grant and the control of the con

was made upon his mind. The only ostensible act having that object in view, which is within my own knowledge, is the cell-brated Nashvile letter. That letter contained two flashboods, one to my injury and one for Mr. Calhoun's benefit. No other human being on this terraqueous globe, except Mr. Calhoun, had an interest in inbricating those fashchoods; at least, the latter onto the content of the latter of the latter. I here terminate the review so far as my defence is concerned.

the resulting the more passion met at reast, for cushaering that the the author of that letter, we far as my defence is concerned,

I here terminate the continuous more directly to the correspondence, and to the contradictions more directly to the correspondence, and to the contradictions and commitments to which Mr. Calboun has subjected himself in his several publications. Almost in the commencement of his address, he presents a letter from Mr. Wilson Lumpkin, coataning one from gen. Daniel Newman, rationing the copy of a letter from me to Alfred Melle, can, of Notioning the copy of a letter from me to Alfred Melle, can, of Notioning the copy of a letter from me to Alfred Melle, can, of Notioning the copy of a letter from the total himself, and the contradiction of the comments of the contradiction of the contradic they were both anti-tirk near unit away away.

The stage when they both about the same time made a political sometage, when they both about the same time made a political sometage, when they have a sometage and the same and th his support. It may be hid down as an axion, that is the United States, if a man changes his politics after he is 30 years old, he changes from estilha, and therefore dishusest motives. It is a normal change from estilha, and therefore dishusest motives. It is a normal changes from estilha, and therefore dishusest motives. It is a normal change from estilha, and therefore dishusest motives. It is a normal change from the property of the state of the state

three highest of the tandidates. This the house of representtives dad, and therefore violated no principle of the constitution, however they may have intraged upon the principle of the vice president, which to me is entirely uccult. I believe he alone can tell what he means, if he means any thing, which is very quenbered to be the means of the means any thing, which is very quenperiodical faring, adds "they then can it be possible that genjackson can unspect the friendship, constancy, or uncertify of your year friends. No, he canned. He will not, he does not. 1 have quite too much confidence in the general to believe such ids takes. Poor gendienous, he has been deceved in the course that which the general has pursued, and will probably continue to pursue, towards the vice president. The kern observer of passing events and the prophet are slike mistaken, both as to the president and vice president; but pussibly he may be more fortunate than I have been if this ought to have governed the election of president, by the bases of representatives, in February, 1823. I proceed now to comment upon Mr. Callmun's notes; to my

letter of the 2d October, 1830. It is, however due to myself, to state, that, that letter was written without any expectation that it would be published. I am, however, glad, that it was published, and that it has been accompanied with notes, by the vice predicted. These notes establish two most important facts. Is. I that John C. (alboom established the Washington Republican for the purpose of will/fying my reputation; and 2d, That he was the in-tigator and investor of the charge of Ninam Edward, against only official and private character. The evidence of the charge singator and inventor at the charge of relative to the charge of relative by wheel these charges are established, would be received in any court of justice in the condition, and the charge of the ch the 26th of February, when he annexes a parcel of notes to it, in the Telegraph. I shall in the sequel, state the evidence upon which those notes are ascribed to the vice president. They are such, that he at least, will be contensioned to admit. In my which those notes are ascribed to the vice president. They are such that he at least, will be contensioned to admit. In my write having creations the Washington Republican for the purpose of visilying my reputation, and that it was edited by a circle in its office. In one of his notes he denies that Thomas L. Moc Kenney, the cloud of that press was a certs in the was departed out has interest in that paper in 1823, and was not appointed circle in the war department until February, 1824. The vice precident them admits that he did establish that press for the purpose of visilying my reputation. The visil has been also a continued to the war department until February, 1824. The vice precident them admits that he did establish that press for the purpose of visilying my reputation. The visil has been admits that he did establish that press for the purpose of visil he was a continued to the continued of the same than the visil has a continued to the visil and the visil has a continued to the visil has a continued to the same that he was a first heart of the three was a visil probability, have been an intringement of the therty of the press. But it the appointment was made, after the cased the estimal labors, it was apparently made to remuserate the services he had rendered by my reputation, and charged him with having excited Edwards to the act, and with revising the charges in detards unspirely, to deture you prepared and bren charged in a Constriction paper, with being concerned with the Niman Edwards compirers, to deture to the act, and with revising the charges and state what graveral No being detards and the content of the total contents of the part of the proper of his proposed of the charge is therefore admitted, and with revising the charges and state what grave not charge Mr. Adams with having witten stift "My reply it that the answer is conclusive." That letter contained two falls boods, non interested to which having witten stift "My reply it that the answer is conclusive." That letter contained two halls be most an accordance of the contained to which was for John C. Calbaun's) benefit taking from Mr. Adams half the credit of defending general packson, and giving it to you. John C. Calbaun's) benefit taking from Mr. Adams half the credit of defending general packson, and giving it to you. John C. Calbaun's) benefit taking from Mr. Adams, and for the contained to the contained to the most streamous upposer of his winker. If the intrinsic evidence of the letter, fise it nown you, 'Mr. Calbaun', and not upon Mr. Adams, subsequent event, strongly corroborate the evidence deduced in the letter, fise it nown you, 'Mr. Calbaun', and not upon Mr. Adams, subsequent event, strongly corroborate the evidence deduced by letter in the contained to the contained beliberations commenced on Tuesday morning, and on Friday versining. I thought all the questions had been decided, and Mr. Adams was directed to draft a note to the spanish minister, conforcasedly to those decisions. I intended to set off for Georgia on January and the state of had been usade by the caburet, but expressly contrary to them, life was then again directed to write the note; conformably to the decisions. This was far on Saturday evening. The next morre the contract of the state of the sta

acquirum. The decision may have been unampeant not as now roote necessary, because the note did not agree with it." I am perfectly willing that the intelligent reader should decide the question of logic, between us, by adding a single observation, the provided of the pr

must be presumed to have seen the charge, Hig slience, therefore, it evidence, that he was the authos of the notes. It is, at least, evidence to which he cannot object; for it is tenifold attorpered to the control of the control of

contain but one falschood, to the injury of that succisate, than to have established a press, for "tillying the reputation of the same associate, which teemed with daily faischoods upon that associate, which teemed with daily faischoods upon that associate, which teemed with daily faischoods upon that associate the property of the press. The vice president affects much patriosium and great reneration for the fundamental institutions more vital than the liberty of the press, region of the press. There is none of those institutions more vital than the liberty of the press, region in the union carried the liberty with them the press restablished in the union carried the liberty delivered that no press restablished in the union carried the liberty discounts of the liberty of the press. Again, it is respectfully submitted to the community, to decide, whether it was more dishmerable to have called Nisina Edwards to compire with him to blast my reputation for ever and fit a singma upon my innoceut and unofferable to the community, to decide, whether it was more dishmerable to have called Nisina Edwards to compire with him to blast my reputation for ever and fit a singma upon my innoceut and unofferable to the community ought to give; that the dishmerable conduct, rises in regular gradiation and termination in a clima. The vice president is liberal in his charges of my enmity against him. I am representation of friendship for him and base not since the publication of the Nashville-letter, and have never made declarations of friendship for him and more that priced. What is the evitation of friendship for him and more that priced with the evitation of the Nashville-letter, and have never made declarations of the property of the press. All the state of the linguity of the press. All the state of the linguity of the press. All the state of the linguity of the press. All the state of the linguity of the press. All the state of the linguity of the press. All the state of the linguity of the presson in the vice president, and

<sup>\*</sup> Lexington, (Ga.) June, 1831.

<sup>\*\*</sup>Lexingtan, (Ga.) June, 1831.

Dear sir,

In nanwer to the inquirry you made of me the other day, I ge leave to state—the conduct of gen. Jackson in the Seminode war of 1818, produced as great feeling in our little town as it did in any other part of our state. Two had written on to Thomas then resided in Lexington, that you would leave Washington when so would be held to make some inquiry into this matter. Your arrival in Lexington was looked for with great anxiety, and I remember the day you did arrive, that Mr. Cobb and Dr. D. Denu, prected in that day's stage, no other person was preemit except those gentlemen and myself. This was the last of July of that

the reader is informed that I passed through the village of Edgefield on Friday morning, and arrived at Lexington, on Sunday, to dinner. Col. Simplicins and Mr. McDuffle, neither processed or dinner. Col. Simpkini and Mr. McDuffle, neither processed or merrited my confidence. Means Moore Colbi, and Dodley Dunn, were my personal and political friends and resighbors. Can any man in his estica before. I would have under the disclosures, airrivated to me by Mr. McDuffle or Ferday morning, and on Sam-day should have estimated in the communications to my personal confidential and political friends. But to the present materials around confidential and political friends. But to the present materials around the financial in those uses and man of those friends were more active. to injure me, and none of those friends were more active than Mr. McDuffle. I remember in one of his dionee speeches at Cambridge, I think, he designated me as the rubteal chief, a term at that time, in the estimation of Mr. McDuffle and his particular of the between the particular and the particular process. term Mr. Calhoun, of the interest reproach. If the facts enu-tained in Mr. McDuth's letter to the vice president, had been known, they would have been proclaimed at every cross roads. known, they would have been proclaimed at every cross reads, number ground, and even upon the home tops not only in South Carolina, but throughout the United States. Not a whisper, however, was heard of them during that period of excitement, because they had not been thirded, and were conceived and brough forth only when it was believed to be necessary for the rice p sident's defence. Judge Moore, whose letter is herewith public nderit's defence. Judge Moore, whose letter is between published, has been lier many years a judge oil the inderior court of Oglethorpe county, and very extensively known in this state, and where he is known enjoys the reputation of a man of honer, honesty, and veracity, equal to that of any man in the state or United States. His statements are therefore entitled to full cre-dit. Dr. Donn, who new resolts in West Tennessee, no doubt re-collects the same facts and will doubtless confirm them when reconvert the same facts and will doubtless compin them when re-quired. It may be right to state that my triff to col, Simpkins' hunse was confined to the time which clapsed between the break-last of the passengers and the starting of the stage. Every per-

You had hardly seated yourself before Mr. Cobb started ibject of the cabinet meeting. All who recollect Mr. Colds wil readily remember ha survey mean in positived subjects, and patieodarty on his great feeling us the subject, and recting which the patient subjects and recting which the table the patient subject and recting which then take place made a very strong impression on my mind. It is not necrearly to detail all of the conversation than a receiver, as it would fall reveral pages. After having satisfied everal impaires put to you by Mr. Colds, relative to the page of the page that he would find in that paper all that the administration thought proper to make public. The connectation was kept in for everal hours, during which you several times referred Mr. Cobb to the statement in the intelligence, as he termed to prevais in anymer upon you forther than you were disposed to answer. During the conversation, Mr. Cobb inferred you that he constitution of the contraction of the contraction of the contraction of the contraction of the contraction. the conduct of gen. Jackson as very improper, and that it ought not to be allowed to pass over without being more notical, and as the cabinet had not commend him, and as me firefler income. and as the earner had not centified finh, and as the little ringuis-ry into his condect on this part would likely take place, he was determined to bring the matter before congress at the next ses-sion; such a precedent, be observed, would be a flagrounce to to pass withoutlinguity or censure. You nied several arguments ass withoutinguiry or consure. You used several monvince him that he would fall in his object if it was before congrist. You remarked that the nation would annuar before couges st. You remarked that the nation would support gen, Jackson in the course he had pursued in earrying out that war; that public feeling was with him in every state, except Georgia; that the administration would give him their ampoort; and that being supported by the tunion and the administration, and that being supported by the flatfoll and the administration, you were constructed congress would not ensure this renduct. Your arguments did not consince Mr. Cobb, as he still persisted in asying that he should bring it before enagers. I distinctly recoilect that you and Mr. Cobb differed in opinion upon several questions that day discussed, growing out of gen. Jackson's conduct in this war. I did not used ratand you as advocating gen. gen. Jackson's conduct in this war. I did not understand you as adsocating gen-Jackson's conduct, but you estainly did appear to attach nucle less blame to him than Mr. Cobb or Dr. Dunt or myself. It was a matter of some surprise to me to find you so moderate in your feelings towards gen. Jackson, and much less excited than the rest of us. The newspapers of the day had prepared in the first of us. The newspapers of the day had prepared in to find you extremely hostile to gen. Jackson, as it was and you were more minimal to him than any other morber of the calonical opour feelings were tar short, I know, at hondreds of entacus in Gorgia. Furning the conversation wounded. your feelings were far short, I know, at hondresh of estachis in Georgia. Furting the conversation point disclosed to us usany car-cumstances that you had occured at the exhost thereing men-tioned, which you did not suppose were if a cumfidential lumbure, but several important facis that do even I never learnst until since your return to Georgia in 1225, and one of two circumstances re-lating to this business, I did not learn until since the correspon-dence between general advances and Mr. Callon, and those facts! deser between gen ral Jackson and Mr. Calloun, and toos. facial consider of a much more important nature than what we learnt from you in 1814, although I cannot say that you were seep revered in that cunversation, yet 1 think you were more so than usual, as you accreat times reforced to satisfy Ar. Cobb's the nature of Mr. Cobb's inquiries, and the use the might intend to make of them, but not have the fact. One impression nade on my mind that day is distinctly reculered, that some things that nature as you relucted to hard them was not very difflexen to pressing them un you. I be inverte have was not very difflexen to pressing them un you. I be inverte have was not very difflexen to pressing them un you. I be inverte have was not very diffident to pressing them un you. I believe I have answered all the inquiries you have made of me, which I consi-

er impurtant.

I am, sir, your most obedient humble servans,

JOHN MOORE-

150

son who has travelled in the stage, knows that it is generally read? son who has proveded in the stage, knows that it is generally read-to start before the passengers into thinked their ducals. All y of the provided of the provided of the provided in trend with unstreads of all burn's corn existing it least. The reason containing the majority letter of the 2d at Occuber, were sufficient to have conveneed any printip praking man of the falls bound at Mr. McDulle's visitement, that I am not at all suppresed that the vice president did not feet their force, as his uwn cundoct did not enable him to appreciate

The vice president's namphlet, dischares a ti or of evidence that I had not before seen. It is the letter of Robert S. Garnett, late a member of congress from Verginia. Mr. Garnett, its his late a no-mber of congress from Varginia. Mr. Garnett, in his letter, seem to be in haste to make the important communication. In one the luminously shrape he came to have going off at last for one of the last state of the control of the confidence of the last state of the street from his diary which immediately inflows, (and which, it is presumed, was before him when the wrote that letter), makes me say that the giveral ouight to be centured. Now it is secondly submitted to every ramoud and reflecting person, whether even the daary of a control of the co every rational and reflecting person, whether even the dusty of a man is entitled to any cold who carnot distinguish between the words condemned and crimin d. I consecutiously believe that I move much either of the words accrited to me by Mr. Gamett. My conduct towards 4r, Colds, mean the subject of his resolutions, So does my recollection of the actionents entertained of the prorather of the impropriety of a figulative imports into he auto et. have no unkind feeling towards Mrs Garnett, and had rather be subjected to the slight shalle of inconsistency, his darr may cast upon me, than that he should be subject to a much graver impu-

thinni. The vice president in one of his notes, says that a very material part of Mr. Adams' letter to me has been withheld by me. The thatesial part is occasive wholly, and it will be seen by the ame widestract of my letter to Mr. Adams 1. I did not expect he remembered any thing about the confidential letter, and assigned my resion for it. Mr. (albom has a liable streeted a copy of my letter from Mr. Adams, as I have authorized him to lurings. If there is any thing in that letter which in his opinion tends to If there is any thing in the Letter which in his opinion tends to constructed in weaken the letter of that extract, he can expose it by publishing the whole letter. Mr. Adams state the grounds on which it was proposed to being general Jackson to trail, but does not state by whom it was unged. In my Letter of the 3d Crother, 1:30, to the view president, I state that "Mr. Adams must have allude the him, as no oth a member of the cabinet had, made may proposition of all uniformity character to the general, and add that if he denies that the charge in Mr. Adam's letter ap and add third be denies that the charge in Mr. Adam's letter applies to lives, I will obtain the increasiry explanations." The tree president appends no mote to this part of my letter, and ment. But this pomphlet shows that he has addressed a letter to Mr. Adams, on the subject of his letter to me and has not ventured to ask the question of the charge that he proposed to bring general Jackson to trial. I still before there was no express general Jackson to trial. I still before there was no express proposition to arrest or try gone Jackson. But the vice president's own admission if duly considered and analyzed, amounts dent's own admission it duly existlered and analyzed, amounts in wittings to that and moting (the Headmis that he prepared injury). There are I believe but two modes of inquiry, there are I believe but two modes of inquiry known to the law martiel, it a court of inquiry principly to called the properties of the properties of inquiry in proper, and the duty of the court is simily to accertain the facts, and report them to the government for its decision, the lacts are willierfully assert that the other control of the decision of the properties of the control of the court of the control of the court of the cour was in re no necessity for a court of inquiry. Mc. Calboun then, in proposing an inquiry, did in fact, though not in wurds, propose a court marrial, which pre-supposes an arrest. The president,

Extract of a letter from William H. Crawford to John Q. Adams, dated 5th July, 1830.
"I think it is probable that the letter did not make a strong im

"I think it is probable toot the letter did not make a strong su-pression upon your find, for I, have to recollection that you made any use of it, in your effort to induce the president to sup-port gets Jarkson's canduct ittroughout." {Extract of a letter from Thomas W. Cobb, dated. Washington,

May . 1826, to Mr. Crawford and myself in saying "You do instice both to that Mr. Crawford disapproved of the course which I felt it duty to the constitution to pursue on the Seminale wat. He outy to the constitution to pursue on the Seminole war. He did primade me not to move sny thing on the subject, and endea-rated to continue me shat there was no necessity. A part of oue conversation necurred in the presence of John Holmes, of Shine, who no death will remembe rit. At another interesses the leading moves on Carabach again primaded me not to be the leading moves on Carabach again primadel me. between ourselves Mr. Crawfurd again persuaded me not to be the leading mover on the solicet, arging not only his former res-sons, but stating expressly his fears that, from the Triendship existing between us, my conduct would be charged to have been dictated by him. I replied, that I should be sorry if my conduct isting between us, my someone distributed by the sorry if my communicated by him. I replact that I should be sorry if my communicated the him any pintry, but that I must be permitted to closely a solution of the continuous permitted repetitively as I formly believed that the constitution properties of the permitted by the solution of the continuous permitted by the solution of the continuous permitted by the pe the most hagrant manner. Accordingly, I did move the resolu-tions on the subject to be found in the journal of the house of representative,"

Martial.

All the other of Mr. Calhoun's notes to my letter admit of a All the other of Mr. Callbour's bottet to my fetter auant of a shibactory explanation, or are too insignificant in their calure to require attention, and would swell this review to an inconvenient extent. I therefore take my leave of them, reserving to my self the right of explaining, or refuting them, if it should bereatter

ln the publication of James A. Hamilton, esq. it appears, that after an interview with the vice president, after his return to New York, he wrate to the vice president, stating the facts which the vice president communicated to him that were not of a confidential nature, and requested him to correct the statement if he had misunderstood him. The vice president replies and does not correct the statement, and does not even and uoes not correct the statement, and uoes not even intimate that the statement was incorrect in any particular. Now, however, in his supplementary address he asserts that Mr. Hamilton's statement is incorrect. By the rules of reason and logic, the vice president is estopped from denying the truth of that statement, for when called upon for that purpose, he did not pretend that the statement was incorrect in any particular. But now he says it is inaccurate, and he could not have corrected it without exposing cabinet secrets that would rected it without exposing cabinet secrets time with lawe been improper. Who ever heard of such an excuse! All that he was required by Mr. Hamilton, was careed or not. No to say whether his statement was correct or notdevelopment of cabinet secrets or reasonings were necessary. He had only to reply that Mr. Hamilton's statement was incorrect, and if he pleased, to correct the statement. Mr. Hamilton did not even request hom to do that. But the fact of principal importance disclosed is that the vice president did disclose the confidential secrets of the cabinet to Mr. Hamilton. Mr. Hamilton expressly says in his address, "the conversa-tion was extended and on his part (the vice president's) embraced much that I never left myself at liberty to disclose. The vice president then, in February, 1828, did disclose much of the confidential proceedings of the cabmet which Mr. Hamilton has never felt hinstell at liberty to disclose. It is only when the vice presi-dent understands the information given is likely to be published that his quality of conscience are excited, and that he feels the sacred nature of cabinet secrets, althat he feels the sacred nature of calinet secrets, at-though the facts intended for publication had not been communicated in confidence. He seems at that time to have had an instanctive horror of publication. I expect at this time he deeply regrets, that matmetive horror slumbered when he committed his first address to the press. This disclosure of Mr. Hamilton's will, I hope, shut the mouth of the vice president as to the accrets of the cabmet. Mr. Adams and Mr. Wirt, may continue to descant upon the sacred nature of cabinet secrets. They will find few admirers and still lewer advocates. The principles for which they and the vice president content, and only dishonest counsellors. For my own part I never said a word or did at act in the cabinet, that so far as I was concerned, I should have been unwilling to be publicly known the same day. But the counsellor who would give advice in the cabinet, or do acts there, which he would be ashamed to own publicly, would place a great value upon the sacredness of cabinet secrets. Mr. Monroe and Mr. Crownorshield have acted like honest men upon this business. They have said nothing about the sacroil nature of cabinet secrets. Mr. Calhoun endeavors most zealously to make it manifest that he is acong in self defence, and that he is called upon by the president, to justify certain proceedings of his white in the cabinet; to account for his opinions and acts as secretary of the war department. The vice pre-sident well knew at the time that he was endeavoring to impose this charge upon the public, that it was untrue. The president, distinctly states his causes of complaint against the vice president. It is simply this, that while he had pursued one course in the cabinet, he had contrived to make him believe that he pursued a different and directly opposite course, and I have no doubt that he might have added with strict truth that he had contrived to make him believe that, I had acted in the ca-

who is acquainted with martial law, no doubt understood Mr. , the president to ascertain the fact. Duplicity is the only Calboun's proposition as one subjecting him to arrest and court | charge which the president has orged against the vice charge which the president has orged against the vice president. If he is innocent of the charge, why does he not publish his correspondence with the general, and show that he disclosed to him frankly, the course he had pursued towards him; until he does this he must remain subject to the charge of duplicity, orged against him by the president, Duplicity out of the cabinet and not for his conduct in the cabinet, is what the pre-

and the tharges against the vice president.

The vice meadent in his address, complains of plots and conspiracies directed against him. The Telegraph charges these plats and conspiracies upon Mr. Va ren, and the Telegraph no doobt spraks by the authority of the vice president. Hatherto my encures have affeeted to consider me the principal whenever I have been the god with any agency. But now the vice president and his editor, even to consider me only as the instument of Mr. Van Bucen. Whon that gentleman and Mr. Cambreleng visted me in April, 1827, I do not behere that the presidential question was the topic of conversation during the visit, what makes me more confident on this subject is, that I have a distinct recollection that Mr. Van Buren wrote to me from Augusta, to know my determination on that subject, if I had formed une. Before they left my house they informed me that they intended visiong a gen leman of my acquaintance in South Carolina, of great worth and respect thinty. I wrote to him, introducing them. After they had left his house, non, introducing them. After they had feet not house, he maswerd my letter, expressing much satisfaction with the visitors, especially with Mr. Van Buren, except in one particular, and that was that he seemed disposed to let Mr. Calhoun remain where he was. Now, says he, I want to punish him for the mischief he has done. This satisfied me that Mr. Van Buren was at that time not unfriendly to the vice president. Mr. Van Buren is charged with conspiracy, because he is the only person supposed to have an homestate interest in the downfall of the vice president; and the consuracy is supposed by of the vice president; and the consupracy is supposed by the vice president and this office, to have originated in the spring of 1827, when Mr. Van Buren paid me a friendly visit; by plening his origin so far back, the charge defeats maell. The vice president in his letter to the president of the 25th August, 1830, alluling to my letter to A. Batch, easy of the 14th December, 1827, acys, "a proposition of the kind at that particular period when the righting was most doubtful band consulwhen the election was most doubtful and warmly contested, needs no comment as in its object. The presid atial election was then on the 14th December, 1827, most doubiful and warmly contested, Yet to give plausibility to the charge of conspiracy against Mr. Van Bu-Jackson's election certain, but that he foresaw that Jackson's et etion ecroin, out that his foresist that the general when elected, would appear hou (Mr. Van Bu-ren) secretary of state. This is giving that gentleman more foresight than be claims or descrets, and the vice president rather less than he possesses. If the vice president scriously intends to apply the conspiracy of which he thinks or asserts that he is the victim to Mr. Van Buren, he must make it originate after he became seeretery of state, for until then he could have had no interest, in prostrating this political colossus. The truth is, there never has existed a conspiracy against the vice president. The only consuracy that has existed 1818, except of the vice president and Ninian Edwards against me, has been one conducted by the vice presiagainst me, has onen one conducted by the tree presi-dent and bis friends, to expose me to the resentancia and vengeance of gen. Jackson. Now that is unveiled and can no longer be concealed, the plotter cries out plots and conspiracy. The recent conduct of the vice president, brings forcibly to mind that line of the Latin author who says, "Quem deus wutt perdere prins dementat."
Which being translated is, "He whom God intends to
min, he first makes mad, or deprives him of his reason." If the vice president was not in this situation, he never would have published the correspondence. A tithe of the talents and tact, that he has generally been supposed to possess, would have prevented that publication.
But his want of reason ilid not stop with his determi-

n tion to publish. The first want of reason and com-mon sense, that I shall point out in the publication, is The first want of reason and comtrived to make this better that, a most even in the case provided in the part which he himself had pursued. Note most sense, that I shall point out in the publication, is withstanding my conviction that the vice president had the disclosure of his pretended neutrality between Mr. pursued this course, I have made no advance towards Adams and the presidential sanvass of gen. Jackson, in 1825 and 'A. It seems he had managed to deceive his friends as well as gen. Jackson. There can be no doubt that Mr. Lumpkin believed him, a sincere, scalous, constant and uniform "supported of gen. Jackson." Thin and the model of the seems of gen. Jackson. The seems of gen. Jackson. The seems of gen. Jackson. The seems of the seems of gen. Jackson. The seems of the s

But there are circumstances connected with the ques-But there are circumstances connected with the ques-tion, that must be conclusive against the vice president. Mr. Monroe appears to have had the subject constantly in his mind. The vice president publishes with the cor-respondence, three letters from the president to the ge-neral, dated in July, Ostober and December, in the last of which, he states when and how the confidential letter was read. In May 1830, nearly twelve years afterwards, with Mr. Monroe's account of the matter in writing bewith Mr. Mohroc's account of the matter merring ne-forchim, it makes Mr. Monroe say that he had never read the letter until December, 1818. However defec-tive Mr. Mohroc's memory may be, the vice presi-dent's is worse. In my letter to him of the 2d October, 1830, I state that some time in the year 1821, he informed me that his memory could not be relied upon as to facts even after a short lapse of time. In October of that facts even after a short tapac or time. In October or any year, I stated that fact to him in a letter, which he answer-ed next day, and takes no exception to that statement. I do not make this statement from memory. I have now before me, a letter written by me, the next day in which before me, a letter written by me, the next day in which that is recorried. The same fact is contained in my letter last cited. To the statement thus presented, Mr. Calhoun attaches no note, thereby twice admitting the correctness of the statement of the Irality of his memory. Yet in his letter of the 59th May, 1830, he asserts that his recollection is distinct, that the confidential letter was not produced and read. If the tables of his memory retained impressions as durable as brass, he could not have made this assertion, if he had had one principle of honor, or honesty in his heart. Mr. Monroe and Mr. Adams, have said as much as honest men could say, vis: that they had no recollection that it was roe and say, viz: that they had no recollection that it was produced and read. There is but one case in which it is possible for an honest man to make such a declaration. d that is when he has a distinct recollection of a fact which renders it impossible that the alleged fact should have occurred. But Mr. Calhoun does not allege any thing of this kind upon which to found his distinct recol-lection. It is his naked assertion of his distinct recollection that he pairsu upon the president and afterwards upon the good people of the United States by his publication. Now I repeat, that no hences man, could, or would have made such a declaration, let his memory be ever so good. How then could the vice president, whose memory he has twice directly admitted could no be relied upon as to facts, after the lapse of nearly twelve years pretend to recollect not a fact, but that a fact did not happen at a particular time, without pretending that any peculiar circumstance had riveted it in his memory. an interview, between Mr. Calhoun, and myself

At an interview, between Mr. Calhoun, and no yaell m of cotober, 1821, without being called upon by any thing quiry and cri l had said, he stated, at the presidential election, for a successor to Mr. Monroe, there would be but two can cule, not of iddates; one from the north, the other from the southing the was goung enough to wait. This declaration president, by was repeated with emphasis; and he added, if my shall, after refreed did not act an unfriendly part towards him, it is well as a cast to foresee what part lie would take in the con-devotions by

date for the presidency, and the only avowed one. He stever made any explanation of this change of opinion, not did I ever intimate a wish to be informed. His declaration, above stated, does not depend on my memory, for I have in my possession, a letter written by me, the day after the declaration was made. And since the publication of the correspondence, I met with a gentlepublication of the correspondence, I met with a gentle-man who was then friendly to us both, and for aught I know, is still, to whom in a letter, about the date of the declaration, I had communicated it. He reminded me declaration, I had communicated it. The reminded me of it, and urged me if I took any notice of the cor-respondence, to present this fact to the public. In com-pliance with his opinion, and advice, I have presented it. I have been somewhat surprised, at the regrets that have been expressed by many of the newspapers, at the misunderstanding which has occurred between the president and vice president. It is certainly a misnomer to call it a misunderstanding, it is in fact a correct understanding between the parties between whom there has been a misunderstanding since the summer of 1818. Some doubts have even been expressed, whether the rupture would not produce a bad effect upon the ensuing presidential election: such doubts are entirely visionary. Let Mr. Calboun go over to the opposition toary. Let Mr. Camoun go over to the opposition to-morrow, he cannot in my opinion control one electoral-vole, not even in South Carolina, for I am credibly in-formed that the president of the United States, can get more votes in Abbeville district than Mr. Calhoun, al-The truth is, I believe, though it is his native district. The truth is, I believe, Mr. Calboun never was a republican in principle. He became a man after the federal party had been overthrown, and he had sagacity enough to be convinced that it would not rise to power in a short time, ambition therefore prompted him to join the republ lican amouton increase prompted nam to join the repulsation party. During the war the excitement which existed, and the pressure which the enemy made on the country, required all the vigilance and all the energy of those charged with the public interest. But after the war a new scene opened, and then it was discovered that many who had entered the republican ranks, were not repub licens in fact. The tariff for the protection of domestie labor, and internal improvements, became prominent and leading measures, in both of which Mr. Calhoun took a leading and active part. He is now at the head of the nulliflers in South Carolina, to nullify the tariff of 1828, because it does protect domestic labor. I have no doubt many honorable respectable and well informed citizens believe in the doctrine of nullification. Mr. Csihcou is probably the only nullifier in South Corolina, who cannot be honestly so. If there be another, it is his friend George McDuffie, who at least is only second to him in inconsistency as a politician.

The vice president's past conduct, and present situation reminds me strongly of one of Æsop's fables, in
which he relates that an ass liaving obtained a loon's
akin, put it on him, and went into the forest where his
appearance apprend affeight and dismay among the temanta of the woods, who field to their most sceret coverts and hiding places. Shortly after the sas began to
bray. The spell was dissolved, the affeighted beasts
returned from their coverts, and collecting around, they
stripped him of all lon akin, and exposed him to the
very years the vice presented and established the solventy
and men, and exterior of signation, and a mon of strict,
and men, and exterior of signation, and a mon of strict
honor. Through the agency of a parcel of young officers whom he had the address to attach to him, while
he was accretacy of war, he has managed to impose the
belief upon the majority of the chizen sol this republic,
that he was what he seemed to be. Unfortunately in
the month of February last, he eame out with his address to the people of the United States. This address
has had the same effect upon him, that the biaying had
upon the jacksas. That publication has produced inquoiry and criticism. And inquiry and criticism cannot
stall to expose the vice peresident to the scorn and ridicule, not of the assembled beaus, but of the citizens of
the United States. I now take my leave of the vice
president, by saying that if any of his quondam triends
all, after reading this review, wis to make him the object of adoration, they shall not be interrupted in their
deventions by WILLIAM II. CKAW FORD.

MAJOR EATON'S REPLY.
To Messrs. Ingham, Branch and Berrien,
ON THE DISSOLUTION OF THE LATE CABINET.

City of Washington, September, 1831.

It is with extreme rejuctance that I appear before the public, upon a subject purely of personal character. To me, nothing could be more painful than the necessity of bringing into discussion, in the newspapers, any thing which concerns my private and domestic relations. In civilized society, a man's house as his eastle, and the circle of his family a sanctuary never to be violated. He who drags before the public its helpless inmates, and subjects them to rude assults, deserves to be considered worse than a barbarian. Against those who commit such sacrilege, and shun an honorable accountability, the public will justify an appeal, which, under other circumstances, might not be considered admissible. I expeet not by this effort to silence those who have been assailing all that is dear to me. It may open afresh the fountains of their abuse. It is probable, that the very remorse and shame which an accurately drawn picture may produce, will excite my persecutors to raise clouds of fresh calumnies to break upon me with redoubled fury. Let it all come! my head is uncovered and my bosom bare.

There is another consideration which would seem to impose silence. These are times of angry political contest, unsuited to dispassionate inquiry. Already base the enemies of the president made use of my private relations to injure and harrass him in attempting to represent him as devoting his thoughts and his power to further my rices and wishes, they seek to blind the people to the principles and acts of his administration. They will doubtless seize even upon my humble efforts at self-doubtless seize even upon my humble efforts at

But to all these consequences I submit myself with entire resignation. A portion of the community will at least do me justice. They will perceive that the president is in no need of any developments from me to give proofs of his integrity, and that it is not for his sake that I present myself before the public. It is a paramount duty which I owe to myself and to my family, and which shall be performed. Others may conceive, but I cannot describe the pain those attacks have inflieted. It was indeed enough that I was assailed in private circles, while I was in office; but retiring from its labors, with a view to sit down at my home, in Tennessee, it was but a reasonable expectation to indulge, that I might escape a repetition of these assaults, and be permitted to enjoy my fire-side and friends in peace. But instead of putting an end to this unfeeling war, my resignation served to make my enceuses more bold. What before was whispered in dark corners, now glared in the columns of the newspapers. Men who had been my friends—who had received favors at my hands—who had partaken of the hospitalities of my house, and given pledges of friendship at my own board, became my leadliest enemies, while I still confided in them.

I sought that redress which wrongs so wanton and deadly provoked, and which public opinion, under senh circumstances, has always justified. It was refused in a way which added insult to injury and is was then accused, by one of the malignant calum was then accused, by one of the malignant ealum has been accused, by one of the malignant ealum has been accused, by one of the malignant ealum has been accused, by one of the malignant ealum has been accused, by one of the malignant ealum has been accorded by the station, than myself. He dealured it. I then felt in the malignant was then accused, by one of the president, then the malignant was the second that the malignant was the second that the dealured in the de

hold, and shrinking from an honorable and just accountability, these persons have, one after another, come before the public to give countenance and sanction to the calumnies of a reckless pross. Mr. Ingham, Mr. Branch and Mr. Berrien, with evident concert, and deliberate design, by filling the country with erroneous and discolored statements, and substituting falsehood for truth, have sought to consummate the ruin which their conduct in office so insidiously began.

What course adopt? There are What can I do? persons committed to my charge who are dear to me. I am their only protector. Shall I see them worse than murdered, by men who claim the polish and the culture of civilized life, and not lift my hand and my voice for their rescue? These gentlemen ex-press a desire to preserve their characters, as a precious inheritance for their children. Is the good name of a mother, of less value to her orphan daughters? Did they forget, that she whom so relentlessly they pursue, and who in nothing ever wronged them, has two innocent little children, whose father lies buried on a foreign shore? Has these little ones ever injured them? Were they and their mother so much in the way of these gentlemen, that in their malignity they should consent to sap the foundation of their future prospects in life? Had they no remorse, in conspiring and secking to rob them of all that villany and fraud had left them-the inheritance of a mother's good name? And if they could be sti-mulated in their addresses to the public, by the desire of transmitting to their children a spotless honor and unsulfied name, what might not be expected of me, in defence of the slandered wife of my bosom, and her helpless unprotected children? Attacks on myself, I disregard. A man's character is in his own hands: in his bosom he knows how to protect it. It is by his own acts only, that he can be de-graded. Not so with a female. The innocent and the guilty alike, the envenomed tongue of slander may reach and destroy. It is a withering blast, which can blight the sweetest rose, as well as the most noisome weed.

Although I expect nothing at the hands of those who can violate the laws of social life, and, all the precepts of "tholy charity," yet by an exposure of their motives and designs, I may be able to render their future malignity powerless. This induces me to make this appeal to my countrymen, and to their award to trust it. There is in the public mind intuitive honor—a native sense of justice, which revolts at wanton attacks on female character, and in the end will visit the unfeeling assailants with terrible retribution. To these I appeal, and on these rely, not in the hope to silence the malignant and the vindictive but to make their attacks to recoil upon themselves.

A place in gen. Jackson's cabinet, by me, was never desired. My ambition was satisfied with a seat in the senate which thrice had been kindly bestowed upon me by my fellow-citizens of Tennesses. Distrust in my competency to discharge the duties of one of the departments, and a reluctance to encounter its labors, induced me to prefer my situation in the senate. About to enter upon untried scenes, with a limited knowledge of the characters and feelings of those by whom he was to be surrounded, the president felt anxious to have near him some of his long tried personal friends, in whom he had entire confidence, lie desired that judge White, my colleague in the senate, or myself should accept one of the departments. I urged it upon judge White, because I considered him better qualified, and better adapted to the station, than myself. He declined it. I then fet it to be my duty to accept the offer of the president. He had just lot the partner of his boson, and associative As in his kindness he seems

ed to think I could be serviceable to him, it did not seem consistent with the friendly relations which had long subsisted between us, to leave him at such a moment.

Mr. Van Buren was appointed, because the president had confidence in his talents and integrity,
and hecause he appeared to be the expectation of the
country. Mr. Ingham was selected, for the reason
that the president was induced to believe that the
democracy of Pennsylvania desired it. Mr. Barry,
from a confidence reposed in him by the president,
derived from his personal knowledge of his worth and
merits. Between the first and last named gentlemen
and myself, the most cordial friendship has always
subsisted: nothing has ever arisen to interrupt in the
least our friendly relations.

Mr. Branch and myself were born and reared in the same college, and had been associates and friends, in early, and in more advanced life. I solicited his appointment as a member of the cabinet, and at the president's request informed him of the selection. He made no objection—not the least, save on the acore of a modest distrust of his competency, and expressed at the time much gratitude towards the president, and exhibited much good feeling towards myself.

With Mr. Berrien I had been on terms of intimacy, and supposing him to be a man of talents and honor, was pleased that he was selected. The president requested me to confer with him in retaion to his acceptance. At that time we were in habits of the kindest intercourse. He seemed highly flattered by his manifestation of the president's confidence, and offered no objection to an acceptance, except initiating a possible interference with his private business. The next day he informed me that he would accept, which reply I communicated to the president.

I met all the members of the cabinet as friends, personal and political, to whom was assigned the highest destuny, by harmony of feeling among them solves, of giving unity of design and vigor of action to the administration of general Jackson. In the same light I am sure, did he eonsider us. In the singleness of his heart and the ardour of his patriotism, he suspected not that there was amongst us, any other object, than by our cordial support, to enable him in the cabinet, as he had done in the field, "to fill the measure of his country's glory." Far otherwise were the feelings and purposes of Messrs. Ingham, Branch and Berrien, as in the course of this exposition, will, I helieve, suitsfactorily and fully appear.

Mr. Berrien in a late address to the public says:

"The annuciation of the names of the intended cabinet seemed to me, however, to present an insuperable bar to my acceptance of the office which was tendered to me. I thought I foresaw clearly the evils which have too ohviously resulted from the selection. A gentleman 'high in the confidence of the president'—whom he consulted, 'expressed his decided conviction, founded on a long and intimate knowledge of the president's character, that he would himself speedily see, and correct the viil.' I yielded to those suggestions, and took my seat in the cabinet."

A writer in the Telegraph, of the 14th July last, believed to be Mr. Berrien, speaking in behalf of Mr. Ingham, makes the following remarks:

"Pending the organization of the cabinet, the president was informed by several persons of high standing, and those his strong party supporters, that there were objections to major Eaton, which would lead to difficulties not likely to he removed." "It was not necessary for Mr. Ingham to take any part in the affair. Every one knew that public sentiment would, in due time concentrate on what was amiss, and correct it?"

In the Telegraph of the 28th July, probably by the same writer, it is asked:

"By whose advice was it, that judge McLean was arranged to the war department, before the cabinet was announced, in order to remove the 'malign influence,' which even then threatened the dissolution of the party. It was by the personal, political and long tried friends of the president, that this advice was given; and it was by the same advice that these gentlemen retained their seats in the cabinet in the confident hope that the president would sconer or later see his error and correct it."

These extracts carry on their face evidence of a common origin. If not penned by the same hand, they must have sprung from the same councils -- were all written with the same views and the same object, and disclose with sufficient clearness to whom I am indebted for the long covert, and at last, open attacks upon me and my housewold, as well as their purpose. Certain gentlemen who styled themselves the personal, political and long tried friends of the president," undertook, it seems, without his knowledge or consent, to arrange and fix his cabinet. I, who had bean his particular friend and associate for twenty years; who had adhered to him "through good report and through evil report," during two bitter contests for the presidency, and who, against my wishes, was selected as a member of his cabinet, was to be set aside as unworthy, in the estimation of these gentlemen, to associate with him, or to participate in his councils. This secret cabal of exclusive friends advised Mr. Berrien to accept a seat in the cabinet, under the secret expectation that I would be driven from it. By the same persons, judge McLean was arranged to the war department, their object being expressly to get rid of me. They advised Messrs. Ingham, Branch and Berrien, to cleave fast to their hold, which they did, even under alleged "indignity and insult" too, in the "confident hope that the president would speedily see and correct the evil."—
Without the president's knowledge, and without mine,
this cabal of "personal, political and long tried
friends," were thus endeavoring to control all the cabinet arrangements, and secretly to place around the president men of their selection and stamp. was not for him to select his own counsellors, or decide who were his personal, political and long tried friends"-men who had supported him only when they had lost all hope of Mr. Calhoun-who had joined his standard only when their favorite candidate had disappeard from the contest, and who had supported him as a secondary choice-your Inghams, Berriens, and others, were now arrogating to become his exclusive counsellors, and to thrust from his presence as unworthy of his trust and confidence, those who had supported him for his own sakewhose attachment was comented by years of confi-dential intercourse—whose faith and energies were pledged to his support, and whose hopes were all concentrated in the success and prosperity of his administration.

Mr. Branch was made the instrument of abler beads, and attempted to become a manager in this business. In his recent letter, he mentions a call which he made on the president previous to my nomination to the senate, at which he arrogantly represented that my selection would be improper and unfortunate, and gave his reasons, which appeared to lave related solely to my family. He also states he then came to advise me against accepting a place in the cahinet, admitting that the charges made against my family were false, but representing "what use the opposition would make of it," and that "the enemies of the president would not fail to make a handle of it." He says that he placed Mrs. Jackson and Mrs. Eaton on the same footing, and desired to save the president "from recollections which would

the painful and distressing." Mr. Branch has a treach-means to be employed under their boosted sense of erous recollection. He kept no note book, or, honor—an honor which in their bosoms inspired an like his co-partner, Mr. lugham, he has accommodated his notes to emergencies. I can put him right in this affair, not doubting his admission of the truth of the narration I offer, if honor be left him, although he may dony the motive which I feel persuaded influenced him at the time.

Failing in the attempt to prevent my appointment, and to dissuade or rather to deter me from accepting, Mr. Branch was next made the instrument of a piece of secret management, having in view the same re-

It was suggested to the president after the first arrangement of the cabinet was made, that Mr. McLean entertained objections against remaining in the post office department. It was known that the president was disposed to gratify him, by placing him in another department, if he could do so with a proper regard to others previously selected. This it seems, taken in connexion with my known repugnance, under any circumstances, to undertake the labors of that department, furnished a hint to those who wished my exclusion from the cabinet of which they hastened to avail themselves. Mr. Branch declared that the president might place him where he pleased; he should be satisfied; and proposed to me, that we should, if the president approved it, assent to the placing of Mr. MeLean in either of the departments assigned to us, as he might choose, to which I assented. The war, navy and post office departments, were then considered open to re-assignment, according to the will of the president. The result was, Mr. McLean was arranged to the war department, Mr. Branch to the post office, and myself to the navy department. This did not meet the object. Mr. Branch made unexpected difficulties, and at the desire of those who proposed the change, the original arrangement was resinted

I suspected no other than a fair and honest motive in all this; but we are now informed, through the expositions recently made in the Telegraph, that all Mr. Branch's movements originated in the "advice" of certain 'ipersonal, political and long tried friends of the president," given with a view, as is now expressly stated, "to remove" me from the cabinet.

At length the cabinet was formed. Mr. Berrien expressly says, that he entered it, only because he expected "the president himself would speedily see expected "the president number would speculy see and correct the evil" of my appointment; and that he clearly "foresaw the evils which have resulted from the selection." His declaration is no doubt true. No prophets foresee future events, so precisely and so certainly, as those having the means in their own control, are determined to bring them to pass. Foreseeing the evils, he must have foreseen the means through which their correction was to be brought about. He must have foreseen, that he and his associate friends intended to use his influence and consequence which office gave, to accomplish their expectations—the persecution of my family—the attempt to degrade me, and all the arts which subse quently have been employed to procure my removal.

How could so much be foreseen, if it had not been predetermined? No prophecy could have been so confidently relied on, if it had not then been resolved, by a cabal of the president's pretended "friends," with a view to concentrate public opinion, that I and my family should be proscribed from intercourse, with that portion of society over which they and their families had, or could have influence. Not a doubt is left on my mind, that before the nomination of the cabinet to the senate, the means of operating on public opinion, and forcing the president to ex-land the me, were devised, arranged and fixed upon, by cabinet to rest? On the confiding friend who, judg-and with the knowledge and approbation of Mesare. ing of men by their professions, selected those as its logham and Berrien, if not of Mr. Branch; and the members whom he believed to be friendly to each

earnest desire to transmit to their children, "an unsullied, good name" were the abuse and slander of a mother, with two innocent daughters, whose good name was blended with hers, and in tattacks upon my integrity and honor. Did they reason themselves into the belief, that the inheritance of a parent's good name, was of no value, only as it regarded their children; and that whether others lived or perished, was not material, if they and theirs were

Did I merit such course of treatment from Mr. Berrien? We had served together for several years in the senate of the United States. He was invited to, and was present at my marriage, six or eight weeks before. We were in habits of daily friendly intercourse; on my part, free and unrestrained, and, as I supposed, equally so on his. He professed to be my supposed, equally so on his. He professed to be my friend, and such I thought him. Was it honorable, then, and was it just, to hide from me all the "critis" which he "foresone," and suffer me to run blindly upon inextricable difficulties? Should be not have warned me, that not "the opposition"—not "the enemies of the president" merely, as Mr. Branch states, but his friends-"his personal, political, and long tried friends'—aye, even those whom he had selected as members of his cabinet, viewed my selection as an evil. and intended to use it to distract his councils, embarrass his administration, and provide for a suc-cessor? Had Mr. Berrien frankly informed me, that he and his associates considered my appointment "an insuperable har" to their acceptance, an issue would at once been tendered. I should have desired the president to excuse me, and given my reasons and then, for the sake of harmony, he would have dis-charged either me or them. But all was concealed from me, and only against the probable course of the opposition, - the enemies of the president, was I advised and warned. I was not taught to expect, that in logham, Branch and Berrien, I should find these very enemies, who were smiling upon him, and me, with unqualified professions of devotion and friendship. Against their assaults, it was hence impossible to guard. Again, I ask, was it just or honorable in Mr. Berrien, entertaining the views which he has recently avowed, to conceal them from me, and thus lead me blindly forward, upon a mine which he knew was prepared for my destruction? However he may excuse himself for his practised

concealment towards me, yet was he bound in duty to the president and to the country to communicate his views frankly and fully to him. He knew the importance, nay absolute necessity, of entire harmony in the cabinet, and that the views of the president, in relation to the reformation of the government, and home interests of the country, could not be accomplished without it. Mr. Berrien knew, that the president had a right to expect unity of feeling and action amongst those whom he had selected as his counsellors; and that in justice to himself, and to the people who had elected him, he would not knowingly constitute a cabinet of discordant materials Yet "clearly foreseeing all the evils which have resulted," he concealed his feelings and his views, and suffered a cabinet to be formed, between whose friendly association and cordial co-operation, there was an "insuperable bar," which he clearly saw; but which the president did not. By this concealment, and want of candor, he suffered his friend and benefactor to be led into error, in the very first step of his administration, and which, in common with other enemies, he is, now attempting to wield to his destruction. On

other, and devoted to the success of his administra- filled with unwilling or reluctant visiters, constraintion; or to those deceifed; individuals, who, foresee-ed to call by the command of power, could never be ingall the evils which have resulted, kept them concealed from the president, and entered his cabinet such authority for friends, associates and visiters, only because they expected such discord and dividential when my doors were open, at "large parison to arise that "public sentiment resuld concentrate" ites," and at social calls, I met friends, with cordision upon one of their colleagues and force his removal? I lears and happy faces, who evinced their friends, with cordisions and happy faces, who evinced their friends with their faces.

The question so gravely raised and discussed in the public newspapers about visiting—leaving a card, and invitations to "large parties" or small ones, in this city, cannot but appear matters of derision to the American people. Who calls upon his neighbor, or invites him to eat and drink with him, and who does not, is a matter of no concern to the people; and to them it must appear ridiculous, that states—men and eabinet counseliors, have thought it necessary to disturb them with matters so triling. But even these lare heen rendered of some importance, as developing the motives of men, and accounting for events of higher importance. And in this view is it, that I am about to introduce such a topic, and beg to be pardoned for doing so.

After my marriage in January 1829, my wife and myself visited Philadelphia, and were absent from Washington two weeks. Amongst those who had called in our absence to visit and pay us the customary engratulations, were Mr. and Mrs. Calhoun—their cards had been left. In cities, leaving at a neighbor's house, a card—a small piece of pasteboard with the name upon it, is called a visit. Not long afterwards, we called at Mr. Calhoun's lodging to return the civility. After sending in our names, we were invited up to the vice president's parlor, where Mrs. Calhoun was alone, and received us with much politeness.—We spent a short time, quite agreeably, and took our leave. Afterwards, these calls were not repeated on either side. This was a short time beforg at was understood who would compose the cabinet of general Jackson.

Another trilling incidenties worthy of note. When it was ascertained certainly that I would be secretary of war, Mr. Calhoun requested the appointment of one of his friends as my chief clerk. To another gentleman who made the same request, I made a promise to comply with Mr. Calhoun's wishes. Considerations not thought of at the time, induced me to change my determination; in consequence of which, I declined to make the appointment, and sent an explanation to the gentleman, to whom I had given the promise. None was offered to Mr. Calhoun, for none was asked, and to him no promise had been made. From that time he hroke off all intercourse with me, official as well as private.

Soon after the cabinet was organised, indications of those secret views, which Mr. Berrien now openly avows, began to manifest themselves. The motive was not apparent, yet was it sufficiently evident, that there was a settled design to put a bau on my family, and render my position at Washington disagreeable to me. This was to be promoted by all the influence and importance which high station conferred on some of my colleagues. Confederacies were formed, and efforts made to awaken prejudices. To give countenance to the confederates, and to aid their efforts, old slanders were revived, and new ones circulated. Families coming to the city, were beset on the way, and on their arrival. No means which ingenuity could invent, or malice make use of, were left untried to give tone to public sentiment—"to make it concentrate" and force the president to separate me from his councils. Hope gave the assurance that in a little while he would see public opinion concentrated and would "speedily correct the evil-"

Let me not be misunderstood. I never complained of any one, for not associating with me or my family. It is the right of every man, and of every woman, to visit whom they please. To see my house and the inventory gone from the department, his faman, to visit whom they please. To see my house and the inventory gone from the department, his fa-

filled with unwilling or reluctant visiters, constrained to call by the command of power, could never be desired by me. Happily, I was never dependent on such authority for friends, associates and visiters. Always, when my doors were open, at "large parties," and at social calls, I met friends, with cordial hearts and happy faces, who evinced by their frank and open demeanor, that they came of their own volition, and not through hope of reward, or fear of punishment. It is true I did not meet some of my colleagues, or their families, nor some of their associates of the same political stamp: but I met ladies and gentlemen quite as respectable, and equally as agreeable. If, as is true, I and my family were not invited to the houses of Messrs. Ingham, Braach and Berrien, so neither were they invited to mine, and is this we were equal; and neither, as I conceive, had a right to complain.

Mr. Berrien's family never did refuse to visit with mine, for they never had the opportunity. Custom required, when they came to the city, being lest in their arrival, that we should first call on them, if we desired their aequaintance; but we never did call.

How ridiculous does this single fact render Mr. Berrien's publication, which he has set forth with such grave formaity. He had ascertained the sense of society here, he says, and conformed to it in this matter, when in fact he never had an opportunity to conform to, or depart from it. He maintains that he president threatened to dismiss him, because he would not compel his family to visit where he did not choose they should, when in fact they never had an opportunity to visit there. Throughout, he presents me and my family as craving the society of his, which he haughtily request, where, in fact the first, the natural and the usual advance, on our part, had never been made.

It will be seen, then, that had the president set out to regulate the intercourse of society, and to direct its social relations, he ought to have begun with me, not Mr. Berrien. He must have threatened to dissuiss me, if I did not compel my family first to call on his and leave a card. What! force Mr. Berrien, under such circumstances, to force his family upon us! The president certainly ought first to have forced us to give them an opportunity to decline our acquaintance. To force together unwilling people, and particularly to begin with the wrong persons, would indeed appear an odd and strange procedure.

In the autumn of 1829, new attacks began to be had conspired with my wife's first husband, Mr. Timberlake, to defraud the government of large sums of money. Other attempts to get rid of me, having failed, I was now to be presented as being in default to the government, through fraud practised on it. Mr. Timberlake had been a purser in the navy, and this charge was based upon a reported deficiency in his accounts with the public; and on a private letter of mine, detained in the 4th auditor's office, showing that on my suggestion, he had remitted money to me. Copies of my private confidential letters to him, had been taken from the otlice, that I might not escape through apprehended indulgence and faror, on the part of Mr. Kendall. Matters were considered well arranged, and the proof complete to show, that this delinquency was wholly occasioned by remittances of money to me, and which was yet in my possession. Such were the whispers circulated through the society of this place. But a close investigation, which occupied some time, showed that Mr. Timberlake's account had been deprived, through a series of shocking frauds, of credits to the amount of from 12 to \$20,000, and that justly he was largely a creditor, not a debtor, to the government. But with mutilated books—abstructs of accounts missing, mity can only appeal, under all the circumstances, lintegrity and honor, should deny this-strange, that to the justice and bonor of the country, for redress. While alander held its open day, and midnight round of whisper on this subject, I received from some mafignant being, who subscribed himself lago, the fol-

lowing note:

"Sir-I have written a letter to Mr. Kendall about the money that paid for O'Neal's houses. You know what I mean. Revenge is sweet, and I have you in may power, and I will roast you, and boil you, and may power, and I will roast you, and boil you, and boil you, and bake you; and I hope you may long live to prolong my pleasure. Lay not the flattering unction to your soul, that you can escape me. I would not that death, or any evil thing, should take you from my grasp for half the world."

Who the writer of this fiendish note is, I have never ascertained. I cannot turn my thoughts on an ene-ray so implacable, that he would be unwilling the man he hated should find repose in death. Yet it is in character with the acts of those whose forecast pointed to the means, by which the evil of my selec-tion, as a member of the cabinet, was to be made ap-parent, and the president forced "speedily to see and correct the evil." If I could have been driven from all respectable society, or had fixed upon me collusion and fraud, in obtaining the funds of the government, then would the cabinet have been relieved of my presence, and the prophecy of Mr. Berrien completely fulfilled.

Congress had now commenced its first session after the inauguration of the president. The recommendations in his message had been received with uncommon applause. But it was soon perceived, that little, in furtherance of his views, was to be expected from some of the political gentlemen who were professing regard to the administration. Movements amongst some of my colleagues, with others in the same political interest, indicated a disposition again to wage against me, a war of exclusion. Rumors of a combination to force me from the cabinet, attracted the president's attention. He suspected that a por-tion of his cabinet had entered it, in disguise, and had fomented some of the mischief he had encountered; and accordingly determined, if it should appear that they were guilty of such duplicity, and had combin-ed to harrass and drive out one of their colleagues, they should share the fate they were preparing for another. While reflecting on the course proper to be adopted, col. Richard M. Johnson called on a visit; and to him he disclosed his difficulties and intentions. Colonel Johnson entertained a better opinion of these gentlemen than to believe they harbored hostile views towards me, or had entered into a combination to expel me from the cabinet. Accordingly he solicited the consent of the president to converse with them as a friend, that by ascertaining the suspicions entertained to be incorrect, he might relieve them from the imputation. He had no other authority or permission than this: the mission was of his own seeking; he was actuated solely by a desire to maintain barmony; and if he could, to be of service to these gentlemen. Whether he spoke upon politics—reli-gion—philosophy—ladies' cards, invitations to large parties or small-social or political intercourse-all, all was upon his own responsibility and upon his own authority. Through him the president made no proposition, no requisition, and no threat. For myself I knew nothing of it.

It is a little remarkable, that neither of the three gentlemen, in their published statements, speak of any proposition as coming directly from the president, which was considered at all insulting or impro-per. Though they insist, that col. Johnson was authorised to threaten, and did threaten them; yet not one pretends, that directly the president insinuated any thing of the kind to either. "It is strange,

when they met the president, he breathed to them nothing like it—and yet stranger still, that in defiance of these proofs, and these circumstances, they still insist, that they were insulted! Who now will wonder that the cabinet was changed, or who maintain that it ought to have been longer continued? No sooner had Mr. Branch stated, that col. Johnson had threatened their dismissal, than it was promptly denied by the president, who said he would forthwith send for col. Johnson; and for that purpose called a servant. Why did the messenger not go? Mr. Branch explains! "It is unnecessary not go? Mr. Branch explains: "It is unnecessary to send for col. Johnson; for your word is suffi-cient." And why is that word not now sufficient? Then, Mr. Branch received it as true—told it, no doubt, to his colleagues-and yet do they come before the public boldly to assert as true, what then was given up as a mistake—an entire misconception on their part. Content with the explanation offered at the time, convinced of the incorrectness of their impressions these gentlemen now assert their displeasure and discontent, and at the end of fifteen months, come out and maintain that to be true, which before had been given up as a false and incorrect impression. As for myself, I can say, and do truly say, that I naver uttered, or brought to the consideration of the president, any complaint in re-ferance to myself. I was always content to keep the redress of my own wrongs and injuries in my own hands, and to ask the aid and assistance of no one, in or out of power. No Intimation was ever had by me that col. Johnson intended to make such inquiry; nor did I know that he had made it. The lofty sense of honor entertained by general Jackson would never permit him to compromit the honor of his friends. He has not compromitted mine; and yet he would have done it, had he used his authority to extort courtesy in my behalf from Messrs. lngham, Branch and But why reason about it? If the disarowal Berrien. of the president, established even by his accusers, who so lately were his professing friends—if to con-front Mr. Branch with colonel Johnson, and which alone was prevented by a declaration that he (Mr. Branch) was entirely satisfied—if the assertion of colonel Johnson, that he had no authority to communicate any such thing—did not communicate it, and so informed the parties at the time—if all this be not sufficient to prove the falsity of the statements which these gentlemen, in their malignity, have so recklessly hazarded before the public, then would it not be believed, "though one arose from the dead."

By their conduct at the time, my colleagues manifested that nothing had been required of them, which, as is now asserted, they considered dishonorable. If they had believed so—if, after conversing with the president, they thought he had exacted of them that to which, as honorable men, they could not conform, they should have immediately tendered their resignations. To suppose they could do otherwise, is to presume that for the sake of office they were willing tamely to submit to the "indignity and outrage" of which they now complain. Though the concealments by which they imposed themselves on the president, their conduct towards me, and especially Mr. Ingham's note book, in which, being a confidential adviser and in one sense a part of his family, he noted down, if he is to be believed, the free, the private and familiar conversations of the president for future use, present spectacles of human degradation at which honorable minds would revolt; yet, I cannot suppose that they would remain in the cabinet, under a consciousness that hourly they might be exposed to the same indignity, involving their personal honor, and the honor of their families. It is utterly impossible any thing of the kind to either. "It is strange, that gentlemen now apparently so sensitive, could passing strange," that col. Johnson, a man of known have submitted themselves to such a state of things,

without complaint, for fifteen months. By their remaining in the cabinet so long after the "indignity and outrage" of which they now complain, I must conclude that the president had not insulted them by any dishonorable and improper requisition, or else that they loved their offices better than their honor, and that their present violence is caused only by the

loss of them. But in relation to Mr. Branch, I have something even better than Mr. Ingham's note book, to prove what actually were his feelings towards the president at and about the very time when this pretended in-dignity of col. Johnson was offered. It is a letter\* addressed by Mr. Branch to the president, in his own hand writing, on the 29th January, 1830, and which on the same day was inclosed to me, in the hope that a reconciliation might take place between us. Agreeably to Mr. Ingham's note book, it was "on Wednesday the 27th day of January, 1830," that this alleged "indignity and outrage" was offered. Of course this letter was written but two days after, and on the identical day when Mr. Branch, feeling himself deeply afflicted at the communication made to him by colonel Johnson, called, as he states, to see the presi-dent; and when, as he says, "the president's feelings were too much enlisted to weigh any reasons which might be offered." And were Mr. Branch's feelings too much enlisted "to weigh any reasons?" Was he, as we are told was the case with all three of the gentlemen, indignant at the outrage? Let the letter speak for itself, and show how deeply, and how like an insulted and wounded man he could write at this instant of excitement, when honor and feeling, through the instrumentality of col. Johnson, had

been rudely trodden under foot. "Navy department, January 29, 1830.

"Dear sir-I have received your note of yesterday's date, and do most cheerfully accept your friendly mediation; more, however, from a desire to give you an additional evidence of the friendly feelings which have actuated my bosom towards yourself, than from a consciousness of having given to major Eaton just cause for the withdrawal of his friendship. As a further manifestation of the frankness which I trust will ever characterise my conduct, I agree to meet him this day at two o'clock, in the presence of major Barry, at Mr. Van Buren's, and in his presence also.
"Yours, truly, JOHN BRANCH.

"Yours, truly, JOHN"
"To the president of the United States."

This letter written directly after the indignity complained of was offered, bears no impress of insulted feeling; on the contrary, it breathes a spirit of kindness and friendship towards the president, whom he recognizes as a "mediator," seeking with almost parental solicitude, to heal the division amongst the parents softened, to hear the division amongst members of the cabinet, and anxious for the restora-tion of harmony. Surely in writing that letter, which he by signing himself, "yours truly," he could not have supposed, that the president had just offered him an indignity; or if so, it only proves how great a hypocrite he is. At that time, we did not speak. As much parade as he makes of his friendly feelings entertained towards me, he was the very reverse of all that the name of friend conveys; and knowing it as I did, I would not permit him to seem to be what he was not. I had refused to return his salutations. and declined all intercourse, except when we met at the president's. I never complained of Mr. Branch, as he asserts in his letter to the public. It was he who complained, if at all complaint were made. His letter to the president, thanks him for his offer to act as a mediator in our difference, speaks of his good

feeling towards me, and willingness to meet me at two o'clock that day. I have no doubt it was his professions of friendship and kindness towards me. made to the president, which induced him to become Mr. Branch's mediator in this business. On receiving the letter, he enclosed it to me, and expressed a wish that good feelings could be restored between us. An interview took place, at the room of the attorney general, at which major Barry and Mr. Berrien were present.

It was here that Mr. Branch, in the presence of these gentlemen, expressed friendship for me, and in the strongest terms declared, that he did not entertain an unkind feeling towards me, and wished he had a glass in his bosom through which his every thought could be read. He spoke of the non-intercourse between our families, and said that he had not the slightest objection to a free association; but that he could not control his. I promptly answered, that I did not desire his or any other family to visit mine, except with their own free consent; and that it was my desire our families should, in that respect, pursue such course as they thought fit and proper. We shook hands and parted as friends. Mr. Berrien affected much satisfaction at this reconciliation, and pretended to hail it as the harbinger of future harmony and good will. I say pretended, because, under all the circumstances of recent disclosure, he felt not what he said he did. It was only adding another and another fold, to that cloak of hypocricy in which he had wrapped himself, from the first formation of the cabinet.

Such were the incidents of Friday the 29th of Jan. 1830, the moment when, as their communications to the public disclose, they were writhing under a sense of deep and lasting "indignity and outrage," at the threats of eol. Johnson, borne to them from the president. Where then was the lofty dignity of Mr. Berrien and Mr. Branch, that the one could declare how pleased he was at the reconciliation made, and the other protest the good feelings which he entertained for me?

Let us see how the facts stand, if these men speak truth. On Wednesday, the 27th of January, 1830, the president, through col. Johnson, threatened to dismiss them, if they did not compe) their families to associate with mine, which they considered such an "indignity and outrage," that they seriously thought of resigning. On Thursday, the 28th, the "indignity and outrage" being unatoned and even unexplained, the president wrote a note to Mr. Branch, offering his "friendly mediation," to bring about—what? Not social intercourse between our families—but a restora-tion of friendly intercourse between ourselves. In the morning of Friday, the 29th, (for he says he will meet me at two o'clock), he accepted the friendly offer, thus acknowledging that he considered the president an impartial umpire, an unprejudiced, unexcited and just man, in whose hands he could trust his character and his honor; and yet strange to tell, on the same day, having called on the president for some explanation about col. Johnson's insulting message, he found "the president's feelings were too much entisted to weigh any reasons which might be offered!!" Who can believe all this? "Most cheerfully," says he, I "accept your friendly mediation." What! Accept the mediation of a man, who two days before, had required him to humble himself to me like the meanest slave, and had not atoned for it? Accept the mediation of a man whose feelings were so much enlisted in my favor, that he would not listen to reason? Im-possible! Had Mr. Branch felt that an indignity had been offered him, he would have replied to the president: "Sir your insulting message through col. Johnson, must be first explained, before I can avail myself of 'your friendly mediation.' " By his whole conduct, he showed that he entertained no such feel-

<sup>&</sup>quot;I accidentally found this letter, a few days since, amongst some old papers, not intentionally preserved, for until now I never conceived it to be of any consequence.

ing, and that the whole story about "indignity and truly ridiculous! She was lone and powerless. outrage," is a sheer invention, got up now to injure the president.

This letter of Mr. Branch shows, that in addition to col. Johnson's friendly mediation, the president was willing to exert his own as a friend, to heal the breach. in anticipation of the meeting to which he invited the secretaries, on Friday the 29th, to declare the basis on which he had resolved to fix the harmony of his cabinet. Mr. Branch and myself, the principal difficulty having arisen between us, met, as has been stated, at Mr. Berrien's, and adjusted our relations amicably; and yet this reconciliation, produced, as is seen from Mr. Branch's note, by the kind and friendly interposition of the president, is represented to have been immediately preceded by "indignity and outrage," and to have been succeeded by a state of feeling too much excited "to weigh any reasons which might be offered."!!! How thoroughly is all this contradicted by Mr. Branch's contemporaneous note.

Private difficulties were now at an end, and, as was well understood, families were to visit or not, according to their inclinations. In two days the "indignity and outrage" which had been offered to these gentlemen was forgotten, so much so that for fifteen months matters glided on in tolerable barmony. Nothing more was said or heard of this subject, until the president, as he had an unquestioned right to do, thought proper to request their resignations. Then were old notes and memoranda burnished up, and that over which they had slept so long, immediately became a subject of deep and "awakening interest to the American people." The truth is, this farce, which is now brought out on the public stage, was designed for a different occasion. It was in January or February, 1830, that they expected to exhibit be-fore the public, and to unfold the tale of threats from the president, dismissal, and family association, and all that. Not being dismissed, then, as they expected, they laid aside their prepared tale; but hav-ing at length lost their offices, they bring it forth upon an occasion which it does not fit, and vainly attempt to attribute the dissolution of the cabinet to a false ground. That event they knew sprung from an entirely different cause—a cause which will satisfy every impartial man when he comes to understand it. To account for their removal, they offer any but the true reason, and hence run into all sorts of absurdity.

Shortly after this, about the 20th of March, a pre-paratory meeting of a few members of congress was held, with a view to request the president to remove me from the cabinet. Being apprised of their de-sign, he made a remark which satisfied the leaders in this movement, that to persist in their course would serve to expose them to public reprobation, and result in fruitless endeavor. Accordingly, the project was abandoned, or at least suspended.

I do not impute to all who participated in this preliminary step, a design to unite ultimately in a mea-aure of such high dictation to the president. Some were at first misled by false representations, and induced to believe that his peace and comfort, as well as the success of his administration, depended upon it; others attended the meeting to point out the impropriety of the course, and to dissuade their friends from persisting in their design.

Now, what was the motive for all this relentless persecution? Could it be that my wife was indeed the cause? Was it meraly to exclude a female from their "good society"? Was one woman so dangerous to public morals, and so formidable in influence and power, as to require all this strong array of cabinet counsellors—combination of members of congress—

Those who liked her society, sought it; and those who did not, kept away. Neither she nor her husband, entered into cabals and intrigues, to the prejudice and injury of others. Their own multiplied wrongs, they bore with as much palience as could be expected. from mortals endowed with human passions and sepsibilities. A common understanding prevailed, express in relation to one family, and which was also understood in relation to others, that each should seek their own associates, according to their own will, uninfluenced and unrestrained. The molive, therefore, was not to exclude us from society. It is a matter altogether too small to account for the acts and the untiring zeal of so many great men.

Was the motive merely to exclude me from the cabinet? Was my presence there, dangerous to the in-terest of the country, or to its institutions? Had I the power or disposition to injure the one, or overthrow the other? Was it pretended that I wanted the ability, intelligence or integrity, necessary to the management of the department of war? Of its management, there has been no complaint, while it was in my hands! I left it at least as prosperous as I found it! Was it suspected that I was not true to the president, and would prove false and faithless to his administration? A confidential intercourse of more than fifteen years, the highest admiration of his character, and the deep personal interest felt in the success of his administration, were surely sufficient to guard me against that. Nothing of this sort entered form y exclusion on account of any suspicions enter-tained, that I would willingly do injury to the interests of the country, its institutions, or to the president! To what then shall we look for this metive? An ardent friend to the vice president, in 1829, in one short sentence disclosed it:

"Major Eaton is not the friend of Mr. Calhoun,"

It was this which rendered me unfit for the cabinet, and for the respectable society of Messrs. Ingham, Branch, and Berrien. I could not, perhaps, be used to promote the views of Mr. Calhoun, and might exert an influence to induce general Jackson to stand a second election. It was not thought that in my hands the influence and patronage of the war depart-ment, could be used in favor of a successor. In that they did me justice. It was not so used, nor ever would bave been. It was a subject about which i spoke not, and felt not. Not even was I solicitous for general Jackson again to be selected, except on the ground that his principles and the course of his administration, when fairly tested, should be found in accord with the general sense of the people and the country. At a proper time they would determine this matter, and there I was willing to rest it, undisturbed by any private or official interference of

But "Major Eaton was not the friend of Mr. Calhoun," and this was a sufficient reason, why be should not be permitted to enter the cabinet, if to be prevented; or for forcing him out when there. ineffectual attempts to exclude me, have already inetactual attempts to extrace me, nare attempts been alluded to. It has been shown that Berrien and Ingham, concealing deep in their own bosoms their feelings, entered the cabinet, under a full conviction that I presently would be excluded—that Mr. Calhoun's family and mine, before my appointment, interchanged civilities, and that he sought of me the appointment of a friend as chief clerkand that thereafter all private and official intercourse between us, ceased. Let it be borne in mind, that the principals-those who have been actively employed against me, are the friends of Mr. Calhounconfederacy of fashionable ladies? Was it for that, attacks were made upon the integrity of her husband; fered, then, that this "high wrought tempest," has and honor, truth and candor sacrificed? The idea is proceeded from political designs, connected with the this inference I have it in my power to confirm, by

the most unquestionable facts.

Duff Green, editor of the United States Telegraph, has been from the first the instrument of Mr. Calhas been from the first do instrument of Mr. Car-houn, by whose movements he has sought to bring his plans into operation. To him the feelings and plans of his party have been known. He has been their chief manager; first their private, and now their pub-lie organ. Him they chose to carry on their private correspondence-him they selected to make their debut against me, they standing behind the scene with their notes, memoranda, and concerted statements, to back and sustain him. As he is their witness and their friend, their agent and associate, they will not His word impeach the testimony borne by his acts. would not be introduced by me as evidence against any whom he was desirous to injure. Before I knew him, I rendered substantial services to this man; but his ingratitude is a warning to the friends who now confide in him, of what they may expect if interest or policy shall hereafter make it necessary. Before he left Missouri, he was poor and pennyles, too much no test Missours, no was poor and pennyless, too muces so, as he informed me and others, to be able to remove his wife and children to this place, where he had then lately established press. Upon his application to me, and atating his necessities, I borrowed for him fourteen hundred dollars; part of which he repaid in about fifteen months, and the balance only recently. when he found the sense of the community shocked by the baseness of employing the means furnished by my unreturned advances to destroy my reputation.

In difficulty here, and pressed for money, he again in 1826 applied to me, when through a friend of mine in Baltimore, I obtained for him \$2,500. For the very press from which, probably, he daily circulates his abuse of me, I have a note which was pro-tested and paid by me, on which I was not an en-dorser, and which has been in my possession several years, the whole, or a part of which still remains unpaid. To my exertions and zeal in his behalf, as most of the senate of the United States can testify, is he indebted for his first success as public printer, the annual receipts of which appointment at this time are not less than from thirty to fifty thousand dollars. These things might have been omitted, for charity and friendship are secret in their operation, and should not be proclaimed to the world; but sureepirit of an ostentatious liberality, but that the pub-

persecutors.

In 1829-'30, Mr. Green was a frequent visiter at may house to "large parties," and to small, with his wife and daughters, and invited my wife and myself to his. He, on several occasions, tendered his services and his paper in vindication of us, against the slanders and abuse which at that time were whispered about; and as it regards one of his compurgators, on whom now he would rely as a good and sufficient witness, but in whom then, he had no confidence, he placed in my hand a statement of his own brother, tending to impeach him. What now, has brought them so closely together, I know not. I only know that he hates me beyond even the power to extend common justice; and wherefore is it so? Because bad men are apt to dislike those from whom they have received favors. But that he should descend so far as to hecome the traducer of a female, because she is the wife of one to whom he is under obligations, never to be repaid, is indeed strange! Mark his present course! His obligations of friendship certainly are not cancelled; at least to the extent that gratitude should be concerned. Without pruvocation on my part, and without change in the character and deportment of myself and family, he is daily dragging before the world those, into whose society concern:

future hopes and expectations of Mr. Calhoun; and the introduced his wife and daughters, and whom voluntarily he proffered to defend! He does not pretend that now, he knows more, than when, with and without his family, he called—talked—smiled, and treated us as friends, wronged and persecuted. Was be sincere then, or now? If then sincere, bow unutterable must be his depravity, in becoming the very leader of the band of traducers, who at present occupy the public attention! He then performed the duty of a friend, and acted up to the principles of an honest man; but yielding to the political in-trigues of his great leader, he has sacrificed justice trigues of his great leader, he has sacrificed justice and decency, his own reputation, and the feelings of his family, to subserve the cause of that friend, who never was his friend. This man is a fit associate of Messrs. Ingham, Branch and Berrien. He has united with them on a nefarious purpose, in the accom-plishment of which, all that is "holy in charity," exalted in honor, and sacred in truth, have been rudely outraged and trodden under foot. What object has he to attain? What purpose to answer? Surely, he cannot think that in the choice of a chief magistrate of this country, the American people are so debased, that female character and feeling, are to be made the test of elections.

This man, to different persons and in various di-rections, early disclose the designs which actuated him, and others who were associated with him in feeling and interest in their conduct towards me. I have a statement from S. P. Webster of this city, detailing the substance of Mr. Green's remarks to him in the fall of 1829; at the very time when he was professing before me high consideration and great

respect and regard.

Mr. Webster, in presenting the remarks made to him in November, 1829, says-repeating Mr. Green's

language:

"That major Eaton, remaining in the cabinet, was of great injury to the party—that he was used by the secretary of state to forward his interested views; and if he remained in the cabinet, the secrewould be able to manage the president as he pleased, and directs the acts of the government to promote his, (Van Buren's), future prospects. That major Eaton ought to he sent minister to Russia, or at any rate, should not remain in the cabinet; and that if some decisive step were not taken soon, he did not know what might be the consequence. And further, that the president ought not to be run a second time . That Mr. Van Buren was using all his influence to prevail on him to run again, and in that event, would have obtained such an influence over him and his friends, as to be able to command their influence at a subsequent election-that gen. Jackson ought to go

I have a statement of another and similar conversation, held by Mr. Green, in December 1829, with Gideon Welles, editor of the Hartford Times-He

"On the subject of the next presidential election, Mr. Green adverted to the embarrassed situation of Mr. Calhoun at the expiration of his present term, when he would have served eight years, equal to that of any of his predecessors; and that Mr. Van Buren, taking advantage of his situation wished to ruin him by driving him into retirement. It was the policy of Mr. Van Buren, he said, to persuade gen. Jackson to consent to a re-election, because that would lead to the posiponement of Mr. Calboun's claims, and occasion him in a great degree to be forgotten. It would not Mr. Van Buren in advance of him, and this was the reason he was desirous that gen. Jack-

son should consent to a re-election."

Again he remarks to Mr. Welles, on this subject, about which it seems, he felt such deep interest and

## NILES' WEEKLY REGISTER.

FOURTH SERIES. No. 4-VOL. V.

BALTIMORE, SEPT. 24, 1831.

[VOL. XLI. WHOLE No. 1.044

THE PAST-THE PRESENT-FOR THE FUTURE.

EDITED, PRINTED AND PUBLISHED BY H. MILES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN ADVANCE.

accompanies the present sheet.

An extra half sheet, as supplementary to the less number, is herewith forwarded, that Mr. Eaton's reply to Messrs. Ingham, Branch and Berrien might be presented entire. In consequence, the editorial and mis-tellaneous matter has been thrown back to page 65.

Mr. Eaton's reply continued.

"That Mr. Calhoun had no influence with the preaident, and could have none, while major Eaton was there; nor could any of his friends receive appointments, so long as he was in the cabinet. He endeavored to excite my jealousy by representing that Mr. Van to existe my jeanousy by representings that are to baren, through Eaton, was endeavoring to conier all appointments on the old Crawford party. R was independed, therefore, for the prospectity of the administration, and the harmony of its members, that major Zaton should leave the cabinet, and leave Washington. There was one way in which he could retire honorably sis, he would be making an honorable exchange for the war department; and all were willing that Mr. Branch abouth be dismissed, which would furnish Eaton a triumph,"—[For the statements at large, see appendix A. and B.

Thus through this chosen organ of Mr. Calhoun, we are possessed of the true motive which actuated my kind assailants. Their plan was that general Jackson absould be president but for four years, and that Mr. Calhoun should succeed him. The Telegraph was considered by its editor so omnipotent, that its slictation was not to be, and could not be, resisted; and that it rested exclusively and alone with him to declare who should, and who should not "rule over us," often mistaken for cause, and in this case it seemed this journal, arose from the circumstance, that heretofore it went with the people-most the people with it. The moment, however, that Mr. Van Buren was appointed secretary of state, jealousy and feen arose, and then the deaire was to place around the president as then the deare was to place around the president as rangy of Mr. Calhoun's friends as possible, to counter-act the apprehended and dreaded influence; a part of which I most gratuitously was supposed to be. Devoted, as I was said to be, to gen. Jackson, and the success of his administration, my appointment was calculated signs. It was deemed necessary to prevent it; but if that could not be effected, then adequate means were to be resorted to, to get me out of the way. All this Mr. Ingham and Mr. Berrien foresaw. Two of my colleagues, if not the third, were in the secret, and used the influence and importance which office gave them and their families, to promote and further their grand design.

Months had rolled away, and as yet the president had ever seen and corrected the evil as was expected. Mr. Van Buren, it was feared, had gained, and was gaining Van Buren, it was tenere, and games, and was among as fast upon my esteem, that serious apprehensions were entertained that I would fall within the vortex of his influence. In addition, it was imagined, or rather feared, that general Jackson might consent to a re-ciretion, and reasons were discerned why Van Buren would desire it as a matter of interest to him, and how, through my influence, the matter might succeed, and through my influence, the matter might succeed, and not be trans, and truit, as in two precious control the claims of Mr. Calbon be deferred, his prospect, his prospecting that with Mr. Webster and Mr. Weller "his acts should be subjected to the imputation of selfash ends, and elections or else I do not know what will be the consequence," error purpose." He night not think it his duty "to sacrifice his private conforts;" or, in the more, distinct the castly sublicty of Mr. Van Buren, must be remov-language held to Mr. Webster, "he ought to go home" Vol. XLI .- No. 5.

The title page and index for the last volume, ed, or the effect will be to postpone Mr. Calhoun's scompanies the present sheet. elaims, and drive him into rethrement. It must be re-moved from the president, and to accomplish it, I was to retire, not only from the cabinet, but from Washing-ton, that I might be as far distant as possible from the scene of their fruinful operations. The secretary of war was not qualified for the duties of the war department, yet he might be sent to represent his country at one of the most important court of Europe. He said his family were not fit and good society for the families of such pure honorables as Ingham, Branch and Berrien, and yet they were to be considered quite "good society" or buy, for one of the first and most powerful monarchs of Europe.

But more! They were even willing to afford me a triumpli. For the sake of getting me away from the president, they were ready and disposed, that Mr. Branch, one of the triends of whom they had made a Branch, one of the Iriends of whom they had made a dupe and instrument, might be dismissed. Amidst all this tirade of abuse and insult, previously offered, mercayly to get rid of my supposed indissence, they were yet willing to bestow on me office and emolument, to mount me on a triumphal ear, and it is their friend, Mr. Branch, to its wheels. Now, can say man in his senses fast to wonder, that I should decime all these senses fast to wonder, that I should decime all these liberal offers, and finally retire from the cabinet for no better reason than is asserted by these gentlemen, that better reason than is asserted by these gentlemes, that the families of lightam, Branch and Berrien would not visit me and my lamily? Truly, they make me out a greater patriot than I am willing to be considered, while they afford to Mr. Branch no great cause for thanks given to them. Their profier shows how little he knew of those persons, who, for all his zeal, and ardor, and malignity to serve them and their cause, were yet willing to secrifice him to their ambkion, and to their yet willing to secrifice him to their ambition, and to their thirst for office. As a part of the consideration in getting rid of nee, they were willing to dispose of him in any way, and at any sacrifice. Thus you perceive, my country men, the real objection to me, as a member of the cabinet, and why it was that Mesara. Inglam and Berrien entered it with concealed purposes, and with hypocritical professions. You can perceive the reasons why land my family have been to relentlessly pursued by the friends of Mr. Calboun, and you perceive the origin of the progressive and conserted attacks, first upon me, next upon Mr. Van Buren, and lastly, upon the president, that the one might be sent to Russia, the other conflictions of the individual of the Hermitage. All has originated in the restless spirit of Mr. Calboun All has originated in the restless spirit of Mr. Calhou and his partizans, and in a determination that general Mr. Callioun must and should be his successor.

In the winter and apring of 1829-30, Mr. Green's paper gave confirmation of the feelings and plans developed in his conversations with Messrs. Webster and Welles. in its conversations with ofcears. We user and Welles, in December, the New York Enquirer intimated that the re-election of gen. Jackson was desirable, and ventured to suggest, that Mr. Van Buren might be a candidate, provided he declined. Mr. Green sharply rebuked the editor for medding with the subject, and especially for collof for meouring wan too the proposed successor. In March, 1330, Mr. Webb again introduced the subject, though in a different shape. He says: "We repeat, that general Jackson, and he only, will be the candidate of the republican party for the next presidency;" la reply, the Telegraph again took exception; and although not so trank and full, as in the previous conversations had with Mr. Webster and Mr. Welles, yet the article

Mr. Van Buren's designs and intrigues, or Mr. Calhoun's These could be better managed, and to happier claims. effect, through private arrangements, which were then in progress, though not completed. It was not yet time to appeal to the public for the correction of "evils," which the president could not be made to see; but that time was considered to be near at limid, and was evident-

ly foreholed by the tone of the Telegraph.

Most of the president's nominations had been before the senate during the whole winter, and the public were at a loss to know why they were not disposed of. friends of Mr. Calhoun were constantly pouring into the ears of those who were depending on the senate for confirmation, exaggerated accounts of his strength in that body; and the political preferences of those in nomination, were secretly and artfolly sought after. They pretended to have polled both houses of congress, and to have escertained that's majority in each, were his friends. Mr. Hill was rejected from the office of scrond comptroller of the treasury, and Mr. Green paid him a visit of condolence, during which he sought to persuade him, that he had been sacrificed to "the Eaton and Fan Bu-ren influence." Others were privately warned, that they were in danger from the same quarter. It certainly would have been a masterly stroke of pol-vy, if Mr. Hill could have been sent to New-Hampshire, Mr. Kendall to Kentucky, Mr. Nosh to New-York, and other former editors back to their homes, to resume their professional duties, impressed with the bil of, that they had been made the victims, not of an Ingham, Bernten and Branch, but of "the Eston and Van Buren influence." It was a good idea, if it could have succeeded; but being rather far-fetched, it failed. Thus is it apparent, that was not the secretary of war alone, that they desired to set rid of, but the secretary of state also. One of the get rid of, but the scerctary of state also. members of congress, who attended the preparatory meeting about the 20th of March, for the purpose of regulating the president's cabinet, being enquired of, it my removal would satisfy them, answered emphatically : "No we will be satisfied with nothing short of the removal of

But the removal of these two unrepresented secreta ries at this meeting, was not the only subject probably discussed before it, and which faded of success. The premier, general Jackson himself, a more important persome than all, he too was to be disposed of: and the better to effect it, conversations were to be held wall strangers visiting the city; and private letters were to be written, to prepare the minds of Irading politicions at a distance, to support the decisive movement. It was not proper, nor the proper time, openly to take ground in proper, not need there there, openly a take ground in the newspapers;—sapping and mining were preferable. An anti-Van lluren party was to be gotten up, and under Attainer, without seening to be in apposition to the president, it was thought the discontented and dissatisfied of all parties could rally, until the scheme being fully matured, the mine was to be expladed, when My. Callioun and the Telegraph were "to rate on the whill-wind and direct the storm." On the 19th of March, but a day before this preparatory meeting of members to re-organize the o-binet, at least in part, Mr. Green wrote a letter to Andrew Dunlsp, United States district attor-

ney at Boston. In that letter he says:

"The political horizon is from day to day, there clear ly indicating the point whence storm cometli. ele from the Massachusetts Journal and the last letter to the United States Gazette, Irave no doubt that Welister has resolved to push torward boldly, and on Clay alone. It Clay succeeds, Webster's lortune is made. If Clay falls, the lieutenant becomes the commander of the detented force. He comes into the market at the head of tested force. He comes into the market at the head of an organized and powerful party, and associated as he-intends to be, with New York [Mr. Van Buren] he will have a powerful influence at his command.

who was so much with Webb, gave me, as a piece of advise intended for my own benefit and guidance, the information that Mr. Webb had, while there, been advised not to attack Mr. Webbter. Will in not be well to keep an eye on the Contrier, and also on I Clay and Webbter rely on the bank of the

There is in this article, nothing of compromise, and the democracy of New England, and particularly of Massachusetts, are the victims which must be offered up to Webster's vengeance. Is this not obvious? Unless the divisions and disunion of our party can be healed, defeat is certain. Boan AND DECISIVE MEANS ENSURE US TRIUMPH. There are some now in power, who accusts in themselves to think lightly of the New England democracy. My own opinion is, that that democracy may yet hold the late of the union in their lunds, "

Thus were the democracy of New England addressed. They were warned against the New York Enquirer, and They were warnen against me new about him tell, and notified of an ultimate condution, first with Mr. Clay and Mr. Webster, and if that haled, then with Mr. Van Ba-ren. Webster would "come into the market" in great torce, and sell out to Mr. Clay, it he could purchase, or to Mr. Van Buren of he could not. The jealouss of the New England democracy was thus to be aroused; and they excited to action by being told "they were to be offered up as the victors of vengeance;" and that "bold and decisive means would ensure us triumph." Thus was it hoped for and expected, that the democracy of New England would be aroused, and prepared to support of the bold and decisive means, of their in contemplation, to expel "the Eston and Van Buren influence" from the expert the Estate and van Dirett innestee" from the councils of the president,—prevent hore from consenting to a re-election; and have every thing arranged, and prepared to destroy him if he did consent.

In a few days after, a letter was sent to Mr. M. M. only of New-York. In a Mr. Cours 1815-11 liave no doubt that the last article in the Courier, as well as that of the 12th, was prepared here, and are part of the intrigue intended to separate the president from his earliest and best friends,

"As to Mr. Cathoun, the object of the Courier is to drive me to the alternative of abandoning him or general Jackson. The artifice is too shallow tor success. It will recoil upon its sushar. Those who desire to monopolize general Jackson's popularity for the use of Mr. Van Buren, are atterested in circulating such a report, which Mr. Webb took with him from here; but the in-

telligent friends of the president, who associated with the vice-president, know it to be lake." The report here aliaded to, and declared to be false, was that Mr. Cellious intended to oppose the re-election of general Jackson. How talse it was, the reader, under all the circumstances presented, is prepared to decide, But it was not wise policy, then, to permit such an im-pression to go abroad. At that time general Jackson was not a cand date for re-election, nor was it known that he would be. The true policy of the cabal was to main-tain towards him the appearance of triendship, at least until that point should be settled. It was only the "ma-I'gn influence" of those who might endeavor to persuade the president to consent to a re-election, and who sought to monopolize his popularity for the benefit of Mr. \ Buren, whereby to thwart the plans and projects of Mr.

Calhoun, that were to be assailed.
He also wrote on the 30th of March to Mr. Ritchie, ednor of the Richmond Enquirer, and employs the fol-

lowing language:

"It there ever was a time which demanded that the triends of the constitution should be firm, wise, and united, the moment has arrived. The payment of the national debt will present a new crisis in the bistory of nations, and create the necessity of new legislation, based mations, and create the necessity of new registration, unset upon the state of our treasury, there by produced. This question will then be threatly presented to the American people—Will you increase the expenditure to meet the existing expenditure?

sting expenditure?
"If gen. Jackson is now declared a candidate, I foresee that a new race for popularity commences. cupies the position of patronage, and Mr. Clay that of the American System. Do not both these tend to the same termination? Can the administration contend with Mr. Clay and profess to be the Iriends of internal improvement and of the tariff, without throwing its influence n favor of the vast projects of public expenditure which it is the business of Mr. Clay and his friends to set on foot? Is it not the duty of all those who desire to bring United States and the federal party. — is their or- back the constitution to its original purposes, to postpone on in —. Let them succeed, or let them make any the presidential election until the discussion upon the

our finances, shall have brought them home to every project is to take ten millions annually out of the pockets of one portion of our citizens, for the nurpose of buy-

ing up another."

Mr. Green well knowing Mr. Ritchie's devot on to principle, dal not venture to approach hun on any other ground than that of principle. Appealing then to his principles he endeavored to alarm him with apprehensions that the policy of general Jackson would be substantially the policy of Mr. Clay—that "patronage and the American System tended to the same termination." The object was a little more time for private action, and hence was Mr. Ritchie to be prevailed upon not to comrnst himself in layor of the re-election of the president, or at least to remain neutral in relation 'to the bobl and elecisive means," which were then thought necessary to "susure us trumph,"

These evidences of political management, preparatory to some contemplated grand movement, all of which bear date about the time of the preliminary meeting of certain members of congress, to compel the cabinet to be re-organized, are from the Telegraph, and were voluntarity disclosed by the editor himself. I have another letter, which has not before appeared, written by Mr. Green at the same time, 25th id March. I am authe signature is. The good of the letter; I am introduced, is not in the land writing of Mr. Green, although the signature is. It foundless was a circular carefully prepared and will suggest, and howarded in various dreations, and to different persons.

.. The intrigues of some individuals near the president are daily developing themselves, and must soon end in the disappointment of those concerned in them. The article in the New York Court x, usualing the press [The Telegraph] and the article of the 23d, assuling the senate, have their origin in those intrigues, the object of which is to make the fresident and others believe that Mr. Cathonic is resolved to oppose them, and thus transfer the president's popularity to Mr. Van Buren. 1 SHALL WAIT A FEW RATS FOR FURTHER DEVELOPEMENTS. the mean time I shall take the liberty of asking you to suspend your opinion mitil you shall have seen the whole of the matters in usue, and then act on the side of patriotism. I have never deceived my friends. I have never sounded talse alarms. I now say to you, that the remarks, so lar as Mr. Calhoun is concerned, are talse, and time will show the true object of his enemies. Mr. Calhoun is known to be the true friend of the president."

At this time, Mr. Callioun was at Washington. can believe, that during all this while, of "measured step and slow," he was not counselled and advised with; and that this circular was written by his mivice, or passed under his revision and inspection? It can hardly be believed, that without his approval, Mr. Green would take a course so important to his luture political interests. It cannot be doubted, that these letters to Dunland. Noals, Ritchie, and especially this circular, were written by and with Mr. C-linum's advice, or passed his revision. The object and purpose of the last, was to show, and the full cetting purpose of the last, was to show, that Mr. Calhoun "in the true friend of the president," next, how management and integue were going on near the president, and lastly, that in a FEW DAYS a full

wherefore all this secret, private, political arrangement? Why all these conversions, this wale spread correspondence, these intrigues in congress, these pre-paratory movements "in open day and secret night?" Why this resiless jealousy, and tearful foreboding of Mr. Van Buren—this fear that he would induce the president to consent to a re-election-this apprehension that I had lent myself and my influence, to bring about reaults, which were to thwart Mr. Callioun, and postpone his claims? Why the attempt to alarm, and to arouse the democracy of New England? Wherefore disturb Mr. Nosh's tranquillity, with fancied tales of plots and intrigues, and Mr. Ritchie with grave and oracular warn-Wherefore, in the circular of the 25th of March, is language so impressive and foreboding, and of such been in layor of the re-election of general Jackson, solemn and prophetic import, employed? What awful In the mean time, the president and the vice president executor dread design was a "yaw nars" about to dish-had differed in relation to some incident connected with

great questions, connected with the approaching state of close, that friends, on the ground that they had NEVER BEEN DECEIVED, nor false alarms been sounded, should be implored to suspend their opinions? Was all this note of preparation-this bustle-this management-this tail by day, and protound meditation by night-these solema warnings and doleful eartions, to be the mere annunciation, that Mrs. 1.-B.-B. and E. did not inter change visus, or invite each other to LARGE PARTIES at Washington, and that the president, in martial pomp and spirit, had sent the gallant hero of the Thames, the

barbinger of a dread threat, if it were not otherwise, barbinger of a fireast lifest, if it were not otherwise. Oh, no! It was no such miniportant matter, which in a "gaw nars," with astomoling effect, was to be brought belore the American people. It was a general attack upon all who would not acknowledge Mr. Callioun's legit-mate right of immediate succession; a plot was to be discovered, and then we were to have an expose of those intrigues near the president, which were to evince to the world that a transfer of his popularity to another was designed. Mr. Van Buren was to be stigmatized as the author: and I was to be marked as his humble instrument in the business. It was intended next to denounce all the president's personal friends, who were near him, as a "malign influence"-to represent him as the victim of their nar gues, that one by one, they might be driven from him; or if he would not part with them, and should prove retractory, to open the phials of their wrath against him, until sickened and disgusted with the turmoil, he might retire to the solitude of the hermitage, and yield the strife of politics to the vice president and his rivals. All the visiting cards that were ever printed and circu-lated in this city, were as nothing, compared to this grand-this important design, which was to be brought ont substituting as an afterpiece to the new plot that was built upon the letter of Mr. Crawford, and the published correspondence.

The question arises, why were not these plans carried out at the intended time? Why not executed? Why were these designs suspended, and all the labor of prerece corse resigns suspendent, and all the labor of pre-paration brought to a pause? Passing events furnish the answer. On the 31st of March, the day after the letter to Mr. Ritchie was written, and before the "Few data" of waiting had expired, a voice from Pennsylvania was harrying through the land. The democratic members of the legislature of that great state, which first had presented general Jackson, and through two contests sussust ineil him, were now again the first to express their confidence in his administration, and to nominate him for a re-election. Awed by the independent and uncorrupted voice of this state, the manigers at Washington pansed in their career, to listen for the distant echoes of this dealening sound,—this mexpected annunciation. Mark how it was announced in the Telegraph.

"The position of this press, located at the seat of government-its presumed relation to the president, the high respect and deticate regard, which he has, at all times maintained for public opinion, impose restraints upon it, in relation to the discussion at this time, of the propriety of his continuence in office for unother term."

Again, a voice from New York, responding to the recommendation from Pennsylvania in terms of approbation, equally strong, was also heard, and these two large states, thus moving and acting together, gave answers, that whoever chose to go into retirement could ito so, but that the claims of Mr. Calhoun to the presidency would, certainly, for the present, have to be post-poned. Before a recovery could be effected from these poned. Before a recovery count to enected from the decisive movements, the veto of the president upon the Mayaville road brill was announced and filled the south with joy and hope. If I fatsfield the predictions which had been made to Mr. Ritchie, and swept away that, whence a successful opposition was expected to arise. It was perceived that the president's moral, was no less than his physical courage, and the people of the south stready exhibited a general feeling in his layor. All hope of arraying the south against the north, was seemingly impracticable, and for a time abandoned. Evi-dences of better leeding began to appear, and in June, the Telegraph undertook to show, that it had always been in layor of the re-election of general Jackson.

coolness and separation.

Congress again assembled, and it was rumored that Mr. Calhoun intended to write a book, and give to the public his correspondence with the president. pers were shown privately to his friends, who busied themselves in representing the affair, in conversation and in their letters, as an intrigue which had been gotten up on the cast of Ver 10 and in their letters, as an intrigue which had been got-ten up on the just of Van Buren to desiroy Mr. Cal-houn. In preparing and bringing forward this address, much policy was necessary, and it was employed. I was requested to examine the manuscript, that if there was any thing in it, that could have a tendency to induce the president to reply to it, a modification might take place. The request I obeyed; but afterwards, that ineident was used to prove, that the friends of the president had read and sanctioned the address, before it obtained publication. The statement, as it related to me, was illiheral and untrue.

The publication of this work again aroused party

animosity, and partizans were perceived to take sides, according to their personal predilections, and to bring up the question of the succession, prematurely, as the means of creating division among the original supporters of the administration. The discussions in congress were evidently marked by such lines of separation; and while Messra. Ingham, Branch and Berrien, could there find apologists and advocates, the other three members of the eabinet, were struck at, as the points of attack, by the new opposition. The one was a "malign influ-ence," which was bending every thing to selfish pur-pose, while our colleagues were receiving honor, and commendation. Abuse from the papers on one side, and a disposition to retaliate from the other, were now elearly manifest. We thus had a prospect of open war between partizans of different portions of the cabinet, the evils of which, as was plainly to be perceived, could the exist of which, as was planny to be perceiven, some not but penetrate into our deliberations, interrupt busi-ness, affect the progress of public affairs, and disturb the quiet and repose of the country. While a party to contest the succession was thus organized in congress and in the cabinet, one of the prominent friends of Mr. Calhoun introduced a resolution, which contemplated, by a retrospective provision, to amend the constitution, so as to exclude gen. Jackson from being eligible to a re-election. Il those who arged this measure in the house of representatives, did not hope absolutely to disfranchise the president by obtaining such an amend-ment, they moved it as a means of bringing a general principle to operate on him alone, and by obtaining a vote on the abstract proposition, to urge it as the sense of the representatives of the people against his re-election. In this mode was the war waged against the fame and influence of the man who was elevated by the voice of the people, and who was aga n summoned by them to become a camildate, because he had realized all their hopes, as the reformer of abuses in the government, and was securing the rights of our citizens and adjusting the difficulties of the country.

The situation of the president, was now easily to be perecived. With a cabinet politically divided, and personally, as may be presumed, not very friendly, it was impossible for him to move along in the arduous duties his station, with satisfacti n to himself, or advantage to the country. It was apparent, that in justice to himself, he must soon be under the necessity of re-organizmg his cabinet, and if it could not otherwise be accoming his eaunet, and it it could not outstand to all phished, to dismiss the disaffected protion of it. Having accepted, reluctantly, a place in the cabinet, I concluded no longer to sacrifice my private comfort, or be the occasion of embarrassment to the president. Early in April, I communicated to him, (what in the previous month I had written to a friend in Philadelphia), my wish and intention to resign, which I shortly after executed. In my letter of resignation, it was not necessary or touching on, the confined my remarks solely to that which concerned my definition in the solely of events, such as are now presented. I confined my remarks solely to that which concerned myself, which at developing to, or touching on, the confluct of others. I left not that my definition, or vindication, for voluntarily yielding my my define, or vindication, for voluntarily yielding my office, was necessary; and feeling no disposition to in-jure or assail others, I lorebore to enter into details.

the Seminole (Indian) war, which had occasioned a had not the illiberal conduct of my colleagues made a

different course necessary.

Mr. Van Buren taking a similar view of the condition of the cabinet, and the situation of the president, connected with the peculiar circumstances in which he had been placed by his opponents, thought proper also Without going into a full explanation in his to resign. letter of resignation, or naming any of his colleagues, he presented briefly the result of the political intrigues, which were dividing the cabinet, distracting the party, and which pointed to a change in the councils of the president as necessary and indispensable.

The secret feelings and designs with which my colleagues entered the cabinet, and which while there, they continued to cherish—their "notes" of private conversations, treasured up for future and concerted use-the advice of a certain cabal, and an acquirence in the counsel given, to enter the cabinet, and continue there for special jurposes, notwithstanding "the insuperable bar" which conscience suggested, and the "indignity and outrage" which had been offered and borne for filteen months, were all unknown to me. These were secrets worth preserving, and they were kept closely. Yet, entire confidence was reposed, that on being in-Yet, entire confidence was reposed, that on being in-formed that Mr. Van Buren and myself had retired, the others would appreciate the motives which had occasioned it, and place their offices again at the disposition of the president, that he might organize a new eabivet of homogeneous materials, which would not be obnoxof homogeneous materians, when would not occurred to use to the attacks of any of his profession friends, and rentiat affine the affine of the country quitty above the country quitty and the state of the country quitty and the pretend that they had been givereously "manufact," and were constantly liable to a repetition of the "outrage," could see no cause why they should resign, either as it regarded their own honor, the quiet of the president, or the harmony of his administration. Having gone into the cabinet to produce discord, they could perceive no reason why they should retire from it, to restore har-mony. What they had so long and so ardently desired, being attained, [the exclusion of Mr. Van Buren and my sell], they were more than ever disposed to continue. Besides, they could not see how the government could well move on without them, and they were solicitous to procure some just fication, which they could plead to the people, for the injury which was about to result to the country at being deprived of their important serviees! Their honor, and the harmony of the administra-tion, was quite insufficient! They must needs place their resignations solely on the will and the request of the president, that on his shoulders might rest the undivided responsibility of the awful deprivation which the government and the country were to suffer from their retirement. Their wishes were gratified, and a desire communicated that they should resign. Thus was the communicated that they should resign. Thus was the cabinet dissolved; and thus far the country, evidently, has sustained no injury, save in the disturbances and in-terruptions to the public which the complaints and murmurs of this dismissed and disbanded corps have occusioned. If, as has been stated, the president offered to two of them, Mr. lugham and Mr. Branch, after their removal, places of trust and honor, let it be set down to his kindness, not to their merits. He did not them know these men. He did not know how incapable they were of properly appreciating acts of kindness. He was ignorant that they had entered his cabinet, all smiles and tair professions, with daggers concealed in their bosoms. He little knew that these persons, who were admitted to his familiar intercourse, had been taking notes of his private conversations and free expressions, which had been conneil over between them, and prepared and carefully lad a way for luture use. He did not in fact know, they had been spies upon him from the beginning of his administration; and that, finding themselves deprived of the means of longer stealing into his bosom, to hunt out, and note down his thoughts, they were now ready for open, implacable and exterminating war. These things open, implacable and exterminating war. These things he did not then know. Recent events have disclosed

Nor did I comprehend the depth of the designs of office, was necessary; and feeling no disposition to in-ingure or assail others, I lorebore to enter into details. subject, and being about to retire to my residence in The same determination would have been persevered in, I remease, I did not eachilst that I should be detained. taken. My pursuers were resolven that a sound accept the sweet revenge, which their deep morification at the loss of office had aroused. I could not bear it longer. Mears, lugham and Berrica, who were here, were in habits of daily intercourse with the editor of the Telegraph, and their names being used in connection with the abuse which was propagated through that print against me, I conceived I had a right to enquire, whether their names had been used, and references to them made, with their sanction.

I readily admit, that no imperative obligation rests upon a man to engage in private combat, merely because he is invited to do so. Public opinion sanctions such appeals, only when the injured party has right and jusbound to act like one. Mr. Ingham did not thus act, when to a plain and proper question, he returned an iuwhen to a plant and proper question, he returned an in-sulting reply, and sought "to strut the hero, and to ape the warrior," without the capacity to go through with that which so improvidently and rashly he had begun. I never asked him to admit or deny, that my family and I never asked him to admit or deny, that my family and him idd or did not associate. He never so understood me. It was for the publication only, and his supposed participation ja m, that I held him responsible. My assessmentlence with Mr. lugham, his degrading apprehensions, false charges, and ignoble retreat, have already, through himself, been made known to the public. He is suffering merited punishment, in the contempt of the brave, the abhorrence of the honorable, and the detestation of the community.

I addressed Mr. Berrien on the same subject. The correspondence which took place, he has laid before the public in his recent address. When it terminated, I had hoped our difference was ended. His late address, however, was of a character to induce with me a belief, that my forbearance on the former occasion, had a tendency to embolden him to further malignant assaults; and accordingly, without seeking explanation, I made a direct call upon him for personal redress.

His answer was never communicated to me. The friend who acted in my behalf, finding it an argumentative, labored reply, to a plain and simple demand, returned it as a paper not of a character to be presented or received. (See appendix C.) A second call was made, which resulted in a refusal on the part of Mr. Berrien, to grant the satisfaction which had been asked. He has proved that, with malies and hatred in his heart, he could wear the garb of a friend. Pretending to have claims to honor and character, he could become the traducer of a woman, seek the ruin of a family which had never harmed him, and shrink from responsibility. It must be ever so! Base men are not hrave. A guilty conscience is a bad panoply on the field of honorable combat. The conscious wrong-doer anticipates the worst, and calculates to suffer, from a knowledge that he deserves it. It is not surprising, therefore, that Mr. Berrien's conscience did not permit him to trust himself with one, whom, so wantonly and so pertinaciously, he had wronged and sought to injure. These two men, Ingham and Berrien, will stand together in after time, and with honorable men, monuments of duplicity, ingratitude and baseness-traitors to their friend, and degratitude and baseness-traitors to their friend, and degratitude and baseness—trators to their friend, and de-stroyers of themselves—a memorable illustration of the melancholy truth, that "a man may smile, and smile, and be a villain."

and be a valuars.

For Mr. Branch, I feel but pity and contempt. He has been the dupe of his own hitteness of mind, and the victim of his more willy associates. Though he has entered into their feelings, and aided them in their designs—has asserted untruths, and offered injurious in-putations, I cannot find in my heart to entertain a leci-ing of revenge towards so humble an accomplice.

The restless, troubled spirit, that, through such secret

agencies, moved and controlled all this intrigue and management, became visible last winter in his proper person. His influence and address have associated in person. His influence and address nave associated in his schemes many partizans, besides those who embar-rassed the late cabinet with difficulties. They have made themselves victims to his ambition. If he can now find pleasure in the course he has adopted for the

here from my home and butiness, to defend myself promotion of his views, in the afflictions with which he against their unprovoked attacks. In this I was mis- has visited my dwelling, or in the sacrifice of the willing taken. My pursuers were resolved that I should not justicuments who, as irred, were employed to do this instruments who, as friends, were employed to do this service, he must owe his satisfaction to the delusions of ambitim. The time will come when the victims of his policy shall rise before him, like the shades which appalled the insidious and heartless outure Preliated, to disturb his stumbers, and to drive peace from him.

Determine the test has a constitute account may be a constitute of the peace from him.

Detraction has struck at every thing around me. And, although it has been uniformly pretended that the persocution against me originated in great regard and delieaor you against me originated in great regard and delies-ey for public leeling and morals, yet what are the proofs to authorise the rumors, about which Mr. Ingham and Mr. Berricu would not trouble themselves to enquire, but which, notwithstanding, they could silly and secret-ly whisper into circulation. They have produced none! If this be legitimate warfare, there are few who may not he subjected to the ordeal from which the most innoover compensed to the orders from which the most inno-cent cannot always escape with a name unblighted. It is a well known lact, that in this city, there are hired writers for papers at a distance; and if some incident writers for payers at a distance; and it some incubent aloes not, from week to week, occur to fill their page, fancy must suggest some gossip tale to be teld, and printed, and carculated. The motive with the writer, is his pay—with the publisher, the graffeation of the appetite for stander, reckless of the wound it may infliet. Under such a state of things, which party existement now tolerates, of what concern is probly of character—or wint the value of a good name! It is upon this sort of anonymous rumor, propagated by the vicious and ma-licious, that political contrivers seized, to accomplish their purposes. Malignant as these gentlemen have shewn themselves, all I ask of them is, to waive all con-cealments, allege specific charges, and adduce their proof. A conscience "void of off.nee," can meet them and dely their malice, let them but strike their blows openly and in the face of day.

But it is time to close this narrative. I am admonished, that already I have trespassed too long, and laid claims to an indulgence beyond any that I had a right to I could not confine my self within narrower limits; and if I have said too much, be my apology found in this, that it is through no culpability of mine, that the public have been disturbed with private matters, and with private griefs. Patient and forbearing, I was dis-posed to keep to myself the adjustment of my own wrongs, nor solicit the public to become an umpire in and interest them. But I am not permitted to enjoy even this humble privilege. I have been arraigned betore them by mee, writing under malice, mortification, and disappointment. Itly surmising me to be the moving cause why the sun of their political glory was so addenly shorn of its beams, they are realiess, persenting and unforgiving, and appeal to the sountry to redress those private griefs to which they have subjected themselves, by seeking to accomplish selfish aims at the expense of truth, honor and humanity. I throw myself upon the pardon and forgiveness of a liberal and just community for all I have said, and for any thing that may appear to be improperly said. Your fellow effizes, tore them by men, writing under malice, mortification, may appear to be improperly said. Your fellow elizen,

P. S. Gen. Robert Desha in a letter published in the Telegraph of the 5th August, volunteers a statement to vindicate the source of Mr. Callions, towards me, the says: "Msj. Eaten informed me in Tennessee, that as soon as he heard of the death of Timberlake, he determined to go on to Washington and marry his widow, and eommunicated his intention to gen. Jackson, who advised him to do so," In the same letter, he says: "This is the time for the truth, the whole truth, and nothing but the truth; for it is what the people are in search of."

More than a month after this letter was written, gen. Desha again writes a corrective letter contradictory of the material statements of the original; and for the ma-takes of the first, excuses himself by saying, that he "did not READ SAID LETTER after writing it." Strange "this not axab and determine the writing it." Sirings indeed, that a man should prepare a letter, intended for the press, and to affect other persons, and afterwards admit it to be incorrect, and offer as matter of excuse, that he did not read it after writing it. In this sorrestive letter, which was written after his irriends at Washington had informed him, that I had it in my power to correct it, by most indisputable testimony, he says: "I rested and selfish views, and that Mr. Van Buren, never held a conversation with major Eaton, in Tennes- through him, was seeking to secure the confidence so upon that subject; but it was in the conversation had see, upon that subject; our it was much set, that when he in Washington, the major informed me, that when he is the death of Mr. Time was in Tennessee, and heard of the death of Mr. Timberlake, he had communicated his intentions of marrying the widow to gen. Jackson, who was also in Tennessee, who approved of it, and advised him to do so." The adheres to the point, that I was in Tennessee when I heard of the death of Mr. T., and that gen. Jackson advised me to marry, &c.

The purpose of this statement is evident. It is that

the public should infer that I could, in Tennessee, immediately on hearing of the death of Mr. T., determine "to come on to Washington," not to address, but of my own will to MARRY his widow; leaving it to be inferred, that I was not only conscious of a state of circumstances, which made it unnecessary to consult her upon the subject, but that general Jackson was also aware that such

was the case.

In the spring of 1828, while in the city of Washing-In the apring of 1828, white in the city of Washington, information was received at the axy department of the death of Mr. Timberlake. I heard of a there, not in Tennessee; and when gen. Deshá's letter appeared, there were persons in the city who knew, and soid, that ins statement was incorrect. Doubless some friend here afforded him the information, which imposed the consensity of writing his execution to the first. necessity of writing his second note, which like the first, requires to be corrected. I went home to Tennessee in 1828—remained there during the summer, and in Noveniber returned to Washington. From this place I wrote a letter to gen. Jackson upon the subject, and in that letter stated to him my views, intentions, wishes, and expectations, and from him received an answer approving of the course I had pursued—the determination I had taken. Being possessed of this letter, I can be under no mistake as to dates or lacts.

In conclusion permit me to remark, that gen. Desha has thrust himself into this commoversy quite onnecessa rily. His appearance as one of my assailants was not called tor, or required. He has appeared a mere volun-teer to sustain Mr. Calhoun. 1 know not what other object he had to answer-what other purpose to serve.

In support of what I have said, I place here a a statement of Mr. Mechlin of the treasury department. Were it necessary, others could be obtained to show that gen. Desha is under a mistake in what he has said to affect standing of Mr. M. renders any thing lutther unneces-sary. Mr. Mechlin says:

sary. Mr. Mechin says:
"In the spring of 1828, news were received at the navy department, of the death of J. B. Timberlake, purser on board the United States frigate Constitution, I set out to mform Mr. O'Neale and the lamily; but I set out to morm Mr. O Seen and the many, meeting with major Eaton on the avenue, who then boarded there, I requested him to communicate the intornation.

J. MECHLIN."

Gen. Desha also says, there was no meeting at the last session of enogress, with a view to obtain my removal from the cabinet. It has not been so averred. He will not say though, that this was not the case at the session of 1829-'30.

Wall these explanations, which must satisfy gen. Desha of the mistake he has made, I take my leave of the subject. J. II. E.

#### APPENDIX.

## A. Statement of Mr. S. P. Webster,

Previous to the presidential election, I was in the habit of frequent intercourse with Duff Green, at his house, and more commonly at his office. In the fall of 1829, October or November, I met with general Green, and he commenced talking about col. he commenced talking about col. ——, who was then in the war department, and whom he wished turned out. I thought be seemed rather in an angry humor, and extended his conversation to major Eaton generally. He remarked, that his remaining in the cabinet was of great injury to the party generally—that his situation made him the support of the weak persons of both parties; and that such persons leaned upon him for support—that he was used by the secretary of state to forward his inte-

through him, was seeking to secure the confidence and personal triendship of geo. Jackson—that if Eaton con-tinued in the cabinet, the secretary of state, who had infinence over him, would be able to manage the president as he pleased, and direct the acts of the government to his (Mr. Van Buren's) lumre prospects. That general his (Mr. Van Buren's) luttire prospects. That general Jackson night to send insjor Eston to Russia, or at any rate it was necessary that he should not longer remain the calinet—that some of general Jackson's best friends had spoken to him freely on this subject, and if some decisive step was not taken soon, he did not know what might be the consequences.

In the course of the conversation, he observed that the president ought not to be run a second time; that he was sure he did not wish it, and would prefer retiring to the hermitage at the end of the year; sail that in effeet he had promised to do so, and the prople would be dissatisfied if he slid not—that Mr. Van Buren was using all his art and intrigue to induce him to suffer himself to be run again; but that if he was again elected, Mr. Van Buren would have obtained such an influence over him and his friends as to be able to command their interest at a subsequent election-that we (the Jackson party ), had been fighting for the last five years against cabinet succession, and were now quietly sitting down and permutting the secretary of state to use gen. Jackson and the whole interest of the government, to ensure his future success-that, if this was permitted, we had gained nothing by the change-that the great republican parly would fix upon a cambidate who would get the votes of the party in 1832; and that general Jackson ought to go home. This was the last conversation or intercourse I ever had with Green, beyond a mere salutation. I plainly perceived he was no friend to gen. Jackson, and I determined to have no further political intercourse with

### Statement of Gideon Welles, editor of the Hartford

Times Whilst in Hartford, Connecticut, general Green several times spoke of major Enton as wanting energy and independence-said that the contest which brought general Jackson into power, had been with him merely personal not one of principle-that he exercised his influence in behalf of apposition office holders, and apposed to removals. In conversation with him at ashington, the latter part of December, 1829, he said it was necessary for him to leave Washington if the administration would prosper. Although they were perhim to state, that his remaining at Washington was injurious to the administration-that, through him, Mr. Van Buren had already attained great influence over general Jackson, and wished him in consent to a re-clec-tion, in order to postpone Mr. Calhoun's claims, and drive him, if possible, into retirement. It is unnecessary to repeat the political views of general Green and, his associates, his eulogies on Mr. Cathoun, his talents, his services, his political strength, the devotedness of his friends, particularly of judge \_\_\_\_\_, who, though a mason, could bring in anti-masonic, feiteral, and religions parties. Nariaed I state, how willing the faction was in sacrifice their friend, the judge, with all his popularity, if Mr. Van Buren would cease pressing a re-election on the president, and consent to be placed on a ticket as vice president. Had that arrangement been made, or any other that would have secured Mr. Calhoun the presidency, nothing probably would have been heard of catimet and family difficulties at Washington, nor Mr. Ingham have assailed me. As I learnbring forward Mr. Calhom for president; and he and his advisers considered major Eaton and Mr. Van Buren as obstacles. He seemed to suppose, however, that if Eston was removed, all would be peace and harmony, and removed he must be.

Mr. Calhoun, he said, had no influence with the president, and could have none while major Eaton remained there, nor could any of his friends receive ap-

pointments, so long as he remained in the cabinet.

Knowing that I had been an advocate for gen. Jackson since 1824, he endeavored to callst jealousy by rep-

resenting that Mr. Van Buren, through major Eaton was endeavoring to confer all appointments on the old Crawford party. It was indispensable to the prosperity of the administration, therefore, and the harmony of the members, that he should leave Washington.

He admitted that Branch and Berrien had treated major Eaton unkindly. That they had coursed his society the previous winter; were frequently rading with him and Mrs. Eston, and that each were under greater personal obligations to him from any other individual personal obligations to him. Gen any other individual except the president. Mr. Bruch, he seemed to think most culpable, as through noi. Eaton, principally, he said he had nutriled it in s.H. into an office, to the surprise of all; and when the whole country had their eyes on another. It was than, he said, which had defeat-ed dis and my wishers, and of most of our friends. But that heliver it isses genilemen, Lever was now particular animosity.

There was one way in which maj. Eafon could re-tire honorably and victorinus. By accepting the mis-sion to Russis, it would be making an honorable ex-change for the war department, and all were willing. Mr. Branch should be utamissed, which would brainfa a triumph to Eaton. This arrangement of having both leave the cabinet, would notisfy all parties. It was desirable major Eaton should leave the cabinet and leave Wash-The mission to Russia was an honorable post and he and B con Krudener were triends, and on mitimate terms. This arrangement he spoke of as having been for some time UNDER CONSTREBATION and he assured me, there would be a change of the calmet before congress closed as session. He mentioned the in-dividual who would probably succeed Mr. Branch, He alluded to an "businerable bar" to this aromeement. provided nog. Exton was refractory, and determined to remain, and that was in overconding the friendly feelings of the president. He seemed to despond when he spoke of the shiding sifection, which formed so promiment a trait in his character, and which never would permit him to forsake a triend.

Correspondence between Mr. Eaton and Mr. Berrien.

Washington city, Monday morning, July 25, 1831.
Sin: In your letter to me of the 18th June, in reply to mine of the preceding day, you in effect say, (olthough denying my right to interrogate you), that the attacks made upon me, in a paper in this city, were "without your agency." You volunteered the declaration, that your agency." you did not "think it necessary to decide mon the truth or falsehood of the st tements which were mole" in relation to my family; fearing me to understand, that us you had formed no opinion, so neither had you expressed one, in any wise derugatory of me. After these ex-plicit disavowals as to yourself. I del not deem it pro-per to take exception, or to hold you personally accountable, for conforming to rumors which you may have heard, or "to the general sense of the community," which you so falsely assume us a protext to injure me, and to disparage humbreds of the most respectable persons in our country, who have mathomed trivially rela-tions with me and my family—persons in all respects, equal in standing with you, and those who hold intercourse with you.

Upon this proof of my forbearance, a forbearance which I ever hope to exercise, except in eases of high emergency, you have grown holds and in a laboral article recently addressed to the public over your signaaddressed to the public aver your signature, giving countenance and sanction to the base slanders which have been propagated against me in my domestic relations, you speak of them "as evils which presented an insuperable bar to your entering the cabinet;" and that your assent was finally given, under the persussion that the president would specifily see his er-ror, and by removing me, correct the evil. This is what you intend to say, omitting at the same time a ma-terial fact, which was known to you that I was the identies person through whom was communicated to you the desire of the president, that you should enter his cabinet; and that through the same person you returned an answer, offering at the time private business only as a reason why you could not, and did not, at the instant of the application, make a prompt acceptance or refusal.

Sir, the open attempt now made, unprovoked-onaltogether uncalled for by any course of mine towards von-is obvious to every eye. perceive that your object and purpose is to mark me with dishanorable imputation. These efforts of your, so persevered in, will, I confidently believe and hope, justify me to the American people, and to all honorable ne n, in requiring of you the reparation due to one who nion, in requiring of you the reparation due to one who so wantooly has been abused, insulted, and injured; and accordingly I do require it. With due respect,

J. H. EATON.

To John Mc Pherson Berrien, esq.

P. S. This letter was prepared to be delivered to you on Monday, but the absence of the friend, who was expected to be the bearer, the daily expectation of his return, and the difficulty of procuring one unconnected here with the covernment, has occasioned the delay. J. H. E.

To this letter a long argumentative reply was returned. I never saw it. My friend refused to receive it, as not being a proper and definite answer to the call. Gen. Hunter's letter explains what Herwards took place. is as follows:

Washington, Tuesday evening, 2nd Aug. 1831. DEAD BIR: Lenelose to you the correspondence which has taken place between gen. Jones and myself to whom I was referred as the friend of Mr. BERUIEN.

You will perceive, from the character the transaction had assumed in my absence. I had only one course to pursue on my return to this city, which pursue on my return to this city, which was to explain he reason of that absence, and require of Mr. Berrier, to an explicit demand, an answer equally so. I was in-formed, verbally, by the general, that his friend had taken his ground, in the rejected communication, from which he would not depart; and that if the case of maj, EATHN was pressed further at this time, it was to be understood as declined. I, however, thought it best to de-liver my note, and await a written reply. Gen. Jones' letter of the 2nd of August, in answer to mine of the first-nuthing other than a confirmation of what had been verbally declared to me the previous evening-and I ase reductly assumed upon mysell to say, as your triend, I could hold no further correspondence with him on the remit it hack to your hands. In connducting this business, I take occasion to say, that I was at the place of conference during Thursday and the next day from 10 to I o'clock, leaving a note saving, I should again be in attendance on Saturday.

I am, sir, with great respect, your friend and obedient

servent, - Maj John H. Eaton.

Copy of a letter, add essed by gen. Hunter to Mr. Ber-vien, which he was directed to deliver to gen. Jones,

as the fixend of Mr. Berrien, dated
Was ington city 1st Ang. 1831.
Sin: Severe indisposition since Fralsy evening last, confined me to my hed, and prevented me from conferring with you on the subject of major Eaton's call of Thursday. I was consequently not m place when your answer of Saturday, (as I understand), was presented. Hence, from necessity, it was read by another friend, who, decraing it inadmissible, returned it.

I now await your answer. The call of major Eaton is

I now await your answer. The call of major Eator explicit, it is expected the answer will be equally so. I am, sir, very respectfully, your most obedient, ALEXANDER HUNTER.

John Mc Pherson Berrien, esq. Copy of so much of gen. Jones' letter to me, in answer to muce of the 1st of Angust, addressed to Mr. Rerrien.

as relates to the subject matter, received 12 o'clock, 2d August, 1881.

DEAR GENERAL: In answer to the note which you put into my hands at parting this evening, for Mr. Berrien, I earn only recapitulate, in few words, what, for your private satisfaction as a gentleman and man of honor, I have already communicated to you rerbally.

aircad; communicated to you versily.

According to Mr. Berrien's appointment with you on Thursday, he sent by a member of his family, (wholly unapprised at the time, of the nature and tendency of the correspondence), a sealed letter to yourself, enclosing a written answer to the note delivered by you from major

The bearer of this answer attended several times, both on Friday and Saturday, at the place of appointment, but without meeting you, in consequence, as now understand, of your confinement at home from indisposition. On Saturday, he was met at the place of appointment by another friend of major Eaton, with auth rity to receive the communication in your place; which, after being opened and read, was forthwith returned to Mr. Berrien, with a verbal intimation that maj. Eaton would not receive it.

This seems to close the door to all correspondence between the parties, and of course to any communication in reference to the original demand upon Mr. Berrien, between third persons, acting in their behalf. In Mr. Berrien's proffered answer to major Exton, he has taken his ground, and upon that, under existing circumstances, he must stand as firm and immoveable as he would upon any other that he might have elected. After the indig-nity of having the answer, which he had devised, thrown back upon his hands as unworthy of reply, without the slightest explanation how or why it was deemed inad-massible in limine, he cannot submit to the task of gradusting new answers by an imaginary scale, till he may chance to have descended to some supposed degree of admissible answer. I was myself wholly unapprised of this unhappy affair, till it was communicated to me this morning; when I engaged, in case you should take any forther agency in the matter, to explain to you individually as a gentleman, what guarded respect to the original medium of communication between the parties, Mr. B. had observed in all that had been transacted during your absence, and how completely all direct and authorised intervention had been out off, and the affair remitted to the discretion of mere parties. Such was the beginning,

and such was the end of my present commission.

Copy of my answer to the foregoing letter, duted

Washington, 2d August, 1831.

Dras General: From your note of this norming, it

appears that the matter, so far as you are concerned, as the friend of Mr. Berrien, is terminated—as the friend of major Eston, I can, therefore, hold no further correspondence with you. I am, dear sir, yours very truly, ALEXANDER HUNTER.

From the National Intelligencer.

Washington, Sept. 15, 1831.
GENTLEMEN: The misrepresentations contained in the article under the signature of John H. Eaton, published in the Globe of this morning, will require correction. For the purpose of doing this, so far as I am concerned, I will, with your permission, shortly avail myself of the use of your columns. You will oblige me, in the mean time, by giving publicity to this note. I am, very respectfully, gentlemen, your obedient servant, JOHN McPHERSON BERRIEN.

To Mestrs. Gates & Scaton.

#### A LETTER FROM MR. LUMPKIN.

From the "Federal Union," (Georgia.)
Those editors who have published Mr. CRAW-Pap's address to the estizens of the United States are requested to publish the following strictures on that ad-

dress and its authors.

Mesers. Editors: In the Georgia Journal of the 25th instant, I have read an address "To the citizeus of the United States," signed "Wm. H. Crawford," in which the author has used my name in rather an unfriendly and unsourteous manner, more so, I presume, than he would have done at a calm and lucid moment.

Were the publication limited in its circulation to the people of Georgia, where Mr. Crawford and myself are both fully known, I should not deem it necessary to pay the slightest attention to his denunciations. But the standing which Mr. Crawford once had in the United States may mislead some portion of the reading public.

To the whole of his disparaging charges, I give the most unqualified denial. He knows them to be false. He knows that I have been an undersisting republican, throughout my whole life. He knows that I am no "turn He knows my firmness and independence, from mortified experience. He knows that, although in my youth I supported him for various minor offices, I abandoped him against my own popular interest, and contrary

to the wishes of many of my personal friendsbelieved that the interest of my country required me to do so. He knows that my intimate knowledge of his political course convinced me that he was utterly unworthy of that public confidence to which he aspired.

thy of that public confidence to which he sapired. Because in my youth I had supported Mr. Crawford for a sex in the legislature, and other offices, and when a sapired to the presidency of the United States I preferred Andrew Jackson, Mr. Crawford accuses zone of a wann of republication—of political apostacy, of ranking a souncreet, Sc. Time has been in Georgia, when Mr. Crawford had the continued means and art to maske the majority of the people believe that republicanism con-sisted in supporting him in all his ambitious schemes of self-aggrandizement; but he has outlived his artspolitical juggling is at an end.

The people of Georgia are no longer under the clicta-tion of Mr. Crawford. The passport to honor and dis-tinction are real or supposed merit; intrinsic worth of The people of Georgia do not at present believe me to have been a federalist because I supported Andrew Jackson for the presidency in preference to Wil-

liam H. Crawford.

The copy of Crawford's letter to Mr. Balch, which passed through my hands, was unexpectedly received by me, without any previous knowledge of its existence. I transmitted it to Mr. Cathoun, with the feelings and opinions I then entertained; and if I labored under some misspirchension in regard to the opinions of others, I was not singular in that respect—nor do I feel that I have any cause of shame for my feelings then expressed; they will continue to be creditable to me in the estimation of every honorable man—although they were writ-ten without the slightest expectation of being laid before the public.

Mr. Crawford is entirely mistaken in regard to my humble pretensions. I make no pretensions to the spirit of prophecy or extraordinary segony. I stand amongst the number whom Mr. Crawford reproaches with the epithet of ignorunce for having sustained and supported gen, John Clark against the oppressions and persecutions of Mr. Crawtord and his co-workers. I have never submitted to the humiliation of setting up the political ereed of any man-as the unerring standard of ortho-doxy. I have a much higher standard, the constitution of my country, in arriving at a true interpretation of which, I avail myself of the lights of those patriots and statesmen who have sealed their fidelity to their country by the tenor of their whole lives.

If I had supported Mr. Crawtord for the presidency, I have no sloubt he would still have considered me a pure republican but as I have some doubts upon the subject of his uniform republicanism, I will, in conclusion, propound a few interrogatories to Mr. Crawford,

Inst. 1st. Did you, or did you not, draft and sand the Augusta address in the year 1798, expressing "the most unlimited confidence in the firmness, justice and wisdam" of the administration of John Adams, sen? If

yes, what was your age at that time?

Int. 2d. Was it not one of your first acts in the senate of the United States in the year 1807, to vote against the embargo, recommended by Mr. Jefferson, to save our immense mercantile espital from the deaulating aweep of the French decrees and British orders in council? And was not that measure then considered the touchstone of republicanism? And was not your vote then and there recorded, with the federal minority, headed by Timothy

Pickering' Int. 3d. When Mr. Jefferson and the republican party determined to abandon the embargo, and prepare for more decisive measures, were you not then opposed to its repeal? And do you not now think, that the em-bargo was expedient in its incidient stage, when you voted against it? And unwise in its continuance, when you voted for it?

Int. 4th. Did you, or did you not, about this time, set your eye and affections upon the presidential chair; and commence your political courtship with the federalists!
Int. 5th. Did you not treat Mr. Madison's messages proposing preparatory measures for war, sneeingly? and admonish the senate against measures preparatory to war? contending then that the embargo ought to have been adhered to? And did you not afterwards, when the war became inevitable, pronounce it worse than ridiculous, to think of supporting our commerce by a navy?

Int. 6th. When the question of the late war earned direct before congress (though you finally woted for the measure), was not your support cold, silent, inefficient, and equivocal, during the long and arduous struggle in the sense of the United States? And did you once raise your voice in its support.

Int. 7th. Did you not soon after the war was declared, take refuge from responsibility and danger in a foreign court, and there remain in undistinguished and unprofitable security, until the storm of war, danger, and response

sibility, had subsided?

Int. 8th. Although you shrunk from the responsibility of sustaining the war, were you not found soon alter the return of peace, ambitiously sapiring by the most centurable means, to that high office, which a grateful people thad almost unanimously designated as the reward of the long devoted services of Mr. Monroe?

But I forhear pursuing this subject further, and ask Dfr. Crawford and his friends, what benefits has Georgia ever derived from the services of Mr. Crawford? What justice is there, in denouncing every man, who has too much independence to yield obedience to the dictatorial mandates of an aristografic few?

WILSON LUMPKIN.

Monroe, 29th August, 1831.

LETTER FROM GENERAL DESHA.

To the editor of the U. S. Telegraph.

Gallatin, (Te.) Ang 25, 1831.

Gen. Green: My object in addressing you at this time.

Gen. Green: My object in addressing you at this time, it to correct an error in my letter to you of the 20th of July last, and published in the Telegraph of the 9th of Islam month. I did not read said letter after writing it, or I certainly should have discovered the mistake, which is, that major Eston informed me in Tennessee, that as soon as he heard of the death of Timberlake, he determined to marry his widow, and communicated his intentions to gen. Jackson, who advisd him to do so. Now, I never had a conversation with major Eston upon that subject in Tennessee, but it was in the conversation we had in Washington the major informed me that when he was in Tennessee and heard of the death of Timberlake, he had communicated his intention of marrying his widow, togen. Jackson, who do not make the widow approved of the search of the Person.

This explanation you will please make in the Telegraph. I have noticed in the Globe that the friends of Mr. Calhous are charged with holding meetings during the last easilon of eongress for the purpose of addressing the president to remove major Eston, and says myself, with others named, will prove it. Now, sir, if the triends of Mr. Calhoun ever held meetings for that or any other purpose thering the last easilon of eongress, I am not sware of it. I acknowledge that I was during the last easilon in company with judge White, Mr. Grundy, and eol. Polk, of Tennessee, judge Bibb, Mr. Grundy, and political Firends of general Jackson. At this time I cannot recollect how or at whose instance we met, but I am satisfied you have correctly stated, in the Telegraph of the 9th of August, the object of the neeting. Very respectfully. ROBERT DESHA.

## FASTING, HUMILIATION AND PRAYER!

From the Charleston Mercury of Sept. 3.
The following letter from his excellency the governor, in relation to the resolutions adopted by several public meetings, requesting him to appoint a day of general hurniliation and prayer to Almighty God, has been handed us or publication. It will be seen that his excellency, whilst he cordully approves and complies with the wishes of his fellow citizens on this interesting subject, has postponed the period of this solemn religious observance to October wext. The reasons assigned for the postponement reflect much credit upon the delicacy and high sense of propriety for which that officer is distinguished, and eannot fail to command the unqualified approbation of the people.

Charleston, Aug. 25, 1831.

SIN-I have had the honor to receive your communication as chairman of a public meeting of the state rights and free trade party of Beaufort district, enclosing the following resolution adopted by that meeting.

Resolved, That, impressed with a deep sense of our entire dependence upon God, and the necessity of his aid and guidance in all things, the governor be requested to appoint Friday, the 9th of September next, as a day of fasting, humilation and prayer to God, that he will direct us to the means most pleasing in his sight, of removing the national oppression under which we suffer, and of producing harmony and unanimity of sentiment in the state.

in the state.

As this resolution has been adopted by those whom you represent, and whom I so highly respect, and by several other meetings of my fellow eitzens, I will very eheerfully compily with their wishes. As, however, the 9th of September is too early a period to allow a sufficient dissemination of my proclamation through all parts of the state, I shall take the liberty of designating some convenient day in October next, for the proposed religinus eremony. There are, moreover, some objections to my naming so early a day as the 9th of September of a local character affecting this city, which induce me to postpone, for the present, the issuing my proclamation. That community is now engaged in an ardent and excited canvass for the corporate election, and if a sification of the public mind were now given to and if a sification of the public mind were now given to an imputation of being designed the propurposes. It trust moreover that a postponement of my proclamation for a few weeks, may enable me, at the close of the season, to add to our "fasting, humilation and prayer," a thansgiving for the health with which the Almighty has been pleased to bless our homes, and for the abundance which he has bestowed on our harvest.

I have the honor to be, dear sir, with great esteem, very respectfully, your ob't. serv't,

JAMES HAMILTON, jun. Dr. Thos. E. Screven, chairman of the late meeting of the state rights and five trade party of Beaufort district.

Twe think that hardly ever before had we so much matter wisting an insertion—a good deal of which has been prepared with much labor and care. We shall make thereal efforts to reluce its quantity and keep pace with events. We are threatened with several long articles on the already voluminous controversy, of all which we intend to preserve a lull account. It will be curiously interesting to call-up these things hereafter, when "existing circumstances" and "malign influences," when "existing circumstances and "malign influences," when "existing circumstances and demander of men, shall have exact to operate on the judgments of men.

With considerable labor, we have noticed the chief points in the great mass of foreign articles received by late arrivals. It seems that a general war in Europe may not be expected—at present, and we are glaid of it, not only for the sake of Europe, but because of our own country—whose approaches to solid, substantial independence we do not wish retarded by artificial and temporary excitements, resting upon events over which we have no sort of control.

The general convention of sgriculturalists, mechanics and manufacturers of the United States, proposed to be held at New York on the second Wednesday of October next, has been postponed, (by order of the committee appointed to call it) until the resents in the convention of the con

The propose the following as the first resolution to be offered at the Philadelphia convention

Whereas it is clearly unconstitutional and certainly unjust and wicked, to protect the pursuit of any one class of persons in the United States, at the cost of all

the other classes-

Resolved, that the aquadrons of vessels of war stationed in the Mediterranean and West India seas, and in the South Atlantic and Paeific access, be instantly withdrawn—and that the whole may, built and employed of for the protection of commerce, at the cost of once or two hundred millions of dellars, be—TUNAHAWKED, forthwith—that trade may "vegulate testeft".

(\*\*)"The "New York American Advocate" gallantly battles on the side of the industry of the people of the United States, and will secomplate a great service in favor of the "American System;" which has covered our hill-tops with abecep, and caused the valies to reasonal with the Luay hum of prosperous industry—the producer and consumer being placed side by side, and uniting their wisces in some new fance to render thank for benefits conferred by the Author of all good, in consequence of new means of confect afforded, and new inducements to a virtuous life, extended to the whole laboring population.

The general report of the condition of the bank of the United States, shall have a place as soon as we can make room for it—being a paper of rouch importance to the government and people, in a just consideration of the state of the country.

A curiosity has been placed in our hands. It is the envelope of twenty-lour copies of major Eston's reply—all which were thought to weigh about three pounds, forwarded to a gentleman of this city, and franked at Washington.

A "FREE TRADE" SLEETING, to send delegates to the Philadelphia convention, was pointpussly called at New Orleans, and many people met—but no one appearing to "open the business"—the people returned to their homes—being midsposed to "multification."

Woot. The New York Advocate of the 12th inst, contained various advertisements offering for sale 131,000 lbs. and also about 500 bates of wool--chiefly American.

Grain or riden for the English market, we presume, will not be in demand. All accounts agree in stating that the harvest in English would be very abundant. The erops were chiefly accured, and the weather was uncommonly fine. Some of the new wheat had already been in market, and was sold for 8s, per bushel.

Movement. Mr. Livingston, accretary of state, artived at Washington from New York, on Thuesday Lestand Mr. Woodbury, secretary of the navy, has also returned, with his lady. Mrs. Livingston was expected. Mr. and Mrs. Duncleon, (who reached Washington a few days since), lett Baltimore on Tuesday morning in company with Mrs. McLone, faily of the secretary of the treasury, for Philadelphia. Mr. and Mrs. Eaton have departed for Tennessee, as announced in the "Globe." The "Telegraph" of Tuesday says, that no vivilines had been exchanged between Mrs. McLane and Mrs. Eaton, thuring the late stay of the former at Washington: and that the limities of the other secretaries were not expected to arrive until the departure of Mrs. Eaton was limitly settled; adding some remarks which we shall not copy. The same paper intimater that Mr. Eaton proceeds to Nashithle, expecting a sext in the senate; but Mr. White's time will not expire until March 1838, nor Mr. Grandy's antil 1835.

It is rarely that we have had a paragraph in which the names of lacites were so prominent—but it seemed useful to the public information that they should be mentioned. Exertions. The college recently elected in Maryland, to elect a senate of the state for the enaming five years, met at Annapolis on Monday last, and, having appointed Joseph Kent, (late governor of the state) president, proceeded to honouses—and on Tuesday elected

the following gentlemen-

From the Hentern shore—John G. Chapman, of Charlers Denois Chaude, of Animpolis; Benjamin S. Forrest, of Montgomery; Charles F. Maver, of Baltimore; James Montgomery, of Baltord; B. S. Pgimon, of Alleghoux; Thomas P. Sappington, of Friederick; Octavin G. Taory, of Calvert, and Win. F. Wootten, of Prince Georgies—and Jrom the Entern shore, Liftleton F. Denois, of Somerset; Thomas Emory, of Gueen Ann's William Highlett, of Tablot, Samuel G. Oshorne, of Kent, Henry Page, of Dorchester; and George Reed, of Caroline, Total 15, All "mattonal

regulations."

There were five candidates for the office of governor of Jhinzariph, and the following is given as the state of the votes, officially ascertained from all the counties but one, which will not materially affect the result, viz.—Scott 3,945, Runnels 3,711, Lynch 2,871, Harris 1,452, Gurdon 493. Coloned Abraham M. Scott is therefore duly elected, by a small majority, over his most prominent comertion. H. G. Runnels.

For the I cutenant governor, the votes were, in all the counties but three, Fountain Winston 6,427, John II.

Norton 4.275. The former is certainly elected.

The elections for governor, See, have just taken place in Fermont. The vectors are not complete—but so lar, Mr. Palrace, (anti-masonic), had 12,168 votes for governor, Mr. Allen, (nat. rep.) 11,257, and Mr. Mec(Jackson), 5,528. "No choice" has been made of a member of congress in place of Mr. Mallary—but Mr. Siadle, (anti-masonic) had a large planslity.

Mr. Sindt, the Jackson consolidate, has been re-elections.

ed governor of Muine. Particular a hereafter.

The sourn. By storms and floods and murders and many real or apprehended insurrectionsy movement among the slaves, our kilos caizons of the south have greatly suffered, and claim our most carnets sympathy for what they have yet to endine. We hearily test with them, and regret to teart have appear called the standard standard

<sup>&</sup>quot;We learn that Mr. and Mrs. Eaton have proceeded no further than this city, (Baltimore), because of the indisposition of the latter.

<sup>\*</sup>There is perliaps, no law which can reach such proceedings in any of the states north of the Suspinelment—certains in any of the states north of the Suspinelment—hut an exertion of public opinion may correct this publication in Bostony and it is certain that the imbaticiants of that enlightened city have no perticipation in such outrageous doings. We understand that some (how many we know not), copies of the "Liberator" are transmitted "gratis." There is noute askety in the intelligence of many of the free persons of color. They have there little properties—business and personal structurents, and many are hourst and worthy people; and all such know the fully or rather maduess, of any attempt to advance themselves, by farcq that momentary success would invalidably be followed by a general extension or learful addition to the privations and hardships now encountered by persons of color. Another affair like that at Southampton, we trust, will not take place—for, for each like murders committed, an bundked lives of, perhaps, generally innocent persons, will be offered a sacrifice to revenge. The power is with the whites, and that they will done it, under such sireum-stances, must be expected.

The storm, with its damages in Louisiana, has already ! been noticed-the loss was exceedingly heavy, though less than at first apprehended. The growing crops of corn, cane and cotton were much injurest; and the trot? of the latter, because of long continued rain, will be seriously felt in Louisina, Mississippi, and Alabana, &c, and we now see that the caterpillar has commenced his the productions in South Carolina. The crops of some of the planters, it is said, will be wholly lost by the my-rada of this insect which prey upon them.

The losses by the floods are enormous. ed that the damages sustained by the rise of the Savannah cut that the changes sustained by the rise of the Savannah river, only, will amount to two infilions and an hall of dollars! The desolation on other streams have been proportionally great; and, to the loss or damage of the cotton and corn crops, that of rice is to be added, by the

overflows, and on account of mud and saml deposited.

But this is not all. A dreadful sickness prevails, in smany places, probably because of the excessive wetness of the season, and extraordinary product of vegetable matter. The low country, in all parts of the United States, is now unhealthy.

SERVILE INSUBRECTIONS, &c. We have great plea-SERVILE INSURRECTIONS, &c. We have great pica-sure in saying that the report of the destruction of Wil-raington, N. C. by the negroes, was altogether erroneous, though apprehended at Raleigh when the account came away. Excessive agitation prevailed in that oily—the men were under arms, and the women and children half-distracted by their fears; and thus it was in neveral parts of North Carolina, and the people hastily prepared themselves to encounter reported armies of slaves! Certam suspicious movements took place in some of the counties—and terror exaggerated every thing. Martual law was proclaimed at Wilmington and other places various conspiracies are supposed to have been discovered, and a considerable number of blacks have been ar-cested. Duplin, Sampson, Wayne, New Hanover, Jones and Lenoir counties, would seem to have been the seats of "organized" conspirators! Reports of murders were numerous-17 families, (it was positively said), being massacred in Jones county! The women were much seess to hear tales of horror, (as is always the case under such circumstances), seized the men; but alter atl, it does not appear that the slaves committed any excesses -that any person was murdered; but the unhappy belief that a general rising of the blacks was planned, must tong keep the people in a very embarrassing and dis-tressed condition. Business was beginning to resume its wonted course, but the white people, every where, rested on their arms. Every free negro at Raleigh had been arrested and examined—and some were ordered to leave the city, because they could not give a good account of their mode of subsistence; but it has not yet been stated, we think, that any free negro, either in Varginia or North Carolina, has been found guilty of a participation in the outrages contemplated or committed.
This, surely, is much to the great of this class of persons. A company of U. S. troops from fortress Mouroe had arrived at Newbern, to protect that place and its neigh-

The trials, because of the late insurrection in Virginia, were yet going on-12 or 15 have been executed. some sentenced to transportation, and a few recommended to merey, and about 30 yet remained for exmenated to therey, and about 30 yet remained for ex-amination. No appearance of concert among these had manketed tiself. The negro confined in Baltimore july was not 'gen. Nat,' as reported—but charged with horse stealing and sent to Washington. The gov of Vagnini has offered a reward of \$500 for Nat. The actual number of white persons slaughtered in Southampactual number of white persons staughter as in Stormany-ton is 55—cheefly women and children, and in the most fend-like manner. Much alarm had existed in several other counties of Virginia, and many negroes had been arrested. There were eight convictions in Sussex. The white people had very generally armed themselves, and many volunteer companies have been formed.

We carnestly sympathize with our fellow citizens in their sgitations, as well as because of their actual suffer-

most interested shall heartily take up the subject-released from their newly-formed constitutional scruples, and willing to make some personal sacrifices to the general safety and the public peace. Years, perhaps, must pass away befure the peuple in the lower country of the south will feel that same conflicince in the security of their wires and little ones, which they lately en tertained; every idle rumor-every movement among the slaves, however harmless in itself, will embarrass and distress there, -- and "something must be done." Yet the brig Criterion, which lately sailed from Norfolk for Liberia, earried out only 46 emigrants. The lives of many very valuable and much esteemed persons of color have been sacrificed to the climate, or rather, present condition of the colony --- so were thousands of lives sacrificed in the first settlements of the United States--- and so it is in the building up of almost every new colony---chiefly caused, perhaps, by the want of those means of subsistence and comfort which peculiar circumstances demand. The present inhabitants of Liberia enjoy good health, and are prosperous; and as better accom-modations are provided for new-comers, the mortality among them will decline. A comparatively small sum of money appropriated to the improvement of the neighof money appropriated to the improvement of the neigh-boring country, such as the draining or filing up of low places, might do for Monrovia what such things have done for Bultimore—once regarded as among the most unlicalthy places in the union. Let the way be prepared, that humane owners of slaves shall not feel themselves that humane owners of slaves shall not rect decisioners, checked in manumitting them, that they may have a country and a home, small become men. Enough, uncountry and a home, --- and become men. Enoug der invariable eineumstances, might de removed for a few successive years—if young females were encourag-ed to go,—to keep the whole colored population in check. The means of the government and people are surely equal to this, and the change would be so gradual that its effects would hardly be left, consisting chiefly in the advance of the whites, and the greater spread and more liberal entancipation of the blacks; which latter has a strong tendency to diminish their number, or, at least, to prevent its increase. Some hard cases might grow out of this operation --- but the present awful and severe domesti: traile in slaves would be reduced in its amount, and the good far overbalance the evil attendant on the project. We cannot consent to any proceeding which shall inflict additional oppressions on the people of color---but late events will run into many new severities, unless some plan is devised to quiet the appre-hensions of the whites. Regarding this subject as highly important, we intend to revive certain remarks that we made upon it twelve years ago, and discuss it at some We have reached a period when "something length. We have reached a period when "something must be done;" as well to give security to the white population, as prevent the imposition of new hardships on colored persons.

HIGH-PRESCURE STATEMENT. The strange appearance of certain things presented in the article inserted below, induced me to examine the figures and investigate the facts set forth-and, though much used to such anti-turiff doings, there is a weakness and willulness of misrepresentation in them, that really surprized me-for the most powerful exertion of charity cannot admit these things to be mistakes. It is manifest that a deliberate intention existed to abuse the public mind. The statement is false even in its arithmetic, false in several other ment is false even in its arithmetic, use as several once, respects, and is any thing but an honest and fair exhibit of the operation of the tariff laws—and yet this paper has had a free and wide circulation through the English, has had a free and wate circulation through the Englan, or anti-tariff, press in the United States, being offered as "confirmation strong as proofs from holy writ," of the rank injustice of our protecting laws; when, in truth, it is one of the best and most conclusive evidences of the benefit of the "American System" that we have latterly met with, as we shall speedly shew. Well may we ex-

"O, that mine enemy had written a book!"
But—like the "New York Courier" "Albany Argus"
and "New Hampshire Patriot," the anti-tariff press never stops to acknowledge or excuse a detected mgs. The general ery now is, "something must be done." What can be done? Much might have been that "a ite, is "wholelog" lie] it just as good as a effected by the colonization society, and may be, if those if the told and firmly personered in."

From the Charleston Commercial Advertiser.

The nublic have heard a good deal, in a variety of The public are nearu a good uses, in a servey or ways, touching a custom house bond, upon which payment had been refused, in order, by this means, to test the constitutionality of the tariff duties, by an appeal to the courts. A writer, who sign shimself "Civits," has callightened us somewhat upon the subject; and facts, so far as they go, have now taken the place of rumor. It appears that Messrs. E. Holmes, and Alexander Mazyek, both members of the Charleston bar, and not the agency, however, of a local mercantile liouse, imported a bale of blue plains, by the invoice of which, it appears, according to Civis, that the duty on these plains appears, according to Givis, interitie duty on these plants is prolibitory, and consequently, that no revenue can be raised upon their import, the loss being such that they cannot be imported. It will also be seen, that, with a moderate duty of 15 per cent, they would have yielded a clear profit sufficient to induce merchants to import

The following detail of the subject, is afforded by the me writer:

Cost of one bale blue Yorkshire plains (29 in. wide) measuring 5704 yards at

612, 16s, 1d. 2s. 6d.

Charges in England, viz. commission, porterage, ship-

Cost in Liverpool 651. 1s. 3c Exchange on England, 5 per cent. prem. Interest on cost, \$1 34, freight, \$3, 65L 1s. 3d. 4-6-\$289 16 14 46 4 34

Q 5

Cost in Charleston exclusive of duty \$307 96 Duty, ealculated on the cost at the port of exportation, viz. 50 2-3 ceots per running yard, or 63 cents per square yard; but costing over 50 cents per square yard; but costing over 50 cents per square yard, it is reckoned, agreeably to the present tariff, to have cost \$1 per square yard, and pays a duty of 45 per cent. on this valuation—thus 570½ yards, 29 inches wide, equal to 459½ square yards, at \$1 per yard, \$459 50; 45 per cent. 206 78

Total cost, equal to about 90 ets. per yard, Cost of running yard, exclusive of duty, about out of running yard, executive of outy, about 54 cents; duty per running yard, 36 per cent, equal to 67 per cent, on the cost including all charges, or 71 per cent, on the cost at the port of exportation.

The foregoing was sold in Charleston at its market value, viz. 570 yards at 68 cents

387 96 126 80

514 74

For the payment of these duties, three several bonds were given—auit has been brought upon them by the district attorney, and the case will be adjudicated in September aext, when the federal court is in session. We shall then know all t

Now, in the first place, 5703 yards of cloth, at 2s. 6d. is £71 6s. 3d.—not £61 16s. 1d. and the exchange on England has long been eight per cent. (or more) premi-

um, not five. [It is now ten.]
Then £71 6 3 cost of cloth
3 5 2 charges

74 11 5 is equal to \$331 10 Eight per eent. premium Interest, as stated 4 34 361 92

The Charleston Mercury says-We learn that Mr. McDuffie has been heard from, and that he will at-tend at the next term of the district court of the United States to argue the case on the eastern court of the Junes. States to argue the case on the custom house bond, No answer has yet been received from Mr. Tuzewell. [It since appears that Mr. T. having declined the practice of the law, declines an integest in this case.]

And the first cost is \$361 92—not \$307 96, as stated.
The stuff contained in the latter part of the grand casculation is of no manner of importance. The cloth, it seems, was sold at its "market value" - mind | - MAR-KET VALUE," or 68 cents per yard. Now, the real cost in Charleston, the statement being true in the quality in Charleston, the statement being true in the quantity and cost of the cloth, was at the rate of 55 easts a yard, wirmour burn, and would have yielded the importer only 4½ easts per yard perfit, or no more than about seven per cent. advance, though the cloth had been a snuggled, without risk or charge on account of auch a proceeding! Int't if a shame that such a statement proceeding! Isn't it a shame that such a statement should be laid before the public? But what is the reultil Why—that the boastro Manuracture of such goods has so reduced the "MARKET PRICE," that the fo-reign article cannot be imported, and yield a reasonable profit, rake or DUT. For surely, \$\frac{3}{2}\text{ cents advance, on \$6\frac{3}{2}\text{ cents vested in England, cannot be thought a fair profit on the importation.

Again-there is no merchant-no man of business, hat would have made such an importation, the square yard duty forbidding it. These always import goods at a minimum, or a little below one. What American would a minimum, or a interested one. What American Works be fold enough, long-cared enough, lo export flour to England, when, though the price of wheat there is 500, per quarter, equal to more than 125 cents for our bushef, (exclange included), the duty is 44s. 8d. per quarter, equal to § 59 80 a a barrel of flour? Such is the British duty. It is far more severe than our duty on cloths, even in this case MADE-UP to "astonish the natives." With wheat at 100 cents the bushel in the U. S. flour is worth, wheat at 100 cents the bushed in the U. S. Sour is worth, in our sea-ports, five dollars per barrel—but the British duty is 3 dollars and 98 cents—my 120 per sent, yet on these cloths it was only 71 per cent, on the cons, as presented to she whe enormity of our laws! What sort of eyes do such mes see with?—what sort of cars have they?—what kind of hearth beat within their bosoms! They have no interest in the fast, that the British tax on the great staple of two-thirds of the free cultivators of the soil in the United States, may be equal to 120 per cent. on the cost—but a pati soil: indignation is roused when such tax is repelled by one of even 71 per centum on cloths. But the latter statement is Mgh-pressure But the latter statement is high-pressure and FALSE.

Let us present a plain and practical view of the operation of the duty on cloths, when imported by a business-man. He would direct the purchase so as to come in at man. Ite would direct the purchase so as to come in at the minimum—say 50 cents the square yard. The duty then on 289 dollars, as stated, would have amounted to only 103 dollars, as rated, would have amounted to only 103 dollars, or one half less, and even at that rate the clotha would have lost money to the importer, be-cause of the lowness of the "market price."

The presenting was laid off for inserting large

(The preceding was laid off for insertion last week-since then we notice an exposure of some of the errors of "Civis," in the Charleston Courier-and the writer, of "Civia," in the Charleston Courier—and the writer, who signs "Fair Play," well observes — "Mexckio. Miles will be very much obliged to Civis for his exposition." I am so far obliged, because Civis has sheen that such cloths cannot be profitably imported free of duty; but I am mortified that such presentations should be made to deceive a highly excited and much mistaken people.]

P. S. At the moment of making-up the last sheet for the press, we received a Charleston paper containing the correction of an error in the original statement by "Civis," and the whole, at some mechanical inconvenience, via, " and the water, at some mechanical monoreneous, was promptly laid saide, that we might have time to examine into the matter. It appears that the price of the cloth should have been 2a, 2d, and not 2a, 6d, and it is said that "Civis" had already corrected the "typographical error" in the "Mercury;" which never presented itself cat error" in the "Mercury;" which never presented itself to us in that paper, nor in any of the twenty "free tried" journals that had so eagerly copied the "high pressure" article. Some of these knew that "Flatcheood merdled from Matine to Georgia white Truth was pulling as his boots," and would not, perhaps, do sny thing that might act as a general impeachment of the accuracy and fire, meas of the statement. This error being domitted, sivey.

†Not being able to bear a duty of even 15 per cent as stated by the editor of the Advertiser!



815 64

6 90

9,000

2,500

9.000

that the amount of £61 16 1, as the cost of the cloth, is 1 might show the duty in its most offensive feature, still correct, &c. and the account will stand thus-Cloth and charges in England £65 1s. 3d.

Exchange on England, eight per cent. 26 48

Interest on this sum, 4 months Freight, out and home

6 00 Commissions on remittance, and sales, at Charleston, 5 per cent. on \$315 15 75

Insurance, out and and home, on 315 dollars, at 3 per cent.

353 14 So the real cost of the cloths, from the first investment of the money until its return into the pocket of its own-er, was \$355, or very nearly 62 cents a yard, and selling for 68 cents, the \$\(\frac{1}{2}\)\text{The market } preson—the adventurer would make a profit of sic Cents a yard, The Churma market Application of the Cents and the Churma of the sold for cash, only, losing no interest on sales! This, we take it, would be a very poor business.

But let us look further. A revenue duty of 20 per cent, would surely not be objected to. \* It is one third less than the average of the revenue duties of 'free reade' England. We shall add this:

Amount as before \$355.14

\$353 14 63 00 20 per cent, on 315 dollars

416 14

And, while the market price of the cloth was only 68 cents—its actual cost would be 701 cents, or a real loss on the importation of 5704 yards, of twelve dollars 84 cents, nearly.
With these facts before us, the rightfulness of which

has been referred to intelligent merchants, and, we think, eannot be refuted, is is not clearly manifest, that the do-mestic manufacture of such cloths, (or of cloths that supply the place of them (has materially diminished the cost to consumere? WE SEE THAT THEY WILL NOT BEAR A LOW REVENUE DUTY. Again—as Charleston is one of the great ulterior mar-

Again—as charlesion is one of the great atterfor markets for such cloths, it may be reasonably supposed that they sold higher there, by from one to three cents a yard, than they would have done at Boston. But we shall not make any addition to our calculation on this account.

make any addition to our calculation on this account.
These details have been entered into that the subject
might be fairly presented. We have no idea that those
most interested will examine this peacediu "multification" of absurdities—they despise all readings, except
stamped by the godship of orthodoxy, as much as Jack
Cade did, and would make them capital offences—but
others will look at, and profit by these things.

The general remarks previously made-as to a fit-ting of the cost of the cloth to the minimum, so that it

\*A duty of twenty per cent. seems to be the lowest rate which has yet entered the mind of the "free trade" perty. The proof is at hand. Coffee is an article of very general consumption—it is chiefly obtained in ex-change for our bread-stuffs, expured to the Span-ish, Danish and Swedish West Indies—(not the British) ish, Danish and Swedish we tridle - which a foreign market is badly wanted; and, as we produce no coffee in the United States, the traile is we produce no coftee in the United States, the traile is mutually advantageous. And besides, while it is admitted that the revenue is overflowing, we have had loud and long flourishes of frumptes shout relieving the burthens of the poor—and, as a conclusive evidence of this advantance of money and abundance of sympathy, the duty on collect was reduced to the follower the Whether a real reduction. reduced duty, or how much of the reduction has rather passed into the profits of the West India planters than been saved to American consumers, we shall not just now examine; but, though there was not much, if any, objection to the project of relucing the duty on col-tee, and we should have been willing to take it off all together-great praise has been claimed on account of such reduction; though the duty yet levied is, at least, twenty per cent. - perhaps, twenty-five per cent. on the general cost of the article.

hold good. No generous mind would resort to such an extreme case to afford instruction to his fellow eitizensnor would any other than a fool import cloths at the rate given, with the hope of profit upon them. But we see that, with a revenue duty of only 20 per cent, the customary charges and allowances being made, these cloths would have brought the importers into debt. There is some reason for this. LET THE "FREE TRADE" FOLKS TELL US WHAT IT IS! WE PRAY THAT THEY WILL!

Ma. Randolpit, says the New York Evening Journal, "is visiting the south of France, and has no intention of resigning his commission." We thought the had resigned; and it is not easy to believe that he will receive pay from the time when he left St. Petersburg, except for such period as might be allowed for his return home. But Mr. R. may demand it—for his notions of right are correspondent with those of no other biped; but will his year's salary be paid?

The cost of the mission to Russia is thus stated and

added up in the "Boston Courier," and we suppose that it is nearly correct—if the salary and in-fit be allowed: To ordering the Concord to St. Petersburg

\$75,000 with Mr. Randolph To Mr. Middleton's return salary 2,500 Mr. Randolph's out-fit for his 10 days mission 9,000 One year's salary Quarter's return salars

Mr. Buchanan's out-fit \$107,000

ROADS, CANALS AND RAIL BOADS, in England and Frances

England contains 10,600 leagues of roads. 1.500 leagues of canals. 16 .. 1,200 leagues of rail roads. France is twice as

extensive & has only 1,500 leagues of roads. 600 leagues of canals. 40 leagues of rail roads.

Now all the actings on second of superior means of transportation in England, enter into the product, or capital, of the country, and have powerfully aided in rendering it, at once, the banking establishment and warchouse of the civilized world. Labor or time saved, is just the same, in effect, as new commodities produced.
Such is internal improvement—and hence the mighty advances of England in population and wealth, not withnurances or longished in population and wealth, not with standing her wasteful and profligate eivil and religious government. No other than the people of England could pay the taxes and rates imposed on them—and it is by such savings that the burthens are boruc.

ENCYCLOFEDIA AMERICANA. The 7th vol. of this work has just issued from the press. The new matter is very interesting; and every subsequent volume increases the good opinion which we had formed of this laborious and extends a while steep the work in the standard of the substantial of the substantial of the standard of the substantial of the substa valuable publication. When complete, it will certainly be the best and most convenient manual for common reference extant, and with respect to a great variety of most important subjects—by which the unlearned may be in-structed, and the learned, (without a waste of time), refresh their knowledge.

TWO STANDARDS FOR THE POLES have been prepared at Boston, and were exhibited to the public, with many ea at loston, and were exhibited to the public, with many interesting ecremonies. We have a full description of them, and of the standards. The latter are magnificent. One of them bears the inscription—"to the brave sons of Poland from the young men of Boston," with the portraits of Kosciusko, Washington and Lafayette,

KENTUCKY. Gov. Metcalfe has issued his proclamation convoking the legislature on Monday, the 7th Nov.

—(one month before the usual time of meeting), because that, at the last session, a senator of the United States was not appointed to fill the existing vacancy. [,The late storms. Aux Cayes is said to have contained 2,500 houses,—of which only 5 or 6 shattered ones remain! The whole site of the town was munitated—between 500 and 1,000 persons persisted. The town of Jeremie has equally suffered—and no longer exists: "every thing was host." The harvest in the neighboring parts totally destroyed—large frees having been rooted-up by the force of the wind. Port su Prince was not much morrest.

The hurricane which has swept the Caribbean Sea and Gall of Mexico with such dissutrons effects, commenced at Birbadoes at I A. M. on the morning of the Hith; it reached St. Domingo and Cuba on the 13th, and New Orleans on the 15th and 17th, August.

Many millions of stollars, to say nothing of the loss of life, will not repair the damages sustained in the Wes

HIGH CRIME AND GREAT PENALTY. On the second Monday of lots mouth the superior court of Gwinnett county, Ga. commenced its resiston, when ten white men were to be inducted for the crime of residing within the limits of the Georgia clarter without taking the oath of allegiance. Penalty—not less than four years hard short in the penaltentiary. The following are their names: J. A. Thompson, P. Thompson, Thomas Gann, J. Wheeler, J. J. Trott, S. A. Worcester, E. Butter, S. Mayes, A. Copeland, and Edward Deloiser.

EMIGRAYS. We are informed by a New York paper of the 12th inst, that 90 passengers left that eny, in one vessel for Bellaut—returning, we auppeae, dissatisfield with the United States; but in a New York paper of the 19th—we observe, that, in one they, there arrived four vessels, which brought out more than 500 passengers from London and Laverpool.

Robar Potters, one of the representatives in congress elect term N. Corolins, lass beet trud at Oxford, and found guilty of a wifful and crue! maining of "a jouth of toder age," mand Lewis K. Willey—and sentenced to pay a fine of one thousand dollars, with the costs of princ cution, and to be also independent in the costs of princ cution, and to be also independent mostles, and thereafter until such fine and costs paid. Potter is yet to be tried for the like maining of the rev. Lewis Taylor, (an aged man, we believe), whom he also haltered and stubbed, as is clarged; that he might accomplish his purpose. A jeahusy of his wife caused these proceedings on the part of Potter, but nothing was slewn on the trial to extenuste the outrage—at which Potter sknowledged himself guilty. The court expressed its doubt on a point of law, as to the measure of punishment,—else would have coulemned Potter to two years imprisonment, the greatest extent that could possibly be allowed by the statute. The court house was erworded,—and the people under a great exettement against Potter.

CHIEF JUSTICE MARSHALL—From the Richmond Rhig—We publish the letter of judge Marshall, declining to set on the central committee. It was an instruction on the part of the meeting to place him there, an inadvertence, however, which will find its apology in the reverence and affection of those who committed it, We may add also, that judge Marshall's opinions were no scret to him fellow-citizens.

Richmond, Sept. 8, 1831.

To the Editors of the Compiler.—Gentlemen: I observe with regret, in your paper of this morning, that my name is placed on the central anti-Jackson committee, appointed by the meeting held yesterday in this city.

I am at all times willing to perform any duty which my fellow-citizens may please to devolve in me, unless restrained by the opinion that propriety forbids me to undertake it. That is the lact in the present instance.

My age, my labins, which sequenter me from all party contents, but above all, the public office I hold, make it unfit in my opinion to enter on the idules assigned to me; and I must therefore decline it. I make this prompt declaration, because, being first named in the committee, it might be expected that I should take steps towards the commencement of its operations. Very respectfully, your obedwint servant,

New York CITT BANK. A part of the money which belonged to Mears. S. and M. Allen, and soften when this hank was rubbed, was offered to them a few days since for exchange, and immediately recognized. The term who offered te-m Englishman manced Parkinson, etc. and the second of the control of

A POLISH GENERAL LEAS—The Limburgh Correspondent comman the following, disted Warraw, July 7:—An eye-writen sign the theology of the Correspondent comman to the Correspondent of Correspondent of the Correspondent of the

COUNT DE LEON and retinues, consisting of forty-fire persons, from Germany, arrived last evening, in the North America, and took lodgings at Bradstreet's manion house. The count, we understand, is emigrating the west, and will remain a few thay in this city.

[Jilloup Fiv. Journal.]

The count is from Belgium. The Albany Daily Advertiser says, it is life intention to purchase a tract of land near l'ittsburg, anon which he and his dependents will loeste. After he has purchased a tract, about two thousand persons from Belgium will leave their homes, and conce to this country to settle on the count's each and conce to this country to settle on the count's each.

and come to this country to settle on the count's estate. The count is said to be worth about five millions of dollars, and his arrival may be hailed as most interesting to the prosperity of our western land, which will benefit to a great degree from his enterprise.

CUSTON BOSK ANN. We are informed that Mr. Tricreed, who was invited to argue this cause, has replaced in a very polite and kind letter regretting that he is untile to come, although his aid would cheefully he been efforded to the cause if he could have come on at this time, and could have consented again to appear at the bar, alter having for many years relinquished the practice of his profession. [Charleston Mescary.

THE CHOLERA MORBUS.—The following terrific account of the progress of this disease at St. Petersburg, was believed at London to be far short of its actual operations:—

From the 28th to the 30th Jaine there had been at Peterabory upwards of 50 cases, and 30 deaths—more than 15 deaths a day. From the 30th of Janc to the 6th of July there were 30f cases, and 279 deaths, averaging from the 30th of June to the 6th at July, 55 deaths a day. From the 6th to the 13th there had been 3,645 cases, and 127 deaths; average of ideaths between those dister, 216 a day. From the 13th to the 15th of July, the last report of 50 Daniel Bulley, the Russian consul-general, there had been 4,916 cases, and 2,990 deaths, averaging, in those last two days, 1124 deaths a lay. Such his frightful mortality prevailing which, if it continues with the same viruelnee, and, to increase as it has done, must,

with the immense population of St. Petersburg, carry | States established. The 2d regulates the civil forms of off some tens of thousands.

"Letters from Memel of the 19th July, contain no news of importance. The chotera had not reached Memel, nor Konigsberg, on the 224. At Dailz e there had been about 750 cases of the cholera, of which 560 had died, and the disease was spreading through the neighboring villages. The Prossian government, it appears, does not stop provisions destined for the Polish army."

The disease was prevailing pretty much in like manner

at Archangel, Riga, &c. &c.

Subsequent accounts inform us that the cholera was declining at St. Petersburg. The cases were much less numerous, and of a milder character. Such appears to have been the progress of this disease. Its unset is awlul-but its violence appears soon to be exhausted.

Nuns. Port Tobacco, Maryland, Sept. 17. The nuns of Mount Cannel, of this neighborhood, twentytour in number, took their departure on the 13th inst. for Baltimore, after a residence among us of upwards of forty years. They are the oldest order, and of the oldest standing in the United States. Having established themselves here a few years after the American independence, and during the troubles on the continent of Europe .-Their old convent is situated about two miles from this place, and was under a different regulation and disci-pline from any similar institution in the country. They live entirely secluded from the world, and have many devotions and deprivations not in use in other numerics. They are going to Baltimore to rid themselves of the charge of a large farm, a number of slaves, and to shelter themselves from the inclemency of the weather, Their present convent being built of wood, is now in a state of decay and delapidation. They are of the order of "Menilicant Carmelites" of the reform of St. Teresa. original founders of the institution came from the English convent at Antwerp, and have shed here within the last two or three years.

[These nuns have taken up their residence in a new and large building prepared for them in Baltimore. 1

SUBMARINE EXPLOSION. A very extraordinary phonomenon occurred in sight of the ship Crawford, espt. Gould, on the passage from Traste to New York. The first officer of the ship states, that on the 9th of July, at 9 o'clock in the evening, he had charge of the vessel, with orders to keep a look out for the island of Meretto, and about the light he saw something like a mountain on the larboard how, ascending in the sir to the height of 200 or 300 feet, perfectly black, and disappearing at intervals. Hauled upon the wind immediately to the northward, in order to get out of the range of the explosion; and two brigs astern, one the Asia, of London, immediately followed the Crawford. Reports as foud as thunder followed each other in quick succession, jets of the sea were thrown up to an immense height; the ship rolled as it in a storm, and the ocean was white with At this time it was calculated they were in 3 or 400 fathoms of water, and about 16 noles from Sicily. In ten minutes more, had the ship kept on her course, she would have been swept into the vortex of the volcano, carried, probably, to an immense height, and then ingulphed lorever in the abyss below. The alarm on board the vessel is said to have been very great.

[N. Y. Courier. LIBERIA. The following further particulars respecting the colony of Liberta, are from a late number of the Paris Revue Encyclopedique;—The colony extends 150 miles on the sea coast and 20 or 50 miles into the inte-Its chief city, Moncovia, has 90 houses and stores, 3 churches and 700 mhabitants; it is budt on Cape Mesurado, 70 feet higher than the sea. Its harbor is formed by the river of Montserrado, 7 miles north is the river St. Paul. On this is the colony of Caldwell, which is flourishing. Between Caldwell and Monrovia is a settlement of 30 lamilies. On the bay of Stockton live 300 Africans taken from slave ships; 25 miles north cast of of Monrovis is Millsburg, containing 200 inhabitants.

The form of their government is strictly republican. Three documents contain the civil and political legislation of Liberia. 1st. Grants rights as in the U. Statesslavery is prohibited-and the common law of the U.

the government-censors are appointed to guard the public morals, to report the idle and all who would injore the prosperity of the colony. The third is a code of procedure and posishments, extracted from digests of the U. S. I.ws. The executive authority is the egent, who exercises the functions of governor, and two judges who assemble monthly; most trails are for their all judgments are by the voice of a jury with great formality. publ c library is established at Monrovia.

FOREIGN ARTICLES.

An arrival at Boston brought London papers to the 5th August. The leading things were these

h August. The reasing usings were incoming a majority in the French chamber of deputies, Mr. F and the rest of the ministers, resigned-and the king charged count Mole with the formation of a new minia-Paris remained tranquil, and the king was zealous in attention to business.

On the 1st of August, the prince of Orange announced himself at the head of his lather's arm, for off naive operations against Belgium. At the same time a Dutch fleet arrived in the Scheldt. Leopold, who was at Liege, hastened towards Antwerp, at which the people were in great alarm. Some fighting ensued, and it was reported that the Dutch had taken possession of Venloo.

The belief was general that Prussia had agreed to sup-

port Holland, and hence a general war was expected, in

England and France. Very little intelligence had arrived from Poland, is stated that the Russian grand army, 60,000 strong, had crossed the Vistula-that the Polish general Dembiski and his army had been made prisoners in Lithua-nia—that the Poles, at Warsaw, had made every pre-paration for a gallant stand. Next it is said, that the Rus ians had retired, re-crossing the Vistula, and would not risk the issue of a general battle!

Algers was said to be closely invested by the Arabscollected in great numbers, and a great battle with them

was immediately expected.

Accounts from Russis say that the emperor was in a dangerous state of health - and that his decease was looked for.

The British house of commons was proceeding slowly, but steadily, through the reform bill. Three of the four schedules has been massed on. The ministers maintainschedules has been passed on.

ed a large majority.

The annuity of the dutchess of Kent has been incressed £10,000, say 45,000 dollars, because her daughter, the princess Vetorus, is 12 months older than she was last year, though still a latte girl. The young queen of Portugal is countenanced by the British and French courts.

The British stocks had fallen 14 per cent, beenuse of war news from the continent, the change of the French m nistry, &c. Ireland was much disturbed. There was much move-

ment among the troops of Spain-pushing to the French and Portuguese frontiers.

Very tate news.

By several arrivals at New York, files of London and Paris papers to the 16th August have been received.

On the report that the Dutch had attacked the Belgians, a French army (amulat the cheers of the people), immediately marched towards Belgium-50,000 strong; and the British ordered the squadron at the Downs to he ready for instant action—the two powers having re-solved to "command the peace," Some further fighting had taken place between the Dutch and Belgians. A French general had been directed to tell the Dutch commander, that all public and private property at Antwerp was under the protection of the French king! On these and other movements being made-the king of Holland consented to withdraw his troops from Belgium, and so the speck of war was dissolved -lor the present. French troops had reached Brussels, but would retire within their own limits. Leopold is said to have shewn much energy and coolness of mind-but the Belgians are reported as behaving in a cowardly manner before the Dutch, who arrived within eight miles of Brussels. this point of time the Belgie troops fled-and a detachment of the French army entered the capital, headed by

the dukes of Orleans and Nemours. They were received with great enthusisam. The Dutch were told that they must cease offensive operations. The Belgians complain much of the severe mode of warfare which the Dutch had so far pursued, in sacking and burning villages and larm houses, &c. The French army will be so lo-Gerard, commands the French—the duke of Orleans a brigade, and the duke of Nemours a regiment of lancers.

rom Poland we learn that a Russian detachment had From Poland we learn that a Russian detachment had been defeated by gen. Mulliberg-that Warsaw was deemed impregnable—breing defeaded by a large army, and 270 pieces of cannon. An investigation into the conduct of Schryznecki had been land, and resulted to his honor—which gave increased strength to the Poles. The Lithuaniana and Vollyniann were actively carrying on the war against Russia. The Poles were filled with for causes not assigned. They had suffered several small losses.

There was much agitation in the French chamber of deputies on the 15th August. It is called an "afflicting spectacle"--particulars not yet received.

The army of Holland is estimated at 100,000 men— of Belgium only 40,000. Hence Leopold's earnest call on France and England for their interference,

on France and England for their interference.
The Franch ministers who had resigned, on the emergency of the news from Belgium, still acted—and it was thought that the energy displayed by them in forwarding the troops, might afford that additional support in the clamber of deputies which they had desired.
The king of Holland has lost Batavia, the capital of Java, in the East Indies, which was at all

times considered a most important colony of Hulland. It has declared for Belgium, and, it was thought, would lead to the defection of the whole island. This is andther enemy which his majesty may add to his already large list. He certainly has been singularly successful in provoking the hostility and exciting the continuit of

mankind.

The following, uniler date of Brussels, Aug. 12, shews, that, except because of the arrival of the French, the capital of the new king of the Belgians would easily have fallen into the hands of the king of Holland, - This city was in a most dreadful state of agitation this morn-The Dutch having advanced within eight miles of Brussels, the drums at an early hour beat to arms, and the inhabit mts were flying in every direction. It appears that this morning about two o'clock, the Dutch formed that this morning atout two o'clock, the Dutch formed themseltes in line for battle, and at four o'clock attacked the Belgie army near Louvain. The Dutch opened upon them in three columns, and commenced firing in every direction; the Belgians instantly took to flight, and the greatest disorder reigned amongst them; they threw away their arms and caps, and tried to outdo each other in running; by siz o'clock the field of battle was clear, and the Dutch masters of the whole of Belgium; the greater part of the Belgia army threw themselves into Louvain. I do not believe there has been many either killed or wounded! Their conduct in lingraceful, yet one is almost inclined to pity them; they have but lew officers, and those they have were the first to fly. I say one is amost anomal to pay them, only have out to officers, and those they have were the first to fly. Had they not been in the habit of bragging most intolerably, and setting the whole of Europe at defiance, they would doubtless have received assistance; but they spurned the Dutch, and brow best every other nation. I think the peace of Europe more likely to be preserved now than it would have been had the B-lgians been victorious."

It seems Schryznecki kept his counsels so close, that the people became uneasy -on which some of the chiels of the Poles were delegated to hold a confidential communication with him. To these he developed his plans, and they separated full of hope. There is danger in such proceedings -- for among those most relied on, trait-

ors may be found.

There are new disturbances in Italy. More than three persons are forbidden to appear together in the streets of Rome! Many new arrests had been maile.

All accounts agree in stating, that the Belgians, when All seconds agree in sating, until the Detrains, which is about to meet the Hollanders, behaved in the most about to meet the Hollanders, behaved in the most thing behaved them. The Dutch aboved much resolve a unique of the prodound esteem and attachment with thing behaved them. The Dutch aboved much resolve a many the Holland and the statement with the large ker. tion and steadinesss.

Berlin, Aug. 1. It is now ascertained to a certainty, that field marshal Paskewitach has instructions to negotiate with Poland. It would seem also as if the negotiations were to take place under the walls of Warsaw. It is said that the Poles will be required to repeal their decrees of exclusion against the house of Romanoff; and that they will be allowed to choose from their nation, a viceroy, Czar, Torisky, or Radzivill.

Brussets, Jug. 8. Sir: his majesty directs me to announce to you that he this instant has received intelligence by the way of England, that the troops stationed at the island of Java have revolted, the Belgians, being more namerous than the other Europeans, have possessed themselves of authority and established a government in the name of the Belgic nation, the whole island has submitted to this government. The king requests

you to send an agent to Batavia immediately.

The minister of war, par interim,

CONSTANT d'HANE.

To M. Lebeau, minister at Louvain.

In China there has been an extensive rebellion-the chief scat of it was at Cashgar, in the north. The imperial troops had gained some important advantages, and the emperor had ordered 4,700 camels to transport mathe emperor had ordered 4,700 camels to transport ma-terials over the desert of Cobi, that the war might be ended. Many pirates have lately been executed at Canton—but the cutting-off of heads there exerces no attention.

Manilla. The imports at Manilla in 1830, amounted in value, to \$1,562,522, besides \$178,063 in specie. This was done by means of 37 Spanish vessels, and 73 foreign. Exports, \$1,497,621, and \$81,952 in specie, in 37 Spanish vessels, and 74 foreign. Of the foreign ves-sels, 29 were American, 22 English, 8 French, 4 Dutch, 3 Portuguese, 5 Chinese junks, &c. Revenue from the customs, \$228,061.

LETTER FROM SCHRZYNECKI TO GEN. LA FAYETTE.

We translate from a Paris paper of July 22nd, the following letter from the Polish commander-in-chief to La ayerte.

MY DEAR GENERAL:—With what pleasure should I have suoner replied to the flattering letter which you

have sooner replied to the mattering letter which you did me the honor to address me on the 21st of April.

I received it, however, after a long delay. I lose not a moment in returning my thanks and expressing the great gratification it affords me to be so happy as to receive in this manner the lavorable regard of the veteran of liberty in two worlds-ol a person so eminent, whose constancy has been superior to all vicinsitudes,whose character has been preserved equally grand in the dungeon of Olmutz and at the head of armies; the distinguished citizen, in fine, who has exhibited to the world so rare nexample of undeviating fidelity of practice, and disinterested regard for his fellow men!

This, indeed, is one of the most grateful recompenses to which I could aspire!

You are already aware of the success that attended our efforts to throw some succors into Lithuania. On the return from that expedition, I was attacked in the force. The combat, was obstinate and at last degenerat-The Russian commander, however, ed into carnage. in spite of every thing alleged to the contrary, was not able to prevent the object I had in view. Thus we have, up to the present thate, been enabled successfully to maintain our anxious struggle against so great odds, and confident in the enthusiasin of our country men, and strong in the valor of our army, we will yet sustain the cause, being persuaded that the moment approaches when constitutional governments will shew less spathy concerning the outrages on public opinion, which have been committed. We think they will interpose for our noble Poland, on which, perhaps, yet depends the safety of Europe, itself. May the prayers, my idear general, that you and so many other briends of humanity put up in our behalf, be vouchisful!

SCHRZYNECKL

# NILES' WEEKLY REGISTER.

FOURTH SERIES. No. 5-Vol. V.

BALTIMORE, OCT. 1, 1831.

[Vol. XLI. WHOLE No. 1.045

THE PART-THE PRESENT-FOR THE PUTURE.

EDITED, PRINTED AND PUBLISHED BY R. RECES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN ADVANCE.

The present number makes a sheet and a half—which, together with the free use of a close type, contains about as much matter as is commonly to be found in about eighty octave pages—and besides, the articles are more than usually interesting. Still, our files are not much relieved—enough matter remaining prepared, or laid aside for a prompt insertion, to fill two sheets Tail ande for a prompt merrion, to Bil two sheets arone. And besules, the general anti-masonic convention was held in Baltimore this week, with the general anti-draiff or "feee trade" convention at Philaid-lphis—the proceedings of both which will occupy a large spoce, probably enough to fill not less than three sheets—yet surther, other long statements pertaining to the great "controversy" between the late "dignaturies" of the "controversy" between the late "dignitaries" of the nation, may be speedily expected,—and the extensive re-port on the condition of the bank of the United States, an important public namer, remains on hands and themese preus nearly enough articles in manuscript to fill two sheets! Few persons can appreliend the difficulties that beset us, on such necessions, -or make rightful altowances, for insertions or omissions; but we do the best that we can to please all, whilst well-knowing that all cannot be pleased; and are resolved (as at present sup-ported, and in the hope of yet increase) strength from new subscriptions) that the REGISTKE shall have no panew numerical that the REDITAL SHALL HAVE IN A HAVE IN PARTIES, at a book of record, in this or any other country—and render it, if possible, indispensably necessary to the library of every political consmitt or enlarged politician, in the quality and quantity of its contents, as well as useful to every class of the commanty by reason of its multitudinous facts, published and preserved. And we take the present occasion to say, that every article, so far as practicable, is copied from official or original publications, that errors may avoided. No one, perhaps, has an idea of the amount of omissions which are thus prevented. As an example, of omassons when are thus prevented. As an example,
—one of the most correct and faishful publishers in the
United States, recently left out as much as made half a
page of this work of Mr. Crawford's address to the
public—and so was the address published in many other papers, copying from the one just alluded to. We make many errors, though steadily on the watch to prevent them-and such are among the means used.

TA great meeting—(the large room in the Musical Fund Hall being full) was held at Philatelphia on the 26th Sept. Joseph Hemphill, chairman, and Mathew Carey and Robert Waln, secretaries, at which, (after the passage of some excellent resolutions) thirty-two gentlemen were appointed delegates to the general convention of agriculturalists, mechanics and manufacturers to be held at New York on the 26th inst. to favor the protection of American industry, and suggest such mea-sures as may be thought expedient to secure the home market for domestic producers.

Tuesday evening last, to select delegates to attend the convention at Philadelphia—but a very large majorny of convention at Philadelphia—bit a very large inajoraly of those present were not favorable to the object, and pass-ed resolutions approbatory of a protecting tariff! The minority, however, 14 or 15 persons, all told, withdrew -and, in retirement, appointed 12 delegates to the "free trade" convention.

\*And also for its cheapness in price, the amount of ading matter being considered.

†We learn that a public meeting will soon be held in

Baltimore, for the appointment of delegates to the generate convenion to be held at New York, in support of the "American System." The "free trade" gentlemen at their first meeting were six number, at the adjourn-ed meeting 15—total 21, including sluplicates! YoL. XLI.—No. 6.

The proceedings of an anti-tariff meeting at Wilming ton, N. C. (at which two delegates were appointed to the Philadelphia convention), fill two columns of the "Cape Fear Recorder." This meeting consisted of sixteen persons, reported to us as follows—3 probable "sulfifers," 8 anti-tacff men, and 5 triends of the "American System,"

It we had room we should gladly give a hill account of all the things above mentioned -- but it must be, at least, -- but it must be, at least,

TThe fourth annual fair of the AMERICAN INSTR-TUTE will be held at the Masonic Hall, in the city of New York, on the 11th, 19th and 13th October, when premiums of medals and honorary diplomas will be awarded for such articles exhibited, of a comestic ground deemed, on account of their excellence, or superiority, entitled to the same.

Arisis, manufacturers and others are invited to second the landable object of the institute, by lorwarding, in due season, specimens of their labor and skill in the various departments of their judustry. It is believed that rious departments of their industry. the exhibition will be a very large and splendid one.

The letter from Mr. Monroe, concerning the hank of the United States, see page 82, claims a high consideration, for many reasons: and especially, for the active part that he fook in the revolution --- in discussing the constitution, and his long and faithful services to his country in the most lofty and important stations that the government or people could confer-embracing an entire period of almost fifty years! No man had more full or better opportunities to judge correctly of the or netter opportunities to judge correctly of the principle and operation of the bank of the United States, than Mr. Monroe; and he was also of the original strict construction school—jralous of every approach towards comobilation, or an infringement of the "rights of the states." Of nearly all men, he least required a hocuspoem operation to make him a republican, "dyed in the wool," though he had successively encountered the opposition of the "Richmond junto" and the "Albany regency," what was democracy with one sometimes be-ing federatism with the other—each declaring itself the real "Simon Pure." From the position in which Mr. Monroe was placed during the war, and as president of the United States soon after the restoration of peace, his opinions derive much importance from experience. The difficulties that beset Mr. Madison's administration in 1813-14 are matters of history, and cannot be effaced by any movement of transient parties. No one was better acquainted with the means and the wants of the government and people of the United States than bewith the rights and duties which belonged to both. And with the rights and duties which belonged to both. And lence his remarks, like the voice of a venerated father from the grave, appeal powerfully to the reason of the Americas family. Every part of his plain, but strong, communeation is worthy of closest attention; but we like that part most wherein he takes a rock-based stand against what we have regarded as the most dangerous political project ever yet concected in the laboratory of "smallgrant," magiciana, to secure the subserviency of the constant in the laboratory of the constant of the laboratory of the security of the laboratory of the constant of the laboratory of the labor people of the United States. We mean a treasury-bank, that private interests may be meshed in the net of any "combin-tion" of profligate demagogues, having com-mand over it. With the "retiracy" of its reputed aumand over it.

\*Instances-in the case of Madison against Clinton in 1812, and Monroe against Crawford in 1815-16. In 1824 the high-contracting parties joined issue in favor of Crawthe inguecontracting parties joined usue interest of craw-ford against Adams, Jackson, Clay and Cathoun; but still together in the support of Jackson in 1828, though he was most objectionable to both in 1824. ther, it is to be hoped that the project itself will be reif dams, late president of the United States, and, had
fired—that things will be allowed to take their regular, we inserted that, should have been compelled to give
and natural course in congress, without executive interfirence—and that the president will not again tender him of whose statements Mr. A. had imprached, and go ference—and that the president will not again tender his wreta in advance, concerning a subject, which, probably, will not be decided during the term of office for which has been elected. We hope that the "Richmond Enquirer" will cease to "piy" Mr. Madison; that the "Albany Argus" will not inseribe "Feleralist" on the tomb of Mr. Mouroe, by way of reproach—the latter gentleman leaving been, in the strict and vertical emean-ing of the term, an "anti-federalist," nor the "dion-st" and honorable New Hamphire Patriot denounce him as having been as the "great gun of the federal party" and rejoice in his death, as an enemy of the democrat e party.

The editor seems to be slowly regaining his former firm health, -and, among other things, expects to make some free remarks on certain publications in the "Albany Argus," and other journals, relative to the present bank of the United States, and the wild substitute that bank of the United States, and the win shoulder that was proposed for it. But in having given up his opposition to the bank on constitutional grounds, and for reasons assigned—it must not be presumed to follow that he thinks it expedient to renew the charter of the the season for it arrives—his present clief purpose being to resist and expose a TREASURY BANK, should the project still be entertained, as, for foul political purposes, it seems that it may be.

BUP We have prepared what may be regarded as something like a history of the late insurrectionary some accounts of the effects of them .- but it must be postponed. And so must, also, the account of a succession of dreadful rious at Providence, R. L. originating in the attack of some sailors on the booses of certain persons of color of dissolute character, in which one of the sailors was killed and others wounded, by discharges of fire arms, from the negroes. For several successive days and nights the town was in a terrible inmult-a great multitude of persons being resolved to nuttees great nutritions or persons being resorred to avenge the killing of the seaman, and destroy all the dwellings occupied by such negroes, which they effected to the pulling down of about 15 houses. The military was called out, and, loath to five on the mob, was one night driven back, suffering much from stones and other missiles; but on the next night, they fired upon the crowd. and five were killed and four wounded-after which the mob dispersed. Among others, the high-sheriff received a severe blow on the breast from a large stone. ed a severe blow on the press from a large stone. The civil and military sutherities appear to have acted with all possible moderation, consistent with a preservation of the majesty of the law. A full statement of the affair from the Providence "Journal" shall be preserved.

We have a copy of a very long and highly interesting article from the "London Spectator," entitled "an anatomy of trastion." It presents a magnificent commentary on British actions about "Free Trade" and must have a place.

THE ARTI-MASONIC CONVENTION, to nominate a president and vice president of the United States, met in this city on Monday last. A notice of its proceedings, so far as published, will be found in another part of this sheet, and we shall give the remainder at full length, with promptitude, when furnished,

We also insert a correspondence between a committee of the anti-masons in Massachusetts and gov. Lincoln: which will not fail to interest numerous readers.

On neither of these shall we make any remarks that can lead into a general discussion, or the free insertion of speculative articles relating to a subject about which of speculative articles relating to a subject about which the metrics; but a flue regard to that impartisity to so much has been, and will be, said—and for this great which we desire that our course may detaining ushed, reason, that the fixth of the Regarder is already so large that we cannot manage it without gent externion and much extra expense. We did intend to have inserted the necessity of giving Mr. Milner's reply; we also had for the management of the standard by Mr. Rush's given Mr. Milner's reply; we also had for the management of the standard by Mr. Rush's given the management of the standard by Mr. Rush's given the management of the standard by Mr. Rush's given the management of the standard of th

through with this new controversy; one thing begetting another without seeming end-atterly driving us from the ground we have so long occupied, and monopolizing the contents of our pages with matter of a new character and cast. We cannot attempt to enlarge the field that we occupy. It is one of the most severe and unpleasant of our duties to decide what may be excluded or postponed -and the record-articles must have their old established precedence. This statement, however, is not intended to shut our pages against all such articles of a masonic or auti-masonic aspect as appear necessary to the pub-lic intelligence, because of facts stated in them; and we are dearrous that a brief history of events should be registered for future instruction.

INDIANA. As the political character of this state is surely not now to be infinenced by any remark made by us—and, as we are altogether ignorant of the names of the gentlemen contemplated to fill the vacancy in the senate of the United States—at may not be thought obsenate of the United States - a truly not of friend, judge strusive to express a wish that our old friend, judge Test, may receive that important appointment. To the great inferests or one proper, a more resolute friend "American System," there is not a more resolute friend than he is, and few that are better posted-up as to the facts which pertain to these interests-for he has one of those enquiring and persevering minds that will not be satisfied with any thing short of a clear understanding of any subject to which its force may be directed. Mr. Test is not a brilliant man, nor an elegant speaker; but he is better than either--a sound practical man, a real was in congress; and, by political friends or opponents, we know that he has been respected as one of the most regular and faithful of the members to the business and regular and minimi of the members to the unamers and duties of a representative of the people. There are few of this class of persons in congress, and their example is precious. Their punctual attention to duty has a powerful effect on others, less disposed to labor; and the business of a member of congress is really laborous, if zeabusty performed. There are lardly thirty real working-men in a congress; and the most of these make less "noise in the papers" than some whose not much better than machines to say aye and no-doing nothing but talk; making long speeches to "beggarly accounts of empty" benches. Those who never have but a near of empty wencies. I nose who never have had a near view of congress cannot easily believe that many of the loudest and biggest speakers hardly obtain one person to hear them, unless some half-sleeping stranger in the gallery, who know not how else to dispose of his time.

The returns of the elections in Ver-Erretions ELECTIONS. The returns of the elections in Vermont slew that Mr. Palmer, anti-masonic, rec-ired 13,168 vites for governor, Mr. Allen, nst. rep. 11,259, and Mr. Meeth, Jackson, 5, 3-8 and in the congressional district lately represented by Mr. Mallary, Mr. Slade anti-masonic, bid 4,614 vots, Mr. Williams, nst. rep. 3,815, Mr. White, (Jackson) 838, and 148 acuttering. A third trial to elect a member must be lad.

The latest return from Maine, (not yet perfect) gives 27,414 votes for Smith, (Jackson) and 21,401 for Goode-27,514 voice for Smith, (Jackson) and 21,401 for Goode-now, (ant)) as governor of the state. The same coun-ties and towns last year gave 29,091 for Smith. and tow Mr. Huntoon, his copporate, 27,7653—thewing a great falling off of votes, in respect to the latter party.

"NEGRO COLLEGE." The proceedings had at New Haven, in relation to a project to establish a college in that city for the education of colored persons, obtains uncommon interest because of recent events. The acts of the mayor and estizens of New Haven will speak for themselves; but a due regard to that impartuality for

off an exposition concerning the same subject by Mr. condition of the people of color. That certain might be

rescued from unlawful bomlage, he has expended much jof their easte, in the United States. These people have time and some money, and more than once encountered considerable degree of personal hazard—being generally melined to take sides with the weaker party. He has also frequently contributed to assist in the education of free colored persons, and hundreds of times stood for-ward as the friend of such, in their emergencies—when a deed or a word in their favor was much needed; and he has the pleasure to bear testimony in behalf of the probity of many of those whom he has endeavored to serve but yet is opposed to the projected college, not more be-cause of the ground taken by the citizens of New Haven, than from a settled belief that any thing beyond a plain education-a knowledge of reading and writing, and of the elementary rules of arithmetic, must prove injurious to persons of color, in the present, and, (he fears), irremediable state of society in our country; even in those parts of the union most favorable to the subjects of this notice. For they are every where a separated and excluded class, and no merit in themselves, however exalted, can relieve them of their condition. The runest and most ignorant white persons who come among us, in a short period of time, at furthest in a generation, may be redeemed, as it were, from the lowest easte, by good conduct; but these, and simply because of the color of their skin, are shut out from those associations which chiefly embellish and adors and advance human assurer, and if any, by the force of their good conduct, leave their own grade, they stand I ke iso-lated beings, and their immediate descendants generally slide back to the class from whence they proceeded. Such is the effect of the prejudice, habits and feelings of the white population, composing so large a majority of the inhabitants of the United States, even in those sections wherein it would seem most likely that such associations might be allowed as would tend to a reduction of such pr judice and feeling, and permit those amalgamations which first soften, and then totally banish, those great distinctions which naturally exist between accomgreat transcrious when naturally east between assemblished and highly civilized persons, and mere animal, [such as the staves of Russia], which have the form of men, but without any natural or insuperable obstruction to their advancement—though the latter, because of their ignorance and former want of motive to acquire know-ledge and practice virtue, may be ever so lar behind the free blacks, generally, in a correct understanding of their rights and duties.

During the last summer, I fell-in with the family of a colored gentleman of a neighboring city, as much respected for his private worth and correct conduct as any other individual; and it so happened that I had an opportunity to converse with these persons-two well dressed and intelligent young women and two young men. The manners and deportment of the whole were modest and entirely correct; and, except because of their com-plexion—(supported by the private reputation and per-sonal independence of their father), might have entered a high grade of society with approbation; but it seemed to me—that, while their intellectual advancement, or genteel deportment, rendered them but small service out of their class, it unfitted them for ordinary associations with those among whom they were condemned to remain; and it was hard to determine whether pleasure or pam prevailed in my mind, while I contemplated this inte-resting lamily. But I certainly desired they might be so placed, that their improvement should not be in vain. It was evident-though I observed no personal disrespect shown to them (and cruelty alone could have extended n)—that they left themselves restrained and unhappy, because, that in the steam boat or stage, they were east into collisions with individuals, who, they feared, might be offended by their presence, however harmlessly they conducted themselves. And, on the whole, I came to the melancholy conclusion, that the happiness of these young people had been rather diminished, than increasyoung people has used ranger uninnings, than increased, because of the particular advantages which they possessed. Perhaps, I formed a very erroneous judgment—but with these views of the subject, which forced them selves upon me, however unwilling I was to entertain them, it would appear that the establishment of a college, like that proposed at New Haven, would be inexpedient on several accounts—and especially, for the reason that

the same natural and unalienable right of residence, that any of us can claim for ourselves—there is no power that can justly expel them because of their complexion; the law might as well define the color of men's eyes as that law might as well define the color of men's cyes as that of of their skins, for preference or proscription but so it is, that such discriminatory laws, on the plea, if not ground of necessity, presail in all places where negro slavery exists; and it has a meral power, nearly equal to the force of statute law, in every part of our country—though slavery never has existed, or has long been about ished, in several of the states. However beautiful may be the theory-we cannot exclude the facts from consideration, that a barrier is placed between the white and colored population WHICH NEITHER CAN PASS. We may easily agree that this should not be so. Bur 17 18 so. The wildest declainer in favor of the rights of the blacks, will not give his daughter in marriage to one of them, that she may raise up colored grand children for him. These things should give another direction to the good will that we have towards colored persons, and teach the latter to forward it. We disclaim all idea of force, as applicable to a removal of the free blacks—but surely, much may be done, if suggested and prosecuted in a mild and where with to induce them to seek a new home where virtue and talent may command and receive that degree of respect which belongs to them. As a preparatory step, let a liberal appropriation be made by congress to improve and defend the present colony in Africa-or. if that be unlicalthy, to provide a new and better location, elsewhere—that those willing to emigrate may do so under favorable circumstances. If salety should attend the establishment for a few years—it would do its own work, without much aid or interference from either the government or people of the United States, except by way of encouragement and occasional support by way of encouragement and occasional support— and gettier strength as it proceeded. The success of a few worthy people of color would draw thousands to them—and these attract others, until, through the increased facilities of navigation and commerce, (the fruit of a prosperous industry), a new nation of intelligent freemen might be established, willing and capable of regarding the rights of others and delending their own. While these things were in progress, we should heartily rejoice in the liberal education of young persons of color--for then they would have an opportunity to obtain rank unimpeded by prejudice, and confer the benefits of their knowledge on others, for the common good of mankind. But at present -- the public funds or private means of benevolent persons, should, in our opinion, be directed to the single object of providing or preparing an asylum for free persons of color; and we hope that, in the emergency of the occasion, our southern fellow citizens may review their constitutional scruples, and take hold with the people of the north to relieve the United States of a class of its population which is, at once, the disgrace and re-gret of every enlightened freeman. It will require many years of success to accomplish the great work, and the right of property, as acknowledged in slaves, cannot be disturtied -- but it will be pleasant, indeed, and glorious, to look forward to the time when this fair republic shall be inhabited by a homogeneous people, having no adverse be initiated by a homogeneous people, having no adverse interests or disputed rights, to agiste and convulse the public mind or endanger the public safety. The general decrease of white persons, and increase of blacks, in the lower country of the southern states, has a fearful aspect—and "something must be done," to prevent a calamity to which it is manifest we are rapidly approaching. It is of no use that we shut our eyes—the aun shines whether we observe it or not, and time flies though we take no note of its passage; and the event, which all men believe will come, must come, unless prevented by an energy suited to a crisis so important.

MAJOR BIDDLE. It is mournful to reflect, that this gentteman, who, as well as Mr. Pettis, was lately killed in the terrible duel which they fought at St. Louis, was one of the most gallant and accomplished officers in the army of the United States during the late war-a great favorite with the generals commanding on the Canada it would unfit its immates for association with persons of irontier—always among the first to commence and the their own color, without doing any thing to relieve them last to retire from battle. The despatches of generals honorable, mention of him.

MR. TROMAS RITCHIE. In March 1830, the Richmond Enquirer, in referring to the dissolved unit, whose recreant members are now denounced in no measured terrant memoers are now genounced in no measured terms in its columns, enthusinstically exclaimed:
"Never has a president, since lefterson, been surrounded by such able counsellors, as our present venera-

ble chief magistrate."

The same paper, in August, 1831, (last month only) referring to the present cabhet, ean find no other measure of its excellence, than that applied to its immediate predecessors. Look here—
"The present cabinet is the ablest that has been formed."

"The present cabinet is the ablest that has been formed since the administration of Mr. Jeffersen."

The preceding is copied from the New York American—we said what follows:
A day or two before Mr. Ingham resigned—(as the "eady of Bagdad" went into "returney," but obtaining a certificate of good conduct in office), It's Thomse Richie treated that Mr. Ingham would "his Thomse would be the said of the nuene trasted art. tignam wood active to temperature moved nor retire, without good cause, independently of Proposition of the to be utterly false."

to be utterty faste."

In his paper of the 3rd May, Mr. Thomas Ritchie, speaking of the dissolution of the eabinct, [see last vol. page 178], soid—

"No pains too, are spared—no insidious insinuations are wanting, to rouse the suspicious and resentments of Messrs. Branch and Ingham—and eventually, should the opposition succeed in this design, appeals will be made to the state pride of North Carolina and l'ennsylmade to the state pride of North Carolina and Penns).

Annia-But it is not possible, that this isnaidous [again?] plan can succeed. Mr. Branch and Mr. Ingham will see through it, and will despise it. "!

And what has he not said since, to disparage the claracter and services of Mesars. Ingham and Branch!

Another instance of Mr. Thomas Bitchie's considering. In the "Enquirer" of the 3rd of May, he said—

Another instance of AIL. Another invenez enterment, or In the "Enquirer" of the 3rd of May, he said—
"Their (the opposition) great plan of sorting the seeds of surfige between the freeal of Calhoun and Van Buren is broken up [!!!]—Van Buren has withdrawn to retirement; perhaps is going serous the Athanier. ("Ihar that of minister to England!) And a few days after, between the Srd and 16th May, Mr. Thomas Richelis speaking of Mr. Van Buren, said—"see hope the is now going into pract high." See. What has he said of the disappointment of his "hope"—how reconciled that with his animuniation that Mr. Van Buren would "perhaps cross the Atlantie?" But friend Thomas will always be on what seems the strongest ide—if permitted; and, by his advointess, renders curses into blessings, or blessings into curses, or remove and crate missiance by newly-nobing his perhaps the would have kissed it respectfully, and never thought

he would have kissed it respectfully, and never thought

of "light-houses in the skies!"

COUNT DE LEON, mentioned in our last, it is said, in the "Albany Advertiser," has brought with him from five to seven millions of dollars—"a sum sufficient to turn the balance of exchange with Europe in favor of the United States;" and yet exchange has just had a sudden United States; and yet exchange has just may a sequent rise, and is now at from 10½ to 11 per cent, advance, or about two per cent, above the true par;—our value, placed on atter; being measured by the British standard which is gold. This has caused a brisk and very injurious demand for dollars—to be shipped off. "We ship

THE CUSTOM HOUSE BOND AT CHARLESTON. The attempt to sroid the payment of a certain boad due at the Charleston custom house, because of the unconstitutionality of the tariff laws, has, of course, failed before the court and jury. Particulars hereafter.

Mercury Sept 19th. Our dutingulshed fellow civizen, the hon. Geo. Mc Duffe, arrived in this city on Saturday evening last. He attends as counsel for Messrs. Mazyek and Holmes, in the case of the custom house bond, which those tromes, in the case of the custom rouse bond, when those gentlemen refused to pay for the purpose of testing the constitutionality of the existing tariff. As a tribute of respect to Mr. McDuffie, he was met at the new bridge respect to Mr. McDulhe, he was next at the new ornege terry by a large and respectable mounted excort of the state rights and fire trade party, who conducted him to the residence of governor Hamilton, where his excellency received the party. The attendance of Mr. McDuffic, at this insularbrious season of the year, not only involves a great sacrifice of his personal convenience, but also some hazard to his heatlh; and the en thusinsm of our citizens in welcoming him as they did, was therefore but a just return for his generosity and was therefore but a just return for his generosity and public spirit, independently of his other and very eminent claims upon public gratitude and esterem. The case, it is understood, will be commenced this day in the district court, which will doubtless be crowded. The anxiety and interest of our people are highly excited on the subject, and fully correspond to the vital importance of the principles involved. Mr. McDuffie's deserved celebrity as a statesman and a jurist, would, at anytime, and under the most ordinary circumstances, command popular attention and respect, but never perhans has there been greater anxiety, in any place, or upon any occasion, to hear an orator or lawyer, than there now is, in this city, to witness the effort which this able and pairoide man is about to make, to arrest, if possible, even in the federal courts, the usurpations and oppressions of the federal government. It is hazarding but little therefore to repeat, that the court will probably be erowded beyond all precedent.

"A PLOURISH OF TRUMPETS." From the Charleston

NEW PARTY NAME. We observe an address from the "Democratic anti-masonic convention" of York county, Pennsylvania.

THE MINISTER FOR RUSSIA. It has been stated that Mr. Buchanan received the appointment of minister to Russia, some considerable time ago-but the question is started, has Mr. Randolph resigned?

THE REV. DR. IVES was consecrated bishop of the Protestant episcopal church in North Carolina, at Phila-delphia, on the 22d ult. in Trinity church—bishop White presiding and the bishops Underdook assisting, with many other clergy attending, and a large soncourse of specta-

CITY BANK OF NEW YORK. We noticed in our last the arrest of Parkinson, an Englishman, and two wo-men, as being connected with the robbery of this bank. The lellow has made disclosures which led to the reco-The lellow has made disclosures which led to the recovery of money and securities to the amount of thirty three thousand dollars, in the hope that, as he could not escape punishment, he might thereby mitigate it.—Among the property regained was 500 doubloons. The whole was curiously concessed. A considerable part of the balance yet unaccounted for, has, probably, been discipated. sipated.

PIRACY. The English brig Maris, of Liverpool, was esptured in May last, off the coast of Africa by a pic and all of her erew, except two or three kroomen, mur-dered, at once. The kroomen finally escaped. The pirate vessel is a brig, with a company of about 100 men, made up of many nations. This set of the pirates seems to have been in retaliation for a partner-ressel which was attacked from the British ship Primrose, the greater part of whose erew was killed in the fight.

"HONORABLE ACCOUNTABILITY."—The following ar-ticle from the Washington "Globe" of the 22d ult. is in close-keeping with some of the matters stated by Mr. Berrien.—The object of the editor was to account for Mr. Eaton's departure before Mr. B's. replication

of Sir. Lations a separate supposed that an injured man, after appeared:

"Does Mr. Berrien suppose that an injured man, after calling his assailants to an honorable accountability under which they cowered—after having invited them to

Denied by Mr. R.

<sup>+</sup> Insichous INSINUATIONS! † That is, they will see through the insidious INSINUA-

make proof in support of the charges which they propagated by inuendines and artifices—after having given at large his own views of the questions which they brought before the people by their publications, is bound still to stay at Washington city, neglecting his private business, to be baited by the noise and fury of those who will meet no fair or honorable issue? The public does not expect this of major Eaton. Mr. Berrien therefore, is now given to understand, that major Eaton has done with him and the paper war. He will not notice again his public appeals.

sgain his public appeals. "If there he may him, however in the publication of major Eaton, which Mr. Berrien may think wrongs his honor, we feel at liberty to assure him that major Eaton, although he has left Washington, will not hesistate to return to make all proper amends."

From the same of Sept. 27, as extracted from a letter from Baltoner, dated the 25th—the authorship of which

some have ascribed—we know not how justly, to major E. himself:

"Major Eaton is still detained here by the severe indisposition of his lady. Although not yet able to be up, she is convalescent, and the major expects, in a few

days, to resume his journey.
"It is a little surprizing that Mr. Berrien, who was so very willing, at a proper time, to grant the reparation demanded by major Eaton, has not given him notice that the accepted time has arrived. It is presumed that those Like accepted time has arrived. It is presumed in a those whigher datairs" which restrained his chivalreus and willing spirit, are now performed. A lew hours would bring him to this place, and a few lines would show whether major Eaton was in earnest or whether his calls were mere bravado."

EXIGRANTS. The Pennsylvania Register states, that in one vessel lately arrived at Philadelphia from Havre, came 26 German or Swiss families—consisting of the eame 26 German or Swiss families—consisting of the parents, and 103 children of various ages—of whom 25, or 14 pairs, are TWINS; and of these twns six pairs are the production of three families. The following are the production of three families. The following are their ages:—1 pair 6 years—1 pair 10 years (same family)—1 pair 2½—1 pair 4½ (another family),—1 pair 1year—1 pair 4 years, (3d family),—1st pair, 1 male, 1 female—2d pair, both females—3d pair, both males—4th, 1 male, 1 female—5th and 6th pairs, all females. Of the 14 pairs, 5 pairs were all male—5 pairs were female, and 4 pairs were male and female. male, and 4 pairs were male and female.

Three other vessels from the same place had each two pairs, and one other vessel four pairs on board.

REFORM IN GREAT BRITAIN. We have many papers on hand which express an opinion, that a reform of parliament will speedily be followed by other reforms parisment will speedily be intowed by other fellows, yet more important, in the church and state, and a belief is freely given out, that the nobility will be swept away. The fact is, that as other nations fall into the habit of supplying themselves with manufactured goods, and so reduce the monopoly which England has enjoyed, the ability of her people to pay the present heavy rates and duttes is diminished, and the time must come when such impositions cannot be paid. THEN THERE WILL BE BE-The looms of the United States are doing VOLUTION. more to break down the power of Great Britain, than an hundred thips of the line could accomplish. There must be an end to all things, and surely is a limit to

FRANCE. The military availability of France may be, in some degree, appreciated by the late fact, that an aras some negree, appreciated by the fact fact, that an army of 50,150 men was put in motion for Belgram in twenty four hours. Two of the king's sons, as colonels, markened with it. The males of the royal tambly there, will not be respected unless they possess military habits, and take every opportunity to exince them and make a display of personal courage. It is a general saying that "a good heart excuses many errora." In France it may also be said, military grace and prowess will excuse many faults. Not that the king's sons

The king of France was called from his bed by the The king of France was called from his bed by the express from Belgium with the news of the Dutch war. He arose and immediately commenced giving orders for the maintainance of the independence of the new nation.

From Vera Cruz letters have been received slated 16th of August, by a respectable house of this eity, stating that a conducta was on the way from the city of Mexico to Vera Cruz with \$1,280,000, escorted only by fifty horsemen, -a circumstance which proves the per-fect tranquillity enjoyed in the republic. [Phit. Gaz.

FROM BUKNOS ATRES we have an account of the de feat of general Hermosilla-of the death of general Vilfeat of general Hermosills—of the death of general Vil-lafane—of the success of general Quiroga—of the sap-ture and death of colonel Echwarrier—of the surrender of colonel Healed, the father of general Paex—of the resignation of general Eulargue—of the correspondence of general Alvanedo, general La Martind, general D. J. Lopez, and yeneral E. Lopez, and of the federal par-Lopez, and general E. Lopez, and of the jederal par-ty and of the unitarian party—and many other things, shewing the blessings conferred by military rule. We wish to both parties the success of the "Kalkenny eats," that the people may have peace.

CUSTOM HOUSE SEIZURE IN MONTREAL. A Montcorrow House selected in Moratana. Adole-real paper informs us, that a system of fraud which is supposed to have been practised for a considerable time, in bringing goods into Canada from the United States. has lately been discovered. The practical prices much lawer than their more than the property of the property inge quantity of clocks, Mr. were interly series and con-demned to public sale, on account of their having been entered at less than one filth of their value; the propri tor, however, compromised the matter, paid du-ties on the full value, and cost of seizure, and on these

terms was permitted to take possession of his goods.

[The important fact is disclosed in the preceding, that manufactures of the United States are sent to the Canadian market, to contend with British manufactures. ]

APPEARANCE OF A NEW ISLAND IN THE MEDITERRA-The Messager des Chambres, contains an inter-

NEAN. The Messager des Chambres, contains an inter-enting article, of which the following is a translation:— Toward 11 o'clock of the 10th of July, 1831, espirain John Corrao, commander of the brig Therezine, going from Trapani to Girgenti, in Sicily, at the distance of about 20 miles from Cape St. Mark, perceived, at the distance of a gun shot, a mass of water which arose of feet above the level of the sea, and presented a full from feet above the level of the sea, and presented a circum-tersnee of nearly 400 fathous—a smoke proceeded from it, exhaling an odious Fontainet, he had seen a gra-jin the Go and the sea of the sea of the sea of the quantity of deaf fish and black matter floating on the water, and the heard a noise like that of thunder, which interest the sea of the sea of the sea of the sea of the water of the sea of the sea of the sea of the sea of the interest in voge to Grugentij and all the time that he was occupied in lading his ship, he saw a thick smoke rue incessantly from the same point, before which he arrive do in the 16th, on his return from Girgenti. A new appetiacle was then presented to him—annely, a tract of land, of the same circumference as that of the mass of wa-ter which he had remarked in his first passage. This istand ter which he had remarked in his first passage. This island (which we shall call Corrao, from the name of him who saw it formed) is elevated about 12 feet above the surface of the sea; it has in the middle a kind of plain, and the erater of a volcano, whence a burning lava is seen to proceed during the night. The island is bordered by a girdle of smoke. The sounding all around the Island gives a depth of 106 fathoms; its lattitude is 37, 6 N. gives a nepth of 100 tanoms; its ratifude is 37, 9, 3, and longitude 10, 26 from the meridan of Paris. Such is the relation of capt. Carrao himself, who entered the port of Marreilles the 300 hof fast July, has also been seen by several captains going from Malto, and Taganrock to Genos, and the pilots have learnt from a and I againes to tecnos, and the priors have rearn trom a fisherman, that, on the day of the cruption of this vol-cano, he had seen a brig perish, and also a fishing boat, his companion; and that he considered his own escape mrzeulous.

[This island must be the same as noticed from the ship Crawford—some account of which was given in our

#### NILES' REGISTER-OCT. 1, 1831-MR. BERRIEN'S REPLY.

y we are glad to perseive that the contributions; philanthropic institution are in no wise lessened. receipts during the month of August amount to 55 37, including a munificent donation of \$2,000 from a gentleman in the state of New York.

from a gentleman in the state it New York.
In amnouncing this extraordinary liberality, the editor
of the Repository very justly remarks—"What might not
be effected for Africa and mankind, were all our wealthy men to imitate so honorable, so christian, and so splen-

did an example."

Another name is also added to the list of subscribers on the plan of Gerrit Smith, who deserves, and we hope will receive, the lasting gratitude, both of the African and the philanthropist, for being the first to set so noble an example of generosity.

We learn from the Repository, that at a meeting of the board of managers of the American Colonization soeiety, August 19, 1831, on motion of R. Smith, esq. the following preamble and resolution were adopted:

"Whereas, information has been communicated to the board that collections to a large amount have been maile in the western country, and whereas, it appears from the statements of the secretary that the funds of the society will justify an expedition being forthwith made, there-

Resolven, xmarke sum of \$5,000 be appropriated for an expedition from the western states, and that Mr. Finley be authorised to draw on the treasurer for the purpose of fitting out and paying the expenses of such

expedition,"

SMELTING OF IRON. Heated air for blast furnaces has been used for some time at the Clylle iron works, and with great success. Experiments have proved that iron is smelted by hested air, with three-lourths of the quantity of coal required when cold air, that is, air not artificially heated, is employed for that purpose. It is supposed that this improvement will accomplish a saving in the cost of the iron in great Britain. to the amount of 200,000%. London paper.

#### FOREIGN ARTICLES.

The troops of Donna Maria, of Portugul, at Terceira, lately made a descent upon and subdued the island of St. Michael, after some pretty smart fighting. The Miguelitish soldiers had been sent to Fayal.

The London Globe says - Accounts have been received from Warsaw, which state that the Polish government have received, for the first time, an official com-munication from the French government, in which they advise and recommend to the Polish communder-inchief not to rick a general battle with the Russians, and at the same time the French government will make every endeavor to mediate for the settlement of the affairs of Poland. The above account states that 270 pieces of cannon are placed on the fortifications of Warsaw, which is now rendered almost impregnable,

English papers to the 21st August inclusive, have been received at New York. No important events had occurred since our last advices—the following is a brief notice of the chief things mentioned: The Dutch troops occurred since our last survees—are conouring as a size, notice of the chief things mentioned. The Dutel troops had left Belgium, but the Preuch yet remained, because Leopold was learlul of a second invasion. The "Perrier ministry," as was expected, because of the assistance ministry, as was expected, occase of the austinose afforded to Belgium, would remain in office—now having a large majority in the French chamber of deputies. The wheat hartest in England had been a fine one. The reform bill was not yet passed through—the details are difficult and contested. The question of slavery in the West Indice had been touched in parliament—nothing decided. Certain movements of Prussia had, caused ford Palmerston to address a sharp note to the Pr. cabinet. A very good understanding prevailed between France and England. The debates in the French cham-France and England. I he debates in the French chambers had been very writ—but the excitement appeared to have subsided. The movements of the Russians in Poland belrayed a conscious weakness or much inde-Polatio description at Conscious weakness or much muce-cision—no important event had happened, though a great battle was still expected: the Poles do not seem to fear it. A part of the French fleet yet remained in the Tagus—Don Miguel was dungeoning hundreds more

of the unhappy people of Lisbon—he seems fearful of design against his life, as well he may. A good many lives had been lost between the Papists and the Liberals. of the Roman states-the soldiers had divided between the parties: a large body of the troops refused to take a new oath to the pope, and march against the patriots of Romagna,

We have not room for details.

MR. BERRIEN'S REPLY. For the National Intelligencer. THE PUBLIC.

The multiplied mirry presentations which are contained in the recent publication made by Mr. Raton, claim from me a reply. I make it with unaffered rejuctance, well aware that the discharge petition of the waiton abuse of a press, which professes to speak in this matter by the authority of the chief magnirate. No man would voluntarily enter into such a controversy. If I do not shruk from it, it is because I feel that I am called to this act of necessary self-defence, by considerations which I may not be permitted to distregard.

mitted to disregard.

From the pressure of circumstances, which I did not contribute to produce, and had not the power to control, I was some times under the necessity of addressing you. Let me for a moment of the necessity of addressing you. Let me for a moment of the necessity of addressing you. Let me for a moment of the necessity of the necessity of addressing the controverses, which I was bear you may more distinctly understand my present position. I had no agreey in bringing about the dissolution of the late cabinet, and was desirous of avoiding the controverses, which I was bear not weak enough to suppose that the public would stack any paramount importance to the retirement from office of my cohesques and myself; but I was equally assured, and the result has confirmed my conviction, that their just indignation would be charges and myself; but I was equally assured, and the result has confirmed my conviction, that their just indignation would be the selection and dismissal of his cabinst the American people would practically recognize the principle, that the power to constitute the president, to exective his own absolute and amountrelled will, his execution and dismissal of his cabinst the American people would practically recognize the principle, that the power to constitute the president of the common benefit, not under the impulse of personal, and still less of unworthy morites. It was highly impossable, moroever, that the true nature of this transaction could be executed the territory of an intelligent people. The impossable conforced that the territory of an intelligent people. The impossable conforced that the person of the common of the control of the common people would pressed and strain parts of the union, who had mingled in society here, from the time of the union, who had mingled in society here, from the time of the union, who had mingled in society here, from the time of the union, who had mingled in society here, from the time of the union of that cabinet, down to the person of its dissolu From the pressure of eircumstances, which I did not contri-

awoid intrusion upon the public, and equally determined to shan, after an just shift reperce would permit, any of the controvensies which might grew out of it.

When shrinking from the justly apprehended indignation of the American people, it was resolved to put the defense of the American people, it was resolved to put the defense of the American people, it was resolved to put the defense of the American people, it was resolved to put the defense of the American people, it was resolved to put the defense of the people of the government, professing to act by the subscript of the protection that commonly make to give american to a statement which I knew to be surrow. I felt myself called upon by my house testimony to the truth. In the performance of this unwelcome duty, I limited myself to a narrative of the fact, such had been drawn into centrovers, and to a brief vindication was a subscript of the contract of the department of the casting occurrences of the day—time of the casting occurrence of the day—time of the day—tim

been forced upon me, under the avowed authority of the chief magistrate, I have been estimated and authority of the chief magistrate, I have been estimated and authority of the chief magistrate, I have been estimated and authority of the chief magistrate, I have been estimated and authority of the chief magistrate, I have been estimated and authority of the chief magistrate, I have been estimated and authority of the chief magistrate, I have been estimated and authority of the chief which the man may repress, I have at any time been entire of the chief, and that my duty to miself and to maintaining the contrary, he has not presented to them a vatement, wholly contrary the contrary, he has not presented to them a vatement, wholly contrary the contrary, he has not presented to them a vatement, wholly contrary the contrary, he has not presented to them a vatement, wholly contrary to read econdition of this community, in which the region control of the community, in which the region of the comparison of the c same system or estumy, and memore, some prevails it in seed in the nestional government, under the immediate view of his for the memory of the nestional government, under the immediate view of his for expensional control of the con

so to votto, ne emancied on outposition to the delines, without have been also also also also the service of the first source of the offence of which Mr. Eaton complained, with still more conclusively price that this was nempty netace, conceived in the vain hope of deterring no from cryonic that the save of the transaction, which was trapply was that my family many for found to associate with his. When in nature to he desired the control of the simple assertion of that statem mi, my offence comitted in the simple assertion of this fact. Was this a ground, and which to call a man to mental combat! I many offence comitted in the simple assertion of this fact. Was this a ground, and which to call a man to mental combat! I in. I offered no viories to the fact of his rely very clearly price. Why then was the demand mode! It was an idle bravado, the object of which was such into south an answer, as might be a few armed on the field. The creater, I was to act under the influence of this salutary eaution.

tion.

The properties of the p

forth ired all estain to eail upon me, by his previous autoritation to that which he had treated as a no flince, and for which he had received no atonement.

The time sheeted by Mr. Eaton for making this second demand, outpied with the refusal to receive the most conclusive evidence of the control of the

REGISTER—OCT. 1, 18

The 1 looked beyond the immediate agent in this transaction; and was received to disappoint the hopes. If into more than the vindeation and persend by an unseen hand, I lied that I laid the the vindeation and persend by an unseen hand, I thought that the moment had arrived when it had become necessary to exert it. The question to be decided was, whether a system of liavileat the moment had arrived when it had become necessary to exert it. The question to be decided was, whether a system of liavileat in the hand of the h

Mr. Berrien's note to gen. Hunter, enclosing his answer to Mr. Estan. Il ashington, 29th July, 1831.

Sir—The difficulty of meeting in ashington, 29th July, 1831.

Sir—The difficulty of meeting with any person bere who is unconnected the consequence of the control of the carboned letter, induces me to commit it to Mr. Echols, one of my family. Considerations of a domestic nature have percented me from communicating to him its contents. It convert to your address, and instructing Mr. Echols to their the package unity to yourself. I am respectfully, its, your ubedient servant. Tagen. Alexander Hunter.

Mr. Berrien's answer to major Eaton's challenge.

Washington, 29th July, 1831.
Ser: Your note of yesterday's date was delivered to me by gen.

Seri. Your note of yesterday's date was desired to me by genseries. The property of the prop Hunter.

I will waive at this time any observations on the language and

of your conduct, may be enabled at once to see the principle of which you rest your claim to demand satisfaction from size, am having done this, will proceed to explain to you why I will not

of your conduct, may be consequently as the consequence which you rest your claim to demand situlation from mae, more which you rest your claim to demand situlation or reply to it.

You took an early occasion after my return to this place to make the demand which gave rise to our termer correspondence. That was a demand for the art of the consequence of

This letter, which was delivered to a friend of Mr. Eaton, (whosin concequence of general Hunter's indisposition, had been selected to represent him), that freids effoused to receive, and returns to the bearer of it, who, as the public will have seen, was the control to the bearer of it, who, as the public will have seen, was the seen of the control of the seen of the control of the seen of the control of the seen of the s This letter, which was delivered to a friend of Mr. Eaton, (who, which dechands our consideration in that the law of force is openly precisioned at the eart of the installional government—that he who ventures to repel the groundless ealth only a the afficial personaut speak at the period fin life, in the violetission of his none—and if even in self-defence, he shall dare to any sught which none—and if even in self-defence, he shall dare to any sught which may draw into up an into the public conduct of that high fuser may draw into up said to the control of that high fuser is the public conduct of that high fuser is the public conduct of that high fuser is the public conduct of the public conduction of

leged authority it speaks, ne must instanny prepare numers on the combat-tion condition to which we are reduced. It is sitely unavailing to deny the fact; for the evidence is befire our syst-Two separate calls have bern made upon me by Mr. Eaton wishe little more than a month; and the fact that he has, at each time, factered in his purpose, only a rives to reduce more obvious the care not of what party he may be, who will venture to affine are not of what party he may be, who will venture to affine that he had a right; in citiete cose, to make these demands. Why, then, were they made? The official press has, in the mean day, then the second of the second of the second of the efforts to annin hos—sold for what for the mears of syndromia myself, by a simple merative of facts, cacleding all superflows Jine last this community has been repeatedly agitated by runor against them. The public newspapers from all parts of the usion have brought them back to us, and there is no one who is either

so elevated or so humble but, that have reached and penetrated his dwelling. For this disturbance of the quiet of the community—this degradation of the national character, a solemn responsibility resis somewhere. Whatever the delusion of the moment, the time where the two therease is the quee to the continuous resists somewhere. Whatever the delution of the moment, the time will come, and that speedily, when the American people will enforce it. And who has been the principal actor in these scenes, in each case, the moving cause of this disturbance? An individual and intimate intercourse with him. And by whom that the earlier intercourse with him. And by whom that the earlier intercourse with him. And by whom that the earlier intercourse with him. And the flame of discord? These have been the falsors of a press which is necessarily under the control of t to control?

which belong to the civil magnitures? What is that high and emobing feeling which does not permit in positions or to rout to discover the control of the property of the control of the co

to this subject, however, for the purpose of stating the stemp in-precision which exist upon my mutu, that there is a missake as no the time of its occurrence, notwithstanding the abduction of Mr. Branch's letter. I kept no note of this transaction, and cannot therefore speak with positivenes; but my belief is that which I have stated. Mr. Branch will, I preaume, put this matter on its

have stated. Mr. Branch will, I presume, put this matter on its true footing.

Mr. Eaton has made a labored effort to attribute the dissolution of the late cabinet to the intrigues of the peritans of Mr. Cahoun, rather than to the feeling which had been excited by the effort is vain. The public judgment on that subject is believed to be irrevocably fixed. However, under the influence of vaints motives, men may differ as to the character of the act, among the vast majority of the American people, there are few, among the rast majority of the American people, there are few, among the vast majority of the American people, there are few produced our places in the caboret, consistently will our sense the produced our places in the caboret, consistently will our sense produced the produced of the produced of the produced of the produced our places in the caboret character of the subject, produced our places in the caboret character of the set of the produced our places in the caboret character of the set of the produced our places in the caboret character of the set of the produced of the pr

I brieve, who doubt that my rouregues some oneyers migra suretreatmed our places in the cabonet, if, comissionly with our senia
or private, we could have taken a different view of that subcomplete, we could have taken a different view of that subreatment of the complete of the co

and under the influence of what motives, I had determined to his of the suggestion which we are considering demands, however, and therefore the suggestion of the suggestion is represented by Mr. Eaton as my "friend and benefactor," and my conduct a deficient consideration. General Jackson is represented by Mr. Eaton as my "friend and benefactor," and my conduct a dequaintance with general Jackson, other than that which occurred during a few days service with him in the senate in 123, and had usere held any intercourse with him, except during that must have been derived solely from the fact of his having called me to the office of attorney general of the United States; and this is no, doubt the idea, which Mr. Eaton intended to convey. I confers I took a different view of his matter, and I hope gets. I confers I took a different view of his matter, and happe gets. Eaton, nor to consider him in tart hable to the serious impute the control of the supplemental to his present the supplemental to be supplemental to supplemental to be supplemental to the supplemental to be supplemental to the supplemental to be supplemental to the supplemental to supplemental supplemental to supplemental to supplemental to supplemental to

tude. The wishes of general Jackson, in relation to the office of attorney general, were communicated to me, almost simultaneously, by Mr. Braich and Mr. Eaton, in each each, without any sounciation of the names of my intended associates, or of the proproposed policy of the administration. The fact, which will not be denied, that I saked an interview with general Jackson, which was accordate to mo, for the purpose of associationing those parti-

culars as a preliminary to my decision, furnishes a distinct negative to Mr. Eston's assertion, that I announced to him, on the day succeeding that on which he delivered his message, my rea-dings to accept the office which was tendered to me. I did not day succeeding that on which he delivered his message, my rea-dines to neep 1 the office which was tendered to me. I did not in fact accept it until some time after my interview with general Jackson, and recollecting that interview, he I am sure will not verify this assertion of Mr. Eaton.

verify this ascrition of Mr. Eaton.

I must be premitted also to deny the authorship of certain personals, extracted from the Telegraph, which Mr. Eaton injects to me. Exem while I write, a similar and equally insidemalized the telegraph of the Mr. Eaton injects to the telegraph of telegraph of the telegraph of the telegraph of telegraph to return. They have been sketched liantily, and at internal to exemption from various other claims upon my time, but I trust it will be found that I have we ten under the influence of this sample of the sample o

Washington, 23d Sept. 1831.

#### BANK OF THE UNITED STATES.

CORRESPONDENCE BETWEEN SILAS E. BURROWS, ESQ.
AND THE LATE EX-PRESIDENT MONROE.

AND THE LATE EX-PRESIDENT MUSIDE.

Letter from Mr. Burrows.

New York, January 1th, 1831,

My idear sir: Believing myself in your estimation one of those friends whose motives and conduct, since I had the honor of first being acquainted with you, cannot be mistaken, I take the liberty of trespassing on your goodness to obtain information which cannot be as satis-

tactorily received from any other source.

I am sensible our country will be happy in hearing those opinions which emanate from the revolutionary patriot who shed his blood on the battle-field, and who presided for eight years over the destinies of our country, turing which period every blessing was possessed by our happy land. Will you be so kind as to give me your sentiments relative to the effect of the U. S. bank on our national currency, and what your opinion is in re-lation to the renewal of its charter? The situation in which the government was placed without its aid, iluring the last war, ts general advantages in regulating exchange, facilitating the remittances of government and individuals from various parts of the union, and generally its importance connected with the best interests of our country? I mily ke. SILAS E. BURROWS.

Col. James Monroe, late president of the U. S.

Letter from Mr. Monroe. New York, January 20th, 1831. Dear sir: The confidence I have in your rectinade and patriotism, will induce me to give an explicit anawer to the general interrogatories contained in your fetter of the 7th, though I fear that my continued weak state of health will make it less satisfactory than it otherwise might be, especially as I have none of the official documents with me which are calculated to illustrate the subject.

You ask me what is my opinion of the effect which the U. States bank has on the notional corrency, and as to the policy of renewing its charter? - what the situation of the government without its aid during the last war?—what its general advantages in regulating exchange, in facilitating remittances to individuals, and its

general importance?

When the old U. S. bank was first instituted, I was one of those who voted against it in the senate. I doubted the power of the government under the constitution to make such an establishment, and was fearful that the influence which it would give to the government over the moneyed concerns of the union, would have a very improper effect on our free system. The bank was instituted soon after the government was adopted, and at a period when the question of the relative powers of the two governments excited great feeling, and divided the congress and the union into very jealous and violent par-I was of that party which construed the powers

change has since taken place in my opinion, it has been the result of experience, and prompted by a belief that such change would give strength to the system, and not wesken in rinlanger it.

Between such a bank, and any arrangement which the government can make, the adversarive must be between a bank of the government itself, and under its exclusive control, a reliance on its owo resources and surplus lunds, deposited in a mooner to produce the best effect, and a dependence on the hanks of the several states. no hes tation in declaring it as my decided opinion that neither of these could accomplish the great objects contemplated, and that each of them is liable in other respects to the most serious objections. To a bank of the government, this remark is applicable in both views, and with peculiar force in the latter. If confined to the metropoles, it could not extend its discounts beyond a very limited encle, nor its agency as a deposit for the revenue received in the several states—nor tor remittances to individuals-and for other objects it would be equally Limited. Such an institution requires an active supervision by those for whose benefit it is intended. The regular official duties of all the departments in the executive render it impossible for that branch to perform that service without an interference with those duties to the injury of the public. It branches should be established, their position might enable them to re-medy some of the delects stated, but they would accu-mulate others of much greater force. The interference with the constitutional and regular duties of the But that is comparatively a slight evil. A bank thus instituted being under the control of the executive, by the apprintment of its directors, and in all its operations might, in the hands of a had administration, be wielded as an instrument to say the foundation of the government itself. Appeals would be made to the government from every part of the union, for its influence in obtaining discounts, and thus a soluction might be practised to a great extent ber the worst purposes. The influence would be reciprocal. Those connected by such a te with the government would be hooked to lor support at elections, who would not fail in remiter it. revenue of the nation, raised by taxes on the proper abjects to support their free government, might be made an instrument to its overthrow.

The second alternative suggested, a reliance on the surplus tunds, for the accomplishment of the objects contemplated, it must be obvious, must fad in every instance. The revenue of a government is generally linated to certain specifical objects, according to an esti-mate for each, and to which it is appropriated. The fund raised, sometimes falls short of the object. It sel-dom exceeds it in any considerable amount. For the It selwant of a surplus it must lie idle in the treasury until appropriated, and if appropriated as a provision for an emergency, for war for example, it must still lie alle in the treasury, until that event occurs, or be loaned out. It could not lie idle. The whole nation would revolt against it, and il toaned unt, it might be impossible to obtain it when called for, and might even be lost. In this mode, the regulation of the value of the currency, of exchange, and of rendering service, by facilitating remittances, would be abortive. The third alternative which has been suggested, a reliance on the state banks, would be equally improductive. The government would require no ail except in time of war, when immense sums would be necessary, which could be procured only by loans, and when application should be made to them, there is good cause to apprehend that each would cadenvor to obtain the best terms it could, There is no par. ticular bond between them and the national government, and, impelled by their interests and that of the stockholders, it is natural that they should pursue that course. Should such an emergency arise as measured the over-throw of the government, the interest thereby excited might be paramount, and force the banks, under the direction of the stockholders, to unite in a common effort to save the country. But the great object is to prevent such a crisis by a command of funds, which would enable the government to arrest it. In every other object the state of the national government strictly, and sought to im-banks would lad. There being no standard to which all pose on it correspondent restraints. So far as any must adhere, no connection between those of the differernbarrassed circumstances, they would neither regulate

the value of coin, of exchange, nor facilitate remittances.

A national bank occupies different ground. Connectwith the government by its charter, and its capital. which consists of stock, in which the government participates in a certain degree, there is no instance in which, tween them, and many powerful considerations by which eredit of the government in any situation in which it may be placed. If the credit of the stock should sink, the entital of the bank would decline in count degrees the effect of which would be felt in all its operations. Its errect of which would be tell in all its operations. Its paper would depreciate, and a cheek be given to its cir-culation, if not an entire suspension. Standing at the head of the moneyed operations of the government, it is its intermediate agent in making remittances to banks and individuals throughout the union, and likewise between individuals, from which much credit and influ-ence are gained, if not profit. It has the means, and may be considered as the most powerful agent in raising and sustaining the circulating medium on a par with specie throughout the union, and of clevating the state unks to that standard, by subjecting them to the necesentry of reaching and adhering to it, to sustain their credit, and even their existence. Let the credit of the government sink, and all these advantages are lost. The bank therefore, from a regard to interest, is bound to sustain st. . The directors, except the few appointed by the government, are elected by the stockholders, and are smessable to them. It gives its support, therefore, to the government, on principles of national policy, in the sup-port of which it is interested, and would distain becom-ing an instrument for any other purpose.

The view above presented is supported by experience, and particularly by the events of the late war. When the were necessary to support it, and was in consequence forced to resort to loans, which were with difficulty obtained from any quarter, even in a limited degree, and on untavorable terms. I have not the official documents before me, and cannot state the sources from which any loans were obtained, nor the conditions, with the decline of the public credit as the war advanced. I well remember, however, that when I was called by the president to the department of war, on the 31st of August, 1814. the certificates of the treasury were selling at \$50 in the \$100, by which \$20 were lost. It was evident that if a reliance was placed on the sale of certificates only, that a still further decline would ensue, and that the try was invaded through the whole inland and maritime frontiers, and powerful squadrous were at the mouth of every bay and river leading to our principal cities, which were threatened with attack and ruin. The metropolis of our union had been forced, and its public buildings destroyed. Such was the state of the country, and the destroyed. Such was the state of the country, and the funds, when I entered the department of war. Under such circumstances, an appeal was made to the patriotion and interest of the ettics, and banks within them, by the department of war, with the sanction of the president, for loans of money necessary for their own defence, for that it the maritime frontier, and the union. For the first loan that was obtained, one million of dol-lars from the city of New York, which took place a lew days after I entered the department, no price was fixed, As the reasury notes were selling for \$50 in the \$100, that was claimed, but not accreted to. It was left for subsequent adjustment, to be settled on fair principles. Several millions of dollars were obtained from the Distriet of Columbia and principal cities throughout the union, and, according to my recollection, at par. This proves that until the union is threatened with ruin, no oans can be obtained in emergencies, without a national bank, otherwise than at a great sacrifice. These considerations led to a change in my opinion, and induced me to concur with the president in the propriety of instituting such a bank after the conclusion of the war in 1815. As to the constitutional objection, it formed no serious obstacle. In voting against it in the first instance, I was governed essentially by policy. The construc-tion I gave to the constitution I considered a strict one:

ent states, and many of them with limited funds, and in the latter instance, it was more liberal but, according to my judgment, justified by its nowers.

The above sketch contains my sentiments on the sub-ject of your several interrogatories, which I communi-cate to you not for public view, but in a spirit of confi-dence. Since my retirement I have sought to avoid all political controversies. Having concurred with the president in the propriety of instituting the latter bank, president in the propriety of matching the latter bank, my opinion was not withheld, and is, I presime, known, as that it remains unaftered. Should a justification of my conduct for the change of sentiment in the interval between the institution of the first and second bank become necessary, or any other appeal is made, to make it a public duty to explain the cause of that change, I shall not withhold it. I shall be attentive to the course of events, and not fail to perform that duty, should either call be made on me.

I am, dear sir, with great respect and sincere regard, JAMES MONROE. FOUPS

Silas E. Burrows, esq. New York.

### NATIONAL ANTI-MASONIC CONVENTION.

Necessity, in the mechanical department of our business, and the near close of the week, forbils a present insertion of the regular minutes of this convention, with a list of the members attending. &c. - but these are chiefa ratio the members attending, e.c. — on these are chiefly matters for record only, and will not lose any part of their interest by a little slelsy—the people, generally, being chiefly concerned in the result, which shall be stated below. It may be sufficient to observe that about 112 delegates attended-Massachusetts, New York and Penns Ivania being fully represented—that on Monday the 26th, the convention was organized by the appointment of John C. Spencen, esq. of New York, as president, four vice presidents and as many secretaries; and that several committees were appointed, &c .- that on Tuesday, the 27th, various reports of the committees were presented and accepted, and much incidental business attended to-and that, on Weilnesilay, the 28th, WILLIAM WINT, of Maryland, was nominated as president of the U. States, and Amos Ellmaken, of Pennsylvania, as vice president; each receiving 108 votes of the 111 members present—after which, and in conclusion, the following proceedings were land.

National anti-masonic convention, Sept. 28.

Resolved unanimously, That WILLIAM WIRT, of Maryland, be nominated as the anti-masonic candidate for the office of president of the United States at the ensuing election.

Resolved. That a committee of three mumbers be anointed to communicate the preceding resolution to Mr. Wirt, and request his acceptance of the above nomina-

Mr. Rutherford, of N. Jersey, Mr. Sloan, of Ohio, and Mr. Elder, of Pennsylvania, were appointed the said committee.

At the meeting of the convention at 8 o'clock, P. M. the following communication from Mr. Wirt was reecived:

Gentlemen: The unanimous resolution of the "national anti-masonic convention" assembled at this place, nominating me as their candulate for the office of president of the United States, at the ensuing election, is an honor very grateful to me, us a proof of confidence from so respectable a body, and quite as unexpected us it is so reaperable a bony, and quite as unvapered us it is greatful. My pursuity, habits and inclinations, have removed me so far from the political exeitements and contentions of the day, and I know so well, from a close personal observation of twelve years, low little of artestion there is in the office of presentent of the United States, to any man who values his own prace, that it was as far removed from my wishes as my expectations, that it would occur to any portion of my fellow citizens to present my name to the consideration of my countrymen for that office. Not only have I never sought the office, but I have, long since, looked at it with far more of stread than of desire, being fully aware of its fearful responsibilities, and of the fact, demonstrated by past experience, that no degree of purity and intelligence that can be exerted in the discharge of its duties, can protect its possessor from misrepresentation and aspersion,

Give me leave to add, gentlemen, that one of the last quarters from which I could have anticipated such an nonor, is the satt-missionse convention; occause, acopting, (too hastilly, I am happy to find), the current remore of the day, I had supposed that the very principle of your union was a wor of indiscriminate proscription against all persons throughout the United States, who had ever borne the name of manon; that you would put in nomination no person who had ever been a mason timiself, and who would not, moreover, pledge himself to become a party to such a war of industriminate extermination, and wield the appointing power of the termination, and west the appointing power of the office under your dictation; who would not, in short, become the president of your party, instead of being the president of the United States. I am happy to find that this is an error; for I should have been grieved for my country, to see the rise of any party that should affect to seize upon the reins of government, and, through the agency of an automatum president, to direct its powers tu the viadictive purposes of party proscription and per-secution; and I should be grieved, for myself, to learn that there had been any thing in my life and character that could mark me out as a fit instrument for the execution of such a purpose. I am relieved from both these apprehensions by learning, since your assemblage here, that you have no other object in view than, in effect, to assert the supremacy of the laws of the land, that you seek to disturb no portion of the peaceable and virtuous einzens of our country in the enjoyment of those social rights which are secured to them by their constitution and laws, but on the contrary, that the principle which has embodied you, is one of self defence, in the enjoyment of those rights; that having become convinced by the disclosures made under outh, by numerous and re-spectable witnesses, in the trials which have been agitating the state of New York, for several years, and by your investigations consequent on those disclosures. that the masonic society has become a tremendous pothat the masonic society has become a tremendous po-litude lengine, with the power and the disposition to set the law of the land at definine, to mark out and sacrifice the victims at pleasure, and with incomity, and to silcone all individual opposition by the mysterious ter-fore which it diffuses throughout the community, you have come to the determination to root out this noxious institution, il you can, by the use of all the peaceable, legal, and constitutional means in your power; that the most effective means of this character which has presented itself to you, is by the exercise of your elective tranchise; that deeming every man unfit for office, who, in accordance with the principles established on the tri-ats in New York, considers his masonic oaths and obligations as superior to his obligations to the constitution and laws of the country, you will support no man for any office who holds that principle, or adheres to the society whose principle it is; that you consider a man's allegisnee to his country his highest earthly obligation, and that no mon is fit to be trusted with one of the offiees of the country who will permit a sloubt to rest on the fact of his allegiance. These I understand to be your principles, and I see nothing in them which does not commend them to every man whose mind and heart are sound: for there can be no question among reasonable men, that in a free government like ours, the constitution and laws are our only sovereign; that the peace, order, prosperity and happiness of our people depend on the steady, faithful and effectual administration of our laws; that any secret society which, by the force of my sterious outlis and obligations, and by the extent of its combination, seeks to disturb the action of those laws, to set them at defiance, to ride over and control them, to usure the government, to hold the lives, peace and happiness of society at their mercy, and in establish a regal of terror over the initiated and uninitiated, is a political monster as fearful as the *invisible tribunal* of Germany, or the inquisition of Spain, and ought to be extrepated, without delay, by the use of all the peaceable means which the constitution and laws of our country furnish. I am further sure that, in our country, it is but necessary to establish the fact of the existence of such a society to insure its annihilation.

honor, is the anti-mesonic convention; because, adopt-implication such promises and pledges, and it is thereing, (too hastily, I am happy to find), the current rutore proper that is should be perfectly open and eshability with you, that there may be no misappreliension between us, and that you may be able to disembarrase yourselves at once, by changing your nomination, if you find that you have asted under mistake in passing this resolution.

resolution.

You must understand, then, if you are not already apprized of it, that, in very early life, I was myself initiated into the mysteries of free masoury. I have been told by masons that my eyes were never opened, because I never took the master's degree; but my ouriosity never led me thus far—and, although, I soon discontinued my attendance on lodges, (not having entered one even from curiosity for more than thirty years, I believe) it proceeded from rounds in the limit by the same of the control of the control of the same of the control of the control of the same of the control of the same of the control of the proceduce from no suspicion on my partinat there was any thing criminal in the institution, or any thing that placed its members, in the slightest degree, in collisions with their allegiance to their country and its laws. On the contrary, having been before my initiation, assured by a contrary, having been before my initiation, assured by a gentleman, in whom I had implicit confidence, that there was nothing in the engagement which could affect either my religion or politics (which I considered as comprehending the whole range of my duties, eivil and reli-gious, and as extending not to the first degree only but glous, and as extending not to the arist degree only out to the whole masonic order) and being further informed that many of the most illustrious neu of Virginia, with general Washington at their head, belonged to that or-der, and had taken the degree of master, I did not believe that there could be any thing in the institution at war with their duties as patriots, men and christians; nor is it yet possible for me to believe that they could have understood the engagement as involving any such crimi-nal obligations. I have thence forward, continually renal obligations. I have, thence forward, continually re-garded masonry as nothing more than a social and char-itable club, designed for the promotion of good feeling among its members, and for the pecuniary relief of their notigent brethren. I have, indeed, thought very ititle about it for thirty years. It had dropped from my mind so completely that I do not believe I should have been able to gain admittance into any lodge at all strict in their examinations, where I should have had to depend alone on my memory; and so little consequence did I attach to it, that whenever masonry has been occasionally introduced as a subject of conversation, I have felt more disposed to smile than to frown. Thinking thus of it, nothing has more surprised me than to see it blown into consequence in the northern and eastern hat the sea a political engine, and the whole community excited against it as an affair of serious importance. I had heard, indeed, the general rumour that Morgan had been kidnspped and very probably murdered by masons, for divulging their scerets: but I supposed it to be the set of a few ignorant and ferocious desperadoes, moved act of a lew ignorant and ferocious desperadocs, moved by their own impulse singly, without the sanction or knowledge of their lodges; and thus thinking. I have repeatedly and continually, both in conversation and letters of friendship, spoken of manny and anti-manner, y as a fitter subject to faree than tragedy, and have been grieved at seeing ionne of my lriends involved in what appeared to me such as a latinuities. If a subject is under the subject of the subject is a subject to the subject in the subject is an extension of the subject in the subject is subject to the subject in the subject in the subject is subject to the subject in the subject in the subject is subject to the subject in the subject in the subject is subject to the subject in the subject in the subject is subject to the subject in the subject in the subject is subject to the subject in the subject in the subject is subject to the subject in the subject in the subject is subject to the subject in the subject in the subject is subject to the subject in the subject in the subject is subject to the subject in the subject in the subject in the subject is subject to the subject in the subject in the subject is subject to the subject in the subject in the subject is subject to the subject in the s persecution against so harmless an institution as free-masonry. I have thought and repeatedly said that I considered masonry as having no more to do with politics than any one of the numerous clubs so humorously celebrated in the Speciator; and that with regard to the erime on Morgan's case, it was quite as unjust to charge that on masonry as it would be to charge the private delin-quencies of some professing christians on christianity itself. Thus I have thought and thus I have continually acti, I have thought and thus there continuing another and written in my private letters to several of any lriends. It was not until the period of your assembling here, that on the occasion of a friendly visit from one of your members, and my taking the liberty to rally him on the excessive zeal which had been excited on an occasion so inadequate, that he placed before me a detail of some of the proceedings on the trials of the conspi-rators against Morgan: when, for the first time, I saw Burgenilemen, although your resolution asks of me of the discussion of the mason on the an established by the testimony both of convention from which it proceeds, the anii-musenic convention, may be considered both by yourselves and our fellow eitzens, at large, as necessarily involving by will aid and assist a companion royal arch mason in disthe masonic oaths as catablished by the testimony both of adhering and seceding masons on the trials in New

from the same, if in his power, whether he be right or wrong, and that he will conceal the secrets of a compamion royal arch mason given him in charge as such, mur-der and treason not excepted; and in other oaths, in still higher degrees, I also observe that the candidate binds himself to avenge the violated secrets of the lodge by the infliction of death on the offender, and to revenge the wrongs of a brother to the utmost extremity; and the whole mixed up with the most horrible imprecations and blasphemous mockeries of the rites and tenets at the christian religion.

In the details of the trials in the case of Morgan it became manifest that these oaths are not considered by those who impose and take them as mere idle and unmeaning words; but that they are viewed as solemn obligations which are to be practically enforced, and which in the case of Morgan there is too much reason to bein the case of morgan there is too much reason to be-lieve were tragically enforced. According to the re-ports of the details of that trial as given at some of your former meetings, and given at greater length at your meetings in this city, (at one of which, in common with other estizens, I was present), those oaths are understood literally, and literally enforced; and, according to the exhibition of the evidence made in those reports. the conspiracy against Morgan was not, as has been commonly supposed, the act of a few Ignorant nees, alone, but was engendered in the lodges themselves, entered under their direction and supported at their expenses the conspiracy embracing, within its sweep, men of all degrees, men of the learned professions, far-mers and mechanics; with too much reason to believe mers and meenaniss; with too much reason to believe that the secret energy of the massine apirit had entered and polluted even the temples of justice; and with the most demonstrative proof that the persons who had en-tered into these anhallowed oaths, considered their altered into these anhallowed outlis, considered their al-legiance to the lodges so of higher obligation than their allegiance to the laws of their country. If this be ma-sourry, as according to this uncontradicted evidence is seem to be, I have no hesitation in saying, that I consider it at war with the fundamental principles of the social compact, as treason against society, and a wicked conspiracy against the laws of God and man, which ought to be nut down.

But gentlemen, this was not, and could not be masonry as understood by Washington. The thing is impossible. The suspicion would be parricide. Nor can I believe that in the quarter of the union with which I am best acquainted, intelligent men of high and honorable character, it they have been drawn in to take these shocking and if they have been urawn in the three mixeding aminpions oathis, can consider them as paramount to their dutes to their God and their country. It is true that after the practical exhibition of manonry which we have had in New York, no man of common prudence can been over these discoveries, and will take care in every seep over these discoveries, and will lake earl in every sease of doubt to inquire. But both justice and prudence demand discrimination: for the powers of a president ought not, in my opinion, to be prostituted to the pur-pose of a blind and unjust proseription, involving inno-cemee and honor with guilt and treason, and no man is worthy of a nomination to this high office in whose judgment and patriotism, confidence cannot be placed to make the proper distinction between them. 'In the view of all honorable men he would deservedly become an object of disgust, if he could stoop to commit himself by any pledges, in a case like this, as the price of his

If with these views of my opinions, it is the pleasure of your convention to change the nomination, I can asure you very sincerely that I shall retire from it with for more pleasure than I should seeper it. If, on the contrary, it be their choice to abide by it, I have only to add, that in a government like ours, I consider no citizen at liberty to reject a nomination by so respectable a body, upon personal considerations.

Be the final determination of your convention what it may, I shall ever retain a grateful sense of the honor conferred on me by this nomination, and I beg the antimasonic convention to accept the assurance of my re-Peet for them and for their cause. I do not address them as a party, because I understand the principle of Srn,—At a convention of the anti-massion members their usion to be, to assert the suprement of the lawer; of the lawer; of the suns as and the principle of the sends and house of representatives of this com-

tress, and espouse his cause so far as to extricate him which I trust is and ever will be the sacred and immutable principle of our common country. WM. WIRT.

Mesers, Rutherford, Stoan and Elder, committee of

the national anti-mosonic convention.

Baltimore, Sept. 28, 1831. The communication having been read, the following

resolution was adopted;

In the national anti-masonic convention,

Baltimore, 28th September, 1831.
Resolved unanimously, That the answer of the hon. WILLIAM WIRT, to the resolution of this convention, nominating him as a candidate for the presidency, be entered on the minutes of this convention, as part of its proceedings, and that this convention recommend to their fellow citizens throughout the United States, a cordial and vigorous support of Mr. WIRT, at the next election, as the anti-masonic candidate, for the office

of president of the United States. Resolutions of similar purport were unanimously dopted by the convention, nominating Anos ELLMAKER, of Pennsylvania, as the anti-mesonic candidate for the office of vice president of the United States: And, for the appointment of a committee to announce to him the nomination.

At the meeting of the convention, at 8 o'clock P. M. the following communication was received from Mr. Enwayer.

Baltimore, September 28, 1831.

Mesors. John Baily, John S. Shriver
and Samuel P. Lyman.
Gentlemen:—I acknowledge with much satisfaction the friendly manner in which you have communicated the two resolutions this day adopted by the national anti-masonic convention: one, nominating me as the anti-masonic candidate for the vice president of the United States at the ensuing election; the other, appointing tion to me and to request my acceptance of the nomina-

I know well, my humble pretensions to be a candidate for that high office. But a zewlous and firm ata refusal of the nomination. I, therefore, accept it.

With great respect, I am, gentlemen, your obedient

The communication having been read, a resolution of like import with that above set forth in the case of Mr. Wirt, was unanimously adopted by the convention.

The convention then proceeded to the transaction of other business connected with the objects in view.

Mr. Helley from the committee charged with that duty, reported an address to the people of the United States, which was read and unminimustly sulopted, and ordered to be published. This address though occupying upwards of an hour in the reading, was listened to with the most profound attention by the authenes. Several members made pertinent and able speeches in which they spoke of it in warm and glowing terms, com-plimented the anthor on the research and ability thereu disulaved.

A resolution was offered by Mr. Phelps of Mass. and adopted, recommending a national anti-masonic conwention to be held in September, 1835, in the city of Washington, nuless otherwise ordered by the central committee of correspondence.

A vote of thanks was passed in favor of the central

A vote of thanks was passed in favor of the central committee of correspondence, and for the continuance of their appointment till after the next presidential election. A resolution was unanimously adopted thanking the president of the convention for the ability and impartially displayed in the discharge of his duties, to which he responded in an eloquent and feeling address. A vote of thanks was also passed in favor of the other officers of the convention, for the prompt and able manner in the state of the convention, and the state of the convention and the state of the state of the state of the convention and the state of the s About 12 at night, the convention adjourned sine die.

ANTI-MASONS AND GOV. LINCOLN.
From the Boston Free Press. Boston, Sept. 6, 1831.

monwealth, hoblen at the state house in Boston on the evening of the 17th of June last, it was recommended by resolve to the state anti-masonic committee of sachusetts, to call a convention at such time and place and in such torm as to them shall seem expedient, for the purpose of nonmating candidates to be supported

unti-masonic party at the gubernatorial election in November next.

The subject thus submitted to the undersigned conmittee, necessarily involves high and very delicate re-suonsibilities. The Irankness of your character, and suonsibilities. your known republican principles are a sure guarantee, that you will not withhold from the people an explicit avowal of your sentaments, on all subjects where their

rights and liberties are concerned. You are aware that for five years past, disclosures have been made of the nature and principles of freemusonry, calculated to excite astonishment and alarm among a free people. These disclosures have occupied the attention of rations state legislatures, of numerous county and state conventions and of one convention of cleven states of this union. About sixty members of the fraternity have been indicted, after the greatest difficulties, for crimes of the most adious character. These supposed criminals have untiall been arraigned. tave been brought to the courts of law; but not Freemasonry occupied the seat and justice

s no longer there!

The same masonic government, the same oaths, obligetions and penalties, which occasioned these wrongs in a seighboring state, exist with equal authority and borce in this commonwealth, and so long as freemasons sill adhere to them, the community is not sale. Antimusous there fore me frank to avow their sentiments. They believe the existence of freemasonry to be daugerous to liberty, injurious to morality, detrimental to religion and wholly incompatible with our free institu-tions. They wish, by peaceable, lawful and honorable means, to destroy the masonic institution, and not to injure free masons; but to bring them, as men and good eitizens, back to their country.

The means they propose are free and public discussion—the truth and nothing but the truth, published and circulated on the subject of masonry and anti-ma-soury—and the use of the ballot box. But their sufferages cannot be given merely for the honor or profit of any anti-mason. They have much higher objects in view in the use of the hallot bux. In addition to supplying the most soitable men, for the various offices of government, it is to hold up the subject of masonry at every election, until public sentiment shall decree its annihilation.

The profound respect and personal regard, entertained for yourself by the auti-masons of Massachusetts, now increasing in a ratio unperalleled in the history of parties, induce the undersigned, in their behalt, to solicit, at least a brief expression of your sentiments, in reply to the following questions, with permission to use the same in such manner as may be deemed advisable.

Do you consider freemasonry a positive evil?—And if so, are you slisposed to unite with the anti-masonic party in the use of peacesble, lawful and honorable means to be used to the state of the second of the seco not inconsistent with the station you now occupy, in order, to free our country from the dominion and influence of freemasonry.

Your compliance with this request as soon as your convenience shall allow, will confer renewed obligations սրսո,

Sir, very respectfully,

your kilow citizens,
ABNER PHELPS, WM. MARSTON,
GEORGE ODIORNE, DANIEL WELD, JACOB HALL, JOHN D. WILLIAMS, BENJ. V. FRENCH, JOHN P. WHITWELL HENRY GASSETT, BENJ W LAMB.
THOMAS WALLEY, JONATHAN FRENCH

HOV. LINCOLN'S ANSWER.

Horcester, September 13, 1831. GENTLEMEN-I hool not the honor to receive until the the 10th inst your letter, under date of the 6th, and I have to regret, that in addition to this delay, the pressure of antecedent engagements has not permitted a

more prompt reply to the interesting matter of its con-tents. The great respect which I sincerely entertain towards those who have addressed me, among whom I have the pleasure to recognize political and personal friends, some of whom have had opportunity, heretofore, of knowing intimately my opinions upon public subjects, and of closely observing the course of my offiand deliberate consideration to any subject, which they may deem worthy of formal communication.

our letter contains an expression of the opinions of the anti-masone party upon the character, influence, and tendency, of the institution of free-masonry, and conveys information of the proceedings of a convention of the anti-masonic members of the senate and house of representatives of this commonwealth, with a disthe thinstion of your own views, in reference to the guiternatoral election in November next, and concludes with a request for "an expression of my sentiments in reply to the following questions, with permission to use the same in such a way as may be deemed advisable

"Do you consider freemasonry a positive evil? And if so, are you disposed to unite with the anti-masonie party in the use of peaceable, lawful and honorable means not inconsistent with the station you now hold. in order to free our country from the dominion and in-

fluence of freemasonry?"

Before considering these precise interrogatories, I beg are proposed, as the occasion of much embarrassment, by placing me in a situation of peculiar delicacy, expressed, at least, in wintever way I may treat them, to messpiechension, and possibly even, to ungenerous and pamini suspicion. It connot be unknown to you, that at a convention of members of the legislature, in the month of June last, I was nominated for re-election, which on June 1831, I was nonmined to recreation, which is nomination was then accepted, and that I now stand in the attitude of a cambilate for the public suffrage.— Having been brought into the high office, which I have the honor to hold, and been thus long sustained in it by the favor of my fellow citizens, without the slightest personal effort to procure either its original bestowment, or subsequent continuance, except in earnest endeavors faithfully and acceptably to discharge its duties, I can never consent to dishonor the station by making it the object of private solicitation, compromise of principle, or of committal to the arrangements and purposes of any party. If pledges for the future course of administration are now to be required of me, they will be given, by reference to former frank and explicit avowals of opinion on all known subjects of public moment, and to the character of past measures of executive action, rather, and better to be relied upon, than protestations and professions in view to a nomination to office, which can be brought to the test only in the event of a favorable issue to an election.

The subject of speculative freemasonry has never yet required the official cognizance of the executive department of this commonwealth. Neither that, nor its onposite, in any instance, hitherto, has been obtruded upon the counsels of the state. With the former, it is well known, I have repeatedly disclaimed any association or symmethy, and the influence of the latter, as a motive to political and official action, has been as little felt in the administration of the government. Wih this state of things, I have reason to believe the great majority of my tellow citizens have, thus far, been content. But your letter, if I misrake not its import, suggests, in this respect, a new position for the executive to assume. the reference made by you to the ballot box, and the avowed determination to carry the subject of freemasonry into our political elections, accompanied with the information that a convention is yet to be called for the purpose of nominating candidates to be supported by the anti-masonic party, at the gubernatorial election, there is a distinct admonstrion, that these candidates are to be selected with regard to their anti-masonic opinions, and that the honor of your support will be bestowed upon those only, who would give the influence of office to the incommend a party, professedly organized for the promotion and success of internations. Under such circumstances, with what propriety I could comply with any requirement, as a precedent condition to my own nomination, I humbly and respectfully submit in your-selves, in the exercise of a spirit of liberality and con-

dor, lo consider.

If therefore, in answer to your particular inquiries, the fact of my entire freedom from any connexon, at any and at all times, with the institution of freemisours; if the most vigilant and cantious watchfulness to ifiscover and guard against its attempted or supposed influence or bias in the administration of the government, a belief that the institution is wholly unnecessary and uscless to the objects which it professes, and from its secreey, is easily susceptible, under the direction of had men, of being made an instrument of much mischief to men, or neeng mane an instrument or ment urbeing in the community that its initiatory rice and my sived co-remones, its obligations and penalties, in their form and manner as now descend and published, are justly re-prehensible and offensive; the opinion that all extra judieisl arms are unlawful, and that any engagement which y conflict with moral principle, or is meansistent with fidelity to the state is, in itself, immediately and absolutely void,—if the deepest abhorrence and reprobation e tragie seene acted in a neighboring state, and equal regret and indignation that the instigators, agents, and abettors in that foul deed of sceret murder, the accessaries before or after the fact, whoever they may be, and however associated, have been able, litherto, triumphantly to deride the demands of justice and e-e-pe supposantly to derive the demands of instead in elega-merited conviction and punishment,—if these opinions and sontiments long entertained, and at all times treely expressed, are not satisfactory. I have nothing further to offer. I have neither professions nor significant to to offer. I have neither professions nor stipulations to make for the present occasion. The administration of government should never be identified with the measures of party. Smeerely and carnestly as I desire the dissolution and extinction of the just dution of free masonry, and greatly as I should rejoice in the voluntary abandonment of it by its members, from a conviction, that, at the best, in its character of secreey and my stery, it is obnurious to the spirit of republican justiousy, and has become the occasion of alarm and apprehension to many good and intelligent minds, and of excitement, division and dissentions among the people. As the chief magistrate of the commonwealth, I can unite myself with no combination of men, in means for its suppression. Neither can I consent to carry the controversy which exists on the subject, by the appeal of one portion of my fellow citizens against another, slike my constituents, into the chair of state. Believe me, gentlemen, this would be doing violence to the best interests of the community. It were indeed monstrons to doubt, that among masons there are loyal entizens and true hearted patriols, men who, although adhering to the eraft, bear yet greater love to their country, to whom the mystic tie never suggested the possible violation of a moral principle, and who would not recognize an obligition meansistent with the performance of every socal and civil duty. When to this character is a talents and pre-eminent qualifications for usefulness, the people have a right to the services of such men in office, of which they are not to be deprived by the application of a princy-le of exclusion unknown to the

While I remain in the administration of the government, I shall endeavor steady, imparially and Independently, to pursue the great interests of the commonwealth, not suffering my self to be entarghed in counce; now with any party, but seeking the advice and grateful for the aid of the intelligent, the discrete, and the patriote of all parties. If in this, I do not practically adopt the opinion, expressed in your letter, lett "our commry," is under the abunium and influence of freemanonry," and the third properties to that other sentiment, that, first may be absentice to that other sentiment, that, for the properties of the other sentiment, that the other sentiment of the other sentiment, that the other sentiment of the other sentiments of the other sentiments of the other sentiments of the other sentiments. I cannot divirus the fielding of a numerous class of my fellow entreens, nor see elsewhere, in the errors and strens of a few misgailed, deluded, wrethed men, et-

dence of the degradation and servitude of the nation.

For the very llattering assurances of respect and persoual regard entertained towards me by the anti-masons

of Massachusetts, which you are pleased to express, I beg you to needen my grateful acknowledgements. These continuous more production of the continuous continuous more production of the continuous more production of motive and single-news of purpose, I have devoted the best of my lumble abstitute impartially to the services of all my fellow eitigens in the duties of the station which their numerical layor conference upon me.

I have the honor to be, gentlemen, with the most respectful consideration, your obedient servant.

prectule consultration, your obesteed servant.

1.EVI LINCOLN.

1. P. White ell,

George O-Jacene,

Jacob Hall,

John D. William S.

Benj, W. Lamb,

Benj, W. French,

Buy, V. French,

Jano, French, cyojeres.

The "Boston Patriot" with reference to the pre-

ceding correspondence, says: We place in our columns to day an interesting correspondence between governor Luncalu and the state antimasonic committee for this commonwealing troversor Lincoln was addressed by the country our the arowed object of obtaining his views of auti-mesonry. withstanding the delicacy of his present saturation ing the camtidate of the national republican party for re-election as governor-he has not declined to answer the questions addressed him; but has lrankly declared his unfavorable opinion of "speculative free-masonry."und as frankly has expressed his determination but to be made the leader of a crusade of political extermination against those who conscientiously differ from him in this opinion. His letter speaks the language of an honest and independent stateman. We hope it will be enre-inly and generally read; for we believe it will give gov. Lincoln a new and lasting claim to the confidence of his constituents. Anti-masous, at least those who do not expect from the governor any thing "inconsistent with the station he now occupies"-we should suppose would be satisfied with it.

An anti-insumic convention is summoned to be held in this city, October 4, for the purpose of nominating candidates for governor, &c.

And the "foston Gazette" observes—The letter of governor Lincoln, we understand is not satisfactory to the anti-masonic state committee, who have notified the serveral county cummittees to meet in convenion, in this city, on the 4th of October next, to nominate a candidate in opposition to him. Licenteenst governor Winthrop, if is said, has sent the committee a letter which they consider highly satisfactory; be will probably be nominated for re-election as in anti-masonic candidate. How, Samuel Lathrop is spoken of as the anti-masonic candidate. How, Samuel Lathrop is spoken of as the anti-masonic candidate to the office of governor. Mr. Merrick of Worcester, general Hoyt, and some other gentlemen, are also named for the same office. We shall have warm work in November.

#### MEXICAN REPUBLIC.

We are glad to see by the following, that this long and much distracted country, has a present prospect of internal peace. Let the generals become farmers, and manufacturers, and all will be well.

The national congress convened at the capital on the 1st August. The session was opened by a speech from the vice president Bustannute, as follows: Fellow-ciazens, deputies and senators:

The circumstances under which the ordinary assign of the present year was opened, required that the stitution of congress as well as that of government should be fixed exclusively on the discussion of the measures, which, having for their object the re-establishment of peace, should have been considered of absolute proference. Now that this great and important end is obtained, the exceutive, with the advice of the council of government, calls you to a new task, and presents for your enlightened telebration though substitution to the taken into consideration, and which on account of their trigency and importance I amounteed to you at the time that the convection of an extraordinary season would be indispensable.

Therefore, gentlemen, you will have to occupy your-selves with the ratification of the treaties enhalled with several powers, which treaties, while they confirm to the republic the degree of consideration which it is entitled to among the sovereign and independent nations, establish our foreign relations by the solemn recognition of our polical existence.

Many branches of the internal administration will claim equally your attention, whether it be the improvement of the public treasury, and the administration of justice, or the advancement of industry, or finally, the regulation

of the army and navy.

The nation finds itself at this day in a state to unfold all its elements, so as to arrive in a short time at that prosperky which it is promised with, by its situation, its cli-mate, its natural wealth, and the liberty of its institu-tutions. All nations that have been wearted with repeattutions. All nations that have been wearted with repeated ectamotions, of which, infortunately, we have not been exempt, have confessed that the happiness of a nation is not enjoyed without the strict observance of the is as, and a due respect to the constituted authorities; a and a operience has taught them that the excesses of demagogues are no less ruinous than the oppression of tyraney, and that order and moderation only, secure the general good of societies as well as the particular happiness of its individuals. Encourage, gentlemen, these excellent dispositions with the wistlom of your measures, and the Mexican people will ere long be the most happy of the universe.

#### FIRST LAW AGAINST SLAVERY.

The following document is said to be the first act of any government designed to prevent enslaving the negroes. It was recently copied by the venerable Mosee Brown, of Providence, from the records of the colony of Rhode Island, and inserted in a Providence paper. It does great credit to Rhode Island,

"At a general court held at Warwick, the 18th of May, 1652.
"Whereas there is a common course practised among

Englishmen, to buy negroes to that end they may have them for service or slaves forever; for the preventing of such practices among us, let it be ordered, that no black manked or white being shall be forced, by covenant, bond, or otherwise, to serve any man or his assignees longer than ten years, or until they come to be twen-ty-four years of age, if they be taken in uniter fourteen, from the time of their coming within the liberties of this colony—at the end or term of ten years to set them free, as the manner is with the English servants. And that man that will not let them go free or skall self them away elsewhere, to that end they may be enslaved to others for a longer time, he or they shall forfeit to the colony forty pounds."

To the credit of the members that enacted this law

says Mr. Brown, I subjoin their names from the re-

The general officers were John Smith, president: Thomas Olney, general assistant, from Providence; Samuel Gorton, from Warwick; John Green, general recorder; Randal Holden, treasurer; Hugh Bewett, general sergeant.

The commissioners were from Providence,-Robert Williams, Gregory Dexter, Richard Waterman, Thomas Harris, William Wickenden, and Hugh Bewetterom Warwick, Samuel Gorton, John Wickes, John Smith, Randal Holden, John Green, Jr. and Ezekiel Holliman.

"NEGRO COLLEGE."

From the New Hawen Pallodium.

Our readers, no doubt, will be surprised at the caption of this peragraph, and will wonder what we mean by "Negro College."

The surprise of the surprised and the surprised surprise of the surprised surprised to the surprised surprised to the surprised surp

and I. H. Townsend, esqrs. and adopted by about 700 freemers. The rev. S. S. Jocelyn and three others opposed, and voted against them.

Incem.
At a city meeting duly warned and held at the city hall, ire the city of New Haven, on Saturday, the 10th day of September, 1831, to take into consideration a project for the establishment in this city of a college for the education of celered postly, the following presemble and resolutions were unanimously

adopted, viz: adopted, viz. 

Mercare endearors are now making to establish a college in this city for the education of the colored population of the United States, the Vest Indies, and other countries adjustent; and in constitution of the United States is not only recommended and encouraged by the advocates of the proposed college, but demanded as a right and whereas an omission to notice these measures may be constructed as implying either indifference to, or approbation of the

strond as implying either induference to, or approbation of the same: etc. That it is expensed on these surjosses, and that should be expressed on these surjosses, and that the calling of this meeting by the major and alderment is seenly approved by the citizens of this place.

Reasteed, That insummed in other state, depends on the reasoning place and the state of th

Therefore, resolved, by the mayar, aldermen, common council, and freemen of the city of New Haven, in city meeting assembled, That we will resist the establishment of the proposed college in

That we will resist the estautsmean.

\[ \lambda And on motion it was voted that the proceedings of this meetnig be signed by the mayor, and countersigned by the clerk, and
published in all the newspapers of this city.
\[ \text{DENNIS KIMBERLY, mayor.} \]

Elisha Munson, clerk.

## From Poulson's American Daily Advertiser.

Tem Fouton: American July Advertuer.

The undersigned, agent of a commission of delegates, representations the state of th

contradict the mirepresentations, and deny the principles, propared dirugals the everal papers, by an extraordinary public and direction of the control of t

estigens of this place, during a few weeks to come, to receive their expersion of good wishes and friendship to our brethers of color, and the institution in which they are engaged.

Confident that the authorities of New Haven have no rights Confident that the authorities of New Haven have no rights the college in that place, yet as friends to crace and possible of the college in that place, yet as friends to crace and confidence of the received of the recei

# THE NEW OLIVE BRANCH.

THE NEW OLIVE BRANCH.

TO THE CITIENS OF SOUTH CAROLINA.

"The power to impose duties on imports originally belonged to the series is active to end to the desired of the d

tion of manufacture.\(^{3.5}\)-From Mr. Calkenn's speech in support of the minimum valuation of cettin goods.

"The home trade, consisting in the exchange of agriculteral productions for stricted of manufacture produced in our own country, will far a long time to come, furnish the safest and least dangerous—the least expensive, and the least insmostin-the most progrous—the least expensive, and the least insmostin-the most provided and accumulate the safestion of those whose prosperty is dispersed in foreign countries—whose interests are connected with foreign interests, and whose capital is but persially invested at the place of their domicils\(^{3.5}\)-Judge Cooper's preface to the Emperium—1813.

#### FRIENDS AND FELLOW CITIZENS:

Among the most alarming circumstances attending the effervescence to the south, is the fact, that a large portion of the most decided supporters of the union and enemies of nullification, and its counterpart, a dissolution of the unlon, with all its attendant horrors, are firm believers in the unconstitutionality of the protecting system, and appear to require its en-tire abolition. Should the total repeal of the protecting system, on the ground of its unconstitutionality, be a sine que non with them, as it appears to be with the nullifiers, all hopes of a compromise and the restoration of a good understanding on the subject, are at an end. Were the question at issue, the quantum of protection necessary to support our manufactures, a spirit of compromise might probably remove the difficulty without much trouble. But the middle, eastern, and western states cannot, and will not, give up the system. It would produce general ruln among them. For the sake of harmony, the protecting du-ties may be modified, and some of them greatly re-duced. Many of them are injudicious, and some of them oppressive, even to the manufacturers them-selves. This is partly, and I believe I may say chiefly, owing to the enemies of the system, who, parti- ed in probably from a dozen to twenty instances—

cularly in 1828, in the hope of defeating the tariff enacted in that year, loaded it with so much dead weight, as they hoped, would render it so obnoxious to its friends, as to induce them to reject it. In this refiged Machiavelian policy they were grievously disappointed.

It was hoped, and believed, that the mass of evidence advanced in support of the constitutionality of the protecting system was so conclusive that no person, not incurably prejudiced, could withstand it. And it is deeply to be lamented that those hopes, apparently so rational, have not been realized.

It is truly remarkable that in opposition to the unquestioned practice of the government for thirty-five years-to the recommendation of five presidents-to the decided opinions and practice, not only of some of the illustrious men who framed the constitution, but of others who are regarded as oracles by the south, (e. g. Mr. Lowndes and Mr. Calhoun, both advocates of the protecting system) there has not been a single substantial argument advanced. It is gravely stated, that the power to regulate commerce, given to con-gress by the constitution, does not imply a power to destroy commerce. When this position, on which so much stress is laid, is admitted to the fullest extent, what does it prove? What bearing has it on the question? To render it any way available, it would be necessary to prove that the protecting system destroys commerce: whereas a reference to the proper documents will prove that our commerce and navigation have been regularly increasing, notwithstanding the galling prohibitions and prohibitory duties to which the most of our staples are subject in Europe, which receives little or nothing from us, but what it cannot dispense with.

To the evidence I collected on this subject, and published in 1826 and 1830, I can add little or nothing. It appears full and conclusive-and therefore I shall once more, with such improvements as have since occurred to me, respectfully submit it to the calm consideration of the public. I trust that no apology is necessary for the republication, as the changes are rung daily on the opposite doctrine, without the pretence of any novel reasoning.

I proceed to prove the want of foundation of the

unconstitutionality of the tariff:-1. By the uninterrupted exercise of the power of

protection from the year 1789 till the year 1828 inclusive, a period of forty years, during 35 of which it 2. By the utterly erroneous logic of the chief. I

might say the only argument on which the charge of

unconstitutionality rests.

3. By the explicit recommendation of five presidents, Washington, Jefferson, Madison, Monroe and

4. By the replies of both houses of congress to some of those recommendations.

5. By the advocacy of the system in the congress of 1789-90, by some of the first men this country ever produced, among whom were some of the most enlightened of those who framed the constitution, and whom it would be the height of absurdity to suppose ignorant of the mesning of the instrument they were four months maturing.

6. By the votes of men of high standing in the congress of 1816.

1. The uninterrupted exercise of the power.

To the second act passed by the first congress, July 4, 1789, was prefixed an explicit annunciation of the power in question, in these words:-

power in question, in these words:—

where the power is the United States, and the encourage ment and protection of manufactures, that duties be ind on goods, wares and merchandise imported that intervened from that day until the year 1828, this power has been exercisi-

and until the year 1824, no doubt was ever expressed | on the subject, by any of those powerful members of congress who opposed many of the details of the system as inexpedient, some of whom were deadly hostile to it, under the idea of its being injurious to their

At the expiration of 35 years, a new light sprung up on the subject. Col. Hamilton, in the session of 1823-4, presumed he had discovered the unconstitutionality of the training of the state. tionality of the tariff, on finding that a proposition brought forward in the federal convention to authorise congress to encourage manufactures by "bounties," had been rejected-and as bounties and protecting duties produce the same effect, ergo, a duty for protection was a bounty!!! and the rejection of the proposed power of granting bounties clearly implied a similar rejection of protecting duties!!!

This logic goes to destroy precision in language. It cannot be sustained. The question might be submitted to a committee of the first philologists in the British dominions, er in the United States, and it would be scouted unsnimously by the whole of them. If a protecting duty be a bounty, because it produces the same effects as a bounty, then we might say a horse is a camel, and a camel a horse—a stage-coach a phaston, and a phaston a stage-coach-a common dwelling house a palace, and a palace a common dwelling house—a merchant vessel a man of war, and a man of war a merchant vessel—for in the first cuse, both animals are beasts of burden-in the second, both vehicles serve for the conveyance of persons -in the third, both buildings serve as habitations for human beings-and in the fourth, both are formed for navigating the seas.

Considering the splendid talents of col. Hamilton, this kind of logic was not to have been expected from him. It belongs to barristers of a different class, who are not to be mentioned the same day of the week

with col. Hamilton.

III. Presidential recommendations. General Washington's speech to congress, of Jan.

"The adrig and interests of a free people require that congra-"The adrig and interests of a free people require that one inde-should promote such manufactures as tend to cender them inde-should promote a product of the contract of the con-"The advancement of activation and the contracted and manufac-tures, by all proper meant, will not, I trust, Deed recommen-tures, by all proper meant, will not, I trust, Deed recommen-1790, declares that-

Again-His speech of December, 1796, explicitly

holds out the same doctrine:olds out the same upertine. "Congress have repeatedly, and not without success, directed their "Congress have repeatedly, and not without success, directly of manufactures. The object is of "Congress have repeatedly, and not without success, affected their attention to the encouragement of manufactures. The object is ofto much importance not to insure a continuance of these efforts in every way which shall appear engible."

Mr. Jefferson, in his message of 1802, states, that for the cultivate peace; maintain commerce and navigation; to foter our librariet; and protect manufactures, adapted to our circumstances, See see the landmarks by which to guide ourselves in all our relations.

From Mr. Jefferson's message of 1808: -

From Mr. Jellerson's mossage of 1808:—

"The situation into which of our industry and capital to surplice to supply the proper of our industry and capital to interest in the proper of the proper of

eterting duties and prohibitions, become permanent."

Extract from the message of Mr. Madison, Novem-

ber 5, 1811:-

DEF 0, 1811:—
"A portion of your deliberations cannot but be well bestowed
on the just and sound policy of secoring to our manufactures
on the just and sound policy of secoring to our manufactures
uccess they have attained, and are still attaining, under the influnace of causes not permanent."
Extract from the message of Mr. Madison, Dec. 5.

1815:

1 Under circumstances giving powerful impulse to manufacturing industry, it has made among us a progress, and exhibited as efficiency. Which justify the belieft, that with a protection are more than it due to the enterprising circumstance of the own at takes, and the control of the c

subject to catual failurs, for articles necessary for public deferree, or control of with the primary wants of individuals. It will be an additional commendation of particular manufactures, where the marrial telemant of the materials of the mat

From the message of president Monroe, Dec. 1819: FIVEL THE MEASURE OF PERSONNER PRODUCTS AND ASSESSED OF THE MEASURE OF THE PERSONNER OF THE

From the same, Dec. 3d, 1822.

"Saisfied I am, whatever may be the abstract doctrine in favor of uncertricted common for the same and in sations would conver in it, and it may be the same and the same

From the same, Dec. 1823:

From the same, Dec. 1823:

"Having communicated my view to congress at the commencement of the last satisfy, representing the encouragement which ment of the last satisfy, representing the encouragement which could be presented by the property of the pro To these presidential recommendations let me add

that of the secretary of the treasury, W. H. Crawford, esq. from his report, December, 1819: ey, from his report, December, 1819;

"It is believed that the present is a favorable moment for affording efficient protection to that increasing and important interest, if it can be done consistently with the general interest of the nation."

IV. Congressional replies.

Extract from the reply of the senate to the speech of gen. Washington, January, 1790:

or gen. Transmignin, oranizary, 1990.

Agriculture, cumperce, and unandetures, forming the basis of the wealth and strength of our confiderated republic, must be of the wealth and strength of our confiderated republic, must be the frequent subject of our deliberations, and shall be advanced by all the proper means in our power.

Extract from the reply of the house of representa-

"We concur with you in the sentiment that agriculture, commerce, and manufactures, are entitled to regulative protection."

restract from the reply of the scaule to the speech of een. Washington, December, 1796:

for Washington, December, 1796:

the washington of the scaule to the speech of the scaule to the speech of the scaule to the scaule to the scaule to the creation of the scaule to the creation of boards, (composed of intelligent to the creation of boards, (composed of intelligent subjects which will readily engage our man creation of the scaule subjects which will readily engage our man creation of the scaule scaule of the scaule scaule of the scale of the scaule of the

pationize this primary pursuit of society, are subjects which will readily engage our most actions attention.

V. Althocacy of the system by the congress of 1789-90.

Mr. Madion "suaved to lay an impost of eight entits on all beer imported. He did not think this would give a but he boped it would be such an encouragement in a condex the manufacture to take deep root in every sate in the union."

Light's decore of engress.

Light's decore of engress are the engress of the particular action of the properties of making regulations of trade, they had the present constitution, they have quality the properties of the prope

Mr. Clymer "did not object to this mode of eneo or. Clymer du not copect to this mode of encouraging ma-nufactores, and obtaining revenue, by combining the two objects in one bill: he was satisfied that a political necessity existed for both the one and the other."— ldem. p. 31

both the one and the other," Jeffrey, 2.1.

It is "hoped granular to the color," Jeffrey, 2.1.

It "hoped granular to the color," Jeffrey, 2.1.

It "hoped granular to the color, and the patronage is a small fatter, (feet) which a moment, reflection meaning to the color, and t

p. 69. Mr. Carroll "moved to insert window and other glast a manufacture of this article was begun in Maryland, and attended with considerable success. If the legislature was to grant a small encouragement, it would be permanently established."—Iden

the cost of the material; the labor employed in it would be thrown

the cost of the material; the labor employed in it would be thrown away probably in many invatates. He hoped the article would remain in the bill. "Idem, p. if the formal in the bill." Idem, p. if the cost of t

Mr. Fitzzimons "was willing to allow a small duty, because it

Afr. Fitasimon was willing to allow a small day, because, consurered to the policy of the visters who thought it proper in this manner to protect their manufactures."—Idem, p. 1.

The same.—It being my opinion that an enumeration of articles will tend to clear way difficulties. I with as many to be elected as possible; for this reason I have prepared myself with elected as possible; among three are some calculated to recover the property of the property of the control of the control of the property of the control of the contr policy of every enlightened nation to give their manufacture, that degree of encouragement necessary to perfect them, without oppressing the other parts of the community; and under this encouragement, the industry of the manufacture will be employed to add to the wealth of the nation."—Idean, p. 22 to add to the wealth of the nation."—Idean, p. 22 to the control of the other operation of the other ones, it will be necessary to targe to a district on a time of the other operation of the other ones. It will be necessary to make the other operation of the other operation of the other operation of the other operations.

Ar. Bland, for Va.), "thought that every little revenue was likely to be collected from the importation of this article, (need); and as it was to be lad in sufficient quantities within the United States, perhaps a tras amounting to a prohibition would be pro-widered to the state of the stat

p. 97.

Mr. Boudinot.—"I shall certainly move for it, [the article of glass], as I suppose we are capable of manufacturing this as well as many others. In lact, it is well known, that we have and can do it as well as most nanuous; the macerials being almost all produced in our country."—Idem, p. 28.

The same.—"Let us take, then, the resolution of congress in the same of the country of our system, adding only such processing donce as in creasity to support the manufacturing states."—Idem, 4.3.

4.3.

4.3.

43. Mr. Sinniekson "declared himself a friend to this manufactu

Mt. Similekson "declared himself a friend to this manufacture, [beer], and thought if the duty was laid high enough to effect a probibition, the manufacture would increase, and of consequence Mr. Fitzaimons "moved to lay a duty of two cents per pound on tailow candider. The manufacture of candies is an important manufacture, and far a divanced towards perfection. I have no doubt but in a few years we shall teable to supply the conduct to the state of the sake of obtaining revenue; and if they were not imported in considerable importation, they ought to be traced for the sake of obtaining revenue; and if they were not imported in considerable importation, they ought to be traced for the sake of obtaining revenue; and if they were not imported in considerable importation, they ought to be traced by the statistically, while the same.—"suppose 5s. per ewt. were imposed four unwrought steed,], it might be, as stated, a partial duty—but would not the evil be soon overbalanced by the establishment of such an important which the state legislatures have deemed proper, existits to a considerable degree. Therefore it will be politic in the government of the United States, to continue such duties until their ob-message of the United States, to continue such duties until their ob-message of the United States, to continue such duties until their ob-Mrs. Smith, [of S. C.].—"The propice of South Carolina are willing to make ascrifices to encourage the manufacturing and maritum interests of their size states."—[demp. p. 212.

V1. Compressional votes in 1816.

That Mr. Lowndos was equal in point of falents to

That Mr. Lowndes was equal in point of talents to col. Hamilton—that he was as fully able to decide correctly on the spirit and meaning of the constitution-that he was as sacredly and scrupulously exact in the observance of his solemn oath to support that instrument-and that he was as feelingly alive to the rights and interests of the south, and as zealous to protect them, as col. Hamilton, col. Hayne, or Mr. Cheves, will not be questioned by the most partial friend of those gentlemen; and if I prove that this Telumon Ajax of southern rights, was in favor of the protecting system, it ought to make col. Hamilton pause in his career, and review and correct his opiions on the subject.

The highest rate of protection ever attorneu . rican manufactures, previously to the tariff of 1828, was that, which subjected all coarse cotton below 25 cents a square yard, to a duty of 25 per cent. on the assumed cost of 25 cents.

On the 6th of April, 1816, a motion was made by Mr. Tucker, to strike out this clause, which, had it succeeded, would have prevented the success of that all important manufacture, coarse cotton goods, which has conferred so much advantage on the country, and afforded such an excellent market for our cotton. The motion was rejected by a very decisive

majority—82 nays, 51 yeas.

South Carolina had eight members in that congress, of whom six, viz. Win. Lowendes, John C. Calhous, John J. Chappell, Wm. Mayrant, Henry Midelton, and Wm. Woodward, esqrs. voted in favor of this high duly, which according to the first cost, varied from 25 to 100 per cent. and probably averaged nt least 75." Messrs Calhoun, Mayrant, and Craw-ford, went further. They voted that the minimum should be fixed at 30 cents the square yard.

So far as regards Mr. Lowndes, this vote is conclusive. But there is still further testimony, from the National Intelligencer-and let me observe, en passant, that at that time the debates were taken down very briefly, so that they do not furnish any of the details of the luminous speeches of this gentleman. The notice of the course he steered is very brief, but sufficiently explicit to show that he was an advocate of the protecting system, on this most latitudinarian feature-of course at daggers' points with Mr. Hamilton.

with 13. Transfer to 1. The man ample and particular defence of the r. Lower training and the manufactured on the unique of entire, by the commetce of ways and mean."—[National intelligencer, March 23, 1810. "Mr. Lowedto observed, that the believed the manufactured woollen, and particularly of blankets, required a decided present encouragement."—[Iden. March 27, 1810.

I well know the bias under which every man labors in favor of a cause which he advocates, as well as of the facts and arguments by which he supports it -and therefore I may greatly overrate the force of those I here advance. But making all due allowance for this bias, I am inexpressibly deceived, if the above evidence in favor of the constitutionality of the protecting system, do not establish it beyond the possibility of reasonable doubt. Indeed, did I not know the tenacity with which statesmen and philosophers adhere to dogmas which they have promulgated and defend-ed, and on which they have staked their reputation, I should hope that col. Hamilton himself would be struck with the host of illustrious names arrayed against his theory, and magnanimously acknowledge its untenableness. We have on the one side—uninterrupted and unquestioned practice for 35 years—General Washington, Mr. Jefferson, Mr. Madison, Mr. Monroe, Mr. Ames, Mr. Fitzsimons, Mr. Clymer, Mr. Louendes, Mr. Crawford, Mr. Calhoun, Mr. Archer, Mr. Wadsworth, &c. &c.; and on the other, col. Hamilton and his school-a school resting on the basis of the most unsound logic—and created in times of effervescence, of which times the characteristic, in all ages and in all countries, has been to receive, with credulity, opinions promulgated with confidence, by leading individuals, however sandy the foundation on which the superstructure is raised.

HAMILTON.

Philadelphia, Sept. 1, 1831.

P. S .- Some apology is due for the extreme length of this essay, which nothing could justify but the im-

<sup>&</sup>quot;This may require some explanation. Cotton goods that ever 6, 8, 10, or 12 cents per square yard, were assumed to have conducted to the state of the

before the reader.

It is earnestly requested, and confidently hoped, that the printers in the southern states—even those who doubt or deny the constitutionality of the pro-

#### "FREE TRADE" AT NEW ORLEANS.

In our last paper we briefly noticed the call of a "free trade" meeting at New Orleans, and the issue of it—since which we have received the following more particular account of what took place, in the Mercantile Advertiser. It may amuse some of our readers.

The great anti-tariff nullification meeting .- A most singular occurrence took place in this city on Thursday night last; it has perhaps no example in any re-gister of political affairs. A notice appeared in the Louisiana Advertiser of this city on Wednesday morning last, of a meeting to be held of "the friends of free trade, at Hewlett's coffee house, on the following evening at 8 o'clock, to appoint delegates to the free trade convention to be held at Philadelphia on the 30th of September." A respectable number of citizana accordingly attended. After waiting for some time beyond the hour appointed for the meeting, and no person of the free trade party appearing to take the lead in organizing the meeting, or to do any act common to any party calling a public assemblage of the people; the noise of many tongues, the laugh of ridicule, and the jeering of the sarcastic, showed that great dissatisfaction prevailed among all, teriff and anti-teriff; at last, however, a gentleman in the the chair. Immediately a loud and general exclamation of approbation burst forth from the people, and upon their reitersted request that he should consent to occupy the station, he escended the rostrum. Silence now prevailed throughout the hall. The Dr. then addressed the meeting. We shall attempt only to give the substance of what he said.

"I have been summoned fellow citizens, and very unexpectedly to me, to preside over this meeting; the object of which it may be inferred I have in my power to explain. Except, however, as far as it is made known by the notice in the Louisiana Adver tiser of yesterdey, I am ignorant. It would reem from the notice, that the purpose for which this meet ing was requested, is to elect delegates, to meet others from several sections of the union, in a convention, to be held in the city of Philadelphia on the 80th of the present month. The object of this convention is, so far as I understand, to effect a co-operation of the friends of free trade, throughout the United States, to procure a repeal of the tariff system; or in the language of some writers to establish "state or it the language of some writers to establish state rights and free trade." As respects, however, the motives which dictated the Advertiser in calling a meeting of the advocates of free trade in this city, I as well as many other citizens conceive them to be, nothing more nor less, than an effort to prop the remeining popularity of Andrew Jackson in this state. I am, however, fellow-entizens, not a friend directly or indirectly to the doctrines of nullification, and, therefore, did not come here with any view to countenance any measures that tend in the least to sustain them-I am a friend to the union; to the happiness

and prosperity of our common country.

For feer fellow-citizens that in calling me to the

mense importance of the assention discussed to the zens, said Dr. McConnell, knew me from 1824 until peace and Assention of Andrew Towns of An peace and harmonic of the union, and the advangraceful to our country, together with the general course of president Jackson's administration, his weakness and inconsistencies, and above all, his intention of being again a candidate for the presidency, who doubt or deny the constitutionality by inteeting system—will display their impactiality by inserting this essay, to enable their readers to judge
I have ceased to be his political advocate; and I now
avail myself of this public occasion, thus candidly to
avail myself of this public occasion, thus candidly to say so, and before this assembly of the people to deelare my secession from the ranks, which but a few months ago, I was proud of being enrolled in.

Fellow-citizens, not only by his public declara-tions—not only by those made to several other indi-viduals do I condemn president Jackson, but to me did he say in 1829, and in the city of Washington-"that nothing on earth would induce him again, to be a candidate for the chief magistracy of the repub-lic"—for in this declaration he deceived me, his friend. Here the feelings of the speaker gave great solemniexpressive manner, he said, that for the sin of which he had been guilty, and of which he was now convineed, in having been a partizen to support general Jackson for the presidency, ha trusted that the mercy of a wise and benevolent God would forgive him. In conclusion Dr. McConnell said: as the immediate object of the meeting has entirely failed, I beg leave to propose to you, fellow-eitizens, that it be adjourned, until the first day of September, nineteen hundred and thirty-one.

We cannot say what number of anti-tarifites, or Jackson men, or nullifiers were present; we only know that the speech of Dr. McConnell was received with evidences of great approbation, and in a short time afterwards the greater part of the people retired.

If in giving the account of the "free trade and state rights perty," we insovertently should have made any statements deemed not consistent with facts, we presume the Journals of the free trade

party, in their account of the meeting, will correct

GENERAL BERNARD AND THE PRESIDENT. From the New York Standard. Washington City, 8th July, 1831.

To Andrew Jackson, president of the U. States. Sir,-In 1816, under the auspices of the illustrious Lafavette, I received, from the people of the United States, the favor of serving as an engineer in the army. From that epoch to this day, I have been employed in the military organization of the frontiers, and in the planning of fortications destined to their defence; I have also been employed in the framing of projects relating to a general system of roads and canals throughout the union, and on various other duties connected with military establishments and internal improvements

The strong sympathy between the union and my notive land, has been to me a powerful incitement to perform my duties to the best of my ability. Should my humble services have repaid partially what lowe to a great people, which, on all occasions, has shown to me so much liberality and confidence, I remain conscious, that those services will secure to me an honorable place in the estimation of my countrymen in France.

Now, aware that the noble task to which I hava been associated is completed within the agency assigned to me, and conscious that the present onsettled state of Europe, and the political independency chair every person present may not be apprised of of my native country, place me under the moral ob-my principles, or may be under some mistake re-ispecting them; you will pardon me if a tata as brief-France, I beg of you, most respectfully to accept of ly as I can what they are. Most af you, fellow-citi- my resignation.

The habits of my family raised in this land of peace and happiness; my feelings of devotion towards so many generous and hospitable friends;—my sense of gratitude towards the members of the administration, render this determination most painful to me; but it is a sacrifice which I owe to the cause of this age of turmoil and political struggle. I find, however, a consolation in the hope that my motives will be generously appreciated by the statesman and the patriot, whom they are most respectfully submitied.

Be so indulgent, sir, as to accept my thanks for the liberal patronage you have constantly bestowed upon me since my arrival in this land of freedom, and to believe in the sentiments of the unalterable gratitude of your most respectful servant,

S. BERNARD, brig. general.

Washington, July 9, 1831. GENERAL,—Your letter is received tendering your resignation of the post, to which, fourteen years ago, your own well earned reputation, and the friendship of the most illustrious and beloved of the adopted sons of my country, were your passport. The knowledge of you afforded by your long residence among us, has justified the high expectations created by such an introduction; and it could not but be a cause of deep regret to the nation that any circumstances should arise to deprive it of services so highly appreciated. That the regret is greatly enhanced by the nature of the circumstances which impel you to this step, you understand us too well to doubt. You know how strong are our sympathics with every branch of the great family of man struggling for self government-how deep, with the noble people to whose generous and gallant spirit we were so greatly indebted in our own struggle for this inestimable right. Here, as your observation has satisfied you, the "no-ble task" is done—our independence is beyond doubt or danger; and that any shocks which the cause may be destined to encounter in your native land, will only serve to prove that it rests there on an equally immovable base, is among the most cherished hopes of the people from which you are about to separate.

Rest assured, general, that your motives are understood and appreciated: I release you from the service of my country, under the conviction that in con-ducting your family from this abode of liberty and peace, to one which the designs of Providence may yet destine to be a theatre of strife and turmoil, you are actuated by that love of your land which ever lives in a sound heart, and that affection for the great cause which characterizes the enlightened and uncorrupted minds of the age. With this assurance, accept for yourself and family, my best wishes for your safe return to the bosom of your country, and for the enjoyment of avery happiness.

ANDREW JACKSON. SIMON BERNARD, -brig. gen'l. in service of the U. S.

#### BEAUMARCHAIS' CLAIM.

This claim of a foreign speculator on the government, for supplies furnished during the revolutionary war, after harrassing each successive congress for more than fifty years, has at length been settled by Mr. Riva's treaty with France, at an expense of about a million of dollars. The magnitude of the claim, and its connection with history, render it deserving of attention.

The court of France early manifested interest in the controversy between Great Britain and her colonies. In 1776, when Franklin was acting as colonial agent in London, the French ministers there sought

more decidedly developed. Avoiding a declaration of war with Britain, it was determined by the French ministry secretly to furnish the colonies with supplies for their defence, and yet preserve apparent

To effect these purposes, an agent named Beaumarchais was sent to London, 1776, who met Arthur Lee, the agent of the secret committee of congress, and concluded an arrangement with him for the remittance of 200,000 louis d'ors, in arms, ammunition and specie, given by the French court. These were to be furnished under color of commercial transac-These were tions with the fictitious house of Roderique, Hortales & Co. of which the real partners were the sovereigns of France and Spain. A million of livres were placed in the hands of Beaumarchais, and a receipt given by him to the French government, which was, for a long time, concealed. As it was necessary to manage the expenditure in such a manner that it should not be imputed to the court, at a time when every movement was closely watched, it was made to assume the appearance of a private transaction.— The American commissioners were given to understand that the supplies furnished were free gifts, but were charged to keep this a profound secret, even from congress. Clothing, arms and cannon, were furnished in the name of the mysterious house, but in reality from the king's arsenal. In 1777, Dr. Franklin and Mr. Lee thought it necessary to explain to congress, the mode in which the warlike storas and money had been obtained. Their letters were entrusted to the captain of an American vessel, with special instructions to deliver them with his own hands to the president of congress. The packet, on being opened, contained only blank papers. The captain suspected of fraud, was examined and confined, but without leading to any discovery. Some months after, duplicates of the letters were received. At the unfortunate time, when the information they contained was most needed, Beaumarchais sent an agent to demand payment for the supplies furnished by him. In a state of great perplexity and doubt, without certain information, and closely pressed by the agent, in March 1778, congress thought proper to pay \$20,000 and to enter into a contract for the future payment of the balance.

The same reasons of state policy, which had in-duced the French court to conceal its benevolent assistance to the American states under the disguise of commercial transactions, compelled the ministry, for the preservation of its treacherous neutrality, to disclaim their existence. When pressed by the British ministry at Paris, knowledge of the operations of Beaumarchais was denied, and orders were issued to prohibit all supplies from him, or any other persons. The American commissioners addressed a note to the Franch minister, enclosing a copy of the agreement for settlement with the house of Roderique, Hortales & Co. stating their entire ignorance of the persons constituting the firm, and the understanding of themselves, congress, and the people, that they were indebted to the good will of the king for the supplies. An official note replied that the king had furnished nothing, that he had only parmitted Beaumerchais to borrow from his arsenals that he would from friendship interfere to prevent congress from being pressed for payment, but that ha did not know the calebrated commercial house, and could form no opinion of their solidity or punctuality.

These facts were divulged by Thomas Paine, then secretary of the committee of foreign affairs, in his controversy with Silas Dean, but the French minis-Interviews with him, and impressed the sagacious ter, alarmed at the disclosure, demanded of congress printer with the belies that the King of France was a disposed to fan the figure of contention. As the content of this corresponding was not then to be denied requests of any test despead, the policy and yiews of France were kind. Paine appeared before congress, arowed his authorship and resigned his office. The publications were disclaimed, and an official declaration made secret sunnlies

Congress having first sanctioned and again confirmed the full claim of Beaumarchais; was again pressed for payment by his agent. The amount in 1779 was four millions and a half of livres, and in June of that year, bills were drawn for about half that sum on the American minister, payable in three years, with the expectation that before the time arrived, measures would be taken by the French court to prevent payment. They were, however, immediately sold, accepted by Dr. Franklin, and paid to the assignees on maturity.

In 1783, it appeared by the settlement between Dr. Franklin and the count de Vergennes, that 3,000,000 of livres had been furnished to the United States, prior to the treaty of 1778, as gratuitous assistance from the bounty of the king. 2,000,000 were paid directly to the American commissioners, and all information as to the appropriation of the third million was withheld as a state secret. At length, in 1794, the then government of France furnished a copy of a receipt from Beaumarchais for the million of livres, dated in June, 1776. The officers of the treasury charged this sum with interest against the claim, and the balance was paid. From that time to the present, the heirs of the claimant have petitioned congress against the charge. The claim is, however, at length put at rest, and sent to limbo, to keep company with the shade of Amy Darden's studhorse. Salem Mercury.

#### AN ABOMINATION IN THE LAW.

From the Albany Daily Advertiser of Aug. 26. U. S. court at Ulica-Mrs. Bradstreet's suits. A great feeling has been raised in this city and the neighboring counties, for the last few days, by reason of the U. S. deputy marshal of the northern district having served notices on 312 of our citizens to attend as recognitors, (or jurors), in certain causes in favor of Martha Bradstreet, against 13 separate individuals in the village of Utica. It appears that about three years last past, Mrs. Bradstreet got an order for a grand assize in some 15 or 20 of her suits; grand knights or summoners were selected, and those summoners selected from Albany, Rensselear and Schenectady, 24 persons in each suit, to serve as recognitors or jurors. After these two causes were tried, judge Conkling refused to have any other causes tried until a decision was had upon the causes tried and removed to the supreme court of the United States at Washington. A decision having been had last winter, on those causes, a rule was entered at the last term of the court held in this city, that the recognitors be summoned to attend at the next term of the court; and very unfortunately for the jurors, as well as the United States, (who it is said must pay them) the next court is held in Utica, on Tuesday next, and those 312 persons compelled to travel that distance from their homes, and when there, to be kept some three or four weeks, or be dismissed and liable to be called at some future court or courts, when the parties shall eventually bring their causes to issue.

Of the above number of 312, the number of 260 are taken from the city of Albany; the residue from Renaselaer, Schenectady and Saratoga counties .- Each person will get \$1 25 a day, and ten cents a mile, travel fees.

There are 13 suits; and to each suit there are 24 "recognitors, to make recognition of the grand assize, between Martha Bradstreet, an alien, demandant, and -- a citizen tenant."

We understand that from each 24 persons, there ara 16 selected, who act as jurors.

If Mrs. Bradstreet should succeed in her suit, she vill be one of the richest persons in the United that the alliance with France was not prefaced by States, if not the richest. Her claims are on a large portion of the village of Utica.

We trust the tavern keepers at Utica will be prepared to provide comfortably for our two hundred and sixty fellow-citizens.

The Argus of the 1st. inst. says that the cases had been put off, and that all the recognitors were discharged, and after some notice of the proceedings,

Mrs. B. appeared in the court, and argued the motions in person. She exhibited, it is said, great abil-ity and much eloquence. She declared that, whatever obstructions might be thrown in her way, she would not abandon the prosecution of these suits, while life remained. It is her object to remove these suits to the southern district of this state, in which Judge Betts presides. It was the common remark of those present, "that Mrs. B. was the best lawyer who spoke on the occasion."

A most serious and affecting part of this affair, remains yet to be told. The recognitors cannot get any pay for the time they have spent, nor for the expenses they have been at in travelling to Utica .-The judge told some of them, before they left this city, as we have been informed, that they would be opinion, and on application to him at Utica, he told the recognitors he had no authority to pay them .-

On an appeal to the judge, it is stated that he said he had been under an erroneous impression as to their claim to pay, and that they were not entitled to receive it.

Of course the 312 recognitors, 260 of whom were from this ancient city, will return to their homes; minus-stage fare, tavern charges, and such like. A serious loss, and a still more serious disappointment.

It is an Abomination—in civil suits, at least, that persons should be thus dragged from their homes, at the will of any person who pleases to sum-mon them, being compelled to bear their own expenses -yes, and on the part of an alien, whose claims are probably invalid, and who has, perhaps, no means to pay these expenses, if they should rightfully fall upon her. It is robbery on a grand scale -- tyranny of the worst description-a base imposition on private rights and duties.

#### CASE OF CARRARA. From the New York Evening Post.

A considerable time has elapsed since the apprehension of Carrara, on the charge of having stolen the jewels of the princess of Orange and brought them into this country. The question whether Carrara should be imprisoned or discharged, has been argued before the police magistrate, yet we do not hear how the accused has been disposed of. The magistrate doubtless feels the natural desire to lend every aid in his power to the investigation of the transaction, but he must feel the difficulties which lie in the way of committing Carrara. Our laws were made for the government of our own country, and do not take cognizance of crimes perpetrated in others, unless the offender commits some act within our own limits, which amounts to a continuation or completion of the offence. We do not erect tribunals, or pay judges and public attorneys, to prosecute and try criminals for offences committed in Brussels, Canton or Archangel, whatever may be the rank of the person against whom they are committed. Besides, even if our courts had jurisdiction of crimes committed in Europe, the present case is embarrassed with difficulties as to the testimony. Before we can imprison and try a man by a regular course of in-

Orange, said to be done about two years ago, it must be first shown that she had such jewels—that they were stolen, and that there is good cause to believe that they were stolen by the person in possession of them. All the facts and circumstances of the larceny must be as fully exhibited, as if the crime had been committed in this country.

It has been said that these jewels were employed to pay a debt contracted in gambling, and thus came into the possession of Carrara. How this may be, we know not; but if so, the receiver cannot be punished, unless he knew they were stolen. But in what-ever manner he received them, he introduced them in violation of the laws of the union; and they, like all smuggled articles, have been forfeited to the laws of the United States. The United States have libelled the articles, and may hold the person who intro-duced them answerable for the penalty. Whether the United States may interfere until the case is tried we know not, but it would clearly be an unsafe precedent to hand over snuggled goods to a claimant, on the plea that they were stolen in a foreign land, without first establishing the fact before a jury. We have to look to our own laws and be cautious that they are strictly administered, without being made to accommodate themselves to support important contingencies. What is doctrine to-day, may become precedent tomorrow. Let every rogue be punished, but let it be done by the law of the land.

From the Mercantile Advertiser.

An article appears in the Post of last evening on the subject of the jewels of the princess of Orange, which is incorrect in nearly all the details. The case of Carrara states thus: After the arrest, the counsel moved for his release, and the case was argued before justice Hopson, who, after some days of consideration, committed the accused for examination. Soon thereafter, learning that it was the intention of Carrara, to apply for his discharge under the habeas corpus, justice Hopson immediately committed him in full. The application for the habeas corpus will be argued on Friday.

It is under our revised statutes, which went into operation on the 1st of January, 1830, that Carrara is detained. By these statutes, a felon found in our state may be arrested and tried whether the robbery was committed in a neighboring state or in a foreign country. We understand that the plea on which the application for the habeas corpus will be made by Carrara's counsel is this-that as the robbery of the jewels is alleged to have been committed in 1829, therefore the case occurred before the revised statutes went into operation, and Carrara cannot be tried under them; his release is consequently demanded: while the court thus far has decided, that as Carrara did not arrive in this state till 1831, he is amenable to the laws in force at the time he arrived.

Carrara has lately, as we understand, made certain Carrara mas ratery, as we understand, made contactions confessions; among other things he states, that he was not the robber, but if his write be found, she can explain all—he will not deny, neither does he admit that the jewels were those of the princess of Orange, but refers to his wife, who is able to reveal the whole transactiou-she has not yet been found.

From the Same. An order was received yesterday morning, from governor Throop, issued with the approbation of the general government, to deliver Carrara to the minister of the Netherlands, that he may be sent to Holland and tried for the offence with which he is charged, in that country, according to its laws. This order is issued in accordance with the revised statutes, volume 1st, page 164, sections 8, 9, 10 and 11, which are in the words following.

Sec. 8. The governor may, in his discretion, deliver over to justice any person found within the fired at him, until an officer in pursuit being killed

dictment for stealing the jewels of the princess of state, who shall be charged with having committed without the jurisdiction of the United States, any crime except treason, which, by the laws of this state, if committed therein, is punishable by death or by imprisonment in the state prison.

Sec. 9. Such delivery can only be made on the requisition of the duly authorized ministers or officers of the government within the jurisdiction of which the crime shall be charged to have been committed.

Sec. 10. It shall be the duty of the governor to require such evidence of the guilt of the person so charged, as would be necessary to justify his apprehension and commitment for trial, had the crime charged been committed within this state.

Sec. 11. The expenses of apprehending and delivering such person, shall be defrayed by those to whom he shall be delivered.

This proceeding, supersedes the writ of habess corpus, which was to have been sued for this day as we have already announced.

We were informed many days ago, that the wife of Carrara, who is conversant with the whole history of the robbery of the jewels, if not one of the principal actors, after the arrest of Carrara, left this city with a man named John Roumage, for Philadelphia, under the names of 'Mr. Robert and lady,' and sailed on the 20th August from that city in the ship Monongahela, for Liverpool-in consequence, one of our police officers embarked on board the Silvanus Jenkins, which sailed from this port for Liverpool on 24th August, and hopes are entertained by our authorities, that he will be in Liverpool when the Philadelphia packet arrives, or at all events, he will be able to arrest Carrara's wife in England.

BCP It appears that Carrara's wife, upon his arrest, escaped to England, with jewels thought to be worth a million of dollars. She has been pursued.

#### BEAUTIES OF MILITARY RULE.

A letter from Lima, dated June 3, says-1 send you a few papers of this city; but they are of very little value, except as an object of curiosity-they develope nothing, in a measure, of the political or commercial condition of the country. You have doubtless been advised of the late attempt to assassinate gen. La Fuente, the vice president, and of his escape. There being a misunderstanding between Peru and Bolivia, in relation to territorial limits, general Gomara president of Peru, marched with the army to the frontiers of Bolivia, leaving general La Fuente, the vice president, in the actual exercise of the functions of executive of the government. About the middle of April, a conspiracy was formed against the vice president by certain aspiring characters, who had no hopes of preferment during his incumbency of the executive chair; and it is currently reported that the conspirators got their cue from Gomara himself, who was apprehensive La Fuente was endeavoring to supplant him. A plot was accordingly laid to put the latter out of the way by assassination. attempt was made at night-La Fuente was in bed. indisposed with the Terciana, (ague,) his wife and family setting around him,—bands of soldiers were placed around the house to guard every avenue of escape, while a party of them entered the chamber to perpetrate the savage deed. One version of the afthe door, there met the ruffians, and kept them at bay some moments, by heroically seizing their bayonets with her hands, &c. until her husband had time to escape from the room, in his night clothes. He was pursued through different apartments, out of windows, over roofs, (all the roofs being flat, in this country, it never raining), &c. &c. with soldiers and officers close at his heels, vollies of muskerry being accidently by his own soldiers, supposing him to be face of the water would occasion a great increase of La Fuente, the chase ceased in consequence of the confusion which this event created, and the vice preaident finally made his escape to Chorillos, from whence he proceeded, at night, in a boat, to the bay of Callao, and went on board the U. S sloop of war St. Louis-where he remained about a month, and took passage in the American ship Portia, for Chili. When he went on board the St. Louis, capt. Sloat frankly informed him the ship could not be an asylum for him, should the government at Lima demand his person; and the authorities were advised through our charge, Mr. Larned, that the vice president was on board,—but they did not molest him. Gen. Miller an Englishman, the commander of the 3d division of the Peruvian army, fearing lest he should not find favor in the sight of the new authorities, also took up his quarters on board the St. Louis, -and, a few days since, sailed for the Sandwich Islands, to await the settlement of the squabbles among the factions in the settlement of the squaddless among the factions in this unfortunate country. A man by the name of Andres Reyes, (or Andrew Kings) the president of the senate is the executive chief of the republic, pro of no importance,—they are afraid of the army, or of those who controut the army. The war with Bolivia, acems to be unpopular here,-and information has reached this city from the army on the frontiers of Bolivia, not many leagues from Anquipa, that, a majority of the officers and soldiers being averse to invading Bolivia, had deposed Gomera, the commander, (and president of this republic) and put a colonel in (and president of this reposite and prevalent opinion was, that had a general battle taken place, general Santa Cruz, president of Bolivia, and who commanded his troops in person, would have come off victo-

Now that it is believed Gomara is deposed, there are divers opinions among the people who ought to succeed him as president of Peru-some think he may be reinstated-others that La Fuente may be recalled-and others, again, that Riva-Aquero, a formrecalled—and others, again, that Run-Nquero, a form-er vice president, and now in banishment in Chili, may be requested to return. Affairs of state are consequently in a very unsettled condition. The present government is very much in want of money,a few days since they offered the two principal American houses in the place, (the only houses, of any nation, in Lima, who have much money), the per cent. a month, for \$100,000: the offer was declined, the merchants having no faith in the stability of the present state of things.

#### THE SOLAR PHENOMENA.

We are obliged to a respectable friend in Alexandria for the following interesting observations upon the late extraordinary appearances connected with the sun.

Alexandria Boarding School, 8th month, 20th, 1931.
Friends Gales & Seaton: In compliance with the suggestion in your paper received to-day, I send you the following views respecting the very unusual, if not unexampled appearance of the sun, observed a few days since.

To understand the phenomena alluded to, it will be necessary to make a few preliminary observations. During the great total eclipse of the sun that had reour ing the great total eclipse of the sun that has re-cently taken place, the moon had just passed its per-iges, or that point in its orbit nearest the earth, and consequently the combined action of the sun and moon upon the atmosphere produced a great tide in the equatorial regions, and diminished the pressure of the air upon the whole of the surface of the earth." This diminution of pressure upon the sur-

evaporation, particularly when united with the high temperature that accompanied it. For it is an established fact, that the amount of evaporation from an uninsulated surface of water depends upon the elevation of temperature and diminution of pressure.

A vast quantity of vapor thus raised was very ob-A vast quantity of vapor thus raised was very on-servable on the evening of the 12th instant, at a con-siderable elevation, in the western part of the hea-vens, and continued to reflect a very red light for a

long time after the sun had set.

The appearance of the heavens on the morning of the 13th I did not observe; but about mid day, the sun shining through this body of vapor had a silvery appearance similar to that which it wears when shining through a vanishing fog, and I observed it to give an unusually ghastly appearance to the countenances of Between three and four o'clock, the position of the sun with respect to this body of vapor becoming changed, it assumed a greenish blue appearance, precisely similar to that produced by the following experiments, and which, in my opinion was dependent upon the same cause. Let a screen upon which the spectrum produced by the separa-tion of the solar beam into its primitive colors by a glass prism is thrown, be perforated so as to let ail except the red ray fall upon a double convex lens, and be converged to a focus, the result will be a representation of the sun of a greenish blue color, exactly such as it was observed to have at the time alluded to. The color is that resulting from the combination of all the primitive colors except the red, and is denominated in optics the opposite color.

The same experiment may be performed more familiarly thus: place a red wafer upon a white wall, and look at it intently with one eye for some time, then let the eye rest, without much effort at seeing, upon the wall, and a spot, the size of the wafer, of a greenish blue color, will be perceived. The ex-planation is, that the retina, through the action upon it by the red light from the wafer, becomes insensible to the red ray in that part upon which the image of the wafer rested, and hence the color produced upon that part of the retina, will be the one resulting from the combination of the other six.

The greenish blue color of the sun, then, I think, depended upon the red rays being reflected by the intervening body of vapor, while the other six passed to the eye, and produced the observed appearance. This opinion was strengthened by one or two facts observed at the time. I passed the sun's ray through onserved at the time. I passed the sun's ray through a prism, and while the yellow, green, blue, indigo, and violet colors appeared with their proportionate brightness, the orange was considerably less distinct, and the red much less than the orange.

Another corroborative fact was, that, as the sun descended below the body of vapor, which was about fifteen or twenty minutes before its setting, the va-por reflected an intensely red light—the light that passed through it was therefore separate from the red, and would have produced the opposite, or greenish blue appearance.

The spot that was observed, is by no means an unusual thing upon the sun's disc. It was visible to the unprotected eye, merely in consequence of the diminished brightness of the sun. By aid of a telescope, a considerable number of spots were visible. In the summer of 1816, a spot was visible to the na-

ked eye for eight or ten days in succession. If the above remarks are any way satisfactory to you, it will be a gratification to

Your sincere friend. BENJAMIN HALLOWELL.

pressure upon the earth must be diminished. greatest effect would not be at the immediate time

<sup>\*</sup>It is avident, that as the air is partially supported by the combined attraction of the sun and moon, its of conjunction, but some days after.

# NILES' WEEKLY REGISTER.

FOURTH SERIES. No. 6-VOL. V.

BALTIMORE, OCT. 8, 1831.

(Vol. XLI. WHOLE No. 1,046

THE PAST-THE PRESENT-FOR THE PUTURE.

BOITED, PRINTED AND PUBLISHED BY H. NILES, AT \$5 PER ANNUM, PATABLE IN ADVANCE.

St P"Clear the decks." Assisted by a whole sheet supplement, whereby thirty-two close pages are given for the present number, we have power to publish, io seathe bank of the United States, as well as dispose of a huge mass of other interesting matter, which was chiefly waiting an insertion. We are thus enabled a lattle to relieve our files, in preparation for other long articles exnected. The miscellaneous collections, or selections, are in great variety. The report about the bank should receive the earnest attention and serious reflection, of every man equable of understanding the business of such an institution.

The journal of the anti-masonic convention is now completed-the reports and address we expect to make room for, pretty soon after they shall be published.

We take the present opportunity to insert reports of two important law cases -one relating to the noise-making bonds at Charleston, South Carolina;" and the other conserning the act of May 1830, more effectually to enforce the set of May 1828, concerning the duty on wool-len cloths, &c. The hist affecting the constitutionality of the tariff laws-the second braring upon 'free tra-ders," atias smugglers, and checking their operationsshewing what are traubulent entries at the custom-houses. by which the revenue has been diminished in millions of dollars, and the growers and manufacturers of wool are denied that protection which it was intended they should obtain--for the profit of foreigners; nine-tenths of such doings, at least, being for the benefit of Grab-gaitered and other English adventorers - who put upon the price of their goods the whole amount which they retain from the treasury!

We gave a fair and full account of the proceedings of the "free trade convention" at Philadelphia, with a sufficient sketch of the slebates to show the diwith a suncient section in the sources to sow the third rection which things are taking. Some of the speakers in the unconstitutionality of the terriff (though Mr. Madison said, in 1795, that it was the necessity of laws to protect the industry of the people of the United States which originated the project of a federal consistency. tion, having its start in Virginia), appear to have been pretty ardent, and a general discussion of the subject, involving, perhaps, the principles of nullification, may be expected; and the end will be-we know not what!-Some who admit the unconstitutionality, will kick severely against nullification, and many will reject both, though tavorable to an extensive modification of the though tavorante of the duties imposed by it. We expect to insert all the reports of the "tederative comsnatee," and the address -unless their excessive length shall render a selection necessary. The address reported condems the tariff laws as "unconstitutional,"—we shall see how it is disposed of.

\*It is stated in a Charleston paper that the defendants in the bond case have appealed from the late decision, and that it will again be tried in circuit court, which will ait in Cotumbia in November.

The Washington Globe, in reference to this bond

"We consider it highly honorable to the mercantile part of the community of Charleston, that none of them could be found so regardless of the sentiments of procount be found so regardless of the sentencial of pro-pricty, as well as patroitism, as accountly to question the right of the government of the union to lay and collect duties on imports. No effrontery could be found equal to this effort, but that of a practised attorney; and we do not believe that any one, even of this class, would have had the hardiband, but that he knew he might exnave noutine institutions out that he knew he might expect the anpport of a vice president and a league of lawyer politicians." This is "going the whole."

Vol. XLI.—No. 8.

AT PAt the close of each semi-annual volume we xpect some discontinuances, from deaths, removals and other causes; and are careful to post-up the names of all such as have previously ordered their papers stoppeds yet a consulerable loss is sustained because of the neglect of persons-who, having received three or four, or more, numbers of a new volume, are reminded that they had not intended to continue subscribers. another year-and we are then notified of their wishes. not unfrequently at the ungentlemanly cost of postage, but with the more serious evil of breaking a volume because of their carelessness! The least that common decency requires would be, that all such should packap and return the extra numbers which they have received-but this is very seldom attended to.

The current discontinuances are not more numerous than usual-hat two or three provoking cases, (because taxed with nostage), seem to remier it necessary to remind all subscribers of the terms on which the Ragis-TEN is published -that no paper can be descontinued, unless at the close of a volume, except in our own diserction—for, unlike newspapers more properly so call-ed, this work is in volumes, and much of its profit in the surplus or retained copies-which are valueless if incomplete. We have no desire to press it upon any in-dividual. It will always be stopped at any time desired, being informed in due season-but it cannot be supposed that we shall submit to injuries which grow out of sheer carelyssness, in the manner stated; and heresteer, if not regularly advised, we must entorce our terms, (and the established principles of the law in the case, as repeatedly decided), against those who commit such acts of injustice towards us.

We are oftentimes lavored with descriptions of new machinery. The compliment is thankfully acceptis almost waste time to attempt to ilescribe new maclines to us-being ignorant even of the common names of the chief parts of them; and now too old to learn them. We feel much pride in the ever-restless genius of our countrymen, and will gladly notice the happy fruits of their talents, at all times and on all occasions but, for the reason stated, cannot pronounce on machinery, unless having seen its reflects, and then, perhaps, only incorrectly. Hence we have handed over to our friend Smith, editor of the American Farmer, as more properly coming within his walk, an account of Smith and Timmuson's "ditcher, lencer and hedger," which was recently forwarded from Michigan -- the postage being considerately and properly paid: which does not always happen in like cases.

Mr. Thomas Ritchie has not yet enlarged the "Enquirer," that he may enter upon a liberal discussion of the tariff question with "Hezekiah Niles"" wants room-though his press grouns under the weight of proceedings of small meetings of persons in Virginia against the tariff—at which from five to ten persons, in against the tarill—at which from the to ten persons, all, were assembled—each capable of writing for a whole week, and entirely convinced that the salety of the funiversal world of America" depends on the publica-

\*The Richmond Whig asks-Will our friend Niles inform us how comes on his expected controversy with our neighbor? We would suggest to him that the meeting of congress and our legislature is approaching, and they will turnish another excuse for putting it of By the bie, we feel in the humor this evening of letting our triend Hezekiah into a secret. The proposed enlargement of the Enquirer has been delayed, waiting for a new head-piece, an article it has been sadly in want of for some time.

tion of a volume or two of his own matter in Thomas the consequent departure of specie, shows that the tariff Richie's newspaper—which governs Virginia, which is not yet sufficiently high, or its provisions sufficiently governs the south, which powerns the union; out of enforced, to prevent injurious devangements of outness, which there is no good thing, and in which all things by fluctuations in the value of money, as measured by the street beautingfor curses as Mr. Thomas Richiel orders that pirice of lands, houses, or any other than Moderation

they shall be arranged!

This famous america-turer of blessings and curser has the first famous america-turer of blessings and curser has to do what he might to injure the careter of "Hezerbain Niet" poper, though injure the scheder of "Hezerbain Niet" poper, though injurior that yearlies have been a reparate to notify Thomas Richie of the success which attends his kind exertions! Since the first day of the present year, ONLY seven hundred and fifty-two new subscriptions have been made to "Nittas" Roomers, "or is the rate of only one thousand for the cursent year—and the whole number now printed is only four thousand one hundred and four cepies, requiring one hundred and exercity-one quires of "shake paper," or every publication. As this increase is a very small one for an old paper to obtain—the lact is proclaumed, in melancholy sadness, that Mr. Thomas Ritchie may have pleasure in the statement! If he believes it not, he may be pleasure in the statement! If he believes it not, he may be pleasure in the statement! If he believes it not, he may be pleasure in the statement! If he believes it not, he may be pleasure in the statement! If he believes it not, he may be pleasure in the statement! If he believes it not, he may be pleasure in the statement! If he believes it not, he may be pleasure in the statement! If he believes it not, he may be established beyond all manner of doubt!—and he will bewised is over that only about one hundred of these med annes some from Thomas Ritchie's dominion—which is Virginia. The office rewhow duty it may be, shall also have the discontinuance-book land before him, that Thomas Ritchie may have yet more pleasure therefron!

To be serious. The luttleness of Mr. Richle, in brequently attacking the character of the Rkotszar, To be serious. The luttleness of Mr. Richle, in brequently attacking the character of the Rkotszar, because that its editor yields "no allegiance" to his "meather-cack". Issuidard of right, has rather excited pity than provoked contempt. The lacts above sasted are true—and I am thanklul for the great patronage which has been afforded. Graitutel is best shown in works. The last volume of the Rkotszer was the most espacious, as well as the most interesting, pic haps, ever published, except at an extra charge to subscribers; and it is probable that the current volume, in the quality and quantity of its matter, will be much more valuable than the last. It is a favorite asping with me, that "the protected should protect"—and the substantial encouragement given is continually pressing itself upon the strong deare of my heart, To BENDER JUSTICE to the extensive sum flathly in friends of TER WKEKER REGISTER, as well as to induce yet many more to receive this extensive Chronicler' of the events of the times.

Eaton's reply—with coplous notes. Some of them are curious, and others severe—and with much interest all who are knee deep in the "controversy."

MONEY. The secretary of the treasury has given public notice that, on the first of January next, nearly as millions of the public debt will be paid off. This will be so much more capital released, and we suppose its being set affoat will have the effect still further to advance the price of stocks. Messrs, Cohens and Mr. Ponitiney, (urivate bankers in Baltunger), if they do not beware in time, will rue the day that they offered to pay five per cent. interest upon all deposities of money for a term not less than twelve months. It is paying too dear for the whale.

BCPThe preceding peragraph is from the "National Intelligeneer." The opinion of many persons in Baltimere, who are thought to be among the best judges of "money matters," is opinised to that of nur friends of the "intelligeneer." The fact is, that, because of heavy exports of specie, on account of the high price of exchange on England, money has shready began to be "scarce," and will soon be in great "demand." There have been more movements of specie in Baltimore during the last three or four weeks, than, perhaps, in the preceding welve months. The protection of idomestic industry had caused much ease to the whole (solvent) trading community—but the vast importations of foreign goods, and

is not yet sufficiently high, or its provisions sufficiently enforced, to trevent injurious decangements of business. by fuctuations in the value of money, as measured by the price of lands, houses, or any other thing. Moderation is always best-and steadiness most profitable. There has been an apparently regular and safe rise in the value of property in nearly all the chief cities and towns of United States-but the abstraction of ten millions of dollars from the vaults of our banks wuntil lessen the CIRCULATION not less than fifty millions, and so increase the value of money that many engagements, thought entirely prudent two months ago, may not easily be complied with. We regard specie only as a merchantable commodity, and should it reflux on account of the low price of bills of exchange, all persons ought to rejoice in its movements, shewing a profitable circulation of ratue; but when it denotes because of the high price of exchange, (not being a native production), it is the best of all possible evidence that there is a real balance of trade against us, however difficult it may be to prescribe rules which certainly shew what are balances of trade. A few years ago, as we have often remarked, it was the fearful cry, of the profound philosophers of the south. that the tariff laws would ruin the revenue, and compel a resort to direct taxation for the ordinary support of the general government: now the fact is, as we have always said that it would be,—the common prosperny of the people, because of a protected industry, embling them to purchase more ficely, will give to the revenue not less than five millions of Hollars more than the most sanguine enleulated for the current year, showing an extru im-portation of about twenty-five millions, which must be substantially settled in coin, unless increased demands should be made for our staple productions-and there is no prospect that Europe is willing to make a general war for our benefit.

P. S. Since the preceding was written, we have ascertained that money is scarce—very scarce, smong all that are dependent on the usual secommodiations at bank; and we learn that the 'pressure will became heavy, unleast the export of specie shall be specifiely checked. Between six and seven millions of tollars have lately departed for England—last week, half a million left New York in one day. Forcei sales of goods are making to obtain funds, and rumous prices only obtained for some of them. And the New York Courier and Enquirer says—eWe understand from Washington, that the U. States revenue for the present year will exceed the estimates by eight millions of hollars. It was estimated \$22,000,000—it will trach nearly \$30,000,000. Such is the prosperity of the country under Jackson! In two or

three years the whole debt will be paid off."

If it be the last, that the revenue will amount to thirties the instruction must be "the order of the hay." These 50 millions will represent an importation of not less than 100 millions besides articles live of duty, such as specie, bullion, &c.—and what have we that can produce that might sum in the foreign market during the year. If the balance is drawn in specie, the distressing seens of 1821-22 will be revived; and the payment of the public debt be attended with the has of many times its whole amount to private individuals, in sacrifices of property and derangement of business.

Rail noans, to. The castern extremity of the Baltimore and Ohio rail road reaches the tule, passing down that great thoroughlare, Prant street. The most sanguine have been agreeably surprised at the small, (if any), obstruction which it presents to the ordinary transportation of persons and goods in, or across, the street. The rails are laid on solid blocks of granke, which are fitted to the common pavement; and there is now no otherway or disadvant, get to be apprehended in passing branches of the road through all the principal stretts, if exirch. Thus the trade of this road will be distributed to all parts of the city, as shall appear "necessary and proper."

more movements of specie in Baltimore during the last three or four weeks, than, pertians, in the preceding twellow will be opened to the city of Frederick, and to the Pomonths. The protection of itomestic industry had tome, at the Point of Rocks, and be in full operation, caused much case to the whole (soltent) trading combefore the end of the present year; and then a wast munity—but the wast importations of foreign goods, and updated and weight of articles will be transported on

R—and we shall feet some part of the hencht which we have expected from this splendid undertaking; the whole ambigned of which is in the most wibstantial manuel, all highly respectable. The object of this mercing is to promote and protect the ilonestic industry, in all in chief. execution of which is in the most substantial manner, though beauty and taste have not been disregarded. Many improvements have been latterly maile in the construction, or use, of rail roads, and experience will yet lead to others not less important in the general economy of them, and of the power used, &c. The than has been hitherto supposed.

We intended to have given a list of all the rail roads now about to be commenced, or which are seriously contemplated-but have not either time or room to pre-Many long and important roads will soon be begun; and, when in use, we shall powerfully experience the good of the "American System," in the savings of time and money which these roads will cause,

CIRCUMSTANCES ALTER CASES! Some time ago, when "Hezekish Niles" proposed the circulation of tracts among the free working people, to shew them the importance of the protecting system and in what manner it benefitted them individually, a mighty out-ery was raised againt the proposition-the Charleston Mercury the head and Phomas Ritchie at the tail of its origonents; but the following will shew what is doing in that way in the south. That which was wrong, gree-ously wrong, in 'Il-zekuln Nies,' in right in any English agent or Englishman-and surely so in any multifectury American who belongs to "the democratic

The tract committee, (at Charleston, S. C.) reported that they had distributed, in various parts of that state, about 1,000 copies of gen. Hayne's oration—179 copies of the celebration of the 4th July-150 comes of the address and constitution of the association-and 650 codress and constitution of the association—and 650 con-pics of trust No. 1, containing the proceedings of their first meeting. There are now printed and ready for distribution, 3,000 copies of Mr. Calhoun's letter, being tract. No. 2. The printer has now in his hands, the copy for trust No. 3. The committee are also engaged in preparing a State Rights and Free Trate Almanae, for 1832-which will be really for the press in a few days. Gen. Hayne read to the meeting a letter from a gentleman at the north, exhibiting the fact that the recent luminous exposition of the vice president of the United States, has already began to enlighten the minits of their northern brethren with regard to the true cha-

Tactor of our government. Tractor of our government of the work of the complex of "Heaten Courier." Well—the second is balanced! About 00,000 copies of "Heaten Nate" late essay called "Politics for working men" have also been distributed, and in parts of the country where "Walker's appeal," (which, however, we have never seen, and shall never approve), would create less excitement, though the public roads were covered with copies of it, than so many sketches of the life of the "man in the moon."

FRANKLIN INSTITUTE. The exhibition of this institute at Philadelphia, commenced on Wednesday last and will close to-day. It is in good season for the "free trade convention," and we venture to say that if the members convention," and we venture to say that if the members of that body will attend this splendid show of the products of American industry, examine the quality and as-certain the prices of the articles—many will think that they had better stid at home. The specimens of broad and other cloths, carpetings, stoves and grates, marble work, glass wares, porceism, cotton goods, and blankets are specially mentoned, because of their great variety, good quality and beautiful appearance. The list of artigood quality and beautiful appearance. The list of arti-eles is exceedingly numerous, and shows many things in high perfection which few persons in the south believe are made in the U. States. In all our cities, the sales of American goods far exceed in value those of the import-The domestic manufactures sold at Philadelphia, are worth much more than the whole cotton crop of the United States. We do not include in this notice the product of mechanics working to orders of individuals, for their own use.

THE NEW YORK CONVENTION. The delegates to be appointed to attend the convention of agriculturalists manufacturers and mechanics, to be held in the eny of the Richmond Whys.

departments, and secure the home market to American cinzene.

The call of a meeting at Boston to appoint delegates to this convention, is signed by about two hundred and filty persons—many of them we know to be of the most respectable standing, and without regard to difference in political opinion. This is as it should be. The princi-ples to be considered have no reference to the parties of the day, and, we hope, will be sustained long after the present actors in them have passed off the stage, and are seen of men no more."

"seen of men no more."
The may not floston heads the list of persons calling the meeting at floston, and Mr. Arnold, governor of Rhode Island, heads that which calls a meeting at Providence. A like call is made at Wilmington, Del. We observe that, in all these cases, gentlemen have assocated without respect to political parties.

PROGRESS OF GOOD PRINCIPLES. Several cotton-planters have lately added their names to our subscription list-having seen, and magnatimously felt willing to admit, that the tardf inflicts no injury on them, while it benefits other numerous classes of their fellow citizens. and powerfully increases the general wealth and power of the nation. We sincerely believe—and we have reflected much in the subject, that the cutton manufacture in the United States has, or will, accomplish almost as much good to the planters as they have derived from the gia, which a Yankee (arnished them with, to clean their great stuple product; and that, at this time, such manulacture causes the consumption of from two to eloths that would otherwise have been made out of East INDIA cotton—because the British, that they may come into competition with our manufacturers, are compelled to use our strong and dearer cotton, in lieu of the proship-loads of cotton goods now reach us from ludia. We have seen whole eargoes of them, but shall see them no more. This matter is worthy of much reflection.

The fullowing is an extract from one of the letters just received from Alabama—

Alabama, Sept. 15, 1831.

Dear sir:—The importance of the Resister in those portentous times, induces me to order it expressly for mysell, having taken it the last 18 months with a friend. We have a very respectable minority in favor of the American system, and those among the most able plan-American system, and those among the most able plan-ters; and I would shill, to the honer of our state, we are not cursed with many nullifying demagogues, whose gratuious services are so kindly profirred to the poor-cotton planters. While the manufacturer sells at the present reduced prices, we have no just cause of com-present reduced prices, we have no just cause of compresent reduced prices, we have no just cause of com-plaint, and can make more by raising the raw material tian by manufacturing of it—and this is the ostensible reason they are not established among us. My crop of cotton has paid nine and a half cents (clear) for the fast three years (perhaps handled with more care than is practised by every person); at this price I think it a more profitable crop than augar, and it yields the economical farmer a handsome support (with ten children to feed, clothe and educate). Enclosed you have a U. S. five dollar bill, please commence with the first number of the volume," &c.

ANOTHER. Extract from a gentleman in Georgia. I have now taken your paper for ten years, and acknowledge myself pleased with its course, though often combatted for untering its sentiments. Your information respecting the iron and other domestic manufactures has enabled me to keep on hand a constant supply of all the newest articles

of our own manufactured goods.

A letter from Mississipps. "We have a powerful minority, decided advocates of the system of protection, among these too are many of the very largest cotton plan-ters, and those who calculate most closely their own interesta. [ Sept. 13.]

The occasion is well fitted to add the following from

The tariff.-The views of the writer of the letter from Louisiana, to the editors of the Whig, from which we make the following extract, are expanded and just. The argument applies with equal and greater force to the bread stuffs of Virginia, because they are, in fact, exeluded from a foreign market, by foreign monopoly. We do conscienciously believe that our wheat, flour and corn are appreciated in value at least ten per cent. by the encouragement now given to domestic manufactures; and that, but for the northern manufacturer, not one hall of the present product of Virginia could find a market. It is this view of the subject mainly, which has induced us, in despite of the certainty that we were making ourselves unpopular at home, to advocate a protecting tariff.
Free trade we prefer, could we get it; but when restriction is the order of the day in the great marts of Europe, national pride and sell-preservation call on us to meet restriction with restriction. Time was when in a contest of this kind, Virginia would have been the foremost to meet a cunning foe, and we do not despair that her aucient spirit may yet be revived.

"Franklin, La. August 27th, 1831.

"Ht is a remarkable fact, that the cultivators of the same staple in different sections of the country, should entertain so extirctly different opinions on the policy liverable to their pursuit.—There is not a cotton planter on Red riter, whose mind is expable of analyzing and investigating, but admits the benefit they derive from the tarif. Some of them are men who would do honor to any state for their takents and learning; one of them in particular, who in former times thought it theoreteally impirious, now acknowledge 31 practically heneficial: and this gentleman is one of the first members of our

bar, and sells yearly hundreds of bales.

el believe the Carolinians allow that the prices of their negro clothing, larming utensils, &c. &c. have failen since the existence of the tariff. For the sake of argument, grant them their conclusion that the price of the staple in decreased in the foreign market, by the duties that are haid on the manufactured articles. Make an estimate of the difference of prices before and after the passage of the tariff law, of the things most used by the planters, and state the imagined reduction in the price of cotton, and then there will be an immense gain to the planter. He can now buy for the money which he receives for a bale of entton, more in quantity and better in quality of that which he needs, than he could from the imagined price of a bale, if the tariff did not exist. This is easiw demonstrated. No people in the world are accumulating more surely and steadily than the cotton planters of this state, whose plantations are managed with care and prudence. Between them and the cane growers, the prospects of the lurmer are preferable."

AMERICAN SILK. The annual value of the product of raw silk in the United Sitter, must now considerably secred half a million of dollars—the chief part being ereated by the space of the considerably in certain the considerably in certain the considerable of the consi

the application of a little time, (which is now wasted), in a wholesome and highly interesting employ ment, one that is eminently calculated to give the youthful mind a sound direction, and lay the loundation for habits of industry and economy which cannot easily be shaken. With what a just and profitable priefs, will children exhibit their new lasts or bonnets, new coats or frocks, that they themselves shall purchase with their own money? Who can limit the effect of such proceedings, or value the ultimate product of such primarely.

eiples, implanted in the bosoms of the young? My valued friend Mr. Rapp, of Economy, Pennsylvania, called last week and presented use with a very handsome and serviceable pattern for a silk yest—the making of the silk and the vesting, being all within the friently." He stated that they had made 100th of silk last year, and were preparing to go extensively into the business—adding, he had given notice that he would purchase all the cocoons offered, and should have in operation all the necessary machines for the manufacture of silk goods. He shewed me sile of all necessary machines for the manufacture of silk goods. He shewed me sile of all necessary machines for the manufacture of silk goods. He shewed me sile of the manufacture of silk goods. He shewed me sile of the manufacture, the sile of the state of the same of the sile of the si

Since writing the preceding we met with the following interesting paragraphs in the AMERICAN FARNER.

The colors of the American Farmer has had the pleasure within a lew days, of receiving half a dozen skens of a sewing silk made by Mias Belinda Grisby, of Rockings country, Va. She obtained the egg of the editor last winter, with brief directions for their management; fed the worms on the common mulberry of the adjacent forest, recled the cocoons with a common country cotton reel, ideality in the same of the sa

and profitable, and by no means difficult.

The quality of the sisk is really excellent—its only taults being in the dying and finences. The pink and red are rather dull, but the green is beautiful; none of the colored skeins, however, have the rich gloss of which wish is assecptible. Four of the skeins are of a good sized thread for common use, but two of them are almost as fine as the fibre of the spider's "attenuated web." And yet it had been twisted, doubled and twisted again as common wheel. These, however, she only made thus fine to see how delicate a thread she could make. We have called the silk excellent, by which we mean that it was perfectly evenly recled, properly twisted, and of good strength, and not inferior in any quality except the colors, to any silk we ever saw. These samples of silk may be examined at the office of the Farmer by any one who may take an interest in the matter.

\*\*Jonetical sids.\*\* The cultivation of mulberry trees and silk worms, in various sections of the country, is applied yearbuding. Orehands, even meduing 100 seres,

Imerican sitk. The cultivation of mulberry trees and silk worms, in various sections of the country, is rapidly extending. Orchards, even meluding 100 acres, were planted during the last year; and many are now reaping a landsome profit on sike. The New England Farmer says—a gentleman in Mansfield, Conn. had upwards of 10,000 skeins of sewing silk, which readily sell for about \$5 50 per pound. Machinery in now

PWhat is to make cotton rise if the tariff does not exist? Will the making in England of the goods not made here, increase the consumption of cotton! Do our factories diminish the consumption? Does cheapness learn the quantity of cotton wors?]

being completed in that town for spinning and wearing pristice of these reflections will become sufficiently obthe raw material, under the direction of competent to reigners. The sales of sewing silk alone in Mansfield this year are estimated at more than \$85,000.

With the extent of country embraced by the United States, and the diversity of the climate, it is rational to calculate that the time is not very far distant when our enterprising citizens need not be under any dependence to foreign nations, either for the necessaries or luxuries of life. All the fabrics which comfort or convenience requires, are now manufactured in great abundance; and as many as may be demanded by the most fastidious taste, the development of our resources will soon supply. Poulson.

SHIP BUILDING was hardly ever so active in the United States as at the present time-a certain "sign" that the tariff is ruining the commerce of the country! We hope that there may not be an over-building. The ships late-ly launched are generally vessels of a very superior class.

PLOUR-Liverpool market, August 20. Average for wheat 64s. 10d. the quarter. The price regulates the duty—and, on the day given, the duty on flour was 223 sents, per barrel. "Free trade."

EDITORIAL CHANGE. The New York "Age" being merged into the "Evening Journal," the latter has appeared in a new dress, and promises to be conducted with much spirit and ability. It is faithfully devoted to the interests of the free laboring classes.

Mn. Evenerr, it is understood, will attend the fair of the American Institute at New York on the 11th inst. and deliver an oration suited to the occasion.

"LABOR IN VAIN." Governor Hamilton, of South Carolina, delivered on the 12th all, at the meeting of the state rights and free trade association, an address form which we make the following extract. The state of the stat from which we make the following extract, tempt to impeach the motives and attaint the character of Mr. Madison, reminds us of the old story about the of Mr. Madison, reminus us of the out more mount the "upper who gnawed a file" and only broke his own teeth. But how shall we measure the dignity of this proceed-ing, when we recollect that Mr. Hamilton is governor of a state? The wild polities of the day have certainly reduced the character of man in the United States; and that respect for private opinion which every gentleman once entertained, seems very much lost to the whirl of passion, vented in a courseness of speech that has a proper place only among the inmates of a cross-roads tavern.

"I know that an effort has been made to show that Virginia, in her celebrated resolutions of '98, either meant nothing by this great right of state interposition, or she meant to assert the oaked right of resistance to unlawful power. I say Virginia, for I prefer to speak of that great democratic commonwealth than of Mr. Madison, who happeoed, accidently, to be the organ of her public sentiment. She abides, I trust in God, where she did. He has crossed the Potomae, horse, foot and dragoons, and thrown himself on the side of the moneyed goons, and thrown himself on the side of the moneyed oligarchy of the North, by esponsing all their profitable doctrines of consolidation, and repuditing all those sale principles of construction to which Virginia owes her influence and authority in this confederacy. It is no new fact in the history of the world, that many men have had the intellectual power to strike out great truths, which they had not the moral courage to sustain; and it anafordments but the true of Mr. Madison, that there is unfortunately but too true of Mr. Madison, that there is unfortunately but too true of Mr. Madison, that there is scarcely a sogle principle which brought lime into power in 1800, that he has not discarded in 1830, and his last opinions ametify that most odious and dangerous hereay of consolidation, that long continued violations of the constitution, repeatedly affirmed by a majority, sanction the unprestore. Constrait the felters of this sanction the usurpation. Contrast the letters of this gentleman on the tariff with his speech in the first congress on the navigation, toninge and duty bill; his expo-stion of the Virginia resolutions in that great federal journal, the North American Review, with his own re-

vious."

Awfur! The Charleston Mercury, (chief nullificaquisition, under penalty of -

"Let congress repeal the tariff-abandon the principle of protection-abolish internal improvements-enact none but bons fide revenue laws-and let the government be administered fairly and honestly upon the great principle of equal burden and equal benefits, and southern excitements will instantly cease, harmony be restored between the different sections of the country, and new life and veger inbased into the union itself. But unless these things are done-it is unnecessary to say any more."

[What happened in "the days of the Hartford Convention" so immodest and outrageous as the preceding? Does a southern position give holiness to treasonable suggestions? Are they who most bawked at the "Hart-ford Conventionists" made of so much better stuffthat more extravagant acts in themselves are patriotic?

CHIEF JUSTICE MARSHALL, patriarch and oracle of the law, arrived in this city on Wednesday last, and has taken forlgings at Mrs. Sword's. He comes as an invalid, but the medical skill to which he has repaired is equal to what man can accomplish against disease, and will be exerted with the profound interest due to so venerable, useful and celebrated a character. It is the inten-tion, we believe, of the members of the Philadelphia bar to offer him suitable public honors.

[Nut. Guz., Oct. 1.

MR. CALHOUN, it is said, "In any event" (if living and in health), will be a candidate for the presidency of the United States, at the next election,

NEW YORK. We much fear that this city is paying dearly for its pre-eminence in commercial communica tions with the old world-not only in becoming the temporary resting place of many foreign vagabonds and vil-lains, but because of their example on the oative popula-We are shocked with accounts of all sorts of crimes-four burglaries recently happened in one night, acts of violence are common, and pick pickets and petty thieves abound; some high-way robberies also take place, and persons are knocked down without ceremoname, and persons are knocked down wannut ceremo-ny—and yet the police is one of the best and most effi-cient, in the detection of rogues, in America. We ga-ther these facts from the proceedings of the judicial tri-

The N. Y. Daily Advertiser learns from authentic surces, that during the month of September the people sources, that during the momin of September the people of this city, and strangers visiting it, have been robbed of \$5,918 in money, 16 watches, 272 silver spoons and almost an incalculable amount of jewelry, clothes, cloths, household furniture, &c. &c.

MARYLAND. Excessively pressed for room, as we Martand. Excessively pressed for room, as we should have been if giving active four pages instead of thirty-two to the present number, though twice our regular quantity, we cannot do more just oow than offer a summary view of the results of the general election in Mary land, which took place on Monday last. Particulars hereafter—for reference.

Congress. Mesurs. Howard, and Mitchell (Jackson). Congress. Mesurs. Howard, and Mitchell (Jackson) of the present of the pre

the late member, and a candidate:—total 4.

Measrs. Semmes and Washington, Clary, are reelected—Mr. Jenifer (C.) succeeds Mr. Dorsey (C.)

who declined a poll; Mr. Spence (C.) takes the place
of Mr. Wilson, (J.) who was not a candidate, and Mr.
Kerr (C.) has besten Mr. Spencer (J.) the late meber—total 5. So the vote of the state in for Mr. Clay,
Legislature. We have not all the returns for the
house of delegates—but it is approved that 57 Clay,

and 23 Jacksoo members have been cleeted-total num port; his speech on the bill to incorporate a national ber 80. Add the senate, 15--and the vote in join ballot bank, with his recent letter to Mr. Ingersoll, and the will stand 72 Clny, 23 Jackson-majority 49.

wherein the governor has nullified the decision of the superior court for the western district of that state. persor court for the western district of matsure, it is a novel proceeding, and will cause no small degree of excitement and surprise—if say thing can surprise persons in these strange and troublous times, when every thing, in the heated-south, is on the high-pressure, and a "bursting of the holder" may be expected, though we know not how, when, or wherefore, But Quem Deus, &c.

Athens, Geo. Sept. 30. At the Gwinnett term of the superior court held last week, the rev. J. J. Trott, ries to the Cherokee nation, were sentenced to imprison-ment in the pententiary for lour years each, for relising to take the oath to obey the laws of Georgia. At the voz: Messrs. Ghan, Delosier, Mayes, Coplin, Eston and two persons by the name of Thompson, received each the same sentence for the same offence. The old plea, denying the jurisdiction of the court, was the only delence set up.

Augusta, Sept. 26. This morning's mail brings us the following news from Milledgeville: Nine of the governor, on giving assurances that they would not again and Bulter, relusing to give such pledges of lature good Worcester has applied to the penitentiary.

Worcester has applied to the superator court. Stocking, "It is surrently reported, (says the Maenn Telegraph of the 24th ult.) in some of the upper counties, that gov. Gdimer's guard lave, without the intervention of judge or jury, lately put to death three Indians, by shooting, for degging gold on the Cherokee land." We must hope, for the take of humanity, the feelings of our people, and the character of the state, that this cannot be truce, but, when we reflect how much all these have lately and frequently been outraged, in the same quarter, and by the same men, we cannot help tearing the worst. [Augusta Chromele.

The rev. Mr. Worcester, at the time of his first arrest, was nost-master in the Cherokee country, and, as an officer of the United States, discharged, as not within the operation of the law of Georgia: but as soon as the facts were known at Washington, he was dismissed from the place of post-master, and immediately arrested, a second time, by the military force of the state of Georgia, and has been sent to the penitentiary as a criminal. On this point the Longville Focus makes the following pregnant remarks: "Is it within the reserved torious pregnant remarks: "Is it within the reserved rights of a state to reloue any peaceable eitzen of the United States a residence within her geographical or chartered Innits, unless he will take an oath priseribed by such state? Is at consistent with that guaranty contained in the constitution, that secures to each citizen of any state, all the privileges and nomunities of entirens of the screent states? Where, then, these Georgia derive the power to imprison the Cherokee missionaries for not taking such an oath as she prescribes? It is not within hier reserved powers to condemn men to incarceration without crime, without conviction, without trial, without even an accusation of crime. Yet all this she is

doing with impunity!
[We have a full account of the trial of the offenders, with the opinion of the court, &c. The case is headed, "The STATE vs. the MISSIONARILS," and the whole shall

be registered.]

ASSANITE, produced by wild notions about religion, has recently caused several murders and suicides in the United States; and hence some of late excising meetings have been severely condemned. There surely is a rightful limit even to a zeal to do good-a fitness and a diseretion in all things. The bruised reed is easily broken —and when we see that surgeons are oftentimes ounished for makiltul operations on the body—are we with-out remedy against individuals who work upon and destroy both boily and mind, by indiscreet or ignorant proceedings in religious subjects, which bring forth murder and suicide? It is a delicate matter, and one that should not be lightly interfered with—but we think there have

GRORDIA. We present a case in Georgia, page 121, | been cases wherein the law ought to have applied to panish evil-doers for outrageous attempts to accompibli what they thought was good. If gnorance does not excuse the surgeon or physician, why should it the elergyman? We cannot see why. And in highly excited cases because of feelings about religion, worthy elergymen would be as cautious to reduce them into soberness, as a faithful physician could be to lessen the fever of his nationt, preliminary to a cure of any general disease which might slicet him. The fever, in either case, must be first "broken"-and then a healthful state may be hoped for.

> IRELAND. In continuation of the facts and remarks that we presented some time ago concerning the state of treland, because that the British government preferred the labor of Englishmen and had established a precethe labor of Englishmen and hast established a prece-lence for it in many respects, we have some adultional facts and remarks to offer—that the true system of "po-hities for working men" may be better understood. The strange operation now exists—that provisions exported from Ireland, to keep down the balance in favor of England, (because of the superior encouragement or protection to labor in the latter), have been purchased at Liverpool, and returned, IN CHARITY, to the very places from whence they were exported, in payment of This fact is one of the best of all possible illustrations that can be offered of the importance of the HOME-MARKET. Had the value of the bread-stuffs and meats sent to England from Ireland been expurted in manufactures, starvation in the latter, if not wholly prevented, would have had a much less fearful extent. Out of these lacts we shall also show the glaring absurdity of what is called "free trade," unless to increase the wealth of one people, by adding to the priincrease the wealth of one people, by summing to the pre-vations of another! It is impossible, in the present state of society, that it can be nutually advantageous. We mean real "free trade"—not English "free trade," which only means profit to England.

From the London Morning Chronicle-In another column will be lound a report of a trad at the Kilkenny assizes, of two Roman Catholic gentlemen, for a conspiracy to compel a clergy man to lower his tithes. The jury were exclusively Protestants. They were convicted; and the judge (Johnson) sentenced them to twelve months' imprisonment, and a fine of £50 each.

The severity of the sentence will strike most of our readers. The Dubim Morang Register says—"These gentlemen appear to be men of high and spotless chagentlemen appear to be men of high and apottess character. It is proved that the public tranquility ower tiem a great iteal. They offended without knowing what they del. But with the judges of this country, the last consideration is the guilt of the prisoners. They east about them to see what offences are epidemical at the time, and woe to the prisoner who happens to have committed an epidemical offence or crime. Sheep stealing, for instance, happens to be on the increase; we must make exampless" (asy they), and no mercy for sheep stealers that year. Tithes, as our readers well know, are at present a very tecklish property in Ireland. If report is to be believed, the people have generally refused to pay, them, and at the sales there are no bidders; so that it has been found necessary, in stealing, for instance, happens to be on the increase; some cases, to convey the goods taken for tithes to l and. Tithe offence are, therefore, at present peculiarly obnazious, and hence, by way of example, and to pay tithes, this enormally severe sentence. At another time, the same offence might have essented with a fine of the district of the time pounds. If the power of judges in such a case ex-tended to hanging, they would have thought an excut-tion or two beneficial to arrest the progress of the evil.

RUSSIAN LOAN, &c. The house of Hope & Co. of Amsterdam, have opened a loan for Russia, on commission only, not being contractors. The English call it a "Pole-murdering loan," and it gets on badly, though of-fered at 78 per cent. for a 5 per cent. stock—or, at the eent. stock-or, at the start, 22 per cent, noter the par. The intended amount is 20 millions of rubles, equal to three millions sterling, but if taken, because of the discount, will produce only £2,300,000! To such a straight is the great autocrat

reclused. It was very uncertain if it would be taken up , house in Bridgetown escaped serious injury, and huneven on the terms proposed.

It appears from the preceding that the present par of the Russian ruble is 3s, sterling. The sitver ruble, we suppose is meant.

THE MADIWASKA TERRITORY. The governor of setume, under a resolve of the legislature of the state, totely appointed Messrs. Deane and Kavanah, commissioners to visit the disputed territory on the river St. inhabitants, and to give them information of the proceedings and views of the government and of the state in relation to them. These gentlemen entered on their mission about the middle of the summer, and returned safely near the end of August, having accomplished the objects of their appointment. On their arrival at the Madawaska settlement, notice of it was immediately despatched to the British authorities at Freilericton. were soon after niet by the Warden of the disputed ter-ritory, by direction of the provincial government, who inquired of them the objects of their mission. These besing lrankly explained to him, he protested against their proceedings, and told them that it they persisted, it would be his duty to continue with them. it would be his duty to continue with them. I hey ex-pressed their regret at giving him the trouble, but told him they were bound to exrry their instructions into execution. He continued with them two or three days, but offered no impediment to their proceedings.

[Boston Daily Adv.

. Reports are in town that difficulties have occurred on the Madawaska between the British soldiers and the United States citizens. The latter, it is said, undertook Other States citizens. The latter, it is said, undertook on the strength of a deed to take possession of lands which were in the possession of the British citizens, whereupon a quarrel ensued which terminated in the death of seven British soldiers and four United States citizens. We give this report as circulated from sources tolerably authentic: but it is well not to give it too much eredence before it is confirmed from the quarter itself."

[ Portland Daily Adv.

OFFICE OF THE COLONIZATION SOCIETY, Washington, Sept. 29th, 1851. The managers of the American colonization society have received information that many respectable free persons of color from the lower counties of Virginia and North Carolina, have made earnest application to the agent of the society in Norfolk for a passage to Liberia. Desirous of meeting the wishes of these applicants, the managers, notwithstanding the recent appropriation of 5,000 dollars towards an expedition from the western states, have authorised a committee in Norfolk forthwith to charter a vessel to convey thence from 150 to 200 emigrants, with the necessary auxiliary accieties, and their friends generally, for the accomplishment of this object. Another expedition may, perhaps, be despatched from Virginia during the may, pertuans, or desposited from the good passing actumin, should the resources of the society justily additional expenditures. Auxiliary societies and agents are requested to transmit such lunds as they may have or requested of manufactures are many interesting to the treatment of the parent society. The managers indulge the hope, that the friends of the society will, at this time, use all possible means and endeavors to augment its fonds.

R. R. Guatax, secretary.

COLOMBIA. We are glad to learn that general Pacz is using his best exertions to reduce the military and raise up the working classes. He dresses in the planest raise up the working classes. He dresses in the plantest manner, and avoids military deplay as much as possible. May he perservere in this conduct—may he be permitted to promote the arts of peace, and Colombia find repose under the power of the law!

HURRICANE IN THE WEST INDIES. We have long and fearful details of the late hurricane, left with such terrific force at Burbadoes, and almost as severely at some of the other islands—that just named, however, being rendered happy for the how logs of the wind—the graph of bourse with the desired and more than the state of the s The howlings of the wind—the erash of houses, with the shricks and groans remove a 12-pounder cannon, for the people, are "tales of terror," indeed. Not one north side of a battery, 420 teet!

dretts of persons were buried under their ruins-the very foundations of many being rooted up! Not a street re-mained passable—the churches were prostrated, but the church yards remained, and twenty or thirty bodies were bursed in single juts, time not being sllowed to give each one a grave! The country suffered equally with the town—the huildings and the crops all renderwith the town—the nutlings and the crops sil render-ing homage to the power of the storm, and many of the late most wealthy planters were reduced to shjeet po-verty, at once! The vessels were all cast ashore or foundered. So at St. Vincent's, with many deaths. At Manchioneal "the commotion of the sea was so great that the whole beach was covered with fish of every de-scription, and a number of shells, known only to inhabit the deenest water, were thrown ashore. The public road was completely washed away; the wharven, both roal was completely washed away; the minutes, some public and private, are all gone, excepting the piles, and a small sloop, the Faithul, is lett in the middle of the public road. The damage done is considerable, but only extends to those situated near the sea." And yet the gale, itself, was not much felt there, and a letter from Port Maria says—We were visited with a tremendous heavy sea, and some of the oldest inhabitants do not remember to have seen it so violent. You may judge of its tury, when I state it rendered the road from here to Oreabessa impassable, having thrown up imstrewed!

The loss at St. Vincents is estimated at £500,000 sterling; that at Barbadoes no one has ventured to calbeen kelled by the falling houses, &co. Some Louses were entirely lifted up, and thrown great distances from their floated in the air, in terrible violence!

The aggregate of the damages sustained at various

places must smount to many nullious of dollars-pro-bably not less than twelve or fitteen. The growing

nony not tess than tweive or fitten. The growing crops were, in many cases, wholly destroyed.

The prople of those islands which escaped the gale, were along much to relieve the calamities of the adferers, and partial supplies of provisions and other necessition that the standard control of the control of ecssaries had been lreely transmitted.

BRITISH SOLDIERS. We notice among the recent deaths of English military men some that are not without interest to us.

A colonel Anwyl of the 4th, of whom his biographer speaks in the highest terms, recently died in the isle of Wight. After distinguishing himself in the peninsula, Wight. After unangussing sinser; in the personners and particularly at St. Sebastians, he came over to Canada as brigade major of gen. Robinson, and commanded the light troops of his brigade in an attack on the American pickets at Plattaburgh, and displayed a gallantry, which, if it had been more general, might have

maile and work among our unincentification when they were "backside of Albany."

In July last, also died, aged 83, gen. sir Charles
Green, bart. colonel of the 37th. He was an officer in the 31st during our revolution, was in several engagements on the frontier, and was wounded in the battle of Freeman's larm, while delivering a message from gen. Philips to gen. Burgnyne. In 1796 he had an appointment of high rank in Canada, and saw service afterwards in different countries.

Colonel James McDermot, of the military college, is another of the veterans of the revolution. He came over when Quebec was relieved, and remained in America ull 1787, having been in service the whole intervening period. All these men died in the must or weather honor. The British government has taken good care of its old soldiers. [Albany Daily Advertiser,

<sup>\*</sup>The damages sustained by the hurricane of the 10th October 1780, were estimated at seven millions of dollars, and at that time 4,326 persons lost their lives. The loss of life and the amount of damage by the late gale, are thought equal to those of 1780. In that year, the toree of the wind and waves was so violent, as to remove a 12-pounder cannon, from the south to the

#### FOREIGN NEWS.

An arrival at New York brings Liverpool dates to the 24th August.

PRANCE.

There seems to be no hope that France will interfere in behalf of the Poles, the Perrier policy appearing to prevail still in her councils. There is an article howgreat powers, including France, have at length decided on acknowledging the independence of Poland. The harvest in France has been abundant and the gradi uncommonly fine. The king, in answer to the address of the deputies, returns thanks, and says that the French army will be withdrawn from Belgium the moment that the safety of that country shall be secure from aggresfor 1832, is 1,097,700,000 frames, those of this year were 1,172,000,000, heing less by 74,800 000 than those of 1851, to meet which the government have in available resources an excess of meome over the necessary expenditures of 63,360,000 francs. Paris was quiet. ENGLAND.

The reform bill is still progressing slowly, and the opposition have so far succeeded in their views as to lead it with sundry objectionable provisions. The crops in England and Scotland were secured, and had proved to be a full average in quantity, and very auperior in quality to those of last year. The toreign policy of the ministry is strenuously opposed, and the opposition scems to wish monsters to place themselves m a warlike attitude against France; the fatter however coolly maintain themselves against every assault. Some alterations with respect to the army in Ireland, were in contemplation.

RUSSIA AND POLAND.

The main body of the Russian army was marching upon Warsaw, and a decisive tattle was again speedily expected. The coles were in fine spirits and express themselves tult of hope and confidence. On the 13th of August the Russian commander-in-chief kept the grand army at a distance of 50 miles from Warnaw-the Polish army in sight. It was thought and feared that the plague would be introduced into the Russian army from their Asiatic provinces, where it had broken out with great mangarity.

A successful attack had been made by major Anrel,

of the Russ an army, on the Poles at Osaick, 500 were killed and 187, with 9 officers, taken prisoners.

The emperor Nucleolas has issued a proclamation in which he enjoins it upon the Poles to return to their duty, and promises pardon to all who may seek it; trills them that he had sent other troops to strengthen his army, and that, it they do not submit, dangerous consequences thust ensue.

PORTUGAL.

The Paris "Constitutionel' states that Don Pedro, who had written to Don Miguel miving him to meet him in London, and declaring, in case of refusal, that be should bring his daughter to Lisbon, had received an answer from Mignel, in which he states that, by taking the title of diske of Braganza, Don Petro had become his vascal, and that as such by writing that letter he had been gudry of a want of respect to his sovereign; that he should be tried for his erime, as also tor having assumed a tale to which he had no claim, as, by abdication, he ad fortested it to the king's son; that the title of Donna Maria was myshid; that he had been proclaimed king and possessed the affections of the Portuguese, that Don Pedro was a blind tool of ignorant advisers, chosen from the lowest orders of the people; that he had become a second Mana, a complete rebel chiel-a disturber of public order, and currily to the peace of Europe, and an enemy to liberal ideas. Three corvettes had an ived from France with men for the French fleet, to commiete their erews. Don Miguel was continuing his military preparations.

A regiment of the king's troops had revolted, killed their officers and marched to the public square, where they illustrated the police and gave their arms to the rabble. They were joined by many of the minutetunis; but were soon surrounded by a toree under Don Miguel, who fired into them and killed from 300 to 400, when the survivors surrendered.

BELGIUM.

A correspondent of the London Times, writes from Paris that the greater part of the French army were to be withdrawn from Belgium-peace was therefore looked The utmost tranquility prevailed at Brussels, and the most triendly relations existed between the French commander-in-chief, gen. Girard, and the prince of Orange. The duke of Saxe Weimar is said to have insulted Lord Witham Russell, the English minister, and

to have spoken disrespectfully of the king and queen of England.

#### BRIEF NOTICES.

Wool still bears a high price .- American from 50 to 70 cents per lb.

William Ramsey, esq. long a member of congress from Pennsylvania, and re-elected, died on the 29th ult. after a brief illness of three days.

Harrison G. Ous, esq. the faithful and vigilant mayor of Boston, has declined a re-election, for reasons exclusively of a private nature.

Civilization. - At the last ball fight at Aranjuez, the most celebrated matador in Spain was embowelled on the spot, amidst it e loudest applause of the court and the other spectators!

The president during the last week had a sharp at-tack of intermittent lever. He was somewhat indisposed on his return from his visit to Carrollton, and promptly applied efficacious remedies before the discase assumed the form of the epidemie, which is now prevalent in the city. By thus taking it in anticipation, persuases in one eay. By thus taking it in anticipation, the fever recurred only twice with violence, and the third chill was entirely prevented. He has been rapidly recovering since, and was able to ride out of Friday.

[Gibbe. Oct. 3]

A second mutiny, and by a second erew, has taken place on board the revenue cutter Morris, stationed on

the coast of Mame.

Truncasce. The legislature of this state commenced its bennial session on the 19th uit. The message of gov. Carroll is confined entirely to matters of state policy, if we except the recommendation of the establishment of the general ticket mode of electing electors of president and vice president of the United States .--This course is recommended in order that the state of Tennessee may have its "full weight in the elections for president and vice president hereafter;" that is, not at the ensuing election, for he says, "it is true that no danger of division is to be apprehended at the approaching election; but in lottire," &c.

Cabbuge. A lamily in Philadelphia has been poison-ed—two of whem died and three were not expected to recover, from cating cabbage, thought to have contained a postonous worm. A dog and a cat that ate from the dish on which the cabbage had been placed, took sick.

The population of the town of Manchester, England, id its suburbs, is thus given in a late British pape Manchester 142,026

Safford, divided by the canal only, and bridge of 150 leet 40 705 Chariton Row (estimated) 21,000 Halme 9.600 Pendleton 8,435 Ardwick (estimated) 6,000 beetham 4.025 Broughton 1,539

All within two miles 933 580 Being an increase of about 75,000 or very nearly 50

per cent. on the returns of 1821. The foregoing towns all join.

The editor of the Guardan further says, that within or 9 miles of Manchester, the population was estimated to be a million. The goods manufactured in this thickly populated neighborhood,, all, or nearly all, are disposed of in Manchester.

Alongh story. "An old pilot of the Moluceas," says Pigsictus, "assured me of a verity that they had pigmics there who dwelt in caverns, and had cors so very ing that they skept upon one, and covered themselves with the other." No bad hint for brother Jonathan. "Heads of families!" There are now in the employ of George George, esq. clother of Frome, there inca

wass are the fathers of no less than mity-lour enduren, assacly, Job Penny, 20; Jas. Briter, 17; Wm. Timbury, 17.

[Bath [Eng.] Herald.

[It would not appear from the preceding that manu-

facturers are unfriendly to population!

A land gull. Under this term a Philadelphia paper gives a long description of a certain native of Mexico, whose most common name is Mareno, aged from 60 to 65 years, who has been playing off his swindlings in that city and its neighborhood. We had thought this fellow must have run his course-for it is 15 to 18 years many of the people of Baltimore, and among them on ourselves, for about fifty gollars. He is one of the amouthest scoundrels that ever lived.

Nobility. Among the European nobility probably income goes beyond £300,000 sterling. The duke of Medina Coli, whose wealth is generally taken as a standard and term of comparison, possesses only 214,000,000 reals, about £115,000, and he is obliged to keep a regal establishment, as he still keeps up his pretensions to the crown of Spain. His household amounts to more than 200 persons.

Mucon, Geo. A letter from a friend at this thrifty

town, says that it contains several schools-and is not wanting a school master, as has been stated.

Vale college. Subscriptions are now making by the aturani and friends of this college to raise the sum of one hundred thousand dollars to extend its means of thousand dollars were immediately subscribed. It is expected that the whole sum contemplated will soon be obtained.

New Bedford, Sept. 19. Drowneil, yesterilay, in the diving bett employed near the Hen and Chickens to raise a wreck, capt. Jonathan Blanchard, of Plympton, aged about 40. Every effort was made to recover the body, but in vain, Capt. B. had a wile and five children, to whom this melancholly event will be pecu-

Died, on the 2nd Sept. at Millerstown, Pa. John Reid, esq. in the 86th year of his age. He was one of seven est; in the soft year of his age. He was one of seven brothers who all joined the army of the revolution, a person of much influence among his neighbors, and highly esteemed.

- in Prallsville, N. J. John Prull, sged 74 yearshe entered the service of his country in the revolution as a lieutenant, and fought at Brandy wine, Monmouth, &c. See, and at Elizabeth-town was severely wounded. was an elder of the Presbyterian church for more than 40 years.

William Chapman, who obtained considerable or lebilty for curing impediments of speech, died suddenly in July last, in Bucks county, Pennsylvania, and his widow, ten days after, married a fellow who had been tor a short time an inmate of the family, who called himself . Mina saying that he was the son of the celebrated general of that name. Mina soon rendered an act of justice to the wanton, by seizing upon all her valuables that were convertible into money, and leaving her to her private reflections. He has since been arrested to the eastward for the lorgery of a draft of \$1,000, and is demanded by the governor of Pennsylvana to answer a charge of having possoned Mr. Chapman, whose body has been raised and examined. The worran, his wife, had left the neighborhood, and, it is supposed, has concealed her shame and mortification in Canada. ("Mina" has been brought to Philadelphia. It is not long since he left one of the penitentiaries, on the exparation of his period of service-and, for murder or lorgery, will be checked in

brink for houses. — Some of the inn-keepers on the west-ern road, (Eng.) have adopted the practice recommended by a member of the Bath Agricultural Society, of boiling the corn given to horses, and giving them the water It is most satisfactorily ascertained that three bushels of oats, barley, &c., so prepared, will keep the horses in better condition for working than double the quantity in a cruile state.

The President, accompanied by Mr. Barry, Mr. McLane, and William B. Lewis, on Monday week, went

who are the fathers of no less than fifty-lour children, to Carroll's manor, to celebrate, with the venerable Charles Carroll, the ninety-fifth anniversary of his life.

#### FREE TRADE CONVENTION.

We designed to have attended this meeting at Philadelphia, which assembled on Friday, the 30th Sept. but could not make it convenient to leave home; and so, perhaps, have lost much information concerning the discovery and location of free traile,

We have a consulerable body of articles in relation to the getting-up of this convention. It surely contains many gentlemen of first rate talents and most lofty character—but the manner in which many of them were made delegates, goes to show that the people have had very lattle feeling in this matter; in general, the pri-mary meetings were exceedingly small. In some cases, at most important places, hardly exceeding in number that of the delegates appointed by them! We notice that the Billish subject, Mr. Sarchett (one of the sixteen delegates elected by the meeting of fourteen persons at Philadelphia), is not reported as one of the members-but a certain resolution passed the convention with the apparent view of securing his invaluable servi-cisin the cause of "free trade." The delegates appoint-ed at the "private" meeting in Baltimore have not sttended—though two gentlemen are reported from Mary-land. We have not the pleasure of knowing them, nor from whence they came-never having seen any notice of their appointment.

There were 51 delegates from Virginis; 40 South Carolina, all from Charleston except 2 or 3; 23 New York, all from the city; 18 Massachusetts, chiefly from Boston; 16 North Carolina; 15 Pennnsylvania-all from Pholadelphia; 11 Alabama; 9 New Jersey; 6 Georgia; 3 Maine; 2 Connecticut; 2 Maryland; 2 Tennessee and I Rhode Island, and I Mississippi.

The following sketches of the proceedings of the convention take in every matter of interest, reported in the Philadelphia papers, except a list of the names of the

delegates, which shall be given hereafter.

Finlay, Sept. 30. At 12 o'clock the meeting was called to order by Mr. Joseph R. Evans, of Philadelphia, and col. Richard Banett, of Virgina, appointed

charman pro tem. A long discussion then followed as to the manner in which the president of the convention should be chosen. Some would have the choice made by states, others per copius; either party supporting its opinion with much tenseity. At last, to cird the debate, which had become rather animated, Mr. Cheves moved that the convention would samply proceed to elect a president to-morrows

would simply proceed to elect a president to-morrow and then the meeting adjudined.

Satur day, Oct. 1. The convention was called to order at 10 o'clock by Mr. Bassett. Mr. Guttain nominated Mr. P. P. Barbour, of Virginia, for president of the convention, and he was elected by general aschimation. On taking his seat, Mr. Barbour returned thanks for the honor routered, in a very neat and brief Mr. Condy Raguet, of Philadelphia, was then address. appointed secretary.

Mr. Mitchell, of South Caroline, then rose and introduced to the consideration of the convention certain resolutions offered by Mr. Webster, at a town meeting in Boston in 1520, and made some copious remarks upon them. The substance of these resolutions seem to be as follows, and Mr. M. said that they contained the "universal sentiment of the people of South Carolina"-

"That high bounties on such domestic manufactures as are benefitted by the tariff, favor great capitalists rather than personal industry, or the owners of small ea-patal, and therefore that we do not perceive its tendency to promote national industry.

"That we are equally incapable of discovering its beneficial effects on agriculture, since the obvious consequences of its adoption would be that the farmer must give more than he now does, for all he buys, and receive less for all he sells.

"That the impositions of duties which are enormous and declared by a large portion of the people to be unequal and unjust, is dangerous, as it encourages the practice of sinugaling.

tariff should be reduced to the standard of revenue for the support of government."

These resolutions were laid on the table.

Mr. Gallatin thought that before bringing specific propositions before the convention, some prelaminary steps were necessary for the general arrangement of his siness. He had learned with great satisfaction that fif-teen states were represented in the convention. The feets states were represented in the convention. The memoers had as yet had but Ittle opportunity for ascer-taining each others' scatiments. To promote this ob-ject and to facilitate business, he would propose that a committee should be appointed, consisting of two members to be elected by the delegation of each state, or of one member when, from the necessity of the case, there would be no more than one, and that to this telerative committee thus formed should be committed the duty of arranging the order of business. The principal object of the convention was of a particular nature. A remonstrance to congress must be prepared. A committee of correspondence to collect facts, may be necessary. An address to the people of the United States, will, perhaps, be thought proper. To prepare business for the consideration of the convention, a general committee seemed necessary, and that this committee might have general nowars, he offered a resolution expressed in general

After some remarks from Mr. Jones, of Georgia, Mr. Pondexter, of Miss. Mr. Gallatin, of New York, Mr. Cheves, of South Carolina, and Mr. Carpenter, of Maine, as to the rules of business, which, at last, seemed to be

lett to the "common law of parliament,"

It was resolved that there should be a recess of half an hour, to afford the different deligations an opportu-nity of electing the members of the lederative committee.

for the general arrangement of business.

When the president had resumed the chair, the different delegations reported that they had elected the following gentlemen, members of the federative committee.

Maine—Joshua Carpenter, Charles Q. Clapp. Massachusetts—Theodore Seilgwick, Henry Lee. Rhode Island—William Hunter.

Connecticut-William J. Forbes, James Donaghe. New York-Albert Gallatin, John Augustin Smith, New Jersey-Cornelius II. Hardenburg, H. Vethake. Pennsylvano-Thomas P. Cope, Clement C. Biddle. Pennsylvanus—Thomas P. Cope, Grement C. Bugge Maryland—William W. Handy, A. E. Jones, Virginis—James McGaraett, John W. Jones, North Carolina—James Fred II, William A. Blount, South Carolina—Chanceltor Harper, D. E. Huger,

Georgia - J. Mel'herson Berrien, Eh S. Shorter. Alabama-Enoch Parsons, Henry Goldthwaite.

Mississippi-George E. Pointlexter. Tennessee-Willich E. Butler, Alexander Patton. Mr. Berrien, of Georgia, stated that it was desirable to ascertain the operations of the duties in various parts of the union, and as some parts were not represented on this floor, he would offer a resolution to invest the president to invite persons capable of giving information, to a seat within the bar.

The resolution was unanimously adopted, and the convention adjourned to 12 o'clock on Monday.

Monday, Oct. 3. A number of new delegates ap-eared. The president announced the names of several neared. gentlemen, (not given in the proceedings), in the diserction allowed him by Mr. Berrien's resolution. president was invested with power to make accommoda-tion for such ladles as should please to attend. On motions male, it was resolved that chief justice Mar-shall and Mr. James Brown, of Lou. should be invited to seats within the bar of the convention-- and some other minor matters were attended to.

Mr. Gallatin, the chairman of the federative or reneral committee, reported that the committee were daubtful of the extent of the powers conferred on themwhether they had authority to draft a memorial to congress, and an address to the people, or simply to prepare business for the consideration of the convention. He had been instructed by the committee to ask for information on these points, and also to submit to the convention, a resolution for the appointment of a com-mittee, consisting of one person from each of the states represented in the convention, to prosecute before con-

"That in the opinion of this meeting, the duties of the | gress the great objects which they had assembled to promole.

After remarks from several gentlemen, it was agreed that the committee should be authorised to prepare

might deeps necessary.

The president laid before the meeting, a document that had been forwarded from Lauderslale county, Alabama. It represented that the citizens of that county were decidedly opposed to the tariff policy, but that it was inconvenient to them to send representatives. would, however, be bound by the proceedings of the would, however, he bound by the proceedings of the convention, provided they were not of a nullifying character. They also suggested the holding of an annual meeting of the triends of free trade, the delegates to which should be appropriated among the several states according to the number of their representatives in congress.

On motion of Mr. Gallatin it was then resolved, that there should be a recess of an hour, to allow the ledera-

tive committee an opportunity for deliberation.

When the president resumed the chair, Mr. Gallatin. the chairman of the follerative committee, by direction of that committee, reported two resolutions, one directing an address to the people of the United States, the other a memorial to congress, to be prepared, to pro-

mote the objects of the convention. These resolutions were adopted without a dissenting

Mr. Mercien of New York, then offered a resolution requesting the general committee to have the memorial

and address prepared, and to submit them to the consideration of the convention.

It would, he believed, be conceded on all hands, that attendance in the convention was very inconvenient to many of the members, and productive of great sacrifices. The stoner we can get through the business, the more satisfactory it will be to all. Mr. M. proposed to commut the duty of preparing the memorial and the address to the general committee, because it was already appointto the general committee, because it was already appointed, because, irom the manner in which it had been formed, it possessed the means of ascertaining the exact wishes of the different states represented in the convention. An additional reason was, that some interchange of sentiment on the subject of the memorial and of the aildress, had, he understood, already taken place among the members of the committee.

The motion was adopted, 117 members voting in the affirmative.

Mr. Jones, of Georgia, then offered a resolution, the gist of which was the absolute unconstitutionality of the American System."

Mr. Charles Q. Clapp, of Maine, proposed a substi-tute, asserting the opposition of the "American System" to the spirit of the constitution.

On motion of Mr. Basser, it was resolved to lay the resolution and the substitute on the table.

Mr. Poindexter, of Mississippl, then offered a series of resolutions, expressive of the warmest attachment to the constitution, and a determination to defend it at all hazards from all loes external and internal; but insisting on the principles of strict construction, declaring a considution to be an instrument limiting the powers of the governors, and that when these lunits were transgressed by

the governors, the people ought not to submit.

Mr. Poindexter offered to lay the resolutions on the table, and Mr. Vethake, of New Jersey, made a motion

to that effect.

Governor Miller, of South Carolina, thought this eourse would be improper. The resolutions purported to be instructions to the general committee, and it they were to have any effect, they ought to be discussed before the general committee made its report. Laying them on the table, might retard the proceedings of the committee.

Mr. Jones, ol Georgia, in an animated speech, declared that the object of his resolution was to instruct the committee, and the object of the resolutions of the gentleman from Mississippi, was the same. If it be proper to give any instructions to the committee, the sooner it is done the better. His object was to elicit the sentimenta of the convention, in regard to the unconstitutionality of

enally instructed by his constituents to maintain the un-constitutionally as well as inexpediency of the system. He had not known the object for which they were assembled, and it would be to little purpose if they were not to deelare that the system was unconstitutional. inexpediency of it, was, to his constituents, a minor consideration. We stand on the principle of the unconsti-tutionality of the system. Bad as our condition new is, hard as our burdens are, they are nothing to what they may be, if the constitutionality of the system be admit-ted. We had better never have assembled, if by our silence on this point we leave it to be interred that the act is constitutional, and we are at the mercy of any congress if we only declare it mexpedient.

Col. Butter, of South Carolius, (who spoke with equal animation) said he hoped the resolutions of the gentleman from Mississippi would be referred to the committee, with their report. As far as that report went, he was perfectly satisfied. He leared it this not go far enough. The address and memorial to be drawn up by that committee, would breathe a tone, a spirit, that might satisfy his constituents. But, he observed, there was no alinsion made in it to the question of the unconstitutionalty of the tariff. My constitutional, and Mr. Buller, believe that it is unconstitutioual, and believing so, it was a question of vital importance to them. I agree with my friend from Georgia, that it is necessary that this question should be decided on by this body. I will go as far in the spirit of con-ciliation as any one. I am delighted with the spirit which I see pervades this assembly. I see a disposition to oppose the system of which we complain, and a spirit becoming the occasion. But I cannot go so far as to compromit principles, and to this egard the instructions of those who sent me here. I do not insist on the preeise proposition in which it may be said the constitution has been violated. It was enough that the constitution of a people had been violated—whether in spirit or let-ter was immaterial. I come instructed by constituents who know their rights, and will not consent to any compromises of principle, that will put them in jeopardy, and to yield the constitutionality of the measure might have that effect; and to forbear expressing our opinion on this point, might be construed into acquescence, although not so intended. This question must be met, and if I refuse to meet it, I will go home to be consumed by the indignation of freemen who have sent me here to assert and maintain their rights.

Mr. Vethake agreed to withdraw his motion to lay the resolutions offered by Mr. Poindexter on the table, to make way for the motion to refer them to the committee, on the distinct understanding that such reference of them in no way implied any matruetion on the subject to the committee by the convention. He said he had no intention of expressing an opinion of the constitutionality or unconstitutionality of the restrictive system; but wished simply to stave off the discussion for the present. The commutee, he had no doubt, would be able to meet the wishes, if not of all, of the great majority of the members of the convention. The discussion could be entered upon when the memorial and address were before the convention.

Chancellor Harper, of S. C., moved to commit all the resolutions to the general committee for consuleration.

Mr. Cheves said that if the resolutions were to be regarded in the light of instructions, he would give the preference to that of the gentleman from Georgia, (Mr. Jones ) The resolutions of the gentleman from Missis-The resolutions of the gentleman from Mississippi involved too much—they involved the whole prin-ciples of government, some of which it was unnecessary now to discuss. If the resolutions were simply committed to the general committee for consideration, we should be just where we are now: for the resolutions involved no opinions not familiar to all the members of the committee. Two courses presented themselves to the convention. The one was to make an express declaration of principles in distinct resolutions, and be governed thereby in the prepatation of memorals and remonstrances. The other was to embody the sense, intelligence, and local information of the members in

protecting and probabilory duties. He had been espe- | convention. It was obvious that there was but one question which could agitate this body, and that was the question of the constitutionality of the restrictive sys-tem. This question cannot be evaded. Meet it in some shape, we must. It must be brought forwards it by no other person, by myself (unless I am forcibly silenced) though I should preter its being brought forward by another. It struck Mr. C. that the best way to bring it forward would be to suffer the committee to report, as discussion now in ght retard their proceedings.

Chancellor Harper, of South Carolina, was decidedly

of names that it would be best to deter the discussum till the committee had made their report. The resolution that had been offered might be regarded as mere lants for their consideration.

Mr. Berrien, of Georgia, with a view of ascertaining whether the resolutions contained instructions to the committee, or mere suggestions, requested that they might be read agam.

The request was complied with, and then Mr. Berrien stated that the resolutions did not, in his view, contain any thing absolutely building on the committee or on the convention. He gave the preference to the resolution of his colleague (Mr. Jones), but he would, out of abundant caution, suggest a verbal alteration to his friend in order to meet the wishes of the members generally.

The president stated that the committing of the reso-

lations would not bind the body. They might decide directly against them, if they saw fir.
The resolutions of Mr. Jones of Georgia, Mr. Clapp of Maine, and Mr. Poindexter of Mississippi, were then committed to the organic committee for conside-

Mr. Gatlatin said that as the commitment of these resolutions imposed on the committee the duty of exaniming the subject matter referred to therein, he had been instructed to say the committee would not be prepared to report before Wednesday at 12 o'clock.

The convention then adjourned to 12 o'clock on Wednesday.

Wednesday, Oct. 5. We must be brief in our notice of this day's proceedings. The president submit-ted a communication from James Ronaldson, of Philadelphia, stating that a reduction had recently taken place in the price of iron, and suggesting the appointment of a committee to enquire why the prices of iron, sugar, and other commodities were so much lower now then in former years. [It does not appear that any re-

Mr. Mitchell, of S. C. offered a general resolution which had for its object, to abolish all specific or minimum didies, and institute an ad enterem duty on all import d articles. Referred. [In offering this resolution Mr. M. said 'he was not a man of business.' The promosition itself shows that he entertained a just opinion of homself. }

The general committee not being ready to report, the convention adjourned till 4 o'clock, when the reof America" was received and read. From a sketch of the contents of this address, it seems that the tariff laws are pronounced "unconstitutional." The other points are pronounced "unconstructions." The other points made are those generally arged by the opponents of the "American System." It is said to be an "elegant composition" and to have been "elegantly read" by Mr. Berrien. Adjourned.

[Among those who visited the convention this day, were chief justice Marshall, judge B.ddwin and Mr. John ston, a senator of the United States from Louisiana, Not many ladies attended.?

NATIONAL ANTI-MASONIC CONVENTION. From the Patriot. Bultimore, Sept. 26, 1831.

At 12 o'clock, M. the delegates to the national antimasonic convention assembled in the saloon of the Atheof New York, when the hon. John Rutherford was called distinct committees. As the object was to consume the least time, the latter course had been adopted by the

JOHN C. SPENCER, of New York. President. JOHN RUTHERFORD, New Jersey, 1st V. P. JONATHAN SLOAN, THOMAS ELDER, Ohio, JOHN BABLEY, Mass BENJAMIN F. HALLET, Penn. 3d V. P. Mass.

EDWARD D. BARBER, S. C. LEAVITT, secretaries. CALES EMERT,
On taking the chair, Mr. Spencer addressed the con-

vention as follows:-Gentlemen-I return you my thanks for the distinguished honor you have conferred in calling upon me to pre-aide over your deliberations. While I distrust my abiside over your deliberations. While I distrust my abi-lity to discharge the duties of the chair, I have yet learnt in the school of anti-masonry to decline no duly to which I may be called in the promotion of our great and growing cause. But my relance, gentlemen, will be on your patriotiam and urbanity, to render the duties of the station light and easy. I ask your indulgence for any er-rors that may be committed, assuring you that nothing offensive to any member shall proceed from the chair,

or be permitted in the deliberations of the convention. On motion of Mr. Phelps, of Mass, voted, that the credentials of the delegates be now received and examined; upon so doing it appeared that there were present,

from

New Hampshire t New York 31 2 New Jersey 13 Pennsylvania Maine Massachusetts 19 4 Ohio Rhode Island 5 6 Maryland Connecticut Vermont 5 Delaware

On motion of Mr. Walker, of Mass. voted, that a regular roll of the members of this convention be now made, and that the state, county and town, in which they reside,

be fully designated.

On motion of Mr. Morris, of N. Y. voted, that a committee of three be appointed to maite the hon. Charles Carroll, of Carrollton, to take a sest in this convention. Messrs. Rutherlord, of N. J. Burt, of N. Y. and Elder, of Pa. were appointed said committee.

Voted, on motion of Mr. Phelps, that a committee of

one from each state be appointed to report upon the bu-

sinces of this convention, viz:

Phelps, of Mass. Terry, of Connecticut, Barber, Ward, N. Y. Vermont. Penn, Vanderpool, N. Jersey, Hallett. R. 1. Sloan, Ohio, Gibbons, Delaware Cram. Emery, N. H. Shriver, Maryland, Voted to adjourn to meet again at 4 P. M. Met agreeably to adjournment. Mr. Phelps from the committee reported on the business to be adopted by the conven-

tion, which was unanimously accepted.

On motion of judge Hopkins, of New York, voted, that Messrs, Hopkins, of N. York, Jones, of Pa. and Wal-

ker, of Mass. be a committee to wait on his hon, chief

justice Murshall, now in this city, and request his attendance on the sitting of this body. Mr. Ward, from the committee, at the call of the con-

vention, submitted a report which was read and laid upon the table.

The president of the convention announced the ap

Dominent of the following committees: Thomas II. Burro On masonic penalties—Hallet, of R. I. Larned, of Thaildeus Stevens Maine, Morris, of N. Y. Grunshaw, of Pa. and Warner, John Clarke

On judicial proceedings in the case of Morgan-J. C. Speneer, of N. Y. Ogle, of Pa. Walker, of Mass. Gibbons, of Del. Russell of N. York.

On the address to the people-Holly, of N. Y. Denny, of Pa. Leavitt of Connecticut.

On publishing the proceedings—Phelps, of Mass. Hop-kins, of N. Y. and Poote, of N. Y. Onfinance—Irwin, of Pa. Boynton, of Coun. Beekman, of N. Y. Jeukins, of Ohio, Shriver, of Md.

The ecommittee appointed to wait on judge Marshall, reported by their chairman that they had seen that gentleman, and that, in reply to their invitation, his honor politely stated that he should leave the city at 6 o'clock, to-morrow morning, and therefore be unable to attend, although it would afford him great pleasure to do so.

On metion of Mr. St. John, of N. Y. voted to adjourn till 10 o'clock, to-morrow morning.

> List of delegates attending the NATIONAL ANTI-MASONIC CONVENTION.

Mame. Levi Cram Hanes I arnud New Hampshire-Calch Emery.

Vermont. Josiah Rising Joseph H. Brainerd Samuel Loveland Edward D. Barber. Charles Davis

Abner Phelps Amasa Walker Benjamin V. French Stephen Oliver Alpheus Bigelow Nathan Lazell Joseph Morton

William Sprague George Turner

Smith Wilkinson John Boynton Samuel Kellogg

New York. Henry Cotheal Henry Dana Ward William Howard James Burt Silas Stone Joseph Case Reuben Goodale Gamaliel H. Baratow Elijah Miller Phineas L. Tracy Philo C. Fuller Thomas Beckman Samuel P. Lyman Samuel S. Seward James S. Wadsworth William H. Seward Charles W. Lang Robert Townsend, jr.

John Rutherford James Vanderpool John H. Voorhees

Harman Denny John R. Joses Samuel Parke George Smith Thomas Elder Samuel Leidy Jacob Alter Charles Ogle Samuel McKeehan Joseph Buffington Charles Dichl William Heister Thomas H. Burrowes

Jonathan Warner Zidda Lindly, jr. Nathaniel Kulder Franklin Baker Jonathan Sloane

Massachusetts. John Builey Micah H. Ruggles Hiram Manly Gardner Burhank Samuel B. Barlow Epophras Hoyt Nahum Hardy

Rhode Island. Benjamin P Hallett Walter Paine, jr.

Connecticut. Henry Halsey Henry Terry Sheldon C. Leavitt. Jonathan Perris,

> Samuel M. Hopkins David Russell Samuel Partridge James Geddes John C. Spencer Evert Van Buren John Birdsull George H. Boughton Samuel St. John Nicholas Devereaux Myron Holley Tally Lynde Timothy Childs Noble D. Strong

Thomas S. Lockwood

William G. Verplanek. New Jersey John Alling Northrop William Vanderpool. Pennsylvania.

William Grimshaw Owen Stover James Paule Christian Pretz John Burrows Jacob Cassatt Jacob B. Miller William W. Irwin Robert Falconer Samuel Harvey Benjamin Riegle Charles Waters - Rugle Samuel J. Packer.

25

Robert Hanna - Pike - Fowler. Indiana-John Taylor.

Warren Jenkins

Delaware-Joshua V. Gibbons. Maryland-John S. Shriver. Tuesday, Sept. 27, 10 o'clock, A. M. Met pursuant to adjournment.

The proceedings of yesterday were read by the secre-

tary.
Messrs. Oliver, of Mass. Harvey, Heister, Rugle,
Burrowes, Waters and Stevens, of Pa. Baker, of Ohio, and Strong of N. Y, appeared and took their seats.

A letter directed to the president of the convention from Samuel Stevens, a delegate from N. York, was presented and resul to the convention, and on motion of Mr. Seward, of N. Y. was ordered to be entered at large on the journal of the convention.

Mr. Hopkins, of N. Y. announced that chief justice Marshall having been unexpectedly prevented from leaving the city, would soon he in the hall, to attend the de-

liberations of the convention.

Mr. Rutherford, of N. J. from the committee appointed to wait on the venerable Charles Carroll, of Carrollton, and invite him to be present at the deliberations of the convention, reported,

"That the committee have seen the secretary of Mr. Carroll, and are informed that Mr. Carroll left this esty in the month of June last, for his country residence on the manor of Carrollton, sixteen miles from Baltimore, and that he is not expected to return until the month of October next; that he is in good health, but is desirous to svoid the fatigue of journies to and from the city. The committee, therefore, did not proceed to Carrollton yesterday, more especially as the weather was melement, and the visit and journey would occupy part of two days.

On motion of Mr. Phelps, of Mass.

Voted, That the time appointed to make nominations of president and vice president of the United States, be aponed till to-morrow at 10 o'clock, A. M.

Mr. Davis, of Vermont, submitted the following reedution.

Resilved, That this convention will adjourn without day on Wednesday next, the 28th inst. Ordered to lie on the table.

On motion of Mr. Hallett, of R. I.

Resolved, That the resolution of this convention inviting the venerable Charles Carroll, of Carrollton, to be present at the proceedings of this convention, together with the report of the committee appointed on that resolution, be transcribed and certified by the officers of

this convention, and communicated to Mr. Carroll.
Mr. Burt, of N. Y. called for the reading of the rules and orders of this convention, which were accordingly

Chief justice Marshall, introduced by Mr. Hopkins, of N. Y. appeared in the hall, in pursuance of the invitation given him, and took a seat to attend the deliberations of the convention.

Mr. Hallett, from the committee appointed to report on the construction of masonic penalties, &c. made a report, which was read and laid on the table.

The president from the committee appointed to prepare a brief history of judicial proceedings, &c. made a report, which was read and laid on the table.

Convention adjourned to four o'clock, t'. M. Four o'clock, P. M. Convention met pursuant to

adjournment. Messrs, Pike and Fowler, from Ohio, appeared and took their seuts.

The reports of the committees on the construction of masonic penalties, and on the history of judicial pro-ceedings, being under consideration, a debate ensued in which Messrs. Foote, of N. Y. Hallett, of R. I. Ward, of N. Y. Morris, of N. Y. Seward, of N. Y. Walker, of

Mass. and Harvey, of Pa. took part.

Mr. Northrop, of N. J. appeared and took his seat. The reports on the construction of masonic penalties and on the history of judicial proceedings, were ordered

to be printed.

to be printed.
On motion of Mr. Jones,
Resolved, That a committee of five be appointed to report on the extent to which the principles of free matony are political, and opposition to them by an organ-

sonty are postaces, and opposite the political party.

Mesers. Jones, of Pa. Seward, of N. Y. Sloane, of Ohio, Bailey, of Mass. Emery, of N. H. were appointed mid committee.

The convention adjourned to nine o'clock to-morrow morning.

Wednesday, Sept. 28.

Met pursuant to adjournment. Mr. Wm. Vanderpool, of N. J. appeared and took Mr. V

Mr. Seward, of N. Y. submitted the following pream-

Beauty of the state of New York, has since the last adjournment, arrived in this city, having been detained by accident on his journey. And
Whereas, The place of said delegate has been suppli-

ed as a vacancy

Resolved, That said Wm. G. Verplanck be admitted to a seat as an honorary member with the privilege of participating in the debates, but not in the votes of this convention.

Mr. Samuel J. Packer, of Pa. was also admitted to a sent in the convention in accordance with the aforegoing resolution.

On motion of Mr Phelps, of Mass.

The resolution relative to the nomination of president, &c. was re-considered and amended, so as to strike out that part requiring the convention to go into committee of the whole for that purpose.
On motion of Mr. Walker, of Mass.

l'oted, To proceed to ballot for candidates for the offices of president and vice president of the United States. Mesers. Phelps, of Mass. and Stevens, of Pa. were appointed by the president tellers to receive and count the votes.

The convention then proceeded to ballot for president.

Mr. Hambly, of Pa. being absent, on motion of Mr. Irwin, of Pa. Mr. Packer was admitted to vote in his stead.

Mr. Phelps, one of the tellers, reported as follows: 

Blank. 2
The president announced the result, and declared William Wirt, of Md. daily nominated as the anti-masome candidate for the presidency of the United States. On motion of Mr. Stevens, of Pa.

Resolved unaumously, That William Wirt, of Md. be nominated as the anti-massinic candidate for the office of president of the United States at the ensuing election.

Resolved, That a committee of three members be appointed to communicate the preceding resolution to Mr. Wirt, and to request his acceptance of the above nomination. Messra. Rutherford, of N. J. Sloone, of Ohio, and Elder, ot Pa. were appointed said committee.

The convention then proceeded to ballot for vice pre sident.

Mr. Stevens, one of the tellers, reported as follows: Whole number of votes given......110 Blank ....

The president announced the result and declared Amos Ellmaker, of Pa. duly nominated as the anti-ma sonic candulate for vice president of the United States.

On motion of Mr. Phelps, of Mass.

Resolved, unanimously, That Amos Ellmaker, of Pa.
be nominated by the convention, as the anti-masonic
candidate for vice president of the United States, at the ensuing election.

Resolved, That a committee of three members be appointed to communicate the resolution above to Mr. Eilmaker, and request his acceptance of the above nomination. Messes, Baily, of Mass. Lyman, of N. Y. and Shriver, of Maryland, were appointed said committee. On motion of Mr. Morris, of N. Y.

Resolved, unanimously, That a committee of three members be appointed to express, by written communi-cation, to the hon. Richard Rush, of Pa. the profound sense of this convention, of the patriotism, principle and firmness which dictated his cloquent exposition of the evils of free masonry, and their high appreciation of the beneficial results which it cannot fail to produce. Messrs. Morris, of N. Y. Denny, of Pa. and Gibbons, of Delaware, were appointed said committee.

Mr. Rathertord, from the committee appointed to wait on Mr. Wart, &c. reported that the committee had

performed that duty, and that he would send a written communication to the convention at 3 o'clock, P. M. On motion of Mr. Hopkins, et N. V. .

I am not industries whether they have truly interpreted my banguage.

I am not instaffed that the language referred to is just-

Reselved, ununimousty, That the thanks of this convention, be presented to those citizens of Baltimore at with the use of the spiended half of the Athenseum, and ing such a proof of hospitality from the inhabitants of s elegant and polished city, and that the president of this convention be requested to transmit a copy of this

resolution to the mayor of this city.
On motion of Mr. Turner, of R. I. Resolved, That the president of this convention be requested to present a copy of the printed proceedings of this, and of the anti-masonic convention held at Philadelphia last year, to the president and vice president of the United States, to the ex-presidents of the United States, to the heads of the several departments, to the hon. John Marshall, chief justice, and to each of the justices of the supreme court of the United States, to the governors of the several states of the union, to go Lafayette, to the venerable Charles Carroll, of Carrollton, to the mayor of the eny of Baltimore, to the trustees of the Athengum of Baltimore, and to such other distinguished individuals of this country, as he may deem expedient.

On the consideration of this resolution a deliate ensu-ed, in which Messrs. Turner, of R. I. Vanderpool, of N. J. Hallett, of R. I. Philips, of Mass. Denny, of Pa. and Miller, of Pa. took part.

Mr. Bailey from the committee to wait on Mr. Ellmaker reported that the committee had performed the duty assigned them, and that Mr. Ellmaker would shortly e a communication to the convention.

Adjourned to 5 o'clock, P. M.

## September 28, 5 o'clock, P. M.

Met pursuant to adjournment.
Mr. Ward, from the committee on resolutions, made a report which was twice read and unaumously adopted.
Messrs. Foote, Fuller and Hopkins, of N. Y. Hallett, of R. 1, and Stevens, of Pa, severally addressed the convention in support of the resolutions.

Mr. Seward, ot N. Y. submatted the following resolu-

tions, which were read and passed unanimously.

Resolved, That the committee of finance be authorised to pay over any surplus famils which may remain in their hands, towards the expenses of the national corresponding committee to be distributed by the publishing committee.

Resolved, That the thanks of this convention be returned to the national corresponding committee for the tanhful discharge of their duties during the past year, and that this convention entertain a profound conviction that the results of their labors must be eminently bene-

field to the cause of anti-masonry. The report of the national corresponding committee

was estled up and ordered to be printed.

Adjourned to 8 o'clock this evening.

The further proceedings of this convention, to its adjournment sine die, were published in the last Regis-TER. ]

# PRESIDENT AND THE NULLIFIERS.

Watterboro, Sept. 17th, 1831.

Mr. Editor: As chairman of the meeting of citizens of Colleton district, at Walterboro, on the 1st ultimo, I forward you for publication the answer of the president of the United States, as the best means of making known his reply to their communication, agreeably to their second resolve. I am, very respectfully, your, old't serv't.

CHARLES WEBB. serv't,

(corr.) Hashington,, Sept. 3, 1831.

Sir: I have received your letter of the 22nd ult. samples of the proceedings of the citizens of Colleges of the Colleges of Colleges of Colleges of the Colleges of Colleges

pretted my language,
I am not satisfied that the language referred to is just-Is liable to misapprehinsion; and I do not feel my sets anthorised to enter into any correspondence for the purpose of explaining or discussing, in reference merely to may be required to employ in the discharge of his constitutioned duty of taking care that the laws be futhfully

I am therefore constrained, with all proper respect for my lellow-citizens who composed the meeting, to decline the explanations required by their resolution. I am,

with sentiments of respect, your obedient servant ANDREW JACKSON.

To Charles Webb, esq. chairman, &c. Walterboro. South Carolina.

# SEIZURE BY THE CUSTOM HOUSE.

From the Boston Patriot of Sept. 17.
Some excitement has been aroused in this city during the present week, by the scizure on the part of the collector of customs in this district, of a cable and hawser on board brig Moscow, of this port, owned by Messrs. Benj. Rich & Son, by the latter of which she was made fast to Central wharf, and by the removal of which, by order of the revenue officers, she went adrift, and was picked up and secured by Betij. T. Reed, jr. esq. who claims salvage for so doing .-The Salem Gazette represents that "there was something like a row in Boston" on this occasion, which was not the case, although several hundred people were assembled on the wharf, and appeared indigpant at the transaction, and cheered a master truckman who, being forbidden by the owner to trespass on his property, declared that he would have nothing to do with the matter, if there was any injustice about it, and left the cable on the wharf; but we believe no violence was committed or attempted on the part of the spectators.

The facts in the case we understand are these: that the brig Moscow, capt. John Norris, in the course of her last voyage, was so unfortunate as to get on the Bahama bunks, where she remained some time, and in heaving her off, the stream cable was cut, and with the anchor, lost. On his arrival in Russia, capt. Norris procured another of 8 inches, 90 fathoms long, and also a new hawser of 54 inches to replace an old one entirely worn out, and parted in several places, having been in service five years .-On her arrival, an inspector reported to the collector that she had more cables than she required, and the collector sent to Messrs. Rich & Son to enter the These gentlemen called on the collector new ones. twice, stated the above facts, and asked him to send some competent person to ascertain if there was any cessary for her safety, or to replace what had been lost and worn out; and if he found it otherwise, they would promptly enter the same. Mr. Henshaw did not heed their request, but expressed his determination of seizing the articles, thus placing the vessel in jeopardy, and obliging her owners to defend her lawful and accustomed tackle, and to incur expense

Notwithstanding these representations, the collector obstinately persisted in his course. A large number of merchants have visited the vessel, and, we understand agree, without a dissenting voice, that the cable and hawser were absolutely necessary for the use and security of the vessel, and a distinguished merchant being asked by one of the owners if he saw any thing on board to warp the vessel to Han-

as miarepresentations had been made respecting the in mind that during the late interdiction of direct cable and hawser, and that it was his intention to seize them if not entered, they requested of him to appoint either one, two or three competent men, who were judges of what is requisite for vessels' use, to examine the vessel, &c. and if they dissary for her safety, that they (the owners) would cheerfully enter and pay duties on them. Stating further, that the brig was five years old, and that there was nothing on board except to replace what had been lost or worn out.

By the 45th section of the collection law, a diseretionary power is vested in the collectors and naval officers of districts, to ascertain whether or not, in their judgment, a vessel has an excess of sea atores on board, and to charge duties upon such ex-cess as they find. But no power is given to seize an excess of stores, unless it is attempted to smuggle them from the vessel. Neither is any power given to such officers to take from a vessel, except in cases of absolute seizure, a particle of her tackle, apparel, cables, anchors, hawsers or furniture. By the usage and laws of all maritime nations, these articles are held sacredly secure from molestation.

Much credit is due to the awners of the Moscow, for their moderation in a case of such an aggravated nature, and it is very probable that if they had forcibly resisted the seizure, such was the feeling among the spectators, that the collector and revenue officers would have been thrown into the dock.

#### THE WEST INDIA TRADE.

We ask the attention of our readers to the annexed "British views of the colonial trade," as confirming completely the arguments we have so often presented against Mr. McLane's arrangement, and which the letters of X. Y. so much more forcibly urged. It is here admitted, that while the trade was indirect, the navigation was in our hands, and that the object of the British government in concluding the much vaunted treaty with us, "was to force the trade from American hands into those of British ship owners." This we believe, most firmly; and do not doubt moreover, of their success. Another avow-ed object on the part of the British was to impose such additional duties on the direct trade to the West Indies, (with certain exceptions), as "in effect to be prohibitory;" and thus force our produce into the contiguous British colonies, whence it can be transported into British bottoms both duly free to the West Indies, thus aiming a blow, at the navigation of the nation, and at the prosperity of the state of New York, so far as it is to be affected by a diminution of its revenue from the canal. [N. Y. Am.

Fas est ab hoste doceri.

[From the New Brunswick Herald.] BRITISH VIEWS OF THE COLONIAL TRADE .- The information contained in the following article has been afforded us by an intelligent merchant of this town, who has taken great pains to become thoroughly acquainted with the provisions of the act alluded to; the statements will, we expect, be found generally correct, and well worthy of the attention of our commercial readers.

West India trade .- An act of parliament regulating the colonial trade, having recently come into operation here, our attention and inquiries will naturally direct themselves to the advantages likely to be derived therefrom, by the provinces, but more especially, the effect it will have on the trade of our own port. Under the operation of a new system, and with this view, we offer the following remarks,

intercourse between the British West India possessions and the United States, the former were chiefly supplied with provisions of every kind, through the medium of the neutral islands, whence they were distributed to our colonies in vessels of a small class, and consequently limiting our tonnage and navigation in that quarter, to mere trips of three and four days. It is an acknowledged fact, that only a small imprortion of American produce was transhipped through the warehousing ports in those provinces; flour and staves only, receiving a partial benefit thereby, and even this, was generally consumed by the additional freight and other attendant expenses.

Although the new act does not go to the extent which was at first generally anticipated, by suffering all articles of American produce to pass through the provinces into the West Indies pery race, and imposing additional duties on the direct carriage from the United States, still its provisions are ample, and places our navigation on a more advantageous footing than before.

An attentive perusal of the act referred to, will evince, that corn, grain (of every description), meal, rye flour, biscuit, rice and live stock, can ported direct from the United States into the West India colonies, duty free, and this is certainly its most extraordinary feature. On the other hand, wheat, flour, beef, hams, bacon, lumber, and staves, are totally exempt from impost, in the West Indies, if transhipped through a warehousing port in the provinces—the old rate of duties being continued, when imported direct, with an increase on the two last mentioned articles.

The most important point secured, by this new arrangement, is the carrying trade. British vessels may now proceed from any part of H. M. dominions, direct to the United States, there load a full cargo either for the West Indies direct, or via the provinces, as the nature of the cargo may invite, thus completing the whole voyage, a portion of which only, American vessels would be eligible to perform. This also embraces the privilege of importing dehen-ture goods, which could not take place in American vessels, they being confined to the produce of their states alone.

The object of our government has been plainty, and avowedly, to force the trade from American and avowedly, to torce the trace from American hands into those of British ship owners—to continue and impose such additional duties on their direct carriage to the West Indies, (with the exception above named) as will in effect be prohibitory, and moreover, to obtain a market for their surplus West India produce, which they did not before possess.

As the article of fish is totally excluded from the

United States in the British West ladies, it still remains our exclusive monopoly, and coupled with the exports of lumber, shingles, and articles of American produce, which must fall in our market, under the act referred to, we trust we shall continue to enjoy an active West India trade.

From the Boston Courier of Sept. 12.

Some weeks ago we presumed to ask of the Eastern Argus what number of vessels had cleared from Portland for the British West Indies, since the vaunted recovery of that important and profitable branch of the commerce of that place—the trade to the British West India Islands-had been accomplished by the present administration. Our presumption has been answered only by silence, if such a Hibernianism may be allowed. We respectfully repeat the inquiry, and, moreover, would presume still further to ask, if a single vessel, of any description, which possibly may not be altogether uninteresting further to ask, if a single vessel, of any description, to some of our commercial readers. For the sake has been cleared at the Portland custom house for of contrast, it may be well in the first place, to bear lang British West India port, since the opening of

those ports? If there has been one, or more, how ! If the Argus thinks us too troublesome and should not be in the vein to answer, we hope that gen. Chandler may be permitted to see this paper, and that his well known urbanity and obliging disposition will prompt him to reply.

We perceive in the Portland Advertiser of Friday.

the following communication, which the editors say is from unquestionable authority and may be relied on as correct. It has some bearing on the question

stated above.

One voyage to the British West India Islands, at last .-Capt. Oliver Perkins, of Biddeford, sailed from the port of Saco in February last, master of the schooner Boston packet, owned by Amos Chase of Saco, Moses Bradbury of Biddeford, and John Hill of Portsmouth, with a cargo of about 80 thousand of boards for the British West India islands. He went to the islands of Barbadoes, St. Vincent's and Dominico, but could not dispose of his cargo without a loss. He was offered no more than \$16 per M. for his boards to be paid in molasses at 20 cents a gallon, which, after deducting port charges, duties, and custom house fees, he supposed would leave him less for his boards than they were worth before he started. The British told him they "didn't want the Americans to bring them any of their lumber, their own vessels could do that business for them now-that his (the American) government were a set of d-d fools to be sure for making such a bargain, but they must stick to Captain Perkins finding he could do nothing at the British islands, went to St. Martin's, a French island, sold his boards at \$18 per M and took a return cargo consisting mostly of molasses, which he bought for 15 cents a gallon. The whole import and export duties he had to pay at St. Martin's and all custom house charges amounted to \$110 only. I had this account from the mouth of capt. Perkins him-self, who says no other vessel from the port of Saco has, to his knowledge, been to the British West India islands since the mis-named opening of their ports, that he will never go there again, and consents that I should have this statement published

BANK OF THE UNITED STATES.

At the general triennial meeting of the stockholders of the bank of the United States, held at their hall, in the city of Philadelphia, on Thursday, the first day of September, 1831, at ten o'clock, A. M. Stephen Girard, esq. of the city of Philadelphia,

was called to preside, and

John Potter, esq. of South Carolina, appointed se-

cretary.

Nicholas Biddle, esq. the president of the bank, on behalf of the board of directors, submitted the following

REPORTS

The board of directors of the bank of the United States, in compliance with the 13th article of the 11th section of the charter of the bank, which declares, that "once in every three years the directors shall lay before the stockholders, at a general meeting, for their information, an exact and particular statement of the debts which shall have remained unpaid after the expiration of the original credit, for a period of treble the term of that credit, and of the surplus of the profits, if any, after deducting losses and dividends," have now the honor to submit to the stockholders the statements therein required.

As, however, these documents present only an im-perfect view of the situation of the bank, the board of directors gladly avail themselves of the presence of so many respectable gentlemen interested in its prosperity, to explain minutely the whole state of its affairs. To this they will accordingly proceed.

The capital of the bank consists of 350,000 shares, of which 70,000 are owned by the government of the

United States. The government originally provided for its subscription, by giving to the bank a stock bearing interest at five per cent. This stock has been for some time in a course of redemption, and in July last the whole of it was reimbursed, so that

the government has now fully paid for its shares.

In receiving the individual subscriptions for the 280,000 shares by so many commissioners, and at so many distant points, there arose some errors, which caused a deficiency of a few thousand dollars in the capital. After rectifying these errors as far as practicable, it was deemed proper in July last to supply ticable, it was deemed proper in our man to support the deficiency, amounting then to \$3,730 37, from the general funds—so that the capital of thirty-free millions of dollars is now entire. This capital is dimillions of dollars is now entire. This

31	ed among the stockholders as follows:-	_
	DISTRIBUTION, JULY, 1831.	
	Names.	Shares.
	Maine	498
	Vermont 2	27
	New Hampshire	501
	Massachusetts	10,812
	Rhode Island 38	1.245
	Connecticut 61	1.511
	New York	32,903
	New Jersey 77	2,665
	Pennsylvania937	52,638
	Delaware 39	1,583
	Mary innd	34,503
	District of Columbia 63	2,814
	Virginia	12,384
	North Carolina 39	2,476
	South Carolina	40,674
	Georgia 42	1.981
	Obio 15	705
	Kentucky 22	252
	Tennessee 4	238
	Indians	50
	Illinois 2	220
	Louisiana 17	119
	Arkansas territory 1	42
	Foreign stockholders466	79,159
	United States	70,000
	4,145	350,000

The progress of this division of the stock, will be

regived in the following	sketch:
In 1817 there were	31,349 stockholders.
1818	4,142
1819	3,544
1820	2,720
1821	2,747
1822	2,649
1823	2,597
1824	2,861
1825	2,776
1826	3,347
1827	3,482
1828	3,686
1829	3,853
1830	4,140
1831	4,145

It will here be perceived, that the original aubscriptions were divided among a great number of persons, in order to secure the amount of stock desired; but became afterwards concentered in the names of the real owners. The whole number of stockholders was, in 1820, 2,720. From that period the number has risen to 4,145. The extent of this diffusion will be seen in the following table:-

Holders of	1 sl	are	128 ow	ning 108	shares .
	2		159	318	
	3		111	333	
	4		121	484	
	5		235	1,175	
Holders of	between 5 &c	10 sh:	res 656	5,685	
	10 8c	20	688	10,978	
	20 &	30	336	8,538	
	30 &	40	207	7,494	

50 № 100	224	10,583			
	194	32,689 29,075	Funded debt, various Bills discounted on personal		3,497,681 06
of above 200	185	93,061	security	1,585,298 70	
0.1 200		233.01	Funded debt	19,700 00	
	3,679		Bank stock	779,458 07	
	EIGN.			A-2 Cu 1 150 77	
Holders of 1 share	5 owning	5 shares.	Domestic bills of exchange	42,384,456 77	
3	ĭ	3	Dinestic bins of Caonauge		6,793,936 49
4	2	8	Foreign bills of exchange		121,214 60
5	6		Real estate		2,491,892 99
between 5 and 10 shar	res 25 37	209 614	Due from Bank U. S. and offices	24 586 664 94	
20 and 30	37		Due from state banks	2,903,402 51	
So and 40	34	1,291	Due it ons state damas	-,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,,	27,490,067 45
40 and 50	51	2,415	United States		5,267 32
50 and 100	104		Deficiencies		145,258 67
100 and 200 above 200	72		Banking houses		1,160,455 54 68,713 34
above 200	97	55,597	Expenses Cash, viz. Notes of the bank		69413 34
	406	79,159	U. S. and offices	13,412,176 44	
Of these are		,	State banks	2,080,442 33	
Domestic, Females	832 holding	22,896 shares.	Specie	11,545,116 51	
Foreign,	69	6,117			27,037,735 28
	901	29.013	Mortgages		140,956 63
Domestic trusts, executors,			Navy agent, Norfolk	_	40,144 17
Foreign,	14	3,365		1	18,993,325 54
				CH.	
	329	20,416	Capital stock		35,000,000 00
Domestic societies, } 126	iolding 14,305	aliares.	Notes issued Discount, exchange, and is	. dominate	35,811,623 96
Foreign do. none	none.		Foreign exchange account	derest	476,965 5t 137,719 56
			Baring, Brothers & Co. H.	ottinguer & Co.	10,,100
From these the following ist. That out of the 3	ing results mi	ny be gainered:	Baring, Brothers & Co. H. and Hope & Co.		168,372 72
766 are holders of shares	of and under	c stockholders,	Dividends unclaimed		251,766 03
ing to \$243,800; that 1,4			Profit and loss	5,613,173 15	1,750,048 51
sums of and under \$1,0			Contingent fund Less losses chargeable t	3,013,173 13	
that 2,865 are stockhole	ders of and	under \$5,000.	contingent fund	3,452,976 16	
amounting to \$4,601,600	; being nearl		comingent tuna	0,100,010	2,160,196 99
the whole domestic stock			Due to Bank U. S. and of		
It further appears tha	t the sum of	54,286 shares,	fices	24,096,888 57	
being much more than	one-fourth of	the whole do-	State banks	2,771,656 00	26,868,544 3
mestic stock, is owned b	y females, tru	istees and exe-	Redemption of public debt	,	483,147 44
cutors, and by religious,	benevoient,	and other asso-	Deposites on account of the	e	200,141 41
The capital thus owne	d is divided f	or the purposes	treasurer of U. S.	5,505,924 28	3
of business between the	he bank and	the following	Less overdraits and specia	1	
twenty-five offices:		the remember	deposits	28,420 09	,
Portland,	Fayet	tteville,		5,477,504 19	
Portsmouth,		leston,	Of public offices	1,291,597 77	,
Boston,	Savut		Individuals	9,115,836 47	
Providence, Hartford,	Mobi Natel				15,884,938 4
	New	Orleans,	1	-	110 000 000 -
	Si. L	ouis.	1		118,993,523 5
Burlington, New York.		ville.	The analysis of this at	count presents	the following
Burlington, New York, Utica,	Nustr		view of the investments of		
Burlington, New York, Utica, Buffalo,	Louis	ville,	of its famile	the bank, and	the distribution
Burlington, New York, Utica, Buffalo, Beltimore,	Louis Lexia	ig100,	of its funds.		the distribution
Burlington, New York, Utica, Buffalo, Bultimore, Washington,	Louis Lexis Cines	ngioo, mati,	The investments of the		
Burlington, New York, Uteca, Buffalo, Baltimore, Washington, Richmond,	Louis Lexia	ngioo, mati,		bank—	35,000,000 0 92,399,447 5
Burlington, New York, Ulica, Buffalo, Baktimore, Washington, Richmond, Nortolk,	Louis Lexis Cinca Putst	ngloo, mati, purg.	The investments of the a Capital paid in The circulation Deposits, public	5ank- 7,252,249 49	35,000,000 0 92,399,447 5
Burlington, New Yurk, Uluca, Buffalo, Baltimore, Washington, Richmond, Nortotk, The number of office	Louis Lexin Cinen Pittsl	ngioo, nnati, purg. in 1817 was 18	The investments of the Capital paid in The circulation Deposits, public	bank—	35,000,000 0 92,399,447 5
Burlington, New York, Uluca, Buffalo, Baltimove, Washington, Richmond, Nortolk, The number of office since then two offices h dletown, in Connectiou	Louis Lexin Cluca Pitts es established ave been disc t, and Chilico	ngioo, nnati, burg. in 1817 was 18; continued—Mid- the, in Ohio, and	The investments of the a	7,252,249 45 9,115,836 45	35,000,000 0 \$2,399,447 5 2 7 - 16,368,085 8
Burlington, New York, Uties, Buffalo, Bultimore, Washington, Richmond, Norfolk, The number of office since then two offices h dletown, in Connectiou into others have bee	Louis Lexin Curen Putst es established ave been disc t, and Chilico in established	igioo, nnati, burg. in 1817 was 18; continued—Mid- the, in Ohio, and d—Portland. is	The investments of the a Capital paid in The circulation Deposits, public private  Due to individuals in Eur Unclaimed dividends	7,252,249 45 9,115,836 45	35,000,000 0 92,399,447 5: 7 - 16,368,085 8 168,372 7
Burlington, New York, Utica, Buffalo, Beltimore, Washington, Richmond, Norfolk, The number of offices in dietown, in Connecticus nine others have bee Maine, Burlington in Ve	Louis Lexis Cmen Pittst es established ave been disc t, and Chiliche er established	in 1817 was 18; continued—Mid- the, in Obio, and d—Portland, in ord in Connecti-	The investments of the a Capital paid in The circulation Deposits, public private  Due to individuals in Eur Unclaimed dividends Contingent foud to meet	7,252,249 45 9,115,836 45 ope	35,000,000 0 \$2,399,447 5: 7 -16,368,085 8 168,372 7 251,766 0 5,613,173 1
Burlington, New York, Utca, Buffalo, Bultimore, Bultimore, Washington, Ritchmond, Nortoltk, The number of office since then two offices h detown, in Connecticu nine others have bee Maine, Burlington in Ve qut, Utca and Buffalo i	Louis Lexis Cmen Pittst es established ave been disc t, and Chilico n establishe ermont, Hartf n New York,	in 1817 was 18; continued—Mid- the, in Obio, and d—Portland, it ord in Connecti- St. Louis in Mis-	The investments of the a Capital paid in The circulation Deposits, public in private  Due to individuals in Eur Unclaimed dividends Contingent fund to meet Discounis, exchange and i	7,252,249 45 9,115,836 45 ope	35,000,000 0 92,399,447 5 2 7 -16,368,085 8 168,372 7 251,766 0 5,613,173 1
Burlington, New York, Utica, Buffalo, Buffalo, Bultimore, Washington, Richmond, Norfolds, The number of offices since then two offices h dletown, in Connecticu nine others have bee Maine, Burlington in Ve out, Utica and Buffalo i souri, Nashville in Tean	Louin Lexin Cuten Putst es established ave been disc t, and Chilico in established ermont, Hard n New York, nessee, Natch	ngtoo, mati, burg.  In 1817 was 18, continued—Mid- the, in Ohio, and d—Portland, it ord in Connect; St. Louis in Mis- ez in Mississippi	The investments of the incomplete of the ing to the ing to regard except of the ing to regard except of the ing to regard exchange and it ing to regard exchanges of the incomplete of the	7,252,249 45 9,115,836 45 ope	35,000,000 0 92,399,447 5 27 -16,368,085 8 168,372 7 251,766 0 5,613,173 1 -614,685 0
Burlington, New York, Utca, Buffalo, Bultimore, Bultimore, Michanoud, Noriolik, The number of office since then two offices h detown, in Connecticu nine others have bee Maine, Burlington in Ve cut, Utca and Buffalo i souri, Nashville in Ten Mobile in Alabama; ma	Louis Lexis Concording Pittst ave been distention established promont, Hartfun New York, seing an additional desirg and desirg an additional desires and des	ngtoo, mati, burg.  In 1817 was 18, continued—Mid- the, in Ohio, and d—Portland, it ord in Connect; St. Louis in Mis- ez in Mississippi	The investments of the incomplete of the ing to the ing to regard except of the ing to regard except of the ing to regard exchange and it ing to regard exchanges of the incomplete of the	7,252,249 45 9,115,836 45 ope	35,000,000 0 92,399,447 5 2 7 -16,368,085 8 168,372 7 251,766 0 5,613,173 1
Burlington, New York, Utics, Buffalo, Buffalo, Buffalo, Buffalo, Buffalo, Buffalo, Buffalo, Michanoud, Norfoths, The number of offices ince then two offices h dietown, in Connecticu nine others have bee Maine, Buffalo i souri, Nashville in Tean Mobile in Alabams; ms fees within the last four	Loun Lxin Cunen Cunen Putst es established ave been disc t, and Chilico n establishe ermont, Hartf n New York, sessee, Natchusking an addit riteen years.	ngloo, nati, in 1817 was 18; continued—Mid- the, in Ohio, and d—Portland, is ord in Connecti St. Louis in Mis- z in Mississippi tion of seven of	The investments of the is Capital poid in The circulation Deposits, public private Due to individuals in Eur Unclaimed dividuals in Eur Unclaimed dividuals in Contingent fund to meet Discount; exchange and ing foreign exchanges) Profit and loss	7,252,249 45 9,115,836 45 ope	35,000,000 00 22,399,447 52 7 -16,368,085 8 168,372 7 251,766 0 5,613,173 1 -614,685 0 1,750,048 5
Burlington, New York, Utca, Buffalo, Buftimore, Buffalor, Bultimore, Mashington, Ritchmond, Noroluk, The number of office since then two offices h detown, in Connecticu nine others have bee Maine, Burlington in Ve cut, Utca and Buffalo i souri, Nashville in Tenn Mobile in Alabama; m fices within the last fou These points were	Loun Lexin Cinen Putst es established ave been dise t, and Chilico n establishe ermont, Hartf n New York, tessee, Natch aking an addit steen years. selected out	in 1817 was 18; continued—Mid- the, in Ohio, and d—Portland, it ord in Connecti- St. Louis in Mis- ze in Mississippi tion of seven of-	The investments of the st Capital paid in The circulation Deposts, public "private Due to individuals in Eur Unclaimed dividends Contingent fund to meet Discount; exchange and ing foreign exchanges) Profit and loss	7,252,249 45 9,115,836 45 ope	35,000,000 0 92,399,447 5 27 -16,368,085 8 168,372 7 251,766 0 5,613,173 1 -614,685 0
Burlington, New York, Utics, Buffalo, Buffalo, Buffalo, Buffalo, Buffalo, Buffalo, Buffalo, Buffalo, Buffalo, Norfolk, The number of offices ince then two offices h dietown, in Connecticul nine others have bee Maine, Buffalo if souri, Nashville in Tean Mobile in Alabums; ms fices within the last four These points were from thirty-eight places	Louin Lexin Concentration Putst es established ave been disse t, and Chilico n establishe ermont, Hartif n New York, nese, Natch aking an addi urteen years. selected out . There are	in 1817 was 18, continued—Mid- the, in Ohio, and d—Portland, it ord in Connect; St. Louis in Mis- ez in Mississippi tion of seven of seven of seven of seven of now under con-	The investments of the state of	7,252,249 4: 9,115,836 4: rope losses aterest, (includ	35,000,000 00 22,399,447 52 7 -16,368,085 8 168,372 7 251,766 0 5,613,173 1 -614,685 0 1,750,048 5
Burlington, New York, Utca, Buffalo, Bultimore, Buffalo, Bultimore, Mashington, Ritchmond, Noriolik, The number of office since then two offices h detown, in Connecticu nine others have bee Maine, Burlington in Vecut, Utca and Buffalo i souri, Nashville in Tenn Mobile in Alabama; m fices within the last fou These points were from thirty-eight places sideration applications	Loun Lexin Cinen Putsl es established ave been disc t, and Chilico n establishe rmont, Harti n New York, nessee, Natch aking an addii rteen years. selected out s. There are for the e	in 1817 was 18; continued—Mid- the, in Ohio, and d—Portland, in ord in Connect; St. Louis in Mis- zz in Mississippi tion of seven of of applications now under con- stablishment of	The investments of the is Capital paid in The circulation Deposts, public private private Due to individuals in Eur Uncianned dividends Contingent fund to meet Discounie, seclange and profit and loss  Funded debt  Funded debt  Lons	7,252,249 4: 9,115,856 4: ope losses neterest, (includ	35,000,000 00 92,399,447 5: 27 -16,368,085 8 168,372 7 251,766 0 5,613,173 1 - 614,685 0 1,750,048 5 82,165,578 8 3,497,681 0
Burlington, New York, Utica, Buffalo, Bultimore, Buffalo, Bultimore, Michanoud, Nordulk, The number of office since then two offices h detown, in Connecticu nine others have bee Maine, Burlington in Ve cut, Utica and Buffalo i souri, Nashville in Ten Mobile in Alabama; ma fices within the last fou These points were from thirty-eight places sideration applications branches from more i parts of the United Six	Louin L-xie Conen Putst  se established ave been disc t, and Chilico n establishe ermont, Hartf n New York, essee, Natch aking an addit the person selected out the for the e than thirty pl	in 1817 was 18; continued—Mid- the, in Ohio, and d—Portland, in ord in Connects St. Louis in Mis- ez in Mississippi tion of seven of of application now under con now under con laces in various	The investments of the is Capital paid in The circulation Deposts, public private Due to individuals in Ear Unclaimed dividends Contingent fund to meet Discount, seclange and ing foreign exchanges) Profit and loss  Funded debt Louns Persons security	7,252,249 4: 9,115,836 4: oppe  losses atterest, (includent the contract of th	35,000,000 00 92,399,447 52 7 16,368,085 8 168,372 7 251,766 0 5,613,173 1 614,685 0 1,750,048 5 82,165,578 8 3,497,681 0
Burlington, New York, Utica, Buffalo, Bultimore, Buffalo, Bultimore, Michanoud, Nordulk, The number of office since then two offices h detown, in Connecticu nine others have bee Maine, Burlington in Ve cut, Utica and Buffalo i souri, Nashville in Ten Mobile in Alabama; ma fices within the last fou These points were from thirty-eight places sideration applications branches from more i parts of the United Six	Louin L-xie Conen Putst  se established ave been disc t, and Chilico n establishe ermont, Hartf n New York, essee, Natch aking an addit the person selected out the for the e than thirty pl	in 1817 was 18; continued—Mid- the, in Ohio, and d—Portland, in ord in Connects St. Louis in Mis- ez in Mississippi tion of seven of of application now under con now under con laces in various	The investments of the is Capital paid in The circulation Deposts, public private Due to individuals in Ear Unclaimed dividends Contingent fund to meet Discount, seclange and ing foreign exchanges) Profit and loss  Funded debt Louns Persons security	7,252,249 4: 9,115,856 4: upe losses nterest, (includ  41,585,298 7 19,700 0	35,000,000 0 92,399,447 5: 27 -16,368,085 8 168,372 7 251,766 0 5,613,173 1 -614,085 0 1,750,048 5 82,165,578 8 3,497,681 0
Burlington, New York, Utics, Buffalo, Buffalo, Buffalo, Buffalo, Buffalo, Buffalo, Buffalo, Buffalo, Buffalo, Norfolk, The number of offices since then two offices h dietown, in Connecticu nine others have bee Maine, Burlington in Ve cut, Utics and Buffalo i souri, Nashville in Tean Mobile in Alabums; me fices within the last fou These points were from thirty-cight places sideration applications branches from more 1	Louin L-xie Conen Putst  se established ave been disc t, and Chilico n establishe ermont, Hartf n New York, essee, Natch aking an addit the person selected out the for the e than thirty pl	in 1817 was 18; continued—Mid- the, in Ohio, and d—Portland, in ord in Connects St. Louis in Mis- ez in Mississippi tion of seven of of application now under con now under con laces in various	The investments of the is Capital paid in The circulation Deposts, public private Due to individuals in Ear Unclaimed dividends Contingent fund to meet Discount, seclange and ing foreign exchanges) Profit and loss  Funded debt Louns Persons security	7,252,249 4: 9,115,836 4: oppe  losses atterest, (includent the contract of th	35,000,000 0 92,399,447 5: 27 - 16,368,085 8 168,372 7 251,766 0 5,613,173 1 614,685 0 1,750,048 5 82,165,578 8 3,497,681 0 0 0 72

Mortgages 140,956	33	
Debis chargeable to contin-		
gent funil 3,452,976 1	6	
	- 60,509,083 8	
Real estate	2,491,892 9	
Due from sundry offices and banks	621,523 0	
Expenses, &c.	259,383 5	50
Banking houses	1,160,455 5	
Notes of state banks,	2,080,442 3	
Specia	11,545,116 5	51
	82,165,578 8	89
Two only of these items require speck	al observation:-	_
The contingent fund and the real estate		
The contingent fund and the real estate	•	
1st. The contingent fund.— The total amount of the suspended deb	ę,	
1st. The contingent fund.— The total amount of the suspended deb- including cash deficiencies, overdraf	t, ts	
1st. The contingent fund.— The total amount of the suspended deb	t, ts	
1st. The contingent fund.— The total amount of the suspended deb including cash deficiencies, overdraf and the debt of the bank of Columbia,	t, ts is 7,851,281 8	
1st. The contingent fund.— The total amount of the suspended deb including cash deficiencies, overdrail and the debt of the bank of Columbia, Of this the part estimated as desperate, at	t, ts is 7,851,281 8	82
1st. The contingent fund.— The total amount of the suspended deb- including cash deficiencies, overdraf and the debt of the bank of Columbia, Of this the part estimated as desperate, at therefore considered as lost, is	t, its is 7,851,281 8 id	82
1st. The contingent fund.— The total amount of the suspended deb including cash deficiencies, overdraf and the debt of the bank of Columbia, Of this the part estimated as desperate, at therefore considered as lost, is And on the remaining	t, is 7,851,281 8 id 3,452,976 1 4,398,305 6	82
1st. The contingent fund.— The total amount of the suspended deb- including cash deficiencies, overdraf and the debt of the bank of Columbia, Of this the part estimated as desperate, at therefore considered as lost, is	t, is 7,851,281 8 id 3,452,976 1 4,398,305 6	16
1st. The contingent fund.— The total amount of the suspended deb including eash deficiencies, overdras and the detot of the bank of Columbia, Of this the part estimated as desperate, at therefore considered as lost, is And on the remaining The estimated loss after a rigid examin tion, is	1, 11s 7,851,281 8 1d 3,452,976 1 4,598,305 6 8-	16
1st. The contingent fund.— The total amount of the suspended deb including cash deficiencies, overdras and the deto of the bank of Columbia, Of this the part estimated as desperate, at therefore considered as lost, is And on the remaining The estimated loss after a rigid examin tion, is Now, the contingent fund to meet th	1, 15 7,851,281 8 ad 3,452,976 1 4,598,305 6 at 1,851,034 4	1666
1st. The contingent fund.— The total amount of the suspended deb including eash deficiencies, overdrast and the detot of the bank of Columbia, Of this the part estimated as desperate, at therefore considered as lost, is And on the remaining The estimated loss after a rigid examin tion, is Now, the contingent fund to meet th loss, is	1, 13 7,851,281 8 14 3,452,976 1 4,898,305 6 8-1,851,034 4 118 5,613,173 1	1666
1st. The contingent fund.— The total amount of the suspended deb including eash deficiencies, overdras and the detot of the bank of Columbia, Of this the part estimated as desperate, at therefore considered as lost, is And on the remaining The estimated loss after a rigid examin tion, is Now, the contingent fund to meet th	1, 13 7,851,281 8 14 3,452,976 1 4,898,305 6 8-1,851,034 4 118 5,613,173 1	1666

Leaving an excess of provision, over the

309,162 57 estimate, of 309,162 57
That this sum will be fully adequate for the pur-

pose will be apparent from the facts, 1st. That amongst the estimates of loss is \$236,829 17, for the losses of the agency at Cincinnatti, which will in all probability be entirely retrieved by the inereasing value of the real estate there.

2d. That the arrears of interest on the debts at the four western offices are expressly appropriated

to the increase of the fund. And

3d. That something may yet be received from the mass of debts now considered hopeless, and from the arrears of interest on the whole mass of suspended debt, now amounting to \$1,433,761 34.

2d. The real estate. -The total amount of real estate received in payment of debts up to August 30th,

1522, WAR It has since received in like 2,942,828 23 And sold what had cost 1,038,037 62

\$587,102 88 1,904,790 61

Making the present amount

This amount is the price at which the real estate has been taken, and experience warrants the expectation, that it will be sold for more than its cost.

The general result of the condition of the bank is, That the whole of the bonus of 1,500,000 dollars paid for the charter, and the premium of 205,880 dollars given for the five per cent. stock, purchased

in 1821 from the government is now extinguished.
That the fund to meet losses exceeds by 309,000

dollars, the estimate of those losses.

That there is a surplus fund of profits amounting to 1,750,000 dollars, being five per cent. on the capi-

And that with these provisions against casualty, its profits, after defraying its expenses and making an annual reservation of 120,000 dollars to extinguish the cost of the banking houses, yield a dividend of saven per cent. a year.

But gratifying as the prosperity of the bank may be to the stockholders, it is an object of more general concern as being the result of measures in the success of which the community has a deep and permanent interest. The importance of these will justify a few words of explanation in regard to them.

The bank of the United States was established for the purpose of restoring specia payments, which had portion of its funds, therefore, which the bank can

for a long time been suspended throughout a great part of the country, -of furnishing a sound circulating medium, and of giving more uniformity to the exchanges between distant sections of the union-By importing more than seven millions of specie, and by a free issue of notes immediately after its establishment, the bank with great sacrifices succeeded for a time in attaining these objects; but it seems to have been afterwards considered that its powers were exhausted by the effort, and that the continuance of it would be entirely impracticable. The essential difficulty was presumed to lie in the provision of the charter, making the notes universally receivable for debts to the government, which by obliging the bank to provide payment for the same note at various places, would require it to retain a greater amount of specie than it could issue of notes; thus diminishing rather than increasing the sound circulation. The consequence was, the bank issued its own notes sparingly; more especially in the southern and western states, where it often preferred the re-issue of the notes of the state banks; being unwilling to issue freely its notes which it might be compelled to pay at some one of many places remote from the point of issuing them. However imperious the necessity which anforced the system, it was apparent that its continuance would tend to defeat the object of establishing the bank, since by declining the issue of its notes it could not furnish the circulating medium expected from it; and by re issuing the notes of state banks, it surrended its most efficient means of control over the currency. Its whole circulation on the ist of January, 1823, was only 4,589,000 dollars.

Having, in compliance with the directions of the stockholders in 1822, applied without success to congress for a modification of this disabling provision in the charter, it became necessary for the board of directors to re examine the constitution of the bank. in order to discover whether there was really any organic defect which prevented it from performing the functions to which it was destined, or whether some different combination of its powers might not ever-

come its difficulties.

The experiment was interesting and bazardous. It was to try how far the institution could succeed in doing that which had naver yet succeeded elsewhere, in diffusing over so wide a surface of country a currency of large amount and of uniform value at all places and under all circumstances; and also whether it could bring down to its extreme limit the necessary expense of commercial intercourse between distant sections of country, whose exchangeable productions were of such various and unequal values.

To accomplish these two objects two things seemed

necessary.

1st. To make all the local currencies equivalent to specie at the place of their emission. This, by rendering them competent for local purposes, would require a less amount of general currency, and at the same time tend to reduce the exchanges between distant places to the real commercial expense of trans-

ferring equal values of coin.
2d. To make the bank itself the great channel of

those commercial exchanges.

If the bank is bound to transfer the whole public revenue throughout the union, and to furnish a currency payable in various and distant places, it must obviously provide funds in those places, and these can of course be obtained only by purchasing bills of exchange payable at the points to which the course of trade naturally directs the notes. There these bills, having reached their maturity, await the com-ing of that portion of the notes which, having performed for a time the functions of a circulating medium, are carried by the demand for duties out of the immediate sphere of their issue. The greater pro-

employ in these operations, the more readily can it journency and of private credit, by forcing the state austain the notes issued in the course of them. It is indeed thus, and thus alone, that a circle of sound banking operations, founded on sound commercial operations, contains within itself the means of its own defence at home, and of providing for its notes which the demand for duties may carry to a distance. These operations, too, are fortunately of the highest benefit to the community; they give the most direct encouragement to industry, by facilitating the pur-chase and interchange of all its products, they bring the producers and consumers into more immediate contact, by diminishing the obstacles which separate them, and they specially adapt the bank to the wants and interests of each section of the union, by making it alternately a large purchaser among the sellers of bills, and a large seller among the purchasers.

A participation also in the foreign exchanges forms an easential part of the system, not merely as auxiliary to the transfer of funds by which the circulating medium is accompanied and protected, but as the best defence of that currency from external in-fluences. It is the peculiarity of our monied system, that in many parts of the country the precious melation by a small paper currency, in consequence of which the greater portion of these metals is accumulated in masses at the points of most convenient exportation. Now, with a widely diffused metalic cur-rency, the occasional demands for exportation are more gradually felt, the portion exported bearing a small relation to the whole, occasions less inconvemain result of the whole, occasions less income-nience, and the excesses of exportation can be more readily corrected without injury. But when the great mass of the precious metals of the community lie thus accessible in the banks of the Atlantic clies, liable to be immediately demanded on notes previously issued in the confidence of a continuance of the same state of things which caused the abundant issue of them; at the first turn in the tide of the foreign exchanges-when the supply of foreign exchange is unequal to the daily demand, the vaults of the banks may be exhausted before any precautions can pre-vent it. These very precautions, too, consisting as they do almost exclusively of curtailments in their loans, made suddenly-mostly without concert, and always under the influence of anxicty, if not alarm, may fall with oppressive weight on the community, by the pressure on which alone can be produced the necessary re-action. This re-action, moreover, is necessarily slow, since our distance from Europe makes it less easy to restore the equilibrium than between adjoining countries in the same hemisphere. As this defect in our monled system depends on the legislature, the bank has no power to remove it, and can only strive to guard against its dangers. Its ten-dency is to produce abrupt transitions, and violent shocks injurious to private credit, and which might prove aubversive of the currency. It belongs then to the conservative power over the circulating medium which devolves on the hank, not to he a passive observer of these movements, but to take an ample share in all that concerns the foreign exchanges. It may thus foresee, and either avert or diminish an approaching danger-it can thus break the force of a sudden shock, and supplying from its own accumulademands, enable the state institutions to provide for their own safety, and thus produce the necessary alteration in the state of the exchanges with the least possible pressure upon the banks or the community.

In addition to the ordinary causes of fluctuation in the metallic currency, there was another of great importance in the character of the trade to China and ladia, which, requiring annually many millions list, That since Janu of the precious metals, very frequently caused abt to the mint to be converted in the converted to the mount of the amount of the amount of the smount of

banks to sudden curtallments as an act of necessary self defence. To abate the pressure of this de-mand, the hank offered as a substitute for the shipments of coin, to supply its own hills on Europe, which in the India and China markets were often more valuable than the coin itself. This experi-ment proved successful, alike to the merchants and to the community, who were thus less incommoded by sudden diminutions of the currency. Owing to the operation of general causes, that trade has within a few years greatly declined; hut, should it revive, the bills of the bank will doubtless constitute a considerable portion of the remittances from this country. Even in its present comparatively inactive state, the amount of hills furnished by the bank within the past year for the trade of India, China, and South America, amounts to \$883,500.

By this combination of the soundness of the local currencies, and a thorough identification of the bank with the real business and exchanges of the country, it was hoped to accomplish the purposes for which it was established. With this view, it began by giving to its whole funds an active and business character, for which purpose all the stock of the Dank which had neen intricted was solo, and the pro-ceeds applied to the commercial operations of the country. The bank and the branches then issued freely and exclusively their own notes, taking care to protect and provide for them by the discount of bills of exchange; and they received freely the notes of the solvent state banks, with whom periodical and convenient, but certain settlements of accounts were made.

This system has now been in operation for several years. It was at first experimental, and of doubt-ful issue, and as the consequences were equally imhas been watched with deep solicitude. Its success therefore has been seen with proportionate satisfaction. Time and experience have now demonstrated that the hank has been able to accomplish all the purposes for which it was created, to rectify the disorders of the currency, to sustain a large and sound circulation, and to reduce the commercial exby means in themselves highly advantageous to the community, not in any degree injurious to the state institutions, and at the same time profitable to the bank itself. The evidences of this can be best observed by comparing the past and present situation of the currency, the exchanges, the country and the bank.

1. Before the establishment of the bank, the circulating medium of the middle, western, and southcrn states, consisted exclusively of an inconvertible paper money; every part of that country suffered under the most oppressive of all taxes on industry, a depreciated currency; the commercial exchanges between different states and even different neighborhoods, were burdened with the fluctuations of their respective representatives of money, while the government itself, unable to make its funds, received in one section available for its expenditures in another, was embarrassed in the midst of its nominal exther, was emparrassed in the midsto it is nominst car-cesses of revenue. These disorders are now reme-died. The local currencies generally are equiva-lent to specie within their respective spheres of cir-culation; and a large mass of general currency is superadded for general circulation. That this offect was produced directly by the operations of the bank, requires no demonstration. The extent of its contribution to the general currency will be seen in the facts-

1st, That since January 1, 1823, It has furnished to the mint to be converted into American coin, bul-\$12,046,415 35

2d, That the gross circulation of the bank on the 1st of Jan. 1823, was 4,539,446 90 22,399,147 52 And on the 1st of August, 1831,

making an increase of - 17,810,000 62 From both periods a deduction is to be made of the notes in their passage between the hank and the branches. The total amount known to be in actual

circulation on the 1st of August was \$19,377,910. This circulation is in all respects equal,

most respects superior, in value, to any metallic currency of the same amount. Indeed, there is not now, and probably never has been, in any other extenaive country, a paper currency comparable to this for the union of all the qualities of a good circulating medium-perfect security-easy convertibility into the metals-and general uniformity of value.

The notes of the bank, moreover, not only afford a sound currency themselves, but they sustain and purify the much larger mass of circulating medium into which they are infused. By receiving freely the notes of the state banks within convenient resch of the bank and its branches, and by frequent settlements with them, these institutions are kept in the habitual presence of an accountability, which naturally induces them so to apportion their issues to their means, as to secure the soundness of their currency. Of the manner in which they have executed this extremely delicate part of their duty, which connects them with the state institutions, it is not for the board of directors to speak. But they bear a willing testimony in favor of the uprightness and intelligence which generally characterize the administration of those institutions and the support which they have always yielded to any measures calculated to maintain the soundness of the currency.

On the few occasions where it has become necessary to insist on the performance of their obligations, from which either a want of judgment, or the pres-sure of urgent necessity, had induced them to depart, the bank has endeavored to perform its own duty with all the forbearance consistent with the thorough execution of it, and those institutions themselves have generally found, in the increased credit arising from fidelity to their engagements, a full compensation for all the temporary inconvenience which that fidelity required. It is indeed confidently believed that the solvent state institutions, recognize in the bank, its true character, as a common friend, not a jealous competitor; and that the good feelings uni-formly entertained for them by the bank, are reciprocated. They know that the duties of its position make it only a more prominent agent in preserving the soundness of the currency, on which their own sta-bility and prosperity equally depend; and that if its competition sometimes appears to prevent more abundant profits, they find an indemnity in the general security of property which its operations are designed to project. Undoubtedly these operations have been so far beneficial to them, that if its own notes are equivalent to specie, it has contributed to make those of the state institutions equally valuable within their respective spheres, and that many of these institutions earn larger profits than the bank itself.

2d. The reduction in the exchanges effected by the bank from the extravagant charges on internal trade to the present moderate limits need not now be particularised. A single fact will be sufficient to illustrate it. Before the bank was organized the differences of exchange in favor of, or against Phila-delphia, in its relations with the other commercial cities, was as follows:

With Boston 17 per cent.; with New York, 94 per cent.; with Baltimore, 41 per cent.; with Washington, 7 per cent.; with Charleston, 61 per cent.

At present these exchanges are generally either at par, or at the utmost one half of one per cent.

This has naturally followed the rectification of the currency. As long as the general circulation of the United States consists of specie or its equivalents, the rates of exchange between any two places in it can never much, nor permanently vary from the expenses of their transportation from one place to another; and a reduction to nearly that rate was the inevitable consequence of the resumption of specie payments. The bank has, however, been able to do more than this. The large mass of its operations in exchanges, by giving to it funds in various parts of the Union which the course of its own business, as well as that of the government, requires to be transferred, furnishes it with the means of transferring at the same time the property of individuals at a very reduced expense. Accordingly, funds are transferred to the remotest points of the Union, sometimes at no expense whatever, and always with charges so moderate as to afford facilities of interior communication, probably not equalled by those of any other country.

The following table exhibits the amount of domestic and foreign exchange purchased at the bank, and the several branches, the amount of the drafts furnished by them on each other respectively, and the amount of transfers made on account of the gov-ernment, during the year ending on the 1st of July

Statement exhibiting the exchange operations of the bank of the

	Bills pur- chased.		Drafts Drawn,		d by the U	TOTALS.
Foreign Domestic	3,481,963 7 4,122,394 7		8.699,744 5,110,570		Tra rerted States bank ces.	
Bank U. States	7,604 358 5	4	13,810,314	38	610,000	22,064,672 92
Office Portland	136,746 B	9	194,275	04	200,000	
Portsmouth	47,713 3	8		50		140,144 88
Boston		8		33	1,575,000	4,151,828 41
Providence		6	745,063	16		1,711,553 93
Hartford		14	325,685			440,046 41
N. w York		0	1,512,347			13,477,729 31
Baltimore	963,288 0		2,006,200		580,000	3,549,498 57
Washington	721,725 4		3,503,391	35		4 926,116 76
Richmond	1514 295 3		343,595			1.857,891 07
Norfolk	706,017 5		1,368,380			2,074,097 58
Fayetteville		10	872,517			1,501,970 16
Charleston		8	1,637,684			
Savarnah	2099,844 1		770,210			2,945,054 78
Mobile		90	2,615,265			4.314.288 C3
New Orleans		56	2,825 187		825,000	13,013.382 84
Natchea		37	363,444			
St. Louis		14	862,993			957,327 24
Nashville		75	1,091,667			3,785,619 94
Louisville		19	1,291,356			
Lexington		O.	1,493,810			2,999,442 06
Cincinnati		71				2,315 694 38
Pittsburgh		33				2,066,862 43
Buffelo		17	1,555,202			2,272;420 43
Utien		25				251,819 34
Burlington	218,123	_		_		
	44,053,820	1(	12,123,161	2	12,450,000	98,636,681 31

From this it will appear, that the purchases of bills of exchange, amount to more than forty-four millions, the drafts issued by the hank and the branches on each other exceed forty-two millions, and the transfers on account of the government were upwards of twelve millions. If to these be added the amount of bills not purchased in the first instance by the bank but collected through its agency, the aggregate will represent an actual movement in the business of the union, much exceeding one hundred millions of dol-This has been conducted at a very moderate expense, and with a facility which has caused so large a displacement of funds, to be almost imperceptible in any of the interests of the community. More experience and a greater mass of operations may enable the bank to reduce still further, even these slight charges; but should it be able only to retain them at their present rates, it will have accomplished all that is necessary or perhaps desirable.

3,497,681 06

3d. The influence of these measures on the country has been in every stage of them eminently salutary. The substitution of a sound currency for a depreclated and irresponsible circulation, which was hastening to involve in confusion all public and private interests, is of itself an advantage, which can scarcely be over-estimated, conferring as it does, stability on property, and security on all the rewards of industry: while the interior commerce of the whole union is relieved from the oppressions of a multiiarious and fluctuating paper money, requiring at each atep some new sacrince which, however disguised, fell ultimately as a charge on the productive industry of the country. The means, moreover, by which these objects have been attained, the restraint on the over issues of other institutions-the extensive operations in domestic and foreign exchange-the bringing of the institution into immediate contact and sympathy with the real business of all parts of the country, are in themselves direct and positive beneecupation of a bank of the United States, which, divested of all local influences and interests, finds its appropriate sphere in facilitating the commerce of the states with each other and with foreign nations. Accordingly, it may be assumed with safety, that there has never been in the history of this country, any period when its moneyed concerns were more steady and equal-its interior trade transacted with more economy and convenience, and the necessary fluctuations incident to its foreign commerce less sensibly felt, than during the last eight years. This term is sufficiently long and various to test the efficacy of the system. It embraced a period, when, in addition to its habitual causes of fluctuation the moneyed system was disturbed by the reimbursement of many mil-lions of the public debt, a great portion of which was to be remitted to Europe, and more especially it included the year 1825, one of the most critical in our own history, and probably the most disastrous to the banking system of England.

4th. Having explained the effects of this system on the currency, the exchanges, the state banks, and the community, it remains to show that these purposes have been accomplished without any sacrifice of the interests of the stockholders, but that the bank itself has shared in the benefits it communicates. This will be perceived by contrasting the present state of the institution, with its condition at the triennial meeting of 1822. Its situation at these respective

34,992,139 63

periods was as follows: State of the bank, August 30, 1822.

Capital paid in,

The circulation 5,456,891 90 3,559,792 96 Deposits-Public Private 3,216,699 78 6,776,492 74 Due to sundry offices and banks, and to individuals in Europe, 1,964,898 36 Unclaimed dividends 129,741 28 3,743,889 00 Contingent fund to meet losses Discount, exchange, and interest, since July 388,237 01 Profit and loss 51.897 07 \$53,504,196 99 DISTRIBUTION. Funded debt 13,020,469 27 Loans, viz:-

Personal security 22,072,405 46 Funded debt 67,928 t3 2,713,760 30 Domestic bills Debt of Smith & B. 1,357,457 23 24,599 76 Poreign bills Hank stock 5,974,725 80 Mortgages 8,000 00

32,218,876 68 Due by banks, &c. 1,650,869 73

Real estate	587,102	38
Bonos, premium, &c.	1,180,880	00
Banking houses	834,922	15
Notes of state banks	664,642	56
Specie	3,346,434	22
	\$53,504,196	99
	ank, August 1st, 1831.	
Capital paid in	35,000,000	00
The circulation	22,399,447	59
Deposits-Public	7,252 249 42	

7,252,249 42 Private 16.368.085 89 Due to individuals in Europe 168,372 72 251,766 03 Unclaimed dividently Contingent fund to meet losses 5,613,173 15 Discount, exchange, and interest, (includ-ing foreign exchange) 614,685 07 Profit and loss 1,750,048 51

> 82.165.578 89 DISTRIBUTION.

Funded debt Loans:

41.585 298 70 Personal security Funded debt 19,700 00 14,409,479 72 Domestic bills Foreign do. 121,214 60 Bank stock 779,458 07 140,956 63 Mortgages Bills chargeable to

contingent lund 3,452,976 16 60,509,083 88 Real estate 2,491,892 99 Due from sundry offices and banks 621,523 08 Expenses, &c. 259,383 50 Banking houses 1,160,455 54 2,080,442 33 11,545,116 51 Notes of state banks

The analysis of these statements will present the following differences in the situation of the bank at these

respective periods; 1st. In regard to the comparative activity of its busi-

In August, 1822, of the whole amount of \$32,218,876 68 loans amounting to There was suspended 10,426,306 56 Leaving as active \$21,792,570 12 In August, 1831, of the same class loans amounting to \$56,793,986 49 There was suspended 3,633,750 84 \$53,160,235 65 Leaving as active In August, 1822, of the loans of 32,218,876 68 5,974,725 80 There were on bank stock In August, 1831, out of the loans of There were on bank stock \$56,793,936 49 779,458 UT

In regard to the exchanges: The amount of domestic bills purchased

in 1822, was That purchased within the year ending 40,571,556 25 July 1st, 1831, was

2d. In regard to its resources and investments, there will be seen,

1st. That the bonus and premium on the loan of 1821, amounting then to \$1,180,880 00 has been extinguished. 2. That there is an increase of the contingent fund to repair losses, of \$1,869,274 15 making that fund exceed by \$309,000, the loss it is to

cover. 3d. An increase of the surplus fund, of \$1,698,102 93 4th. An increase of the capital, of 7,860 37 5th. An increase of the circulation, of 16,942,555 62

6th. An increase of the deposits, of 9,591,493 15, 7th. An increase of the investments as follows:

Loans 28,290,207 20 1,904,790 61 Real estate In banking houses
In state bank and other debts 325,533 39 3,052,579 34 8,198,682 29 In specie 41 771 792 83

9,522,788 21 And a decrease of the funded debt, of

Making the actual increase 32.249,004 62 The 3d and last consideration is the comparative pro-

ductiveness of the operations of the bank at these peciods The nett profits of the year ending July,

1822, were 1 469 444 91 The nett profits of the year ending July, 1831, were

Making an increase of

This state of things is calculated to justify the This state of things is cusculated to justify ine expectation, that a continuance of the same prosperity will at length indemnify the stockholders for the privations of profit to which they have been so long subjected. Hitherto their compensation has been comparatively inadequate. Owing to the large expenses incident to the establishment of the bank, and to the great losses growing out of its early mis-fortunes, the whole amount of dividend, from Jan. 1817, to July 1831, a period of fourteen years and a half, has been only \$72.85, or a small fraction beyond five per cent. a year, on the original subscriptions of one hundred dollars. The dividend during the last three years and a half, has amounted to 7 per cent. a year; and it would require a continuance of the same dividend for eleven years and a half more to make the annual dividend, from the establishment of the bank, equal to 6 per cent. a year.
If, however, the stockholders have been less be-

nefited by their investment than was anticipated, they may derive consolation for their diminished profits, in the general prosperity of the country at large, to which the operations of the bank have con-

tributed.

It is, indeed, the main design of presenting these details, to show the practicability of continuing these advantages without a sacrifice of the personal interests of the stockholders. The experiment, for such it undoubtedly was, of sustaining a large and sound and uniform currency, and of reducing the exchanges of the country to the most economical limits, has been fairly and fully made upon systematic principles. It has now for many years succeeded, and it may be presumed that the same efforts will continue to produce similar results. But in any event, the board of directors have the satisfaction of knowing that their exertions have thus far rendered the bank not unproductive of benefit to the country; and that if any unforeseen causes should hereafter prevent or diminish the beneficial operations of the institution, it shall not fail from any want of zealous devotion to the great interests which they have been appointed to administer. By order of the board, N. BIDDLE, president.

On metion of Horace Binney, esq. seconded by

Robert Ralston, esq. it was

Resolved, That the communication made by the board of directors to this meeting, be referred to a committee of seven, to report thereon; and that the same committee be authorised to report upon auch other matters as they may deem to be interesting to the stockholders.

Whereupon the chairman appointed the following

gentlemen, viz: HORACE BINNEY MANUEL EYRE ROBERT RALSTON, JOSEPH HEMPHILI R. L. COLT, PAUL BECK, ir. JAMES RONALDSON, On motion of Charles J. Ingersoil, esq Resolved, That this meeting now adjourn, till 4

o'clock this afternoon, for the purpose of receiving the report of the committee.

Four o'clock, P. M.

The stockholders met pursuant to adjournment. Mr. Binney, on behalf of the committee appointed at the meeting held this morning, produced and read the following report, which with the resolutions it

recommended, were unanimously adopted. The committee to whom was referred the communication from the board of directors,

REPORT,

That they have verified by a comparison with the 2.935.02t 19 tabular statements of the bank the material facta reported in this interesting paper, and find them to be correct. The reasoning by which the board of di-\$1.465.576 28 rectors has deduced from them the connexion between the bank and the present prosperity of our country, and has sustained the principles which have regulated the administration of its concerns for many years, requires no comment. All who read the comyears, requires no comment. An wan reas the com-munication, which, it is presumed, will be given to the public, will discern for themselves not merely the actual prosperity of this institution, greater and more stable than at any former epoch, but the manner in which its great public and private trusts have been performed-ita public trust towards the government and the people of the United States, and its immediate private trust towards the stockholders, and those who have confided to it their funds and their eredit. The perfect harmony of these interests under the operations of the bank organized as the bank of the United States has been by law, and administered as it now is, is believed to be demonstrated; and it would be mere waste and superfluity in the committee to attempt to add either to the cogency or the variety of the considerations, by which the board of directors has completed the demonstration. The committee will not however deny themselves the satisfaction of submitting to the atockholders a few of the inferences, which the communication, taken in connexion with the past and known history of the United States and the bank, appears to justify.

1st. That the bank at its origin, and at a great cost

and sacrifice, effectually promoted the restoration of specie payments; and that its able administration specio payments, and that its able summissiature, for several years past, has finally catablished a cur-rency, as universally sound within the United States as ean ever be expected, or as is essential to the general welfare: and that this has occurred in a community whose currency for a part of the time has felt the influence of active, though temporary causes of derangement, and is at all times exposed to danger by the number and variety of its banking institutions.

2d. That the bank through the whole course of its operations has effectually assisted the treasury in the collection and distribution of the public revenue; and that of late years it has been signally efficient in preventing the discharge of the public debt from disturbing the operations of commerce, or the course and value of pecuniary investments.

3d. That the bank by its judicious intervention in

the business of domestic exchange, has given such facility and regularity to this indispensable instru-ment of internal trade, that neither the want nor the cost of it any longer exists, to embarrass any opera-

tion whatever.

4th. That by its extensive operations in foreign exchange, the bank has for several years held in its hands, and has at times used with striking effect, the power of arresting all sudden and violent fluctuations in this branch of commmerce; and promises by the same means greatly to economise the use of the

States with China and India.

5th. That these public services of the bank of the United States, are the peculiar result of an institution organized and administered as this has been; that the organization of any bank or body whatever, essentially different, would fail in the attainment of most or all of the great objects adverted to; and that an efficient administration is alone necessary to deexisting form.

6th. That while the bank has been administered for several years upon those principles which are demonstrably the best, both for the public and the stockholders, yet that adverse circumstances, at an earlier day, and among them, chiefly, the cost and sacrifice attending the restoration of an unsound currency, by which an immense loss, that would otherwise have fallen upon the transury and people of the United States, was assumed by the bank, have prevented the stockholders from deriving the usual returns of money invested at the lowest rate of interest-the original subscribars not having realized an interest equal to five per cent. per snnum, paid semi-annually, and subsequent purchasers of the

etock at an advance, having generally received less.

7th. That the stock of this bank is distributed, in such amounts, to such variety of persons, and for such different purposes and trusts, that all charge or allegation of monopoly by any body of men whatever, is shown to be without foundation; whereas the same circumstances prove the deep and critical interest which widows, orphans, charitable societies, and other trusts, have in the prosperity and conti-

nuance of the bank.

8th. That the welfare of this bank is now identified with that of the people of the United States, from those who wield the largest operations of commerce, to him whose interest in the currency does not go beyond the just compensation of his daily labor.

These inferences your committee believe to be sound, and that no partial interest which they may have as stockholders ought to prevent them from using their privilege as citizens in staling them.— Their proof may be made manifest to all who know the history of the bank and the country, by perusing the communication of the board of directors.

There is one other subject within range of the reference to the committee, upon which they deem

it their duty to report.

The charter of this bank will expire by its present limitation on the 3d March, 1836, and th will consequently be but one triennial meeting after the present, and that at a point of time too near the expiration of the present charter, to authorise measures in regard to its renewal. It is fit, in the opinion of your committee, that before that meeting your should be given to the board of directors, to prosecute them if they thought proper. This power should be large and definitive, not merely to so-licit a renewal, but to abide, if they think right, by tha terms which congress may impose. A board of directors who have administered the bank in the manner detailed in their recent communication, are safe depositories of the entire power of the stock-holders on the subject of the renewal of the charter.

With these remarks the committee terminate their duty by offering to the adoption of the meeting the

following resolutions:

Resolved, That an administration by which the interests of the stockholders and public are successfully blended, is that system which is properly characly blended, is that system which is properly charac-teristic of the bank of the United States; and that to the taxing power, and that the practice of every ci-the present able administration of the bank, the stockholders and the public are indebted for the most summary manner. That with regard to direct

precious metals in the futura trade of the United | full, efficient, and profitable development of such a system.

Resolved, That the thanks of this meeting be presented to the board of directors, for their comprehensive and lucid report upon the operations and present condition of the bank, with an assurance that the stockholders place an unabating confidence in their wisdom and fidelity in the further administration of its concerns.

Resolved, That the confidence of the stockholders continues to be due to the able and faithful president of the institution, and that their thanks be given to him for the enlarged and liberal views which have distinguished his administration of the bank, and for the skill with which he has united in its operations, a regard to the public welfare with a steady support of the rights and interests of the stockholders.

Resolved, That if at any time before the next tri-ennial meeting of the stockholders, it shall be deem-ed expedient by the president and directors to apply to congress for a renewal of the charter of the bank. they are hereby authorised to make such application in the name and behalf of the stockholders, and to accept such terms of renewal as they may consider just and proper. (Signed)

HORACE BINNEY, ROBERT RALSTON, MANUEL EYRE JOSEPH HEMPHILL ROSWELL L. COLT, JAMES RONALDSON. PAUL BECK, jr.

Bank of the United States, Sept. 1st, 1831.

On motion of Isaac Lawrence, esq. of New York, the proceedings of the stockholders, with the reports adopted by them, were ordered to be published.

The meeting then adjourned sine die.

CUSTOM HOUSE BONDS.

From the Charleston Courier of September 24. To gratify the wishes of the public, we applied for and were politely favored with the luminous opinion of judge Lee, pronounced in the late case of the custom house bonds, and which we present to our readers this morning.

The court was so crowded during the whole period of the trial, that many who felt the deepest interest in the proceedings, were prevented from witnessing them. It may be proper, therefore, that the decision should be accompanied with a brief reference to the course of the argument.

We are indebted to a legal friend for the following report:

The suits were brought on two bonds, each for \$68 92 cents, given to the United States by Messrs. Holmer, Mazyek and Gadaden, for the duties on goods imported by them from Liverpool, in November last. The importation was made for the single purpose of trying the constitutionality of the tariff act of 1628.

On the opening of the court, Mr. Gickrist, the district attorney, moved for judgment, under the 65th section of the revenue act of 1799, as the defendants had failed to bring themselves within the provisions of that section, by alleging that there had been an error in the assessment of the duties, of which the collector had had previous notice. The motion was met by another, submitted by Mr. J. G. Holmes, the attorney for defendants that the defendants have leave to plead. The argument was then opened on the state of the case.

Mr. Gilchrist contended that the course proposed by him was not only supported by the plain meaning of the act, but by the uniform practice under it, in this court, since 1802. That the authority to call in taxes, the power was not only exercised in every state, but almost in every city of the union. That even with respect to duties under the duty act of this state, in 1785, the importers were allowed credits on giving their notes for the amount, liable to be collected as they became payable, by summary exc-These propositions were ably sustained by cution. the decisions, not only of the United States courts, but the courts of this state. It was clearly shewn that the credit system adopted by the United States. was more favorable to the importer, than that which obtained in any other country; and the district attorney concluded with a striking view of the inconveniences and embarrassments that might ensue on a departure from the act.

Mr. Holmes, for the defendants, insisted that they had a right to put in any plea that the defence should require. That in any other view, to serve the de-fendants with a writ, was worse than mockery,-That the very institution of a proceeding by suit, carried with it the incidents of a suit, and that pleading was one of those incidents. That the exception in the act of '99, had reference solely to a motion for continuance, and that any other construction would be an infringement of the right of jury trial.

Mr. McDuffie followed, on the same side, repeating and enforcing the objections urged by Mr. Holmes, and claiming the right of going to the jury, as the only satisfactory mode of deciding the consti-

tutional question.

Mr. Petigru, for the United States, replied to the defendant's counsel, and contended that the provisions of the act were fair and equitable-that it could work no injury. He admitted that the defendants were entitled to file any plea that would present an issue of fact for the jury; but that it was too obvious to admit of doubt, that the design was under the show of pleading to transfer the real point in dispute from the judge to the jury; which could not be permitted. His honor the judge, having decided that the defendants were at liberty to plead, they immedistely filed the plea of non est factum; on which issue was joined, and the cause submitted to the

The district attorney then proved the execution of the bonds. The defendants then called a witness, and asked him the question, whether the bonds had not been given for duties imposed by the tariff of 1828? This question elicited the main argument on

The United States counsel objected that the testimony could not be admitted under that plea. objection was urged by Mr. Petigru, and sustained by the most luminous view of the subject, aided by the decided cases in England and this country. McDuffie replied at considerable length. His honor ruled that the testimony was not admissible.

The defendant's counsel then varied their motion in form, by asking leave to go into evidence of the want of consideration for the bonds; on the ground of having given notice of such defence before trial; but the court thought that this motion could not be distinguished from that which had been previously

After the conclusion of the argument, the court, in its charge to the jury, briefly stated to them that it was a suit on a bond—that the execution of the bond had been duly proved-and that there was no evidence before the court and jury to invalidate the bond.

The jury found for the United States the amount of both bonds. An appeal has been taken, which will be heard by the circuit court at Columbia, in November next.

On Tuesday, judge Lee, delivered the following opinion

The question upon which I am now to decide, is a preliminary one, which the defendants deem of much importance to their cause; it arises under the 65th section of the revenue act, and the amendment to the constitution of the United States, art. 7.

By the section above alluded to, it is provided that "where suit shall be instituted on any bond, for the recovery of duties due to the U. States, it shall be the duty of the court where the same may be pending, to grant judgment at the return term upon motion, unless the defendant shall in open court, the United States attorney being present, make oath or affirmation that an error had been committed in the liquidation of the duties demanded upon such bond, specifying the errors alleged to have been committed, and that the same have been notified in writing to the collector of the district, prior to the commencement of the return term aforesaid; whereupon, if the court be satisfied that a continuance, until the next succeeding term is necessary for the attainment of justice, and not otherwise a continuance may be granted until next succeeding term and no longer."

It must be evident to every one who reads this section, that congress intended to provide in the most expeditious and summary manner for the recovery of all bonds given for duties. They do not appear to have forseen any difficulties in the way of the recovery of such bonds-they seem not to have thought that any bar to that recovery could be set up. The only case which occurred to them as necessary to be provided for, was that of an error which might be committed by their officer, the collector, in the liquidation of the duties. The section already adverted to, declares, "unless the defendant shall in open court, the United States attorney being present, make outh or affirmation that an error has been committed in the liquidation of the duties demanded upon such bond, specifying the errors alleged to have been committed, and that the same have been netified in writing, to the collector of the district, prior to the commencement of the return term aforesaid; whereupon, if the court be satisfied that a continuance, until the next succeeding term, is necessary for the attainment of justice, and not otherwise, a continuance may be granted until next term, and no longer. In such a case a delay of a term is allowed, if the court should deem it necessary for the attainment of justice."

Two questions present themselves to the mind of the court, which have been made, and naturally arise in this case:

1st, Whether under the terms of the 65th section, the defendant is precluded from going into any defence, except that which is indicated in the latter part of the section, which grants a continuance, on his making oath of a miscalculation of the duties

2d, If so prohibited by the act, whether the same is not a violation of the 7th article of the amendment to the constitution of the United States, which declores that in suits at common law, where the value in controversy shall exceed twenty dollars, the right

of trial by jury shall be preserved, &c.
It has been contended on the part of the United States, that in all suits brought under this section of the act, the judgment or decision must be by the court, that is to say by the judge, without the intervention of a jury. Its language is, it shall he the court to grant judgment at the return term upon motion. What was the meaning of the legislature in this act, when they use the term court? Ex ri termini, "the court" when used in this sentence, and in common judicial parlance, would be considered in most cases to mean the judge. But are we certain that congress meant to confine the jurisdiction over such eases to the district judge alone? Will not a liberal and enlarged construction warrant the opinion that by the term court was meant to be included both

judge and jury? Let us examine the law, and dis- readily perceived in the course of the observations cover if we can, whether congress did or could have which I shall make upon it. The case ex-parte intended to preclude the debtor from any defence which he might have, and from a trial of that detence before a jury. In construing this and all other laws, it seems but common justice to the legislature making them, to put such an interpretation upon them, if the language used will reasonably admit of it, as will relieve the legislature from the imputation of having intended to do any act of injustice, by depriving a citizen of a right that he might possess. It ought not to be lightly presumed that the representatives of the people, whose duty it is, in their legislative espacity, to watch over the rights of their constituents and to protect them, would invade those rights. The presumption, in a free representative government like ours, must be the other way. In getting at the intention of the legislature in this case, it is proper to inquire, whether by confining the jurisdiction over duty bonds to the judge, and restricting him to the consideration of but one point, viz: the error in the calculation of the duties, an injustice might not be done to the citizen; and if it should appear that such effect would or might follow, then to ask whether such could have been the intention of congress.

Suppose the case put by the defendants, that the bond upon which they were sued was indeed not their bond, but one in which their names had been forged, or the other case, of payment to the collector after the bond was put in suit, or suppose that the suits were brought against the executor or administrator of a deceased debtor, ought they in such case to be prevented from pleading, by which they would be enabled to state such facts and establish such a

defence?

If, then, the construction of this law, as contended for by the counsel of the United States, were to prevail, would not the judge or court be compelled to disallow any plea, and might not such a construction in some cases work an injustice, and if such injustice might be done by such a construction of the law, shall we, without very strong reasons, come to the conclusion that the legislature intended to do such wrong? Certainly not. In the case of the executor or administrator having no assets in his hands, unless he were all owed to plead plene administravit, would not injust ce be done to him. If the judgment were to go against him without plea, would he not be liable de bonis propuis. By the section under which the suit as brought, the court as has already been shown, may grant a continuance until the next term, if the de-fendant makes oath, &c. It is thence inferred, that the defendant could make no other defence than that which arises from a miscalculation of duties, &c. Is this the inevitable inference from that part of the clause? A more reasonable one seems to be, that no continuance should be granted, except for that resson. This part of the clause relates only to the delay of a term, and if strictly construed, would forbid such a delay, except on the ground there stated-but can it be made to uphold the opinion, that no defence should be allowed at the return term, or after the continuance has expired? Are we compelled by the terms of the law to believe, that the miscalculation of the duties, which is a mere matter of evidence, was intended by the act to be decided by the judge without a jury? It might happen, and it is no very unreasonable supposition that it would happen, that a judge might be totally incompetent to examine and detect an error in the liquidation of the duties -When the law, therefore, requires the court to grant judgment, &c. it may, perhaps, without any great violence to the legal phraseology, mean the jury as well as the judge.

Fortunately for the court, it is not without an authority, which has a very important bearing on this Its strong analogy to the present case, will be this case, whether a suit involving the rights of the

which I shall make upon it. The case ex-parte Wood, reported in 9 Wheaton, presented questions very much like those which have been made here. They arose under the patent act of congress, and were first tried before the district judge for the southern district of New York, and carried up to the su-preme court, under a rule to show cause why a mandamus should not issue to the said district court.
The circumstances were these—the 10th section of the patent act, of 21st February, 1793, declares, that upon oath or affirmation being made, before the judge of the district court, where the patentee, his executors, &c. reside, that any patent which shall be issued in pursuance of this act, was obtained surreptitiously, or upon false suggestion, and motion made to the said court, within three years after Issuing said patent, but not afterwards, it shall and may be lawful for the judge of the said district court, if the matter alleged shall appear to him to be sufficient, to grant a rule that the patentee, or his executor, &c. show cause why process should not issue against him to repeal such patent; and if sufficient cause shall not be shown to the contrary, the rule shall be made ab-solute. And, thereupon, the judge shall order process to be issued against such patentee or his executors, &c. with costs of suit. And in case no sufficient cause be shewn to the contrary, or if it shall appear that the patent was not the true inventor or discoverer, judgment shall be rendered by such court for the repeal of the said patent. And if the party at whose complaint the process issued shall have judgment given against him, he shall pay all such costs as the defendant shall be put to in defending the suit, to be taxed by the court, and recovered in due course of law. Here it will be perceived, that upon oath or affirmation being made before the judge of the district court, &c. it became lawful for him to grant a rule that the patentee or his executors, &c. should show cause why process should not issue, &c. and if sufficient cause were not shewn, that judgment shall be rendered by such court for the repeal of the said patent. Under this clause of the patent act, a rule did issue to the patentee, requiring him to shew eause, &c. Upon the return of the rule, a motion was made on the part of the patentee to have an issue made up to try the validity of the patent. The court i. e. the district judge, denied the motion upon the ground that the proceedings were summary, &c. and were not to be submitted to a jury. From decision an appeal was made to the supreme court why a mandamus should not issue, &c. How do these cases resemble each other, and how does the ease just commented upon apply to that before the court? The strong features of resemblance are the terms used in both acts-district judge and court. In the present case the 65th section of the revenue law, makes it the duty of the court, to grant judgment at the return term. In the case arising under the patent law, the judge of the district court on the return of the rule, if not satisfied with the cause shewn, is authorised to make the rule absolute, and order process to issue against the patentee, with costs, &c.

In the same clause the word court is also us d. There was the same ambiguity in both acts. The district judge in New York, believing that the remedy provided by the patent act was intended to be summary, refused to have an issue made up. Upon the return of the rule and cause shewn, and after a full hearing before the supreme court, that tribunal ordered a mandamus to issue to the district judge, requiring him to cause an issue to be made up, and the trial to be had before a jury.

I will not say that the cases are altogether parallel. but it must be evident to all who have followed me in the comparison, that the question was in that as in citizens, should under the ambiguous terms of the 7th amendment of the constitution proposed by con-law, he subject to the final decision of a judge with-gress, and which received an assent of the people out a jury. Mr. Justice Story, in delivering the opiout a jury. Mr. Justice Story, in delivering the opi-nion of the court, adverted to the articles of the constitution, which secures to the citizen the trial by jury, in suits at common law, &c. The supreme court do not appear by the report of that case, to have founded their decision on the article amending the constitution-they seem to have relied mora upon a liberal construction of the law, and to have been much influenced by the consideration that such construction should be given to it as would be most congenial to our institutions, and most convenient in the administration of justica.

Having considered this case, arising under the pa-tent law of 1793, and shewn by a comparison of it with the case before the court, that there was a very strong similitude, so much so perhaps, as would have justified me in coming to a similar conclusion, I will now proceed to consider the question upon other

grounds.

We will now enquire if the law (the revenue law) did not admit of such an interpretation, it would not be in violation of the constitution of the United States, and in direct repugnancy to the 9th section of the judiciary act, passed in 1789, in pursuance of that constitution.

The 7th article of the amendments to the constitution of the United States, to which I have already adverted, is in the following words:-"In suits at common law, where the value in controversy shall exceed twenty dollars, the right of trial by jury shall be preserved; and no fact tried by a jury, shall be otherwise re-examined in any court of the United States, than according to the rules of the common

law.

It is worthy of remark in this place, that so jes-lous were the people of the United States on the sub-ject of the trial by jury, that they were not satisfied with the constitution of the United States as passed by the convention, because there was not found in that instrument a specific provision recognizing tha trial by jury, in suits at common law in civil cases. It was deemed by them of sufficient importance to require an amendment of that instrument. What did they mean by the language suits at common laur? Did they not mean under those comprehensive words, to embrace all suits which did not fall within the jurisdiction of the courts of equity and admiralty? They were used in contradistinction to suits in those courts. Chancellor KENT, in the first book of his commentaries, in treating of the jurisdiction of the federal court in relation to the common law, observes, "The expression trials at common law, used in the section of the judiciary act, was not applicable to prosecution for crimes. It applied to civil suits as contradistinguished from criminal prosecutions, and to suits at common law, as contradistinguished from those which came before the court sitting as a court of equity and admiralty." His meaning of the terms (suits at common law), has very recently bean settled by the highest judicial authorities in the United States, I mean the supreme court in the case of Parsons vs. Bedford et al. reported in 3 Peters, page 446. The court in that case thus express themselves: "The trial by jury is justly dear to the American people. It has always been an object of deep interest and solicitude and every encroachment upon it has been watched with great jealousy. The right to such a trial is, it is believed, incorporated into, and secured in every state constitution in the union, and it is found in the constitution of Louislana."— One of the strongest objections originally taken against the constitution of the United States, was

mental guarantes of the rights and liberties of the people. This amendment declares that "in suits at common law, where the value in controversy shall exceed twenty dollers, the right of trial by jury shall be preserved, and no fact once tried by a jury, shall be otherwise re-examinable in any court of the United States than according to the rules of the common At this time there were no states in the law." union, the basis of whose jurisprudence was not essentially that of the common law in its widest meaning; and probably no states were contemplated, in which it would not exist. The phrasa "common law" found in this clause, is used in contradistinction to equity, and admiralty and maritime jurisprudence. The constitution had decision in the dence article, "That the judicial power shall extend to all article, "That the judicial power shall extend to all tion, the laws of the United States, and treaties made or which shall be made under their authority." &c. and to all cases of admiralty and maritime juris-diction. It is wall known, that in civil causes, in courts of equity and admiralty, juries do not intervene, and that courts of equity use the trial by jury only in extraordinary cases, to inform the conscience of the court. When, therefore, we find that the amendment requires that the right of trial by jury shall be preserved in suits at common law, the natural conclusion is, that this distinction was present to the minds of the framers of the amendment -By common law, they meant what the constitution denominated in the third article "law;" not merely suits which the common law recognized among its old and settled proceedings, but suits in which legal rights were to be ascertained and determined, contradistinction to those where equitable rights alone were recognized, and equitable remedies were administered; or where, as in the admiralty, a mixture of public law, and of maritime law and equity was often found in the same suit. Probably there were few, if any states in the union, in which some new legal remedies differing from the old common law forms were not in use; but in which, however, the trial by jury intervened, and the general regula-tions in other respects were according to the course of the common law, (proceedings in cases of par-tition, and of foreign and domestic attachment, might be cited as examples variously adopted and modified.) In a just sense, the amendment then may well be construed to embrace all suits which are not of equity and admirally jurisdiction, whatever may be the peculiar form which they may assume to settle legal rights, and congress seems to have acted with reference to this exposition in the judiciary act of 1789, ch. 20, (which was cotemporaneous with the proposal of this amendment); for in the ninth section it is provided, that the trial of issues in facts in the district courts, in all cases except civil causes of admiralty and maritime jurisdiction, shall be by jury, and in the 12th section it is provided, that "the trial of issues in fact in the circuit courts, shall in all suits, except those of equity and of admiralty and of maritime jurisdiction, be by jury;" and again in the thirteenth section, it is provided that "the trial of issues in fact in the supreme, court in all actions at law against citizens of the United States, shall be by jury. " "The true signification of the words suits at common law, is thus definitively settled, and embrace all suits which do not fall within the jurisdiction of the courts of equity and admiralty."-The amendment to the constitution providing for a trial by jury in such cases, was passed in March, 1789, and in September of the same year, the judisealist the constitution of the United States, was the you're to such cases, was passed in making the want of an express provision securing the right 1789, and in September of the same great, he judiof (rial by jury in civil cases. As soon set the con-stitution was adopted, this right was secured by the was passed by congress, only fire months after the

constitution was amended on this point. We will | tion of the two laws ought therefore to be the same. now examine the judiciary act, and see whether it does not recognize the 7th article of the amendments to the constitution. The ninth section of the judiciary act establishes the jurisdiction of this court, after vesting authority in this court over certain matters relating to the revenue and the admiralty, holds this language, "and shall also have cognizance concurrent as last mentioned, of all suits at common law, where the United States sue, and the matter in dispute amounts, exclusively of costs, to the sum or value of one hundred dollars," and concludes in the value or one nuncrea college, and concludes in the following words: "and the trial of issues in fact in the district courts in all causes except civil causes of admiralty and maritime jurisdiction, shall be by jury."— Here we see the requisition of the constitution complied with, and the trials of issues in fact in all causes, expressly enjoined on the district court, in all causes, that is to say in all suits at common law where the United States sue. To show conclusively that such cases as the present were intended to be embraced by the words "suits at common law," where the United States sue, it is only necessary to enquire who are the suitors in this court. It will be found that with the solitary exception of suita against consuls or vice consuls, there are no other suitors in this court in civil cases (not of admirally jurisdiction) than the United States. What suits, then, were intended by the words "suits at common law, where the United States suc?" The answer must be, all suits brought by the government on duty or other bonds. Can it mean any other suits? It cannot for this plain and obvious reason, that the only suitors in this court, the only plaintiffs, are the United States. It is a kind of exchequer court, in which the debts due to the government are recover-ed. Neither aliens nor citizens can sue here. This court has no jurisdiction in any other cases. When the 9th sec. therefore, which establishes this court, declares that it shall have cognizance of all suits at common law, where the United States sue, it must head to embrace cases like the present, or it can mean nothing. If, then, it meant to comprehend these cases, how are they to be tried? Being suits at common law, they must be governed by the amendment to the constitution, which directs such suits to be tried by a jury. This seems to me to be an inevi-able conclusion. My mind has been much assisted too, in forming an opinion on this question, by adverting to an act of congress passed on the 3d March, 1797. By this law, it is declared "that where sults shall be instituted against any person or persons indebted to the United States, as aforesaid, it shall be the duty of the court where the same may be pending, to grant judgment at the return term, upon motion, unless the defendant shall, in open court, (the United States attorney being present) make oath or affirmation, that he is equitably entitled to credits which had been, previous to the commencement of the suit, submitted to the consideration of the accounting officers of the treasury, and rejected, specifying each particular claim so rejected, in the affi-davit, and that he cannot then come safely to trial. Oath or affirmation to this effect being made, sub-scribed and filed, if the court be thereupon satisfied, a continuance, until the next succeeding term may be granted, but not otherwise, unless as provided in the preceding section."

It will be seen, by a comparison of this clause with the 65th section of the act of 1789, under which these suits were brought, that the same language is toese suits were brought, that the same language is to say, that the delendants nave a right to plead in found in both acts—in both, the term court is used: this case. Let it, however, be clearly understood, The court in both cases, is required to grant judg-that while I admit their right to plead, I decide noment the first term, &c. Indeed, it is evident to me thing as to the nature of their plead. The court on the second day, decided that under that this very set of 1787 before them, for they have used the same phraseology, verbaim. The construe-

Laws in pari materia ought be considered together, and where the object of both laws is the same, to wit, the recovery of the public dues, the construction should also be the same. Now, what has been the practice under this set of 1787? Since I have presided in this court, a number of suits have been brought by the United States under this law, against defaulting public officers, such as deputy post masters, pay masters, &c. and I have never known an instance in which the defendants have been prevented from pleading. In every case an issue has been made up and the facts have been submitted to a jury. It may be said that the cases are different, that in the case before the court, the sum due is liquidated and fixed, and in the cases arising under the act of 1787, the debt due is uncertain. Not so. The amount due to the government is certain in both cases, for in the cases of pay masters and post masters, the statement of the department, certified by the proper officer, and authenticated under his seal, is admitted as evidence, and is conclusive. Here we have a case very strongly in point, under a law word for word, like the 65th section under which this suit is brought, the trial by jury has always been allow-

What are the inconveniences to the government which can arise from such cases going to a jury? Can there be a delay even of a term in the recovery of such bonds, unless the defendant alleges and swears to a miscalculation of the duties? There cannot be. Cannot congress, if they find that the delay incident to such trials, will operate injuriously to the government, remedy the evil by requiring the duties to be paid in cash, before the permit is delivered for the goods imported. They most assuredly can, but will it be necessary to do so? I cannot conceive that it will. The example of this case will probably not be followed. No merchant The example of this will venture to stand suit on his bond. What will be the effect to him? Loss of commercial character and credit with the government, who, on all future occasions, would require the payment of the duties in eash. The consequence, therefore, cannot be of a serious nature to the government. I do exceedingly regret the circumstance, that all this excitement, that all these long and learned discussions, are likely to produce so little fruit. No law can be settled in these cases. From any decision which I may make, an appeal can only be had to the circuit court, wi appeal can only be had to the creat court, which will be shortly held at Columbia, by my brother Johnson, and whether be confirms or reverses my decision, the law will be still unsettled. Beth his decision, the law will be nist prime, and inconclusive.
The smallness of the sum in dispute will prevent its
being carried up to the supreme court, where alone it could be decided in the last resort. It might rea-sonably be asked, then, why agitate this question when no possible good can result from it? It is not an accidental case, it is one avowedly made for the purpose of calling in question the constitutionality of the tariff act of 1828. Cui bono? when the defendants, who are professional men, consent of the lew, knew that a final decision on the law could not be had in the case. Let a verdict in the case be one, way or the other, it must be evident to all who hear me, that it will be unimportant, inconclusive, settling

From the view which I have taken of the question. both under the law and the constitution, I am bound to say, that the defendants have a right to plead in

that point will or will not be published.

The presence of Mr. McDuffic, to argue the constitutionality of the tariff laws, as operating on the payment of the bond above alluded to, has caused a correspondent of the "Charleston Courier" to bring out the following extract from the essays of "One of the people." [Mr. McDuffie against the "radicals" of 182 1.

"Suppose congress should pass a law to 'lay and collect taxes, duties, imposts, and excises,' and that a state legislature should pass another, declaring the object for which it was intended unconstitutional, and therefore prohibiting the officers of the general government, by severe penaltics, from collecting the taxes, duties, imposts and excises.' Suppose congress should pass a law to 'raise an army for a national war, and a state legislature pass another, declaring the war 'wicked, unrighteous and unconstltutional,' and therefore prohibiting the officers of the general government, under heavy penalties, from re-cruiting soldiers within the limits of the state."

"I need not multiply eases; for, if you will duly consider those, you will find enough to satiste your keeneat relish for anarchy and disorder." In all the above cases you will say "each party has a right to judge for itself," and of course to enforce its judgment. "You might then behold a revenue officer of the U. States confined in a state dungeon for obeying the revenue laws of congress." You might see a gallant officer of the army, covered with the glorious scars of many a hard fought battle, bearing the scourge of a state constable at a whipping post, for attempting under a law of congress, to recruit soldiers to fight the battles of his country." And all this would unavoidably result in giving the state rulers the right to resist the general government, or in a civil war, to establish its legitimate authority; consequences either of which is incompatible with the very notion of government."

"To suppose that the general government have a constitutional right to exercise certain powers, which must operate upon the people of the states, and yet that the government of each state has the right to fix and determine its own relative powers, and by ne-cessary consequence, to limit the powers of the general government, is to suppose the existence of two contradictory and inconsistent rights."

"In all governments there must be some one supreme power, in other words, every question that can arise as to the constitutional extent of the powers of different classes of functionaries, must be susceptible of a legal and peaceable determination by some tribunal of acknowledged authority, or force must be the inevitable consequence. And where force begins, government ends."

"And it is the more astonishing that you have assumed positions involving such tremendous consequences, when we consider that they are in direct opposition to the 'strict letter' of the constitution, your favorite test of delegated authority or powers. therein provided, that 'the constitution, and the laws of the United States which shall be made in pursuance thereof, shall be the supreme law of the land, and the judges in every state shall be bound there-by, any thing in the constitution or laws of any state to the contrary notwithstanding. And again, the judicial powers, (of the United States), shall extend to til cases, in law and in equity, arising under this constitution, the laws of the United States, and treaties made, or which shall be made under their authority.' Nothing can be more plain than that the 'strict letter' of the constitution does make the laws of con-

could have been done only by a special plea. We contrary thereto. And to give this definition or pro-do not know whether the opinion of the court on vision a sanction of a nature peculiarly impressive. the members of the several state legislatures, all executive and judicial officers, both of the U. States and of the several states, shall be bound by oath or affirmation, to support the constitution of the United States. It is not less evident that it belongs to the national judiciary, to pronounce upon the constitutionality or unconstitutionality of the laws of the national legislature."

Fellow-citizens-before you, is the language of the author of that celebrated production of our talented and respectable citizen, Mr. GEO. McDuffie, who now appears to oppose the very principles which he formerly so strenuously urged, as "one of the peo-ple." But ten years have elapsed, and you behold him, instead of endeavoring to allay the present unhappy excitement that exists in our state, adding fuel to the flame, under the influence of some most mysterious, if not "natural delusion." All that he can say now, cannot shake your confidence in his former efforts to sustain the true principles of our republiean institutions, in support of that barrier which is the bulwark of our safety, and the palladium of our liberty, the good old constitution.

DON'T GIVE UP THE SHIP.

The decision of the district court has occasioned some excitement in Charleston. A meeting of the state rights and free trade party was called on the evening of the 22d, the day after the decision, for the purpose of rendering the thanks of the party to Mr. McDuffie. The meeting, though convened in tempestuous weather, is said by the Charleston Mercury to have been the largest assemblage of the party which has yet taken place. Resolutions highly complimentary to the talents and services of Mr. McDuffie, were offered and adopted. Another set of resolutions respecting the decision of the court, offered by Stephen Elliot, and adopted by the meeting, we copy.

"Resoled, That Isaac E. Holmes and Alexander Mazyck, esquires, are entitled to the thanks of their fellow citizens, for their disinterested and patriotic efforts to bring before a jury in the federal district court, the constitutionality of the tartff act of 1828, an act passed avowedly for the protection of domestic manufactures.

"Resolved, That the refusal of the district judge to admit, under the plea of "non est factum," any evidence except such as related to the mere execution of the bond of Messrs. Holmes and Mazyck, and his judicial opinion that the unconstitutional character of the tariff act of 1828 can in no way be carried before a jury in the federal court, are deeply to be deplored, since they have deprived his fellow citizens of the long desired opportunity of submitting to a jury of their country the absorbing question of the constitutionality of that oppressive set, under which they have long and so dreadfully suffered.

"Resolved. That from the whole course of the proeccdings in the case of Messrs. Holmes and Mazyck, the state rights and free trade party of Charleston, are constrained to announce to the state rights and free trade party throughout the state, that all hope of redress from the federal court is destroyed—the known opinion of its judges as to the constitution-ality of the tariff, and the fraudulent title of the set itself rendering any reference of the question to their decision but an idle mockery."

Mr. McDuffie, in compliance with the desire of the meeting expressed in a resolution, made his sppearance, accompanied by the committee sent to letter of the constitution does make the laws of con-gress supreme, enjoining obtained upon the state addressed the meeting with great eloquetes and functionaries, and making void the laws of a state, if effect, according to the Charleston paper, on the subjects of the tariff, nullification, the custom house presumption, or afford grounds of reasonable inference, bonds, and other subjects of complaint, and the proper mode of obtaining redress.

UNITED STATES DISTRICT COURT, N. Y. From the N. Y. Commercial Advertiser.
The United States of America

718 One package of broadcloth-

The judge stated to the jury, that the information they were to 1ry, was founded upon the 4th section of the act of May 28, 1830.

The object of this set was more effectually to enforce the law of May 19th, 1828, increasing the duties on cloths, &c. and commonly known as the tariff law: and the precise point in question was whether the present importation had been made in violation of those acts.

This case being the first that has been brought to open trial under these laws, it was proper a deliberate cousi-

deration should be bestowed upon it.

The facts laid before the jury by the public prosecutor are, that this package contained thirty-four pieces of cloth. The invoice looted up the whole amount of yards at 7403 and represented the cost at 7s. per yard, less 5 per cent, discounted for ready cash. This would leave the price at 6s. 7.d. or 6s. 8d. per yard.

The collector supposing the charges too low, ordered

the package to be inspected and appraised.

The appraisers reported the piece lowest in value, to be worth 6s. 9d. and the one highest in value to be worth 8s. 6d. per yard. The other pieces varying from 7s. to

8s. per yard.

At the prices stated upon the invoice, the goods would have falten within the dollar minimum of duties, and at the appraisement the greater proportion would exceed that minimum. The fluties to be juid according to the appraisement exceed those chargeable upon the invoice, above \$650. The difference between the lowest and highest appraisement is 43 cents per yard; between the highest and the invoice price 33 cents per yard, which is 23 per cent, and the difference between the whole a nount of the myoice and the whole amount of the appraisement is 15 per cent.

Upon these tacts the collector seized the goods as for-

feited under the set of 1850.

The provisions of the 4th section of the act are, that the collector shall order certain portions of every importation to be inspected, &c. &c. "And if the same e found not to correspond with the invoice or to be talsely charged in such invoice, the collector shall order torthwith, all the goods contained in the same entry to be inspected; and if such goods be subject to ad valorem duty, the same shall be appraised, and if any package shall be found to contain any article not described in the invoice, or if such package or invoice be made up with intent, by a false valuation or extension or otherwise, to evade or defraud the revenue, the same shall be fortested &c. &c.

Upon these facts it is submitted to the jury to determine, whether this package or invoice was made up with intent to evade or defraud the revenue.

It is enough to justify the seizure if there were reason able grounds of suspicion that an evasion of, or traud upor, the revenue was intended. Government is not required to produce that full proof which will place the guilt of the party beyond all reasonable doubt. same rule of evidence does not apply in prosecutions for an infraction of the revenue laws that obtains in criminal

In prosecutions of this character the United States need only make out a prima facie wase or probable cause for condemnation. It is then cast upon the claimant to establish the integrity of the transaction, and if he fails to explain away the difficulties of the case, a confirmahis part.

This rule of evidence is established by express acts of congress, and enforced by decisions of the supreme court.

a fraudulent intent.

that such intent existed, the point will be deemed sufficiently established, until the evidence on the part of the claimant clearly counteracts the effect of that proof. The law imposes on a claimant the necessity of proving the innocency of the suspected transaction, because he is presumed to have papers, or other evidence in his possession or under his control, which would explain its true character, whilst the United States have no means of ascertaining where such proofs may be found, or to enforce their production.

Without the aid of a rule of evidence which exacts from those coming forward to reclaim goods, seized for being brought into the country under circumstances of suspicion, proof that no violation of law was intended, no system of imposts could be enforced. If every deviation from the law by importers, was to be presumed unintentional and innocent, until the contrary was proved beyond all reasonable doubt, it is manifest that the rovernment could rurely, if ever, convict any one of a vio-lation of the laws, and both the fair importer and the home interests intended to be protected, would be sub-jected to unceasing wrongs and losses. Nothing but downright smuggling, or cases of the most gross charac-ter could be punished or restrained.

Neither need the prosecution prove that the elaimant himself participated in the offence, or had any knowledge that it was contemplated. It is enough to show the set done by any one having the legal possession or control of the goods.

The penalty is attached to the false preparation of the ckage or invoice without regard to the party by whose

illegal intent it may be made up.

The offence pointed out by the statute and the on which the information charges to have been committed in respect to this package, is the making up the puckage or invoice with intent to evade or defraud the revenue. The punishment is, forfeiture of the goods. The poley and object of the law is to prevent this specific mode of attempting a fraud and when the attempt is detected the forfeiture cannot be avoided by shewing that the real owner was innocent or ignorant of the improper design, unless it also appears that the attempt was made mere strangers over whom the owner had no control.

The ignorance of the owner might be a strong circumstance in an application to the proper authority for the remission of the forfeiture, but cannot avail to exonerate

the property from the operation of the law.

Had the master of the vessel attempted to smuggle to this package without the knowledge of the owner, the property would have been forfeited, notwithstunding the owner was personally in no tault: and so also will be have to bear the consequences of the illegal conduct of his agent or vender, although he may be free from all blame in respect to it.

Should the testimony on the part of the prosecution have lailed to make out reasonable grounds of suspicion or doubt as to the integrity of this transaction, then the jury will acquit the property without going into an examination of the case made by the claimant; but if they believe probable cause has been shewn for this seizure, it then becomes necessary to consider the matters of de-

fence brought forward by the claimant.

The forleture is understood to be resisted, -1. Because the law attempted to be entorced, is unconstitutional. 2. Because the appraisers did not conform to the provisions of the act, having made the appraisement according to the value of the goods at Marsden, the place of purchase, and not at Liverpool, the place of shipments and if these points of law are not decided in his favor then he maists upon the various matters of fact in proof, on his part, as countervailing the evidence given by the prosecution.

Any party whose interests are affected by a statute has the right, in a proper mode, to call the constitution-

ality of the law in question.

This right may be exercised by aliens equally with citizens, and it is the fluty of a court, when the objection is brought before it, to consider and dispose of it.

Although the counsel for the claimant took the objection formally, yet he declined arguing it, turther than by It is not necessary that there should be direct proof of fraudulent intent. When the lacts in evidence raise a this law, known to prevail in another section of the coun-

The court therefore, is compelled to decide the point upon general impressions, without the aid, it would have reason to expect in so grave a matter, from a well matured discussion on the part of counsel.

In the estimation of the court, there is very little in the circumstance that excitements exist with respect to this law, and that it is denounced as unconstitutional by individuals and public bodies, conducing to demonstrate it to be unconstitutional. Movements of that character, should, indeed, have no influence over the judgments of a court and jury.

It is to be apprehended that the propensity, greatly on the increase, to stigmatize every unpopular or impolitie act of government as a violation of the constitution, may tend to produce an indifference or heedlessness in pubtic sentiment in respect to that objection, even when there is the most urgent occasion for resort to it.

At all events, if the courts should shrink from enforcing a law because respectable individuals, intelligent ma-gistrates and state legislatures have pronounced it unconstitutional, how many cardinal powers of government would have been paralyzed? How many vital acts of legislation would have remained dead letters upon the statute book in the short period of our political history?
Among others which might be named, the acts establishing a bank-excise and internal duty actstercourse and embargo acts, and even acts calling the would have stood in this predicament, none of which are now doubted to be within the authority of congress

to pass.

Before, then, the court and jury can disregard a solemn act of legislation, they must be furnished with higher reasons for so doing, than declarations and resolutions against their constitutionality, emanating even from the most worthy and intelligent of our citizens or states.

In stating its conclusion upon this subject, the court will not attempt any answer to the arguments usually advanced against this particular laws if they are not all resolvable into arraignments of its expediency only, they are too theoretical and speculative to be useful guides in solving the proposition now submitted. A few words will explain the view the court takes of the subject.

The set lays an impost duty on woollen cloths brought into this country from any foreign one.

The constitution in terms authorises congress to lay and collect imposts, with but one qualification, that they shall be uniform. No one will question that congress may, by virtue of this clause, impose duties to some extent on imports of every description; nor but that those imposts, when collected, become a portion of public money, to be expended in any way congress is empowered to disburse the national funds.

Certainly it is not the prerogative of the judiciary to deny congress the use of a power explicitly given by the constitution, because it may be improvidently exercised; nor to declare a law void, passed under a clear power, because the object of the power may not be observed or justly effectuated; nor can it appertain to the judiciary to stay the operation of a law passed under such power, although proved to have an unequal or injurious bearing upon the community, or because it might be founded in otives of advantage to one interest or class of entirens, and prejudice to another: or because there is no notorions and urgent occasion for the revenue it proposes to raise.

Upon what principle of constitutional interpretation can the judiciary execute a law levying one rate of duty and pronounce it void, when it imposes a higher? How is 45 per cent, duty on cloths, less an impost than 5 per

What sound and plain rule of exposition will enable ties that are legitimate and those that are illegal—the power to impose some degree of duty being incontestible? It would seem excendingly moved to the contestible of the contestion of the con the court to mark the line of discrimination between du-It would seem exceedingly manifest, both from the nature of this power and the manner in which it is conferred, that the occasions on which it should be exeressed, equally with the degree or extent of its exercise, were left to the discretion of the legislature.

than the responsibility of all public functionaries to their constituents.

Public opinion, enforcing itself by means of changes of the legislative bodies, supplies the only legitimate check to, and remedy lor, improvident and impolitic legislation of this character.

of this engracter.

If the people think the tariff system oppressive or impolitie, it will be easily rectified in that manner.

The court is accordingly prepared to decide, without bringing into view another power granted to congress, more comprehensive than this, and bearing upon the subject-the power to regulate commerce, &c. ) that this act is within the constitutional authority of congress, and that it must be executed conformably to its terms.

2d. The second point of law will be disposed of in a few words.

It supposes the place of exportation must be the one which governs the appraisers in fixing the value of goods, which governs the appraisars in mang the value of goods, and that the place of exportation necessarily is limited to the port of shipment. By reference to the sets of congress on this subject, it will, however, be found that the place of exportation is sometimes intended to embrace the country from which the export is made, as in the ease of goods carried from the country in which they are produced to another for slupment; and there is certainly nuthing in this section of the set of 1830, which restricts the appraisers to the port of shipment as the market which is to govern their appraisement.

So also the act of 1823 has direct reference to the

place where the goods were purchased or procured, as that which shall supply the eriterion of value: and the 4th section of the act of 1830 is to be construed in connexion with the act of 1823, with which the subject mat-

ter stands immediately connected.

Nor is it believed that in the ordinary acceptation of the term is mercantile language, the place of exporta-tion means merely that of shipment. A cargo purchased and packed at Sheffield or Manchester, though ship-ped at Bristol, would with strict propriety of expres-sion, be said to be exported from the place of purchase.

If the goods are picked up in general market in London or Liverpool, and there shipped, the port would in the full sense be the place of exportation; nor does the court mean to decide that if no general market value of the commodities in question can be ascertained at the place of manufacture or purchase, the appraisers may not adopt that of the port of shipment as the one upon

which to found their appraisement.

This objection is accordingly overruled. Upon the facts in proof on his part, it is insisted for the elaimant (1.) that he is innocent of all fraud or improper design in this importation. (2.) That the appraisement is not entitled to credit as fixing the value of the goods: much less does it afford any reasonable ground to infer a fraudulent intention in the exportation. (3.) That the ven-der or agent abroad could have no possible interest in defrauding or evading the revenue, and that therefore the circumstance of excess in value would not justify

imputing such intent to him.

The observations of the court before submitted have indicated the rule of evidence with respect to the first proposition:—that it is unimportant as to the result of this prosecution, whether the elaimant be personally in-

nocent or guilty of the supposed fraud.

If a fraud was intended, and he participated in it, less regret would undoubtedly be felt at confiscating his pro-perty—yet the law equally subjects the goods to forfei-ture, whether the illegal act was done by the owner or any other person having the possession and control of them under his authority. The penalty being affixed to the goods, it is not discharged by shewing that one will have to bear the consequences who was not concerned in the perpetration of the offence.

2. To satisfy the jury that no confidence can be place-

Y. 10 satisfy the jury that no confidence can be plased in this appraisement, evidence has been gone into to show that persons of equal skill in valuing ciotia, and of equal opportunities for knowing their worth in market, will differ in their estimates nearly as much as this appraisement differs from the invoice. If this is so at home, where the variations of the market can be readily In such case there is no check provided upon the lm-provident use of the power, and none could be brought uncertainty in fixing a value here, that shall correspond m-compatibly with the spirit of our institutions, other with the true one abroad. This testimony, however,

must be compared with the evidence on the other side, very much orcumseribing the degree of difference these circumstances would create. There is also evidence that manufacturers are in the habit of charging packages of goods which sost slike to them at a common price to the purchaser, although it is impossible but that there should be very considerable differences in the value of the respective pieces. The expense of materials and labor for the production of a lot of goods may be the same upon the yard, with respect to each piece, whilst superior workmanship, or circumstances merely accidental may create a difference of several per cent. on the yard, in the market value of the cloths.

There may be a difference likewise, arising from the fancy or caprice of buyers, which will enhance one piece

many per cent, above others of the same quality.

These are particulars, very difficult if not impossible to estimate with any correctness in an appraisement of clotha, and it is therefore urged, that such valuation ought always to be received with great caution, particularly as it is to furnish the material fact upon which a torfeiture is demanded.

And, moreover, it may occur to the jury, that the ap-praisement could be resorted to, as an invariable criterion of the worth of goods, yet that the necessities of the vender, the superior address of the buyer, and the chance fluctuations in market, each contribute to create wide differences between the cost of a lot of goods and the current value, so that it may be a common occur-rence for purchasers to obtain goods bana fide, for less

than they would be valued at on appraisement.

It is besides contended, that the difference has been greatly exaggerated, as in truth the average is only 62-3 per cent above the invoice, instead of 15 per cent. as

stated by the witnesses for the prosecution.

The latter estimate, however, takes the dollar minimum for the base, and not the netual value of the cloth. So that the 6 2-3 per cent. average is so much above 1 dol. per square yard. The testimony does not state what that per cent, would be upon the running yards, nor per square yard. does it undertake to point out any error in the valua-

There would be great force in the facts and arguments produced by the claimant, it it would be enough for him to make out that the case on the part of the prosecution was doubtful. But this is not so. The law required of him account of the appraisement by higher proofs. The appraisement fixed the value of the goods as to him until that was done. For that purpose it afforded him the privilege of a re-appraisement, and by merclants, one of whom he might select himself; or he might have done what would have been more direct and satisfactory, proved the actual cost of the goods.

Having failed to use the means in his power, and to produce that evidence which would leave no doubt of the fairness of this transaction, every presumption in-stead of operating in his favor, must be turned most strongly against him. The goods must be taken to be worth and to have cost the sum at which they are valu-

ed by the appraisers.

By this rule of evidence, the merchant will not be deprived of any advantage he might derive from his capital or superior skill in buisness, in making his purchases, or even his appealations. He need only pay duties upon the actual cost of his goods, if he will prove what the cost was. His mroice will not be accepted as such proof, when it is palpably below the price at which the commodities are usually obtained in market. Although the law may thus occasionally throw delays and impediments in the way of the business of the correct and upright dealer, yet probably there is no other methed by which the public can be secured against other con-trivances and fraudulent practices of those who mean to evade the payment of the duties they know their goods are subject to.

3. The third point is, that the vender had no interest in the goods, and no motive for committing the fraud.

The only observation occurring to the court as necessary to be made upon this branch of the defence is, that to exouerate the goods upon this ground, the avidence must be astisfactory—that the vender or agent abroad had no possible interest in giving a false valuation to them.

It is by no means enough to shew that the prosecution has not proved him to have an interest. If the case raises just doubles or supicions with respect to his interest and intent, the law calls for evidence at his hands, disproving

that he could derive any benefit from the matter.

There is no proof shewing the relationship in which these parties stand to each other; nor but that there may be a full community of interest either in the goods or the profits to be derived from them.

The whole subject in respect to the facts and inferences is referred to the judgment of the jury. It belongs to them to examine all the evidence; to consider every fair and legimate conclusion derivable from the state of the proofs; to give its just weight to the circumstances connected with the transaction; and from the whole, to decide whether or no this package or invoice, was made up with intent to evade or defraud the revenue.

In the one case the verdict will be for the claimant; in the other for the United States, and a condemnation

of the goods must be the consequence.

The jury found a verdiet for the United States, and judgment of forfeiture was pronounced against the goods.

REVENUE LAW CASE.

[Reported for the N. Y. Evening Journal.]

District court of the United States for the southern district of New York .- September term, 1851.

United States This action came on for trial before 70. Isaac K. Smith. This action came on for trial before judge Betts, 14th of September.

This was an action of debt, founded on part of section fity-lour, of the act of congress, second of March, '99, whereby "the master, or other person having the charge, ar cammand of any vessel, shall, during the night time, open, break or remove, any lock, or other fastening, si-faced by an inspector of the customs to any part of the vessel, having communication with the hold, shall forfeit, and pay five hundred dollars." It was in evidence, that the defendant arrived in this port, as master of a small the detendant arrived in this port, as insister of a summy vessel, from the Balamas, laden with pine apples, and hauled in at Burling slip—as impostor of the customs was put on board, who one afternoon, told captain Smith he should put a fustening on the cabin door. monstrated, said he had no right so to do, and said if he monstrated, said he had no right so to do, and said if he had no other place to sleep, he should enter the esbin. The inspector put on what he called a fastening, which was a small piece of red tape—during the night he fastening was broken. A saidor before the mast, awore he broke it sectiontally—Mr. Lewis, the owner, or part owner of the venel, awore that the same of termoon Nomich gave up the command of the vessel, and he cansented to it. The inspector said the next day after, Smith was on

board and appeared to act as master; and it was con-ceded, that Smith did a few days after, sail as master of said vessel, up the North river. There was introduced said vessel, up the North river. There was mirroduced considerable contradictory testimony, as to the fast, whether there was any communication with the eabin and hold. And the district attorney swore, that two or three days after, he had received instructions to proceduce Smith. Smith called at his office, but did not deep or confess that he had broken the fastenings, but denied the state of the confess of the confess of the confess that he had broken the fastenings, but denied the confess of the confess that he had broken the fastenings, but denied the confess of the

that any thing was done contrary to law.

The judge charged the jury—if they believed that there was a communication with the cabin and hold, and there was a communication with the cabin and hold, and that Smith was master of the vessel at the time the las-tening was broken, notwithstanding the satter might have braken it, on he sates, yet they must find for the United States, and that bastening made in the manner as satted by the inspector, was a sufficient fastening in law. Verdust for defendant.

J. Hamilton, for United States-W. Q. Morton, for defendant.

#### CHEROKEE GOLD MINES. From the Georgia Journal.

IF We deeply regret the collision that has occurred between the executive and judicial departments of the government. The superior court of the western circuit, in the discharge of what is believed to be its whealt, in the unconsige of what is believed to be its duty, has made a decision in relation to the Indian right to dig for gold, affirming that right, as we understand. We have not seen the report of the decision, but the

ly, set forth in the following article from the Athenians "As a considerable interest has been excited by the case of Canatoo, a Cherokee Indian, confined in Walton jail under the charge of digging gold in his own nation, which by the last legislature was made a penitentary of-tence, we by before our readers the following information ilerived from a source which may be relied on.

The Indian was taken by the state guard, and carried to Gwinnett, the county having jurisdiction of the case, and upon examination he was committed to Walton jail, there being no jail in Gwinnett. During the session of the superior court of Walton county, he was brought up by habeas corpus, and his discharge was moved for unon three grounds. 1st. That the warrant and commitment were delective. 2nd. That the act of the last legislature itself, did not contemplate punishing the Indians for digging gold on their own lands, but was intended for intruders and other persons; and, 3rd, that it it did, it was unconstitutional on the ground that it violated numerous treaties made with them, expressly guarantying the undisturbed possession and occupancy of all their lands not ceded to the whites. After much argument, the court [judge CLAYTON], said it was a very important question, and required the utmost deliberation. Respect for the legislature demantled it. As, however, it did not believe the person could be discharged upon the two first grounds, it would in candor say, his best prospect was on the last; and, as the court would take time to consider so grave a question, it would release him from his confinement upon his own recogn zance, to appear and answer to the charge at Gwinnett superior ourt, when and where its opinion would be delivered. if in the mean time its mind could be fully satisfied on The court stated that it would emleavor to have its opinion ready by Jackson court, which is just past; but such has been the nature of its other pressing engagements, as well as the great magnitude of the question, that it has not been done, and will not be done, until every source of information, both legal and political, is consulted, which can possibly shell light upon a subject involving so seriously, the liberty of an unfortunate people, as well as the character of the state.

tunate people, as well as the onaracter of the state. Since the question of the Indians digging gold has been agitated, many persons have expressed an opinion that it they are allowed to do it, they can employ any person they please to do the same thing. Such an opinion is very erroneous; for we have it from judge Clayton himself, that, even if he were to decide that the ludians had the right, the law would be binding against every other person, and the doctrine that, "what a man does by another, he does by himself," will not apply to eriminal cases. It is only applicable to civil contracts, and every man stands upon his own responsibility, in committing acts that are made criminal by law."
So far the court goes.

Now the governor, differing from the court, we understand, believes the act prohibiting the Indians and all others from digging for gold, to be constitutional, and will therefore, in the discharge of what he believes to

be his duty, carry it strictly into execution

Executive department, Milledgeville, Sept. 20, 1831. Sin-I have just learned that the judge of the western circuit has decided that the law for the protection of the mines in the territory occupied by the Cherokees is void, and has discharged an Indian from confinement who had been arrested by the guard for its violation. As the effect of this decision will be to create the opinion among the ladisns, that they are now licensed to plunder the state of this valuable property, I have thought it proper to give you express instructions to defend it, that you

may be justified in pursuing that course.

I have no doubt but that the legislature has the authority to take possession of the mines, and the constitutional right to pass laws to protect them from trespass. By the law which has been passed, the governor is directed to take possession of the mines, and to cause all persons to be arrested who may attempt to violate that possession. The special object of your appointment, and the organization of the guard under your command, was to enable the governor to obey these requirements. You are not an officer connected with the judiciary department, but the agent whom the legislature has authorised

grounds of it, we presume, are correctly, though brief- the executive to employ, to perform a public service which was imposed by law upon that department,

Sec. U.

You will therefore arrest every person who may be found attempting to take away any gold from the mines. You will give general information in the Cherokee country of the determination of the executive department to enforce the laws so as to prevent if possible the necessity of making any arrests.

The peaceful acquisition of our Indian territory, and

the preservation of the rights of the state may depend essentially upon your prulence and firmness in executing the duty which has been assigned you. Very r spectfully, your's, &c. GEORGE R. GILMER. spectfully, your's, &c. GE

AMERICAN SLAVES IN THE BAHAMAS.

The following case has caused no small degree of excitement. The vessel referred to (on her passage from one of the Atlantic ports of the United States to New Orleans) was wrecked on Abaco-and it appears that the British governor designs to condemn her cargo of slaves, as being illegally introduced.

From the Buhama Argue.

We uniferstand that col. Morse, of New Orleans, arrived in this town a few days since, and that he is the agent for the owners of the one hundred and sixty-five American slaves, brought into this port from the wreek of the brig Comet, on Abaco. We are also informed that a correspondence has been commenced between this gentleman and his excellency the governor—the result of which has not as yet, transpired; but, were we disposed to hazard a conjecture, knowing, as we but too well know, the extent of influence exercised by the smintly hypocrites of England over her ill-lated colonics, we should not hesitate in saying, that his excellency will at il persist in the illegal and unjust detention of the slaves in question from their rightful owners.

Hence, it seems a national question, to be settled be-tween the United States and England-non nostrum tantus componere lites. Without aspiring to be much learnon the profession, we are inclined to believe it will puzzle all the lawyers in England, and ford Goderich at their head, to find any law or statute of Great Britain, or any of their colonies, that will warrant either the condemnation, emancipation, or further detention, of these slaves, under the circumstance of necessity and distress

in which they were brought into this port.

An American vessel, sugged in a legal trade, sailing from one port of the United States to another, is wreeked, the slaves taken off a reef of rocks and brought into ed, the slaves taken off a rect of rocks and brought ratio this port by British resels, for the purpose of saving their lives, and procuring the means of transporting them to their port of destination, they are her seized by the crown officers, libelled, and tred under the abolition is well and the source of the source of the source of the source of the whole provincial assembly of the taland, and the whole provincial assembly of the taland, and continuing the secretary of the source of soliciting his excellency to restore them to their own

Why are they not restored? we again ask. Shew us the law of king, lords, and commons, under which they are detained. We do not want the private instructions of lord viscount Goderich, or the opinions of the abolition society; these may serve to oppress, and in the end, ruin our own colonies, but we cannot recognize in them any legal authority to deprive subjects of another nation at peace with England, of their lawful property.
We are not disposed to attribute to his excellency any

nersonal motive or interest in the extraordinary course he has pursued, in relation to these slaves—although we are not ignorant of the fact, that some of them are now in his employment, and one in the capacity of head cook at the government house, and that the names of these, and the rest, appear in a certain memorial to the govern-ment, humbly soliciting the continuance of his excellen-cy, as governor of the Bahama islands. If it be really true, that it has come to this, we would recommend to his excellency a much more expeditious mode of raising auch recruits for such a service. Let him, like his namesake, gen. Smyth, during the last American war,

'Come yellow, come blacky, come rugged and here, Come filtby, come lousy, come just as you are,"

# NILES' WEEKLY REGISTER.

FOURTH SERIES. No. 7-Vot. V.

BALTIMORE, OCT. 15, 1831.

[Vol. XLL WHOLE No. 1.047

THE PAST-THE PRESENT-FOR THE PUTURE.

### EDITED, PRINTED AND PUBLISHED BY H. NILES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN ADVANCE.

We had laid saide prepared copy enough for the resent number to fill two sheets—but only publish one, closely filled, however.

In further demonstration of the entire filelity that we intend to observe in all such things, we copy from the "Globe" a new arraignment of the vice president for an alleged plot against the president of the United States—though apprehending that it may lurnish a very unpleasant supply of new matter, concerning subjects which have so much burthened our pages, and with which, we think, that the public is entirely wearied. We also insert a statement from the "Raleigh Register," published at the request of Mr. Branch, which will exoite considerable interest in those who have read Mr. Eaton's "reply." It corrects an important mistake. We are prepared to receive yet new matters for controversy, and expect two of a very explosive character-but not immediately, we hope-out of regard to our oppressed pages!

The general convention of the friends of domestic industry, to be held at New York on the 26th inst. romises to be very numerous and respectable. Maryland will be fully represented.

The New York Whig of the 4th instant publishthe 'Address of the National Anti-masonic convention," lately held at Baltimore. It makes nearly nine columns of that paper. We shall make room for it speculdy.

The editor of a small weekly journal, published in the western country, has commenced the "Callioun correspondence," and promises to give all the papers that shall appertain to it. The editor of another paper calculates that this will be a five year's job--supposing that the correspondence should end with major Eaton's reply. But from what we see and hear, there is no present hope of a termination to st. Many quires of inked-paper are yet to rush into controversy! We shall en-deavor to "go the whole,"

The "free trade convention," which met at Philadelphia on the 30th Sept. adjourned on Friday evening last, the 7th Oct. sine die—leaving much of its business in charge of a residuary committee. We have brought up the journal of proceedings and inscreed the "address to the people of the United States," reported by Mr. Berrien and adopted without amendment, 158 to 29. The address is an ingenious paper, well calculated for effect—but not powerful, we think, because of its arguments or facts. Its distinguishing characteristic is—the against the new societies of the south.

It seems, that a ship of the line may be sent to the furthermost verge of the ocean to protect the eargo of an American shallop venturing so far, and that the army of the United States may be collected and stationed at certain points to pratect property in slaves and keep it in order, both which we think 'necessary and propers'but still, no law can be passed, or regulation made, which has for its purpose the protection of the farmers and other free laboring persons in the United States, unless other tree laboring persons in the United Gours, unions also engaged in foreign commerce, or in some way interested or connected with the condition and proceedings of the state population. Why may not awayston and commerce, and property in slaves, as well be left to "regulate themselves," as the growth of wheat and manufacture of blankers?

Vol. XLI.-No. 10.

The year and mays on the unconstitutionality of the tariff laws are not given -- but Virginia, the Carolinas and Alabama had 118 votes in the convention -- and, at and Alabama had 118 votes in the convention—and, at the lead of them stood a judge of the United States, volustrering an opinion that the natural legislature had violated the constitution? In ordinary times, this proceeding would not escape severe reprehension. We are glad, however, that the question is brought to a tangible point—which indeed, is the only one worth spe-cial action. It has address for it is composed to the cial notice in the address, for it is common enough in its remarks on "things in general"—and we shall now unremarks on "things in general"—and we shall now un-derstand that the 30 per cent, duly extended to the makers and manufacturers of leather, furs and skins, wood, va-rious metals and earths, and to mechanics in general, as well as the duties upon wool and woollens, &c. are all unconstitutional and must be abolished, or else-a small mmority of the people will put the large majority 'to rights:" and this is the only "free trade" which has yet been expounded for the public use, by this "free trade convention!" We shall see the end on t. The majoriconvention!" We shall see the end on. The majori-ty will not submit a revision of the tariff to those who stand pledged to destroy it. If amended, it must be so only by the hands of trends. Much may be yielded in a spirit of harmony, but nothing to force; and hence we think that the convention has done much to prevent what it astematicly met to accomplish—and to strengthen those whom it was designed to weaken; and give to the friends of projection a most powerful weapon, seeing that the original construction of the constitution is dethat the original construction of the constitution is de-idedly with them, and has never yet been set and, but anctioned, by repeated sets and declaions of the le-g-lature, judical and executive subnorities of the country, for a period of more than forty years; and surely some-thing much atronger than the simple opinion of a meet-eling much atronger than the simple opinion of a meetting from stronger than the simple opinion of a meet-ing of persons, constituted as the "free trade conven-tion" was, may be required to do away principles so long established and unhesitatingly acted upon. We shall hereafter give a list of the names of the delegates, and, as far as practicable, affix the places of their resi-dence, that the lorce of this movement may be the better understood.

Mr. Sarchet, we see, made a communication to the convention concerning room. It would have looked quite as well if that body had preferred the testimony of an American citizen. We expect, however, to publish his communication with the proceedings of the residuary committee.

Much remark is invited on several matters pertaining to this address—but we have not room to indulge it.
The editors of the "National Intelligencer," as if in maticiousness, have just published an entire copy of the first petition to congress to protect manufactures, adopted at Baltimore and presented 'lith April, 1789; among the signers of which was Sunnel Smith, at present one of the senators from Maryland. It 'gaes the whole.'

"In New York, it seems, they have the names of the delegates from that city who voted on this question--as fol-

For striking out the argumentative part of the address relative to the unconstitutionality of the tariff.

Aues - Messrs, Goodhue, Gallarin, Merecin, Stevens,

Carow, Boorman, Griswold, Swan, Ring, Trimble, Lorillard, King, Russell, Bronson, Heard, Sillwell—16 Noce—Mesara, Fish, Leonard, Bergh, Kuceland—4. On the final passage of the address

Ayes - Messrs. Lorillard, Leonard, Fish, Bergh, Bron-

organ - Messra, Lorimett, Leonard, Fish, Bergh, Bronson, Goodine, Hearl, Kneeland—S.
Nose—Messra, Mercein, Stevens, Carow, Boorman, Griswold, Swan, Rug, Trimble, Gallatin, King, Russell, Still well—12.

It is thought that the minority violated the instruction of the meeting, at which they were appointed—which confined their doings to a "modification" of the tariff.

THE CONSTITUTION. The "Pennsy vania Whig" respecially of the white laboring classes—those who says that a protecting fariff has been pronounced constitutional by George Washington, John Adons, Thomas its," These cannot be spared—the prejudees against Jefferson, James Madison, James Monroe, John Quincy such labor has much thinned their ranks severe military. Adams and Andrew Jackson, (being the whole time of presidents of the United States), by Henjamin Frank-lin and Alexander Havitton; by the two distinguished an son Meximum manatum by the two managements of the function state of the Carted States, J ha Jay and John Marshall; by Henry Clay, John C. Cathonn, Daniel Webster, William Wirt, Henry Baldwin, Richard Rush and Albert Gullaim. But what a list of names might he ailded, if disposed to array them! - such as De Witt Clinton, Simon Snyder and Oliver Wolcott, first rate practical statemen, and Hilliam Lownder, one of the ablest and best of men. Indeed, we might introduce the name of every distinguished person who had a part in framing or adopting the constitution, or was a member of congress at any time between 1789 and 1822, when the no ion of unconstitutionality was, we be heve first sharted. Nay, we suspect that the cautious Martin Van Buren stands fully "committed" on this subject, and even the ultras-the late William B. Giles, and present erratic minister for St. Petersburg, John Bandolph, are not free from an admission of the prin-Indeed, we suppose that no leading statesman or spie. Indiced, we suppose can no reasons reasons re-prominent politican, unless be has jumped into impor-tance in the last ten years, stands "uncammitted," no matter in what part of the United States he may be found, against this "free traile convention," O, that we had a file of the "Richmond Enquirer" from 1806 we had a me of the "accimonal Enquirer" from 1800 to 1814, and since! But, perhaps, a file may be necessible in Richmond—and it so, we shall much thank our friend the editor of the "Whye," it he will hok to an account of a celebration of the 4th of July in that city, in 1807, 8 or 9, most probably, at which a cert in govern-or of Virginia, (if we are not much mistaken), exposed himself without a coat, that the people might see and rejoice in the beautiful SHRT that he were of American manufacture! Let us have the whole-with all the patriotic remarks of Mr. Ruchie on that "momentous

THE SLAVE QUESTION. It cannot be disguised that the great question enterrang persons of color, in all the sates south of the Susquebann-h, is rapidly forcing it-eff upon the public consubration. The late awful self upon the public consulvation. The late awful tragedy enacted in Virgons, 1 and the election of an extensive and organized plan to being about desolation and massacre in North Carolina—which, it may be awfully believed, was not altogether confined to slaves in that state-has infected the membrol tens of thousands of persons with a quivering sensibility on the subject, and destroyed the peace of those who lived in seeming security on the brank of a dark and reckless toleann, ready to burst upon and overspread them with a lava of In this exclogaishment of the fancied subty of the white population, what must follow? The already small comparative numbers of such in the "tide-water small comparative numbers to such in the concernation of will be quickly reduced, in the prompt removal of most individuals not interested in slave-property, and

\*A "republican" address was issued at Richmond in 1808, signed by William H. Cabell, William Wirt, William Fouchee, sen. Peyton Randolph and Thomas Hitchie, earneally calling the attention of the people to domestic manufactures. We make one extract by way of a specimen:

Perhaps it is no wild supposition to conceive, that even if the present attacks on our trade should blow over, congress may adopt the policy of encouraging our own manufactures, by rather higher duties on the more ported articles of Europe. To keep nirs less from being altogether it, pendent on Europe for clothing, congress MAY adopt this course, if they should discover from the experience of the intermediate time that we have really the inclination and the Popul to clothe BRAVISSIMO-HURRAH

Here is no doubt expressed of the want of constitu tional power!—on the contrary, it is directly assumed!

†What may not be expected if another like occurrence shall take place! It is fearful to think of the beginning or ending of it.

duty will be ailded, and a general departure will ensue, when to these strong inducements is supersided the overwhelming consideration of personal safety. The various censusces teach animportant lesson in this respect, and, with regard to the districts of country referred to and the next numbering of the people resident in them. will unfold new and awful causes for starm, unless, and will note that the same of the cold in grasped—and, in some with a strong hand, the cold is grasped—and, in some way, relieved. Free labor and slave habor cannot abule together. In preferring the latter, as a governor of South Caralina has publicly done, the former seeks a new location in which it is protected or nononen; and hence the one becomes stronger and stronger as the other becomes weaker and weaker-and danger mereasing as the means of resisting it are diminished. Such is THE THUTH - and it will reach the heart and home of exry one interested, through solicy reflection, or in trighttal necessity. Thousands of our fellow estizens are now armed—barrassed with watchings and excited by every alle rumor that fear puts forth-and thousands of mothers, while trenshing for their own safety, press their infants more closely to their bosoms, feeling that what happened in Southampton may happen to them-The character of that transaction, (more than its extent, though the slaughter was horrible), will remain impressed on the heart long after time shall bececicatrized the woulds inflicted by the massiere of un-offending women and children; and have a powerful tendency to turnish additional unuses for treal aircentiesfor that those proceedings of the slaves in Verginia and North Carolina, will bring about a more sewer treat-ment in the people of color, must need be expected; they will be denied many inthe privileges and perquisites which they enjoyed, and the el ments of nomrection be increased by unaccustomed restraint, and a knowledge of the fact that their power is leared-which, of all things, should be conscaled from them. Such is the natural progress of events. It is with inleigned regret that we not ce them-but, as before observed, the great question is forcing riself on the public consultration, and effects will follow-no matter how revolting it is to contemplate them. Let then the sounds at heads and best hearts of the nation, be engaged to build up some practicable project which shall, at once, afford the hope of security to white persons and extend the prospect of an ameliorated condition to the slaves-and give the latter new motives to sto well, in lieu of that which, it is to be apprehended, they will be pretty gonerally deprived ofthe opportunity of religious matrix tion; which, though et may have affireded fitting acasens for bad men to the mostlest, has, probably, had a powerful effect to setten asperities of temper, and better reconcile thousands to present suffering in the hope of a hoppy foruce. This present sunering in the nape of a nappy source. Loss is no time for the pressure of specularite aparticular, with threats of "multheation" supported "in a ms!"—for there is a really existing evil which requires the mated energy of all, to extinguish or keep flown-and to which we are assured that those not mimeriately inter-sted will contribute their full proportion of means-sorrowing for the occasion, but gladly excending even to "bulcators" the best evidence of a kind and generous national feeling, and a sacred regard for the welfare of the whole American people-which we desire may always be the "American system."

While reflecting on these matters, we received a letter from a distinguished gentleman of North Carolina (of a late date), from which we take leave to give an extract, as fullower

"I regret exceedingly that people of the south—ma-ny of our most intelligent men, should be so far carried away with mere sound and declamation against the protective system, as to comicmo it without that patient investigation which the subject deserves. It would seem that the curse of slavery has blanted our eyes to the true interest of our country. If any question of policy can be so tortured as to have a bearing immical to alarecan be to fortured as to many a bearing instruments share-ry, it would seem that there was a determination to op-pose it, right or wrong. We are, sir, in this section of our country, in an unerviable situation. By the exclusize encouragement extended to slave labor," laboring ! white men are driven away from our towns; and, when the insurrectionary spirit of slaves manifests itself, we feel our want of them—and, as a consequence, the general government is called upon for assistance. I am one of those who ito not believe we stand in need of any foreign aid as yet; but I cannot say, that, if the present policy is pursued much further, the day will not come when we shall need it. The subject of slavery is a deliente one for a southerner to touch upon; but it is me that we must sooner or later come to. I am therefore fully of op-mon, that the sooner we begin to discuss it, the better for ourselves - It is true, the present generabut, if we act wisely, our posterity may escape the corse. It is necessary that the southern states adopt a gradual scale of emancipation of their slaves; and, etfeetually to free us of them, the arm of the general government should be extended, to assist in comoving them as they become free. I am convinced that a temperate discussion of this subject would lead to beneficial re-Your Register holds a conspicuous place among the publications of our country; and if you were to advocate this subject, I am of the belief that you would be useful to the cause of humanity and justice.

Such are the opinious of a trend in North Carolina—a gen leinan who, as we believe, loss a large taske in the marters referred to. We would gladly describe the complianent paid us, and will cheerfully encaperate by all the means that we have—but to take a lead in such subjects, be longs to ginet minds and lofty influences over public opinion. There are near whose vonces would be heard—whose sound sense and established patrotism would reach many of the most oblurate and comfet them to reflect, under an awful assurance of evens that must flow from an adherone to the previous taste of things. But still, certain "would not believe though one arise from the dead," to adminish them—for there are some who must feel belore they will reason. In making these general remarks we do not wish to

In making these general remarks we do not wish to be understood as in any manner interfering with what are called "southern interests." We wish the south to take the lead in this matter, feeling wiling to follow in any reasonable plan that may be devised, to protect and secure the safety of our brethren; and, on that account, heartly approve of the late orders for the removal of certain companies of the army of the United States southward—neotropy being a paramount duty in the general government, whether applied to the persons or property of the republic.

ADITATIONS. The lower and of the state of Delaware and the adjacent parts of the Eastern shore of Maryland, have been much up tated by apprehensions of a service acceptance of the strength o

Monk of it. A plot has been discovered among the slaves of the island of Tortola, to fire the town and make an indiscriminate slaughter of all the white inhabitants. A want of concert among themselves seems have caused a disclosure of their terrible project. Relief had been sent from St. Thomas, though Tortola is British island,

PENNETURALLA. The election in Philadelphia city and county has resulted in the success of what is called the "Democratic ticket" by a considerable majority. There is some new division or or organization of parties that we do not understand. The Democratic ticket in the city is headed by Joseph Hemphill, and prevailed by a majority of about 1,000 votes, and a large majority for the "Jackson and Wolf" ticket was obtained in the county; on the result of which the "American Sentinel," late "official," elsina a aplendid victory over the "Inquery which is the present "official," and, besides, there were working men's tickets.

DELAWARE. The late election in this state has resulted as usual, except with an increased majority of votes in favor of the "National Republican" party.

JUDE MARSHALL. Many marks of kindness and respect have been extended to the venerable chief justice of the United States since he arrived at Prhadelphis, of some of which we shall preserve an account in humble tribute to his worth. When he visited the "Free Trade convention," the delegates rose en masse to receive him—nullifectures, and:25th-section-men, and all!

MH. RANDLEH. The minister extraordinary, John RANDLEH, who was sent with a roting commission to St. Petersburgh; has returned in the Hannibsi. As he has not been rear his post since the cholers has prevaled in Russis, he will not, we presume, be subjected to quarantine. [N. I. American.

Mn Wint. The newspapers teem with speculations and remarks on the nomination of this gentleman for the presidency, by the "National Anti-Masonic convention which lately met in Baltimore; and we have thought that, if room could be allowed, much amusement, and some instruction, might be afforded in presenting a fair selection of the various and conflicting views offered to the public consideration; but we fear to open our pages to discussions of such illimitable extent as this su promises. We were surprised at the nomination of Mr. Wirt--at his acceptance of the nomination--at the munner and matter of that acceptance, and more especially at its ratification by the convention. We have # high personal respect for Mr. Wirt-but do not think that his opinions concerning internal improvements and domestic influency are exactly those entertained by the friends of the "American System"—we see, however, that, in that great manufactory of "democrats" and "fethat, in that great manufactory of "democrats" and "le-derulatis"—the "Albany Argus," (the head of which, as we long since heard, was once crowned with a "black-cockade"), he has been called an "old school federalist," and "in Virgina was arranged against the democracy in in viginia was arranged against the democracy in those days when Jayrassoo was at the head of the re-publican party." Now, if this be a sing Mr. Wirt, sure-ly, is one of the last men that will have to account for at the was intimate in the family of 25. youthful life-and no one surpassed him in the private and public esteem which he entertained for the character and services of the author of the declaration of indenow services or the author of the Occasion of Independence. If the term may be used without interappel, a Air. Whit—he was one of Mg., legiptime of peacefully perfectly entered of the carry development of beautiful devotion to the "democracy of those drays,"—which to powerfully belended by apraking and writing, being eminent in both.

"BALANCE OF TRADE." We made a few remarks about money in our last paper. We much fear the statement is true, that the revenue from importations will amount to 30 millions for the present year. This amount for revenue, because of the quantity of free articles, must represent a consumption, (or in other words, an excess of importations of foreign goods over the exportations of them), of at least 100 millions of dollars—the value

<sup>&</sup>quot;As a case in point we shall mention the following. A young and industrious mechanic, with his wife, not long since proceeded to a small town in the south, with the following control of the process of the process of the first point of the fi

of the domestic articles exported last year was only 59 of the domestic articles exported last year was only 59 millions, and if the profits on labor, subsistence and captal employed in navigation, be added—the aggregate value cannot have exceeded 70 millions; so that, if the exports of the present year shall not be greater than the last, there will be a general deficiency of 30 millions—and how shall that mighty sum be settled? In part, by losses on forced sales of goods, because of their surplus quantity—in part by bankruptcies, and the remainder in

Wool. We mentioned in our last, that the price of American wool ranged from 50 to 70 cents per lb. but have since observed that the quotations in Baltimore, (which, however, is not a great wool market) are from 35 to 58—the quality, perhaps, being generally interior to the product of the many and the many and the many areas and the many areas are seen as the many areas are seen as the many areas are seen as a to the product of the more northern states. From the to the product of the more normers states. From the large quantities that we see advertised, a further decline in price must be expected. The opeculations which we spoke of last spring, have had the re-action which every prudent man, (out of the vortex of their operation), planiforciasy must take place—and this has been saided by heavy importations, notwithstanding the efficient duty on wool. Such things are always injurious. But we hope that the wool-growers, generally, thought as we did, and realized the highest price for their crops, by early sales. To assist the lurther reduction in price, moncy has be-come "scarce"—and no small proportion of the excessive quantity of British woollens recently imported must 'hammered-off at auction," to "raise the wind," and pay British debts. The price of foreign and domestic

ANCIENT PRICES IN ENGLAND. In the year 1352, 25th Edward III, wages paid to haymakers was 1d. per day; a mower of meadows 3d. a day, or 5d. an acre; reapers of corn in the first week of August, 2d. in the second, 3d. per day, and so on till the end of August, without meat, drink, or other allowance, finding their own tools; for threshing a quarter of wheat or rye, 21d; a quarter of barley, beans, peas or oats, 13d; a master earpenter 3d. a day; other carpenters 2d.; a master mason 4d. per day; other masons 3d. and their servants 13d. per day; tilers 3d. and their "knaves" 13d.; thatchers 3d. per day, and their knaves 13d.; plasterers, and other work-ers of mud walls, and their knaves in like manner, without ment or drink, and this from Easter to Michelmas; and from that time less, according to the direction of the justices

In Wilkins's Leges Saxon, as quoted by Dr. Henry, we have prices of various articles in Eogland in the reign of Ethelred, about the year 997, which the learned doctor has calculated with great correctness in money of the

present Price

tune.			
of a man or slave	£2 1	16	3 sterling.
a borse	1	15	2
a mare or colt	1	3	5
an ass or mule	0	iè	1
an ox	0	7	01
2 COW	0	6	2
a swine	0	1	104
a sheep	O	1	2
a most	0	Λ	4.1

We think it will be agreed, if such were the present prices of men and other property, or of labor, in England, the people of the United States could not endure a "free the proper of the United States could not endure a "free trade" with England, seeing that negro-slaves are worth from 70 to 100, atering each, and a day's labor, with us, annot be put down at less than 3s. The principle holds \$200. The principle holds 25000 to put down it ress man see the property of the United States be brought into competition with them? Our "free traders" say so-but the English with them? Our "free traders" say so—out the Englan "free traders" will not admit the principle, in respect to bread. We have plenty of land—England prohibite our flour and grain: England has plenty of labor, and growls about our restrictions, because we do not freely admit its productions! How vast is the difference between mine and thine! If England had the climate and the land to grow COTTON-a "free trader" would be as scarce in South Carolina as a knee buckle ever was in the highlands of Scotland.

"Working MEN." The celebrated company of vohinteers, which marched from Baltimore and served in Canada in the late war, had 110 ronk and file-and the whole company, two excepted, were mechanics—men who stand dishonored because they labor, in some parts of the country, though always among the first called upon to defend the soil.

'FREE TRADE!" The Greenville S. C. Mountaineer states, that a great number of horaes have been driven through that place this season; and that on one day there were twelve hundred horses and mules from Kentucky and Tennessee in that village. The editor marvels how so many can be disposed of in that state these hard times, and conjectures that some of those so greatly opposed to buying Kentucky eattle three years since, have relaxed

EXPORTS FROM CHARLESTON for the year ending Oct. 1, 1831--

Sea island cotton-bales 90 317 Unland 184,981 205,298 Same time 1830-Sea island 17,463 Upland 192,304

Less in the latter year 4,469 bales.

It the value of foreign export shews the wealth of a country or state, South Carolina, with all her complaints about hard times, is one of the richest countries or states in the world, regard being had to the number of her citizens.

RAIL HOADS. The Albany Argus contains notices of intended applications to the legislature of the state of niterated appreciations to the registature of the state of New York at the session of the ensuing winter, for rais rounds, the aggregate capitals of which amount to twenty-two millions of dollars. All of these projects are for rounds between Albany and Buffato—two of them to run through: the third, from, Buffalo to the Cayuga lake, and the fourth, from Uties to the Cayuga lake.

WASHINGTON. The corporation of this city has purwhat to the uncompleted esnal, and resolved to finish it on an enlarged and improved usedle. It will form a continuation of the Chesapeake and Ohio enail, be 150 feet wile and 8 feet deep, and terminate on the Eastern Branch, an excellent harbor, and well fitted to all the purposes of an extensive navigation. By means of this canal, the Potomac, as it were, will pass through the city, and ressels of considerable burthen discharge their car goes at the stores on the streets. Such a work, independent of its connexion with the great canal, must add much to the business and wealth of the growing metropolis of the union -- which, in spite of various adverse erreumstances, is rapidly increasing in population—and, because of its beamful and advantageous location, abundant supply of pure water and general healthiness, must proceed in improvement, and become a great citythe depot of a targe interior and exterior trade, and grow in means with the growth of our country, united and prosperous-and abound with industrious and thrifty men, profitably employed in supplying their own mutual wants, and those of the vast number of strangers which resort to the sent of the national government,

We never visit this city without seeing some new We have runs this this thy willout seeing some new thing that pleases—but have for some years thought that we observed a change in the habits of the people, them-serves, which was most agreeable, in an increased atten-tion to their several branches of business. A numerous and powerful body of producers are growing ap-the mechanic arts flourish, and the manufacturing are beginning to follow, with a market at hand for the various fruits of their industry. These two chiefly make up the wealth of cities, commerce being the "hand-maid" of both.

TROUBLE A-HEAD! The following is from the honorable Issae Hill's "New Hampshire Patriot," and has reference to major Mordeon Manassch Noah's paper, the "New York Courser and Enquirer." The U.S. senator-editor and the U. S. surveyor-editor will probably go to war-

"We regret to see the predictions of the New York give it either to hon, Richard Ponsonby, his brother-in-Standard every day verified, in regard to the transfer of law, or to Dr. Grey, dean of Hereford, his brother-in-Standard every tay version, in regard to the transit of interest in a pruniment democratic new spaper establishment, and the consequent change of conduct in regard to the U. S. bank."

MALL ROBBERT. A certain Henry Johnson, employed to carry the mail from New York to Elizabethtown, N. J. has been arrested far robbing it. It is supposed that he had unlifted about 3,000 dollars of other persons money.

"THE SUBLIME AND BEAUTIFUL." From the Hashington Globe. "Adams can't raise a leg since he was angton tiene. "Adams can't raise a leg aince he was distanced—Clay is afrecally broken down in Kentuck), which ends his efforts east and west. Cathoun has run through the girth, and McLean cannot venture on a race in wheh all the rest have been thrown out.

Bisnop of Onto. Bishop Chase of the P. E. church having resigned the bishoprick of Ohio, the rev. Mr. McIlvame, of New York, lately of Georgetown, Col. has been elected in his place, and also to become, ex officio, president of Kenyon college-some difference about the management of which appears to have caused the resignation of Dr. Chase. Mr. Meltraine is very highly apoken of as a learned, pions and liberal gentleman.

LIBERTA The following account of the difficulties and loss of life that attended the settlement of Virginia, has been published to shew the greater comparative progress that has been made in building up the colony in Africa-which latter may now be regarded as being established, if a moderate degree of protection and care abail he ex-tended towards at. Let the healthness of its location be be settled—and the desire of enigration to it will lar exceed the mean furnished to gratify it. Origin of the ancient dominion. The first attempt to

plant a colony in the United States was made under the nuspices of sir Walter Raleigh, to whom queen Elizabeth had granted a charter for that purpose. party consisting of a hundred and ten persons, landed on the island of Roanoke in 1585. They were found by sir Francis Drake in the following year, reduced to the lowest state of distress, and by him, at their request, ear-ried back to England. In 1587, Raleigh sent out a great number of colonists, and when in 1590, three ships were sent out, not a vestige of them was to be found. Raleigh, after expending £40,000, abandoned the enterprize in despair. Whether the colonists were murdered, or incorporated with the savages, has never been known.
Under the ausnions of an account

nder the auspices of an association to colonize America, on the 18th of May, 1607, one hundred and five men were settled at Jamestown. Belore the month of September, fifty of the company were buried. were soon reduced to thirty-eight persons, determined to abandon a country to unlavorable to human life. Soon, however, one hundred and fifty persons strived under eaptain Newport, and the number of the colony was soon reduced to sixty persons, and were actually taken on board his squadrou, and set sail for England, when they were met by lord Delaware, who persuaded them to return.

In the year 1624, after more than £150,000 had been expended, and more than 9,000 persons had been sent from England, its population did not exceed 1,800 persons.

Compare the above with the condition already attained by our African colony, and the materials of which it has been formed, and it must be admitted that the progress and prospects of the latter are eminently encou-Nat. Intel. 1

THE SHEARING OF THE FLOCK. We find the following in a London paper:—"The right rev. William Knox, lord bishop of Derry, is dead; it is the richest see in the forth owners, in death, it is the richest see in the world, and the right of appointing to it devolves on the crown, or on lord Grey. To this bishop, belongs 96,000 acres of land, and the right of appointing to 52 parishes, varying in value from £300 to £4,000 per annum. The annual rent of the see is not less than £25,000. It is a

law, or to Dr. Grey, dean of Hereford, his brother."
The prognostic of the London Post is confirmed. By

late advices in the London papers, we perceive that earl Grey, the whig premier, has given the ace to his brother,

the dean. ["He that provideth not for his own family, is worse in an infidel," in this season of "reform"—the practice of Washington to the contrary, (in respect to such pro-

ceedings), notwitstanding. For six or seven of a family, to fatten at the public erib, is nothing uncommon—now o'days. The "shearing of the flock" by the bishop of Derry -one man, is many times more valuable than all the trumpetted charities bestowed on the starving popullation of Ireland. We trust that the end of all such oppressions is nigh.]

INDIAN AFFAIRS. The Tuscaloosa Intelligencer says, that "G. S. Gaines, of Demopolis, has been appointed special agent of the war department, to superintend the collection of the emigrating Choctaws, and their removal and subsistence as far as the west bank of the Mississippi river, from whence captain Clarke of the United States army, who has in readiness a number of wagons and teams for the purpose, will couvey them to their new country west of the territory of Arkansas. The government, it is said has offered a bounty in money of ten dollars per head, for each man, woman and child, who may prefer to go in their own way, without further sid from the government, than lerriages and provisions when passing depots, payable after their arriving in the new country. It is believed that most of those who possess the means of removing themselves, will embrace this offer."

The last Milledgeville Journal contains a correspondence between gov. Gilmer and Mr. Cass, the secretary of war, from which it appears that the president has ap-pointed Mr. Curry as U. S. agent, for opening an enrol-ment register for such Cherokees within the chartered limits of Georgia, as may be disposed to emigrate beyond the Mississippi. The measure is to be pressed with as much alacrity as possible.

THE AMERICANS. We remark in Kotzebue's "New Voyage round the World"—a jejune book on the whole

-the following passage—
Between Falkland islands and the west of Patagonia, we sailed within speaking distance of a North American we smell within speaking distance of a NOTH American whaler. The dirty ship, and the crew smeared with blubber, had, indeed, a disgusting appearance; but it we consider to what toils and dangers these men are ex-posed during their voyages, which commonly last several years, in the most tempestuous seas, sometimes sailing about for months without seeing a fish, and suffering in the meanwhile from the want of wholesome food, yet pursuing their object with invincible perseverance, it is unpossible to deny them compassion, and even commen-dation. The North Americans display an industry and perseverance in their commercial undertakings, which is not exceeded even by the English; they are to be met with upon every sea, and in the most unfrequented regions, disdaining nothing, however trivial, from which they can derive profit."

In his second volume, captain Kotzebue observes "The North Americans are such elever sailors, that even when drunk they are capable of managing a ship"

-an ambidextrous compliment,

MRs. MARY TROMPSON, sister of the famous CHARLES l'HOMPSON, secretary of the revolutionary congress, died At the house of her nephew, John Thompson, esq. at Newark, Delaware, on the 20th ult. aged 93 years. There were five brothers and one sister of this family the youngest died at 79, the oldest, Charles, at 95—the sum of their ages being 531 years, or an average of 884 vears.

A Miss Clipron, educated at Emmitsburg, Maryland, and only 17 years old, has burst upon the play-go-ing public of New York, (and they are, or at least ought varying in value from £300 to £2,000 per annum. The to be, good judges of theatrical excellence like a meteor, annual rent of the see is not less than £25,000. It is a in the highest walks of tragedy. Her performance of the principality in point of wealth, power and influence. The strong and difficult part of Lady Maebeth, is loudly and London Morning Post, foretells that lord Grey will learnestly applicated. AFFOLKTMENTS BY THE PRESIDENT. G. A. Montmain, to be surreyor and inspector of the revenue for the port of 'Bayon, St. John, in the state of Louisiana, vier Levapeur, resigned.

John Smith, to be surveyor and inspector of the reve-

nue for the port of St. Louis, in the state of Missouri, vice James W Moss, resigned. Juseph B. Lancaster, to be collector of the customs for the district of St. Johns, and inspector of the revenue for the port of Jacksonville, in the territory of Florida, vice James Dell, deceased.

Joel M. Smith, to be surveyor and inspector of the revenue for the port of Nashville, in the state of Tennes.

ser, vice Basil Shaw, resigned.

Samuel Gwin, to be register of the land office, for the district of lands subject to sale at Mount Salus, in the state of Mississippi, vice Stockly D. Haya, deceased,

Ogden D. Longstaff, to be collector of the customs for the district of Teche, and inspector of the revenue fur the port of Franklin in the state of Louisiana, vice Donel-

son Caffery, resigned.

[We have not seen it officially stated that Mr. James We have not seen it officially and the market of the many vania, has been appointed nihister to Russia, in place of the late "wandering" Randolph—but the "official paper," the "Globe," gives an account of a visit of the mail contractors at Washington to the president, and says that "the hon. James Buchsuan, recently appointed minister to Russis," marched in the procession of contractors.

THE ENGLISH REFORM BILL has been so much embarrassed and loaded by various combinations of interests, that great lear is entertained of its ultimate passagewith its failure, many sober-minded men lank for a terrible convulsion—the present state of privation seem-ing only borne by the poorer classes of the people in the hope of better times. With the loss of that bill, hope will bid England farewell, except in an appeal to force. This would appear to be a general opinion—and earl Gray has become unpopular, (an) most justly, if the fact stated is true), because that he has already put members of his family into different places worth not less than one hundred thousand pounds a year-say hall a mulion of dollars,

BRITISH COLONIES. Documents laid before parlinment. From the very voluminous and valuable papers prepared by Mr. Hume for his motion to give representatives to the colonies, we have the following information:- The British colonies amount in number to that. seven, exclusive of the British possessions in India. Of these there have been captured eleven, estled four, ob-tained by settlement sincteen. The population of these colonies is, in North America, 911,229, British Guinna and the West Indies, whites, 40,455, For colored peoand the West Indies, whites, 40,435, free colored people, 60,863, slaves, 694,590—total, 836,527; crown connes, whites, 238,338, free colored people, 977,407, slaves, including, of course, convicts, 146,899—total, 1,322,409. The imports from the whole in 1829, in official value, were, £11,508,943; official value of expunts, £10,777,944. Ships inwards, 2,798, tonnege, 75,575; ships outwards, 2,997, tonnege, 1,067,243. These are important data whereby to estimate the value of our colonies.

THE CHOLERA. A letter dated St. Petershirg Ang. 2, says - "The sickness at St. Petersburg, I am happy to say, was very much better yesterday than ever. There were but 40 or 60 cases, and we think in a few days it will cease entirely."

ANXIVERSARY OF THE "THREE DAYS." As every thing relating to the "good Lalayette" is interesting to Americans, we translate the following from the Paris National:

"The common opinion was that general LAFATETTE, on such a day (July 27th) would occupy a place corresponding to the conspicuous post he had in our glorious ponting to the comprehenses past he had a revolution; but this expectation proved erroneous, as the general contented himself with jonning his colleagues, who attended the ceremony in large numbers.

"The general, who in entering the pantheon, had been received with shouts of "vive Lalayette," was, on his re-

receive win smouth of "the same joyous exclamations, "National guards, students, workmen, all housened around his carriage, which would have been drawn by the people, the horses having been taken our instantaneonsly, had not the general's most carnest entreaties caused the latter to be replaced. A multitude of citizens of every age and condition formed the cortege of the illustrions viterao, and accompanied him to his dwelling, every one auxious to see him-to hear his voice-to shall hands with him.

"In passing the artillery of the national guard, a sabute was fired. The general appeared to be profoundly tuncted by the unequivocal testimony of affection of which he was continually the object, and all his expres-sions here evidently the marks of his deep emotions. The utmost order prevailed throughout the day."

COMMERCE. We have received from our correspondent at Washington, the report of the sceretary of the treasury, relative to the connerce and navigation of the treasury, remains to the commerce and navigation of the United States during the year ending 30th Sept. 1830. The imports during the year amounted to \$70,76,79,30 of which, \$66,035,739 were Imported in American vessels, and 4,841,181 in Inregn. The exports amounted to \$73,849,500; of which, \$59,463,029 were of domestic, and \$14,387,479 of loreign articles; of the domestic articles, \$51,106,189 were exported in American vessels, and \$8,355,840 in foreign vessels; of the Inreign articles, \$12,776,529 were exported in American vessels, and \$1,610,950 in foreign vessels; 967,227 tons of American shipping entered, and 971,760 cleared from the ports of the United States; 131,900 tons of foreign shipping entered, and 133,436 tons cleared, during the same period.

The registered tonnage, as corrected at the register's office, for the 31st December, 1829, is stated at 650,142; the enrolled and licensed tonnage at 508,858, and the fishing vessels at 100,796. There were employed in the whale fishery 57,284. Total 1,260,797.

N. Y. Jour. Com.

CHECKS -- of the offices of the bank of the United States. The greater part of what are eatled five and ten dollar notes of this bank, are really only checks drawn by the offices of the several branches on the parent bank. following is from the "Baltimore Republican."

We incutioned sometime since, that a question had been raised in the state courts of Ohio, as to the legality of the issues of five and ten dullar notes, drawn by the brenches of the bank of the U. States upon the bank at

Philadelphia.

A person named Cunningham was tried "for having in possession certain counterlest notes, purporting to be notes of the president, directors and company of the U. States bank-knowing the same to be larged and with intent to utter." The counsel for the prisoner contended that the indictment ought to be quashed, inasmuch as the document produced in evidence was not a note purporting to be of the United States bank, but a mere check, drawn by the president of the branch bank at Louisvilte, countersigned by the cashier-upon the princopal cashier of the bank residing in Philadelphia. It was agreed, however, that the case should be referred was agreet, nowever, mat the case should be reterred to the jury, and the man was conveted. His counsel then gave notice that they would move for arrest of judgment—and the case lay over till the 28th ult. when, as we learn, by a letter published in the Globe, the notion was made, and the point argued, and it was decided by the court that the indictment had not been sustained, and the prisoner was liberated.

The arguments used were, that the bank had not legal authority for putting into circulation as bank notes, those checks—that no note under one hundred dollars could be legally made payable to order-that the bank had at two different sessions of congress made application for authority to appoint two additional officers to sign notes, as the president and cashier could not sign a sufficient number of notes for the currency of the country -that the request was relused on the ground, that by multiplying the signers of notes, facilities would be given to lorgeries - that notwithstanding congress had

refused to allow two additional signers, yet the lank had increased the number to twenty-five-by the presidents of the twenty-tour branches being anthorised by the directors to sign notes—that this was an illegal stretch of power, inauthorised by the charter, or any other low--and finally, that there is no law of the state of Otto tor punishing any one for having forged checks in possession.

The decision is of considerable importance to the bunk and the public.

#### FOREIGN NEWS.

Liverpool dates have been received at New York to the 2nd of Sept, inclusive. The French premier M. Perrier, had submitted to the chamber of deputies, a project of a law abulishing hereditary peerage, and makong it etigible for the chambers, by two successive acts of legislation, to renew it. He asks for an increase of the registrom, to renew it. He saws to an increase in the seriory of France to 500,000 men, which involves the imposition of more taxes. The French army has continued its return from Belgium.

I'te reform bill is said petiding in the British parliament, and it is estimated that it will take three months to get through its remaining 40 clauses, at the rate at which it proceeds. There is a rumor that the king of the trium had made a requisition on the king of the French to let 12,000 of las army remain in that com-This earl Grey declared could not be permitted, The Poles, if report be true, (but for the love of liberty we feel disposed to thinht it), are in a most perdons situation. The reports are, that Warsaw had perdons situation. The reports are, that Warsaw had been in the hands of the mob; that the command of the army find been token from the brave Schryznecki; that many persons had been long up at the bump posts by order of certain jacobin clubs; that prisoners were mur-dered in the jails; that anarchy, confusion and distinst, were the order of the day; and in the midst of all these untoward circumstances, the Polish army lost retreated before the Russies, who had advanced within five miles of Wersaw. These runors are supposed to be greatly exaggerated, if not without foundation, we, however, fear the fate of the Potes, as the mediantum of France had failed. It is agoin rumored that the emperor of Russia was ill. The cholera morbus raged in many parts of Russia and Polanil.

Austra it was said had again determined to invade Italy to suppress the spirit of disaffection, and that Prance would not interfere. Greece was about to issue a page r em rency -her situation is truly unenvialde.

A difference had arisen between the officers of the Kensington frigate, built in this country, and those of a Braish man of war, on a matter of etiquetic. A message had passed, but had not been answered; and the Ameticans, on a second consideration, offered to withdraw it; but their letter had in the meantime been handed over to the admiralty.

Impresonment, outrage, and tyramy, still proceeds in Portugal.

NAVAL REGISTER-OFFICIAL Some of the most important changes in the Navy Reguster, as ascertained at the Department, during the munth of September, 1831.

BEATHS. Muster Communitant - John Porter, at Watertown, Mass. 2d Sept.

Lieutenant-Poul H. Hayne, at Prasacola hospital, 4th Scpt. Surgeon - Wm. C. Mc Call, near Trenton, N. J 14th

September. Gunner-Wm. S. Cowan, New York hospital, 15th

September. DESIGNATIONS.

Surgeon-Samuel B. M. lone. Assistant Surgeon-John H Intay. Passed Midshipman-John R. Bryan. Midelapman - George M. Thompson.

2d Lieut. of Marines - Thomas Lee. Vessels on each foreign station, as reported the last month, except the changes noticed below

Prigate Brandy wine-at Touton 20th of July, com modore Biddle on board.

Sloop Ontario, capt. Gordon—at Marsedles on the 9th July, for Mahon in 5 days.

S'oop John Adams, capt. Voorhees, at port Mahon 11th June, to sail thence for Construtinople, by way of Naples, on the 2.id, with commodore Porter and mite.

Sloop Concord, capt. Perry, saded from Marseilles

Stoop Concern, saper services of the of John, for Genoa.

Frigate Constellation, capt. Wadsworth, and sloop Boston, capt. Storer, were at Yourks in the Bay, on Boston, capt. Storers as soon as the the 5th of Joly. To return to Smyrna as soon as the plague should aubside. All well on board.

Sloop Fabrouth, capt. Gregory, in lat. 38° 30', long 98° 2d W. on the 21st July, all well.

Sloop Eric, capt. Clack, seventeen that from Penss-cola, was spoken in Lt. 30° 15′, long. 47°, on the 25th of August, all well. [Arrived at Norfolk.] Schooner Porpoise, hent. commanding Percival, ar-

rived at Penssends on the 7th September.

Schooner Grampus, lieut, commanding Tatnall, arrived at Norfolk 22d instant, 12 days from St. Domingo, all well. Will return to the West Indias soon as repaired, &c.

Sloup Vandalia, espt. Kennon, at Rio on the 10th ugust, waiting reflet, all well.

Sloop Warren, capt. Cooper, sailed from Norfolk 2d September.

Frigote Guerrier, com. Thompson, at Lima on the 3d at June.

Sloop St. Lonia, eapt. Sloat, left Lima about the 12th of May for Payata, and other leeward ports.
Schooler Bolphin, lieut. communing Fitzhingh-

sailed from Lone shout the 8th of May, for Gusysquil and other feeward ports.

Lewis Herman, fleet surgeon in the Meiliterraneun, arrived in New York, as a possenger, September 29th.
Navy Department, Oct. 1, 1831.

#### FREE TRADE CONVENTION.

Thursday, Oct. 6. After the usual routine of open-ing the business of the day was gone through, Mr. Poindexter, of Mussissippi, presented a partial re-

port from the general commutee, containing a resolution that it he recommended to this body to appoint a committee of six to meet a convention which is to be held at New York on the twenty-sixth metant, for the purposes of conference and conclusion.

Ordereil to be laid on the table.

In consequence of the printed copies of the report of the committee not being ready for delivery to the members of the convention, an adjournment took place till one o'clock.

On the chair being resumed, the president announced that a communication had been received, signed by Mr. Surchet, in ready to the communication which was yesterday received from Mr. Ronaldson, which he would cause to be read to the house.

The document stated that, in the time mentioned by Mr. Ron leaving alumng which a considerable diminution had taken place in iron in the United States, a much greater fall had taken place in foreign markets. In Great Britam the proce was reduced one half, whilst in this country the reduction did not much exceed seven and a hall per cent. He contended, therefore, that a specific thirs, instead of diminishing the price of the article, had actually operated against a diminution of price.

Along with the communication he sent some specimens of being of a superior quality, and the price lower.

It was moved that this communication be printed.

An amendment was proposed, that the communication of Mr. Ronaldson, and that of Mr. Sarchet be printed tog ther.

This was opposed, upon the ground that if the condescription, it was not known to what extent their printing might be extended.

Motion negatived.

It was stated that some difficulty had arisen in the printing of the report of the committee. The printers

of newspapers not being willing to undertake it, another | circumstances. He concluded by renewing the former

printer was to be sought out.

A gentleman from Georgia, observed, that if the report were printed and delivered at the time, gentlemen would not have time to read it and consider its import so as to go into debate upon its contents. But, as the copies had not yet arrived, he thought it advisable for the house to take a recess till five o'clock, by which time the report would, in all probability be ready, and moved

accordingly.

An amendment was moved, that the adjournment be till four o'clock, and another gentleman proposed ten to-morrow.

A conversation here ensued upon a point of form. The president stated, that it was irregular to move for an adjournment to any particular time; the motion to adjourn till ten to-motrow could only be taken as a motion to adjourn, which motion took precedence of any The convention had not fixed any stated hour at which to commence its attings from day to day, and therefore, in putting the question the chair had sant to resume at ten to-morrow. It was desirable that the convention should have a stated time for its regular sittings.

A motion was accordingly put and carried, that the convention, in adjourning from day to day, should re-

sume at ten in the morning.

The protion to adjourn was negatived,

The motion for a recess till tour o'clock was then put and negatived. A gentleman from Alabama moved that the house re-

solve itself into a committee of the whole convention, to consider the report clause by clause.

Mr. Poindexter objected, upon the ground that gen-tlemen were not prepared. No copies of the report had yet arrived, and gentlemen really ought not only to be furnished with the report, but be allowed time to read it and reflect upon it,

The gentlemen from Alabama, after some remarks upon time being lost through procrastinations arising from different causes, renewed his resolution that the

stroms omercue causes, renewed his resolution that the bouse resolve itself into a committee, which was carried. The president then appointed Mr. Sedgwick, of Maschusetts, chairman of the committee, but that gentleman not being present, Dir. Bunks, of Virginia, was appointed, and took the chair accordingly.

In the course of the proceedings, a few printed copies of the report of the committee were brought in, and distributed amongst the members of the convention.

Mr. Poindexter was confident that no progress would Mr. Pointerier was conduct that no progress would be made by proceeding to business immediately. Very few gentlemen had yet received copies of the report, and in discussing it clause by clause, so unfurnished, they would be subjected to much inconvenience. He was confident that time would be saved by postponing the consideration of the report, till gentlemen were better prepared. He moved therefore, that the committee rise and report progress, and ask leave to sit again.

The motion being negatived, the chairman commenced the reading of the report, and had proceeded for some minutes, when

Judge Berrien entered the hall. He said, when the Judge Herrien entered the nail. He hand, when the order was given to print the report, his idea was, and it coincided with the opinions of other gentlemen, with whom he had conferred on the subject, that the intention of having it printed was, to give gentlemen who had only heard it once read, an opportunity of reading it, and of reflecting upon what it contained. He had been employed in superintending the printing and realing the proof sheet; he was aware that a small number only had been handed in to the appropriate een handed in to the convention, and he was surprised, upon his return, to find the house resolved into a committee, and engaged in discussing the report, clause by ort, to take it with them, and examine it in their closets. port, to take a wan tireus, and cannot not non-sideration the besospite the meeting to postpone the consideration until gentlemen had an opportunity of being better prepared. By going too hastily into it, erroneous opinions might be taken up, and lead to disastrous results. For might be taken up, and lead to disastrous results. For his own part, he could scarcely trust himself in the dis-cussion, in the present state of his feelings, with respect to the questions involved numbers the convention were better his own part, he could secreely trust himself in the dis-lover of his country. Let it be remembered that this is cussion, in the present state of his feelings, with respect to no transient feeling—the offspring of momentary excite-the questions involved junies the convention were better i ment—one which may be expected to pass away under prepared, than in his opinion they could be, under the i the influence of a more calm and dispassionate reflec-

motion to adjourn, &c. which resolution was carried.

The president having resumed the chair, Mr. Banks, chairman of the committee, moved for leave for the house adjourned at two o'clock.

The following is the paper read by Mr. Berrien, from the federative committee to the free trade conven

#### TO THE PROPER OF THE UNITED STATES.

A portion of your fellow citizens, resident in different states of the union, who are numerous, respectable and intelligent, who like yourselves, are attached to the principles of free government, and ardently devoted to the great constitutional charter, which consecrates and apholds them—who ask only an equal participation in the benefits, and are ready to bear an equal share of the burthens of the government-who are willing, more-over, to concede to others a perfect right to the full enjoyment of whatever they ask for themselves; such a portion of your lellow estizens, whose condition, character, motives and views are thus fantifully delineated, have deputed us to represent them on an occasion deep-ly interesting to their leelings as men, and vitally impor-tant to their interests as citizens of this great confederated republic. They have called upon us to unite our coun-sels for the redress of the grievances under which they labour; and have enjoined it upon us, ss a duty, to omit no means for the accomplishment of this object, which may consist with our obligations as citizens, and with their own withful and ardent devotion to the bond of our common union. In the performance of a duty like this we canuot be insensible to the propriety or a trans. The full communication with our fellow enizers at large. We full communication with our fellow enizers at large. Our inare members of the same great political family. Our in-terests are common, and so also are our duties; and it cannot be that my portion of our brethren can desire to withhold from us our just share of the benefits, or to subject us to an undue proportion of the burthens, which flow from the government under which we live. We have equal confidence in their justice and intelli-gence; and assure ourselves that it is only necessary to bring home to their understandings the conviction of the evils under which we suffer, to secure their cordial co-operation in prompt and effectual measures for their reoperation in prompt and encetous measures for their re-moval. We would commune with you then, in the spirit of these feelings. We must speak with Irank-ness. It may be that our language will borrow strength from the conviction of our wrongs, but we will not forget the just respect which is the to those who differ rom us in opinion, and cannot be unminiful of the affection which we bear, and which we earnestly desire to cherish towards our brethren throughout the union.

The representatives of portions of our fellow citizens, belonging to different states of this confederacy, have assembled in the city of Philadelphia, to consider the grievances which they suffer under the existing tariff of fluties, and to devise, it happily they may do so, some constitutional and peaceful mode of redress. Speaking generally, they have come together as strangers to each other, with all the variety of opinions on most subjects, which apring from different liabits and pursuits, and is perhaus mevitably incident to the imperfection of our common nature. On one engrossing question, that which constitutes the subject of this address, looking as well to its principles as us iterals, they have found a con-currence of opinion, which, as they believe, entitles them to ask for that opinion, and for the reasons on which it is founded, the attentive and dispassionate con-

sideration of the American people.

Among the evils which flow from the tariff system, as at present established by law, the is deut and determined opposition to that system, which exists in various parts of the union,-the deep and settled discontent paris of the union,—the user help and settled insolutions which is felt, and has been manifested by a numerous, patriotic, and intelligent portion of our fellow citizens,—cannot full to awaken the liveliest solicitude of every

No-the system of which we complain is not of recent origin, and the feeling of discontent, which was coeval with its institution, time and experience have only served to strengthen and increase. Let those who sin-cerely desire to perpetuate the political blessings which we enjoy, look to this consideration with the attention which it demands. This is emphatically a government The vigor of the laws is a moral force. of opinion. The bond which unites us is the sense of our common interest—the conviction of our equal rights—the assurance of our capacity to assert, and the feeling that we actually enjoy them. Take from any considerable portion of the American people the consciousness that they are in the full possession of their rights as freemen; substitute for it the spirit of discontent, which springs from the conviction of wrongs inflicted, not inside relative tenderly, but with defiberation, which are not temporary, but enduring; and you array against the government a force which is of like character with that which sustains it you awaken a feeling of resentment, which is goaded into activity by a sense of oppression, and embittered by the recollection that it is the hand of a brother which inflicts it. Such is the feeling which pervades a numerous and respectable portion of the American people. It cannot be defied, and may not be disregarded, without putting to hazard the salety of the confederacy.

Do you doubt its existence, its nature, or degree? Look to the character of this assembly—to the circumstances under which it is convened. Give your attenatances under which it is a standard and the admonished of the novel and extraordinary spectacle which is presented to nover and carramary specuser which is presented to your view. Do not close your eyes to the fact, that this assembly is altogether without parallel since the founda-tion of the government—that we are freemen, and the tion of the government—that we are freemen, and the representatives of freemen who speak to you of our violated rights—that we have come from different and distant parts of the union, to join in demanding their restoration—that a consciousness of strength is the offspring of united counsels—and that our purpose is not the less firm, because it is announced to you peacefully,

and in the spirit of conciliation.

A numerous and respectable portion of the American people do not merely complain that this system is unjust, but they question the right to establish it. They do not doubt—they atterly deny---the constitutional power of count—they afterly deny—the constitutional power of congress to enace it. In justice to that body, we invite your candid attention to a brief consideration of the views on this subject. The constitutional validity or invalidity of an act of congress does not necessarily depend upon the question whether the judicial department of the government would affirm the one or the other of these propositions. It may be that an act will in its operation and effect be subversive of the principles of the constitution, and yet on its face be superior to all just excepton on that ground. Laterally and in terms it may be in execution of an expressly granted power-in its operation said effect it may not only transcend that power, but may directly contravene it. Under the pretence of aupplying a revenue, congress may raise money beyond the purposes to which it can be legitimately applied, or may increase the duties to an amount which will be prohibitory of importation, and consequently destructive of all revenue to be derived from that source. Still such an set would purport to be in the execution of the power to lay and collect taxes; and courts of justice judging of it by interms, and by what is apparent on its tace, would not affirm its invaluity. But the constitution is causally obligatory on every department of the government—on the legislature who casety, as well update who interprets a law. If the former hall so veil years and the constitution is the constitution of the constitutio his unlawful purpose as to defend it from the security of the latter, is it less a violation of his constitutional obli-gation? If it be such a violation, can it be constitutionally

if instead of the absence of any express grant of power to protect manufactures, the constitution had contained an express clause of inhibition, an act of congress, imposing duties beyond the purposes of revenue, and therely operating as a bounty on the manufacturer, would, hey insist, he admitted to be in violation of the constitution, and yet the repugnance would not be manifest upon its face, and would therefore clude the judicial bower.

A numerous and intelligent portion of the American people believe that this view is applicable to the tariff of 1828. They admit the power of congress to lay and enliect such duties as they may deem necessary for the purposes of revenue, and within these limits so to arrange those duties as meidentally, and to that extent, to give protection to the manufacturer. They deny the right to convert what they ilenominate the incidental into the principal power, and transacending the limits of revenue to impose an additional duty substantially and exclusively for the purpose of affording that protection, They admit that congress may countervail the regulations of a foreign power which may be hostile to our commerce, but they deny their authority permanently to prohibit all importation for the purpose of securing the ome market exclusively to the domestic manufacturer,thereby destroying the commerce they were entrusted to regulate, and lostering an interest with which they That portion have no constitutional power to interfere. of our fellow citizens of whom we speak, do not therefore hesitate to affirm, that if the right to enact the tariff law of 1828 be referred to the authority to lay and collest duties, &c. it is a palpable abuse of the taxing power, which was conferred for the purpose of revenue: -if to the authority to regulate commerce, it is as obvious a perversion of that power, since it may be extended to an utter similation of the objects which it was intended to protect. Waving however this discussion, we concur in the opinion, that if the aggrieved party is deprived of the protection which the judicial department might otherwise afford, it would strengthen his appeal to the American people to unite with him in correcting

But there is a view of this subject which may claim the concurrence of all those who are prepared to admit that the tarif is unequal in its operation, oppressive and unjust. The constitution of the United States had its origin m a spirit of compromise. Its object is the security of those rights which are committed to its protection—its principle that of an equal participation in the benefits and in the burthens of the government. A system of taxation which is unequal in its operation, which oppresses the many for the benefit of the lew, is therefore unjust, not merely with reference to the great and immutable principles of right which are applicable to human conduct, but is moreover in direct collision with numan continue, out is norcover in uncer contision with that constitutional equality of right, which this instru-ment was thus confessedly intended to secure. A dis-tinguished jurist of Massachusetts, one who is advantageously known as such to the people of the union, has saul of the system of which we complain, that it is cal-culated "to destroy many of the great objects for which the constitution of the United States was originally framed and adapted." Who will affirm that such a system can consist with the spirit of the constitution? Its co-actments may be so veiled as to clude the judicial powcr, and may therefore be obligatory upon the other de-partments of the government—but as between constituent and agent, between the people and their rulers, the charter will in such case have been violated, and it will belong to them to correct the evil. Why should we lear to enunestae this principle? Is it because of the danger of those interests which have grown up under the system? A just consideration of the subject will lead to a directly opposite result. If it be conceded that the system is oppressive, unequal and unjust, can those who profit by it deceive themselves with the expectation who profit by it deceive themsefves with the expectation of its permanency! Is it prudent to close their eyes to the consequences, to which, sooner or later, this con-vection must inevitably ledd? Distinguished as this sys-tem is, by every characteristic which may define a ty-ranny the most odious, why should we, who are its vio-tims, not stand upon our chartered rights?

As men and brethren we appeal to you then to unite your efforts with ours in the correction of this abuse. A system which is unequal in its operation, and there-A system which is unequal in its operation, and there-fore unjust—which is oppressive, because it burthens the many for the benefit of the few—grossly, fatally, un-wise and impolitie, since it is subversive of the harmony of the union—which is in violation of the principles of free government, and utterly at variance with the spirit of justice and mutual concession in which the constitu-

tion was conceived and adopted; such a system, if per-y from an accustomed or from a desirable market, she oc severed in, must alienate our affections from each other, tugender discontents and animostics, and lead inevisbly, and with a lorce which no human power can resist, to the most awful of all culomities. We retreat those who differ from us, seriously to ponder this view of the subject. We entreat them not to misunderstand us. We cauget be ilcterred from the discharge of our duties to ourselves and our common country by the meusing its language to others. It is as men and brothers -in the spirit of an affection which is still worm and undiminished, that we would call their attention to those mevitable results, which neither they nor we will have the nower to avert.

Examine the subject for a moment in its connexion with the principles of an enlightened political economy, and see if the considerations which are urged to sustain this system are not talkelous and delusive. The view must be necessarily brief-consisting of hints and suggestions rather than of an extended argument, or of mi-nute details; but our object will be attained if these may serve to awaken a spirit of dispassionate inquiry.

We are the advocates of free trade. The argument which sustains it rests upon a proposition which may not be denied. It is the unquestionable right of every individual to apply his labor and capital in the mode which he may conceive best calculated to promote his own interest. It is the interest of the public that he should so annly it. He understands better than it can be underapply it. The understands better than it can be under-stood by the government, what will conduce to his own benefit;—and since the majority of individuals will, if properly protected, be disposed to follow their interests, such an application of their industry and capital must precision of meritance and epith must produce in the result the greatest amount of public good. Let it be remembered, that the question relates a schewiely to the application of explicit. It cannot be generated by an act of legislation. The power of the government is limited to stander from one employ-vernment is limited to stander from one employment to another. It takes from some less favored interest, what it bestows on the one which it professes to protect. It is equally untrue that such a system gives greater employment to labor. Its operation is confined to the simple change of its appheation. Laws which project by bounts any neculiar species of labor, cannot be said to encourage American industry—that is, directed to various objects. These laws lavor only a single class; and since the bounty is not supplied by the govermment, but taken from the pocket of the individual, an given at the expense of every other. That course of legislation, which leaves American capital and labor to the unlettered discretion of those who pessess the one and apply the other, can alone be denominated the "American System."

The interference of government, with the right of the ind valual to apply his labor and capital in such mode as he may think most conductve to his own interest, thus nece sarily operates to dimmish the aggregate amount In other words, the amount of the neof uroduction. cessaries and conveniences of life which are enjoyed by the community is necessarily diminished. It all nations then were willing to allopt the system of free trade for which we contend, which is accordant to the spirit of Christiancy and calculated to unite nations in harmony and pcace, it cannot be doubted that the interest of each would be promoted. The only question which can be raised on this part of the subject is, whether the adoption of a restrictive policy by one or more nations makes it the interest of others to reciprocate those restrictions. The answer seems to be sufficiently obvious and satis-The proposition which asserts the superior advi mages of a free trade among all nations, rests upon the following principle. The universal freedom of action which it allows, tends most thoroughly to develop the moral and physical energies of each nation, and to apply them to those objects to which they are best adapted. The proposition must be equally true in relation to each nation, whatever may be the policy adopted by others. The nation which resorts to a restrictive policy, legiscasions, it is true, in that nation also a displacement of capital from its natural channels. But can the remedy consist in a retalmenty system of legislation? in a system of further restrictions imposed by the latter nation? it be true that a restrictive system is injurious to the nation imposing it, does it crose to be an in regard to the latter nation, because, of the wrong done by the humer, and because it is also injurious to such nation? When we apply these views to the corn lows of Great Britain. considered with reference to their effect upon us, is it not then abvious that a system or pretended retaliation, which entetters the productive energies of our own people, whatever may be its effect upon that nation, must necessarily increase the evils we ourselves are destined to sustain

It is strongly urged as a motive to the continuance of It is strongly urged as a motive to the continuance of the existing tariff, that its operation had been to effect a reduction of prices. These lave, in het, fallen since 1816, and our opponents contended that this has been the result of flomeatic competition. A moment's re-flection will demonstrate the fallery of this assertion. We present a single fact in the outset. The diminution of price has been general, as well in relation to articles which are not protected by the existing turiff of duties, as to those which are. It cannot therefore have arisen from this cause. Let us remember now that this diminution of price has occurred every where-abroad as well as at home—said int only in an equal, but as a necessary consequence of the fariff, in a greater degree there than here. Among the causes which have produced this result, two prominent ones are presented to your consideration—the diminished amount of the circulating medium of the world, and the astonishing improvements which have been introduced in the modes of production. Take the case of cotton goods—these have fallen in price here since the emetment of the tariff. But the same thing is true not only in an equal, but in a greater degree abroad—and the reason is obvious. The causes which have produced this result a those which have been before stated -- have elsewhere been left to exert their bull influence in effecting the reduction of price. Here their operation has been restrained by the conflicting influence of the tardf. The reduction therefore with us has necessarily stopped at a point, which is ascertained by adding the amount of duty to the price of the import-Thus the diminution of price here has not been produced by the tatiff, but in despite of n-and has been retarded by it. But for this law the imported, which would take the place of the domestic article in the consumption of the country, would be obtained at a price grearly below that which we naturally pay, and the differcace, amounting yearly to many mi lears of dellars, would be saved to the community. It cannot be doubted that the prices of all commodities, the domestic production of which is forced by the imposition of a duty on a foreign article of similar description, are ranged by the arm unti-of duty necessary to iffect the exclusion of the foreign article, or that this increase of price is paid by the con-sumer, and that the host to the nation which is occasioned by this system of protection, is nearly equal to such difference of price.

The success which has attended the manufacture of cottons, is used to illustrate and enforce another sug-gestion in favor of the tariff. It is said, that by means of the protection off rded by government, manufacturers are enabled to overcome the difficulties meident to new enterprises, and that this protection is ultimately repaid to the community, in the reduced price at which the ar-ticle is furnished. We have already shown that this reduction in price in the case referred to, has not resulted from the protective system. Let us look, however, at this suggestion, spart from that consideration. If it be conceded for the purpose of the argument, and only for that purpose, that a manufacture might be established by a temporary encouragement from government, which would not otherwise, at least at that time, come into The nation which resorts to a restrictive policy, legissuccessful operation, and that the content may be repeated by the property of the strength of the content of the c

tretion is excluded by the nature of the proposition, fed object, and is entirely useless. The inevitable con-That which is proposed is temporary merely, and the question whether it is to be ultimately repail to the community, is of course made to depend on the success-ful operation of the protected est-blishment. It is congress who are to determine in advance, upon the pro-priety of putting at lazard the interests of the communty, by the forced catallishment of the proposed manu-listure. The question to be determined depends upon the calculation of probabilities, to the correct est mate of which, much practical information is obviously indispensatile. Constituted as that body is, it is difficult to conceive of one less fitted for such reference. On the other hand, there is always enough of individual enterprise, intelligence and capital, to test any experiment which gives a lair promise of ultimate remuneration, notwithstanding it may be subject to temporary loss. Left to individual enterprise, the question would be deeided by those who have every motive and every means cauca by those who have every menter and every means to come to a just conclusion—while the proposed suggestion would throw upon congress those visionary projectors, who having failed to obtain the support of disgame of securing profit, it, by the rarest accident, profit should arise, and of throwing the loss upon the continuuity, if loss should ensue.

It is said that a dependence upon other nations, for those manufactures which are essential to our wants, is inconsistent with our character as a nation; and in this view that the tariff is essential to national independence. To us the term seems to be strangely misapplied. It is agreed that a ystem of restraining all the nations of the world, by securing the application of the highest energies of each, to those objects which it was best quelified to produce, would enlarge the amount of production, and mercase the sum of human comfort. But such a state of things would, according to the argument which is urged, be a state of universal dependence; and precisely the same consequence would follow in relation to the commercial intercourse of any given nation with the other nations of the world, to the extent of that intereourse, whether a system of free trade or of partial restrictions should prevail. That intercourse consists in the mutual interchange of commodities, and it is inpossible to enneave the idea of a dependence on the one side, without recognising the fact of a corresponding dependence on the other. But such a state of mutual dependence is a source of gratulation rather than of regret, since it gives to each nation an increased facility for the development of its highest energies, enlarges the sum of its enjoyments, and affords the surest guarantee for the peace and harmony of the world.

It the suggestion be urged in its application to the ne cessities of our country iluring a state of war, an equalby satisfactory masser may be given. It is unquestionably the duty of every government to be prepared for those conflicts with other nations, which it is not always possible to avoid but this is must effectually done by the unrestricted exertion of its peaceful energies, In a government constituted as ours is and separated as it is by the Atlantic from the nations of the old world, it is reasonable to presume that such conflicts will be rare. The intervals of prace will probably be of much the bogest duration, and our system of permanent policy should therefore be regulated chiefly with a view to this state of our national existence. But the decivive answer to this suggestion is, that money constitutes the sinews of war, and that its exigencies are best provided for by curicking the nation in time of peace. A system of tree trade will mainly conduce to this object. resources which it will furnish will second the services of the neutral trader, and these with our own internal manufactures, which are already ind-pendent of legislative protection, will amply supply our wants in such an emergency.

It is one and not the least of the evils of the system which we deprecate, that it has a tendency to demoralize our citizens, to habituate them to evasions of the laws, and to encourage the odinus and detestable practice of smuggling. It is the effect of the protecting duty to raise the price of commodities considerably above that, at which they could be imported at a moderate revenue duty. Unless this is so, it fails to accomplish its destin-

sequence is, the temptation to elandestine importation, and the facilities which are afforded by our widely extended inland and ocean frontier, give immunity to the smuggler.

On the several interests of agriculture, navigation, commerce, the mechanic arts, and even on manufactures themselves, this avere operates with an injurious influence. Speaking with reference to that portion of agriculture, which is employed in the production of articles which must be exported to a foreign market, it is obvious that any considerable diminution of commercial capital, by its transfer to other employments, must have a tendency to diminish their price. It is in the southern portion of the union that this will be most extensively It is in the southern felt. The domestic market will consume a portion of its great staple, which is, comparatively, small, and the immense residue will seek in vain for a fureign market. if the manufactures of other nations are in effect, and permanently excluded from our ports. things may not at once occur.

The necessity of having a supply of the raw material for the employment of her manufactories, may induce our great customer to submit, for a time, to a system of purchase instead of exchange; but she will be urged by the strongest considerations to seek that supply from those who will receive her manufactures in return. this system be rendered permonent, and pushed to the probability extent, to which it seems inevitably to tend, the fate of the cutton planter is therefore, irrevocably scaled. Nor is he alone effected by this system of pro-tection. The farmer of the middle states will feel it: influence in the increase of the price of labor, as well as of every article which he buys; and if those in the mainflacturing districts should find an improved market for the produce of their farms, the considerations just stated, will operate to diminish their profits-and the benefits which they enjoy from the increased investment of espital in their vicinity, will be purchased at the expense of those interests from which that capital has been transferred.

When we direct our attention to the influences of the protecting system on the navigation of the country, we might give to the subject a peculiar interest, by dwelling on the fact, that a ship is the promises and most successful of our manufactures. From an early period of our instory down to the present hour, we have been conspicuous for our skill in ship building. Advert ng to it as an art, we have by the elegance of our models, and the minuteness of our finish, raised it from a mechanical, to one of the fine arts. We have applied the principles of a correct taste to naval architecture, and have therefore produced the same masterly result in this, as the application of the same principles had produced in the other arts. We might then with perfect fairness and propriety, press the inconsistency of that policy, which seeks the prosperity of manufactures, by loading with burthens that branch of them which has flourished with but little aid, and is necessarily subject to exclusion from the jealousy of foreign nations. We might connect this topic with our navy, and our naval glory, and thus enlist in the connection of patriotism. But we wave our behalf the sensibilities of patriotism. But we wave these advantages, and without entering into details, content ourselves with adverting to the positive discourage ments to ship building, occasioned by the tariff of 1828. By that tariff, iron, hemp, thick and cordage, are subjected to duties which would be in effect prohibitory, if these articles were not of the first necessity, and the importation indispensable. The quantity of these articles which enter into the construction of a ship, with the labor bestowed on them, constitute one half of its value, and the duries upon them impose upon a new ship of five hundred tons a dry direct tax little short of two thousand offilmer, which is paid in advance. We say a 22, direct tax, for it is not, as in cases of consumable articles, repaid by the consumer. Neither is it repaid by the lengther, for the rate of freight deponds on foreign competition, and the foreign ship, cheap, because undurcheaperition, and the foreign ship, cheap, because undurcheaperition, and

ed, settles the price.
The effects of the proteeting system upon commerc in general, can only be automotorily illustrated by details, it is an important task, and will be faithfully performed by those to whom it is confided. The diminution of im-

ports-a total or partial searcity of some articles-an increase of price to the consumer, a depression of the mercantile spirit which, under different circumstances, would be animated to new enterprises, and the consequent eleck to our attainment of that height of prosperity, to which the freedom of our institutions guides us, these are results which cannot be denied. That actual misery is not felt in a young and free country, where almost every citizen is or easily can be, a proprietor, is not an argument to deter us from the removal of those obstructions to that assured and unexampled ease and comfort of condition, to which the American citizen aspires and is entitled. If to the easy acquisition of good cheap land, tie can likewise add, not only the necessaries, but also the blameless luxuries of life, why should be be churdishly prevented by a sordid and monopolising system, which finds enjoyment in restriction, and profusion in prohibition?

Erery class of manufactures which is not the object of the bounty of this system, as well as the mechanic arts generally, are injuriously affected by its operation -Nay, even those manufacturers, who experience this protection are themselves interested in the removal of these restrictions-The enormity of the profits, in many instances, combined with the uncertainty of the continuance of the system, give to this employment the character of a gambling speculation, rather than that of a regular pursuit of industry. The high rate of profits would occasion a rush of capital from other pursuits, and competition would specifily reduce them to the general level, if the precarious tenure by which they are held did not a restrain the movement - Such of them as are adapted to the circumstances of the country, and conducted with the cequisite skill and industry would continue to flourish although legislative protection were withdrawn. altrough registative protection were winterawn. Incy would still gives fair return for the capital and labor which they employ. The rate of profits would indeed be less, but they would be certain, or liable only to those changes which are common to the whole productive industry of the country. It is with this view of the subject, that the best informed and most intelligent among the manufacturers themselves, cannot resist the conviction that the abandonment of the protecting system, and a return to moderate duties, would be best esiculated to promote the steady growth, and the safe and permanent establishment of American manufactures.

There is a remaining suggestion which we desire to present to your consideration. The national debt, which has annually absorbed from ten to twelve millions of rehas annuary assured from ten to twerre millions of re-venue, in rapidly diminishing, and will speedily be extinguished. On the first day of January, 1833, the available funds of the government will be adequate to its discharge. The exiting tariff of duties will produce thereafter an immense amual revenue, beyond the ordinary wants of the government, and the task of providing a system of measures which shall be adapted to this new and interesting condition of the fiscal concerns of the nation, will then devolve upon the next congress. How propitious the moment for the establishment of the prinproprious the moment for the establishment of the pro-ciples of free trade! An euterprising and intelligent peo-ple, possessing in abundance the sources of national wealth, and perfectly unencumbered by debt, may add to wealth, and persectly unencumpered by debt, may and to their claim upon the gratitude of the world, for having auccessfully asserted the principles of free government, by being the first also to proclaim the principles of a free and unvestricted commerce-that genuine "American System," which will remove from our borders every vestige of discontent, give more value to the freedom, which was wrested from the grasp of oppression by the valor of our ancestors, and perpetuate those institutions which are ilestined, by the blessing of God, to secure the happiness of unborn millions.

piness of unborn millions.

Friday, ofcoder 7. The convention continued its deliberations.

Mr. Lawrence and Mr. Cambrelong of New York, were invited
within the bar of the convention.

The president announced the order of the day to be the report
of the general committee.

The president announced the order of the day to be the report
of the general committee.

The president announced the order of the day to be the report
of the general committee.

The president of the conventions as to one or two
of the views presented lend of the conventions as to one or two
of the views presented lend the conventions as to one or two
of the views presented lend the conventions of the representation as to one or two
of the views presented lend to the conventions as to one or two
of the views presented lend to the conventions as to one or two
of the views of the convention as to one or two
of the views of the convention as to one or two
of the views of the convention as to one or two
of the views of the convention as to one or two
of the views of the convention as to one or two
of the views of the convention as to one or two
of the views of the convention as to one or two
of the views of the convention as to one or two
of the views of the convention as to one or two
of the views of the convention as to one or two
of the views of the convention as to one or two
of the views of the convention as to one or two
of the views of the convention as to one or two
of the views of the convention as to one or two
of the views of the views of the convention as to one or two
of the views of the

The convention having agreed to go into committee of the whole it is obvious that this diversity of opinion will open a wide field for discussion, and may tend to produce necessary and exist is to desire is to produce harmony of opinion on the means of attasiang

for discussion, and may tend to produce unparamit remit. Conderive its produce harmony of opinion on the means of attaining
our object.

The product of the product of the product of the conventions
of the convention that the product of the conventions
who has not under up his mind with member of the downership of
the convention should dopt the motion which I prognetis. If the
convention should dopt the motion which I prognetis of
the convention should dopt the motion of the product of
the district which may be objected to I hope that the
members will be in its power, and it may bear a motion to strake
members will be in its power, and it may bear a motion to strake
members will be in the product of the product of the conmitted of the product of the product of the product of
we shall be able to agree upon instruction to the committee of
we shall be able to agree upon instructions to be product or
pointed to draw up a memorial which all the members of the conpointed to draw up a memorial which all the members of the
whole be discharged from the consideration of the address.

The control of the convention would set with the many.

Mr. Goldinton the convention would set with the many.

Mr. Goldinton the convention would set with the many.

Mr. Goldinton the convention would set with the without the
taken for granted that all who approve it. It must, he sad, be
taken for granted that all who approve it is must, he sad, be
constitutional. It must not be thought however that it are
who upone it, think it unconstitutional. Every one fas a right
will exist a difference of opinion. Although I don't think the tracommendation of a product of the constitution, who differ from
me in opinion. The malers of the convention, who differ from
me in opinion. The malers of the convention
of a certain article of the convention
of the determination
of the difference of opinion may not be determination
of the bare of the convention of the
of the hadrest consistent wheter and the construction of the to ome win our tenow cruzens to outsine the object which we have in view. I regret that I cannot unite with some of the membrace in view. I regret that I cannot unite with some of the membrace of opinion may not after our object. As to the aburred the construction of the construction. The construction of the construction proven the construction of the construction part of the constru

handly any the integrity or the terrentitie class of our citiken.

In the perfect of the perfect of the second of the second of the

Len.

This government is founded on the affections of the people. It

would ask those who believe that the restrictive policy repriselve

the country, whether its benefits are to be compared with the

country, whether its benefits are to be compared with the

first country, whether its benefits are to be compared with the

first country, whether its benefits are to be compared with the

first country, whether its benefits are to be compared with the

first country, whether its benefits are to be a compared

for preventing unnecessary discussion. I product the best mode

for preventing unnecessary discussion. I product the best mode

for preventing unnecessary discussion. I product the best mode

for the carried and the parently, to the cond of the eighth paragraph.

I wish the address of the concluding sentence in the trans
to look at the last clause of the concluding sentence in the trans
to look at the last clause of the concluding sentence in the con
posed by the gentleman from the object of the amendment pro
posed by the gentleman from the configuration of the prevention o

Mr. Gellatin, hoped that the names of the members who voted on the amendant would be recorded.

Mr. Grain, hoped that the recorded on the amendant would be recorded.

Mr. Grager, of South Care between the recorded on the amendance would be recorded.

Mr. Grager, of South Care between the recorded to the state of a triple good the words included in the mendments, to try for striking out the words included in the mendments, to try the soun for doing so. What is contained in this address is not even some for doing so. What is contained in this address is not even some form, but in the vapinious which prevail among my constitutional, and would vote for the dedress. He to be unconstitutional, and would vote for the dedress. He to be unconstitutional of the state of t

marks of the groulemen.

The yess and says were then taken on the motion to amend, and 33 voted in favor of the amendment and 150 against it.

Mr. Johnson, of South Carris, objected to that part of the address which approard to him objects which approard to him objects which approard to him objects which approard to the sadjects which approared to the s

may grant protection to manufacturer, in not only contrary to the constitution, but a false principle in political economy. I sold it is to be impossible that you can grant protection and raise revenue at the same time. Whenever the power to raise revenue is grant-cell, the power to protect is destroyed.

Mr. Berrien. The report was framed not realized the prominers with which that proper was framed in explicit of compromite with which that report was framed, I above to the seminous expressed in the address. We advance no new doctrine. We are in concert there and at home. We found our conviction on this subject, upon the inevitable connexion which subiats between a bas been given in any mode by the constitution, to protect manufacturer; but we do sucert that there is a grant of power in the constitution to impose taxes for revenue, involving a power to protect articles on which the duty is imposed by omitting to impose the views, I loop that the greatlemen will see the necessity of submitting the question to the convention without discusion.

More some further observations by Mr. Berrien, the question was, on his motion, taken on the adoption of the address,—year, 156; nays, 29. So the address, as presented by the committee, was adopted.

186; 1834, 187. Ou ture however, or the convention proposed two resolutions. The first provided for the discharge of the committee to which was entrasted the preparation of a memoral to congress. The second was for the apparament by the presented of the control dent of a committee to consist of the member from each state re-presented in the convention, to prepare a memorial to congress, and instruct the committee to collect evidence in support of the memorial, and attend personally at Washington, and urge upon the national legislature the injustice and unequal operation of the

tariff.

The question was put on the first resolution, which was adopted.

A member moved to amend the second resolution, by inserting the woods, "and is in many respects infinitely more oppressive on the poor than the rich."

on the poor than the rich."

The mover supported his amountment by some observations and free the control of th

Mr. Gellain hoped that the amendment would not be concurred in. He did not know what was meant by the term lobby members. But he was willing to go, as a volunteer, to Washington, to promote the object of this convention. A member advocated that part of the resolution objected to. Such a committee would be useful. He had known such members as the gentleman from South Carolina salled lobby members; to be sent from the great state of New York, and even from South Carolina. De Witt-Clinton and Government Morris had setted in

that expectly.

The duty of the committee would be to collect for the Barrier. The duty of the committee would be to collect for the committee would be to collect for the control of the collect for the coll

Mr. Cheves moved that the last resolution be referred to the general committee. The year and and nays being required on that resolution, the year were 190, and the nays 2.

The resolution to appoint a committee to confer with the nvention which is about to assemble on the 26th inst. at New

Yerk, was then called up. Mr. Poindexter advocat dexter advocated the appointment of the ec

Art, reminister invocated the appointment of the committee, and hoped that conclisions measures would be adopted. Mr. Horper opposed the appointment of such a committee the believed that it could have no good effect, but would rather be prejudicial to the cause. There was no ground of conclision on which the committee could meet the New York convention on which the

On motion, the convention agreed to take a recess until half past four this afternoon. At half past four in the afternoon, the convention re-assem-

The committee appointed to confer with the Pennylvania de-legation, with reference to the payment of represe of the con-vention, reported through Mr. Basent, of Vinginia. The Penn-ylvania delegation had resulved to bear the entire expense, and refused all participation of payment by other portions of the con-vention. It was then unanimously resolved, on modium of Mr. Basett, that this convention express their deep sense of the obli-gation they are under to the area to the obligation and participation and therefore the extension of the participation of the participation and liberal accommodations. The committee appointed to confer with the Pennsylvania de-

attention and nortal accommodations.

It was also resolved, that a committee from each state be constituted, to have a certain number of the proceedings of the convention circulated among their respective constituents.

ion circulated among their respective constituents.

The president here observed that the unfinished business of the moraing, was the resolution providing a committee of six to wait spon the tariff convention about to assemble in New York, which had already been submitted to the convention.

A motion was made that that resolution be indefinitely postpo

6. Mr. Parsons, of Alabama, said he was disposed to vote against be resolution, but he desired to see it treated with proper conside-stion and deference, and he hoped the resolution to postpone in-dinitely would be withdrawn. It was not withdrawn, and Mr.

Poindexter, of Mississippi, demanded the ayes and nays upon the question, when it appeared that 123 gentlemen voted for the post-ponement, and 39 against it.

question, when it appeared that 122 gentlemen voted for the posponement, and 30 against it.

Reselved, That a vote of thanks be presented to the citizens of Philadelphia, for the courtesy and hospitality panificated towards the members of this convention to the convention.

Reselved, That the thanks of this convention be presented to Reselved That the thanks of this convention be presented to the present of the convention, and that the members of this body picked themselves to recommend his paper, the Bonner of the Constitution, to their constitutions, as every way entitled to their partners, to their conventions, and that the members of this body picked themselves to recommend his paper, the Bonner of the Constitutions, to their constitutions, are every way entitled to their partners, re-Lorands, of New York, off-red an amendment to the second, to the effect, that every member of the convention go forward, subscribe to, that pay in advance for, Mr. Reguer's paper. The resolution as amended, was sunanimously and rherefully accredit to.

animode, was sunanimously and rherefully accredit to.

On motion of Judge Barbour, Mr. Gallatin was appointed chairman of that committer.

On motion of judge Barbour, Mr. ontarin - an appearance to man of that committee, man of that committee, It was, on motion, resolved. That the letter of Mr. Sarchett, that of Mr. Ronaldson, and other documents that had been com-mitted to the table; be referred to the committee to address com-

Mr. Sedgwick, of Massachusetts, offered the following resolu-

Mr. Sedgravick, of Massachusetts, offered the following resolu-tion, which was unanimously adopted: Resolved, That we tender to the president of this convention our warmest thanks for the able, zealous and impartial manner in which he has discharged the reaponsible duties of presiding

in which he has discharged the responsible dutirs of presiding officer of this body.

Judge Barbour here rose, and in a brief, appropriate, and eloquent speech, one of the happitst efforts that we ever remember,
returned his shanks to the convention for their approbatory recolution, and expressed his deverg grafification at the harmony
which had prevailed throughout the deliberations of that body,
and his conflicted hope that their appeals and deliberations would
an one of the their speech of the deliberation of the today.

On motion, the convention then adjourned inte die.

#### NEW PROOF

Of Mr. Calhoun's efforts to undermine the president, as early as the first year of his administration.

From "the Globe," of October 7.

the first year of his administration.

From "the Goles," of Octabe, "A of the Section of the United State of State o letter of Mr. Speer:

## MR. SPEER'S LETTER.

MR. SPEER'S LETTER.

MR. SPEER'S LETTER.

Weathington, 31st Dec. 1899,

"Brahington, 31st Dec. 1899,

"Inally concluded to wait, to have something more definite; but
finally concluded to wait, to have something more definite; but
in you not when I should arrive. On the first day after my arrival
in this place, accompanied by our two standars, I waited on the
percident, for the purpose of laying before him your excellency's
the interview, I though I was warranted in anguaring the most
flavorable circumstances; and, indeed, the observations of the
flavorable circumstances; and, indeed, the observations of two
flavorable circumstances; and, indeed, of constitution of the conflavorable circumstances; and, indeed, of constitution of the conflavorable circumstances; and, indeed, of constitution of the conflavorable circumstances; and, indeed, of contracteries and if is, to endeavor to supply. It. I sent in my
specificances and if so, to endeavor to supply. It. I sent in my
specificances and its of the purpose of ascertaining if any thing
and deficient, and if is, to endeavor to supply. It. I sent in my
solve to the war office. I now began to think the path was not
not cited, particularly from some other omers. I had already enside president, and had requested them, in any increased
which the president, to endeavor to bring up, incidenstally, this claim, and to secensin what he intended to do in the
site.

'taily, this claim, and to ascertain what he intended to do in the 'matters.

'It was Mr. Calhoun's fortune to meet him first, and the subject was broached, when he president app-ared to be averse to the 'whole claim. In the first place, instead of reasoning the question himself, he had, as it appears referred the whole matter to 'the secretary of was, and was waiting for his report, but, in the mean time, that there might be no delay, if supposely, had made was him in against the before the examined the rule, but when the last of the delay it had been delay if the process of the had way that it reasons. They were sarrous—not one of 'which had 'now for his reasons.' They were sarrous—not one of 'which had

says thing to do with the merits of the claim. First, the payment of South Carolina would induce the payment of Massi-chaustrial and this circumstance was a prominent objection to the payment of our sared. Again, the payment of South Carolina State, and the state of South Carolina State, the payment of the ciam would be a violation of the custablished basing of the government and laws of the land!! When driven from all the positions, as preficely unreastile, he settled down the owners of the positions of the proficely unreastile, he settled down the community of the state of t

on the president, in company with Mr. Hayne, found his dispession the president, in company with Mr. Hayine, found his disposition towards the South Carolina claim such as warranted the most favorable arguery as to the result of his minion. He says, "the lawes while," Mr. Speer then enlisted in favor of the claim the vice president and the members of congress from South Carolina; and it aeems that Mr. Speer, I sailing to obtain a second interview Mr. Colhours, "whose fortune it was to meet the president first," and on broathing the nitiget to ascertain his determination. Mr. Colhours informed Mr. Speer to ascertain his determination. Mr. Colhours informed Mr. Speer to ascertain his determination. Mr. Colhours informed Mr. Speer to ascertain his determination. Mr. Colhours informed Mr. Speer to ascertain his determination. Mr. Colhours informed Mr. Speer to ascertain for a second on the creating first his report.

"That the her near time he and made up his mind against us (the South Carolinalus) before he examined the subject."

"That is the mean time he and made up his mind against us (the South Carolinalus) force he examined the subject."

They were that "the payment of South Carolina would he the means of the house the payment of Massachusetts."

Thus "the payment of Massachusetts (colonial days the substain of the established using of the government and the laws of the land."

It seems from Mr. Calhoun's account of Mr. Speer, that "the eseems rom 50%. All main's account of Mrs. Sperr, that "the black of the speriment of the speciment of the speriment of the speciment of the s

objections to the claim, which could not be combatted, because they could not be seen."

If the second here endered by Mr. Calboun to South Carolina, the could not be seen."

If the second here endered by Mr. Calboun to South Carolina, the could not be seen."

If the second here endered by Mr. Calboun to South Carolina thought on the county through the county through the county through the county through the county throughout the war—depending almost entirely on a foreign market for ing from the interies states, the polatitetion of her commercians peculiarly trying; yet her aniest live of country mode away as a caroline on her part tolerable. After the war was over, she still love enfie on the part tolerable. After the war was over, she still bore enfie on the part tolerable. After the war was over, she still bore had on the election of her favorite one child the rational deliteration of the United States through the apent instructed to a special message on the tubicts: through the apent instructed to a special message on the tubicts, as itsel an act of congress be appeared, authorising a settlement of the demands of this state on equitable grounds. "This is the language of the instructions of parawed, authorising a settlement of the demands of this state on equitable grounds." This is the language of the instruction of the insuling subscringer by which the president this point of the insuling subscringer by which the president is also as the still insuling subscringer by which the president is also sources. Nothing could be better calestated to take from the president the respect of the functionaires to whom the form to high a source. Nothing could be better calestated to take from the president the respect of the functionaires to whom the form to high a source.

South Carolina had committed her interests, nor to alienste the affections of the whole people of the south. Even Massachusetts had deep eause of complaint, if a design to prevent the allowance of her own just claims had been urged as a reason for defeasing those of other states.

nt her own just claims had been urged as a reason for defeating three of other has been gridered in chapter and diap-Mr. Speer in his brightest extra gov. Miller would also he very auch surprising to every body. "He repeats, that is when the papers were left with the general he supressed hunself as clear years and the surprising to every body." He repeats, that "when the papers were left with the general he supressed hunself as clear Speer was a menager in Washington, and that he should have made inquiry to find a effect, to explain to him the sudden change in the practical to the surprise of the surprise of the precision of the surprise of the surprise of the precision of the surprise of the precision of the surprise of the

mej. Eaton and family. That the president appeared "determined to sink or swim with a biographer."

This the president appeared "determined to sink or seein with to logerphere, form of a seeinty seern mere, possept than the ass. But that "the form of a seeinty seer more, possept than the ass. But that "the form of a facility seer receive y where and grant Econo and family are tiving alone in the city of Hashington."

This explanation, it will be seen, resurves the loss of the South Corolina claims into the prejudices exicin a gainst them, in consqueries of the drie gainst of this state of the seed of th

when the continue favorites.

What will the people of South Carolina think of the author of this artfully contrived tale, when they learn that it is entirely untrue—a fabrication which reverses every important fact as they stand recorded on the archives of the senate. We will give a succinct narrative of the facts in the case, which

will be found sustained in every particular by the documents anpeard.

nexed.
On the 15th D-c-mber, 1829, Mr. Speer received his eredentials from the legislature of South Carolina and an impressive letter from the governor, requiring for the store "the friendle; consideration of this claim by the president, and his recommon relation to congress for its payment, should it comport with his views of

"justice."
Mr. Speer arrived in Washington about the commencement of
the Christmas helydays, and on the day after his arrival had a
treatment of the Christmas helydays, and on the day after his arrival had a
terrally continued to the continued of the continued for
clear upon the subject" (to Mr. Speer), that "the thought the matter swited."

In the spirit thus manifested by the president be immediately went to work to investigate the claims of South Carolina, that he might have the pleasure of doing justice with the utmost prompti-

tude to the long deferred rights of the state.

On the 16th of December, Mr. Hagner, third suditor, acknow-lenges the receipt of the documents, in all likelihood the same day rings the receipt of the documents, in all likelihood the same day on which the president received them from Mr. Speer. Thise documents were received through the secretary of wer with a note from him to Mr. Hagner, "enquiring [whether his] office afforded any information as to the unione and patieulars of the

chim."
On the 23th of D. cember, Mr. Hagner replied and furnished
asterments "setting forth in detail the deductions made on the
settlement of the accounts of the state (of South Carolina) which
furns the basis of the claim."
Mr. Hagner, it will be asen, in the same note refers to the documents "to show the causes of the deductions," and the expressly
states that the claims were excluded (with the exception of intestates that the claims were excluded (with the exception of inte-

the the control of th

This report, dated the 28th of December, had probably, in the interim between that and the 31st, came to the knowledge of Mr. Calboun, and in his conversation with the president, having allution to the former settlement of the claims under his own au-

thority, he formed the conclusion that his decision would prove an estopped to the president's recommendation of ut-claims of the conclusion of the conclusion of the control of the control carriers to congress—and it suited Mr. Calboun's interest to accept the fastere of the application of the governor and legistative to the 'making influence" of major fasteron and the screetary and taster, rather than inpute it to his own decision with regard to state, rather than inpute it to his own decision with regard to the control of t

was sent to the governor, maj. Eaton mode a report to the previous cont, in Sarvor of allowing the claims, on the principles constended for by South Carolina.

The trivet letter of the law gave the states interest on money. The trivet letter of the law gave the states interest on money. The trivet letter of the states and the states interest on manages interest, to make advances, and astituting the list interest, the point interest, to make advances, and astituting the list interest, the point interest, the make advances, and astituting the list interest, the point interest, the states for firm availing himself of the strict letters. Major Estons, for firm availing himself of the strict letters, and the states of the sta

The president, a will be seen by his nessing of the 4th of Jan-witten two days after the report to him, presents the subject to the sellste of the United States. After explaining the respect of Sauth Carolina, and the days imposed on him, he says: "This days! I perform with the greatest pleasure, being will traighted that no inducement will be waiting to recure to the "shains of a member of the confederacy, that has under all cir-vales and a member of the confederacy, that has under all cir-ben many among that the present the cause of the country.

retunstances shewn an ardent devotion to the cause of the country, the most a map justice."

After presenting the same favorable view of the principal channel of South Carolina, with the secretary of war, the precident that recommends the whole claim to the kind confideration of congrest; he say:

congress; he says:

"Activing upon an enlightened sense of national justice and gro"litude, it is confidently believed that congress will be an initially
of this elsins, as it has been of others put lowered by the states,
that, in periods of extreme peral, generously contributed to the
service of the union, and enabled the general government to dicharge its obligations."
Thue, in least than trently days after the governor and legisla-

charge its obligations."
Thus, in least than treenty days after the governor and legislature had acced on the subject of the claim, in South Carolins, side periadent comply with their utmost expectations, by urging it on the attention and invoking the "justice and gratitude" of congress in its favor. In conformity with the periad net wishes, congress, which consider their report on the subject is followed by the military consmitted at congress, which consided their report on the subject as follows:

"As the elimitite are of opinion that relief ought to be granted, they therefore reported a bill." The bill, as a matter of course, was passed to a second reading,

The hill, as a matter of course, was passed to a second reading, and there the class was dropped; southern cloquence remained with the course of the present of the course of the present of the course of the cours

of South Caroline's mond of the rights of the state! There must be some strong reason for such strongs aparbor upon this sub-We have no inclination to indulge conjectors upon this sub-We have no inclination to indulge conjectors upon this sub-bous had an interest in consigning the whole subject to individual. His whole story of the president's hostility to the claim, and of the bors of favor by the southern delegation, through the Keston and Van Buren influence, would have been exposed by the successive through the properties of the sub-stant Van Buren influence, would have been exposed by the suc-essacy that her homest claims should be urged on the executive and congress, and that the prople should understand that their applications were neglected, or, what it worre, netcoe, because the high-minded representatives would not stop to obtain their executive to favor the subject interest, that the cloning entire their executives, for an particular interest, that the cloning entirests. titions from the favor of the wife of the weretary of warf. It was necessary, too, for a particular interest, that the closing netteres of Mr. Speer's letter to the governor should have some countemers, and that, those concerned might be enabled to incute at the belief that the president were avered to the whole interest of the tooth. This sentence which is emphasized in the original, is, we have a construction of the content of the cont

"One word as to the tariff: There is not the least hope of a "change for the better; and, as firr the executive, he is not only lagainst us in the matter, but in common conversation severely 'censures the whole proceeding of our atate."

MESSAGE: From the president of the United States, communicating docu-ments from the legislature of South Carolina, relating to the claim of that tatte for advances made during the late war. To the senate of the United States:

To the senoite of the United States:

I have been requested by the tignisture of South Carolina, as will appear from the documents accompanying this communication, appear from the documents accompanying this communication, the United States of the Carolina of the United States of t

By a reference to the department of war, for information as to e nature and extent of these claims, it appears that they con-

stat for-tal. Interest on moneys advanced for the United States, which have been heretofore reinbursed.

2d. Certain advances, which, on a settlement of accounts be-tween Jointh Carolina and the United States, were disallowed, or superised, by the accounting officers of the treasury.

sweed South Carolina and the United States, were disallowed, as superiided, by the accounting officers of the treasury. Sources the same of the control of t

January 4th, 1830.

Executive department, Columbia, 18th December, 1939, My dear sir: The state of South Carolina has a claim against the United States, for advances made during the late wir. The state of such claim against been directed by resolution of the legislature, to request the irendity consideration of this claim, by the president and his recommendation to congress, for its payment, should it compart, with his rives of journe.

Alexander Spece, esq. our principal fiscal officer, is constituted a special agent, to artend at Washington, and superintend the investigations incident thereto, to who a you are referred for in-

formation. It cannot have escaped your recollection, how imminent was the danger of the whole southern cauntry, during the late way, when the British flet howeved on the coast alter the exputer of Washington. The United States were under the most soleno and communicant soligation to protect this state, which they were unable to do, and left us to use own resources. In the implication of advances made by us, interest was withinked, and substances made by us, interest was withinked, and continuous and the substances and the substances of the continuous secrifices which is made to the global continuous and the substantial continuous and that the continuous continuous and that government, which omitted to do what the constitution enhanced shops it. on the part of that governmentitution enumed apop it.

constitution enjured apporit.
It was entirely intertain for some time, whether Cherletton,
or Savannab, or New Orieans, should be the object of the attects
of betterfor, when they let the Chesapsake. That a deep sotietided should have been left, and the most energetic mean deward. by South Carolina, in this critis, was to have been expected,
would be south carolina, in this critis, was to have been expected,
as would exclude many found flid beliggreat expenses, could not
be rationally a stricipant. To your now a knowledge of the drillculters, as well as to a sense of justice, and pledged laith of the
defear government, we apply all for a pumpir and flinal liquidation
ideal government, we apply all for a pumpir and flinal liquidation
ideal government, we supply a first primary and flinal liquidation
ideal government, we supply a first pumpir and flinal liquidation
ideal government, we supply a first pumpir for the first primary of the control of the United States. ser, your most obedient, STEPHEN D. MILLER His excell my Andrew Jackson, president of the United States

## IN THE HOUSE OF AEPRESENTATIVES

The special committee, to whom was referred that part of power-trot services of the power-trot's message, upon the claims of this state, for money ask-anced to the general government during the last was together with the comproller general's report on the same subject, have had the same under consideration, and beg leave to report, have jour committee have examined the state of the demand against power-trother than the same is just, but and equitable, and then it is necessary that the same should have comproller general, be subthoried and directed to general general consequences and continued to the substitution of the December 1 of 18 to

that it is desirable that the executive of the state bring this claim to the view of the president of the United States, through the ugent instructed to proceed to Washington with the claim, so as to procure from him a special message on the subject, so that an act of congress be spased, authoring a settlement of the demands of this state on equitable grounds, und to this end the committee are of a pishon the containt stentions of our agent will be neces

ry. Your committee recommend the adoption of the following re-

solutions:

I. Resolved, That A. Speer, now comproller general, proceed forthwith to Washington, to protecute the demands of this state against the general government one comproller general, be allowed one thousand dollars for his services, and in live of all expenses in protecting the claim of this state, and that the same be paid him out of the contingent fund by the governor.

Though the agent, with the president of the United States, so us to procure from him a special message to congress on the cerecities of the said claim.

rectuess of the said claim.

I do hereby ectify, that the foregoing is a true copy of the original report, considered and agreed to in the house of representatives, and concurred in by the senate, und of file in my office.

R. ANDERSON,

Clerk of the house of representatives.

December 15 1820

Il ar department, 2d January, 1829.

Sir: The application for the state of South Carolina which has been referred by you to this department, has been considered, and the papers are returned.

Sirt The application for the state of South Carolina which has been referred by you to this department, has been considered, and the papers are returned.

It is presented to be the state of the papers are returned as a state, on account of moneys horsewel for the use of the presentence, and where the advances were from a bank of the state, the faunds being the property of the state, the objection, however, consists in this that on the centure has congress gone far ther; a faulty presented, and where the state had paid it, or insurer a limiting to pay it. Thus for the principle has been admitted in limiting to pay it. Thus for the principle has been admitted in limiting to pay it. Thus for the principle has been admitted in limiting to pay it. Thus for the principle has been admitted in limiting via the proposed some common which will be found detailed in the report of the third auditor which accompanies this communication; and by war reports of committer in the emant and hause of representative and the state of the constitution of the state of the property of the chird auditor which accompanies this communication; and by war reports of committer in the emant and hause of representative and the state of the property of the chird auditor which accompanies this communication; and by the results of the account which relates to arms supplied by the report of the account which relates to arms supplied by the state, has berectorior been admitted, and an offer made to result to the supplier of the control of the department applicable to such an object, legislation between the such as a phylogography. The amount annually appropriated by the three are no launds applicable to such an object, legislation between the such as a force and the surfaced with arms or money. But as there are no launds applicable to such an object, legislation between the such as a force and the surfaced with arms or money. But as there are no launds applicable to such an object, legislation becomes necessary. Very respectfully,

tomes necessary. Very respectancy,
The president of the United States.
Treasury department, admitter's affice, 28th December, 1820.
Sir: I have the honor to ucknowledge the receipt, this mortang, of your note of the 30th instant, esclosing certain shearment respecting the estim of the sixe of South Carolina, and inquising the particulars of the claim.

In reply, I have to observe that the printed book, being one of the decuments before meutioned, contains topics of statements, and the particulars of the claim.

In reply, I have to observe that the printed book, being one of the decuments before meutioned, contains topics of statements, made on settlement of the accounts of the state in this office, which form the basis of the claims, (except so far as concerns interval), and also the causer for those deflections. The extrement and, with the contains of the claims, (except so far as concerns interval), and such excess to those deflections. The extrement and, with except so all the important items, in small reconstructions of the cause of the c

The bon. John H. Enton, secretary of war.

# MESSRS, BRANCH AND EATON.

MESSRS. BRANCH AND EATON.
From the Raighp Register, Ordor 6.

(Gov. Branch, late secretary of the navy, passed through this eigy
on Tuesday last, on his way to Tennessee. He called upon us to
request the publication of the subjoined correspondence, for the purper publication. In that appeal, with a view of counting a resorment which be did not feet, maj. Eaton introduces a note from the
governor to the persident of the U. batter, in which he expresse
themel in terms of great friendship and respect. This note is made
to bear date on the with January, two days subjective to the famount communication made to governor Branch and his associate,
mount columnication made to governor Branch and his associate,

Menra. Berrien and Ingham, through the Instrumentality of cel. Johnson, and presents the governor in the attitude of being means enough to profess the most arelat friendship for the president, two days after that officer had offered him an indignity which ho independent man would brook. This was well calculated to independent man would brook. This was well calculated to independent man would brook. This was well calculated to and we feel a high degree of gratification therefore, he being while to furnish incontestible proof, as the following notes do, the to furnish incontestible proof, as the following notes do, the the correspondence between him and the president occurred before, instead of after the communication from colonal Johnson, major Estons has raised his superturecture. It remains for major Estons to explain how the date of governor Branch's note was ultered from the 17th to the 17th January. That an afteration was made, child reference in the proof of the property of the proof of

other, it has given Mr. Eaton a momentary triumph which this explanation must construct.

On the 20th of Jasuary, the president of the United States, addressed the following note to governor Branch has the desired the following note to governor Branch has the president with his respects to governor Branch has the pleasure to inform him that he has say surrow Branch has the authorised the president to say to him that he will with pleasures to find the president to any to him that he will with pleasures of major Burry whenever it may suit governor Branch and his contrainance—the president communicates that with with much pleasure as he hopes all misunderstanding will be explained. "To this note, governor firanch returned the following answer, the state of the 20th of January, instead of the 20th, as represented by him:

represented by him:

represented by him:

"Navy department, Jon. 27, 1830.

"Dara sir: I have received your note of yetserday' date, and do must cherefully accept your friendly mediation; mere, however, from a desire to give you an additional evidence of the friends present of having gives to major Zaton just cause from a convisionness of having gives to major Zaton just cause of the franches which I trust will zere characterise my conduct, I agree to meet him this day at two o'clock, in the presence of major Barry, at Mr. Vao Buren's, and in his presence also.

You's truly,
To the fraction of the United States.
To the president of the United States.

JOHN BRANCH.
To the president of the Thinder States, I have a good the conduction of the Thinder States.

Let you was a supplied to the Thinder States.

To the president of the Thinder States.

Let you was not a Title und not the 20th, that gor. Branch also will conclusively, from its date, that it was on the 37th und not the 20th, that gor. Branch replied to the president:

replied to the presseent:

11 will not be in my power to accord to day to the suggestion of your note to the president I will address you. The surprise of your note to the president I will address you. I H. EA TON, On the next day, Mr. Eaton addressed the subpoined note to gov. Branch, which shows from its date, that it could not have been the 19th upon which her addressed his note to the president. Sire major Brarry will be at my office presently who may be present if you have no objection to the interview proposed, and which may take place at your reson or my sor na you may prefer. I will come over or you can come here. Respectfully,

To this note, Mr. Branch replied that he would meet major factor in the office of the attorney-persent, under the major fattry and the attorney general, and the meeting accordingly took place in a few moments therefatter, as will be seen from the following heaty note from Mr. Eaton to the governor. "Mr. Bertien is in his room, if you will walk over. I have no

There having been some discussion in the Georgia papers, on the subject of the sentiments of Nilson Lumpkin, the candidate for the office of governor of Georgia, in reference to general Jackson, Since the contraversy between general Jackson and Mr. Calboun, in which Mr. Lumpkin took a part, we give the following conclosive letter on the subject, which we find in the Milledgreille "Usion."

one concentrate tetter on the subject, which we find in the Milecpeville "Union." Morrae, 10th Schemher, 1531.

Continents A report has resided me this morning, that a post littled combination, who understood me the morning that a post littled combination, who understood the first standing of every man who returns to pict to their mondate, have a new arrangement in preparation to misrepresent and do me great injustice. The story is, they are strongling to make it appear that I is matically to their model of the standard of the standard

They must presume upon the ignorance of the people. I rely upon their virtue and intelligence. Respectfully yours, WILSON LUMPKIN.

Messes. Polhill & Cuthbert, Milledgeville, Geo.

# NILES' WEEKLY REGISTER.

FOURTH SERIES.] No. 8-Vot. V.

BALTIMORE, OCT. 22, 1831.

(Vot. XLI, WHOLE NO. 1 048

THE PAST—THE PRESENT—TON THE PUTTING

EDITED, PRINTED AND PUBLISHED BY H. NILES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN ADVANCA.

The cilitor, having been appointed one of the delegates from the city of Baltimore to the convention of agriculturalists, mechanics, manufacturers and others, of agriculturalists, mecanines, manuacturers and outer, a favorable to the protection of the national industry, to be held at New York on the 26th instant—will, of course, be absent at the period of the next publication of the REGISTER, and, probably, for some days thereafter. He has, therefore, given up more that an usual proportion of the present sheet to the insertion of artieles from manuscript, deferring much stock-copy as more convenient for use in his absence; and, that the lee-way may be brought up and certain interesting papers be issy be prought up and certain interesting papers be inserted with reasonable promptitude, he has arranged the issue of a supplement, to get-in the fifth annual re-sort of the Baltimore and Ohto rail road company, the anti-masonic addires, and several other long articles which must be published several other long articles and, having now disposed of the chief proceedings of the "Free Trade convention," he must make room for those of the Protecting Convention, about to meet at New York. In a fair and just presentation of the doings of opposing parties, the public intelligence will be best

We do not esteem it useful to offer many remarks on the proceedings and address of the late "free marks on the proceedings and address of the late "free trade convention," at present. They will, no doubt, be taken up by soler hands at New York in the ensuing week, and differing views be presented to the consideration of the American people,

We have to regret, however, that the proceedings and address have an imperative or menacing character—that
modifications of the tariff laws are thrown out of the question, and nothing but "UNCONDITIONAL SUBMIS-sion" is offered us! The principle of protection, under which our government has acted from the beginning untd the present day, must be yielded to new readings of the constitution, and a vast majority of the people give way to a small minority -- because the latter wills it!

We hope that the friends of the tariff about to meet in convention at New York, will not be excited because of convention at New York, will not be excited because of these unreasonable doings—but proceed in the business that shall present itself for their action just as if the "free trade" convention had never been held; and, though resolute in defence of their principles, and conscious of power to protect their interests, we desire that all moderation may be observed, as no doubt it will, and the reason of the people be calmly appealed to, for the support of such laws as every civilized nation under beaven has felt it necessary to enact, that its population, and wealth and strength might be advanced and sc-

Very large meetings of the people have been held in Very targe meetings of the people have seen field in Boston, New York, Ptilladelphia, Baltimore, &c. and in many of the smaller towns or counties of numerous states, to appoint delegates to the New York convention, at some of which very able resolutions were passedbut room has not been allowed to notice them at length. out room has not been answed to notice them at length.

At the Baltimore meeting, held last Saturday evening, in
the great hall of the Exchange, we are pretty confident
that more persons were present than at all the anti-tariff meetings held to appoint delegates to the "free trade convention," those at Charleston alone excepted -- which were numerous, because of the high excitement of poli-fical part es. Not many of the anti-tariff meetings contained so many as twenty persons--some of only five or six; the meetings in Philadelphia and Baltimore, on that side of the question, were attended by only 31 persons; but those on the other side by at least three thou-\*and---the bone and the sinew of these grest eities---a full representation both of capital and production.

Vol. XLI.--No. 11.

We present some further accounts of the proceedings of the "free trade convention," (received since our last), and believe that a sufficiently full, and certainly, fair history of the proceedings of that meeting is now given, except a roll of the members with their places of residence, which shall be inserted as necessary to a right understanding of the constitution of the We wish that the same courtesy may be exmeeting. York—by the editors of "free trade" napers.

"The "Richmond Whig," after copying the article from the last "Register," which gave the names of some distinguished individuals who had declared the constitutionality of a protecting tariff, says-

"It is in the memory of many of our citizens, that in federalism in Virginia to wear any other than domestic manufactures. Every importer or consumer of foreign goods then was no better then a tory. Now how change goous then was no better then a tory. Now how changed! Those were the palmy days of the ancient dominion. The revolutionary leaven had not yet entirely exaporated. Now we are really to sell our birthright for a mess of puttage, and bow at the notstool of foreign manufacturers; our anger, our complaints, our indigna-tion, all, all, are reserved for our krethren of the North, the Yunkees-on whom, reductantly enough, was forced the protecting system, by the south, the east, and the middle states.

"We will try to procure the file of the Enquirer, and if we can find the 4th of July celebration reterred to, will publish it."

The last paperaph relates to the exhibition of a home-made shirt, by a governor of Virginia, on the 4th of

July.
What the "Whig" says is true. It was "rank federation" to doubt the propriety of protecting domestic manufactures in 1808. And this calls up the recollection of a lact,—that John Randolph, being about this time "a nutsance and a curse," declared his utter rejection of American manufactures, because the use of them was considered "patriotic." And every hody, old enough to turn their memory back to the period spoken of-lrom 1808 to 1812, must well remember that John Randolph was then regarded as an apostate—totally se-parated from, and universally despised by, "the republican party."

It is generally believed that the cusning session of congress will be the most interesting and exciting, if not the most important in its results, of any that has been held for several years. It will contain, at least, four parties—and how they will work together, or against one another, in "compromise" or "combination," by the hope of "reward," or fear of "punishment"--no hu-man being can tell; not even Mr. Thomas Rucha!--. though a "momentous crisis" is certainly at hand-Mr. Randolph having arrived last week at New York, from a ten days residence at the capital of the autocrat of the

I lave received a copy of the "Liberator," and come in for a share of the editor's reproof for having said, that "a sudden emancipation of the slaves, either by force or through principle," would be an awful calamity. I shall not argue the right of my opinion with the madness of a man who is doing all possible injury to the cause of emancipation, which he affects to support; and increases the difficulties that stand in the way of ren-dering efficient service to people of color, bond or free. It is a great misfortune, that persons so impotent to do good may have a mighty power to ito evil. I was the friend of black men before Mr. Garrison was bornhis fever shall have left him.

SQUALLY! By an arrival at Boston from Cronstadt, we hear that the Russim government had notified the French ambassador, that his presence was no longer necessary; and that his passports were ready! If such be the fact, the belligerent feetings of France will not any langer be restrained. Civil war the people will have, it foreign war is not declared.

In seasons of adversity, handreds of thousands of worthy persons in the United States, if they did not secretly wish a general war in Europe, have, at least, been wil-ling that it should take place-the same persons, grateful for the general and quiet progress of our country in pupulation and wealth, are fearfully alive to any event that may unlinge the present regular state of business, and wish the continuence of peace.

SPECIE. It is only about ten months since, that the "New York Journal of Commerce" congdained of the superabundance of specie-"that the legal interest on a mass of title equital would be almost half a pullion anpually"-that how "to be relieved of the incumbrance [of specie] it was not easy to see"-that to stop a "drain of specie, congress imposed a burdensome daty on the goods bought with it"-that the "Chinese had taken it their therty millions of gods" of silver, were saling for merchandize," and go "our market for specie was lost" -that 's vortex was wanted where we might carry ough after eargo, throw it in, and never see it more," &c. &c. See REGISTER of January 15, 1831, page 353.

On this article we made some columns remarks—ra-deavoring to account for the abundance of money, in the duccess of the "American System"-and because of new and profitable applications of capital and the mightily increased circulation of values; saying, however, that several things might hopen to afford a "yortex" for our apecie, without 'having our streets with "k," as the Journal of Commerce suggested might be a means of relievant ing us of the "meunibrance!"

Specie is now in "demand," and may be said to be "searce," because it brings a handsome premium: about seven millions have been fatterly exported, and other millions are preparing to follow; the banks bave, necessarily, curtailed their accommodations, and a very conadderable degree of pecuniary embarracament begins to The payments on account of the public debt about to be made, it is supposed by some, will relieve the existing pressure—but as much of the stock is ownthe existing pressure—out as much of the stock is own-ed in Europe, and exchange is far above the real par, additional exports of specie may follow such payment, and an increased want of money be felt—rather than that relief which is anticipated. For, we think it will be freely admitted, that every silver dollar, forcibly drawn from the United States in the payment of foreign debta, reduces the ordinary and safe circulation of money and tess than five d. Bars. Such is the law of scarcity and supply. A small deficiency or excess affects the whole mass, of any and every merchantable commodity.

It is the excessive importations, notwithstanding the "burthensome duty on goods bought with specie, the Journal of Commiscee had it, which now makes a fearful, because forced, "sortex" for dollars. These heavy importations, (exceeding in the sum of 30 or 40 millions the amount of our exportations, judging by the amount of the duties which it is raid will be secured in the present year), may be in part caused by the reduced price of labor in England, in the increase of paupers, and the necessity of making public sacrifices that the working people may be unjulyed and kept out of mischief. The poor rates in England are above 35,000,000 dollars—now, if by favning-out miscrable beings to the makers of mon, and others who require much manual power, easily detected by a few skillal individuals, the poor-rates pay be abated—the poincy is a wise one; bepoor the open be anated—the policy is a wise one; be-eause, by this operation foreigners may be compelled to assist in the support of the English poor! It is "throwing out a sprat to eatch a mackerel." Thus—a person in England, entirely able to perform severest necticut-slaves or oxen.

and, if my life is a little lengthened, expect to be so after | animal labor," must have, say, 6s. a week for his subsistence; the parish here him out to an iron-maker for 4s. and pays the balance needful to his support. Thus, the iron-maker is enabled to send his products abroad, and, by employing English paupers, interferes with the and, by employing Logara propers, intercers were use employment of valuable edizans of Permsylvania, whose right to the enjoyment of "life, liberty and the pursuit of halpbiness," to one will have the impundence to deny. It is not worth while to carry out this propoaction any further-for it has the stamp of demonstrotion upon its still the "free traders" will say, and Bri-tish subjects declare, that American freemen who "know their rights and knowing dare maintain them." should encounter such a competition! But we shall see should encounter such a competition; but we share see that the high-minded and hard-fried working people of the United States will nutify the debasing project of their enemies—that they are not starce, and will not suffer themselves to be reduced into pumpers, through any hostile combination of interests to effect enber. will speak and be heard-if not, FELT: Theory will not fill the bellies of their wives and children, nor a cut-load of huzzar bake an oven of bread! They must and will understand these things. Our "philosophy" is, that every careen of the United States shall be protected against the pauper-labor of England, and the eraft of her agents, located among us to evade the payment

of just ditties on goods insported.
The excessive importations of the present year may have been in part caused by the increased privations of the English laboring classes, and the indispensable ob-ligation of providing a subsistence for them. The supply of foreign woolien goods, we are told, has no paral-icl except up the ruinous importations of 1816—hence the price of such cloths have considerably falten, though the rate of exchange has much risen, which latter should have increased the selling price of British goods to the United States-and an ample "voitex" is opened for our specie! But we think that there is yet another cause for these heavy importations. No one, after the repeated evidences that we have had of the fact, can doubt that it has been the paticy of British merchants and manufacturers to create "gluts"—that the manustroyed. Such a course of praceeding has been openly avowed in parliament, and approved by no less a man-than the present lord chancellor of Great Britain, the learned and s gacious lord Brougham; and to the operation of this British policy, we are of opinion, that the present demand for spece is partially owing.

When, some months ago, we spoke of the excessive demand for and high price of wool, we regarded them as the result of sheer speculation, and intimated more than once that they were not of demestic origin. It is known to several of our correspondents that we directly ascribed them to the British policy spoken of-that the American woollen manufacturers might be embarrassed; and, to one at least of our friends, the whole course of the supposed operation was suggested and its effects culculated. It was, however, hoped that the matter would pass over without extensive injury, and deemed impulitie (by those whose opinions we respect), to give publicity to the conclusions at which we had arrived, for reasons stated. But it will be remembered, that we earnestly advised the farmers to put the money in their pockets for their wool, and promptly. Out of this rise in the price of wood, it was manifest that our manulae-turers must make cloth at a much increased expense, or arrest the progress on their works-and thus a forced humness, or a lessened supply, of wootlen cloths, would follow. Such was the state of things, that many manufacturers became sellers of wool-convinced that they could not work it up to an equal profit at the existing price of the material. Better proof than this cannot be offered that there was some artificial excitement to advance the price of American wood, on which our mann-facturers chiefly depended. Well, this being effected, and, before supplies of foreign wood could be obtained and made into cloth (though paying a real duty of more than 50 per cent. on its cost, which, in itself, has our

"Such as two-footed hoeing machines in South Carolina, and four-footed and horned ploughing-machines in Con-

hearty approbation), we see that the market is overflowed with British woollen goods, the heaviest importation ever made, as we are informed, since the mad year of 1816. Who does not see management in these proceedings—first, in an excessive solvance in the price of American wool, and then an excessive importation of British woollens -- and thus the citizens of the United States, not only embarrassed in their own proper pursuits, have forced contributions levied upon them for the support of British paupers, and the British armies of soldiers, placemen and priests. And these contribu-tions, it is the pleasure of Grent Britain, shall be made in silver and gold. She excludes at present, as it were, all the products of the states north and west of the Potomae, containing three-fourths of the people of the United States—she taxes tabacco and rice at a most enormous cate, and for the only article freely admitted cotton, she will give only a low price. But the end is not yet: unless this disastrous operation is checked-with the arrest or destruction of our woollen manufacture, down, down, goes the price of American wool, and millions worth of labor and millions in capital will be sacrificed. As it was in 1818-'19-'20, so will it be againerinced. As it was in 1818-19-20, 80 will to be again-and, as the great public revenue derived from impor-tations in 1815-16, effected, as it were, a general rain of private individuals—so will the prosperous state of the finances in 1831 involve the country in distress, in a sudden appreciation of the value of money, and con-ecquent decline in the value of labor and lands and improvements. A heavy revenue derived from importa-tions more generally shews the want than the wealth of a country-but if received from internal resources, may afford a just measure of its prosperity. These are principles that cannot be refuted. They will endure and apply, as long as time remains.

TREASURY DEPARTMENT, Oct. 6, 1831. Whereas, notice was given by the department on the 1st inst. to the proprietors of the four and a half per cent. stock of the five millions of dollars, created in pursoance of an act of congress of the 26th of May, 1824; and to the proprietors of the five per cent. stock, created in pursoance of an act of congress of the 1st of May, 1820, that the certificates of the said stocks will be redeemed on the 1st and 2d of January next respectively; and whereas, some of the proprietors of the said stocks may desire a rembursement of their certificates previously to the aforesaid 1st or 2d of January, notes is hereby given, that, on the presentation and surrender by the proprietor of any certificate, or his attorney duty constituted, at the treasury, or at the loss office where the same may stand credited, any time previously to the aforesaid 1st or 2d of January notes will be reimbursed, and the interest which shall have secrued thereon to the time of such surrender, will be paid.

[The public debt will receive a heavy reduction in the present year—for the revenue will be very large.]

ANEICAN INSTITUTE. The annual fair of this institute was held hat week, at New Yurk. There were 800 exhibitors, and wast crowds of persons attended to examine the goods; according to the product of the product of the second was the winters in a single day! Many of the articles were of the first class for the goodness of their quality as well as beauty. Specimens of hemp and wool are highly spoken of, and the finest and best grass hat, "ever imported or exhibited" was present, the work of a young lady of Comnecticut. The shew of iron goods and wares was extensive—so were those of wool and cotton, in great variety and excellence—especially broadcloths and earpeting, and some handsome silk manutactures. As we expect to give a pretty full second of this fair, as well as of the exhibition of the Penalkin Institute, at Philadelphia, it is not necessary to descend

to particulars just now.

After the conclusion of the fair, Ethward Everett, eaq. of Massachusetts, delivered an oration in St. Matthews' clurch, which will be justiced by the special of in lofty terms, by those who heard it—in number about 2,000, though yet a greater number is outled to press themselves into the building; and didders, larners, book be outled not press themselves into the building; and didders, larners, book be

was received with fond applause, notwithstanding it had been requested, by the president of the institute, that such should not be given in the church—but it was the former of the orator often to make the feelings of the audience captives to his cloquence, and keep the attention of a three crowd rivited on him for an hour and a half. He was warmly greated at the close.

FRANKLIN INSTITUTE. We have delightful accounts of the late aplendid exhibition of domestic magniferines, at Pulladelphia. Many of the delegates to the "free trade convention" attended, and, probably, never before saw any thing better calculated to excite patients for length of the property of our common country. How "gold and dead" would any one be that could not find pleasure in seeing the hundreds of faminated at dates of cotton which pass from the interior of the southern states to the sea-board, to reward labor and capital?

Among the articles exhibited were two splendid pieces of broad cloth, worth \$10 a yard, made out of American wool, and hearing this inscription—"The manufacturer's skill, and the widow and the orphan's labor."

It is stated that many of the "free trade" delegates, on seeing the goods exhibited and ascertaining their price, were astounded at their quality and cheapness, as well as at the variety and extent of them. The greater part of these persons have no idea that leather and its manufactures are worth more than the whole crop of cotton. — that such transfactories are protected by a day of thirty per cent, which they think must needs be "a tax on consumers" and yet that these manufactures are at least thirty per cent, cheaper in the United States than in Great Butain! Thus, instead of paying ten millions tax because of this protection, ten millions are saved because we make and manufacture I ather at house. I well remember when large quantities-tens of thousands of pairs of shoes, were imported-now we expert tens of pairs of snotes, were imported—now we export tens of thousands of pairs—so with hirts, cabinet warrs, chairs, coaches, studitery, natis, grinpowder, copper, cotton goods, See. Is the duty on like goods, if imported into the United States, charged on the cost of our own when purchased by foreigners? If so, John Bull must be a "confounded fool" to trouble himself so much to keen them out of foreign markets, or counterfeit them. John isn't a fool-he is much closer allied to something else, in all matters of trade!-as some of his doings to prevent the sale of our manufactures in South America have cleariy shewn.

NEGRO CLOTHING. From 1824 until 1828, the chief supplies of coarse woollen goods for the southern narket came from the northern states—and were acknowledged by those who used them to be better and cleaper than any with which they had ever before been havished; but after the forced duty on coarse wool, the Cauton company, of Massachusetts, whose works cost the Cauton company, of Massachusetts, whose works cost \$100,000—assignated operations, and the establishment, after remining fille until last spring, was then sold to a new company for \$120,000—and such cloths as had

\*The leather mode in the state of New York was hast year soluted at \$2.905,750—say three million in 1810 reported at only 1,079,742 dollars—or less than 1810 reported at only 1,079,742 dollars—or less than one eight of the whole materials in the type. But, to bably, the present manufacture of leather in New York is equal to one fifth of the whole made in the United States—say 15 millions. From inquery, we estimate that the labor of hoot and shore-inackers, addlers, See, is about 60 per cent, of the value of the leather, for an average, and think that 7.815 of all the leather made passes through the hands of the dependent trades or manufactures. Then—

Whole value of leather, as a material \$15,000,000 Advance on 13 millions worth of leather,

at 60 cents in the dollar's worth of its

19,500,000

Total annual value 34,500,000 Now this allows only 205 cents to each person, including all the uses maile of leather, for boots, shoes, sadddlers, harness, book binding, coach and trunk making thin building. now are out of the market. The effect of these pro-seedings rests where it should. Left-handed legislation bas met with its reward.

Again-we have many and valuable manufactures of Again—we have many and valuable manulactures of cotton canvas, cotton onaburgs, cotton flannels, cotton blankets, and a very strong sort of cotton goods called beaverteens. All these are cheap—much cheaper than such necessary articles were ever before supplied for such necessary articles were ever before supplied for our consumption; and the new applications of cotton should also be respected by those who produce the commodity! But neither such cheapness in price, nor demand for their product, seems to have any degree of influence over the heated passions of the south. These manufactures also, must be destroyed, it possible— though, as in the case of coarse woollens, fifty per cent.

may be added to the cost of clothing the slaves.

There is something in all this that is not reducible to any fixed rules of action among thinking men. The cry of distress prevails among the cotton planters of South perous and entirely content. The one blames the tariff as the suthor of every evil—the other supports it as a source of invaluable good.

MANUFACTURE OF EDGE TOOLS. In the last volume, page 394, we briefly noticed a valuable factory of edgepols at Chambersburg, Pennsylvania. Since then have learned some other particulars, which we shall state with great pleasure-to shew the success that has attended an important branch of manufactures, which we ad soprehended would be a much longer time in reaching that degree of perfection which is indispensably necessary to obtain the home market, because of the quality and price of the articles offered to the consumption.

This establishment owes its present extension, if not its origin, to the tariff of 1828, though its products are rather incidentally than fully protected. It is scated in the borough of Chambersburg on the Conococheague, (meaning, in the language of the Delawarea, "Clear Water") ereck—the annuly of "himbersburge". ereek-the supply of which is abundant, and the lall, within the town, is 40 feet. It was commenced in 1828, with 5 or 6 smith's fires, and now has 14. 1828, the value of the goods manufactured was 6,000 acco, the value of the goods manufactured was 6,000 dollars—in 1830, \$18,000; and that of the current year is expected to exceed \$30,000; and new works are erecting to increase the manufacture to 50,000 dollars a year. The present consumption is at the rute of 40 tons of first rate iron per annum, with proportionate quantities of steel, &c. Thirty grind stones, worth from 25 to 30 dollars cach, and weighing mure than ton, being about 5 feet in disneter and about 12 inches wide, are annually used. They are supplied from the control of the control of the control of the control of materials and york county. The transportations of materials and goods make a heavy item of expense—for about 2,000 bushels of mineral coal and 15,000 of charcoal are used, employing many persons, horses, &c. Forty workmen are used, are employed in the factory, and the wages jund amount to 7,000 dollars per annum—which, with the various other disbursements, in easily give a rapid and whole-some eirculation to money. The chief articlers manufactors some circulation to money. The chief articles manufac-tured are axes, hatchets, adzes and hammers, in all their varieties—drawing and straw knives, socket chissels, clevers, choppers, inslaves and screw drivers; and trowels, butcher's and other knives, fleshers, workers and currying knives, have been made to advantage, but the demand for the first named articles has lessen-ed the manufacture of the latter, and the quality and cheanness of these things, so far as their extent goes, places British competition at defiance, and has effect to keep and circulate a large amount of money at home, afford employment in many interesting departments,

been freely supplied for 30 cents a yard rose to 45, and I and give value to articles which otherwise would have

more, because of the want of demand.

We mentioned that certain goods from this factory liad been sent to England as patterns, and the result is altern in the following very interesting extract of a is shewn in the following very interesting extract of a late letter from Mr. Duulop, one of the proprietors. He says "We [Dunlop and Madeira] a few days ago received a letter from Messra. Levley and Meredith, hardware merchants in Philadelphia, stating in sub-stance, that they had just received a long letter from James Cam, of Sheffield, England, to whom they had forwarded, by order of his son, \$50 worth of our goods as patterns, in which he says—the is very much uleasted with them and that they are agreently the goods as patterns, in which he says—the is very much pleased with them, and that they are exceedingly neat and well finished, but that the prices are too hiw, and that he cannot furnish such tools at their price to sais any market in the United States. We sold him the goods at our RETAL PRICE. He wishes to know your wholesale prices. The English workman has great difficulty in bitting your patterns, and asks a considerable advance on any new article. We need not fear any competition with the English. American tools of the larger sort are from 10 to 20 per cent. better thun the British, any how."

Such is the prompt effect of the enterprise and taalluded to is one of the largest manufacturers of beavy cuttery in England; and he shrinks from the competi-

Those who recollect that the British manufacturers These wild recollect that the Dritish manufacturers for the foreign and the home market are very different persons—will easily understand this. The quality of American manufactured goods generally, because of an equal responsibility, is the same, (if not better in some eases), as of those which are manufactured in England eases), as of those which are manuscured in England for home consumption, and their price is generally about the same. This fact is especially known in all the chief manufacturers of leather, skins and furs, wood, &c. such as boots sail slives, hats and caps, wood, ecc. since as boots but stores, nate and caps, ships and cabinet wares, for examples—all which are handsomely protected in the United States. The ag-gregrate value of the class of manufactures last alluded to, cannot fell short of 70 or 80 millions of dollars a year-or much more than the whole amount of our domestic exports.

Taxes, Taxes, Taxes! The value of manufactures of leather in the United States is about \$35,000,000 15 000 000 Of hats and caps Of household and kitchen furniture, &c. 15,000,000

Of wagons, carts, coaches and other carriages 10,000,000 and agricultural tools, &c. Of coats, vests, and other tailor's work 10,000,000 Of maper, books, binding and newspupers,

and various stationery articles 10,000,000 Of (Indies) hats, caps and bonnets, lace, artificial flowers, umbrellus, &c. 8,000,000

pen-knives, wooden clocks and "wooden nutmegs" &c.

7,000,000 110,000,000

Product of other mechanics—excluding, all the makers and workers in iron, lead or other metals—in wool, cotton, and all the principal branches of what are commonly known by the term manufactures

90,000,000

This aggregate is a far less amount than the annual product of the several mechanical branches of business, and on all such products there is an average duty of

about 30 per cent.

Now Mr. Raguet, and all the "free trade" people tell us, that upon every "cradle" and coffin of the value of "In 1804, a writer in a Charleston paper extractly recommended the manufacture of a strong cloth of cotton warp and wool filling, syling it would self for from \( \begin{align\*}{l} \) first to extend wool filling, syling it would self for from \( \beta \) for the variety of seventy cents per yard. This was exactly the description of goods made by the Canton company, and sold, soon \( \alpha \) for the tarif of 1828, at from thirty the articles they supply for the consumption are of less cost than like articles in Given Brisaile. And there is a limit of the selfing price of it has been lowest for the selfing price of it has been lowest for though the selfing price of it has been lowest for the selfing price of the selfing price o

There is also a tax of five cents per pound on nails, though the price is only shout  $5\frac{1}{2}$ —a tax on potatoes, cord-wood and onions!—on hay, peaches and water-

THE PUR AND LEATHER CAP MANUFACTORY, of Messes. Packer, Prentice & Co. of Albany, (having also a ware-house in N. York), employs 200 males and 450 females, disbursing 1,800 dollars in weekly wages! The chief materials used in this factory are manufactured, or prepared, by the concern. The business transacted amounts to several hundred thousand dollars a year the wager, alone, being about 100,000. Hadn't all this better be sent to support the king and lords and bishops of England, with their army and navy and paupers? This manufacture is protected by a duty of 30 per cent. but the caps supplied from it are cheaper, far cheaper, than England can furnish them—free of duty.

How it wonks. In the year ending 1st October 1830—there were imported into Providence, R. I. 61, 837 barrels of flour, 396,988 bushels of corn, and 18,837 hushels of ryer. In the year ending October 1, 1831—72,164 barrels of flour, 243,990 bushels of conn and 172 bushels of rye.

In the first year, 43,000 bales of cotton, imported at In the first year, 43,000 bales of cotton, imported at Providence, were consumed—in the last year 53,278 bales; and the stock on hand, 50th September 1831, was 12,730 bales—to wit, 5,430 Louisiana and Alabama 5,691 upland, 554 sea-island.

5,691 upland, 354 see-island.

About 5,000 barrels of flour are annually used at one flaund manufacturing village in Massachusetts—with large quantities of southern corn, &c.

We have no doubt that a greater quantity of flour preceded from New York, and the states south and west, to New England, than is sent to all foreign nations. This business has almost exclusively grown up bewas only the wealthy people of New England that conwas only the wealthy people of New England that con-sumed southern bread-stuffs—but now, labor being ren-dered profitable, many sets of half-a-dozen villages that might be grouped, are worth many times as much as the growers of wheat will obtain from a opening of the West India ports—unless flour shall be carried in British bottoms from Canada, Nova Seotia, &c.

BROOM CORN. The manufactures of broom corn are worth some hundred thousand dollars a year, through "Yankee contrivances." A young Yankee has just invented a machine to clean it very neatly, and with great rap di-ty. If England would receive this manufacture freely—it would help to pay for many bales of thread, tape and buckram; and probably keep half a million of hard dollars for the home circulation.

"NANKIN COTTON." We have seen specimens of this cotton, and hope that it will become an interesting item in the manufactures or exports of our country. It is thus noticed in an account of the late exhibition of domestic manufactures at Philadelphia.

"But perhaps the most interesting part of the exhibition, is that of the American nankins made by Mr. Cal-let, of Paterson, New Jersey, from cotton grown by the hon. John Forsyth, of Googla. This warsty of cotton is believed to be at present exclusively raised by the above mentioned gentleman, on his estate, near Sparta, Georgia. It requires no dying, the cotton yielding of itself a natural and permanent nankin yellow color.

THE YANKEES! One man at Charlestown, Massa-THE YAMKES! One man at Charlestown, Massachusetts, has gathered 363 lbs. of synashes from one seed—snother at Portsmouth plucked an apple from one of his trees that weighed il b. 10 oz.—and the cow of a third destrously shook a quince tree, and eat a peck of the golden fruit! A fourth makes about 2,000 dollars a year by the manufacture of showing boxes to assist the operation of multifacturing the beards of suuthern gentlemen—A fifth grows mater-medious weighing 393 los. So they go on. With any thing—from a shaving box to a ship, from contriving wooden nutnegs to the box to a ship, from contriving wooden nutnegs to the use of the bayonet—from making eider to handling 32—pounders, the Yankee always wishes to "go a-head:"

the tax on every barrel that we use is not less than one; and he will sit down, with a pen knife, to make a clock out of cedar shingles-or enter for a three year's voyage to the Pacific to harpoon whales—'just as it happens!"
Two of them, some years ago, took a trip to Canton in an old sloop, in which they built an oven and commencan old stoop, in which they out an over and sendence with a manufacture of gingerbread; and, having gathered money, returned with a "considerable" eargo of teas, which they pieked up "in trade." And one who had recently, persolventure, returned from a voyage among the frozen islands of the south, to eateh seal-lately managed a team of one hundred and fifty pairs of oxen at a cattle show, marching and countermarching them like a well drilled company of soldiers, at eummand! We may next hear of him teaching a school, or handering horse-shoes—building a mill, weaving cotton table cloths, or making mouse-traps! His only motto is "onwand"-always onward.

> BALTIMOBE AND OHIO RAIL ROAD. We have the BALTIMORE AND OBTO MAIL POSSIBLE OF THE BAND OF THE PROPERTY O ers that seventy-one miles of rail road will be opened or that seventy-one miles of rail road will be opened for the transport of persons and goods in the present year; and that, not withstanding the very heavy cost of the first division, the average of these 71 mdea, with a double set of rails, will not exceed 27,128 dollars per mile. The average cost from Ellicott's milis to the Potomac will be no more than 20,168 dollars a male; which rate, it is confidently stated, will earry the road to the roal mines in Alleghany county. About two-thirds of the whole line is laid on stone rails.

> VERMONT. The legislative power of this state is in the hands of the anti-masons, having a unijority in "joint the hands of the anti-masons, having a unijority in governor, he will then be anti-masonic. There appears, however, to be a small majority against them in the house of representations. sentatives-several ballotings having been had to elect a speaker without success-three cambidates being voted

> NEW JERSEY. The election of members of the legislature of this state was held last week. One account says, that the parties in both branches are equally disays, that the parties in both branches are equally divided—another, that the council (senate) is no divided, and that in the house of representatives there are 26 Dackson and 24 Clay members—which seems to be the true result. Some division in the latter party is said to have produced this unexpected result. The Jackson party had a majority of 20 in the last legislature.

> PENNSYLVANIA ELECTION. From the quade angular warfare at the polls of this state, it is not easy to determine the real strength of any of the parties. There is the "Jackson" party, the "Jackson and Wolf" party, the "Jackson and Wolf" party, and, in some instances, the "working men's" party, and, in some instances, the "working men's" party. The first, as we understand the state of things, to their days, the second, Jackson for the time being, the third Clay against the field, the fourth for Mr. Wirt. The term "democratic ticket" has, in many there, superceiffed that of "Jackson ticket," and is made the second of the second o plees, superceded that of "Jackson ticket," and is made up, (as in Phitadelphia, for example), of gentlemen of various political preferences, but agreeing on what we regard first principles—all being friendly to the "American System." When the returns are in, we shall, perhaps, give a general statement of the result.

> SOUTH CAROLINA. A vacancy in the house of representatives of this state, lately occurred by the decease of one of the Charleston delegation, and a most ardeat campaign took place in that city. The unprecedented number of 2,700 votes were taken—for Mr. Keith, (auli lifer), 1,354; Mr. Robinson, (union), 1,346—masprity for multifaction only 8. This is called a "glorious states" of the control of jority for nutrineation only 8. In 8 is easieu a "giorious vietory," and there was a great entertainment at the eircus, in consequence. At the late election for intendent, the free trade and state rights party had a majority of 108 votes.

> GEORGIA. There has been a very close election for governor in this state, and the result is yet uncertain-

present returns, for Lumpkin 24,698, for Gilmer, (now governor) 23,792. Lumpkin is of the Chirk and Gilmer of the Trong party. We know not what they diffor about—hot they do violently differ. The "Milledge-ville Journal" 13th, bas some further returns—says, generally that Mr. Launpkin is about 1,500 votes a-head, and that 12 counties were yet to be heard from. From the manner of the "Journal," (a Troup paper), we suppose that Mr. In is elected.

Mississieri. The late census of this state shows the following results: white males 38,497, females 32,121total 70,618 whites; slaves 66,659; tree persons of color 599; grand total 136,806.

FATETTEVILLE. We think there are many reasons why a lult account of the voluntary contributions made for the relief of the sufferers by the colomitous fire at Fayetteville, should have been published. We have not beard that it has been.

Missorit. Many candidates are before the people to supply the place in congress made vacant by the inhappy death of Mr. Pettis, and the controversy is proreeding to great lengths, indeed. The Missouri Republican gives us the following extract from the "Western Monitor," tdited by James H. Birch, who is one of the camildates to represent the state of Missouri in the congress of the United States;

"We commence to-day, the nowerful speech of colonel Benton, against re-chartering this dangerous institution," and commend it, in every line and letter, to the dispossionate consideration of the democracy of the country. A letter from St. Louis, of the first instant, says-the two parties are already beginning to separate upon it, in reference to the successor of the lamented Pettis; and adds, the will have shed in vain if a bank-man is elected in his place." We know moreover-und other friends of Mr. Pettis know the same fact—that We know moreover-ned he never ecased to meribe the controversy into which be was forced, and the consequent violent end he encountered, to the desire which was felt to elect in his place, a friend and supporter of this man-destroying institution. On this chilling subject, we have the promise of mure ample developements, in the shape of a written statement, left by the deceased, for the purpose of being used by the republican party after his own voice had been hushed in death. It will add to the tame of this gallant and intrepul champion of the people, that, having borne their banner traumphant in lite, he theil a

manyr to the doctrine of equal rights and privileges."
Which, "by interpretation," means, that the bank of the United States meditated and brought about the death of Mr. Petro, even at the sacrifice of major Bid-

WHAT NIXT?

The Roston Traveller-gives an extract of a letter from a friend in Musouri, detailing minutely the cir-The writer was a warm friend ennistances of the duch,

of Mr. Petti, and, among other things, says—
"I arged the calling out of major Biddle, after the election, and at the same time I knew the major would Hut, under the same take the distance above given. leelings I would have advised my brother to lose his lee in the same way. The death of Mr. Pettis, with its attending circumstances, has wrought a complete change in some of my sentiments. I have advacated duelling in the abstract, and on principle; but this melanchols scene, the recollection of which, is filled with so many unpleasant reflections, will not permit me to countenance the practice, at least not until the memory of this shall fale. A dark cloud rests upon that transaction wherever my mind reverts to it. The course-blind, rash and morderous—which I urged in this infortunate affair, has left stings with one which nothing but religion can extract. I have had few moments of peace since the death of my worths fr end,"

The Lemperate proceedings of the parties—and it would seem that (as is generally the case), both were in fault, led to the latal result, which hurried two much

valued men into eternity.

Mn. WOODBURY, the present secretary of the navy, seems to be earning for himself "golden opinions," because of his prompt and courteous attention to duriness.

Mn. RANDOLES. The Baltimore Patriot says, that Mr. Randolnk left this city on Wednesday morning last, by steam boat, for Richmond.

Mn. CROCKETT. From the official returns of the appears that the enormous number of sixteen thousand four hundred and eighty-two votes were polled, of which Mr. Fitzgerald received the slim majority of 586

Mu. McDurrie, &c. The "tree trade and state rights" men of South Carolina seem to have a gloomy time of it, week we have an account of some great dinner given to some great man, at which there was plenty of eating and drinking, and-talking.

At an entertainment just given to governor Hamilton at Edgefichi, Mr. McDuffie and other distinguished persons were present. His excellency made a "powerful speech," and was loudly cheered, and Mr. McDuffie, on being toasted, made a speech too. The account says that "he gave a most interesting detail of the recent trial in Charleston on the custom house bond, demonstrating that, in the very spirit of the tyranny by which the iniquitous American System is toreed upon the south, trial by jury was sacrificed by the 'chicanery of special plead-ing'—he illustrated the gross incipality and injustice of the protecting system, by contrasting the conditions by nature and the conditions by federal legislation, of the northern and southern sections of the confederacy-and manifested his opinion of the proper remedy for the grievances of the south in the following sentiment:

The conservative principle of our confederated republic-the right of resisting oppression through the judicial tribunal of the country, under the sanction of state

sovereignty."

All this is very fine-nullification "up to the hub."

In Alabama, the people cat and drink and make In Alabama, the people cat and drink and make speeches, as well as in South Carolina—and they are pretty nearly as effective as those of the last named state. It seems that a public dinner was given at Tusculousa to Mr. Gayle, recently elected governor of Alahama at which also many distinguished persons were present. The following toasts shew the character of the meeting-

The memory of George Hashington, the father of his country. Never did a bather leave to his children so glo-rious an inheritance, as the example of his life, nor so valuable a legacy as his farewell address—The first should be contemplated with unceasing veneration, and the latter profoundly studied, and its principles errest-ly followed, by every American who loves his country, its institutions and liberty.

James Mudicon. A venerable patriot yet spared to us, a profound constitutional lawyer and enlightened statemen—The times demand his advice and opinions, and his countrymen should how to them as the saving

admonitions and oracles of political virtue and truth.

The union of the states. The only basis on which our federal government can stand-May it be eternal as the everlasting hills.

Nullefication. The Trojan horse, earrying within disunion, anarchy and civil war. Il once permitted to cuter the temple of our liberty, rain, devastation, and

citer the tempte of our liberry, rain, devastation, and stavery, will inevitably follow. And Mr. Gayle, on being specially complimented, among other things, recurred to the length of time which he had been in public life, the part he had taken, and the principles by which he had been governed; and con-cluded by a most masterly review of the decirine of "mul-lification," in which he demonstrated with a force and clearness not to be resisted, the unconstitutionality and

<sup>\*</sup> Bank of the United States.

<sup>&</sup>quot;The "Unionists" also seem to think that something may be done in this way, and have their meetings and dimers in various parts of South Carolina—which are numerously and powerfully attended.

danger of this modern heresy. He fortified his positions! vile scrap of filh and trash and slander that can be cullby a reference to the Virginia and Kentucky resolutions of '98, and the Virginia report of '99, and the opinions of Patrick Henry, James Madison, Tuomas defferson and Andrew Jekson, and illustrated and embeltished the whole by pointing out in the most heautiful manner the whose by pointing out in the most heautful manner the benefits which we had derived from the union, the pride and dignity of Americans wherever they were, pro-eceding from the liberty, freedom and happiness of their country, and by drawing a frightful and planness of their country, and by drawing a frightful and gloomy, but true, picture of the condition to which we would be reduced by a conflict of force because y a conflict of force between the general and state governments, and dissolution of the union, which he contended would inevitably result from the doctrine of nuldefication if practically adopted. He gave as a sentiment:

"The union. It must be preserved." The speech and toast were received with "loud and rapturous cheers."

The tollowing queer anti-nuttificatory-nullifying paragraph is from the Richmond Enquirer: the is a lucky fellow who understands it! The editor seems afraid of

his own thoughts. "The wonder with us is, how any of the friends of state rights in South Carolina, should ever have entertained any hope of redress from the lederal court. the first place, the tariff law is so constructed as to forbid the question of its constitutionality coming fairly before the court. If this be not one of the many instances of usurped power; which (to use the words of Madaga's report) the forms of the constitution would never draw within the control of the judiciary department,' the very form of the law itself would forbil it. In the second place, if it could fairly come before that tribunal, it would not be safe to carry it there. We confess, we should expect very little from a body so constituted as should expect very little from a body so constituted as shall is, so guided by victious precedents, so penetrated with strong tederal doctrines, so little disposed to pro-tect the rights of the states. No, no, our hope is not fixed on that anchor—the rights of the states must deend on the states and on the people--not on a tribunal constituted as that court is."

Mu. Coleman, recently ejected from congress by the people of Maysville district, Kentucky, has been approduced post-master at Massville in place of his brother-in-law, resigned. It is a sung office-said to be worth 1,500 dollars a year.

A "FREE TRADER!" Shortly after its date, and in the course of the mail, I received a letter post-marked at Cincinnati, June 16, and for which I was swindled out of twenty-five cents postage, -- But that's nothing-it will relieve tise finances of the general post office, and so pay off the national debt.

Cinciumti, June 14, 1831. Mr. Niles-You are a villain, and I know it. A subscriber to the Banner of the Constitution, or

W. S. Mr. Raguet had better examine his Cincinnati The hand the determine his command in the first, and arrive of "W. 3." or he'll not pay "the printer!" As for myself, I hope to survive, as well this knowledge of me, as the fraud of 25 cents; and as the gentleman so well knows me, I have taken measures that the public may know him; and if his name is worth. publishing in capitals, he may expect to see it "Registered."

Another conflinent! Some "good natured friend" has forwarded to me the "Florid-Gazette" of the 27th Aug. published at St. Francisville, Lam. by a certain "J. Eckley"—a gentleman that I am. "J. Eckley"—a gentleman that I never heard of before, who has obtained some types and a keg of ink to black The leading paragraph under the editorial head them. In a remain paragraph under the control are begins thus "We regret to see that our thick skulled, flat headed, ugly, stupid, and wicked ci-devant secretary Ingham, has again offended the public are with his compliants. He raves in one bresth like some imaginary hero in bediam, and in the next he whines about persecution like a sick chitd," and so forth. This article is followed by one in which the editor of the REGISTER is pronounced a host within himself, in the way of abuse and vituperation "calling to his aid every ed from the opposit on papers," and so forth; and simsayings of the chief organ of the nation of South Carohno

Mr. Eckley must have breakfasted on an altigator stuffed with rattle-snakes, and basted with coarse bluck Well-if such suits his own stomach and betther. pepper. Well—it but sure noting to say against his taste; and it establishes his whole hoggism wi hout doubt.

The following is from the "St. Louis Beneon," of which a senator of the United States has the credit of being the real editor:

"Our friends will see that the Jackson party has gained a great victory in Baltimore. The defeat of HERR-KIAN NILES is a double one-both se a violent anti-Jacksonist and the old champion of the American Sy-Jacksonst and the old champion of the American Sys-tem. Mr. Niles has published a Manufacture's Jour-nal-nicknamed by way of contradiationtion, Weekly Register—about a quarter of a century in Billimore; and now the author is signally and decidedly operhrown in his own city. \$CP This is the way that Juotson is

The defeat of 'Hezekiah Niles," as a private individual, was not unexpected, and is-nothing; such result having no more influence over the political character of the legislature of the state, than a hogshead or two of water taken from the Missouri would check the prowater taken from the Masonra would cheek me pro-greas of that river in its junction with the Massistiph but his rejection as "the old champion of the American System" is a-concetting, and may just for a "sign of the times;" not withstanding no person can be elected to any responsible place by the people of Biltimers, who shall openly profess himself an opponent of that system. Party has not yet gone as far that our citizens will fair-

AND NOW PER CONTRA! At a late public dumer at Cambridge,\* Maryland, Hezekuh Ndes was warmir toasted, (but the toast is unclass), and snore recently another at Chestertown," the following was given as the 6th regular toust-

H z kinh Niles .- The able sentinel, he never deserts his post: if gratitude is due to public benefacture, so is encouragement to those culightened patriots who labor to sustain national industry.

And at the great meeting of the people of Bahlmore on Saturday evening last, at the Exchange, more than a thousand of the chief capitalists or most worthy of the thousand of the circle capturates or most worthy of the productive men, (and of all politics) porties), being pre-sent—the following resolution was offered, and received in a manner that seemed to shake the nible and lofty fome under which the catzens were assembled. I wish the cidar of the "Beson," whether a senator of the nome moter which the educate were ascembled. I wish the eddor of the "Bercon," whether a senator of the United States or a more sticker of types, many occasions for such a flow of fearful gratifulle and humble thankfulness as I felt, when the bone and sinew of our popula-tion thus mexpectedly greeted me, and my valued and venerable friend -

Resulved, That the Iriends of Domestic Industry in the city of Baltimore and its vicinity, highly appreciate the services of Hezekish Niles, of the city of Baltimore, and Matthew Carey, of the city of Philadelphia, in the great cause to which they have devoted their labors; and that the persevering and ardious efforts of these colightened cauzens to inform and direct public opinion in the proper estimate of the time sources of our national prosperty, entitle them to the applause of the country.

Majorities. The triangular wars among parties in the states which require majorities to elect public officers, will probably bring about a relief to the people.

<sup>\*</sup>It may be well to observe, for the information of the editor of the "Beacon," that Cambridge and Chestertown are on the Eastern Shore, and that the people of this part of Maryland were almost unanimously opposed to the "American System" a very short time ago. Here is comfort for the Beacon editor! for st each of those entertainments were large numbers of the "chuses people"—cultivators of the soil,

for the waste of money and time which attends a performance of their duty at the polls. It seems very possible that the seats of three or four members of congress from Massachusetts and Vermont will remain vacant, because of the struggles between the "National Republican" and "Anti-Masonie" parties, which gives to the "Jackson party" the power of preventing a choice, though hopeless of electing its own candidates. Another unsuccessful attempt—the 6th, we believe, has been made to elect a member of congress from the 4th distrect of Vermont.

QUEER PARAGRAPH. The Washington Globe says—
"We imagine that the American people will consider
the peace and prosperity of the country safest under the
deliherations of the great councils composed of their comlegitimate representatives; and, trusting in their washing
we should have no fear of the union, if Mr. Clay were
thank.

ANTI-MASONAY. With the reception of such a letter as Mr. Worl's addressed to the "N-tional Antimasonic convention," we believed that the anti-masons of Massachusetts would have felt satisfied with gav. Lincoln's letter to their committee; but it seems that they are not. They first nominated Mr. Adams, late pre-ident of the United States, for the office of governor, and, he having declined, they have taken up Samuel Luthrop, each opposition to gov. Lincoln.

The resident network. There was a grand upon at the Park theatre, New York, on the evening of the 13th, because of the appearance of an English singer, samed Auderson. It is stated, that during his voyage he had so much abused the "il—dy ankees," as to have received a sound beating for it. This being noised about, the theatre was crowded, and, the moment Andreaon appeared, he was met with hisses, exteadls and cries of 'off, off." Me kep this station however, the play proceeded, and was gone through in dumb shew. Mr. A. then published a card, denying that he had spoken disrespectfully of the American people, and hoping that what happened in a private quarrel in glit not pripilise the public against him. We like the feeting displayed on this official was the substitute of the consistency that what the public against him, We like the feeting displayed on this afficient, we think, that persons dissatisfied with performers—schoold let the theatre "5-long."

Accord appearance of Mr. Anterion, produced a mighty "feor". Several thousand persons, within and mighty "feor". Several thousand persons, within and portant affair. Many fact the waterburner, had an ardious time of it. The partial the waterburner, had an ardious time of it. The partial the waterburner, had an ardious time of it. The partial of the offeuling party from the wage of that theater. The meraity of events occupy accorded oftomas in the New York papers! There were a conditionary activos in the theater, in which some Engladmen, (who appear in lawe ralled on the occasion), were pretty severely handled.

FOR NAPLES. We see it stated that Mr. John Nelson, of Frethreek, Mary hand, hos been appointed "unisiter to Naples." It so, it is a renewal of the principle of the Panamar mosion of Mr. Anderson and the more recent Constantinople offsir of general Abakson. They all rest upon the same foundation. We have no minister at Naples—there is no vacancy—and the sponument is one allogether do now, it is said that Mr. Nelson has accepted the appointment and will depart next month.

A USEFUL CITIZEN. The Fredericktown Herald gives the following character, justly due to Philip E. Thomas, of Maryland, the president of the Baltimore and Ohio rail coad company:

"He is a financier and engineer, mechanic and artist, the direct the dirliling of the laborers or a blat in a rock—ever fruitfo in expedients, and indefatigable in the application of them. In the language of a friend, the is "10 to everydding," and if a were not for his stringistic cost, he would make an excellent commanding general of an army!

CALCULATION! The Albany Argus, taking 48,000 as the basis of a representation, greate the following allottenent and estimate of the presidential election of 1852. For Jackson Manne, New Humphire, New York, Pennsylvans, Virgium, and all the rest of the states that follow on the usual list, with 5 in Maryland—total 2522; or Clay, Massechusetts, Rhode Island, Connecticut, New Jersey, Delaware and 5 in Maryland, total 47, for Witt, Vermont—7.

ENDEZLEMENT. A fraud practised on the bank of Nov York as far back as 1826 and 1827 has just been desovered, in a forced or forged balance of one of the accounts, and the amount of such settlement is 40,000 dollars. One of the chief elerks at that time is suspected of this ingenious proceeding, which he appears to have though? would never be discovered.

APPOINTMENTS BY THE PRESIDENT. Auguste Davezae, of Louisman, to be charge d'affaires of the United States, near his majesty the king of the Netherlands.

James A. Dunisp, of Florida, to be attorney of the United States for the middle district of Florida, vice James G. Ringgold, deceased.

James Buchanan, of Pennsylvanis, minister plenipotentiary of the United States at the court of St. Petersburg, vice John Raudolph, resigned.

"Crussian stora," United States vs. Ebenezer Breed & Co. We learn from the Boston Gazette, that in the case, which has been on trial several days in the district court of the United States, the jury on Friday, read of the defendants. The second was breeded in favor of the defendants. The second was breeded to account the difference of duly (about 20,000 dollars) on a certain difference of duly (about 20,000 dollars) on the difference of the provided about a year since from grant different bend which provided a since the second provided to a duty of 10 or 12 cents. This case has excited much interest.

In addition to the above the Boston Patriot remakk-Mr. Dushap moved for a new trial, which motion is under consideration by the conet. Suits have been institued on bonds given for similar importations by otherhouses in that city. The defence set up was that the sugar in question was not commercially known as low for lump sugar, and was not so valuable, selling at about the rate of powdered sugar.

THE CHOLERA. Near Novogorod thirty medical persons have been indumently measured by the people, under the pittable delusion that the cholera morbus is the effect of prison administered by the physicians and foreigners to thin the number of the Russian pessantry. So much for the respect and confidence in their superiors, and the peaceable submission to their lot, which the want of ducation breeds in an uncertainted matinal.

Not only these and other popular excesses of a similar nature, but mutinies of the soldiery, ending in the mutar of on onconsider-ble number of officers in the midary colonies, remain unpunished, and report says that discretion and moderation, that is pushlamminy and importance, will present any inquiry being instituted. So much for the vigor with which despots marms as legitimate autoers to for the security of its servants and sub-

All precautions against the disease which rawges the empire have been abundoned, relier at it is manulate of a rabble cutoreed by bloodshed and manurer the hospitals of St. Peterslung, or by the narrow and ignorant capidity of the ministers of commerce and finance, who cutter deep the contegious nature of the manday or prefer the revenue of the state to the health and safety of the community.—There is indeed an exception. One palace is encircled by an impenetrable sandary cordon and while his subjects are dying in agoins of a panish and infectious complaint, the sovereign is protected from its approach in his voluntary learnett of Peterholf.

THE CHOWN JEWELS of England are worth a great deal of money, as such things are estimated. The "invaluable jewels" as they are called in a London paper in the queen's crown, are valued at £111,900. The Atlantic, but proceeded to St. Petersburgh and returnerown weighs 19 oz. 10 dwts.-is made of gold, but is ed, some 10 or 12 years ago!
envered with diamonds so that not a particle of the gold can be seen.

THE KENSINGTON. The officers of this ship while lying at Portsmouth, Eng. had some quarrel about conguette, with certain British naval officers, for which they demanded satisfaction and so forth; they afterwards communes satisfaction and so force, they afterwards wished to withdraw their note, but it had passed into the hands of admiral Cohington. The K. passed through Spithead on the 30th August, without soluting the flag of the commander in-chief. The English are under a mistake in supposing this vessel to belong to the pavy of the United States. She is, or will be on her arrival, the property of the emperor of Russis, and never belonged to the U. S.

A LUCKY PANILY! The Beresford family in Ireland, have long been selebrated for their devotion to the ruling power in England, and ever-readiness to perform
any work assigned them—and they have been worked
fully "rewarded," by offices in the selection worked,
fastening themselves, how reliabilities and 18 hinches, of
factoring themselves, how reliabilities and 18 hinches, of
factoring themselves, how reliabilities and 18 hinches, of
factoring the selection of the selection of the selection
factoring the selection of the selection of the selection of
factoring the selection of the selection o have long been celebrated for their devotion to the rul-

BANK OF THE UNITED STATES. In our last paper a notice was inserted requesting the citizens of Nashville and Davidson county, to meet at the court house on Saturday last, for the purpose of expressing their opi-Saturday last. for the purpose of expressing their opinion in relation to the renewal of the charter of the bank of the United States. A few persons, not exceeding seventy or eighty, assembled, col. Andrew Hognes was appointed chairman and Samuet Watson, esq. secretary. As soon as the meeting was organized, Class. Biddle, esq. of reed a presmble and resolutions idealing in substance that it was inexpedient, at the present time, in substance that it was mexpedient, at the present time, cexpress any opinion on the subject. Before the question was taken, Dr. Boytl McNary offered resolutions in favor of the renewal of the elareter. The meeting was then addressed by Felix Grundy, esq. in favor of Ar. Biddle's resolutions, and by col. Andrew Event in favor of those submitted by Dr. McNary. Mr. Biddle's resolutions were adopted and the meeting adjourned sine the. [Nashville Bauner.

THE HESSIAMS. "At the bank of England," says a paragraph in the Ludy's Magazine, for December 1786, 5the sum of 471 flows were transformed in No. 2017. the sum of 471,000 was transferred by Mr. Van Ot-ten, on account of the Landgrave of Hesse, on much being due for Hessian solders lost in the American war, at thirty pounds a man." According to this calculation, the number of Hessians lost in the said war was 15 700.

[A good many of these deserted, and from them have descended some of the most worthy and respectable families in the middle states. One generation in Amees, is enough to convert even Hessian machines into ra-One generation in Ame-Lional freemen."

Bairish North American colonies. The steam ship Royal William has recently made the voyages from Quebe to Islaifax, and back, in insteren days, in-cluding all stoppages. This is regarded as an import-ant exent, because of the increased business of the lhitish colonies, on account of an arrangement of the West India trade, which has given employment to a large amount of British tonuage, at the loss of employment for our own.

It is added, that the Royal William will probably be sent to England-and her departure is urged, "that the sent to Engiand—and ner departure is urgen, "that the honor of priority in sending a steam ship across the Atlantic" may not be sentched from the Canadians by a like adventure from the United States! It is already forgotten that an American steam boat not only erossed the

"A NUISANCE." The grand jury of Spartansburg South Carolina, has presented the "Free Trade Association" as a "nuisance!" [Branches of this association have been installed in many parts of the state, and it is those societies which are deemed a "nuisance."

South Carolina, we have no floubt, will "minister to herself," and heal the political diseases that prevail withh.

BARBADOES. An account from Barlindoes, of the 5th September, states that 3,704 persons had then been found ilead in the runs, and the churches were full of the wounded.

ALGIERS. The vines and mulberries which were sent from France to Algiers, have thriven there remarkably The cultivation of cotton and indigo has been likewell. wise introduced by some Frenchmen, into the immediate vicinity of Algiers, which promises to be a valuable colony for France in more respects than as a mere marine depot.

#### BRIEF NOTICES.

Judge Marchall. A Philadelphia paper of the 18th says—We learn with heavy satisfaction that the chief justice continues to do extremely well. Four days have now passed since the performance of the operation.

Henry Smyzer has been elected a representative in congress to fill a vacancy in the York district, Pennsylvania

Tretting. The Philadelphia Chronicle says - At the Hunting Park course, on Thursday afternoon, the cele-The Philadelphia Chronicle says - At the brated horse, Whalebone, troited thirty-two miles, in harness, in one hour, fity-seven minutes, and fity-nine seconds; two hours, being allowed. He performed his task with apparent case, though some time was lost by the breaking down of the sulky. Few bets could be had against him at less odds than three or lour to one.

Silver mine. It is reported in Albany that a valuable silver ore has been, within a few days, discovered in great quantities in the county of Schoharie, in the state of New York.

Satue of Hamilton. The block of marble designed for the statue of Hamilton, has been brought to New for the statue of Fishinton, has been oragin to New York, in the brig Elizabeth, capt. Story, from Leghorn, and it is the intention of Mr. Hughes, we learn, to commence the statue immediately. His known ability as a scriptor has created high expectations in relation to this umlertsking. The statue when completed is to be placcil in the large room of the Mcrebants' exchange. place could be more appropriate for such a memorial of the man to whom this city is so largely indebted for its

the man to whom the commercial prosperity.

\*\*Description\*\*

The famous pear free planted by t Commercial prospersy.

Emilical hear tree. The famous pear free planted by
gov. Enducott in 1623, (203 years), on his farm in Danvers, then a part of Salem, has this year borne three
bushels of pears. The species is bon-creticn. This tree has survived many generations of men, and is al-most the only first settler remaining. [Sal. Reg.

A great excitement seems to have prevailed at Charleston, against Mr. Charles Melatire, a wholesale ilealer, because that certain children's handkerchiefs, of British manulacture, stamped with some offensive figures, had been sold at his store, without having been noticed by him. He says that this thing has been "blazed about the city," that "he is an innocent victim, injured beyond reparation," but it is not stated why these 75 cents per dozen things should have created so great an excitement.

A cantion. A schoolmaster in Remaclacr county, N. Y. has been fined one thousand dollers for kissing one

of his female pupils. A long toan. The bank of the United States has loaned to the city of Cincinnatione hundred thousand dol-lars, at 5 per centum—the stock redeemable at the ex-

piration of lorty years.

"Cranberry day" is hereafter to be a festival at Barnstable, (Mass.) The Journal states that the town austable, (Mass.) The Journal states that the town authorities had forbidden this valuable berry to be taken from the bogs on Sandy Neek, until ripe, and then to pay a stipulated part to the town. Sept. 20th was the

House marrying. A Catholic gentlemen and an Episcopul lady were to be married a few days since in Connecticut. The lady insisted on the forms of her own Connecticut. The lady misted on the forms of her own charefs, and the gentleman was equally pertinacious in lavor of a Catholic ecremony. Whereupon it was mu-nually agreed that each should be gratified. A clergy-man was called, and being married Episcopalls, tic couple repaired to New York, and were married over again Catholically.

An ancient Highlander. There is at present living at Grulla, in the lists of Skye, a man named John Macpherson, who has attained to the extraordinary age of 108 years. His faculties are still entire; his memory, in particular, being tresh and unimpaired. This veteran clansman, who has witnessed so many changes in his native country, still repines at the extinction of the feudal apirit by which the glory of clans and chiefs has been eclipsed. He remembers prince Charles Stuart, after the battle of Culloden, disguised as a female, and going under the name of Morag, in company with the celebrated

Flora Macdonald.

Valuable cows. At the recent cattle show and farmer's lair, in Andover, (Mass.), two cows were exhibited, one of which, with leed from a common pasture, gave from the 2d of May to the 27th of September, 586 gate from the 21 of 21 of 21 of 15 specimens, so gallons of superior milk, being an average produce of four gallons per day. The other gave in the month of June, 17 quarts a day; there was made from her milk in one month, fifty pounds of good butter.

Ladies of the South Sea islands. The Rev. Mr.

Stewart mentions, in his 'Visit to the South Sess," that emong the Nukuhivans, the belles are ambitious of white

complexions.

"The uncommon fairness," he says, of many of the females, is the result of an artificial process, followed by an almost entire seclusion from the sun. The fuice of a small indigenous vine called papa, possesses the quality of whitening the skin; and such as are particularly desirous of fair complexions, wast their whole persons every morning in a preparation of this, and wrapping themselves closely in their garments, keep within doors must of the day. When they do go out, they always make use of the large leaf of the painetto for an until and do not resort to the cosmetic again till morning.

Arm York. The three story brick house and lot, corner of Pine and William streets, was sold yesterday, by James Bleecker & Sons, for \$22,000. The lot is 28

by James Bleecker & Sons, for \$22,000, lect on Pine, and 68 on William street.

The Drovers' bank in New York was entered by false keys on a certain night last week-and, with great labor and skill, the occupants bored their way into the directors room, but could not bore themselves into the vault; and they retired after several hours!

profitless work, unmolested.

English bishops. It is confidently asserted, that earl Grey is consulting with the Episcopal bench, for the purpose of curtailing the immense revenues of some of the pose or curtailing the immense revenues of some of the bulbopries. In future the income of a bishop is not to exceed £5,000 a year, the surplus of his revenues is to go to a fund in aid of the building and repairing churches and chapels. The two frish mitres, now wearst, are at once to come under the new arrangement.

This measure will not produce any abatement of the oppressions on the people, or accomplish any public be-It will not satisfy either party in the war between

church revenues and poor rates.]

Singular lady-bird. A lady of the Russian court, in the reign of Catherine the second, kept a slave, who was her perruquier, shut up in a cage in her own chainber. She let him out every day to arrange her head dress, and locked him up again with her own hands af-ter the business of the toilet was over. His box was placed at her bed-head, and in this fashion he attended her wherever she west. He passed three years in this captivity, the object of which was to conceal from the

world that this lady were a wig.

[Memoires Secretes sur la Russie.

Gun locks. The New Hampshire papers describe a
pawly invented percussion gan lock, which is so con-

day appointed, and 300 men, women, and children, had structed as to discharge the gun sixty times with one a fine frobe. Wet weather had probably reduced the priming. The investor is 60 orge W. Morre, son of the eron one half; but from 150 to 200 bushels were picked, rev. B. Morre, of Havyfull, a lad of years of age.

Jouble marrying. A Catholic gentleman and an The lock is entirely conceiled within the stock, which is of the common ford, with the exception of the trigger and guard, the latter being divided into two parts, one of which is moveable, and drawn back when the gun is cocked, and series as the hammer by which the percussion is produced.

Rover B. Tuney. The honorary degree of L. L. D. was recently conferred on this gentleman by Dickinson

college.

Meatmorency milts at Quebec. This establishment, totally destroyed by fire in the course of the night of the 25th ult. The Quebec Gazette states, that there were in the immediate vicinity of the mills about 150,000 deals, few of which have been saved. Of these, a numiteals, two of which have been saved. Of tueles, a nom-her had been sold to different merchants in town. The mills, and by far the greater part of the timber, belonged to Peter Patterson, ear. The insurances are £3,000 on the mills, one-half insured at the Quebec of-fice and the other half at the Alliance office, and £3,000 on the deals, also insured in equal proportions at the same offices. The value of the property lost cannot be

same onices. The value of the project of the much under £20,000, nearly \$100,000.

Chief cities of the world. A very ingenious calculation is given in a late German publication of the hundred. dred most populous cities in the world. These are Jeddo, in Japan, 1,680,000 inhabitants; Pekin, 1,500,000; London, 1,300,000; Hans Ischen, 1,000,000; Calcutta, 900,000; Madras, 817,000; Nankin, 800,000; Congo Is-chen, 800,000; Paris, 717,000; Werst Chans, 600,000; Constantinople, 597,000; Benares, 530,000; Kio, 520,000; Su Iselien, 500,000; Houng Iselien, 300,000, &c. The fortieth in the list is Berlin, containing 193,000; and the last, Bristol, \$7,000. Among the hundred cities, two contain 1,500,000; two upwards of 1,000,000; nine from 500,000 to 1,000,000; twenty-three from 200,000 to 500,000; fifty-six from 100,000 to 200,000; and six from 87,000 to 100,000. Of these one hundred esties, fifty-eight are in Asia, and thirty-two in Europe; of which tour are in Germany, four in France, five in Italy, eight in England, and three in Spain; the remaining ten are divided between Africa and America.

A reverend runaway. A writer in the N. H. Patriot states that the rev. Mr. Arnold, of Ossipce, who was tried last fall at Dover for abusing a child, lately attended at a four days' meeting at Sandwich and was caught in an "astonishing affair" with a girl, a recent convert; that "astonishing affair" with a gui, a recent convert, that his parish dismissed him, and that he then converted what property he had into eash, not even sparing his wife's silver spoons, and ran away with his hopeful con-

wife's surver spoons, and the server, to parts unknown.

Mary Ann Higgins, a handsome girl, aged 19, was convicted at Warwick assizes, of administering arsenic to her aged uncle, with a view to kill him and obtain his property. The old man died from the poison; the prisoner was believed to be instigated to the act by her The old man died from the poison; the prisweet-heart, Edward Clarke, who was tried as an accessary, but acquitted. She was executed at Whitely common, near Coventry. It is supposed that from 15 to 20,000 persons were present at the execution. [ London pap.

A Boston paper of the 10th mst., says-The cod fishery on the banks and on shore has this season been unprofitable, in consequence of the innumerable dog fish which infest the grounds. Both the market fishermen from this quarter, and those who cure fish, make loud complaints of their depredations; they can sourcely get their hooks into the water before the bait is seized by the dog fish, which also strive off the cod and haddock. The dog fish are killed in vast numbers, yet they seem searcely to be diminished. At this season they seem searcely to be diminished. At this season they are so small, that their rough skins, used to polish furniture, &c., are not worth taking off. Late in the fall they are of some value. Died, on the 22nd Sept., in Albemarle county, Virginia, col. Reuben Lindsuy, in the 84th year of his age, a gallant soldier of the revolution, and a much valued

private eitizen.

-, at Wapaghkonnetta, about the 1st inst. Black-koof, one of the chiefs of the Shawanese tribe of Indians,

mer's, and Crawford's defeats, and perhaps, at the time of his death, was the last man living who was at Brad-

An old sailor. Some of the papers state that cap-tain Crocker, of the packet ship Pacific, has now com-pleted his 160th passage across the Atlantic—they should say his hundred and sixty second passage.
[N. Y. Mer. Adv.

A slave ship with 120 slaves on board, was lately wreeked on Anegada, one of the Virgin Islands; she struck so auddenly that it was impossible to unchain a majority of the poor wretches, and a large number were

drowned. "Big Sam," the British king's porter at Carlton house, was seven feet five inches high in his stocking feet, and a well made man. He was a Highlander.

## FOREIGN NEWS.

An arrival at Boston brings Liverpool dates to the 6th

Preparations were making for the coronation of the king and queen of England, which was to have taken place on the 8th of September. The bishop of Canterbury had been selected to place the crown on ther heads, who would also define the age. had been selected to place the erout of the bishop of Lon-who would also administer the oath; the bishop of London was to preach the sermon on the occasion. bishops would read the litany.

The reform bill was still progressing slowly, and it was exposed that it might possibly get through the house of commons by the time of the coronation. The harvest was every where abundant in England, and the weather remarkably good.

The French government had delivered to the national guards 860,151 muskets, 216,000 sabres and 500 pieces of artillery. The army amounted, according to actual of artillery. The army returns, to 403,000 men.

In Belgium offairs had been amicably adjusted, and king Leopold had reviewed a portion of the French army, which was to be forthwith withdrawn. His re-

ception was cothusustic. The fate of Poland is truly alarming, and calculated awaken the liveliest fears. The account of the disafto awaken the livelest fears. The account of the disaf-fections of Warsaw are repeated, and at the very mo-ment when the seeds of evil strife were germinating in the capital, the whole Russian army, in four divisions, was advancing upon it; so that under such disadvan-tageous circumstances, the liberty of the generous Poles are to be staked upon the issue of a single battle. The Russian army consists of 110,000 men while that of the Poles number but 50,000. The Polish out-posts retired before the approach of the Russians, who were within three leagues of Warsaw.

Since the above was in type, another arrival at New York, brings Liverpool dates to the 9th September.

#### ENGLAND.

The dutchess of Kent will not attend the coronation The dutchers of Kent will not attend the coronation of the kings-mor permit her daughter, the princess Victoria, (a little gard who is the prescriptive mistress of many millions of Englishmen, Irishmen and Scotchmen), to attend! Here's the rub! This proceeding had caused a great excitement, and the dutchers is pretty freshould be used in the papers, as having forgotten from whence she came.

The 'reform bill" passed through the committee of the ho use of commons on the 7th ultimo. The ordeal to which it is yet to be subjected may detain it some time longer before it reaches the upper house.

Bills were pending in the house of commons to re-form existing abuses in Scotland and Ireland.

Money was scarce in England, and a great deal of dis-tress among the merchants. A man named Keight, a workman in the mint, had absconded with 2,806 blank sovereigns -- he is supposed to be residing near N. York.

PRANCE.

About 12,000 of the French army in Belgium will remain there for a time. Many officers of the French army at Marseilles, were about to serige, and mars were

aged about 114 years. He was well known throughout the western country, as a formidable enemy in war, although the latter part of his waylaring life was devoted to the American cause. He was at St. Clairs's, Herrally and Company (Acquire and American cause. as the Caribis were continually on the alert, watching every movement which could possibly tend to advance the hopes of the fallen dynasty. The dutchess of Berri was at Massa, where report says Charles the 10th had just arrived.

BELGIUM AND HOLLAND.

A new protocol had been received requiring Belgium A new protocol had been received requiring Belgium to give up the Dutchy of Luxemburg to Holland. The Clara Politer, a district of country containing about 1,500 acres of the finest land in Europe, had been insundated and the improvements destroyed, together with the present crops, by a breach made by the Dutch in the sea dyke to the east of the Capitalem dam. What adds to dyke to the east of the Capitalem dam. Untailed Capitalem dam. the distress of the inhabitants is, the Dutch had forbid the closing of this break.

POLAND AND RUSSIA.

The accounts from Poland are filled with deep and melancholy interest. General Strumetri has retigate the command of the army to general Dembinski, compeled, doubtless, by the force of circumstances so to do, in order that faction might not have further pretext to injure his country, through their hostility and jealousy mjure nis country, introugu their nonting and jealousy of himself. His resignation is full of generous devotion to the cause of Poland. We give his order resigning the command as well as that of Dembinski on assuming it, "Warsaw, August 13."

"ORDER OF THE BAY.

"Soldiers.'—Called by the clone of the nation and your confidence, to exercise the command-in-chief over you in the secred eause of our country. I should be also be dealer of the country. I should be also be dealer of the country. I should be also be dealer of the country. I should be dealer of the country of the country of the country of the country. I should be dealer of the country of you have been exposed. Far from all feeling of selflove, I never sought the power which was confided to me; I secepted it, and have hitherto exercised it. Though I was sensible that it was accompanied with many and great difficulties, it was not my intention to yield to those difficulties, but I was resolved to be the first to give the example of that perseverance of which we have so much need in our present situation.

"A deputation named by the diet have found it advantageous for the good of the country to confide the chief command of the army to other hands. Whilst I submit with resignation to this inteference, I will adsubmit with resignation to this inteference, I will adsuch it was resignation to this interestine, a will address you for the last time, to testify to you the entire eateem with which I am filled for your bravery, your devotedness and zeal. Your country judges by what you have hitherto done, of what it may expect from you in future. The commander, whom the representatives of the nation have placed over you, is already known to you by his bravery and his resolution, since by overcoming the greatest difficulties he saved your countrymen ing the greatest difficulties he saved your countrymen from that destruction which, for a less resolute man, would have been inevitable. Let us surround him with the confidence and affection his merita deserve. In plicit confidence, obedience, the first virtue of a solder of every rank, will be a powerful support on our many first beautiful to the confidence of the confidence and I sub-had the hours programment and I sub-had the hours ouer or every rana, will be a powerful support on our side to the new commander; and I who had the honor to be at your head, may now be allowed to aspire to another, that of fighting in your ranks, and giving you an example of the discipline, which I have hitherto re-required from you, and to which I will with you willingly submit. Soldiers, let us always unite magnanimity and obedience with courage and zeal, and with God's help Poland will still rise from its rum-Poland forever. "SKRZYNECKI.

"The commander-in-chief of the armed national force."

Onnes of THE DAY.

General OF THE DAY.

General OF THE DAY.

General Of THE DAY.

Seldiers'. Called by the will of the diet from your ranks to your head, I take on me this post full of confidence and hope. The exercise of the chief command. ranks to your useus, taken the chief command fidence and hope. The exercise of the chief command is not difficult where all are animated by one leeling—that of sacraficing themselves for the deliverance of the country. Yes, it will certainly find it in your courage, and the perseverance which is able to conquer every and the perseverance which is able to conquer every thing. Gitzens and soldiers I have served among you during this national war; I therefore know the spirit that animates you, and will not exert you to obedience and order so much only I will say, that extraordinary efforts are required—only one thought should direct all our movements, that of renouncing every thing that men

prize most highly, in order to secure our independence. Whatever these movements may be, the zeal which inspires you in battle must not cool during your prepara-tions for it. If my military life hitherto, and bringing back to their families some thousands of your brethren whom you perhaps had already given up as lost, can give me any title to your confidence, I claim it of you in the name of God and your country. I know that I can only be strong through your strength; I know also the demands of the nation and the army, and will not disap-point your expectations. You shall see me every where point our expectations. I our situative the every where partake in your hardship is and dangers, but I must also be allowed to hope, that when we go altogether to the combat, you will depend on me as I do on the country and you. Its deliverance alone guides your steps as well as mine—Let us keep away every thing that might weaken the moral strength of the army, and free ourselves, and we shall leave to our posterity a free country.

"HENRY DEMBINSKI,

"Commander-in-chief, ad interim, of the armed national forces."

With respect to the choice of a future commander-inchief the votes are divided between four persons: Dem-binski Pradzulski, Uminski and Wladislaus Zsmosski.

The Augsburg Gazette, of the 24th August, states that the Poles had been compelled to abandon their enthat the 1 over had been competien to absolute their en-treachments at Blorris, and the Russians had advanced within five miles of Warsaw. The Polish army march-ed out of Warsaw on the 8th to give them battle, but before the troops had taken their positions, a smart action between the cavalry of the opposing armies took place, the Polish cavalry was defeated and driven towards the city, when a popular tumnit ensued. Generals Jankowski and Bukowski, who had been acquitted of the charge of conspiracy, were dragged from their houses and hanged, and about fifty persons lost their lives. General Dembinski, was deprived of the chief command, but reinstated again, in a few hours, much against his will.

Warsaw was invested on all sides, and its capitulation expected. Another secount confirms the previous one as to the riot, but fixes its date on the 15th and 16th

August.

A terrible revolt had broken out in the Russian military colonies, and a levy of troops had been made in the ratio of 4 men for every 600 souls. This movement it was hoped might favor the cause of Poland.

It was noped might involve eause of Potand.

Prior to Skry zneck's resignation, he had entered into a negotiation with Paakewitch for a cessation of hostifices. It was not known whether his successor wuldruraue the same course. The cholera still raged in many places, but had abated in others.

PORTUGAL. An insurrection broke out in Lisbon on the 21st August. A part of the 4th regiment declared for Don-na Maria II, proceeded through the streets with colors flying, and band playing the constitutional hymn. were cheered by the people. On reaching the Rocia square, they were surrounded by the different regiments square, they were surrounded by the different regiments of Myguel's troops, and were charged upon by the cavalry. The 4th manutaned their ground and compelled 
the cavalry to retire, but were ultimately overpowered. 
During the insurrection, Don Miguel shut himself up 
in Beleme sattle, and sent him staff to reconnector. Some 
shows were fired at them. The sounde St. Martino, and 
according to the staff of the staff of the staff of the 
country to the staff of the staff of the 
country to the staff of the 
country to the staff of the 
country to the guel, being very like him in stature. From 150 to 200 were killed. Mr. Grundy, an Englishman, had been were killed. Br. Grundy, an Engissiman, has seen baily treated by the Portuguess solders, and on spilying to the commander-in-chief, Coude de Rodadoo, for redress, the ruffian cut him with his asbee, and his mean basoneted him and left him for dead. The British consul had remonstrated, and ordered the British corvette, Despatch, to anchor in front and near to the Commercial square, to afford relief and protection to British subjects. Trade is completely at a stand, all is terror and dismay in the city; no one dare show himself out of

CONSTANTINOPLE.

CONSTANTINOPLE.

Accounts from Constantinople of the 2d August, state, that 1,800 houses of Pers, (nearly the whole of it), had been destroyed by fire 60,000 persons were without shelter and had lost most of their property.

#### BORDER TROUBLES.

From the Portland Courier,

A messenger from Mudawaska. Mr. Beker, from
the Madawaska settlement, the same individual who
was formerly imprisoned by the British authorities, in now in this town, having come on by express for the purpose of coillering with the executive of the state.

We understand that he reports that the inhabitants of Madawaska tnet and organised themselves as a town corporation, agreeably to a law of our state legislature, passed last winter. The British authorities hearing of passed list winter. The British authorities hearing it, remonstrated and threatened. Again at the time the annual election, the inhabitants met and chose a representative. The authorities of New Brunswick then came with an armed force and arrested as many as they could find, who took any part in the town meeting, and carried them off to Frederickton, probably to be im-

Mr. Baker and a lew others fled to the woods and escaped being arrested. He hung round the settlement a few days, so near as to communicate occasionally with his family, [the women being a lowed to go back and lorth from one neighborhood to another.] The French forth from one neighborhood to another. The French inhabitants yielded to the requisitions of the British and were permitted to remain, but the Americans refusing

to promise allegiance, were carried off in a body.
We understand some of the prisoners addressed letters to the governor of this state while on their way to ters to the governor of this state while on their way to Frederickton. We presume a statement will immediately be forwarded to the general government. It is time our government should come to some decision in

this business.

From the St. John (N. B.) Observer. We learn, from respectable authority, that the sheriff of York county has brought down from our territory at Madawaska, several of the parties concerned in the recent tresposses in that quarter, and who are now confined in jail at Frederickton, to be dealt with as the law directs, and as their own audaesty deserves.

#### FREE TRADE CONVENTION. From the Philadelphia Gazette.

[The following was acculently omitted, in the report of the proceedings on the morning of the last day of the convention.

Mr. Pointexter offered a resolution for the appointment of a committee to confer with the tariff convention about to assemble at New York.

The adoption of this resolution would, he said, show a conciliatory spirit, and, perhaps, lead to a satisfactory arrangement. It the tariff convention refused to confer with our committee, we should appear advantageously before the public, as having made an offer for friendly arrangement.

Chancellor Harper, of South Carolina, could see no possible good that would result from the appointment of such a committee. The two conventions differ in principle. They believe protection to manufactures to be constitutional. We believe it to be unconstitutional. They believe it to be right, we believe it to be wrong, to lavor particular branches of industry. It can be fully be savor particular oranges of moustry. It can hardly be expected that they will give up their principles, and we shall certainly not give up ours. There is no room for a compromise—no ground on which we can meet one another half way.

A motion to adjourn, prevented the question from being taken on Mr. Poindexter's resolution.

The yeas and nays on Mr. Gallatin's motion to strke

out so much of the address, as relerred to the constitutional question, were as follows:

Massachusetts. - Theodore Sedgwick, Joseph Ropes.

Massachtsetts. - Theodore Sedgwek, Joseph Boper, Rhode Hand. - William Hunter. New York. - Jonathan Goodhue, Thomas R. Mer-ceia, John A. Stevens, Issae Carow, John Consable, James Boorman, George Griswold, Benjamin L. Swa, George T. Trimble, Zebedee Ring, Albert Gallain, Ja-cob Lorillard, James G. King, Charles H. Rusell, Issae Bronson, James Heard, Silas M. Stillwell. New Jersey. - Ct. Hardenburg. J. G., Van Drek,

New Jersey.—C. L. Hardenburg, J. C. Van Dyck, J. Bayard Kirkpatrick, Miles C. Smith, Heary Clow, Henry Vethake, John R. Thomson, R. F. Stockton.

Pennsylvania.—Edward D. lograham, Samuel Spack-man, Thomas P. Cope. Maryland.—George Hoffman, John I. Donaldson. N. Carolina.—Edward B. Dudley. S. Carolina.—Henry Middleton.

Maine. -- Joshus Carpenter, Charles Q. Clapp, S. H.

Massachusetts .- Henry Lee. T. S. Pomeroy, Samuel Massachusetts. Flenry Dec. 1. S. romern, Samers Swett, Gileon Tueker, John L. Gardner, George Pea-body, Pickering Dodge, Issac New Isil, Henry Williams, Edward Cruft, William Goddard, Ebenezer Breed, Thomas P. Baneroft, John Pickens. New York.—Preserved Fish, John Leonard, Edwin Bergh, H. Kneeland.

New Jersey .- John Porter.

New Jersey.—John Porter.

Pennsylvania.—Joseph R. Erans. George Emlen.
Clement C. Biddle, J. M. Bertay, E. Luttell, Samuel F. Smith, Isase W. Sofria, Richard Price, Henry R. Watson, John A. Brown, Philip H. Nicklin, Condy Rayue-A William McIlhenny.

Maryland.—William W. Handy, Arnold D. Jones.

Fichard Booker, James M. Garnett, Samuel L. Venable, Thomas R. Dew, William Maxwell, Benjamin F. Dabney, R. O. Grayson, S. A. Storrow. Charles Cockeble, I homas R. Dew, William Maxwell, Benjamin F. Dabney, R. O. Grayson, S. A. Siorrow, Charles Cocke, John W. Jones, Walker Hawes, Philip A. Dew, John Brockenbrough, Thomas Miller, William G. Overton, George C. Dromgoole, Randolph Harrison, Charles George, Robert Hirt, Fettimand W. Rsque, Malcolm Maccharland, Thomas W. Gilmer, Burwell Baseet, H. Mucharland, I homas W. Gumer, Burwell Bassett, H. R. Anderson, Josish Ellis, Charles Everett, Alex. Gordon Knox, George M. Payne, James S. Brander, William O. Goode, William Townes, John Dickinson, William B. Rogers, William P. Taylor, John H. Ber-nard, Linn Banks, William H. Ronne, James Lyons, John Tabb, James Jones, Thomas T. Gites, Archibald Bryce, jr., James Magruder, Benjimin H. Magruder, William Daniel, jr., S. H. Davis, Littleton Upsher.

N. Carolina.—Joseph B. Skinner, Lonis D. Wilson, James Iredell, William R. Holt, Joseph B. G. Roul-hae, William A. Blount, Joseph D. White, S. T. Saw-

hae, William A. Blount, Joseph D. White, S. T. Savpt, David Outlaw, Thomas S. Hoskins, John E. Wood,
J. W. Gochran, Nathaniel Bruer.
South Carchina, "Dacharish P. Herndon, James G.
Spann, P. W. Davie, James Guthbert, Thomas Pinckrey, T. D. Singleton, Wr. Butler, Joseph W. Allston,
Henry N. Gruger, Charles Maebeth, Henry C. Young,
A. P. Butler, H. A. Middleton, Thomas R. Machel,
W. Wilkinson, Philip Talyman, Stephen D. Miller,
Wm. Pope, John Fraser, Job Jolinson, John D. Lewards, John Carter, Langdon Cheves, Joseph E. Jehwins, Hingh Wilson, J. H. Glover, T. Pinekney Alston,
Edward Richardson, William Harper, Wm. C. Preston, Henry Middleton, Daniel E. Huger, Hugh S. Pseton, Henry Middleton, Daniel E. Huger, Hugh S. Pseton, Henry Middleton, Daniel E. Huger, Hugh S. Le-gare, John Taylar, Thomas T. Player, J. Herkley Grimbal, James Rose, Wm. Smith, Thomas Williams, Trinden, James Rose, Will. Junta, Ludma, Yi., Thomas Williams, jr., Thomas Flemming.

Georgia.—Eli S. Shorter, Robert Habersham, Alexander Telfair, John Cumming, Seaborn Jones, J. Macpherson Berrien.

Mabana. — John A. Elmore, Benajah S. Bibb, Enoch Parsons, Alfred V. Scott, John W. Moore, Howell Rose, P. Waters, Henry Goldthwaite, Ward Taylor, Archibald P. Baldwin, Wm. J. Mason.

Mississippi. - George Poindexter. Tennessee. - Wm. E. Butler, Alexander Patton. -- 159 It is not worth while to repeat the names on the adoption of the address. It may be sufficient to give

those in the negative.

Against the address.
Theodore Sedgwick, Joseph Ropes. Massachusetts. Theodore Se

Massacruser.
Rhode Island. Wm., Hunter.
Connecticut. Roger Minot Sherman.
2 Mercein, Jo Connecticut. Roger Minot Sherman.

Aew York. Thomas R. Mercein, John A. Stephens,
Isaac Carow, John Constable, Jas. Boorman, George
Griswold, Benjamin L. Swan, George T. Trimble,
Zebedee Ring, Albert Gallatin, James G. King, Charles
H. Russell, Silas M. Stilwell.

New Jersey. C. L. Hardenburg, J. C. Van Dyck, J. Bayard Kirkpatrick, Miles C. Smith, Henry Clow, Henry Vethake, John R. Thomson, R. F. Stockton.

Pennsylvania. Samuel Spackman, Thomas P. Cope. .27

There were 170 votes for it. Mr. Carpenter, of Maine, however has addressed a note to the editor of the Philadelphia Inquirer, saying he does not believe the tariff to be unconstitutional—and "had given as a reason for voting for the address, that he had no objecreason for voting for the address, that he had no objec-tion to spreading before the American people, the rea-sons of that portion of the people, who, on that subject differed from him in opinion—but he wished and trusted they would not adopt them as his."

When the question was taken on the following resolution, see the gentlemen present recorded their names in the affirmative, except Zachariah P. Herndon and Henry C. Young, of South Carolina

Resolved, That a committee to consist of one memher to be selected from each state represented in this convention be appointed by the president, whose duty it shall be to prepare a memorial to congress, setting forth the cyils of the existing turiff of duties, and asking such a modification of the same, as shall be consistent with the purposes of revenue, and equal in its operation on the different parts of the United States, and on the various interests of the same, that it shall be the duty of the said committee to collect the evidence necessary to support the said memorial, to present it to congress at its next session, and to attend personally or by a sub-committee at Washington for the purpose of promoting the same.

That the said committee be instructed to insist in the

said memorial-

That the present tariff system is unequal in its opera-tion and therefore unjust, that it is oppressive because it enforces burthens on the many for the benefit of the few -unwise and impolitic since its temlency is to disturb the harmony of the union-that it is inconsistent with the principles of free government, and at variance with that spirit of justice and mutual concession, in which the constitution was conceived and adopted, operating unequally and anjustly upon the different portions of this union, having a direct and almost inevitable tendency to demoralize our people, and calculated to profince discontent among the people of the United States, by a numerous and respectable portion of whom, it is believed to be inconstitutional, and finally that its effect is to duninish the productive resources of the country, and to lessen the amount of the necessaries and conveniences of life, which are enjoyed by our people, and is in many respects infinitely more oppressive upon the poor than upon the rich.

And that the said committee be instructed, moreover, to express the willingness of the memorialists to acquiesce in such an interposition of the legislative power as ease in such an interposition of the registative power as shall be prospective in its operation, thereby avoiding any sudden revulsion which might operate with undne severity on the manufacturing interest, but leading to the desired result with the least possible injury to the interests which have grown up under the existing system of protective duties.

The following is a correct list of the committee appointed under this resolution.

Albert Gallatin, of New York, chairman. Henry Lee, of Massachuseus. William Houter, of Rhode Island. Roger Minot Sherman, of Connecticut. C. L. Hardenburg, of New Jersey. Clement C. Biddle, of Pennsylvania. George Hoffman, of Maryland. Thomas R. Dew, of Virginia. James fredell, of North Carolina. William Harper, of South Carolina. John M. Berrien, of Georgia. Enoch Parsons, of Alabama.

William E. Butler, of Tennessec.

Judge Barbour's speech on adjourning the Convention. Gentlemen of the Convention:

The expression of my sincere and cordial thanks is the only return which I have to offer you, for the approbatory resolution which you have just passed.

Not to feel gratified at such a manifestation of good opinion from such a body, would on my part betray

an utter want of sensibility and of gratitude—not that if it were clearly understood, that that question to acknowlege it, would be an equal want of canwas to be discussed and decided, we should immediately return home as we would not enter into any such

Gentlemen, you will pardon me for detaining you a moment, in giving vent to feelings ul another character, in which I am sure every member present participates.

We came hither under extraordinary circumstances, We came in bottlenet to the wishes of the great community which we represent, to somult together, with a view to diverse a constitutional and peaceable remedy for the grievance of which they complissed—that is to say, a wrongfol and oppressive system of toxaxon, We came smulst the hopes and fears of our constituence.—They indulged indeed the hope of success, yet it was a hope clouded with the apprehension of failure, from that conterriety of tiews, and varying shades of opinion, which so often prevail in numerous assemblies of men.

I congratulate you gentlemen—I congratulate our conatituents, and our common country, nay I congratulate the great principle of free trade of which we are the advocates, that the result of our deliberations has more than disappointed all their fearful apprehensiums.

It has done more—It has given to the wind, the illomened auguries of those who exultingly predicted a
pleutful harvest of distraction in our counsels, and the
scattering of fire brands, which would kindle the flame
of civil war amongst our people. Thank God! This
was not our purpose. This is not what we have done
—we came here, with peece on our lips, and in our
hearts—we have spoken the language of rence and friendje expostulation. We have appealed to our countrymen, and, in the name of justice, have eailed upon them,
for a redress of our grievances.

And will this appeal be in vain? I hope, I trust, I believe, it will not.

I persuade myself, that our countrymen, will listen with respectful attention, to the complaints of their bretilren; I persuade myself, that congress too, their and our representatives and servants, will not turn a deaf ear, to a remonstrance coming from a quarter, and supported by a voice to which even the proindest monarch, on a European throne, would feel it to be his duty, to vouchside an attentive hearing.

Should this be the happy fruits of our deliberations, we may felicitate ourselves upon having been members of this body,—we may well rejoice, that it will afford a new and gratifying proof of the value of our govern-

ment.
The experience of the late war, had furnished illustrious evidence of its ability, to carry us gloriously and triumpliently through a perilous struggle with the most

powerful nation on the earth.

This would shew its happy aptitudes for a time of peace—it would shew that public opinion, enlightened by information, and guided by justice, will atamp its lumpress upon the legislative counsels of the country. That its every form and pressure will be exhibited in the sets of that legislature, dapsening equal rights to each portion of the community, and causing every wave of discontent, which disturbs the repose of the society, to subsidic and settle down, into the profound color of perfect contentment.

That such may be the auspicious results of our deliberations, I invoke the patriotism of our fellow etizens. I invoke the justice of our common country. I invoke the genius of the constitution, and that spirit of

harmony, which called it into being.

The address was received with loud plaudits, and the convention declared to be adjourned, sine die.

We feel it due to the history of this convention to add the following letter addressed to the editor of the New York American.

1 read with concern your strictures of yesterday on the free trade convention, and submit to your considera-

tion the following remarks.

The gentlemen of the south, I have every reason to know, came to Pinladelphia with a determination, not easily shaken, to declare by a formal vote of the convention, that the tariff laws are unconstitutional. Among a variety of other arguments, they were distinctly told, that If it were clearly understood, that that question was to be discussed and decided, we should immediately return home, as we would not enter into any such discussion, or be present at any such decision. They were further informed, that we had no objection to state the fact, that a large, intelligent, and patriotic portion of the community did believe tiese laws to be in violation of the constitution; but beyond a mere statement of that, of any other fact, we were unwilling to go. Upon this point, there was the most intense interest, and an immense amount of private conversation.

The address, from circumstances unnecessary to be mentioned, was not li the blore the sub-committee at a li, nor, until it was read before the general committee, this now know how the gentlemen who after wit up proposed to stownount this most perplexing, and, indeed, only difficulty. As soon as the address was read in the committee, one of the divisors from New York made the very motion to strike out whose was subsequently repeated by Mr. Gallatin in the conventive, but, upon its heigh stated and avowed on all hands that the re-man set forth in the address were the reasons of others and used for the convention, and that if there were any expressions of the convention, and that if there were any expressions be altered, the motion was withdrawn, index the conviction that the two New Perk delegates alone remained steady in their apposition. Upon pranciple I sid not then, nor do I now see, that any thing was yielded; though, as regards expediency, I was strongly opposed to the course pursued.

Whether you will now think, Mr. Editor, that the south accorded nothing to their northern brethren, I can not say, but I can assure you, that in abandoning an express vote by the convention, that the tariff laws are a gross votation of the constitution, those gentlemen gave up a point on wheth many of them had set their hearts.

in the conclusion, I am depending to consider the terms of the conclusion of the convention, has a conclusion, that any possible ceri which might have resulted from the meeting of the convention, has been prevented. This belief I staterain because I know that the principal, and I believe all the gentlemes who that the principal, and I believe all the gentlemes who that the principal, and I believe all the gentlemes who that the principal of the contract of the conclusion of the contract of the c

A member of the New York delegation.

#### PRICE OF COFFEE, &c.

Communicated for the Baltimore American.

Memoranda of the prices of St. Dominigo coffee, in London, on the Slat December, for several successive years, prepared by a London broker.

ars, prepared by a London broker.				
eura.	Shillings per cwt.		Shillings	
1814	95	1823	77	
1815	76	1824	59 6	
1816	74	1825	55 6	
1817	95 6d	1826	50 6	
1818	146	1827	38	
1819	131	1828	37	
1820	119	1829	33	
1821	100	1830	34 6	
1822	97 6	July 31, 1831	45	

Range of prices of St. Domingo coffee in the United

tates, duty	paid.	ago conce	m the Cance
Years.	Cis. per 1b.	Years.	Cia. per lb.
1805	25 a31	1818	23 a284
1806	23 #324	1819	234a26
1807	25 An30	1820	231
1808	21 44274	1821	25 a294
1809	2010861	1822	24 427
1810	17 Ja 20	1823	18 a24
1811	11 a17	1824	15 Ja18
1812	12	1825	15 An17
1813	174a35	1826	137.154
1814	204430	1827	13 4134
1815	191,24	1828	12 al34
1816	181	1829	12
1817	189420	1850	114

Stocks of all descriptions of coffee in Harre on the 31st July, of the following years—taken from the teview of the Havre market, August 1, 1831.

Hidts. Therees. Bbis. Bings.

The present price of St. Domingo coffee is 12 cents per 1b. or, on an average, shout the rate when it held for the least three years, though on the 1st of Jonnary 1831, the duty was reduced from 5 to 2 cents per 1b. The question occurs—whether has the West Initia grower, or the American consumer of coffee been most benefited by the lessened duty! The whole cost of important has been reduced 25 per cent, get the price of the article remains nearly the same. How no the notorines of the anti-caffitte stally with this interesting fact! It certainly shows, what we have oftening a star of consumers—and it is well known that the dominished duty on color of the started in the West Indies. Will the "philosophera" look into this?

But we heartily approve of the reduced duty on coffee. It has at least the effect to make a more levely and best demand in the West failure for the productions of our coil and workshops—and the cost of very commodify only fairly be measured by the means afforded to purchase it.

# BRITISH "FREE TRADE." Speech of Mr. Robentson" in the British house of com-

mons on a proposition to reduce the duty on French

mines. Mr. Robertson said that the right honorable gentlemen had made an extraordinary use of his statements, and he coulessed he thought the opponents of the measore would not derive much advantage from his argu-ments [hear! and a laugh.] The right honorable gen-tleman placed the whole question on the perpetual character of the Methnen treats; but it must be recollected, that at the end of the fitteen years after the signing of the treaty, either party was at liberty to put an end to it, if they thought fit. Dismissing it, therefore, he meant to apply himself to the purely commercial point of the question, and on that he believed the government had committed a very dangerous error. The vice pre-sident of the board of trade (Mr. Thompson) had ask-ed, with an air of trumph, if they thought that the Portuguese would deprive themselves of some of the most necessary articles of consumption, purely because this country admitted French wines on better terms? He (Mr. Robertson) would ask, however, what was to prevent the Portuguese from equilising the duties on all the articles of export from England? According to the returns of 1830, it appeared that exports to Portugal on official value amounted to two millions and a half, in aildition to 200,0001, worth of cod shipped from our colonies of Newfoundland. The fish which Portngal took kiltres. The transport employed 100 sail of vessels, and it was received at a duty of 15 per cent., while the fish brought by our great rivals, the Americans and the Norwegians, paid a duty of 30 per cent. It was said, however, that British industry might safely be left to a competition in this supply of cod fish. But what was the result of that competition in the case of Spain! Twenty years ago the Norwegians and Americans and plied Spain with 10,000 kiltres, and England carried \$0,000 kiltres. At the present moment the 80,000 were supplied by the Americans and the Norwegians, and the 10,000 kiltres by England. The truth was, that Portugal took more from this country than Norway, Sweden, Deninerk and France, with their population of 45,000,000. We took, he said, from several states ten

times as much as we did from Portugal, and this proved that imports had nothing to do with this question, but that it entirely depended upon other circumstances. that it entirely depended upon other circumstances. He strongly protested against the project of the noble lord, in which he proposed to give up a certain market in Pertugal, upon the speculation of ubtaining a market in France-- a speculation, too, which there was no rea-son to believe could be successful. The noble lord wished to reduce the duties on French wines for the purpose of encouraging France to enter into a more extensive trade with us, and to admit our manufactures. No encouragement, he contended, was at all likely to make France do any such thing. Had we not even ex-perance whereby to be guided on this point! In the year 1825, the duty on French wines had been reduced 6s. 6d. a gallon, and the result had been that our imports from France were now twice as great as they were at that period, and our exports only half what they had at that period, and our exports only had what they had then been. Now it was only proposed to reduce the duty 2s. 9th, and what good could they possibly expect from that? It was idle for us, he contended, to endeavor to persuade other nutions to join with us in adopting the principles of what was called "fire trade." Other napromptes by write twite Cutter "Tree trutte." (there no tions knew as well as the noble lord opposite, unit hose who acted with him, what we meant by "free in ule" was nothing more nor less than by means of the great advan-tages we eriposel, to get a monopoly of all their markets for our manifactures, and to preven them one and all for our manifactures, and to preven them one and all the second of the second of the second of the second of the trutter of the second of second of the second of the second of the second of second of the second of the second of second of the second of second of second of the second of second second of second second second second second second s from ever becoming manufacturing nutions. system of r ciprocity and "free trade" had been proposed to a French ambassador, his remark was that the plan was excellent in theory, but to make it fair in practhee, it would be necessary to defer the attempt to put it in execution for hait a century, until France should be on the same footing with Great Britain in marine, in manufacture, in capital, and the many other peculiar advantages which it now enjoyed. The policy that France acted upon was that of encouraging its native manufactures, and it was a wise policy; because, if it were levely to admit our manufactures, it would be specifity reduced to the rank of an agricultural nation; and, therefore, a poor nation, as all must be, that depenil exclusively upon agriculture. America, too, acted upon the same principle with France. America legis-lated for futurity-legislated for an increasing populatron. America, too, was prospering under this system. In twenty years America would be independent of Enghand for manufactures altogether. He begged to ask the noble lord why it was that government, embarransed as it was with the reform bill, should have brought forward the question of the wine duties at all this year? What was the reason; what the pressing necessity? In this measure ministers were departing from the princi-ple they had themselves laid down; they were taking a tax off the wealther and higher classes, and imposing it upon the middle and lower classes. Either considering the measure as a question of policy or finance, it was one of the worst and most unfortunate which could possibly be submitted to the house of commons. If they even that succeed in transferring the whole wine trade from Portugal to France, all that they would have effected was, to give advantages to a rival in a maritime and commercial point of view, and to the advantages away from a nation which never could compete with us, either as a maritime, commercial, or manufacturing country. as a maritime, commercial, or manuscuring connery.

As a question of policy, therefore, the measure was had;
as a question of finance, he had shown it was bad. It
would do great injury to the wine trade in this country, and withal be of no benefit to that class of individuals who could afford to drink Champague, Burguady and Claret. The quantity of French wices, of the first growth, setually produced was so aniall, that the import could not be increased; and with French wines of the second and third growth, the people of this country never would be satisfied. He contended that the policy pursued by all statesmen was to encourage the connection with the friendly country which afforded us the market, in preference to the rival state which withheld it. Even Mr. Huskinson, when America raised her tariff. declared, that if this line of policy were persevered in, that perhaps England might, in self-defence, raise the duties in her fucia, and take cottons from Brazil, and so show America we could do without her. During the

<sup>\*</sup>Not Mr. Robinson, former chancellor of the exchequer. He was made a lord of, and is now called Goderick.

war, he remarked, we were the carriers for the whole; world, and well nigh monopolized its commerce; but since the peace, France, Germany, America, and all the other countries of the world had proceeded upon the principle of encouraging and protecting native manufactures. England alone, by departing from this pulicy, had injured her trade and commerce, and was indubits-bly accelerating that distress and difficulty which would biy accelerating that insides and intentity which won-hereafter assail us. If the system of establishing low prices for manufactures were continued—if the price of prices for manufactures were continued—in one price or agriculture produce were to be lowered by the repeal of the protecting corn laws (which would be the next thing called for)—if we were to have all our curn from Polanti—our sitk and all the other commonlities we Poissil—our silk and all file other commodities we wanted from other contrairs, it was true the consumer —that is the few—would be benefited, but the many would be rouncil; and then, he begged to ask the soble lord, who was to pay the faxes? After the corn laws, the next thing meddled with would be the funds. It was impossible the burded system could be continued under impossible the louded system could be continued under auch an increasing ery for low prices. And the result of all these alterations would be, to place the country in the worst of all situations—namely, that of having only two classes, the extremely wealthy and the extremely poor. He should, therefore, under these circumstances, move, as an amendment, the resolutions of which he had given notice. He was ready to give the noble lord the silvantage of the increased that an some of the foreign wines, but what he objected to was the reduction of the duty on French wines, while there was at the same time an increase of the duty on the Portuat the same time an instance of the read his resolution, which stated the amount of exports and imports as between this country and Portugal, and as between this country and France, contrasting them with the view of showing that, as regarded population, the imports from France, as compared to the exports to that country and basee than as between this country and try, were much larger than as between this country and Portugal, much to the advantage of France. He begged to add now, that since a reduction of the ditty on French wines, the exports to that country had been diminished.

The "National Intelligencer," in publishing the address of the Free Trade convention stid—It will be seen that it does not office them to be contrary to the spirit of the constitution. Their unconstitutionally can only be maintained by a perversion of reasoning, and a total disregard of all tentionay. To believe it, is a soming, and a total disregard of all tentionay. To believe it, is a more according to the properties of the state of the sta

gaily expensed on any personner units anserts to occupie the content for families.

"To check this growing evil, applications were made by personner of the state legislatures: these quardians of the topic personner of the state legislatures these quardians of the people, in several of the states, interposed their authority: laws the people, in several of the states, interposed their authority: laws diminishing the rage for former with the content of the states of the states

at in name; and they confidently hope, that the encouragement and protection of American manufactures will claim the earliest attention of the supreme legislature of the mulion; at it is an attention of the supreme legislature of the mulion; at it is an avitant their himits, ratorress amply sufficient to enable them to be come a great sanufacturing country, and only want the patronage and support of a wist, energetic government.

The suprementation of the supreme legislature of the patronage and support of a wist, energetic government.

The suprementation of the suprementation of addressing, to consince them of the propriety and importance of attending to measures so obviously necessary, and, instead of the suprementation of the suprementation of the suprementation of patronage and support of the suprementation of patronage and support of poor increasing far want of employment foreign debts accommissing; houses and lands depreciating in value; trade and manufactures in graving in a supering suprementation of the supreme legislature of the United States, as the guardans of the whole empire, this every eye is now directed: from their united wisdom their patronism, their ardent love of their country; our periodism, their ardent love of their country, our periodism, the suprementations and animate them with boped of attects in future, by imposing on all foreign series, when heir country; and which may, also, in their consequences, contribute to the discharge of the national debt, and the due support. "Your petitioners take the bisherty to annex a list of oveh arti-

of government.

tribute to the discharge of the national debt, and the due support of government.

"Your petitive risks the biserty to annex a list of such articles and the properties of properties of the properties of properties of the propert

ng is extracted:

to congress from the citizens of New York, from which the following is extracted:

"Your petitioners ennesive that their countrymen have been
deluded by an appearance of plenty; by the profusion of foreign
executive importation for a flourishing trade. To this deception
in favor of foreign commodities, which has been the principal
saws of their distresses, and the subject of their complaint.

Source of their distresses, and the subject of their complaint,
one of their distresses, and the subject of their complaint.

The property of their continuation of the subject of their complaint,
one of their distresses, and the subject of their complaint
and a product of their complaint of their continuation of a power
acts, buch a government in one established. On the promulgation of the constitution just now commencing first wentation, your
and have supported it with persevering attachment. They view
with the highest statisfaction the prospects now opening and adorning this amplicious period. To your honorable body the mecunvinced that, as the united voice of America has furnished
you with the impant, so your knowledge of the common wants
agiven you the spirit, to unlind our fetters, and revewe our
country from disgrace and ruin."

A few days afterwards, another petition was presented from

country from disgrace and ruin."

A few days afterwards, another perition was presented from the inhabitant of flooting of which the following is an extract:

"Your petitioners need not inform congress that, on the revival of our mechanical arts and manufactures deposed. See wealth and to your honors that the citizens of these states conceive the object of their independence but half obtained till those national purposes are established on a permanent and extensive basis by the figilative acts of the federal government. Unless these important branches are supported, we humbly emerive that our agripports will executally lessen the demand for the produce of our lands."

"Your petitioners formerly experienced the

lands."

"Your petitioners formerly superinced the patenage of this state I galasture, in their act I aspin thints and problations on certain articles of manufacture, which encentinger our pretitions are manufactured by our own editerm, humbly conserving that the impost is not soldy considered by congress as an object of receivable, but, in its opt ration, intended to exvious such important the property of the

We ask the anti-national editors to do just so much justice to the general government and the tariff laws, as to copy the above statement of facts concerning the early legislation of congress.

# NILES' WEEKLY REGISTER.

FOURTH SERIES.] No. 9-Vol. V.

BALTIMORE, OCT. 29, 1831.

(VOL. XLI. WHOLE No. 1.049

THE PAST-THE PRESENT-FOR THE PUTURE

EDITED, PRINTED AND PUBLISHED BY H. NILES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN ADVANCE.

THE TARIEF CONVENTION. At the meeting of amount? But the 200 millions for works "already pro-the convention, which assembled in the city of New jected" would have had a small finish, had that truth York, on Wednesday has, to consult on measures con-enced with the protection of dimensic labor, delegates from thirteen states, and the District of Columbia ap-peared. At half past 10 o'clock, A. M. James Tail-andige, of the city of New York, was called to the chair, and Hezekuh Niles, of Baltimore, appointed secretary, until the convention could be organized. A committee was then appointed, consisting of three persons from each state, to consider and report on the mode of organization. In confurmity with the recommendation of this committee, the following officers were unanimously chosen, William Wilkins, of Pennsylvania, president, Joseph Kent, of Maryland, James Tallmadge, of New York, George Blake, of Massachus its and Lewis Condict, of New Jersey, vice presidents Hieze-klah Niles, of Baltimore, Robert Tillotson, of New York, Charles Papes, of Vermont, and Joseph II. Pierce, of New Hampshire, secretaires.

York county, Pa. had been elected to congress from that district—it should have been to the senate of the state legislature.

PINE WOOL. A letter addressed to the editor from the western part of New York, says, "wool has become a very important and the principal article of profit in this region. There are many fine flocks of sheep, of from 200 to 2,000—principally mixed merinos, and moted with Saxon. While on this subject, allow me to make a few remarks on the growing of fine wool, in this country. Having formerly been engaged in that business in Saxony, and now for more than four years in this country, besides having been an importer of Saxon sheep three years previous to my settling unil establishing a flock of pure electoral Sexon sheep here, I am ensbled, from experience, to make a comparison between that and this country, as it regards that branch of agri-culture. Sir, I do not doubt in the least, indeed, I am culture. Sir, I do not doubt in the least, indeed, I am reastly to demonstrate the fact, that this country is capable of producing as fine wool as there can be produced in Saxony. Every thing that nature can afford towards it, is abundantly supplied. All that is wanting now, in my humble opinion, is experience. Sheep have been greatly improved within seven years in this country, and but a few (asy 10) years more, and it will produce fine wool enough to supply home demand. The protection on fine wool, however, is not in proportion to course wool, and may in some measure retard the improvement."

INTERNAL IMPROVEMENT. A New York electioneering address, signed by James Leut, chairman, has the following sweeping paragraph:

"During former administrations, particularly that of Mr. Adams, various appropriations had been made for internal improvements. The benefits which New York was deriving from her enterprise in opening her sanals, made other states and sections of the union desirous of possessing like advantages; and although the application by New York to congress for aid lad been rejected, other applications by combining a sufficient number of interests to carry a majordy have been successful. Millions had been expended by the United States for those objects, and when gen. Jackson come into office the improvements already projected, as proper for the appli-cation of the national lunds, would have cost more than

jected" would have had a small finish, had that truth been told. The getting-up of this estimate of works projected, was a disgraceful affair- and dinot purely dishonest, criminally careless.

On the other hand, a writer in the "Albany Argus" of the 12th inst. speaking of the want of a sufficient depth of water for ship navigation to that city, which he autorpates, and, we hope, truly, will become a very im-portant place of trade—says,
"Nor is there the least doubt that the navigation can

he improved. Money alone is wanted and the United States would willingly give it if properly solicited. Our city should be alive to this subject, and steps taken to have one or more of our citizens in Washington at the opening of the next session, to co-operate with our highly respectable representative in such measures as may be deemed best calculated to procure aid from that

"The state of New York will pay into the treasury of the nation this year something like twenty millions of dollars, in duties, and surely one or two hundred thousand would not be refused us, when the public benefit would be so great."

Very well. The Albanians shall have our best wishes for the success of their application. But the latter paragraph is not less of a sweeping character than that which Mr. Lent has certified to.

"The state of New York will pay into the treasury of the nation this year something like twenty millions of dullars!" Now, the purase might have been corrected by saying the city of New York, and that again amended by naming a certain street in that city, and the whole accurately stated by decidently saving, that one man, Samuel Swartwoot, would pay the whole sum.

When some silly one spoke to Mr. Jefferson of the great revenue paid by New York to the national treasury-he said "remove the custom house across the river. and Paulus Hook will pay the same amount."

SNUGSLING OF SUGAR. From the New Orleans Bee. A new species of import has come to our knowledge, which, it tolerates, threatens ruin to the sugar growers which, it tolerates threatens runs to the sugar growers of this state. It is a kind of syrup, which has not been sufficiently boiled to granulate, but contains more than two-thirds of sugar. One gullon of this syrup, from netual experiment, yields from eight to nine pounds of If, therefore, such an importation be allowed, it is evident that the sugar refiners, not the planters, will luraish us with sugar—the latter being unable to strind so formidable a competition. A recently imported cargo of this commodity has been seized by our collector, and we impatiently awart the award of the court on this sulject, which materially affects the interests of our state. If the sezure be not confirmed, the duty on sugar, is illusory, measured as that obtained from the syrop mays something less than half a cent, instead of three cents imposed by the tariff. There is but little three cents influence by the arms. Since is the life in thought but that a great quantity of this article has been introduced in the United States, and to attribute to this the depreciation of our sugars in the northern ports, is not an unreasonable supposition.

[It is stated that the treasury department has issued a circular directing that a duty shall be paid on this liquid sugar by the pound, as other sugar pays-so those that may be caught will make a bad speculation!

VERMONT. Official returns of the votes for governor of this state-Mr. Palmer, anti-masonic, 15,258; Mr. Allen, national republican, 12,399; Mr. Meech, Jack-Why did not the maker of the address tell the people how many millions had been appropriated and paid for how many millions had been appropriated and paid for saling as to the council, the anti-masonic ticket fully internal improvements, since the adoption of the constitution, that the people might be alarmed with the ballot—for him 114, for Mr. Allen 56, Mr. Meech 42, Vol. XLI.—No. 19. Mr. Crafts 35 -majority for Palmer, one. Mr. Smith elected speaker of the house of representatives, and all the rest of the officers appointed are anti-masons.

Ina WHODMAN. The case of this postmaster in New Hampshire, 18, at last, settled! From the "Statesman" of the 15th mst. We abstract the following account of H--if true, as described, there has been a criminal neglect in the officers whose thaty it was to see that justice was rendered for an offence an prejudical to the "general welfare," and which experience teaches us has become more frequent than heretofore. We say this in all soberness for wrongs suffered

Woodman, according to the "Statesman," was arrested for purloining a ten dotter note, of the Brighton bank, from a letter, and a true bill against him was found, (pretty nearly two years ago we believe), by the grand jusy of Grafton county. When brought forward for trul, he was claimed by the United States attorney, Mr. Cusleman, as having committed an offence against the United States, and accordingly given up and held to bail for his appointance. In the course of time, a true bill against Woodman was returned to the circuit court of the United States, but the U. S. attorney not proving the existence of the Brighton bank, it was not shown that a larceny had been committed. The court, however, refused to discharge Wondman, having no doobt of his guilt, and the case was continued -- one security being given in the sum of one hund ed doltars that he should appear. The circuit court of the United States should appear. The circuit court of the Cuncol states has just held another session, Woodman, having taken "leg bail" did not appear, and the surety is said not be worth a farthing. But the fact of a surety in the sum of \$100, for so serious a charge, is one of the strongest things in the whole affair.

Goan. One house in New York is said to have received 1,000 sovereigns from England. They were not remuted because of the exchange being against England! The difference between the value of these sovereigns in England, and as we rate d tlars, is not less than 14 per eent, in layor of the lormer.

APPOINTMENTS BY THE PRESURENT. Doniel W. Pope, of New York, to be consul of the United States at Tobasen, in the United Mexican states.

John Martin Baker, of Pennsylvania, to be chusul of the United States for the port of Rio Joneiro, in Brazil, in place of W. H. D. C. Wright, removed at the request of the Brazilian government,

John K. Campbell, of Flurida, to be attorney of the United States for the district of West Flurida, vice Benjamin D. Wright, removed.

Alexander Thomson, of New York, to be consul of the United States at Glasgow, in Scotland, vice David Walker, deceased.

BANK OF THE UNITED STATES. In the house of re-

presentatives of the tate of Tennessee, now sitting, the following proceedings betely took place:

Mr. McGaughey offered the following preamble and

resulutions --

Whereas, the charter of the United States bank will expire in the year 1836, and whereas it is believed that the stockholders in said bank will attempt to procure a re-charter of that institution—and whereas, it is believed by this general assembly, that it is not consistent with sound policy to extend the charter of said bank-Therefore,

Resolved, By the general assembly of the state of Tennessee, that our senators in congress be instructed, and our representatives requested, to use all possible means to prevent the re-chartering of the bank of the United States, if any attempt should be made in congress for that purpose, before the next session of the general assembly of this state.

Resolved, That the secretary of state furnish a copy of the foregoing preamble and resolution to each of our sensiors and pepresentatives in congress—and that they be printed with the sets of the present session of the general assembly.

Mr. Allen suggested that it would perhaps be better to appoint a committee on the affairs of the general government, to whom these and all similar propositions might be referred. He was opposed to all such interlerence on the part of the legislature, with business speeally belong ug to the lederal government. He moved to lay the resolutions on the table, which was done acconfingly.

INCENDIARY PUBLICATIONS. The "Vigilance Association of Columbia" (South Carolina), composed of gentlemen of the first respectability, have offered a reward of fificen hundred dollars for the apprehension and prosception to consistion, of any white person who may be detected in distributing or circulating within that state the newspaper, called "The Liberator," printed in Buston, or the pumphlet called "Walker's Pamphlet," or any other publication of a seditions tendency.

[Is not, by for, too much importance attacked to these publications? It can be accounted for only in the the second relative to the people in the south, because at their condition—and, indeed, from certain movements among the slaves in various states, there is much reason to apprehend no inemisalcrable degree of concerted action, though extremely indigested and ining a general alarm, no one knowing where a blow might talt.]

THE CHOLERA. From the 19th June to 15th July, inclusive, 7,738 cases of this disease were recorded at St. Petersburg as having taken place—of these, 5,950 decd and 2,159 were curell—the rest were removed, and their fate unknown.

Whole number of cases up to 1st August 8,281—known deaths 4,281. The disease was at its height 17 days after its appearance, and then began rapidly to decline, and was nearly extinct, at our last accounts from the Russim capital.

AN OFFICIAL WAG. The land commissioner of the city of Boxon must be a right merry and showil wight. In a late report to the municipality, touching sundry lands lying between that city and the town of Roxbury, be states that a new road has been laid out across a part of those lands, leading from the Neck (the long street conpretting that town with the city) striking the southern termination of Trainint street, of which avenue it is to be a contamation. This new portion will exceed two miles in length—three tourths of which is to be perfectly straight: the other half mole, says the commissioner, which is nearest the city, is just crooked enough to remond travellers that they have arrived in Boston where every thing, I trust, will be found straight except the

THE NEW INLAND. The French government have despatched one of their ships of war to determine the latitude and longitude of the new island which has sprung up in the Sictian sea, between Girgentoin and Pantalaria. They have also sent some eminent geologists to examine the structure of the island-on object of much curiosity in the scientific world, as hitherto no opportunity has been afforded of carefully investigating an island of this description, they having in all instances smak back into the sea before the opportunity was allowed for such examination.

#### BRIEF NOTICES.

"Gen. Nat." It is believed that this distinguished leader of the blacks at the massacre in Varguila, was drowned, in attempting to cross New river. So says a Is tter to the governor of the state.

Benjamin W. Richards, the excellent mayor of Philadelphia, has been unanimously re-elected by the coun-

Small Pox. Small Pox. A strange vessel landed two sick men at Machine, (Manne), 8th inst. and made off. One died and many persons having visited them, it was reported at Beltast, that one hundred had taken the small pox.

The earth is 2,048,572 miles nearer the sun in winter than in summer. Its motion is 17 miles in a second, so that if a runn pulls off his hat to another in the street, t he goes many miles barehead without extelling cold. Wast. The imports of wood into this city for the two

first quarters of 1831, are 1.116 751 lbs. The imports

for the Unit quarter are stimated at 80,000. Total import ter non-mouth, 1,746,751 lbs. [Bester Pat. Levy of Catholic tropa. To tal low negationation y statement is ever each from the Roman Catholic y statement is ever each from the Roman Catholic Magnetic, pp. Agust, b. B.], noder the head '4f. one," page 445 — We have heard from good manager tool bis holicoess bas, through the Nineso, Managear Spad-dacemi, applied to the British government for perma-tage of the permanent of the permanent for perma-445 -"We have heard from good nutbority that the application has been successful."

A printer in Loudon has made an aukward attempt to evale the cost of stamped paper, by printing the news on cotton, and selling the Gazette under the name of "a

political prekit handker het."

Coffee. It is stated that 8,500,000 lbs. of coffee are in the public stores at Harron, waiting the birther reduction of a duty that will take place on the first of January next.

Canal celebration. The ritzens of Chilicothe, Ohio, are preparing to eclebrate in splendid style, the opening

of canal navigation.

Rappulannock canal. The lower section of this caust is now paying the, and houts bolen with timber arrive daily in the basin at Fredericksburgh, Va.

Methical use of gold. M. Legrand, an eminent Frem h physician, has published a volume in Paris, in the use of gold in cases of sightlis. The article can be adviced street in various ways, and in thises amounting to one third of a grain per day, rubbed upon the tongue, in the shape of gold lead, or the oxide of this metal, or the perchloride of gold, &c. It sets on the digestive organs, without weakening the system and produces an extediration of spirits.

Naval. The U.S. ship Fairfield, capt. NEWTON dropped down from the navy yard to the auchinge off town point, on Saturday last, preparatory to sading for the West Indies. Com. ELLIOTT will embark in the Fairfield to resume the command of the U. S. naval force un that station.

The U. S. Irigate Brandywine, com. BIRDLE, was at Toulon in Angust last, to sail soon for Marselles, -Officers and crew all well. (Norfolk Herold. Officers and crew all well.

#### FOREIGN NEWS.

An arrival at Baltimore brings Liverpool dates to the 13th of September.

The latest intelligence from Poland is to the 27th of August. The main Polish army had retired within the fortifications of Warsaw, after having sustained a loss of 1,400 or 1,500 men in a recommissance, owing to the improdence of col. Legallois a French officer. corps had been detached into the pallatinates of Podlachia and Plozk. The Lomer and the stronger under the French gen. Romarino, is believed in Paris to have gained a signal victory over a part of the army of Rud-ger. One good effect of these diversions is, that the Poles have, in consequence, been enabled to introduce large supplies into Warsaw.

The ment tor Kincowiceki, but restored order within the walls of Warsaw. Four of the persons engaged in the massacres of the 16th of August had been shot. Both armies are said to be anxious to come into conflict. Paskewitsch was lostening his perparations for decisive operations against Warsaw, wishing to avoid a recurrence of those disasters consequent upon a compaign in the watter, from the effects of which, Deibitsch, his predecess ir, but suffered so severely.

The emperor Nicholas is saul to have determined on listening to no mediation by other powers-any terms on the part of the Poles short of absolute submission, is,

therefore superfluous.

The patriot clubs of Warsaw are represented as great evils; in the execess of their zeal, in the bloody affair of the 16th of August, they perpetrated the most Irightful sets of structly. Neither age nor sex were spared by them, and their merculess deeds were perpetrated too in the name of liberty, and under the guise of patriotism. The conduct of the civic guards is represented as culpable in

the extreme, and that their commander, count Ostrowski, declared, on coming up to the theatre of massacre, that arms were not placed in his bands to destroy his countrymen. The palace gates were then broken, and the populace sided by some of the guards.

Gen, Japkowski was serzed first and hanged on a lamp post.

non after, generals Salacki, Hurtig and Bukowski, M. Fanslisw, chamberlain to the emperor, and madame Baz mow, were put in death in the some manner. Haz now, were put to testh in the some manner. The daughter of that hely was pierced through with a sabre for attempting to defend her mother. These unfortu-nate victims were mutilated after having been killed. The details are too borrid to be related.

"The rage of the assassins continued unrelenting. Other rage of the assessing continuous measuring, they proceeded to a prison in which were confined some agents of the old police, and afterwards to the house of correction, where they recommenced the ear-singe. Men imprisoned on alight thereps, and strangers to politics, were murdered. About 60 individuals pe-

rished on that dreadful night.

"It appears that general Krucowiecki declared himsell governor of the city, and that the national govern-ment confirmed him in that office the next morning. Hut his efforts were insufficient to airest the anarchists, because there were no troups of the line at Warsaw, and because the evic guard could not be depended upon. Several nurders were committed on the 16th upon. Several minutes with the observation of three o'clock in the atternoon, a Russian officer, who had been wounded and made prisoner, was taken out of a cart and hanged in the street, because it was reported that he was a Prussian; he was, however, a native of Courlind.

The dictator had issued a proclamation, in which after stating that the thet had been forced by necessity to create a new government, lounded upon the authority of the laws, mile, that it would act with all the vigor required by the existing circumstances of the country; that instice should be done towards all who were found gonly of having violated the laws. The count declares ne will never sujly the national glory, and will take care that, with the aid of the hws, criminal agitators, who were the best allies of the enemies of the country, shall he annihilated.

Report states that the brave Schrzynecki had entered the 4th regiment as a grenadier.

The Russians were reinforcing their army with great activity and it was thought would be able to increase its numbers from 25,000 to 30,000 in a few days; when that should be effected, it was thought Paskewitsch would make the assault on Warsaw. The cholers was at Ber-

The coronation of William IV, look place with great pump on the 8th Sept. Indisposition is said to have been the entire of the absence of the duchess of Kent and her daughter.

The reform bill, it is thought will pass the house of lords, though not without violent opposition.

A British squadron had sailed for the Tagus, for the

purpose of redressing the injuries inflicted by the Portuguese government on British subjects,

The British sloop of war Alligator, from off Algiera on the 17th August, reports that the French a few which they sustained a loss of 600 men, and are said he masters of only ten miles round Algiers, 2,500 of their troups were sick in the hospital, and others were constantly returning to France. The town was very The Herald of the 12th says:-- The American packet

ship President, caption Champlin, passed through Spit-head yesterday evening, in 24 days from New York; she is a splentid vessel, and brings as passenger his excel-lency, the hon. M. Van Buren, ambassador from the United States to this country. He landed at Cows.

AUSTRIA. The Austrian government had suppressed the insur-

rection in Hungary-Several concerned in it had been shot. TTALY.

Tranquility had been restored, and the report of dis-

PORTUGAL.

It was said that the French and English governments would act as mediators between the government of Don Miguel and the refugees of Portugal. PRANCE

There had been disturbances in Paris—a mob had at-tempted to destroy the machinery lately introduced into a factory. The atmed force was called in and prevent-ed its destruction. Some lamps were broken and other outrages committed-disturbances had also taken place at Blois and other places-order had been restored without any serious injury.

BRUSSELS.

The Brussels papers contain the opening speech of king Leopold to the new legislative body of Belgium. his address, appears to have given general satisfaction in Brussels.-His majesty adroitly apologises for the disgraces of the late campaign by attributing them to the accidental superiority of the Dutch in point of discipline, and an unfair surprise upon his subjects; thus by at once saving the courage of the Belgians and assuring them of foreign protection, he seems to have found the shortest way to their good wishes. He very properly identifies himself with the astion, but the promises which he holds out on the thorny subject of the fortresses may hereafter lead to some awkward discussion. Hostilities had entirely ceased at Antwerp, and the Dutch were even showing a disposition to make the amende for the damage which they had already done to Belgian property."

An arrival at New York from Havre, brings advices direct from France to the 12th September. The disturbances in Paris as well as in the departments in the south of France had given some trouble to the police. They had, however, been suppressed without bloodshed, and things were assuming a tranquil state again. At Cleremout the prison was lorged and its prisoners released.

There were reports of ministerial changes. M. Perier had declared that if the ordinance abolishing hereditary peerage should pass, he would retire. It was stated that should he resign, his place would he filled by M. Decazes, who was a minister of Loms XVIII.

The cholers was making alarming progress in Vienna, Berlin, Hungary and other places, and the government of France were taking active measures to prevent its introduction there.

By this arrival, as well as one at Norfolk, a report is brought, that Schrzynecki had assumed the chief com-mod of the Polish army, and, on the 3th of August, had had an engagement with the Russian army under field marshal Paskewitch, and compelled him to quit the position to cocupied in front of Wartaw. The private correspondence by these arrivals make no mention of this battle, and we fear that it is not to be relicit

The manufacturing establishments in France are in a prosperous situation.

Owing to the small quantities of grain brought to

market, flour was dear in Paris.

An insurrectionary spirit had manifested itself in Swit-serland, and the diet had taken strong measures to suppress it.

## MANIFESTO OF THE POLISH GOVERNMENT AGAINST PRUSSIA.

"There are extreme circumstances which will not permit men to observe the conduct which otherwise they would willingly pursue.

"Can it be a reproach to the weak, that when on the "Can it or a reproten to the week, that when on the point of perishing, they expose the false pretences, of those who, under the closk of legal conduct, would ef-fectually ensure their destruction, by aiding their adver-

sary?

"The Poles have a right to say that the faith of nations is but an empty name, and that ireaties and conventions have been invented only to cover the crimes of the powful with the mask of justice. The principle of non-in-tervention, for what does it serve, but as a pretext in

mains silent. Prussia has violated, in a manner still more striking, a principle which, once adopted, ought to be adopted by all, or applied impartially.

"Often have we addressed to the cabineta, the guarantees of our rights, the most pressing representations; and ali have been deaf to our voice. We cannot, indeed, demonstrate by judicial process the wrongs which we have monstrate by junious process the wrongs which we have suffered on the Prussian territory. They are, however, sufficiently proved by the most circumstantial details; of all proofs the most convincing is that furnished by the

present position of the Russian army. "Prussia, confident in our weakness, has done well to give evasive answers to all the governments who would seek to maintain, bond fide, the principle of non-intervention. She could not better disguise her conduct from the french at Warsaw, before they would believe in the concert subsisting between the cabinets of St. Peters-

burg and Berlin. "The autional government has received a report from the general-m-chief, announcing that the army of Pas-kewitsch is concentrated on the Lower Vistula, and extended in echelon, on the right side of the river, and resting upon the Prussian frontier. [Here follows a minute description of the then position of the army, since changed.] It results from the plan of operation adopted by general Paskewitsch, that in case of a check more or less severe, he could with difficulty regain the right bank, and, by consequence, must have the certainty of a sceure retreat in Prussla, into which the quarantine will not hinder him long from penetrating, and where no Russian corps will experience the fate of general Dwernicki. This conduct of Pressia destroys all the This conduct of Pressia destroys all the all aning a which we have acquired by so much devotion, and so much blood spilled all over the soil of Poland. It renders useless, we are bold to say, all the miracles

of our conrage. "Our struggle has been an appeal to God; why attempt to influence his decrees, and lend to the strong more terrible arms for the purpose of erushing the weak? Let it be known that it is not with Russia only we are engaged in combat. There was a time when the spectators of a conflict would have thought themselves guilty of a crime if they did not as ist the weaker party-the world calls that time barbarous. At present two powers are seen conspiring against an unhappy mation, and the contest is looked upon with sung froid. The attacked nation has not even arms to defend itself. for Prussm, not content with having surrounded our frontiers for a long time with a factitious quarantine, checks the transport of every thing accessary for our delence. Such are the means resorted to in order to reduce us; this is the fair battle offered us by Russia, assisted by the Prussians. Their princes invoke the name of God in their proclamations—God is justice and equity, and invoking him to testily falsehood is committing perjury. Who can foresee the luture? The princes who wish for our destruction may, perhaps, hereafter be nursued by mistortune, and, placed in situations of difficulty. Let them then recollect their conduct to Poland. How can we be silent while we experience such injustice. Our complaints must be published, that they may be a so-leinn manifesto against the conduct of Prussia. The world must know what we have complained of-what are the difficulties we have to compraint ut—unat then the government, which are deaf to the roice of justice and humanity, will be forced to damit that a peo-ple which has had the courage to support site! single-handed against such powerful encurses combined to a nshilate it, is worthy of a free and independent existence."

#### SUPPLY AND PRICE OF COTTON.

The Columbia (S. C.) Telescope, contains the following statement, communicated by an intelligent and well informed merchant of that place: It exhibits a most discouraging prospect for the cotton grower; but when more of an article is produced than is requisite to sup-ply the current demand, the surplus can only be disposed of by a reduction in price, so as to bring it within the compass of the means of those who could not before the selfish policy adopted by the cabinets of the present compass of the means of those who could not below day? How Austria has applied it in the disarming of afford to purchase. So the quantity of cotton as market Dwernicki's corps is known to Europe, and Europe re- has been successed beyond the demand at which it bees

m price that paid the producer a handsome profit; and the best possible manner, for the worst cotton pays the the manufacturer will not buy it unless he can make some profit on his labor—while his prices are reduced to the lowest, in order to extend the sale of his manufactures in a ratio with the increase of the raw material. In the present glutted state of the cutton market, some hope of relief may be entertained from the present agitated condition of Braz 1-a decline of 2 or 300,000 bales in the exports of that country, would, perhaps, advance the price of our crop in the whole amount of the value of that quantity-lor nothing can be more clear than that too much cotton is grown to permit large profits to the eultivator. The principle in this case is applicable to every business. In 1829, because of the excessive madistress, low implify the rum of the cotton springers.

What was the remedy? The spinning of facer yarns, and in the very great extension of the print-works, calling for large supplies for esticoes, &c. and so the spin-ning because a good business again. What would be the price of flour, if only the capital and labor employed in making from in Pennsylvania were applied to the growing of wheat-by making the land rich, producing 25 or 30 hushels to the acre instead of about 10? Flour 30 bushels to the sere instead of about 10? would not sell for three dollars a barrel-for there is no demand for the one or two millions of barrels that so much additional capital and labor would produce. Over-production is the real cause of the decline of price for cotton. Do away the cultivation of the cane in Louisiand, and no man, however tavorable his circumstances may be, can raise a pound of contan in South Carolina, without a great loss and ultimate ruin-though in Louisiana, because of the richer land and a better article, the planters might yet make a living.

The remarks about ship building may suit the meredian of a little inland town, like Columbin. able branch of industry was feebly carried on, because there were more ships than business—there had been an over-production of them. But when business a bethe revived, and only a little, the want of this was dis-covered and the value of them rapidly advanced, and now, notwithstanding the "enormous duties on materials for ship-building," that business was never more brisk than it is now, and it will remain lively until the demanil is supplied; and then it there be not an extensive war in Europe, it will fall back to the building of ves-acla chiefly for the coasting trade, as before.

From the Columbia Telescope, Aug. 23. The prospects for the country even with regard to price are gloomy. Accounts from England up to the 8th of last mouth, left it selling from 42 to 62d, average 5 hil, sterling.

The following statement will shew what that would enable the Charleston shipper to pay, merely to cover cost.

5 kd. is conal to ets. 10.17

6.54

Charges. Insurance, loss of weight, petty charges and commissions 121 per cent. Freight at 5-8il. per 1b. and primage 5 per cent. thereon, 1,21 Duty per lb. 5-8d. 1,15 3.63

#### Add exchange 8 per cent.

Nett sales, Planters in the interior may after allowing charges to Planters in the interior may after allowing charges to market and commissions to lactors estimate what their erops will probably yield. The freight to England is put down at 5-8 per lb.—this is much under what has been paid for the growth of 1830. For that of 1831, unless a plentiful supply of British shipping arrive, the rate of freight will be very high. Owing to concraous duties on materials for ship building, few ships have a build state and the accordance. been built at home while the produce to be carried has greatly increased, vessels from loss and decay have diministed, and we must rely on loreign shipping to carry

a great part of our erops. There is now no doubt that the new duty will be laid on—it will therefore behove the planters to be very particular in handling their cotton, to have it put up in

same duty as the best; for example, the duty on cotton which might bring 6d, is 101 per cent, on what sells at 3d. it would be 21 per cent. In Fran-In France the duty on up-

ARKWRIGHT.

# A MARKET OPENED!

From the Buffalo Advertiser.
The most profitable way of selling American flour, and not and pearl ashes, to the manufacturers of Engfand

It is well known to commercial men that the merchants of Canada have a legal right to sell the wheat and floor, produced in the provinces, in the markets of England, for consumption in that country, on payment of a small duty; which right they exercise to great exof a small muly lumen right into exercise to great ex-tent, because they usually find it profitable. They also, (and all other persons), have the trgat right of import-ing flour and Mostreal and Quebes from Rockester, and other parts of the United States, without paying any day. When the average price of English wheat in England, is over 67 shillings sterling per quarter of 8 bushels; or \$1 66 per bushel of 70 lbs. the duty there on coloni I wheat is only 6 pence sterling per quarter, on coloni.l wheat is only 6 pence sterling per quarter, and on colonial flour only 4 pence per bul.—when the average price is under 67s. the duty is increased to 5s. sterling per quarter on wheat and 3s. 1d. per bbl. on flour, which is the highest duty required by the existing law on colonial wheat and flour. At the same swerage price, or when the price is 67s, per quarter and under 65s. the latty in England on wheat and flour from New York and all other foreign ports, is 18s. 8d. sterling per quarter on wheat, 11s. 3d. per bbl. on flur. The practice at Montreal and Quebec is, to collect as

much Canadian wheat and flour as possible, and sell the same for shument to England; it being worth more for that purpose than any other. A second operation is to import from the United States, and sell for consumption in the provinces, and for exportation to the West Indies, as much American flour as practicable,

Thus the American flour from the western country supplies the place of that which is admitted into England for consumption, on payment of a small duty; which approximates to the advantage of a threet admission there, at the same duty. Since the 15th of May last, the shipments of Canadian wheat and flour from Montreal and Quebec, amount to about 1, 150,000 bushels of wheat and 41,256 bbls, of flour.

It is probable that this large export will make a steady It is probable that this large export with makes a season and good market at Montreal for American flour. American pot and pearl ashes from Montreal, are admitted into England free; no duty being required; while those from New York and all other loreign ports, pay a duty of 6s. sterling per 112 lbs. or \$20 64 per ton,

#### THE LATE MAJOR BIDDLE.

At a meeting of the officers of the United States' army, stationed at Jefferson Barracks, held at the messroom of the sixth regiment, on the 4th September, 1831 brigadier general Atkinson was called to the chair, and capt. II. Smith, 6th regt. appointed secretary. The ob-ject of the meeting was then stated by the charman, to wit, to take into consideration the propriety of an ex pression of the feelings of the meeting, in the death of major Thomas Biddle. Whereupon, it was Resolved, That a committee of five be appointed, to

straft resolutions expressive of the sense of this meet-

And brig, gen. Lesvenworth, major Riley, and eapt, Palmer, of the 6th regt. eapt. Harrison, of the 3rd regt. and capt. Rogers, of the 6th regt. were appointed that committee. The committee having retired for that purpose, prepared and submitted the following preamble and resolutions which were manimously adopted, viz.

Whereas, a recent melancholy event, deeply to be regretted by the whole community (and particularly by the members of the army) both as to the cause of its origin and its result, has taken from the army a gullant origin and its result, has taken from the army a gallant and distinguished officer, and from among us an esteemed and respected friend: Therefore, Resolved, That this meeting unfaignedly deplore the loss of their estimable fellow soldier, the late maj. Tho-

mas Biddle, an officer who had gallantly distinguished himself in the field against the enemies of his country and whose untimely death now calls forth our dechest sym-

Resolved, That as a mark of respect for his memory, will wear the usual badge of mourning for 30 days. Resolved, That these proceedings be signed by the chairman and secretary, and a copy forwarded to the la-mily of our late friend, with our sincere condolence for

their irreparable loss.

H. ATKINSON, b. ig. gen. U. S. A. chairman.
H. Smith, capt. 6th reg't, secretary.

FREE TRADE CONVENTION.

List of the delegates who took their seats in the free toude convention, prior to October 5.

Maine—Jushus Carpener, Castiner, Charles Q. Clayr, S. H. Mudge.—Total S. Massachaette.—Henry Lee, Samuel Swett, John L. Gardner, Henry Williams Edward Croft, William God-dard, Ebeneze Breed, William Foster, Baston T. S. Pomeroy, Haratto Byngton, Theodore Sedgwick, Stock-bridger, George Peahody, Pinkering Dodge, Joseph Ropes, Thomas P. Banerolt, Gulcon Tucker, John W. Rogers, Issue Newball, Salem. - 18.

Connecticut. - William G. Forbes, James Donaghe, New Haven .- 2.

Rhode Island .- William Hunter -1.

New York .- Preserved Fish, Jonathan Goodbue, Thomas R. Mercein, John A. Stevens, Isaac Carnes, James Boorman, George Griswohl, Benjamin L. Swan, M. H. Grinnell, George T. Trimble, Zebedee Ring, M. H. Grinnell, George L. Printile, Zeo ace long, Albert Gallatin, John S. Crary, Jacob Lerillard, James G. King, Chailes H. Russell, Henry Kneeland, Issae Bronson, city of New York; John Leynard, Edward Bregh, Samuel P. Brown, John Constable, John Aug. Smith. -23.

New Jersey. - Henry Chw, John C. Schenck, John Potter, Henry Vethake, John R. Thomson, of Princeton; C. L. Hardenburg, J. C. Van Dyck, John Bayard Kirkpatrick, Miles C. Smith. - 9.

Kirkpatrick, Miles C. Smith.—9.
Pennagtwaia.—Joseph R. Evans, George Emlen, Clement C. Bidtle, Edward Ingraham, J. M. Bardey, E. Littell, Samuel Smith, Isase W. Nanis, Riebard Price, Henry R. Watson, Thomas P. Cope, John A. Brown, Philip H. Nicklin, Coully Regnet, Samuel Spackman, of Philadelphia.—15.

Maryland .- William H. Handy, Arnold D. Jones

-2. Fürginia.—Philip P. Barbour, Orange county; Henry E. Watkins, Richard Booker, Prince Edward county; James M. Garent, Essex county; Sanniel L. Venable, Charlotte county; Thomas R. Dew, Burwell Bassett, Hidlamburg; Walker Hawes, King Hidlam county; Philip A. Dew, King and Queen; Thomas Mileolm Merphalp and County; William G. Overton, Malcolm Merhalm Almenberg county; George C. Dromgoole, Brinnwick county; Randolph Harrison, Combettand county: Robert Masser, ev. Robert Hutt, Halifax co. Gunney Robert Yanger, rev. Robert Hurt, Halifax co; Ferdinand W. Risque, H. R. Anderson, Richard Jones, Nottaway Josiah Ellis, Dr. Charles Everett, Thomas W. Gilmer, Charles Cocke, Albemarle; Alex. Gordon W. Gilmer, Charles Cocke, Albemarie; Alex. Gordon Knox, William O. Gonde, Merklen-burg, Charles D. Melndor, James S. Bramber, Peters, burg, William Maxwell, John Tabb, Norfakk, Braja-min F. Debney, King William county, R. D. Grayam, Stafford county, William P. Taylor, John Dickmson, John H. Bernard, Careline county, Thomas T. Gilts, Amblia county, Immas Leves, Wick. Amelia county; James Lyous, Richmond; James Jones, Amelia county; James Lyons, Richmoni; James Jones, Mottoway; James Magruder, Berjamin H. Magruder, Fluvanna county; John W. Jones, Chesterfield county; S. A. Sorrow, theny H. Watts, William B. Rogers, Linn Banks, William H. Roane, Archibeld Byee, jr., William Daniel, jc., S. H. Davis, John Brockenbrough, Cangas M. Passes—S. George M. Payne. -51.

Curolina .- Joseph B. Skinner, S. T. Sawyer, Edenton; Charles Fisher, Salabury; James Irofell, Joseph D. White, David Outlaw, Joseph B. G. Roulhac, Bertie county; William A. Blount, Washington county; John E. Wood, Hertford county; J. W. Cuchran, Fayetteville; Louis D. Wilson, William R. Holt, Wm. W. Jones, Edward B. Dudley, Thomas S. Hoa-kint, Robert C. G. Hilliard. -- 10.

South Carolina. - Zacharish P. Heradon, Union c. h ; James G. Spann, Sampter; F. W. Davie, Chester c. h ; James Cullbert, Win, Pope, Cossignatethic, Thomas Pinckner, Win, Pope, Cossignatethic, Thomas Pinckner, Win, Holter, Pendiron; T. B. Singleton, Williamshaye disk ki, Joseph W. Altson, W. Wilkin-son, Pialip Talyman, Thomas R. Michell, W. A. Als-lon, T. Packney Alton, Henry A. Middletin, Georgetown; Charles Maebeth, Langdon Cheves, John Frazer, teens Charles Macheth Langdon Cheves, John Frieder, James Lynch, Clancellor Harper, Wm. C. Presston, Danid E. Huger, Hugh S. Legaie, Thompson T. Player, Henry N. Cunger, A. P. Buller, Henry Middleson, Charleston; Henry C. Young, Laurens c. h; Stephen D. Miller, Laurensee c. h; Joh Johnson, Newberry dat.; John D. Edwards, J. H. Glover, Halterbrough; John D. Corter, Camden; John Taylor, Edward Hachardson, Richland district; Wm. Snirh, Yak destrict; J. Berkley Grimbal, James Rose, Thomas Williams Smith, Thomas Williams, jr., Joseph E. Jenkins, Hugh

Smith, Turinas Wilson. – 41. Georgiu. – Eli S. Shorter, Scahorn Jones, Athens; Robert Habersham, Alexander Telfair, John Cumming, John Macpherson Berrien, Savangah - 6. Alabami. - Julio A. Elmore, Benig h S. Bibb, Howell

Rose, Philemon Waters, Henry Gulddhanke, Alfred V. Sent, Loundes county, John W. Moore, Enceth Parsons, Monree and Conceth counties; Wm. J. Mann, Limestone county, Ward Taylor, Archibald P.

Baldwin -- 11.

Mi sissippi. - George Poindexter -- 1. Tennessee. - Wm. E. Butler, Alexander Patton. -- 2. I'ms list is made up in the following manner: The "Plobal-Iphia Gozette" (which seems to have been so the official paper of the convention), of the 28th September, contained the names of all the delegates then known at Philadelphia to have been appointed, bemg S65 nominations in all; and to these were attached their several places of residence. A subsequent paper gave the names of those who attended, up to the October-and those gentlemen who are without a location in the list above, have residences unknum to ussome, perhaps, were tales-men, picked up, as from several states, because they happened to be in Philadelphia at the time, to make a full representation! We say some importance, in the matter before us. Look at Varginia, for example-nearly all the fieli gates are from the little tide-water countries; and New York does not thew one delegate except from the city,

We do not give the list as correct-but have closely examined the materials furnished to make it so-and if

error is, we hope that it is not in us. ]

ADDRESS OF THE ANTI-MASONIC CONVEN-TION.

From the New York Whig. TO THE PROPLE OF THE UNITED STATES: Fellow citizens:

A large and growing political party, through us, re-specifully addresses you. Numerous bodies of enlightened and honest freemen, in states containing more than half the electors of our union, have openly and fairly delegated as to represent them, in the performance of duties, which cannot fail to affect your essential rights. And believing that your rights are inseparably blended with theirs, we seek, most earnestly, so to perform these duties, as to produce effects equally and extensively beneficial upon the rights of all. These duties consist in nominating curzi as to be supported, as cambilates for the offices of president, and vice president, of the United States, at the next election, and in setting forth the grounds, on which you are invited to sustain the no-

The concurrence of millions of men, in any act of deliberation or decision, for objects, in which they have a common interest, presents to the mind a magnificent and exening speciacle. If the men be intelligent, patriote, and free, and the object be that of appointing the most suitable of their number, to guard the rights, and advance the prosperity, of the nation, which they constitute, human lile can rarely exhibit a spectacle of equal interest and sublimity. Scarcely any approach towards such an exhibition has ever been witnessed, in any country, but ours. Let it be our ambition, so to continue and improve the exhibition, in all is stated recurrences, as shall more and more commend it to the approbation and extern of the great broker-lood of communities, to which we belong and most effectually tend to the establishment and support of tree principles, in every community of our tellow mee.

In a lecting candidates for the highest offices, in the glit of the people, it is essential to consider—the people in reason and objects of our government—the personal qualifications of the candidates—the principles—and the personal qualifications of the candidates—the principles—and the means of removing that chapter. On each of these considerations, we wish to offer our opinions with that any moroaces, but means, and carriesticals, which become freemen, in addressing their equals and breakers, upon subjects in other candidates, and most important distinct.

Government has always been a business of the highest importances. In every form, it has been cived a nighty hofton occupion the mids homes, the been comboned its subjects. In most content content combon of its subjects, but most content content and welch for the press of the pressure of numerical de mindies? But had as it has been ji has not been without its advantages; and these have greatly outweighed at evils. Without government, there entitle have been no extensive associations among men. Their conditions of the pressure, wonth have produced universal collisions, so ferce and request, as to have prevented much ancrease; and the human race would have existent, at this day, only in the condition of a lew scattered; ignorant, indigent, let his, teroums, and maceure hamiles. To estact their above this could some government as absolute in distinguished the could some government was absolute in distinguished.

The great use of government is to accure tights—all the rights of those, who mate in its formation. These are compt hended in he heavily, and the pursual of happiness. To the scenity of these, other is essential. Other cannot be mantiated without a common and definitive arther of the differences, that may arise between the untirstuduals companing a mation, and a power to protect the whole against external aggression. Such surabitr and power is government; which, to he perick, should be just, intelligent, free from the bas of a lif interval, and effective, as to all the objects for which it is constituted. But such a government never existed. And so long as men are government never existed. And so long as men are government meter existed. And so long as men are government.

motion to such a government is a republic. A repub ic acknowledges the rights of all, and seeks A repose executorizages the rights of any and access to avail uself of the wisdom and power of all, to pro-mete their common welfare. Its theory is perfect. It is founded upon the proper basis, pursues the proper end, and employs the proper means. And by the principles of elective representation and secondability, it may be so extended as ultimately to combine all nations -it not into one family-into a triently assuciation of several peaceful, prosperous, and unmerous immolies. It right, duty, wisdom, and power, can contribute to the real exaltation and improcess of mac; and if government can combine and apply them most comprehensively and beneficially to the regulation of lamon conduct, then republishmen offers a more majestic and reverend image of autist-utial glory, than can otherwise result, from the labors, and sufferings, and virtues of our race. It is a practical scheme of universal benevolence, sure to be approved, embraced, and sustained, by all men, in proportion to the just prevalence, in their minds, of intelligence, trath, and philanthropy. Such a govern-ment is the one, under which, it is our privilege to live.

Where it is the distinctive object of gaverament to bring the public wisdom to the direction of the public will, for the public good; and, the people understand their eights, their duties, and their interests, a their good of their tree voices, is the most precious reward, or carthly origin, which can be bestowed upon intellectual and moral merit; and imposes an accountability exactly proportioned to its value. No step should be taken towards its bestowment, without a lively and generous solexaude.

The qualities, which should be possessed, by every precident of the U. States, are the most estimable, this can adorn a man. He should be industrones. No great and of homan lide can be obtained without great mode of homan lide can be obtained without great progressive, and cannot be offered to the control of man, is progressive, and cannot be offered to the control of the contro

He should be intelligent. The objects and provisions of our government, in all its relations both loreign and domestic-the fourres of its power, and the means of its support-the history of its origin, its establishment, its tends, and its froi s, are topics of inquiry and inclination more pregnant with valuable instruction to the genuine friends of man, than all others supplied by civil records. They are themes of enlightened examination, discussion, and admiration, every where. And the most re-spectable nations of the old world are now agonising to disabute themselves of their ancient, burthensome, and unequal institutions, for the sake of inflowing our example. To understand these topics, will well reply the ifforts, it may east, to every mind. It is an essential part of the education of every freeman. In him, who is entrusted with the most responsible application of all the knowledge they intold to the holy purposes of rightful order and social advancement, it is equally the dietine of day, sell-respect, and honorable ambition, to unthe estand them fourtherly, and in all their details. Such understanding can be obtained, only by daigent study, skep reflection, candid observation, was intercourse, and pract cal experience.

He should be honest. His conduct should be a perfeet exemplification of the solemn claims of truth and right, in all his communications and influences, and of the strict at fidelity to the prescribed fluties of his office. in his official and private relations—the transcript of an apright, pure and benevolent mind, and suitable to aid nutrigut, pure and neutroness and account of the accomplishment of all his grave and easiled functions. The greatest crime, which can be committed against freemen is the usurpation of power. It should be deened the unperdonable an of republics. It has been the unlathomable deep in which all the footsteps been the untathomable deep in which an the lookeys of blotty, in other countries, have been swallowed up in all succent and modern times. To it, the highest in all succent and modern times. To it, the highest place of delegated powers affords both the most temptaplace of delegated powers of success. Whose tion, and the most probable means of success. Whoesty. It he yelds to the temptation, and seeks to em play the means, entrusted to him only for the benefit of his fellow cozens, in endeavors, to raise himself upon their roin, he should be branded like another Cain. His memory should be held in the most intense and immortal detestation.

He should be independent, following his own consistions of right, and not shronking from any of his appropriate responsibilities. It is should be swayed by no private and allegatimate inducaces, and never seek to cast his burthers upon others. In every act of the power law hith assigned him, he should stand forth, as the presonal agent of the public will, and answerable to all tigs institutionals.

He should be vigilant. Our freedom, though well seed the should be vigilant. Our freedom, though well seed out of the source, may be invaded. In all other countries, freedom has been successfully invaded. Ours is too valuable, and has been too dearly purchased, to omit any means of its preservation. Whout eternal vigilance, in all its entitled, no means will be sufficient. Wath an avaid entitled to mean and the sufficient which is sharing, he who occupied the highest watch-tower of the nation, should earefully

mark all the indications of good or evil, which may affect it, and weigh them well, the better to secure the obpublics, from which there is no appeal but to force, the

He should be wise in judgment. To this end, patient examination, cool deliberation, and impartial affections are requisite. Accordingly, he should be in the customary use of them. His judgment is the great large of good or evil to millions. It should not therefore he hasty, wavering, or weak; but well informed, lainful and firm.

He should be prudent. This quality refers more to action than to speculation, but includes buttle, and consists in a segacious foresight of evils, and an effective application of means to avoid them, as well as in an enlightment annicipation of benefits, and and quote efforts to secure them. It is an exalted merit; not often belliant in its means, because they are such as enumons ensecutions, and therefore excite no wonder; but blessed in its effects, because under all circumstances it leads to the atmost attainable good. Prudence obtains less present than it deserves, because it is often confounded with the partial and sordid purpose, to which it may be made subservient.

He should be disinterested and patriotic. Yielding himself to the wishes of his fellow citizens for the momentous task of their leading civil service, he should in all its specifications and labors, lose himself in them. Their rights, their safety, their happiness, should be his undeviating aim. Regarding them as his potitical bre-thren and principals, he will be intent upon promoting their interests. In this way, he will scenre his own. And grateful to them for his elevation to the noblest and widest sphere of beneficent exertion, to which wisdom and virtue can aspire, in this world, he will labor, unceasingly, for the good of his country. With a country disingly, for the good of his country. With a country dis-tinguished above all others—lor its exemption from time-honored abuses either civil, ecclesiastical or military-for the self-directing, and self-relying liabits of its people—for its ingenuity and enterprise, in all the walks of productive industry—for its force and steadiness of resolve, in pursuit of practical utility-lor its just distribution of social respect and honor-for its high and equal valuation of individual rights—for its mixicity and ability to disseminate useful knowledge, among all its children -for the spirit of improvement incorporated in its frame of government, executing to the discovery, and inviting to the adoption, of every new and useful principle, and method of operation—for its unparalleled advancement in wealth, numbers, and strength--lor its facilities of enlargement over half a continent, and of influence over all the world-lor the adaptation of its employments, purposes, and institutions, to the rights of man-fer its arge and increasing enjoyment of the esteem and tavor of nutions-and for its glorious hopes of perpeting, it of mations—and for its gioraous nopes of perpetuity, it would be necessary, that he should be a patriot. It would seem impossible for him to be otherwise. Penetrated with a just sense of the dignity and importance of his great trust, he should endeavor to discharge it, with parental and equal regard to every section and member of the national family.

What should be the principles of his administration? Such certainly as are found in the fundamental doctrines of the republic, and are best calculated to har monise prder and right. As drawn from our constitutions and de-lustrated by the writings and examples of our sages, they are chiefly the following-equal and exact justice to all men of whatever state, combinon, or persuasion, religious or political—peace, commerce and license triend-ship with all nations, entangling alliances with more—the support of the state governments, in all their rights, as the most competent administrations for our domestic concerns, and the surest bulwark against anti-republican tendencies-the preservation of the general government in its whole constitutional vigor, as the sheet anchor of our peace at home and salety abroad—a sacred regard to our peace as notice and safety aurono -- a sacred regard to the principles and spirit of our union, which make us one people, and have been the essential means of our national power, honor, prusperity and treedom, as much as they were of the successful assertion of our national independence-acquiescence in the decisions of the majorty, even if deemed wronglul, till they can be lawful-ly changed, by the influence of intelligence and patriot-

publies, from which there is no appeal but to force, the vital principle and immediate parent of despotism-a well organised noticia, our best reliance in peace, and for the first moments of war, till regulars may relieve them - the sourcemacy of the civil over the military authinrity-economy in the public expense, that labor may be lightly burthened—the honest payment of our debte and eareful preservation of the public faith—encouragement of the great interests of agriculture, commerce ment of the great interests of agriculture, commerce and manufactures, that every branch of productive in-dustry may be profitable, protected and respected—the diffusion of information, by the reasonable patronage of clementary schools, and scientific establishments, as well as by the publicity of all governmental transactions, with those temporary exceptions only, which are dictated by prudence, in relation to foreign intercourse, and the ini tistory steps in prosecuting crime—the arraignment of all abuses at the bar of the public reason—the strict accountability of placemen and frequent rotation in office the unbroken dominion of the laws over all men, whether private citizens, public officers, or associations of both—the prompt and lawful application of all the necessary powers of guvernment to secure the liberty and life of any citizen from criminal invasion, when it is known to be threatened, and the most strenuous and persevering exertion, on all occasions, to disclose and bring to legal punishment, the perpetrators of erimes for liberty has no existence, but in name, where the og overnment is unwilling, or unable, to withtand the en-terprises of faction and crime, whether proceeding in secret or in public; confine each member of the society, and association of members, within the limits preserve of the the leavest. and association or memores, whom the immed preserved by the laws, and to maintain all, in the secure and tran-qual capit ment of the rights of person and property. There are yet other rights of the peuple of which has administration should manifest a scalous cure—that of political equality, implying general suffrage, and eligi-bility to office—of the ind, pendent and sale application of the right of voting to all cases, which the people shall think proper, as in this way it may become the mild and sale corrective of abuses, which must be lopped by the sword of revolution where peaceable remedes are un-provided--of freedom of religion; freedom of the press, and treedom of person, under the protection of the habeas corpus; of trul by juries and judges impartial in ther obligations and impartally selected; and of setheir obligations and impartantly screening and occurry in person, houses, pupiers, and effects, against uncasonable search is and serzores. These seem to us the assemble nemeroles of our freedom. They have been raised out of the precious more of human rights, by the labors of ages; and having disengaged them from the rubbish and stress, under which all the workings of ignorance, taction and tyranny, would keep them eternally buried, by the most pure-hearted, ardnous, and sagacious exertions, our political lathers have combined and set them up, for our shelter and guidance. Let us never be unmindful of them. We can have nothing of so much worth. They are the most brillmut jewels of our nation already rall and renowned. We cannot overvalue them. But, unlike the sliming baubles of ustenrate them. Dut, there the storing bathin of intentations and unrighteous power, they are valuable in their use. In that alone are they good; and their most important use is, to be maile the touchstone of the merits of those we trust.

of those we trust.

Are these punciples in danger? Every cambat man, who will enquire, most think so. They were never in diagrer so imminent. Their loc is rich, theeplined, and wity. He obeys no rules of civilized warfare, no restrict the control of the civilized warfare, no restrict the control of the civilized warfare, no relatively of the civilized warfare, no release the civilized warfare, no release the civilized on as the chief delenee of our blotty; every where lies in wish to deceive; endeavors to poison the springs of resistance to hint; seduces the invary, disloyal, and corrial, by flattery, har-rative employment, and offers of resistance to hint; seduces the most smill work, by inaughty exhabitions of his power; and assails by alton-produced the control of the cont

till they lairly understand the character of freemasonry,

and ascertain its conduct. Whenever they do this, the incredibility ansishes; they join the great rally of anti-masons, and work with one mind and uniting zeal, in all the way of Lw and honor, for its abolition. The dissuctination to take up impressions of evil against it arises, who out wholly, from the law characters of some men, who have been connected with it, and from the support of it, by interested politicians, and the presses under its control.

Honorable men have joined it, in early life. Incited by unsuspected representations of its purity and value, and by curiosity to explore a my stery, they surrendered themselves to the wish of its numbers, and offered to be conducted into its dark chambers. Of these we know some stopped at the threshold; some, in the first degree; some in the second; and more, in the third. None of them knew any thing of its peculiar ceremonies, oaths, or objects, till they had sworn to concent They have often pra sed the virtues it claused, for they loved virtue, and hoped the claim was just. But they never inhibed its spirit, or knowingly approved its principles. From the first step of their initiation, they always suspected both. If they did not, we should have heard from some of the ten thousand conscientions and patrionic seculers, who have opened the done upon all its proceedings, of fathers leading their sons to the masonic altar. Among them all, the seculers have probubly witnessed admissions into nearly every lodge in the union. No one has told you, that he ever assisted at the initiation of his own son, or knew any other lather do so, in rel-tion to his son. Is not this a most honest, legible, and latal condemnation of the order, derived from witnesses the most competent and credible though unwilling-even from the very hearts of its adhering members? What! would not a father initiate his son, the pride of his life, the hope of his age, the object of his provers, into an association of honorable men most exclusively designed, and most wisely adapted, to the inculcation of science, chardy, religion? How have good fathers done, who have become freemasons? Let each one look around among his acquaintances, and recall his past observation, for the answer. They have discon-tinued attendance upon the lodges. They have preferred other schools of science, for their children. They have resorted to better means of impressing the love and practice of cloudy upon their heacts. They have and practice of clority upon their hearts. They have looked higher for their religion. Either the best of fathers, who had joined the lodge, were anti-masous in the bottom of their hearts, knowing the institution to be a base imposture; or they hated their children.

But how laste incembers, who were most distinguished for public honor and private varue out of the lodge, constituted, in relation to it? Franklin is said to have replied to his brother, who saked his advece about juning the society, "one fool is enough in a family." When the reputable and beneather the reputable and beneather the most of the most erriminal degrees of the order were known in our country, he was enquired of, by a young friend, whether it was worth his while to become a mason? and he answered NO—with this pregnant addition, "by aggregation to the society a young man might sequire a luttle artificial support, but that he did not need it; and there was nothing in the masonic institution worthy of his waste to the country of the was nothing in the first manual in the country of the waste, by his bold and freedom-freighted thoughs, and the high bearing of his devoted expression of them, was the most prominent agent in carrying the declaration of interpretace, in the illustrius congression of them, was

But, Washington, and his brother officers of glorious memory, were masons. True. They were almitted to three degrees. None of them went legler, in the early days of our independence. Washington never visited a folge but once or twice after 1768; and never presaited in one. He afterwards in effect, renounced it, and so did a barge majority of the officers before allithed to, in these voluntary determination to extinguish the Graeiunsts osciety. To this society by were bound by stronger ties than masonry can offer to uncorrupted minds—by those of a natural and general and generous synapatty, of which the golden links were struck out and forged, in the welding fires of our revolutionary

war.

The origin of this society was innocent; its objects were laudable; its laws were published; its meetings were not secret; it administered no oatles, imposed no blondy penalties, had no division into degrees, and its members were respected and honored as the benefice tors of their equatry; but it introduced distinctions between its necolers and other engens; its associates were badges, a rubbon and eagle; it was hereditary; admitted homorary members; and had build for charge. Thus constanted all the whigs of the country, in civil life, as soon as it was known to them, opposed it, as emmently dangerous to liberty. It had no political objects. The conduct of its members, and the true purpose of the association were excillent. But it was ble to abuse. Political means were resorted to, for its abolition. Governors of states denounced it; legistative bodies expressed their opposition to it, by solutions; assemblies of private estizens reprobated it; the press sternly and universally rebuked it; the whole constry was excited to a flame against it.

Washington soon became sensible that it might prothree political evils, which the pure and strong motives. in which it originated, had hidden from the observation of its members. And he attended its first annual meetsion. He did so exert it. And the order was on the count of being annihilated by the vote of the great majority of its members. Its complete annihilation was prevented, only by a sense of courtesy and consistency towards their threign brother officers, whom the members had will considered the abuses of which it was soweeptible, and the political tendencies, which it might foster. They and destroy its essential testures, by resolving that the order should be no longer hereditary, and that no new members should be admitted. They discontinued wearing its badges, in this country; and lelt nothing of its existence, but its name, its meetings, which were changed from being annual to triennial, and its charitsble tands, which were ordered to be deposited with the state legislatures. This landaucutal modification, with the well known cause of its continuance, in the shape it was made to assume by its own members, appeared the public; though Jeffefferson, and many others, expressed a decided disapprobation of its continuance at all

Compare this society with freemsonry, in its motives, its origin, its slegrading ecremonics, its secondisting of the second secondisting of the secondisting of the secondisting of the se

The unavoidable inference drawn by every prudent man, from observing the conduct of its best members, in all past time, is, that its claracter is bad. This inference is greatly strengthened, by the intelligible hints and friendly advise of the most trust worth; among them. It should be ripened into unhesitating conviction by a consideration of the secrecy, which it enjoins. Standing secrecy always implies shame and guilt. It is interly inconsistent with social improvement, confidence and happiness. All the decendants of Adam inherit his nature. While he was unoccust, he was ingenuous, communicative, without the need, or the desire, of concealment. For the first crime he committed, even before the sentence of banishment from Paradise, was pronounced upon him, he sought toncealment.

But we are not left to our own reasonable inferences, or to limits, and a few honest but guarded expressions, from its members, to decide upon the sharacter of freemasonry. That character has been revealed, under oath, by its adhering members, and by a great band of seceders. And how does it shad? Intamous by ond all parallel in human annals. Its principles are victors, murderous, treasonable; and so bar as they prevail, tatalij

hostile to those of our government. In the first deer e, the candidate pledges himself under oath, and upon patesture of his ble if he does not the secrets of freemasory, which he has then received, is about to receive, or may thereafter be matructed in Among the secrets, which the candidate may, and must of his pledge of passive obedence to the laws of the ther of that degree. If he takes the third degree, smong those secrets are pledges to fly to the relief of a brother of that degree, when masonically required so to do, at the risk of life, should there be a great probability of saving the life of the brother requiring, than of losing his own-to apprise a brother of ail approaching danger if possible—and to conceal the seriets of a brother tler and treason only excented, and they left at his discretion. And if he takes the royal such degree, smoong those secrets are idealers -to extracte a brother of the those secrets are plenges—to extracte a brother of that degree from danger, it be can, whether that brother he right or wrong—to promote his publical prefermant before that of all others of copial qualifications—and to conceal his secrets, murder and torsion not execut-Thus is the concealment of crimes made a masonis duty; and the candulates expressly disclain all comvocation, mental reservation, or evasion of mind, both in the first degree, and in the last.

How do these parts of masoury affect the moral clasracter of its members? In the first degree, and every other, no man knows any at its obligations, till after he has sworn to concert them. It is a first principle in morals, that there is no accountability without know-ledge and free will. Such oaths, therefore, are not bindmg, and no forms, or objects, or a lem ities, can make ing, and no forms, or objects, or when heavy combined them so. But what is the purpose of the order, in the ceremony of imposing them? Can it be good? It is certainly such as can be accomplished only by mendi-vested of all sense of accomplished only by mendisense the better, for all the purposes of fraud and or me -and the more of it the hetter, bir all the purposes of inteachty and virtue. These are truths, which mobody can getusay. All the lastury of picty, on the one hand, and of sin on the other, asserts them. They are obvious to masonry, is, therefore, obviously in hostility to good murals. It is more than that. To take such an outh deliberately and with an intent to perform it, is an attempt at the voluntary extragonalment of the highest rights of the soil, and a complete locationic of the source of every duty. It is not possible to imagine a source or every only. It is not possible to imagine a more aggravated crime. Rape, murder, treason, may be repented of, and their perpetrators reclaimed. But to lorego the rights of knowledge and volution, in regard to every proposition, which can be offered to a moral agent, amounts to a desperate erasure of the image of God from the breast. It would necessarily preclude repentance, reformation, pardon, hope; and he death, in its most matterable horrors. It would be as much worse than common suicide, as the value of the immortal spirit is greater than that of the corruptible body.

an spin in greater manufactor in correspondency, in the degrees, higher than the reyal wish, the means here a wear to appose the order through the british manufacts as wear to appose the order through the british manufacts and of a companion of the order, and of a companion's freend, for whom he pleady to those of any mere man of the world, in nature so difference submitted to them—never to engage in mean party strict, or comparison and the government or religion of their country, whereby their religions may suffer, men ever to associate with dishomorable more, her a member exert of associate with dishomorable more, her a member exert of associate with dishomorable more, her a former exercise that the treatment of a companion, whose necessate require this degradation at their bands—to hollow strictly every command of the fibration's kinghts, and grand

oath, by its adhering members, and by a great band of commander, and especially to sucrifice the truitors of

liave these points of meson's obligation any political All the rights of or an are founded in his moral in is the intention of free government to secure bearing! nature. him in the possession of these rights. Whatever is Isostile to good monds is therefore upposed to the end pohey of bremen. We have seen large numbers of the New York, debberatug in their lodges and elsewhere; on the means of suppressing a written disclosure of the secrets, by one of their number - we have seen notice s col a standerous character, significancously printed, a few days before the service and murder of Morgan, in new spapers a hundred miles spart, warning the public gamest the do and the author of this disclosure and especually directed to the masonic brotherhood should the active time we have seen missons set fire to a building prepared by them with necessar core for sudden combustion, because 4 was supposed to contain this disclusive in name nuscrint-we have seen them employ a masonic printer, who was a stranger and an alien, to go into the office where it was printing, with the offer to and in that work by labor and money, for the sale purpose of stealing the manuscript-we have afterwards seen them kidning the writer at it, carry han handwinked and bound, with the greatest scerecy and causion, through a great extent set populous country, to a fort of the United States—indawfully and foreibly monison him there-collect together in frequent deliberation, open the means of his final disposition-communicate, while in this situation, with several members of a chapter of their body, then numerously attended in the neighborhood-and resolve unan-mously, though with painful reluctance, on the part of that their masanic obligations required them to murder him; not for any offince against the state, but for the sole cause of his attempting to publish the secrets of the and r, which he had a lawful right to do, and which, considering their character, he was bound to do, by every consider dion of private moralis, and fidelity to his comtry. On the night of the 19th of September, 1826, they seem lingly murdeced him. To this tearind consuminasworn to masist each other, right or wrong, and to conceal cacle other's murder and treason. After the morder, all the preemition possible was taken for concealing it; but this not being a fielly successful, and legal prosecu-tions being threatened, the erinmals frequently met and consulted together, for their mutual safety. The most adjusted among them invisted, that it called by the legel authorities of our country to testily, they one and all most swear they knew nothing of the matter; otherwise they would be bersworn to masonry and might lose the life they would thus befeit. As with reses, as magis-trates, as shorffs, as goind jurors, as jetit jurors, as iegislators, these mesons and others with whom they were relations they violated their ooths and the most secred duties. They flew to each other's assistance knowing They gave each other notice of the their criminality, approaching danger of legal prosecution. They spirited away witnesses who, they teared, would disclose too morel. They perpired themselves in court. They contimacionaly refused to answer questions decided legal. They declined to answer, on the ground, that if tion to the morder. They prevented the judicial accermade common cause in behalf of these crimmals, against the rights of the citizen, and the laws of the land, sands of them were acquainted with some of the steps of these crimes against the state. Hundreds of them know the leading maletactors. A good citizen cannot look on with indifference and

A good citizen cannot lonk on with indifference smil see a fellow becomin kilmapped and murriered. He cannot know that such crimes are successfully printected, by an extensive, artifu, and powerful conspiracy, without being excited against it. The sympathies of a particle embrace his whale country. The powerst man, the most delinecless woman, the weakest child in it, cannot be assaided with unlawful violence, without quickening his pulsee, and stiffcoming his sinews, with indignation. Illis ultood is up in every case of high erimic; and it keeps

<sup>\*</sup> This pledge is sometimes omitted in the royal arch degree, and sometimes included in the master's degree.

ttp against the aggressor, till the law performs its office fed the innocence and praised the victurs of the conupon him. To the low he is willing to submit, because he knows it is the deliberate expression of the public will for the public good; the great shield spread by the

limited a of all, over the rights of all.

Inclividual rights are, acceptately considered, of immea-surable and indefinable worth. They partake of the in-finitude of moral existence and responsibility. As contemplated by our government, a single individual, and One was much as another, is an august being, entitled in invisibile revenue, and bearing upon him the badge of a most impessic origin, and the stamp of most tran-scendant desimations. His safety, his liberty, his life, bus insuprocuent, his happiness, it designs, at all times and places, bithinfly to protect, by the application of all its delegated means. The law is the brueficial instrument of this protection, and should be appreciated by every reflecting man as the sacred, living, and mest venerable expression of the national mund and wil. Break this, and the nation has but one right left, which it can peaceably enforce, the right of suffrage.

The masonic institution is answerable for the crimes to which we have referred. They were rominited in obedience to its prescribed and specific oaths, and in lear of its penalties. The man-stealing and murder, were for no other than a masone offenee. The white array of its frightful crimes, but of court, and in court, were no other than necessary means of carrying into effect the obligations it has deliberately and universally exacted of its members. All who uphuld the obligations, up-hold the erimes. No othering manin has afforded the least willing assistance to the exposure and punishment of them. No lodge or chapter has called the craninals to account. Many of them are known to the public. Cheschoro, and Sawver, and Lawson, and Bruce, and Whitney, have been convicted of the conspiracy to kidnap, and have been condemned and suffered inlamous punishments, and the very marderers are known with moral, though not with strict justical certainty. No one of these men have been expelled. The grand lodge or grand chapter of which they were members, has the relation to them; and such of them as are still living, are, in masonic estimation, worthy members of the prdiam

But the festernity have gone much forther to make that crime their own. In 1827 the grand lodge gave 100 dollars to one of its members then under public accusation for kidnapping Morgan, and aftewards convieted of that offence; and the grand chapter, he its vote, placed 1, 00 dollars at the emiral of another of its mem-bers, ostensibly for charitable uses, of which a part has been proved, in a court of justice, to have been applied for the benefit of other kidnappers; and the trustee of the charity has never been called to an account by the grand chapter, for any part of the sum, though in all other cases such accountability is enforced by the chapter. The records of this last body, apparently relating to this transaction, have been produced in court, and were seen to be mutilyted

The traternity have also employed and paid able coun-

sel to defend the erminals.

In this way, while the chief magistrate of the state of New York was, by proclamation, offering money, for the conviction of the offenders, the highest masonic hodies, in that state, were offering, and in their associate capacity actually paying money to protect and support them. Can it be justly thought surprising, then, that so few convictions have followed upon such charmous attained in legal form?

The crammals, in all these atracities, testified their devotion to the institution, and by its own laws are only the more entitled to its goardian care, by all the hazards the more cuttlen to me guar man care, my an incommentary moved. That care has been extended to them in every form of expression tending to their relief and comfort. Besides the exertions of their brethren already allushil to, adhering masons have, at great expenie, established and circulated newspapers to vility all who were engaged in exposing the crimes, and to eall into action the entire resources of the fraternity, in behalf at those who committed them. These newspapers have, with the most unblushing hardihood, assert-

viets, several of whom they knew to have conferred They have commended the most stubtheir offences. born refusal in court to reveal the truth by masonic witnesses, as mady firmities. They have in every been of misrepresentation, which they could devise, I-bored to darken all knowledge of the facts relating to the outriges; and to blot out the moral sense of the commonny.

Humberly of the brethren in different counties in the titude cas of the preturen in diagreen counties in the state of New York; have published addresses, under their names, in which they have deliberately contra-ducted lists established judicially, by many of their adbering brethern and by many seconding masons; and which, under the senction of a lawful cath, and subject which under the sanction before the public, they would be seen that to admit. Similar falseboots have been published in an address of a committee of the grand lodge of Rhode I land - and the grand accretary of the grand lodge of New York has recently usued an official letter, in which he represents that body as extending its dependants, confident in its strength, and determined to outbrave all the consequences of their detected guit, and the public infiguration. Nothing could account for both, that the men who are engaged in it, have swern, ander the penalty of death, to conceal the secrets of breenssonry, a most essential branch of which consists in the crimes of its members. This course is countenanced by the president of the U. States, who is a macon, and who has recently appointed as heads of the departments in the national government, a nojorny of distinguished mesons. One of these heads of department—the post master general, the only one retained of the late cabinet, has removed a large number of his most competent and bothful deputies, in New York, for the sole cause of the zeal and patatism with which they sought to bring into just disrepute the crimes and matitution of Ircemasonry.

The course of these transactions is rapidly correding and wearing away the very basis of all public and pri-vate virtue in our country; and eradicating that mirrual confidence, upon which the business of life, its peace, and to enjoyments essentially depend. When non rebise to hear tectorony in court, to public off nees, of which they know the perpetrators, and are proceed for it-when they perjure themselves, and are not disgraced -when they are convicted of a conspirary to kulnup a free curzen, and are applauded as victors to the prejudoes of their countrymen-when the distinctions between right and wrong are procheally supersided, by the systematic and solemn injunctions of a worldby, intelligent, onmerous and powerful society, diffused and sustaining itself in all the places of social influence and honor-when in pursuance of this injunction, the laws of the land, in the solemn places of their judicial appliestion for the admonition and nunishment of the most estion for the simulation and quantiment of the most fagrant offences, are foully baffed, set able and scorn-ed—then, the social fabric is trembling—then there can be but one alternative, that of reform or roine-then, looking beyond, but not lorgetting, all the considerations of attachment to the policy of encouraging this or that branch of national industry—this or that scheme of financial management,—this or that exposition of the principles of our political organization - this or that object of all our toreign and demestic pelicy, the considerate triend of his country will govern himself primardy, by the obvious accessity to which he is reduced of preserving for his country the power of determining for itself upon any course of pulicy, and of disengaging the heart of the tools politic from the fangs of a monster more blood thirsty, remorseless and insatiable, than any, which has ever come to prey upon the hones of man.

There is a bearing of freemasonry, not yet embraced in this address, which is replete with the most distressing apprehensions. There is located, in Boston, a masome body denominated the American gession of the dates its origin before the American revolution, and deacknowledges no allegimee to any of the associations of American masonry. Its authority is co-extensive with our union. It has already granted many charters to tion, to look in upon their proceedings, to count their

inmates, or to specify their resources.

ministes, or to specify their resources. What are the means of removing these dangers? The dangers are confined to no one place, in our country, and to no one department of our social interests; but extend to all places, and infect every department. Common prudence demands, that the means should be capable of reaching them, wherever they exist, and sosceptible of a safe application, in their utmost extent. Such means we have; and we are tambiar with their use. They consist in the honest exercise of the right of suffrage, and the most patriotic employment of official patronage. The evils of freemasoury operate upon the moral and unlifical condition of the nation, and can be removed only by moral and political means. It is the exalted excellence of our political institutions, that they are especially designed and adapted to secure our rights, all of which pertain to us as moral beings. In voting, every elector should always be governed by a knowledge of his rights, and the desire of preserving them. There can be no higher political duty than thus.

But the use of our right of sulfrage against freemasonry is termed proscription. Proscription cannot be imputed to a party, because it justly opposes what is wrong. It is not proscription to be resolute and active in detecting and denouncing opinions of which the obvious tendency is to unlinge society; or to resist, by every lawlul means, the influence of men, who commit erimes, and confederate to support each other in their commission. To call such detection, denunciation and resistance, proscription, could never satisfy an honest mind. It would be like stigmatising, with an opprobrious epither, those public benefactors, who teach men, and make their best exertions to discourage them. Proand make their dest exercion to discourage them. I make their dest exercition can apply only to those, who uppose and leasen the influence of their fellow citizens, because they innocently and with good motives, think and set of ferently from themselves. Such proscription deserves reprehensively. sion, because it invades the equal rights of others, and is averse to the improvement and happiness of all.

The offences of freemasonry upon our individual and national rights, if they had been committed by a foreign nation would, by the law of nations, have justified a public war to averige them. Shall we lall in love with erune because those who commit it are near as? Shall we spare the destroyer because we can subdue him peaceably? Freemasonry can be destroyed by the votes of freemen, and by nothing else. All who are truly opposed to it, will always vote against it. And they deceive noboily but themselves, who profess apposition to it, and yet dare not express that opposition by their

No good reason has been rendered, or can be rendered, why a freeman, who is opposed to freemasonary, should not vote against it. The application of the right of suffrage against it is just, peaceable, effective and may be as comprehensive as the evils which alarm us. And no other means can be described, or imagined which unite these characteristics. Voting is the only decisive means by which public opinion can be distinctly ascertained upon the subject. And since many persons not initiated into the society, openly councel them-selves with its fortunes, and make every exertion in their power to sustain it, by their votes, we cannot safely, if we would, betake ourselves to any other resort but the ballot boxes for its destruction. These persons affect to consider themselves as entitled to the praise of all candid and unexcited minds, by the course which they adopt; and profess to be neither masons nor anti-masons; claiming the respect of the community for their indif-ference to its rights and welfare. If it had not been for the support of the order, by interested and profligate politicians, who were not members, the forfeiture of public confidence justly incurred, by its crimes, would have been so carried home to the minds of its most worthy members, as long ago to have induced its entire dissolution. It is an undoubted fact, that the men, who are neither masons nor anti-masons, are answerable for the continuance of the order. They have kept it from sinking into aunitilation by its sins, and are thus equally consumble with its members. No association of men.

African lodges. We are afraid to intimate their loca- | however impudent and hardened, can withstand, for however imputes ann naruencu, can wanname, so, years, the indignant, well lounded, universal rebuke of their lellow citzens. So treated, the worst members would be driven from the face of the sun, and from public observation, into the lastnesses and caves of the earth, to take upon themselves the skulking habits, along with the flagithous purposes, of lelons; and the best would be compelled to abandon it.

It is attempted to make anti-musonary odious, because it is political. But these attempts must recoil upon those with whom they originate. None but tyrants can think the use of political means degrading. And there seems to be peculiar effrontry required to impeach it, in a country where every thing most memorable, in its his-tory has been inseparably connected with political movement, and every thing most animating in its prospects, is dependent upon pulitical action and superversion.

The exertions of our fathers to establish our independence, were political exertions. Even the revolutionary war and the war of 1812, were waged for political ob-jects. The constitutions, by which our ordif and reli-gious rights are secured, are political constitutions. And this independence, these constitutions, and rights, can be preserved and perpetuated only by political means.

Voting for our public servants is the highest excreise sourceise nower known in our land. It is the paraof sovereign power known in our land. manut distinctive privilege of freemen. In countries where only a small minority of the people are authorised to vote, if oppressive measures are adopted, by their ru-lers they must either submit, or fight. In countries lers, they must either submit, or fight. In countries where all the chizens are authorised to vote, it they are oppressed, they can throw off the oppression, by their votes. And if the frowns of power, or the calumnies of malefactors have force in dissuale them from using their votes to throw it off, they are fit for slaves, and can be only slaves. The highest functionaries of the general and state governments are amenable to the people, for the proper ducharge of their duties. But a freeman, when he votes for a candidate, exercises the right of selecting, among those who are eligible, subject to no authority unifer heaven. For his choice, he is accountable only to his conscience and his God. And why should he not, in the most sovereign set he can perform, do himsell the great justice of giving expression to the honest conviction of his soul? It having the will, he cannot do it, he is a slave. It having the power, he will not do it, he is corrupt.

An enlightened exercise of the right of suffrage is the constitutional and equitable mode adopted by the antimasons to remove the evils they suffer, and produce the reforms they seek. But this mode, to be availing, must include a judicious selection of candidates. After diligent inquiry and mature deliberation we have selected, and now nominate, for your support, as a candidate for the office of president of the United States, at the next election,

### WILLIAM WIRT, of Maryland; And for vice president, AMOS ELLMAKER, of Pennsylvania.

These citizens we deem emmently possessed of the qualifications before set forth, as most essential for the offices, with which they have associated their names and confident of their devoted attachment to the princiand conduct of their devoted attachment to the princi-ples of all ministration contained in this address, and their concurrence in our views of the crimes of freema-sonry, and the necessity of their removal, by directing against them the sovereign and free remedy of public suffrage, and the bestowment of official favors, we carnessly recommend them to your support. Their election would be a great step towards the rescue of our republic from the odious and formidable power which endangers it; and we will labor to accomplish it, in the spirit of freemen. In this labor we invite you to particinate.

Our free principles cannot be preserved without constant vigdance, and a continuance of the same disinte-rested and determined action, by which they were established. They are the best possession of the rich, and the only wealth of the poor. They are the com-mon and peculiar property of the nation, embracing all its rights, its virtues and its fortunes.

Neither the price of our liberties nor their fruits will permit them to be regarded without emotion, by sny

intelligent mind. They have been purchased by ages of just, and carnest thought, of brave and generous effor just, and cannot trought, or orace and generous cort, of vecissitude, and suffering, and blood. Nor have they been purchased m vain. They have taught man to form a just estimate of his own worth, and of that of his fellow beings, to estimate the value of a reasonable and responsible creature, not by the place which he may hold in an artificial and unnatural state of society, but solely by the faculties conferred upon him, by his Ma-ker, and the intelligence and virtues of his character. And while they have abased the proud from his stilted and haughty elevation, they have brought up the poor to the exalted standard of human rights and human hopes; and thus opened the way for the whole family of man, "to run the great career of justice." We have set out first in this career. Let us remove every impediment, which would obstruct our progress in it, and by the attractions of our success invite all nations to embrace it. If we are true to ourselves, our institutions, our fathers and our posterity, this is to be our glorious destiny.— The influence of our example is already great. In our foreign conflicts and negotiations, our vigor, prudence, and wisdom, have made us respected and illustrious. Let not these qualities be wanting in their proper domestic applications, that the value of our example may be enhanced, and its influence increased. Providence has manifestly cast upon us the high responsibility of determining the most interesting problem of social life, that of man's capacity for self-government. If we suppress all unsocial conspiracy and selfish faction, from within, as we hitherto have done all dictation and tyranny from without, we shall determine it in favor of liberty. Such a determination the great and good of every nation expect from us; and they are beginning, in the face of all their foes, to hazard upon it, their possess-sions, their honor and their lives. Let us neither disappoint them, nor betray ourselves. A disinterested and faithful adherence to the principles which we inculeate, and to the modes of sustaining them, which we recommend, becomes both our cause and our responsibility; and irresistably commending itself to the honest and the free, it will give that cause success. It it fails, then, right, duty, improvement, self-government, happiness, are phantoms. We shall be compelled to repudiate the memory of our immortal sires, and forego the great inheritance they have bequeathed us. But it will not fail. Freedom is not more the Iriend of man, than the favorite of heaven. It is equally our highest glory, our most sacred sluty, our most assured hope and our promised possession.

MAINE. Levi Cram, Bangor, Penoliscot county. Hanes Learned, Gardner, Kennebec county. NEW RAMPSHIRE.

Caleb Emery, Lyman, Gration county.

VERMONT. Josah Rising, Rupert, (West) Bennington county. Samuel C. Loveland, Reading, Window county. Clarlee Davis, Danville, Calertona county. Joseph H. Brainerd, St. Alban's, Franklin county. Edward D. Barber, Middleburry, Addison county. MASSACRUSETTS.

Abner Phelps, Boston. Amasa Walker, do Benjamin V. French, do. Benjamin V. French, do.
Stephen Oliver, Lynn, Essex county.
Alpheus Bugelow, Weston, Middlesex county.
Nathan Lazzil, jr. Bridgewater, Plymouth county.
Joseph Morton, Milton, Norlolk county.
John Bailey, Dorchester, do. (P. O. Milton.)
Micha H. Rugglen, Troy, Bristol co. (P. O. Fall river. )

Hiram Manly, Easton, do. Gardner Burbank, Worcester, Worcester county.
Samuel B. Barlow, Granville, Hampden county,
Epaphras Hoyt, Deerfield, Franklin county,
Nahum Hardy, Waltham, Middlesex county.

RHODE ISLAND. William Sprague, Cranston, Providence co. (P. O. Providence.)
George Turner, Newport, Newport countyBenjanin F. Hallett, Providence.
Walter Paine, jr. do.

CONNECTICUT. Smith Wilkinson, Pomfret, Windham county. John Boyston, South Covertry, Tolland county, John Boyston, South Covertry, Tolland county, Samuel Kellogg, Colchester, New London county, Henry Haber, Windsor, Hartford county, Henry Terry, Plymouth, Litchfield county, Sheldon C. Leavitt, Beth em, do,

NEW YORK. Henry Cothest, New York city. Henry Dana Ward, do. William Howard, do. Robert Townsend, jr. do. Samuel St. John, ılo.

Samuel A. Foote, do. Jonathan Ferris, Cortlandt, Westshester, (P. O. Peck-

skill.)
Thomas S. Lockwood, Fallaburgh, Sullivan county.
James Burt, Warwick, Orange county.
Silas Stone, Hulson, Columbia county.

Detection B. Renselaer county, (P. C.

Sins Stone, Intuition, Common county, Joseph Case, Petersburgh, Rensselaer county, (P. O. Hoosiek.) Samuel M. Hopkins, Albany. David Russell, Salem, Washington county. Sanuel Partrilge, Postdum, St. Lawrence county, Reuben Goodale, Watertown, Jefferson county, John C. Morris, Butternuts, Otsego county, Gamaliel H. Barstow, Nicholls, Tioga county. James Geildess, Onondaga, Unonilago county, (P. O.

Geddes.) John C. Spencer, Canandaigua, Ontario county. Evert Van Buren, Pennyan, Yates county. Etgah Miller, Auburn, Cayuga county. Phiness L. Tracy, Batava, Genesee county. Philo C. Fuller, Geneseo Livingston county. John Birdsall, Chautauque, Chautauque county, (P.

O. Mayville )
George H. Boughton, Lockport, Ningara county,
Thomas Be, kman, Peterboro, Malison county.
Samuel P. Lyman, Uties, Oncode county.
Samuel S. Seward, Warwick, Orange county, (P. O.

Plorida ) James S. Wadsworth, Geneseo, Livingston county. James S. Mainworth, Genesce, Liringston co William II Seward, Auburn, Cayuga county, Nicholas Devereux, Utica, Oncila county, Myron Holley, Lyons, Wayne county, Titly Lynde, Sherburn, Chemango county. Charles W. Lynde, Homer, Cortland county. Timothy Childs, Rochester, Monroe county. Noble D. Strong, Auburn, Cayoga county. Wm. G. Verplanck, Baliston Sps, Saratoga county.

NEW JERSEY.

John Rutherford, Lodi, Bergen county, (P. O. Bel-

ville Essex county.)
James Vanderpool, Newark, Essex county.
John H. Voorhees, Boundbrook, Somerset county. John Alling, Newark, Essex county. William Vanderpool, do. Joseph Northrop.

PENNSTLYANIA.

Harman Denny, Pittsburgh, Alleghany county.

John Clarke, Philadelphia.

John R. Jones, do. William Granshaw, do. William Grunilaw, do. Charles Watera, do. Samuel Parke, Laneaster. Go. Samuel Parke, Laneaster. George Snorer, Weatobester, Chester county. George Smith, (Haverlord P. O.) Delaware county. James Paul, (P. O. Willowgrore,) Montgomery co. Thomas Edder, Harradourgh, Dauphin county. Christian Fretz, Allentown, Lehngh. Samuel Leidy, Lower Saucon, Northampton county. John Burrows, Montoursville, Lycoming county. Jacob Alter, (Carlisle, P. O.) Combertand county. Jacob Cassatt, Gettysburg, Adams county. Jacob B. Miller, Uniontown, Fayette county. Jacob B. Miller, Uniontown, Fayette county. Samuel McKeelan, West Alexandra, Washington co.

Jacob B. Miller, Uniontown, Fayette county, Samuel McKeeban, West Alexandra, Washington eo. William W. Irwin, Primburg, Alleghany county, Joseph Buffington, Kituaning, Arnsistrong county, Robert Falconer, Warren, Warren county, Charles Diel, Windson, York, Samuel Harvey, Germantown, Philadelphia county, William Heister, New Holland, Lancaster county.

Benjunia Riegle, Monroe, P. O. Backs county. Thomas II Burrowes, Linesster city. Thaddens Stevens, G. tty slurg, Adams county. Thomas C. Hambly, York, York county. 11110

Junathan Stoane, Rascana, Portage county. Jonathan Warner, J. Herson, Asht Juda county. Jonathan Warner, J. Herson, Asht Juda county. Warren Jenkins, Calumbus, Franklin county. Ziba Laudly, Jr. Athens, Almas county. Neibasid Kaliber, Rush, Champaga county. Robert Hanna, Cabz, Harrson county. Franklin Baker, Sences county. James Pike, Columbus, Franklin county. Frederick W. Fowler, Milan, Huron county.

DELAWARE. Joshua V. Gibbins, Wilmington, Newcastle county. MAUYLAND.

John S. Shriver, Baltamore.

THE MISSIONARES From the (Goorgia) Recorder of S ptember 24.

Our correspond at writes to us from Lawrenceville on the 16th instant as tellower

intend as below:
"As a terming trial rook place yesterday before the superior
court of the county, in the case of the state against Elementee, Samuel A. Wierester, Janes I Tort, instancars, and eight
office while norm, residents of the Cherake country, the latter
with bot one-sexpetion, have a purernarior with Cherake withen. y were all erraignes and tried for living in the terrinosy oc-by the Cherokers, within the charter d broits of Georgia

with bottome exception, base internaired with Che rice without. They were all strangers and rigot for hing in the terrino's occupied by the Cheriskey within the charter during the control of the control of the charter of the control of the charter of the charte

It has been infimated here that these prisoners act under the advice of high counted-that their rate a expected to be removed by weight from and they released—some of them not disteing the

by wright of error and they released—some all them not during the securitive elements; increases, Means, Harrien, Chesser, Harrie and Chelerwood. For the state, Means, Societor Trippe, University and the view of cantionity them against their lines and Holst. Mr. Mounty resinonders are substituted the pury, but merely with the view of cantionity them against being influenced by any degree of projuder in their decision."

Sentence of the court. Indictment, The state. In Gwinnett superior The missionaries, Verdict-Guilty. court.

of this singular perceners, I will endeavor, as far as in my power to countract it by a full and plain bistory of the causes. It will not perceited to discuss the right of jurnifaction; that "sometars is a titled but that every body may see the true nature of this whole transaction. I proved to give the fold may be such a transaction of the such as the surface of matrace, by the discovery and retherment of America." I week my limits would justify my presenting the whole of that valuables document, but I can only give a few of its outlines. He cases mences that: "being deeply impressed with the opinion that the removal of the Indian rubs, from the lands which they now. remend of the Indian trib is, from the lands which they now compy within the limits of the several states and territories, to the courtry lying verticard and morthword thereof, is of very Aggio Indian tributed the several states and territories, the activation of the government has been long drawn with great solicit code to the object. For the removal of the tribute, the act territories, the motive has been long drawn with great solicit code to the object. For the removal of the tribute within the limits of Georgia, the motive has been pseudority strong, arising from the compact with that state!" After stating onany gounderstooms in 150 of this plan, such as the future peace and contratments of the limits, thus removed from all the extens which distinct the tribute of the limits, thus removed from all the extens which distinct the tribute of the limits of the removal of the remo in the Indiana plan, action at from all trees which disturb their quiet, hatcan their peace, appear their religions instructions, and finally prevent their elivin, hances their peace, alone in their peacest after its proposal control of their peacest after its proposal control of their peacest after its representation of their peacest after its representation of their peacest after their peacest and their peacest after their peacest and their peacest after their peacest and their peacest and their peacest and their peacest after the peacest after their peacest and their peacest after the peacest after their peacest and their peacest and their peacest after the peacest after peacest p "To the United States, the said) the propose arrangement over many important advantage sin addition to those already enumer-rated. By the establishment of such a government over those richs, a with their convent, we be some in r ality, their benefactors. The relation of conflicting interests which has beretofore existed between them, and our fromier attlements, will cease. Ih will be no mere wars between them and the United States. it may be fairly promined that through the agenty of such a government, the condition of all the tribes inhaviting that vast reerminut, the condition of all the tribes industing that vast re-gion to the Pachic, may be extinately improved, their peace per-served, and mus commerce extinuted. Here their is the beginning and foundation of that we have a late based and bear that to re-ceived in first the livial real improved the debt of protice, due to this unfortune people. It is not just I shi not buthander. Ought it to be frustrated? I put these questions to all considerate and of flusting minutes. But this is not all this probley has the susceion r fl-rting minds. But this is not all; this policy has the savetion of other great names. Mr. Calboum in the same year as not retary of war, made a report to congress on the same subject and stated among other facts, that the whole nation of Indonas to be the same of th without a radical clauge in the present system. The usex its wans we find neominosing this highly bestevolent object, in its wans we find neominosing this highly bestevolent object, in its wans we find neominosing this highly bestevolent object, on Indian alloirs, to whom that part of his message was referred, called upon Mr. Baibart thes seem ray of war, for such report and specific plan a was best calculated to accomplish the purpose of the second of the sec At 1 interest, before this procession has been sought and endored. I will not any into make a few remarks on this occasion, not by way for dividential of the public authorities, few lates on the public authorities, few lay need now, but it is able to the test proposed, in the hapering of the many an interest and innocent individual, who has been returned in the public authorities. I mean no reproaches and my range of this mediated flowledge of the distinct of the public authorities. I mean no reproaches and my range of the interest of the fatter of the fatt

tirely removed. The desire to acquire Indian lends will cease, and no long-r produce collisions. The Indians will at last know ticely removed. The desire to acquire Indian Israh will cease, and no longer produce callisions. The Indian will at Israh their lot with certainty. I prins to importe it there are not one gestions worting of all resident and of fine again in this same advantage of the product or portices a spiral was the single minutes they have just in operation, not as south to deleat the plan, as to primite the reachings of audition. They care not for the Iodians, they want the agenty of the strong sympathy which their helploss condition inspires to destroy the law fame of one among the operation, not consists in spirits to distroy the law faint of one among the best partirets of this or any other sign, a distributionally stands in the way or their restless designs. Here the unfortunite screte we behold today—men whose a rocations should have lead them away from policial striles, hare left the neares is spulling in terms away return process retries mark but the neutral willing in attraces to the proof so the first personnel for consecutor esc. I and the clay armie and mere or that some pulse symposity, they love to the consecution of the consecution of the consecution of the touch and some first pulse between the pulse of the consecution of the third consecution of the consecution o

Though the policy of colonizing the Indians originated with Indugit the poncy of coloring in the incibits originate with president. Monthe, was thy tripported by his servicity. Most al-hous, was approved by his increasure, Mr. Admos, and as vigo-rously delended by his a cretaries Misers. Barbour and Peter, yet when president Jackson agained his approvament it this gerously delended by his a critaines Misers. Bathour and Pretty, yet when pretailent dankson inguilidelin approach on or this scan-rous work, and really attempted modeling more than the a scenario. The concerned has been already beginn and put in progress by his predictions, then behold, it was not of bar-marity, at mixing upon the leath of treates, and a violation of all law human and between 1. And persons both to the abligations of the human and between 1. And persons both to the abligations of the second process of the size of the course, have been the course of the Section and the size of the second process. to your two the mass of this course, that executions of calling compleyed by the government to offer this lingthy useful and the vortee purps see. With all the commission of a finite highly useful and the vortee purps see. With all the commission of a finite highly useful and farly commission are still, and farly commission of a finite section of a finite highly and farly commission, but the tent of it, of the most automating weakness. It if the re-ciliered, that the view of the government had much the decided e-commendations of three proposition and the essertian softwar, had so the acquired the confidence of the people of the usion as to have produced to its layor a public act of congress. That is obscience to this act, a better home had been offered to the his shain as well so tall compensation for that wheet they should have, imported in their journey thather, tempes being supplied have, ampainted an their journey thather, teages being supplied with many sericles not only to colorit, but of property brighly useful to them, in their was a good mondown, furnitely have with their forces in the relative to project becomes the force of the general government. This is not all, they had assumed from the general government. This is not all, they had assumed from a time, a topic who they could rely, of a performent not them set, such as so future entirely could admit the far reserved from all courses which could possibly themselved to training questioned, and what is with better for those, one of the reach of all assets the effect of many internal polars. As all them the earthware assets the effect of many internal polars. acted the effect of missioners labors. Apair troub these striking ad-bantages to them, we have seen in the views of the great states men airrady mentioned, that much was expected to the interest of the government in its relation of neare commerce, intoin, and men strendy incredition, that much was expected to the outer with the particular of the government in its in lation in peace commerce, thiosy, and sowe all, in the discharge of a long deterred compact with the state of G original, which has been an upmerisation produce a spirit of discontient, such as not only to impact the confidence of spirit of discontient, such as not only to impact the confidence of the state in the flority of the private [secrements, but greater a compact of the state of the flority of the private produced the state of the discussions procedul to those, in wheel G. orgo and its authority blave been most mappin right y-visid and above. The manifornies them they have been most of the limit was the second of the limit was very the "sussingine" as most cornectly defected. The resonance of the limit was the been connectly defected. The resonance of the 1st was hirrory as against the laws of the strict, and against the present of the United States. Officers of every grade and electracter belonging to both gave room on laws been insulted and coforniated in their connects and by their pression and the second of the second o less opasily declared by these white ment to being to the Lie of dama, and that they have a right to set up a government, a given that they have a right to set up a government, as the manual of the mention in difference, a community as he may be usual mediume, a community notified of its existence; it may be usual medium to be sufficiently notified of its existence; it may also be the training that the sufficiently notified of its existence; it may also be that "word," especially when it enjoins spon by the usual mentiod of maniation, that the original production of the existence; it may also be the continuous and inflicted dagraed hal and crued possible for the existence of the duck whether the rights and large has a decrease of stelled feters, to take the right and the county of which the sum of the existence of the existence

but which might have remained with the aborigines, if they could have contented themselves with their ancient usages and customs, and tut have brus actioned from their allegance, by the agointy I have before deteribed. It is for the contempt and disabeliance of one of her treessary have to put down this tree. disbelishers of more over a relative room over dissipation in disbelishers of one of her treessary has no put down that the fluorers, that the indictionals at the bar have been tried and consisted. At the last term, some of these individuals have been becaught before me upon insteas corpus, and their disbarge was structurable. After the most disher as tructurable at the structurable ligion, to stimulate the Indians to a continued course of opposition against the wishes of the general government, as well as contempt for the authorities of Georgia, induced the governor concents for the authorities of Georgia, induced the governor to report the positivat to have their removal from their agency, so as in oblige them to roundly with the Georgia has or leave the nation. Upon every principle of teason and proprist by the is nothing usignit or oppressive in the act. If officers of go-vernment set thundress in in appointion to the public axis, if yellow the properties of the properties of the properties of polery of the government, to historia in measures, me thin ob-fer and influence to bring the linker authorities into constraint. polety of the gavernment, to physici its measures, use their often and influence to Dring the higher authorities into contempt, by every thing that its succed, they ought to be removed, and that as queck as possible. This was done, and the governor, still withing to allod an opportunity to obey like he or leave the action, the cities of the properties no moral obligation to remote in compliance with her tunctions. Another mirestable repires, I continue that the the anticape I should be an acknowledge the purishetion of Groups
over this country, which would be aftered to my opinion of over
among the threshess. My principles of action are founded on
world executing allier my metalines as a mirror among the threshess. My principles of action are founded on
timony, "and credit aroung in biline the examples of body series
my conduct it construct often in mynetishian institution with
publical alliers. I cannot help it." Howelt have a grass unject one in about induced to make, and in the language
of time of multifection—can it be possible that we have come to
time of multifection—can it be possible that we have come to
time of multifection—can it be possible that we have come to
this, that every main less argue to affect the less, there is no mire is group in the
time of multifection—that he man take the care of the contest of right to restrict to its oterifrow, he may depend upon
the last faces on a farst and measurefacts top. But I would
suppose, george my homble view of the "law and the testimany."—data the generous hards in distribution, in "yes them in
has taken a farst and measurefacts top. But I would
suppose, george my homble view of the "law and the testimany."—data the generous hards
the face the control of the protection of the "law and the testicates, to be ready to every good work."—"It it with I would
have been the control of the control of the contest of the control of the control of the contest of the control of the control of the contest of the testing of the control of the contest of the control of the con
test of the control of the con
test of the control of the con
test of had reason to know, and his charity required him to act upon to knowledge, that people are stanctions fooths, disobedient, decived, erving diver busts and pleasures, living in maire and entry handle and hang another busts, and the entry handle and hang some the middle all concerned. What a pity, the placeful cause of the Prince of Peace could not have been recultivated in his hald reply to his dividege on the validet of that well known opportunion of the Joseph Cenar Augustus. Mat. axii 27 to be to the prince of the prince of the well-known opportunion of the Joseph Occasional and the prince of th

Mat. xvii. 27, bolse in 1, and xx. 22.

I am withing to make all due allowance for the diversity of human opinion, to mature of government, as well as in religious to the Lask extry candit man, what would be the consequence is very individual were allowed to judge for himself, whether he would do by the have to tot, respecially after they had been pronounced by the only competent trabunal to be countritional? If these individuals have the right to do it, all the rest in the community have; and what I repeat, would be the confirmation of the community face; and what I repeat, would be total of the example of the confirmation of the confirm every infiniance of man for the Loral system where it we to the king as supreme, or unlog enversors, as unto flesh that are sent by him for the prinshment of evil doers, and for the praise of them that do well." And why? "For, that with well doing, ye may put to silence the ignorance of foolish men—as free and not ming your liberty for a cloak of maliciousness, but as the serv

fase the word of God amongst this people, I trust I shall be suit aimed by a conscience void of Gofence." Now in this speech there is all manner of unkindness, and the meckness that directs 'incorder uset Casar the things that are Casar's, and unto God the annex. I was not far preaching the goupel, that the governor wished him cities to remove or "suffer." As the executive provided the individual that there was a law which required all white siding in the nation, to take an oath to support the constitution of the state, solemnly sworn to execute the laws, he only information of the state, solemnly sworn to execute the laws, he only information of the state, solemnly sworn to execute the laws, he only information of the state, or to leave the territory; and he was doubtless very hopeful that this person's scriptural reading, as well as his love that the state of the state, of the state, solemnly sworn to take the provided that the present subject annot be higher powers. For there is us power but of God; whosover therefore resistent that power, resistent the archivest of the manner of God, and they that resistent shall receive to themselved damantion. For rollers are not a terror to good wow. But to title and the state of the state, the state of the governors econe to have suspected that there were some of the good citizens of Goorgia who felt themselves 'under on moral obligation' to respect the "enactements" of the state, decision over the Indian territory"—the therefore warned them that such executions of the law, "the beareth not the word in vain," and would consequently be they have been been for considerate as the "There is in every part of the moral and pious transage to tell, the same object attempt of this declining race, by some of the best and wirest pariots of the age, be also and the patients of the horizon of the same community. This is either strange incunistency, or the clonating of African speaks one thing, while it may non the more of the same community. This is either strange incunistency, or t

of the same economics, that is received the continuency, and the same economics, that is received the continuency of the continuency of the continuency of the law, and toolishly defying it consequences. It cannot be excused upon any principle of tound religious or a rational and be excused upon any principle of tound religious or a rational and which requires us to "render tribute to whom tribute is they caused to whom custom, far to whom fract home to whom honor," never could demand such resistance to the laws of the land, as would inver in the disinquent farfir inter of all the enjoyments of liberty, and impose in their stead all the hardships of land, and the country of the highest character, against the sages who planned it, but is everly to the Indians, ingratitude to the country, and what is worse than all, seems the country of the country of

dent man should thre to trifle.

The eleven persons against whom sentence was pronooneed, were brought to this place by the sheriff of Gwinnett county, on Thursday list. Nine of them were personed, after giving assurances that they would not again violate the laws. But two give any such assurance, and appeared not disposed to profit by the executive elementy, which would have been extended to them, in common with the others, if they had given such assurance, and economitted to the profit such assurance, were committed to the profit such assurances, were committed to the profit such as a such desirable such as a such as a

Executive office, 2 and Sopt. 1831.

Continuen—I understand that a number of persons have been lately convicted in Gwinnett county, for illegal residence in territory occupied by the Cherakers within the state, and will be monidered proper subjects for the exercise that they should be monidered proper subjects for the exercise the convicted, under mistaken opinions of their own duty, or of the powers of the government, I am definous of which they have been convicted, under mistaken opinions of their own duty, or of the power of the government, I am devisious of participations, and the state of th

again violate the law of the state; if they should be found worthy of such elements.

You are requested needs of the prisoners, and converse.

You are requested secretain from the prisoners, and converse

You are requested to offield the laws in they should be
paredoned. You are also requested to accretain as accurately an
you can, what has been the general sharaert of each of the conyiers, and the motives which have influenced them in their oppoyou can, what has been the general sharaert of each of the conyiers, and the motives which have influenced them in their oppoyou can, what for your equivalent and conversation, you will oblige

me by communicating as early as convenient. Very reprectully,
yours, &c.

Messrs. Junes Commak, Benjs. A. White, Tomitinson Fact, inspecurar of the posternionry.

Sir-In compliance with your request of this date, we need at the penitentiary, and investigated the cases of each of the institution in the contract of the contract of the institution in the contract of the institution in the contract of Janua J. Troit-banner Mays (No 1, Edward Level and No. 1, A. Copeland (No. 3). You will find also, a written petition in layer S. Mays, enclosed in No. 1.

We have personally examined Benderal Section 100.00.

Copeland (No. 8).—You will find also, a written petition in favor of S. Mays, enclored in No. 1.

of S. Mays, enclored in No. 1.

of S. Mays, enclored in No. 1.

A. Thompson, James A.

The convicts. The rev. Mr. Potter, a missionary to the Chero-keea, who recently passed through this city, informs us that he saw Mears. Worester and Buller, a few days ago in the peniten-tiary at Milledgeville. He says they are cheerful and happy. The we expected. We have otten read of others devoted to the same pursuit, inspired with the same antiments, singing and re-placing amidst the flames that devoyered them. We are gad, howjusting amout the manes that devoured incim. We are guid, how-ever, to learn, that they are treated with even the respect due to clizzens and clergymen. They were equipped in the coarse uni-form of the prison, with the usual badges of criminals atteched. One of hem is employed in making beduteads, and the other in turning a large wheel-grading, like Samson, in his prisona

turning a large wheel-grinding, like Samson, in his prison better. The me to the barelets labor in the prison, accords with the instruction of gov. Gilmer, to inflict upon them the penalty the instruction of gov. Gilmer, to inflict upon them the penalty of the law, in its atmost serviry. But it should be remembered that these subjects of Egypsian oppression bave been mostly necessationed to develower pursuist. Their minds, it is truck are and even the health of one of them, are on that very account treatment, under such streamstances, must be added the violence comparatively delicate and feeble. To the tarbavity of their treatment, under such streamstances, must be added the violence itemparatively delicate and feeble. To the tarbavity of their treatment, under such streamstances, must be added the violence itemparatively delicate and feeble. The tarbavity of their treatment, under such streamstances must be added the violence itemparatively delicated with this virtual contents of a prison; their being associated with this very nobbers and mustderer; and the wirked astrong to the tarbavity of their delication of the prison of the tarbavity of their delication of the tarbavity of their delication. She has got in her own has do the treatment of the tarbavity of their migration using iron, and he heavers. Attendy in public mingration using head of the properties of the tarbavity of their migration using head.

CRNAUS OF 1870.
From the New Yark Observer.
Washington, Sopt. 80, 1831. Vesars. Editors—I have obtained from one of the principal electrs of the state departum it, a friend of mine, the fullwring condensed account of the cenara, which, easy, i. a, this complete form has not been published. I be whole say, in this

1 :	Total	10,526,308	349.476	2 010-172	12,856,407
C010	in Diw	27,635	6,163	6,060	39,858
Flori		18,385	840	15,500	34,725
Mieli	gan	30,848	253	27	31,128
Arka	11888	25 067	138	4,578	30.383
Miss	ouri	114,552	546	24,9#6	140,064
Illine		155,176	1,643	746	157,575
ladis		338,010	3,562		341,512
Ohio		928,093	9,566		937,679
Kent	ucky	818 678	4,816	165,359	688,148
Ten	ressee	537 930	4,513	142 379	684 892
Louis	SiaD3	89.407	16,713	109 631	215,791
Missi	isippi	20,618	829	65,659	136,806
Alab	RITIE	190,171	1,541	117,494	309,200
Geor	gia	296,614	2,483	217.407	\$16.504
Sout	h Carolina	257,878	7,915	315 065	581,458
Nort	h Carolina	472 433	19,575	246,462	738,470
Virgi	Dia	694,439	47,103	469,724	1,211,266
Mars	land	291,093	59 942	102,878	446,913
Dela	ware	\$7,605	15 829	3,305	76,739
Pent	avlvatua	1,309,296	37,990	386	1 347,072
New	Jersey	300,326	18.3 7	2.246	320,779
	York	1868,382	45,080	46	1,9:3,508
	ie Island	93.631	3,565	14	97,210
	ecticut	289,624	8 964	23	297,711
	nebusetts	603,008	7,006		610,014
Vern	ann's	279.794	885		280,579
	Hampshire	258,910	623		209.533
Mair		398,255	1,207		399,468
1	1000.	persons.	persons.	214 44 31	T-MARY
	1830.	white	colored	Slaves.	Total.
A.III	not be Buish	Free	Free	next confress	•

# NILES' WEEKLY REGISTER.

FOURTH SERIES. No. 10-Vol. V. BALTIMORE, NOV. 5, 1831.

[Vol. XLI. WHOLE No. 1,050

THE PAST-THE PRESENT-FOR THE FUTURE.

#### EDITED, PRINTED AND PUBLISHED BY H. NILES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN ADVANCE.

#### LETTER FROM THE EDITOR.

The convention adjourned sine die at 2 o'clock, P. M. on Tuesday last -but various circumstances will prevent my return home until after you will have been compelled to put this week's number of the REGISTER to press. The occupation of my time has been so close, that I have not had power to present even a slight exected our proceedings for the information of my readers. It may be generally observed, that about four hundred and fifty persons never before, perhaps, assembled in a more my persons never before, periaps, assembled in a more united and better spirit to support a cause of vital in-terest, (as we believe that it is), to all the American people,—or separated, after a week's severe attention to business, with greater satisfaction to themselves-inutually pleased with one another. The moral effect of such an extensive association of intellect and respectability must needs be powerful.

The facts that will be presented to the public, in consequence of this convention, cannot fail to astonish those who have made the highest calculations on the progress and extent of the American System. Sanguine as I have ng been, and autoregent as many have thought me, -be distinctly made known, through the permanent com-mittee, founded on the reports of the very important and numerous committees of the convention, and other sources of authentic information, -for means have been, or will be, adopted, to collect a body of statistical facts immensely important to the people, and absolutely necessary to a discrect national legislation.

The address to the people of the United States was a translation of the United States was a state of the United States was a state of the States wa

presented on Monday, by Mr. Ingersoll, of Pennsylva-nia, and the reading of it by him occupied nearly two The hall was filled to overflowing -and yet the most profound attention was given during that long pe-riod, except when the reader was interrupted by the spontaneous cheers of the audience. Twenty thou-

sponsaneous cueers of the adulence. I wenty thou-and copies of this address were ordered to be printed at Baltimore, under the supervision of Mr. Kennedy. This splendid and maskedly production, Funderstand to be the joint work of Mr. Ingersoll, of Pennsylvania, Mr. Kennedy, of Maryland, and Mr. Dutton of Massachusetts; and many good judges regard it as the ablest paper ever presented on a like occasion. Without any direct reference to the address of the "Free Trade Convention," it tears its arguments into tatters, and scatters them to the winds of the heavens; and, while it is generally beautiful, and often sublime, there is a plain generally occurred, and often sublime, there is a plain practicability about it that will carry its matter to the home and heart of every friend of the free industry of the American nation; and I must think will bring many to a pause whose opinions seem to have been exclusively regulated by mistaken notions concerning slave labor. Some of these will believe that the "American System" as fully embraces their interest as that of any other class of persons in this community. As the address origi-nated at New York, it is ordered that it shall be first published in that city, though to be printed in Baltimore. It will probably be laid before the public about the middie of next week.

I have not an opportunity to say much more. As the time of adjournment approached, the feelings of the members of the convention seemed to be greatly excited-and many new friendships formed, were pro-mised a lasting duration. No small degree of gravity mised a lasting duration. No small degree of gravity prevailed—but it was generous and kind, built upon the universal belief that a great public good would result from the proceedings just about to be concluded. Then came the brief, but appropriate and excellent address of the president, to whom the thanks of the convention had been voted, and we were dismissed with a most teeling and elequent appeal to the AUTHOR OF ALL GOOD by the rev. Mr. Schroeder, formerly of Baltimore, all Vot. XLI.-No. 13.

But I must stop. Particulars shall be given hereafter. I wish you to publish the list of the members according to the copy sent herewith. Though much care has

been exerted to render it entirely correct, I fear that it is not so; but errors in the list, or otherwise, will, I hope, be excused by my initialgent friends—because of the peculiar and anxious and bosy situation in which I have been placed, and from which I am not even yet re-

Phitadelphia, Avv. 3, 1831.

MR. CALBULN. In accordance with the plan of pubishing both sides of a question, we give place to the re-ply of this gentleman, to that part of major Eaton's ap-peal which related to him, and in order that a full view of the ground may be presented, we have appended the note of Mr. Evans, the brother-in-law of the latter gendomen

BALTIMORE AND UNIO BAIL BOAD. In another part of this week's impression the reports of the president and chief engineer of the Baltimore and Ohio rail road company will be found.

Too much praise cannot be awarded to the president, directors and officers of the company for the intelligence and zeal with which they have prosecuted their arduous labors.

The subjoined paragraph, will show the advance made in the completion of the road, since the date of these

reports.

"We have the sincere satisfaction to state that the assurances given in the late annual report of the presi-dent and directors to the stockholders of the Baltimpre and Ohio rail road, that the second and third divisions of the road would be opened for use by the first of November, have been realised.

"In a letter which we have seen from a gentleman who performed the trip, dated the 30th instant, he says the "Pioneer car" passed yesterday [Saturday] morning on the line as far as to the foot of the inclined plane, No. 1, at l'arr Ridge, being a distance of forty miles from Baltimore.

"The fourth division of the road, which extends to the Monocacy, as well as the inclined planes over the Parr ridge, and the lateral road to Frederick, are in such a state of forwardness as to leave no doubt that the entire route to Frederick will be opened within the mouth of November. "The graduation of the fifth division, extending from

the Monocacy river to the Potomac, is nearly completed, except at a single point of about 2 or 300 yards, which will soon be graduated, and the travelling on the road will, without any doubt, be established to the Potomac river within a lew weeks." [Bultimore Gas.

#### FOREIGN NEWS.

Arrivals at New York and Philadelphia, bring Dundee advices to the 24th September. POLAND AND RUSSIA

As we had been retuestantly induced to believe, by the former advices, Warsaw, the capital of Poland has fallen. It capitulated on the 7th September, at 6 o'cole, P. M. after a most sanguinary conflict of two days duration, during which the Russians carried, by assault, all the entrenchments designed to protect the city. The all the entrenehments designed to protect the city. The Polish army followed by the diet and the members of the government, retired through Praga on the night of the 7th, and early on the ensuing day the Russian army entered, maintaining perfect order, and respecting both person and property. The Poles were retiring upon Modlin and Plozk, where it is said they will make an effort to maintain themselves. How far they will be able to realise such expectation, remains for time to unveil; but the hope of successful resistance, after such a blow

most fearful blow, and we fear will prove fatal to their

On the 5th of September, the Russian commander in chief, Paskewitsch, sent a confidential officer to Warraw. to demand the automission of the city and consequent surrender, promising, in the u-me of his majesty, uninesty and pardon. This proposition was indignantly rejected by the brave Poles, and on the 6th, at day break, the Russians marched to the assault, made themselves masters of four redoubts which lay upon the line of attack, as well as the first line of outranchments which surround Warsow, and id which Wola is a perfect for-tress. The task did not however and with the carrying of these; there remained a second line of intrenchments, and a broad most around the city definited by bastions. On the 2d day of the asseult, count Paskewitsch received a contasion from a cannon ball, which struck his left arm in the first quarter of an hour of the combat, he retired from the field of battle, leaving the command to general Toll. After the entrenchments and outworks were carried by the Russians, the Poles retired into the city, whereupon the former occupied the ramparts and creetal batteries for 80 pieces of emnon to operate against War:aw, should it still hold out.

In the course of the night general Kruchowiecki sent a flag of truce, informing the Russian commander in that the diet had dissolved itself, and that he as dictator, governed alone. At day break orders were is-aued to the Russian army to crase hostilities, as the capital and country had submitted to the emperor. The of the Polish army to be delivered to the field marshal. and that the intention of their marching on Piozk, is, to await the pleasure of the emucror. The hiss of the Russians is supposed to be between four and five thousanil.

The sensation produced in London by the receipt of this unwelcome news, was great, and heavy consures were east on the government, for quelly witnessing the sacrifiee of this brave and generous people; but in Paris it had produced a state of intense feeling, amounting to phrenzy—a phrenzy said to be equal to that ex-cited by the publication of the Polignae ordinances.— The Parisians view it as a national calamity -as a national disgrace of which each individual must bear his share. The majority of the shops were shut-public business in some theree suspended, the ministers insulted, laughed at, threatened, and hanged in elligybands; some pillaging gun makers' shops, others busy in listening to the arrient appeals of the newspapers—the theatres were closed-the black flag hoisted in some of theatres were closed—the mack has nowen in some or the strects—the drain bearing hourly to arms—the Mar-selleise is publicly sung in the palais royal—the troops of the line are in motion—and to sum up all—the mi-

as the fall of their capital, will prove tilusory-it is a prime, the former is organizing an army of 75,000 mens and a park of artillery of 10tt pieces, so as to be able to resist another invasion should the king of Hoffand attempt it.

TENETE

An attempt had been discovered, it is said, by the Ab attempt nat been observered, it is very by the French government to induce the porie to declare war against Russia—the plan failed owing to the interference of air Robert Gordon.

A revolt had taken place in the island of Madeira. in layor of Donna Maria - it had, however, been quelled. The governor of Madeira had impresented the consul of England, for having circulated the news which gave riac to the insurrection. He was inturisoned in his ownthers, who deny all ingress and egress. The consul is to remain in cuventry until orders are received from Lis-

### MR. CALHOUN'S REPLY TO MAJOR EATON.

MR. CALIFOLN'S REPLY TO MAJOR EATON. From the Pedultern Messenger. Major Eaton has, in his late address gravitously dragged my name into his contraversy with a part of his associates in the lete administration. The stuffer which he recently occupied, and the relation in which he is well known to said to the head of the lete administration. The station which he recently occupied, and the relation in which he is well known to aim at 0 the head of the relation in which he is well known to aim at 0 the head of the weight to his representations, at least one of the day, yet I would not have decemed his statement worthy of my notice, had he considered his statement worthy of my notice, had he considered his statement worthy of my notice, had he considered his statement worthy of my notice, had he considered his statement worthy of my notice, had he considered his statement worthy of my notice, had he considered his statement worthy of my notice, had he considered his statement worthy of my notice, had he considered his statement worth of his statement which work is not decement of detail, and to give attacement of facts, but in a manner wholly erroneous; which, however, might be received he mainten when the public as true, were I to remain silent. They have, in fact, been already so received in some respectable quarters. I am menta as far as they concert me. The eventurenes which are the subject of his address, are of a character to render me salier tous, that the part I took in relation to them, should be presented in the light which truth and justice require. The memory of the day, than what I is into all the took and offic of major Raten's the sixty of the day, than what I in reality had.

It is impossible to doubt that the main drift of major Eaton's It is impossible to doubt that the main orth of major Eatlon's address it to hold me up as the real author of all the discord which is alleged to have prevailed in the late extinct, and to which he endeavors to trace its dissolution, and which, he would have the public believe, originated in a low and miserable squabon my part, in relation to the successon to the presidental

ble, on My parts to reasonate to give a political aspect to the refusal chief.

And the control of the control of the sate that the sad mysel of Mrs. Cathoun to vini Mrs. Baton, he sates that the sad mysel called in the first instance on him and Mrs. Eaton, dueing dueir assence at Philadelphia; intending it to be interrut, that in decining intercourse atterwise the reasonate control of the sate of t the atrect—the firmin bearing hourly to sarma—the Martelleties is publicly using in the palais roy-1—the troops
of the line are in motor—and to sum up all—the mennistry had been twice defeated on points which it had
strongly at heart. M. Casmir P-irer, and Sebassius
had had a narrow ceape for their lives.

The peerage bill was progressing slowly. France
has threatened Spain, in case that government interferes
in the approaching contest hetween Don Miguel and
Don Pedro, that a Freuch army will eross the Pyrones.
The Prench army was still in Belgium, its withdrawl
is, however, stated as facilities.

The Prench army was still in Belgium, its withdrawl
is, however, stated as facilities.

The Prench army was still in Belgium, its withdrawl
is, however, stated as facilities.

The Prench army was still in Belgium, its withdrawl
is, however, stated as facilities.

The Prench army will eross the Pyrones.

The In a secretary lord freight affairs had held a
council with the ministers of France, Russin and Prossine. Washington Irvine, our charge delfairs had held a
council with the ministers of France, Russin and Prossented Mr. Van Burco to visconut Palmerston.

A part of the jewels of the princess of Orange, had been
seized is supposed to he worth £20,000. The parties
are to be sent to Brussels for trial.

\*\*REDITM\*\*

The kings of Belgium and Holland have agreed upon
a cessation of hostilities for six weeks. In the mean

2

\*\*BEDITM\*\*

The kings of Belgium and Holland have agreed upon
a cessation of hostilities for six weeks. In the mean

known who Mrt. Exton was, had the nut been with Mr. Exton, as the straint had not annuunced their name. She of course the straint had not annuunced their name. She of course the straint had not annuunced their name. She of course the straint had not be held responsed to the straint of the s known who Mrs. Katon was, had the mit been with Mr. Eaton, as the servant had not announced their names. She of course treated them with civility. She could not with propriety, do otherwise. The relation which Mrs. Eaton howe to the tockety of Washington, became the subject of some general regards. The next moving the inhormed not, that she had made up her mind seek moving the inherence had been general regards. The figure of a stranger in the place; that she knew molning of Mrs. Eaton, or the truth, or labshould of the buyut after on the guaracter; and that the conceived it to be the duty of Mrs. Eaton, if innecest, to open her into resure with the lables who resided in the place, and who had the bost means of forming a curve of pittings of the residue, and not with those who, like herself, had opplied to the place of the residue, and not with those who, like herself, the provided of her decision, thought Line we deed distant as a when you would probably involve me, Lat that I si wool the question is would probably involve me, Lat that I si wool the question. is would probably involve me; that that I showed the question involved, as paramount to all political cannid-rations, and was prepared to meet the consequences, as to myself, be they what

probably from any thore are in that that have the question prepared to make the consequences, as to myself, be they what they might.

80 far from political notices having any infidence in the course they might are the probably of the question. The road to have any bright in the question have smaple to trad it. The inimate relation became governal packing and major Eston was will known, as seven governal packing and major Eston was will known, as but, as degraded as I would have tell myself, had a mostly power to that direction. I would not have considered the intumy list, had we adopted the course we did from any other movies, than but, as degraded as I would have tell myself, had a mostly have been admitted into the administration of one afraily accluded. His first the searchest the administration of one afraily accluded. His first the searchest country of Washington; and the road question was whether country of Washington; and the road question was whether country of Washington; and the road question was whether country of Washington; and the road question that convert of the country of washington; and the road question was whether country of washington; and the road question that country depend. Had the case been different; had a scheme been distributed to the country depend. Had the case been different had a produced with a surroun and managereted female from worself, when the arritions and managereted female from worself, as a previous case and the principle of careful or white a surroun and managereted female from worself as a problem when the arritions and managereted female from worself as a published bound permit the france of the great vectory that has been desired the careful of the arrition and managereted female from worself and the published bound permit the france of the great vectory that has been desired the careful of the published bound permit the france of the great vectory that ha experience has found it to raise the suspected to that (1.2-2000). This point may now be considered neited, and are instead, the public should permit the fracts of the great victory that has been achieved in favor of the morals at the country, by the high more it and pendence and virtue of the belies of Washington, the previous design of the personal min of the call quer-

to or out 1) previous after the control of the commonly, major With the same view, and not much less erroncouly, major Eston has given a statument of my application to him in layor of a friend for the place of their click in the war department. He has no drawn up his various at a to make an impression, the fact of their control of their click of their control of their control of their click of their click of their control of their click He has so firsten up has statement, as no more con-traction of the statement of the statem section friends of general Jackson, and had suttered from in all that I had no offliend present in his best of the transition of the state of the transition of the transition of the state I felt almost certain that col. Gadolen would decline the offlectine but, centrary to promise, another person was appointed, without giving me any explication, then, or since I t was pointed, without giving me any explication, then, or since I t was possed and of promise, remaining with since planned, which they possed to the promise, remaining with mere planned, which were not as a major fation, represents, the mere reluxable upwers not; and, not as major fation, represents, the more reluxable to grant the appointment, which of itself would never have had the fest effect with me. If there should be any fourth as to the promise, or the wine of the applications, the electre of governor Haustlott to

rations or this supposed freelot, with the time, place, and creams stances, not unity to enable him to give bis statement of the occurrence, but to afford me an opportunity of judging how far I would have been hout to him and me an act of simple justice, which, as far as I am concerned, would have been pricicially districtivelarly distribute, as I must object to the competence. have here periceularly desirable, as I must object to the competency of road. Exten and his assessmen, to determine who are, or who are not any transfer. They appear periceularly liable to expend the periceular to the periceular that the periceular transfer of the extension of which I was ignorant till after the mercing and of the particular, all disclosed by the recent publications. If to this I add may Eston's own

and the interestication of the particolous, till disclosed by the recent publications. If to this I and maje Eaton's own habity to half into a reror in deet emining who are, or are not, my political friends, as disclosed in its late address, it will not, I am political friends, as disclosed in its late address, it will not, I am energy in that particular. When I it is neverage to hold me responsible for severe, the oblum of which he shows uncommon arrivery to wint to the shoulders of others, he cert, on that point, in relation to two first hat associates in the administration. It, in the shoulders of the shows uncommon to the shows uncommon to the shows uncommon to the shows the shows uncommon to the should be supposed to the shows the pre-ret is longs, I know from his own declarative, that he was verify and declared predict of instant of his net cions. His own public policy did in the loss some changed his opinion, many cases may be found, in what has since transpired, without as-trobating it to any imaginary influence over him, on my part, treating it to any imaginary influence over him, on my part, treating of the properties of the properties of the con-troller of the provinciant ugainst me, I had unding through which to exarcise it. Having corrected the errors of major Eston's statements and

Having corrected the errors of major Eaton's statements and inferences, wherever he has descuded into particulars, it only remains to rejed his general charges and insinostions, which Lide by a dreet and positive cord relating to a limitestion of the late and the statement of the statement of the late and am any way responsible for the dissolution of the late calabrity unless, unleed, the related of Mrs. Calhoun to visit Mrs. Eston on granuals exclusively connected with the dignity and parity of an exclusively connected with the dignity and parity of a contract of the co dang-rouse shallet; and so much higher did they hold these considerations, than the elevation of any mun to power, that, as it well known, pendang the elevation, whilst zealously supporting general known, pendang the elevation, whilst zealously supporting general action of their principles. Nor it has the charge of evaluations of the administration less remote from truth. I was most anxious for the success of general alexancis administration; and though; I saw much I could not approve, yet I continued to give also may support, whence the Power of the Continued to give also may support, whence the Power of the Continued to give also may support, whence the Power of the Continued to give also may be continued to give also may support, whence the Power of the Continued to give also may support, whence the Power of the Continued to give also may support and the property of the Continued to give also may be continued to gits also may be continued to give also may be continued to give al That such was my course, I appeal with confidence to all who were intimate with me, to the members of the body over which I percise, and especially to the two sensors from Tennesce, both devoted friends of general Jasembood original properties. The control of the same private, of bonor, duty, and interest, led me to drive the success of general Jasembood original private, of bonor, duty, and interest, led me to drive the success of general Jasembood original private, of bonor, duty, and interest, led me to drive the success of general Jasembood original private, of bonor, duty, and interest, led me to drive the success of general Jasembood original consideration, and felt, to the full, the fill, the communication. The question involved in Mrs. Zation relation to the society of Wadington belongs, in the communication of the communication of the communication of the communication. The question involved in Mrs. Zation relation to the society of Wadington belongs, with their places of residence, had been personal to him, and the other states were requested to minimate the submodule. The characteristic original consideration, or drawn into public discussion, without private the control of the said communities. Whereupon the call was suppended, and On motion of Mr. Dwight, the nonination of the communities of the general private, of bonor, duty, and interest, led me to drive the success. Mrs. Paraght moved that the communities of mention of Mrs. Dwight, the nonination of the communities. Mrs. Paraght moved that the communities of mention of Mrs. Dwight, the nonination of the communities. Mrs. Paraght moved that the communities of mention of Mrs. Dwight, the nonination of the communities of the communities. Mrs. Paraght moved that the communities of the com

I connectived, ascinaively to her set, aim course and account of the political considerations, or drawn into public discussion, without painful consequences. I acted on there views in my correspondence with gen. Jackson. I could not be ignorant of the use made of it by those, who, by their artful machinations, have placed gen. Jackson and myself in our present relative; but the desire to do nothing on my part that could tend to draw the question from the tribunal to which it properly and exclusively described the property of the conference of the property of the property of the property of the conference of the property of the prope

#### Letter from the rev. F. S. Evans.

Mr. Blairs
Six:—As it is fully in my power to substantiate the statement of Mr. Katon, relative to Mr. and Mrs. Calboun's calling upon the state of Mr. Blaire October 29, 1831.

#### TARIFF CONVENTION.

The delegates from the various states to attend the convention of agricultoralists, mechanics, manufacturers and others favorable to the protection of the national industry, assembled in the city of New York on Weil-nessby morning the 26th October, 1931, at 10 o'clock. On motion of col. Murray, of New York, gen. Tult-

mudge was called to the chair, and Mr. Niles, of Balti-

more, on like motion, chosen accretary.

The convention being thus temporarily organized, Mr. Shaw of Massachusetts then moved, that the chair nominate a committee of three from each state represented in this convention, to report the mode and manner of conducting the business of the convention.

At the request of the chair, the delegates from the several states presented the numes of such persons in their respective delegations, as they would recommend to compose said committee.

The chair then announced that thirteen states were represented; and subsequently added that a delegate was also in attendance from the District of Columbia,

The following persons were nominated for said com-

From Maine-Jos. Wingate, Isaac Ilsley, Jos. Calef. New Hampshire-Samuel Grant, John Williams, John B. Wheeler.

ermont-Heman Allen, Martin Chittenden. Charles Paine.

Connecticut-Calvin Goddard, S. B. Sherwood, Samuel D. Hobbard.

Rhode Island - Chas, Eldridge, Nathan F. Dixon. Z. Allen

Massachusetts-Robert G. Shaw, Samuel Hoar, A. H. Ererett.

New York-P. H. Schenck, Jesse Buel, G. Tibbetts.

New Jersey-J. Hornblower, John N. Simpson, S. Swain. Delaware-E. J. Dupont, John Gordon, P. Ring-

gold. -Thomas Ellicott, Hez. Niles, John ryland

Bryan. Pennsylvania - B. W. Richards, Walter Forman, J. Roberts.

Ohio-George Endley, Holland Greene.

District of Columbia-Peter Force, Virginia -- William Lambdin John McLure.

The committee retired, and the clerk proceeded with

the call of the members, which was continued until the government was to afford protection. The magnifacture

Mr. Carey, of Pennsylvar is, moved that the sceretary have printed for the use of the members, a list of the delegates with their places of residence; and that such

t, as members arrive, be calarged from time to time. The accretary, then proceeded to call off the mannes of the members appointed, in order that those in attemlance might answer, stating their place of residence. At I o'clock the calling of the delegates was suspend-

ed for the purpose of hearing the report of the committle of organization: Whereupon, the chairman rement of a president, lour vice presidents and lour sesecretaries, and that the following persons be nominated.
WILLIAM WILKINS, of Penu. president.

JOSEPH KENT, Mary land,
JAMES TALLMADGE, New York, (vice-presidenta.

GEORGE BLAKE, Massachusetts, LEWIS CONDICT, New Jersey, Ilszekian Niles, Maryland, Robert Teleotson, N. York, secre-Josnea W. Petrce, N. Hampshire, luries. CHABLES PAINE, Vermont.

All of whom were unanimously agreed upon. On the election of the president, the chair nominated Jonathan Roberts of Pennsylvania, and Benjamin W Crowninshield, of Massachosetts to conduct the president to the chair; who made a very short but approprints address to the convention.

On motion of Mr. Crowninshield, of Massachusetts,

it was directed that ontil otherwise ordered, the convention meet at 10 o'clock, A. M.

Mr. Austin, of Massachusettes, said he was about to submit to the consideration of the convention, a regencsolution, previous to which he would make some general remarks on the subject. Mr. Austin proceeded to make a strong and powerful appeal to the assembled delegates. He said that the American System was national in its character - that this body had met to congratulate each other on the present prosperous and swegratinate each of the country, growing out of that system, and not to grown or repine over misfortunes and disappointments which it had tended to profluce. That the free trade party had said all that could be said in lavor of their own system; and that if it exhibited imbecility it was owing to an innate weakness, and not to the want of talent in its defence. That free trade never did, nor never could exist. It was like freedom from public war-freedom from ill, &c. all desirable objects; but never to be obtained until the secomplishment of the millenium. That measures for the protection of our manufacturing establishments were as necessary now, as they were to our commerce. But, said he, we are told that this protection is meonstitutional. Is it unconstitutional in its abstract? We have been taught that those who framed our constitution, were the wise, the great, the good, and the patriotic. Is it possible that such men in framing the constitution, could have abandoned the right or power to protect the home industry of our country? The right, said he, by the constitution to regulate commerce, is absolute, unlimited, and unqualified. Where do the advocates of free trade, find the authority, or right to interpolate the constitution, or to limit or restrict the power conferred, in relation to the levying of duties.

The constitution, said Mr. Austin, grew out of the A wide field in our commercial operation, was occupied by foreign nations.

The American ship boilder and ship owner required protection. One of the first acts of the

of ships was fostered, protected and secured. This was done by laying a discriminating thity between American and foreign vessels. It was this act that scenred to us our extensive coasting trade. It was this act which precludes the employment of any but an American slop or olutions the employment or any out an american super-versed in the trade. It was the protection which has given us the glory of our marine. This protection, the American ship manufacturer is a part of our system and we will not surrender our share at the glory ar-stag from that protection to any free trade advocate.

Our other manufacturers required a like protection. It refused, they will be underworked by the half starved miserable I diorer of foreign countries. We are not to place our population in comparison with the English and Assatic laborer, who work 16 or 18 hours a day. They cannot and will not be degraded to a level with such

After some further remarks, Mr. Austin moved, that a committee of — members be appointed to consider and report what business may came before this convention, and in what order it shall be acranged.

On motion of Mr. Dwight, the resolution was so amended as to refer the subject to the committee already

appointed.

On motion, it was ordered, that the mayor, recorder, altermen, and assistant aldermen, of New York, be in-vited to take seats on the floor-that one of the galleries vited to take seats on the more—that one of the garacters be prepared, appropriated exclusively for the accommo-dation of the ladics—and that the president be author-ised to admit such persons within the bar, as he may think entitled to such attention; and then the convention adjourned until & o'clock P. M.

adjourned until a o'clock F. M. The convention met.

Mr. Woodward, of New York, moved a resolution,
to admit eddors of papers within the bar, which was stterwards substituted by one in more detail by Mr. Buckingham, of Massachusetts, which being accepted by the mover, was assented to.

It was then determined to continue calling the roll.

Mr. Johnson, of Maryland, proposed that a committee of three be appointed by the chair to report rules and regulations for the government of the convention, which

regulations for the government of the convention, which motion was laid on the table, on the suggestion that the committee of organization would probably have the subject under consideration, and report in the morning.

Mr. Brown, ol Pennsylvania, stated that a convention had recently been held in Philadelphia, by persons interested in the manufacture of gron; that the states of Pennsylvania, New Jersey, New York, Rhode Island, and Mr. Brown, we will be supported by delegates in that do not be a supported by the support of th adjourn to this city, for the purpose of conference and intercourse, with the present general convention; he therefore, moved,

That such of them as were not already members be requested to take seats on the floor, as additional dele-

gates from their respective states.

Mr. Paine objected, and wished the resolution, for the present, to be on the table. After some few observations, from different gentlemen, pro and con, the reso-lution passed almost unanimously.

Convention adjourned until 10 o'clock, to-morrow

morning.

Thursday morning, October 27.
The convention met at 10 o'clock, when the minutes

of yesterday were read.
The committee of organization report, That committees be appointed to prepare and report memorials on the following subjects:

1st. To prepare an address to the people of the United States, affirming the constitutionality and expediency of the tariff laws, respecting the interests of the agriculture, commerce, and manufactures of the nationcarried.

2d. To inquire into and report any evasions of the tariff laws-carried.

3d. A memorial to congress enforcing the propriety of continuing the protection to articles of home manufac-ture, whatever may be done in regard to foreign products -carried

4th To inquire into and report upon the effects of the existing tariff laws upon the agriculture, commerce, mechanic arts and foreign trade of the country-carried.

It was then undered, that the committee under the first resolution, consist of one member from each state-that that under the second resolution, consist of seven members, and that the committees under the third and fourth

resolutions, consist of one member from each state.

Mr. Johnson, of Maryland, called up his resolution of yesterday evening, for appointing a committee of three to draft rules for the government of the conventionbut it was ultimately lost, it being considered that as the meeting of the committee was so short, such formality was not necessary. Points of order were, therefore telt to the chair.

Mr. Everett, of Massachusetts, moved that the committees created this morning, be appointed by the chair, which being carried, the convention adjourned until 4 a'clock this alternoon.

Four o'clock, P. M. The convention met.

The chair announced that it had appointed the committees under the 1st, 3d, and 4th resolutions passed

this morning, and that they consisted of

1st resolution - Committee to prepare an address to the people. Messrs. Moses Energy, of Moine, Sami. Grant, of New Hampstore, Henan Allen, of Vermont, Warren Dutton, of Massachusetts, Samuel D. Hubbard, of Con-Dutton, of Massachusetts, Samuel D. Hulbard, of Con-nection, N.-Huan; F. Dixon, in Rhode Island, Daniel Kel-logg, of New York, Joseph C. Harnblower, of N. Jersey, Charles J. Ingersoll, of Pennsylsnia, Andrew Gray, of Delaware, John P. Kennedy, of Maryland, John McLare, of Vargina, George Endly, of Olivo, and Peter Force, of the Datrict of Columbia.

Sri resolution—Committee to prepare a memorial to congress. Messrs. Joshua Wingate, of Manne, Robert Rice, of New Hampabre, Mark Richards, of Vermont, Alexander H. Everett, of Massachusetts, Benjamin Coz-Zens, of Rhode Ivland, Samuel B. Electwood, of Con-ceticut, Jesse Hott, of New York, John S. Darrey, of New J. resz, Joseph Hemphilt, of Pennsylvania, E. J. Dupont, of Delaware, Luke Tiernan, of Mary Jand, Wil-liam Lambdin, of Virgina, and Holland Green, of Obio.

liam Lambdin, of Virginia, and Holland Green, of Ohio.
4th resolution—Committee to report on the effects of
the existing tariff. Measts. Josah Calef, of Maine,
Floyd W. Wells, of New Hampshire, C. E. Hammond,
of Vermont, Henry Shaw, of Massachusetts, James D'
Wolf, of Rhode Island, William G. Giman, of Connecticut, C. A. Davis, of New York, Samuel G. Wright,
of New Jersey, Robert T. Stewart, of Pennsylvania,
Amirew Gray, of Delaware, Thomas Ellicott, of Maryland, John MeLarc, of Virginia, and Holland Green, of
Ohio. Ohio.

The president stated that the committee had been arranged geographicalty; he not intending to designate the chairman; leaving each committee to make its own se-

Mr. Brown, of Pa. offered a resolution instructing the committee appointed to prepare an address to the peo ple, to represent a clear and comprehensive view of the tariff, or American System, shewing that it is constitu-tional and a part of the plan of our government, &c. Mr. B. enforced the propriety of his resolution at some length. He shewed by documents in his possession that the system of protecting the home industry of the country was a part of the revolutionary plan of our govern-ment—referred to the articles of the old confederation to shew that the several states had the right to regulate traile; that it was objectionable on that account, New Jersey contending that that right should be exercised by the general government-that this difficulty was obviated by the present constitution which contains the power, and that the system had been sustained by the people for half a century.

Mr. Sharpe was opposed to the resolution. thought the gentleman should have waited for the renort of the committee, and if that was not satisfactory, he should have moved an amendment. He was opposed to instructing the committee; he hoped the proposition would be withdrawn, and moved that it lie on the table — which motion was lost.

The resolution was then amended and agreed to.

The committee on organization, made a further re-port, in part—They recommend the appointment of committees to consider and report on the lollowing sub-

1st. Upon the production and manufacture of iron. 2nd. Upon the growth and manufacture of wool.

3rd. Upon the growth and manufacture of cotton. 4th, On coals duties.

5th. On the coloure and growth of silk, hemp, and other agricultural articles used in the manufactures of

our country. 6th. A committee to devise ways and means to defray

the expenses of the convention. The chair then announced the names of the following: Committee upon evasions of the revenue. Mr. Brown, chairman of this committee. Schenek, of New York, Allen, of Rhode Island, Barr, of Maryland, B. Reeves, of Pennsylvania, Waln, of do.

Ellsworth, of New York. Mr. Mc Culloh, of Mary land, moved that the general committees have permission to sit during the business

hours of the convention.

Mr. Lyuch proposed to divide the resolution in relation to wood; in such manner that there should be a committee on the growth, and another on the manufacture of wool-carried. And each committee ordered to

consist of fifteen members. The committee on iron and cutton were each ordered

to consist of fifteen members. Mr. Lanch moved to divide the committee on cotton.

as in the case of wool. Mr. Mc Culloh was opposed to the proposition. said the new species of cotton, from which nanking could be advantageously manufactured, promised to kecome a great object, as such markins might be substituted for those of China. He thought it probable that much valuable information might be obtained on this subject, from the manufacturers of the article; and this information being communicated to our brethren of the south, would reach them, for practical purposes, much earlier than it could through any private channel.

Mr. Lynch explained his views. He thought it would be better to keep the enquery, as to the growth and as

to the manufacture, separate and distant.

Mr. Mc Culton contended that these enquiries were so intimately connected, that more useful information would be obtained by keeping them united, than by a separation, and therefore could not consent to the proposed amendment. It these enquiries should elicit any material fact, the communication of which would be beneficial to the people of the south, that result would be well calculated to concilite them. He hoped the amendment would not prevail. The question on the amendment was put and lost, and then the original resolution passed.

The fourth resolution was adopted, and the committec ordered to consist of seven members.

The fifth resolution passed, and the committee order-

ed to consist of fificen members. The sixth resolution passed, and the committee or-

dered to consist of one member from each state. Mr. Carey moved, That a committee be appointed on the production and manufacture of leather, and such other nonmfactures as are not embraced in the previ-

ous resolution

Mr. Mc Culloh wished the article of leather kent separate from all other articles, as it was one of vast insgnitude. He had occasion, recently, to make some inquiries into the subject, and he bound that it was extimated in Maryland alone, it one million three hundred thousand dollars annually. We have (wid he) simest taught ourselves to helieve that the manufacture of feather was of no importance; because those concerned in it were not grouped together in large massy buildings. I should like that great body of men who minister to our daily wants and necessities, to feel and to know that they are supported and maintained by the American System.

The proposition to confine the inquiries of the conmittee to leather only was carried; and the committee ordered to consist of one member from each state.

Mr. Wetherell, of Pennsylvania, moved a committee on the production of lead, and the articles, in the manufacture of which it was a component part.

Mr. Simpson proposed to add copper. After some desultory remarks, separate committees were ordered, each to consist of three members.

Mr. Bruen, of New Jersey, proposed a committee on the manufacture of salt.

Mr. Breck, of Pennsylvania, thought the convention ought not to descend to all these details. He said the committees already appointed would be sufficient to embrace all the stems, and therefore moved the reconsideration of the two last resolutions on lead and copper.

Mr. Roberts said it was out necessary to re-consider. Any new subjects to which the attention of the converstion might be called, could be referred to some com-

mittee previously appointed.

The resolution, in its original form was carried, and the committee ordered to consist of three.

Mr. Tyron moved a committee, on the state of Chemistry, as connected with manufactures and the arts in the United States .- Carried. The committee to consist of five.

Mr. Crolius moved a committee on the manufacture of hats. He proceeded to point out the propriety of his motion; and remarked, that the time was, when we could not wear a list without a British crown in it, one of that description he had accidentally seen this day. and he presumed it belonged to a member of the con-

vention.

Mr. . Mc Cultoh was favorable to separate and distinct Mr., Mc Cullon was lavorable to separate and distinct committees on all these subjects. They would illiest information. Give the people (soid he) facts. Give them light, By doing so, you will sak them to think, and thinking, you may safely trust their judgment. We are convened at a period that will be an era in the history of our country. The sages and patriots of our history of our country. The sages and patriots of our revolution feared to be subjects, but dared to be citi-They, indeed, made sacrifices and endured sufzens. terings. But what have we, or do we suffer? Let us, at least, make the trilling sacrifice of time, in examining the matters that properly come before us, and not return home, after making a few tormal reports, without being able to explain to those who sent us here, the grounds upon which we have acted. Let us, then enter into details; they will enable our rulers to legislate wisely.

The resolution was carried, and a committee of seven ndded.

Mr. Coxe, of Pennsylvania, proposed a committee on the production, manufacture, and consumption of sugar in the United States. He remarked, that last year we had produced nevery millions of pounds, and that within five years we should raise a quantity equal to our consumption. The resolution passed,

And then the convention adjourned until to-morrow morning, at 10 o'clock.

Friday, October 28. The convention met at 10 o'clock.

of yesterday being read, the chair announced the appointment of the following committees:

On salt. - Messrs. Brewer, of New Jersey, Stewart, of Penosylvania, Kellogg, of New York.

On hats and cabinet furniture. Messrs. Crobins of New York, Darrach of Pennsylvania, M Kee of Penn-sylvania, Rogers of Maryland. Randall of Connecticut, Bankin of N. Jersey, Knower of New York, Dunn of Pennsylvania, Williams of Maryland, Lord of New

Rankin of N. Jerreey, Mouver of S. Penorykania, Williams of Maryland, Lord of New Hampshire, Cross of New Jerrey, Baylies of Mass. On explenees of the convention.—Messrs. Wingare of Mane, N. Ghuan of New Hampshore, Chattentlen, Vermout, Crowninsheld, Mass. C. E. Rolbbins, Rhode Island, Boarman, Connecticut, Smith, New York, Jackson, New Jerrey, Hunjinger, Pennsybadia, Kennedy, Delaware, Kelad, Maryland, McLure, Virgma, Endly, Okio.

On cash payment of duties.—Messrs. Bunker of Peansylvania, Evans of Maryland, A. Lawrence of Mass. Breck of Pennsylvania, Z. Allen of Rhode Island, D. D. Broadhead of Massachusetts, Paine of New York.

Onlead .- Mesers, Wetherell of Pennsylvania, Phelns of New York, Brackenrhige of Pennsylvania.

On sugar .- Messrs. Coxe of Pennsylvania, Biddle of Penn. Taylor of Maryland, Herttell of New York, White of Mass.

On iron and steel .- Messrs. Dunlop of Pennsylvania, M. Richards of do. Valentine of do. Jones of do. Haldeman of do, Stewart of do, Kiem of do, Kenney of N. Jersey, Richards of do. Leach of Massachusetts, Chas. H. Hammond of Vermont, Townsend of New York, Newall of R. Island, Boyle of Maryland, E. T. Elli-cott of do. Holly of Connecticut, J. R. Costes of Pennsylvania.

On motion, the subject of the preparation of molasses, was added to the duties confided to the committee on Sugar.

On motion, it was ordered, that the committee on

iron report, also, on the manufacture of steel. On mution, Mr. Coxe of Pennsylvania, was added to

the committee on iron and steel, A member from Somerset, N. J. moved, that a committee be appointed on the manufacture of various kinds

of cutlery in the U. S. This department of industry, he said, deserved parti-cular attention. As had been remarked on hats and leather, it entered into general use and was essential to the comfort of every individual. It was incumbent on us to do something which would efficiently advance the interests of our cause. He lived in a part of the coun-

try where reports, in general terms, would not be understood by one in a hundred, whereas, if we spoke to them of particular things, in plain terms, their interests and our object would be secored. The resolution was agreed to and the subject refered to the committee on

Mr. R. Swartwont held a resolution in his hand, which he should offer after the other was disposed of,the object of which was to propose that the members of the convention, at their respective homes, should prepure and forward to the secretary of the convention, Mr. Niles, statements of the condition of every branch of manufacture in their vicinity. He submitted it for consideration, and it was laid on the table.

Mr. Smith of New Jersey, moved that a committee he appointed in prepare a statement of the divises on ex-ports from the U. States, into the ports of Great Bri-tain, Russia, Holland and Belgium, and also the duties on similar articles imported from these countries into the United State s.

Mr. Coxe and the information was embraced in the report from the treasury department of 1828.

Mr. Carey stated that the report of 1828 embraced only the taniff of England, France, Russia and Naples, and that the tariff of England had since been modified. The resolution was agreed to, and a committee of three ordered to be appointed under it.

Mr. Saunders of New York, moved, that a committee be appointed to prepare and report what booms; ought to be paid for the culture and production of artieles intended for the use of manufacturers.

The mover said indigo, wool, and other articles could and would be produced in abundance under a bonny,

Mr. Bunker, of Penn. was opposed to the poposition. He doubted the constitutionality of the measure.

Mr. Mc Culloh advocated in strong terms its adoption. He said the government had the power, and ought to exere'se it, of raising the ways and means to grant bonn is; and he referred to the opinion of Mr. Madison, Mr. Hamilton, &c. in support of the assertion. He contended, that such bounties would produce, in great abundance, indigo, the almond, the mulberry, the olive, and water rotted hemp and flax, &c.

Mr. Saunders said we ought to encourage the culture of such articles as might be raised in the south with taedity. He said that in two years the British nation could supply themselves with cotton, to such an extent, that not one pound, except Sea Island, would be required from the United States.

Mr. Paine moved to lay the resolution on the table, He was fearful we would be involved in constitutional difficulties.

Mr. Carey said, the constitutional question could be stilled in a moment. Early bounties had been granted settled in a moment. to foster the fisheries.

This resolution was laid on the table in order to give time to gentlemen to examine the question.

A motion was made and laid on the table to recommend to congress the establishment of a home department,

A resolution was referred to the committee on internal traile, to examine into the coasting traile of the U. States, and how far the protection of American manufactures have tended to improve that trade,

The chair reported, as members of the committee on

Messrs, Simpson, of New York, McKim, of Mary.

land, Crocker, of Massachusetts, and Binney, of Mass.
It was then outered to refer the resolution on cuttern, to the committee on iron.

Mr. Leuch, of Mass, was added to the above committee.

Mr. Myrick was added to the committee on copper. Mr. Hopkins offered three resolutions; the substance

of which were-1. That a committee prepare and report the value of ch class of American punufactures produced in the

United States, with or without machinery, and which are now exported, and the amount exported. 2. What articles, after the poyment of the national

debt, may be safely probabited from importation. Upon the culture of the vine, and the manufacture S.

of wines from the grape. Laid on the table.

Mr. Breck moved, that the convention recommend to our friends in the south, south western, and western states, to assemble in convention, and to express to congress their sentiments on the important subjects, which eneage the attention of this bods .

The proceedings of the tarill meeting in Cumberland county, Ohio, was read.

Mr. Hilliams, of New York, moved that a committee

be appointed to prepare and report on the moral influence of manufactores in the United States,

After some desultory conversation, the subject was referred to the committee appointed to prepare an address to the people of the United States.

Mr. Dwight moved that the members of the convention be requested, as early as possible, to give the several committees all the information they possess on the several subjects referred to them.

Mr. Carey moved that a committee he appointed to emprire into the foundation of the charge against the protecting system, of encouraging smugglang. Laid on the table.

Mr. linel, from the committee on the arrangement of business, reported as foil-was

That a permanent committee of correspondence and statistics be appointed (to communicate with the several state committees herematter to be provided for) whose duty it shall be to collect and disseminate information, from time to time, and as soon as convenient, in relation to the statistics of the United States, concerning agriculture, manufactures and the mechanic arts, as comhated with, or united to, the interior and exterior commerce and navigation of our country - showing as far as possible, the general effects of the protecting system on its population and prosperity; the number of persons employed in the several branches of industry, (designating the sexes and ages) with the average or aggregate of the wages carned and the value of the commodities produced by them—the amount of capital variously invested or employed, and the bearings of the several great branches of productive labor upon one another.

I hat the aforesa'd permanent committee shall appoint (with the approbation of the convention), the several state commutees as they think most expedient, and generally arrange the matters submitted to them, that the objects of this convention may be accomplished.

That a committee be appointed to report upon the currency of the country, as affecting or affected by the protecting system.

That a committee be appointed to collect and publish information on the culture of madder, would and weld, and other vegetable dyes, used in our manufactories.

And that all reports made to the government, shall be delivered to the central committee; and also, that all reports of committees of the convention not prepared in scasons to be presented at this time, shall be sent to the central committee, to be collected, revised, and published by them at their discretion. the committee on currency, of five; the committee on vegetable dyes, of three.

All of which propositions were agreed to.

And the convention adjourned until to-morrow morning at eleven o'clock.

Saturday, October 29.
The convention met at 11 o'clock, A. M.

Mr. Ingerselt, of Pennsylvania, stated, as the organ of the committee to prepare an address to the people of the United States, that the committee would be prepared to make their report on Monday morning at nine o'clock.

Mr. Everett, as chairman of the committee appointed to prepare a memorial to congress, reported, in part, that as the basis of this memorial will be founded on the general reports which will be made to this convention, by three different committees, it is deemed inexpedient to prepare a memorial, until after the rising of this convention.

Mr. Coxe moved that the report be accepted, and that the committee be authorised and requested to prepare and produce such a memorial to congress.

Mr. Roberts said it would be a subject of regret that such a convention as the present should adjourn without an opportunity of affixing their signatures to something like a memorial to congress. He contended that the power proposed to be delegated was of a delicate re. He, however, lad no proposition to offer.

Mr. Woodward was opposed to characterising this convention, which was strictly national, by committees. Such committees might be operated upon by local circumstances. He wished the convention to settle the principles and then delegate the power to draft a me-

Mr. Everett said the general scope of the memorial is to be found in the resolution appointing the committee. The committee wished to obtain certain facts which they would use in the memorial, and which would be derived from the labor of the general committees. was also supposed that the contemplated paper would be in part an answer to the Philadelphia memorial, which was to be presented to congress and which was not yet maile public.

Mr. Roberts contended that the facts alluded to by the gentleman, (Mr. Everett), were not necessary to be introduced into the memorial, which should be brief. The facts might be, and ought to be prepared and placed in form for the use of congress. He therefore moved to recommit the report, with instructions to prepare and lay before this convention the draft of a memorial. Mr. Wangh of Pennsylvania moved to lay the whole

subject on the table,

Mr. Crewinshield hoped the subject would not lie on the table. It would open a field for unnecessary dis-

Mr. Waugh withdrew his proposition.

Mr. Forward of Pennsylvania, did not attach weight to names as he did to the arguments, and he was therefore in favor of granting the committee time to collect the necessary facts.

Mr. Everett, with perfect deference to the worthy gentleman who moved the re-commitment, would suggest to him that the report already made was consider ed by the committee to be in conformity to the direc-

tions of the general committee.

As a member of the committee on business, he would asy that it was his understanding; and as he believed, it was the general understanding that the memorial was to be prepared after the rising of the convention; that it was to embrace facts to be collected from the various reports made to the convention from other committees; and that it was to furnish a reply to the arguments which might be urged in the "free trade" memorial.

Mr. Wangh, of Pennsylvania, was opposed to delegating to this committee the power of drafting a memountil after the facts and arguments it was to contain was to be decided upon by this convention. Such memorial might contain statements and opinions that would conflict with the expectations of his constituents.

Ordered, That the central committee consist of seven; was primary—the body itself was primary; all its acts committee on currency, of five; the committee on should be original, and conclusive. He held it to be second in character only to that congregation of patriots who signed the Declaration of Independence. Suppose who agreed the internation of marginatures of super-that body had delegated its powers to a committee, where would this nation and its liberties have been? We should have been the humble minions of England. Let the convention act as became republicans, fresh from the purest fountain on earth, the primary assemblies of the people. Mr. W. stated that he had himself drawn all the memorials, (but one), which had gone to congress from this city on the subject of protection; and he had thought it respectful to the high organ of the nation not to prescribe to it is detail, but to convey in general propositions the cardinal principles held and urged by the memorishists. He was not for a micro-scopic dissection of the subjects to be handled; there were hundreds competent to that task. What he wished was to have the dignity of this body preserved, and its leading sentiments stricken out with a bold hand. He thought the convention would lose in the eye of the nation by consenting to delegate its powers. Let them reverberate the report upon the committee, and wait for a memorial, breathing the spirit of national independence and of national economy.

Mr. Richards, of Pennsylvania, was favorable to granting the time required by the report of the committee.

Mr. Shurpe wished a re-committal of the report, with instructions.

Mr. Everett, in reply said, the gentleman proposed to deler the preparation of the memorial till the other reports from which its facts were to be collected were made, that is, to the last hour of the session. It was mo rally impossible for the committee to perform the duty without some interval of time. He also repeated the fact that the paper was intended to be an answer to another which was not yet in existence. The address to the people would express the opinions of the convention, and would be authenticated with the names of all present; but the memorial to congress was intended to subserve another purpose.

Mr. Roberts said this was a subject on which gentlemen could differ with perfect deference to the opinions of each other; but he must repeat that the purpose of answering the free trade memorial was not contemplatanswering the free trade to the committee. We were not to proceed, in this business, in a lawyer-like way, by reply, rejoinder, rebutter and unrebutter.

We wish to make a declaration butter and unrebutter. of our views in reference to the anticipated revision of the tariff. We wished merely to state the principle on which we wished that revision to be made when it is made. Such a memorial was not an ordinary species of manufacture. Its importance was not to be estimated by broad measure. It was not to be got up in compting houses, schools or other places of less repute. It was to be an expression of the wishes and opinions of an assembly representing more than half the states. It was a doentirent which could not be imitated nor counterfe ted, and there could be no substitute for it. The members of this body, one and all, would, with enthusiasm, place their signatures to it.

Mr. Goddard, of Connecticut, would place his signature to the paper with as much cuthusiasm as the gentleman from Pennsylvania; but he wished the paper to do honor to the convention. A very able comment had been charged with the preparation of a memoral to congress on behalf of the friends of "free trade;" and our memorial, he hoped, would transcend it in the manner of its execution as much as it would in the merits ner of its execution as muon as it would in the mean of its cause. If gentlemen would wait here till it could be learned, he would not say that he would leave them; but he believed they would have to send to many and distant parts of the United States to procure the signatures of the members now here. What was the comtures of the members now here. mittee to say on all the topics which are now in the hands of committees of fitteen? Were they to frame a memorial without reference to those topics? They could doubtless easily draft a memorial. So could the gentleman behind me, (Mr. Woodward), who has drawn so many of them; and he would furnish a very good one; Mr. Woodward hoped the assembly would do no so many of them; and he would furnish a very good one; thing to mar its own dignity with the people. Its source but he would prefer to give the committee time and mahonor to the convention and service to its cause. tears were entertained that the committee would transcend its power let them be specially instructed. If it was feared they would propose alterations in the tariff, let them be instructed on this point. He, himsell, reposed confidence in the committee, and believed they would do nothing in opposition to the general instructions of the convention.

The question was here loudly called for. Mr. Woodward. The gentleman who just sat down, was, I believe, deputed as the bearer of the memorial of the Hartford convention to Washington. [Here Mr. . was interrupted by a general and simultaneous burst of indignation from all parts of the house. He attempted several times to proceed, but there was a continual hissing, and being called to order severally by the chair, he took his seat; the house, as with one accord, manifesting their most decided eensure of his conduct.

Mr. Goddard. Will the chair excuse me. Several gentlemen said, "not a word." The chair said, as the personal remarks of the member had been arrested, a

reply to them was unnecessary.

Mr. Woodward rose again to speak, but was put down, the convention refusing to hear a word from him.

Mr. Roberts' motion to re-commit was put and lost. Mr. Roberts begged the indulgence of the meeting. He spoke against the impolicy of referring this subject to a committee scattered over the union; that it was too indirect a way to attain our object. We ought to be trank, nothing was lost by being so. We ought not to devolve on a committee what we ought to do ourselves. I hat congress would be governed more by the character of the body from which the memorial issued, than by the arguments employed in it. This was not the time for elaborate arguments.

Col. Murray proposed that the committee present to the convention on Monday, a paper containing the principles which they intended to embrace in their memo-

Mr. Everet objected to this course, in as much as the nature of the duty of the committee was prescribed in the resolution creating it. This motion was laid on the table.

Some further remarks being made by Messrs, Coxe

and Roberts, Mr. Duntop, of Pennsylvania, said the people of the United States expected that the memorial would be drafted with great care. A memorial which will meet their expectations cannot be ilrafted in 48 hours. My venerable colleague says, that congress would not read our paper, if ever so fine and flourishing. But it was not congress we intrested, but the people; they would read it, if congress did not. He wished to have a report which would do honor to the convention, and put flown those misercants-not our southern opponents-but the British scrpents who are endeavoring to strangle our na-tional energies while in their craille. He wished facts to be collected and last before the people, that they might had no conception of the energies of the nation, if protested. What member knew that, in one catablishment in Connecticut, one hundred thousand axes were yearly made. Another factory with which he was acquainted used a hundred tons of steel in a year. I myself, though a small man, make thirty or lorty thousand dollars worth a year of edge-tools. I have the marks of the hammer on my hand, and am proud of them; I have put two thousand dozen of hatchets into the market this year, in the face of British competition, and without the protection of a duty; for the treasury department held that hatchets were not axes, and as hatchets were not that hatehets were not axes, and as machetes were not named in the tariff, they were not liable to a specific duty. But I can prove that the British can't touch me with a hatehet. Are the public aware of the fact that the rolling mills of Patsburgh stone can roll out as much iron as would supply all England and America both! They could each roll forty tons a day; that sum multiplied by three hundred, and the product by eight, the number of the mills, gives you a million of tons of iron which they can roll in a year, in Great Britain only hall a million a year was rolled; all such facts as these

terials for preparing a document which would do signal should go to the people, and they could not all be bonor to the convention and service to its cause. If eramined into a paper not bigger than his hand. It was easy to prepare a general memorial; his venerable colleague could do it very well; but we wanted no abstract propositions; we wanted facts, as Solomon says wisely, 'can any man write a little book." Those who would undertake to write a three book." I nose who would undertake to write on this subject, would find the vol-ume swell fast in their hands. We had hid down the principles of the memorial in the resolution, and he would trust the committee to keep within them.

Mr. Roberts did not see how the remarks of the gentleman last up bore upon the subject; though they were calculated to entertain an assembly whose attention was not seriously engaged. There was another anying of as high authority as Solomon's, which the gentleman would find more applicable to the subject, "Oh that mine enemy had written a book." Books were twoedged swords; they might be made to cut both ways. He was willing to show hands with the gentleman. had never followed any other occupation than that of a mechanic and farmer; and to this day, he supported, by his own labor, a large and young family. The gentlehis own labor, a large and young family. The gentle-man does me the honor to say that I can draw a general report; yes, sir, and a special one too, if need be. Mr. Mc Cuttoh was in lavor of having a conesse me-

morial, setting forth the plain principles, and bearing the signatures of the members. This would distinctly pleafee each and every member of the convention to the This, he believed, would meet principle of protection. the object of the venerable gentleman from Pennsylva-nia. The sole objection of those who opposed the report he understood to be that the memorial would want the authority of the signatures of the members. could easily imagine that a document, thus authenticated, would have great weight with congress, especially if unanimously approved by us. Thus the question would be settled, that we unanimously sustain the principles of the tariff and are opposed to any alteration of it, conflieting with protection. After this was done, the report embracing detailed facts, could be improved and printed at leisure.

Col. Dwight concurred in the views of the gentlemen from Maryland, and with regret differed from the venerable member from Pennsylvania. We had come together to get information, which we could get in no other way; not to make fine speeches-though we see that we have sharp arguments as well as sharp edged tools, and both from the same source, (slluding to Mr. Dunlop). This convention, he considered as the most important assembly which had met since that which met to frame the constitution. Its object was to protect ourto frame the constitution. It is object was to prove to un-selves from the operation of a system established in other countries for the purpose of enslaving the labor of this country. Mr. Brougham had well said that every axe put in motion in America, put in motion a whicel in England. But the axe was put in motion for the benefit of England alone, if she refused to admit into her markets the produce of our farms. It our corn cannot go to that country, it is our duty to exclude the products of their workshops from a competition with those of our own. He wished that every gentleman who could work as well and speak as well as the member from Pennsylvania, (Mr. Dunlop), would address the convention, and communicate to us the information in his possession as to the state of our industry. He admired the sinewy style of his remarks, and was still more gratified with the facts which he advanced. He view of the products of the industry of this country; and they would feel the force of our statements, if they did not read them.

Mr. Roberts, with a view to conciliation, withdrew his objections to the report, with the understanding that the course suggested by the member from Maryland, (Mr. McCulloi), should be pursued.

The question being then taken on the motion of Mr.

Lyman, to accept the report and authorise the chairman to prepare and present a memorial to congress, it was decided in the affirmative, without division. Committees appointed by the chair will be given to-

morrow. The clinir, on announcing the central committee, asked whether it was the intention of the general committee that the central committee should consist of those trise in consequence of an increase of duties; but in this residing in the vemity of each other, in some of the cities, or whether they should be distributed throughout different parts of the country. This question gave rise to some conversation between Messrs. Roberts, Coxe, Niles, Wetherall and Goldfard—and which resued in the nonneistan from the chair of the committe he had appointed—consisting of Messes, Niles, Cary, Dwight, Dopont, Hubbard and

McCalloh. Mr. Chittenden, from the committee on finance, maile

a report. Mr. Core, from the committee on sugar and molasses, made a report which was read, laid on the table and ordered to be printed.

Mr. Mc Cuttoh offered a resolution, referring to a speeisl commutee the subject of authracite cost, and the amount of tomage employed in its transportation.—

Laid on the table.

On motion of Mr. Mc Cullah, the resolution officed nn Thursday by Mr. Swartwort, was ordered to be re-ferred to the committee of three from each state, with directions to report on such subjects countered in that resolve as had not already been subjusted to other commutecs.

The convention then adjourned, to meet in the after-

noon at 4 o'clock.

Four o'clock, P. M. The convention met,

The clairman of the commutee on chemicals, reported that the great extent and diversity of their manny would prevent the committee from discharging the duty devolved on them during the session of the convention; that certain subjects had been prescribed to the reversal members of the committee, and that the result of their labors would be transmitted to the chairman, and by han be laid before the central committee-The report was laid on the table.

Mr. Morris, of Pa. after consulting with some of his friends thought it proper, that the convention should now fix a land to the duration of their session, and offered the following resolution:

Resolved, That the convention adjourn sine dic. on

Monday mat, in the afternoon. On motion of Mr. Stevens, the resolution was laid on the talle.

On aution, Messrs, Thompson and Mcllysine were added to the committee on the growth of wool.

Mr. Forward, of Pa. submitted the following resolu-

Resolved. That it be recommended to the hiends of American industry to form associations in their respective districts, for the purpose of collecting such statistical facts as tend to illustrate the benefits of the Ameriean System.

Mr. Forward said a crisis had arrived in our history; that unless the attention of the people could be drawn to this subject, the whole system of protection would specifily be subverted; our enemies were all active and their interests united in opposition to us. Two interests of this description over separated by jealousy were now united and moving in rapid array against our protective system; and how long was it, sor, when the southern agricultural interest was hostile to the northern navigating interests? Now they were united, and anking movements which, unless counteracted by efforts on our nert. must destroy our system. Although the contary was an prosperous, yet the some arguments were urged against the tor-ff. The some opposition was made now which was committeed fifteen years 200. Theoretical our prospersty. The people were tempted with the prospect of low prices. He wis'ted to see facts collected and inquiries instituted which would satisfy the people on this subject. The "hee trade" gentlemen assured us that the seller fixed the prices; but the fact was, prices were regulated by causes independent both of buyer and The amount of cotton goods manufactured in this country, at present, is from thirty to thirty-five millions a year. Suppose the space occurred by these goods was opened to the fabrics of Great Britain. It was obvions the prices would not be lower. The American supply would be replaced by a supply from abroad, and the lerices remain the same. All supposed that prices would

the auticipations both of friends and enemics were theappurord, our markets were more abundantly supplied by the tariff. The markets had been glutted and the prices had declined. The effect had an obvious causea reduction in the price of foreign labor. The profits of monutacturing in England had been greatly reduced by the extablishment of manufactures here; and this country had been more abundantly and chesply supplied

than before. Perhaps, therefore, prices were lower, at this time, In Great Britain than here; but the question was not what is the price in Great Britain, but what it would be it our market was thrown open to her. ing the first rush of the flood, the prices would be lowered, ami who the insudation had passed the prices would river and having got the command of the market,

they would keep it.

It was demonstrable, in his opinion, that the repeal of the pariff would result in the great and permanent en-issues seen of purers. The effect of this system on agriculture was most flattering. In New England alone, as he had learned here, the importation of Bour from southern states, during the last year, exceeded a million of bornels. This single market of New England was. of barrels. therefore, the best in the world for American flour. Suppose manufactures to be destroyed, this market would be cut off, and not one barrel would be added to the quantity of flour exported from the United States. nor could say one find out the spot where our exports have besched in consequence of our adoption of the tariff system? He wished that the people might be made acquainted with the facts showing the operation of that exquisines with the excessionwing the operation of the American System, and they would not be deceived by the representation that it obliged them to buy at high prices and sell at low prices. Before the establish-ment of the cutton manufacture here, the East Iodia coltons were imported; none of the American cotton en-

Here Mr. Forward made some remarks on the absurdity of the constitutional objections waged against the north. It there was nu faculty of beneficence in our government d was truly a subject of apprehension, the government may make war external war war of ambition and conquest. In mischief it was omnipotent. But in power to do good, it was seconding to the doc-tennes of our opponents, feeble. The same gentlemen trines of our appoints, feeble. The same gentlemen appoint the exercise of any other beneficent houer. They opposed any measure which was intended to bind together distinct parts of the union, by ties of commerce and intercourse. What would be the condition of the country if these doctrines were established? Are the multions multiplying on the Ohio and Mississippi alraid of a toreign invasion! Do they want the aid of a general government for their protection from foreign obligations to you; nothing for our soil, for that we paid you; and nothing for the nir we breathe and the light that shows upon us. Was there nothing justernal and beneficent in the government? Was the American laborer to be told that he stood on the same footing, as to protection, with foreign laborers; that he was to he patronised in the same degree as the loreign operatives? The government then exacted from us our blood and our money to return for the mere permission to occupy the soil. He hoped the resolution would pass.

The question being taken on the resolution it was agreed to

The committee on cash payment of duties on imports, reported, That the measure would, in their opinion, materially sid American industry; but as the high interests of commerce were peculiarly connected with the matter, they consider it expedient to postpone any mea-sure on the subject, with a view to have in it the cooperation of the commercial community.

A motion was made to re-commit the report,

Mr. Boodward attempted to speak, but was interrupted by a loud and general call for the question, and finally put down. The question being taken on the motion to re-com-

mit, it was docaded in the negative.

The question then being on the acceptance of the re-

port; Mr. Coxe begged leave to say a word against the

eport. redit system was unnecessary. It was destructive of ie interests of the manufacturers. A man would get a etter of introduction to some manufacturer in England, ske goods to the amount of 50,000g, sterling, on credit -then get credit for duties here, and sell the goods at There was nothing, he said, more injurious to American industry than the facility thus given to imporations on credit. It rendered the sariff a nullay, so ar as the interests of the manufacturers were concerned,

Mr. Richards moved that the report be laid on the Col. Dwight hegged that the convention would con-

ther the interests of the American merchant as well as those of the manufacturer. The subject was of that importance that it would require our attention for months. He hoped it would be taid on the table.

Mr. Backer, of Ps. made some remarks in favor of the report; after which it was ordered to be laid on the

table.

Mr. Lockwood, of New York, attimitted the following resolution, that a committee be appointed to report to the convention on what articles and to what extent the present duties could be reduced without prejudice to agriculture, or manufactures, and what would be the effeet of the reduction on the revenue.

Mr. Coxe said that a communication had been received by Mr. G. Stuart, his colleague, from Mr. Graham, giving a list of articles on which he proposed a reduc-

tion of duties.

Mr. Shaw thought the resolution might be productive of benefit if slightly modified, so as to require that the committee appointed under it should report to the cen-

tral committee.

Mr. Lockwood had supposed, he said, that this subject was one of the great objects of the convention. If the inquiry had been prosecuted at first, a great part of the embarrassment experienced this morning would have been prevented. It cannot be supposed that publie opinion will be satisfied unless we ito, in some way or other, directly or indirectly, record an opinion on this subject. It would be no excuse for us to say that we had been so husy in discussing points of order here, that we had no time to consider the mode of reducing the tariff.

Mr. Duntop said the duties of the convention were already so much perplexed, that it would require a southern constitutional lawyer to elucidate them. He could show that the question proposed in the resolution had already been submitted to the convention, in the second resulution of the general committee; after reading which, he said he would dely my gentleman not bred south of the Potomae, to show the difference between n and the resolution moved by the member from New York.

The resolution was laid on the table.

The convention then adjourned, to mest at nine o'clock on Monday morning. Monday, October 31.

At half past 9 o'clock the convention was called to order, and the journal of Saturday having been read, The chair requested that the members of the several delegations would enable the secretary to correct any errors which may have occured in the list of delegates,

and also to add to it the names of those (not present) who were appointed to attend the convention. On motion, Messrs. Rehards of Vermont, Kelso of Maryland, and Wingate of Mane, were added to the committee on the growth and manufacture of word.

On motion, Mr. Coxe, of Pennsylvana, was added to the committee (No. 4) on the effects of the tariff.

Mr. Croeby, of Mastachusetts, moved a reconsideration of the vote by which the resolution offered on Saturday, by the member from Pennsylvania, (Mr. Forward) was adopted.

Mr. Crosby said his object was so to amend that resolution so as to embrace within its scope an inquiry into the subject of commerce; - the resolution, as it stood, recommending associations for collecting information on the subject of agriculture and manufactures, exclusively, There were many who stood ready to cavil at all the doings of this convention. This resolution, as it stands,

The country was now full of capital, and the I may enable them to say that our system is hostile to commerces-but he wished to be able to follow them into the ir own cappe.

The motion to reconsider was rareed to. Mr. Crosby then mared to insert the word commerce after the word sgranture: but, at the suggestion of a member. worsing rendered out, at the suggestion of a member, he varied his motion so as to charge the associations with the collection of such hets "as tend to illustrate the hem fits of the American System."

me nements of the American System."

Mr. Keener of Maryland, spoke in favor of the motion. He had prepared a similar one, which he had intended to offer. It was at variance with the third resolution reported by the business committee, which resolution restricted our enquiries to "articles not conflicting with American industry." This restriction we must remove, unless we wish to appear before the nation as advocates of exclusive and particular interests. He extion, (col. Dwight) had avowed that he considered commerce as going land in hand with manufactures, and equally entitled with them to our support. It was necessary not only to say this, but to leave it on our re-

Mr. Austin anggested to his colleague (Mr. Crosby) that the inquiries of the associations should be limited to some precise subject. The treasury department, with means which no voluntary association can possess, year after year, had before congress till commercial statements. He hoped the form of the resolution would not be varied.

Mr. Ellsworth, of Conn. stated for the information of the convention, that the friends of the American System in Connecticut were so much impressed with the expedicucy of forming the associations contemplated by the resolution, that they had already taken measures to form

them in that state.

The resolution was then put and lost.

Mr. Keener, in reply to the suggestions of the member from Boston, (Mr. Austin), sail, if we wished to earry lorse with our proceedings, we must carry nothing with them which is forbidding. All he asked, was, that we should not bar the way to our influence by exeiting prejudices against our system.

Col. Marray, rose to express his wish that the resolution might be so amended as to extend to agriculture. commerce, manufacturing and the mechanic arts. gendeman from Maryland was gratified to find that there as one member in the convention friendly to commerce. He loped there were many such. He could answer for the New York delegation that they were advocates of the commercial interests as well as of the interests of manufactures. Commerce, sir, is the tree rn which one eagle builds her nest; and we are her nestings. He could not sit down under the imputation implied in the remark of the gentleman from Maryland. The tariff he supported, because he believed it to be one of the hest supports of commerce. It was well known that the want of a permanent tariff was one of the greatest evils to which our commerc was exposed. A vacillating and continually fluctuating tariff, decouraged and disappointed the merchant. It might undergo a change between the commencement and the completion of a single vor-

age. Mr. Croshy accepted the modification proposed by the member from New York, and the resolution was amended so as to embrace "agriculture, commerce, manufactures, and the mechanic arts;" and, as thus amended, was adopted.

amenacit, was anopted.

Mr. Keeper now moved a re-consideration of the 3rd
resolution reported from the general committee; his
object being to amend it, so as to strike out the words
"not conflicting with that industry." The motion was put and lost.

Mr. Ingersoll, of Philadelphia, chairman of the committee appointed to prepare an address to the people of the United States, communicated the address, which he read from the secretary's table. The reading occupied two hours.

The reading of the aildress was suspended, while ex-president Adams, was conducted to a seat in the convention, by general Tallmadge. The convention rose, and received him with long, continued and hearty apuse of the convention.

use of the convention.

Mr. Core, though he much admired the report, thought it expedient to lay it on the table, that some little inadvertencies which had escaped its nuthors might be corrected. He moved that it lay on the table, and that 500 copies be printed for the present.

Mr. McCulloh hoped the motion would not prevail. He thought it more proper that it should be printed under the direction of the committee from which it was reported, and by whom any corrections, which might be necessary, would be made.

Mr. Ingersoll said it was his intention, at a proper time, to move that the address be printed by our triend, Mr. Niles, of Baltimore, and under the direction of Mr.

Mr. Nates, of battumors, and onlier the direction of Mr. Kennedy, of Baltimore, who had been the most important contributor to the report. Mr. McCultoh said that there were some allusions in the report which had better be omitted. He refer-red to the remark that "one enlightened mind could tolered to the remark that "no enlightened mind could tole-rate" certain errors. Such errors had been tolerated by men of the highest intelligence and juriest patriotism. He also objected to the allusion to "convulsions of na-The late anti-tariff convention, as he hoped and believed, met with the most patriotic motives. When public feeling becomes too warm, it is best that those men whose influence, in a great measure, can control it, take the subject into their own hands. He did not regard the convention, which sat at Philadelphia, as a subject of reproach.

Mr. Ingersoll begged leave to interrupt the gentlenat. angerous negged leave to interrupt the gentle-man with a suggestion which would save the trouble of any further argument on the subject. There was not, in the whole paper, the most distant allusion to the convention which met at Philadelphia; there was nothing in the paper which could bear such a construction. It was not in the power of man to suspect, from any phrase contained in it, the most distant allusing to that subject. He was behind no man in respect for the individuals omposing that body; many of whom were his intimate and highly valued friends. He was the last man in the world who would be likely to say, write or imagine any thing disrespectful or makind in regard to the Philadelphia convention.

After a few words from Mr. Paine and Mr. Roberts the motion to print 20,000 copies under the direction of

the committee was agreed to.

Mr. D'Wolf, of R. I. from the committee on the effects of the tariff, on agriculture, commerce, manufacreport, which was read and fail on the table.

Mr. Wilkinson, ol New York, moved that the secretary of the convention be requested to affix to the address to the people, the name and residence of every member of the convention, present or absent, who should by letter, post paid to the secretary, express his wish to that effect.

Mr. Roberts hoped it would not be considered an intrusion, if he once more made a feeble attempt to get something indicative of the views and principles of this convention, within so small a compass, that it would go into every village sheet in the union. The address re-ported, able, luminous, and cheering as it was, was too voluminous for this purpose. Twenty thousand copies would go but a little way towards placing it before the Tis the weekly press at last upon which we must rely for spreading our views over those districts of the country where they are most needed. In large cittee southry where they are most needed. In large ca-tices, and populous districts it was impossible that there was not aiready light enough. He remarked on the mo-tion before us, that he could see no use in having the sig-natures of the members appended to the aiddress. It could be as well authenticated by an enthusiastic and

unanimous vote to accept it.

Mr. Wikinson modified his motion so as to require the secretary to affix to the address, the names of all those members of the convention, who should not otherwise direct the secretary, and, as modified, the motion was agreed to.

On motion of Mr. Williams, of New York, it was resolved that it be recommended to the friends of Ameri-

Mr. Hemphill, of Pennsylvania, moved that the report can industry, in the northern, southern, western and the accepted, and that 20,000 copies be printed for the north western states, to convene in the city of the accepted. north western states, to convene in the city of Cinc zar-nati, on the 2d day of January next, for the purpose of concentrating and expressing their views on that

> Mr. Robbins, of Massachusetts, from the committee on the manufacture of wool, reported that it was impossible, iturning the session of the convention, to collect and embody in a report, all the information which it was desirable to have, and that the committee asked leaves cepted.

Messrs. Kennedy of Baltimore, Allen of R. I., II. W .-Evans and Thomas Ellicott of Baltimore, and Mr. Merrick of l'hiladelphia, were, on several motions, adde el

to the central committee.

On motion of Mr. Hemphill, it was ordered, that the central committee depute some person or persons to attend the session of congress in support of the views. of the convention in regard to American industry.

The committee on the product and manufacture of leather reported, that they had not been sole to collect leather reported, that they had not occur more to consider so which to predicate a report satisfactory to themeselves or to the convention; and they, therefore, asked thermission to report to the central committee. Report permission to report to the central committee.

Mr. Prince, of Albany, rose and said; as our sister states of the extreme south were not represented in this convention, and as he entertained the most exalted op mion of those in whose veins flow the blood of the greatest statesmen and purest patriots of our revolution, he was unwilling that the convention should adjourn without making some provision for their advantage. He would making some provision for time; anvantage. He would wise time to manufacturing—manufacturing slaves into freemen." But, as their property consisted partly in slaves, it was proper that they should be renumerated for them. We could do nothing better with the surplus of the revenue accruing from duties on imports plus of the revenue accruing from duties on imports than to appropriate it to the object of "manufacturing slaves into Ireemen;"—and to this end he submitted the following resolution:

Resolved, That congress be requested to appropriate a specific portion of the revenue arising from duties on imports to the purchase of slaves over five and under twelve years of age, for their education, and for setting them on the land of their lathers.

This resolution was received with such marked disapprobation, that, for some minutes, no one could be heard. Mr. Ingersoll, having succeeded in obtaining attention, said, he had no doubt the member moved this in a good spirit; but he assured him it was in vain and more than in vain. It would be impertinent and crue ! in us to meditle with this affair, in which we had no in-terest, and by which we could be exposed to no peril. It was too, a most flagrant outrage on the constitution and on justice to take their own money to buy their We had ten thousand times better never have met here, than to meet to discuss or countenance such a project as this. He new the southern people, sires and sons, and was attached to many of them by the warmest ties of friendshop; and he could assure the member, that his project, so far from bringing a benefit to them, would scatter firebrands along their borders.

[Several gentlemen attempted to speak in opposition to the resolution, but the call for the question became so general and decoled, that the chair was about to put it,

Mr. Prince withdrew his resolution, protesting that he had not the least intention to imply any censure on the southern people for holding slaves; he did not blame them for the existence of slavery, but those who had in-troduced it. If there was any objection to the mode by which he had proposed to relieve the south from the evil, he would willdraw the proposition.

The convention then adjourned to meet at 4 o'clock

in the alternoon.

Afternoon session.

General Lynch, of New York, in compliance with instructions from the delegation of the cut of New York, begged leave to state, that several citizens of the city of New York were desirous, with the leave of the convention, to defray the expenses attending its sitting here, to the end that the entire fund already collected may be

convention, at the discretion of the central committee; by the committee on the memorial to congress. He aland he moved that permission be granted.

After some words from col. Dwight, expressive of the sense of the convention, in regard to the kind treatment they had received from the citizens of New York. gen. Lynch's motion for the permission required, was agreed to.

On motion, it was ordered-

That the thanks of the convention be presented to the New York delegation, and the entires of New York, for the generous interest taken by them in the objects of the convention.

Mr. Simpson, of New York, from the committee on copper, reported that the short time allowed for obtainthe information was insufficient for that purpose, and that they had appointed a sub-committee to collect facts for a future report; that the whole quantity of cop-per imported was 800,000 lbs. that there was copper ore in Massachusetts, Maryland, New Jersey, Ver-mont, Connecticut, New Hampshire, and Maine, and that before many years our mines would lurnish enough for the whole consumption of the country, and for exportation. The report was accepted.

portation. I me report was accepted.

Mr. Ellicott, from the commutee on the currency,
made a report in part, which was accepted.

Mr. Cozzens, of Rhode Island, offered a resolution,
for recommending to the friends of profeeting national industry, by law, to procure an expression of sentiment from their several state legislatures, in favor of the contasuance of the same, and that each member of the con-tention render his aid to this end. The resolution was agreed to.

Mr. Carey, from the committee appointed to prepare a schedule of the rates of duties charged on our staples, when imported into certain foreign countries, and the duties on their staples when imported into this country. made a report, which was read and accepted.

The committee on the growth of wool, reported that they had taken measures to enable them to bring before the central committee full information on this subject; and that in their opinion, it is inexpedient at present to alter the tariff in regard to wool in any other way than to prevent the evasion of the law. The report was acto prevent the evasion of the law. The report was accepted, and on motion, Messes. Keyser, of Md. and Johnson, of Md. were added to the committee.

Mr. Dunlop, from the committee on iron and steel,

made a report on each branch, which being read,
Mr. Mc Culloh nucrationed the correctness of the statement in the report on steel that the materials for furnaces could not be obtained in this country; and he remains sound not be obtained in this country; and he then made some statements on the subject, derived from Mr. Samuel Moore, of Baltimore. Being up, he would also mention that it was proposed in Baltimore that the determine from that it was proposed in Baltimore. that the delegation from that city should set on foot an inquiry into the amount and description of articles made in this city for home consumption and exportation. Massachusetts a plan had been formed for obtaining similar information in that state. When this informa tion as to the value which our labors added to materials was obtained, it would appear how vastly important they were to the support of our commerce. So far from being hostile to foreign traile, he wished to see this city surpass London in commercial grandcur. He wished to see our imports embrace all the luxuries of life and the raw materials for our manufactures, while our ex-ports received the last touch of human skill. Why do they talk of the hostility of our system to commerce? Does not England command the exchanges of the world, through its water-power and fuel, and the industry and ingenuity of its mechanics?

Mr. Dunlop was under obligations to the gentleman for the interesting facts which he had mentioned. But his memory as to the report on steel, to which he refer-red, was not correct. The report stated that there was his memory as to the report on steerage series and that there was red, was not correct. The report stated that there was abundance of elay similar to the Stowbridge elay in Lysoning county, Centre, Clearfield, and in Peun. As the gentleman who preceded him, had been suffered to wander from the question; and as this was the last time he should ever address so many of his fellow citizens, restricted the country, he would alluste. from so many sections of the country, he would allule from so many sections of the country, he would allule to some intimations which had been thrown out in the newspapers of this city, in reference to opposition made

appropriated to printing and other future expenses of the 1 in the convention, to the acceptance of the report offered luded to a newspaper published in this city, the very title of which, in his part of the country, was unknown. It was edited, he believed, by one Moses—he did not recollect the name-or Manassai, or Monlecai-or some such cohabistic name. It says, that "the eastern delegates had stolen a march on the Pennsylvania delega-They had stolen no march upon us; but they had stolen our hearts. They had stolen many a march on their enemies, but it was the first time they had ever been accused of stealing a march on their friends. He spoke in the name of his delegation, when he said, that on all the leading principles which had come into discussion in the convention, the gentlemen from the east had cordully, firmly, and most efficiently united in supporting the views and interests of Pennsylvania, ntimation that the committee could not be trusted to frame the memorial, particularly that part relating to iron, was gratutous and about d. The interests of Massachusetts, in reference to the duty on iron, had become the same with that of Pennsylvania. In one iron establishment, owned by a single individual in Massachusetts, 3,000 individuals were employed. Their interests were our interests in reference to the protection of iron, were our interests in reference to the protection of iron, saft, hermp, and other articles. He had opposed giving to the committee any written instructions, feeling the utmost confidence in their shifty, therection and fidelity to the cause. The same paper, sir, says that I am no statesman, because I am willing to trust my friends.

The report on iron and steel was accepted.

The committee on the culture of silk and hemp, rea me commutee on the culture of sits and hemp, re-ported that in ensequence of the late day of their ap-pointment, and the difficulty of procuring information, they asked leave to report to the central committee. The report was accepted, and Mr. Prince, at N. York, was added to the committee.

Mr. Cratina, from the committee on hats, made a report which was read and accented.

Mr. Everett, of Mass, moved a vote of thanks to the New York delegation, for their kindness and liberality to the other delegates composing the convention; and in a few remarks with which he accompanied the motion. adverted with severity, to the attempt made by one of the public papers in this city, to misrepresent his course, and that of the committee on the memorial to congress, in such a manner as to exerte jealousy on the part of the Pennsylvania delegation, and of the members from the eastern country.

Mr. Goddard, in seconding the motion, animalvert-

ed upon some unpleasant personalities which had been exhibited in the convention; but hore testimony to the exhibited in the convention; but note testimony to the general courtesy which had marked the deportment of all the members. The motion was agreed to.

A vote of thanks to the president of the convention,

for the ability, impartiality and dignity with which he had administered the duties of the chair, was carried by

acclamation.

Col. Dwight expressed it as his opinion that the convention ought this night to adjourn, sine die; all its ob-jects which were now attainable, having been attained. But he made no motion to that effect.

Mr. Ellsworth, of Conn. moved a vote of thanks to the enruoration of the city of N. York, for the accomodations which they had lurnished to the convention; accompanying the motion with the following remarks:
Air. President: The citizens of New York thre

York through Mr. President: The circens of New York through their honorable delegation, have with a liberality, as ge-nerous as it was inexpected, offered to pay the expen-ses of the convention during its sittings. Though strangers, desirous of making compensation, we had ourselves among friends, whose kindness can only be remunerated, by the expression of our grateful acknowledg-ments. We have enjoyed the convenience of this suaeious hall and the rooms adjoining, by the kindness of the honorable corporation of the edy of New York—we cannot do less, and are not allowed to do more, than to temler them the assurance of the gratitude we feel for the favor they have conterred on us. Permit me therefore, Mr. President, to offer this resolution, which I trust will meet the entire approbation of this convention.

The motion was agreed to.

meet to-morrow at 10 o'clock.

Tuesday morning, Nov. 1. The convention met at 10 o'clock,

A communication from a meeting in the county of Kanhawa, Western V ginin, was read; also a communication rom the Agricultural and Manufacturing society of Washington county, Pennsylvania.

Mr. Schenck, from the committee to inquire into any evasion of the revenue laws, reported in part, which was read. The report states that dif-ficulties had arisen in obtaining direct evidence of the frauls, but notices many methods resorted to for trandulent purposes, and requesting further time to report in full.

Mr. Coxe observed, that he had reecived a letter from Mr. Ingham, late secretary of the treasmy, stating that of the rate of exchange on England.

Mr. Ellsworth went into a statepractised in the importation of woolen goods, by false swearing at the custom house. The anction system custom nouse. The abetim system was also spoken of by Mr. E. as a powerful engine by which such brands were disguissed and ski I led from detection. The auction system forcest into this country the refuse stocks of The auction system forced every market in the world. The collector of this port has hitherto been unable to perform his duty, on necount of a public sentunent against scrutiny; but within the last six months a more correct feeling had prevailed, and frauds had been discovered within that, the duty on which would amount to very nearly fortya case tried in Probabilitha, in which the druos ton of a clerk in England had influenced the oponion of the piry. Enough of such depositions, he said, might be obtained in England, to load a cart, for sexpence a-pace. An old importer told Mr. E., that on a visit to England, he was urged by the mato England, he was urged by the ma-nulacturers to buy goods worth nine and ten stillings per yard, and have their invoiced at 6s 8d. He expressed surprise at the offer; but the misnufacturers sail, they were doing it for his neighbors every day. This individual had declared that if this system went on much longer, be must decline business.

Mr. Ellsworth concluded his remarks by presenting to the convention, for the acceptance of each member, a namphlet containing some flagrant cases of violation of the revenue laws in the importation of woollens.

Alter further debate, the report and resolution were accepted.

A report by Mr. Bruen, chairman of the delegation from Kunhawa, in Virginia, on the manufature of salt, was presented and reterred to the central committee.

Mr. Crotius maile a report on cabinet ware, which was read and ac-

Mr. Sayre, of New York offered a resolution, which was unanimously adopted, that before this convention

plore the continuation thereof.

Mr. Roberts, of Pa. presented a committee to call a meeting of the friends of the American System in the year 1832, if they deem it expedient, at such time and place as they

may see fit. Agreed to. Mr. Sibley, of Mass, after having made some pretiminary remarks, in which he stated that attempts had been made to sow discord among of various party sentiments, -officed a presmile and resolution setting tords that the convention met with one object, and seted with one object; and that they viewed with enntempt the efforts to produce discard. This resolution was seconded and sup-ported by Mr. Everett, and adopted.

It was moved that the thanks of the convention be presented to MATHEW CAREY, esq. for his early, zealous and able efforts to create, diversity, and promete objects of American in-

Col. Dwgle said this was the best reward be could receive for his labor: and it was the only reward he sought. ile believed it would be awarded to hum spontaneously.

The mution was agreed to unanimensly.

Ou motion of Mr Paine it was resolved. That the thanks of the concan for his long, able and myinchle efforts in the cause of his country, specially in developing its internal

Mr. Alles rose and said, as he was not accustomed to express his ideas in speaking, he would say, after returning his acknowledgments to the convention, for the honor which they bestowed on him, that he should endeavor to ment it.

After some other similar matters the president announced that the hour of adjournment had now arrived, and

Mr. Crowninshield having made the motion for alliquimment, the uresident before putting the motion addressed the convention as tollows:

Gentlemen - The moment of our separation being at hand, I feel myself called upon to say something to ou; but, though accustomed to pubhe speaking, I, on this occasion, feel my self at a loss for modes of express ing my teelings. I shall ever cherish the memory of my meeting with you, as one of the happiest creumstances of my life. If, on other occasions, mother stations, I shall be able to make use of the information I have borrowed from you I shall be truly happy; but, I will add that I shall never, hope, use it to overthrow the interests or happiness of any section of the union. I received the honor bestowed on me in my appointment to preside over your deliberations with untergued diffidence; and, in the admunistration of the office, I am scussble that I should have fuled, had I not adopted, that before this coavention, received from you and and support, finally adjourn, the president be reflow which I tender you my hearty acquested to nvite some circgy man to knowledgments. Winhing to each
return thanks to Almighty God for one of you a sale return to your he-

The convention then adjourned to this bounties to this lated, and to im- unities, I bid you farewell. God blee

YOU. The rev. Mr. Schwoeder rmade a appropriate and impressive prayes and the convention adjourned same da

LIST OF OFFICERS AND MEMBERS Composing the New York convention held in the sessions room an the city, October 26th, 1831.

President. Hon. WILLIAM WILKINS, of Pa Fire-presidents. Hon. James Tallmange, of N. York Hon. George Blake, of Mass.

Secretaries. HEZERTAN NILES, ESQ. of Maryland. JOSHUA W. PSINCE, ESQ. of N. H. Charles Paink, esq. of Vermont.

MAINE. Joshua Wingate, jr. Portland, Issae Heley de Moses Emery Saco. Joseph Calef do

NEW HAMPSHIRE. Samuel Grant Walpole, Lloyd W. Wells Joseph W. March Somersworth, Portsmouth. John Williams Daver. Robert Letsyour Portsmouth, Joshua W. l'eirce Somersworth, John B. Wheeler Orford, Ebenezer Lord Portsmouth, Walter Tutta Alstead. David Culver. Lime, Jerendali Wilson Gilmanton. Win. Palmer Dover, Sami, Garfield, ir. Langiton. Thos. Woolson Richd, Bartlett Ciaremont. Concord, Robt. Rice Porismouth. Excier, Nathl, Gilman Rielid, R. Waldron Portsmouth. Thus. Nesmith Derry, John Cavender

Charles Paine

Francia Slavon

Mark Richards

Samuel Hoar

William Parmenter

VERMONT Martin Chittenden Williston. Northfield. Heman Atlen Isaac N. Cushman Bur bugton, Hartland, Rutland, Phomas Hammond Orw. 11. Betangton. Closs. H. Hammond Westminster, MASSACRUSETTS.

Warren Dutton Buston. Patrick T. J.ckson do Israel Thorndike, jr. do Jas. T. Buckinglam do Abbot Lawrence do D. D. Broilhead do Theo. Lyman, jr. Isaac C. Pray do do James T. Austin do George Binke des Edward H. Robbins do Charles Wells do Stephen White do Jones B. Brown do William Appleton Martin Bates do Wittard Phillips de Robert Rogerson do Robert G. Shaw do Alexander H. Everett do Jobn Hooper Stephen C. Phillips Marblehead, Salem, E. S. Rand Newburyport, William Sutton Danvers, Nathaniel Saltonstall Salem

Concord,

E. Camtrala.

Norwalk.

-----Timothy T. Merwin

NI	LES' REGISTE
Vathan Crosby Ibarles Stearns denry K. Newcomb lames Richardson	Newburyport, Springfield,
Tharles Stearns	Springfield,
denry K. Newcomb	Greenfield,
isme's Richardion tohn Lemin tohn Lemin tohn A. Parker Stepard Leach Jala C. Starkweathe Aaron Tufu Swahaniel P. Denny Rejoice Newton B. Taft, je. John Milton Eufe	Dedham, Rexbury,
other Metalf in	Rexbury, Medway,
namel Crocker	Tauntou,
lohn A. Parker	New Bedford,
Shepard Leach	Easton, Pawtucket,
la's C. Starkweather	r Pawtucket,
Aaron Tults	Dudley,
Sathaniel P. Denny	Leicester, Worcester,
B. Taft ic.	Uxbridge,
Jonas L. Sibley .	Sutton, Worcester, Northampton,
John Milton Earle	Worcester,
Joseph Lyman	Northampton,
Henry W. Dwight	Steckbridge,
Joseph Lyman Henry W. Dwight Henry Shaw Lennot Pomeroy Joseph Merrick William Lawrence	Lanceborough, Putsfield,
Learne Merrick	rationeia,
William Lawrence	Boston,
Ebenezer Chadwick Ezra Dyer	No
Ezra Dyer	do
Amos Binney Benj, W. Crownins Wiltiam P. Emileot Russell Brown John Milts	do
Benj. W. Crownins	hield Salem
William P. Emilicot	t do
John Mills	Cheshire Southwick,
John Mills Joel Noreross Edmund Burke Doniel P. Merriam Isaac U. Hoxie John Wyles Horatio Lyon RHODE 1	Monson
Edmund Burke	North Atlams
Doniel P. Merriam	du
Isane U. Hoxie	Adams,
John Wyles	Brimfield,
Horatio Lyon	Monson,
Coorea Isiah	Maldleton,
Samuel F. Gardage	Newport,
Chris. E. Robbins	do
George Irish Samuel F. Gardaer Chris, E. Robbins Edw. Carrington	Providence,
Zach'h Allen	do
Zach'h Allen Zach'h Allen Sam'i F. Mann Stanford Newell Wm. E. Richmond Benj'n Cozzens	do
Stanford Newell	do do
Buile Command	do
Gen, Baker John Whipple Stephen Waterman Joshua Mauran	da
John Whipple	da
Stephen Waterman	do
Joshus Mauran Cin's Jackson Jas, F. Summons Wm. Rhodes Nathan F. Dixon Peleg Wilbur, jr. Chus. Eldridge John Allen Stephen Steere	do
Cita's Jackson	Scituate, .
Wm Phodos	Julinston,
Nathan F. Dixon	Warwick, Westerly,
Peleg Wilbur, ir.	Coventry.
Chas. Eldridge	Coventry, E. Greenwich,
John Allen	Centreville,
Stephen Steere Wm. A. Robinson	Smithfield,
Wm. A. Robinson Willet Carpenter Nathan M. Wheat	S. Kingston, N. Kingston, Dn Warren,
Nathan M Wheat	n. Kingston,
John Howe	Bristol,
John Howe Jas, D'Wolf	do
Nath'l S. Ruggles Rieli'd Anthony	Newport, North Providence,
Rieli'd Anthony	North Providence,
Win. Field	110
David Kimbash	New Haven,
David Kimberly Thomas G. Wood	ward do
Nath'l R. Clark	do
Thomas G. Wood Natir'l R. Clark Wn. W. Boardma Leverett Griswold	n do
Leverett Griswold	do
Summey Is Deach	New-Haven,
Joseph Fairchild	
Joseph Fairchild Hosea Hundale Theodore Hinsdale Thomas Watson, J Alanson Humlin Edwin Porter	Winehester,
Thomas Water	e do
Alanson Hamtin	Bridgenort
Edwin Porter, Fitch Wheeler	do
Eich Whanles	do

Fitch Wheeler

Saml. B. Sherwood

William H. Jessup

Ebenezer Jessup

do

Saugatuck,

da

110

Algernan E. Beard ilo Themlore Divenport Sumford, Saml, P. Rand dl Wilton, Starr Ferry, Betlief Office, Danbury, Samuel Raymond New-Canasu, William Watson do Joseph Barber New Haven. Watter Booth Meriden. Philip S. Galpin New-Haven. Ed. S. Johnson Stratford, John Mather Manchester, Sami, D. Hubbard, Middletown, J. G. W. Trumbull, Norwich, Calvin Goddard do Dennis Kimberly, New-Haven, J. H. Deforest Humphrey sville. Robert Walkinson, Hartford, Seth Marshall Calebrook. Erastus Lyman Goshen, John Islam Cansan, Hy. L. Ellaworth, Hartford, Is me Kellogg New-Hartford. Watertown, Benj. Deforest Wm C. Sterling David C. Colloca Salisbury, Hartford, Win. C. Gdman Norwich, John Boynton South Coventry, J. M. L. Scoville Waterbury, Wm. Deforrest do Danbury, Russell Hayt Jas. B. ewster New-Haven, John M. Holley Salabury, East Windsor, Henry Warson E S. Williams Pomfret Landaig, James Walcott Wolcottville. W. R. Taber Bridgeport, David Holly Stantord. Samuel Comstock, Norwalk, Weston, Oliver C. Saufurd John Hyde Mystic, Walter Mitchell Harttor Henry S. Lee Leeville, J. L'Hommedien Chester, G. D. Walliams Walcottville. NEW YORK. John Woodward New York. Robert Swartwout do M. E. Thompson 110 Thomas Hertiell 10 Henry G Guston do Clarkson Crolina do James Lanch da Thomas R. Smi h do Edwin Williams dies William Stevens Nathaniel J. Boyd do 110 James Tallmadge do Hector Craig do Anson G. Pinlps James B. Murray do ماله Charles A Davis do Augustus Greele do Peter H. Scheuck Joseph P. Sompson do do Jonathan Seymour James W. Robinson do ila Jacob Acker do Peter Sharpe do Kalah Lockwood do Silas Brown do Erastus Elsworth do Elijah Paine do Peter R Livingston Rhinebeck, Thomas Williams Pouglikeepsie, Morgan Carpenter Stantord. Stephen Titus Lagrange, Poughkeepsie, Gilbert Brewster William Davica do Bartow White John C. Van Wyck Fahkill. do William B. Leonard do Walter Cunningham Poughkeepsie, John Buckley

Robert Wilkinson A. L. Ulrich Abraham Van Wyck Robert Tillotson Isaac Merrit Thomas Taher, 2d John T. Shryver Michael Schultz Nathaniel P. Hill David Corwin John W. Knevela Jesse Senfield John L. Brooks Nathaniel Dubois James Wheeler Edmund Kirby Jeremiah II Peirson Lovelt Kunball Jesse Buel Isaali Townsend Benjamin Knower Oliver Kane Bennington Gill Abet French Samuel S. Lush Edward C. Delayan Egbert Egberts H. Ames David E. Gregory Henry G. Wheaton Jacot L. Rathbone John T. Nerron Samuel M. Hopkins John P. Herkman Peter Fownsend Daniel Ayers S. O. Almy Jena, Child Harvey Lyon Ehilia Johnson Eben. S. Beach Derick Sibley Barent Sanders Archibald Craig Heary Peck Gabriel Furnian William D. Ross Francis Sayre Henry McKinstry George Tithets Richard P. Hart Justus McKinstry Oliver Wiswell James Millen James Wild Charles H. Morrell Isaac B. Gere Daniel F. Tillotson Isaac Carnenter Gurdon Corning. Geo. M. Tibbitis Rich. J. Knowlson A. G. Hammand Claudius Moffatt Gershom Turner Jacob P. Deforest E. B. Shearman Win. Walcott Fortune C. White S. N. Dexter Aaron Barnes Jesse Ives Wip, Williams Manigomery Hunt Ashuel Seward Abm. Varick James Dana A. B. Johnson Jos. L. Richardson Daniel Kellogg John Howell

Poughkeepsie, Fulkill, ilo Reilhook. Dutchess, Dover, Rhinebeck, Monroe Works. Montgomery, Philipsburg, Newburgh, Walden, Blooming Grove. Newburgh, Warwick Brownsville, Rumfres Watertown. Albany, da 41.0 do .1. 1111 do do do da de do da do eles Kinderhook. New York. da Le Roy, Rochester. de do tho do Scheuectady, do de Hrooklyn. Essex, Caskill. do Troy. Hudson, de Columbiaville, Spencer Town, Lullowville Ithiaca, do do Troy, Honnick. Sandlake. Berlin, Stephentown, Nassem. Greenbush. Ulica, Whites Town, do Oriskany, Uties, Whites Town. Utica, do do do do do Auburn. Skencateles Ulster,

192	NILES' F	REGISTER—
	-	
Willian	m Soper, jr. am Lawrence Franklin t. Prince t. Haviland t. Jones W. Mott an Wyck	Milton,
Linngh	Eranklin	Flushing,
Wm. li	Prince	do
Isaac E	. Haviland	N. Hempstead Cold Spring,
Wm. I	1. Jones	Cold Spring,
Robert	W. Mott	N. Hempstead New York,
Benj. I	3. Howell	Endekill
Allen 1	l'hompson	Fishkill, Pine Plains, New Lebanon
E. Tile	den	New Lebanon
I. Stott	3. Howell an Wyck Thompson den	
		asev. Paterson,
John A	Iorrow 3. Campfield	Newark,
Lohn T	'avlor	do
John C	olt	Paterson,
Mark \	W. Collet	do
Stephe	n P. Britain	Elizabethtown,
Dobert	Lee	Princeton, Rahway,
Wm. F	Iorrow 3. Campfield aylor aylor olt W. Collet n P. Brutain I. Simpson Lee Edgar al V. Coriell D. Polhemu an Crane G. Wright oryell s Capner	do
John S	. Darsey	Hanover,
John V	ail	Paterson, El zabethtown
Wm. V	V. Coriell	El zabethtown
longh	on Crane	Freehold, Elizabethtown
Saml.	G. Wright	Allentown,
John C	oryell is Capner is C. Strattan R. Clawson	Allentown, Lambertville,
Thoma	s Capner	Flemington,
Charles	C. Strattan	Swedusburough Woodstown, getown, W. N. J Oxford Furnace Medford, Princeton,
David I	R. Clawson	retown W N
Win	Robinson	Oxford Furnace
Edward	l'I'homas	Medford,
Robert	E. Hornar	Princeton,
William	n Tuttle	Newark,
Abraha	d Thomas E. Hornar n Tuttle m W. Kinner H. Shipman	do do
Issae A	ndrus	do
Stepher	n Dodd	do
· Asa To	ndrus n Dodd orry l W. Covy	do
Ashbel	W. Covy	do do
Amzi L Wm. J	ack son	Rocksway,
Joseph	Jackson cott	do
Wm. S	cott	Powerville,
Geo. M	I. Maclean	Princeton,
Abraha	I. Maclean m Cross in Cory	Newark P. O.
Henry	A. Ford M. I. Canfield Holsman	do orris Town P. O
Dayton	I. Canfield	do
Daniel	Holsman	l'aterson P. O.
Thomas	s Rodgers	do ver, Newark, Bound Brook,
Joseph	C. Hornblow	er, Newark,
Abraha	m Godwin, jr	Paterson
Nichola	s Smith	do
		·NIA.
Mathew	Carey	Pinladelphia, do
Dani. V	V. Coxe	do
Jesse II	L. Burden	do
Edmun	Carey V. Coxe Jones L. Burden d Green	Homesburg,
Ellis Le	wis	do
S. V. N	letrick	l'hiladelphia,
Samuel	Reeck	do
John J.	Borie	do
B. W.	Richards	do
T. B. L	Darragh	do
Charles	d Green rest for the second se	do do
Robert	A. Parrish	do
Lewis \	Valn	do
Lewis V P. A. B John W	rowne	do
John W	hite	do
Fr. Robe	rts Richards	do
Church	il Houston	do do
Bertain	il Houston	do
J. Halg	ate	do
Joseph I	Homphill	do

10 v . 5, 1651—B	ALTIMORE A
Mark Richards	Philadelphia,
Nathan Bunker	do do
Alexander McClurg	do
James Martin	do
Thomas P. Hoones	do
John R. Contes	do
J. P. Wetherill	do
John S. Riddle	do
Edward Coleman	do
D. S. Hassinger	do
Geo. Wilson W. A	lexander, W. co.
Thomas McGiffin	Washington co.
David Acheson	do do
Wm. Waugh	do do
Thomas Morgan	do do
Jonathan Roberts	Upper Merrion,
Mathew Roberts	do do
Richard B. Jones	Lower Merrion,
Juseph Engle	Chester,
Daniel Lammott	do
John Edwards I	vy Mills, Del. co.
James McSherry Daniel M. Smyser	Petersburg,
Daniel M. Smyser	Getty sburg,
Joseph Williams	Somerset,
Emanuel Shaler	do
Jscob M. Haldeman	
Alexander Cardon	do
Walter S. Franklin	do
Jacob U. Snyder	Oley Furnace,
Geo. D. B. Kiem	Reading,
James L. Dunn	do
Simon Seifert	do do
Daniel M. Keim	
William Wilkins Thomas Bakewell	Pittsburg,
Robert T. Stewart	do do
Alexander Brackenr	
Walter Porward	do
John McKee	do
James Suston	Easton,
Anthony McCoy	Martin's Creek,
Wm. Henry	Stroudsburg,
Hopewell Hepburn	Easton,
Elisha Hunt, Browns	ville Evvette co
Daniel Durkee	York co.
H. Y. Slaymaker, Ma	rearetta furnace
James Humes	Lancaster,
Wm. Coleman	do
Cyrus S. Jacobs	do
David Jenkins, Chur	chtown, Lan. co.
Samuel O. Jacobs	do do
	Bedford,
Peter Schell	do
Abraham Kerns	do
Samuel M. Barelay	do
Jas. McHvaine, Bras	
	[Chester co.
David Potts, jr.	Potts Town,

Samuel M. Barclay	40
Jas. Mellvaine, Bri	
	Chester
David Potts, jr.	Potts Town,
Th. W. Langley	Warren, P. C
Joshua Evans	Paoli,
James Whitaker	Phenixville,
Thomas Chambers	Chambersbur
Hardman Phillips	Phillipsburgh
Geo. Valentine	Belltonte.
James Dunlop	Chambersbur
Geo. G. Lemer	Leipersville,
Samuel Edwards	Chester,
John Dukehart, jr.	Fallstown,
Benjamin Reeves	Philadelphia,
Thos. G. McCulloh	Reading,
E. T. McDowell	Doylestown,
Mathias Morra	do
John Britton	Brockin,
Altred Jenks	Bridesbury,
Wm. Almond	Blockley,
Samuel Kimmell	Stoy stown,
William Maris	Newhope,
1124410	
Ambrew Gray New	rark, N. C. co.
E. I. Dupont Bram	lywme near W
	Wilmington,
John C. aster	6.011

1142

do

John Gordon

Mahlon Betts

Philip Reybold William Kennelly	Delaware city,
MARYL	
Luke Tiernan	Baltimore,
John McKim	do
Hezekiali Niles	do
Lewin Wethered	do
Isaae Tyson, jr.	do
High W. Evans	do
Thomas Ellicott	do
John P. Kennedy	do
Wm. W. Taylor	do
Christain Keener	do
James Williams	do
Columbus O'Donne	
John Kelso	do
Samuel D. Walker	
George Rodgers	do
Roswell L. Colt	do
John T. Barr	do
Hugh Boyle	do
Evan T. Ellicott	do
James Beecham	do
S. C. Leakin	do
S. C. Leakin J. W. McCulloh	do
Geo. Keyser	do
Huratio McPherson	Frederick,
James M. Cole	do
John Brien	do
W. C. Johnson, Ne	
John Wethered, Ba	timore county.
fly. Ellicott, Patux	ent Forge, A. A.
Jeremiah Hughes	Annapolis,
P. Wethered, jr. Ur	ion House, Kent
George Gale	o do
Simon A. Wicks, C. Jacob Mathias V	hestertown, do
Jacob Mathias V	Vestminster.
ОНІО	
Geo. Endly	New Lisbon,
Holland Green	do
VIRGIN	
William Lambdin	Wheeling,
John McLure	do

BALT. AND OHIO RAIL ROAD Fifth annual report of the president and directors, to the stockholders of the Baltimore and Ohio rail road

Porce Washington city.

M. Bruen\*

Peter Force

Amboy, N. J.

company. The president and directors of the Baltimore and Ohio rail road company, in presenting the fifth annual report, heel highly gratified in being able to congratulate the stockholders upon the increasing success, which has then The construction of the road, pany. during the interval which has chapsed the last annual report of the gh, since board, has been steadily advancing with great activity; and there now regh, mains no doubt, but that the first five divisions, extending from the city of Baltimore to the Potomac river, a di-tance of 67½ miles, as well as the lateral road to Frederick, will be; opened for traveling during the pre-

sent year.
Under the authority given by the city council of Baltimore, a line of radway has also been laid from the termination of the main atem of the trond, at the depot, near Prast street, down that street to the basin, where it is now under construction to the certain the street of the basin, where it is now under construction to the certain of the certain the water from to the city, common to the certain of the water from to the city, common the construction of the certain construction.

By special delegation from Kene-

en leating with all the wharves, and intersecting all the this country to its further improvement, offered a pre-principal streets which extend northwardly and south- mium for the best constructed locomotive engine, which wardly, as lar down as the public property south of Jones's falls, at which place there have been conveyed to the company, by the corporation of Baltimore, two squares of ground, favorably situated for the convenient and economical transaction of an extensive commerce. An uninterrupted communication will thus, within a few weeks, be opened along the whole extent of the road, between the port of Baltimore, the Potomac river at the Point of Rocks, and the city of Frederick.

Upon this line a double set of tracks is nearly completed over a distance of twenty-seven miles; and a single set of tracks is also so nearly finished over the remaining forty-six miles, as to leave no doubt of its early completion. The requisite arrangements have likewise been made to secure the construction of the accord track, along the whole line, to the Potomac

river, during the ensuing spring.

When the work shall have been finished to the Point of Rocks, the operations of the company, which have heretofore been interdicted beyond that place, by the injunction issued at the suit of the Chesapeake and Ohio caust company, must necessarily be suspended, unless a decision of the question of right should, in the mean time take place or the canal company agree to compromise the dispute. The delay which this litugation has already occasioned, is the more to be regretted, as there is no reason whatever to doubt, but that if a a apirit of accommodation existed on the part of the a spirit of accommodation existed on the part of the canal company, sufficient room would be found, for both works along the ground in dispute, even should that company still adhere to the idea of extending the work to Cumberland—indeed, so far as the examinations have been made by the engineers of the two companies, it is fully ascertained that there is ample space for both the rail road and the canal at a very inconsiderable additional

The very great improvements which, within a few years past, have been made in the construction of rail roads, and in the machinery employed upon them, have given to this system of transportation, so decided an advantage over all the other artificial means of inter-communication heretofore attempted, as to have inspired an almost universal confidence in it, both in our own counamost universal conducence in R, but all par own constructing be-try and in Europe. A railway is now constructing be-tween New York and Philadelphia, another across the peninsula between the Chesspeake and Delaware bays, to connect with the steam boat travelling between Bal-timore and Philadelphia; these works are fast approaching towards completion; and will, when finished, ensure an easy and rapid communication between those three an eary and rapta communication octween more turner great commercial emporations, reciprocally beneficial to them all, and wantly increasing the travel and intercourse between them. By constructing a railway from Balti-more to Washington, this line of communication would be extended from New York to the espital of the United States.

Impressed with the importance of accomplishing this last object, in which the convenience of the whole commanty is so deeply interested, and believing that the road, if judiciously located and constructed, would af-ford a fair remuneration to the stockholders, the board have directed that during the present season the neces-ary examinations and surveys should be made for the purpose of ascertaining the facilities which the intermedute country offers for a rail road, and the approximate expense of its construction. In this duty the chief cusome time been engaged.

The legislature of Maryland, during the last session,

passed an act which, among other provisions, authorised the Baltimore and Washington turnpike road company to subscribe \$100,000 to the stock of the proposed road to Washington, and reserving to the state the right to subscribe for five-eighths of the cost of the road from its intersection with the Baltimore and Ohio rail road to the line of the District of Columbis, amount-ing perhaps to a moiety of the whole proposed expendi-

The directors being desirous of procuring their steam machinery, as far as practicable, of American workman-ship, and anxious to direct the mechanical genius of Vol. XLL.—No, 14.

should be placed upon the road on or before the 1st of June 1831, limiting the performance to a certain rate of speed and power of traction. Only one engine has yet been offered, which on trial, appeared to be adapted the structure of our road, this engine it is believed, taking into consideration its weight, is, in point of efficiency nearly if not quite equal to any locomotive yet tried.

From the experiments which the board have been

enabled to make with it, they have fully ascertained that steam power may be used, on the Bultimore and Ohio road, at a rate of speed and economy of cost, which will fully realise the most sanguine anticipations of the company; arrangements are accordingly now in train to procure a sufficient number of locomotive engines of a weight and construction switshie for the travel and transportation on the road. These it is expected will be in portation on the road. I here it is expected will be in readiness by the time the two sets of tracks shall be com-pleted to the Potomac river, and until then, the trans-portation on the western divisions of the road will be effected by horse power.

The graduation of the inclined planes at Parr ridge is nearly finished, and they will very soon be in readiness to receive the rails. It is contemplated to place the necessary stationary engines with their appropri-ate fixtures there, as early as possible; and in the mean

ate fixtures there, as early as possible; and in the mean time horse power will be employed in passing them. Considerable progress has been made in the improve-ments at several of the depots of the company, by the construction of substantial and appropriate buildings, and other requisite accommodations, adapted to the commerce of the road; and from the warchouses of the company upon Camden street, a rail-way will be laid up that street for the convenience of the return trade. These arrangements will, it is believed, secure to the public, in the use of the road, every necessary facility and convenience.

As it was early forseen that a very considerable commerce would be attracted to the city of Frederick, when the road should be completed to that place, the interests, both of the public and of this company required, and the improvements necessary for the operations of the company erected there. The municipal authorities of that city with a liberality not less honorable to themon materity with a increasity not reas numerable to them-selves than gratily ing to this board, generously offered to convey to this company, free of cost, six seres of land, immediately adjoining to that eity for a depot-several of the citizens of Frederick also offered to obtain, without any charge to this company, the right of way for the lateral road leading from the main stem to this depot-these valuable grants were secepted by the board, and the necessary conveyances have been duly exceuted.

The depot at Frederick is so situated as to secure from it, an easy communication by lateral railways into all parts of that city; the company will therefore be en-abled to receive produce or deliver freight upon any street where the inhabitants may extend the railway, and open suitable warehouses for the accommodation of the tende.

The system organized for the regulation of the business of the company, and for the government of its agents, has, in its operation been found to be efficient and practicable, clearly defining the duties of the several officers and maintaining a strict responsibility in every department. It is also with sincere satisfaction, the board can inform the stockholders that notwithstanding the complicated operations of the company, requiring nu-merous agents, whose duties rendered it necessary they should be dispersed over an extensive district of country, the utmost harmony and fidelity, with the exception of a single instance referred to in the accompanying docu-ments, have pervaded all the departments; and a most ments, nave pervaued all the departments and a most laudable disposition has every where been manifested by the officers and agents employed, zealously to co-operate in the advancement of the work, and in reci-procally giving to each other a cordial and efficient aid and support in the discharge of their several duties. This disposition has greatly facilitated the operations of the company, and very much abated the labors of the

the company, and to the reports of the superintendent of graduation and masonry, and of the superintendent of construction, which are hereto annexed, the stock-holders will find a minute and circumstantial exhibit of all holders will find a minute and circumstantial earlies of an the operations of the company, in relation to the location and construction of the road, subsequent to the time of the last annual report, down to this date, as well as of several highly valuable improvements which have, withhe the same period, been made in the machinery and moving power employed upon it. By these reports it appears that the actual cost and graduation and masonry upon the 71 miles between Baltimore and the Point of upon the 71 miles between Baltimore and the roint of Rocks, including the lateral road to Frederick, will not exceed \$1,101,615 or \$15,500 per mile; and that the cost of a double set of tracks upon the main stem of the road, and of a single set on the lateral road to Frederick will not exceed \$505,238 or \$11,628, per mile of road with a double set of tracks, thus making the total cost of graduating the entire line of these portions of the road and of laying the rails upon them \$1,906,853 or \$27,128

and of taying the raits upon them are 300,000 or per mile. About one third of this line will be his diwint atone rails, and the remaining two-thirds with wood. In this charge is included the heavy expenditures incurred on the first division of the road. According to the report of the superintendent of graduation and maonry, hereinbefore referred to, it appears that the graduation and masonry of the 2d, 3d, 4th and 5th divisions of the road, embrao ing the entire line between Ellicott's of the road, embraoing the centre this between Edition of a mills and the Potomac river, and extending over a distance of 544 miles, will cost \$465,443 or \$8,540 per mile: if to this be added \$11,628, the average cost of laying a double set of tracks, on the entire line between Baltimore and the Point of Rocks, the actual coat of graduation, masonry and laying a double track of rails on the road between Ellicott's mills and the Potomac, on the road between Educot's muis and the rocume, will be \$20,168 per mile, and this district, it is believed, may be assumed as affording a fair specimen of the la-bor and expense which will be incurred on the remaining line of the road from the Point of Rocks to the coal

mines in Alleghany county.

The entire line of the road, from the depot of the company, near the intersection of Pratt street and the Washington road, at Baltimore, to the Point of Rocks is 673 miles, to which is to be added for the distance thence to the eastern termination of the railway at the eity block 2 miles, and for the branch road to Frederick Si miles, making the whole distance finished and under 34 making the winte custance inhance and under construction 73 miles. The excavation, embankment and masonry upon nearly 465 miles of which have been completed within the last twelve months; and upon which there has also been laid 454 miles of single tracks ol rails within the same time.

In deciding upon the materials of which the rails should be formed, the board have continued to pursue the determination adopted soon after the commencement of the undertaking, which was in all cases where stone rails could be procured, to use them, and in those districts where stone of a suitable kind could not be

Upon reference to the report of the chief engineer of obtained to use wood of the best and most durable quality the country afforded. Throughout the district intermediate to the Patausco and Potomac at the Point of Rocks, no stone of a quality suitable for rails bas been discovered, and consequently upon this district wooden rails have, of necessity, been substituted. For the same reason a wooden visduct, supported by substantial stone piers and abutments, has been constructed aeross the Monocacy river.

Although the first track on the 2d division of the rand Although the next track on the 30 division of the rosses was completed several months since, yet as both tracks on this section will be of stone, and the second one has not yet been finished, it was found that the running of passenger ears upon this part of the road greatly inter-rupted the work, and would considerably retard its completion; the general travelling has, therefore, not been extended beyond the first division of the road, a distance of 13 miles.

Upon reference to the report of the superintendent of transportation, hereto annexed, it will be seen that or transportation, nereto annexed, it will be seen that \$1,905 pnasted on this division since the first of January last, and that within the same period 5,931 tons have been transported upon it, jelding an income of \$31,904 \$7.

With the foregoing results before them, the board have no liesitation in assuring the stockholders of their entire confidence, that when the legal obstructions, which now arrest the progress of the work, shall have been removed, the remaining distance of the road, be-tween the Point of Rocks and Cumberland may be completed, with a double set of tracks, within three years; and they are fully confirmed in the opinions heretofore and they are tully confirmed in the opinions herecolore expressed, "that a rail road upon the plan contem-plated by the citizens of Baltimore, between that city and the Ohio river, is easily practicable—that its powers and facilities will be found to be equal to all the anticipations that were formed of its capabilities, when the work was first commenced, and that the most sanguine calculations of its importance, and utility, whether the object be regarded with reference to its national and local advantages, or its profits to the stockholders, will be realized."

PHILIP E. THOMAS, president. October 1, 1831.

Second annual report of the chief engineer of the Balti-more and Ohio ruit roud. Engineer's office, Baltimore and Ohio rail road, Bultimore, October 1, 1831.

To PHILIP E. THOMAS,

President of the Baltimore and Ohio rail road co. In accordance with the regulations of the company, I now present my second annual report, detailing the proeeedings of this department for the last twelve months, and embracing such operations as will claim attention

within the next year.

Every effort has been made to realize the expectations which were formed, and the assurances that were given, that the road would be opened for travelling both to the Point of Hooks on the Potomse river, and to the city of Emdesities within the case 1821. Frederick within the year 1831; and notwithstanding the generally unfavorable state of the season during the last autumn and the unusual severity of the winter, the work has been prosecuted with such activity that fully as much has been accomplished as was expected; leaving no reason to doubt but that the road will be opened to those places with a double set of tracks on the first and second divisions, and with a single set of tracks on the other portions, within the time anticipated.

The details of the proceedings of the company since

the last report, will be stated under the following heads:

1. The graduation and masoney.

2. The construction of the railway.

3. The location of the rout.

4. The machinery and moving power. And I shall also embrace the subject of the introduc-

tion of the railway into the improved parts of the eity of Bultimore, as well as that of the proposed railway to Washington.

The graduation and masonry.

Previous to the last annual report, the graduation and masonry had been completed upon the city division and

to the Potomac, will cost only \$8,532 16 per mile. That the graduation of 124 miles of the road near to Baltimore has cost as much as the graduation of the re-

maining 543 miles will cost,

That the masonry on 83 miles of the road near to Baltimore, has cost as much as the masonry on the re-

Baltimore, has cost as much as the masonry on the re-maining 535 miles will cost.

And that the graduation and masonry together, has eost on the first 11 miles of the road \$33,000 more than it will cost on the remaining 564 miles.

<sup>\*</sup>Upon reference to the annexed report of the superintendent of graduation and masonry, a detailed statemeet of the seperate cost for graduation and masonry upon the several divisions of the road, intermediate to the city of Baltimore and Potomac river, as well as of the lateral road to Frederick, will be found.

By this report, it appears that the graduation and ma-sonry upon the first divison of the road, embracing 13 miles, and extending from the city of Baltimore to El-licott's miles, has cost \$46,354 56 per mile, whilst the graduation and masonry upon the other four divisions, embracing 543 miles, and extending from Ellicott's mills

great rock excavation at Ellicott's mills, upon the second division, to the forks of Patapseo.

Fifteen miles of the third division, in continuation from

the second division, had also been placed under contract, so recently however, that very little progress had been

made upon it.

Since the last annual report, the excavation of the Tarpeian rock at Ellecut's mills, and the graduation and masonry on the fitten miles of the third division, com-pleting a distance of forty miles from Baltimore, have been finished.

During the last autumn and winter, a distance of about sixteen miles, reaching to the Point of Rocks on the Potomac, and comprising about five miles of the fourth division, along the ravine of Bush creek from ljams' mill to the Monocacy river, together with the whole of the fifth division from thence to the Point of Rocks, as also the viaduet across the Monocacy, were placed under

The graduation and masonry on the five miles along Bush creek, and upon a part of the eleven miles of the first division were completed during the early part of the present year, and the entire residue, including the viaduet, will soon be finished.

in the month of June last, the graduation and masonry of the residue of the line between Baltimore and the Point of Rocks, comprising a distance of twelve miles, roun of access comprising a ustanee of tweive miles, including the inclined planes aeross Parr's ridge, were contracted for. The dividing point of the third and fourth divisions is on the top of that ridge, and of the twelve miles just mentioned, about \$\frac{3}{2}\$ miles on the clourth divisions.

About the same time the work upon the lateral road

to Frederick, a distance of 31 miles from the main stem at the Monocaey, was likewise placed under contract.

The work upon these portions of the line has been prosecuted with uncommon vigor, and with a view to its being prepared for the reception of the railway in time for the attainment of the object herein before men-

The graduation, masonry, and bridging, being under the superintendence of Casper W. Wever, the report which that vigilant officer is expected to make to the board, will complete the necessary details in relation to this branch of the service.

The construction of the railway.

In the early part of the last year, a double track of railway was finished from Baltimore to a point near the Patapseo, and a single track from thence to Ellicott's mills was also completed. Contracts had also, in August 1830, been made for laying down the residue of the second track to Ellicott's mills, including about 6½ miles, and likewise for laying the first track on the second division from Ellicott's mills to the forks of Patapseo; in length twelve miles.

These tracks have been completed in a substantial manner with granite sills, except for short distances on high embankments, where wood was preferred.

It was expected that the two tracks to Ellicott's mills and the first track to the forks of Patapaco would be com-pleted during the autumn of 1830; but the length of time required to procure the sills from the existing quarries, and to construct the track in so substantial a manner, rendered this impracticable. The consequence has been, that the completion to Ellicott's mills took place in the winter, whilst the 12 miles of track above the mills were not finished until the middle of June last.

A contract has also been made for laying flown the second track of the second division, with granite sills. This work has been judiciously prosecuted by Enoch Sweat, who had heretofore evinced his ability and zeal as a contractor in the service of this company. Of the 12 miles of tracks embraced in this contract, only 14 miles remain to be laid; and the entire double track to the forks of Patapaco, 25 miles from Baltimore, will probably be completed by the 1st of November next.

The first track to be laid on 15 miles of the third di-

vision was contracted for in the last autumn; but owing to circumstances which will be explained in the docu-ments accompanying the report of the superintendent of

upon the first division to Ellicott's mills, a distance of thirteen miles; and likewise, with the exception of the great rock exeavation at Ellicott's mills, upon the second division, to the forks of Patapaco. regard of the work on this division, it is believed, that the first track will be completed by the lat of November next. Of this track 5½ miles will be laid with granite sills, and the residue with wood. Materials are in pre-paration for a second track on this division.

Contracts have also been made for laying the first track on the remainder of the third, and on the whole of the fourth and fifth divisions, to the Point of Rocks, and likewise upon the lateral road to Frederick; together with the second track upon a part of the distance embracing Parr's ridge; and it is expected that these contracts will be completed by the close of the year

From the circumstance, that stone suitable for sills, From the erreamstance, that some summe for silly, had not been found contiguous to the upper part of the third division, nor upon the fourth and fifth divisions, including the lateral road to Frederick, it became ne-cessary to lay the first track through these distances with wood instead of stone; and from the necessity there will be for having the use of a second track, previous to the time when it could be finished with stone to be hrought from a great distance, by means of a conveyance on a single track, which would at the same time be much, if not fully, occupied with the public traile and in-tercourse, it is worthy of consideration whether it will not be for the interest of the company and the public, that the second track on part of the third, and on the

wise be laid with wood.

The reason for this step will be much strengthened I ne reason for this step will be much strengmented from the consideration, that the facts developed on the first and second divisions indicate, that embankments should be allowed a period of from two to three years at least, to settle, previous to receiving a railway con-structed of stone sills.

In this way, the road would come into profitable use at an earlier period, and it is believed that the advantage to accrue from this circumstance would more than com-pensate for any loss that would be consequent on the deeny of the wood.

When the wood shall deep, the track can be repaired of stone sills, or any other method that shall have been

approved.

About 40 miles of single track will have been laid with stone sills, by which the relative advantages between their use and that of wood in the formation of the railway, will be tested, as regards the first cost, durability, repairs, and facility to the motive power.

Since the last annual report, a contract has been made some the rast sinusi report, a contract has occur hades with John McCarteny for the extension of a single track of stone and iron raslway along Pratt street whin the improved parts of the city. This caterprising contrac-tor is executing the work in a very satisfactory manner, and already the track has been had to the basin.

During the present season there have been erected a permanent carriage house, weigh house, &c. on the ground conveyed to the company by James Carroll, esq. A depot has also been established at Ellicott's mills, on which there has been erected a permanent warehouse. There has likewise teen a depot established at the city ol Frederick as well as within the city of Baltimore, near the basin, upon the latter of which a suitable house is creeting.

For a more full account in relation to the construction of the railway, depots, &c. I refer to the report of Jacob Small, superintendent of construction, hereto annexed, marked A, and to the documents accompanying the same, in which will be found a lucid narrative and statement by his principal assistant, James P. Stabler.

Location of the route.

In accordance with a resolution of the board, the requisite steps have been taken to revise the location of the residue of the third and the whole of the fourth and fifth divisions to the Point of Rocks, and also to locate the lateral road to Frederick city.

For this purpose it was arranged that Casper W. Wever, superintendent of graduation and masonry who had just closed the field duties requisite for the revision of the location upon the greater part of the third division, should continue his labors in this service. And in order that due time might be allowed for the consideration of located line from Ballinger's creek to the Point of Rocks questions relating to the system of incident planes aeross Part's ridge, a random line of survey and levels was by lilm extended aeross the ridge and down Bush creek to a point beyond any supposed influence to arise from the system of planes which might eventually be adopted in passing that ridge.

From this point near Ijams' mill, to the end of the fourth and beginning of the fifth division, on the west bank of the Monocaey river, and including a distance of about five miles, the line was duly revised and staked out for contract by that officer, according to the princi-

ples which I approve.

This part of the line occupies the most narrow and erooked part of the ravine of Bush creek and extends to the junction of that stream with the Monocacy. It required the exercise of no ordinary skill and judgment to lay the line and in such manner as to give space for the passage of the stream on the one hand, and so as not to encounter, to an improper extent, the precipitous and rocky projections of the hill, on the other; and at the same time to keep the curvatures sufficiently gentle and regular.
The location has been made so as not to have the ra-

dius of eurvature less than 440 feet. One point of hill is passed with a few hundred feet having this radius, whilst in every other part, the radius of curvature is greater than 500 feet.

In the experimental lines which had been previously run, curves of radii less than 440 feet had been here em-The grades were also reduced so as not to exseed a descent towards the Monocacy at the rate of 24

feet per mile in any part.

The superintendent also continued the location on the fifth division from its commencement to Bullinger's and distance of about 15 miles. In addition to which he also attended to the necessary surveying and levelling required for the location and staking out for contract the route of the lateral road connecting the main line at the west bank of the Monocacy, with the sity of Frederick.
The field notes and levels of these several parts, and

the maps and profiles of the route of the main line from ljams' mill to Ballinger's creek, have been reported and

are on file in this department.

The assistant engineers, Henry J. Ranney and Ralph S. Smith, who had sided in the field duties of the revision of the third division, and George T. Dunbar, John W. Smith, and Benjamin A. Ahlerson who had assisted in the calculations, were detailed to continue their services under C. W. Wever in the revision of the main

The revision of the line from Jiams' mill to Ballinger's creek, as before mentioned, having been concluded, and having also just been placed under contract for the gra-duation and masonry, it was no longer convenient, on account of the preas of business appertaining to his of-fice, for the superintendent to continue the field operations upon the location of the main line after the 30th of November.

I therefore resumed this duty personally, and completed the location and staking out for contract the residue of the fifth division from Ballinger's creek to the Potomas river at "the Point of Rocks," a distance of about 93 miles, in which service I was aided by the assistants already named, and by Benjamin H. Latrobe, who had recently been employed as an assistant in superintending the laying of the railway on the second divi-

The line throughout the fifth divison passes over a country the surface of which is undulating; nevertheless the route is remarkably direct; and as regards curvature, it is almost equivalent to a straight line. is no curvature in eleven miles, the extent of this division, of less radius than 1,146 lect, and only about onefourth of a mile having a less radius than 1,910 feet, whilst the entire length of the straight parts is eight miles. The maximum grade upon this division and up-on the lateral road is 30 feet per mile, and will there-fore be within the advantageous range of the action of

on file la this office.

These surveys were completed on the 27th of Decem ber last, the time having been considerably extended in

consequence of the shortness of the days and the inclemency of the season.

During the last spring the necessary examinations, surveys, and levels were made to effect the final location of the remaining part of the line between Bultimore and the Point of Rucks, to wit, the part including the and the Point of Rocks, to wit, the part neuturing the crossing of Part's ridge, in length about 12 miles. The staking out for contract of this part of the line was com-pleted on the 6th of Juce last. The maps and profiles have been executed, and are, with the notes and calculations, deposited in this office.

In making this part of the location I was assisted by the gentlemen already mentioned, with the exception of B. H. Latrobe, who had been detailed to run and stake out the centre line and corvatures of the graduated surface of the third, and parts of the fourth and fifth divi-

sions, preparatory to the laying of the railway. For a description of this part of the line, and the prin-

ciples which governed in its location, reference is made to my report dated the 6th of June last, and which is

hereunto annexed, marked B. The document just referred to contains statements of the sections and quantities of excavation and embank-inent as calculated at the time of making the location, to

be necessary to effect the graduation.

Similar statements for the residue of the fourth division, for the fifth division, and for the lateral road to Prederick, are contained in the tabular exhibit marked C, annexed.

I also annex a tabular statement, marked D, prepared by B. H. Latrobe, and containing the distances, grades, and radii of the curvatures on the line of the Baltimore and Onio rail road from the deput first established on Pratt street, to the Point of Rocks, and to the city of Frederick.

I herewith further present a map and profile of the final location of the line to the extent just mentioned, as drawn by Joseph Shriver, who, it is proper to say, also assisted B. H. Latrobe in tracing the centre line on the graduated surface of the third division, to guide in the

laying of the railway.

Having been charged with the investigation of the eligibility of introducing the railway into the improved parts of the city of Baltimore, that subject was attended in, and received the consideration due to its importance. copy of my report upon this subject dated the 3d of Fe-

bruary last, accompanies this report, and is marked E.
Immediately on my completion of the location of the
fifth division to the Point of Rocks, I was instructed to make a reconnsissance of the country lying between the city of Baltimore and the city of Washington, with a view to ascertain and report upon the apparent facilities a!forded for the location and construction of a railway that should connect Baltimore with the seat of the general government,

This fluty was performed to the extent which the in-elemency of the winter, at the time, permitted; and a report thereon was made on the 22d of January.

In making this reconnaissance, I was assisted by B. II. Latrobe; and was also aided by the facts developed in the survey of a route for a canal, made for the United States, by Dr. Wm. Howard. And I take this occasion to acknowledge myself indebted to that gentleman and also to cant. Wm. Gibby McNeill, and to col. J. Abert of the U.S. topographical bureau for a view of the maps and profiles of that survey.

After the location across Parr's ridge was completed, I was directed to take the necessary steps, without loss of time, towards effecting the location of the route of the

proposed railway to Washington.

Two parties were accordingly organised, the one un-iler the immediate direction of Henry J. Ranney, and consisting of Ralph S. Smith, leveller; John W. Smith, surveyor; Benjamin A. Alderson, draftsman; and John Small, jr. and Charles G. Hanson, catcolators; and the other under the immediate direction of B. H. Latrabe, locomotive steam engines.

The maps and profiles have been executed, and are, being the profiles the survey and levels of the H. Krebs and William K, Coulter, calculators.

These officers commenced the preliminary surveys and levels on the 15th and 18th days of July last, respectively, and continued their operations with due diligence until about the 1st of September, when, from the unhealthiness of the season and of the country bordering on the Patuxent, several of them became seriously it of bilious fever; and it was therefore necessary to suspend the field operations until a more healthy season should return. These operations until a more nearing season be resumed; and they will be unremittingly prosecuted until the location, together with the calculations, maps, and profiles, shall be completed.

I had expected to have personally superintended and directed all the preliminary surveys which would be required previous to the location of the Washington road ut other duties claiming my attention, it became necessary that these surveys should be made under written instructions that would embrace, in a great degree, their extent, together with the manner, method, and principles, upon which they should be conducted.

In clucidation of this subject there is hereto annexed

a copy of these instructions, dated the 6th of July last, marked F, to which is likewise necessarily attached a copy of my report of the 22nd January, herctofore mentioned.

The machinery and moving power.

Advances have been made since the last report to-wards the perfecting of the turn-outs, and likewise of those parts of the cars subject to friction, wear and frac-

The turn-outs have been modified so as to adapt them more perfectly to the object. A single switch is used, the position of which is in the rail across which the turnout is directed. The pressure of the inner side of the flange against the switch when thrown open, together with the greater circumterence of the opposite wheel rolling with the flange on the east iron plate, effectually guides the ear in the direction of the turn-out, and with

At first, it was thought to be necessary to lessen the breadth of the track at the turn-outs in consequence of the great play which had been given to the flanges on all the other parts of the road, to wit, 14 inches; experience, however, has brought us to adopt the same breadth of track at the turn-outs as in other parts of the way, namely 4 feet 91 inches between the iron rails; and an entire uniformity of breadth is now preserved throughout.

It has been found necessary to give some additional strength to the wheels and axles, to preserve the former from leacture, and the latter from flexure. The diame-ter of the axle has been increased from 2 3-4ths to 2 7-8ths inches, and the weight of the wheel from 175 lb. to 205 lb. The dismeter of the wheel continues to be 30 inches, whilst the breadth and thickness of the rim

The cylindrical and conical form of the face of the wheel remains as at the first, excepting that the rise of the conical part has been changed from a ratio of 1 to 6, to that of I to 5; whilst the breaith of this part, which was one inch, has been increased 3-16ths of an The rise next to the flange is therefore now 1 of

an inch instead of 1.6 as formerly.

This change was induced from a conviction that the motion of the cars would, in general, be rendered steadier, and with considerable velocities, easier in the extreme curvatures. It was also believed that the effects of chilling would be greater, whilst the cone would be more durable; at the same time, the experiments on friction justified the conclusion that no lateral thrust would result from this increase.

Experience so far, appears to confirm all these ex-pectations; and it is believed, that a decided improve-

ment has thus been effected,

The cone now used, will answer for three feet wheels upon curvatures of road of 400 feet radius, and hence, wheels of that diameter can be employed for the use of the locomotive engines.

In the use of the Winans' car, it was found that greater strength, and hardness of texture, in the friction wheel, were requisite, than was at first apprehended. Greater strength to withstand shocks, and hardness to preserve from the attrition and wearing at the periphery bearing

upon the end of the axle. It is believed that these deleets have been remedied to a great extent, and so as to accure the practical success of this improved car. Improvements in the box containing the friction wheel and the oil, have also been effected.

The on, mave also been effected.

It is evident, that the thursbilly of the road and of ears, and especially of the wheels, would be promoted by the use of springs interposed between the load and the running gear. This preemtion would also increase the running gear. This precaution the efficiency of the moving power.

The concussions upon the rails, caused by the undulatory action of a rigid frame, bearing a heavy load, are

very considerable, and they are greatly augmented by an increase in the rapidity of the movement.

From unavoidable deviations of the plane of the surface of the rails from that of the bearings of the ear, the pressure of the weight frequently becomes transfered to three and even to only two of the four wheels, and this transfer of pressure and consequent concussion, is continually varying upon the wheels diagonally seroas the carriage.

The employment of springs would however, not only greatly tend to equalize the pressure under these vary-ing circumstances, upon all the wheels; but would likewise greatly lessen the concussion and its effects.

It has been found absolutely necessary to the comfort It has been found absolutely necessary to the commer-of passengers, that carriages hard for their woncoyanes, should be monated upon springs, or upon some equiva-lent elasts fature. Now the jars and concussions that would destroy the contort of the passenger, become in-creased with a load of stone, minerals, or of sgricultural products, or with any other loading laving a less classi-tion than excess and although he sayels of traffic city than persons, and although the articles of troffic may not be damaged, yet, the effects upon the carriage and road will be injurious.

The chief disadvantage to be apprehended from springs, is their cost, but should this be more than returned in the increased durability of the ears the invest-

ment would be profitable.

Under these considerations, it is recommended that a number of burden cars shall be furnished with springs in order to test their advantageous use in such cars.

From experiments which have been made on the Baltimore and Ohio rail road, the traction with the use of the Wmans' car upon a level, straight road, was tound to be the 1-450; and making a reasonable allowance for unavoidable delects, it is believed, that in practice, the traction will be the 1-400 of the weight of the car and

It was mentioned in the last report, that two kinds of cars were used open this road, and that it was intended each should receive its utmost improvement.

This subject has continued to claim attention, and will be pursued until a lair comparison can be made of the relative merits of each.

The other car works with an outside bearing and chilled boxes, and is more simple and cheap in its structure. The traction with this car, according to the experiments, was the 1-258, which allowing for delects, may probably be increased to the 1-240th of the weight of the car and its lull load.

The diameter of the end of the axle subject to fric-tion, is the same in each of these two kinds of ears, to wit: two inches; and it is probable that a less diameter than this, would not answer in the Winans' ear. circumstances attending the wear of the parts in the chilled box car are, however, different from those of the other, and there is reason to believe, that a less diameter than at present, may be used. It is probable that a disincter of  $1\frac{3}{4}$ , or even of 1.5-8 inches, might be sufficient; and it so, the traction would at once be reduced from the 1-240th to the 1-295th, which would produce a gain in the effective power equal to about 23 per cent.

Experiments were also made to ascertain the resistance occasioned by a curvature in the road of a radius of 400 feet, and it was found when the Winaus' car was used, to be equivalent to that which would arise on tho straight parts of the road, from an ascent of 1 in 14.18, equal to 3.72 feet per mile: and of 1 in 356, or 14.83 feet per mile, when the other car was employed.

In order to test the practicability of turning the cor-ners of streets in the improved parts of the city, with a

198

to ascertain the facility of turning a right angle in a given space, by means of the flanges of two of the wheels rolling upon the longer rail, the curved part of the track being one-fourth part of the circumference of the cir-

It was found that a railius of 60 feet, which is very little more than a calculation upon the depth of the llange would give, was the most expedient length for this object; and that the passing of a car through the curve which rolled upon their flanges, were guided in their proper direction, by means of the flanges being made to run in a groove in the rail, whilst the shorter rail remained of the usual form.

A turn-nut and curve upon this principle has been laid down at Ellicotts' mills, to communicate with a visituet which the enterprizing proprietors of the extensive merchant flour mills there, have constructed across the Patapaco. To pass through this curve requires a traction of 1-49 for the Winans' car, and of 1-45 for the present chilled box car.

It is proper to remark that the flanges of all the wheels used, are chitled, and that it is necessary that the grooved rail should also be chilled, to be durable.

In making these experiments, as well as in the arrangement of the machinery. I have been aided by my assistants John Elgar and Ross Winans. The latter gentleman is now engaged in planning the machinery and fixtures for the inclined planes.

Recently a chilled box car has been constructed in such a manner as to permit the axles to vibrate. arrangement is quite simple, and is effected by permitting the box to move backward and lorward through a small arch. In this way the motion of the wheels is more free, and the axles may conform more to the di-rection of the radius of curvature of the road, giving greater effect to the cone, so that the resistance in curvatures, and in passing through turn-outs, will be much reduced. This car works well, and the method bids fair to be a valuable improvement.

Full effect should be given to this plan, and at the same time it should be ascertained whether both ends of the axle should be allowed to vibrate, or only one of

them.

Although this modification of the chilled box car with outside bearings, may ultimately enhance its value, and bring it more nearly into competition with the Winans' car as respects the amount of traction required, yet, further experience is necessary before their relative merits in all respects, and under all circumstances, can be ascertained.

It is, however, gratifying to know, that whilst our en-deavour still to improve them, implies some degree of imperfection, the present state of either of these cars is in advance of that which would be necessary to ensure the success of railways,

For the report of John Elgar, assistant of machinery,

see paper marked G. annexed

In pursuance of the public call upon American genius, made by the directors, three locomotive steam engines were produced upon the rail road, one only of which has been made to answer any good purpose. This engine was built at York, Pennsylvania, by Phineas Davis, and after undergoing certain modifications, was found capable of conveying 15 tons 15 miles per hour, on a level. It has been employed on that part of the railway be-tween Baltimore and Efficotts' mills, and generally has tween buttimore and Ellicotts limits, and generally has performed the trip out to the roills in an hour, with four cars, being a gross weight of about 14 tons. About 5 miles of the road ascends at an average rate of 17 feet per mile.

The engine is mounted on wheels made for the common cars of 30 inches diameter, and the velocity is atmon cars of so menes maneter, and the closely to tained by means of gearing with a spur wheel and pin-ion upon one of the axles. The axles work in friction wheels, similar to those of the Wmans' car. The curvatures are traversed with facility by this engine. Its greatest velocity for a short time, on the straight parts of the road, has been at the rate of 30 miles per hour, whilst it has frequently attained that of 20 miles, and has often travelled in the curvatures of 400 feet radius,

track of railway, experiments have likewise been made | suthracite coal, which has been found to answer the purpose well.

The performances with this engine, have, therefore fully confirmed the opinions advanced in the last anfully used on a railway, having curves of 400 feet ra-

This engine, however, weighing only about 34 tons,

is too light for advantagenus use upon ascents.
Taking into view the strength of the road wood is used in the construction, it is believed, that it would not be advantageous to employ engines of greater weight than shout 45 tons, and the engine now upon the road affords a good index as to the requisite quantity of steam, and likewise of the proportions of the various parts, which should prevail in these that are to be con-Mruch d.

As a further illustration of the machinery and fixtures herein referred to, and now used on the Baltimore and Onto rail road, and of the methods employed in constructing the railway, I have annexed the following drawings, executed by B. II. Lathrobe, to wit:

1st. A drawing of the friction wheel of the Winana car showing

A vertical section of the friction wheel and box.

A lateral view of the same.

Plans of the lower and upper divisions of the box. 2d. Drawings of Figur's improved turn-out-com-prising a general view of it, and representations of its several details.

3d. Drawings of the chilled cast iron car wheel-exhibiting different parts by appropriate views and see-

4th, Drawings of the car used for the transportation of flour, shewing—an end view, side view, and plan of the car—together with the manner of stowing the barrels.

5th. Representations of the various modes of con-structing the railway employed on different sections of the Baltimore and Ohio rail road, displaying the details of construction-

Of stone salls,

Of wooden string pieces and sleepers.

Of wooden string pieces and stone blocks. The work to be performed in the ensuing twelve months, and for the probable cost of which, estimates are annexed, marked H, will consist of the completion

of the graduation and masonry on the main line to the Point of Rocks, and on the lateral road to Frederick. The completion of the two tracks of railway to the Potomac at the Point of Rocks, and of the single track to the city of Frederick, together with the necessary de-

The requisite stationary machinery to be placed upon the inclined planes at l'arr's ridge.

The continuation of the railway within the improved parts of the city.

The construction of cars and locomotive steam engines, to be carried on as fast as practicable and expedient,

The location of the route of the lateral railway to Washington, which it is expected will be complicted an early day, so that the work of construction may be commenced within the year. No estimate can however, be maile of the probable cost of constructing this work, until the surveys and calculations shall have been fluids.

Respectfully submitted, J. KNIGHT, chief engineer.

#### STEAM BOILERS. Treasury department, October 12, 1831.

The house of representatives, by a resolution of the 4th of May, 1830, directed the secretary of the treasury

to collect and communicate to the house such informa tion, and report his views on the same, as, in his opinion, regulations for the navigation of steam boats or steam vessels, with a view to guard against the dangers arising from the bursting of their boilers. Such measures were accordingly taken as were thought

best calculated to obtain the requisite information. But, although some highly interesting and valuable communiat the rate of 15 miles per hour. The fuel used is the entions have been received, the department has not succeeded in collecting the facts sufficient to enable it to;

fulfil the directions of the house.

In consideration, therefore, of the difficulty of obtaining the requisite information, by any means within the power of the department, and of the deep interest which the community, and more especially those engaged in ateam navigation, have in the subject, it is thought best to make this public application to all who may be able, and are disposed, to promote the benevolent object of the resolution.

Accidents, like those which it is the desire of the house to prevent, have, unfortunately, been so numer-ous that many persons will have it in their power to state the causes and circumstances of such casualties; and these, collected from various parts of the union, cannot fail to be highly useful.

With a view to assist in giving that information, a preeise and explicit character, the following queries were

prepared.

It is not intended, however, to confine it to the points presented to them, or to the form of communication which they may seem to indicate. On the contrary, the department will be happy to receive any information within the scope of the resolution, and communicated in such manner as the writer may be pleased to employ.

It is desirable that communications on this subject should be transmitted by the first of December, or early as may be thereafter.

LOUIS McLANE, sec'y of the treasury.

Interrogatories in relation to the bursting of steam

boilers. 1. Are you sequainted with the nature and use of

steam engines? In what employment have you been engaged? Were you present, and in what capacity, at the bursting of any steam boiler, or collapsing of a flue; or have you been made acquainted, by other means, with the facts in any such case? If so, in what case?

2. In that case, was she water in the boiler above the gauge cocks? If not, at what height, compared with the lower gauge cock?

3. If the boiler contained a flue, what was the differ-

ence between the height of its upper side and that of the lower gauge cock?
4. What was the weight per square inch on the safety

5. Had the safety valve ever been found rusted or sticking in the aperture, or was it so at the time?

6. Had that part of the boiler above the water ever

been heated to a red heat, or approaching thereto?

7. Was there any increstation or sediment found at the bottom of the boiler? If so, what was its thickness

and composition? 8. In what part was the boiler rent, and what was the

appearance and extent of the rent?

9. If the bursting happened to the boiler of a steam boat, was the boat under way, or at rest? Was the valve open? If so, how long before the accident? it opened by the engineer, or by pressure?

10. Was the piston going at its usual speed, or faster, or slower!

11. Had the firemen found any unusual difficulty in keeping up the motion of the engine previously to the bursting of the boiler; and, if so, how long before? 12. Do the iron boilers used in the western waters

generally accumulate a calcareous incrustation at the bottom? If so, have any or what means been used, with success, to prevent it?

13. Is it observed that when there is a sediment or incrustation on the bottom of the boiler, it requires more fire than usual to raise the steam; and how often is the sediment removed, and by what means!

14. Are any means used for preventing incrustation on the bottom of boilers; and, if so, what effect has

been observed?

15. Have any means been employed to prove steam boilers before they are used or alterwards, and what pressure has usually been applied to iron of a given thickness? Are the proofs made when the iron is cold or hot?

16. Is there any instrument employed to ascertain the temperature of the boiler above the water, or of the steam in the upper part of the boiler? It so, what is it?

17. What means are used to prevent the fire from the fire place and flue from extending to the boat?

18. Have you ever seen steam boilers heated to a red heat on the upper side? If so, is such a temperature regarded as a cause of exploding the boiler?

19. Have any means been used, in the construction of hoilers or fire places, to prevent the heating of the upper part of the boiler? If so, what are they?

20. How many persons were scalded by steam, and at what distance was each from the boiler? At what distance from the boiler was the steam supposed to be hot enough to scald? Was the current of steam from the rent in the boiler instantaneous, or did it continue for some time, and how long? What number of persons were wounded by the parts of the boiler or machinery, which were driven off by the explosion, and what position slid each of such persons occupy in the boat?

21. Have you ever observed the piston to move irregularly for a few minutes, or for a lew strokes, alternately faster or slower than its usual speed, without perceiving any change in the resistance to the paditles, or any other obvious cause for such irregularity; and, if so,

how it was accounted for?

22. To what immediate eause have you attributed the bursting of the steam boilers, which have come within your knowledge!

23. Are there any other facts within your knowledge, in relation to this subject, which appear to be important in the present inquiry? If so, please to state them.

THE FRENCH CHAMBER OF DEPUTIES. [This debate is published as a specimen of the course which debates sometimes take.]

We have already published some particulars of the storm which occurred in the French chamber of deputies on the 15th of August. A long discussion had taken place on the address to be presented to his majesty, and had turned in favor of the ministers. The amendments of gen. Lalayette relative to Italy and Poland had been rejected, and the sub-amendment of M. Bignon, and the

additional amendment of M. Felix Bodin, were under

discussion. After the keeper of the seals had spoken in favor of the amendments of M. Felix Bodin and M. de Tracy for that of M. Bignon, the president upon the unani-mous appeal of the chamber, declared the discus-sion closed, and was proceeding to put the amendment of the latter to the vote, when several members insisted that according to the rules of the chamber, the sub-amendment of M. Felix Bodin should be put first. The president, however, maintained the contrary, notwithstanding which, many members persisted in their demand that the sub-amendment should have the preeedence. In the midst of the confusion arising from this opposition, the president of the council rose to speak, but was immediately stopped by the ery of "order, order! The discussion is closed."

The president of the council. I demand to speak.

Voice on the left. The discussion is closed.
The president. The proof has not yet commenced.

The centre. Read the regulation, (great agitation.) M. Teste, with emphasis. Read the regulation your-self. No one can speak when the discussion is closed.

M. Guizot. I demand to speak upon the state of the

M. Marshal. The president ought to see that the regulation is enforced. He does not do so.
M. Guizot. When a minister demands to speak, he ought to be heard.

Voices at the extremities. He is too late; the debate

is closed.

M. M. Briqueville and Enuof address themselves energetically to the president of the council, who has ascended the tribune, where he is waiting calmly, till silence is established.

M. Briqueville. As a deputy, the president of the council has no right to speak, and he has no more right

as a minister. (The tumult increases.)

M. Dupin. The discussion is closed upon the merits of the case, that is clear; but the minister demands to be heard upon the state of the question. (Noise.)

M. Dupin and several other members spoke all at once, and with different intentions. "The regulation, read the regulation." (The disorder increases every minute.

M. Demarcay, (ascending the tribune, and address-ing himself to M. Casimir Perier.) If you will allow me, I am going to speak upon the reference of the re-

solution. The president, Gentlemen, you are unmindful of the dignity of the assembly. Listen to the speaker who is at

the tribune. But the discussion cannot be re-opened M. Duboia. upon the merits of the question.

M. Dupin. The president of the council does not

intend to speak upon the merits. Listen to him.

M. Roule de Fontaine. I maintain that a minister

ought always to be heard. The president. The president of the council has alone the right to speak, and I demand it from him,

(riolest tuniult.) M. Casimir Perier. I ask to be allowed to reply,

and I have a right to it. Voices at both extremities. We handred times the discussion is closed. We have told you a

The president. The president of the council demands to speak on behalf of the regulation.

mands to speak on behalf of the regulation.

M. Casimir Perier. I speak not on behalf of the regulation, but on behalf of the charter, and for the charter.

(New exclamations on the left.)

M. Oblilon Barrot. You invoke the charter against

M. Obblion Barrot. You invoke the charter against the regulation at another time, perh bys, you will invoke the regulation against the charter. (Immense uproar.) M. Casimir Perier. Lam a minister of the king, and I claim my right. (The tumult increases.) The president. This question is a very actious one, and ought to be discussed with calmness. (Hear, hear.)

M. Dupin. Read the charter, a minister has always a right to be heard.

The president. It is for the chamber to pronounce if the question shall be put. (The agitation subsides.)
M. Casimir Perier. It is impossible, under present

circumstances, in respecting the rights of the chamber, that I should not insist, upon the chamber's respecting the prerogatives of the king's ministers. I J demand in conformity with the terms of the charter— (Here the agitation is at its beight; eries are heard from all parts of the assembly. The voice of the pre-

aident is completely drowned in the shouts of "Go on, go on." "Silence, you have no right to speak." "You

M. Bavoux. You wish to violate the regulation in the name of the charter. (Violent agitation on the left, many members get on the benches, and protest with great energy.)

M. Casimir Perier. You cannot deprive me of the right of being heard. I am a minister of the king.
M. Odillon Barrot seconded the tribune, on the op-

posite side to that of M. Jollivet.

M. Casimir Perier, (turning to M. Odillon Barrot.)
Sir, this is a question of power.
M. Odillon Barrot. You exceed your powers.
M. Royer Collard. I wish to explain the precedents

of the chamber; the same difficulty has already arisen aeveral times. (The noise increaseth.)

Door-keepers. Silence, gentlemen.

Several voices. No, no, no silence.
M. Casimir Perier. I have a right to speak, and I insist on it. Clamour cannot move me. (Fresh uproar on the left.) I repeat again, I insist upon my right, not in virtue of the regulation, but of the charter. (No,

The deputies at both extremities rise on masse, and with so much energy, that a sort of panic reaches to the tribunes. The noise is heard out of doors, and gives rise to a great many odd conjectures.

M. Jousselin clambers up the tribune, through the midst of the deputies, and calls out, "The rights of the chamber must not be violated."

"This does not intimidate Voices at the extremities.

(Here the hon, member approached so near to M. Perier, and spoke with so much warmth, that several deputies thought he was going to seize him by the col-

M. C. Perier. Will they employ violence against mal

M. Propelle. This is scandalous never was any thing like it before.

The president having uselessly rung his bell, and see-

ing the impossibility of obtaining allence, covered himself, and said a few words which we could not hear. The chamber adjourned for an hour, in the midst of extreme agritation and expressions that we dare not re-

peat. At three quarters to 7 o'clock the chamber met a-

The president. It was with great regret that, after having used all the means in my power to obtain order naving uses at the means in my power to obtain order in the chamber, I was obliged to use the last resource allowed me. The chamber will feel that some delicate questions must arise, and will listen with calmness to the speakers, and decide as is their duty. Similar tumults will render a representative government impossible. They will convert this place into an arena for the display of angry passions, where only the interests of France ought to be attended to, and discussed with dignity. (Approbation.)

It is now past 7; the sitting onght not to A member. be continued.

The president. The sitting is adjourned till to-mor-

row The deputies continued to discuss among themselves,

and retired in the midst of great tumult and disorder.

The following are the amendments offered by general Lafavette.

"Amendment 1st.—The occupation of the states of Parms, Moderns, and Romagna by Austria, justly awak-ened the susceptibility of the nation. Though we cannot but consider this act of foreign invasion as a violation of the independence of these states, and of our tion of the independence of these states, and of our arowed principle of non-intervention, the evacuation of a part of these states, though tardy, proves that the voice of your majesty has at length been listened to. We have a right to expect that this retreat is final and complete. We take pleasure in hoping that the promises obtained by your majesty of a real amnesty, of the abolition of confuscation, and of genuine ameliorations in the administrative and judiciary systems will be faithfully performed; that the amnesty will be general and sincere; that all captives will be set free without exception; and that henceforth humanity will cease to mourn over the fate of men who, like ourselves, have been desirous of liberty; and that France will at all times show herself faithful to her policy, and to the present principle of her social existence.

"Amendment 2d .-- There is another sentiment which fills and agitates all our hearts—it is that which is excited by the unhappy fate of heroic Poland. France is grateby the unhappy tate of herois Foliand. France is grate-ful to your majesty for having ollered your mediation, and for having endeavored to induce other governments to join you in this great act of policy and humanity. Alone has this admirable nation contended against the rage of its enemies and the malevolence of its neigh bors. Let us then, alone, if necessary, fulfil towards it the duty we owe from our brotherhood, which is at the same time the duty of all Europe. Let us remonstrate with energy against those trammels that, contrary to the laws of nations, intercept our communications with it: and in order to render the mediation of your majesty more regular and efficacious, let us hasten to yield to the acclamations of France, and by receiving the Polish legation, acknowledge their glorious independence both in wight and in fact, acquired at the loss of the remains of that nable blood which has been so generously shed for us." The hon, general said that his amendment was dictated the non, general said that his amendment was dictated by the known sentiments of the population of Paris, by those of the national guards of France, of the army, and, in fact, of the whole kingdom. The only objection made to it was, that it amounted to a declaration of war, and would be a violation of neutrality; but this had been already committed by Prussia, in affording succour to Russia. The independence of Poland was not a new compact, for it had been guaranteed by the congress of Vienna, and it only remained for France to acknowledge it, and it would be secure. His motion presented no danger, for it was consistent with the rights of nations,

and in conformity with positive treaties.

# NILES' WEEKLY REGISTER.

FOURTH SERIES.] No. 10-Vet. V. BALTIMORE, NOV. 12, 1831. (VOL XLI, WHOLE No. 1.05)

THE PAST-THE PRESENT-FOR THE PUTURE.

EDITED, PRINTED AND PUBLISHED BY H. NILES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN ADVANCE.

The present sheet contains the Address to the people of the United States, by the convention of the friends of domestic industry, which met at New York on Preents of Comestic Insusary, which means a com-tine 36th Mit.—and, it being ordered by the permanent committee that the publication should first be made in that either that the publication should first be made in the state of the same of the Alexance has been been been forwarded to all the newspayers in New York to Friday's mail. The address would have issued several days sooner, but for the indisposition of the gentleman to whose revision and care the manuscript was commit-

ted, and horse the delay in our own publication of it.
Copies of the Address, and of the Journal of the proceedings of the convention, are now being packed—for the use of the members and others, as directed, and will

be immediately transmitted.

To what may be regarded as the efficied copy of the Address, is attached a list of all the members of the convention, (with their respective post offices), of whose attendance the secretaries were duly informed. list inserted in the last RESTATER was not entirely full,and some other errors or omissions occurred in that number, (without any fault in the person having charge of it), which might not have happened, if the editor hall been at home in season to have corrected or supplied them. But it is hoped that the pamphlet publications now made will be found as nearly accurate as the na-ture of the case will admit of. It is well known to eveey attending member—that the list of names, as originally published, was very incorrect, and that the secretaries had no regular opportunity to remove all the crcrea used as expute opportunity to remove at the cr-core. Some two or three names may appear wronglul-dy, and a few be smitted; but the principal secretary has given every name to which either the payment of the small contribution imposed, or the residence in New York, was attached. These were the only guides that had nad; and hence his cornectness that they might be sufficient.

It will be seen in the pamphlet copy of the Journal that references are made to the "Appendix," for the rethe PERMANENT COMMITTEE, will generally be given out for publication in the newspapers, that the circulation may be more prompt and extensives but they will be gathered and published so as to bind up with the Jourand and Address, to be followed by a body of Statistics. as soon as they can be prepared—and the whole will make a handsome volume for common reference and use;-which shall, with all promptitude, be transmitted to the members of the convention, and to others, as may be thought expedient; especially to distanguished official gentlemen of the national and state governments, members of congress, &c.

As one of the leading objects of the Statistics will be to demonstrate the principles and facts uttered in the Address, it is exceedingly desirable that the several committees should make as early reports as the nature of the important matters submitted to them will allow. Both supportant matters numated to them will allow. Both principle and face is with us, and it is not necessary that, on our part, any thing should be left to apeculation—as to the right or expediency of the Answitzan Starzux. The Aildrees claims and will receive an attentive persual. We have also published the appeches of Messra.

Tust. We now and plotted the spectres of Jesus, Ellissorth and Boson, concerning fraulis up the revenue—for they are plain and practical expositions of very important things. There are reports of several other speeches which we shall probably copy.

The cummittees, and other members of the convention, are respectfully informed, that communications, on the business of the convention, may be forwarded to Heze-kinh Wiles, chairman of the permenent committee, Bat-timere, by mad-the postage on which will be charged by him to the general fund.

LATE FOREIGN NEWS.

Arrivals at New York bring Liverpool dates to the 1st October, inclusive.

RNGLAND.

The reform bill has passed the house of commons, and is now pending in the house of lords, where doubts exist of its passage. All classes in England are petitioning for its success.

PRANCE.

The excitement in Paris has subsided, and notwithstanding the fall of Warsaw, the ministers still main-tain a majority. The chambers have granted them 18,000,000 francs to be advanced by them on leans in aid of commerce, manufactures and internal improve-

POLAND.

The Polish army did not surrender on the fall of Warsaw; are now at Kunow under gen. Roziski, who has assued a most animated proclamation to the people of Poland, inviting them to rully. The efficient force of the Polas is between 50 and 50,000 men, determined on resistance. The loss of the Russians in the assault on Warsaw is rated at from 12, to 20,000, that of the Poles The cholera about half the number of their assailants. still raged in many parts.

BELGIUM.

A treaty between Holland and Belgium was to be signed on the 10th Oct. Holland is to give up Luxembourg for a consideration, which is to be paid by Austria and Prussia. Leopold was making a tour.

Don Miguel was glutting his vengeance by daily executions; 44 persons had been shot, and about 1,000 concutions; 44 persons that been shot, and about 1,000 con-demned to death. The crews of some of the Portuguese men of war had declared for Donna Maria. In the is-land of Madeira great excitement prevailed, and the foreign merchants were in great danger and alarm,

SPAIN.

This country is in a very feverish condition, and several persons had been arrested.

SWITZERLAND.

The diet of Basle had required full and entire amnes-ty for the persons proscribed in January last.

GREECE.

At the request of the president, Capo d'Istrias, the Russian fleet pursued the Greek fleet into Poros, where it had been burnt by admiral Misulas, to prevent its falling into the hands of the Russians. The Russians pillaged Poros twenty-four hours after it surrendered.

Monocco.

An insurrection took place in Morocco in the latter end of August-the emperor was forced to retire to Maguines, where he was shut up by the revolters, who refuse to negotiate with him.

FROM HAMBURG.

An arrival at Philadelphia brings dates from Warsaw to the 13th September. The grand dake Michael, on entering Warsaw, addressed the citizens, stating, that all requests from the people were to be made to him, direct. He took up his residence in the royal palace, where, it is also said, field marshal Paskewitsch will take up his residence. Praga was also occupied by Russian troops. A cessation of hostil-ties had been entered into frongs. A cessation of management of the emperor of Russia can be received. The Polish army were still at Modlin, under the command of gen. Ribinski, gen. Ma-

lakowski having resigned the chef command.

The counsellor of state, Engel, who had been commissioned by the emperor Nicholas to organize a provisional government in Poland, was expected to arrive in

Warsaw on the 13th of September.

dence of gen. Skrzynecki, but he is supposed to be in

the neighborhood of Cracow, in Gallieia. General Wilt had been appointed governor of Warsaw, and baran Korff city commandant. The governor issued a proclamation, directing the inhabitants to deposit all acms in their possession in the arsenal, within 48 hours, under the penalty of being tried and punished by a court martial. The Warsaw Gezette of the 10th of a court martial. The Warsaw treathers the 1901 of September, re-publishes the proclamation of the emperor of the 29th of July. There was, on the 18th of September, 60 Russian general in Warsaw. The municipal council still continue to perform their official duries. On the night of the 10th, between 11 and 12 of clock,

the criminals imprisoned in the inquisition house, called the powder house, attempted to execute a plan they had formed to liberate themselves. The police guard stanormed to morrate themselves. The police guard sta-tioned there, assisted by many citizens of the instonal guard, made great exertions in overcoming the prison-ers. Some shots were fired, which wounded à and kill-

ed 1 prisoner. It is expected that bank notes will continue in circu-

The price of the hypothaques (public funds) has advanced, and are now selling again at 86ft, for some months past no silver coin has been seen in Warsaw;

much is again in circulation. For the week past, the cholera had demanded but few sacrifices-many soldiers of the Polish army, fully eured, left the hospitals on the 9th. But subsequently several persons were attacked with this disease. In all the military hospitals, the wives of the citizens, and the inspectors still render the most active assistance. great many Polish families are still at Krahan; the communication between Gallicia and Krahan will be again opened; a great number of the wounded have been at Krzeszowie during the summer.

A great part of the barrieades and pallisades were de-stroyed on Thursday. Forty-eight houses were burned in the suburbs of Warsaw during the battle of Tuesday and Wednesday.

NEW YORK CONVENTION.

Tresday, November 1. The report of the committee on Irando on the revenue having been read—
Mr. Eltraorth, of New York, moved to recommit the report which had just been read, as the committee who made it were promised a communication of very important results from the custom house. The manufacturers, he observed, ought to know that they were suffering under the effects of a great evil of which they were little aware. He had retained his seat until now, hoping that some other member of the convention would introduce the subject, but as no one had done so, he felt it his duty to speak. He had been a merchant in this city for these last sixteen years, and chiefly engaged in the sale of cloths, and his experience had taught him, that the manufacturers of cloths here actually enjoyed a protection of no more than from forty to forty-five per cent."—a lact which arose from the constant and flogrant violation of the revenue laws. A foreigner arriving on our shores needed no other introduction than an invoice of goods to the amount of two or three thousand pounds sterling, to obtain for him at once the aid of a powersecrang, to obtain for min at once the and of a power-ful combination existing here, all of whom would give him every possible faculty to get his money and go off with it, after having grounly defrauded the government of the sountry. This difficulty arose from the imuse quantities of cloths invoiced, as having cost from mease quantities to six and eight pence, or six and nine pence six shillings to six and eight pence, or six and nine pence sterling a yard, when in fact they had cost from nine to ten shillings. All the merchants were perfectly aware of this. Mr. E. said, he had lately been called upon by the collector to examine an invoice of twenty bales of goods, all entered at the rate of six shillings and eight pence, or six and ten pence; and before he had examined ten pieces, he came to cloths worth eight and nine and ten shillings. What was the effect of such false

There is no positive intelligence of the present resi- jentries? The tariff law declared that goods costing aix and eight pence abroad, should pay a duty of 67% cents a yard-while those costing nine shillings, must pay a yard-wante \$1.70 cents. This difference caused the government to lose no less than \$400 on every one of those bales. It was thus that our manufacturers were deceived and be-They would have a sample of English eloth trayed. put into their hands, and be told the price which it cost. He would say, I can make this article at a profit, and he tte would asy, I can make this article at a profit, and he would threupon go and invest capital in producing the goods. He would then bring them into market, and what did he meet? A market overflowing with goods worth 9 shillings sterling, selling at the price at which such goods can be afforded when paying duty on airs and eight pence, and the reason was that not one piece is one bundred had paid the duty charged upon it by law. If grullemen asked how could such a state of this

If gentlemen asked how could such a state of things exist and an remeily be applied? the answer was that the state of public feeling was so highly wrought up against the American manufacturer, and in favor of the against the American manufacturer, and in favor of the foreign agents, and their importations, that the collector though nowise wanting in honesty, diligence, or zetal, was defeated in every sitempt to stay the evd. He had been so gooded and harrassed by public and private at-tacks, that he land been actually disabled from patting the laws of the country in force. This surely was wrong, laws of the country in force. This surely was wrong, and the state of public feeling was an erroneous one. The laws were suffered to be daily disobeyed—and the foreign agent, whose interests were at home, and wh regarded neither God nor man, provided he could only get his goods through the custom house, hughed at the nues of any morse obligation to restrain num. He did not speak of respeciable and upright English or French merchants; far from it, they grouned with our own citizens under the oppression of this system of fraud and wickellness; and had actually been drives from the ground of competition and obliged to abandon the impor-tation of this species of goods. He addressed himself to manufacturers who were suffering under the gas wings of a a cret canker worm that was eating out the vitals of their profits. They were told that the English could afford to seil cloths of the same value as chesp us they could-and the selling price was compared with the quality to prove it. Very true; but not if the lawfol duties were paid on the goods. The auction is atom was the great eights of de-struction to American industry by which these fromhuleus proceedings were effected. Until very lately it was the practice to send one bale in every twenty to the custom house to be examined, and the remaining nineteen on the same day to the auction store—to be scattered, before next morning to all the winds, and without any marks by which they could be recognised and traced. In the mean while the other bale lay in some cases three or six months before it was examined. goods were then found to have been undercharged, and what was the consequence? the only remedy was that, that one bale was forleited, while the government had lost \$400 of revenue on each bule, and the manufacturers so much of protection.

Mr. E. went into a further statement in relation to the pernicious effects of the auction system. It was the means of pressing in upon the market all the overstock of Europe. When the foreign manufacturer had sold 80 per cent, of his goods and had the rest lying on his hands, he sent the balance here-this refuse and surplus was received by the great auction engine, and disposed of at any price it might bring—in addition to this, the sur-plus of what had been sent into foreign markets by sieculators, after laying there unsold, came here and was crammed through the auction into our market. ol goods that had lain long in Mexico, were re-shipped and sold here for any thing, no matter how little.

It was very true that for some months back the collector had been more rigid in his enforcement of the law; the public sentiment was relaxing. It had been ascertained that the trauds were so gross that he had been induced to have all the bales examined, instead of one, of twenty; and the consequence was, that in six months, 2,400 pieces of broadcloth, had been found uniferenared, by false invoices. Let then the news-papers which have so long tectned with abuse, cease to ory "there are no frauda;—there are no frauda." To one individual in this city, who had faithfully exposed

<sup>\*</sup>In explanation he said be had not reference to the effect of the duty on wool. When that was considered, the present tariff did not operate as a protection to the manufacturer of twenty-five per cent.

this iniquity until be had been publicly denounced, the cloth costing 9s. in England with the charges added, is manufacturers of this country owed a deep debt of thanks. (Applause.) Let those genlemen calculate the difference of duty received on these 2,400 pieces, and they would find that within six months it amounted to the sum \$48,000. Manufacturers, listen! cried Mr. E. in six months you would have been defrauded of your protection to the amount of forty-eight thousand dollars. (Applause.) With such a state of facts openly proved, it was idle to sit and spend time in talking about raising or lowering the tariff. The tariff was almost a nullity. In the face of all its provisions the manufacturer did not in reality enjoy a protection of more than forty or forty-five per cent. The owners of more than half of these five per cent. The owners of more than half of these twenty-fourth handred pieces said not a word about the matter, but quiedly paid the duty. But laid they not, a tew hours before, sworn that the valuation of their invoices was just and true! And what could gentlemen make of this but perjury? A few hours after taking the said of the perium of the taken wither walked no make of this but perjury? A few hours after taking the solemn oath required by the law, they waked up to the custom house and paid an additional duty of a dollar a syard. Did any gentlemen equire why this thing was not prosecuted to constitute why the forfested? The answer was the same. The same mistaken current of public opinion entered and influenced the jury, but which pressed duom charge men thought the jury-box which prevailed upon change, men thought the law rigorous and severe—they considered it hard that a man should forfeit a large amount of property for a that a fine shows over a sage amount of property of the received into a court of justice, although 500 packages had been fraudiently entered within its months. If the merchant prove by the math of a single witness, that the cloth coat only 6.8 in England, it was in vain the prosecutor brought fifty com-petent witnesses to swear that it was worth 10s. a yard. A gentleman who was a perfect judge of cloths had on a jury in a case of this kind, a perfectly clear and plain case of fraud—seven jurors were so convinced that they case of fraud-seven jurors were so convinced that they thought it would not be necessary to leave the box, but on retiring to the jury room, they discovered that the other five were against them, and though they return the other five were against them, and though they return the control to mained 36 hours together they could not agree. The merchant had produced the oath of his clerk in England, that the cloth had cost but 6-8 a yard. This occurred in a neighboring city.

If such testimony was to be admitted, there was an end of the tariff. Oaths of that kind could be purchased in England at 6d. a piece, by the cart load. In a case where he had been called to testify as to the value of the goods, the cause had been taken to court and adjourned from term to term, to allow time for the merchant to get more English oaths that the cloth cost but 62. 8d. Mr. E. said it more talent and energy were not brought to the aid of the government in enforcing the law, the tariff would become an absolute nullity. best legal talents in the country ought to be employed. It had not been a great while since a merchant told his neighbor what very clieap cloth he had purchased. He she wed the cloth which he had purchased at \$4 50 a yard. The question immediately arose, what duty that cloth had paid! for from its quality it was clear, that if the duty due by law had been paid, the importer could have made no profit on the goods. A number of gentlemen determined to investigate this case. They took the marks of the cloth; they knew the name of the importer, and they enquired at the custom house what the cloth had cost? The answer was 7 shillings sterling. They re-ported these facts to the collector; in consequence of which he had been induced to substitute a stronger en-The cloth was so cheap that an Albany merquiry. Inc citill was so cheap that an Alliany mer-chant had paid on the spot one dollar a yard more for it, and had doubtless sold it again at a handsome profit. The history of that piece of cloth he believed fully to be the true history of thousands and tens of thousands annually

imported into this country.

Mr. Brown of Boston-I rise Mr. President to correct the statement of the respectable gentleman who last spoke. He fixed the rate of protection to the manufacturer at forty-five per cent. Now as that gentleman has shewn that 7-8ths of the cloths imported into New was meet that 7-stas of the cloths imported into New York, are for foreign account, and that large quantities of them costing from 7s. 6d. to 12s. pass this custom huse paying only 67½ cents per yard duty, then, if a

entered by paying a duty of 673 cents, it will be percerted that the protection is intrance of forty-ne per cent, and on higher priced cloths it will not be 25 per cent. Within the last five or six months, he knew, there had been imported a million and a half of dollars in value of broadcloth alone, by four of these foreign concerns, or by consignees of foreign houses. A vast proportion of these were entered as costing 6s. 9d, and were subject to a duty of 674 cents. If these goods cost, including charges, 9s, and paid a duty of only 673 cents, it was obvious that the American cloths could not come into competition. cents, it was ourious that the American circus could not come into competition with them. The actual amount of protection afforded by the tariff would be nothing like forty-five per cent.—it would not be above 25 per cent.—the duty paid by the manufacturer on coarse wool added to his burthens. He was altogether in favor of the duties on wool, and would on no account have them reduced, he would not wish even the duty on coarse wool to be repealed, because the farmers thought it would interfere with their protection. The present duty on wool was mposed, he thought in the present duty on wool was mposed, he thought in promoted the farming interest, and in the present specific to the manufacturers. The wool now grown in the country was almost equal in value to the great ofference of the present of the pr ton product of the south; and in five years, would infinitely exceed it.

But it was necessary to the encouragement of the wool-grower that the manufacturer should succeed. If manufacturing became a losing business, there would be no demand for wool. The present amount of protec-tion afforded to the woollen manufacturer was counterbalanced by the duty on imported wool. I could manubalanced by the duly on imported wool. 1 could manufacture to more advantage, said Mr. Idrowa, under the tariff of 1816, than under that of 1828; for the duly on wool was then lower, and that then paid on cloths was a better protection. The law of 1830 was emaked to carry into effect the provisions of the law of 1828. It provided very clearly that the goods entered with intent to defend the provisions of the law of 1828. But the to defend the revenue should be forfeited. But the courts had allowed testimony to be introduced as to the cost of the goods at the place whence imported; and this testimony was held to do away the fraudulent intent. He knew of no remedy for this but to adhere to the laws. The law of 1828 says, that the duty shall be estimated "upon the true market value of the cloth in the country where it is made;" the cost of the cloth to the importer where it is made; the cost of the sound of the importer had nothing to do with it. Yet, it was decided, that the evidence of the cloth, costing no more than the sum at which it was invoiced, did away the fraudulent intent. which is was invoiced, and away the fraudiment intent. The two or laree thousand pieces of cloth, which, upon the late examination in this city, had been found to be undervalued, had not been forfeited. The importers were suffered to take them away upon the payment of the same duties which homest men paid at first. It apthe same course which nonest men paid at first. It appears to me, said Mr. Brown, that no discretionary power is left with the collector. He is bound to proceed against the goods as forfeited. As long as the attempt to defraud goes unpunished, the frauds will constitute the same and the same and the same attempt to defraud goes unpunished, the frauds will constitute the same attempt to defraud goes unpunished. tinne to be repeated.

time to be repeated.

There had grown up a practice to prevent the woolgrower and manufacturer receiving the protection intended to be given to them by congress. Mr. Sceretary
Rinsis had misconceived the law, which expressly made
the duty on cloths an ad valorem duty, whereas it was
now assessed as a specific duty, thereby decreasing the
duty ten per cent. less than was intended by the law.
It was foreseen at one the very defined these which have one
control. Your committee, however, were uswilling to curred. Your committee, however, were unwilling to disturb the law of 1828, believing that the woollen maunstaturers will find adequate protection if the provisions of that law were duly enforced. An impetus has been given to the raising of sheep, by the protection afforded to wool, and the competition would, in this case,

Mr. Core here enquired what was the proper remedy for the defects in the law: would forfeiture, or a

uy nor the detects in the law; would foresture, or a valuation of the goods here, best serve to prevent frauda?

Mr. Brown replied that a valuation here, would effectually remedy the evil. But the committee had not recommended that course, because it was not the feeling

of the convention to involve congress in a discussion of the law referred to the market value, and not to the to the convention to involve congress in a discussion of the whole tariff system, as such a proposition would necessarily do. He also sisted, that the present rate of duties, would be found too high, if applied to the value of the goods here. They would amount to a prohibition. For his own part, he would not oppose a prohibitory duty. He believed the country would be the gainer by h. The duty on many articles which cohered into manufactures, was already prohibitory: and he in-stanced chemicals, which although they might seem to some a small branch of manulacture, it was not so; they were a very important branch, which had incidentally grown up, and had been called into existence by the larger and more important manufactures, requiring the importations of near ten thousand tons of cruile brimstone, and probably two thousand tons of salt petre. The soils were made from these stricles, and were used in immense quantities, in the bleaching of cotton goods, and in calico printing. The duty on these saids of the in immense quantities, in the occasing of south general and in califor printing. The duty on these acids is four ecits per pound, and the price they were sold at was four ceits per pound, and the price they were sold at was four ceits per pounds and the sold name, the country had been benefitted by prohibition—where the country had been prepared to recommend probabition, and as the dual and the base to be breamed on stability if the adjustice. ties would have to be lessened on cloths if the valuation was in the port of importation, it would involve the whole question of the tariff, which he had considered would be inexpedient at this time—the present law should be enforced, which in Mr. Brown's opinion, would answer the purpose.

Mr. Coxo then asked whether the city of New York was the only place where the revenue laws were evad-To this, Mr. Brown replied that there had occurred a few cases in Baltimore; one case wherein cloths appraised at 9s, were entered at 6s. 9d. was lately before the courts there; and, as the jury did not agree, it was not yet decided. In Boston there had been but very few cases. The goods imported there were sub-jected to a rigid examination. The quantity froudulent-ly entered there, did not amount probably to five hunof the table of the said of the Philadelphia custom the same might be said of the Philadelphia custom the same might be said of the Finiadelphia custom house. By far the greater portion of all the woollen goods imported were brought into New York. One importer here sold \$200,000 worth of cloths in one year. This same agent entered 80,000 yards of cloth in six months; all but 6,000 of which were invoiced at 6s. 9th. and paid a duty of but 673 cents. He knew something of the kind of goods sold by this agent to the dealers in Boston. They were of a kind which cost 92 in England; and they were sold here at from 3\frac{1}{2} to 4\frac{1}{2} dollars a yard by the agent. He had examined them in the stores of the dealers there, and they had told him they had bought these cheap cloths of the house alluded to. it was a fact well assertained that these goods were sold at these prices, and had been entered under the one dollar minimum.

dollar mamman.
I he collector of this port had diligently sought to find out these trauds. He had, (Mr. B. believed), done all that he could do.
He has adopted the plan of sending every bale of cloth to the store for examination; and, if pass hereafter, it must be the fault of the appraiser. But of what saveing was it to the country of these was the same of the sa of what service was it to the country if they were stopof what service was it to the country is usey were stop-ped by the appraisers, if the law was not after all put in force. If the decision to which he had alluded, which he believed was before judge Betts, were to obtain, evidence of the cost was to do away fraudulent intent. Such to by the seller of goods abroad. Suppose, said Mr. B. a manufacturer in England has four hundred pieces of a manufacturer in England has four hundred pieces of cloths, of an equal number of yards, all worth 9s, sternings, a purchaser might go to him and say, I will buy these cloth provided you will sell me two hundred pieces at 6s, 9d, and I will give you lits. 3d, for the other two hundred pieces. Now, these cloths need not be shipped in the same vessel, or the 11s, 3d, cloths need not be shipped to this country at all. The scher 900 pieces then are shipped for the scher 900 pieces then are shipped to the country at all. The other 200 pieces then are shipped here as having cost 6s. our as present such are simpled acre as manage on or. 94, and it judge Betts' decision be correct, they would not be inble to the penalty of the law of 1830, for a sertificate sould be easily procured on oath, that the price paid for them was only 6e, 9a, Mr. Brown and

cost of the cloth. If judge Betts' decision was correct, then every man who imported cloth into this country would attempt fraud, because if he should succeed, he would save one dollar per yard duty on the cloths, and if not he would only be where he would have been had he not attempted to defraud the revenue. There were many of the dealers here, who were perfectly well ac-quainted with the value of cloths, and if the standard of quanted with the value of caons, and a the seamants of value taken by the appraisers agreed with that taken by the dealers, there would be no dauger of further evasions by talse invoices. But the remedy, to be effectual, must extend to the forfeiture of all the goods which were attempted to be entered at a false valuation.

Mr. Coxe, hegged leave to ask one more question. Was the duty on cottens susceptible of similar evasions? Mr. Brown answered that all cottons costing less than thirty-five cents a yard, were taken and deemed to have cost thirty-five cents a yard. This was, therefore, the minimum valuation on which the duty was estimat-It you suppose one minimum of 10, another of 20, erl. and a third of 30 cents, you then have a seem in which rice any or extens would be susceptime of the same eva-sions to which the duty on woolkens is now subject. There was a perpetial aftempt always to press to a lower minimum the cloths which ought to be entired at a higher minimum. The one dollar minimum was objected to most strennously, at the time the law of objected to most streamously, at the time the tax of the layer of the had before stated, the results expected from it had been that nerore states, the results expected from a nad occur realized. The Harrisburg convention recommended one minimum of 50 cents, and another of \$2.50. The lowest minimum, or that of 50 cents, was thus recommended from a regard to the interests of our southern brethren, who used many coarse woollens, and to this he had no objection

## ADDRESS OF THE NEW YORK CONVENTION. Fellow-citizens-

A numerous delegation from several states in the union have convened in the city of New York representing great national interests which they are anxious, by the most efficient but peaceable means, to defemil and sup-mort. In addressing themselves to the people of the United States, they invoke their candid attention to-several topics of great national importance, without assuming any authority ultimately to deede them; conscious that their reasonings and opinions can have, and ought to have, no other influence or lorce than belongs to their truth and soundness.

A system of laws imposing duties for the encouragement and protection of domestic industry, upon the faith of which a large portion of the people of this country have invested their property and given a new direction to their labor, and with a continuance of which are completely identified all their hopes of maintenance for theirselves and their families, has been recently denounced as "distinguished by every characteristic which may define a tyranny, the most odious," The entire abolition of this system, vitally involving the interests of larmers, mechanics, manufacturers, merchants and all the laboring classes, has been demanded in a tone that offers no hope of condition or compromise. A submission to such a demand, with or without the consent of those who must be the victims, would be marked by such scenes of ruin and despair, as no one, not blinded by the strongest passions of our nature, could witness without con nunction.

We aildress ourselves, then, to the enlightened patriotists of our fellow enizens in every part of the union; and we carnestly extreat them to accompany us in the camination which we propose to make of the arguments and statements recently put forth; appealing to their clear discernment of truth, their high sense of duty and their calm moral courage to avert the evils that now seem to threaten the prosperity and peace of the country.

Of these topics, the first in order and the gravest in character, respects the constitutional power of congress to pass the laws, which are the subject of complaint.

As a constitutional question, the inquiry is not when and that, in laying such duties, it may so arrange them ther the laws are wise or unwise, whether in their ope- as incidentally to give protection to manufactures. They rations they are always equal, or sometimes unequal, or whether individuals may not think them so wide a departure from a jour administration of the powers of the government as to be, in an indefinite and loose sense, inconsistent with the spirit of the constitution. The true and real question is, do they exceed the power of the law-giver; and do they, for that reason, lail to be

obligatory?
We dissent from the notion that laws plainly unconstitutional may be yet so tramed as to escape the animadversion of courts of law. Il unconstitutional, their true character will either appear on their face or may be made to appear by stating the facts which tasten that character unon them. And if the motives, which are sunposed to have influenced congress in their enactment are not facts which may be properly inquired into to give them this character, the reason is, not that congress has executed an unlawful power or veiled an un-lawful purpose under a general law, but that the general power being given to congress, to pass such laws, the purpose of the law, like its occasion, its direction, or may other part of its clisracter, is constitutionally re-

ferred, to the discretion of congress.

The present constitution has been in operation ( with a success, not more gratifying to ourselves than surpris-ing to the rest of the world) for forty-two years. Twentye different congresses, regularly elected and appointed by the people, and their agents, and the state legislatures, have successively assembled to enset laws under its authority. Seven distinguished individuals have been called by the voice of the country to the clair of the chef magiatrey, all holding and some of them, on various occasions, having exercised the hower of group an egative to such set of congress as, in their opinion, transcended the just hant of legislatine authority. Don't provide the contract of the country of ing the same period a supreme judicul tribunal has ex-lated, not less distinguished for pursy and talent, than for dignity and importance, whose high function it properly is to pronounce its solemn judgment on the con-stitutional extent of the power of congress whenever any exercise of that power is complained of and the any exercise of that power is complained of and the case is brought duly before it. Most of these successive on gresses have passed laws similar in character, in design, and in effect, to the acts now complained of; and all of them have unequivocally sauctioned their princi-All these chief magistrates, in like manner, have, out sloubt or hesitation, recognised the existence of the power, and no question of its validity has been raised in the judicial tribunals. - It is under this weight of authority, and this length of practice in its favor, and after the investment, upon the laith of it, of a capital probably amounting to two hundred and firty millions of dollars, that a disposition has now sprung up to deny the power altogether, and to propose, if its exercise be per isted in, a resort to such means of redress as three-ten the union.

We cannot but persuade ourselves that before the American people abandon a system of laws, now of long continuance, passed at different times by the constituted authorities with the full approbation of the constructed authorizates with the full approbation of the whole country; and especially, before they break up their government and return to a state of anarchy, on the ground that such laws are unconstitutional, they will give 1: that question a very careful and serious considera-

Before proceeding to express the general views enter-taked on this important subject by the members of this convention, it is not altogether uninteresting to inquire, how far admissions or concessions have been maile by those who deny the existence of the power, notwith-standing the general and positive terms, in which that denial is expressed.

It seems to us, indeed, that the plain object of the constitution, and the atrong reason of the case, have driven those who deny the power, even upon their own mistaken view of its source, into the necessity of making admissions which, when made, leave no ground making admissions when, when make, scattering grounds. They deay that congress can rightfully lay duties for the sole, or the main purpose, of encouraging manufactures; but they admit, at the same time, that congress may lay duties for revenue,

admit, two, that congress may lay duties not designed for revenue, but designed to countervall the injurious regulations of foreign powers. Are not these concessions meansistent with the main proposition? How can it be lunger denied, that congress may lay duties for protection, after it is conceded that it may arrange duties with that view? It cannot be true that the power was given for revenue only, and that it ought to be strictly confi to that object, and true, also, that, in selecting subjects of duties, regard may be laid to a different object.

An individual in society is the consumer of a particuhar loreign article; he fonds it heavily taxed by duices, while other settieles, equally capable of producing revenue, are untaxed. Does it make any difference to render, are untaxed. Does it make any difference to him, whether the article necessary to him was selzed on, as the main purpose of the law, with the sole object of protection, or whether it was only incidentally selected, dates consumed by his neighbors, though equally fit subjects for a tax for revenue, are passed over in this incidental arrangement? Will not every ingenuous mind at once agree that if the power to lay duties was con-ferred on congress for the sole purpose of revenue, it is a violation of its trust to mingle any other purpose with that, as much as it would be to substitute an entire new that, as much as it would be to summand an entire new purpose for it? Congress cannot look with one glonce to revenue, and the off er to protection, it the constitution limit dispower to revenue alone. When it is thus said that protection is a fit object to be regarded incidentally, in laying duties, but that the general purpose must still be revenue, who shall inform us how much, in the motives of congress, must be the main purpose of revenue, and how much may be the incidental purpose of pro-tection? How high may the incidental object rise, and the law be yet constitutional; or at what point will it have approached so near the main, or the only object of the duty, as to reinler the law void! It may be answered, possibly, that the admission goes no farther than this; that when congress has already resolved to lay duies, then it may, as a subsequent resolution, resolve to lay them, on such a selection of articles as shall best favor manufactures. But would not such a subsequent resolution be sholly aside from the exercise of a mere revenue power? Would it not be a clear imposition of duties for protection? And might it not lead, practically, to the same consequences, since, under this admitted power of selection and arrangement, the whole bur-den of the government might be laid with a direct view The other admission, that is, the congress may lay

duties to countervait the commercial regulations of other states, are made to us still more decisive. This concedes, at once, that the power to lay duties is not a more revenue power; for here is one admitted case, in which it may properly be exercised, which has no relation to re-Yet this is no particular or specified power. The constitution no more points out this, as being a proand constantion no more points out this, as ocing a pro-per object, than it points out protection. If it be pro-vided for at all, it is because it is embraced in the gene-ral words of the grast. It is there, or it is no where, Lives, laying duties to countervail the regulations of other states, are regolations of trade. They are not only like laws of protection, but they are, emphatically, themselves laws of protection. They have usually no other end or design than to protect the manufactures or other interests of our own estizens from the effect of unequal competition or monepoly on the part of other nations. Congress, then, upon this admission, may lay duties with the single object of encouraging certain descriptions of domestic employment or industry; and it remains for those who concelle this, and yet deny the general power, to show how it is, that congress has power, in its discretion, to protect same classes of industry and no power, in the same discretion and by the same means, to protect others. But the admission goes still lurther. It not only furnishes an analogy for the case in argument, but meets and covers that identical case. The laws so much opposed, and whose constitutional validity is so loudly denied, are themselves no other than so many acts passed to countervail the injurious commercial regu-

lations of foreign states.

The United States have not been the first to reject the theory of free traile. They have not introduced into the world new modes of legislation. They have not originated a system of protection; far otherwise. At the very moment they had succeeded to throw off their colonial bondage and had established their own independence they tound, that their condition, so far as respected commerce, agriculture and manufactures, was but partially bettered by the change, because they found the ports of the leasing states of Europe shut against their abips, and against their products. They offered free trade to all nations; but the nations, with one secord, rejected their offer. The subjects of other states eeru, rejected their ouer. I me ambjects of other states were protected, as against them, by the laws of other states; but they were protected against nobody. It is undeniably true, that this condition of things was one of undeniably true, that this condition of things was one of the very esuses which led to the adoption of the present government. It is unquestionable, as matter of historic record, that one strong motive for forming and estab-lishing the present constitution was to organise a vernment that should possess the power of counterval-ing these foreign regulations by adequate measures and thereby protecting the labor and industry of the people of the country. Countervalling laws were accordingly passed at the very first session of the first congress; others have been passed at various times since; one and all, they partake of the same character; they are all countervailing laws rendered expedient and necessary countervailing laws rendered expedient and necessary by the policy pursued by other nations. The republic Is now composed of thirteen millions of people; all the principal products of eight or nine of these thirteen millions are, at this moment, shut out from the great market of consemption abroad, either by absolute prohibitions or by high duties; and it is to meet this state of things, it is to countervail these foreign regulations, so injuryous to us, it is to place ourselves on some footing of equality, it is to rescue the labor of the American people from an inferiority, a subjection, at once dishonors-ble and burdensome, at once degrading to its character are any surrensome, at once segrating to its character while it increases its total, that those very laws were originally passed, have all along continued, and now exist. They are, therefore, countervailing laws and no other, in every just sense of these terms.

Having made these remarks on what is conceded by those who deny the power of congress to protect manufactures, and on the effect of that concession, we proceed to present the view which this meeting entertains on the general constitutional question.

tains on the general constitutional question.

By the constitution congress has power, "to lay and collect taxes, duties, imposts and excises." It has powerly the constitution of the collect taxes, duties, to the collect taxes, duties, duti

correct usacs, duties, imposts and excises." It has now-er also "to regulate commerce with foreign nations." The power to lay duties is accompanied by one ex-press qualification or limitation, which is, "that all duties shall be uniform throughout the United States." The power to regulate commerce has its limitation also, which is, that no regulation of commerce shall give preference to the ports of one state over those of another; and there is another limitation, which may apply to both clauses, namely, that no export duty shall ever be

Here then is a grant of power in broad and general terms, but with certain specific limitations, carefully ex-pressed. But neither of these limitations applies, in any manner, to that exercise of the power which is now under consideration. Neither of them, nor any other clause or word in the whole constitution, manifests the elaute or word in the whole constitution, manness the slightest intention to restrain the words so as to pro-libit congress from laying duties for protection. The attempt is nothing less than to add a restriction which attempt is nothing less than to add a restriction which the constitution has omitted. Who has authority to add this? If other restrictions had been intended they would have been expressed. When the business of li-

The United States have not been the first to reject the the terms, either to restrain or enlarge their import. Congress, in its discretion, is to lay duties and to regulate trade for all the objects and jurposes for which duties are ordinarily laid and trade ordinarily regulated. If such a thing was never before heard of as laying duties such a thing was never before heard of as laying duties and regulating trade with a view to encourage manufactures, then it might be said that the convention did not contemplate such an exercise of the power by congress. But it was perfectly known to the convention and to the people of this country, that one leading object with all governments, in laying duties and regulations. ing trade, was, and for a long time had been, the en-couragement of manufactures. This was emphatically true of England whose language the convention spoke true of England whose language ric convention spoke and whose legal and legislative phreseology was theirs also. Every leading state of Europe was, at that mo-ment, regulating its commerce for perposes of this na-ture. Such a purpose, indeed, had been long sought to be accomplished by some of the states themselves, by be accomplished by some of the states themselves, by their own regulations of trade. Massachusetts had at-tempted it, New York had attempted it, Virginia had attempted it, and we believe other states had done the same. How ineffectual all their attempts were, for want of union and a general system, was soon seen, and want or union and a general system, was soon seen, some citel, by the whole country, but they shew to what ends, and to what uses the power to regulate trade was under-action to extend. But not only in other nations, and in the states, before the adoption of the present constitu-tion, as we shall have occasion to show hereafter, but in the United States since, and in the administration of this very constitution, regulations of trade have been made, in almost innumerable instances, with no view to revenue, but with a sole and exclusive regard to protection.

If our understanding of the constitution be not accord-If our understanding of the constitution be not according to its true meaning, that instrument has been grossly violated from the very beginning. What are all the registry acts, what the bounties on the fisherics, but so many avowell efforts to protect American industry, under the power of regulating trade? On what foundation, does the whole system of the coasting trade stand? The American ship builder and ship owner has enjoyed, from the first, and we think properly, not only protection in that trade, but the monopoly of it. He shuts out all forcein companions. in that traile, but the monopoly of R. He shints out all foreign competition, and he does so on the ground that the public good is promoted by giving him his advantage. We think he is right in asking hit, and the government right in granting t. Yet this is not I ree trader at a preferroes—it is protection, and protection of a matter than the protection of a matter of the protection of the protection of a matter of the protection of th sufacture, under the power to regulate trade. The laws giving this protection to the manufacture and the use of siving this protection to the manufacture and the use of ships may be wise and laws protecting other manufac-tures, may be unwise. But the first cannot be constitu-tional, and the latter not constitutional. It there be power tional, and the latter not constitutional. If there be power tor one, there is power for both. Both are drawn from the same grant, both operate by the same general means, and both regard the same object, the protection, namely, of American labor and capital against foreign competition. If it be said that the insvigation act is founded in autional policy and that it is easential to national defence and national independence, we admit it. But we are account in the fact place that easeware and play or gregies. answer, in the first place, that congress could not exercise answer, in the first place, that congress could not exercise a power not granted, merely! because it might be useful or necessary; and, in the sexed place, we say that the same remark is true of the policy of pricing manufactures. That policy, also, is independence,—Iron, hermp and elothing for assimilar policy and soldiers are not less indispensable to national defence than ships and seamen. Not only in the general use of language, then, does the power of laying duties and regulating trail extend to the protection, by the use of such means, of domestic manufactures, but such has been the constant interpretation of the constanting fight.

this? If other restrictions had been intended they would have been expressed. When the business of intended that we been expressed. When the business of intended was before the concretation what was omitted to the second the control of the constitution of the United States, indeed, that when a general power is congress which intended and to impose other how would be, not interpret the constitution, but to charge it not to construct the extinge instrument, but total easily is to be asserted to the property of the law, the motives of the legislature can never be in the constitution of the constitution staelf. We think, indeed, that when a general power is consistent on congress by the constitution of the constitution staelf. We think, indeed, that when a general power is constitution of the constitution staelf. We think, indeed, that when a general power is constitution of the constitution staelf. We think, indeed, that when a general power is constitution of the constitution staelf. We think, indeed, that when a general power is constitution of the constitution of the constitution staelf. We think, indeed, that when a general power is constitution of the constitution of the constitution staelf. We think, indeed, that when a general power is constitution of the constitution staelf. We think, indeed, that when a general power is constitution of the constitution of th

its provisions and ensetments, but on the motives of that a reduction of fluties upon the necessaries or custothose who passed it. Is not such a notion new! How are we to ascertain the motives of a legislature? By private inquiry; by public examination; by conjecture! The voting for revenue; some for protestion; or one house may act with one view, and the other house with ano-What will be the character of such a law? ther.

According to his new theory, if the motives be constitutional then the net is; if the motives be unconstin-tional there the act is unconstitutional also. It follows, tional them the act is unconstitutional also. It fullows, therefore, that a law passed by one congress may be constitutional which, if passed by another, though in the name words, would be unconstitutional. Besides, on this theory a law may be unconstitutional for its orminations as well as its enactments; because, in laying interface, anything the property of the chaties, articles may be unitted as well as articles in-serted, from a design to favor manufactures.

We may pursue this inquiry a step farther, In order to ascertain whether an act were passed primarily for revenue, the construing power must be au-For it is the consequence of the the expenses of government require implies the exereise of a power to tax under circumstances in which ereise of a power to tax under circumstances in winen the raising of revenue cannot be a primary purpose, but in which a purpose to protect industry or, in other words, what has been called the incidental object, may be residered, in effect, the principal object of the tax, al though reiled under the revenue nover. For these reasons we say it follows as an inevitable consequence, under this view of the source of the protective power, that the constitutionality of any system of imposts, professing to be directed to revenue, must depend upon the fact whether that revenue be necessary to the government or not.

The statement of such a consequence is sufficient to show what endless difficulties must embarrass the operations of the government in defining the limits of this inedental protection, which has been alleged to be the only protection that the constitution allows, and of itself affords, what we conceive to be, an unanswerable argument against referring the right to protect industry exclusively to that clause of the constitution which authorities

To determine whether any proposed amount of re-venue be necessary would, in a great number of cases, prove a Irudul source of vexatious and unprofitable the face of their territory with expensive roads and causals, to provide fortifications and the munitions of war, and to accumulate treasure in the expectation of national difficulties, -would find good reason to maintain that a large revenue was indispensable to the nation. With this party a high and burdensome rate of imposts, fully adequate to the most extensive protection of mano actures that has ever been asked for, would be a constrational application of the revenue power. Another party, nuce turiny in their policy, holding that the expendence of the government should be graduated to the lowest practicable scale of economy, would someth that nothing should be raised by duties above the ordinary ampilies necessary for the pay of the public agents.
With this class all the excess, above the sum that they might hold to be necessary, would be the fruit of an un-constitutional tax. Who should judge between these conflicting opinions? If such were the limits upon the power of congress it would be true, as has been said, that there might be acts in violation of the constitution which would elude the notice of the judicial tribunals; but the evident absurdity of subjecting the right to excrose fundamental powers to so vague and intangible a

mary luxuries of a assion frequently increases the re-venue. In such an event the defenders of the position vende. In such an event the determines of the position that the power of congress, is limited to the supply of a necessary revenue, will find themselves unexpectedly put in possession of a surplus income which, according to the assumed principle, they had no right to raise; and it will be apparent that the people will be even more taxed than they were before; for the duty having been rendered productive of a larger amount of revenue to the government, a greater aggregate sum will have been taken from the pockets of the people; and it will be ten belound that engress j-nated of lessening the public burtlens by the reduction of duties, will have only been encouraging the consumption of a greater quantity of the taxed article. A large consumption with a small tax being, in this case, more than equivalent to a small can being, in this case, more than equivalent to a small consumption with a large tax. And thus, in spite of all the precautions which the most serupulous guardians of the constitution may exercise, the public functionaries, against their will and with the most conscientious desire to avoid infractions of the law, will oftentimes be fated to shandon this intractable mode of taxation by imposts and resort to direct taxes upon the people.

As long, however, as such results may follow the reduction of duties, it will be seen that a system which merely increases the consumption of imported sommodities without diminishing the revenue will be, in ef-lect, the adoption of a policy for the encouragement of foreign industry. And we might here pause and ask, whether it can be supposed that the founders of our government intended to give a power to congress to adopt a scheme of policy directed to the encourage-ment of forcign labor by a scale of low duties, without also allowing to that body a right, when they found it convenient, to encourage domestic industry by a higher wale of do es? Let those who answer this question in the affirmative, show some reason for the tion should set more value upon a power to encourage foreign industry, under any possible necessity to exercise it, than upon a similar power to encourage and

protect our own.

We think we have said enough to indicate the pernicious tendencies of the doctrine, sustained by many eminent citizens of our land, which ascribes the right to protect domessic manufactures, solely to the revenus power conferred by the constitution upon congress; and power conserved by the constitution upon congress and have demonstrated that this error, if adopted, must lead the public functionaries into practical embarrassments entirely irreconcileable with a wholesome administration of the laws.

With a view to show that the protection of manufac-turing industry is mainly referrible to the power to re-gulate commerce, and was intended to be embraced by the clause of the constitution, that invests the supreme legislature with that power, in addition to the suggestions that we have already made, we deem it not unprofitable briefly to recur to the history of the country, from which we shall derive lights that may guide us to the most unerring conclusions in confirmation of our doc-The narrative of events from 1783 to 1787, the trine. circumstances attending the adoption of the constitution, and the range of its early operations, whilst yet in the hands of its authors, afford a mass of testimony that congress has but responded to the expectations of the country in so regulating trade as to furnish the requisite protection to the expansion and growth of our own labor.

The regulation of commerce was not a new term invented by the framers of the constitution. It was at the time of the adoption of that instrument by the people a term familiar to their apprehension and impressed upon their understandings, by the strongest comments that the standard of interpretation, furnishes one of the most statisticity proofs that no such intention existed in the interpretation, furnishes one of the most statisticity proofs that no such intention existed in the interpretation. Pursuing the investigation, it will be found that the difficulty attending this notion of the source of the protection power does not end with the impracticability of determining upon the accessity of revenue. It goes determining upon the accessity of revenue. It goes at the state of the proposed to assume in the discussions of an extension of the sound that the distinct of the state o

regulated the commerce of the colonies, through a series of odious and unfeeling restrictions, for more than a century, until the phrase had acquired the notoriety of a hateful grievance. She had lettered their trade by cruel prohibitions, and controlled their labor by systems of denial that reduced them to the lowest state of suf-fering; yet it is remarkable, that, decusing this oppressive policy a lawful exercise of the prerugative of regulating commerce, the colonists submitted to these evils with a resignation that indicated their sense of the duty of obedience to an acknowledged, though misseed power. All manufactures calculated to bring wealth into the country, were strictly forbidden; the erection of lurges, for example, was denomiced as a nuisance, and these establishments were liable to be abated by that name: it was declared unlawful to export the simplest fabries, even of shoes or hats, from one province to another. Still the people did not deny the legality of these attempts to regulate commerce. But when the right was assumed to collect revenue in the colonies for the benefit of the mother country, the first assertion of such a principle was met by open rebellion. The distinction was palpable enough, to every man, hetween these that lord Chatham, in 1765 in the British house of commons, distinctly defined the two branches of power in terms that literally apply to the subject we have been discussing, and which show how clearly they were brought to the notice of the country: there is a plain distinction,' is his language, between taxes levied for the purpose of raising a revenue, and duties imposed for the regulation of trade, for the seconomodation of the subject although in the consequences, some revenue maget incidentally arise from the latter '- inherel, the whole tenor of the public discussion on those subjects, so the state of the public discussion on those subjects in the subject that the public discussion on those subjects is subject to the su so rife at that period throughout England and America, furnishes the most conclusive evidence that a specific idea was attached to the phrase incorporated into our constitution, and that its scope was to include the idea of levying duties in such a form as to encourage and pro-tect, or, at least, to control and direct the growth of domestic industry.

The complaints against the articles of confederation, for which the constitution was substituted, embraced amongst other things, an objection to the forms by which the legislation in reference to the regulation of comthe regination in reference to the regional design of merce was impeded, and it was a prominent design of the new constitution to remedy this delect. The right to lay even prohibitory thitles was freely admitted in the discussions upon the constitution; and we may safely affirm that the whole nation, at that day, regarded such a power as one of the necessary conclusions from the grant that had been made. The subsequent action of the government corroborates this idea. The first approaches of the people to their new rulers were made in behalf of the exercise of a protecting power in favor of their industry. They spoke of the injury they had sustained under the lormer state of things; of the runous competition to which the policy of the mother country had exposed them; and demanded the establishment of a system of measures that should accomplish manufacture, The unrestrained admission of British manufacture. The unrestrained admission of British goods had reduced our manufacturers and artizans to absolute want: the free entry of British shipping had as pelled our vessels from the ocean. From Charleston to Boston this condition of things was the subject of one loud and continued remonstrance; and the remedy for it was a prominent object in the establishment of a new general government. The ship builders and the ship government. The ship builders and the ship owners complained that foreign bottoms brought to the country all that was imported, to their rous; and they besought their fellow-citizens to join them and they besought their fetton-consens to join them in measures of protection. The manufacturers and smeek mics declared that it was of little importance so them in what bottoms articles were imported, ince this unrestricted importation, in whatever hot-toms, threatened to reduce them to starvation. Both had applied to their own state governments for redress, but these governments, from want of conservational but these governments, from want of concert, could give no effectual relief. Attempts had been made to are no execust renet. Attempts had been made to amend the articles of confederation for the very purpose of conferring this power upon congress; but these attempts had failed. Hence it was that the establishment of the present government was hailed with the utmost enthusian and elebrated in the principal cities, by all classes, with manifestations of lone and joy.

The carriest legislation of the new government avows and ships the principle for which we have been some and ships the principle for which we have been some and ships the principle for which we have been some tending the first important act on the statute book contains it following preamble—Whereas it is necessary for the superiors of government and the encouragement and the stream of manufactures that durine be last on sponds and merculons for this premable was written, supported and passed by cut This premable was written, supported and passed by cut This premable was written, supported and passed by cut This premable was written, supported and passed by cut This premable was quite formed. They were carried to carried the protected for the property of size was the country that in expectations would be fulfilled, and that the manufactures of the swood be fulfilled, and that the manufactures of the swood be fulfilled, and that the manufactures of the swood be fulfilled, and that the manufactures of the swood would be protected. It, therefore, the existing I wishes the constitution, the original act violated it. If this clarater of right the marred one, it was marred then, and

If proteston be unconstitutional, this law carries up constitutionality in its front; and jet, not one member of the first congress appears to have thought it uncon-stitutional. In the whole course of the debates, protracted through several weeks, no one expressed a doubt of the power of congress to lay duties for protec-tion; we may therefore affirm that the power was admitted by all. Some articles were taxed for revenue only; some for protection only; and some for both. published debutes show all this, and, as we have al-ready said, every congress, from that day to this, has reengnised the same power. Every president, beginning with him who is justly esteemed the lather of his country, has sanctioned it, and most of them have recommended its exercise, in earnest terms. Indeed, it has been constantly exercised; protection has been a has been constantly exercised, protection has been given by the given by the registry acts; it has been given by the acts regulating the coasting trade; it has been given to the fisheries; it has been given to the cutton of Carolina; to the rees it has oven given to the heapt of Kentucky; to the coal of Virginia; to the heapt of Kentucky; to the lead of Missouri and Illinois; to the sugar of Louisiana, to the iron of the middle, western and southern states, and it has been given to the various artisans, mechanics and manufacturers. It is now forty-two years amee this system of protection began, and it has never been ina steni or protection began, and it has never occus mi-termitted or suspensied, with regard to many commo-dities, for a single hour. Is all this legislation now to be deemed unconstitutional? Are all these interests to be deemed unconstructional? Are all these interests to be brought into jequardy, and perhaps to ruin, upon this modern construction of the constitution?

Not only has congress thus constantly exercised this power, but it has thought itself, from the first, nuder peculiar obligations to exercise it. It has emisidered test it would be guilty of a plans breach of duty if it should not exercise it; and so it was declared in its first session. This policy was more carnestly enforced alone congress because the states had surrendered their whole power on this question, and were, themselves, probibited from exercising it by the constitution itself; smeens they could not, as separate states, exercise it well, it was taken away from them and vested in the astional legislature. It was said, therefore, and said truly, that would be a fixed upon the states, if enngress, now the sole possessor of the power, should reluse to exercise it. The constitution had declared that no state should by any duty except for the more purpose of enforcing its inspection laws. - Is it conceivable, that the people would agree to deprive their own state governments of the power of protecting manufactures, by suitable regulations of traile, without the consent of congress, for any other reason than because this power was intentionally transferred to the general government? The doctine now advanced, imputes the strangest absurdity, both to the framers of the constitution and to the people. It supposes them, instead of creating a new remedy for te supposes them, instead or creating a new remedy too, seeknot ledged evils, to have forever abolished the poor but only remedy which already existed. It supposes, that instead of group to songress, as was their swosed design, effectual power to protect manufactures, they did no more than prohibit the states from exercising that

power, and extingush it as a thing to be deprecated every there and altogether.—It supposes them to have into the properties of the suppose of the properties of the suppose of the suppose of their loves in the suppose of their loves and rivals. We cannot yield our assent to opinions, which seems possible these, or a policy like this, either to the convention, the suppose of the properties of the suppose of t

It only remains for us to add, that the public judgment has, at all times, affirmed the existence of this power, and approved its excreise. Even at this moment, there is no reason to doubt that nine-tenlis of all the people hold the power to be constitutional. It is, therefore, not only against the words of the constitution, against the manifest design of the nation in establishing it, against the uniform sense of congress in passing laws under it, against a practice of forty years, never stayed nor suspended, against the opinion of every tribunal in the country, as far as we are informed, but it is also against the entire conviction of a vast majority of the people themselves, that these new and what we think dangerous opinions, are now brought forward as the true doctrines of the constitution.

It is an error to suppose that the regulation of com-merce should necessarily imply the denial of a right to restrict, diminish or prohibit any particular branch of it. The suppression of any trade, injurious to the community, is as much a nation I concern, and as vabushles an exercise of power, as the encouragement of other branches; and, indeed, in practice it must often oeseur that the conferring of special advantages upon one branch of trade may operate partially to the disadvantage of all o hers. Such is often the effect of treadvantage of all o hers. Such is often the effect of treadvantage of all o hers. ties that reserve to the vessels of particular nations free entry to our ports: the commerce with such nations is promoted to the diminution of the trade with others not embraced in the privilege. This, however, is a law-ful, just and profitable regulation of enumerce. Com-merce includes all kinds of traffic, whether sustained upon the ocean in ships, or transported on roads, rivers or canals: whether it belong to the system of domestic exchanges, or is conversant with the occupations of foreign countries; and it is the appropriate function of congress to regulate it in such manner as their wisdom may dietate, unlimited by any restraints except those which the constitution imposes on the power over the domestic intercourse of the states. The regulation of our com-merce with the Indian tribes has subjected the traffic, from time to time, to all such restrictions as the national legislature lound it prudent to adopt; and yet this right of regulation has passed unquestioned, though it has been directly exercised to the diminution of any species of traffic that has been considered hurtful.

It is nothing more than a regulation of commerce to shape our policy, in reference to our intercourse with foreign nations, by such rules as shall increase the products of our our labor to an amount that may render them, also, the subjects of a foreign trade, and thereby extend our commerce to new regions, and give it hew secumulations of commodities. The agricultural products of a nation are not the only elements of its trade; its manufactures may be as describle to foreign communities, and their transportation and exchange may besome fully as valuable foundations of a rapid, calarged and profitable commerce. Why, then, should the power to regulate commerce be supposed to be arrested at that middle point, between the presecution of and that middle point, between the presecution of and that middle point, between the presecution of and that middle point, between the prosecution of and evenually, be rendered more expansive, useful and productive than any other? Such a restraint would seem to be utterly incompatible with the grains and character of any vigorous community, but especially with that of a vouns and leadthy nation.

young and healthy nation.

Before we leave this branch of our inquiry we are saxious to present the constitutional question in one more point of view. The best expositor of the constitution is that instrument itself.

The tenth section of the first article of the constitution provides that 'mo state shall, without the consent of congress, lay any imposts or duties on imports or exports, except what may be absolutely necessary for executing inapection laws." The limitation which is here set upon the legislation of the states is within the control of con-

e restriction expressed in this clause; and consequently congress may permit either or all of the states, separately, to levy such duties upon imports as they may think convenient: it may allow the state of South Carolina, for example, to enact a tariff of the highest rates of iluties, directed exclusively to the protection of any branch of industry they may wish to loster. It will be observed that the terms of this clause of the constitution absolutely forbid the idea that such a power is to be exercised for revenue. The state that imposes the duty is inhibited from taking the avails into its own treasury, but must pay them over to the general government; whilst that government, on the other hand, has the fullest power to levy and collect its own revenues, and consequently cannot be presumed to vield its con sent to the state enactment upon considerations of that nature. That consent, therefore, is intended to be giv-en, if it be ever asked, from a conviction of the beneficial effect expected to be produced in the state that levies the duty-or in other words, of its value as a pro-tection to state labor. With settle power on the part of congress to permit a protective system to be enseted in the states severally, it would seem to be a soleeism to suppose that the exercise of a similar power was intended to be denied to the national legislature itself to whom has been emphatically entrusted the whole complicated

and interesting concern of regulating commerce.

In diamissing this review of the principles and practice of our government in their relation to an important constitutional right, we take the occasion to say that we contemplate the character of the present opposition to what we have endeavored to exhibit as the legitimate powers of congress, with regret; and if we could persuade ourselves that it was destined to command the assent of any large portions of our population, we would say that we surge portions of our population, we would say that we view it not without alarm. This opposition appeals not to the discretion of congress; it seeks no modification, our qualification, but demands an entire and absolute surrender of the principle. It is for the American people to decide whether this surrender can be made. ourselves, we do not scruple to declare that, in our opinion, to give up this power would be to give up the constitution. If congress he stripped of this prerogative and the restriction against its exercise be still imposed upon the states, it is quite plain to our apprehension, that the donm of our happy and prosperous constitution is sealed. We consider this question, therefore, as vital; and we look to the perpetuation of the power which we have labored to defend, and its just exercise, to be indispensable to the preservation of that government which has conferred on the people of these states innumerable blessings.

You are next invited to examine the subject in its connexion with the principles of an enlightened political economy. The system which we maintain rests upon the following principles:

All the means of human enjoy ment, and all the accumulations of wealth, are the product in human labor.—
National happiness and national wealth are, therefore, promoted in proportion to the active industry of the community; and that industry is in proportion to the indusements to labor, arising from the amount and certainty of its remomeration. The immediate instrument for calling labor into action is eapital. Capital is necessary to luminish the laborer with the means of applying his labor to advantage, whether in the simple tools of agriculture and some of the medianic acts, or in the complicated and expensive machinery, applied to certain branches of manufacture, the modern improvements in which have added so much to the productive power of man.

It is a settled axiom, that the industry of a nation is in proportion to the eapital devoted to its maintenance. It is, therefore, thought to be a wise policy to multiply the inducements to apply capital to the employ ment of labor at bome, rather than to the jurishase abroad santraffice a commoditate of foreign production, by which, the capital of the country is made to set is motion foreign labor. This is tounled on the principle, universally admitted, that there is, in every nation, a power or capability of labor beyond that actually put fortin and that its effective industry is proportioned to the atmulus ap-

plied in the shape of espital. This constitutes the American System. It invites the application of American applied to stimulate American industry. It imposes a restriction, in the form of an impost duty, on certain products of foreign labors but so far as relates to American rican capital, or American labor, it simply offers security and inducement to the one, and gives energy and vigor to the other. The purpose of the protective system being thus directed to the utmost expansion of the industry of the nation into every channel of domestic competition, it would seem to be manifestly erroneous to call such a system restrictive, inasmuch as the avenues of labor in the internal organization of any community are much more numerous and extensive, than those which belong to foreign trade: whilst, on the other hand, there are no restrictions so severe upon the occupation of our citizens, and none that so irresistibly impel labor into a small number of cliannels as those that are created by the capital and industry of older nations when concentrated and brought into competition with the capital and industry of a young people in their first attempts to possess themselves of the aria that create and securing late wealth. A nation that is devoted to agriculture only, and is dependent upon toreign labor for its manufactures, presents the spectacle of a people whose industry is confined to the single occupation of cultivating the soil, and transporting its products abroal, and is al-ways aubject to be disturbed by the policy of those on whom it depends for the purchase of its products: but whom it nepenals for the purchase of its products: but the same nation, when encouraged in the attempt to sup-ply itself with manufactured fabries, releases its labor from the restraints of its previous straitened condition, and is seen rapidly diversifying its pursuits, until they finally cover the whole space that was originally divided between itself and the people that supplied it with manu-

. It is true, that a different system of political economy is maintained by a certain school of theoretical writers. It is contended by them, that restriction upon the importation of foreign commodities, under any circum-atances, is a mistaken economy;—that foreign manufacturers should be allowed freely to bring in their wares, although they will receive from us nothing in exchange, but the precious metals. This is the system which has been lately called enlightened. We, un the contrary, believe it to be founded on mistaken views; and that a practical application of it would paralize the industry of the country. The fundamental principle in this system, is one which we deem totally erroneous. It considers the profits of capital, as constituting the only source of ma-tional wealth. It assumes the fact, that the wages of fabor are barely sufficient to support the laborer, but leave him nothing for accumulation. Now, whether this may or may not be true, in the fully peopled countries of Europe, it is palpable to the slightest observation, that in reference to labor in the United States, it is absolutely and totally false. Such is the abundance of the means of subsistence in this lavored country, that the loborer is able to accumulate espital out of his surplus earnings. We every where see capital accumulating in connection with labor. Labor is not with us, as the theory supposes, the mere instrument of capital, the mere handmad to furnish the profits of the capitalist; it is, on the contrary, an intelligent, active principle,—the partner and sharer in the increase of wealth, produced by the united action of both. We have no class in Ameries corresponding with the operatives,—the human machines of Europe. We, therefore, totally deny the correctness of the position, that "the question relates exclusively to the application of espital." We deny, that "the power of government is limited to its transfer from one employment to another." By mercasing the Trum one employment to another." By mercanage mainming to hoor, resulting from the application of capital, to home preduction, additional capital can "be generated by an act of legislation." It is said that this system "oppresses the many for the benefit of the few." We, on the contrary, believe, that whilst it benefits all, its highest recommendation is found in its beneficial action upon the many-the laboring classes, the working men. If there is any one principle in political economy, which is perfectly well established, it is, that the profits of capital, employed in any one branch of industry, cannot, for any length of time, exceed the average rate in

other employments, it being the constant tendency of free competition to equalize profits. It is, therefore, an argument altogether fallacious to suppose, that the system favors capital devoted to one brace to business more than that devoted to another; or benefits any orse class of individuals; to the prejudice or exclusion of others.

It is also said, that "it is equally untrue that such a system gives greater employment to labor."

We dissent from this doctrine and are fortified by the opinion of the author of "The Wealth of Nations," whose language we think it useful to quote: "the capital of the author of "The Wealth of Nations," whose language we think it useful to quote: "the capital of the manifesture," asys this writer, "Puis immediately into no ion a much greater value to the land and labor of the society, than an equal capital in the lands of any whole-sale merchant."—"After agreaturer, the capital employed in manufactures juits into motion the greatest value to the annual produce. That which is employed in the trade of exportation has the least effect of any of the three."—""The capital employed in the home trade of any country will generally give encouragement and support to a greater quantity of productive labor, in that country, and increase the value of its produce more than an equal capital employed in this latter trade has, in both these respects, a still greater advantage over an equal capital employed in the sale trade has, in both these respects, a still greater advantage over an equal capital employed in the owner, and the capital employed in the capital employed in the owner, and the capital employed in the carrying trade." "That part of the capital ends is altogether withdrawn from supporting the productive labor of that particular country to support that of some foreign countries."

In accordance with these positions we maintain the efficiency of labor to add to the power and riches of a country, against the theories of later writers who attribute every thing to capital. In fact, we consider it the most important and valuable feature in our system, that it tenis directly to increase the effective power, and remunration of labor, than multiplying the means, the comforts and enjoyments, of the laboring classes, and raising them in the scale of evillatation and social life. This political effect on the character of society may be considered its highest recommendation. It is thus made to give strength and permanency to our free institutions.

The peculiar advantage of the United States consists in the abundance and cheapness of fertile lands, affording an easy subsistence and high remuneration to labor.—We consider the system of establishing manneatures and the arts amongst us, as distributing and equalizing these preculiar advantages, through all the departments of industry and through all classes of society.

This effect, we believe, to be deducible from the system, according to the most approved principles of political economy. But we consider all speculation on this subject founded on the utilizate tendencies of human ection, and the averages of contending principles, as very uncertain guides in legislation, compared to the street test of experience, and those practical results which are obvious to the senses.

Mittaken and preposterous assumptions of the merits of what is called free traile have, under the ever active delution of Bit ishis fillence, afforded pretexts latterly to the opponents of the protective system which, it is proper to disple. It is not long since no one believed in the power of propelling boats by steam, and every one believed that the British debt was to be paid off by the sinking fund;—similar mistakes exists as to free traile—as a municipal principal, there is no question of the great advantages of free trade. The United States, in their coasting trade and domestic exchanges, afford the most striking illustrations of them ever without contrivent her arrangements of Providence, which distribute mankind into different communities, separated originally by confusion of tongues, and prevented from all rushing together into the most favored latitudes, by local attachments and foreign antiquities, which are the germs of national preservation, by means of national evaluation.

Much of the suffering which it is alleged is felt in certain portions of the United States, (if their cumplaints have, in fact, any foundation) is to be attributed by a surface of the united States, and the united States of the united State

Nations are adversary to each other; their commercial intercourse is regulated by treaties always made with a view to relative advantages, and to provide for those hostilities which are of perpetual recurrence. The vexations provincial tariffs which formerly fettered intereourse and almost destroyed traffic in the interior of nations, suggested the idea of that free trade, which has since been misunderstood and egregiously misapplied by more speculative writers—The tariff acts, which even now impose duties on the wines of Spain at provincial borders and on those of France at city gates, are grievancea, for which free trade is a happy substitute-but the principle is entirely municipal and in no respect applicable, without disadvantage, to independent nations.—The vessels of the United States are navigated with fewer hands and make their voyages in shorter periods, than others;—hence, what is called the reciprocity principle, originating in the first treaty be-tween the United States and France, has been wisely proffered by the United States to many other nations, because it is approach. because it is supposed that our navigation would sup-plant theirs.—But the artificial systems of England. France. Spain and the other sections of England. France, Spain and the other nations, with which the United States have most intercourse, render it extremely improbable that any approximation to the footing of free trade, should ever be arranged between them, even by treaty. For us to attempt while they reject it, would be a complete aurrender of ourselves as a voluntary sacrifice to the policy and cupidity of lo-reign governments; to create a government for the benefit of others and not for ourselves. A tariff of du-ties on commerce between New York and New Jersey, would be as injurious as unconstitutional. Free trade between these states and among all the states of the union is the main spring of general welfare; -- and one of the strongest links of the chain that connects them but free trade between New York and Liverpool would ruin the farmers of England through our supersbun-dant bread-stuffs, and the manufacturers of the United States by the superior capital and proficiency of Eng-land in manufactures, and the degraded state of the operatives. An unrestricted intercourse between two nations reduces the labor of one to the same scale of compensation with the labor of the other; and such a conacquence is certainly to be deprecated by that nation whose labor stood highest on the scale. This consideration forms a striking argument against the policy of audi a system between foreign states.—While, on the other hand, it is no less desirable that, amongst the separate communities associated under the same government. this reduction of the higher labor to the scale of the lower should take place, insamuel as the interests of these domestic communities are equally the objects of the protestion and solicitude of their common gover-

nors. The Irrest of free trade is, after all, but a chartered libertine,—The United States could not share their coasing trade with England without disadvantage:—the most extravagant advocates of free trade (it is believed) have never yet dreamed of sharing our river trade with foreigners.—To throw open the Ohio and Mississiphi, the Hudson and the Delaware to British, French and Dutch navigation, would be of no advantage to our own.—Engral nare to the output of the desired present autery of her seamen, to the enterprise of New Engral new whole to sing at least one half of it.—She ever refuses us a passage through the St. Lawrence, although we own part of that river. The greatest commercial nations of the middle ages, the Hanscatic League, and Holland, the maritime wonder of the world, became such by the exclusive enjoyment of the fisheries and the trade to India and other monopolies, which they

mantained at the charge of long and bloody war.—England struck the vital blow at Holland, not so much by naval victories as by her navigation act. The commercial and the military marine of the United States have risen to eminence upon similar interdiction.—Was free trade we should have neither the one nor the other, but be a poor, dependent, pastoral people—It is only about ten years aince the project for reducing the duties was first suggested in England, in a petition to parliment from the merchants and traders of London—In 1825 some slight and cautious reductions were accordingly made, but in nothing to effect the commercial monopoly and maritime ascendancy of Great Britain. Her trade of the Susquehannal river is now in dispute between the states of Maryland, Pennsylvania and New York. So intractable is free trade in fact, while fruitful of speculation. Within a few years Russia, misled by this idelusion, and Holland under the hillence of England, made experiments of free trade, which have some found intolerable and abandoned, which is contributed to reducing Holland from once being the rehest nation of Europe to being one of the most impoverished and indebted. In fise, the dogman of free trade, which are said to be taught in some colleges, may serve to inflame youthful imaginations, bu, as they never actuated a practical statesman, they can never misleand any well informed mind. What is called the American System, is the system of Europe; is the universal system,—and (if the experience and common sense of mankind be any standard of right) is the true and the only system of intercourse among nations.

It is doubtles true, that during the last half century, a more enlightened philosophy has been applied to the affairs of mankind; that political economy is much bet-ter understood, its principles more fully developed, and more judiciously applied. The sense and experience of men lind gone far to correct the erroneous legislation of former times, and to develope and multiply the true sources of national wealth. But the modern theory is not content with the attainment of practical benefits merely; it seeks, by an unqualified application of certain general principles, to produce a thorough revolution in the business of men, and the relations of nations. It is against these extremes of visionary good and practical mischief, that we desire all men of reflection and solver judgment to make a stand. We ask them to look at the judgment to make a stand.

The assure it is stored to examine the present condition of our country and to examine the operation of the present system upon all its great interests. Above all, we sak them to look to the practice of all foreign nations, rather than to the speculations of their writers. They will then find that those who have taught us this theory of free trade, are too wise to practise it; that they continue to act and to legislate upon the system of protecting their own industry, though some of their writers and orators recommend to all other nations to abandon it.

A reference to our own experience is, however, the best criterion, by which to test the correctness of the system which we support. It is not new; the principle was applied, as we have already stated, to our navigation, from the establishment of the federal constitution, prohibiting foreign shipping from the consting trade altogether; and imposing a high discriminating duty on foreign tonuage. If this discrimination has been abandoned, in respect to those nations who would consent to a system of reciprocity, it involves no surrender of the principle, Trade can only be carried on between nations by mutual agreement; and mutual protection leads to reciprocity as the only equitable arrangement. The mechanic arts have also been the subject of protection, from the establishment of the government; and it cannot be doubted blishment of the government; and it cannot be considered that to this circumstance they owe, in a great measure, their success; a success, which has made the mechanics of the United States one of the main pillars of our national strength. Agriculture has likewise had a lutl share of the benefit of this protection; and in truth it may be said, that as our government commenced its career with the establishment of the germs of the protective system, so it has continued ever since, gradually nurturing and invigorating them until they have reached their present growth. Some interruptions have occurred in the march of this policy, but these interruptions owe their origin to

relaxing the system for the benefit of other interests that were more immediately concerned in availing them-selves of the advantages of foreign trade. These, however, are to be regarded not as proofs of the uselessness of the are to be regarded not as proofs of the uselessness of the system, but as exceptions growing out of the pressure of temporary accidents. The events that followed the French revolution gave a new and unexpected direction to the enterprise of our citizens. The disturbed state of the continent of Europe, and the prevalence of univer-sal wars, throughout the nations of that quarree of globe, placed the United States in the polynomial globe, placed the United States in the polynomials. only neutral amongst many belligerents, and so obvious-ly opened the way to commercial wealth to our citizens, that all other interests sank into insignificance compared with those which were concerned in pushing a foreign commerce into every region where the strike of the con-tending parties excluded the competition of the belli-gereats themselves, and left to the United States the undisputed monopoly of trade. To this fortunate conjuncture of circumstances is to be ascribed the most rany empire. The United States not only became the any empire. medium of the commerce of the world, but their peaceful position attracted the emigration of all those who had the means and the wish to escape from European troubles.

Amongst the advantages which have resulted to us from this state of things we have suffered one evil, the effect of which is not obliterated, even at this day. Accustomed for twelve or fourteen years to commercial apeculations of unparralled activity and success, we were taught to think that nur national prosperity was inseparably connected with the prosecution of that kind of trade in which our citizens had been engaged, and we were thus insensibly educated in the opinion that the great interests of our commonwealth would be always concerned with a foreign commerce exclusively employed in transporting abroad the products of our agriculture and receiving returns in the manufactured commodities of other nations.

There was another circumstance that gave great authority to this delusion. The cotton manufacture of Great Britain was rapidly arising into the greatest activity and vigor. It was in process of time discovered that the raw material for this manufacture could be produced in the United States under more favorable circumstances than in any other part of the world. At first, but two or three of our states were employed in the cultivation, and the demand from England was even greater than the supply. The profits of this cultivation, therefore, were almost unlimited. The portions of territory employed in the growing of cotton were small, and the common opinion was that but few districts, in comparison with the great extent of our surface, could be approprinted to the culture. In the meantime, the cotton fabries were diffused over Europe and touk the place of large quanti ics of those manufactured from wool, silk and flax. Every year demonstrated the increasing importance of this manufacture both in Europe and Ameri and the demand still continued to outrum the supply. These circumstances had their influence in impressing upon our citizens an exaggerated idea of the permanence and value of this source of agricultural wealth and, along with it, the value of the tr-de which was concerned in the transportation of it. is persuaded our planters to believe that they poss-used an almost inexhaustible augree of riches: it unfitted them for sober calculations upon the effects that would follow the extension of the culture of cotton over the fertile regions that yet lay in wilderness behind them; and it equally disinclined them whiterness centile them; and it equally inside meditarial to foresee the possibility of the manufacture itself reaching a term at which it might become stationary and which was, therefore, eventually to set a limit upon the demand, at the very period when the supply would be increased in an almost infinite ratio by the spread of population over other states of our union, even more propointons there over the so our union even those pointons than their own to the production of the plant. It may, therefore, be considered a minfortune, consequent upon their furmer prosperity, that our citizens were almost irresistibly led by it into delusive estimates were almost irresistibly led by a listo delusive estimates of the true and permanent sources of national wealth.

It was one result of this state of things that, whist our leouing to recovery or grower that could be desired, and

The second secon

accidental circumstances which dictated the necessity of countrymen were intent upon gathering the last week relaxing the system for the benefit of other interests that which the distracted condition of the world had atrewn were more immediately concerned in availing themgleeted to treasure up the elements of strength and pros-perity which lay hidden in the bosom of the nation; and which, as they were independent of loreign legislation or external accidents, were most likely to furnish the means of a stable and enduring happiness.

Troubles mon atterwards broke out at home. threatened and our citizens were suddenly called to meet a tremendous emergency. Our commerce was put in fetters by non-importation acts and embargoes; and the crisis that succeeded found us without the most ordinary resources of an independent people. Our armica went to the Ironier clothed in the fabrics of the enemy; our munitions of war were gathered as chance supplied them from the lour quarters of the earth; and the whole struggle was marked by the prodigality, waste and privation of a thrildess nation, taken at unawares and challenged to a contest without the necessary armour of a combatant.

When it pleased heaven to rescue us from the imminent hazards of this doubtful and disproportioned conflict, we saw around us a nation of eight millions of conflict, we saw around us a nation of eight millions or people possessed of a territory nearly equal to the continent of Europe, rich in the tangathered resources of every kind of wealth,—just emerging from a way of two years and a hall, with an enemy who had never sasembled an army of more than thirty thousand men—and yet deranged in all its channels of industry, exhausted, and or the same of handrouser. Volking just the most acon the verge of bankruptey. Nothing but the most per-verse neglect of the lundamental precepts connected with the proper administration of the concerns of a com-monwealth could have produced such a result!

These disasters opened our eyes to some important ets. They demonstrated to us the necessity of extending more efficient protection, at least, to those ma-nufactures which were essential to the delence of the nation. They proved to us the value of a national currency, and the duty of protecting it from the misuence of foreign disturbance; and, amongst other things of equal moment, they made us acquainted with the fact that the British manufacturers could find a large and, if necessary, a complete supply of cotton from oth suils than our own.

All these matters came into review before congress at the close of the war. A proper occasion for their discussion arose when the question was submitted as to the reduction of the war duties. The return of peace made it necessary for the legislature to take off the taxes that had been imposed for delraying the expenses of the war; and in this reduction of duties to what it was considered should be a permanent standard, the cotton planting interest urged with great force and propriety, the necessity of retaining such a duty as should exclude from the American market all fabrics made from the cotton of the East Indea. It was an anomaly apparent to every citizen of the United States, that our govern-ment, possessing so many facultural or supplying Europe with cotton, should, nevertheless, allow a trade that threw in upon us vast quantities of cotton cloth pruduced at the distance ut ten thousand miles: that our most common household supplies should be furnished from such a quarter. Nuthing was more generally acknowledged than the duty of the government to protect the cotton grower against such a competition; and this argument was addressed to the nation by the cotton gruwing states, even with the conviction, at that time prevalent amongst themselves, that its success would be to give them what

may be termed a species of monopoly in the supply.

The duty was retained; and it is important to know that, being designed for the protection of the cotton grower, it was graduated to a scale precisely adequate to that purpose. His interest required the exclusion of the East India fabric, but was supposed to be hostile to the attempt of the American citizen to manufacture the material: the duty, therefore, was adapted to the first pur-pose, but not to the latter. It banished the foreign manufacture:—it slid not protect the home;—being thus accurately adjusted to the wants and wishes of the plant-

The tariff of 1816, it may be remarked, was a mea-The tarm of 1810, n may be remarked, was a measure that met the approbation of the large majority of the people in every section of the union. No partial nor local considerations were embodied against the operation of either its principles or policy. The southern federates in recommending the policy and defending it in the councils of the nation. By this tariff various inssufactures were attempted to be established in the U. States. The want of skill and capital exposed these infant institutions to a fierce and vindictive competition from the manufacturers of Great Britain; and, in three years, almost every capitalist who had ventured into this field of enterprise was broken up. The heavy loss and distress that visited this endeavor to establish manufactures subsequently urged the subject of more exnutactures subsequently urged the simplest of more ex-tended protection upon congress, and the result, after various struggles, close and elaborate inquiry and a careful attention to the expanding means of the country, was the establishment of a vigorous system, which has diffused health and strength into the industry of the nation, and added to the wealth of every class of the community.

We ask attention to another topic. Revulsions in trade are unavoidable: the balance of supply and demand cannot always be regulated with precision. is a tendency, growing out of a prosperous commerce, to push success to an extreme which produces reaction. to push success to an extreme which produces reaction. "to these periods of embarrassment, of general stagna-tion, and severe pressure for money, the United States have been peculiarly subject.—We stribute this, in a great measure, to our having depended, in so great a degreu, lor our manufactures, upon the nations of Eu-rope. Importation is induced more frequently by the necessity or hope of the manufacturer to find a market, than by actual reference to the wants or means of the country. A reduction in the prices of exports, followeoutry. A reduction in the prices of exports, following an excessive importation, causes a state of exchange which leads to an exportation of specie; the moment this exportation touches that portion of the precious metals cessary to sustain the money circulation, the operations of the banks become embarransed, and distress and dis-

may are spread through all classes of the community. We believe that the system which lurnishes a nation with manufactures, essential to its daily wants, from its own industry, is the best possible security against vio-lent changes in its currency—changes which parallel all industry, and disturb all trade; and we therefore submit it to the experience and judgment of the American people whether the protective system is not, in this ular, more advantageous to the country than that particular, more autorungeous to the country than that which, after deluging our markets with foreign manufactures, draws from us, in return, not a useless commodity, but the instrument by which our exchanges are performed, the very basis of our bank orieulation, the essential principle of commercial confidence.

Mistaken opinions in regard to the effect of the tariff upon the prices of commodities used in the United States and upon which the protective system has been States and upon which the protective system has been brought to been, have furnished some popular objections against the wisdom of the policy. It has been sand that the effect of a duty is necessarily to increase the price of any article upon which it is laid to the full amount of the tax. It would be easy to show, by a minute survey of the whole field of American industry, that, so far from this being true, the invariable operation of the tarm has been to tower the price to the consumer of every article that has been successfully manufactured under the protection. Such a survey would require more de-tail than the purpose of this address allows, but we propose to examine the operation of the tariff upon some of our most important staples.

In the article of cotton it is admitted that our manufacture has arrived at such perfection in the production of the coarse fabries, that they are not only furnished inanolacturers to controll it, the price of iron will, be a kittle more than one half of the sost which the importfor long, decline to from fifty to sixty dollars per toued articles of the same kind bore a few years ago, but they are produced as cheaply at the present time as our.

Cut mails, which in 1816 sold for twelve certified per la,
foreign trust, under all the ascitements of American are now odd for least than half that suns, under the per-

the nation, having thus performed its duty to this valuable a contant and increasing demand for several years for exportation, as well as lot home countries. but the finer qualities are now imported, which are lit-tle, if at all affected by the minimum duty. The price of raw cotton has fallen but about a cent a pound within the last four years, whilst the price of cotton goods,of sheetings, for instance, of more than three yards to the pound,—has latten nearly four cents a yard within the same period. Satmetts, of wool and cotton, are made at less than one half the price of cassimeres, and are more durable. Cotton fiannels formerly imported from China at from filly to sixty cents a yard, are now maile, of a better quality, here, at from fifteen to twenty cents. Indeed we might enumerate every species of manufacture in which this material enters as a component part, to show that both in the character of the artiele and the cheapness of its price, the country has been a great gamer since the enactment of the system that has promoted its fabrication.

To the cotton planters of the United States, the system has undoubtedly yielded the most decisive advan-tages. It has created a certain and valuable market for tages. It has created a certain and it has encour ged the consumption of large quantities of their stable in trabrica to which it never would have been applied, if the manufacture had not been carried on in our own country. The establishment of cotton mills amongst us had the most visible tendency to induce our manufacturers to apply cotsince tendency to induce our manufacturers to apply cot-ton to uses which both the policy and the position of foreign manufacturers would have forever torbid-den them from adopting. This fact is conspicuously seen in the application of cotton to sail cloth, and to ail those articles of heavy clothing in which it has lately been substituted for wool. It is now manufactured into carpets, blankets, cordage, twine, net work and a variety of other commodities that may be said to be exclusively of American origin. Cotton being a product of our own soil, we have naturally an interest to extend its application to new uses, above what might be expected from nations who are mere purchasers of the article, and who are as much, if not more, concerned in preserving and promoting the use of wool and hemp in the labries to which we have applied our cotton,

Let us next consider the article of iron; and we will introduce the notice of it with a quotation from that master ly report of the first secretary of the treasury, which, forty years ago, recommended prohibitory duties in favor of the manufacturers of this article: "for" says that report, "they are entitled to pre-eminent rank. None are "more essential in their kinds, note so extensive in their ruges. They constitute, in whole or in part, the imple"ments or the materials, or both, of almost every useful occupation. Their instrumentality is every where
"conspicuous. It is fortunate for the United States "that they have peculiar advantages, for deriving the "full benefit, of this most valuable material, and they "have every motive to improve it with a stematic care. "It is to be found in various parts of the United States "in great abundance, and of almost every quality; and ofuel, the chief instrument in manufacturing it, is both "che ap and plenty." This report which is a treatise on political economy, at least equal to any thing that has appeared since its publication, states that the average appeared since he pooreasion, sastes that the average price of iron he fore the revolution, was about sixty-four dollars per too, and that at the time of that report is was about eighty dollars. Soon after it appears to have risen to ninely-five dollars, and in 1814 was as high as one hundred and fifty dollars. After the ineffectual tariff of 1818, which ruined numbers, induced by its vain protection to make investments in the manufacture of iron, it rose from ninety to one hundred and five dollars per ton. Under the influence of the duties of the acts of 1824 and 1828, it has declined to its present prices of from seventy-five to eighty-five dollars per ton, and there is every reason for the confident belief entertained, that it our own market be protected against the formidable and incessant entleavors of the British

manent security of five cents ner lb. which has given our manulacturers their own market. "The United 'States, (says Hamilton's report before mentioned), "About one million eight hundred thousand pounds of mails and spikes were imported into the United States," in the course of the year ending the 4th September '1790. A duty of two cents pir lb. would, it is pre-sumable, speedily put an end to so considerable an 'importation. And it is in every view proper that an end 'should be put to it."

Bar iron which sold at Pittsburg in 1829 at \$122, sells there now at \$95. Custings which were \$63 are now \$50 per ton. Such are the practical results, proving the operation of the tariffs on the market for iron. The duty, by the law of 1816, was so inalequate as to cause nothing but ruin to those concerned and enhancement of price to the consumer. The act of 1818 was some amelioration; the acts of 1824 and 1828, which increases ed the duty, decreased the price. Hammered bar iron under a duty of twenty-two dollars and forty cents a ton; is at a lower price than when under a fluty of nine dol-lars a ton, and improved in quality from five to ten per cent, by the greater care and skill which more extensive investment has naturally created under more certain protection.-The efforts of the English manufacturers to destroy the American manufacture of won, and possess themselves of our market, have occasioned extensive bankruptcies amongst them in England, and reduced the price of iron considerably below the cost of manufacturers insomuch that a convention of iron manufacturers recently held there, resolved to reduce the quantity made twenty per cent, throughout the united kingdoms. With the control of our market they would infullibly regulate both the price and the quantity of the iron in this country—thirty-one establishments of which have appeared in western Pennsylvania alone, since the last tariff

The influence of protection upon wool, while it has been most beneficial upon the farming states, has had no tendency, that we are aware of, to injure the planta-tion states. The number of sheep in the United States is computed at about twenty millions; and their increase at about five millions since the act of 1828, which gave a great impulse to the stock. The farmers of Virginia, Pennsylvania, Ohio, New York and the other woolgrowing states, have an interest in this national property, ken at fifty-five cents per lb., nearly equal to the capital of the plantation states in the cutton crop of this year, reckoning it at thirty millions of dollars. reexoning it at inity initions of dollars. There is no doubt this, within three years to come, the farming capi-tal in wool will be more valuable than the plantation capital in cotton. Without protecting duties American wool would be reduced one-half in quantity and in price. The large flocks which now cover the immense and inexhaustible metures of the United States, most of them more or less of the fine Spanish breeds, must be again slaughtered, as has been heretofore the ease, for want of due protection, and this great capital in fleece sacrificed due protection, and this great cappus in invest estimated to that of cotton with commous loss to one interest, and with no possible advantage to the other. For like every thing clar, woollen goods have fallen from twenty to twenty-five per cent, since the last tariff. The instance of the country-five per cent, since the last tariff. The instance of the country-five per cent, since the last tariff. The instance of the country-five per cent, since the last tariff. additional clothiers into active enterprise, was to cause a decline in prices ruinous to many of those before engaged in the occupation. Under the influence of the improvement in the price of wool, woollen manufacturers have rallied again, but, at least as respects them. the charge of monopolizing prices is a cruel mockery, the charge of monopolizing prices is a cruel mockery. The advantages of the tardf, in its operation upon wool, have thus far been confined almost exclusively to the larming interest; the manufacturers have yet all their way to win; and the effect of that competition, which is the result of protection, eannot be known until it has

had longer time for operation.

The finest cotton and woollen manufactures are not yet much made in the United States, but we may assert without fear of contradiction that nine-tenths of the American people, who do not affect foreign luxuries and fashions, may be clothed with woollen, cotton, fur and leather labrics of their own country, better and cheaper, than either could have been obtained abroad if the tariff had

never been enacted. The greatest nistakes prevail to this repret; it is continually said, that hats, costs, boots and other articles of dress are dearer here than elsewhere. Such is not the ease with all those who are independent of foreign fashions. Those who enjoy superior wealth and study superior elegance, are at blerty to gratify their captree, at that additional expense, which such a gratification costs in all countries—in none more in the habit of paying more extravagantly for Freech, Asiatic and other fuxuries, than some of our opulent eitizens chure to pay, in like manner, for luxuries imported from abroad.

Whilst we assert that it has been the effect of the protective system to benefit the consumers by giving them manufactures cheaper than they had them before, we are willing to admit that prices lave lad a correspondent fall in the same articles abroad; but this fall of price abroad las been the result of the competition of American labor. It is impossible to advert to the fact that the United States export to foreign markets six times the quantity or domestic manufactures that they exported in 1820, and at present furnish incomparably the largest share of the home demand, without perceving the tendency of such a cumpetition to reduce the price of the same articles amongst all those nations who aim 54 supplying us.

But we hold it to be a common error to consider the comparative cheapness of the loreign and domestic commodity a test of the value of the system. Even if it were true that the domestic product were not reduced in price, and were to be procured only at a higher cost than the loreign, still the benefit of the system would be found in the fact that it enables the domestic consumer to afford the higher price for the manufacture, and there-by to furnish himself on better terms than he could have done when obliged to depend upon the foreign imported commodity—that, in other words, the increase of price, if it has taken place, cannot be called a tax upon the consumer, if the same system which has increased the price has also increased his means of paying That this increased ability to pay has occurred to a most beneficial extent, is evident in the invigorated condition of our agriculture in the last three or four years, during which period the value of the labor of the larmer, and with it the value of his land, it is well known; has risen some twenty or thirty per cent. This augmentation in the value of agricultural labor and espital can be ascribed to no other cause than to the increase of the manufacturing classes, and to the rapid growth of our home market under the protective system. During this period there have been no wars to create a demand abroad for our grain, but on the contrary, all the pro-ducing nations have been exerting their industry to the utmost, and maint-ining a rivalry against our own citizens which would have visited them with the most disastrous consequences of they had not found a steady and valuable market at home. The fact, too, that agricul-tural products have risen whilst manufactured goods have fallen, furnish the best proofs that the fall of prices are to be mainly attributable to the competition of domestic labor.

The loudest complaints of oppression proceed from the south, particularly from South Carolins; but that these complaints are not owing the tariff acts, is unquestionably proved by the fact, that their public press, their memorials to congress, and other mediums of complaint, were as much burthened with them before those acts, as they have been since. In the acquisition of the extensive and fertide territories sancxed to the United States by the purchase of Lousiaus the lands and property of the plantation states could not fail to be depreciated, by a vast accession of lands, at least as fertile, for all similar purposes. But it is inconceivable how a steady market for at least two hundred thousand bales of cotton a year, liable to no fluctuation from foreign unfluence, can be injurious to the cotton growing states; and, certainly, if the mhabitants of the less cauberant and more industrious latitudes of the central and eastern states, were not, from the influence of climate, or some other cause, less liable to excitement and less addicted to somplaint than their southern brethren, they have had much greater cause for it.

The article of sugar is a production of the planting tablishments now spreading throughout the U. States, states receiving the full benefit of the protecting system their agriculture, have revived their commerce, tem. If any application of the system operate as a tax on consumption, it would apply to the duty on sugar. It is true, the cotton planters of South Carolina will not admit that protection to the cultivation of sugar is any offset to their own faceied oppressions, but it is apparent that the lands and capital devoted to the cultivation of the sugar cane, are so much of both withdrawn from the cultivation of cotton, relieving that culture from the effeet of over production, the only evil which it has any reason to fear.

The bread stuffs, lumber, and nearly all the other staples of all the grain growing states are excluded from European markets by prohibitory duties. Whilst the export of cotton has quadrupled, that of bread stuffs has diminished in a much greater ratio with relation to the population of the states that produce them. If instead of spending their time is unavailing complaints, they had not conformed to circumstances, and turned their attention to manufactures, their grievances would have states have ever complained. Nothing sould relieve the farming interests of the middle states but their own manufactures and the manufactures of the eastern states. They alone supply that market which Europe denies. In addition to the incateulable consumption of bread atuffs by the manufacturers of the grain-growing states, what is equivalent to a million of parvels of their bread stuffs is imported every year into the eastern states; a relict, without which, the susceptibility of these states would have been tried to a degree of endurance far be-yond that exacted from their brethren of the south. It eannot escape observation, that while their sufferings are announced in most eloquent language, and in unintermitting remonstrance, yet there has been so little specification of the supposed causes, that it is denied by many, among themselves, that they suffer at all. There is even good reason to believe, that within the last five years, the interest on planting capital has been more productive to the owner, than the interest on the same

amount of capital employed in manufactures.

The states of New York, Prunsylvania and Ohio have invested a capital of enormous amount, which may be reckoned as at least fifty millions, within the last ten years, in what are called internal improvements, canals, railways, and other facilities of transportation. capital depends entirely upon domestic industry for its fruits. It would be a dead toss to the four millions of people who have expended it, and might as well be abandoned at once, without the protected products of domestic industry for its returns. Foreign commerce can vield it little or no service; and to destroy those guards hich secure to it the home market, would be to render it altogether a useless expenditure. Foreign comductive resources.

In our review of the operation of the tariff upon the various interests of the several states, it must never be lost sight of, that the one-fith of the cotton crop which is consumed at home, for which we may estimate the sum paid at six millions of dellars, is, in the course of a very short time, worked up by manufacture to at least thirty mallions of dollars, which is the worth of the raw material wrought into the various articles produced by manipulation: thus one-fifth of the crop of cotton manufactured becomes as valuable as the whole cotton crop, in the short space of six months after its purchase; and in the meantime diffuses competency and comfort amongst large numbers of the laboring classes of the community.

he policy of the protective system is happily and am ply illustrated in the growth and prosperity of the U. The union teems with proofs of its wisdom. All that Hamilton's masterly report predicted of its benefits, has been unfolded and is progressive beyond the most sanguine anticipation. All the objections refuted in most sanguine antenpation. An the objections return in his argument have disappeared in experience. The au-tagonists of the system not long since declared that it would infallibly diminish, if not destroy the revenue, and compel a resort to loans and taxes for the support of government: their present complaint is that the revenue

have vastly increased their coasting trade and domestic exchanges, and have mainly contributed to an abundance of the precious metals; they are the stablest pledges of independence and permanent peace, and the most acces-sible objects of taxation and productive resources in case of need. It was said that high duties would demoralize the commercial character of the United States, and the evils of smuggling are still insisted on and depicted in the most prominent colors. We know of no smagglings nor do we believe that it exists to any considerable ex-We know of no smuggling; tent. It is true, frauds have been practised upon the revenue laws to a degree that demands the notice of government; but we are happy to have this opportunity to bear testimony to the high and honorable character of our merchants, and to say that where frauds have been our merchants, and to say that where trauda have been discovered they have had their origin with those who are alien to our clime, our laws, and all the considerations connected with our welfare. They are frauda that affeet, comparatively, but a small portion of that vast amount of labor that owes its support to the protective system.

It was affirmed that this system would undermine commerce and ruin navigation; but they flourish and prosper beyond all expectation. It was to create a moneyed aristocracy: if aristocracy be possible with our inrevet arritorracy: It aristocracy to possione with our ma-stitutions, it certainly has not found an abiding place amongst manufacturers. It was to inflet a class of pas-pers upon our population: no such class exists amongst the industrious. It is still denounced as taxing the ma-ny for the benefit of the few but the many, with the power in their hands to change it, are its sturdy friends and supporters, proving that they, at least, deem them-selves gainers by the system; whilst the lew, on the other hand, never cease to tell us of the grievance of being subject to the majority.

A rapid increase of population, dwellings, culture, of the comforts of life and of the value of property, wherever manufactures prevail, bespeak their espaciny to dif-fuse happiness and wealth. The new industry that has been brought into existence has induced the consumption of increased amounts of the productions of the lan and has added to the prosperity of every class of agrieulturists. During the last aix years; under the benefit of protection, four hundred sugar plantations have been added to the three hundred previously existing in the state of Louisians, which now supplies two-thirds of the demand of the whole union. In the meantime, the price has been continually fulling, and there is every reason to believe that, within a short period, besides furnishing the home market, our planters will have a surplus for

exportation.
Our warehouses, workshops, and stores, abound with excellent and elegant wares of American inbrication, almost excluding those from abroad. Silver and plated ware, the richest glassware, procelain, household furniware, the respect glassware, processes, induseabout turni-ture and pleasure carriages, every articles of woolken and cotton clothing, copper, brass and tim wares, hard-wares, arms of all sorts, asoldiery, and every thing clo-made of leather, drugs, panets and oils, tools, utensils, and implements of all sorts, every kind of machinery, from the smallest instrument of entlery to a steam en-gine; nearly every thing that can be made of wood, iron, wool, cotton, glass, turs, the precious metals, whatever ministers to comfort, and most of the fuxuries; all the substantial and ornamental means of habitation, subsistence, transportation by land and water, clothing and delence, transportation by isn't and sub-water, folding and delence, are to be seen in every street, of every town, in every stage of process and transition, from the raw materials, which are abundant and excellent, to the removal of the finished article to distant places of pur-The principal commerce among the several chase. The principal commerce among the several states of the union is employed in the transportation of domestic manufactures, and managed by domestic exchanges, when have increased above all computation within the last few years. They insure domestic transportation within the last few years. They insure domestic transport the general welfare, by bonds stronger than any political test, infinitely stronger than armies or navies. Protection to these resources is, as it were, the Providence of our solitical being: ever quarding the industrious eigenstances. chase. n execusive. Redundant importations, some years ago, our political being, ever guarding the industrious el-imposed the necessity of a loan; the manufacturing estricten, while adding to the nation's wealth. Without his calling, but would be straitened and brought to ruin. Distress would be intense and universal. Stop the loom and the plough would work in vain; the ship would be unfreighted, and universal stagnation would succeed to the present healthful activity of our land. Is there an American who would raise his ruthless hand against the aystem which prevents such a calamity? who would recolonize his country from an unnatural disgust for its own productions, and morbid preference for those of Europe? who would bow before the woolsack of England, but spurn the golden fleece of his own soil?

Aversion to manufactures has engendered, of late, bitter local prejudices in parts of those states in which they do not flourish. Not long ago their promotion was in universal favor. When the venerable survivor of the framers of the constitution took the oath of fidelity to it, on commencing his illustrious presidency, the whole nation thought that he proved his patriotism by being clothed in a suit of American broadcloth. To doubt the constitutionality of protecting manufactures was not then conscitutionally of protecting manufactures was not then conceived. Even to question the policy of promoting them was limited to very few. The statesmen and the patriots of the south were among the foremost to vindiate both.

The general pacification of 1815 exposed our market to the overwhelming force of English capital and skill, with more fearful odds than we had to contend against in the hostilities then closed with Great Britain. flexibility of her restrictive system, and the exuberant resources of our own country for manufactures, alone enabled us to withstand the great influx of her fabrics, and constrained us to protect our market by that system which has led to our present prosperity. Is it the cot-ton growing states who would subvert this prosperity and lay us once more prostrate before the power of our eval? Those states who, for the article of cotton, enjoy-ed a duty which did not merely promote but absolutely created its culture? a tax upon all the other states, which was represented as a grievance by the report of the seeretary of the treasury in the very infancy of our gov-vernment, a tax which diverted labor and capital into new channels for the exclusive benefit of those states, at the expense of all the rest? a tax which had not the the expense of all the rest, a tax which had not the remotest connexion with the revenues of the country, but was imposed merely for protection? Is it, above all others, the state of South Carolina that can complain of a protective impost, while she enjoys a heavy duty on indigo, which she has ceased to produce, and which therefore all the manufacturing states pay under circum-stances aggravated by the fact, that while they are obliged to submit to this tax on an article indispensable to their manufactures, the very state, for whose benefit it was imposed, declines to cultivate the article!

By a special resolution of this convention, an inquiry was directed into the moral influence of our manufactures:-in compliance with which we feel authorised to say, in a word, that the imputations sometimes cast upsay, is a word, that the imputations sometimes can up-on the morals of manufacturing communities have prov-ed, according to the experience of this country, to be without the slightest foundation. On the contrary, it is believed that the moral and religious education of those employed in manufactures is, at least, equal, if not superior, to that of other classes of the community.

In concluding this address we would take occasion to observe that the present posture of the affairs of the United States impress upon us the necessity of declaring what we believe to be the sentiment of the friends of American industry, in reference to a great question which must, in a short time, occupy the attention of congress. Up to this period, the revenue of the government has not exceeded its wants. The debt has required a system of duties that would supply at least ten millions of dollars every year towards its extinguishment. That debt, under the present course of liquidation, will soon cease to exist. The nation will then naturally expect some reduction of duties. Participating in the common feeling on this subject, we cannot close this address without respectfully submitting to public consideration the expediency of applying that reduction to such com-modities as are incapable of being brought within the scope of the protective system; holding it, as we do, to be indispensable to the best interests of the American

that Providence not a laborer, not an artizan, whatever people that that system should be sustained and preserved, without diminution in its application to ever branch of domestic industry that may be benefitted by

Thus, fellow-citizens, we have submitted to your consideration our views of the construction of the constitu-tion upon the great question of protection. If it be the true one, you will assection and austain it; if it be otherwise, let it be rejected; for the constitution is the supreme law.

We have also submitted our view of the true policy of this country. We have stated and urged those principles, on which the system of protection rests, which we believe to be supported by the maxims of a sound philosophy, the experience of mankind and our own. mains with you to determine, whether that system of protecting your own industry, under which you have long advanced and are now prospering, shall be continued or abandoned; whether you will hold fast to that which your experience has proved to be good, or yield your-selves the victims of rash and untried theory. That serves me vectims of rism and untried theory. Inside incerly five hundred of your fellow citizens should convene, from sections of the country more than five hundred miles apart, to consult on these engrossing subjects, is itself an argument of the deep solicitude telt by the country at large in their discussion. To have sepa-rated without vindicating them, would have been a desertion of the trust committed to us. Their importance required that fullness of consideration which an enlightened and reflecting people have a right to demand. It has been our study to adhere to the utmost accuracy mour statement of facts, and to excreis the most perfect candor in our arguments. We therefore invite the strictest scrutiny to what we thus submit; whilst we are sensible that, with the silvantage of more time than the session of the convention liss afforded, it might have been presented in a more finished form. Deeply impressed with the gravity of the subject and the momentous aspect of our national concerns, we trust that our language has never departed from that tone of conciliation which becomes citizens of the same country differing from their brethren upon great questions of national policy.

But let us bear constantly in mind that the union, the happiness, the peace and the power of our beloved country depend on its domestic industry, without which these United States would cease to be an independent

Let those who acknowledge this great bond of union never forget that "united we stand and divided we fall;" that sugar, and iron, hemp and lead, wool and cotton, and the other productions of our diversified soil, elaborated by our own indefatigable industry, and protected by our own free government, are, in effect, the govern-ment that holds us together, and make us one people; that the home market is the pulladium of home itself in all its most embering and ennobling political and social relations; without which we have no common country, but should be reduced to the condition of dismembered and defenceless provinces. Let it therefore be the in-stinct of all who acknowledge its cause as their own, to stand together, like the fathers of the revolution; with no local jealousy, no impolitic preference of one part of our system to another, but maintaining a united and inflexible adherence to the whole.

Spontaneous conventions like the present originated our glorious revolution and our admirable constitution, May the Almighty Power that presided over their de-liberations, and that has never yet lailed to guard these United States, shed the gracious influence of his protection upon our labors!

on upon our labors:
WILLIAM WILKINS, of Pennsylvania, president.
JAMES TALLMADGE, of New York, 2 vice-president.
GEORGE BLAKE, of Massachusetts, dents. HEZEKIAH NILES, of Maryland,
JOSHUA W. PEIRCE, of N. Hamp.
CHARLES PAINE, of Vermont,

CHARLES FAINE, of Vermont, Signed, also, on the part of all the members of the convention—being from Maine 4, New Hampshire 20, Vermont 8, Massachusetts 62, Rhode Island 30, Con-nectiont 61, New York 146, New Jersey 47, Pennsylva-nia 100, Delaware 7, Maryland 34, Ohio 2, Virgins 3, District of Celumbia 1—Total 325.

# NILES' WEEKLY REGISTER.

POURTH SERIES. | No. 11-Vol. V. BALTIMORE, NOV. 19, 1831. (Vol. XLI. WHOLE No. 1,052

THE PAST-THE PRESENT-OR THE PUTURE.

BOITED, PRINTED AND PUBLISHED BY H. WILES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN ADVANCE,

THE ADDRESS. The "United States Gazette" of the ; 17th, says-"It appears to us, that the persons in Balti-more entrusted with the printing and circulation of the address, might have been less pointed in their neglect of the Philadelphia press. The New York papers, one day's mail beyond us, publish the aidress 24 hours before it is received in this city. Why is this?" fore it is received in this city. Why is this?"

The question is properly asked, and we have every

desire to make the necessiry explanation. The permanent committee, before they separated at New York ordered, (as the convention had been held in that city) that the publication should first be made there. It was expected by the chairman of that committee, that copies of the address would be forwarded to the New York edithe address would be forwarded to the New 1018 cur-tors by Wednesday's mail, and hence he lelt himself at li-berty to put it in type for his own paper of Saturday; but as the copies could not be sent until Fiday morning, he himself yielded obedience to the noder by delay-

ing the publication of the REGISTER until Monday noon, and aubjected himself to all the inconvenience that lollows such a proceeding.

Our triend, the editor of the "United States Gazette." that not observed a statement that we made concerning this matter, in our paper of the 5th inst. The Baltimore editors were as much "neglected," as those of Phila-

delphia.

"OUR COMMERCE IS CUT UP BY THE ROOTS," says the "Free Trade" press, while it boasts that the revenue from commerce will amount to thirty millions in the present year!—while the first is, that the price of ships was never before so high, or the business of ship building so lively, since the close of the wars of the French revolu-tion, as at the present time! We hear every day of the launching of splendid vessels. Let the grumblers go to the ship yarda, and be comforted with the merry sounds to the sum years, and we consurred with the merity sound of the hammer, the axe and the saw. They have not heard, what they may now hear, (and every where), for ten years past. And look at all our commercial eities! There will have been huilt in Boston, New York, Philadelphia and Baltimore, hardly less than six thousand good house in the enrent year. The arrests are every where lambered with stone, brick, and, lime and timber; old houses are every where being pilled down and new houses being buttle up. There is no "the" in this, as the Indam said of the Frenchman's queu. These are indications of prosperity, said the success of the "American System," that cannot be mistaken—though they may be unnoticed!

"Commerce cut up by the roots," indeed! The fee in

our chief seats of connecree is worth, at least, one hun-dred millions of dollars more than it was before the station ministrates of 1824. Rents, (nr interest on capital), have about doubted since then. onverting all the property-holders into tariffites. New York, the great scat of Englishmen and English commerce, will soon shew itself a tariff city!

We cannot absolutely state the fact-but personal observation, and in the ranges of houses that we have seen tennetless, have entirely satisfied as, that, from 1820 to 1824, our chief cities declined in population-but the desolation of the commerce-lestrogying toriff of 1824 came, and things are-beautifully, as they are? All is the, spirit, motion, and labor gues not supperless to bed! Will the "free trade philosophers" tell us the cause of such prosperity—yes, and of the rise of lands, and increased comforts and profits of farmers, whose whole foreign exportations are of less value, (hardly one-fourth the value of the bread-stuffs and wool), than the supplies which they send to Massachusetts, Rhode Island and Connecticut, only.

A good many ships have lately been built and fitted out, as packets, in the same style as the "North Americ ;" Vot. XLI.—No. 16.

described below, from the New York Commercial Advertiser. It such things do not shew that "our commerce is cut up by the roots"—"the mischiel's in them!"

Packet ship North America. Cupt. Robert J. Maey,

Packet ship yourn america. Capit Rouers a street, of the new packet ship North America, yesterday entertained a large party of friends on board. Those who participated in the banquet, speak in exalted terms of the viands, and of the courtesy of the host in dispensing them; and all who have the pleasure of an acquisintauce with eapt. Macy, will resultly credit their assertions. The North America has been built by the proprietors of the Old Line Liverpool packets, and takes her place on the 16th instant. She is represented as being one of the most finished and beautiful specimens of naval architec ture, which has ever borne the American flag upon the

The North America was launched about six weeks She is of shout 600 tons burden, apparently siner. "uniting in her construction, durability, capacity and swiftness in her model; and her cabin combines neatness swifess in her model; and her cabin combines neatness and comfort, without guidiness, in an excellent degree. She has twenty-eight hirths, including eight in the ladies' cabin, which is placed att—being a different location from most of the other packets, but not less convenient on that account. The cabin is of the lonic orders the pillars and pancels are tastefully varied with satin wood, maple and mahogany. The curtains are all of light blue moreen, ornamented with fringes. The dining room is a very capacious apartment, where thirty persons may sit comfortably slown to table, without a mast to interrupt the view—besides this, there is room to die twenty in the ladies' cabin. The skylights are so arranged, that an agreeable light is admitted into both cabins. The stern of this ship is tastefully ornamented; in the centre is a rising sun, above which is a spread eagle perched. On either side rec ines a female figure, eagle perched. On either side re ises a female figure, Cerea and Liberty, we presume—on the let handor the former are implements of agriculture, and the fruits of the husbandmam—on the right of the Litter, are bales of merchandise, and a ship in the distance, the whole en-ercied in a golden moulding. The bow % modest and neat—it presents nothing more to the eye than a seroll," In one word, this ship is another noble and beautiful evidence of the taste and enterprise of her owners. We tone she will perform in all respects equal to the expectations of the skilful and accomplished gentleman who is to walk the deck as her commander, and produce golden returns to her owners.

REDUCED DUTIES do not always affect prices to consumers. The duty on coffee was lately reduced 3 cents per lb. on mulasses 5 cents per gallon, and on sait 5 cents per busice—but colice has been worth about 2 cents, impasses a cen year. It is scarcity or supply that mainly affects price: 800,000 bales of American cotton will sell for more money than 1,000,000, and 25,000 hids. Maryland to-bocco for more than 30,000 hids. But when more is probluced than the market all freely take—and the piece, per th. declines—the laws of trude are set as the by "bit-terness and eurnings" of the—hand, as the author of every civil. It the south will "bullificate" quantity, there will be no reason to emplain of price!

CALCULATION! We see a very nice estimate of the duties leviell in Great Britain and the United States on the iron, duck and cordage required to build and fit-out a ship in 500 tons. The difference is made up in the sum of 1,655 dollars 89 cents, exactly, in favor on the British builder! So much for theory. Against this we plead the fact-THAT FREIGHTS ARE LOWER IN AME-BICAN THAN IN BRITISH VESSELS! Will the southern papers (deeply interested in navigation, as all southerners have lately become!) teil us how this happens!

is not the "proof of the pudding in the eating?" Mr. Thomas Ritchie, who knows a little more than every thing, explain-at this "momentous crisis?" We plain forward folks regard practical results more than the "rules of the schools."

There is "free trade" in our navigation with Britain,

and we excel in it: so shall we in manufactures, when they have been nursed half as long, and efficiently, as we have nursed navigation. In respect to many articles, the product of labor in both countries, our prices are as low as the British-instance cotton goods, and British counterfeits of our marks upon them? We shall have some curious facts about these things to present to our readers, belore long.

More CALCULATION! Sundry newspapers give us calculations as to the cost of certain articles in England and the United Sistes: for instance, that cloth, worth 100 cents the square yard in the former, costs 145 cents in the latter, &c. But these folks forget another important comparison of prices,—that, while from 22 to 30 cents are paid for a day's labor in England, from 62} to 75 are paid for such service in America; and that, in the latter, bread and meat are at much less than half the prices that they bear in the former-hence, the difference in wages for a week enables the American to pay the "ax" on all the cloth that he needs for a year—to say nothing of his cheaper and far better subsistence!

No PLEASING! That oracle of the North, the "New Hampshire Patriot," regards certain resolutions of a meeting at Concord, in which it was recommended that the duties on certain articles, (not produced or manufac-tured in the United States), should be reduced, as an abundament of the tariff policy—but the orsele of the South, the Charleston "Mercury," gives us to understand that such a proceeding, instead of relieving, would aggravate the burthens of the south!"

PREE TRADE. A writer in a New York paper gathers glories of free trade from Tyre, Palmyra and Venice! It asswered very well, when the merchants of these exites placed the value on all kinds of commodities within the placed the value on all kinds of commodities within the withe range of their commerce. But the writer, so far as we observe, gives no example of practical free trade in the present state of the civilized world, between different nations-and we guess that he will not essily find

MORE OF IT. England's "free trade" is to export her woollen, cotton, iron and other manufactures, without restriction-by the laws of any foreign country; and to exclude wheat and other corn, beef, pork, lumber, fish, oil, --- all the necessaries of life, whether products of the soil or of manufactures, that may, in any wise, come into competition with her own industry! Will some one of the "British party in America" shew us her ex-ceptions to this policy? Does she not tax our tobacco a thousand per cent, and our rice one hundred per centended per cent. and our race one indidded per centum? Nay, even place a duty on our castor oil equal to the first cost of the srticle, needful as it is to a wholesome freedom? We shall enlarge these suggestions at a season of more britishes they present.

HEMP. We soon expect some very important information as to the domestic production of this highly interesting material. We think it will probably appear, that the high duty imposed on it is about to have the general effect of our protecting laws, and reduce the price of the article below what it was before such duty was assessed. If this shall prove to be the fact-any small temporary inconvenience or loss that may have been encountered because of the encouragement offered to the domestic cultivation of hemp, will be a thousand times reimbursed in the benefits conferred on the agritimes reimbursed in the benchia conferred on the agri-culture of the United States, in the possession of a new and valuable simple commodity, to any nothing of its effect in rendering our country independent, for a ma-terial which is indispensable to private prosperity—and national defence. Except in respect to cutton, the Ei-ropean demand for the products of our fields is not worth counting up—if to be compared with the value of the home market for them, (and the crops of potatoes,

Will | turnips and cabbages are quite as valuable as that of cotton)-and whatever profits agriculture, in domestic supplies, necessarily becomes a matter of national interest, and this is especially one by which all sections of the union may be benefitted. The rich lands of the west and south, will, we think, in a very few years, under the benign influence of the protecting system, enable us to become exporters of hemp: in the growth and prepara-tion of which many thousand persons employed will be additionally set aside, as it were, to give new life and spirit to the market for bread-stuffs and meats. It is by such co-operations that communities become powerful and rich-that population advances, and plenty abounds.

UNITED STATES WEALE PISSERY. The following very interesting summary view of the extent and importance of the whale fishery of the United Sistes, has been furnished us by a gentleman well acquainted with the facts pertaining to this branch of industry.

The average length of the voyages of vessels engaged in fishing for spermacett whales, is thirty months.
In this fishery are employed 170 ships, or tons. 62,900 Valued at 30,000 dolls, each dolls. 5, 100,000

And employing 30 men each
The outfits of each ship, for a voyage of thirty months, is about 20,000 dollars-chiefly in the products or ma nufactures of our own country.

The average length of the voyages of vessels engaged in the common, or right whale fishery, is between 8 and 12 mouths, and in this there are employed—

120 ships, of 330 tons each dolla. 2,400,000 Valued at \$20,000 each And employing 25 men each no. 3
The outfit of these vessels averages 9,000 dollars.

Recapitulation. 3,000

hips.	Men.	Tons.	Value \$.
170 sperm.	5,100	62,900	5,100,000
120 com.	3,000	39,600	2,400,000
290	8,100	102,500	7,500,000
The average p	roduct is es	timsted at-	
120,000 bbls	. aperm. oil	, at \$22	2,640,000
100,000	common	9	900,000

\$3,540,000

It would be curious to pursue this important business in all its parts—beginning with the falling of the trees in the forest to build the ships, and ending with the final sales of the oil, or candles, manufactured. that it must efford a subsistence to not less than fifty thousand persons. And the general product would leave for every one—man, woman or child, seventy dellars a year, in the annual profit.

NANTUCKET. The editor of the Nantucket Inquirer, correcting an erroneous description of the island on which he resides, says:—"The exports are of the sperwhich he resides, says:—"The exports are of the aper-muceti whale oil, as well as right whale oil, whale bone and sperm, canilles. There are 50 manufactories of oil and candles. There were in 1829, 60 ships employed in whaling from this port. There are now 62 shins belong-ing to the port, and o ships are building for the whaling business. The value of this fleet as fitted, for sea, amount a to about 2,000,000 dollars."

WOOL A letter from Georgia, enclosing five dol-lars for a new subscriber to the REGISTER, any a-"1 that the time would never come when a sufficiency of wool would be produced in the United States to make a pair of stockings for every eat in them."

The woollen manufacture of the United States has now a greater value than was that of England when it became the pet and pride of the government and people of that country—both which were, and still are, ready to quarrel with all the world to protect and extend it! And, as to the Englishman's notion about the product of wool in the United States, we have good reasons for the bein the United States, we have good reasons for the oc-liel that last year's erop of wool was worth about an much as that of cotton. But we do not wish to antici-pate the facts soon to be disclosed through the committees of the late New York convention.

million of sheep—the last "grand list" shewed nearly 800,000. The flocks will be greatly increased next year. Vermont experted raw wool, of the last crop, which will be greatly increased next year. year. Vermont experted raw wool, or the mat crop, worth a million of dollars-notwithstanding the large amount of her household and other manufactures of

BALTIMORE AND OHIO RAIL ROAD. A large party, consisting of the president and directors of the company, the mayor and city council, and a number of other gentlemen, took an excursion on this road to Parr's Spring Ridge, a distance of forty miles, on Saturday last-examined the inclined planes erecting there, dined at their leisure, and conveniently returned in the evening, at the rate of about 10 miles an hour-all delighted with the journey, and more and more gratified with the execution of this splendid and substantial work. In about two weeks the whole road will be opened to Frederick, and some interesting interchange of courtesies will take place between the worthy inhabitants and corporation of that

city and those of our own.

The public stages, now proceeding to or from the west, pass these forty miles on the rail road.

The road, at Part's Spring Raige, is about 630 feet above mid-tide at Baltimore-or an average rise of nearly 16 feet in a mile.

We copy the following interesting sketches from the

"The inclined planes, as our readers are aware, are designed to accomplish, by means of stationary engines, the easy and rapid passage of Pare's Ridge, the dividing ridge between the waters of the Patapsco and Potomac, and the only point on the long line between Baltimore and Cumberland, where stationary power will be required. The apex of the ridge is more than eight hundred feet above tide. Most of the company ascended to the summit on foot, passing over the first and second inclinsummit on foot, passing over the arms and actifying, and was calculated to make a strong impression as to the magnitude and difficulty of the work. The planes are four in number, two on the eastern, and two on the western side of the ridge. They are prefectly straight, for the purpose of attaining the greatest degree of efficiency. The first plane is 2,150 feet long, with a rise of one foot in twenty-six, and a total rise of a fraction over eighty feet. Then succeeds an exact level of 3,674 feet, terminating at the foot of the second plane. The level here spoken of crosses the Frederick turnpike at the thirty-first mile, the rail road being carried over the turnpike and a small stream running at its side, by a handsome double sched viaduet of stone. The length of the second plane is 3,000 feet, with a rise of one loot in thirty, or a total rise of one hundred feet. The upper end of the second plane terminates at the top of the ridge, where there is a level of six hundred fret, affording full space for the advantageous location and operation of the stationary engines. At the western end of the summit level, the third plane commences; its length is 3,200 feet, with a descent of one foot in twenty, or a Then total descent of one hundred and fifty-nine feet. succeeds a level of \$,687 fret, terminating at the head of the fourth plane. This last plane is 1,900 teet long, with a descent of one foot in twenty-three and a half, or

a total descent of eighty-one feet.

'The united length of the four planes is nearly two
miles, and the length of the levels between and attached to them more than a mile and a half, making the extent of this formidable work three and a half miles, one half of which is on each side of the apex of the ridge. It will have been observed, however, that the height oversome by the planes is not equal on both sides,—that on the eastern side being one hundred and eighty feet, and that on the western side two hundred and lorty feet. The rails are laid down on various parts of the planes and levels, and every assurance is given that the passage of the ridge by horse power,—which is designed to be employed for the present,—may be accomplished in a about a fortnight from this time. The location and construction of the planes have been prosecuted under the immediate direction of Jonathan Knight, esq. the

The little state of Vermont is believed now to have a | sponsible station confided to him. The passage of the ridge, we are confident, will be generally regarded a amongst the most interesting and imposing features presented on any part of the road. The contrast which sented on any port of the road. The contrast which the scene presents, after emerging from the narrow valley of the Patapaco and ascending to the summit of the ridge, is very striking. The wide and fertile valley of the Monoscap presents a beautiful and highly picturesque landscape, the interest of which is heightened by the proceeding that the land high and the proceeding the process of the p nonredistant but not less distinct view of the Blue Ridge, the first of the range of the Alleghanies which meets the eye of the traveller on his journey westward,"

THE CHARLESTON AND HAMBURG RAIL BOAD-1323 miles of this road are under contract, and a great deal of the work has been done-637 persons are employed in forwarding it. It will be a highly profitable enterpriseand a most useful one.

THE GRAND OHIO CANAL is now navigated from lake Erie to Chillicothe—two hundred and fifty-nine miles.
What "ijewel" like this can the "ancient dominion" shew? What like source of profit to her population has she?

"THE POINT OF ROCKS." In the chancery of Maryland. The Bultimore and Ohio rail road company, vs. The Chesapenke and Ohio canal company.

Decreed, that the injunction heretotore granted in this ease, be and the same is hereby confirmed and made perpetual. And that the defendants pay unto the com-plainants, the Baltimore and Ohio rail road company, all their costs expended by them in this suit, including all the expenses of the survey.

[This case will go up to the court of appeals, and from thence, most probably, to the supreme court of the U. States, and the progress of our rail road, we suppose, be arrested until a final decision is had. We regret to feel compelled to say, that a dog-in-the-manger policy seems to prevail in respect to this matter, on the part of the canal company. We understand that both works, by making a joint concern, may pass the Puint of Rocks for much less than double the sum that it will cost either, if going on separately. ]

BRITISH PLOUR MARKET. The descritious accounts from England, and the operation of her uncertain duty on bread stuffs imported, are calculated to have caused the loss of at least a million of dollars to American shippers of four, in the present year. Nothing but half-starvation in John Bull will premit us to make fair exchanges even of bread, (and he rejects our meast altogether), for painted muslims or log-wood blue cloths.

Mn. THOMAS RITCHIE. The following is extracted from a letter from one of the most respectable gentleman of Virginia, addressed to the editor of the RESISTER:

"About the commencement of the current year, I became a subscriber to the 'Richmond Enquirer' mainly with a view of winessing the progress of the battle, which, as I understood, was under contrast between you and fixed Retchie. I am grieved, for the honor of my state, that my venerable follow cirizen has "backed out." You will excuse the old gentleman however, mass-much as he has been thrown into a peek of troubles by the splitting up of political parties. It has been the study of his life to keep in the majority; but, if things don't take a turn, it will puzzle even himself to find a safe resting place. His daily orison is "where the great at numbers are found, TREER let me be also."
"I join thousands of my countrymen in thanking you

for your successful efforts in the promotion of the true

interests of your country."

I Pl don't intend to let Mr. Thomas Rutchie know. that the arduous duties which have devolved on me, as chairman of the permanent committee of the friends of domestic industry, (raised by the convention lately held at New York), will utterly prevent my proceeding into the long-expected discussion concerning the tariff ques-tion, generally--which he promised many months ago sometiments of the plants are over projectic under the immediate direction of Jonatian Kinglit, eq. the to enter upon: for il he knows that—if he knows that company's engineer-in-chief, who has thus given a new my "hands are tied" for at least the remisideer of the and striking evidence of his peculiar fluence for the re-current year, he will lustify call out "who's afraid," or the projection of the proje targe his paper, and challenge me to meet him, before a ties not only to congress, as the other convention has, targe his paper, and challenge me to meet him, before a quick-speaking man could say "Jack Robinson!"—For this gentleman is ever valiant and prompt, when an adversary is weak or embarrassed; and will not "backout" when "suce and sarten" of obtaining an advantage over an opponent—even by "striking him when down."

He seldone "hits hardly" at any nerson who is un! That which he had trampled upon as a "nuisance," being elewhich - naturally obtains his homoge. Such is his prac-tical interpretation of obsta principits, at every "crisis!"

In a sleep sense of humility, I stediente the tollowing pregnant paragraph to Mr. Thomas Ritchie—always on-

thorbus !

Orthodoxy. The most exact description of this word I have ever seen, is that said to be given by Dr. Pother-gill, a physician and Quaker preacher of England. As e was a noted man, multitudes went to hear him preach. According to the common practice of that order of people, he sat sometime in silence. He then rose, looked round on the assembly, and thus addressed them—
"My friends, I have been thinking of one word of three sultubles, and that one word is orthodox." Here he haused for some time, and then proceeded to say - 'And passed for some time, and then proceeded to sa — And, my friends, I have been thinking of one word in three spliables, which explains it, and that one word is uppermost." He proceeded no farther, but ast thoun. The assembly separated and went to their homes. Some at first complained of going so far to hear lost two words, but afterwards, it was agreed, that the doctor delivered a very great and true sermon, and one easy to remem-

The "Richmond Enquirer," always dissatisfied with the proceedings of persons unless himself directing with the proceedings of persons unless times: a accoung them, has the following paragraphs concerning the late convention held at New York. [8th Nov.] "In reading over the large list of delegates which at-

tended this convention, and the states from which they went, we were derirous of obtaining one species of statistics, viz. the classes of employments to which they belonged-how many were manufacturers-how many farmers, (not of the woollen interest)-how many merchants—how many gentlemen who have written a book in favor of the tariff—in other words, how many delegates had a special interest in the subject, and how many were disinterested citizens.(1) The greater ease with which monied manufacturing capitalists can contrive for which monied manufacturing capitains can contrive for earrying their joints, than the great hody of the con-sumers, is specially noticed by the economists on the other side of the water, perticularly Adam Smith. With how much more effect they oppose all changes against them, has been lutter illustrated by the saying of the Euglish statesman, who compared the people to sheep muetly laying down to be fleeced-and these moneyed people to hogs-touch a single bristle of them, and you put the whole styc in an oproar.

"The N. Y. convention has shown no little sagacity in taking as many interests as they can me their conmation; and hence their anxiety to spread their him ac wife as possible. Hats, cabinet ware, and copies use in enlisted, as well as cotton, wool and on- gar less not appealed in vain-and even salt has hart if the pent representatives. Nothing comes amiss to the same who are strong only in their union. If good dascipline be sailed by numbers, they must prove irre-satible. They are like regular troops. Increase their army, and they are invincible. Whereas the great boily of the people are like your ill-trained militia—who fight to a disadvantage, because they want discipline. (2)

What strikes us, however, as the most singular lea-

ture in the N. Y. proceedings, is the creation of a comwittee to examine the effects of the protecting system, upon the currency of the country.—Do they mean to make common cause with the bank of the U. States? to treat it as a part of the grand American System-and to elub their interests and strength with those of that mammoth institution 2(3)

Whether it be so or not, we cannot but ailmire the strong police which they have thrown around their combination. Here we have a central committee—also the monarch of the memorial. Here we have two committecs to be established in each of the tariff states-depu-

but an effort to enlist the legislatures of each tariff state in their behalf. Here also is a convention to meet in Circinnati in January next-and another general con-vention in 1832, if called for by the central committee. he a word, their organization is very powerful; and it becomes the people to be on the alert—and avoid the fleecing as much as they can. "The Philistines be unon you. "(4)

NoTES OF THE EDITOR OF THE REGISTER. Notes by THE EDITOR OF THE REGISTER.

(1) I cannot tell. There were very many lariners, a considerable number of merchauts, a large representation of mechanics and manufacturers, and perhaps one hundred gentlemen who were as "disinterested" as in-telligent friends of the United States can be to the question, for or against it. - But I do not know what sort of furners Mr. Ritchie would have, if "not of the wool-len interest"—the crop of wool in New York having len interest"—the crop of wool in New York having been worth, in the present year, at least twice as much as the tobseco crop of Virginia, and that of little Vermont more valuable than the rice crop of North Carolina. The "whole log" idea about the "bristles," is entirely in character. (2) If the "great body of the people" were represent-

ed by the enemies of the protecting system in congress, in 1828, they cannot be called "ill trained," for on that occasion George Kremer, C. C. Cambreleng and John Randolph voted for the duty of 10 cents per gallon on molasses, with the members from the south generally! liats and eabinet ware, as well as cotton, wool and iron— and sugar, are protected. The mechanics have as deep an interest in the matter as the manufacturers-if a line may be drawn between the two interests, which it is not easy to ilo. In general, they are the same class of persons.

(3) To relieve Mr. Ritchie, we can inform him that the committee on the currency has no relation to the bank of the United States. It has entire reference to the influx of specie, when the domestic industry prospers, and its reflux when excessive importations of foreign goods ensue, and British agents succeed well in defranding the revenue.

(4) "The organization is very powerful"-and so it needs must be when it takes in, at least, the very least, two-thirds of all the citizens of the United States. Will these burt themselves? Who are the "Philistines?" Has population no relation to power? Let Mr. Ritchie take care of his own dominion! Virginia, if not now, will soon be a tariff state. The home market for all her products, except tobacco, is worth fifty times more than the foreign one. Massachusetts taken more of her flour than all Europe ennaumes. The people will find this out-after a while; having discovered that panta-loons are more convenient than breeches, and that there are better estimates of value than pounds of tobacco!

I caution Mr. Ritchie the more confidently, because of what his happened in Maryland. A short time ago, we had only one tariff representative-a true and faithful one, indeed. Peter Little; now we have seven positive, one probable, and one only against us! And what is the strangest of all—the worthy and dissinguished gentlemen who represent our two tobacco-growing districts, openly and mandully presented themselves to the people as Cariffmen," and, as such, were elected by triumpliant majori-tics. Only think of that, Mr. Ritchie!

NEW YORK ENQUIRER. The editors of this paper, with their usual disregard of truth, made several attempts to sow dissentions among the members of the late New to sow assentions among the memorro of the late New York Convention—thinking, perhaps, that the gentle-men composing it "didd" know" them! But mey so usclessly—and the rentil, and not the "fort, must have dissatisfied them, far, had misrepresentation availed them, they would have been proud of it." Such is the morality they would have been proud of it. Such is the mornity of this press—the senior children of which is a person "rewarded" by a high office under the government of the United States—and he is ably seconded by his mahogang-LOCK and percussion-STOCK condition!—whose interview with the editor of the U. S. Telegraph has made all men laugh, whose love of the ridiculous transcended their leelings of contempt.

Many things appeared in the "Courier," which we

see copied into some of the small country papers of New

the tollowing from that paper of the 2nd inst.

"It is not a trifling incident in the history of the late ta-"It is not a triting modern in the instory of the fact tariff convention, that a majority of them applianted when Mr. Goddard justified the proceedings of the Hartford convention—a body deemed to have such treasonable designs against the liberties of the country, that the late Daniel D. Tompkins, then governor of this state, had positive instructions to hold his command in restliness to arrest the whole body for treason; and on one occasion, in pursuance of the discretionary power vested in him, actually wrote an order for their arrest! Yet an entropy on this body was applauded by the late convention."

It is sufficient to say, that the preceding is fulse. We shall carry-out this matter by simply staring a re-nt occurrence. The editors of the "Courier," puffing cent occurrence. and blowing about the superiority of their own paper in the way of news, fabricaled a number of srticles, as if received by the ship Ajax—at ting that Warsaw had not surrendered, &c. They circulated these manufactures, surrendered, &c. They circulated these manufactures, and some of the other editors accepted them as truths. But those of that old and respectable paper, the "New York Gazette," soon detected the Iraul, and offered "filty dollars reward for the detection of the villain who been guilty of it," "In the course of the day," and been guilty of it. In the course of the way, asset the Gazette, "we were informed by serveral persons of respectability that James Watson Webb, one of the editors of the Courser and Enquirer, had declared that he "meant to claim of us the reward;" and we leave our readers to imagine our surprise on reading the following dun, in Webb's paper of yesterday morning.

(COPT.)

"We will thank Iriend Lang, of the Gazette, to send us over our \$50 reward this morning, at 12 o'clock

precisely."

precisely.

At 12 yearerday, Webb's own hour, the following note, and the receipt enclosed, was handed to the said James Watson Webb. Up to the time of our paper going to press, no reply was received by either of our concerns

Guzette office, Nov. 3, 1831. rier and Enquirer, the enclosed receipt for fifty dollars is sent for Mr. Webb's signature. When the receipt is returned, properly signed, the fifty dollars shall be sent by the bearer of it.

LANO, TURNER & CO." by the bearer of R. LANG, TURNER & CO."

Copy of the receipt, intended for James Watson
Webb's signature:

"Received, New York, Nov. 3d, 1831, of Lang, Turner & Co. fifty dollars, which sum they offered for the apprehension of the VILLAIN' who imposed upon them with the arrival of the slop Ajax; and I acknowledge

myself to be the guilty person."

Mr. Webb ought to have "gone the whole"—signed the receipt, and pocketed the money!

THE SOUTH is even yet filled with rumors and agitatoos because of the slaves,—which are kept abve, or increased, by some few sets of individual viol nec. We apprehend, however, that an ext-nsive operation has been going on to cause a general exotement among the slaves, and hence the people are much harrassed, in many parts of the country-out knowing wisses are treat condition in which they are placed. There have been many executions in Virginia and North Carolina, and some, we believe, in other states -about which sittle has

been said in the public papers.

The famous Nut Turner was taken in Southampton county, on the 30th ult. His place of concealment was in a cave, not many miles from the theatre of his bloody exploits. He has been tried, found guilty and

hung, and his body given to the surgeons.

nung, and nis pody given to the surgeous.

Various severe measures are contemplated against the free people of color—some even in Maryland. There is a disposition to txpl them from the slave-holding states: it can hardly be expected that the free states will receive them. What, then, is to be done? This is, indeed, an important question. Shall the unfortunate crestures be driven back and lorth, and suffer the "penalty of the law," because not allowed to have a home any where? A strong and vigorous action in respect to this matter, will speedly force itself upon the public atten-tion. It is not to be supposed that the present sgitted state of the white population of the south, will, or can,

York, and certain in other states. We shall notice only the endured. It will be relieved by violence-if peacetal We do not wish to go into measures are not adopted. particulars—but society is placed in a very distressing condition, in many parts of the south, filled with doubts, and alarmed by the most triffing and really harmless occurrences. It especially becomes tree people of color to be guarded in their conduct and conversation. may do much harm to the whites-but, in so doing, seal their own destruction.

Several vessels are about to depart with passengers for Liberia. The expant of slaves, southwardly, is large. Their reception, it is thought, will be denied in

some of the states.

It is charged against the slaves lately condemned, that a number of them were "preachers of the gospel"—and that those who had been the most kindly treated and were the best informed, were most prominent. The bearing of these remarks is easily seen, and will add to the burthen of suffering.

NATIONAL REPUBLICAN CONVENTION. John B. Morris, esq. has been appointed to represent the city of Baltimore in the convention which is to assemble in this esty in December next, in place of Hilliam Birt, esq. who resigned his appointment on accepting the automa-sonic nonunation for the presidency of the U. States.

A LITERARY CONVENTION was opened at New York on the 5th inst, and continued several days. On motion of Mr. Gallatin, Mr. Adams, late president of the United The business transacted States, was called to the chair. sinteresting to literature and science—but we cannot go into details of the proceedings. The meeting was numerous, and highly respectable for character and talent.

DR. RANDOLPH, late clerk in the war department, has been appointed "general messenger"-(so it is stated), to our ministers in Europe.

Major Earon has partaken of a public dinner at Nashville-the mayor of the eny, presided, assisted by the speakers of the senste and house of representatives, the legislature being in session. On being toasted, major E. rose and addressed the meeting, returning his thank, and presenting a general view of the course of the ad-ministration, and concluded by offering the following sentiment -

The members of the general assembly of Tennessee, and the inhabitants of Nashville. United to-day around the festive board—they know and feel no other ravalry, than as good and latthful entrens, to serve with fidelity their country and maintain its best interests.

One of the regular toasts was in these terms—
Woman. Where woman is the theme, palsied bo the
hand and blistered the tongue, that could be raised but to defend her or speak but to praise her.

The following were among the volunteers— By Dixon Allen, esq. of the house of representatives. Unworthy indeed is that spirit of party which would own its success to woman's ruin.

Dy ware P B Nowland, Hon, John H. Eaton-11:
has perilled his all in the cause or reputitional.

sterling integrity and political honesty have concentrated on him all the slander and abuse of disappointed arebition-he has suffered much, but has gloriously terumphed-Tensessee will not lorget to reward him. By Thomas J. Campbell, clerk of the house of repre-

sentatives. A resolution in favor of electing Andrew Jackson to the presidency a second time.

And the question being taken in agreeing thereto, It was undimously determined in the affirmative.

By James D. Smith, of Jackson county. The hou. John H. Euton-His warm reception at Nashville is but

the echo of Tennessee's undivided voice.

By Francis Campbell. Jackson and the re-organized cabinet—behold how good and how pleasant it is to dwell together in unity.

By Mr. Roberson of the house of representatives. Hickory oil—the best autidote against Kentucky Clay.

By gen. Chestham of the bonse of representatives.

The bank of the United States - it has given us a sound currency-beware of its prostration.

the close of anti-masonry be nullified and meet with the fate of the British below New Orleans.

By espt. T. P. Minor. Martin Van Buren-"The

great magician," whose wand has been so potent in pro-

great magena," whose want and been so potent in pro-moting the interests of his country.

By McClellan of the senate. The president of the U.
States—the anchor of hope against a proud and monied aristocracy, whose mighty engine is the United States

By eol. Wyly, of the senate. The present bank of the United States and the tariff—the best policy of our government requires a modification of the latter, and a refusal to re-charter the former.

MR. RANDOLPH. This strange ex-minister from St. Ma. Randern. This strange ex-minister from St. Peteraburg, who was too siek to do business—too siek to eall at Washington on his way home, too siek to day thing—has, as we learn by the Lynchburg Virginian, maile a three hours speech to his "dear constituents." It is now just about nine-teen years since the legislator of Georgia repudiated his name, (which had been given on one of the counties of the state), because ol his vide-sertion of correct principles," and that his name "was odious to every republican citizen;" when also the vener-able Mr. Ritchie called him a "nuisance and a curse" but now it is "orthodox" to regard him as almost "a god"—because that he talks! Whatever listh, he done but talk? The idea that such a man would attend to business, was hardly less ridiculous than that the legacy of £10, which some one left to pay off the national debt of Eugland.

COM. PORTER has arrived in the U. S. ship John Adams at Constantinople, as charge to Turkey. The ship was permitted to pass the Dardanelles, and a letter from Smyras, dated Sept. 20, says that he had had a audience with the grant seignor, and that the negotiation had terminated favorably. It is considered as a material change in the citiquette of the court of Constantinoparation. tinople, that a diplomatic agent, under the rank of an ambassador, should have obtained an audience with the "brother of the sun and moon," who begins to find out that the stand-still policy is reducing the comparative power of his empire—as we hope that some other persons, much nearer home, may speedily do! The sof improvement is abroad—and dominion follows it. The spirit

MR. PUINDEXTER. The official station of this gen-tleman, induces us to copy the following letter from him to gen. David Dickson.

Dear sir:—I received you rator from Jackson, addressed to me at Washington city, and am for the first time informed, that you had not seen my letter addressed to you at Vicksburg.

Von state, that an impression was made on the public mind by the contents of that letter, or some other matter- that I have deserted the Jackson cause. There is terminal I have deserted the Jackson cause. There is one that I have deserted the Jackson cause a processor of the Jackson cause and the Jackson cause and the Jackson cause is consent to working men; I how only at the shrine of principles, and when these are departed from by any man in power, how backson, Calhous, City or any one else, I depart the country, and the rights of my constituents. If this is heresy, then am I a heretic, but I know the people of Missistantic for well to luttone for a moment, that they Mississippi too well to suppose for a moment, that they wish me to sacrifice them on the alter of personal ambition or private interests. So far as gen. Jackson conforms his action to the constitution and the good of the American people, he will have my hearty support, and no farther. No honest man would expect or desire more. Gen. Jackson has done much good for the country, which I duly appreciate, and award him my thanks for the benefits resulting from these measures; but it is undeniable that he lends his ear too readily to individuals near his person, who are incompetent to advise him, and unworthy of public confidence; they sometimes lead him into errors which no one deplores more than I do, because they operate against the cause which I have warmly es-

By W. H. Bedford. May all aspirants to office under poused, and tend to bring into power men whose prinee closk of anti-masoury be nullified and meet with the 
eiples I cannot approve. Such men speculate upon the 
capital of the "old hero" without paying interest, and capital of the "oil nero" winout paying interest, would it will be well, if they do not exhaust the principal before the end of his term. You have doubtless seen all that has passed at Washington, concerning the late eabinet, &c. These events have withilrawn many of the warm supporters of gen. Jackson, but if the pending contest for the presidential chair is confined to Clay, my opinion is the president will be re-elected.

> JUDGE MARSHALL, we are happy to learn from the Philadelphia papers, has so far recovered, that next week he intends to hold the circuit court for the southern distriet of Virginia, from which he was never known to be absent since his appointment to the bench.

GEN. VAN CORTLANDT. From the Westchester, N. Y. Herald, of Nov. 8. We have to lament the death of another distinguished patriot of the revolution, gen. PHILIP VAN CORTLANDT, of this county, died at his residence in the town of Cortlandt, on Sunday, the 5th instant, at 8 o'clock in the evening, aged 82 years. He was at the 8 o'clock in the evening, aged 82 years. He was at the time of his decease, the senior surviving offseer, in the country, of the army of the revolutions. During the revolutionary war he was the companion of Washington and Lalayette. He had the command of a regiment in the continental army in the line of the state of New York, and served his country in that capacity honestly and faithfully, enduring every hardship and privation, until the close of the war. He was at the taking of Burgoyie, at Saratoga, and distinguished himself as a galiant officer at the battle of Beman's Heights, previous to the surrender of Burgoyie. He was one of the members from this county of the state convention, held at Poughkeepsie, in 1788, for the adoption of the constitution of the United States, and his vote was recorded tion of the United States, and his vote was recorded in non or me United States, and his vote was recorded in favor of that sacred instrument, which was carried in this state by a majority of only three. He was aften-wards elected by his fellow citzens a member congress of the United States, and served his country in that capacity for several years in succession, with much ability. He was remarkable for his personal dignity,—and com-bined two traits of character seldom united in the same person, loltiness of manner with urbanity of disposition. No man was held superior in estimation, either on account of amiableness of manuers, or benevolence of

A COMPLIMENT! The editor of the New Hampshire Patriot says-"We had rather be the writer of Mr. 

FLORIDA. It will be recollected that the governor of this territory, having pronounced a the between colonels White and Gadrien, as at delegate in congress ordered a new releasing, but it seems that on the day appointed, some places of voting were neither attended by the judges of the election nor the people. At others, however, they were partially attended, and the votes appear to have been nearly unanimous for col. White.

FATETTEVILLE. A meeting of the sufferers by the FATETTEVILLE. A meeting of the sunerers by the fire which swept down the town of Fayetteville, in North Carolina, in May last, was held at that place on the 26th ult. The committee appointed on behalf of the unfortunate sufferers, submitted to the meeting a statement of the amount received from the several states, towns, and individuals. The gross amount is a little upwards of \$92,000. A committee was appointed to make a suitable acknowledgment to the contributors, for their great

[A list of the places from whence the money was reecived, we suppose, will be published. It ought to be.]

COTTON. The following summary views are abstracted from the "Naw York Shipping and Commercial Register."

		680	WTH.		
Total	1 crop	of 1824-5	******	560,000	bales.
Do	do	. 1825-6			
Do	do			937,000	
Do	do			712,000	
Do	do	1828-9			
Do	do	1829-30			
Do	do	1830-31.			
		CONSUM		.,,	
o estima	te the	quantity ma	nufactur	red in the	
U. Stat	es, we	take the gro	wth of		
the year	r			1.038,847 1	oales.
Idd-Ste	ocks or	hand at the	e		
		nt of the year			
(1st Oe	tober, 1	830)-In the			
Souther	ra port		20,898		
Northe	en port	8	13,997		
	•			34,895	
				1	,073,742
Deduct to	herefro	m-The exp	ort		
to	foreign	n ports		772,783	
Stocks	on hand	at the close			
		1 st October,			
1831	)-In sc	outhern ports	42 956		
	Do	orthern do	76,467		
				119,423	
				892.206	

Quantity consumed and in the hands of the manufacturers, 1830-31 182,142 Consumption of 1829-30 126,512 Do. 1828-9 118,853

606

Less-Foreign cotton, included in the

export

Do. 1827-8 120,593
Do. 1827-8 120,593
The crops as received or produced, are thus put down for the years 1830 and 1831, ending 30th Sept.

1830. 1831. 354,024 New Orleans 426.485 Florida 5,787 13.073 Alabama 102,684 113,186 Georgia 253,117 230,502 South Carolina North Carolina 188,871 185,166 36,862 36,540 33,895 Virginia 35,500 976,845 1,038,847 976,845

[We are of opinion, though the preceding statement may be as correct as the nature of things will admit of, and have no doubt that it has been made up with great care—that the giren amount of the production and domestic consumption must both be considerably short of their real quantities. Much cotton is consumed in the household manufactures of the sistes in which it is grown—much is shipped from the small ports and not count-dements in carried from Tennessee, Sec. inland, and reaches Bultimore, Sec. and large quantities ascend the Massissippi and Ohio, for the use of the western lactories and people—a part of which also arrives on the seaboard, by wagons.]

Barrian axronry or sold and silver. A London paper of September 24, says—The exportation of the to-day good paper of September 24, says—The exportation of the to-day good paper of the september of the present month, the present month, the extreme the sold sold silver coin at the vertice for the shipment of gold and silver coin at the vertice for Hamburg have been 560,000 ounces of silver, payment of a 25,000 ounces of gold coin and bars. For Calair, equivalent 270,000 ounces of silver, and 15,000 ounces of silver, and 25,000 ounces of silver, and 15,000 ounces of silver, and 25,000 ounces of silver, and 25,000 ounces ounces of silver, and 25,000 ounces ounces ounces of silver, and 25,000 ounces ounces ounces of silver, and 25,000 ounces oun

ounces of gold coin. For St. Petersburgh, 210,000 ounces of silver coin, and for Riga, 10,000 ounces of silver coin. The value of the gold and silver coin and bars, entered for exportation, is nearly a million and a half steeling, in addition to the very large amounts entered for exportation during the previous month.

[Why these exports have taken place is not suggested.]

HORTENSE BEAUMARNAIS. It appears from the celebrated debste which commenced in the French chamber of deputies on the 21s September, that this lady, the daughter of the late empress Josephine, took refuge in France when the revolution broke out in Italy. M. Perier, the president of the council, in his speech, thus alludes to the circumstance. It will be recollected that one of her sons joined the revolutionists, and that his lite left a scarifice to his exertions in their cause:

"M. Manguin has uttered mysterious in their cause.
"M. Manguin has uttered mysterious in language relative
to a mother and cluid in the rue de la Paix. Well, gentleman, I have a secret to reveal. An unintrinnate wirman,
comproseed by one of her children, was driven from
the second of the control of the control of the control
to was action treaspeces. She applied through a sole
medium, to the king, asying, "The laws condemn any
child and myself to death. I throw my self upon your
generosity. I could only escape in passing by France,
light you my word, as soon as my child is setter, I will
quit the country." As a minister, I was bound to respect the name of a man whose statue the king had
given orders to be restored in the Place Vendome. I
made known the circumstance to the king, and succor
was sent to her, upon her giving her word that she would
proceed to England. Her promise was fulfilled. Gentlemen, I slid not think it my duty to denounce this
woman to the tribunals." (cheers.)

BRITISH IRON MANUFACTURES. From the United States Gazette. The following is an extract of a letter from a highly respectable source in England, to a house in this city, the contents at the present time are especially deserving notice.

ly deserving notice.

At a meeting of the British iron masters held on the 10th August, 1831. It was resolved,

1st. That it is the opinion of this meeting, that the

lat. That it is the opinion of this meeting, that the quantity of iron made, has for some time exceeded and still does exceed the demand.

2dly. That the consequence of such excess has been so to reduce the price of iron, that it has ceased to reminerate the iron masters for the capital employed.

3-dly. That to restore the trade to a sound and healthy state, it is the opinion of this meeting, that a dimuntion of the make of iron should be effected to the extent of 25 per cent. on the quantity produced by each work, when in full operation, and that such ilimination should continue for the space of twelve months.

4hly, That it should be recommended to the makers of irou in the respective districts of South Wales, Staffordshire, Shropshire, Yorkshire, Derbyshire and Socialiti, ospoint emmittees equitably to arrange the make of the respective works, as that the said reduction of 75 per cent. may be effected, and that the committees so formed commissions with each other, and report to the claimman of the present meeting a hea the object is effected—while report, it is requested, may be made by the 21st September next, so that he may call a general meeting of trade, to determine on future proceedings.

meeting of trade, to determine on future proceedings. It is stated to us upon suthority not to be doubted, that a single house in England, concerned entirely in the iron trade, and especially in the shipment of bar iron to this country, has recently failed for one suffice mountainty.

LIQUID SUGAR. New Orleans, Oct. 22. We have to-day good news for the sugar planters of Louissian. The secretary of the treasury has fully sustained Mr. Gorston, the collector of this port, in his attempt to prevent the introduction of dissolved sugar into the United States, under the name of sirp de batterie, upon the payment of fifteen per cent duty ad valorem, which is equivalent to about one-half cent per pound, upon the sugar into which it is, immediately upon its arrival, reconverted.

Treasury department, October 6th, 1831.

Sin:—I have received your letter of the 20th alt with its enclosures relative to the attempts alleged to have been made in your district, to evade the payment of the duty on sugar, by introducing that article in a liquid state. Upon the view of the subject which these papers present, there appears to have been justifiable papers present, there appears to have been justifiable eause for the seizures made by yout and by pursuing that course, you will at all events, have afforded an op-portunity for obtaining a judicial decision on the questions involved in the case.

If other importations of the article are made, and the im-Hother imports ions of the artiste are mane, and one more more requires to enter and up duty on the angar, it may be admitted to entry accordingly. Similar instructions will be given to other collectors. I am, very respectfully, your ob't, serv't. Loyis McLars,

Secretary of the treasury.

Martin Gordon, esq. collector of the customs, N. O.

STRONG TERMS! The Louisville Journal says that STRONG TERMS: The Louisvine souther rays and the "Globe" speaks of the ex-secretaries, so "consti-tuted into a cubul, and concerting a plot, which, in ve-nom and malignity, in villainy and turpatude, might defy the condensed corruption concentrated in the crucible of hell, by the fiend-tike ingenuity of the spirit of the damn-

THE KIRK OF SCOTLAND. There are under the general assembly 16 synods, 79 presbyteries, 952 parishes, and 987 ordained ministers-besides 39 parishes called paryor organicum ministers—nessues 39 parasies cartiet par-lamentary, and 5d chapters of east roinal 1,052 couprega-tions and 1,087 ministers. Of all these, (except in the chapels of case), there are only five ministers who are selected by those who pay them!—581 being appointed by individual noblemen, and 289 by the erown, the rest by town councils, &c. The salaries of the ministers, however, have the merit of being moderate—the highest does not exceed 600% and the lowest is worth 150, besides the use of a house and four acres of land: thus several of the fat ones of the English church consume several of the finits of the laboring people as fifty of the best provided for elergymen of the church of Scot-land, with burdly doing a fitteth part of the duty of the latter.

CONSTANTINOPLE. Nearly the whole of Pera has been reduced to ashes—alout 4,000 houses being destroyed, on the 28th August, including all the palaces—except that of the Austrian mainter. The violence of the wind of the Austrian minister. The violence of the wind at read the flames so rapidly, that most of the movesble property was also destroyed,

YOUTHFUL DEPRAYITY. In looking over some not very recent London papers, we were struck with the recorder of London's report to the king, of prisoners under sentence of death in Newgate, after the last February sessions. Of the 27 persons capitally convicted, 19 were of and under the age of 23; of these one was only aged 10, another 12, another 14, another 16, two, (one of them a girl), 17, two 19 and several 20. Of the 27, only one was ordered for execution—Ellis aged 23.

Onto. The Cincinnati Gazette says that the senate of the state consists of 16 Jackson and 20 auti Jackson up m bers, and the house of representatives of 30 Jackson and 42 anti-Jackson.

The legislature of this state met on the KENTUCKY. KENTUCKY. The legislature of this state met on the fit inst. Mr. J. J. Grittenden was eleved spaker of the house of represensatives, without opposition, and Mr. B. S. Tout re-elected clerk, basing no opposition, and as was Mr. Stonestreet, elect of the senate. All these are "national republicans." The election of a senator of the United States was assigned for an early day, and we shall hear of it speedily.

GEORGIA. Mr. Lumpkin was installed at Milletlge-ville on the 9th inst, the votes being counted, it was ascertained that his majority was 1,442. He had been received and was essented into the town, by an "im-mense cavalcade," which seems much to have offended his opponents.

On taking the oath of office, he delivered the following address.

Fellow citizens. Called by the voice of the people of Georgia, to the first office within their git, I approach the responsibilities of the station with unaffected humilithe responsibilities of the station with unancered instance, the try and difficience. But for a firm reliance on that was done which comes from above, and an unabaken confidence in the virtue and intelligence of my constituents, I should shrink from the magnitude of the arduous and complicated duties of the office confided.

The basis of my political ereed is confidence in the unofficial sovereign people. They are the only legati-timate source of all governmental power, and I believe them to be not only capable of sell government, but of wise self-government. There fore, my only hope of retaining their confidence, will be in a faithful discharge

of my public duty.

To this station I bring no spirit of party animosity, or

political strife. I have no pledges to redeem, nor vin-dictive feelings to gratify. I am now the servant of aft. I avail myself of this occasion to re-affirm what I stated to the public in February last -that "it is my most ardent desire to see the whole people of Georgia united on the great subjects of political interests and principle, which are inseparably connected with liberty and the perpetuation of our federal union. 'The federal union must be preserved;' and it can only be done by the general and state governments confining themselves within their respective constitutional spheres."

Pure patriotism demands of every public functionary a voluntary sacrifice of all political prejudices, which may stand opposed to the public interess. Thus far I make a free will offering of my own, on the altar of the

public gnod.

In the presence of that portion of my fellow citizens here assembled; and in that of Heaven, I now proceed to bind myself by the solemnities of the most sacred obligation, to discharge with zeal and fidelity, the duties of the high trust to which I have been called.

ITEMS-ILLUSTRATIVE OF THE ARTS, MANUFACTURES, INTERNAL IMPROVEMENTS, AND RESOURCES OF THE UNITED STATES

Mr. Inlay, of Baltimore, has manufactured two sples the West Branch Selius Ikill rail road. has now thirty such cars under construction for different rouls, at his extensive establishment.

Putent planing machines are in use at New York and Philadelphia, and one is about to be erected in Baltimore. One of these machines prepares from four to five hundred planks for the fluors of houses, &c. in a day, with greater accuracy than they can be prepared by hand.

Casks. The stayes and heading for casks are fitted

with astonishing rapidity, by a machine at Wareham, Musauelmsetta.

Cotton goods, to the value of 1,348,183 dollars, at their present duninastied prices, were exported last year. The exports of the current year will much exceed that

SHID. Gold. They are finding gold in Autauga county, Ala. which is thought to be as rich in the precious metal as from \$1 50 to \$3 per day,

from §1. 50 to §3 p.r.day.

Gimeng is dug plentifully in Western Virginia; dealers gave 25 eents per pound, for the drear oots, by which the digger can get 13 to 2 dollars per day, 3 pounds of green making one of dry. One root was dug lately, 3 inches round and 11 long, weighing 8 ounces.

Lead, &c. A rich mine of lead, maxed with copper, some 2 me and a quantity of silver, has been discovered.

in Lubec, Maine. It is said to be mexhaustible. Many

tons of ore have been taken out.

tons of ore have been taken out.

The great Ohio canut is navigable southwardly to Chilheothe—and a rapid rise of property in that town has tollowed. The "American System" Ox, the largest ever seen in America, was exhibited at the festival lad, when the first best reached Chillieothe.

Illinois and Michigan. The cost of uniting the lake to the river by a canal, is estimated at only 125,925 dol-The increased value of lands on the main line of American types. The Kingston Jamaica Chroniele

twits the Courant for 'appearing in a full suit of Ameri-

ean types." The only wonder is, how they could ever get them there. Perhaps John Bull, in his double and treble fortifications for his own manufactures, never dreamed that the Yankees could make printing types.
[Boston Putriot,

Noits. One thousand brads and sparrow bills can be made in one minute, with the machines used by the How-ell Works co. and 13,000 could be made; but the machines were not considered strong enough. The ma-chines were made by the foreman, Mr. Charles Make-[N. Y. Gaz.

peace.

Boat building. From the best information we can
collect, there will not be less than from eight to nine
shousand tone built upon the Ohio this year; and could hands have been had, there would probably have been at least two thousand tons more built in this city than there were. Among those building at Pittsburgh are the Mohawk of seven hundred tons, and the Baltic of

five hundred.

Grupes. Mr. Garrett, of New Garden, Penn, has one aere of land in grape-vines, 3 years old. He sold as many last season, at Philadelphia, as brought him

\$200!

MORRIS CANAL. It gives us pleasure in publishing the following letter addressed to Mr. Colden, the presdeat of the company, to announce the completion of this

Greenwich, November 4, 1831.

To Cadwallader D. Colden, esq. Dear sir-Permit me to announce to you the safe return of the boat upon which we were passengers to Newark. She reached the short level at the bend of No. 9 on Monday last, where she was detained a day for want of water, which was occasioned by a small breach upon that level; a part of her cargo was dischargbream upon that every a part of net long of was themselved here yeateday, and thus morning we despatched her to Easton, where she discharged the balance and returned to our basin, where she is now ready to receive a load of flour, which we intend forwarding on Monitay next. I am gratified that the passage of the first boat from Easton to Newark, and her return from the state of the first boat from Easton ewark, and her return from thence to the waters of the Delaware, where she was also first to deliver a cargo, has been made under such favorable circumstances as to reflect the highest credit upon the operation of every thing connected with the canal. The planes were all in order, and performed admirably. Two boats belonging to the company, laden with coal, passed boat belonging to the company, name with coat, passed up the Delaware this day, and a private boat, called the "Walk-n-the-Water," also passed during the alternoon.

Very respectfully yours,

F. GREEN. Very respectful'y yours,

# BRIEF NOTICES.

The English clergy. Sir William Blackstone, in his commentaries on the laws of England, says, that if the English parlament had not passed their "restraining acts, the clergy would have, by that time, owned every foot of land in England."

The mait couch, which left New York on the 6th inst. at 3 o'clook, P. M. arrived at Philadelphia in eight hours forty-two minutes, with eight passengers, including the driver, and much baggage and the mails—in all computed at 2,500 lbs. This was "smart" travelling. The

ed at 2,300 tos. This was "sinare traveling, and stoppages were included in the time. Mr. Emmitt's monument. Yesterday an immense column of white marble, from the Westelester quarry, mittened d as a monument to the memory of the late Tho-mas Addis Emmett, a as moved, with labor, from the foot of Folton street on the North river, to Broadway. A pediment of the same material, about six lect square, has been laid in St. Paul's church yard near the corner of Fulton street, on which the column is to be creeted. The weight, we were informed, is 27 tons.

[N. Y. Cour. Died, in St. Mary's county, Maryland, eapt. Michael R. Carroll, late of the U. S navy, aged about 63 years. He was a midshipman, and selected, by Decatur, to aid in the destruction of the Philadelphia frigate, at Tripoli. -, in Lenox, Muss. William Walker, esq. aged 80, of whom gov. Lincoln has said that he was the "most venerable man that he ever saw." He was a soldier in 1775. In Anne Arundle county, Mid. capt. Chartee

Croxall, aged 69. At Otsego, N. Y. Samuel Hyatt, Croduin, agen op: A Origon, N. F. Schnetz again, aged SS. In Shelburne, Mass. Ferjuanin-Mervill, aged SA. In Shelburne, Mass. capt. John Fellows, aged SO. Al Valpole, N. II. capt. Joseph Fug. aged 69. In Mercer, Maine, capt. Berjamin Buxter, aged 74. At his seat near New York, gen. Philip Fun. Con Manth, aged sear near New York, gen. Fruith Fun Courthondia, aged \$2. At Bacon Castle, Jease Moore, paged \$3. At York, Penn. col. George Spangter, aged 73. At Workneter, Mass. capt. Peter Stater, aged 72. At Providence, R. I. maj, gen. Barton—all soldiers of the revolution.

Post offices were first established in Paris, 1462; in

England, 1581; in German, 1401; in the Turkish domi-nions, 1740; regulated by Parliament, and made general in England, 1656; and in Sociland, 1085. The great fire. Accounts from Constantinople state that the losses caused by the configeration of Pera amount to above 30,000,000 of Spanish plasters (about 160,000,000 of tranes), or above £6,000,000 sterling.

St. Clair's defeat. It was forty years on the 4th inst. (November), since gen. St. Clair was defeated by the Indians and British, in the western territory, which then was a wilderness, but which now is a populous and flourishing part of our country. In less than half that time bence, the state of Ohio will be second to none in the

The Roman Catholic church in Sheriff street, New York, was totally destroyed by fire, a few days since. It in supposed to be the work of an incendiary. It had recently been repaired at an expense of \$5,000, and was insured for \$8,000, but was mortgaged to a still greater amount. One of the contiguous buildings was also destroyed, and three others injured, two badly, and one slightly.

Ancient coins. A Spanish peasant, in the environs of Luga, in Gallicia, talling his field, lately found two earthen jars, containing several pounds weight of gold coin, of the emperors Nero, Vespasian, Adrian, and Trajan. Though they have been buried for so many centuries. they are as Iresh and perfect as if they had just been issued from the mint. Each coin weighs about two drachms and a half, and the gold is of the first quality. [Madrid, August 20.

Mrs. Elizabeth Honoria Frances Lambe, who had been eight times married, lately died in the island of St. Helena, aged 110 years, 4 months.

A buck. The Bethany, Wayne county Penn. Inquirer

The largest buck within the recollection of our oldest hunters, was shot on the 10th instant, in Lebanon town-ship. He has attracted the attention of hunters in that ne ghborhood for about 5 years past, on account of his has hatherto escaped shot free. He was started on the runaway, and was greeted with a fire iron two of the tunway, and you the language of lightnater), "Mr. William J. Shicking of Publichin, dat the job." The deer weighed before he was dressed, three landered and sixty free founds:!! When obtained his ment weighed 2011 his tallow, 10 lish. hidie, 23 lish, 60 and

# NEW YORK CONVENTION.

The following is the substance of the beautiful and impressive address of the rev. Mr. SCHROKBER, (late of Baltimore, but for a considerable time having charge of a numerous congregation at New York), on closing the labors of the late convention of the friends of domestic industry, in the city last named. PRAYER.

O GOD, the ruler of the rulers of the earth, in whom we live and move; and have our being, look down upon us from thy dwelling-place, and hear our prayer.
We own thy hand in all our blessings. It is Thou

who has watched over us from our inlancy as a nation. It was Thou who didst nerve the arm, and guide the counsels, of our venerated fathers when in a national convantion, such as this, they solemnly declared that they would be free, and with their blood sealed the declaraton. Thou didst enable them to form the sacred bond of union, which ties together our sovereign, independent states. Thou didst direct them, when they laid the deep sad broad foundation of our glorious national superstructure, - the admiration of the civilized world.

the nations of the earth all learn to imitate our great exemplar; that the intelligence, the happiness, the freedom, of our blessed country may be theirs.

Continue to us, gracious Gon, thy blessings. O, per-patuate the hallowed spirit of our foretathers. May the wisdom of their institutions be revered forever. May seience, literature, and the arts be firstered; and may our citizens, trained up to virtue, love and honor

Gon, through Jesus Chaist, our Lord.

O, bless the RULKIS of our nation. Let them never go astray, allured by novelties. Give them windom from above, to keep inviolate nur rights-replenish them with the grace of thy Holy Spirit; incline them to thy will; and make them in all things such as thou wouldst have them to be.

Bless the PEOPLE of the land. May peace and pras-perity be continued to us. Teach us fully to appreciate whatever thou hast given us—to love what is our own, because it is our own. Teach us to trace up all our bleasings unto THEE, the scource of every good and perfeet gitt. O save us from the ills of luxury and vice. Suppress fraud; encourage honest industry. Give an impulse to all the latent energies of our commonwealth.

May the people love the truth. And may it be engraven deep upon the hearts of all, truth is great and at will triumph. O, that all the freemen of our sovereign states may truly love the nation's maxim, - united we stand, divided we fall. Forbid that any ruthless hand may ever cut the sacred tie of our brotherhood; but, may ever our me sacred tie of our brotherhood; but, under thy protesting eare, and gladdened by thy smiles, let the people praise thee, O GoD, yea, let ALL the people praise thee.

Bless this great national convention. May their deliberations advance the cause of useful knowledge and of general happiness. Let the members be all blessed of THEE, in the prosecution of the duties which have been respectively intrusted to them. O, preserve their lives, their health, their intellectual faculties. May they be enabled to submit sound lacts to the sober judgement of the nation; to develope the best interests of our civil union, and to promote THY glory. And at last, may we all who are now before THEE, meet in the general assembly of those whose names are written in heathere to meditate upon THINE attributes, to glorify THY name, and share the fulness of joy in THY presence, for evermore. All this we ask in the name of JESUS CHRIST our Lord, and may the grace of our Lord JESUS CHRIST, the love of Gon, and the lellowship of the Holk Grost, be with us all evermore. AMEN.

# THE LITERARY CONVENTION.

The literary convention in New York closed its session on Saturday the 5th Nov. The business done was aummed up by the president in his larewell speech. Votes of thanks were passed to the president, vice presidents, and secretaries. No further business being presidents, and secretaries. sented, Dr. Matthews adverted to the harmony that had pervaded the convention-the importance of the objects that had been the subject of deliberation, and as it had been opened by imploring the blessing of heaven, he hoped it would be closed in like manner, by prayer for the influence of Divine Providence in guiding their proeeedings to a favorable issue.

The president [Mr. Adams] rose, as he said, to return his thanks to the members of the convention, not only for their kind partiality in placing him in the chair, but for the further honor they had done him by the vote they had just passed. He had come hither upon an invitation from the committee of arrangements of the last year. It so happened that he was unacquainted with the proceedings of the convention, and knew very little what was to be brought forward at the present. But he should do injustice to his feelings were he not to say that he had seen and heard things during the meeting, which had made the present one of the happiest weeks of his life. He had heard things which he ought to have knows, but of which he was totally ignorant. Other things he had heard, which he knew partially before, but which had severtheless imparted additional information. On the first day of the convention a communication was read, of a most interesting character, on the state of count.

Upon the wide extent of our goodly heritage, Tunu Hearning in Colombia—a country with which we are con-hast poured out the fruits of peace and plenty. O, let | nected by the most important relations of daily increasnected by the most important relations of daily increasing interest. The subject of establishing a college at Athens had been introduced, earrying back wisdom to the lountains of inspiration; and a report proposing to make the Bible a classic in our literary institutions-thus uniting Ionia's streams with "Siloa's fount, that flowed last by the orneles of God." On another occasion he had learned the condition and prospects of an institution at West Point, which, although upon a very different foundation from this, was yet of an interesting character. A new and practical system of education had been submitted, which was spoken of in terms of the highest admiration; and this morning a report had been read on the establishment of professorships of history in our universities, which he deemed of high importance. The convention had also agreed to found a literary maitution of a nermanent nature, to unite men of literature and science in this state with those of like character in every part of the union. These things must be gratilying to all who feel an interest in the welfare of the human race, and are calculated to inspire their most sanguine hopes as to the future condition of man. Under these circum-stances, we may well return our thanks to heaven for the past, and solicit its blessings for the luture,

An appropriate and expressive prayer was then made by the rev. Dr. Yates, and then the convention adjourncil sine die.

### MR. CLAY.

On the 18th alt. Mr. Clay was invited by the citizens of Vincennes to particle of a public dinner. We subjoin the correspondence which took place on the occa-

Vincennes, Oct. 18, 1831.

SIR: At a public meeting of a number of the citizens of Knox county, on the 1st instant, it was intimated as probable that our town would soon be honored by your passing visit; and feeling a lively sense of gratdule and respect for the statesman who has contributed so eminently to promote his country's prosperity and glory, the citizens present spontaneously determined on inviting you to a public dinner.

It is with feelings peentiarly pleasing to us that we set as a committee on behalf of said meeting to congratulate and welcome your arrival in Vincennes, and to request of you to appoint a day when all our fellow citizens may he honored with your company, to partake of a public

With high respect, we have the honor to be your obedient servants. (Signed by the committee.)

The hon, Henry Clay.

Vincennes, Oct. 18, 1831.

GENTLEMEN: I receive with very great pleasure the congratulations which, as a committee of a number of the citizens of Knox, you have done me the honor, in your note of this day, to tender, on the occasion of my passage through this town. I reciprocate all your friendy feelings on this incidental meeting; and it would afford me peculiar satisfaction to accept the compliment of a public dinner, which you have so obligingly offered, if I did not feel restrained by considerations connected with the existing relation to the community in which I have been placed. During the late administration, and for some time after its close, I occasionally attended public dinners for the double purpose of meeting my fellow citizens at the lestive board, and of vindesting my character there, which had been unjustly reproached. But although it was my ility and my right to defend myself, those occasions were never sought, never prompted, nor always embraced by me. If there be any who are not convinced that great injustice was done me, I must regret it, but I can do no more to undeceive them. pleasure which I derive from freely mixing with my tellow citizens, at public entertainments, would induce me to continue to accept them, when offered, but for the reason already intimated. From the period my name was presented, by a convention in Kentucky, to the pubtic consideration, for a high office, I have not accepted, nor, whilst it remains thus before the public, shall I secept, any public entertainment temlered on my own acgoverns me. A departure from my resolution, were it admissible, would be made in no place sooner than in Vincennes, endeared to me as the residence of valued friends, and by the grateful recollections of a former

With many thanks for the too flattering estimate of my public services made by the meeting which you re-present, and for the friendly terms in which you have communicated its sentiments, I am, gentlemen, with great respect, your obedient servant,

### THE JUDICIAL OFFICE.

For many years we have noticed with great dissatisfaction, if not disgust, minglings of persons high in ju-dicial authority with the parties or partizana of the day—as being fatal to that purity which should prevail on the bench, and that confidence which it is so needful that the people should have in their judges-on both ch the peace and safety of acciety so much depends,

when the peace and safety of accrety so force depends.

We have, therefore, great pleasure in publishing the following note from judge Summera, of Virginis—a gentleman distinguished for his learning, not less than his patriotism and careful attention to the right.

Charleston, 15th Oct. 1831.

Maj. Jumes Bream:

Maj, Jusmes Bream:

DAR at Bar-l understand you are presiding in a meeting of any fellow-eitzens of Kanawha, assembled for the purpose of appointing delegates to the Baltimore convention, and I have observed in a late number of the Banner, that at a similar meeting in Wood county, I was, with two other gentlemen, designated to that service. Under those circumstances, I deem it due to those whose respect and kind feelings have given me a those whose respect and kind feelings have given me a place in this nomination, as well as to my countrymen, now met for a like purpose and who may be disposed to concur in the Parkersburg nomination, to apprise them that, with all proper deterence and respect to the opinions and wishes of my fellow eitizens, I cannot, consistently with my views of duty, engage in the service

The attuation in which I am placed, has ever formed a strong inducement to avoid, as far as practicable, ed a strong moucement to avon, as are a practicable, any participation in the political or party measures by which my fellow sitzens are often animated, and fre-quently divided. This course, preserthed by delicasy as well as duty, I think ought not to be departed from

on the present occasion.

Be pleased to communicate these aentiments to the meeting over which you preside, with assurances of the high respect which I entertain both for you and them. L. SUMMERS.

THE IMPRISONED MISSIONARIES. A gentleman in New Jersey, in a letter of recent date, addressed to the editors of the N. Y. Observer, says:

"I yesterday had the pleasure of an interview with a "a yesterday has the pleasure of an interview with a gentleman recently from Alabama, who has resided ten years among the Cherokee Indians in that state. On his way he visited rev. S. A. Worester, and Dr. Elisur Butler, missionaries of the A. B. C. F. M. in the pening of the state of the st Butler, missionaries of the A. B. C. F. M. in the penientiary at Milledgeville, Georgia. He related a few particular respecting their situation, which may be interesting and useful for Christians to know, as it will aid them in sommending these sufferers and their present associates to the throne of grace.

"Mr. Worcester is employed mostly as a mechanic at the bench, and Dr. Butler at the lathe wheel. They of corners adont the dreas of the neison. make of year vocations.

course adopt the dress of the prison, made of very course cotton. The initials of their names are painted in large red letters across their breast and waist. Thus attired, red letters aeross their oreas and wast. I must attree, they perform their daily task with quiet consciences in company with felons. Their fare, though coarse, is company with felons. Their fare, though coarse, is wholesome, and their health is good. The convicts generally are required to cook for themselves. They meas with one who is permitted to go into lown, and who cooks for the three. He is permitted to bring in some articles which they would not receive under other circumstances.

The habitation is surrounded with a high wall, en-

I hope, gentlemen, you will approve the motive which | are three apartments for one hundred prisoners? Mr. overnes me. A departure from my resolution, were if Worcesier has about thirty with him, and Dr. Butler funsisible, would be made in no place sooner than in about twoty-seven. The rooms are large, say twenty incernes, endeared to me as the residence of valued | feet aquare. Losse plank are laid down for the floor, iends, and by the grateful recollections of a former. Each convict has a blacket to he upon or to cover him. self with as he chooses.

"After entering the prison, Mr. Worsester requested that the convicts might be assembled for public worship on the Subbath. The keepers, with one exception, assented, but on account of his objection, the request was not granted. He is permitted, however, and Dr. Butler, likewise, to pray with those in their rooms at night, and preach to them, or in other ways to give them instruc-

tion on the Sabbath.

"The gentleman on his way to Milledgeville called upon Mrs. Butler, and found her as quiet and happy as could be expected in her trying circumstances. She was engaged as usual in teaching school, and imparting instruction to the Cherokees. She wrote a letter to her husband, which was presented to the keeper of the prison, who is a plous man, of the Methodist church. prison, who is a pous man, or the Methodist church, for examination. He declined reading it, and intimated that it was too trying to his feelings. Dr. Builer has tour children. Mrs. Worcester still remains in feeble health."

STATE OF MAINE. In council, November 7th, 1831.

Present the soverage of the Mosers. Lane, Howard, Prince, Cobb, Smith, Johnson.
The committee of the whole council, to which was referred the subject of the recent transactions at Mada-wasca, ask leave to report: That in common with their wases, ask leave to report: I not in common with term fellow citizens, they view with feelings of just indigna-tion, the unwarrantable and oppressive acts of the au-thorities of the British province of New Bronswick in invading the terretory of this state with a military force, and arresting a number of our peaceable citizens, com-pelling others to conceal themselves in the wilderness. and abandon their homes in order to escape the violence with which they were threatened.

In this violation of the sovereignty of the state, we perceive the continuation of that system of encroachment, which, by our forbearance, the provincial government have long been enabled to practice for the purpose of extending their possession, and alterwards relying on that possession as the only foundation of the extraordinary claim they still persevere in making to a consider-able portion of the state.

In virtue of a warrant from a magistrate of the county of Penobscot, the inhabitants of Madawases, on the 20th day of August last, assembled at a place southward of the St. John river, on this side of the line designated by the arbiter as in his opinion a suitable boundary between the two governments, and proceeded praceably to organize themselves, in purauance of an act of the legislature of Maine, incorporating the town of Mada-

On the 12th day of September last, they held a town meeting for the purpose of electing a representative, as required by the laws and constitution of this state.

For these acts, four of our citizens have been arrested

For these acts, sent or our entages have one arrested by the authorities of New Brunsweck, carried out of the state, and three of them, Barnabaa Hunewell, Daniel Sawage and Jesse Wheelock, are now confined in jail at Frederickton, in exceution of a fettence pronounced against them, after the form of a trial in a court of that province.

As these citizens were arrested by a foreign power, at a place which is claimed and known to be within the lia piace which is ctained aim another to be within the li-mits of this state, and for the exercise of a privilege guaranteed to every citizen, we have no hesitation in coming to the conclusion, that the state is bound to adopt all proper and constitutional means within its power, to procure their release.

It appears by documents in the office of the secretary of state of this state, that immediately on receiving information of these transactions, the lacts were commury of state of the United States, with an urgent request that the proper measures might be adopted by the geneclosing about five acres. As the penitentiary was burnt | ral government to procure the release of our extrems and hast spring, the present buildings are temporary. There | to protect our territory from invasion.

To this application an answer was duly received from Mr. Livingston, under date of 21st of October last, stat-ing "the extreme desire of the executive of the United States to conform with scrupulous good faith to the arrangement made with the minister of Great Britain for preserving the state of things as it theo existed on both sides, until a final disposition could be made of the question, and it was distinctly understood that no exertion of the state authority in the parts of the disputed territory which were actually held by the British should interfere with this arrangement." It lurther supears by the documents communicated, that although the pro-ceedings of the inhabitants of Madawasca were supposed seedings of the innoctants of Assus was caree approach to be a violation of that agreement, yet prompt mea-sures were adopted by the president through the inter-position of the representative of the British government t Washington to procure the release of the persons who had taken part to these transactions.

We have caused an examination to be made, but no copy of the arrangement referred to can be found among the archives of the state. And though allusion is made to such an arrangement to the correspondence between Mr. Clay, former secretary of state of the United States and the late governor Lincoln, it was at that time asserted to have been violated by the British authorities, and we are satisfied that in oumerous instances, it has been totally disregarded by them.

In order to show the views of the general government with regard to the measures to be adopted by this state, which are now the subject of our consideration, we refer to the tollowing extracts from Mr. Livingston's letter before referred to. "The president desires me to renerate to you, his anxious desire that you would use your authority and muence to prevent any further col-lision with the British authorities, in the firm persuasion that the wisdom of congress will direct such ultimate measures, as will bring the controversy to a close, consistent with the interest and dignity of the United States, and particularly, of the states interested in the question. He receives the strongest assurances from the representative of the British government, that no innovation will be countenanced on the part of its provincial functionaries; and on our part, good faith as well as the protection of the frontier, from unauthorized mutual inroads, require the same course of conduct."

To a previous letter to the governor, dated October 5th, Mr. Livingston observes, "the president directs me to say, that he relies on your excellency's prudence to avoid any unnecessary exercion of authority over the contested ground, and to repress as far as lies in your power, all such sets as may endanger the quiet of the bordering territory." "Congress will meet in the sourse of a lew weeks, and it will be a source of deep regret if the moderation and forbearance, which have hitherto characterized the government and people of Maine, should cease to guide them, when its further con-tinuance for so short a person is of such consequence to the nation. "

After a full consideration of all the facts and circumstances within our knowledge in relation to the subject aubmitted to us, we are of opinion that every proper and constitutional measure at present in the power of the executive of this state to procure the release of our catzens confined at Frederickton, has been adopted. if the committee have forborne to recommend more efficacious means for their immediate release, it is because they believe the state is not in possession of the constitutional power to execute them without the concurrence of the general government.

Belewing that congress, which is soon to meet, will adopt the necessary measures to bring this controversy to a close, consistently with justice, the peace of the na-tion, and the constitutional rights of the state, which we believe will never be voluntarily surrendered, and when a desire to conform to the wishes of the general government, we do not deem it expedient at this time to recommend measures which might lead to collision with the British authorities.

But from the exposed situation of our frontier settlements, and the danger to which they are subjected by nereasehments from a neighboring province, we recom-mend that the governor be advaced to issue a general between that the governor be advaced to issue a general states. The process has been some time since served order ruquiring the midits of the state to hold them.

selves in readiness to meet such requisitions as the president may deem necessary, to protect our territory from invasion and our citizeus from enture. ISAAC LANE, per order. In council, November 7, 1831.

This report, on being read, was accepted by the coun-

and by the governor approved.

Attest: R. G. GREENE, secretary of state.

A true copy attest: R. G. GREENE, sceretary of state.

STATE OF MAINE, Head quarters, Portland, November 8, 1831. GENERAL ORDER.

The security and defence of our rights as citizens of a free state, being dependent upon our military estab-lishment, it is not less a duty than the privilege of the citizen soldier to be at all times prepared to repel the invasion of those rights, and afford his aid in the due execution of the laws of his country. The exposed situation of the frontier settlements of this state, and the dangers to which they are subjected by continual en-eroachments from a foreign power, having, in the opi-nion of the executive council, rendered it necessary that the milnia of the state should be reminded that events might occur which would require their services; The COMMANDER IN-CHIEF, therefore ORDERS that the several divisions of the mulitia be in readiness to meet such requisitions as circumstances and the laws of the state may require, and as the president of the U. States may deem necessary, for the protection of our citizens aud territory.

The major generals will cause this order to be promulgated throughout their respective divisions.

By the commander-in-chief, SAMUEL G. LADD, adjutant general.

### VERMONT.

The following are extracts from the speech of Mr. Palover to the legislature of Vermont. This gentleman is the first who has been elected governor of a state on anti-masonic principles. All the officers choses by the legislature are of the same political party.

"The subjects which more immediately require our attention, on the present occasion, are, such improve-ments and alterations in the existing laws, and the passage of such new ones, as experience has proved to be important and necessary, and called for by the changes in the combitions of society-a vigilant superintendence of the fiscal concerns of the state, as it respects both the just levy and prudent expenditure of the public taxesthe improvement of the various channels of communication between the different parts of the state and with other states—the promotion of trade, agriculture and manufactures—the appointment to office of men who are discrect, honest, capable, and unshackled by any carthly allegiance except to the constitution and lawsgard to the state of the militis, and watchful care over the condition of our common schools and literary institutions.

"The administration of oaths is a subject of the deepest importance to every government, and cannot fail, consequently to command your special attention. The influence which the exercise over the human mind readers it of the utmost importance that they should be resorted to, only for the attainment of proper objects, and I submit to your consideration whether their administstion should not be prohibited by law, except when neand to elicit truth in the administration of justice. submit also to your consideration whether the cause of morality, and the general good, do not demand your in-terposition to diminish the frequency of their imposition even for the above purposes."

NEW JERSEY.

Extracts from the late message of gov. Vroom to the le-

Gislature.

The suit instituted by this state against the state of New York, pursuant to the act of February 1828, is still

to appear in obedience to its requirement, the court at | to appear in obedience to its requirement, the court at its last seasion in January, caused a rule to be entered, that the complainant should be at liberty to proceed exparte; and unless the defendant should appear at the next term of the court, which will be in January, and answer the complainant's bill, the court would proceed to hear the cause, and make such deeree as might be just.

In consequence of this proceeding, the governor of the state of New York addressed a message to the legislature of that state, in which he calls in question the right and authority of the court, to take sognizance of the matters in controversy between the two states, and requests direction as to the course he should pursue. The executive of our sister state is not understood to have placed himself on the broad ground, that the constitutional power of the supreme court did not extend to suita between different states, but on the principle, that the power of the court, though constitutional in the ab-stract, could not legally be exercised, until the mode of proceeding in cases of this description should be pointed out and regulated by an act of congress. In view of the whole subject, he suggested the propriety of an appearance on the part of the state, accompanied with a protestation to save the state from being concluded on the question of jurisdiction. Under the expectation that auch appearance would be entered by the state of New York, and in the sincere desire that the suit should be conducted with a spirit of amity, this state has lorborne to proceed in the examination of witnesses; and it is probable that no step will be taken in the cause until after the next term of the court,

I deem it unnecessary, if not a matter of questionable propriety, to enter into any discussion of the grounds assumed by the executive of New York. We have taken our position after full and solemn advisement, question is pending before a tribunal whose wisdom we question is pening beings a training mose a samm we cannot hope to instruct. In its purity and integrity we repose with implicit confidence; and to its judgment, matured and enlightened as it always is, we feel great safety in committing our rights.

The two great works of internal improvement, in The two great works of internst approximation, which the state is interested, the Delaware and Reritan canal, and the Camden and Amboy rail road, are progressing steadily to their completion. The rail road will be put into operation from Amboy to Bordentown early next season; and from the increased faculties that will be given to travelling and the transportation of merchandise, it is confidently expected that it will become Immediately profitable, and that a new incentive will be given to the spirit of enterprise which is beginning to be felt in every class of the community. The state is now largely concerned in the rail road, being a stockholder to the amount of one hundred thousand dollars besides having a share in the tolls received by the company.

And it is a matter of congratulation that we are likely so soon to realise some of the benefits growing out of our local situation.

It will be remembered that by the charter of the Delaware and Raritan canal company, there was reserved to the state the right of subscribing for one fourth part to the state the right of subscribing for one found, po-of the capital stock of that company. If the state should think proper to avail herself of this privilege, it may be important to do so at the present session. The period important to do so at the present session. The period in which it may be done is limited by the charter to two years from the time the company shall have fixed upon the size, dimensions and route of the eanal and feeder: and as the canal is now in progress, and upon a scale calculated to reflect honor upon the state, as well as upon the individuals concerned, it becomes a matter of deep interest whether the state will become a party in the enterprise, and secure the right now within her powert or whether she will submit the work entirely to the management of those who have now the controling influence, and await the period when the whole shall revert to the state on payment of the original cost. It is a grave question, and worthy to be examined and acted on with great circumspection and care, for its determina-tion will conclude the rights of the state for half a cen-

state has no immediate interest, but calculated to be of great importance to different sections of the country. The rail road from Paterson to the Hudson river, has commenced under very favorable auspices, and there can be no doubt that its speedy completion will be decidedly favorable to the prosperity of the town, in which as Jerseymen and friends of domestic industry, we must all feel a lively interest as well as an honest pride. The route of the contemplated rail road from Elizabethtown to Somerville has been surveyed during the summer. It passes through a rich and fertile part of the state, and one singularly adapted to that species of improvement. It it should be extended further into the interior of the state, or aeross the state to the Delaware river, at such point as might appear most advantageous to the company, it would prove a great benefit to the community.

# BRITISH REPORM.

Blackwood's Magazine, (opposed thoroughly to re-form), says, in the September number, that "were the reform bill to pass, the manners of the nation would be as bad, or even worse, than its morals—and #11 mild men would migrate to America." In a previous number it is stated that:

"Three measures may be expected after the reform bill has come into operation; and which no wisdom or firmness, on the part either of government or the legis-

lature, will be abis to averts-

1. The duties on Baltic timber will be repealed. This measure will be warmly supported by the £10 householders: to such men, the prospect of getting the best wood at half its present price will be an inviscible argument for such a measure. By this means Canada will be lost; and a colony possessing nearly a nullion of souls, taking off annually, 50,000 emigrants employ-ing 400,000 tons of British shipping, and consuming £2,500,000 of British manufactures will be lost to the

empre. 12. The protective duties on East India sugar will be repealed and the immediate emancipation of the negroes forced on the West India proprietors. By these means, either the flame of revolt will be serend among the stave population, and 130 millions of British capital perish in the flames which have consumed St. Domingo, person in the manner which have constituted as Johnshop, and rendered that flourishing colony a desert, or the planters will throw themselves into the gram of the Americans. In other view, the West Indies, the great nursery of our seamen, will be forever lost to England. The mother country, distincted with her own (roubles, will be as unable to preserve its dominion over those distant possessions, as the French revolutionary govern-ment was to save the wreck of its once flourishing West Inilia colonies.

"3. India and the China trade will be thrown open to the clamorous multitule, who will seek in the eastern world that subsistence which the passions of the demagogues have denied them in their own country. They will carry with them to the stores of the Ganges the fierce passions and unbending democracy of the mother state; and the any labric of our Indian empire, now upheld only by the steady rule of a stable and despotic government, will be overthrown. Fifty thousand men can never maintain their away over our hundred millions, but by the firm hand of absolute power. The passions of a democracy will speedily tear that splen-did, but absolute and firmsy empire, into pieces. The loss of all our colonies may be hoked forward to as the inevitable result of the reform bill. How can it be otherwise with a measure which at once disfranchises all the colonial interests, which closes the door by which they have hitherto been represented?

Such extreme dissaters will for certain produce one effect. All parties will become weary of distraction and suffering; the period, the inevitable period, will arrive, when the duminion of a firm hand will be required to staunch the wounds of the state. A Cresar, a Cromwell, a Napoleon, will seize the seeptre, and military despotism will close the drama of English reform. It will close it after years of nuguish and suffering; after tion will conclude the rights of the state for half a century.

There are various other works of internal improvement either entry years of inquish and suffering; after
the empire has totate colonies, and with them its naval
supremacy; after unheard of suffering has tamed our
people, and the glories of the British mame are closed
ment either sommenced or authorised, in which the

necessaries of life are forced up, that the "nobility, gentry and clergy" may receive excessive rents for their

lands and glebes.

The relorm might, perchance, bring about "free trade," to a considerable extent. If allowed in the articles of grain and bread-stuffs generally, timber or wood, sugar-only three items-the high aristocracy of England would be exceedingly humbled, and the poor bei France, but wretched hovels would also be less frequently met with; a liberal importation of timber, certainly, would affect Canada, and be of no small service to the United States; and there is no doubt that, if the high ex-West India planters, and keep their slaves from stavenation or revolution), were taken off, all which is predicted of the West India islands would follow, and the masters of them be changed, though we would not desire any thing to do with them. The truth is, that the sflairs of Great Britain, gigantie as she is in resources, are bolstered so much by one artificial operation resting upon another, are out of all calculation in the result of any material change in the relative position of thingsevery part or party leaning against some other part or party, and one monopoly being indispensable to the support of other monopulies, without end.

# THE SICKENING SUBJECT.

Having published—as in respect to our own impar-tial record we were compelled to do, the certificate of the reverend Mr. Evans, (a brother-in-law of major Eaton, and a new clerk in one of the departments). charging something very much like a falselised on the vice president of the U. States, we feel bound to pursue this subject, disgusting as it is, in every respect, that the record may be full—exceedly wishing to conclude the whole branch of this wretched concern now, and forever.

From the Globe.

Mr. Blair:-Sir: As it is fully in my power to sub-stantiate the statement of Mr. Eaton, relative to Mr. and Mrs. Calloun's calling upon Mr. and Mrs. Eaton, Liberewith furnish you with the facts as they occurred. Dir. Eaton was married on Thursday, the 1st of January. On Monday the 5th, Mr. Calhoun's carriage drove up on Monday the star. O'Nesl, and inquiry was made for Mr. and Mrs. Eston. On being told that they had gone to Philadelphis, Mr. and Mrs. Calhoun's cards were handed to the servant, who brought them in and gave them to my wife. Those, with many others left during their absence, were handed to Mr. and Mrs. Eaton on their return. F. S. EVANS

October 29, 1831.

From the Telegraph.

Mr. Evans is introduced by the Globe as a member of Mr. O'Neal's family at the time when it is pretended that Mrs. Calhoun's card was left, viz: on the 5th of January, 1829, and he pretends to give his certificate as such. Let the reader look to the tollowing certificate:

District of Columbia, county of Washington act.

1, William Brent, clerk of the circuit court of the District of Columbia for the county of Washington, ilo hereby certify, that on the 23d day of July, in the year of our Lord one thousand eight hundred and twenty-nine, a license was issued out of this office to sulemnize the rights of marriage between French S. Evans and George Ann C. O'Neal.

In testimony whereof I have hereto subscribed my name and affixed the public seal of said court [L. S.] for the county aforesaid, this second day of November, 1831. WM. BRENT, clk.

Mr. Evans says that the eard was brought in and given to his wife. Now the fact is that he had no wife until more than six months thereafter!! But Mr. Evens is one of the brothers-in-law of major Eaton, appointed a clerk with a salary of \$1,000, and employed to write

a clerk with a salary of \$1,000, and employed to wine political letters and make certificates. From the Globe of November 7. Mr. Evans stands accused by the Telegraph, of having been guilty of a falsehood, in saying that the card of Mr.

€ Why were not the corn-luws notice!! They and Mrs. Calhoun had been handed from their carriage might well be esteemed as those which a with "demotion" his sufe," by the servant. To make out the crime eracy," would first repeat, for the cost of the absolute imputed, the editor has obtained a certificate from the records, shewing that Mr. Evans was married subsequently to the time of Mr. and Mrs. Calhoun's visit. The lady who received the cards of the visiters, was, it seems, not Mr. Evans's wife until after the eireumatance occurred which was alluded to by him, and, therefore, the editor of the Telegraph feels himself authorised to impeach a preacher of the gospel of making a false statement, because he did not make it read with the precaston of a special pies, we not usuae a read with the pre-cision of a special pies, wering "and the said eards were delivered to my wife, Mrs. Evans, then Miss O'Neal." Every man, according to the Telegraph, is guilty of faischood, who says that general Washington was born on his own birth day, because be was not a general when he was born! How scrupulous!

From the Telegraph of the 8th. After copying the preceding, the editor says Perhaps we cannot offer a better comment upon this article than is given in the following letter from the re-

verend gentleman himsell:

"Monday morning, November 7, 1831. "Sin; I observe under the editorial head of the Globe of this morning an article in which my name is men-tioned. This article is published without my knowledge; and, had I been consulted, would have been positively prohibited.

I am thus frank because I think it due you. Your remarks with reference to myself were mild, and such

as honorable warfare entitled you to use.

I have, therefore, to request, my name will not sgain be introduced into the controversy, and I shall make a similar request of Mr. Blair. Very respectfully F. S. EVANS.

I do not wish this published."

It is true that Mr. Evans says that he does not wish his letter to be published; but we did not invite his confulence; and every one can see that we are indebted to the gentleman's fears, and not to his love of truth, for this lavor. It is not our purpose now to magnify him into consequence; nor will we, unless further provoked, mete out to him the measure which his conduct deserves; but we will place this matter in its proper light.

The certificate of Mr. Evans, volunteered by him and published in the Globe, was as follows:

Mr. Green then copies the reverend gentleman's certificate, inserted above, and says-

He, (the rev. Mr. Evans), was introduced by the Globe as one of Mr. O'Neal's family, as a witness, who had it fully in his power to substantiate Mr. Eston's statement, and undertakes to speak of Mr. and Mrs. Cathoun's call as a matter of his own personal knowledge. Let the reader look at the certificate, and it will be seen that it is carefully prepared, so as to make this impression on the public. He asserts that it is fully in his power to substantiate the statement of msj. Eston; and then declares the day, date and particulars, with such a minuteness of detail, that no one, who reads the statea hometer so to be soft, that no three who reads the state-ment, can hesitate to suppose that he spoke as of his own personal knowledge. He does affirm as of his own knowledge, that Mr. and Mrs. Callioun did call on Mr. and Mrs. Eaton; that their carriage came to the doors that they inquired for Mr, and Mrs. Eaton; that upon being told that they had gone to Philadelphia, Mr. and Mrs. s saife. Who can read this certificate without supposlus wife. ing that Mr. Evans was then married? And who does not see that the certificate of the clerk, proving that be was not married until more than six months thereafter, convicts the reverend gentleman of deliberate lalsehood? If he did not say that he was then married, in terms, it is clear that he intended it to be so understoood; and hence he himself admits that our remarks "were mild,

"But what will the public think when they are told, that so far from being then married to Miss O'Neal, and that so far from being a member of the family, as resaut that so are room being a number or the manny, as re-presented by the Globe, this "preselier of the gospel" had not then seen her; and that so far from being an eye-witness of the particulars which he pretends to relate

and such as honorable warfare entitled us to use.

with an much minuteness; he was not at that time a re- office of discount and deposit in Mobile, by Philip McLoskey, sident of the district!! sident of the district!!

Other severe remarks follow-but we have published enough! Mr. Evans should not have put himself forin this matter. We regret that his certificate was REGISTERED-but that proceeding being had, there was no remedy. 'I he "Telegraph" goes on to mention some things about the "servant" referred to and Mrs. Eston's maid, and Mr. Evans marrying them, against the man's consent, &cc. &cc. a sufficiently queer story, but which we deare to have no concern with.

# POLISH PROCLAMATION.

Whatever may be the fale of the brave, but unfortu-nate Poles, the following proclamation should be pre-served as a monument of their devotion to liberty.

"Head-quriers at Kunow, September 15. "Poles!-Four days ago a most sanguinary and obstinately contested battle was fought under the walls of our Before the eyes of your wives, sisters and mothers, under the view of the whole city of Warsaw, the Polish troops have slain more than 20,000 of the enemy, and the intrenchments which are formed by the labur of your fellow-citizens have now become the grave of her invaders. To save the town from destruction, to weaken the force of the enemy, our troops have executed. ed the capital.

The eannon, ammunition and all implements of defence, the government, the deputies, all the magistrates, have withdrawn with the commaniler-in-chief and the army to Modlin. General Krukowiecki is no longer

ident of the government.

In consequence of an armistice, hostilities are for a moment suspended; but, my countrymen, let not that mo-ment be for you a period of repose which might divert you from the great object of the deliverance of your native land; employ it rather to redouble your strength in new efforts to establish the existence and independence of Poland.

"Is Warsaw for us all our country? Do its walls and its inhabitants within so narrow a circuit form the limits of the nation? After so many great sacrifices, after so many dearly achieved victories, which have justly astonished the world, shall our high thoughts, our feelings, our hopes-shall all these be at the last moment of expectation dissipated, as if the waters of the Warthe, the Vistula, the Duiper, the Bug and the Dwina, dol not present to us the inheritance of our lathers, which, again resent to us the inheritance of our latters, which, again re-eanquered, we will convey to our chibren? Who then would treacherously violate the ascred oath we have aworn, to shed the last drop of our blood in delence of the last foot of our native land? No! The Pole is too proud to tail in a pledge given in the face of the whole world, or to look forward with a doubt of victory white he still is able to lift an arm. He who can value liberty, who calls himself freeman, will also know how to break the fetters attempted to be imposed upon him.

"Poles! Yet one moment more of endurance and resignation, and the end of the glorious contest, whose result will be the restoration of our freedom, andependence and rights, is at hand. The scale of victory must preoldiers, and the sacrifices of our entrens. History exhibits no example of a united nation, striving to obtain une great object, being electived in its hopes. Did not enemies, 19 years ago, lose their capital, and notwithstanding was not their nationality and independence secured? Never let us lorget that we owe every thing to our country, our common mother. Her existence is ours; we wear her chains. Then let us once more renew in our hearts the already sworn oath, that we resolve to be a free people; that we will not lay down the ed of our fathers until we recover liberty and independence. Hencelorik let our motto be-present. Victory!" and when we shall stand in the order of battle, we will meet the enemy with the cry-"Live the countrell and thus will we connuter. "ROZISKI,"

CIRCUIT COURT OF THE UNITED STATES.

THE UNITED STATES.

The United States vs. Benjamin Shelmire. October session, 1801. Judges Baldwin and Hapkinson.

Isolitanes for uttering, passing and publishing as true, a certain false, forged and counterfeit order, purporting to be an order spon the earlier of the bank of the United States, drawn by the

prevents of said offlice.

The question of the legality of these orders or definite, and whether suider the early of the orders with the most of the things of the order order of the order Raldwin.

The counsel of the defendant has presented to the court the question, whether the orders or checks of a president of a branch bank of the United States, drawn on the eashier of the mother bank, came within the meaning of the words "order or check," mentioned in the 18th section of the law incorporating the bank. The point has not been argued, but it has been made. It arises necessarily in what is the section of the law incorporating the bank. mentioned in the 18th section of the law incorporating the bank. The point has not been argued, but it has been made. It arises necessarily, is vital to the prosecution, and must be desired for the provided of the provided of the law of the l The Dank Can muse no use company.

The property of the payment of a less arm that the thousand dollars, the bills or most lessed of the payment of the payme other limitation than is contained in the 8th fundamental article, which is mortly as to amount, the only effect of which, it not to exempt the bank from liability for the exem, but to make directors, under whose administration it shall happen, personally liable. The words of this article are, in our mind, very conclusive on this point. "The total amount of debts which the said corporation shall at any time owe, whether by bond, bill, not, or dark contract over and above the debt or debt due for money deposited in the lank, thall not exceed the sum of thirty-five millions of dollars," &c.

This is an explicit declaration that the bank may make, and a This is an explicit declaration that the bank may make, and are bound by contracts other than those by bond, bill, note or deposit. These other contracts must be taken to mean and be expensed to be a support of the contract of the theory of the contract of the them to limit, narrower than those subjects which the charter recognises as those on which the bank are to act. Deposits, discounts drawing, endorring, buying, willing bills of exhalition, paying for buildings, improvements, uslaries and conjugent expenses, are "other contracts" by which the bank may incur debts, and are bound to pay then to any amount to which there coerainous, checks to orders on the Bank or it; cashiers, these operations, checks or orders on the bank or it cashire, are indispensable to conducting the binnium of the bank. They are peculiarly so when we consider the connection between the bank and the bovermonent and its branches. It ling the deposition of the bank and the overmonent and its branches. It ling the deposition commission from the place where it is received to the place where it is a west do required to be diposited,—bound to distribute the money of the government among its creditors,—to pay the alariest antice, in the payment of the public debt and pennions,—there must of necessity be drafts, orders and checks by the bank on its practice of and other and on the bank. The branches are offices of discount and deposits. Independently of the duties on the stank of the draft of the draft of the draft of the country of the draft of the country of the draft of the country of the property of the draft of the country of the draft of the country of the property of the draft of the country of the country of the draft of the country of the draft of the country of th e operations, checks or orders on the bank or its joint don them by the clearer for the convenience of the govern-ment, three were great and powerful reasons for the incorpora-tion of the bank, and the establishment of its branches, to crease and continue a toutod, uniform currency, besidues for internal ex-change, and rounteners. It cannot be contended that draits, orders, or elective, drawn by or on the bank, or any branch, are orders, could be accomplished, or that they can be accomplished without them. There is no precise that there is any capses or impact problishments making them unlawful, and no good reason can be another down the theory of the control of the con-sult from their letting lorged or eventued as the problems poor active of the bank. It is in our quitting no caption of the bank. cashier of the bank. It is in our opinion no answer to these waw, that the law has not expressly subtrieved the officers of the branches to draw on the bank; it is enough for this point that they are not prohibited from doing so; it is an act indispersable to the transaction of their ordinary businers, in order to meet the want of the public and others. The bank, may contract otherwants of the public and others. The bank, may contract other to the transaction of their ordinary continets, in order to meet the wants of the public and others. The bank may contract other wise than by bond, note, or bill. They may authorise the branches to draw orders, checks or bills upon them, whether in funds or not,—but authorised or not, the paper has the same validity; if genuine, the drawer or drawer is bound for payment. It would

be introducing a new principle into our code of criminal iaw, to say that the guilt or innocence of the secused would depend on the fact of the person in whose name a paper is forged having lunds or authority on which he could draw his order or check. If

to my that the guitt or innecence of the secured would depend on the fact of the person in whose name a paper is forgred having I unds or authority on which he could draw his order or check. If it is the person in which he could draw his order or check. If it is the person in the person is the person in the p

It is not necessary that there should be any actual injury sur-It is not necessary that there should be any actual injury sub-stained or fraud practised in fact, on the person who was the sub-ject of the mediated fraud or injury; this past of the offence con-sists in mere insention, and if that intention can be consummand the offence is complete. It is enough that it may probably or possibly be done. 2d Sir. 749, 2d L. M. 1499, 2d W. Bl. 727, 4th The passing of this order or check, is alleged to be done with intent in defraud the basis of the Enized States; is therefore here

The passing of this order or cheek is alleged to be usue with intent to defraid the bank of the United States; it therefore becomes necessary for us to inquire whether the bank might or could be defrauded ut injured if the paper was genuine. By the 14th fundamental article of the charter of the bank, it is bound to re-

be detraided or injured if the paper was genuine. By the 14th indiamental article of the charter of the bank, it is bound to exhaushment article of the charter of the bank, it is bound to exhaushment article of the charter of the bank, it is bound to exhaush the paper of the pa

depositors for all balances due at the branches, for all drafts, oreserved received to the control of the contr such a strong legal inference and presumption of its being author-ised by the regulations under which they have been established, that the burthen of proof to the contrary is clearly thrown on the

bank or any other person who would attempt to show that the paper was not obligatory upon them. It would be a severe reflection on the bank to suppose that they would for a moment refuse payment of these checks and orders, and our system of praparad me would descret fulled of public rapect or confidence if

reflection on the bank to suppose that they would for a mossess refuse payment of these these has and orders, and our system of justice payment or combinese is the law would not correct it.

But the charter is not silent. The 4th fundamental stricke makes the bank liable for all debat, though they exceed the amount interest. The 4th makes the officer of discount and deposits to public money, and imposes on it the obligation of transferring, and by the 17th article, the bank is bound to pay in gold and silverall its position of the position of the property of the 17th article, the bank is bound to pay in gold and silverall its notes, bill and obligations, and all deposits in the bank and regulate the payment of other debat under the same penalties are prescribed for the refuse to pay its notes, bills, obligations and deposits. The mode in which the bank contracts a debat, the single statement, or the places where contracted, is of no importance that the payment is made in con, the debt is extinguished; if made by a contract, the debt is contracted and regulate the compensation, the single state of the payment is made in con, the debt is extinguished; if made by a contract, the debt is extinguished; if made by a contract of the payment is made in con, the debt is extinguished; if made by a contract, the debt is sufficient to pay them, which may be done at or by the branches of the bank. If the payment is made in con, the debt is extinguished; if made by a contract, the debt remains until they are actually positions in the stringuished; if made by a contract, the debt is a such bound to perform as the old one for which it is intended to make satisfaction. It is a matter of mutual convenience, whether the old debt or duty shall be excliquished by payment orders or exceeds debt and the payment of the bank. It is bound to perform and lones to decrept or which it is intended to make astisfaction. It is a matter of mutual convenience, whether the old debt or duty shall be excliquished by payment orders or exceeds debt pathle funds were depunsted, should draw his order on the easher of the bank or any branch at a place to which it was required to transfer them, us in distributing the public money among public excitation, and dubuting officers of the government, paying salarice, pensions, or the public delt, should as a matter of mettral convenience and consent, give drafts, orders, or checks, either for remittance or circulation, us the bank or another branch, the bank anneanment to an officer or receiving of the government, who would deposit to his own credit the amount thus received through the bank.

some amount, or an omerr or creater of the government, who would deposit to his own credit the amount thus received through the bank, or more who day and the properties of the part of the bank, or one who dat an order or rehers on them, and would receive payment in the shape of branch orders, so, if a branch makes a contract of discount, and pays the proceeds by drafts on the bank, or any other kind of paper to mit their convenience these obligations necessarily result from the contracts of deposit and discount. But there is another contract equally hind-precuring a medium of remittence or circuitation, exchanges with a branch his gold, silver, or any paper which they accept, as an equivalent for their drafts, orders or cherch, large or small, as the case may be, stands in the same position to the bank as a presidence of the contract is not by their drafts, and orders, all the profits of which he adversaries to the hand. pays in money unto the conters of the bank, who receive it from their agents as the product of the contract nade by their drain and orders, all the profits of which go directly to the bank. To refuse payment in any of these cases, would be a fraud too paips, ble to be toll-rated—wholly repugnant to every dictate of justice and rule of law.

ble to be tol-risted—whelly repugnant to every dictate of junties and rule of lists.

The bank then being jushle to pay paper of this description if gennine, it follows shat the forging or knowingly passing it, could and might be introduced, and operate, to defraud the bank. This application is the second of either or both, and therefore instruct you that he allegation of the indictorent in this particular is sufficient in law, and made out by the evidence, if you believe the witnesses.

# NILES' WEEKLY REGISTER.

FOURTH SERIES. No. 12-VOL. V. BALTIMORE, NOV. 26, 1831. (Vol. XLI. WHOLE No. 1,053

THE PAST-THE PRESENT-FOR THE PUTURE.

EDITED, PRINTED AND PUBLISHED BY H. NILES, AT \$5 PER ANNUM, PATABLE IN ADVANCE.

THE REPORT ON IRON. The committee of the New York convention, appointed to consider and report on the manufacture of iron and steel, (many will feel interested in knowing), have performed that duty-and terested in knowing), have performed that duty-and their ample report, just received by the chairman of the permanent committee, from B. B. Hrosell, eq. 4 New-York, will be laid before the people of the United States with all promptitude, through the newspapers; or some other means of at length shall prevent its general circulation through the usual channels. An extensive appendix is made up of valuable labular statements, and

appendix w made up or watable factor statements, and other important presentations of facts in figures.

The editor of the Rossers, as chairman of the personnent committee, has carefully read and partially examined this report, which he regards as al ke honorable to all the gentlemen of the committee, because of the zeal with which they have collected the matter, as to the member whose arduous duty it was, (out of a vast body of indigested materials), to present to the nation a paper like that now before us. It has cost him much time and close reflection, to condense his facts--yet the report is a long one; -- and it could not be otherwise from the nature of things: but it is so plain that "he who rous may read:" and d it shall not, at one; astonish the friends of the protecting system on account of the importance and extent of the iron manufacture—as well as delight them because of its clearly demonstrated effect to lessen price to consumers-the editor will feel compelled to believe that his own judgment on such subjeets is not worth much.

The following results appear ascertained with as much certainty as, from the absence of information strictly of-ficial, can be expected—and our opinion is, that the amounts given must needs be below the real production, employment, subsistence, &c. stated:

The aggregate of iron manufactured, if rendered in pigs, would be 191,536 tone The amount of bar-iron made 112,866 Men employed, (about), no. 50,000 Wages panl 8,750,000 dalla Persons subsisted 120. 150,000 Value of the manufacture, (in its dolts. 13.550,000

first stages), di Paid (directly) to agriculturalists 14,000,000 for subsistence

Paid for transportations of iron, by laud and water 1 500 000

"The course to be pursued with like reports containing many statistical statements, will be to get them into type, immediately-in which shape they can be convemently and promptly examined by the executive committee; who design also to call to their aid such gentle-men, (not of their own number), as are deemed best qualified to investigate the facts pertaining to any para-cular subject under consideration. Thus mistakes, if count subject under consideration. Thus mistakes, if they shall exist, may be detected, and the publication be under the more speedly. The charman can command a sufficiency of type and obtain mechanical means to accomplish these things-in his own office or others, as aced requires.

† This sum allows only 26 2-3 dollars for the subsistence of each person, a whole year,—and includes also the subsistence and value of the horses, (immediately derived from agriculture), employed at the furnaces, torges, &c. The calculation would then seem to be a very moderate one. The number of persons employed and subsisted does not include those who obtain their living, or support, by the various transportations or handlings of the iron after leaving the turnuece and forges,—nor others who, in the cutes or other places of regularity equal to the sale, derive profits on the manufacture. But all these should be added to shew the whole market which the for the reform ball. You, XLI.—No. 17.

The capital vested in lands-forests, mines and waterrights, buildings, machinery, &c. is not estimated-but we shall seek some information on this point, for our own satisfaction.

Round numbers are used in several of the preceding sums, because the facts stated in a supplementary report of the committee, containing further information received after the general aggregates had been made uptor to bring them out precisely, according to the date given—but they are sufficiently near the true sums.

The iffect of the domestic manufacture, or COMPETIrably shown in several tables-as well in the reduced price of the article on the sea-board, as in those parts of our country where foreign iron is not used at atl. facts, as to the latter, are conclusive on this point-AND THEY CANNOT BE MISTAKEN.

We have not room to say more-and if we had, should feel unwilling to lessen the interest of this report when haid before the public, by anticipating its contents.

THE FOREIGN NEWS noticed this week, is highly in teresting. The republic of Poland is finished; and the bill for the reform of the British parliament has been rejected in the house of lords. What next?

Some speculate on a revolution in England-or, at least, calculate dangerous proceedings of the people, to obtain by force what the "hospital of incurables" has denied them but the king in signal of incurates' mass denied them but the king in solved to carry the point, may easily manufacture "a batch of peers," and settly the affairs at once. And then sill come the discontents of the old nobility, the grumblings of their resiners, for the mumber, and having great power)—austain—to the old nobility in the property of the points of the poi ed by a high-fed and imperious clergy," trembling for the thirty mullions of dollars which they annually exacof the people, by the sword; -for it is manifest that reform will not end in the house of commons, and the Joins will not end in the house of commons, and the poor-houses continue to be filled with \$3 millions of wretelied beings—that the great landholders, through the corn laws, the elergy by their tythes, and the immense army of sinceurists and penasoners remain, to fasten on those inneas which a half-starred populace demands for immediate subsistence. England must,—threatingly must,—one day, pass through a series of the starten of the star events hardly less terrible than those of the French revolution—for the public debt, and the host of exactions of labor, must be done away; but whether things are ripe for revolution, we venture not to assert. A trade as fire as that of the United States, would capsize the king, lords and commons, and extinguish the bench of bishops, in twelve months -- and the Braish systems are so rotten, and the diseased parts bear so closely upon one another, -that to remove any past endangers the whole concern.
The reform of parlament, in ttelf, would render no service to the people. The vaunted emancipation of the catholics of Ireland has done nothing to keep the people from starving, or to proteet them from barbarous murderings of one another. But a beginning must be made somewhere—however dark the ending may ap-pear. There is a point at which suffering will stop when the majority, even in the most enslaved countries, must assert their natural right to rule, and build up a dominion, though based on the slaughtered bodies of their lellow men.

iron manufacture creates for the production of the far-mers, and we must believe that the entire aggregate is mers, and we must believe that the entire aggregate is fully equal to the whole value of flour exported to fo-rego places.

\*Only one of the bench of bishops, (Chichester), voted

THE ENCOURAGEMENT OF DOMESTIC MANUFACTURES in their primary assemblies, and an hundred consecu-nd internal improvements. We should have, in-AND INTERNAL IMPROVEMENTS. We should have, indeed, a difficult business, were constructions of the constitution left to the determination of those who talk so much about "state rights." From 1807 to 1815, to have doubted the right and duty of congress to en-courage and protect homestic manufactures, would have been regarded as TORYISM, in the first degree, by the politicians of Virginia-as numerous matters on record plainly skew us; Mr. Jefferson himself going so far as to suggest "FROHIBITIUSA" that such encoun-regement and protection might be effectual! This was the no fuz ultra of what has since been called the "American System." Indeed, few of us are willing to go so far—except to prevent frauds on the revenue, and assure to DOMESTIC INDUSTRY the whole benefit of the laws enacted that it may prosper, and advance the population and wealth of our country, both which are mightily promoted by its success. FRANKLIN would have called such acts population laws; and his notion was that a "virtuous populace" was the first element of national power-as some, in the loss of it, have fearful reasons to admit; though a false pride, gathering to itsell increasing evils and husbanding new causes of adversity, may prevent an acknowledgment of the principler still it goes on,—and will go on, whether admitted or not. But let this pass. We would rather hold up a happy future than prophecy misery.

So it was in respect to internal improvements. The books are falled with proceedings of Virginia, (that pal-ladium of the constitution!) favoring their progress at the national expense. On the 26th February 1816, a resolution passed the house of delegates soliciting the co-operation of the senators and representatives in congress from that state, for the purpose of engaging the aid of the national government, to effect a communica-tion between the waters of the James and Ohio rivers; and on the 16th Dec. in the same year, the executive of the state, (Mr. Tazewell being one of the members), communicated to the legislature a recommendation of the board of works, warmly urging that the assistance of the general government might be subcited, for the inprovement of the interior of Virginia! On the 22d Feb. 1817, a resolution passed both branches of the legislature, in pursuance of the preceding recommendation of the rd of works, that a correspondence should be opened with the government of the United States, concerning the extension and improvement of certain roads and rivers. See REGISTER, vol. XXX, page 282, for these things more at length. Really, the constitution would be a queer thing-a stange compound of erudities -- if left to the never-ending changes of opinion in the "orthodax," which, as Dr. Fothergill said, means "uppermost"—as "the wind blows!"

And how has it been with the now frantic "staterights" politicans of South Carolina, and the present head-men of mullification? What was it that Messra. Cathoun, Hamilton, McDuffle, &c. could not find constitution for, in 1828-3? Were they not at dagger-points, almost literally, with Mr. Crawford and his party, the radicals in red-jackets, because they would limit the powers of the general government, or, as Mr. Cathoun and his school preferred to say, the national government? Did not this latter party, with a high hand, throw judge Smith, "neek and heels" out of the senate of the United States, because that he spoke of "state rights!"—and have not the same persons, under a new organization of principles (!!!), again east the same of gadge Smith out of the same scatch, because he thought that all power was not vested in the states? Politics, like the wand of Prosperse, conjures up storms and tempera, spirits of the air and imps of hell; and the senare of men are so be wildered, that the space of Ihmiel touches things in vain, to shew their delutions! But this state of society cannot last. The whirlwind will not always feed itself. Passion must yield to the soberness of reason. "Truth is mighty and will prevail."

There is no earthly thing better established in its pelnelple than the right of congress to protect the industry of the people. The chain of evidence in its favor, is perfect—from 1765 to 1831. An hundred extract its consecutive proceedings of the freemen of our county is old world."

was preparing, proceeding, or accomplishing, establish this right as a "natural and unalicinable" one, being the "pursuid of happiness"—without which the gift of life is valueless, and that of liberty nultified. The mater-apirits of the revolution—the giants of the days when "struggling nature" gave birth to our republical, all, asserted and proclaimed and defended this right.

There was only one Arnold among them. British gold had its solstary influence then. FRANKLIN, and the rest, regarded and encouraged domestic industry as the pio-neer and shield of independence---so had all the British statesmen, from Chathan, who would not have allow-eil us to "manufacture a hob-nail," flown to the meanest of the set that demanded inqual fied obedience and abject submission of our lathers. We have the record of these things, and the record is true. The primary meetings of the people, and the assembles of their delegates, previous to and during the revolution, were not made up of liars---nor of fools. Look at the testimony presented in the address of the late convention at New York, Mr. Brown's speech, inserted in the present number, and Mr. Everett's able and eloquent oration, delivered and Mr. Everett's able and cloquent oration, delivered before the American Institute—son the multitude of testimony that might be referred to. And when the war at arms was ended, the people soon found that the "BEVOLUTION WAS NOT OVER." They were politically independent—but personally chained to a support of the pumpers and profugates, civil and ecclesiastic, of Great They essayed, in their respective states, to relieve themselves of this oppression, which was grinding them to the bone—but essayed in vain. Each state, surely, then had the power to "REGULATE COMMERCE." but there was no harmony in operation; and lord Shef-held, and others of his foul school, exulted that the profits of American labor would centre in the "mother country" without the expense and trouble of governing it! But he and they were doomed to see the establishment of a FEDERAL ADMINISTRATION, the leading objeet of which, (we have the best possible authority for saying --- the statement of Mr. Madison, and as far back us 1795)-was to condense and shreet the power to "tegulate" trude ( which the states had mefficiently exerted), for the "general welfare"—the states yielding every claim to such power; may, going so lar as to pro-hibit the exercise of it by themselves, individually; for each was smarting under the ru-nous effects of this miseach was smarting under the runous effects of this mis-guided and distrated, yet vital yower. And how was the rathication of this federal compact received by the people--how was it celebrated? By numerous and splendal processions of MECHANICS and AR-TZANS, bailing the result as securing to them a reasonable enjoyment, through labor—by checking the reasonable enjoyment, through labor—by checking the influx of the productions of loveign labor, coming into competition with their own. And yet further—the very first petition presented to the first congress under the constitution was from Baltimore, praying the establishment of an "American System;" which Mr. JETTRIBOX" afterwards first clearly designated, and Mr. CLAY first reduced to method and gave a body to. Charleston, S. C. and New York, and many other places, followed close upon the leels of the people of Indeed, the whole free taboring population Baltimore. of the United States looked to the first congress for en-couragement, surpour, PROTECTION; and the first legislation of that congress was to "encourage manufac-tures." And what has happened since? No congress, nor president, nor chief justice, has ever rejected this power. The statute books are filled with acts to foster agriculture, encourage manufactures, and protect com-merce—and they all rest on the same principle—the same yielding of "sovereignty" by the several states,

all not always

"all none of his letters in 1817, Mr. J. said, "The hisoness of reason.

lory of the last wenty years has been a sufficient less to
to us all to depend for necessaries on OURSELYES ALONS,
and I hope that twenty years more will place the American hemisphere under a SYSTEM OF ITS OWN,
sesentially peaceful and moustrious, and not needing to
extract its comforts out of the eternal first raging in the
old world."

the same prohibition of a resumption of it by them." the same probabilism of a resumption of it by them. Every presculent and practice is in favor of the principles for which we content, and every state has repeatedly acknowledged them, even nutificatory. South Carolina. Who doubted this power when William Lownbea, and a majority of the delegation of South Carolina, voted for the tarff law of 1816! Nobody!—No voice had even been ruited to question it. But I was reserved, and at a recent date, for some men to discover that those who mails the constitution did not understand its meaning-that every congress was composed of a majority of fools, and that all the presidents of the United States, and all the chief justices, were arrant blockheads! This is the true state of the case, and not withstanding at least four-fifths of the people admit or cleave to that power, as indispensable to the prosperity and duration of the American republic. I might say, nmety-nine hundreds of the people—for he that admits a right in the general government to reorect the fruits of our soil, or the products of our workshops, in their transit to market, by vessels of war cruising even at the antinodes, -- surely must grant a power in the same government to protect the farmers and others in the growth or manufacture of these very articles, located willin the body and forming an integral part of the government, and reposing, as it were, immediately under the wings of the eagle—the emblem of this land of the free. † And it should be always recollected, that every take of cotton goods, cask of nails, case of hats, trunk of boots or shoes, package of cabinet furniture, exported, as much, and as faithfully, represents four and heef or pork exported, as the barrels of those last named srinkles, duly inspected and branded and entered on the custom house books, can poss -

\*By the 3rd art. ol the 7th sec. congress has power to "regulate commerce with toreign nations," &c. and by the 2nd art. ol the 10th sec. the states are prohibited from laying duties on imports or tonneye, &c. By the embargo laws, the power to "regulate commerce" was so lar extended as to cover its entire destruction, if thought expedient. If there is a right to destray, the right to restrict cannot be doubted. The greater inevitably includes the lesser power.

It is not worth while to mince the word—I regard that American merchant as a sheer know, who calls upon the United States to protect him in his pursuits, and guard his alony and her cargo at the cannon's mouth, that he may make profit on his capital—and denies a right in the givernment of the United States to protect weavers, insters and shoe-makers, peacefully employing their capital, which is above, (the source of all capital,) at home, by which their wives and lattle ones are fed and clothed. If these "Green trade" merebastics are god, and clothed, are the same should be supposed to the make wheir patents—let them fight their own bardenesses the same should be supposed to war goe off with a hursh to eatch the villains—subt if a fraud is committed at the custom house, by which the property of a manufacturer is apolic, no sensibility is roused, and the gentleman who commits it has credit for his agrantium—merham even for his president mercham and the property of a manufacturer is apolic, no sensibility is roused, and the gentleman who commits it has credit for his agrantium—merham even for his PREMINIES.

for his aggacity— perhaps, even for his PERJURIES!
It is time to speak plainly about these things—and we will do it. We may as well employ British merchants as consume British cloths—and the people will soon say sey—IMPERJURIES AS 50.

[There has been below mighty out-ery among the ambassadors from the beautifacturers of Norbehre, who "the abroard" for the ben fit of these who pay income occuse that the collector at New York has ordered silpackages of cloths, reported at the dollar manumum, to the public stores, for examination. They, for sooth, complain of the proceeding as being tyrannical, migurous and unjust! That are a pretty set to make such complaints. How many thousand barrels of American flour are locked up in the English wrechouses—because of English "regulations of trade" as to their own market; What package of American goods may pass into the bands of English merchants, previous to its special examination by English custom-house officers? Whater each ammistion by English custom-house officers? Whater each ammistion by English custom-house officers? Whater each summission of the summi

bly do. It may be generally said, that every 100 dellars worth of goods manulactured in the United State, whether for the doncatic or loreign demand, have, in the materials of which they are cumposed or the substateme of the persons employed in making them, not less than 75 dollars worth of the products of our fields, forests and mines. Thus, if the manufactures of the United States have a general value of 500 millions a year (and I feel certain that this is less than the ultimate price of the various commodities of our mechanics, manufactures and handlera(1s), 375 millions of that value has its origin and resting place in lands and their productions. These things are not said slightly. Let no noe be sistelled at the magnitude of the smuonis suggested, but divide them among the 13 millions of persons to be supplied,—from sneliours to skillette—ships to shaving boxes, from great coats to buttons at 2 cents perdozen,\* and it will not appear that I have adopted extravegant sums.

But we are called upon to cast away this mighty homearket and take up "free trade!" Do we not already export all that other nations will take from us? What American commodity is there that commonds a high profit, to the American producer, in a foreign country? All are as prothibited, unless in small quantities or a particular places, except cotton. Grain or floor is virually excluded—so are beef, pork, fish and all the rich products of the sea, as well as those of our forests and workshops; tobacco is taxed 1,000, and rice 100 per cent. The foreign market cannot be enlarged; yet some would embarass and destroy the home deman! Were the ports of Cuba shut against our flour (though not more than 100,000 barrels have been annually received), the price would be diministed 25 cents perfectly due to the control of flour from the middle and western states, and what would be the consequent reduction in prace of all and every commodity of our farmers? whither could this then surplus million of barrels be sent? To "free tade" Great Bristin)"—that land of "pilliotophers," who theerize for our benefit and practice for their own!

There is no such thing as "free trade"—nor can there

There is no such thing as "Irec trade"—nor can there be, until nations are brought under the same standard of subsistence. If the United Status were bleszed with about two and an half millions ol papapers—free white men hired out like black slaves, perhaps a system of free trade might be arranged hetween us and Great Britain, that would work to the yet further making of paupers in both countries! But Britain thinks also has enough of these already—and hence denies free trade to other nations, that they may assist in supporting them; and holds last to her restrictive system, that foreign competition may not multiply her own want! Generous John Bull!!!—Look at the facts stated concerning the whale fishery, in another part of this sheet. If our eastern breithren had free trade with England only in that, they would turn the bulance of trade in our favor, and sweep every British ship engaged in the fisheries from every sea, by their superior painece, perseverance, and swill; and their fields "in the deep!" might become nearly as valuable to our country as the ficles of cotton. Aye, and thousands of MEN, (rocked on the wave), be reared, that would firmly grap, and unconquerably uphold), the "starry banner," wherever a keel might proceed on the ocean.

There is a great excitement at the south against the protecting system. Why, we do not understand, except minists of the protecting system. Why, we do not understand, except minists of the protection of the control o

<sup>&</sup>quot;Serviceable' buttons are made, in any quantity, is Connecticut, and sold at 25 cents a groce. I have a specimen of them hung up to shew the "extortion" of the manufacturers.

upon an experiment which certain British politicians have long thought that they themselves might succeed in—a dissolution of our union, and a return of the southern states to their meion trailegisnee; and such, in fact, must be the incresiable result of present designs, if nul-lifeation triumphs—and other circumstances shall not render such allegiance userly worthless.

That the "will of the majority to be rightful should be ressonable," is cheerfully siluitted; but if the judgment of this rightfulness belongs exclusively to the minority, as claimed by the mail-caps of South Carolina, the ultima ratio, or an appeal to force, must decide the question; and to this the people of that state (though divided among themselves, and having within themselves a most fearful agent of desolation), are furiously urged. No objection is offered to a revision of the protecting lawsto a reduction of the "taxes" on the people, as pertaming to duties levied on certain goods imported-but these deny the right of the whole protecting system, and will prescribe all the articles on which duties may be levied, either for revenue or the "regulation of commerce!" And who are they that pretend to this construction of the constitution and power of legislation, and claim an authority to enforce their decision? - About one half of the 257,878 people of the United States located in South Carolans, against more than ten millions of the people inhabiting other states! We in the majority would do much for the sake of harmony--yield much, even of our unsloubted rights, (without abandoning principles) in a spirit of cenciliation; but it must not be demanded that we shall give up the power to protect ourselves! And here the point is at issue. We will go for to accommodate, but cannot offer sacrifices to lear; and if the minority is to determine as well the expediency as the constitutionatity of ALL public measures - (and for such South Csrolina really contends), the sooner we know it the better! If South Carolina may nullify the tariff laws—Missis-sippi may do away the judiciary act—Delaware nullify the appropriation to the Chesapeake and Delaware canal, and take possession of the property - Missouri, under the gunlance of col. Benton, make it a felony for any man to pay his honest debts in a solvent currency-Itunois, on the suggestion of gov. Edwards, nullify the tand laws, and seize upon the property of the United States for the benefit of that state -. Maine put a stop to all negotiations with England, and make war on New Brunswick-and Virginia, especially Virginia, splendilly led on by Mr. Randolph, make it a capital offence to ount values by dollars and cents—tobacco, glorious to-bacco, being the only just measure of worth in the "an-eient dominion," even wherewith to purchase wires, as was the practice in those days which Mr. Randolph so dolefully isments have passed away, and never will return. In this state of things, nullification must end in the extinguishment of all power in the general government-fieree contests between the states-the victory of the strong, and the enslavement of the week. And is so IT MUST.

OLD STREE. When George Washington, the father of his sountry, was installed president of the United States in 1789, he was clothed in American cloth. When John Hancock and Sinnes 3:diams, he "trebels" exceluded from the royal mercy and grace, were installed governor and lient, governor of Massechusetts, at the esable of the revolution, in 1789, they were both dressed homespan. When James Mushon, the father of the constitution, took his eath of office as president of the United States, an 1809, he was also clothed in the products of American labor. And it was just show this item that John Randelph disearched the use of homesmade goods, because it was thought "patrolie" to present them.

The last named, it is stated, attended to make his late speech to his "dear constituents," in a British built wash, drawn by four horses.

"The buttons on the coat of John Hancock were of silver, and of American manufacture—the device, a shepherd shearing his sheep—the motto, "you gain more by our fives than by our deaths,"

Moser has become excessively "searce," and will be searcer, unless some diversion in our favor should knowly be made by the people of Europe—a small thing, like a general war, a complete "row" in Eugland, or a brisk and blood evolve contention in France. But the revenue is flourishing—and if its excess of 8 or 10 millions, or depreciations in property equal to the value of hundreds of millions, unhinging all the relations of society that England may have a market for her goods in America, may we not glory that the public debt is paying off, and that persons, who do not want money, will be forced to take it?

To be serious—the prospect of the coming winter is a grave one, and a serious depression will be estensively felt, unless on secount of some fortunate incident. The product of the pauper-labor of England has been present in the United States to a rimous extent, and every class of society, except office-holders, and others living on fixed revenues, will feel it. There is a doubt about the necessity of protecting the home industry, and yet all that we have to export—or, rather, all that other nations will receive, will not pay for even the manufactures of leather, hats, caps and bonnets that we use. We are glad however to observe that there is some advance in the price of flour—for the home demand. This will increase the circulation of values, and help to settle balence between individuals.

THE BUTY ON CHIEFE WILL BE ON CONTROL OF THE BUTY ON THE BUTY ON THE BUTY OF T

SUGAR. If a writer in the "Salem Gazette" had referred to the 38th or 39th vol. of "Niles" Register," for his fast concerning sugar, instead the '9th [1816]—he would have seen that protection, for something clast. It care not what), had mightly reduced the profits of the planters, and caused a supply of the commodity at a reduction in price, as compared with that of 1816, equal to the whole amount of the duty or "tax" imposed on the foreign article. The calculations then of what has been might as well have been "let alone." "Things as they are" most interest us.

TANNERIES. The capital invested in the tanneries of New York, is estimated at five millions of dollars. Their annual production is pretty nearly in the same sum.

BRITISH INON TRADE. In addition to the facts stated in our bast, we now learn that such is the ruinous depression in this branch of manufacture at the present time, that pig iron, which cannot be sold for less than £4 per ton, so as to remunerate the manufacturer, may now be bought in any quantities at £2 10s, per ton. The principal cause of the depression is the excessive quantity manufactured.

RESTITUTION. Treasury department, November 16, 1831—The secretary of the treasury has received our hundred und seventy-five dollars, transmitted anonymously through the just office, as "a balance acknowledged at the confessional, to be due unto the United States, by a member of the Catholic church."

(The drab-gaitered gentry who have long infested N. York, have defrauded us of millions—but there is little hope of reaching the consciences of these men, except through a swittly-expected consumption of hemp. Is it not a shame, that three fourths of the whole importation of goods from England, at that port, is in the hands of ann who are alies to the United States.]

RAIL ROADS VERSUS CANALS. Among the selections from foreign newspapers in the National Gazette, we find the following ---

"The Liverpool Albion relates a singular fact in relation to rail roads and canals. A bill has passed the British parliament during the present session, and received the royal assent, for convecting the Manchester, Bolton and

Bury canal into a rail road. This canal is cleven miles in length, and runs through one of the most populous, wealthy and important manufacturing districts in the country. It forms a part of the line intended for the proposed rail road from Liverpool to Leeds. The majority of the stockholders in the caual have spontaneously acquiesced in the change,"

GOLD has been found, in considerable quantities in Indiana - and rich deposits have been discovered in parts of the low country of North Carolina, near Ransom's Bridge, about 200 miles east of the western mines in

VERMONT. Mr. Slade, lormerly a clerk in the de-partment of state, and rijected by Mr. Van Buren, has been elected to congress from the district lately represented by the lamented Mattary -- after many trials to make a choice. Mr. Slade was the anti-masonic caudislate.

MASSACHUSETTS. The annual election for governor, lieutenant governor, and members of the legislature, took place last week. Three cambidates were run too governor, and the latest return of votes stands thus:

Por Mr. Lucoln, (Nat. Republican), 22,022

Lathrop, (Auti-Mison), 10,585
Morton, (Jackson), 9,038

It was thought by many that, after the publication of Mr. Lincoln's letter, the anti-masons would not have offered a cambidate—Mr. L. never having had any connection with the society to which they are opposed.

Yet another attempt to elect a member of congress from the Bristol il strict has failed-for Mr. Hodges 3,143, Mr. Ruggles 3,085, and 1840 scattering." Mr. H. wanting 54 votes of an election. So in the Essex North district—for Mr. Cushing 2,050, Mr. Kntredge 1,591, Mr. Osgood 1,463, and 25 scattering—"no choice."

NEW YORK. The contest at the late general election in this state, seems to have rested almost wholly between the "Jockson" party and the automasonic. Of the assembly, the former has elected 9.3 members—and the whole "opposition" is put down at 35. The result is nearly the same as it was last year, when the Jackson party had 95 members. The senate has the same political character. The number of votes taken was small no great deal of interest having been excited.

Warm work seems to have been expected in this state, because it was leared that certain returns of votes for governor, not being altogether in the forms required by law, would not be handed over by the then governor to be counted. A correspondence was opened with Mr. Gilmer on the subject, but he declined to suswer certain letters addressed to him, and "down with the usurper" was already the erg. But so it was that, whether these votes were counted or not, Mr. Lumpkin was declared to have the majority, and duly installed. Parties are exceedingly hot in Georgia-though, as we have more than once remarked, we do not know what the people are differing about. Perhaps they are touch-ed with the old polities of New York, by which persons were transformed from democrate to lederalists, or vice versa, while sleeping in their beds-the test sometimes suddenly changing from an opposition to a support of Messrs. Clinton, King, or other distinguished individuals-as the magician worked his wand. It seems that the political party opposed to gay. Lumpkin, has a small majority in both branches of the legislature.

KENTUCKY. The following is a statement of the vote for senator in congress, in the legislature of Kentucky:

In the senate.

or Henry Clay, R. M. Johnson, Warden Pope,		18 19 1
		38
11	In the house of delegates.	55

R. M. Johnson, 45

And the second s Mr. Clay, with col. Johnson, and Mr. Rowan, the late senator, were all at Frankfort at the time of the election. When general Jackson, under the same circumstances, was elected a senstor of the United States from Tennessee, he had a majority of 10 votes over Mr. Wil-Imms.

The Washington Globe uses the fullowing language, in anticipation of the election of Mr. Clay. It suggested perjury and fraud in advance, on the legislature of Kentucks !

"It under these circumstances, Mr. Clay should come to the senate, he will but consummate his ruin. He will stand in that body, not as the representative of Kentucky, but of a few base incu rendered infamous by the fraud perpetrated in electing him. He will be but the shalow of what he was once in congress, when he stood upon the basis of the democratic principles which he than avowed, and which the people of Kentucky still maintain. He will no longer represent his countrymen-but like an Irish patriot become an English pensioner, he will represent an odmus obgareby; and owing his station altogether to chicane and management, he will be stript of the dignity of ins character, and will gradually suk into insignificance."

Since the election of a senator from Kentucky—the editors of the "Globe" are not soy better pleased. Why not suffer the gentleman preferred to side into "insignias it is authoritatively said by the Globe that he ficance," as it is authoritatively said by the Globe that he carl?" We wish a truce to such rough impendments.

STATE BANK OF TEXNESSEE. The following is an extract from governor Carroll's message in the legislature Tennessee, transmitted on the 19th ult.

"In the communication which I made at the commencement of the last session of the general assembly, I urged the propriety of a strict examination of the state bank, from a conviction that many of its officers and agents had disregarded the trust reposed in them, by using the public funds for their own private advantage. The joint committee to whom was referred the duty of enquiring into the condition of the bank, discovered that the officers of the principal institution at Nashville were defaulters to a large amount; but the near approach of the termination of the session, when this information was obtained, rendered it impracticable, at that time, to ascertain the precise deficiency. The new directory, however, were authorised to bring the business to a close as soon as possible; this they have not yet entirely accomplished, although great diligence has been used for that purpose. Nearly two hundred thousand dollars have been obtained from the eashier and clerk, and it is still to be feared that there is still a considerable sum in default. When it shall be accurately known, a hope is entertained, that the securities of the eashier will be disposed to settle, in a manner satisfactory to the state. Although there is every reason to apprehead, that a loss will be sustained at the principal bank in Nashville, yet it is believed that a much greater proportional deficien-cy will be found to exist at the agencies. The report of gen. Smith, of the examination which he has made of the agencies in West Tennessee, is now before me, and it exhibits extensive insolvencies on the part of the debtors, and great maccuracies in the transaction of the public business by most of the agents. The amount due at the agencies in West Tennessee is about two hundred and firty thousand dollars, and of this sum at least sixty thousand dollars, and probably more, will be certainly The gentleman appointed to examine the East Tennessee agenoies has not reported; but it cannot be otherwise than that some hiss will also be sustained in that end of the state. From this view of the subject it is palpable, that the state has already incurred a heavy injury, and that most of its funds are in great jeopardy. What then can be slone to secure the interest of the country? The answer is obvious. Measures must be immediately adopted to close the affairs of the bank with as little delay as possible, taking care not to oppress the debtor part of society.

MISSOURI. General Ashley, the independent candi-MINSOLII. General Asiney, the independent candidate, has been elected to congress in the place of the late Mr. Pettis—beating Mr. Wells, the "regularly nominated Jackson candidate" by a very decided majority. The general is in favor of internal improvements, the a ne general is in layor of meetins improvements, the protection of domestic industry, the judiciary, and the bank of the United States. The people of no state have better reason to value a sound currency than those of Missouri, for the doings of the "rag barons" there were exceedingly oppressive—and then came the "loan office" scheme, to guaw at what the "barons" had failed to obtain—and waste. Gen. Ashley is a decided supporter of the "American System."

MASONS. The Globe publishes with approbation a paragraph from the Anti-Masonic Star—which concludes by saying—" Mark our prediction. A majority of the Baltimore convention, in December, will be actual masons or their relatives."

The delegates from Baltimore are not masons. How their "relations" stand we do not know. But the nearest their "relations" stand we do not know. If the hearest relations of one, we happen to know, are Episcopalisms, and of the other Roman Catholics.

A letter published in the "Globe" from Indiana, says

A letter published in the "Globe" from Indiana, says that the design of the opponents of the present administration in that state, is to prefer Mr. Clay for the presidency and Mr. Hirt, for the vice-presidency, and "thus pots down anti-maxonry by electing two missions."

Corron. From the Charleston Courier of Nov. 12. GOTTON. From the Charleston Courser of Nov. 12. A friend, now on a visit to the eastern states, has sent to us, by the ship Dover, from Boston, a specimen of what is called "Payta cotton," a small portion of which what is called "Payta cotton," a main portion or which in the seed, and a portion gimed; together with the seed taken from the latter, which may be examined at our office. It is stated to grow spontaneously on the coast of Peru, and that any quantity may be had in the seed, at one cent per pound. Two parcels have been imported into Boston, one of which, amounting to about 200 bales, has been ginned out by a common saw gin, and some of it sold at 15 cents per pound. The other and some of it soul at 13 erins per points. The other parcel is in the process of being cleaned by land. It was found to lose shout 2-34s of its weight in the pro-cess of cleaning. The merchants interested in these importations, according to the statement of our correspoudent, seem to think if the duty ou imported cot-tons were removed, that a good business may be done in the article. The staple is so long, that none of the machinery at present in use in the neighborhood of Bossusuamery as present in use in the neighborhood of Bos-ton can work it advantageously. Our correspondent also states, that there is a quantity of the seed which might be procured, should any of our planters be in-elined to try it. The plant is a percuni-lone.

CANADIAN COMMERCE—fire trade. The Montreal Gazette of Nov. 8, says, we mentioned some months ago, that a mercantile house in this city had made a shipment of flour to England, manufactured at the Gananoque mills in the upper province, from wheat imported from the U. States. The scrifficate of the custom house in this city, which accompanied the flour, stated these facts concerning its origin; and we are pleased to learn from the shippers of the flour, that they have received intelligence from Liverpool of its having been alimitted on the same terms as colonish flour. Upon this point we now lisve the concurring opinions of the highest law officer in Upper Canada, of our custom house department, and of that in Great Britain, so that all doubts that may have been entertained on the aubject, must be dissipated.

"SCARCITY AND SUPPLY." The small comparative reduction of four millions, in the circulation of the money in that country—for even that amount assesses a value, as it were, on all sorts of commodities.

The London Herald says—According to the governor

of the bank of England the amount of the notes in cireulation at present is, as near as can be ascertained, 17,600,000. Thus, within a short period, it appears that the currency has been reduced about four millions. No wonder that money is scarce in the country. No wonder that the prices of produce and manufactured wonlife that the prices of process and maintenance of the proof are falling, or that the nation, in general, sis in a state of distress. We do not blame the directors of the bank for withdrawing their issues—it might have the bank for withdrawing their issues—it might have the tariff, as productive of ruinous consequences to the

been necessary for the safety of their establishment; nor do we blame them for keeping secret their affairs— that indeed is the work of the proprietors; but we say that indeed is the work of the proprietors; but we say that no company should possess the power that the doct—a power by which the directors are enabled to raise or depress the price of every thing at their plea-sure. It is, however, quite clear to us that one of two things must be done—cher the currency must be in-ereased by the issue of one pound notes, or the expen-diture of the state must be reduced at least one—third.

ENGLAND AND CHINA. By the brig Osprey, captain Caldwell, striving at Charleston from St. Helena, intel-Caldwell, arriving at Charleston from St. Helena, intel-ligence is received that, on the 16th September, the East India company's sloop of war Coote, arrived at St. Helena, with despatches for England, announcing that the English betories at Cauton land been broken up by the Chinese, the servants attached to the factories had had their hands taken off, the likeness of king George tors down and trainpled under foot, the trees in front of the factories torn up, &c. All commerce between the Eng-lish and Chinese ceased after the 10th August, and the British ships had all left Macoa.

[If the ports of the 'eclestal empire's should be blockaded by the English, as it is possible that they may be, what suffering will there be in all the world for the west what surering wit there be in all the world for the want of those things which the emperor has been graciously pleased to let the barbarians earry away, (in exchange for silver), that they might not perish—such as tea, por-

celain and fans!

[Other accounts say that things had not proceeded to such extremities, between the British and Chinese—but speak of serious difficulties between them.]

COLONY OF LIBERIA. In the town of Monrovis, 55 new wood and stone houses were creeted; Caldwell and new wood and wome nouses were creeked; canavers am Millsburg, and some towns for recaptured negroes, share in the general prosperity. Francis Devandy, as comanejusted slave, has accumulated a property worth \$20,000. Mr. Warring, another colonist, sold goods to socioco. Ar. varring, sindiffer colonists own vessels, and would trade with the United States, had they a national flag. Net profits on ivery and dye woods, passing through the hands of the settlers in one year, was \$30,786; eight vessels traded to the colony last year, from Philadeluhia.

In agriculture, every thing grows spontaneously; there is no winter; one continual spring plooming. There are six solools in successful operation. It is calculated that every child in the colony shall be educated; 100 from the neighboring class now attend the schools in Liberis. the neighboring class now attend the sentons in Licera-Divine service and Sunday schools are regularly attended. There are three religious societies, Beptist, Methodist and Presbyterian. Meetings on the subbath and week and Frestyster.

The Christian religion appears to laws ome influence on the surrounding tribes. The population in 2,000—they have 6 milita companies, a fort, 20 pieces of 2 milita companies, a fort and arms chogs to arm 1,000 men.

MR. BARROUR. We met with the following in a letter from the Washington correspondent of the "United States Gazette," and give it a place the more readily, because we have heard the same facts stated by persons who were present at the discussion spoken of—and the like of which, with a complete overthrow of Mr. Barbard of the same state of the sa bour's theories, we had the pleasure to witness at Washington in 1828, in an argument between him and our late valued and dear frientl, Abraham H. Schenck, of Matteawan, New York. Never was the mastery of a practical man more fully shewn than on the occasion alluded to.

While the anti-masons were in Baltimore, Mr. P. P. White the anti-masons were in issittmore, and it is a strain or in the way to Philadelphia. He was very eager to come in conflict with some of the tariff men from the eastward, and threw himself out for that purpose. After some skirmishing about, he encountred a Rhode Islander, a merchant from Provisouth. He was requested to come down from generalish of his attempts to make a flaming speech. A southern ties, and specify the articles on which the tariff operational file only believes that a single state has a right to ell with such a destructive effect. He selected occurdingly, and can through his list with his accustomed volubility. The Rhule Islander then produced a comparative price-current, from which he demonstrated that the articles which had been specified, are now to be obtained in the south at a lower rate than before the tariff was imposed. Mr. Barbour referred to some other articles, but he was again met with the same plain matter of fact refutation. Driven from all these points, he discharged pushed off with a declaration that, if the southern people believed themselves to be oppressed it amounted to the same thing as if they were oppressed; and that, if by the repeal of the tariff, which they solicited, they injured themselves, it was nobody's business but their own.— But he was not permitted to enjoy even this position. had any right to the gratification of a mere exprise, when that gratification was to be attained by the ruin of so large a portion of the country—it must be ruined by a repeal of the tariff Millions of capital suddenly thrown out of employ, and splendid establishments overthrown out of employ, and spienning estimatements over the an instant, and thousands of citizens rendered at once poor and without a vocation, were considerations too weighty to be invoked for no other purpose than to satisfy a few reatless politicians and enthusiastic theorists that they were in an error. The triumph of the eastern mer-chant over the southern lawyer, was considered by the auditors as complete; and several were solicitous to find out the pedigace and profession of the victor. They were informed that he was a man of no proud pretensions, but was a fair specimen of the average population of the section of country from which he came. His knowledge was practical; and the superiority of prac-tical knowledge over high-aounding theory, was never more perfectly demonstrated.

THE PRES TRADE CONVENTION. The correspondent of the New York Enquirers, who professes to have been a spectator of the proceedings of this body, gives the Collowing Iudierous senseture in one of his letters!—
After the proposition of Mr. Gallatin was quietly disposed of—and it was a difficult task to do so—Mr. John-

posed of and it was a difficult task to up so aon, of South Carolina, made a motion which again excited the deepest expectations of the erowd. "Now for a fight! now for a fight!" "Here comes the thunder and lightening at List!" He objected to the clause and lightening at 14st? " He objected to the cause which recognised the incidental power to protect manu-factures., This motion almost led to a complete disruption of harmony. The clouds lowered and mutters of the thunder were heard. I never saw any assembly so the tudder were heard. I never as wany assembly so hear plunging into a fery debate which might last for days. Mr. Sherman, of Connecticut, and Theodore Sedgwick, had almost broken down every feeling of cau-Sedlywick, had almost broken down every leeling of east-tion. Happily, Mr. Sedgwick threw into his speech some eccentric views, which created a general smile over the convention. His views of the tariff were quite original. He believed it to be perfectly constitutional but radically unjust. His objections to it rested on a higher ground than unconstitutionality—the tariff laws were contrary to the laws of God and nature, and that were contrary to the laws of God and nature, and that was the reason of his opposition. He sppeared to believe free trade was a God-Almighty principle, and, therefore, all tariff men were obturned sinners, and irrecoverably danned. This made the southern outlifiers amile and others laugh outright. You will be surprised when I tell you that the South Carolina mullifiers are sane, reasonable men, when compared with those from Boston. During this latter debate, it was the greatest difficulty in the world to prevent one of these Boston gentlemen from getting up and "letting slip the dogs of war"---opening the very chambers of the tempest and hurrienne. There is a comical anecdote told of three true blue southern nullifiers laying hold-one on each arm, a third by the tail of his coat—and keeping one of the red-hot Boston nullflers quietly in his seat, in spite

nullifier only believes that a single state has a right to nullify a tariff law—the Boston nullifier goes much fur-ther—"damo the union," ssys he, "who's afraid? Not only has a state, but a town-a county-nay, a single man, has a right to nullify a law of congress and secule from the union."

THE MILITIA STREEM. Many extravagancies have been exhibited at New York, Albany, &c. to destroy the present militia system, by ridicule. Falstaff's account of his recruits, is a moderate thing compared with these parades? The descriptions of the dresses and equipments of the "soldiers," shew that, in inventive talents, our people are not confined to the discovery of the quadrant, the cotton gin, the application of steam to boats and land carringes, the making of machine cards, and other "notions

FASHIONS COME ROUND. In 1663, the legislature of Massachusetts passed the following law:

"And hereafter, no person whatever shall make any garment for women with alceves more than an ell wide." Sleeves a yard and a quarter wide! No small latitude this for the daughters of the first settlers. If this law was deemed necessary, the fishion must have far exceeded an ell. The dresses of the "charming creatures" of those times, probably tivalled the exquisite amplitude of the bishops of the present day.

Boston Centinel.

DOMESTIC SLAVE TRADE. According to the New Or-leans papers, there were imported into that port during the week commencing on the 16th ult. from the various ports of the U. States, 371 slaves, principally from Virginia--as follows:

By the Tribune, from Alexandria, Sarah, from Baltimore, United States, from Norfolk, 150 James Ramssy, from Baltimore, Susan, from Charleston, Atlas, from Charleston, 60 Total. 971

MR. JEFFERS, of New Jersey, who, as we thought was in Guatemala, having charge of the affairs of the U. in cuatemala, naving energe or the attars of the U. States, very unexpectedly returned to New Jersey, and proceeded to Washington, "to explain (ways the account) extrain charges of foregrey brought against him." And the Clincinnat/Gozette of the 15th inst. says that the department of state had sent to the elects of the court in that city, and obtained a copy of the indistment for for-gery,—with a certificate that Mr. Jeffers had forfeited gery, with a certificate that Mr. Jeffers had forfelted his recognizance. The last that we had heard of this gentleman until now, was that he had embarked at Pen-asoola, on the 11th October, in the U. B. schooner Por-poire, for the rypuble of Central America.

A QUESTION STARTED! In a laborious examination of old papers, to gather facts for an interesting purpose,— I oftentimes mret with things that smuse, and some that actonish mere were transported and among a not some that actonish me-among them rosmy queer saying of my old triend, Thomas Ritchie—which are valuable, seeing that a file of his paper cannot be obtained for reference to his vegeries; and thus, as has been severely said of medical gentlemen, his works are covered—almost by oblivion. What a fate for the great autocrat of "orthodoxy?"

thodoxy?"
The following, however, amused me,—and I thought that it ought to have a renewed and full publication, for the benefit of all men, and the Hebrews as particular? But this "I, MORDECAL MANUEL NOAH," [I always thought his middle name was "Manassah"], now holds a high and responsible office under the United States—and I must needs think that the fact never occurred to president Juckson when he appointed him, that the said Mundacat stands before us as a SOVEREIGN PRINCE, in command of a whole nation, making laws "We wish to be considered, however, as placing lattle and assessing taxes, without the juvisition of the U. faith in what is stated in the New York Courier, except States, as well as within the same! The great question when speaking against itself, or the party that it happens, for the time being, to adhere to.

[En. Res. —deriving his title, as he gives us to understand, from the control of t

court, (who lately volunteered an opinion that certain of the most important acts of congress were unconstitution-Mordecat's office as "judge of Israel," is valid—the title of gen. Jackson to the presidency would appear somewhat questionable!

Ceremonics at the laying of the corner stone of the city

# of Acarat!! BY M. M. NOAIL

[Extract from the order of procession.] !'Rev. clergy, stewards with corn, wine and oil.

"Bible, square and compass, borne by a master mason, the gipes of Ignaki in black, wearing the judicial robes of crimson silk, trimmed with ermine, and a richly embossed guld medal suspended from the neck."

The procession enters the church. On the communion table lay the corner stone of ARARAT, with the fol-

lowing inscription in Hebrew:
"Hear, O Israel! the Lord is our God, - The Lord is ONE." Aisest, the Hebrew retage, founded by MORDE-CAL MANUEL NOAH, in the month of Tisri, 5585, corresponding with September, 1825, and in the 50th of American Independence."

"PROCLAMATION."

[Extracts.] "Whereas it has pleased ALMIGHTY GOD to manifest to his chosen people the approach of that period when, in fulfilment of the promises made to the race of Jacob, and as a reward for their pious constancy and triumphant fidelity, they are to be gathered from the lour quarters of the globe, and to resume their rank and

planeter among the grover ments of the earth."

"I, MORDEGAI MANUEL NOAH, citizen of the United States of America, late consul of the said states for the city and kingdom of Tuns, high sheriff of New York, counsellor at law, and by the GRACE OF GOD, Go-VERNOR AND JUDGE OF ISRAEL, have issued this MY proclamation."

"The desired spot in the state of New York, to which I hereby invite my beloved people throughout the world, in common with those of every religious denomination, is called GRAND ISLAND, and on which I shall lay the oundation of a city of refuge, to be called ARARAT."

"In His (JEHOVAII'S) name do I revive, renew and e-establish the government of the Jewish nation, under the auspices and protection of the constitution and laws of the United States of America. Confirming and perpetuating all our rights and privileges, our name, our rank, and our power, among the nations of the earth, as they existed and were recognized under the governments of the judges. And I HERRBY ENJOIN it upon all our ju-ous and venerable rabbis; our presidents and elders of synagogues, chiels of colleges, and brethren in authority, throughout the world, to circulate and make known this my proclamation, and to give it full publicity, eredence, and effect.

"It is my will, that a census of the Jews throughout the world be taken, and returns of persons together with their age and occupation, be registered in the archives of

the synagogue where they are accustomed to worship."
"Those of our people who, from age, heal attachment, or from any other cause, prefer remaining in the feveral parts of the world which they now respectively inhabit, and who are treated with 1 bensity by the published, and who are treated with 1 bensity by the published, and who are in the military capabilities of the way of the published to the published t

the different sovereigns of Europe, are enjoined to keep in their ranks until further orders, and conduct

themselves with bravery and fidelity."

"I command that a strict neutrality he observed in the pending war between the Greeks and the Turks, enjoined by considerations of safety towards a numerous popuation of Jews now under the oppressive dominions of the lation of Jews now under the oppressive dominions of the Jackston, force.

"I problem meringes or group Kelackin, wi hout both parties are of a suitable age, and can read and write

the language of the country which they respectively in-

"Prayers shall forever be said in the Hebrew language, but it is recommended that occasional discourses

"JEHOVAH," cligible to the office of surveyor of the jon the principles of the Jewish faith, and the doctrines port of New York? Will the judge of the United States of morality generally, be delivered in the language of of morality generally, be delivered in the language of the country, together with such reforms which, without departing from the ancient faith, may add greater solemnity to our worship."

"A cultitation tax of three shekels in silver per annum, or one Spanish dollar, is hereby levied upon each Jew throughout the world."

"I do hereby name as commissioners" [here follows a list of commissioners] "to sid and assist in carrying into effect the provisions of this my proctamation, with powers to appoint the necessary agents in the several parts of the world, and to establish emigrating societies, in order that the Jews may be concentrated and capacitated as a dutinet body, lisving at the head of each kingdom or republic such presiding officers as I shall, upon their recommendations, appoint.

"Intreat to be remembered in your prayer, and lastly and most carnestly. I do enjoin you to-"keep the charge of the Lord thy God, to walk in His ways, to keep His statutes and His commandments and His judge. ments and His testimonies, as it is written in the laws of Moses, that thou mayest prosper in all thou doest.

and whithersoever thou turnest thy self."

"Given at Buffalo, in the state of New York, this second day of Tisri, in the year of the world 5585, corresponding with the fifteenth day of September, 1825, and in the fitteth year of American Intependence.
By the judge "A. B. SEIXAS, see'y protein."

### BRIEF NOTICES.

Mr. Adams, late president of the United States, after the close of the literary convention at New York, pro-

ceciled to Washington, and arrived there last week.

Convictions. Many convictions of slaves have reeently taken place in North Carolina, and execution swiftly tollowed. Several free negroes had been tried.

and were acquitted.

Very important! Anderson, the English singer, who was driven off the stage in New York, has had the like calamity at Boston. A little more civility as to the people among whom he was coming to get money, would have prevented these things. The songster seems to

have prevented these things. The songster seems to have been very free with his tangue shout the "Vakees." Afts. Chapman. This miserable woman, charged with being the secomplee of the Spaniard Mina in the murder of her husband—(immediately after whose decease she married the adventurer), has been arrested in western Pennsylvania, in the millst of her relatives, and todged in the jail at Eric, by Mr. Blayney, high con-stable at Philadelphia, who thus obtains the reward of \$300 offered for her amerehension, by the governor of the

Sing Sing. There are in this state prison of New York, 1913 crimmals—chiefly employed in quarrying and dressing marble. Only 12 were in the hospital. Steambouts in the West. It appears from published

documents on the subject, that from 1811, when the first western steamboat was launched, to the spring of 1831, there had been employed on those waters 402 steam boats, of which 220 were in use last year, and 182 not in existence. Of these, 66 were worn out, 37 snaggert, 16 burnt, 3 run down by other bonts, 4 or 5 stove by see, sand bars, rocks, &cc. and 30 destroyed by causes not exsetly known. No less than 60 bosts, within the writer's knowledge, have been building or contracted for within the present year.

Cavatry. The journal des Haras, published at Copenhagen, says, 15,000 Danish horses were sold in the first right months of that year to Prussia, France, and Belgium, which produced a som of two milious of tha-

Broom Corn. It is said that 50,000 bushels of the wed of this corn were raised in Northampton, Mass. in the present year, and it will sell for 50 cents a bushel, to make whiskey. The manufacture of corn brooms in a large business.

The principals and their seconds in a late Explosions. affair of "honor," who crossed from Kentucky to Indians in a steam f rry bon', to actile their dispute, in which one of them was slightly wounded, being on their return to Louisville-both boilers of the boat hursted, and at least four persons were killed-among them the engameer and one of the firemen.

tise explosion of gun powder, also escaped that of steam.

Dimensions of the capital and its grounds. The
ground wathin the iron rading is 223 acres; length of Toot walk, outside of railing, \$\frac{1}{2}\$ of a mile and 185 leet.—

"The building is as follows: length of front 352 feet 4 inches, depth of wings 121 feet 6 inches, east projection and steps 65 feet, west do. do. 83 feet—covering 13 acre and 1,820 feet. Height of wings to top of balustrade 70 feet, height to top of centre dome 145 feet; representaroom (greatest length) 95 feet, representatives room (greatest height) 60 feet, senate chamber (greatest length) 74 feet, senate classible (greatest height) 42 feet, great central rotunda 96 feet in diameter and 96 feet bigth.

The north wing was commenced in 1792, finished in 1800, and cost \$480,262 57; the south wing was commenced in 1803, finished in 1808, and cost \$398,809 41; centre building was commenced in 1818, finished in 1827,

and cost \$957,647 35.

New Orleans. A considerable excitement prevailed in this city, and a part of the presbytery of the church of St. Louis was partially demolished, because that the rector had relused to inter, with the rites of the Catholic church, the relicts of a person who had committed sui-Such is one of the eanous of that church.

Cholera morbus. It appears that twelve of the erew of the U. S. ship John Adams, (lately at Constantino-ple), have died of diarrhæs, or cholers morbus—but that the health of the ship had been restored.

A powder magazine at Savanosh, lately exploded, and five persons, employed in removing some powder, were instantly killed, and three others, near the premises, acon died of the wounds they received. The bodies of all were horribly mangled.

Unnatural marriage. A good deal is said in the Phi-ladelphia papers of a brother and sister, natives of England, who have been recently married—also uttering suspicions that they had made-way with the man's late wife—having coupled a short time alter her decease.

# FOREIGN NEWS.

Arrivals at New York from England and France, bring Landou advices to the 11th, and Paris to the 12th Oc-

In the chamber of deputies, on the 10th October, the bill providing for the abolition of hereditary peerage, passed by a majority of 238. The king had granted permis-sion to all the Belgian officers in the service of France, to return to the service of their country - those who have been three years in service to be promoted a grade higher. ENGLAND.

ENGLAND.

The reform 5.4l and been rejected in the house of lords by a majority of 41. This decision has thrown the whole country juto a state of fearful excitement.—
The debate on the night of its rejection, was earried on with great animation. While the rupportion deprecied its passage as an infraction so serious that it was enleading to the properties of the properti culated to destroy the constitution, the ministers, and others triendly to its passage, advicated it as a measure called for by present abuses, and intended to preserve the constitution, itself; that it, or some other measure of similar character, must be adopted, or the people would resort to the alternative of resolution. It was supposed that the king would create new peers, by conferring titles on the eldest sons of lords triendly to the bill, and thus secure a majority in the house of lords. Supported, as the ministry are, both by the king and the people, it is supposed that they will remain in power, notwithstanding their detest. Earl Grey, the premier, had declared to that effect prior to the deleat of the bill. POLAND AND RUSSIA

As was to have been anticipated, the army of Poland has been dispersed, and the triumph of her oppressor may be said to be complete. Ruzyski retreated from Modlin into Gallicia, being unable to keep his army to-getter. The troops at Modlin had surrendered, so that all hope of Polish liberty, for the present, must be de-ferred. The emperor of Russia had organized a provisional government at Warsaw, and placed field marshal Parkewitsch at its head. Upwards of 1,500 of the most distinguished leaders of the Polish revolution had been

Those who had escaped parrested and imprisoned at Warsaw-and, to complete the picture of oppression, the Russian troops had fired upon the prisoners confined in one of the wings of the prison, under pretence of revolt among the malefactors, though it was known that three fourths of those there were imprisoned for political offences. The cholera continued to apread.

PORTUGAL.

Don Miguel still refused to punish the Portuguese sailor who attempted to assassinate the commander of a French man of war, notwithstanding the agent of France had demanded it

The British fleet had been so arranged as to give them the possession of the ports of Oporto, Lisbon and Figueras, and the English residents had become more at ease

than they had been.

The appearance of the British fleet in the Tagus had thrown Don Mignel and his ministers into the utmost consternation, for lear they were intended to co-operate The garrison of Madeira had been with Don Pedro. reinforced. Another insurrectionary movement in one of the regiments, had been suppressed.

BELGIUM AND HOLLAND. The king of Belgium had instructed his minister at London to obtain a prolongation of the armistice with Holland. Achille Murat, who recently entered into the Belgian army, has been dismissed, in consequence of a requisihis demand upon the fact of young Murat's being one of the Bonaparte family. Both governments are continuing their preparations to resume bostilities should it be necessary, at the expiration of the armistice.

It was said that the Swedish consul at Antwerp had been directed to do no act which could be construed into

an acknowledgment of king Leopold. ITALY.

This country is in a very feverish condition, and every precaution taken by the police to repress the insurrec-tionary spirit, which every where manifests itself. SPAIN.

The government had increased its army from 20 to 30,000 men, and were despatching them to the frontiers of Portugal. They were to be commanded by gen. Moerdinand scenis to manifest a disposition to take sides with Don Mignel, if he dare do so. GHEECE.

Admiral Misulis and his associates in the late revo-Admiral prisums and this associates in the late revo-lutionary movement against the power of the president, Capo d'Istrias, were blockaded, by the admirals of the three powers, in the port of Hydra; where, it is said, the people had arrested them, and that they had sued for pardon of the president.

# NEW YORK CONVENTION.

The following communication, forwarded to the chairman of the permanent committee by the member to whom it was addressed, was laid before the executive committee, and ordered to be published.

II. NILES chairman.

Boston, Nov. 11, 1831.

Sin: - I noticed among the statements maile to the tariff convention recently held in N. York, that every branch of American industry was protected, with but few exceptions; and among these exceptions the fisheries were mentioned. This would appear to be the case to most persons—but to a practical man, who is con-nected with the business, and has looked to the continuance of the indirect protection with deep solicitude, (so lar as regards the whale fishery), it appears quite the contrary; and from the following statements it will be made manifest, that, if the cotton and woollen factories are not sustained by an adequate protection, a large pro-portion of the ships engaged in the sperm whale fishery must go out of employment, or be thrown upon the freighting business—thus destroying a vast nursery of seamen, and, at the same time, ereating a ruinous competition in a branch of industry already represented, by many who are engaged in it, as not worth pursuing. It is a well established thet, that from one-fourth to onerics of cutton and woollen goods—averaging about half a gallon to each cotton and woollen spindle; besides what is used by the numerous mechanics connected with factories. By the statement herewith banded, you will perceive the vast increase in the importation of sperm oil since 1815; and the continued increase or diminution is entirely dependent on the protection afforded to the manufactures of the country, and the duty now existing on the importation of alive oil. Of the last mentioned oil, considerable quantities are used in the wootlen factories, giving employment to a considerable amount of tonnage-which quantity, no doubt, would be much increased if the duty were taken off: but this reduction of duty on olive oil would be very fatal to a considerable portion of the interest engaged in that valuable branch of domestic industry, the sperm whale fishery,—sup-posing that protection to the woollen manufacture is contimued. It, however, that protection be withirawn, the duty on clive oil may as well be removed as not, as but little will be wanted in the country, (excepting sallad oil), and the law will be a dead letter. To give you an blea of the value of the protecting laws to the ship-buildiers, rope makers, sail makers, coopers, coasting trait, farmers, &c., as well as to the country generally, I herewith farming you with some office principal articles which are used by with some office principal articles as they are fitted for sea—Viz: 30,000 barrels of flour, 30,000 barrels of flour, 30,000 barrels of peet and pork, 18,000 boils of duck, 3 (100 tons of imp. hours.) idea of the value of the protecting laws to the ship-build-

3,000 tons of iron hoops,

6.000,000 staves,

2.000 tons cordage and whale warp, with large quantities of iron for harpoons, lances, spades, blubber-hooks and camboose grates; much molasses, rice, beans, peas, corn, tea, coffice, sugar, &c. and not less than 6,500 officers and men to man the ships. These ships give more employment to mechanics, of various descriptions,—I should think twice as much, as the same number of tons engaged in any other trade. The sperm oil ships require to be coppered every voyage, sperms oil snips require to be coppered every voyage, and the quantity of copper consumed by the 300 slinjs will average annually 700,000 pounds, which, with the nails used to put it on, will be equal to three quarters oil a million pounds, annually. The quantity of sperm a million pounds, annually. The quantity of sperm oil imported for 1815 was 3,944 bbls. of 31½ gl. each

7,539 32,650 1816 1817 1818 18,625 1819 21.323 34,708 18.0 1891 48 000 42 900 1822 87,230 1803 92,380 18:24 1825 62 240 18 6 32.840 1827 93,180 1898 73.077 1829 79.840

1830 106,829 and, for 1831, the import of sperm oil will be about one bondred and ten thousand barrels, and the consumption as equal to the supply: ninety-seven thousand barrels have already arrived. The quantity of the common whale already arrived. oil, annually imported, has been about equal to the imon, annuany imported, has been about equal to the im-port of sperm oil, till this year; when it will exceed that of sperm oil. The whale oil already imported, since Jan. 1, 1831, is one hundred and twelve thousand barrels, and there probably will be a further import of 5 or 6 thousand barrels before the 31st December 1831. The whale oil is chiefly exported to Europe, as well as the whale bone-the latter amounting to over one hunthe whale bone—the latter amounting to over one hundred thousand pounds. This article is taken exclusively from the common or black whale. The sperm oil is consumed within the United States, as no other country excepting Great Britain, makes much use of it-and she, by her protective laws, excludes the sperm oil from this country by a duty of about 45 ets on the gallon. But for such duty we should drive the British from the whale fishery, [generally] notwithstanding the bounty paid by their government for its protection. We should also destroy the French fishery, but for like protection afforded by the French government, in duties and boun-

The United States is the only government where the people are extensively engaged in the whole fishery, which does not encourage this branch of industry by a

I have not been able to condense my remarks on this very important subject, within a parrower compass. It is a branch of great magnitude in a estimal point of view; but, I regret to say, that it is very innerfectly understood. It is a better nursery for seaman than any other; as almost every ship earnes but from 5 to 10 green hands-whereas, in the merchant service, the ships carry so few men that they are necessarily obliged to take able bodied scames, to the exclusion of green hands,

Yours, very respectfully,
C. W. CARTWRIGHT.
The quantity of sperm candica, manufactured from 100,000 bbls. sporm oil, is rising two and a hall millions of pounds. This part of the business came near escaping my recollection.

C. W. C. ing my recollection.

The editor of the REGISTER takes leave to add a few particulars and remarks.

Great Britain allows a bounty of one pound per ton on every vessel that shall proceed and return from the whale fishery in the Greenland sea or Davis Straits, or the seas adjecent.

Special bounties, some as high as six hundred pounds Special bounties, some as mgn as an unurreu pounds on a vessl, engagel in the southern, or aperm whale fishery, and bringing home not less than 30 tuns of oil, or head matter, have been allowed. The itetada are too extensive for inscribin—but the preceding shows the spirit of the British laws, as to bounties on the whale fisheries

The protection is in the duties imposed on oil, Train oil, &c. if imported in British vessels, owned in Europe, and manigated according to law, pays a duty of 5s. per tun of 252 galls —if in vessels owned in certain but if the product of foreign fishing, 22l, 3a, 4d. per tun. And on sperm oil, there is paid on the first el. s. of British vessel; 8s. 3d. per tun, and, it of foreign fishing, 3d. 18s. 3d. per tun. So that the British market is empletely shut against American competition. There is no doubt, if the trade were free, that no British ship would be employed in the whale fishery. The industry and perseverance, economy and skill of our fishermen, is without rivalry.

Another gentleman computes the annual product of our whale fishery at 3,500,000 dollars, and the value of

the ships at \$7,500,000.

the ships at \$7,500,000.

The importance of this employment, as a nursery for seamen, may be partially conjectured from the fact-communicated soon after the event by a distinguished officer of the nay), that among the erew of the Constito the construction frigate, when she enjuried the Cyane and Levant, were more than two hundred free holders. They had been fishermen; and the matter stated shews the character of this people.

The communication of Mr. Curtwright passed to the permanent committee through the hands of a woollen manufacturer. He says that he uses 4000 gallons of olive oil annually, and that, if the duty on that srtiele but to it annuary, and that, it the duty on that sprice be a tax, he would save \$1000 a year by taking it off. But he regards such duty as indispensable to the success of the whale fishery, and will not agree to abandon it. But, if the writer of these additional remarks is not

misinformed by those who ought to know all the facts, (and he hopes to shew them by references to prices current, at a future period), the price of clive oil has always advanced or declined with the price of sperm ol; the competition of the latter having the usual tendency of increased supply, to keep down the cost of the former.

SPEECHES IN THE N. Y. CONVENTION

There was not much speaking in this body. members were far more disposed to do than to talkmembers were lar more disposed to do than to latte-though there was an abundance of talent present to have done the latter, and well. We have inserted the plain and practical illustrations of Mr. Elizareth, of New York, and Mr. Erozm, of Massachusetts, as to froads on the rectone, &e. and it will not be an easy thing to set any of their statements aside. We shall now pre-sent a sketch of the speech of Mr. P. A. Erozm, of

Pennsylvania, which is a clear and distinct account of any tariff system: it was advancing the anomaly of a the early views of the American people, and of their representatives, as to the right and necessity of protecting the domestic industry-no doubt of the power having been entertained. We shall yet add sketches of a few other speeches to shew the spirit that prevailed in this great assembly, and present, perhaps, some new facts to inquirers after truth.

Thursday, October 27.
Mr. Brown, of Pennsylvania, submitted a resolution to the effect that the committee appointed to prepare an address to the people should be instructed to present a clear and comprehensive view of the tariff, or American System: showing that it is not only constitutional, but a part of the plan of our government; that it has been at all times studiously cherished, and that it was the principal cause of the abrogation of the set of confederation, and of the adoption of the present constitution.

In aupporting this resolution, Mr. Brown called the attention of the convention to three propositions laid down by the convention lately assembled in Philadelphia, in their aidress to the people of the union, viz: First, the government of this country is a government of opinion - accordly, that the constitutionality of an act of congress does not depend on any decision of the judiciary; and thirdly, that the people have a right to resist any act of congress which they may consider unconsti-tutional. He thought that every member of the convention would at once pronounce such doctrines wholly unfounded, and it generally received, of dangerous ten-dency. The first of these propositions was in direct contradiction to the opinion of the best writers and speakers with whom he was acquainted, all of whom concurred in declaring that ones was a government not of opinions, but of laws. The second proposition was equally on-aound—and as to the last, which asserted the right of the people, under this government of opinion, not only to decide on the constitutionality of an act of congress, but also to resist it if deemed unconstitutional, he presumed its object would realily be seen by every member of this body. It would have been going too far for the Philadelphia convention to recommend, in terms, the reniatespina convention to recommend, in terms, the resistance of any law that might be deemed merely impolitie. It was necessary first to pronounce it unconstitutional, before they could countenance resistance to ita authority, and a consequent separation of the states. This assertion of the unconstitutionality of the existing revenue laws, must be met, and that not by mere counter assertion, but by shewing that those laws were in strict secordance with the constitution. This could readily be done; and it was his wish that it might be done by the committee in plain and simple terms, such as might readily be understood by every citizen of the onion, without the necessity of a legal cilucation to comprehend it. It was necessary that this important truth should be put in a plain, distinct, and conspicuous view before the

The reasons he had to offer in support of his views of the subject, would consist chiefly, Mr. Brown said, in hints and references to documents which he had sought for with a view to lay them before this convention: and he thought they would show conclusively that the doc-trine of the constitutionality of our tariff laws was well founded.

He would in the first place refer to the remarkable language employed by the body in Philadelphia—who declares that a numerous and respectable party in the union question the right to establish a system of protecting duties, and deny the constitutional power of congress to enact it. They did not assert that the tariff of 1828, or that of 1824, or that of 1816, was unconstitutional; but they put torth a round assertion that the entire system of our tariff laws, in other words that what is usually designated as the American System, is so. In ordinary cases the abaurdity of such a position would of itself be a sufficient refotation—for he begged gentlemen to consider, that as it was not pretended that a power to regulate trade ex-isted in the legislature of the states, nor contended for, that the people possessed that power individually and personally - when the ground was taken that congress did not possess power to cancel such a system, as that called Mr. B. here again quoted the address, in which it was the protecting or American System it was tantamount to a diffriend that congress might with a view to support a declaration that the Unit ted States must remain without system increase the duttes even to a publishion; and

government without power to collect a revenue, or to protect the property, trade and manufactures of its peo-ple. This surely was too absurd to need refutation under any ordinary circumstances: but the occasion now called for it.

Mr. B. begged the indulgence of the convention while he should occupy a few moments in considering the arguments brought to support such extravagant and absurd

propositions as those he had quoted.

The assertion that a law is oneonstitutional, was the ensiest of all things to be made: but, fortunately, if not true, it was the ensiest of all things to refute: because these states enjoyed the blessing of a written constituold world were, who though they boasted of a free earth-tution, had to seek it as laid down in a number of different elementary books. Ours was in a single instrument: The doctrine was the easiest to refute, because, happily, I he doctrine was the easiest to refute, because, happily, the country had a tribunal independent of the power which enseted the laws, whose especial, and, (as he hoped in the end to shew), whose exclusive duty it was to decide the question, whether any set of congress was constitutional or otherwise. Under such circumstances, enjoying a written constitution, and a tribunal clothed with competent authority to decide whether the laws were in contravention of it or not, it seemed strange that for the last forty-two years, there should have been tariff laws engeted and contain turiff laws enacted, and certain portions of the country taril laws enacted, and certain portions of the country said to be suffering under them, and yet none of the sufferers, though able and intelligent, should once have thought of bringing the question of their constitutionality thought of bringing the question of their soundations in the before the proper tribunal established for the very purpose of passing upon it. Why was this? Why must it have been? The answer was easy. It was perfectly well known to those individuals, that the tribunal in question would at once and without hesitation, have pronounced those laws to be in conformity with the consti-

But the very learned gentleman whom he had quot-ed endeavored to escape from so obvious a difficulty, and by a mode that was very ingenious. They held that the constitutional validity or invalidity of a law did not depend on the question whether the judi-ciary affirmed it or not, because a law might, in its effects, be subversive of the constitution, and yet, on enects, be subversive of the constitution, and yet, on its face, in apparent conformily with it, and superior to all legal exceptions. Now, Mr. B. said, he referred to the understandings of all whom he addressed to say whether any thing could be more unaound than the doctrine of this evasion. A law, surely must be either constitutional or unconstitutional. It could not be both constitutional and unconstitutional at one time. If unconstitutional, it was null and void, and had no effect on any department of government, nor on any individual in the community—it was not constitutional for any purpose community—it was not constitutional to any purpose whatever. If null at all, it was null for all purposes whatever. What did they tell us? that a law might be constitutional in its form, and yet unconstitutional in its effects, and of this the people were to judge; and if they deemed its effects unconstitutional, they might resist the law, because this is a government of opinion. But such a doctrine contravened that sound and important one that the judiciary was provided as a check upon the legislative power. If their doctrine should pressil, the judiciary might as well be extinct. Portunately, however, for the people of the union, if opinion was to however, for the people of the union, if opinion was to settlle this matter, the question had already come before the supreme court, consisting of no less men thau Mar-shall, Cushman, Patterson, Chase, Washington and Moore. The opinion of these men might be found in I Cranela, p. 176, and it was so directly in point, and went so fully to put the question at rest that he begged leave to read a part of it to the convention. [Here Mr. B. quoted the opinion at some length.]

This doctrine, which these judges pronounced too extravagant to be seriously asserted, was nevertheless not too extravagant for the convention which met at Philadelphia gravely to put forth in an address to the people of the United States.

vet their act be conformed in terms to the letter of the constitution, and the courts would consequently affirm the law; but the constitutional obligation bound all parts of the government alike, and a violation of it was no less a violation, because the forms of the constitution were preserved. The doctrine was manifestly unsound.— According to this the question whether a law was constitutional or not, depended on the motives of members of congress in passing it. Could this possibly be the true enterior. How could the motives of congress be collected? If the judiciary did not possess the exclusive power of deciding, they would, of course, maintain that it had no concurrent power, and then it would become a question what were the motives of congress in passing a particular act; and how were these motives be gotten at? Would gentlemen call up the mem-ber individually and put them in their oaths? Would they tall witnesses to testily what speeches they heard in congress or what declarations by members out of doors? The would be a violation of the privileges of membership if accompted before any the motives, too, the people in their elective capacity. The motives, too of different members might be very sarious so might of the motives of congress. Were they to take those of the two houses of congress. Were they to take the motives of the whole, or only of a part? or those of a majority! He need urge this no further. The proposition was manifestly as unsound as the other: there no stability in such assertions. They must, therefore, return to the only sound rule of judgment,—the decision of the judiciary. They were appointed the sole judges whether a law was or was not in conformity with constitution. That a law might be constitutional in court and unconstitutional out of court, was a Lotion he had never seen or heard of in any decision or any dietum of any court whatever: and did he not cherish great personal respect for many of the gentlemen who composed the body who had published it to the world, he should asy that such a conception could not enter the head of any sane man. The reasoning, (if reasoning it might be called), by which they sought to maintain their doctrine was no less absurd than the propositions they had had down. Having quoted the opinion of Mr. Rawle, Mr. B. said that there he might pause; for if those gentlemen declared the tariff laws to be unconstitutional, it was for them to prove their assertion, and the laboring oar might fairly be thrown upon them. But this was not a ther, and proceeding to shew, positively, that those laws are not only not unconstitutional, but that the protecting ayatem formed a part of the plan of our lorelathers in adopting the constitution, and that the want of it formed adopting the constitution, and that hie want of it formed the prominent objection against the old confederation, and was the operative reason why that instrument was abrogated and the federal constitution brought into existence: this he should emleavor now to show, and further, that the legislative construction of the constitution had been uniform for nearly halt a century, and that the people had concurred in it.

On the first point, he should chiefly refer to documents.—The first congress met on the 5th September, 1774. On the 6th, a committee was appointed to examine and report on the existing statutes, (the British statutes namely, what were then in form), affecting the trade and manufactures of the colonies. This was the first act of the first congress—to enquire what laws affected the manufactures, as well as the trade of the colonies. On the 19th of September, it was unanimously resolved that the merchants be requested not to send any further orders, and to suspend those shready sent, for goods from the mother country. On the 27th of September, congress unanimously resolved that after the staff of December of lowing, no more goods should be imported, nor used if they were and on the 30th, it was taken the trades, that after the colonies to Great Britain and the West Indies, shouth ecolonies to Great Britain and the West Indies, shouth ecolonies to Great Britain and the Country should before then have being readesed. On the 6th of October following, a resolution was adopted excluding molasses, wince and indigo, and on the 30th of the same month, the celebrated non-mortation law was adopted and signed, and here he begred leave to remind the convention that the declared object of the state o

mote fingality, and to encourage American manufactures. Here, then, was the very first congress head in the country looking to the protection of our own manufactures as one of its avowed objects; and they began

the system on the day after they first assembled.

An second committee was appointed in May, 1775; and
on the 31st July they were ordered to enquire respecting
the manufacture of salt, and the search for lead one—declasting also that the non-importation system about detend to the ishards of Jerrey, Alderney, Man, and other
dependencies of Great British then enumersted. The
congress, therefore, at its second tession, and other
departing from the principles it had first assumed, carried them farther than before. On the 23d November,
1775, a committee was appointed to report a plan to regulate our trade with the Indians. They reported, and
in the 27th January, 1776, the plan was adopted. On
the 21st March, congress recommended to the provasional assemblies to promote the cultivation of herap,
flax and cotton and the growth of wool. Societies were
recommended for the promotion of agriculture, arts
and manufactures, and ioritiwith to introduce the manustatures of duck, assil-colot hand steel. On the 7th of
June, 1776, the first resolution was offered on the subprot of independence, and on the 12th, a committee was
appointed to draft a Declaration of the Independence of
these United States.

Mr. Hown said he had thus redeemed the pledge be had given, by altewing affirmatively that so he from the protecting ay stem's being a new thing, it had formed a part of the original plan of those exalted men to whom the country was so deeply indebted for its happiness, and particularly for its emanequation from those rules which had been adopted with the express purpose of preventing us from naunfacturing for ourselves, and thus advancing to that degree of national prosperity for which our national advancing so eminently fitted us.

By the Declaration of Independence the thirteen colonics were separated from the mother country, and the right to regulate trade and manufactures was thrown on the legislatures of the respective states; a right inherent in all governments.

But the framers of the constitution clearly perceived that it was impossible that power could be excremed by the legislatures of the states; the attempt to excreise it could lead only to conflict and anarchy. They were not so short sighted as to be unaware of the dangers which threatened the country from this source. They had on the 11th of June, 1776, resolved that a committee be appointed to draw up articles of a confederacy, and on the day following one member from each colony was appointed, and the committee thus constituted nrepared and reported the act of confederation. ject was warmly debated until the 15th of July, 1777ject was warmly decoated until the 15th of Jury, 1111-when a circular letter was addressed to the respective state legislatures, urging the ratification of the plan. Here Mr. B. referred particularly to two sections of that act, the 6th and the 9th, the former of which prohibits the states from laying any duties which should interfere with treaties entered into by the colonies; and the latter confers on congress the exclusive power of declaring war and making peace, provided that no treaty should be entered into going to restrain the legislation of the states in taxing foreigners as much as our own citizens, or prohibiting the exportation of our produce: it preserves to the legislatures of the states the power to regulate trade and manufactures-and this was the clause which led to the abrogation of the confederation itself-New Jersey made remonstrance against such a doctrine. and declared that the whole power of regulating trade and manufactures ought to reside in congress alone.

In the meantime, the patriots of the revolution were streamously urging a union of the attes. The confederation, though it did good service, had its faults. It was generally acknowledged that the 9th article was exceptionable—but the article was, we want union—the confederation has its faults, and this argument had its effect. It was no argument at this day to say that the old confederation gave the power to the states—because the delegates from the states were called to capress the opinions of their constituents and by their authority the new constitution was adopted, the last state (Maryland), ratifying it on the Soth June, 1751. To show

He then proceeded to observe, that on the 26th of pril, 1783, Mr. Madison, Mr. Elisworth and Mr. Hamilton were appointed a committee to address the people of the United States in behalf of the new construction, and in the same month Mr. Gerry and others reported a recommendation to the several states to invest congress with the power of restricting commerce except in American vessels. On the 21st of January, 1786, a proposition was received from the Virginia house of defegates, and on the 11th September, 1786, a convention was held at Annapolis, to form the new constitution. They adjourned and met a second time, and they then drew up that instrument under which we tive, and which so expressly gives to congress those powers by the exercise of which, the tauff system has been built up. On the 4th March, 1789, congress adopted it, and it went into operation on the 4th of July, 1789. At the very first congress which assembled under it, this preamble was prefixed to the act regulating commerce. Here Mr. B. read the preamble: but his speech was anapended for the report of a committee, after which he resumed, and observed that he had gone through the brief history he had given with the purpose of shewing that the men who had commenced and gone through with the revolution, themselves the very men who formed the first confederation, and who were pre-sent when the objections to it were all fully discussed, were many of them members of congress in 1789, when the preamble was adopted which he had read, and which expressly declares one object of passing the act to be the protection of manufactures. They had come then tresh from the making of the constitution—the oath they had taken to support it was yet warm upon their lips. and was still resounding in the ears of the people when they passed it—and he would ask if these facts were tank in a plain and distinct manner before the people of these states, whether any man in the country would believe that these min perjured themselves? To inbelieve that these men perjured themselves? To inpresented by this convention would go to show the peopresented by this convention would go to show the peo-ple not merely that they have the right to pass laws for the protection of their fidustry, but that this was a part, and an important part of the original plan of those who framed the constitution—and they would have been traitors to their country and their oaths had they refused to enact a tariff for such a purpose, -and as it was in 1789, so it was in 1828.

Mr. B. concluded by reminding the convention that from that early day to the present time, there had not been one president of the United States who had not, in way or another, recommended the adoption of the tariff system-that twenty-one successive congresses had recognized the same system-that there never had been a public meeting in any one state or district, which had ever before called in question the right of congress to pass a tariff law; and that the same members of congress who had voted in favor of the system, had been returned by the people to pass new tariff laws, as they might become needful. Let these things be clearly placed before them, and the people of these states would see that the system was constitutional, and would themselves admit that the government was not a government of opinions, but of laws, and that the laws might not be resisted by any one who might choose to pronounce

them contrary to the constitution.

Mr. Sharp, of N. York, hoped that the resolutions would not be adopted. A committee had been appointed consisting of one member from each state here represented, and charged with the duty of addressing the people of the United States on the subjects which had convened this body: the appointment of its members had not been hastily made, but after due deliberation, above fifteen of the first men in the country had been selected for the duty required. And now before they had even met, a member rose in his place and proposed to instruct them how it was to be performed. For all had equal What would follow but the greatest embarrassright. ment—and probably no report would be gotten at all. He wished first to hear the report the committee might

what were the true grounds of its ratification, Mr. B. preparet and then if any thing was omitted, the gentle-referred to the language of Mr. Jay in the Federalist, man could move to have it inserted. The committee which he quoted at considerable length. man could move to have it inserted. The committee gentleman would withdraw the resolutions, it not, he should move to lay them upon the table.

The question being taken on laying the resolutions on the table, it was negatived by a very great majority.

#### MR. MIDDLETON'S LETTER.

Philadelphia, Oct. 15th, 1831. DEAR SIR: I had the pleasure of receiving your letter of the 14th ultimo, at this place, just at the opening of the Free Trade convention, and I mmediately registered myself as delegate from St. George's parish, College ton district, South Carolina.

I beg leave in the first place to tender my grateful actheir kind recollection of me after so long an absence; and I assure them that I heartily recinculate the kind greetings expressed in your letter; for the rest, I do most sincerely sympathise with them in deprecating the spread of the baneful doctrine of nullification, to which you allude, and which has made so alarming a progress in some parts of the state. I trust, however, that the good sense of the sound majority of our people will be shortly evinced and manifested by public meetings and anti-nullification resolutions throughout our state, the

I am sorry to say that I do think I perceive, upon my return home, after an absence of several years, that much has been done, as you state with a design to prepure the minds of our people for a revolution. However difficult the task might appear to be, of weating the affections of a free and happy people from a government of their own choice, administered by their own agents, removable at stated periods-a government, too, which has done so much for the national glory and prosperi-ty-still I think I see that considerable progress has been made in attaining the desired end by means of the undue perseverance on the part of congress in a system undue perseverance on the part of congress in a system of taxation which, having for its object the protection of manufacturing industry, (an object highly laudable in itself), seems to bear hard upon agriculture and navigation, and which has, by manifold and repeated exaggeration, been made to put on the appearance of a deliberate and wiful violation of the constitution.

Were this the case, I trust that no man would be found more ready than myself to oppose an open and determined resistance. Oppression apart, I am ever disposed to resist any exercise of unauthorized power.
Where there is oppression, I should scarce stop to inquire by what quirk of law it might be authorized. I utterly deny the right of any man or of any majority to oppress, even under color of law.

But such is not in reality the case, under the tariff w. The law of 1828 is, indeed, by its excessively high impost duties, impolitic and inexpedient, in the highest degree, and in some measure in ficient, as en-conraging amaggling as well as manufacturing. We conriging smugging as well as manifacturing. We may feel satisfied that, experience having shown that it is nearly as useless as unpopular, it must shortly be abandoned, or in a great degree modified.

If it be thought, however, that a bare repeal of all tariff laws would restore our agricultural products to their pristine value, it is a great error. In order to produce that desirable effect, (which indeed I conceive to be the great object which the plantation states have at present in view), other means besides must be brought into operation.

To accomplish this purpose, the amount of consump tion must be increased, or that of production diminished, in all cases. These two objects are frequently unattainable by direct legal interposition. Recourse must then be had to subsidiary means.

To give an example of this—as one means of support-

ing the price of cotton and rice, the impost upon sugar must be insintained. If that were taken off, the sugar plantations of Louisiana could no longer compete in the production of that article, with the more favored climate of the West India islands. The 45,000 laborers occupied in that endure, would be then probably turned to raising outton and rice, whereby additional quantities o glutted, and in such case the prices would inevitably be reduced.

reduced.

The same example will serve to shew the necessity there is for congress to keep in view other objects beside the bare amount of revenue in the impositions of duties opon imports. The power of protecting home fabries and productions, (incidental as it is), was under our present government exerted at a very early period of its existence, and has been attended as it may well be supposed by the most beneficial effects.

The first revenue law passed by the first congress, under the existing constitution, was approved by president Washington, on the 4th July, 1789. It is declared, in its preamble, to be intended "for the support of governits preamble, to be intended "for the support of govern-ment, to pay the public debt, and for the encourage-ment of manufactures." By this law duties were laid on imported augars, teas, coolee, cooo, candles, soon, ebeese, cordage, indigo, coal, pickled and dried fish, manufactured to buseco, on this of beaver or wool, on China, on coarse and earthen ware, on military and coate marks alothen on which on military and ready made clothes, on cahinet wares, riding earrisges, and on many other articles, now abundantly manufactured in the United States, cheaper and better than they can be obtained from abroad. It must be evident to every careful observer that by means of the wise policy then adopted, we have risen from the state of colonial dependence, in which lord Chatham de-clared, "that we ought not to be permitted to manufac-ture a hob-nuit," to the condition of real independence in that respect, which we now enjoy, and which is a source of countless riches to the nation. It must not be forgotten, that this act was passed by a congress, in which sat many of the framers of the constitution, and that the opposition never thought of objecting to it, on the grounds of its unconstitutionality.

he high duties imposed by the act of 1816, to which I lent my humble support in common with several dis-tinguished members from our state, were graduated with a view principally to the protection of certain ma-nufacturing establishments which had arisen without the bounds of our state, under shelter of double duties laid solely with a view to revenue, wanted to carry on the war of 1812. This generous and just feeling did honor to the south, which had no immediate interest in the question, and no necusation of enconstitutionality was

ever brought against the act.

The course of time can have effected no change in the powers vested in congress by the constitution of the United States; neither has any amendment thereto been proposed or adopted in reference to this power. All the sound opinions entertained at that time upon the point, must therefore remain the same, howsoever indi-viduals may have changed their views.

It can therefore only be on account of the abuse of a legitimate power on the part of congress, that the present iff can be justly termed unconstitutional. That it is clothed in the due legal forms, no one can deny.

To say that it is fraught with oppression, is a mere ex-geration, which cannot avail to justify resistance.--exceable and reasonable remonstrance is our safe and

sure resort against a simple grievance.

Such, as it appears to me, should be the feelings and reasonings of all those who bear a sincere attachment to our entire system of government, in the divided sway the people have ordained between our national and state go-vernments. Whoever shall endeavor to mislead our state authorities, and induce them to infringe the rights of congress by legislating on matters not within their competency, must be deemed the enemy of the happy institutions under which we live.

tions under which we live.

God grant that we may, one and all, be indued with
wisdom sufficient to know how to place a just value on
the good we possess; and may we be ever careful so to
use the high privilege of self-government, as to avoid
civil discord, which might, in its results, be the means of
substituting governments of force for those of law and

It is the misfortune of our peaceful and happy era, to have produced, in its hot-beds of ease and luxury, a fun-

those articles would be thrown upon a market already | ed empire, the wisest plan of government which mankind has ever seen reduced to practice; and one too, which, in practice, has far exceeded the most sanguine expectations which could have been formed of its success at the time of its adoption. Yet we daily witness the emp) ries, above spoken ol, gravely putting on their glass eyes, (like Shakspeare's severy pulitieum), and pretending to discover defects for which they propose to administer the most preposterous remedies.

The nullifying theory is not only incompatible with our existing institutions, but it may be doubted whether the professors of the new tight, or the would-be fathers of new confederacies, it they were indulged in their projects, and still adhered to millification; (a political jack o' the lanthorn, leading the steps of its bewildered tolo ine causinors, leating the steps of its occultured fol-lowers "to're bog and quagnine," until "shere'er they tread they sink!") It may be doubted, did I say?---may more, it may be boldly denied, that they eould, with this principle, form a durable confederacy of three- or more states, however contiguous in territory, or identical in interests such states might be---two conditions which they appear to require for the formation of a perfect confederacy.

It must always be borne in mind that men will differ in

It must always be borne in mind that men will differ in opinion, however identical their interests, or proximate their habitations. Passion and prejudice, of one kind or another, frequently sever the nearest neighbors and associates, however great the benefits they might otherwise derive from concord. If they were not to be bound by the decision of the majority, (where there has no more thank of the second property to the second property thanks). is no common tribunal), there is no appeal but to the trows

The principle of obedience to the will of the majornly, wasely adopted in a republican government, is grounded upon the high probability that such well is backed by the physical (orce of the community. For the reason last mentioned, it may be laid down as a general rule that an appeal to the sword is, in such case, more liopeless than under a despotism or aristocracy where the one, or the lew, have imposed their laws upon the many.

The new fangled doctrine of nultification in matters of general concern, by a small portion of those who are abide by the decisions of a majority in such matters, is a solecism in politics, in its nature suicidal, and must in-fallibly produce self-destruction in any body-politic which

admits it as an elementary principle. We can only wonder at those who honestly entertain the opinion, that such doctrine is compatible with our existing institutions. Let us pay their delusions. But let us call down the maledictions of heaven on such as willingly would practise a deept on others, to promote

her layorite project of disunion.

I shall not detail to you the proceedings of the convention, which you may see in the gazettes. One great object was accomplished in avoiding debate upon questions on which there might be a diversity of opinion; and an undivided attention was given to the all-absorbing interest of opposition to the tariff, which was sustained throughout, in a manner which it may be hoped will lead to final success.

The address to the American people (of which a copy I he address one American people (of when a copy is inclosed) was voted by a large majority. I wished my self to have omited a portion of it, but having found my self in a minority, I am, upon the whole, better sa-tisfied that the address should go before the public in its original form, as containing the expressions of a large portion of the inhabitants of these United States, as well as of a part of the convention. opinion will, I think, be salutary. The effect on public

<sup>\*</sup>Let it not be urged that a sister state has successfully nullified treaties, (abusively so called), and acts emanating from the general government. Georgia is about to abate a nuisace growing up within her own territory, and effecting the interest of no other state. This is strictly ly a domestic question, and those acts are perfectly jus-ifiable on principles of the law of nature and nations. gus growth of state doctors, ever ready to drug the most.

There is a wide difference between this case and that of robust with their nostrums. Unquestionably did the frather abrogation of a general revenue law having universal mers of our organic laws devise, for this widely extend-

A memorial to congress is to be drawn up and pre-sented to that body by a committee, of which Mr. Gal-latin is chairman. That it will contain all that can be latin is chairman. That it will contain all that can be urged in favor of a revision of the tariff, I have the atrongest persuasion. It most assuredly will obtain the favorable consideration of congress.

A certain benefit I regard as having already resulted from this meeting, is the strong conviction impressed on the minds of those who assisted at it, that an extravaant system of protection to manufactures, injurious to the more important interests of agriculture and naviga-tion, will always find adversaries in every part of our union; while gentlemen who came with the hope (if any and there were) of others sympathising in the doctrines of nullification, or mayhap with the expectation of winning over the assent of some portion of the south to plans of secession, must have been sorely disappointed at finding her sons generally too patriotic, and too proud of a union of which they have ever formed so conspicuous a portion, to listen for a moment to propositions tending to its dissolution upon frivolous or factious pretences.

Having been honored by nummations as a delegate to the anti-tariff convention at several meetings of the friends of union in different parts of our state, I ask to be permitted, through your interposition, as my immediate neighbors and lellow parishmers, to tender them my best acknowledgments, and to beg the favor of having this missive considered as addressed to all the friends

union.

I am, dear sir, very faithfully, your obedient friend dervant, HENRY MIDDLETON.

JOSEPH KOGER, jr. esq. chairman of the democratic republican meeting held at the house of Mr. Gen Sisstrunk, St. George's Parish, Colleton district, 24th September, 1831.

#### AN EXTRAORDINARY CASE.

Crim. can. - The annals of this species of crime do not present a cause more singular than is presented in the case noticed below. The offence—the admission the circumstances attending it-the agreement of the offender to leave the county -his murder by the party injured - and the decision of the jury, are altogether extraordinary and surprising.

From the Frankfort, Ky. Commentator.
The recent death of Ebenezer N. Robertson, esq. a former member of the assembly from Russell county, at the hand of Dr. Pierce, the last and present member, has been mentioned in the papers, with some allusion to the enormities which produced a catastrophe so appalling. The chief incident in this tragety, was account audden and striking: the county court was sitting in the village where the parties reaided. Some busions called Pierce into court. The first object which fixed his eye, was Robertson-who by agreement had left the county, never to return-now there, writing at the clerk's table. Pierce gazed upon him, for a moment, in mute astonishment; then suddenly turned, and retiring by the ilnor, re-appeared presently at the window, beneath which Robertson sat, in the presence of the court. Reaching in with a pistol, near to the head of his vietim, Pierce fired, and lodged the contents in his brain-a fatal shot! What could have moved a gentleman, till then ever mild, patient and conciliatory in his deportment, to a deed of such singular daring?—Robertson had violated the marriage bed of Pierce, his friend—struck at his honor—runned his family—planted Maggers in his bononor-runed his lamity-planted lieggers in his ob-om!-And, with humility be it spoken, there was no law in the land for the adequate punishment of such an outrage! The fact was noto-ous; not denied even by the offender himself. 'Satisfaction,' in the way called 'honorable,' had been idemnded; but not renitereil. The wrong was irreparable; no adequate amends could be made. The destroyer of his neighbors's peace—whose unprincipled indiscretion has cast a sleep shade over virtues which might otherwise have brightly shone, as some concession, had agreed to go forth from that part of the country, to return no more. Yet he did re-turn; he was there—the consequences have been seen— Dr. Pierce was required, by the judgment of two magis-

was in session last week; and Pierce was in attendance. One indictment against him for nursler, and another for manslaughter, were laid before the grand jury. Having made such investigation, as they, under their oaths, deemed proper, they returned both indictments into court with their finding endorsed upon each—'not a true bill,'-'not a true bill,' and whatever opinion, made up upon views merely teonnical, might be; upon the sheer justice of the case, and upon the diligent enquiry of the grand inquest of his county, the accused stands justified —acquitted. He appeared in the assembly yesterday, and was qualified as the representative of his county; and notwithstanding all that has happened, may yet be as he has heretofore been, a faithful representative, and a useful member.

#### COLONIZATION OF THE BLACKS.

The following letter from Mr. JEFFERSON to Mr. Lynd. has been several times published-but there seems a peculiar fitness in again presenting it to consideration.
"Monticello, Jun. 21, 1811.

SIR:-You have asked my opinion on the proposition of Anne Mifflin, to take measures for procuring, on the coast of Airica, an examinament to which the people of color of these states might, from time to time, be color nized, under the auspices of different governments. Having long ago made up my mind on this subject, I have no headatum in saying, that I have ever thought that the most desirable measure which could be adopted for gradually drawing off this part of our population.
Most advantageous for themselves as well as for us; go-Most alvaniageous for inemacises as we use for us; go-ing from a country possessing all the useful arts, they might be the means of transplanting them among the in-habitants of Africa; and would thus earry back to the country of their origin the seeds of civilization, which might render their sojournment here a blessing in the end, to that country.
"I received, in the first year of my entering into the

administration of the general government, a letter from the governor of Virginia, consulting me, at the request of the legislature of the state, on the means of procurof the regulation of the angle, on the means of procur-ing some such asylum to which these people might be occasionally sent. I proposed to him the establishment of Sierra Leone, in which a private company in England had already colonized a number of negroes, and particularly the fugitives from these states during the revolutionary war; and at the same time suggested, if that could not be obtained, some of the Portuguese possessions in South America as most desirable.

O'The subsequent legislature approving these ideas, I wrote the ensuing year (1802) to Mr. King, our minis-ter in London, to endeavor to negotiate with the Sierra Leone company, and induce them to receive such of these people as might be colonized thither. He opened a correspondence with Mr. W --- and Mr. Thornton. sceretary of the company, on the subject; and in 1803 I received, through Mr. King, the result, &co.

"The effort which I made with Portugal to obtain an

establishment from them, within their colonies in South

America, proved also abortive.

"You impaired further, whether I would use my en-deavors to procuse such an establishment secure against violence, from other powers, and particularly the French. Certainly, I shall be willing to do any thing that I can to give it effect and safety.

"But I am but a private individual, and could only use endeavors with individuals. Whereas the national government can address themselves at once to those of Europe to obtain the desired security, and will unquestionably be ready to exert its influence over those nations to effect an object so benevolent in itself, and so important to a great portion of its contituents. Indeed no-thing is more to be wished than that the United States would themselves undertake to make such an establishment on the coast of Africa..
"Exclusive of motives of humanity, the commercial

advantages to be derived from it might defray all its exit may perhaps be doubted whether many of these people would voluntarily consent to such an exchange of sitrates, to give hall for his appearance at the next created against thin in relation to this manager of au-touri in that county, to answer what might then be pre-tanted against him in relation to this matter. That court

1

mo

the experiment, nor the early trial of it. And propositions should be made with all the prudent caution and attention requisite to reconcile it to the interest, the safety, and prejudice of all parties."

#### THE FAYETTEVILLE SUFFERERS.

The address of the town committee of Fayetteville, to the contributors to their relicf is so appropriate, and even affecting, that it should be preserved.

CIRCULAR.

Addressed to the contributors to the fund for the relief of the Fayetteville sufferers, by the committee appointed for the purpose.

Fayetteville, Nov. 14, 1831. The undersigned have been deputed by their fellow citizens to lay before you the annexed statements of the amount of the fund for the relief of the sufferers by the desolsting calamity of the 29th of May last, and of the manner in which it has been disposed of. They submit them, with the hope, that the proceedings of those to whom the distribution was entrusted, will meet with the same approhition from the denses, so nordially awarded to them by the recipients.

Another duty with which they are charged cannot be so easily and so satisfactorily performed. with which they have witnessed the spontaneous outpourings of the benevolence of their lellow citizens, from one end of this vast republic to the other, cannot The accumulation of such a fund as that exbe uttered. hibited by the subjoined statement, unsolicited by us, and coming, in great part, from those upon whom the citizens of our town had no claims but those of suffering humanity and a common national origin, presents a spectacle honorable to the character of a great people, doubly grateful to the feelings of the recipients, and calcu-tated to impress us more deeply with a sense of the bless-

ings of the happy union under which we live.

As many of the contributors to this fund may never have an opportunity of witnessing the effects of their bounty, we cannot better express our thanks, and those of the people whom we represent than by faintly sketching some of its blessings. The calamity with which we were visited was of an appalling extent. It swept from were visited was in apparing extent. It seems to resistence the fairest, the richest, and by far the larger portion of our flourishing town. It left poverty and depair where opulence and content had long reigned. None altogether escaped its ravages; and tew were left with ability to relieve even the pressing wants of the suffering destitute. Under these circumstances were the liberal hands of our countrymen opened; and the heart of the widow and the orphan was made glad. Instead of the ruin which seemed to impend over so many, and to paralyze their hopes, confidence and energy succeeded; and each one has been enabled again to enter into the competition with his neighbors for the emoluments of his wonted vocation. Extraordinary progress has been made in rebuilding our town; and every thing wears the appearance of activity, and a determination to rise with new vigor from our ashes. To you, and to those who united with you in this labor of love, is this happy state of things mainly owing; and to you, and to them, we render the homage of grateful hearts.

Be pleased to convey to the community with which you are connected, our sense of the blessings they have, in part, conferred upon us. And that they may be spared from all similar visitations, is the carnest hope of

your obedient servants,

JOHN HUSKE,	1
LOUIS D. HENRY,	i.
JOHN D. ECCLES,	mitte.
JOHN W. WRIGHT,	1
DUNCAN MAC RAE,	
EDWARD J. HALE,	8
THOMAS L. HYBART,	}

The whole amount received from all parts of the union, was \$91,992 38: from the following states and territo-

Massachusetts						,					\$	14,518	69	
Mame											ï	125	OU	
Khode Island												2,067	64	
New Hampshire		 ٠.										290	OU	
Connecticut		•	•		•	•		•	٠	•	٠	3,002	40	

New York10,648 5-4
Pennsylvania
New Jersey 805 49
Mars land 6,820 79
District of Columbia 870 00
Virginia 8,040 88
North Carolina
South Carolina 9,100 37
Georgin 4,102 72
Tennessee 45 00
Ohio
Mississippi 1,119 40
Louisians 5,050 00
The largest contributions from cities and towns, (in
nev) were the following:
Philadelphia11,857 42
New York
Boston 9,708 25
Baltimore 5,862 79
Charleston, S. C 54,552 37
Charleston Neck 759 50
New Orleans 5,050 00
Nortolk, Va 2,500 00
Savannali, Geo 2,264 60
Richmond
Petersburg 1,702 00
Citizens of New Haven, Con. and offi-
cers and students of Yale college 1,573 31
Columbia, S. C
Raleigh 1,500 00
Hartford, Con. and towns in its vicinity 1,424 09
Wilmington 1,294 26
Newbern
Lowell, Mass 1,200 00
Augusta, Geo
Salem, Mass 1,032 37
Cincinnati
Natchez, Miss 949 50
Washington city 810 00

.....

CLAIMS AGAINST NAPLES. The Washington correspondent of the N. York Journal of Commerce, gives the following list and statement of claims of citizens of the United States against Naples, for spolutions, during the wars of the French revolution,

as filed in the department of state.

Boston Marine Insurance company

Union Marine Insurance company Von Kapff, Brune et. al.

Amount of claims on Naples

West, Nathaniel

\$8,000 00 15,000 00 do. 17,400 00 Bradbury, Charles et al. 32,025 00 Do. in several cases Barker, George administrator 402 00 Barton, John et. al. Brazer, John Covin, N. A. &. J. T. Cook, James 14,091 34 15,000 00 15,000 00 4,394 98 107,685 60 64,922 61 Coulter, John Dutch & Deland Dodge, Pickering et. at. Derby Fishing company Ellicott, T. et. al. Gray, H. 10,162 07 26,000 00 25,058 00 600 00 19,300 00 Gray, heirs of Samuel Gray, William R. Gray, estate of William 123,032 88 Hooper, R. J. et. al. 35,000 00 Mary land Insurance company, &c. 5,500 00 2,000 00 Marblehead Social Insurance company 7,600 00 355,834 74 2,507 00 Marine Insurance company, Philadelphia Oliver, Robert & John et. al. Prince, Henry 230,053 13 Peabody, Joseph et. al. Proctor, William 306 80 18,000 00 Rowlet, and G. S. Munford 2,500 00 Russel, N. P. sgent Social Insurance company, Salem 60,653 70 Silabee, Nathaniel 84,882 43 5,307 50 Stewart, Alexander Thorndike, larnel 230,000 00



27,000 00

31,382 84

157,908 64

\$1,754,993 82

# VILES' WEEKLY REGISTER.

BALTIMORE, DEC. 3, 1831. FOURTH SERIES.] No. 13-VOL. V.

[Vol. XLI. WHOLE No. 1,054

THE PAST-THE PRESENT-FOR THE FUTURE.

### EDITED, PRINTED AND PUBLISHED BY H. NILES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN AUVANCE.

The address of the New York convention is receiving a most extensive circulation, and works with It has convinced many.

power. It has convinced many.

Our rail road was opened on Thursday to the eny of Frederick, slxty miles, with considerable ceremony and many interesting necurrences-of which we shall give some account hereafter. The passages over the The triinclined planes excited the deepest interest. umph of science was shown to be complete.

A great many articles intended for this sheet, have been omitted—some, perhaps, that we should have preferred to others inserted, had not [mechanical] ne-

cessity interposed.

REDUCTION OF THE TARIFF. The 6-Richmond Enquirer" presents the views of the New York ennventum, set forth in the address to the people of the United States, as to a reduction of duties on such foreign goods he do not come into conflict with the products of American tabor, and adds—This project is anticipated and re-luted in the following remarks made by Mr. McDuffie, at a late meeting of "the South Carolina state rights and free trade association," held at Charleston-governor

Hamilton in the chair.

"Mr. McDuffie proceeded to praise the magnanimous spirit of turbearance and conciluation which had marked the course of our delegates at the Philadelphia anti-tariff convention. Of the convention he said that he entertained no hope that its efforts would operate a change in the measures of the manufacturing majority in congress. -It might, in connection with other causes, serve to induce the manufacturers to propose a modification of the tariff, but what would be the nature of this modification? It would probably consist in a reduction of the duties on imports consumed but not manufactured at the north; but with regard to the imports consumed by the south, and received in exchange for southern productions, he felt assured there would be no reduction of duties,that these would not only be left fully as much burthened by taxation as they now are, but that eventually the effort would be made to throw the whole burthen of tax-ation exclusively upon them. He thought it likely that there would lie a small reduction made of the duty on angar-that, in fact, the north never had any interest in this duty .- It was originally made to influence the vote of Louisiana, but that her vote was no longer necessary to the views of the manufacturers,-If this reduction should be made, it would be used by the tariff party in this state as an argument that the whole system would be given up, and thus to paralyze the efforts of the state. He conjured the Iriends of the state not to suffer themselves to be chessed in this manner. He implored them, as they valued their liberties, to inquire for themselves -to exercise a severe scrutiny over the measures of the manufacturing majority mongress—to regard, with the most careful gealousy, all overtures of apparent concession or liberalty from that quarter."

We shall soon see how Mr. McDuffie has "re-

futed" this project.

The new light "philosophers" deal so much in abstractions-"in the clouds," and so sehlom descend to the homeliness of practical results, that it is not often we can grapple them. The "non-committed" doctrine, if started by contemptible politicians of the north, has been so "reformed" in the south with respect to the been so "reformer." In the sourn with respect to the hariff question, that few venture upon any position whence the ground which they stand upon can be seen—always closking it with high-nounling words and immodest assumptions. But in the present case we shall show—that if Mr. McDullie said what is reported of him—he said strange things!

He gives us to understand that a reduction of duties would not be permitted on articles "received in exchange for southern productions."

Vot. XLI .- No. 18.

Let us see. Two of the leading articles, (1 call them so because of their aggregate values), on which a reduction of duties suggests itself, are silks and wines. These are main'y imported from France. I shall give

the figures. Value of silks imported in 1830-

\$1.398.316 From Inda all other places, except France 827,316 F. unce 3.548 378

> Total silks 5.774.010

The value of wines was

\$1.535,102 147,588

of which from France, These are two of the principal imports from France; Now for the exports.

\$9.901.146

Gross amount of our domestic exports to France in 1830 Of which there was in cotton

7.646,147

2,254,999 Cotton, cotton, only, forming 3.4ths of the whole. The

entire value of the imports from France for the year, was only 7,722,198 deltars. In silks and wines \$3,995,966; On the other hand—The duties which we desire to have generally retained are on manufactures of England-because they come into direct competition with the products of our own labor. We shall shew howand again by figures.

value of domestic products exported to The whole England, Scotland and Ireland, in 1830

25,499,918 20,687,642

of which there was in cotton

Leaving for all other agricultural products, including tobacco and rice, (mirabite dietu!)—all the products of the forest, of the sea, and of manufactures, the putter sum of 4,812,276 dollars - being all which all the people of the United States, except the lew engaged in cottonplanting, have to exchange, (or rather all that Great Britain will receive), for the hundreds of millions in striam will receive, for in minutes or infinons in value that they require of those manulactures which the British directly come into competition with! Now, if wouthern productions"—always meaning cotton, corros, COTTON, though not worth so much as our manufactures of leather by several millions, are worthy disuch high and tender regard,—may not forty nine fficieths of the people of the United States, who have colling of the proper of the United States, who have me direct interest in the making of cotton, corrow, COTTON, look a little to themselves, in the application of Mr. McDuffie's own principles? and we see that France, on whose products it seems prohable a large amount of reduction in the duties will be made, chiefly receives cotton in payment for them? What is the proportion of the cotion planters to the rest of the people of the United States—the farmers, mechanics, manufac-tures, tobacco, and vice, and sugar planters? We have tures, tobacco, and tice, and sugar punters? We have supposed one out of fifty. It is a brige allowance! What IS this cotton of the south? Why, of hardly superior value to the crop of raw wood in the north, for which there is NO MARKET EXCEPT AT HOME! Yes and those of the people interested in the growth of wool are many times, twenty times, more numerous than those interested in the growth of cotton. Will Mr. McDuffie's principles—(lus "relutition" as Mr. Ritchie says!) apply only to fuvor a small minority of the people? Have the eat, drink and sleep upon cotton-to build houses and clothe ourselves with cotton - to "cujoy life, liberty and the pursuit of happiness," in making and selling cotton - to marry wives of cotton; and have cotton children! It won't do-we must have something besides corrox! And, Mr.

MaDuffie's rule being right for the south, must be suita-ble for the sorth! There is an old saying that "what is good for the goose is good for the gander;" and I guess her manuscutters but never, while the need of an Ame-

that the saying is just as true as it was in "Mother Goose's" time—or, "Mrs. Grunly's."

But what justice is there in the gentleman's sheelars tion? To the island of Cuba, alone, we exported last year, to the value of 3,439,000 dollars, or only in the small sum of 1,373,000 dollars less than we exported to England, Scotland and Ireland, except in the article of These supplies are choost exclusively the products of larmers, manulacturers and fishermen; yet Mr. M Duffie will be disappointed in his expectation that the daty on sugar will be reduced, unless the whole "sys-\* shall fall-that being the chief production of Cuba which remains subject to a high rate of fluty. The friends of the tariff believe that even sugar (like all other commodities), has declined in its cost to consumers because of the protection afforded to domestic makers of it; and that the sugar planters er ate a very valuable and highly important home market for the corn, pork, ke, of the farmers, and for the ma ubscurers of iron and other materials. They know that coffee has not latten in price since the less-nest duty upon it,† and that its value advanced in the West ludies on the instant that our duty declined! We might extend these remarks, and bring many other cases—but enough, perhaps, has been said to shew the whole merit of Mr. McDuffie's "re-

The gentleman saya, the duly on augar was made "to influence the vote of Lonisiana." Well—it may be so! But Mears. John C Calhoun, WILLIAM LOWNDES, W. Himm May rant, and William Woodward, of the South Carolina deligation, in the house of repre-sentatives, voted for the bill of 1816, which ranged the duty from 2 to 3 cents acr th.—ats present rate; and only Mesers. Huger, Minore and Taylor, of the same de-1y Mesre. Huger, Moure and Taylor, of the same depation, voted against it—the other members, Mesars. Chappell and Middleton, being absent. In the senate, Mr. GattLann voted for it, Mr. Taylor being absent. So did Mr. Masen, of Vrginis, Tat, of Georgia, Campbell and Hilbiums, of Venenesse, e.c., it prevailed to the senate 25 to 7! Can any man believe that there were only seven members in that, most honorable body, (for so it was then, though since disgreed by scenes bet ter fitted for the bar-room of a cross-roads whiskey-shop] resisted this BARGAIN for the "vote of Louisiana?" Cre-

dat Justaus Apella?

Mr. McDuffic will have no modification of the tariff except himself and his friends—the cotton-men, shall controul it! This is very moderate-and modest! then shall be done with the surplus revenue after the debt is paid? Why—we must take up some of Mr. Calhoun's splendid schemes of internal improvement, or practice upon Mr. McDuffie's own dectrines of 1821, that it may be returned to the people, and have a whole-some circulation among them! See his essays signed "One of the people," in reply to the Georgia Trio of "Then, the South Caroline politicians were ultra liberal." One of the most consistent and real triends of the tardf that ever represented a part of the people of Pennsylthat ever represented a part of the people of rennsy-vania, used to say, "they went to lar that he could not reach them with a long pole." Then they had consti-tution for every thing—slow any thing. The national go-verament was the palladoum of our rights—the only safe depository of power: now the sales are the only asylums of our liberties, sad all power is in them? The clowns at the tircus might learn many changes of posienows at the circum ingut rearn many changes of posi-tion, by studying the movements of the multificators of the day!—and make the "groundings" laugh. We here feel it right to give an opinion—speaking only for ourselves—that the friends of the "Amirican

By stem" will agree to no modification of the tariff that all place foreign labor in opposition to our own-unless ON STRICT TERMS OF RECIPROCITY; such as exists in navigation between us and England. When the latter

futation!"

ments of our country, have excited some speculation on the subject-allow a subscriber to mention a lew facts. which have occurred under his notice. In a recent wisk to Walden, Orange county, state of New York, (pro-bably well renuembered by you from the due reapect man fested in a late visit made by you to that place). This lowestim is one of the state of the place of the This location is one of the best in this country, for the purpose of manufacturing, with an increasing population -all dependent on its factories; and, what is extraordinary, not a dissolute (in the general acceptation of the word) person of either sex is to be found in the place. Ardent spirit is entirely abandoned. Many of the inmate of the buddings were originally from the city of New York. Some from the most depraved parents, What is the result in a few years? They have been taght reading, writing, arithmetic—acquired a due knowledge of their business, and are now receiving from knowledge of their business, and are now receiving from show long to their desires, sail are now recerting from \$2 to \$7 per week. Contrast their situation, if they had remained in New York. Pristally some dreasure end might have a sated tiern, and now they are respectable. So it is with those from the adjoining counties. With-tout the knowledge, or the means of obtaining a liveli-out the knowledge, or the means of obtaining a liveli-

her manufactures; but never, while the name of an American is a proud one, till then. We go for this come

what may -and will not make any concession which has for its issue, an abandonment of the power to preserve

EFFECT OF MANUFACTORIES—addressed to the cellior.
As the moral effect produced by manufacturing establish-

our own independence.

the most distinguished inhabilints give them their personal attention, and, what is morally better than all, marrisge connections have most generally proved satisfactory. Among other suggestions, it has been seriously thought of establishing a beneficial society—for each member to deposit a certain amount weekly, for the purpose of mutual relief in case of sickness-also a savings bank, where the respective persons who think fit may deposit their carnings, under the care of certain trustees, who shall invest it in such manner that they may draw a handsome interest for the same. In this idace there are no idiers-no drunkards-all are well employed. It has a healthy situation, morals are attend-

hood, we find them educated, and strictly moral; and among from 300 to 400 ft males, no instance has ever oc-curred which warranted the least reproach. They have

many domestic comforts, and no want of society; they have their balls and private parties, are highly respect-

ed, and participate with the inhabitants in every social

Bultimore county, 1831.

[The editor is entirely satisfied that the state of society at Walden, is not colored too highly; and he is equally assured that the same happy condition of things be-longs to many-to nearly all, the manufacturing villages of the United States.]

ed to, and the propeletors, men of humanity, exercising a parental regard. In fact, they are a happy community.

So much for the manufacturing interest of our country!!

NORTH CAROLINA. This state, from the happy adaptation of its varied soil, production and climate to manufacturing industry, should be among the strongest advo-cates of the "American System"—and the fact is, that a large proportion of her most valuable citizens decidedty favor it. Her gold mines are causing a great de-manil, and opening a new market, for the produce of her farmers. Corn, bacon, &c. instead of seeking the sca-board, for uncertain sale or at least uncertain prices, now proceed westward, in large quantities, and meet with fair prices. But N. Carolina has iron more more valuable tion those of gold, with ample water-power and fuel to work them advantageously. Her lower country supplies abundance of cotton, rice, and other important articles, in the way of materials-and her upper lands may feed indlions of sleep, and furnish almost any quantity of bread-stuffs and meats. Her people, in the country last mentioned, are as well fitted for manufacturing as those of any other, and in every respect; and the two

<sup>&</sup>quot;Aye-and for slaves! more is the mily! t Nor has melasses or sull.



best, under any possibility of circumstances.

Many—very many letters which I have received, at different times, from North Carolina, entirely satisfy me, that the people of this state have a clear view of their deep interest in the success of domestic industrywith a well defined knowledge of the manner in which the various branches interlock with and support one another; and I have no manner of doubt, that this state will become a leading one in behalf of the home market, by encouraging domestic manufactures and internal improvement, which so admirably work together to give value to lands and their products, while lessening the price of all sorts of commodities to consumers.

The following is an extract from a letter recently addressed to me by a distinguished citizen of North Caro-

"In this place we have but a few men of information -the country around is but thinly inhabited; but out of aself, I am a consumer—buying all I eat, drink, and wear in my family-producing by labor, nothing. And yet I am, and have been, well satisfied that I live at as little cost as I should have done, if no duties had ever been imposed on foreign imports: and I pity that man—the IMPOSED ON TOTAL IMPOSED AND INTO THE MAINTING AMERICAN—who, if he ever had any patriotism or national pride, has lost all feeling of independence, or is willing to barter and truckle it with foreigners in a trafat a lew shillings." Se abo

BANK U. S. The Charleston "Mercury" is under the "apprehension" that a branch of the bank of the United States is about to be established at Columbia; and talks about "federal usurpation," and considers the proceeding as the "greatest outrage that has been meditated on the feelings of our people"—adding, they "cannot permit its establishment," "except they recognize the right of congress to establish corporations"—unless willing to "sacrifice the liberties of South Caroline, and give up the bank of the state" as an unresisting sins, and give up the back of the size." as an unresisting victim to its power;" and many other like moderate words and smooth sentences. Now, the best of the joke is,—that the people of South Carolina hold more of the stock of the bank of the United States than those of 52 638 shares, South Carolina 40,674, Maryland 34,503, 52,638 shares, bouth Carolina 40,074, 3127; man cx, 2007, New York 52,903, &c. This is a fine comment also, upon the poverty of South Carolina, about which the "Mereury" has so feelingly spoken "duly and every day," for a long time past. And, if the branch at Commisia is to become some sort of a tax, the state will receive an extra proportion for what it pays in the dividends made.

Boston-ruined by the tariff. The hargain for the lease of the city wharf was concluded this morning on the following terms. Ten thousand dollars per annum for 20 years; the lessees to erect on the whart ten substantial brick stores, to cost not less than \$3,000 each, to revert to the city of Boston at the expiration of the lease

Boston Transcript. the old business parts of the cities of Boston, New York, Philadelphia and Baltimore, in the present year, were enough to make a lover of his country feel quite "taw-ful!" We have seen the runs of whole ranges of houses—but were comforted with also seeing materials present for building new and better ones, in their stead, Mr. Randolph, though in a great lurry to get home, must have felt delighted with the small opportunity afforded, of seeing that Philadelphia was not in a "state of atrophy," nor Baltimore "deserted!"

SNOW ON THE RAIL-ROAD. The snow storm of last week covered some parts of our rail-road a foot deep. Though no calculation had been made on such an occurrence so early in the season, such were the resources and activity of the officers and agents of the company, that only a few hours delay happened in travelling the whole forty miles; as well as in removing many obstruc-tions, such as trees blown down, which had been cast

an immensely valuable interior trade—the safest and the | upon the road by the great violence of the storm—a very extraordinary one, for the senson of the year.

> "THE PENNSYLVANIA SOCIETY, for the promotion of manufactures and the mechanic arts" has been revived-Joseph Hemphill, president, Mathew Carey, P. S. Duponceau, Charles J. Ingersoll, Robert Waln and Daniel W. Coxe, vice presidents, &c. W. H. Keating is the ourresponding sceretary.

> "Wolr, on ANTI Wolr," are the battle cries of politis cians in Pennsylvania. The majority seems to be Wolfites. Buf some insist that the support of gov. Wolf is opposition to president Jackson. The doctors disagree.

> Woot. New York Nov. 21. The demand continues for low and midding wools, at nearly former rates—in some instances purchases have been made for each a trifle lower. The market continues well supplied of both foreign and domestic. Since our last, we note foreign arrivals as follows, 1,483 bales from Lisbon, 133 from Smyrna, 16 from Liverpool, at this porty 176 from Smyrna, 36 from Cronstadt, at Boston-400 bales are ad-vertised to be sold on the 29th, of Spanish and Portuguese, at this place.

American Saxony, fleece, Full blood merino, 58 a 60 Halt, " 50 a 53 Native and quarter blood merino, ficece, Native and quarter Pulled lambs, No. 1, 45 a 50 50 a 53 37 a 40 Foreign woots. 50 a 90 Spanish hat wools. Saxony, 50 a 75 Saxony, Smyrna, No. 1, "No. 2, 36 a 37 33 a 34 Mexican, Buenos Avres. 20 a 23

CONSUMPTION OF SILK. The quantity of this material used in England alone amounts in each year to more than four millions of pounds weight, for the production of which myriads upon myriads of insects are required. Fourteen thousand millions of animated creatures anaually live and die to supply this little porner of the world with an article of luxury! If astonishment be excited at this fact, let us extend our view into China, and survey the dense population of its widely spread region, whose inhabitants, from the emperor on his throne to the peasant in the lowly but, are indebted for their clothing to the labor of the silk-worm. The imagination, fatigued with the flight, is lost and bewildered in contemplating the countless numbers which every successive vear spin their slender threads for the service of man. Dr. Lardner's Cabinet Cyclopadia, vol. xxii, Treatiss on the silk manufacture.

LIBRUIA. The November number of the "African Rea pository," published at Washington by order of the mas-nagers of the American Colonization Society, contains a good deal of highly interesting information from Liberia. The general health of the settlement has much improved—as most persons believed that it would, in the progress of population and comforts. The residents The residents, indeed, now seem in the full enjoyment of health-and the accommodations for emigrants being better, and a the accommonations for emigrants owing occuer, and a knowledge of the course which they ought to jursue ascertained, the scassing, it is may be so called, passes off much easier than heretolore. After this, the oli-mate seems very congenial to the colored people. It is suggested, however, that emigrants from those parts of the United States which are not mountainous, should be preferred.

The matter of health being in this improved state, we refer with pleasure to the general affairs of the colony, which are quite prosperous. But it is complained, that the people are more disposed to make a living by traffic. than through agricultural labor. This evil will regulate itself, as the amount of population advances and makes need, as the amount of population advances and makes a ready market for the productions of the soil. And it is probable also, that the class of persons hereafter chiefly to be sent out, will be of those better fitted, by their habits, for labor in the field.

During the past year 46 vessels arrived at the colony. 21 were American, the majority of the remainder English -- and the exports were valued at \$88,911 25. A considerable and mereasing trade has been opened with the interior, and it is hoped that a powerful moral influonce will be obtained over the native inhabitants-some of whom already seck the advice of the agent for the adjustment of their disputes with one another, and certain of the tribes appear disposed to form an immediate connection with the adlonists. There are many particulars related which we cannot detail.

The schools are in a very flourishing condition-126 children are now reaping the benefits of education. Other school houses are about to be built, and the num-

her will be increased.

The chief articles received of the natives in barter are ivory, camwood and rice-of all which they have much

advanced the comparative value.

The agent expresses a fear that too many emigrants will be sent out in the ensuing 12 months—means not being adequate to their proper reception and wholesome accommodation. This evil, however, with previous preparation, may be stleviated; and, as the colony gams strength in itself, accommodation and employment will increase. It seems probable that the cultivation of

coffee will chiefly accomplish these things.

New sites for settlements and towns have been fixed on-and there now seems no doubt, that, if this colony is faithfully cherished a few years, (yet not too rapidly forced onward), it will become all that has been reasonably expected of it—a happy asylum for free persons of color from the United States; a country with a large population and trade, having a powerful effect, in various ways, on the native inhabitants, and possibly become the means of altogether abolishing the infamous traffic in the blood of human beings, which has so much afflicted Africa and cursed other parts of the world.

THE INDIANS. From the Cincinnati Gazette. Two weeks ago a deputation from the Wyandot Indians proceeded from this place to Missouri, for the purpose of exploring the country, as preliminary to a treaty for the sale of their reserves, and a removal west of the Massisippi. The whole tribe of Senecas, upwards of 200 in number, passed through here yesterday, on their way, we understand, to Arkansas, having sold their lands in Ohio, to the United States, and taken a final farewell of the homes of their fathers. A few years ago, and there would have been but one sentiment here upon their case. Party feeling now converts sympathy for them into opposition to the administration; consequently, any expression of sensibility is carried to an evil account, and ereates nothing but prejudice. " Tis true, 'tis fity and july 'tie 'tie true!"

RHODN ISLAND. The following in the aggregate from the sums total, of the returns from the fifty-one banks in this state, made to the general assembly, at the Octo-ber session, agreeably to law:-

\$6,732,296 53 Capital stock. Deposits, 1,290,603 17 179,552 97 112,261 49 1,342,326 59 Profits on hand. Due from banks. Hills in circulation, 853,298 69 Debts due from directors. other stockholders. 697,921 13 6,695,505 74 425,692 38 41 from all others, Specie, Bills of other banks, 257,792 95 Deposited in other banks, 323,035 66 245,775 60 Bank and other stocks, U. S. stock, 28.025 59 Real estate, 252,163 14 Personal estate, 8 453 08 From the above aggregate, it appears that the increase of bank capital in this state, since the report of October, 1830, is \$743,485—and since June last of \$32,625.

[Herald of the Times.

ROBERT POTTER has resigned his sert as a represen tative to songress from the state of North Carolina, as appears from the following, which we copy from the Oxford Examiner:

"On Saturday last, a number of gentlemen presented to Mr. Potter a written request to resign his seat in congress, to which he returned the following reply:

Oxford, N. C. 12th Nov. 1831.

To Mesers J. M. Wiggins, David Winston, and others.

Gentlemen-I have just received your communication upon the subject of my present relation to this congressional district, and I thank you for the generous and

friendly motives which induced you to send it.

You may be well assured that a seat in congress or any other public appointment could have no value in my any other public appointment could have no value in very eyes, the moment I should perceive I had lost, however, unjostly, the confidence of those who had bestowed it. With these sentiments I should, at once, on being sent here, have returned to the people the commission with which they had honored me, if I had been assured that a majority of them desired it. Placed, however, out of the view of the community, and deprived of all opportunity of standing up before the people in defence of my rights, I thought it became me to occupy a position purely passive, and not to recognize any fact in relation to the will of the community unless it were distinctly intemated to me. Having now received such intimuation as to justify this step, I cheerfully return to my constitu-ents the appointment to which they had alwaneed me in the public service. I have this moment forwarded my resignation to the governor, in order that an election may be forthwith held for my successor.

I am, with great regard, your friend and obesient ser-Ros. POTTER.

Mr. Potter, it will be recollected, is imprisoned for a violent assault upon, and cruel maining of a youth, and is yet to be tried for a like assault and main of an aged gentleman. 1

MADAWASKA. From the Journal of Commerce. learn from the castern papers, that Barnabas Hunnewell, Daoiel Savage and Jesse Wheelock, the Madawaska setters imprisoned in Fredericton jud, have been released by the governor of New Brimswick, in consequence of representations made to him by the British minister at representations made to turn by the printing maintenance Washington. Having been convicted of "a conspiracy to subvert his imjesty's authority in that province," they were sentenced to three months imprisonment and a fine of £50 rach. They are now pardoned and "disa me or 200 caen. They are now pardoned and "dis-charged out of custody, upon their respectively entering into recognizances to his majesty, for the payment of the said farer, so imposed upon them, when thereto requesterl;" an accident, mys the Portland Advertiser, which it is understood will never happen.

As to the right of jurisdiction over these men by the governor of New Brunswick, and the right of arresting them at the Madawaska settlement, all will depend upon the situation of the boundary line and the state of the boundary question. It is alleged, and we presume truly, that they resided and were captured on this side of the line as defined by the king of Holland, though, of course, on land in dispute between the two countries prior to

that decision.

Such being the ease, the authorities of New Brunswick, without any great stretch of forbearance, might have waived, for the time, their claims to jurisdiction,the "conspiracy" being in fact nothing more than a

Holland makes them, American citizens.

But is it not a fact that the state of Maine, pending the ratification of the decision by the Braish and American governments, still exercises jurisdiction over the same territory as before the decision was made? If so, she eshnot so well complain that the government of New Brunswick does likewise.

AMBERST COLLEGE. The catalogue of this flourishing institution for October 1831, shews 7 professors, 3 tutors, 2 resident graduates, 59 seniors, 46 juniors, 50 septomores, and 60 treslimen. The cotlege bills and boarding amount to 93 or 118 dollars a year, varying with the cir-

comstances or liabits of the student.

THE CONSTITUTION. Extract from a speech in the senate of the United States, by Gouverneur Morris, January 8, 1802.

"There are some honorable gentlemen now present, who sat in the convention which formed this constitution. I appeal to their recollection, have they not seen the time when the fate of America was suspended by a hair? My life for it if another convention be assembled, that they will part without doing any thing. Never in the flow of time was there a moment so propitious as that in which the convention assembled. The states had been convinced, by melancholy experience, how madequate they were to the management of our national concerns. The passions of the people were fulled to sleep-state pride slumbered—the constitution was promulgated—and then it awoke, and opposition was formed—but it was in vain. The prople of America bound the states down by this compact."

GOV. METCALFE's recommendations of works of internal improvement appear to be judicions. The general face of the country, and the course of its waters, for-bid the construction of canals in Kentucky; and the attention of the legislature is therefore directed to the improvement of roads and rivers. In the following paragraph the governor cvinces a just sense of the true

sources of national wealth:

""It is believed to he a sound maxim in political ceondmy, that national wealth consists in the most enlarged varied capacity to require the necessaries and comforta of life. The ancient, but lugitive theory, by which the minds of many have been lewildered, that national wealth consisted in accumulations over and above the annual consumption, has long since been exploded. Atl practical statesmen now admit that hourded accumulations, without a market, or the means of transportation to market, are valueless, and will soon perish. ever saves labor or time is admitted to be productive of wealth. Whatever facilitates and cheapens the process of exchanging one commodity for another, increases the capacity to produce; enriches the nation; adds to her offensive and defensive strength; diffuses happiness and comfort and joy amongst her own citizens; increases their love of home; affords them leisure for the cultivation of the mind; enables them to mingle wallout defined limit in the affairs of active practical life; exalts their character, and that of the state, to the loftrest summit of human clevation."

HORRY DISTRICT. At a general meeting of the citizens of Horry district, S. C. held on the 31st alt. to declare their sentiments, in relation to the doctrine of nullification, it was

Resolved, "That we do not recognise the right of a tate to annul a law of the general government; on the contrary, we view the new coined dectrine of additiontion in its real character as revolutionary, and therefore

abjure it as a gross political heresy."

It was also resolved that "aboutd a proposition be made at the ensuing session to nullify any of the laws passed by the congress of the U. States, our senator and representative are hereby expressly instructed to vote against, and to use their utmost endeavors in opposing it. But should their efforts prove mavading, and such a measure shall receive the sauction of both branches of the legislature, we shall view it as a 'deliberate, paipsble and dangerous exercise of undelegated power, -unanthoritative, void, and of no binding torce upon the
citizens of this state.

TENNESSEE. The house of representatives have adopted the following resolution, which has been transmitted to the senste for their concurrence:

"Resolved, That our senators in congress be instructed, and our representatives be requested, to use their best exertions to procure such a revision and reduction of the existing tariff duties of the United States, as will, on the payment and discharge of the national ilele, reduce the same to the standard of necessary revenue, and the encouragement of such domestic manufactures alone, as are indispensable to our national indepen-dence."

[This is all well enough-it submits the expediency of a protecting tariff to those whose right and duty it is to select such manufactures as should be "encouraged."]

I'ms Burrish Wast Indies are exceedingly agitated In Jamaics, very plain language is used with respect to eertain contemplated proceedings of the "mother country," to affect the products and population id the islands. In Grenada, Tortols, &c. fearful apprehensions existed of Grenata, Lortota, &c. tearun appreciations existed rained for raines of the s'ares. Barbudoes is, on several accounts, in a very distressed state. There are many reasons, we think, to helieve that a great crisis in the affairs of the British W at Indies, is at hand. With all the advantages which they possess in a monopoly for the British consumption of their sigar-by protecting duties levied on the product even of the Brush East India colonies, the planters do not realize two per cent. on their capital; and the whole property in the islands would not pay the delets to which it is subject. Nearly every one wishes to sell out, and nobody wants to purchase, lands and slaves—the tenere of both being very uncertain; and their own lives, in some cases, hardly thought secure against midnight acts of violence.

CUBA. The New York Reductor contains an official tabular view of the population, commerce, &c. of the Island of Culo, from which it appears that the island contains 804,487 inhabituits, of which 112,032, reside in Havens, In addition to these numbers, the military forces in garrison amount to 26,075. The ratio of po-pulation is 2011 to the square league. The amount o The amount of exports is \$10,063,761. And the revenue amounts to \$3,553,895; the expenses of the government to 9,140,559.

THE BOXAPAUTE FAMILY. It appears that Achille Murat wheelstely left this country, son of the late king of Naples, lad obtained a connecission in the Belgie army, which, being known to the French king, the latter mimediately requested his dismissal (because he fielongrd to the Bonsparte family) which was complied with by Leopold,

[A later statement in a Paris paper says that king Leopold had reconsidered this decision, and had, on the 5th of October, signed a decree for organizing a foreign legion, of which Achdie Murat was appointed colonel. ]

EXTRAVAGANCE. A London paper, describing the dresses of some ladies on a public occasion in that city, nokes the following statements:

"The duchess of Acgyll, in a dress of massive gold tissue, her raven locks, and a prodigious plume of feathers of the same color, produced a contrast with her dis-

monds, equated only by

I he duchess of Bedford, whose jewelery astonished all by its gitter a diglare. The latter made a prodigions display indeed. Independently of the necklace, which cost fifty thousand gnineas, (\$233,000), clisins of diamonds, with amethysts in the centre, decorated her grace's iliess, from the thick velvet Spanish list, to the girille or restus, below the stomach.

The hon. Mrs. Hope, was a meteor in the throng; that lady was a moving firmament, and it was said that the cost in bulliants alone in a dress of sombre maginficence, (crimson), executed seven hundred thousand pounds! ' or three millions one hundred and eight

thene and dollar s

This single sum is more than sufficient to pay the sabacies of all the governors in the United States, for fiftycountry, would be about \$8 to every person, both white and black, in the state of Georgies and nearly \$518 to every person in the city of Augusta. It is also about one-righth of the expense of our national government lor a vear.

[Augusta paper, [While such things were exhibiting in England, 150,000 persons, in one county of Ireland, were almost starving, though potatoes were only 4 cents per stone of 14lbs.

\*A pret y brisk quarrel took place between the governor and the himse id assembly—but the governor re-fried from certain expressions in his opening speech which were deemed offensive, and a seeming peace tol-The temper of the house, however, is manifeetly had, and the "disputes with the mother country" will go on.

SARDINIA. It appears that the standing army of this | by being dragged heels over head into the water, in ea petty kingdom—(now however, in a sort of varialize to Austria), consists of 80 or 90,000 men! Hence the peole are, as they must needs be, severely ruled and miserably fed.

#### BRIEF NOTICES.

An aged woman. There is at present living near Riverstown, in this county, in the perfect possession of her mental faculties, and with a degree of bodily setivity that is really surprising, a respectable woman asmed Waugh, who has attained the extraordinary age of 117; She has, therefore, lived in the reigns of Queen Ann, George I. George II. George IV. and is now in lively existence in that of William I

Sline Journal

Died, on the 17th November at Orwigsburg, Penn. Peter Prailey, esq. in the 73d year of his age—a venera-ble and valued man, a soldier of the revolution, and who afterwards filled many important offices in Pennss Ivania with great; benefit to the public and honor to himself. He was warm-hearted and kind-intelligent, liberal and just; and his decease must cause a sensible void in the society of Schuylkill county, of which he has been antly called "the father."

Murried, Last evening, by the rev. Mr. Barnes, Audrew Jackson, jr. eag. con of the president of the U. States, to Miss Surak, daughter of the late Peter Yorke,

esq. of this erty.

The preceding is from the Philadelphia Sentinel of Nov. 33. The gentlemen married is the adopted son of the president.]

Absoncements (we might almost say Boston), had the

first priming press, the first college, the first cond, the first rail-road, the first Sunday school, and the first fighting for independence, in America. (Prans. & bite. In "a rough and tumble fight" between two persons at Philadelphia, one of them his off the others

ip, and attempted also to bite off his nose!

Constantinople. The publication of a newspaper which the sultan has for some time past been codescoring to organise, is now likely some to take place. The paper is to be published partly in Turkish and partly in French. The Turkish portion is to be edited by Eva all Stends, the historiographer of the porte, and the French, portion the materiographer of the porte, and the French portion by M. Blacque, late editor of the Courier de Smyrne, which paper has for some time past ceased to appear. Art. Juderaan. We learn from the Boston Tran-script, that the committee of the board of addermen on

the communication of the manager of the Tremont theatre, transmitting \$302, the proceeds of Mr. and Mrs. Anderson's charity concert, have reported, as their opinion, that the money was presented under a misapprebension of public sentiment. The board have voted to replace the funds at the disposal of Mr. Barrett, the

So the Bostonians will not have either the rocal or

the bank notes of Mr. A.]

Influments. Gertain young men, in New York, well dressed and having the appearance of gentlemen, have recently assaulted respectable ladies in the streets, it unprotected, in the evening, in a way that decency forbids a description of. One of them, however, having thus assaulted a young lady, was seized by her companion, (a married one), who held-on until assistance came and secured the secondrel. He has been held to bail in the sum of 1,000 dollars; but should be taught the art and mystery of sawing stone at Sing-Sing, for at least ten

years-of guilty as charged.

Great slaughter of scale. A late English paper says—
A number of seals have been in the habit of massing no
the Tyne with the tale, for the purpose of preying on the samon. Several sportsmen repaired in consequence to the mouth of the river on Friday week, at high water, and put down a quantity of nets, at which the seeds ware stopped. They then raised their heads in the surface, and were instantly firet at by a number of good stots. The floundering of the wounded, the progood shots. grestive accession of tresh numbers, the constant salvoes of the sportsmen, and the shouls of about 300 spectators, presented a singular scene. A mechanic caught hold of a seal which rose near the brink of the river, by one of the hind membranes, but suffered for his temerity sequence of a desperate plunge of the poor phoca. water was dyed with blood, and the returns give 32 killed; but how many were wounded does not appear.

Bank of England. It appears by official document, that in Great Britain there are no fewer than 264.00 holders of stock in the bank of England, whose dividesda

do not exceed £200 a year.

A snug birth. In the discussion in the house of lords on the evening of the 20th of September, lord Brosgham had oceasion to speak of certain sinecures in his gift, and be remarked of one, worth £9,000 per annum, that it was once held by the celebrated "Nell Grownne."

Good news. A paragraph in one of the French papers

87.832

At a ball given by the city of Paris to Bonaparte, was a madame Cardon. In general, he was not very fond of people who had become rich by any means but his own favour. He had never seen madame Cardon, whose name even he lad never known before: but he had been told that her husband was possessed of great wealth. He walked towards her with a peersh sort of air, and said to her very abruptly—"Are you madame Cardon?" She made a profound courtesy to this question. Bonaparte continued his discourse. "You are very rich?" "Yes sir," she replied, "I have ten children." Bonaparte, struck with the deliests Bonaparte, struck with the delieste

Gamblers. A lot of short sixty were lately disturbed by the police in Philadelphia—but all escaped by jumping out of the windows, &c. except nine, who were condurted to prison. The regular establishment has thus been broken up-it was anugly fitted for Geeds of dark-

Counsellor Sampson, in the course of an eloquent re-uly to a toast drank to his health and happiness, at a ply to a toast drains to us nearm and inspirares, and dimer lately given him in Philadelphia, expressed himself thus—I might have risen to higher fortunes, and had I stooped as low as others did, I might have worn a coronet, and left, in dying, to my posterity, a high and sounding title to hereditary—infamy.'

A Frenchman, meeting an English soldier with a Waterloo medal, began anceringly to animudvert on the English government for bestowing such a trifle, which did not cost them three france. That is true, to be sure," replied the hero; it did not cost the English government three francs, but it cost the French a Nupelean."

The Legion of Honor. The number of members created last year was 180; but thing the first six months of the present year, it has amounted to 3,457; viz: 8 grand crosses, 36 great officers, 121 commanders, 362 officers, and 2,950 legionaries. The expenses of the mere insignator of these nominations will not be short .. £ £5 400

Sunday schools. The number of those institutions in the United States is 7.244—teachers 63.216—pupils

451 075

Rat Icenake. A man at Person Court House, N. C. ded as stated below a few days since. He had a ruttlestake in keeping, of whose "tameness" he unhappily had too high an opinion -tor he was accustomed to han-

"The deceased was not bitten by the snake as was at first supposed, by those who were not present; he told our informant, at the time when his mouth and tongue were so much swollen that he could scarcely articulate, "that the snake did not do it intentionally." Those who were present say that Mr. Bobbit had the snake out showing it to them, holding it in his left hand, rather loosely, that by an effort of the snake to draw his head back, one of its fungs came in contact with one of Mr. B's fore fingers about half an inch below the upper joint; he dropped the anske, but immediately picked it up, put it in the cage and commenced sucking the wound. A physician was called in and saw the deceased in three minutes after the accident; his eyes were then rud-his lips swollen and quivering-he said he should die, and was in the sot of falling, when he was assisted to bed. In ten minutes afterwards, every muscle in the system appeared affected with a twitching which continued until he died. Vomiting commenced in ten minutes after the socident, and continued for an hour. No pulse was discovered after thirty minutes from the time the occurrence took place. He appeared to be sensible of all that was passing until about two hours before his death, at which time his breathing became more diffi-cult, which continued to increase until he breathed his He died in six and a half hours from the time the poisonous long entered his flesh--a melancholy instance ut human folly.

One of the "giants." Married recently at Federal-burg, M.t. Mr. William Ward, a soldier of the revolu-tion, aged 100 years, to Mrs. Catharine Wright, aged about 48.

### BRITISH AFFAIRS.

From Bell's London Heckly Messenger. Distresses and difficulties in general trade, and the causes explained.

It is impossible to look around us, and not perceive that great distress exists in every branch of trade, com-merce and manufacture. From the years 1821 to 1824, agriculture labored under the heaviest pressure. It has partially revived, though it experienced a slight relapse dist year; but scale and commerce, since the fatal blow which they experienced in 1826, have never recovered; fresh embarrasaments have arisen, and new ones are

every day thickening over them.

We have been accustomed of late to see names in the Gazette, which every man deemed as firmly fixed in their counting-houses as our native oaks in their lorests. But the tempest has torn them up, and many of them now he prostrate on the highways, whose names have and opulence. It has been with great regret that we have seen such names as those of Minning, Palmer, and others, formerly East India and bank directors, added to

the list of bankrupts.

If we seek the causes of these extensive misfortunes, we find many of them sufficiently apparent. The bank eirculation has diminished two millions within little circuistion ass commission two minors within Inter-more than a year. If we take the period of the late re-volution in France, we find that its circulation has been contracted within that time from £19,200,000, to 17,200,000. The funds within the same period have declined from 92 to 82. All the great stayles of the country have been diminished in the same proportion. Wool and woollen yarn, notwithstanding their rise in the beginning of the year, much owing we believe to the speculations of American dealers, have fallen back to their usual stignation. Cutton was scarcely ever lower; and this easend be ascribed to the excess of importation. Iron, both in Wales and Staffordshire, is at a most ruin-From, both in White and Stationishine, is at a most run-ous price. Lead is so low in our own nerfect; and so depressed abroad by the competition of the Spanish numes,—where it is jicked up upon the surface of the soil, and requires little more than smelting,—as to af-ford no remunerating price. Colonist produce, not ex-cepting that which is grasped by the monopyly of the East India company, is reduced to an unjurabilited extent.

The state of things which we have above sketched, depends upon documents which we cannot alter, viz. the price currents, and therefore we cannot be suspected of exaggeration. But these disasters, confined in the beginning to the wholes sle dealer, have at length passed

into the retail trade.

It was observed by sir R. Peel, in his speech on the reform bill, that, notwill standing the longest season ever known in London, the pressure on all shop-keepers had been most severe, and retail trade had been cut to the quick; and at a late interview between lord Grey and a deputation from B runingham, lord G. admitted that manufactured goods had latten fifty per cent. since

the alteration of the currency.

But there is further evidence of the appalling distress of the times in the number of writs issued during the last two years and a half. By the report of the law commissioners, it appears, that seventy thousand affida-wis have been filed for holding debtors to bail within that period. In all manufacturing districts, at this mo-ment, legal process is sued out to a frightful extent, and more particularly in the potteries, and hardware dis-

Having maile this short and melancholy statement, and with no purpose of infusing gloom, where it is our daty to prompt to energy and exertine, we propose shortly to point out the two main causes of the present stagnation and distress, in addition to what we have They appear to be these:-First, the above detailed. political state of Europe: - Secondly, the fluctuating sy s-

tem of finance pursued by ministers.

The uncertain condition of public affairs has unhinged all the markets of the continent, and the visitation of the dreadful pestilence of the cholera has augmented the evils arising from public aguation. The great markets of Germany have been less thronged during the spring, the summer, and autumn, than was ever known. large deslers, who used to arrive from Boliemia and Hungary, are kept at home from the apprehensions of rangary, are kept as nome from the apprehensions of the plague; whilst the civil war in Poland has not only interrupted the dealings of the provinces on the banks of the Vistula and the Niemen, but has shut out from the markets of Europe the numerous Russian merchanta the markets of puripe the numerous sussain merchants who came from the extreme banks of the Whigs and the D.m. The rich provinces of Gallicia and Dalmutia have been deterred, by the same cause, from the Germann merta; and though our traile with Italy and the Archippi go has not suffered to the same extent, it has still been deranged in a great degree by the like disturb-

ing effects.

It is not to be doubted, therefore, that the agitated state of Europe, in addition to the evils of that dreadial pestilence which "walketh by day, and whose arrows Byeth by night," have produced the most disastrous con-

sequences to our general trade and commerce. Our large trade with America has not indeed failed us, but the southern states are in a condition so unsettled and unsafe, that their commerce has been more than usually unproductive. Since the late change of government of the Brazils, the commerce with that part of the globe has been almost stagment, and the merchant thinks houself fortunate if he can get his goods back without expecting any sale at remittance.

If such have been the effects upon trade and commerce from the political agitations of Europe, candor requires us to add, that the fluctuating system of finance pursued

by ministers has been the second disturbing enuse.
We do not blame lord Althorp for impediments which he could not master, owing to the state of the house of commons when he first brought forward his budget. But his Canada timber bill has been productive of great embarrassment in that large branch of our trade.

Our own opinions upon this hill have been before expressed; but the plan of equalizing, or nearly equalizing, the duties upon Baltic and Canada timbers, should cher have been questly abandoned during the present session, or otherwise firmly maintained. Lard Al-trop has pursued neither of these courses. He has temporised with the timber trade, and has thereby struck a blow at the most active branch of industry, which is connected with the large subject matter both of our navigation and imports, and doniestic labor, and building.

It has been nearly the same as regards the wine trade, It is now nearly ten months since alterations in these duties were first proposed: and wisely proposed. The thill is not yet passed, and the stagnation of trade, which commenced from the first notification of the new finance measure, has still continued. If we look into the Gazette we shall find that nearly one hurdred wine merchants have become bankrupts since lord Althrop's bill was first brouched in the house of commons.

Another large class of commercial men has also suifered from the uncertainty of our financial systemthe West Initia merchants. A promise, as sacred stimust as any public pledge could be, had been given to them, to relieve their produce from some portrin of taxation; that is, at least from the old war duties. They were completely unnoticed in the last budget, and the consequence has been;—the most severe and appylling failures amongst the merchants concerned in the West India trade.

It is our duty also to add, that from the slelay of the claneellor of the exchequer in not bringing forward the usual annual exposition of finance, the money market has been greatly deranged.

Formerly, a reduced price of stocks such as that which has lately taken place, from 92 to 82, was scarce-ly deemed an eval. It invagranted and revived trade, by the infusion of new capital, and the public securities were only momentarily depressed, in order that the fundholder might pour his treasures into the channels of enterprise,—erviving again, as these securities were sure to 40, from the accumulations and increased investments of successful trade.

But this has not been the ease in the late fall of stocks. Capital has not been withdrawa for the purpose of active employment, but for the purpose of inhibing, in order to watch the turn of public affairs and the financial

proceedings of the government.

The first thing, therefore, that ministers owe to the public, is a full exposition of the national income and expenditure, and of our actual financial state.

In connection with the rejection of the reform bill, the London Examiner of the 9th ult. makes the followhig statement:—

We have taken some pains to obtain information as to indeations of the state of the public mind, in the inetropolis, and the country, in the present crisis. The fullowing are a lew of the facts which have come to our knowledge:—

It is known in the city that considerable purchases have recently been maile of American stock.

There is reason also to believe that persons have pro-

There is reason also to believe that persions have provided themselves with small amounts of gold, and property easily available in emergencies; but great eaution is used not to create any alarm, and the purposes are seldom avoved.

At the clubs, and other places of meeting of the trading classes in the netropolis, various plans for the formation of a national guard have been the subject of discussion.

We have been informed that in several districts of the metropolis the tax gatherers have been informed by the inhabitants on whom they have called, that the taxes which they have exertly collected would be the last which they have recently collected would be the last which they would have to receive, unless the reform half was carried. The districts to which we allude are not those in which a determination has been evined with reference (2) the taxes called rates imposed by addictected bodies, to act upon the constitutional principle that taxation without representation is diegal—namely, Mary-Defone, St. Paneras, and talington purities. We say mention, as an instance of the penceable and quiet mode in which these determinations will be carried into effect, that the inhabitants of St. Macris's parash, without calling any public meeting, or making any outward defect, that the inhabitants of St. Macris's parash, without calling any public meeting, or making any outward demonstration, have refused to pay their last poor rate. The amount which it was expected to produce is, perspans, 22 000; and of this amount prubable not more than £1:0 has been paid by those who had not been consulted, and who knew nothing of the determination of other inhabitants to refuse payment.

The Murning Chronicle mays—If the anti-reformers will not yield to reason, pechaps the following plain bears may struct them. We class them under the two heads of certain and probable consequences of a rejection of reform. The certain consequences will be received by the consequences of a rejection of the consequences will be received by the consequence of a rejection of the case to a reject moral this dangerous question for a least to a reject moral this dangerous question for eight moral times. A state of weakness with regard to our foreign relations; 4. A stagnation of the relation, moneyed, consequences and manufacturing interests; 5. The continued public discussion of fundamental principles of government by opposite classes in a state of angreexest moral to a consequence of the consequence of th

—dissatisfaction—Swing; 6. A published list of the majority, with their places, pensions, boroughs, and conscitions; 7. Haired of picerage—a large erreation of peers—depreciation of the peerse; 8. The present bill, with compound interesty 9. A reform bill for the lords. Let those who have sense, and patriotism, and power, canvass these consequences; ask themselves whither they will tend—and then may the Lord direct their understandings.

BRITISH FINANCES.

Extract from lord Althorp's speech in the house of

"Lord Althorn said it was then his Intention to state to the bouse his view of the present expenditure and revenue for the present year. He proposed to do so -- first, by stating what the revenue of the year would be; then the expenditure; and lastly, what would be the balance of the secount. The motle in which he would arrive at this result, would be by saying what the produce of last year was; what was the difference between last year and the present one, up to the present time; and what would be probably received for the last quarter of this year. be probably received for the last quarter of this year. The produce of the customs for 1850 amounted to upwards of £17,540,000. A decrease had taken place up to the 25th of September, from the 1st of January, 1851, to the amount of £644,000. This reduced st to £16,896,000. I estimate, continued the noble lord, a further loss of £210,000 nn coals. I expect the duties on wine and on raw cutons will occasion an increase of £100,000, making the whole of the present year for the customs £16,750,000. The produce of the excise for The decrease up to 1830 was about eighteen millions. the 24th of September is upwards of one million. reduction of duties is about one hundred thousand pounds, which only extends from the 24th of September to the end of the year. This reduction made the excise of sixteen noillons. There had been received on the stock of water in hand one hundred and twenty-seven thousand pounds. Altogether, the clear produce of the excise was sixteen millions eight hundred thousand pounds. With respect to the department of the customs, it will be necessary to state what is the amount of taxes that have been reduced, and what effect they have on the revenue. The amount of taxes reduced is altogether three millions three hundred and fity-seven iliousand pounds; and the reduction on the custorns made the whole amount to four indions. But the revenue accrume from the customs and excise, which amounted in 1830, to thirty-see indions, will now amount to thirty-three. Thus the decrease, by a fair computation, assembly of being four millions, has only been two millions six hundred and therty-hour thousand pounds. It will now be understood that the customs amount to sixteen millions seven huntred and fifty thousand The excise amounts to sixteen millions eight nonuds. bundled thousand pounds. The noble lord then procecilcil to state that the taxes, stamps and crown lands were fifteen millions and upwards, which maile the amount of the whole revenues received, forty-seven nultions two hundred and fitty thousand pounts. He now rame to the expenditure. At this period government knew better what was more likely to be the expend-ture than at any other period of the year. In the early part of the year government were obliged to make up the amount from estimates, but at the present time a very small proportion was made up from them. He could, in consequence, make a statement of the expenthare which might be perfectly refield on. It amounted, up to the 24th at September, to £35,222,641. The expenditure from that time to the end of the year would mount to £11,533,880, thus making the whole expenditure for 1831, £45,756,521. The scriptus which would remain after deducting the expenditure from the profound, for 1830, was £47,812,000. I have, continued hard Althorp, examined the statements in every way that I can. I am sure I make no exaggeration. tout I can. I am sure I make no exaggeration. Amount of the consolled those in the trassury whom I be hered to have had the most experience, and they tell me that I can with confidence rely on the general accuracy of the statements made."

PUBLIC DEBT,

Statement of the public debt of the United States. Amount redeemed on the 1st Jan. 1831, \$39,123,191 68 Redeemable as follows:

At the pleasure of the government, vizz \$13,296 397 57 Three per cents, Five per cents, \$4,000,000 00 Four and a half per ets.

siter 6 months notice, part of subscription, to the bank of the U. S. Unfunded debt,

1,539,336 16 40,729 80

\$18,876,462 53

After the 1st Dec. 1831: Four and a half per cents, \$,000,000 00 After the 1st Jan. 1831:

Four and a halt per cents, 5,000,000 00 Five per cents, After the 31st Dec. 1831: 999,999 13

Five per cents, 56,704 77 Four and a list per cents, 2,227,363 97 After the 31st Dec, 1833:

Four and a hall per cents, 2,227,363 96 Alter the 1st Jan. 1835:

Five per cents, 4,725,296 30 £39.123.191 68

## JUDGE CLAYTON OF GEORGIA.

One of the opinious of judge Clayton, with reference to the affairs of the Indians in Georgia, it will be recollected, was nullified by the lategovernor Gilmer; and the triends of the latter, having a majority in the legisla-ture, at the recent election of judges, dismissed Mr. Clayton from office, -though he seems regarded as a "Crawford" or "Troup" man, and will probably have the support of that party to fill the seat in congress vacated by the election of Mr. Lumnkin to be govern-This brief introduction seemed neor of the state. ceasary to a better understanding of the influwingpublished in consequence, it seems, of his removal published in Sound, from the judgeship, Milledgeville, Nov. 12th, 1831.

MESSES. EDITORS. - You will confer a favor by publishing the following letter of chancellar Kint. making this request, I have only to remark, that the sole consideration for making it is, to submit the testimony of one, in layor of my legal reputation, whose character as a jurist will entitle his evidence to great weight. He is justly considered the Blackstone of America, and his character as a lawyer stands as high in Europe as it those in his own conduct. He has never been engaged in either party or political strates, and his whole life has been devoted to legal research. This publication is asked under not the slighest temper of complaint for my late remov-I from office, for I hope I shall have it in my power, at a more convenient season, to lay before my tell iw citizens, such a statement of the whole matter, as will show there is no necessity, on my part, for either as will shew there is no necessary, yours, all will or reproach. Respectfully yours, A. S. CLAYTON.

New Fork, Oct. 13, 1831. DEAR SIR - I was favored yeat relay with your letter of the 3d inst, together with the Southern Recorder of Sept. 29th, containing your opinion in the case of the

state of Georgia vs. Cunutos. I hat opinion has been read by me with great care and attention, and agreeally to your request I subjoin the conclusions, to which my own mond has arrived, in an-

awer to the two material points in the case.

1. It appears to me that upon the whole, the statute applies to the case. I can only judge from the extracts from it contained in your opinion. The statute asserts from it contained in your opinion. that the mines alluiled to, are of right the property of for gia, and it authories the governor to take possession of those mines, and to imploy force to protect them from all further traspuss. I presume such torothe possession has been tak no and that the offence alleged against the Cherokee Indian arose subsequently. the slatter is no exceptionable, in reterior to the right of the clierokes to their lands, (and which include the missest here, as well as and herbage and herbage and in any manner to influence, suffered our cut, in the discharge of our points therein, as well as and herbage and herbage and in any manner to influence up, in the discharge of our points and the state of the control of the contro

stones thereon), under the existing treaties with when, and in reference to the constitution and constitutional authority of the United States, that I agree with you, that such a statute should receive an interpretation, if possible, lavorable to constitutional and treaty rights, if such a statute does not apply in very terms, to the very case of a Cherokee Indian digging in the mines, the beuign intendinent would be that the legislature did not intend it, because such an intention would contravene the clear rights of the Cherokees, to the undisturbed use and enjoyment of the lands within their territory. secured to them by treaty.

2. But the better way is not to rest upon any such construction, but to go at once, as you have done, to the great and grave question, which assumes the statute to have intended to deprive the Cherokees without their consent and without purchase, of the use and enjoyment in port at least, of their lambs secured to them by national treatics, and which calls into discussion the con-

stitutional validity of the statute.

On this point I am entirely with you, and in my opinion your argument is sound and encelusive, and you have examined the subject with candur and accuracy, and with the freedom of judgment which your station

and character dictate.

I am most entirely persu ded that the Cherokee title to the sale use and undisturbed enjoyment of their mines, is as entire and perfect as to any part of their lands, or as to any use of them whatever. The occupancy in perpetuay to them and their posterity, belongs to them of right, and the state of Georgia has no other right in respect to the Indian property in their lands, than the right of pre-emption by fuir purchase, no other interest in the lands, as property, belongs to the state, and to take possession of the mines by force, is substituting It appears to be altogether without any foundation, to apply the common law doctrine of waste to the case, and I cannot but think that the legislature of Georgia would not have passed the statute, if they had duly considered that the ludish lands, have never been clamed, or the occupancy of them, in the most free and abadute manner by the Indians, questioned, either by the royal governments before the American revolution, or by the union, or by any state since, except in open wars, or except the claim was founded upon fair purchase from the Indians themselves. The proceed-ing of Georgia in this case is an anomaly, and I think it hurts the credit of free and popular governments, and the moral character of our country, and is in direct vioas manifested by treaties and by statute. I cannot think that the high spirited, free and noble race of men, who compose the citizens of Georgia, would be willing on Yours respectre-consulcration to do any such thing. Yours respectfully. fully.

lion. .t. S. Clayton.

#### MASONIC.

The following address and resolution were adopted at a meeting of the members id Mount Morish lodge, and Mount Moriah royal arch chapter, held at the masonic hall,in Hagerstown, on Montay evening, November 14, 1831 --

The members of Mount Moriah lodge, No. S3, and Mount Mornik royal arch chapter, being specially convened at the masonic hall, in Hagerstown, Maryland this 14th day of November, 1831, for the purpose of considering the property of surrendering our charter, have upon due deliberation, adopted the following declarations and residutions;

We declare that the institution of masonry, as we understand it, has for its object, I. The cultivation and diffusion of charity-not merely in the dispensation of alms, but in the inculcation of a spirit of forgiveness and conciliation towards all mankind. 2, An liabitual respect for the laws; and 3. A deep reverence for the bible and a constant adherence to its sacred precepts. Such are the eardmal principles of masnury, as the same have been imparted to, and recognized by us.

which have from time to time agitated our country, we have never supported any man for office because of his have never supported any man for omce necessar of his being a mason, nor permitted that consideration in any degree, to influence our suffrages; and that in so doing we have acted in strict accordance with the principles of this institution.

We further declare, that as masons we are bound to each other by no tie or obligation, inconsistent with our duty to our God, our constry or our neighbors, and that the various speeches, manifestoes, books, and other pullications, in which we are exhibited as united by they and obligations of a different and contrary import, and more especially those publications in which we are represented as bound to support each other whether right or wrong, and to keep each other's secrets, even when they involve the guilt of treason or muriler, are univue

and calumnious.

In reference to the case of Morgan, our minds have been variously affected, by the rumors, conjectures and statements, which have been given to the public through the press, and while some of us entertain the opinion that he is still alive, and residing in Canada or some foreign country, others of us believe that he was forcibly and illegally seized and taken to the northern frontiers of the United States, and there murdered, by men calling themselves masons. But we submit it to the liberal judgment of our countrymen, that this was the crime of a lew infatuated and deluded men, calling themselves masons, who in its perpetration, violated no less the principles of the masonic institution, than the laws of their country; and that it is both eruel and unchristian to argue that because these misguided men were guilty of murder, all masons are therefore murderers.

The fate of Morgan, naturally aroused the indignation of the people near the scene of his abduction, and there can be no doubt, that the first and principal object of those who espoused his eause, was to bring the offenders to justice. The transaction however was soon seized upon by agitators, and broken down politicians, as a means of pulitical excitement. We have witnessed upon recent occasions the efforts of emissaries and incendiaries, who have been sent amongst us from other states, for the who have been stilling against us the hatred and ill will of our immediate friends and neighbors. But amilit all the fierceness and fanaticism with which free masons all the fierceness and institution with which free masons have been assailed and hunted down, in other portions of the union, it has been the proud distinction of the members of this lodge and chapter, to be sustained and supported by the virtue and intelligence of the commupity in which they reside, a large portion of which, as it is well known to us, are both from principle and education opposed to the masonic institution.

To the agitators of the day we owe nothing, but to the

mass of our fellow-editzens, including those whose minds, through the arts and persuasions of the designing, have through the srt on personant as the designing more been poisoned against us, we do owe it, that the existence of this lodge and chapter should no longer centime to be a cause of strife between us. To jurc serve the peace of society, therefore, from the machinations of bad men, and in token of the high value which we set upon the good opinion of our fellow-citizens, we

Resolved, That the chapters of this lodge and of the royal arch chapter of this place, be, and the same are hereby surrendered, and that the said lodge and chapter be benceforth discontinued.

#### ANTI-NULLIFICATION, Judge Smith's letter.

Yorkville, Nov. 9th. Measrs. Saml. Lewis, David McCalla, Jan. Chestney, jr. Burr H. Head, committee.

Burr 11. Teau, committee.

Gentlemen—I received in due time your invitation of
the 28th ult., "to attend a general meeting of the eitizens of Chester district, on Friday next, for the purpose
of taking into consideration the present state of public offuirs.

I beg leave to assure you, gentlemen, it would afford me great pleasure to do so were it in my power, but eirne great present to to so were it in my power, but ere-eumstances of late occurrence, not within my control, have rendered it out of my power. I owe much to the people of Chester district for their kind patronage dur-

litied rights and duties; that in all the political contests | ing my practice at the bar, as well as for their unshated eirilities to me at all times rince, whenever I have had the pleasure to mingle with them. And could I upon occasion have found it in my power to attend their deliberations and to have contributed my humble services to the promotion of the public weal, I should be much gratified.

I have great confidence in their prudence and integri-ty, and I have little doubt but in these moments of peril, they will watch over their portion of the republic with such nonest artor as to save it from harm. When I re-collect that some of the revolutionary patriots of 76 are still with you, and yet in the scenes of busy life, I am proud to helieve the young and ardent youths, who are rising up as the ornaments of their country, will profit from the examples of those who know from experience the horrors and enlamities of intestine war-who have seen neighor butcher neighbor for no other cause than a

difference of political opinions. There are some forebodings of like events at the present time, which I rejoice to believe are lessoning, from the circumspection of the great mass of honest citizens who live in the country, breathe a purer air, and remain untainted by the postderous politics of town and village loungers, who, having little else to do, make a prey of their neighbor's fame to prevent their own from sinking into forgetfulness. I am happy to believe that your vil lage is not embraced in this character. They are all men of business. If you have dissensions, they are of a

more honorable cast.

I have thought much recently upon the prospect before us. I believe the doctrine of null fication is retrograding. The great mass of this great community, honest. They are also sensible; and by the bleasing of the heaven, but little versed in the political intrigues of the day. They beek truin, and it once they are correctly informed, they invariably its justice both to their neighbors and their country. Inform these men correctly, and you have nothing to fear. They love peace, they shun war, unless it be necessary for their own safety or their country's glory-then they will to arms.

Accent my liest wishes for your individual happiness, and through you I beg leave to present my thanks to the eitizens of Chester district. WM. SMITH.

#### GENERAL BLAIR'S LETTER.

Red Oak Camp, Nov. 4th, 1831. Messrs. Saml. Lewis, David McCalla, Jas. Chestney, jr. and B. H. Head, esqrs. committee.

Gentlemen,-I have received by to-day's mail, your polite invitation "to attend a general meeting of the "citizens of Chester district, to be held on Frulay, the "11th of this month, for the purpose of taking into "consideration the present state of public affairs"-and you flatter me by expressing a hope that I may find it convenient to favor the civizens of Chester with my counsel, and assist them in their deliberations on that occasion.

Although I am not so vain as to imagine I could enlighten your highly intelligent community, or aid it in coming to correct results on the subject to which you allude, yet, as I should expect to be a gainer thereby, I would take pleasure in attending if it were possible. But having been confined to bed for near a month past, by a violent bilious attack, and not yet sufficiently recovered to leave my room, you will perceive at once there is no probability that I shall be so far restored by

the 11th, as to be shie to attend your meeting.

I am highly gratified to find the patriotic and enlightend eitizens of Chester disposed to take into consideration the state of public affairs. The time has come when every true heart and sound head should exercise their utmost influence to keep public opinion in the right channel. A dangerous heresy called "nullifica-tion," is abroad in our land, and should it be entertained and acted on by our state legislature, (a proceeding expected by many), we have a right to apprehend the worst of consequences. The revenue laws, above all worst of consequences. The revenue laws, soore win-others, are laws that the general government cannot suffer to be trifted with. Money is an necessary to the existence of the body politic as bread and water is to sustain the human body. If South Carolina, remsining in the union, should be permitted by the general gov-

ernment to annul or evade the operation of the revenue that SCIENCE has here wrought what we shall have the crimment to annul or evade the operation of the revenue laws, every other state would immediately follow the example, and in a short time the federal government would not be able to collect a single dollar for its support. From the very necessity of the ease, therefore, the general government, to preserve its own existence, would be compelled to enforce the collection of the duties.

ties at all hazards, and by military process if necessary. We hear much about state sovereignty, -and by some greater supremacy is elaimed for the state than they sasign to the general government. Although I contend that the general government is endowed with many more and higher attributes of sovereignty than any state government in the union, yet it is tide to elaim absolute sovereignty for either federal or state government—that the "overeignty rendes in the people" is the our political theory. The state government is entirely the creature of the people: the federal government was, also, created by the people in their individual and corporate capacities-it was the work of the people and the states conjointly, and partakes of a compound chercharacter is preserved and the people represented—in the senste, the federal feature is maintained and the states represented. The people, however, can alter or abolish either of those governments whenever their interest or happiness requires it. I, therefore, claim for the state of South Carolina the right of seceding from the union upon these principles—but, that she can, even by means of a convention, nullity such laws of congress she may dislike, and avail herself of those that are calculated for her benefit and protection, is an absurdity I cannot understand. Still less can the legislature ex-ercise the power of nullification. Regarding it as a revolutionary measure, not recognized by the constitu-tion, (according to Mr. McDuffie's admission), if it could tion, (according to Air. Malletine's admission), in a count be exercised any where, it must be in a primary assembly of the people,—in convention. But I think I have shewn that even a convention cannot exercise this power white the state remains in the union,—and when she withdraws from the union, (should she ever be so mad as to do so), such withdrawal will supercede the neces-sity of nullification. So that view nullification in any light I can, it appears to me a deformed, incomprehen-sible monster, meanable of producing any good, but calculated to do evil without measure and without end.

I flatter myself these crude and hasty remarks, (in-tended, at least, to do good), may be received with all the indulgence due to a mind sympothizing to a great extent with the bodily infirmity of the writer.

Very respectfully, gentlemen, your obedient humble servant.

#### CHIEF JUSTICE MARSHALL.

The venerable chief justice left the city on Saturday morning 19th inst. in the steam bost William Penn, for Baltimore, accompanied by the good wishes of our eitigens for his safe return home, and a long and continued enjoyment of uninterrupted health.

Previous to the judge leaving the city, the committee of young men appointed in October last, to wait upon him, presented the following address, which, together with the reply of the judge, have been politely tendered to us for publication.

ADDRESS. Philadelphia, Nov. 17, 1831.

Hon. Judge Marshall, Sin,-Understanding that you are about to leave this city, permit us to express our regret that your stay cannot be prolonged, while we congratulate you upon your restoration to health, and our country (not less heartily) upon the probability that you will yet, for many years, preserve in full vigour the laculties that have been so long and so successfully employed for the good of your tellow sitizens.

As one of the few left among us, in reverence for whom all Americans unite, we have deemed it our duty to assure you of our profound respect and earnest wishes for your future welfare.

Permit us to add, -remembering a kind compliment paid by yourself to the city in which we reside,—that as Philadelphians, we think ourselves entitled to be proud,

approbation of our countrymen in calling an mestimable benefit to the nation.

REPLY.

Philadelphia, Nov. 18, 1831.
Gentlemen, -I have received your address on my departure from this place with that sensibility which the partial kindness by which it is dictated ought to in-

Permit me to assure you, that the flattering terms in which you convey the pleasure you feel at my restoration to health, have made a deep impression on my heart, and will be cherished as an additional stimulus to those ex-

ertions which they reward.

With a full sense of the unremitted attention and feeling which has accompanied the skill to which I am indebted for recovery from a painful disease, I carry with me, from Philadelphia, a profound admiration of the many institutions in your city, which attract the attention of a stranger—institutions founded on the sate basis of utility and virtue, and regulated by that wisdom which ensures permanence and improvement. It is no small additional gratification to believe, that the rising generation inherits the spirit of their fathers, and will be found to advance with the age in which they are.

Be pleased to communicate my grateful thanks to those you represent; and, with my sincere acknowledgments for the kind terms in which you have conveyed their sentiments, to be assured of the good wishes and great respect with which I am, gentlemen,

J. MARSHALL

# GOVERNOR BARBOUR. Barboureville, Nov. 2d, 1831.

Sin,-Mr. Eaton Stanard was so good as to be the bearer of your note to me, enclosing the resolution of sundry citizens deputed by the people opposed to the re-election of Andrew Jackson, to choose a delegate to represent this congressional district in the national republican convention, proposed to be held in Baltimore on the second Monday in next month. By these I learn they have honored me with this appointment. My high respect for those who have appointed me, my entire eoincidence of sentiment with them in the object to be elfected by the convention, and a conviction that no man can with propriety refuse the portion of duty assigned him by his fellow citizens, in times like these, when him by his terior entrens, in times time times, when four country is degraded by the tyranny and misrale of the present administration," are considerations which induce me promptly to accept the appointment.

And it is with smeere pleasure I perceive in these resolutions the tribute so justly paid to the worth of Henry Clay. - Having long served with him in the public couneils, and for a portion of the time in a relation to him so intimate as to lurnish the best opportunity justly to appreciate his talents and his patriotism, I am happy that I can most sincerely respond to the sentiments expressed by my constituents so flattering to this justly distinguish-ed ettzen. With them I shall rejoice to see him elevat-ed to the chief magistracy of the United States—whose duties I am confident he will discharge in a spirit corof the republic and if it is made obvious, which I cannot now anticipate, that our great object can be attained only by the selection of another etizen; then, indeed, as our motto is our country; compared with whose honor and the preservation of her noble institutions, names are nothing, Henry Clay will be abandoned by me without heritation. It is therefore to me a source of annixed gratification when I reflect that I shall carry with me into the convention, as well from duty as inclination, the views and wishes of my constituents

Your fellow citizen, JAMES BARBOUR. Richard Cave, esq. secretary.

LETTER FROM JUDGE McLEAN.

From the Hagerstown Mail.

A letter from judge McLean to a member of the antimasonic convention.

Nashville, 7th Sept. 1831.

DEAR SIR-As the time for the meeting of the convention at Baltimore is near, in pursuance of my proour conversation at Columbus. There are now three candidates for the presidency before the people. General Jackson, Mr. Clay, and Mr. Calloun, have all been There are now three nominated by their friends, in public meetings and otherwise, and they must consequently be considered as competitors for that distinguished station. The addition of a fourth name to the list of candidates, and especially one as humble as mine, might lead, insofar as any influence could be attached to it, to distract still more the public mind. This I do not wish to see, as I do fear it would be injurious to the best interests of the country.

Il, by a multiplication of eandidates, an election by the people should be prevented, I should consider it a na-tional misfortune. In the present agitated state of the tional misfortune. In the present agitated state of the public mind, an individual who should be elected to the the people, could scarcely hope to conduct, successfully, the business of the nation. He should possess in advauce the public confidence; and a majority of the suffrages of the people is the only satisfactory evidence of

that confidence.

My situation on the bench imposes considerations of prudence and delicacy which do not arise, perhaps, from

any other official station.

Whilst no one can deny the right of the people to select their chief magistrates from any of the branches of the government, it would seem that a member of the judieinry should decline the contest, unless the use of his name would be likely to tranquilise the public mind, and advance the prosperity of the country.

Without presuming that my name would be lavorably considered by the convention, I have to request that if it should come under consideration, you will make known the reasons why I most respectfully decline the honor of being presented to that respectable body for nomination

to the presidency.

I would do injustice to my feelings, if I were not to tender to my friends in the convention my warmest gratitude for their favorable consideration, and to assure them that I shall never cease to cherish the recollection of their good opinion.

With sentiments of the highest regard, I am, dear sir, truly yours.

MR. CLAY AND THE ANTI-MASONS

From the Lexington, (Ky ) Gazette. Having easually heard the following correspondence spoken of, and presuming that our readers would take an interest in perusing it, we have requested and pro-Hunover, Ind. S.pt. 2, 1831.

Hon. Henry Clay: SIR-Having been appointed by an anti-masonic meeting in Hanover, Indiana, to open a correspondence with you for the purpose of ascertaining your sentiments with respect to masonry, we take this opportunity of ad-dressing you on the subject. We feel ourselves impeldressing you on the subject. We teen ourselves imper-led to this duty, and to the taking of this step, from the consideration that in us is placed a part of the sover-reignty of this country; that on us, as constituent parts of this government, depend the perpetuity of our republican institutions, the character and prosperity of our nation, the happiness of its enizens, and the destiny of millions vet unborn. As citizens of this republic we feel it our bounden duty to watch over the destinies of our nation, to guard with studious care our rights, and to detect and exterminate whatever has a tendency to corrupt our repub ican institutions or set aside our laws The subject of free masonry is one which have of late engrossed the attention of the people in many parts of the United States. It is a subject which is of vital importance, and demands the serious attention of every Christian, patriot and republican. What may be your sentiments on this subject, we know not. By some it is affirmed, that you are now a moson of the highest order, and a zealous supporter of the masonic institution; and by others, that though you were once a mason, you have of late abandoned the society and are now opposed to the institution; so that we have been unable as yet to ascertain with certainty your sentiments on this subject.

mise, I have the honor to address you, on the subject of then be our duty and privilege to raise our humble but independent voice in favor of him whom we may deem most worthy of our suffrage; and as you now at and a candidate for a high ann important station, as your livinds and fellow-citizens, we would solicit from you a frank and candid statement of your sentiments on this solicit. We activit his with the more confidence. We solicit this with the more nonfidence, besubject. cause we believe you have always sustained the character of the lrank and affable friend, and the faithfeal and undisguised politician, and that you would scorn to obtain the suffrage of the people by consealing your sentiments.

Yours respectfully,

JAMES A. WATSON,

NOBLE BUTLER,

JAMES H. THOMSON.

ANSWER.

Ashland, October 8, 1831.

Gentlemen: I hope you will excuse the delay in ac knowledging the receipt of your letter of the 2d which has arisen from my absence from home and from

various engagements.

Waiving the considerations that I have no knowledge of the existence of an anti-masonic meeting in Hanover, Indiana, other than that which is derived from your letter, nor of your appointment as a committee to correspond with me, other than your statement, nor the satisfaction of a personal acquaintance with you, I will proered at once to reply to your letter. Its professed ob-ject is to ascertain my sentiments on the subject of masonry; and the reason assigned by you for this inquiry is thus stated by yourselves: "As we are again shortly to be called upon to choose a man to preside over the privilege to raise our humble but independent voice in favor of our suffrage; and as you now stand a candidate for a high and important station, as your friends and fellow-eitizens, we would solicit from you a frank and candid statement of your sentiments on this subject."

I ilo not know a solitary provision in the constitution of the United States which conveys the slightest autho rity to the general government to interfere, one way or the other, with eather masonry or anti-masonry. If, therefore, a president of the U. States, or any other functionary of that government, were to employ his official power to sustain or to abolish, or to advance the interests of masoury or anti-masoury it would be an act

of usurpation or tyranny.

You have not called upon me for my opinion upon any great practical neasure falling within my scope of federal power; but passing by every question of vital in-terest, within the sphere of its operation, you demand my sentiments upon a subject with which I humbly conceive it has nothing to do; and you place this demand on the ground of the influence which my sentiments might exert upon the excreise of an unloubted and important privilege which you possess as citizens of the United

A compliance on my part, with your demand would amount to an implied admission, that individual sentiments, on the subject of masonry, formed a proper con-sideration in regulating the exercise of the elective franchise in respect to offices of the federal government. can make no such admission. I cannot believe that whether I am hostile or friendly to masonry or anti-masonry, is at all material in the formation of any judgment, on the part of my fellow-entizens, concerning my friess for my affice unifer the government of the United Sistes. That clevated office, to which you aline, should, in my opinion, be filled by one who is capable, unawayed by sectorian Icelings or passons, or administrating its high diense importably towards the whole people of the United States, however ilivided into religious, social, benevolent or literary associations.

Entertaining these views, I have constantly refused to make myself a party to the unhappy contest riging, distant from me, in other parts of the union, between musons and anti-masons, corrected I must adhere to that determination. If, indeed, you gentlemen, will point to the provison in the federal constitution, which can be legitimately made to As we are again shortly to be called upon to choose a operate upon the subject in question, I would not besime to preside over the souncils of our nation; as it will take promptly to comply with your request. In the meantime, in declining it, I hope you will consider me as not wanting in proper respect to you or to those whom you represent, but as acting from a conviction of the innerut as acting from a conviction of the impropricty of blending an alien ingredient with a question, already aufficiently complex; and also from a sense of personal independence. I am with great respect, your charlingt servent. obedient servant,

Messrs. James A. Watson, Noble Butler, James H. Thomson.

#### MR. CLAY IN INDIANA.

Reception of Mr. Cluy at Terre Haute.
The intelligence having reached Terre Haute that Mr. Clay had passed up through Illinois to his farm in that state, about twenty miles distant from this town, on the day succeeding, a deputation of citizens of the county of Vigo was sent to wait upon him there, and invite him to Terre Haute. In pursuance of their invitation, on the 28th ult. Mr. Clay visited Terre Haute, escorted into town by a cavalcade of about two hundred citizens, and took lodgings at the hotel of capt. Jas. Wasson, Immediately after his arrival, he received the citizens who thronged to see, and to be introduced to him; and after an intercourse which appeared to be highly gratilying to them, he was writed upon by the committee in behalf of The following is the corresthe town and its vicinity, the town and its vicinay,
pondence between them:

Terre Haute, Oct. 28th, 1831.

To the hon. Henry Clay. SIR: Being appointed, by the citizens of Terre Haute and its vicinity, a committee for this purpose, we have to perform the highly acceptable office of addressing you in their behalf. We assure you, sir, of the fively gratification generally felt at your presence amongst us-we tender you the homage of our respect and esteem, and beg you to believe that you are received by all with a heartfelt welcome. Indeed the scene which mow presents itself to you renders unnecessary these expressions. You behold our edizens assembled in an immense multitude to greet you at the very moment of your arrival, and by their looks and salutations you have a full assur-ance of their feelings. The national colors, floating from the flag-staff of our town, and the continued roar of artillery, announce to all that we consider your visit a cause for more than ordinary rejoicing, and that we have de-clared this day to be one of public congratulation and fes-We cannot forget the benefits which you have rendered the west, whilst engaged in the national councits, both in congress and the cabinet-your successful efforts in Europe to secure to your country an honorable peace—your cloquence in behalf of the oppressed of South America—your introduction and support of a sys-tem of internal improvements and domestic manulaetures, so well calculated to secure the real independence of the country, and to all parts of it equal benefits-our national character likewise, elevated as it is in both hemospheres, so that an American citizen is hailed with pleasure in every land-for this we consider ourselves, m a great measure, indebted to your splendid career. But, sir, whatever may be your claims, we well know that in these times of political revolution and party violence, none can predict with certainty. It may be your destiny to fill the highest office in the gift of your countrymen-it may be that the Laurel will entwine the brow of some more fortunate competitor; but, should the issue of the contest be against you, we shall still look to your well-tried patriotism, which has never suffered any abatement of its vigor and zeal amidst all your truls, and shall expect of you that, whenever and wherever you may be useful, you will persevere in sustaining the prosperity and honor of the republic. Having seen your answer to the citizens of Vincennes upon the subject of a public dinner, we should expose our motives to suspicion, if we were now to tender you a similar compliment as further evidence of our respect and attachment,

We have the honor to be, sir, with great respect, your obedient servants,

E. U. BROWN, RUSSELL ROSS, WM. WINES, B. I. GILMAN, Jr. C. GILBERT SAMUEL CRAWFORD. MR. CLAY'S BEPLY.

Terre Haute, 28th Oct. 1831. GENTLEMEN: I thank you most cordully, and the citizens of this town, for the sentiments, in their name, which you have expressed towards me, and for the lively manifestations of joy and felicitation of which my arrival among you has been the occasion. They abundantly as-sore me that I am in the midst of ardent and partial friends, and have made a grateful impression on my heart, which will long remaio. Whilst I am sensible, gentlefriends, and mave made a gradeful impression on a form, which will long remain. Whilst I am sensible, gentlemen, that your kindness has greatly insgnified the importance of my public services, I leet the proud consciousness of having strove, in every station in which I have been placed, honestly and faithfully to discharge my duty, and it is highly gratifying to me to witness, in the general prosperity of all parts of the country, evidences of the wisdom of the policy which congress has so long nursued. In this remote point, more than eight hundred miles from the capitol of the union, it is impossible not to recognise the concuting tendency of that national road, which, in the progress of its construction, has al-ready reached your town, and passed on still farther

Who can be on any part of this great road without feel-ing that its physical connection increases much the strength of the moral and political ties which happily bind us together? We have only to persevere in our American System, relieving consumption, after the payment of the public debt, as much as possible consistently with an economical administration of the government, without impairing the principle of protection, to be assured of continued prosperity. I am greatly obliged by future contingency that a waits me. - Whatever it may be, gentlemen, I shall anxiously endeavour to luifit every duty I may owe to my connery. I pray you, gentlemen, to communicate to my fellow citizens of Terre Hante and its vicinity my profound acknowledgments as well for the testimonies of esteem with which they have actually honored my presence, as for that which they have been restrained from offering by a delicate respect for my resolution announced at Vincennes, and I beg you and them to accept of the best wishes of

H. CLAY. Your triend and obed't serv't.

DUIY ON IRON.

NEW TORK SUPERIOR COURT, -NOV. 19, 1851.
From the New York Journal of Commerce.

Moves H Grime II, and others Before his honor judge vs. Samuel Swartwout. Oakley.

D. Lord, jr. csq. opened the cause by stating that it

was an action brought to recover an excess of duty paid on old iron imported from London in April last, in theon on from imported from London in April 1885, in the strip Columbia. It was entered at the custom house as old iron, and the duty was tendered at the rate of 15 per ct. ad valorem; it being an "unenumerated article." The collector called it scrap iron, and demanded a duty accordingly, which was paid. If scrap iron, the duty would be 62½ cts. per 112 lbs and amount to \$1,132 78 If old iron, 15 per cent. ad valorem 368 58

Leaving plaintiff's claim

\$764 20

By the tariff of April 27, 1816, the duty on all articles not specified, was levied at 15 per et. ad valorem. Old from is not specified. By the act passed May 19, 1828, non in the specimen. By the act passed May 19, 1828, the duty on hig iron was altered to 62½ etc. per 112 lbs. and the same duty was imposed on sorap iron by the law of 1850, (page 105) by a clause in a law relative to iron plates for rail roads.

The question for the jury is, whether this was old iron or scrap iron.

James N. Matthews, sworn for plaintiffs, testified that he is the custom house clerk of Fish. Grannell & Co. A. invoice of the iron was received in April last. Prepare an entry for it, and made the entry at custom house The invoice was presented at the time .- Mr. Swartwon the collector, wrote on the invoice, "approaces to return the ther old or scrup toon, S. S." Mr. Jaques, an office at the custom house, wrote to the margin of the invol after examining the iron, "old iron, T. Js." Mr. Me ' an appraiser, endorsed on the myoice, "passed as oiron." A tender was made to the cashier of \$368 58, who refused it, and exacted \$1,132 78; and refused to give up the property unless this sum should be paid.

Mr. Grinnell paid it, and at the time told him he should

bring a suit to try the question.

Nathaniel L. Griswold, for plaintiffs, testified that he saw the iron, as he supposed, on board a ship lying at the foot of Pine-st. - The greater part was old iron. iron is any old article that was formerly manufactured for use, as an axe or hoe, and worn out. It is heated to a white hear, and then rolled into bars; also old iron from wreeks. Serap iron consists of pieces of iron left from the end of bars or bolts that have been nearly worked up.—The pieces are put together, and beat out with a trip hammer, and rolled into bars.

Preserved Fish, for plaintiffs, testified that he saw the iron in the ship's hold. It was all old iron that he saw. There might have been scrap also, but he did not see it. Witness knows the article from long acquaintance with Cast-off articles that have been manufactured for use

and worn out, are called old iron.

Pieces that have been left from bars and not fit for use, are called scran iron.

The plaintiffs here rested.

Jas. A. Hamilton, esq. for defendant, moved for a non-suit, on the ground that the collector is not liable to be sued, as he is acting in the course of his duty under the instructions of the treasury department; and as he had aid over the sum received, or was bound to pay it over Immediately.

The court denied the motion.

He opened the case by stating that the invoice was untrue, there being scrap iron on board which was not mentioned. He then stated the proof he intended to offer, which was, that by the 9th section of the act of May 23, 1830. "serap iron" was charged with the same duty as pig iron, which was subject to a specific duty of 622 cents per 112 lbs. by the set of 1828. That old from was not known to the import laws. That he would was not known to the import laws. I mak he would prove that the article imported by the plaintiffs and denominated in the invoice and entry as "fold fron" was "serap iron," and so known by the manulacturer and others, and that "fold iron" and "sorap iron" were synonymous terms. That this importation could not come under the denomination of non-counterated articles, betured articles, they came within the 5th article of the 1st section of the act of May, 1828, being manufactured ar-ticles made of iron, and therefore chargeable with a du-

titles made of ron, one increme onargeance with a larty of 25 per cent, ad valorem.

David S. Lyon, deputy collector, sworn for delendant,

—defendant offered instructions from the treasury department of March 25, 1831, given to callector. were objected to by plaintiff, as no evidence of any fact, nor any authority in law, and excluded by the court.

Mr. Lyon testified that the invoice was sent to the appraisers for examination, and they passed it as old iron.

A permit was given to land it. The permit was filled up as "a quantity ol old iron," over his signature. He wrote "serap," and endorsed on it a request that the inspector should examine it and report the kind. Mr. De amp reported it as scrap iron.

The weigh master's return distinguished that part of the importation which was new bar and bolt iron in pieces inches to 3 feet long, from the other parts.

John De Camp, sworn for defendants, is an inspector at the custom house; carried on the iron business in New Jersey upwards of 30 years. Examined the iron on board the Columbia. The iron was separated by his on board the Columbia. The iron was separated by his orders. Part was new bar or bult iron, from 5 inches to 3 feet long. The rest, old hoes, old spades, erowbars, &c. which he has always heard denominated irrap It is as good to melt as the pieces that are cut off iron. from the bars. On being asked by a juror to describe old iron, he replied that he could not.

Cross examined .- Could not say there were half a dozen pieces 3 leet long. An old anchor, or iron from a wreck, he should call sersp iron. His reason for giving it that name is, that it is as good to melt as any iron; and is so generally understood to be, and denominated, by manufacturers.

Nicholas Saltus, sworn for defendant, has been in the iron business 25 years. He considers the iron in ques-

tion scrap iron.-There are two descriptions of scrap iron; one is called cast scrap, the other wrought scrap.
The first consists of broken pieces of castings, whether old or new. The second, of pieces of metal used to make har iron, and old articles if made of wrought iron. Both would require melting to be useful. Old articles used or broken, and wreck iron, would come under the

denomination of scrap iron.

Cross examination.—Never knew of an article of commerce denominated old iron. The specimens produced in court, and now shown to witness, are all scrap iron;

and so generally known.

Wm. Van Buren, sworn for defendant, is an officer of the customs. Was the inspector of the ship, and delivered the cargo in question. Selected all that he considered as ends of new iron from 5 inches to 5 feet long. but few pieces of the latter length. There were 4 tons 6 cwt. of this description, which he did not pass as old or refuse iron, as he considered it would be applied to black-smith's use. This meluded a bar which weighed This meluded a bar which weighed a ewt. Cross examined. - I'tis bar he supposes to have been an old shalt that had been used; the remainder he con-sidered refuse iron. He never called it old iron. There are different opinions as to the name, some call it old;

some scrap. Daniel Ayres, sworn for delendant, has been sequainted with the irou business as a manufacturer, a number of years. He considers scrap iron and old iron to be synonymous terms. All old iron is considered scrap iron.

by the trade generally.

Cross examined. - Is engaged in the business as seller and manufacturer; has known the old rubbish purchased about the streets called old iron. The price of old and scrap iron is the same. He should call an old anchor seran iron.

William Kemble, sworn for defendant, has been engaged extensively for some years in the iron business. They use in their establishment but one phrase to denominate iron of the description in question, viz. scrap There is a part of their yard appropriated for the ends of bars and old machinery, and old manufactured articles, and they call it the scrap heap.

Cross examined .- The popular name for old articles is old iron. Manufacturers would call it scrap iron. Does not know the term merchants affix. In his scrap

heap the new iron predominates. The defendant here rested.

The plaintiffs called Mr. Fish again, who testified that as a merchant he had known the article of old iron by that name, ever since he had been one. In commerce this name is perfectly familiar. The term scrap iron is seldom used. Old irou is an article of very considerable commerce.

Mr. Griswohl, recalled for plaintiffs, has been a merchant in New York 36 years. Has known the article of old iron by that name ever since he has known any thing, The name is as settled and definite in commerce as that

of any other article.

John Barstow, sworn for plaintiffs. Has been a merchart about 20 years. Has always heard of old iron in worn out articles that had been manufactured for use. He was brought up in the neighborhood of a manufactor, and they called it all serap iron. Has not seen much of the old iron imported, till within the last 4 years. Merchauts call the iron that we see 1 jing about the docks, old iron.

Anson G. Phelps, sworn for plaintiffs. Has been a merchant 17 years. Has ofteen seen old iron advertised, and has dealt in it a lattle. He should call pieces of iron that had been cut off from the ends of bars, scrap iron. All second hand articles, he should call old iron. Manufacturers include both kinds under the denomina-tion of scrap. Merchants make the difference, and call the one scrap, the other old. In the manufacture of it he should say there would be more waste in the old than the new, and a corresponding difference in the value,

Samuel T, Tisdale, sworn for plaintiffs. Has known the iron trade sbout 7 years. Has frequently heard the name old nen applied to old articles in commerce. Has irequently purchased it for a factory, and the bills are always made out as old iron. Does not recollect purchasing a bill of iron, as scrap iron. Pieces of new iron, from work shops he should call scrap iron. He saw the lot on board the Columbia. It was old iron. The pieces of iron on the heap at the door of a work shop, for rail road plates, would be scrap iron.

Cross exam. Saw it in bulk, and when it was out of the ship. He had previously purchased a lot of Fah, Grinnell & Co. of about 60 tons. He bongts it as old iron. There were a few pieces of scrap with it.

Josiah L. James, sworn for the posintiffs. Has been acquainted with the iron trade for 13 years. Has heard of old iron in commerce. The name is perfectly notoof old iron in commerce. The name is perfectly into-rious; and means all re-inufactured articles that have been used and abandored. He has also heard of acrap iron in ommerce. Ends of bars, and trimmings from the workcommerce. Zone or oars, and trimmings from the workshop that are new, he should call scraps.
The parties both rested.
Mr. Hamilton, for the defendant, referred to the act

of May 22, 1824, to shew that no such article was known in the tariff as old iron, and that if it was not included in the denomination of serap iron, it must jusy ituty as a manufactured article; as the law makes no difference between an old and a new article. He also contended that the quantity of 4 tons 6 cwt. must pay a duty of 90 cents e the act of 1828, as it was new bar iron, and so estmitted to be by the plaintiffs and proved by the wit-The law made no difference between long and short bars. He also sited the 9th sec. of the act of 1850, which subjects scrap iron to a duty of 62½ cts. per 112 lbs. and contended that it was under this section that old iron was meant to be included. In support of this position, he remarked that the law intended to cover, the whole matter; that as it had described every form iron could take without mentioning ohl iron, it was ressonable to suppose that they included it under the denomination of scrap iron. He also remarked that the law was intended to encourage and support manufactures and the terms would therefore be received from them; and as they included both kinds under the one denomination of serep, congress intended to include it under the same deno congress intended to include it under the same deno-mination. He insisted that if the plaintiffs had seted in good faith in the matter, and he believed they had, they must have considered the terms s) nonymous, or they could not have taken the oath that a quantity of iron containing old iron and serap fron was old iron; and that if the jury believed the terms synonymous, the law was broad enough to cover both under the one denomination of serap. He further insisted that from the testimony of the witnesses examined before them, and particularly those best acquainted with the subject, they must be-lieve that this importation was scrap iron, and therefore the duty was properly demanded.

Mr. Lord, for the plaint ffs, contended that the words

of the act are to be taken in their popular meaning, unless they have acquired a technical meaning well settled in commerce or in art. The popular meaning of the words was very obvious. If they have acquired a necu-liar meaning in commerce, and in the arts also, then the commercial meaning must apply;—as the duties are to be paid by merchants, and the article imported by them the orders for it given by them; and they are to make the entries of the merchandise. If the set is intended to protect manufacturers, then it must be construed restrictively or strictly: as the rule is well settled that where a law is intended for a particular interest, it must receive a strict construction, since it is against common right. We must look to the context for the meaning of The act of 1830, was in relation to rail road iron: and under the denomination of scrap must be deemed to have meant to include the punchings and ands of bars, and iron of a similar description; and therefore had no

reference to old worn out stricles.

That it was in proof, that scrap iron and old iron, were both terms of commerce, and meaning different things: and if so, then, although scrap iron with the manufac-turer might include this kind, yet they were to determine which commercial or mercantile term would apply to it

His honor judge Oakley, charged the jury in subthis monor judge Coasey, conserve the part is asset stance, that the case was one of importance for the principle involved in it, and that as the article was one of considerable trade, and the government was a party, the jury would use due care in the investigation of it. It

seemed to be by the parties conceded, that by the law of 1816 the article in question would be subject to an all valorem duty of 15 per cent, unless it is a manufactured article, or unless it is considered "scrap iron" within the meaning of the law of 1830. It seems clear that it cannot come within the first description, as the law meant to include articles intended for and expable of being used as manufactured articles, and not articles worn out. That the main question was, whether the act of congress in 1830 includes this iron under the denomination of "serap iron." In construing every law, reference must be had to the subject matter it intends to control. The sariff laws are frequently called laws of protection to the manufacturer, but legally speaking, they are commercial regulations, and in judging of their meaning, we must look to the commercial sense of their language. The jury must therefore determine from the evidence before them, whether at the time of the passage of the act of 1830, the words "scrap iron" had acquired a distinct and certain meaning in trade and commerce; and whether according to such meaning, it included the article in question. If they should find that the words "scrap iron" are well and generally understool among merchants, as indicating a different kind of iron, from "old iron," and that the article in question tell within the latter denomination, then they ought to find their veriliet for the plaintiffs.

The jury found for the plaintiffs, for the amount of the excess of the duty on the quantity of old iron, sub-

ject to adjustment by D. S. Lyon, esq.

## MORE OF THE CONTROVERSY. FROM THE NASHVILLE BANNER,

After the notice of me, and the state in assault.

After the notice of me is the public.

After the notice of me is the state of the 19th of August last, taken by the these secretary of war, in his "Comidal appeal tast, taken by the these secretary of war, in his "Comidal appeal and taken propie," I deem it unnecessary to often an apology, for what I shall as yin reply to so much of said appeal as relates to

American people," I deem it unnecessary to offer an apology, for what I shall asy in reply to so much of said appeal as relates to mystelf.

what I shall asy in reply to so much of said appeal as relates to mystelf.

I shall be too record offer a continuous to the statement to mystelf the tourse of Mr. Caliboou," towards him. From the time gen. Jackson was put in nomination for the presidency, I was his warm personal and publical livend. When I went on to congress in 1877, I became acquainted with Mr. Caliboou, nod nearly and participition, and within possessing the highest order of talents—qualities well calculated to attach me to him, but what above all at that time more closely attached me to him, was the cordiat and liberal support which he and his friends are general tempt, as I belts-sed, made by Mr. Eaton and his friends to ascribes such a man, I did volunteer, to usuam, if possible, an horable man from oujust superisons. Another r ason, if an adcummanity from "volunteering" was that I believed major Eaton and his friends had attempted to deduce and naised the American people, as to the true cause of the dissulution of the late eaboust, tended for the press, and to affect other persons, and afferensate people, as to the true cause of the dissulution of the late eaboust, tended for the press, and to affect other persons, and afferensate approach is a first writing in." It is a little more strange that the not read it after writing in." It is a little more strange that the same tool been laid upon each method's tech, actually windered in, perhaps upon the suggestion of some friend, that it mase his that report to the congress of the United States and a copy of the same had been laid upon eath member's table, actually was used a document as would and ought to diggree the head of so distinguished a station as he here held, and at this line peri-d undertook with the advice and assistance of his friends, to revise, coatest and new model, the same. Major Exon states that the coasect and new model the same. Major Eason states that the corrective letter was written by me, after some of my friends at Washington had informed me that de had it in his power to correct to the property of the same property of the same property of the is patiently flate, for I between review days thether or information from Washington upon the subject before I wrote the letter ex-tension of the same property of the same property of the recting the error, which I had unintentionally node in my first, such as the same property of the same property of the unique is the subject of the same property of the major's candid appeal. I was at the post office at capt. Haynic's when the I'll rigaple containing my first letter entire to hand, and when the I'll rigaple containing my first letter entire to hand, and insjor's candid oppeas. I was no one when the Tel-1 graph containing my first letter came to hand, and was handed me by capt. Haying, (whose certificate is hretto appeared to the telephone of t solutioning i has "or a more in observation in the manufacture of either the printer or myself; and requested him, to have it corrected in the Gallatin Journal, a paper published in Gallatin, which he did, as appears from his cettileate better appended. In a day or two larget to the editor of the Telegraph the corrective letter. Thus it will be seen that I avaided myself of the first opportunity, and before I could have received the itsof the first opportunity, and before I could have received the in-formation from Washington of which the major spaks, to correct an unintentional error into which I had latten. It will also be seen that this distinguished ex-secretary takes upon thruelf to charge expressly that I had received information from Washington,

for the first opportunity and the for I could have received the intermentation from Weshingtons to which the major peaks, to correct an uninternitional error into which I had fallen. It will show been that the distinguished ex-event trut that a upon himself to chaine expressly that I had received information from Washington, see See, when distinguished ex-event truth as upon himself to chaine expressly that I had received information from Washington, and the property of the point that I was in Timesere when I hard of the death of Mr. Timberlack's death. He may have heard of it in the spring of 1887, white boarding at Mr. O'Neal's, his now-lather-in-law, as he and Mr. Timberlack's death. He may have heard of it in the spring of 1887, white boarding at Mr. O'Neal's, his now-lather-in-law, as he and Mr. Mckellin states, and it may have been from Washing tions as to Mr. Timberlack, and of which the general approved-but I well received the three the same of the same and the same present and the same and the s

encer perjudicial to the major was as-ing, as from my statement. Major Eason and his friends have labored much to show that there was a meeting of the friends of Mr. Callions, the ubject of which was to drive him from the exhaurt, and in stocking of me who distances to major encourage. Seen Decks, a way to obtain he uses the following language: "Gen. Deska also says there was no meeting at the last session of congress, with a view to obtain my removal from the enhines. It has not been so averred. He will not say though, that this was not the case at the session of 1829-30." In reply to this paragraph, I can speak with certainty, when I say that I did Not attend any meeting either at the teation

of 1829—30, or at any other session, the object of which was to obtain his removal, arithred at he here any such meeting was beeld, but of the president found to obtain his removal, arithred at he here any such meeting was beeld, but on the president found important measures through the house; this difficulty, his warm, personal and political fresch behive do noise from the want of hormony and co-uperation among the beads of departments. They believed that there was not that content in the rabine which was believed that there was not flat content in the rabine which was believed that want of content was attributable in some degree to his promotal's not Sading cabine meetings or councils as his presidence in the president's not Sading cabine meetings or councils as his presidence of a flatin was freed for his matures. This unfortunate state of a flatin was freed for his matures. This unfortunate state of a flatin was freed for his matures. This unfortunate state of a flatin was freed for his matures. This unfortunate state of a flatin was freed for his matures. This unfortunate state of a flatin was freed for his matures. This unfortunate state of a flatin was freed for his matures. This unfortunate state of a flatin was freed for his matures. This unfortunate state of a flatin was freed for his matures. This unfortunate state of a flatin was freed for his decidence of the president and of his decidence of a flatin was freed for his decidence of his mature of the president and of his patients of his decidence of his

tozatis of Mr. Calhoun.

I think what I have here stated will satisfy the community, and perhaps even major Eaton himself, that I had not fallen into such mistakes as he was willing to induce them to believe.

ROBERT DESHA.

P. S. The United States Telegraph, Gallatin Journal and other papers which have published major Eaton's "Cardid Appeal," will do me an act of justice by publishing this communication.

on me an act or justice by publishing this communication.

I certify that Robert Debna was at my bowne, (Green Gardenpost office), immediately after the United States Triegraph arrived at the office, containing a letter of his to the editor of that paper. Which letter, major Eaton has noticed in his late appeal to be the part of the paper. Which letter, major Eaton has noticed in his late appeal to Deaha he read the letter, and before he was done, remarked there was a minsake. He did upo intend it to be understood that he intended wife, Mrs. Timberlake, in Tennesser, that he bisself in the conversation he had in the city of Washington with major Eaton, that he (Eaton) land said that when he was in Tennesser and heard of the dash of Timberlake, he decremined on marrying advised bim to do so.

advised bim to do so.

I am antified that Denha had not reen the said letter published before he saw it at my bouse, and that there was not time for him to receive a latter from 'some frends in the ecity,' (as stated by major Eatou), informing him of him mistake. Detha, before he left my bouse, commenced writing a letter to the editor of the Telegraph, correcting the mistake he had made in said published letter.

JESSE HATNIE.

I elegraph, correcting the mistake he had made in said published letter. Accusted by gen. B. Ortha to after a conversation data. Being research gen. B. Ortha to after a conversation data that the said of the sa to have it corrected in the Gallatin Journal, which I dol. Gen. Desho could not have received any communication upon the sub-ject from Washington apprining him of the error prior to the above conversation as intimated by major Eaton.

J. A. BLACKNORE.

Gallutin, October 29th, 1831.

# NILES' WEEKLY REGISTER.

[Vot. XLI, WHOLE No. 1.05\$ BALTIMORE, DEC. 10, 1831. FOURTH SERIES.] No. 14-Vol. V.

THE PAST-THE PRESENT-FOR THE PUTURE.

EDITED, PRINTED AND PUBLISHED BY H. NILES, AT \$5 PER ANNUM. PATABLE IN ADVANCE.

in advance of its usual season—has interrupted travelling by water between New York and B-lumore, &c. and caused much embarrassment and difficulty in the concerns of the people generally; who had made no calculation on such a state of things.

The rule that has always prevailed in the mainagement of this work, has excluded much nistter on gemeral or miscellaneous subjects, the present week - [and must have such effect for some time to come, that in-founded upon a statement in a late London paper as to the wages and subsistence of the working classes in England, and the desire of many in the United States that the labor of our citizens should be brought into competition with that of potators as mount or corogal time compe-tation with that of potators of denglishmen. I have "hand-led the subject without gloves," and feel disposed never to put them on until the sordid and monopolizing crop of multifications teel willing that others should live as well' as themselves - and are ready to confess that others have rights as well as growers of cotton.

The president's message will be found in sub-sequent pages. It has not been our custom to make many remarks on such papers, though some parts may have invited criteism. We shall however, observe, that the document is chiefly made up of foreign affairs, and extensively partakes of an injurious error, (as we esteem at), into which many distinguished individuals of the United States have tallen—by which affairs at home are rather thrown into the back ground. Indemnity for spolations on our commerce, certainly, should be sought and obtained; and we heartily wish success in every effort respecting them:-but the manufacture of buttons, perhaps, in the United States has a greater annual value than our claims against Naples, and those of wooden clocks, mouse-traps, hob nails and fine-toothed combs, produce a larger yearly amount than will be received of

produce a larger yearsy amount than will be received or either Sweden or Deumark.

The president's message was brought to Baltimore in two hours, for the use of the editors in this city.

We have also received, with unusual promptitude, the annual report of the secretary of the treasury. It is an able and intelligent paper. It shews a great degree of financial prosperty," on account of the excessive importation of foreign goods -- which has earried so much distress into the "money market,"-and, if not speedily relieved by some lucky necurrence, will cause the loss of uncounted millions, in the diminished value of all sorts of property, and ruin thousands of worthy mea. The secretary speaks of the bank of the United States in very friendly terms, and suggests that at should be re-cleartered, with some "modifications"—which, though not mentioned, do not seem to be regarded by him as important changes in its present constitution. We shall have the pleasure to present this important exposition next week, and, perhaps, also the long, but micresting, report of the secretary of war—which waits an insertion.

The means that we have to lay important papers before our readers, shall be liberally used.

The report of the committee of the New York convention of the friends of domestic industry, on fron, is now published, and in its course of distribution. the lacts stated ito not make "some folks" feet a "little red," we have an incorrect estimate of the force of truth-or exceedingly mistake the character of persons who ought to be regarded "honorable men"-not, by any means, including the tools that have been put for- lately left New York in one day, and caused no small ward on certain occasions, with reference to this most degree of excitement among the bankers and those depen-Vos. XLI. -No. 19.

The sudden and excessive cold-some weeks important manufacture. They cannot feel "red"their nature pays up such homage to truth.

> Br FThe "Frederick Herald" has a well-prepared account of the celebration which took place in that enty last week, because of the opening of the rail road, which now links B linnore and Frederick so closely togethernow tinks to atmoore and Frederick so closely together—and this celebration was, also, a very happy linking of the hearts of the people. The editor, though mutul, could not attend—but begs leave to render his thanks for that compliment paid, as well as to express his gratitude because that he was, in the "flowing cup" kindly remembered. He will endeavor to preserve an account of this celebration.

> It won't no! One editor in the west accuses another with being in tayor of "Mr. Niles for president!" "I take this opportunity" to let Mr. Thomas Ruchie know, that I am not a candidate!

> By the bye-it has flappened just as I expected! No sooner did Mr. Ruchie understand that I had not time to discuss the tariff question with him, than he enlarged his paper!!! Here's a "crisis"-"nous versous"-and 'obsta principiis."

THE TARLEY. There are various projects and speoulations concerning a modification of the tariff. We fear that the friends of the "American system" have, in some cases, too casily fallen into the schemes of its opposents. "Caution is the parent of security." Let time be allowed for full reflection-for the subject is one of wital importaber.

We see an ilea thrown out that Mr. Clay is prep red to make a "compromise upon the tariff of 1815." We have no information on this subject other than what we see in the newspapers-but a recession to the tariff of 1816, would, indeed, "break down the iron arch;" and we venture to assert that neither Mr. Clay, nor general Jackson, nor both together, can make such a "comprom 186, 1

"FREE TRADE" FLOUR! The present British duty off American flour is 14s. 10d. or only about three stollars and saxty exents per barrel, including the rate of ex-change. This is a fine specimen of "free trade." We submit it to the "philosophers." If any there are among the growers of wheat in the United State.

A CURIOSITY. A friend has placed in my hands "The Calcutta Gazette and Daily Advertisers of 27th May,

"Mackenzie, Lyall & Co. will sell by public auction, at the Exchange Commercial sale rooms, this day, Friday, 27th May, 1831, ten bales fine American sheetings, blesched and unblesched, as fully detailed in the cala-

"PRACTICE LAUGHS AT THEORY." The New York Journal of Commerce says—three thousand bugs Brezil coffee were sold yesterday at 12½ cts. 4 mo. deliverable on the reduced duty of 1 ct. lb.

That is-the duty will be only one cent per lb., but last year, when it was five cents, the average price of coffee was only 113 cents—so a reduction of the "tax" has lacreased the price! This is sound "free trade" logic. Increased the price! This is sound "free trade" logic, though common sense rejects it—as it does the whole die-Moore's Eutopa, or Symmes' proposed journey into the hole in the earth, are not less strange than the theory of free trade"-nor less PRACTICABLE.

Specie. The exports have been excessive-\$1,200,000

dent on their accommodations. This export of \$1,200,000, | dent on their aecommodations. This export of \$1,200,000, no doubt, has caused, or will cause, an additional contraction of the currency in the sum of not less than \$0,00,000 - the effect of which on men in husiness, needs no present remark. The operation is fewful against property. Every kind of merchandise that will command eash, has rapilly, and in some cases ruinously, declined in value.

The latest accounts from England, however, hold out a hope that the demand for specie there has been checked; if so, we may expect a reprieve—for a little space: but, must be harrassed until the late heavy importations

are somehow, any how, satisfied,

CAROLINA BLANKETS, ["good!"] There has been left with us, for public inspection, a pair of blankets from the manufactory of Cul. John E. Calhoun, of Pendleton The warp is of cotton, and the filling of wool, and they are pronounced, by competent judges, to be cause, if not superior, to London Dufflis. Experience has proved them to be very ilurable. They measure eight by nine quarters, and are sold as fast as they can be manufactured, at \$5 per pair. Col. C's establishment is found to be highly beneficial to the farmers of the district, who find there a ready market for their wool, and a portion of their cotton crops. Flannels, to a considerable extent, are likewise manufactured at this estabsucrame News, are fixenes upselments of carpeting have been made there. The wool-carding part of the estab-lishment is actively engaged in preparing the wool of the neighboring counties for domestic use, which is brought, in some instances, a distance of lorty miles, for the purpose. - Charleston Courier.

(A plenty of establishments like this, would nullify nullification—"in the twinkling of a bed post," as lord Dubberly says. ]

THE PRESIDENT'S HEALTH. The Cincinnati Republican of the 17th, says—A gentleman of this city, who has for years been the friend and correspondent of the president, was induced, by the numerous reports so industriously circulated by the abonics respecting his health, to inquire, for his own personal satisfaction, directly of himself, whether there was any foundation for these reports, which gave his enemies so much consolation. We are permitted to give the following extract from the re-ply of our venerable chief magistrate:

"I feel grateful to you for your solicitude for my health, and can assure you it has not been better for many years. I had an attack of the prevailing fever of man; years, and a data of the presum greer of this place, from which I have entirely recovered. I feel more free from affliction than I have felt for ten years past. Providence has taken, and will take ear of me. Contrary to the wishes and pryers of my enemies, I will live jost so long as God wills that I should live."

Mr. Jaszens, recently appointed charge d'affairs at Central America, is said, in the Trenton True American, to have resigned his office.

VALUABLE SITE. The extensive woollen manufactory late of B. Wells & Co. at Steubenville, O. which once caused plenty, though profitable employment, to a large number of persons, but for sometime idle, has been purchased at a public sale by D. L. Collier, esq. of Steuben-ville, who will dispose of at at a price much below its real value, that the business may be resumed. There is, perhaps, no situation west of the mountains in which the persists, in state of west of the floodings in which we woollen manufactory can be carried on more alvantageously than at Steubenville—the country being fertile and healthy, the growth of wool abundant, and the population sober, discreet and industrious.

CANALS. The great New York canal was closed with ice before the 1st mat, -- but our rail road is expected to remain open the whole season!

SLAVES AND SLAVERY. A writer in the Petersburg.

(Virginia), Intelligencer, saysthe whole African race ought to be removed from amouse Many people feel unwilling to die and leave the ar posterity exposed to all the ills which, from the enistlong felt.

"Others are unwilling themselves longer to suffer these inconveniences—some of our best chizens are af-ready removing—others will doubtless follow, unless they can see a probability that, at some period, the evil-will be taken away."

The fact stated in the last paragraph has an alarming character. The unhappy truth is, that, as slaves increase and matter for apprehension is collected, the white nopulation retires and the means of defence are reducedespecially in the removal of taboring freemen-who, in almost all circumstances, have to bear the "burthen and

almost all effections once, have to bear the "buttern and the heat of the day,"]

The Bilmington N. C. Recorder of the 16th alkimogentains the following:—On Saturday last about 12 o'clock, the six slaves condemned at the last superior court, were hung, in pursuance of their sentence. We learn that two slaves charged with compiracy—to make insurrection, were tried at the last session of the superior court for the county of Sampson, and found guilty.

MASSACHUSETTS. Mr. Lincoln (nat. rep.) has been re-elected governor of this state by a large majority over both the anti-masonic and Jackson candelates.

DANIEL D. TOMPKINS. It is proposed to erect a monument in the city of New York to the memory of this distinguished man. He belonged to the country: and we regret to see that this proceeding has the appearance of being in the hands of enhemeral parts.

PENERLIVANIA. The following is given as the state of the polls to elect a member of congress in the place of Mr. Ramsey, dec. For Mr. McCoy 2459, Mr. Mahon 1951, Mr. McSherry 1154. We believe the parties are Wolf, Anti-Wolf and Anti-masonic.

A convention in this state, called to re-JELAWARE. A Convenion in this state, estient to re-vise it constitution, has just completed its labors. We have not room to give particulars now. Among the changes proposed, we observe there is one that the legis-lature shall meet biennially. The other chiefalterations, we believe, are in regulations of the judicial power, or of the judges.

CINCINNATI, Onto. Effects of the Canut. The effects of the Canut upon the country have already been sensibly felt since it has been opened to this place. It has reduced the price of salt from eighty-seven to fitty cents per bushel. It has reduced the rate of carriage on every article imported from abroad in a corresponding ratio. It has advanced the price of flour from three to four dollars per barrel, and wheat from lorty to sixty-five cents per bushel. It has raised the price of real estate and opened a ready market for it, and it has inerensed the business and bustle of the town at least fifty

TENNESSEE. We have a copy of a long report to the house of representatives of this state, against a renewal of the charter of the bank of the United States.

LOUISIANA. The legislature of Louisiana met at New Orleans, agreeably to the proclamation of the governor, on Monday the labult. The governor's message was read the same day. It explains the object of the extraordinary call, to be the passage of a law prohibiting the further introduction of slaves into the state: the appointment of a senator to congress to fill the vacancy caused by the resignation of Mr. Livingston; and the adoption of a remonstrance to be sent to congress against a repeal on the duty on sugar.

George A. Waggaman, seq. has been elected a sena-tor of the United States, on the Sd ballot, in place of Mr. Livingston, resigned, on being appointed secretary of

A little while, and it will be asked what is meant by "ebonies"? That it may be unders 'od, in reference to this work, it is proper to state, that it is a "whole swine" term, to express political opponents of gen. Jackson.

state. The choice took place on the 15th ult. there being 16 senators and 45 representatives present, of whom 32 were necessary for a choice. On the first ballot Mr. Waggman had 31, Mr. Carleton 29, and there were 2 blanks; there was therefore no election. On the second ballot, Mr. Waggaman had 31, Mr. Carleton 50 and there was I blank. The third ballot gave mer was thereupon declared to be duly elected.

Mr. Waggaman was the "national republican" canstadate-and his political opponents bear ample testimony to his private worth and fitness for the place to which to the present of the has been elected. But great indignation is expressed in the "Jackson" papers, at the conduct of several "Jackson" mea, who are named, for deserting their party on this occasion; and the "Advertiser holds the following emphatic tone:

"Do these men entertain so contemptuous an opinion of the intelligence of the people, as to suppose that they can longer endure to be the dunes and the victims of their intrigues, and esjoled by honeyed words and empty protestations? We speak the unanimous wish of an mprotestations? jured and insulted party, when we ilectare that they are disowned, disclanued, and repudated, now and forever.

There are men who will admit no other qualification for office than personal-party preferences. It what has been said of the legislature of Kentteky, and is now said of that of Lounsians, be true—taken with the resure of the late election of the member of congress from Missouri, it is manifest that many of the people believe that something beyond an adherence to names has become needful to the "general weltare."

THE LEGISLATURES of many of the states are now in session, as well as that of the United States, by which a mighty quantity of useful or important information is apreading before the people. We shall do what we can to preserve the principal things as they occur.

Both the legislatures of Georgia and of Louisisna have, at their current sessions, passed laws probabiting the introduction of slaves (brought for sale) into those states.

WHERE IS "THE WEST?" A few years since, the in-WHERE IS THE WEST! A TEW YEARS SINCE, the III-habitants of our Atlantic cities were accustomed to speak of our town, [St. Louis] as heing the remote point of civilization—the "jimping off place" in the great Val-ley of the Missassippi—beyond which no toss in his right mind, and having a clean conscience, would think of adventoring. What a transformation has been effected? Now, we begin to think of our city as soon to be the centre—perhaps the capital of the extensive Con-federacy. For hundreds of miles to "the West" of us, the land teems with inhabitants. The hand of industry is there. Comforts and luxuries abound. A vigorous communication is kept up between ourselves and "these communication is kept up occurred outseres and "needs remote parts," as we are already accustomed to call them. It is, indeed, impossible to put any limit to this apirit of adventure. Even now, the formation of a settlement at the mouth of Columbia river, is regarded as so entirely feasible, that many persons have enlisted in the enterprise. Space seems about to be annihilated by tlements .- Missouri Repub.

[The editor of the REGISTER, though not born a British subject, well remembers when "Red Stone Old Fort." in the heart of Pennsylvania, was "the west," and to have heard wonderful tales about the wolves and rattlesnakes

that abounded there!

THE CHENCKEE PHOENIX, of November 12, contains the following note from Mrs. Worcester, the wife of one

of the imprisoned missionaries:

"The subscriber acknowledges the receipt of \$40 061 cents, contributed by a lew citizens of the Cherokee Nation, for the purpose of delraying the expenses of a visit to her husband in prison. To those, and to all who have manifested kindness to her during the late scenes of affliction through which she has been called to pass, she tentlers her sincere thanks-desiring that their kindness may receive an eternal reward.

"ANN O. WORCESTER.

"New Echota, Nov. 4, 1831.

# FOREIGN NEWS.

An arrival at New York, brings Liverpool advices to the 25th October, inclusive.

ENGLAND.

The rejection of the "reform bill" in the house of lords, continued to excite the most intense interest in all parts of the kingdom. A procession of upwards of 200,000 persons had been formed in London, on the occasion of presenting petitions to the king, on the subject of the fate of the bill. The procession was headed by the lord mayor of London.

Notingham easile, the property of the duke of New Castle, and Colwich Hall, the seat of John Musters, esq. were set on fire, by mobs-the former was entirely consumed, but the latter was extinguished without materisl injury. The rioters at Nottingham, consisted of between 3 and 4,000, and were dispersed by the 15th Hussars, but not until they had violated several houses, and made an attack upon the house of correction. house of the duke of Wellington had also been injured. Ministers were publicly charged in parliament with conniving at these outrages, but indignantly repelled the charge.

In addition to those mentioned, there had been great riots at Derby, Shorborne, and other places-several of the nobility hardly escaped the indignation of the mobs, on tire. At Carlisle, the bishop of the diocese was burnt in effigy-the figure dressed in tull canonicals and labelled "plunderer of the people." The 365 windows in each Digby's castle, hall all been destroyed. But the resolution of the king and his ministers to persevere in the project of reform, had had great effect in quicting the

people.

In some of the doings of the mobs, the marquis of Londonderry had been severely hurt, and certain of the bishops were roughly handled-the latter appear to have lost the respect of the people. It was made known that the bishop would preach in a certain church in London, and resolved by the parishioners to leave the church in a hody, the moment he rose in the pulpits and so his 'localship' retired from his design to attend. Earl Grey, lord Brougham, and the reformers generally, are earnestly greeted by the people; and the king is a great favorite with them.

Mr. O'Connell has received a "silk gown." Several of the anti-reform peers, had lately made large investments in American funds.

Mr. Van Buren dined with the king, on the 15th October.

The continent had made large demands on England for hullion and coin—and hence, in part, the heavy drafts from the United States. But a re-action is said to have taken place in favor of England, and bullion was returning. Some heavy failures had taken place in London.

Parliament was prorogued on the 20th October. Earl Grey, in reply to an address to him on the subject of reform, stated that all the ministerial measures would be taken with a view to the most effectual means of insuring success to the bill, and the same sentiment is iterated in the speech of the king proroguing parliament. Many of the higher classes in England, were about to make a temporary change of their residence.

British king's speech on proroguing parliament. "My lords and gentlemen-

41 am at length enabled to put an end to a session of

nnexampled duration and labor, in which matters of the deepest interest have been brought under your consider-

"I have felt sincere satisfaction in confirming, by my royal assent, bills for the amendment of the game laws, and for the reduction of taxes which pressed heavily on the industry of my people, and I have observed with no less pleasure the commencement of important improvements in the law of bankruptcy, from which the most beneficial effects may be expected,

"I continue to receive the most gratifying proofs of the friendly disposition of foreign powers.

"The conference assembled in London has at length.

terminated its difficult and laborious discussions by an

arrangement agreed upon by the plenipotentiaries of arrangement agreed upon by the premipers and Belgi-the five powers for the separation of the states of Belgi-um and Holland, on terms by which the interest of both, together with the future security of other countries, have been carefully provided for. A treaty founded on this arrangement has been presented to the Dutch and Belgian plenipotentiaries, and I trust that its acceptance by an prempotentaries, and I trust that its acceptance by their respective courts, which I anxiously expect, wilt avert the dangers by which the peace of Europe was threatened whilst the pression remained unsettled. "Gentlemen of the house of commons:

"I thank you for the provisions made for the future dignity and comfort of my royal consort, in the event of her surviving me, and for the supplies which you have grant-ed for the present year. You may be assured of my anxious eare to have them administered with the struct-

est attention to a well considered economy.

"The state of Europe has produced the necessity of an increased expenditure in the various establishments of the public service, which it will be my earnest desire to reduce whenever it can be done with salety to the inter-

est of the country.
"In the meantime I have the satisfaction of reflecting that these demands have been provided for without any

material addition to the public burdens.

If the interval of repose which may now be afforded you, I am sure it is unnecessary for me to recommend to you the most exceful attention to the preservation of tranquility in your respective counties. The anxiety which has been so generally manifested by my people for the accomplishment of a constitutional reform in the for the accomposament of a constitutional reform in the commons house of parliament, will, frus, be regulated by a due sense of the necessity of order and moderation in their proceedings. To the consideration of this im-portant question, the attention of perliament must, neecessarily, again be called at the opening of the ensuing session; and you may be assured of my unaltered lesire to promote its settlement by such improvements in the representation as may be found necessary for securing to my people the full enjoyment of their rights, which, in combination with those of the other orders of the state, are essential to the support of our free constitution."

The lord chancellor then, by command of his majesty, prorogaed the parliament to Tuesday the 22d of Novembember, to be then held for the despatch of business.

PRANCE.

The hereilitary peering bill, had passed in a form which met the wishes of the ministers, who, in various instances, triumphed over the liberals, in the progress of the bill—the bill passed by a majority of 346.

of the out—the out passed by a majority of 546.
The revenue for the last three months, prior to the 16th Oct, exhibits an augmentation of 1,835,000 frames—1,800 seamen, belonging to the Toulon fleet, were about to be discharged, and 1,600 had been furloughed. The assassin who attempted to stab the captain of the French corvette, the Eagle, at Lisbon, had been punished. The affairs with Don Miguel were still unsettled.

RUSSIA AND POLAND. Several Polish officers had reached Paris. They complain most bitterly of being the victims of intrigue and reachery. Krukowiecki, who was the last commander (dictator) in Warsaw, is charged with having acted the part of a traitor, in the surremier of that place. Prince Czartoryski, general Skrzynecki and count Malachowski Czarcovas in the Austrian territories. Gen Chlopicki, whose wounds were not healed, still remained at Cracow. Joseph Ullerman, a citizen of Warsaw, had been shot for having ammunition in his house. Field been shot for many automatical marshal Debitsch was buried with great ecremony at St. Petersburgh, on the 27th September. The cholera was increasing at St. Petersburgh, and lind broken out at Hamburg; and the Liverpool Times, says, that there is now only too much reason to lear that it will reach England in a few weeks.

BELGIUM AND HOLLAND.

The ministers of the five powers, have agreed upon a The ministers of the me powers made agreed upon a treaty, setting the affairs between these powers, which is said to be highly distatisfactory to the Dutch govern-ment—Belgium was going on with her military preparations, to be in readiness to repel invasion.

ALGIERS.

The Beilouins had beseiged and occupied Bons. The besieging army was commanded by Hailgi Bensamour, formerly a merchant of Bona, and was paid by the bey of Constantia. The Bedonins had desolated the town with fire and sword. It is thought that one battalion of the French army might have prevented this catastrophe, while it will occasion the sacrifice of a regiment to reeapture it.

# TWENTY-SECOND CONGRESS-1st SESSION.

SENATE.

December 5. Mr. Smith, of Mil. president pro ter. of the schate, in the absence of the vice president, too the chair at 12 o'clock; and on calling the senate to the chair it is uppeared that all were present except, Mr. Bebster, of Mans. Mr. Freinighuysen, of N. J. Mr. Bebster, of Mans. Mr. Freinighuysen, of N. J. Mr. Bernard, of Penn. Mr. Clayson of Del. Mr. Chambers, of Md. Mr. Taxweetl, of Va. Mr. Brown, of N. G. Wasser. Twop and Forsyth, of Geo. Mr. Bibb, of Ky. Messra. Twop and Forsyth, of Geo. Mr. Bibb, of Ky. Mr. Haggaman, ot Lon. Mr. Eltis, of Mississippi, and Messis. Benton and Buckner, of Missouri.

The following is the list of senators: Maine.

Maine. Julin Hotties, reing opingur. New Hampshire. Samuel Bell, Isaae Hill. Musuachusetts. Daniel Webeter, Nathaniel Slabee. Rhoile Island. Nehemiah R. Knight, Asher Robbins. Connecticut. Samuel A. Foot, Gideon Tomfinson. Vermont. Horatio Seymour, Samuel Prentiss. Verw Fork. Charles E. Dudley, William Marcy. New York. Charles E. Dudley, William Marcy. New Jercy. Mahlen Dickerson, I heo. Frelinghuysen. Pennsylvania. Issae D. Barnard, William Wilkins. Pennsylvania. Issae D. Barnard, William Wilkins, Pelaware. John M. Clayton, Arnold Naudain. Manyland. E. F. Chamberrs, Sanuel Smith. Frigitia. Littleton W. Tazewell, John Tyler. Nor's Accretiona. B. diord Brown, Willie P. Mangarn. South Carolina. B. diord Brown, Willie P. Mangarn. South Carolina. B. thory Hayne, Stephen D. Miller. George M. Trony, John Forsyth. Kenincky. George M. Bubl, Henry Clay. Tennessee. Felo Giundy, Hugh L. White. Olito. Benjomin Ruggles, Thomas Ewing. Louistana. Josish S. Johnston, Geo. A. Weggaman. Indiana. Win. Hendricky, Robert Hanns. Mississhyla. Poolstana Ellis, George Posulexter.

Wm. Hendrikes, Modert Ziahum. 1/44. Powhatan Ellis, George Poindexter. Elias K. Kane, John M. Robinson. a. William R. King, Gabra I Moore. Mississiffi. Illingis. Alabama. William R. King, Gabral Moore.

Musouri. Thomas B. Benton, Alexander Buckner.

Missouri. Thomas II. Benton, Alexander Buckner. The credentials of Mears. Prentise, of Vt. Hauna.\* of Indiana. Mangam, of N. C. Mitter, of S. C. Moore, in Alab. Clay, of Ky., tenators from their respective states, were severally presented. Mears. Marcy, of New York, and Johnston, of Lausiana, senstors cleer, but whose credentials had not strived, were permitted to take their seats—it being understood that their credentials are to he filed. The above a permit grant grant of the contraction of the contra dentials are to be filed. The above named gentlemen were then sworn in.

The house of representatives were notified by mes sage, that the senate were ready to proceed to business, and a similar message was received from the house of representatives, as also a resolution appointing a committee to wait on the president to inform him that both houses had organized. The senate concurred therein, houses had organized. The senate concurred therein, and appointed Mesars. King and Foot the committee on

the part of the senate.

The senate then adjourned.

December 6. Mr. King from the joint committee appointed to wait on the president, reported that they had performed that duty, and had received an intimation that the president would make a communication this day at 12 o'clock.

Mr. Donelson, the president's private recretary, handed in the following message, and certain accompanying

documents

[\$\int For the message see page 276.]
The message being read, 3,000 copies of the message and 1,500 copies of the documents, were ordered to be printed.

Mr. Aing moved that the 34th rule of the senate be sn far suspended as to authorise the senate, in the absence of the vice president, to appoint by ballot a chair-

<sup>\*</sup>Appointed by the governor, for the time being.

man of the committee of finance; which motion being agreed to.

I'he senate proceeded to ballot for a chairman of that committee, and Mr. Smith, of Maryland, was chosen. The following standing committees were then announceed from the chair:

On foreign relations. Messrs. Tazewell, White, King, Forsyth and Bell On finance. Messrs. Smith, Tyler, Marcy, Silsbee

and Johnston. On commerce. Messrs. Forsyth, Dudley, Salsbee Johns'on and Wilkins.

On manufactures. Messrs. Dickerson, Clay, Knight, Maller and Seymour.

On agriculture. Messrs. Seymour, Brown, Moore, Hanna and Waggaman. On military offairs. Messrs. Benton, Bernard, Troup

Clay and Kane On the militia. Messrs. Barnard, Frelinghuysen, Clayton, Prent sa and Waggaman.

On naval affairs. Messrs. Hayne, Tazewell, Robbins, Webster and Bibb.

On public lands. Messes, King, Ellis, Holmes, Robinson and Hanna.

On private land claims. Messrs. Kane, Naudain, Prentiss, Ruggles and Hendricks. On Indian affines Meter, Benton and Wilkins. Messrs. White, Troup, Pointlex-

On claims Messes Ruggles, Bell, Naudain, Brown

and Moore. On the judiciary. Messr Messrs, Marcy, Hayne, Webster,

On the post office and post roads. Messrs. Grundy, Ellis, Hill, Ewing and Tonninson.

On roads and canats. Messrs. Hendricks, Poindex-

Hill, Mangum and Sprague. On pensions. Mesers. Foot, Chambers, Mangum,

Buckner and Sprague. On the District of Columbia. Messra. Chambers, Tyler, Holmes, Clayton and Miller.

On the contingent fund. Mesers, Knight, Duilley and Tomlinson.

On engrossed bills. Messrs. Robinson, Ewing and Buckner.

The senate then adjourned.

December 7. Mr. Chumbers, ol Maryland, appeared, was qualified, and took his seat.

The president of the senate communicated the secretary of the treasury's report, the reading of which was dispensed with, and 1500 additional copies ordered to be printed-also the annual report of the secretary of

e senate, of the contingent expenses of his office.

Mr. Dudley, presented the memorial of Edward Fanning and Benjamin Pendleton, of New York, praying compensation for losses sustained by the fadure of the late contemplated exploring expedition to the south seas -referre !

Preserve I. Mr. Sprague submitted the following resolution: Mr. Sprague submitted the following resolution: the served. That the president of the United States be requested flexible. The served in the comparishes with the public interest, all site of the served in the served states of the served shows the served states of the served states of

Mr. Holmes submitted the fullowing:

Resolved, That the president be requested to inform the sense bether any further negociation is commenced, proposed, or in-aded, in regard to the north eastern boundary of the United

These resolutions lie upon the table until to-morrow.

On motion of Mr. King, it was
On motion of Mr. King, it was
Resolved, That the scerciary of the senate cause to be distributed to the senators, not heretofore supplied, one copy each of Jestes
on's Manual and the Executive Journal.

Mr. Hayne gave notice that he would, to morrow, ask leave to introduce a bill to provide for the settlement of the claims of the state of South Carolina, for advances made to the United States during the last war.

Mr. Foot gave notice that he would, to-morrow, ask leave to introduce a bill supplemental to the set for the relief of certain surviving officers and soldiers of the revolution

After a short time spent in the consideration of excontive business

The senate adjourned to 12 o'clock to-morrow.

December 8. The chair communicated several letter and reports

Messrs. Foot and Hanne, having obtained leave yester-

day, introduced the bills mentioned.

Several petitions were presented, and referred. The resolution subministed vesterday by Mr. Sprague

was agreed to-and that by Mr. Holmes taken up.
Mr. Poindexter thought the general message of the president fully treated the subject. Mr. Holmes believed that it did not. Mr. Hayne was in lavor of motions of inquiry, but thought the resolution premature. Mr. Holmes replied, but consented that the resolution should. be on the table till next week. It was laid on the table. Mr. Hanna submitted the following resolution which

lies upon the table: Resolved, That the committee on indian affairs be instructed to equire into the expediency of an appropriation to extenguish the

midian title in Indiana. Two messages, of a confidential nature, having been received from the president of the United States,

On motion of Mr. White, The senate went into the consideration of executive business; and, after sitting with closed doors for a short-

Then adjourned over to Monday next, at 12 o'clock.

HOUSE OF REPRESENTATIVES.

Monday, Dec. 5. The hour of 12 having arrived, the house was called to order by the clerk, when it appeared that all the members elect, were present, except the following gentlemen, Mr. Burges, of Rhode Island, Mr. Stephens, of Ps., Mr. Coke, ot Va., Mr. McKay, of N. C., and Mr. Lewis, of Alabama; but there are seven vacancies as stated below.

List of members of the house of representatives. From Maine.

John Anderson Leonard Jarvis Edward Kavanagh James Bates George Evans Rufus McIntyre Cornelius Holland

New Humpshire, Henry Hubbaril John Brodhead Thomas Chandler Joseph M. Harnen Joseph Hammons John W. Weeks Massachusetts.

John Quincy Adams John Davis Nathan Appleton Isaac G. Bates Edward Everett George Grennell, jr. George N. Briggs Joseph G. Kendall Rafus Choste John Reed

Henry A. S. Dearborn (Two vacancies.) Rhode Island. Tristam Burges Dutce J. Pearce

Connecticut. Noves Barber Ralph I. Ingersoll William L. Storrs William W. Ellsworth Jabez W. Huntington Ebenezer Young

Vermont. William Shade. William Calicon Horace Everett (One vacancy.) Jonathan Hunt

New York. William G. Angell Garret Y. Lonsing Galeon II. Burstow. James Lent Joseph Bouck Job Pierson William Babeocle Nathaniel Pitcher John T. Bergen John C. Broadhead Edmund H. Pendleton Edward C. Reed Samuel Beardsley Erastus Root John A. Collier Nathan Soule John W. Taylor Bates Cook C. C. Cambreleng John Dickson Phineus L. Tracy Gulian C. Verplanck Charles Dayar Frederick Whittlesey Ulysses F. Doubleday Samuel J. Wilkin William Hogan Michael Hoffman Grattan H. Wheeler

John King Daniel Wardwell New Jersey. Lewis Condict Thomas H. Hughes James F. Randolph . Silas Condict Richard M. Cooper Isaac Southard

Freeborn C. Jewett

Campbell P. White

Aaron Ward

Robert Allison John Banks George Burd John C. Bueher Thomas II. Crawford Richard Coulter Harmar Denny Lewis Dewart Joshua Evans James Ford John Gilmore William Heister

Pennsylvania. Peter Ihrie, jr. Adam King Henry King Joel K. Mann Robert McCny Henry A. Muhlenburg T. M. McKennan David Potts, jr. Andrew Stewart Samuel A. Smith Philamler Stephens Joel II. Sutherland John G. Watmough

> John S. Spence Francis Thomas

George C. Washington

J. T. H. Worthington

William S Archer William Armstrong

Lewis Maxwell Charles F. Mercer William McCoy

Thomas Newton

John M. Patton

Amirew Stevenson

Ahraham Rencher

Aug. H. Shepperd

Jesse Speight Lewis Williams

(One vacancy.)

J. R. Griffin

South Carolina.

Georgia.

Kentucky.

Tenurasse. Jacob C. Isacks

Louisiana.

William B. Shepard

Thomas R. Mitchell

William T. Nuckolla

George McDuffie

Richard H. Wible James M. Wayne

Jusciph Lecompie

Chittenden Lyon Robert P. Letcher Thomas A Marshall

Christopher Tompkins Charles A. Wickielle

Humphrey H. Leavitt William Russel

William Stauberry

John Thomson Joseph Vance Samuel F. Vinton

Elmia Wittlesey

(One vacancy.)

Cave Johnson

James K. Polk

James Standder

John J. Roane

Peter Johnston John Y. Mason

Delaware. Maryland.

John J. Milligan. Benjamin C. Howard Daniel Jenifer

Hary flora

John L. Kerr George E. Mitchell Benedict I. Semmes

l'irginia. Mark Alexander Robert Allen John S. Barbour Thomas T. Boublin Nathaniel H. Claiborne Robert Craig Joseph W. Chinn Richard Coke, jr. Thomas Davenp rt Philip Doddridge W.liam F. Gordon North Carolina.

Daniel L. Barringer Lauchlin Bethune John Branch Samuel P. Carson Samuel P. Carson Henry W. Connor Thomas H. Hall James J. McKey

Robert W. Barnwell Journ Blair Warren R. Davis William Drayton John M. Felder

Thumas F. Foster Henry G. Lamar Daniel Newnan Wiley Thompson

John Adair Chilton Allan Henry Damel Nathan Guither Albert G. Hawes R. M. Johnson

Thomas D. Arnold John Bell John Blair William Fitzgerald William Hall

Joseph H. Crane Emilieros Cooke William Creighton, jr. Thomas Corem James Findlay William W. Irwin William Kennon

H A. Bullard Phileman Thomas

Rathff Boon John Carr

Ludonna

Edward D. White. Jougthan McCarty

Mississippi.

Franklin E. Plummer

Joseph Duncan

Clement C. Clay Dixon H Lewis

William B. Ashley

Michigun. . Irkansus. Florida.

Alabama. Samuel W. Mardiz

Missouri

Illinois.

DELEGATES. Austin E. Wing Ambrose H. Sevier Joseph M. White

The house then proceeded to the election of a speaker.

The house then proceeded to the election of a speaker. The result of the first ballot was amounteed to be—For. Indices Stevenson, of Virginia, 98: For Jeel B. Sutherthand, of Penn., 54: For C. A. Bucktiffe, of Kentucky, 15: For Jahn W. Taglor, of New York, 18: For Jahn W. Taglor, of New York, 18: For Lewis Conduct, of New Jersey, 4: Scattering 6.

The whole number of votes given being 195, Andrew Stevenson, of Virginia, having received 93

votes, (the exact number necessary for a choice,) was presentatives: whereupon, being conducted to the chair by Thomas Newton, of Virginia, the speaker addressed the house as follows:

Gentlemen: In accepting, a third time, this exalted station, I cannot adequately express the deep sense I entertain of the honor you have been pleased again to conler upon me, or my warm feelings of gratitude, for this distinguished proof of your continued confidence, and

unchanging kinduess.

It is an honor, too, gentlemen, which has been conferred in a manner, and under circumstances peculiarly calculated to gratily and flatter me; and I shall ever chershit as the most valuable reward for my past services. The office of speaker of this house last, at no period in our lostory, been without its embarrassments and trials; and it in times of protound tranquillity and repose, its fluties have justly been regarded by the most eminent of the distinguished individuals who have filled the chair, as ardnous and responsible, how greatly must its labors and responsibilities be enhanced in times of high political and party divisions!

I certainly an not vain enough to suppose that it will be in my power to discharge the duties of this high offee in a manner suitable to its dignity and importance, or as I should myself wish, indeed there is no man, I am very confident, be he whom he may, who could at such a time assume its responsibilities without distructing greatly his own shillities. I shall not, however despair. Actuated by an honest and manly zeal, I shall endeavor at least to justify the choice of my friends, and merit the confidence and respect of the house.

Whoever shall fill this chair, to his own honor or the advantage of the nation, must possess uet only this confidence of the house, but the esteem and respect of the honorable and high minded men, over whom he presides. Neither station or power can course esteem or respect. They can only be acquired by integrity, impartiality, and independence here. These slone can shed honor or lustre on this atation, and make it, both as at regards the hone smill the nation what it should be.

I unleignedly assure you, gentlemen, that I shall need and expect your cordial and kind co-operation, in preserving order and dignity in our deliberations, and sustaining the authority of the chair; and I carnestly hope so to discharge its duties as to insure to its decisions not

so to inscringe as utures as to insure to its decisions not merely a reluctant support, but a steady and cheerful acquiescence in their justice and propriety. I tender you, gentlemen, my cordial co-operation in the discharge of your high duries, and ardently pray that we may, by our conduct and deliberations, render this house worthy of the high name and character of our beloved country.

The oath required by law was administered to the speaker by Mr. Newton, of Va. and the same oath (or affirmation), was thereupon administered to all the other members present.

The usual messages having passed between the house and the senste, a committee was appointed to wait on the president and inform him that congress was orga-nized.

On motion of Mr. Speight it was Resolved, unanimously, That M. S. Ciair Clark, elerk to the laste house of representatives, be appointed elerk to this house. On motion of Mr. Taylor, it was Resolved, That the rules and orders established by the latehouse of representatives be deemed and taken to be the rules and orders of proceeding to be observed in this house, until a revision or alteration shall have taken phee.

On motion of Mr. Johnson, on coheren of this house to be readed, and the shall have taken phee.

On motion of Mr. Johnson, on coheren of this house to be readed, and the present senson, with such newspapers as they may direct, the expense whreed, for each member, not to exceed the price of three daily papers.

And then the house aljourned. And then the house adjourned.

Tuesday, Dec. 6. On motion of Mr. Taylor, it was resolved to appoint two chaplains of different denominations, one by each house, to serve during the present resaion, who shall interchange weekly.

Mr. Ward, from the joint committee appointed yes-

terday to wait on the president, made a report.

I namediately after which, a communication was receiv-

ed from the president, in writing, by Mr. Donelson his private secretary, which being read,
On motion of Mr. Johnson, of Ky. 10,000 copies

thereof were ordered to be printed,

And then the house adjourned.

Wednesday, Dec. 7 Richard Coke, Jr. of Va. appeared and took his seat.

A message was received from the president of the United States, by Mr. Donelson, his private sceretary, transmitting two letters from the secretary of state, accompanied by statements from that department, showing the progress which has been made in taking the fifth cena printed copy of the revision of the statements hereto. fore submitted to congress, &c. From these the following is extracted:-

RECAPITULATION,

Exhibiting the general aggregate amount of each description of persons in the United States, by classes.

Fr	e white	e person	ns.
Males-under 5 y	ears o	f age,	972,194
of 5 and	under	10,	782,637
of 10	16	15.	671,688
of 15		20,	575,614
ol 2.J		30.	953,902
of 30	4.6	40,	592 596
ol 40	**	50,	369,370
of 50	**	60,	230,500
et 60	44	70.	134 910
of 70	66	80,	58,136
ol 80	66	90,	15,945
of 90	41	100,	1,993
of 100 and	upwar	its,	2745,358,759
Females-under 5 ye	ears of	age,	920,104
of 5 and			751,649
of to	16	15,	639,063
ot 15	+6	20,	597,713
of 20	**	30,	915,662
ol 30	16	40,	555,565
ot 40	44	50,	355,425
of SO	68	GU,	221,928
of 60	46	70,	130,866
ut 70	86	80,	58,034
of 80	-0.0	90,	17,272
ol 90	**	100,	2,484
of t00 and	aliwa	rds,	234-5,167,299
Total no		of free	whites, 10,526,058
Males-under 10 4			353,845
of 10 and t	undan o	4	313,676
of 24		6.	185,654
of 36		5.	118,996
of 55 4			41,456
of 100 and			718-1,014,345
Pemales-under 10 y	ears of	age.	347,566
of 10 and	under S	24	308,793
	t det	36.	186,082
of 36		55.	111,753
of 55		00,	41,498
01 33		,	490 300 004

of 100 and upwards,

Total number of slaves,

668- 996,284

		Free co	fored pera	9118.	
Males-u	nder 1	0 year	s of age,	48,737	
o	10 a	nd und	er 24,	43,126	
.0	94		36, .	27,629	
O	36	14	55.	22,262	
0	65	- 40	100.	11,475	
0	f 100 s	nd un	wards.	266-	153,495
Females -				47.847	,
		nd und		48,125	
	24	**	36.	32,504	
0	56	4.6	66.	24,266	
0	66		100,	13,369	
0	100 a	nd ap		361-	165,962
Total and	m ban c	4 4	anland no		910 A67

Total number of free colored persons, 319,467

Total aggregate of the U. S. 12,856,154

The report of the secretary of the treasury, was laid before the house, and ten thousand copies ordered to be printed

The house then proceeded to the election of its officers-when John O. Dunn, was, on a second bullet, re-elected sergeant at arms-and Overton Carr, was, on elected sergeant at arms—and Overton Carr, was, other first ballot, elected door keep-, (the old door keep- er capt. Benjamin Burch, being unable from initisposition to attend to its daties). The house then proceeded to ballot lor an assistantant door keeper, but no choice being had, the house adjourned.

Thursday, Dec. 8. Dixon H. Lewis, of Alabama, and Austin E. Wing, delegate from Michigan, appeared this day, and took their seats.

On motion of Mr. Taylor, an order was passed for the appointment of the several standing committees, pursusant to the rules and orders of the house. The names of the gentlemen who will compose the committees will be announced on Tuesday next.

After some minor business, the ballotings for an as-After some innor business, the ballotings for an assistant door-keeper took place. On the 4th ballot, John W. Hunter, of Georgin, had 104 votes, (elected), Moses Poor 63, and some others a few. There were eleven in nomination.

The speaker I id before the house sundry communi-

I. A letter from the treasurer, accompanied by the annual statement of his accounts. Laid on the table. 11. A letter from the first comptroller of the treasury, accompanying lists of balances due more than three years on the books of the register and second auditor of the

treasury. Laid on the table. III. A letter from the commissioners of the navy pension and mavy hospital funds, transmitting their annual report for the year 1831. Laid on the table and ordered to be printed.

On motion of Mr. Ellsworth, it was On motion or sire, Littwertin, it was Resolved, That the circle of the house be directed to purchase thirty copies of Gordon's digest of the laws of the United States, for the use of the members of this house. And the house adjourned until Monday next.

THE MESSAGE AND PRINTER TO CONGRESS. From the U. S. Telegraph.

We submit the following correspondence, as our justification for the delay in delivering to the two houses of congress the usual number of copies of the message and accompanying documents. own comments

Mr. Donelson's compliments to gen. Green, and into him and to the other proprietors of papers in this exty, impressions of the message in time for it to be set up the evening before its delivery, under a pledge that it is not to go out of their offices until the hour appointed for its delivery to congress.

December 3, 1831.

Mr. Green acknowledges the receipt of maj. Donel-son's note of this date, informing him that "Mr. Blair will be instructed to furnish to him and to the other proprietors of papers in this city, impressions of the message in time for it to be set up the evening before 2,010,629 its delivery;" and informs Mr. D. that his application

was made as printer to congress, and not as a "proprie-tor;" and asks to remind maj. D, that unless the mes-sage is lurnished at an earlier date, it will be impossible to lurnish the two houses of congress with the usual number of copies as soon as it has been heretofore done.

Wushington, 3d Dec. 1831.

December 3, 1831.

SIR: I have submitted your second application for a copy of the message to the president, who instructs me to in reply to it, that he does not consider you, as printer to congress, entitled to the message, as a public document, until it becomes such by being delivered to that body.

As editor and proprietor of a newspaper, you are placed on the same footing with others in the city, by the instructions which have been given to Mr. Blair, and which you have quoted in your note. Respectfully yours, &c. AND. J. DONELSON. yours, &c.

Gen. Duff Green.

# JACKSON AND CALHOUN IN GEORGIA.

The following are the preamble and resolutions, respecting the two distinguished individuals above named. as they massed the senate of Georgia, on the 24th inst. Yeas, 65-Nays, 00. It is said to be probable they will

go through the house, with nearly the same unaumity. Whereas, the re-cleetion of Andrew Jackson to the presidency of the United States, for the next term, is of vital importance to the best interests of the people, as such an event will tend to perpetuate the happiness and prosperity of our beloved country, preserving unimpaired the "k ileral constitution"—for the following reasons:

1st. Because he is a decided and firm friend to the continuates of the federal union of these states: "It

2d. Because of the strong determination which he has expressed, on several occasions, to have the national debt extinguished, that the burthers upon the agricul-(qual interest of the south, and the commercial interests of the whole country, may be removed—authologing the hope, that under his second administration, the three great interests of agriculture, commerce, and manufactures, may be placed upon a common footing of equal protection and equal freedom, whereby the constitution will be restored, and the south relieved from the minstice of the present system, of drawing tribute from the many for the benefit of the few.

3d. Because, since he has been president, he has done

all in his power to ensure to Georgia the territory now in the possession of the Cherokee Indiana judging theretore by the past, we may confidently rely for the future. on his exercising all his influence, to enforce our just rights, and thereby realize to the state the nossession of those lands, and her enizens the enjoyment of them.

Because, by putting his veto to the Mai iville road bill, he has arrested the system of internal improvethent which proposed to establish a variation of another to mantain the teriff system, by creating a perpetual drain from the lederal treasury—to perpetuale an ex-travagant and oppressive taxation, by a profligate expendature of the public revenue.

the it resolved by the senate and house of representa-tives of the state of Georgia in general assembly met, and it is hereby resolved by the authority of the same, That the people of this state look forward with deep solicatude to the re-election of Andrew Jackson to the presidency of the United States, at the ensuing election, and do hereby niedge themselves to support him for that high offices They do not heattate to declare it as their opinion, that he is the most fit and proper person to be supported, and, do in the most earnest terms, recommend hon to the people of our sister states, at the approaching election.

Many of the public presses throughout the United States, opposed to the administration of president Jackson, have labored to induce a belief that a portion of the people of Georgia are willing to make common cause with the vice president, and thereby contribute to the iteleat of gen. Jackson. Recent events in this state have been haded, in some of our sister states, as proof of the trumph here of John C Calhous and his principles over the president, his triends and his principles. The great

body of the people of this state have no feeling in common with the pretensions, or with many of the principles of Mr. Calhoun-and especially those contained in his late address to the people of the United States on the subject of nullification. They are unequivocally opposed to the claims which his friends have set up for him to the presidency, arrayed as they are against the rightful claims of gen. Jackson. No man can be the friend of Jackson who directly or indirectly gives aid or counte-usnee to the most industrious, the most bitter, and the most talented of his opposers.

Therefore, be it resolved by both branches of the le-gislature, That they do not favor the pretensions of Mr. Calhoun, either to the presidency or the vice presidency of the United States, and that his excellency the governor be, and he is hereby, respectfully requested to furnish our representatives in congress with copies of these re-

solutions.

# SOUTH CAROLINA AND GEN. JACKSON.

Whilst the state of Georgia is unanimously resolving to support general Jackson, because he is supposed to be hostile to the doctrines of Mr. Carnous and his friends, we learn by the following account of proceedings of the legislators of South Carolina, that they are disposed for that very reason to discard him!
From the Southern Times of Nov. 30.

The scene opened last night. A notice was yesterday put up in the state house, summoning a meeting of those friendly to the re-election of general Jackson, in the senate chamber last night. At 6 o'clock, a meeting accordingly took place, and a very general attendance of the members of both houses. Judge Huger was called the members of both houses. Judge Huger was called to the chair, and Mr. Pettigru introduced a string of resolutions approving the administration of gen. Jack son, and nominating him for re-election. The hon. Henry Dess made a motion, as a substitute for Mr. Pettigru's, to the effect that it was inexpedient now to set upon the subject. A warm and general discussion ensured, in which judge Smith, Messys. Harrison, Speer, Levy, and T. Williams took part on one side, and Messra. Deas, Preston, Butler, Dunkin, and Wardlaw, on the other.

At length a motion was made for adjournment, accomnanied with a request for the members present in favor of the immediate nomination of gen. Jackson to remain.
The motion was carried, and an instantaneous call was made for a meeting of those opposed to the immediate nomination in the representative hall. The question of nomination was then put in the senate chamber, and carried by a vote of 58. In the representative chamber, the hon. It. Deas was called to the char, and it was as-certained upon a call of the colls, that there were pre-sent 86 members. The fullowing resolution was then sent 86 members. The following resolution was introduced by Col. Preston, and carried nem. con:

introduced by Co. I reading and carried near. Con:
"Resolved, That the state of Carolina, being engaged in a contest for great constitutional rights and interests of puramonat importance, it is inexpedient at,
this time to involve her in the struggles of the preadlestical election, or to pledge her to any particular candi-

date." There were 23 members absent from both meetings. If all had been present the vote would have been in about the same proportion. Measures were taken to obtain the opinions of those absent, and they will herealter be given.

We have only time to say, that col. Preston's resolu-tion speaks the sentiments of South Carolina. Let gen. Jackson and the national republican monopolists and consolidationists look at it.

#### PRESENTATION OF SWORDS,

PRESENTATION OF SWORDS.

On the 19th thit, in the cousel chamber, governmented the result of appeals, and a respectable number of eithers and transpression of the result of appeals, and a respectable number of eithers and arranger among the latter were commoder Ensimbridge, capital Balack, and

among the latter were commons as a common that the following is the address of the governor on the occasion, and the replies of the respective greatemen thereto.

\*\*Address of the governor.\*\*

\*\*Gentlemen:—In every age and in every country it has been customary to pay some public arbitute of respect to distinguished merit. The propriety of this custom established in the early ages of

the world, is confirmed by its continuance at the present day, when civilization has become extended over so large a portion of our globe, and the inventions of human genius base a rivered at such a point of perfection that we are at a loss to conceive how they can switch the long established custom, has from time to time, relected from amongst her citizens, those who have significant themselves by devation to the public good, bestowing upon them some visible riggs of her approbalion. It is upon such as oreasino that we are agreed to the people of this state to bestow upon you, the highest reward the patriat and warrior can detire—there testimonials of the approbation of your native attack, of your gallanty and good conduct in defence of the instance, which has the content of the people of the state to be the people of the state to be the people of the state of the people of the people

animated them, was found amongst their sons, who nobly redeemed the peleige of devotion to here country, given by their sires.—
eth the peleige of devotion to here country, given by their sires.—
found; that he had which marched to seek the for, you were found; that he had with the peleige of the peleige

For this sword, and for the very flattering expressions wit the presentation has been accompanied, accept in wheat he has a surface that it shall never be drawn except in the defence of justice and of the country.

Lieut. Connec's refuly.

The happines I feel in receiving this testimonial of my natise and approved led in receiving this testimonial of my nature state, in highly increased from in being presented by your excellen-cy, a descendant of the illustrious hero of Cospects. Should the fortune of war ever again place me on the military stage, may my career, like his be ecousired with victory and glory.

stage, may my career, take his, he crowind with rectory and goods.

I beg tome excellences, to believe, that I feel with deep sensibility the obtniguished hours conforred upon me by the liquisture of the obtniguished hours conforred upon me by the liquisture of the obtniguished hours conforred upon me by the liquisture of the obtniguished that the presentation of this word, as a reward for the feelby a trees a realized by me to my country, during the

war with Great Britain.

It is a proud consolation to me to know (humble as my services were), that throughout that contest I felt an honest devotion to the week, that throughout that cont is 1 fert an nonest nevertorises canne of my country, and that I acret of in he service, whaters rability I posteried. I can only plodge a similar devotiont in any fluture contest in which the realy be engaged.

Think my most grateful acknowledges not to your excellency made my most grateful acknowledges not to your excellency for your kindness and country on this occasion.

# ON SLAVE LABOR.

The following elong-on memoria to the legislative of the state of Verginia, because of the state of Verginia, but of the state of the state of Verginia, from the county of Flavania, by the ladies of which county at a node rotood, it will be estensively sign of the verginia, The memorial at the finale citizens of the county of Flavania, The memorial at the finale citizens of the county of Flavania.

Your memorials the conference of the rounty of riuraria,
most respectfully showeth
Your memorialist have hitherto been blessed with contentment
in the happy privacy of domestic retirement, where they have
enjoyed peace and security, under the wise institutions of a free evily) a prace and accurrity, under the war multiminate of a free government, nor large they, until now, had occasion in appeal to the guardians of their country's rights for redress of any instinual grivance, having shared the prosperity of their heaven-lastored land with feelings of gratiquite to the Author of all Good and to isand with feelings of gratiquie to the Author of all Good and to their natural guardanae and prucetons. They cream a grateful recollection of the patriotic exercious of your predicessors in of-fice, when the lamost their natural wore the fetters of foreign thresholm, and the distincts of a mightly nation were involved in your delite rations as a legislative body. The spirit now anionates your countrie which then trumpals over the opproximation of Gereat Britani, and bore to safely through the period of an unequal contest. The same wisdom pervades your deliberations which framed for our emancipated realm, a system of laws unequalled in the universe. Under this salutary code, we have seen our sons arise to manifood, unfettered by adject restrictions, and our daughter fill their alluted stations among the homored matrons of a

free land.
But a hight now hangs over our national prospects, and a cloud dims the taushine of doms site peace throughout our state. Our sers have heard the wailings of distress, and a mysterious dread, mingled with fearful suspectors, disturbs the ascered quiets of our hones. We have heard "Machel," as it were, "weeping for her children, because they are not," and uncontrolable sympathy with distant normans, quickens the throbbings of our otne tran-

il bosoms

quil bosoms. We cannot conceal from ourselves that an evil is among us, which threatens to outgrow the growth and eclipse the brightness of our national bl-stings. A shaduw deepens over the land and easts its thickest gloom upon the sacred shrine of domestic blist, darkening uver or as time advances. We reflect, with gratitude, that no error, in the framers of our constitution, establed this evil upon us. We drew the taint from the boson that fostered us. and that how the control of the bosons that future that we that the train principle of our national existence. It can no longer remain dormant and intrin the sorial system, but calls loudly for refress from the ages of our land. We are techniqly aware of the ardunus difficulties of the sorial system, but calls loudly for refress from the ages of our land. We are techniqly aware of the ardunus difficulties of the various of the production of the register of the second control of the secretary and the food of nations, could induce us thus to introde on the important avoractions which engage your time and your attention. We feel confident of your sympathy in all real dances, and the state of the production of the property of the second divided of the production of dity; neither will you impute to us the extravagant expectation that your unmott exertium can effect an immediate removal of the evil we deplote. We are prepared to endure a large proportion of the effects that the end of the effects that the end of the jour waldom devise a method on accession of the accurry of the doctore, posteriny will be indebted to you for the accurry of the doctore, posteriny will be indebted to posterior the accuracy of the doctore to the posterior of the companion of the doctore of the companion of the doctore of the companion of the doctore of the companion of the com

speedily put in operation to avert them from the unborn myriat

We previous the state of the st server enamines of kindred, by the selemi soligition, of single by every observation of domestic effection and particule duty, to preserve the server of the server of the server of the server portant subject—and let not the united votere of your mothers, wires, daughters, and kindred, have sounded in your ears in vain!

#### "THE CABLE CASE."

"HIP CABLE CASE."

From the Boston Gazzet.

This was, which was a superior to the superior to the case, which was a superior to the case, and the case to the case

MASSACRUSETTS DISTRICT.

U. Sater, determined States, October 20, 1821.

U. Sater, determined States, October 20, 1821.

Beyli, determined States, October 20, 1821.

Beyli, determined States, October 20, 1821.

Beyli, determined States, October 20, 1821.

Beylin, determined States, October 20, 1821.

Charlis G. Loring, for clamants.

These articles, brought tutto the port of Boston, in the big a mee artistra, urought into me port of notatin, in the brig Motow, Iron Tomandi, were selected in the 14th of September the ground, as the liber alleger, that they belong to, or were con-signed to the master, muse or crew uf that vesul, and were not destribed or included in the manifest or manifests of the cargo, by which, and by furce of the statute of the Urioid States, in meta, se made and provided, it is alleged that they have become for-

case made and provided, it is alleged that they have become for-feired to the next specified in the statute.

The claimants is their answer on oath derlare, that they are the lawful owners of the birg Moseow, that he arrived at Buston on the 6th of September last, from Croutadt, having, in her out-ward wrapeg, first proceeded to Masanzas, in the island of Coba, the mid-John Norris, one of the joint owners, being the master, that, on the passage to Matsanza, by a cessingly while they peri-thate, on the passage to Matsanza, by a cessingly while they peri-thon—was necessarily cut a way and lost, with the anchor to which it was a tatached, and that, from this eitermatance, as well as from the master of the hirty, at Cromited, for the necessary was of the was there provided for the hawser, belonging to the brig-the old hawser, it is averred, bring strained, weak andgaint for use; that aid new strain mable and hawser were taken on board said brig, at Cromatadt, as part of her ground tackle and equipment, and soicly for the purpose of being used as such; that they were purchased in

was there provided for the hawer, belonging to the brig-mbe old hawer, it is averred, being strained, was knudjanft for use; that said new strame she are have received the content of the strained have an indignant for use; that said new strame she and hawer were taken on board and brig, at Constadi, as part of her ground takels and equipment, and solely the ordinary manner for immediate use, were stowed in that part fof the vessel, where the stream cable and hawer, in actual service, are always stuwed and kept; that during the passage from the ordinary manner for immediate use, were stowed in that part for the vessel, where the stream cable not hawer, in exclusing the passage from the contract of the vessel, where the stream cable not hawer her ground tackle, or equipment, nor kept nor stowed in the leptace where such cable and hawer are or ought to be stowed and kept, and that in all particulars the same were intended to be allowed to the thin the strained and applied, they are to be the same that are mentionistened and applied, they are to be the same that are mentionistened and applied, they are to be the same that are mentionistened and applied, they are to be the same that are mentionistened and applied, they are to be the same that are mentionistened and applied, they are to be the same that are mentionistened and applied, they are to be the same that are mentionistened and applied, they are to be the same that are mentionistened and applied, they are to be the same that are mentionistened and applied, they are to be the same that are mentionistened and applied, they are to be the same that are mentionistened and applied, they are to be the same that are mentionistened and applied, they are to be the same that are mentionistened and applied, they are to be the same that are mentionistened and the same translation and the same translation and the same translation and the same translation and translationistened and the same translation and the same translationistened and the same translationistened and the

the sate weekton of the collection law which it recites, but on the collection of the collection law which it recites, but on the law weekton of the collection law which it recites, but on the chased and intended for the venel, by the master, they became thereby the property of the owners; and even if they constitute an unnecessary pupply, under the circumstances in which the earl was placed, and so to be considered as an orehandise imported, earlier than the constraint of the contraction. On the legal result in such view of the case, as to the majority of the contraction, be bring likewise a part owner of the result, it is unnecessary, in this case, to express or to form an opinion. On other distinct gound, siready express of, turn the sustable and proper connexion of the attents cable and haware with the vessel, and the contraction of the attents cable and haware with the vessel, ting that they he restored to the claimants.

It remains to be considered whether the certificate of resonating that they he restored to the collector's protection, who may be otherwise exposed to a prosecution for an exercise of official delay. There were, it appears, some circumstances attending this

ne outerwise exposes on a prosecution for an exercise of official duty. There were, it appears, some circumstances attending this transaction, producing a degree of excitement which had not en-tirely subsided in the interval between the sizuer and the hear-ing; and counsel for the claimants has made a strong appeal to the court, urging a denial of the certificate; at the same time, the

generous enlogy which he bestows on the collector, in which he is understood to express the prevailing sentiment of the consideration mustic, would seem to render the apprehensions of unworthy or improper motive in this scizure, improbable, and not to be imputed to the coll eter without the fullest evidence:

to be in to be imputed to the coll ctor without the fullest evidences. That mutual contrely between the officer and the me rehant, without relinquishment of right un one ride, or decellerion of duty on the other, which commerced in this cultestion districts, with his successors, and the present collector is understood fully to estimate the high consideration which recommend such dispositions and deportment, and to exhibit the influence of such sentimentation official transactions, interesting from their magnitude, and other prefetcing in their character, have proceeded to a satisfactory to contemplate names, as the his temper, which is delivered to contemplate names, as the with a temper, which is delivered as conclusion, in a manner, and with a temper, which it is grantifying to contemplate. I may ask allowance for grantful indulger-size in these recognitions. The duties of the situation in which I have been placed, through a greater part of the period to which I have adverted, have been greatly relieved by the dispositions as great portion of the business of this court untilly originates. The incident cuntroversies and concerns of trade and revenue, would have been rendered pairti, which looked at objects in their soft assumed harveer and relations, and scloling uses the legal accurate any discomposing fratures.

As the composing fratures.

It can be the prediction of the confidence of the c

It seems to have been minimated, or imagined, that the collection was influenced by some improper lexing or unspirous in reference of this. Capt. Rich, the senior owner, and who had the principal agency in the intercourse with the collector, on this subject, doubtless, fully believed that the Meseow was no more than satisfactory of the collectory of the collectory of the subject of the collectory of the c doublitas, fully believed that the Moscow was no more than satisfably and reasonably supplied with articles which were useenary or but and the supplied of the include be irrelabed with a set of sain manufactured in Great Piritinic." We have no statute provisions experity framed or cal-phing the provision of the provision of the calphage of the c

character, within it also reasonate training access the execution, abroad, articles professedly for versely use, and introducy proper notice on the part of officers, of cases which may occur, falling andor fucire congitized.

In the present intance there was no sudden movement on the property of the congression of the business, on her period the collection. The ground tackle of the Nucous, on her period the collection. The ground tackle of the Nucous, on her period the collection. The ground tackle of the Nucous, on her her-pen bower and stream cable, and a haware. She returned with the addition at size her-pen bower easily, as the articles of corresponding description still remain execution of a new heaping bower and at the articles, then purchased and taken on board at Cromstadt, should be rintered, as insile to duty. The ultimate eigener of the stream cable and haware, was the result of several days' defiberation, and fire controlling, and the stream cable and haware, was the result of several days' defiberation, and fire controlling, and recurrence to instructions from the trasury department, in cases considered analogous. In finally determining on the stizone the bower calle was omitted, because it appeared it had been bent for use, as occasion should require, in the passage decreed to be though and the particle of the stream cable and the cable of the stream cable and the stream cable an

In the present case, the collector, as appears to me, acted with a sincere conviction that he was in the correct and requisite per-

Parker's revenue cases in the exchequer.

61,688 67

148,724 22

\$210,412 89

\$108,540 47

143,164 68

147,228 44

formance of his official duty, without any culpable or unworthy motive. I shall therefore accompany the decree of restoration, with a certificate of reasonable cause.

#### GENERAL POST OFFICE.

REPORT OF THE POSTMASTER GENERAL. Post office department, 28th November, 1831.
To the president of the United States:
Sire The following report of the progress and condi-

tion of this department is respectfully submitted.

postages within the year, commencing on the lat of July, 1830, and ending the 30th of June, 1831, were The revenues of the department, being the amount of

The expenditures of the department, 1,935,559 36

within the same period, were Being for compensation

\$635,028 48 to postmasters For transportation of the

1,252,296 44 mail 48 304 44 For incidental expenses Leaving an excess of revenue beyond the

expenses of the department, amount-62.252 18 ing to
Of this sum there have been paid into the treasury, (being irregularly de-563 51

Showing a balance in favor of the de-

partment, of The surplus of revenue on the 1st July, 1830, as stated in the report of last year, amounted to

Thus the surplus revenue at the disposal of the department on the 1st of July, 1831 was

This surplus, reported as available, and at the iljspo-sal of the department, is lounded on the statement in the report of the late postmatter general, of 1823, and on the assumption that all the postages which lave ac-crued since my first report in 1829, will have been col-leged. Of the postages returned within that time is it. lested. Of the postages returned within that time, it is confidently believed the losses, in collection will not amount to one fourth of one per centum.

The whole amount of postages from July \$1,707,418 42 1st, 1828, to July 1st, 1829, was From July 1st, 1829, to July 1st, 1830 From July 1st, 1830, to July 1st 1831 1,850,583 10 1,997,811 54

The increase of postages within the year ending July 1st, 1829, above the amount

of the year preceding, was The increase of the year ending July 1st, 1830, above the amount of the year pre-

ceding, was The increase of the year ending July 1st, 1831, above the amount of the year preceding, was

The expenses of the department for the year preceeding July 1st, 1828, exceed-\$25,015 80 ed its revenues in the sum of For the year preceding July 1st, 1829
For the year preceding July 1st, 1820
But for the year preceding July 1st, 1831, the revenues of the department 74,714 15 82,124 85

have exceeded its expenditures in the 62 252 18 sum of

The favorable terms upon which the contracts were last year made for the transportation of the mail in the southyear made for the transportation of the mail in the solution rein division, commencing on the lat day of January last, have assisted in producing the result exhibition by the following fact:—The revenue of the department for half year beginning with the lat of January last exceeded the expenditure for the same period in the sum of \$75,475 91

Whereas for the half year preceding the 1st January, 1831, the expenditures exceeded the revenue in the sum of

The difference in which results constitutes the excess of revenue over disbursements for the year now report-

62,252 18

From the 1st of July, 1830, to the 1st July, 1831, the trans-portation of the mail was in-

ereased in stages equal to 884,450 miles a year On horseback and in sulkies 134,252 miles a year

Making an annual increase of transportation equal to 968,702 miles beyond the amount of any former period. Many routes have also been improved, by substituting stages for horse mails, to the annual amount of 362,321 miles.

The total annual increase of stage transportation from July 1, 1830, to July 1, 1831, was The annual decrease of transports-1,196,771 miles

tion, on horseback, within the same 228,069 miles time, by substituting stages, was

Making the annual increase as above, equal to 968,702 miles

On the 1st of July, 1831, the annual transportation of the mail was. in stages and steamboats 10,728,348 miles 4,740,344 miles On horseback and in sulkies

Making the whole annual transportation equal to 15.468.692 miles

Other improvements are also determined on, in which remote parts of the country are immediately interested; among them are, the establishment of a regular steamamong mem are, the casadismient of a regular steam-boat mail on the river Ohio, between Guyandotte, in Virginia, Cineinnati, in Ohio, and Louisville, in Ken-tucky, to form a daily connexion with the line of post consense from this place, and from Richmond, in Vir-guina, to Guyandotte; and the improvement of the route daily line between Macon, in Georgia, Mobile, in Alabama, and New Orleans, so as to constitute a daily intercourse between New Orleans and the Atlantic cities, with a desnatch of twelve days between New Orleans and this city.

These two improvements are already in a state of progress, and it is expected will soon be in complete ope-

ration. The contracts for transporting the mails in the middle division of the union, comprising the states of New Jersey, Pennsylvania, Delaware, Maryland, Kentucky, and Ohio, and the territory of Michigan, will end with the present year. In renewing the contracts for this di-vision, provision has been made for stage accommodation over 560 miles of post roads, on which the mail had before been carried on horseback, and on which the annual transportation in stages will, from the 1st of January next, amount to 62,365 miles. On 1,803 miles of post roads, where the mail is already earried in stages, the frequency of trips will also be increased to the anqual amount of 407,524 miles. By these arrangementa an annual increase and as sign transportation is secured from the 1st of January next, of 469,889 miles on that section. The value of those improvements, at the lowest estimate, is as follows:

469.889 miles of stage transportation, at \$42,290 01 9 cents per mile, Deduct 62,365 miles of horse transportation superceded by stages, at 4 cents per

mile, Net value of the improvement,

The acceptances for the new contracts, besides the securing of these improvements, are not so great as the amount now paid for the transportation on that division, by \$51,787 18. The renewal of the contracts, therefore, saves in money to the depart-

Which added to the value of the im-91,582 59 13,223 73 provements, affect a saving of

2,494 60

\$39,795 41

51,787 18

Other improvements, highly important in their character, are proposed, the decisions on which have been deterred for further consideration.—It is, however, and on the preservation of our liber trace or national force injusted from the saving which has been effected in renewing the contracts, that the department will possess the ability to make some futher improvements in this division of mail routes.

There were on the 1st of July last, 8,686 post offices. To the plan adopted for their supervision, and the rigilance with which it is observed, together with the system of finance which is strictly adhered to, may be attributed, in no small degree, the increasing prosperity of the department.

I have the honor to be, with high regard, your obedient servant, W. T. BARRY.

# PRESIDENT'S MESSAGE.

Fellow-citizens of the senate,

and hours of representatives:

The representation of the people has been renewed for the twenty-accord time after the constitution they formed has been in force. Buce the constitution they formed has been in force. Presentaint as entury the chief maghirates who have been suffered to the maghirates who have been suffered to the second have made their annual communications their annual communications have been of the most gratifying natures tifying an advance in all the improvements of social, and all the securities of policical lite. But frequently, and justly, as you have been called on to be grateful for the bounties of Providence, at few periods have they been more abundantly or extensively bestowed than at the present; rarely, if ever, have we had greater reason to congratulate each other on the continued and increasing prosperity of our beloved country.

Agriculture, the first and most important occupation of man, has compensated the labors of the husbandman with plentiful crops of all the varied products of our exwith particular rops of an are varied products of our ex-tensive country. Manufactures have been established, in which the lunds of the capatalist find a profitable in-vestment, and which give employment and subsistence to a numerous and increasing boily of industrious and dextrous mechanics. The laborer is rewarded by high wages, in the construction of works of internal improvement, which are extending with imprecedented rapidity. Science is steadily penetrating the recesses of nature, and disclosing her secrets, while the ingenuity of free minds is subjecting the elements to the power of man, and making each new conquest auxiliary to his comfort. By our mails, whose speed is regularly increased, and whose routes are every year extended, the communiextion of public intelligence and private business is rendered frequent and safe-the intercourse between distant cities, which it formerly required weeks to accomplish, is now effected in a few days; and in the construction of rail roads, and the application of steam power, we have a reasonable prospect that the extreme parts of our country will be so much approximated, and those most isolated by the obstacles of nature, rendered so accessible as to remove an apprehension, sometimes entertained, that the great extent of the union would endanger its permanent existence.

II, from the satisfactory view of our agriculture, manufactures, and internal improvements, we turn to the state of our navigation and trade with foreign nations, and between the states, we shall scarcely find less cause for gradulation. A beneficial Providence has provided, for their exercise and encouragement, an extensive coast incheried by appacious bays, noble rivers, inland seas, with a country productive of every material for ship building, and every commidity for gainful commerce, and filted with a pupulation active, intelligent, well informed, and fearless of danger. These advantages are not neglected; and an impulse has lately been given to commercial enterprise, which fills our ship-yards with new constructions, encourages all the arts and branches of industry connected with them, crowds the wherees of our cities with vexels, and covers the most distant seas with our envasas.

Let us be grateful for these blessings to the beneficent Being who has conferred them, and who suffers as to mdulge a reasonable hope of their continuance and extension, while we neglect not the means by which they may be prearred. If we may dust to judge of Ha lutture designs by the manner in which His past favors have been bestowed, he has made our national prospertly to depend on the preservation of our liberter—our national force on our lederal union—and our individual happiness on the maintenance of our state rights and wise institutions. If we are prosperous at home, and respected abroad, it is because we are iree, united, industrious, and observed to the laws. While we continue so, we shall, by the bleasing of leaven, go on in the happy career we have hegun, and which has brought us, in the short period of our polt ted existence, from a population of three to thirteen mill-ons—from thirteen separate colonies to theirty-low Unived States—from weekness to strength—from a rank searcely marked in the scale of nations to a high place in their respect.

This last advantage is one that has resulted, in a great degree, from the principles which have guided our intercourse with foreign lowers, since we have assumed an equal station among them: and lenee, the annual secount which the executive renders to the country, of the manner in which that branch of his duties has been ful-

filled, proves instructive and salutary.

The pacific and wise polley of our government kept us in a state of neutrality during the wars that lawe, at different periods since our political existence, been carried on by other powers but this poley, whilet gave activity and extent to our commerce, exposed it in the same proportion to injuries from the beligerent nations. Hence have airisen claims of indemnity for those injuries. England, France, Sjasin, Holland, Sweden, Dennark, Naylet, and Jately Porrugal, Isd all, in a greater or less digree, infringed our neutral rights. Demands for reparation were made upon all. They have had in all, and continue to have is some cases, a leading induces on whom

they were made.

Of the claims apon England it is unnecessary to speak, further than to say, that the state of things to which their prosecution and denial gave rise has been succeeded by arrangements, productive of mutual good feeling and amicable relations between the two countries, which it is houed will not be interrupted. One of these arrangements is that relating to the colonial trade, which was communicated to congress at the last session; and al-though the short period during which it has been in force will not emble me to form an accurate judgment of its operation, there is every reason to believe that it will prove highly beneficial. The trade thereby authorised operation, mere in every teasure of thereby authorised inove highly beneficial. The trade thereby authorised has employed, to the 30th September last, upwards of 30,000 tons of American, and 15,000 tons of loreign shipping in the outward voyages; and, in the inward, nearly an equ I amount of American, and 20,000 only of foreign tonnage. Advantages too, have resulted to our agricul-tural interests from the state of the trade between Canada and our territories and states bordering on the St. Lawrence and the lakes, which may prove more than equivalent to the loss sustained by the discrimination made to favor the trade of the northern colonies with the West Indies.

After our transition from the state of colonies to that of an independent nation, many points were found necessary to be settled between us and Great Britain. Among them was the demarcation of boundaries, not described with sufficient precision in the treaty of peace. Some of the luces that divide the states and territories of the United States, from the British provinces, have been defindively fixed. That, however, which separates us from the provinces of Canada and New Brunswick to the north and the east, was still in dispute when I came into office. But I found arrangements made for its settlement, over which I had no control. The commissioners who had been appointed under the provisions of the treaty of Ghent, having been unable to agree, a convention was made with Great Britain by my immediate predecessor in office, with the advice and consent of the senate, by which it was agreed "that the points of difference which have arisen in the settlement of the boundary line between the American and British dominions, as described in the 5th article of the treaty of Ghent, as described in the 5th arrive on the treaty of shall be referred as therein provided, to tome friendly soveregn or state, who shall be invited to investigate, and make a decision upon such points of difference: and the king of the Netherlands having, by the late president and his Britanic majesty, icen designated as such, years, in some degree alienated from each other two naricinelly acvereign, it became my duty to carry, with good faith, the agreement so made into full effect. To his end I caused all the measures to be taken which were necessary to a full exposition of our case to the sovereign arbiter; and nominated as minister idenino tentiary to his court, a distinguished eitizen of the state most interested in the question, and who had been one of the agents previously employed for settling the controof the agents previously employed for setting the contro-versy. On the 10th day of January last, his majesty the king of the Netherlands delivered to the plenipoten-tiaries of the United States, and of Great Britain, his written opinion on the case referred to him. The papers in relation to the subject will be communicated, by a special message, to the proper branch of the government, with the perfect confidence that its wisdom will adout such measures as will sentre an ameable settlement of the controversy, without infringing any constitutional right of the states immediately interested.

It affords me satisfaction to inform you that sugges tions, made by my direction to the charge d'affairs of his Britannie majesty, to this government, have had their desired effect in producing the release of certain American citizens who were imprisoned for setting up the aucan entrena wo were impression to setting up the au-thority of the state of Manne, at a place in the disputed territory under the actual jurisdiction of his Britanne majesty. From this, and the assurances I have received of the desire of the local authorities to avoid any souse of collision, I have the best hopes that a good under-standing will be kept up until it is confirmed by the final

disposition of the subject.

The amicable relations which now subsist between the United States and Great Britain, the increasing inter-course between their citizens, and the rapid obliteration of unfriendly prejudices to which former events naturally gave rise-concurred to present this as a fit period for renewing our endeavors to provide against the recurrence of causes of irritation, which, in the event of war between Great Britain and any other power, would inevitably co-danger our peace. Animated by the succerest desire to avoid such a state of things, and peacefully to secure, under all possible circumstances, the rights and honor of the country, I have given such instructions to the minister lately sent to the court of London, as will evince that desire; and if met by a correspondent disposition, which we cannot doubt, will put an enil to causes of collision. which, without advantage to either, tend to estrange from each other two nations who have every motive to preserve, not only peace, but an intercourse of the most amicable nature.

In my message at the opening of the last session of congress, I expressed a confident hope that the justice of our claims upon France, urged as they were with nerseverance and signal ability by our minister there, would finally be acknowledged. This lope has been realised. finally be acknowledged. This hope has been realised. A treaty has been signed, which will immediately be laid before the senate, for its approbation; and which, containing stipulations that require legislative acts, must have the concurrence of both houses before it can be nave the concurrence of both nouses before it can be carried into effect. By it, the French government engage to pay a sum which, if not quite equal to that which may be found due to our citizens, will yet, it is believed, under all circumstances, be deemed satisfactory by those interested. The offer of a gross sum, instead of the antisfaction of each individual claim, was accepted, because the only alternatives were a rigorous exaction of the whole amount stated to be due on each claim, which might, in some instances, be exaggerated by design, in others over-rated through error, and which, therefore, it would have been both ungracious and nojust to have insisted on, or a settlement by a mixed commission, to which the French negotiators were very averse, and which experience in other cases had shown to be dilatory, and olten wholly inadequate to the end. A comparatively small sum is stipulated on our part, to go to the extinetion of all claims by French citizens on our government; has been agreed on, as a consideration for the remneration of an important claum for commercial privileges under the construction they gave to the treaty for the cession of Louisiana.

Should this treaty receive the proper sanction, a source of irritation will be stopped, that has, for so many

tions, who, from interest as well as the remembrance of early associations, ought to cherish the most friendly relations-an encouragment will be given for perseverance in the dencands of justice, by this new proof, that, if steadily pursued, they will be listened to-and adminition will be offered to those nowers, if any, which may be inclined to evade them, that they will never be shandoned. Above all, a just confidence will be inspired as our fellow citizens, that their government will exert all the powers with which they have invested it, in support of their just claims upon foreign nations; at the same time that the frank acknowledgment and provision for the payment of those which are addressed to our equity, although unsupported by legal proof, affords a practical illustration of our submission to the flying rule of doing to others what we desire they should do unto us.

Sweden and Dempark having made compensation for the irregularities committed by their vessels, or in their ports, to the perfect satisfaction of the parties concerned, and having renewed the treaties of commerce entered into with them, our political and commercial relations with those powers continue to be on the most friendly

footing.

With Snain, our differences up to the 22d of Februsry, 1819, were settled by the treaty of Washington of that date: but, at a subsequent period, our commerce with the states, formerly colonies of Spain, on the continent the face, in the same of spin, of the condition of America, was annoyed and frequently interrupted by her public and private armed ships. They captured many of our vessels prosecuting a lawful commerce, and sold them and their eargoes; and at one time, to our demanils for restoration and infermity, opposed the allegation, that they were taken in the violation of a blockade of all the ports of those states. This blocksde was ileclaratory only, and the inadequacy of the force to maintain it, was so manifest, that this allegation was varied to a charge of trade in contraband of war. This, in its turn, was also found untenable; and the minister whom I sent with instructions to press for the reparation that was due to our injured fellow edizens, has transmittell an answer to his demand, by which the captures are ilectared to have been legal, and are justified, because the independence of the states of America never having been acknowledged by Spain, she had a right to prohibit trade with them under her old colonial laws. ground of delence was contradictory, not only to those which had been formerly alleged, but to the uniform practice and established laws of nations; and had been abandoned by Spain herself in the convention which granted indemnity to British subjects for entities, made at the same time, under the same circumstances, and for the same allegations with those of which we complain.

I however addulge the hope that further raffection w II lead to other views, and leef confident that when his catholic majesty shall be convinced of the justice of the claim, his desire to preserve friendly relations between the two countries, which it is my earnest endeavor to maintain, will induce him to accede to our demand. I have therefore despatched a special messenger with instructions to our minister to bring the case once more to his consideration; to the end that if, which I cannot bring mysell to believe, the same decision, that cannot but be deemed an unfriendly denial of justice, should be perissted in, the matter may, before your adjournment, be laid before you, the constitutional judges of what is pro-per to be done when negotiation for redress of injury fails.

The conclusion of a treaty for indemnity with France seemed to present a favorable apportunity to renew our claims of a similar nature on other powers, and partieularly in the case of those upon Naples, more especially as in the course of former negotiations with that power, our failure to induce France to render us justice was used as an argument against us. The desires of the mer-chinds who were the principal sufferers have therefore bern acceded to, and a mission has been instituted for the special purpose of obtaining for them a reparation already too long delayed. This measure having been reedved on, it was put in execution without waiting for the meeting of congress, because the state of Europe created an apprehension of events that might have rendered our application ineffectual.

Our demands upon the government of the Two Sicilies are of a peculiar nature: The injuries on which they are founded are not denied, nor are the atrocity and perfield under which those injuries were perpetrated at-tempted to be extenuated. The sole ground on which indemnity has been refused is the alleged illegality of the tenure by which the monarch who made the seizures held his crown. This defence, always unfounded in any principle of the law of nations-now universally abandoned, even by those powers upon whom the responsibility for acts of past rulers bore the most heavily, will unquestionably be given up by his Sicilian majesty; whose counsels will receive an impulse from that high sense of honor and regard to justice which are said to characterise him; and I leet the luttest confidence that the talents of the citizen commissioned for that purpose will place before him the just claims of our injured adjournment, to announce that they have been adjourn and secured. Precise instructions, to the effect of bringing the negotiation to a speedy issue, have been given and

will be obeyed. In the late blockade of Terceira, some of the Portuguese fleet captured several of our vessels and committed other excesses, for which reparation was demanded; and I was on the point of despatching an armed force, to prevent any recurrence of a similar violence and protect our citizens in the prosecution of their lawful commerce, when official assurances, on which I relied, made the sading of the ships unnecessary. Since that period frequent promises have been made that full indemnity shall be given for the injuries inflicted and the losses sustained. In the performance there has been some, perhaps unavoidable delay: but I have the fullest confidence that my carnest desire that this business may at once be closed, which our minister has been matructed strougly to express, will very soon be gratified. I have the better ground for this hope, from the evidence of a friendly disposition which that government has shewn by an actual reduction in the duty on rice, the produce our southern states, authorising the anticipation that this important article of our export will soon be admitted on the same footing with that produced by the most favored nation.

With the other powers of Europe, we have fortunately had no cause of discussions for the redress of joinries. With the empire of the Russias, our political counce non Is of the most friendly, and our commercial, of the most liberal kind. We esjoy the advantages of navigation and trade, given to the most favored nation: but it has not yet suited their policy, or perhaps has not been found convenient from other considerations, to give stability and reciprocity to those privileges, by a commercial trea-ty. The ill health of the minister last year charged with aking a proposition for that arrangement, did not permit him to remain at St. Petersburgh, and the attention of that government, during the while of the period since his departure, having been occupied by the war in which it was engaged, we have been assured that nothing could have been effected by his presence. A minister will soon be nonmated, as well to effect this important object, as to keep up the relations of amity and good un-derstanding of which we have received so many assurances and proofs from his imperial majesty and the emperor his predecessor.

The treaty with Austria is opening to us an important trade with the hereditary dominions of the emperor, the value of which has been hitherto little known, and of course not sufficiently appreciated. While our com-merce finds an entrance into the south of Germany by means of this treaty, those we have formed with the Hanseatic towns and Prussis, and others now in negotiation, will open that wast country to the enterprising apirit of our merchants, on the north: a country abounding in all the materials for a mutually beneficial communice filled with enlightened and industrious inhabitants, holding an important place in the polities of Europe, and to which we owe so many valuable citizens. The ratification of the treaty with the porte was sent to be exchanged by the gentleman appointed our charge d'affaires to that court. Some difficulties occurred on his arrival; but at the date of his last official despatch, he supposed the regency, gives us the best reason to expect.

they had been obviated, and that there was every prov

pect of the exchange being specially effected.

This finishes the connected view I have thought it proper to give of our political and commercial relations an Europe. Every effort in my power will be continued to strengthen and extend them by treaties founded on principles of the most perfect reciprocity of interest, menther asking nor conceiling any exclusive advantage, but laber rating, as far as it lies in my power, the activity and industry of our fellow-entizens from the shackles which

To China and the East Indies, our commerce continues in its usual extent and with increased facilities, which the ercult and capital of our merchanta afford, by substituting bills for psyments in specie. A daring our-rage having been committed in those seas, by the plunder of one of our merchantmen engaged in the pepper trade, of one of our merenantaeis engaged in the perpet trace, at a port in Sumatra, and the practical perpetrators belonging to tribes in such a state of society, that the sawal course of proceedings between civilized nations could not be pursued, I forthwith despatched a frigate with orders to require immediate assistation for the injury,

and indemnity to the sufferers. Few changes have taken place in our connexions with the independent states of America since my last commu-The ratification of a commercial nication to congress. treaty with the united republics of Mexico has been for some time under deliberation in their congress, but was still underded at the date of our last despatches. The unhappy civil commotions that have prevailed there, were undoubtedly the cause of the delay; but as the government is now said to be tranquilized, we may b soon to receive the ratification of the treaty, and an arrangement for the demarcation of the boundaries between us. In the mean time an important trade has been openeil, with mutual benefit, from St. Louis in the state of Missouri, by caravans, to the interior provinces of Mexica. This commerce is protected in its progress through the Indian countries by the troops of the United States, which have been permitted to escort the carsvans, beterritory.

From Central America I have received assurances of the most friendly kind, and a gratifying application for our good offices to remove a supposed indisposition towards that government in a neighboring state; this application was immediately and successfully complied with. They gave us also the pleasing intelligence that differences which had prevailed in their internal affairs had been peaceably adjusted. Our treaty with the re-public continues to be faithfully observed, and promises a great and beneficial commerce between the two couna great ann orientest commerce of the greatest importance, if the magnificent project of a ship canal through the dominions of that state, from the Atlantic to the Pacific occan, now in serious contemplation, shall be executed.

I have great satisfaction in communicating the success which has attended the exertions of our minister in Columbia to procure a very considerable reduction in the duties on our flour in that republic. Indemnity, also, has been stipulated for injuries received by our mer-chants from illegal seizures; and renewed assurances are given that the treaty between the two countries shall be bichtully observed.

Chili and Peru seem to be still threatened with eivil commotions; and, until they shall be settled, disorders may naturally be apprehended, requiring the constant presence of a naval force in the Pacific ocean, to protect our fisheries and guard our commerce.

The disturbances that took place in the empire of Brazil, previously to, and immediately consequent upon, the abdication of the late emperor, necessarily suspendthe anorther of the late emperor, necessarily suspended enlany effectual application for the redress of some past injuries suffered by our citizens from that government, while they have been the cause of others, in which all foreigners seem to have participated. Instructions have been given to our minister there, to press for indemnity due for losses occasioned by these irregularities; and to take care that our fellow-citizens shall enjoy all the privileges stipulated in their favor, by the treat; lately made between the two powers, ail which, the good intelligence that prevails between our minister at Rio Janeiro and

American powers in respect to which nothing of importance affecting us was to be communicated, but for occurrences which have lately taken place at the Falkland Islands, in which the name of that republic has been used to cover with a show of authority, acts injurious to our commerce, and to the property and liberty of our fellow citizens. In the course of the present year, one of our veasels engaged in the pursuit of a trade which we have always enjoyed, without molestation, has been captured by a band acting, as they pretend, under the authority of the government of Buenos Ayres. I have therefore given orders for the despatch of an armed vessel, to join our squadron in those seas, and aid in affording all lawful protection to our trade which shall be necessary; and shall without delay send a minister to inquire into the nature of the circumstances, and also of the claim, if any, that is set up by that government, to those islands. In the mean time I submit the case to the consideration of congress, to the end that they may clothe the executive with such authority and means as they may deem necessary for providing a force adequate to the complete protection of our fellow-citizens fishing and trading in those acas.

This rapid sketch of our foreign relations, it is hoped, fellow eitizens, may be of some use in so much of your legislation as may bear on that important subject; while it affords to the country at large a source of high gratification in the contemplation of our political and commereml connexion with the rest of the world. At peace with ail-having subjects of future difference with few, and those susceptible of easy adjustment—extending our commerce gradually on all soles, and on none by any but the most liberal and mutually beneficial means—we may, by the blessing of Providence, hope for all that na-tional prosperity which can be derived from an inter-course with foreign nations, guided by those eternal principles of justice and reciprocal good will, which are binding as well upon states, as the andividuals of whom they are composed.

have great satisfaction in making this statement of our affairs, because the course of our national policy cuablea me to do it without any indiscreet exposure of what in other governments is usually concealed from the people. Having none but a straight-forward open course to pursue-guided by a single principle that will hear the atrongest light—we have happily no political combinations to form, no alliances to entangle us, no complicated interests to consult; and in subjecting all we have done to the consideration of our chazens, and to the mspection of the world, we give no advantage to other na-

ons, and lay ourselves open to no mjury. It may not be improper to add that, to preserve this state of things, and give confidence to the world in the integrity of our designs, all our consular and diplomatic agents are strictly enjoined to examine well every cause of complaint preferred by our citizens; and, while they arge with proper earnestness those that are well founded to countenance none that are unreasonable or unjust, and to enjoin on our merchants and navigators the strictest obedience to the laws of the countries to which they resort, and a course of conduct in their dealings that may support the character of our nation, and render us respected abroad.

Connected with this subject, I must recommend a revisal of our consular laws. Defects and omissions have been discovered in their operation, that ought to be remedicd and supplied. For your further information on this subject, I have directed a report to be made by the secretary of state, which I shall hereafter submit to your consideration.

The internal peace and security of our confederated states, is the next principal object of the general govern-ment. Time and experience have proved that the abode of the native Indian within their limits is dangerous to their peace, and injurious to themselves. In accordance with my recommendation at a former session of congress, an appropriation of half a million of dollars was made to aid the voluntary removal of the various tr bes beyond the limits of the states. At the last session I had the taws had accepted the generous offer of the government, and served to remove beyond the Mississippi river, by may be safely estimated that the resence which will be

I should have placed Buenos Ayres in the list of south | which the whole of the state of Mississippi and the western part of Alabama will be freed from Indian occupaney, and opened to a civilized population. The treaties with these tribes are in a course of execution, and their removal, it is hoped, will be completed in the course of 1832

> At the request of the authorities of Georgia, the registration of Cherokee Indians for emigration has been re-sumed, and it is confidently expected that one half, if not two thirds of that tribe, will follow the wise example of their more westerly brethren. Those who prefer remaining at their homes will hereafter be governed by the laws of Georgia, as all her entirens are, and cease to be the objects of peculiar care on the part of the general government.

> During the present year, the attention of the government has been particularly directed to those tribes in the powerful and growing state of Ohio, where considerable tracts of the finest lands were still occupied by the aboriginal proprietors. Treaties, cither absolute or conditional, have been made, extinguishing the whole Indian title to the reservations in that state; and the time is not distant, it is liqued, when Okio will be no longer embarrassed with the Indian population. The same measure will be extended to Indiana, as soon as there is reason to anticipate success.

It is confidently believed, that perseverance for a few years in the present policy of the government, will ex-tinguish the Indian title to all lands lying within the states composing our tederal union, and remove beyond their limits every Indian who is not willing to submit to their laws. Thus will all conflicting claims to jurisdiction between the states and the Indon tribes be put to rest. It is pleasing to reflect, that results so beneficial, not only to the states inneed ately concerned, but to the harmony of the union, will have been accomplished, by measures equally advantageous to the Indians. What the native swages become when surrounded by a dense gopulation, and by mixing with the whites, may be seen in the miserable remounts of a few castern tribes, deprived of political and civil rights, forbidden to make contracts, and subjected to guardians, dragging out a wretched existence, without exeitement, without hope, and almost without thought,

But the removal of the Indians beyond the limits and prisdiction of the states, does not place them beyond the reach of philanthropic aid and Christian instruction. On the contrary, those whom philanthropy or religion may induce to lice among them in their new abode, will be more free in the exercise of their benevolent functions, that if they had remained within the limits of the states, embarrassed by their internal regulations. Now, subject to no control but the superintending agency of the general government, exercised with the sole view of preserving peace, they may proceed unmolested in the interesting experiment of gradually advancing a comminute of American Indians from barbarism to the habits and enjoyments of civilized life.

Among the happess effects of the improved relations of our republic, has been an increase of trade, producing a corresponding merease of revenue, beyond the must sanguine anticipations of the treasury department,

The state of the public finances will be fully shewn by the secretary of the treasury, in the report which he will presently lay before you. I will here, however, congratulate you upon their prosperous condition. revenue received in the present year will not fall short of twenty-seven indlions, seven hundred thousand dollars; and the expenditures for all objects, other than the public debt, will not exceed tourteen milions, seven hundred thousand. The payment on account of the principal and interest of the debt, during the year, will exceed sixteen millions and a half of dollars: a greater sum than has been applied to that object, out of the resenue, in any year since the enlargement of the anking fund, except the two years following immediately there The amount which will have been applied to the public debt from the 4th of March, 1829, to the first of annary next, which is less than three years since the administration has been placed in my hands, will exceed forty millions of dollars.

From the large importations of the present year,

received into the treasury from that source during the next year, with the aid of that received from the public lands, will considerably acceed the amount of the receipts of the present year; and it is believed that with the means which the government will have at its disposal, from worous sources, which will be fully started by the proper department, the whole of the public debt may be extinguished, either by redemption or purchase, then exhault the rare text administration, we shall then exhault the rare text and the public action, who had ing in all the means of happiness and security, altogether free from debt.

The confidence with which the extinguishment of the public debt may be anticipated, presents an opportunity for carrying into effect more fully the policy in relation to import duties, which has been recommended in my former messages. A modification of the tariff, which shall produce a reduction of our revenue to the wants of the government, and an adjustment of the duties on imports with a view to equal justice in relation to all our national interests, and to the counteraction of foreign policy, so far as it may be injurious to those interests, is deemed to be one of the principal objects which demand the consideration of the present congress. Justice to the interests of the increliant as well as the insulacturer, requires, that material reductions in the import duties he prospective: and unless the present congress shall dispose of the subject, the proposed reductions cannot pro-perly be made to take effect at the period when the necessity for the revenue, arising from present rates, shall It is, therefore, desirable, that arrangements be cease. adopted at your present session, to relieve the people from unnecessivy taxation, after the extinguishment of the public debt. In the excreise of that spirit of concession and enneitiation which has distinguished the friends of our union in all great emergencies, it is believed that this object may be effected without injury to say national interest.

In my annual message of December, 1829, I had the honor to recommend the adoption of a more liberal poliicy, than that which then prevailed towards unfortunate debtors to the government; and I deem it my duty again to invite your attention to this subject.

Actuated by similar views, congress, at their last session, passed an act for the relief of certain insolvent debtors of the United States; but the provisions of that law have not been deemed such as were adequate to that rehef to this unfortunate class of our tellow cisizens, which may be safely extended to them. The points in which the law appears to be defective will be particularly communicated by the secretary of the treasury; and I take pleasure in recommending such an extension of its provisions as will unferter the enterprise of a valuable portion of our citizens, and restore to them the means of usefulness to themselves and the community. deliberating upon this subject, I would also recommend to your consideration the propriety of so modifying the laws for enforcing the payment of debts, due enter to the public or to individuals suging in the courts of the United States, as to restrict the imprisonment of the person to cases of fraudulent concealment of property. The personal liberty of the cit zen seems too secred to be held, as in many cases it now is, at the will of a creditor to whom he is willing to surrender all the means he has of discharging his debt.

The reports from the secretaries of the war and navy departments, and from the postmaster general, which accompany this message, present satisfactory wews of the operations of the departments respectively under their charge; and suggest unprovements which are worthly of, and to which I invite the scrucus attention of congress. Certain defects and omissions having been discovered in the operation of the laws respecting patents, they are pointed out in the accompanying report from the secretary of state.

Thate heretolore recommended amendments of the federal constitution, giving the election of president and vice president to the people, and limiting the service of the former to a single term. So important do I consider these decanges in our fundamental law, that I cannot, in accordance with my sense of duty, omit to press them upon the consideration of a new congress. For my sews more at large, as well in relation to these points

received into the treasury from that source during the as to the disqualification of members of congress to renext year, with the and of that received from the public lands, will considerably exceed the amount of the relinve had so official agency, which I proposed as a subceipts of the present year; and it is believed that with

-

Out a stan of public seconds is extremely complicated, and, at he beved, now be much improved. Much of the present much inert, and a considerable portion of the expenditure of public isomery may be depensed with, while greater lacthies can be afforded to the liquidation of claims apon the government, and an examination into their justice and legality, quite as efficient as the present, secured. With a view to a general reform on the system, I recommend the subject to the attention of concress.

I deem it my duty again to call your attention to the condition of the District of Columbia. It was doubtless wise in the framers of our constitution, to place the peo ple of this district under the jurisdiction of the general government; but, to accomplish the objects they had in view, it is not necessary that this people should be deprived of all the privileges of self-government. Independently of the difficulty of inducing the representatives of distant states to turn their attention to projects of laws, which are not of the highest interest to their constituents, they are not individuelly, nor in congress collectively, well qualified to legislate over the local concerns of this district. Consequently, its interests are much neglected, and the people are almost straid to present their grievances, lest a hody, in which they are not represented, and which feels little sympathy in their local relations, should, in its attempt to make laws for them, do more harm than good. Governed by the laws of the states whence they were severed, the two shores of the Potomac within the ten miles aquare, have different penal codes: not the present codes ut Virginia and Maryland, but such as existed in those states, at the time of the cession to the United States. As congress will not form a new code, and as the people of the district cannot make one for themselves, they are virtually under two governments. Is it not just to allow them at least a delegate in congress, il not a local legislature, to make laws for the district, subject to the approval or rejection of congress? I carnestly recommend the extension to them of every political right which their interests require, and which may be compatible with the constitution

and which may be compatible with the constitution. The extension of the judiciary system of the United States is deemed to be one of the duties of government. One lourth of the states in the union do not participate in the benefits of a circuit court. To the states of Indiana, Illinois, Missouri, Albaman, Missuspip, and Lousnana, admitted into the union since the present judicial system was organized, only a district court has been allowed. It this be sufficient, then the circuit sourts, abready existing in egitteen states, ought to be abolished if it be not sufficient, the defect ought to be remedled, and these states placed on the same footing with the other numbers of the shoon. It was on this condition, and on this footing, that they entered the union; and they may demand circuit courts as a matter, not of concession, but of right. I trust that congress will not adjourn, leaving this shoonsly in our system.

Entertaining the opinious heretofore expressed in relation to the bank of the United States, as at present orport of the least of the United States, as at present orport of the least of the least of the least of the least to the least them, in over the latest of the least of the eg stater and the people should be tomably affected to that important abject, and that it might be considered and finally disprayed of m a monner best calculated to promote the cuts of the constitution, and subserve the public interests. Having thus conscientionally discharged as constitutional duty. I deem a proper, on this occasion, without a more particular reference to the rives of the subject then expressed, to have it for the present to the investigation of an enlightened people and their representatives.

In conclusion, permit me to intoke that Power which superintends all governments, to intuue into your deliberations, at this important eriss of our history, a spirit of mutual lorbearance and conclusion. In that spirit, was our union formed, and in the spirit must it be preserved.

ANDREW JACKSON.

Washington, December 6, 1831.

# NILES' WEEKLY REGISTER.

FOURTE SERIES.] No. 15-Vot. V. BALTIMORE, DEC, 17, 1831. (Vol. XLI. WHOLE No. 1.056

THE PAST-THE PRESENT-FOR THE PUTURE.

#### EDITED, PRINTED AND PUBLISHED BY H. NILES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN ADVANCE.

The matter of the present sheet is not variousbut no less valuable on that account. Many pages must also in session, present many things that would be glanly laid before my readers. I shall, as before observed, make strong efforts to keep pace with events. The raand encourages a desire to cheupen its price as ability is afforded; and yet farther extend its eirenlation. A feeling, perhaps, nearly as strong as a regard for personal profit, leading me to wish the latter-but without any lurking disposition to interfere with the business or pursuits of other publishers.

By an arrangement made, and at extra cost and labor, the very able report of the committee of the New York convention on the manufacture of iron, is published and distributed herewith, as an "Addendum" to the current volume of the RESISTER. A calm and careful exammation of the facts it sets forth, is warmly recommended to The friends of domestic industry will find encouragement in them, and the advocates of what is called three trade? much matter for reflection. The examinations of a certain report, is severe-but such errors, (if they may be called by so mild a term), richly merated the ample exposure which they have met with.

From the distant location of the secretary of the comtwittee on iron, and the almost impossibility that errors should not be made in preparing such manuscript statements for the press-a few mistakes were committed by us, and certain corrections have also been made by the author or compiler of the report. None of them are very material -but have been corrected tor a part of our impression, and will be so for the numerous copies that are about to be distributed in pamplilet form, by order of the permanent committee.

Er P The annual treasury report has caused much speculation and remark. The "Globe," of the 9th, has thought it necessary to vindicate, or rather excuse, the wide range of the secretary, as supposed to interfere with many things that do not belong to his department at alf-and the "Telegraph" comments very freely on such interference. The "Globe" also dis-sents from the opinions of the secretary as to the bank of the United States, and they seem to have given the venerable editor of the "Richmond Enquirer" the horrors -- but the strangely moderated rone of the president's message in respect to that institution, ought to have prepared him for something. There are reports of dissen-tions, on various points, and matters of great interest, and to cause much "excitement," we think, may soon be expected from Washington, and elsewhere.

The treasury report has produced a "sensation." It is given entire in the present sheet, together with that of the secretary of the navy, which fitted the business of the week better than that of the secretary of war, being

The National Intelligencer, speaking of Mr. McLane's report, says-

Perhaps there never was a communication from the executive, or any one of the executive officers of this government, that has produced such a sensation as the annual report of the secretary of the treasury to con-gress, which we I id before our readers on Thorsday It would be hazardous to assert which of the hine parties, into which it has been whimsically said that congress is divided, was most astounded by it. For ourselves, we have not been able to draw a long breath since we read it; and cannot pretend to say what we shock of surprise which it gave us."

Vol. XLI.—No. 20.

NATIONAL REPUBLICAN CONVENTION. not, in the present sheet, give such an account of the proceedings of the "National Republican Convention." (which met in this city on Monday last), as is due to the character of that assembly and a record of its procerdings, we shall just now only present some of the leading occurrences, intending as on other like occa-sions, to preserve the details in our next number, with a list of the members, committees, &c. &c.

The very unusual inclemency of the weather preventing the prompt arrival of many of the delegates, though they had seemingly allowed themselves time enough to be present at the opening of the convention-about 130. wever, appeared at 12 o'clock, on Monday, at the Athencom, when gen. Abner Lacock, of Pennsylvanil, was call dito the char, for the time being, and Mr. Thomas P. Ray, of Vagnus, appointed sceretary.

After attending to some preparatory business, and adopting a plan for the organization of the convention, an adjournment took place until 12 o'clock to-morrow. The charman took his seat, and the roll

of members was called-and 155 delegates answered to their names, from seventeen states—the delegates from Tennessee not yet having arrived.

The committee on the organization of the convention having reported-

naving reported—
James Barlour, of Vieginia, was appointed president;
Allen Trimble, of Oho, Juseph Kent, of Maryland,
Peter B. Porter, of New York, and Rubert Temple, of
Vermont, vice presidents; and Juseph L. Tillinghast, of Rhode Island, and Henry Bacon, of Ohio, secretaries. Mr. Barbour, on taking his seat, delivered a brief. but spirited address.

After other proceedings, which shall be fully detailed, Mr. Peter R. Livingston, of New York, having made some remarks with great cloquence and power, named HENRY CLAY, of Kentneky, as a candidate for the presidency of the United States; which was received with loud and repeated plaudits.

The roll was then called, and each member rose in his place, and pronounced his distinct approbation of the nonmation-there were 155 votes, every one for Mr. Clay. The result was received with repeated cheers. from a great crowd of spectators.

A committee was now appointed to prepare an address to the people of the United States, vizz Messrs. A. Hd. Everett, of Massachusetti, Stanert, of Virginia, Bodo of New Jersey, I Musachusetti, Wilson, Johns, of Delaware, Commings, of Massachusetti, Wilson, of New Hampshire. A committee of one from each state was named to notify Mr. Ctay of his nomination. [These appointed a sub-committee, who proceeded immediately to Washiakton.]

The convention then adjourned until 12 o'clock tomorrow.

Wednesday, Provers being offered by the rev. Dr. Wyatt—the president took his seat, and several distin-guished geatlemen were invited to take seats within the chamber of the convention. Several new members appeared and gave in their names.

The committee to notify Mr. Clay of his nomination, presented the following letter from him: Washington, 13th Dec. 1831.

Gentlemen - I have the honor to acknowledge the reecipt of the note which, as a committee of the convention of national republican delegates now assembled in Baltonore, you addressed to me, stating that I had been this day unanimously nominated by the convention as a candulate for the office of president of the United States.

This manifestation of the confidence of a body so disting mannestation of the confidence of a body to dis-tinguished, is received, gentlemen, with lively sensi-bility and profound gratitude. Although I should have been glad if the convention had designated some citizen of the United States more competent than myself to be

the instrument of accomplishing the patriotic objects which they have in view, I do not feel at liberty to de-eline their nomination. With my respectful and cordial acknowledgments, you will be pleased to communicate with the assurance that, whatever may be the event of it, our common country shall ever find me faithful to the union, and the constitution, to the principles of publie liberty, and to those great measures of national puliey which have made us a people, prosperous, respectel, and powerful.

Accept, gentlemen, of my thanks for the friendly manner in which you have conveyed the act and sentiments of the convention. I am, with high respect, your

obedient servant,
Messrs. Peter R. Livingston, &c. &c. Mcsars. Peter R. IAVINGSION, &c. ec. Mr. John SERGEANT, of Pennsylvania, was then named for vice president, by Mr. McNairy, of Tennessee; and, as on the nomination of president, each member rose and expressed his approbation, which was accepted unanimously. A committee was appointed to inform Mr. S. of his nomination.

Among other proceedings, it was resolved, that the convention would, to-morrow, at 4 o'clock pay their respects to Charles Carnolle, of Carrolton, if agreeable to him. And a committee was appointed to wait upon

him.

Adjourned until 10 o'clock to-morrow.

Thursday. The convention was opened after an'eloquent prayer by the rev. Mr. Nevins. The delegates who had arrived in the preceding evening, were called upon, and recorded their votes in layor of the nominations of Messrs. Clay and Sergeant.

Among other business, Mr. Morrow, of Olio, reported that Charles Carroll would be pleased to receive the members of the convention at 4 o'clock this day.

Mr. Lacock reported that the committee had waited upon Mr. Sergeant, who accepted the nomination in the following reply to their note.

Battimore, December 14, 1831. Gentlemen-I have received your note of this date, informing me that the national republican convention, now sitting in this city, have unanimously nominated nie as a candidate for the office of vice president of the United States.

The nomination by a body so enlightened and patriotie, for one of the highest trusts of the republic, is felt to be a very great honor, and is appreciated accordingly. It is the more gratifying, as it associates me in their estimation and support with that distinguished citizen, whose public life and character, marked by undeviating devotion to the best interests of our country, and a spirit as generous as it is elevated, are a sure pledge that an administration under his guidance would be comprehenauministration under his guidance would be comprehen-sive and national, aiming uneersingly to preserve the union, to maintain the supremacy of the constitution and laws, to keep unbroken the public faith and honor, and to regard, with becoming includgence and respect, the hodifferences of opinion among our tellow entreus, which our republican institutions permit and invite. I'd co-operate with him, to the extent of whatever means ! possess, in thus promoting the welfare and happiness of the nation, and rescuring the freedom of opinion and conduct from unconstitutional oppression, would be no less my pleasure than my duty.

Be pleased, gentlemen, to make known to the convention my acceptance of their nomination, and with it, to express to them the unaffected sensibility with which I have received this distinguished proof of their confi-

dence.

I beg you to accept my thanks for the kind and flattering terms of your communication and to be assured of the high respect of, gentlemen, your most obedient JOHN SERGEANT. To Messrs. Abner Lacock, Jeremiah Morrow, William

L. Stone, Robert Stanard, Watter Jones, committee, &c.
A vote of thanks was passed to the National Repullican Committee at Baltimore, and to the committee of arrangement, for the accommodation and courtesies ex tended to the convention and its members.

At 4 o'clock, the convention formed a procession to pay their respects to Mr. Carroll, and then adjourned till 12 o'clock to-morrow.

The state of the s

Friday. The convention was opened this morning with prayer by the rev. Mr. Finley, of the Baptist church. The proceedings of yesterday having been read, Mr. Everett, of Massachusetts, from the committee assigned to that duty, reported an address to the people of the United States, which was unanimously adopted, and ordered to be published, &c.

The convention, after some other business, adjourned

The members of the convention, in attendance, were from Maine 5, New Hampshire 5, Vermont 6, Massa-eliusetts 9, Connectient 5, Rhode Island 4, New York 16, New Jersey 7, Pennsylvania 23, Delaware 5, Maryland 10, Virginia 25, Ohio 18, Kentucky 14, North Carolma 3, Indiana 2, Louisiana 2, Tennessee 1, District of Columbia 5.

YALE COLLEGE. The eatalogue of this flourishing institution is just published, from which it appears that the whole number of under-graduates is 331, viz. seniors 53, juniors 102, sophomores 86, treshmen 90 .-Number of resident graduates 4, medical students 48, law students 44, theological do. 42. Grand total 469,

## ITEMS.

A New York paper says—foreign woul is now ahip-ping from this port to England, the prices there being better than can be procured here, under the present rate

Some degree of "retiracy" by the president, from the

Some degree of retiracy by the president, from the ground previously taken concerning the bank, was anticipated in several of the newspapers.

The reception of the measage at Philadelphia and New York, advanced the stock of the bank from 1284 to 129 and 1293.

Gov. Woll's message to the legislature of Pennsylvania does not admit any thing "judicious" in a tariff that is not efficient.

Though so often warned, people will kill themselves, without intending it, by the use of charcoal, in sleeping

Many persons were named in the legislature of Pentoselvania, as the successor of Mr. Bernard in the senate of the United States - who had resigned; but Mr. Geo. M. Dallas was chosen. We have not yet seen the vote.

Messra. Webster and Frelinghuysen were detained from their seats in the senate by severe attacks of the influenza, which is very generally prevailing. The former took his place on Thursday last.

Walter Bowne, the present mayor of New York, has been unanimously re-elected by the joint ballors of the

councils of that edy.

At Baltimore, notwithstanding the early and very unexpected close of our water communications, the price of oak wood is only \$6 a cord-being kept in check by supplies brought on the rail road; the enal companies, however, have unwisely advanced the price of their stock of luct. In Philadelphia, oak wood was selling at 15 dollars the cord, not withstanding her vast supplies of coal; and at New York, Boston, we, the price of wood had advanced to about three times its usual cost. Wood as New York 12 dollars, at Boston 9-coal in proportion.

A bill has been introduced into the legislature of N. Carolina, to raise a lund for the removal of free persons of color to Liberia, (proposing to lay a tax of ten cents for that purpose on every black poll in the state.)

The court house of Somerset county, Maryland, at Princess Ann, was recently destroyed by fire—the books and papers all saved. The house had stood 87 years. Some of the other buildings in the village took fire, but were not materially injured.

The two Jackson parties in Pennsylvania have been at issue—the one, supported by the present "official organ" of the state, the Philadelphia Inquirer, had fixed the 8th of January, to hold a convention to nominate a

<sup>\*</sup> The companies, however, we see it stated in the United States Guzette, had not enhanced their price. This will make many new customers, as it ought, here-

president, &c .- the other preferred the 4th of March, ! (ustopting the 5th, because the 4th was Sunday), and has succeeded. The latter is Wolf-the former Anti-Walf

In consequence of the late gales and excessively severe weather, there have been many shipwrecks and an unusual amount of suffering on our coast. The details of some of them are terrific.

Eleven persons died of the influenza, at New York,

during the last week.

### TWENTY-SECOND CONGRESS-1st SESSION. SENATE.

December 12. The Vice President of the U. S. at-

tended this day and look the chair of the senate.

Mesure Bibb, Buckner, Brewn, Tuzwell and ForMyth, appeared this day—Mr. Buckner, senator elect
from Missouri, and Mr. Forsyth, re-elected from Georgia, had their eredentials presented, and were sworn in. Similry petitions were presented, amongst which were several from the merchants of the Atlantic cities praying a further reduction of the duties on teas after the 31st. December, 1831.

The following motion submitted by Mr. Hanna, on

Thursday last, was then considered and agreed to.

Resolved, That the committee on Indian affairs be instructed to
inquire into the expediency of an appropriation to extinguish the
Indian title in Indians.

Mr. Hayne, submitted the following resolution for consideration:

considerations:

Resolved, That the committee on the judiciary, he instructed to inquire into the expediency of reviving the set which provided for the publication of the decisions of the Supreme court.

On motion of Mr. Chambers, it was ordered that the exveral officers of the scale who are now officiating, shall continue to act in their respective stations until Monday next.

On motion of Mr. Grundy, the senate went for a short time into executive business, and then adjourned.

December 13. Various petitions and memorials were

presented.

Mr. Grundy moved a resolution to inquire into the propriety of purchasing a law library for the use of the supreme court.

Mr. Moore, moved a resolution requiring the com-mittee of public lands to inquire sa to the expediency of discontinuing the sale of public lands by the auction system, and to authorise the sales to be made in lots of 40 acres.

The resolution offered by Mr. Hayne, yesterday on the expediency of reviving the act providing for the

the expediency of reviving the act providing for the publication of the decisions of the spreame court of the United States, was taken up and agreed to.

The resolution offered yesterlay by Mr. Marcy, directing the secretary to purchase copies of Gales & Senton's Register of Debates, for such members of the senate as have not been heretofore supplied, was taken up; and being amended by the mover, so as to include conies of the debates on the adoption of the constitution,

published by J. Elliot, was agreed to.
Pursuant to notice, Mr. Poindexter asked leave to bring in a bill "authorising appeals and writs of error to the supreme court, in certain cases," which was twice

read, and referred to the committee on the judiciary. December 14. Mr. Smith gave notice that he would to-morrow ask leave to introduce a bill touching the re-

organization of the ordnance department. Several private memorials were presented-as also, a joint resolution of the legislature of Indiana with respect to a grant of a portion of the public lands to sid in

the construction of public roads.

Mr. Eving presented the memorial of the legislature of the state of Ohio, praying the establishment of a dividing line between that state and the territory of Michigal Control of the state of the stat gan-which, on motion of Mr. Ewing, was referred to a scleet committee-which being elected by ballot, consists of Messrs. Ewing, Wilkins, Naudain, Hendricks and Grundy.

The resolutions submitted yesterday by Messrs. Grundy, Moore and King respectively, were severally taken

up and agreed 10.

A message from the president transmitting all the in formation in the possession of the executive relative to the capture, abduction and imprisonment of American civizens, by the authorities of the province of New

Brunswick, were then read.

The vice president communicated from the secretary of the treasury copies of the receipts and expenditures of

the U. States for 1830. The communication from the president touching the

assistance afforded our fellow citizens by the crew of the Spanish brig Leon, was, on motion of Mr. King, referred to the committee on commerce.

The senate then adjourned.

December 15. Mr. Webster appeared to-day and took his seat.

The chair communicated the certificate of election of George M. Dallus, elected senstor to congress from the state of Pennsylvania, to supply the vacancy occasioned by the resignation of Isaac D. Barnard.

Many petitions were presented and disposed ofand notices of several intended motions given, which will sufficiently appear hereafter. Mr. Smith introduced a bill for the organization of the ordnance department. Alter some time spent in executive business, the senate adjourned to Monday,

Monday, Dec. 12. The following gentlemen were announced as laving been appointed by the clair, since the last siting of the house, to compose the several standing committees.

Committee of elections. Messrs. Claiborne, Randolph, Holland, Griffin, Bethune, Collier and Arnold. Committee of ways and means. Messrs. McDuffie, Verplanck, lugersoil, Gilmore, Alexander, Wilde and Gaither.

Committee of commerce. Messrs. Cambreleng, Howard, Sutherland, Lamar, Newton, Davis, of Muss, and Jarvis.

Committee of ctaims. Messrs. Whittlesey, of Olio, Barber, of Cone. McIntire, Patton, Ihrie, Hogen and Rencher.

Committee on foreign affairs. Messrs. Archer, Everett, of Mass. Taylor, Polk, Crawford, Barnwell and Wayne.

Committee on military affairs. Messrs. Drayton, Vance, Blair, of S. C. Mitchell, of Md. Speight, Adair and Wand.

Committee on naval affairs. Mesers. Hoffmon, Carson, White, of N. Y. Anderson, Branch, Milligan and Watmough.

Committee on Indian affairs. Mesers. Bell, Lewis, Thompson, of Georgia, Angel, Storrs, Mason and Lecompte. Committee on manufactures. Messrs. Adams, Lewis,

Condict, Findlay, Horn, Dayan, Worthington and Bar buur, of Va.

Committee ou agriculture. Mesers. Root, McCoy, of Va. Smith, of Penn. Chandler, Jeniter, Wheeler and Tompkins.

Committee on the judiciary. Messrs. Davis, of S. C. Ellsworth, Daniel, White, of Lou. Foster, Gordon and Beardsley.

Committee for the District of Columbia. Messrs. Doddrilge, Washington, Semmes, Armstrong, Thomas, of Md. McCuy, of Pa. and China.

Committee on the post office and post roads. Messrs.
Johnson, of Ky. Conner, Russell, Pearce, Jewett, Johnson, of Vn. and Newnan.

Committee on private land claims. Messrs. Johnson, at Tenn. Coke. Stanberry, Mardis, Marshall, Care, of Indiana, and Bullard.

Committee on the public lands. Messrs. Wickliffe,

Duncan, Hunt, Irvin, Clay, Boon and Plummer.
Committee on revolutionary claims. Messrs. Muhlenberg, Nuckolls, Bouldin, Crane, Bates, of Mass. Hammons and Standifer.

Committee on revolutionary pensions. Messrs. Hubbard, Isacks, Mitchell, of S. C. Denny, Pendleton, Doubleday and Kavanaugh.

Committee on invalid pensions. Messrs. Burges, Fold, Evans, of Maine, Reed, of N. Y. Appleton, Lansing and Southard.

Committee on public expenditures. Messrs. Hall, of N. C. Davenport, Lyon, Thomson, of Ohio, Coulter, Pierson and Henry King.

Committee on the territories. Messes. Kerr, of Md. Creighton, W. B. Shepard, Williams, of N. C. Huntington, Allan, of Ky, and Rosne.

Committee of accounts. Messrs. Allen, of Va. Burd

and Berger.

Committee on versial and unfinished business. Messrs. Reed, of Mass. Kennon and Soule,

Committee on expenditures in the treusury department. Messes, Stephens, Wardwell, and Fitzgerald.

Committee on expenditures in the war department. Messes. A. H. Shepperd, Mann and Febler.

Committee on expenditures in the state department.

Messrs. Lent, Evans, of Pa, and McKay. Committee on expenditures of public buildings, Messrs.

Young, Spence and Tracy. Committee on expenditures in the post office. M. Hawes, Bates, of Maine, and Brodhead, of N. Y.

Committee on expenditures in the navy department. Messrs. Maxwell, Hall, of Tenn, and Harper.

Mr. Adams, of Mass. (the ex-president of the United States), presented fitteen petitions, all numerously subscribed, from sindry inhabitants of Pennsylvania, all of the same purport, praying for the aboltion of slavery and the slave trade in the District of Columbia, and moved that the first of them should be read; and it was read accordingly.

Mr. Adams then observed that it had doubtless been remarked that these petitions came not from Massachusetts, a portion of whose people he had the honor to represent, but from citizens of the state of Pennsylvania. He had received the petitions many months ago, with a request that they should be presented by him, and, afthough the petitioners were not of his immediate constituents, he had not deemed himself at liberty to deeline presenting their petitions, their transmission of which to him manifested a confidence in him for which he was bound to be grateful. From a letter which had accompanied those petitions, he inferred that they came from members of the society of Friends; a body of men than whom there was no more respectable and worthy class of e tizens, none who more strictly made their lives a commentary on their professions -a body of men comprising, in his firm opinion, as much of human virtue, and as little of human infirmity, as any other equal number of men of any ilenomination upon the face of the globe.

The petitions, Mr. A. continued, asked for two things: the first was, the abolition of slavery; the second, the abolition of the slave trade in the District of Columbia. There was a traffic of tlaves carried on in the District, of which he did not know but that it might be a proper subject of legislation by congress, and he, therefore, moved that the petitions he had had the honor of presenting, should be referred to the committee on the af-fairs of the District of Columbia, who would dispose of them as they, upon examination of their purport, should deem proper, and might report on the expediency of granting so much of the prayer of the petitioners as re-terred to the abolition of the slave trade in the district.

As to the other proper of the petitions, the abolition by congress of slavery in the District of Columbia, is had occurred to him that the petitions might have been committed to his charge under an expectation that it would receive his countenance and support. He deemed it, therefore, his duty to declare, that it would not. Whatever might be his opinion of slavery in the abstract, or of slavery in the District of Columbia, it was a subject which he hoped would not be discussed in that house; if it should be, he might perhaps assign the reasons why he could give it no countenance or support. At present he would only say to the house, and to the worthy catzens who had committed their petitions to his charge, that the most salutary medicanes unduly administered, were the most deadly of poisons. He concluded by moving to refer the petitions to the committee on the District of Columbia.

A great number of petitions were presented. Mr. Mercer moved the following resolution, which

was read and laid upon the table, v.z.

was read and land upon the tode, w.z.: Resolved, That there shall be appointed, for the present session, and bereafter, at the commencement of each creams of congress, a committee of seven members of this hour, to be tyled "a com-mittee on roads and canala," whose duty is shall be to take into consideration all such perhipms and matters or things, relating to

roads and casals, and the improvements of the navigation of fivers, as shall be presented, or may come in question, and he referred to them by the house; and to report thereupon; together with such propositions relative thereto, as to them shall seem expedient.

On motion of Mr. Mc Carty, it was

Section of the committee of Indian affairs be instructed to inquire into the expediency of making an appropriation to hold a treaty to extinguish the Indian title to lands within the state of

Ou motion of Mr. Duncan, it was

On motion of Mr. Dillican, 11 was Readed, That the committee on the public lands be instructed to inquire into the expediency of reducing the price of public lands, and of giving a preference to the actual settler. Retaived, That the same committee be instructed to inquire latter the repediency of authorising the sale of public lands in lots of forty acres, or in quarter-quarter sections.

On motion of Mr. E. Everett, it was

On motion of Jan. 7 22s, it was president of the United Readired, That the message of the persident of the United Survey of the Property of the Property of the Thinking upon the subject of the fifth census of the United States, be re-ferred to a select committee; and that said committee be instruc-ed to report a bid fixing the ratio of representation in congress under the fifth census of the United States.

On motion of Mr. Hing, it was

Resolved, That the committee on the territories be instructed to inquire into the expediency of creating a separate territorial government north of the states of Illinois and Missouri, and west

Mr. Wickliffe submitted the following resolution.

which was read and laid on the table: Reasteed, That the secretary of the irresury communicate to this loure, such information as the department may have collected up-on the subject of atenabous marigation, with a riew to the adop-tion of such measures as may be deemed practicable the better to the dependent process of the secretary of the description of the describing of the secretary of the description of which was read and laid on the table:

The speaker laid before the house the following communication from the secretary of the treasury, which was

referred to the committee of ways and means. Treasury department, 8th Dec. 1831 Sin: I have the hunor to transmit, for the information of the house of representatives, an estimate of the ap-

propriations proposed to be made for the service of the year 1832, amounting to \$11.551.154 38 Civil list, foreign intercourse, and mis-

2,407,065 65 cellaneous Military service, including fortifications, armories, ordnance, Indian affairs, revolutionary and military pensions, and

5.736,470 02 internal improvement Naval service, including the marine corps 3,407,618 71

To the estimates are added statements showing-

1. The appropriations for the service of the year 1852, made by former acts, including public debt, gradual improvement of the navy, army, and equipping the militin, subscription to canal stocks. revolutionary claims, and Indian affairs,

11.312.945 00 amounting to 2. The existing appropriations, which will not be required for the service of the vear 1831, and which it is proposed to apply in aid of the service of the year

1832, amounting to 3. The existing appropriations, which will be required to complete the service

of 1831, and former years, but which will 3,423,525 87 be expended in 1831, amounting to

These three last mentioned amounts, together with as much as may remain unexpended of the sum stated in the report on the finances, presented by this department on the 7th instant as the estimmed expenditure in the fourth quarter of the present year, and with such sums as may be appropriated by congress for the year 1832, will complete the whole amount subject to the disposition of the executive government in that year.

There is also added to the estimates a statement of the

several appropriations which will probably be carried to the surplus fund at the close of the present year, either

501,102 78

because the objects for which they were made are com-pleted, or because these sums will not be required for, or will no longer be applicable to them, amounting to 4215,194 48.

I have the honor to be, with great respect, your obe-ment acreant, LOUIS McLANE, dient acryant.

To the hon, speaker of the house of vepresentatives U. The speaker had before the house the third auditor's annual hat of balances—the annual report of the clerk, containing an account of the contingent expenses of his office—also a letter from E. H. Cummins, accompanied by tables, exhibiting the several phases of the 5th cenaus, and the result to each state, and to the U. States, of any ratio of representation that may be assumed from that of one representative from 48,000 to 55,000 souls.

Mr. H'ayne, of Georgia, moved a series of resolutions allotting the various parts of the president's message to

the appropriate committees.

The form of the resolution on the subject of the bank of the United States, as first moved by Mr. Wayne referred that part of the president's message relating to it to a select committee.

Mr. Mc Duffie moved to amend it so as to refer it to the committee of ways and means, which motion, alter debate prevailed, and the house referred it to the committee of ways and means.

Tuesday, Dec. 13. The following gentlemen com-

yesterday by the resolutions of Mr. Wayne.

Ratio of representation under 5th census.—Messrs.

Polk, of Tennessee, Holland, of Maine, Thomson, of Ohio, J. King, of Penn., Thomas, of Louisiana, Barstow, of N. Yurk, Bucher, of Penn.

On internal improvements. - Messrs, Mercer, of Va.,

Blair, of Tenn., Letcher, of Ky., Vinton, of Olio, Craig, of Va., Leavit, of Ohio, McCarty, of Indiana. On the subject of patents—Messra. Taylor, of N. York, Choate, of Mass. Corwin, of Ohio, Potts, of Penn., Widkin, of N. York, Shas Condit, of N. Jeresy, Banks, of

Penn.
Imprisonment for debt.—Messrs. Johnson, of Ky.,
Cooper, of N. J., Kennon, of Ohio, Bonck, of N. Y.,
Cooke, of Ohio, Dewar, of Penn. Whittlesey, of N. Y.,
Militia.—Messrs. Barringer, of N. C., Atlam King, of
Penn., Weeks, of N. H., Pitcher, of N. Y., Dearborn, of
Mass., Cahoon, of Vt. Stewart, of Penn.

On memorial of New England anylum for the blind.

Messrs. Everett, of Mass., Kendall, of Mass., Dickson, of N. Y., Everett, ot Vt., Briggs, of Mass., Cooke, of N. Y.

Heister, of Pean.

Heister, of Pean.

Heister, of Heister, of Meeping public accounts.—Messrs.

Wayne, of Geo., White, of N. Y., Darenport, of Virginia,

Greenell, of Mass., Win. B. Shepard, of N. C., Babeoek,

of N. Y., Slude, of Vt.

On the subject of president and vice president, &c.— Messrs. McDuffle, ot S. C., Root, ot N. Y., McGoy, of Va., Adsir, ot Ky., Hughes, of N. J., Thompson, of Geo., Thomas, of Mil.

On the affaire of the library.—Messes. Everett, of Mass., Verplanck, of N. Y., Wayne, of Geo.
A great number of petitions were presented this day.

Amongst others-

Mr. Everett, of Massachusetts, presented a petition praying for the settlement of the Oregon territory under the authority of the United States. Lest his opinions on the matter involved should be unstaken from the fact of his having presented the petition, he considered it a duty to state that he could not urge the granting the prayer of the petition at this time-because it would be impossible to grant it, without viol ting the stipulations of the treaty on this subject with Great Britain. was, however, one view of the subject in which it required the consideration of the house. It is stated in the memorial, that flourishing settlements of British subjects existed in the Oregon territory. If this were so, it was in violation of a stipulation agreed to between Great Britain and the United States, that, during the convention, no settlement should be authorised to be made on the debateable lands, by the citizens of either country. This was a matter that required to be looked to, and was an appropriate subject of inquiry for the committee on foreign relations.

Mr. Elisworth, of Connecticut, presented the memorial of sundry entizens of Connecticut, interested in the claims for spoliations by French cruisers prior to 1800, which claims were reliaquished by the government of the United States by the treaty of 1803, praying relief in the premises at the hamls of congress; and moved that it should be referred to a select committee.

Mr. Polk, of Tennessee, thought that the memorial should be referred to the standing committee on loreign relations, and moved that it be accordingly referred to

that committee.

Mr. Ellsworth replied, and contended for its reference to a select committee. He was supported by Mr. Admins. Mr. Everett, and Mr. Druyton. Mr. Howard moved to lay the memorial on the table. Mr. Hoffman, and Mr. McDuffe were for referring it to the standing committee. The memorial was then referred to the standing committee on foreign relatious.

Mr. Post was elected chaplam by ballot.

The house proceeded to the consideration of the resolution moved yesterday by Mr. Mercer on the subject of creating a committee to be styled "a committee on roads and canals "

A debute arose on this resolution between Mr. Met-The former chell, of South Carolina, and Mr. . Hercer. gentleman protested against the adoption of the resolualways been found competent to take charge of this business heretolore, but especially because the adoption of such a resolution would lead to an impression that the house was disposed to systematize internal improvement, and with the present high duties on imports, &c. was disposed to soften and sooth, rather than to irritate existing discontents, as he believed the adoption of this resolution would. Mr. M. took occasion to say, that towards this object (concitation), he was more than glad to hear the patriotic remarks which had fallen from the gentleman from Massachusetts, (Mr. Adams), yesterday.

Mr. Mercer expressed unfeigned astonishment at the ground taken by the gentleman from South Carolina, believing that there was nothing in the resolution which went in any manner to commit the house either upon the general principle of internal improvement, or to any particular action under that principle. No one could be more disposed to the course of concidention recommembed by that gentleman than he (Mr. Mercer) was, But he could not perceive any connection between that argument and the resolution before the house, which was argument and the resolution before the nouse, when was a mere matter of form, intended to raise a general committee for all cases of a similar nature, instead of appointing general committees on particular cases, as was done yesterday. A standing committee of this character had for many years existed in the other branch of con-gress, to the great convenience of that body, and he could acc no possible substantial objection to the same course here.

Mr. Craig, of Virginia, not perceiving any benefit to arise from prolonging the discussion, moved to lay the resolution on the table.

This motion was negatived.

Mr. Speight, of North Carolina, wishing to present his views on the subject, and not desiring to proceed today, because of the lateness of the hour, moved to postpone the further consideration of the resolution until tomorrow.

The house refused to postpone it.

Mr. Speight then moved an adjournment; which was

carried. And the house aljourned accordingly.

Wednesday, Dec. 14. Among the memorials this
day presented, was one by Mr. Sevier, from the legislature of the territory of Arkansas, praying that the laws for the government of said territory, may be so smended as to give the election of governor and secretary of the territory to the people. In presenting the memorial Mr. Sevier took necession to say that this memorial contained sundry charges of misconduct and mal-administration against the present governor, (Mr. Pope), from which he wished it to be understood that he himself entirely dissented. Upon the motion of Mr. Sevier, the memorial was referred to the committee on the terri-

Upwards of 70 petitions were presented.

Several bills of a private nature were reported, and made the order of the day for to-morrow.

On motion of Mr. Wickliffe, that part of the secreta ry of the treasury's report which relates to the public lands, was referred to the standing committee on publie lands.

On motion of Mr. Hoffman, the report of the com. missioners of the navy pension and navy hospital funds,

The house resumed the consideration of Mr. Mercer's motion for adding to the standing committees of the house, a committee on roads and canals.

Mr. Sheight, of N. Carolina, and Mr. Doubleday, of

New York, addressed the house against the motion; Mr. Mercer replied, and was followed by Mr. Muchell, of S. C. in further opposition to the resolution—Mr. Mitchell's speech was arrested by the expiration of the hour allotted to such discussions.

The Speaker laid before the house a letter from the secretary of the treasury, transmitting a statement of eles imported into the United States, and re-exported therefrom during the years 1828, 1829, 1830.

From this statement it appears. That in the year 1828, the accruing duties

\$29,951,915 4,001,665 the drawbacks payable

In the year 1829, the secruing duties were 27,689,731 the drawbacks payable 4,213,168 In the year 1830, the sceruing duties were 28, 299, 159 4,511,182

the drawbacks payable The speaker also laid before the house an account of the recents and expenditures of the government for

1830-laid on the table.

The speaker laid before the house a long and interesting communication from Peter S. Duponceau, of Philadelphia, upon the subject of silk manufactures, accompanied by samples of plush for hats, manufactured at Philadelphia, from American silk; of gros de Naples, for ladies' dresses, manufactured at Manchester, in England, from American silk; and thrown silk, in the unhoried state.

The letter and samples were referred to the committee on agriculture.

A message was received from the president enclosing Spanish brig Leon to the American ship Minerva, wrecked on the Bahama banks—and suggesting the propriety of granting an indemnity to the crew of said ves-

Thursday, Dec. 15. Many resolutions for enquiry or instruction were offered—aming them the followings On motion of Mr. White, of N. Y. it was

On motion of Mr. White, of N. Y. it was Residend, That a select committee he appointed to take into consideration the state of the gold and silver some of the United hereign coins a legal tender in the payment of debty and also to report such amendments of the existing laws regulating the mint of the United States as may be deemed expedient; and that said committee have leave to report by bill or otherwise. On motion of Mr. Buddertuge, it was convergence to be in-

Resolved. That the committee on internal improvements be in-structed to inquire into the expediency of providing for the pre-servation and repair of the Cumberland road.

scration and repair of the Cumberland road.

(In miction of Mr. Screent, it was institute of P-anyltania, more repaired, and the properties of the screen of

Mr. Drayton, from the committee on military affairs, reported a bill for the adjustment and settlement of the claims of the state of S. Carolina against the U. States; which was twice read, and made the special order of the day for Wednesday the 28th day of the present month.

Mr. Mitchell concluded his speech on the resolution concerning internal improvements. Mr. Wilde moved to reler the question to a committee of the whole.

Mr. Davis, of Mass. considered the whole debate unimportant. Standing committee or select, there must be

Names were nothing. Mr. Mitchell called for the year and nays on the question of agreeing to the resolution, and they were taken es follows:

Yeas 96-nays 90.

Mr. Adams was at the head of the list of year. The es may be given hereafter; but the "Intelligencer" says of the vote—The reader would fall into a great error, if he were to suppose the vote of yesterday, by error, it he were to suppose the vote of yesterday, by yeas and may, in the house of representatives, as indi-eating the true sense of the house upon the general sub-ject of internal Improvement. The question regarded only the mode of transacting the business of the house. We have not the least doubt, that there are fully two-thirds of the members of the house of representatives who are free from any constitutional scruples on the subject of internal improvement, as will be seen whenever any expedient measure of that description is pre-sented for their decision.]

PUBLIC DOCUMENTS

Transmitted to the congress of the U. States, Dec. 1831.
TREASU BY REPORT ON THE FINANCES.

In oberlience to the directions of the "act to establish the treasury department," the secretary of the treasury respectfully submits the following report:

1. Of the public revenue and expenditures.

The receipts into the treasury, from all sources, during the year 1829, were \$24,827,627 38

The expenditures for the same year, in clitding payments on account of the pubswards under the first prticle of the treaty of Ghent, were 25,044,358 40

The balance in the treasury on the 1st January, 1830, was 5,753,704 79 The receipts from all sources during the

year 1830, were Viz: 24.844,116 51

21,922,391 39 Lands (statement D) 2,329,356 14 Dividends on bank stock (E)

102,368 98 Incidental recents (E) Making with the balance, an aggregate of 30,599,821 30 The expenditures of the same year were 24,585,281 55

Viz. Civil list, foreign intercourse, 3,237,416 04 and miscellaneous

Military service, including fortifications, ordnance, Indian affairs, pensions, arming the militia, and in-

ternal improvements 6.752,688 66 Naval service, including the

gradual improvement of the navy 3,239,428 63

l'ublic debt 11,355,748 22

Leaving a balance in the treasury, on the 6.014,539 75 1st January, 1831, of The receipts into the treasu-

ry during the three first quarters of the present year, are estimated at

20,653,677 69 Viz: 17,354,291 58 Customs

Lands (G) 2,479,658 90 Runk diri.

dends (H) 490,000 00 Incidental re-

ccipts (H) 111,987 26 And the indem-

nity under the Danish con-217,739 95 vention

The receipts for the fourth quarter are estimated at 7,346,735 18

(Including indemnity under the Danish convention. )

Making the total estimated receipts of the year 28,000,412 87

And with the balance on the 1st January, 34.014,952 62

The expenditures for the three first quarters of the present year are 21.159.778 97 estimated at (1) Viz: Civil list, foreign intercourse. and miscella-2,507,614 44 neous Military service,

including fortifications,ordnance, Indian affairs, arming the militia, & internal im-

provements 5,649,017 22

Naval service. including the gradual improvement of

the navy 3.019.667 85 9,983,479 46 Public debt

The expenditures for the 4th quarter, including \$6,205,public debt, are estimated, on data furnished by the respective departments, at

9.807.422 28

Making the total estimated expenditures 30.967.201 25 of the year

And leaving in the tressury, on the 1st January, 1832, an estimated balance, including \$439,475 13, on account of the indemnity under the Danish con-

3.047,751 37 vention, of Which, however, includes the funds, estimated at \$1,400,000, heretofore reported by this department as

not effective. The appropriations remaining unsatisfied at the close of the year, are estimated at \$4,139,823 13; but of this

amount, it is estimated by the proper departments,

1. That the sum of \$3,423,525 87 only will be required for the objects for which they were appropriated.
2. That the sum of \$501,102 78 will not be required, and may therefore be considered as an excess of appropriation, and is proposed to be applied, without being re-appropriated, in aid of the service of the year 1832, as will more fully appear when the estimates for the ap-

propriations for that year are presented.

3. That the sum of \$215,194 48 will be carried to the a nature sum or \$213,129 as will be carried to the surplus funl, either because the objects for which it was appropriated are completed, or because these moneys will not be required for, or will be no longer applicable

to them.

11. Of the public debt. The payments on account of the public debt, during the first three quarters of the year, have amounted, as has been 9,983,479 46 already stated to

Viz: 8,891,049 97 On account of principal 1,092,429 49

And of interest And it is estimated that the payments to be made in the fourth quarter of the

6.205,810 21 year will amount to V 12: 5,908,810 21 On account of principal

997 000 00 And of interest

Making the whole amount of disburse-16,189,289 67 ments on account of the debt in 1831

This sum will be increased by purchases of stock which have been authorised, but which have not yet been fully reported.

were applied from the appropriation made for the year, \$750,000.

under the 2d section of the sinking fund act of 1817; and the remaining \$6,189,289 67, were applied, with the sanction of the president, under the authority of the 1st section of the act of 24th May, 1830.

The stocks redeemed, by the application of that por-tion of the above sum disbursed on account of the principal, are as folions-viz:

1. Of the funded debt. 1. Of the funded debt.
The residue of the five per cents created under the set of the 10-h of April, 1816, in payment of the United States sub-

scription for the shares owned in the bank of the United States 4,000,000 00 The exchanged four aid a half per cent. per act of 3d of March, 1825 1.539.336 16

The four and a half per cent. per act of 5.000,000 00 26th May, 1824 The five per cent. per act of 15th May,

999.999 13 And a part of the four and a half per cent. of the 24th of May, 1824 3.260,475 99

2. Of the unfunded debt, exclusive of \$228 64, converted into 3 per cent. stock.

The old registered debt 8 00 Frensury notes 685 00 Mississippi stock

After these payments, the public debt, on the 2d of January, 1832, will be an follows-viz: 1. Funded debt.

Three per cents, per act of the 4th of August, 1790, redecinable at the pleasure 13.296,626 21

of government Five per cents, per act of 3d of March, 1821, redeemable after the 1st January,

4.735,296 30 1445 Five per cents. (exchanged) per set of the

20th April, 1822, one third redeemable annually after the 31st December, 1830, 56.704.77 1831, and 1832

Four and a half per cents, per act of the 24th May, 1824, redeemable after the 1,739,524 01 1st day of January, 1832

Four and a half per cent. (exchanged) per act of 26th May, 1824, one half redeem able after the 31st day of Dec. 1832, the 4,454,727 95 residue after the 31st day Dec. 1833

24 282 879 24

2. Unfunded debt.

Registered debt, being claims registered prior to the year

1798, for services and supplies during the revolutionary war, 27,919 85 7,116 00 Treasury notes 4 320 09 Mississippi stock

39,355 94

Making the whole amount of the public debt of the United States 24,322,235 18

111. Of the estimates of the fublic revenue, and expen-ditures for the year 1832.

The great commercial activity prevailing in the Unit-cil States has contributed not only to enlarge the revecd States has contributed not only to entarge the revenue from entoms for the present year beyond the estimates, but will probably earry that of the next year to a conding on the 30th of September last, are estimated at the 30th of September last, are estimated at \$97,302,858, and the exports at \$80,372,5661 of which, \$962,418,233 were domestic, and \$18,324,333 foreign pro-

ducts. The duties which secrued during the first three quarters of the present year, are estimated at \$27,319,000; and those for the fourth quarter, at \$6,000,000. Some deduction, however, will be made from these before they deduction, nowever, with or made from these before they can reach the treasury, on account of the reduction on the duties on coffee, tea, cocoa, and salt, by the acts of the 20th and 29th May, 1830, and which may be estimate thy reported.

Of the amount disbursed for the debt, \$10,000,000 on the 1st of January, 1832, to the amount of about 13,365,202 16

The receipts from the public lands, during the present; year, it will be perceived, have likewise exceeded the estimates, and indeed have gone beyond all former example. It is believed that, notwithstanding the large amount of scrip and forfeited land stock that may still be absorbed in payments for lands, yet, if the surveys now projected, be completed, the receipts from this source of revenue will not fall greatly below those of the present year.

From all the information which the department has been able to obtain, the receipts into the treasury during the year 1832, may be estimated at 30,100,000 00

26,500,000 00 Public lands 3,1100,000 00 Bank dividends 490,000 GO Incidental receipts, includ-ing arrears of internal

duties and direct taxes 110,000 00

The expenditures for the year 1832, for all objects other than public debt, are estimated at

Viz: Civil, foreign intercourse, and miscellaneous 2,809,484 26 Military service, including

fortifications, orda nee, Indian affairs, arming the militin, and internal improvement

6,648,099 19 Naval service, including the gradual improvement of the 3,907,618 71

Which, being deducted from the estimated receipts, will leave a balance of 16,734,797 84

An exhibition of the transactions of the treasury will show that this department has endeavored to carry into effect the policy indicated by the laws and the views of the president in regard to the early extinguishment of the public delit; upwards of forty millions will have been applied to that object from the 4th of March, 1829, to the 2d of January, 1832, inclusive, of which about six-teen millions and a half will have been deawn from the tressury during the present year.

The occasion is deemed a propitious one to bring to the view of the legislature the subject of the debt, with a view to its redemption at a period not only earlier than has been heretofore anticipated, but before the termination of the present congress,

The entire public debt, on the 2d of January next, as has been already shown, will amount to \$24,822,235 18

The amount of the receipts into the treasury during the year 1832, after satisfying all the demands of the year other than on account of the public

debt, are estimated, as above, 16,734,797 84

To this may be added the balance in the treasury on the 1st of January, 1832, estimated, (exclusive of the meficetual tunils and the Danish indemnity), at

1,208,276 24

17,945,074 08 From this aggregate of ofter deducting the amount of the unsatisfied appropriations already estimated at 5,423,525 87 there will remain a surplus, in the year 14,519,548 21 which, unless congress should enlarge the appropriations for other objects, may be applied to the public debt.

The interest on the delit, during the year

1832, may be estimated at

Leaving for the principal in that year 14,019,548 21

500,000 00

Which, being applied to that object, will leave the total amount of the public debt,

at the close of the year 1832, 10.302.686 97 The government, however, has other means which, if congress see proper, may be applied towards the payment of the debt, viz: the shares in the bank of the United

States, amounting, at par to \$7,000,000, but which, as will be presently explained, may be estimated at not less than

8,000,000 00

In that event, the amount of the debt, on 9 302 686 97 the 1st of January, 1833, would be but

Which sum, together with a fair allowwhich sum, together with a law attom-ance for the cost of purchasing, at the mar-ket price, the stocks not redeemable in the coarse of the proposed operation, might be supplied in the months of January and February, 1833, by the application from the revenues of that year of a sum equal to 2-12 of the amount applied from the urdinary revenues to the debt in the year 1832-

2,503,258 02

It may be further observed, that, should any diminution take place in the estimated revenue, or should the expenditure exceed the estimated amount, the deficiency which either event might produce in the means of the treasury, applicable to the debt, would be supplied by the amount reserved in this estimate for the unsatisfied balances of appropriations. For, although that sum con-stitutes a legal charge on the treasure, to be met as occasion equires, yet, in any estimate of present means, it may be considered rather as a nominal than a real charge.

It will be thus perceived that the government has the means, if properly employed, of reimbursing the whole of the public debt, by purchase or otherwise, on or before the 3d of March, 1833.

The moral influence which such an example would necessarily produce throughout the world, in removing \*pprehension, and inspiring new confidence in our free in-stitutions, cannot be questioned. Seventeen years ago, the country emerged from an expensive war, encum-bered with a debt of more than one hundred and twentyseven millions, and in a comparatively defenceless state. In this short period, it has promptly repealed all the direct and internal taxes which were imposed iluring the war, relying mainly upon revenue derived from import, and sales of the public domain. From these sources, besides providing for the general expendature, the frontier has been extensively fortified, the naval and marnine resources strengthened, and part of the debt of gratitude to the survivors of the revolutionary war We have, moreover, contributed a large discharged. share to the general improvement, added to the extent of the union by the purchase of the viduable territory of Florida, and finally acquired the mount of extinguishing the heavy flebt incurred in sustaining the late war, and all that remained of the debt of the revolution.

The anxious hope with which the people have looked forward to this period, not less than the present state of the public mind, and the real interests of the community at large, recommend the prompt application of these means to that great object, if it can be done consistently with a proper regard for other important considerations.

Of these means as has already been shewn, the shares owned by the government in the loak of the United States are an indispensable part; and, that for the remleursement of the debt within the period contemplated, it will be necessary to effect a sale of them, for a sum not less than eight millions of dollars.

The stock created by the United States for their subscription to the bank, having been actually paid previously to the 1st of July last, their interest in that institution has ceased to be nominal merely, and the shares form a part of the fiscal resources applicable to the public demands.

The objects connected with the early reimbursement of the public debt, are more important than the interest

A sale of so large an amount in the public market A sale of so large an amount if the public market could not be expected to produce more than the par value; and, il attempted under circumstances calculated to shake public confidence in the stability of the institution would, in all probability, prove wholly abortive. For these reasons, it is deemed advisable to effect a sale to the bank itself-a measure believed to be practicable on terms satisfactory both to the United States, and that institution

In submitting this proposition to the wisdom of congress, it is not intended that its adoption should be founded on any pledge for the renewal of the charter of the bank, considering, however, the connection of the proposition with the bank, and viewing the whole subject as a necessary part of the plans for the im-provement and management of the revenue, and for the support of public credit, the undersigned feels it his duty to accompany it with a frank expression of his opinion .

The act of congress to establish the treasury slepartment, makes it the duty of the secretary of the treasury to digest and prepare plans for the support of public oredit, and for the improvement and management or the revenue. The duties enjoined, as well by this act, as by the subsequent one of the 10th of May, 1500; requiring the secretary "to digest, prepare, and lay before congress at the commencement of every session a report on the subject of finance, containing estimates of the public revenue, and public expenditures, and plans for improving or increasing the revenues, from time to time, for the purpose of giving information to congress, in adopting modes for raising the money requisite to meet the public expenditures," have been supposed to include not merely the application of the resources of the government; but the whole subject of the currency the means of preserving its soundness.

On this supposition, the first secretary of the treaber, 1790, recommended a national bank as "an lustitation of primary importance to the finances, and of the greatest utility in the operations connected with the since male to congress, show that the same views were entertained of their duties by others who have succeeded him in the denartment.

The performance of the duties thus enjoined by law upon the secretary of the treasury implies, however, no commitment of any other department of the government, each being left free to set according to the mode

pointed out by the constitution.

The important charge confided to the treasury department, and on which the operations of the government essentially depend, in the improvement and management of the revenue, and the support of public credit: and of transferring the public finds to all parts of the United States, imperiously requires from the govern-ment all the facilities which it may constitutionally prowide for these objects, and especially for regulating and preserving a sound currency.

As early as May, 1781, the congress of the United States, convened under the articles of control ration, ap-proved the plan of a national bank, submitted to their consideration by Mr. Morris, then superintendent of the finances, and, on the 31st of December of the same year, "from a conviction of the support which the finances of the United States would receive from the establishment of a national bank," passed an ordinance incorporating such an institution under the name and style of "The President, Directors, and Company of the Bank of North The sid afforded by that institution was ac-America " knowledged to have been of essential consequence doring the remaining period of the war, and its utility sub-

sequent to the peace of little less importance.

The authority of the present government to create an institution for the same purposes cannot be less clear, It has, moreover, the sanction of the executive, legislative, and judicial authorities, and of a majority of the people of the United States, from the organization of the govern-

of the government as a mere stockholder; and it is, ment to the present time. If public opinion can not be therefore, respectfully recommended to congress to authorise the sale of those shares for a sum not less than sometest commentators of the constitution. It is undoubtedly the wisest guide and only effective check to those to whom the administration of the constitution is confided; and it is believed, that in free and enlightened states, the harmony, not less than the welfare, of the community is best promoted by receiving as settled, those great questions of public policy in which the constituted authorities have fong concurred, and in which they have been sustained by the unequivocal expression of the will of the people.

the production of the control of the

The indispensable necessity of such an institution for the fiscal operations of the government in all its departments, for the regulation and preservation of a sound currency, for the nid of commercial transactions generally, and even for the salety and utility of the local banks, is not doubted, and, as is believed, has been shewn in the past experience of the government, and in the general accommodation and operations of the present bank.

The present institution may indeed be considered as neculiarly the offspring of that necessity -springing from the inconveniences which followed the loss of bank of the United States, and the evils and distresses incident to the excessive, and, in some instances, fraudu-lent lastics of the local banks during the war-the promiety of continuing it is to be considered, not more in reference to the expediency of banking generally, than in regard to the actual state of things, and to the multiplicity of state banks already in existence, and which can neither he displaced nor in other manner controlled in their issues of paper by the general government. This is an evil not to be submitted to; and the remedy at present applied, while it preserves a sound currency for the country at large, promotes the real interests of the local banks by giving soundness to their paper.

If the necessity of a banking institution be conceded or shown, that which shall judiciously combine the power of the government with private enterprise, is believed to be most efficacious. The government would thus obtain the benefit of individual segucity in the general management of the bank, and by means of its deposites and share in the direction, possess the necessary power for the prevention of abuse.

It is not intended to assert that the bank of the United States, as at present organised, is perfect, or that the essential objects of such an institution might not be attained by means of an entirely new one, organised upon proper principles, and with salutary limitations. It must be admitted, however, that the good management of the present bank, the accommodation it has given the government, and the practical benefits it has rendered t community-whether it may or may not have accomplished all that was expected from it-and the advantages of en al may was expected from it—and the advantages of its present condition, are circumstances in its favor, en-titled to great weight, and give it strong claims upon the consideration of congress, in any future legislation upon the subject.

To these may be added the knowledge the present bank has acquired of the business and wants of the various portions of this extensive country, which, being the result of time and experience, is an advantage it must necessardy possess over any new institution.

It is to be observed, moreover, that the facilities of espital actually afforded by the present institution to the agricultural, commercial, and manufacturing industry of all parts of the union could not be withdrawn even by transferring them to another institution, without a severe shock to each of those interests and to the relations of society generally.

To similar considerations, it may be presumed, is to be traced the uniform policy of the several states of the modifications as experience may have dictated, or preference to creating new ones.

Should any objection he felt or entertained on the score of monopoly, it might be obviated by placing, through the means of a sufficient premium, the present institution upon the looting of a new one, and guarding its future operations by such judicious checks and limitations as experience may have shown to be necessary.

Thus e considerations, and others which will be adverted to in a subsequent part of this report—the experience of the department in the trying periods of its history, and the convictions of his own judgment, concurring with those of the ensurent men who have preceded the undersigned in its administration—induce I mm to recommend the expediency of re-chartering the present bank at the proper time, and with such multifactions, as, without impairing its usefulness to the government and the community, may be calculated to recommend it to the approbation of the executive, and—what is vitally important—to the confidence of the people.

Should congress deem it expedient to authorise the sale of the bank shares, for a sum on tless than eight millious of dollars, the reimbursement of the public debty on pro-form the 3d of March, 1833, may be confidently anticipated; and, from that period, the amount of revene applicable to that object will be no longer required.

The yeriaion and afteration in the existing duties which will be called for by this state of things cannot too early engage the attention of congress. The information requisite to the establishment of a scale of inities upon a permarcent and satisfactory basis will require time; and a system in which to many important interests are involved will be better subserved by prospective legislation through satisfactory basis subserved by prospective legislation through satisfactory.

The revenue derived from the present duties cannot be saidly dispensed with before the period assigned more than the extingualment of the public debt; but such revised system as congress may, in its wislow, previously provide, may, with entire propriety, be authorised to take effect from and alter the 3d of March, 1833.

Independently of the charge for the public flebt, the revenue for the expenditures of the government, as at present authorised, need not, it is estimated, exceed,

annually, the sum of \$13,500,000.

It is believed, however, that there are other objects of expenditure of obvious expediency, if not of indipensable necessity, which it may be supposed have been postponed by the higher obligation of paying the public debt. The present occasion is deemed proputions to provide for those objects in a manner to advance to glory and prosperity of the country, without meon ventence to the people.

It is therefore respectfully recommended, that in addition to the expenditure as at present authorised, appropriations may, at the proper time, be provided for the following objects:- For augmenting the naval and military resources; extending the armories; arming the militis of the several states; increasing the pay and emoluments of the navy officers to an equality with those of the army, and providing them with the means of nautical mstruction; enlarging the navy hospital tund; strength-ening the irontier defences; removing obstructions from the western waters; for making accurate and complete surveys of the coast, and for improving the coast and harbors of the union, so as to afford greater facilities to the commerce and navigation of the United States. The occasion would also be a favorable one for constructing custom-houses and warehouses in the principal commercial cities, in some of which they are indispensably neecssary for the purposes of the revenue; and likewise for providing for the proper permanent accommodation of the courts of the United States and their officers.

In many districts the compensation of the officers of the customs, in the present state of commerce, is manificient for their support, and inadequate to their services, as a part of the general system, however, and effectually to guard the revenue, the services of such efficers are necessary, without regard to the amount of business; and it as believed expedient to make their allowances commensurate with the vigilance required and the duties to be performed. A further improvement may be made in the mole of compensating the officers of the customs, by substituting salaries for fees in all the collection districts, by which, at a comparatively small expense to the treatury, commerce and navigation would be releved from burthens, always inconvenient, if not oppressive. It is believed that the public property and offices at

It is believed that the public property and offices at the seat of government require improvement and extension, and that farther appropriations might be made to adapt them to the increasing business of the country. The solaric of the public ministers abroad must be acknowledged to be interfy inadequate either for the dignity of the office, or the necessary conduct of their formations.

As once liveign courts, and those whose relations towards the United States are the most important, the expenses incident to the station are found so burstens one as only to be met by the private resources of the minister. The tendency of this is to throw those light trusts altogether into the hands of the rich, which is excitably not necording to the genius of owr system. Such a provision for public ministers as would obviate these circles, and canable the minister to perform the common daties of hospitality to his countrymen, and promote so-cal intercourse between the cirizens of both nations would not may elevate the character of his country, but essentially improve its public relations.

In addition to these objects, farther provisions may be made for those officers and soldiers of the revolution, who are yet spared, as monuments of that patriotism and self-devotion, to which, under Providence, we owe our

multiplied blessings.

For the foregoing jumpores, together with the existing. For the foregoing jumpores, together with the existing. For the foregoing jumpores, together class and a model of general fig., and a control of general fig., an

The sources from which the revenue has hitherto been derived are the imports, public lands, and bank disidends. With the sale of the bank stock the latter will cease, and as the imports, secording to any scale of duties, which it will be expedient and practicable to adopt, will be amply sufficient to need all the expenditure; that portion of the revenue heretofore drawn from the sale of the public lands may be dispensed with, should congress

see fit to do so.

On this point the undersigned deems it proper to observe that the creation of numerous states throughout the western country, now forming a most important part of the union, and the relutive powers claimed and exercised by congress and the respective states over the public lands, have been gradually accumulating causes of inquietted and difficulty, if not of complaint. It may well deserve consideration, therefore, whether at a period demanding the amicable and permisent adjustment of the sarious subjects which now agitate the public mind, these may not be substantagiously insposed of in common with the others, and upon principles just and satisfactory to all parts of the union.

It must be admitted that the public lands were eeded by the states, or subsequently sequired by the United States for the common benefits; and that each state has an interest in their proceeds, of which it eannot be judy deprived. Over this part of the public property the powers of the general government have been uniformly supposed to have a peculiarly extensive scope, and have been constructed to authorise their application to purposes of education and improvement to which other branches of reveous were not iteemed applicable. It is not practicable to keep the public lands out of the market; and the present mode of disposing of them is not the most profusable either to the general government or to the states, and must be expected when the proceeds shall be no longer required for the public debt, to give rise to new and more serious ableston shell to give

Under these circumstances it is submitted to the wisdom of congress to decide upon the propriety of disposing of sill the public bands, in the aggregate, to those states within whose territorial limits they lee, at a fair prec, to be settled in such manner as might be astilactory to all. The aggregate price of the whole may then be apportioned among the several states of the union, according to such equitable ratio, as may be consistent with the objects of the original cession, and the proportion of each may be paid or secured directly to the others by the respective states purchasing the land. All cause of difficulty with the general government on this subject would then be removed; and no doubt on be entertained, that, by means of stock issued by the buying states, bearing a moderate interest, and which in consequence of the reimbursement of the public fields, in consequence of the reimbursement of the public fields, would seaplure a great value, they would be able at once to pay the amount upon advantageous terms. It may not be unreasonable also to expect that the obligation to pay the annual interest upon the stock thus created would dimnish the motive for selling the lands at price calculated to impair the general value of that kind of property.

It is believed, moreover, that the interests of the several states would be better promoted by such a disposition of the public domain, than by sales in the mode hitherto adopted. And it would at once place at the disposal of all the states of the union, upon fair terms, a fund for purposes of education and improvement, of instituted the promoted of the purpose of the union, and improvement, of instituted the promoted of the union.

Should congress deem it proper to dispense with the public lands as fature source of revenue, the amount to be raised from imports after the 3d of March, 1833, according to the foregoing estimate, will be \$15,000,000 but with a reliance upon the public lands, as herectoforce, it may be estimated at \$12,000,000 -10 which, as the case may be, it will be necessary to adopt the provision for the future.

Whatever room there may be for diversity of opinion, with respect to the expediency of distributing among the several states, any surplus revenue that may casually so-crue, it is not doubted that any scheme for encouraging a surplus for dustribution, or lor any purpose which should make it necessary, will be generally discountenanced. There is too much reason to apprehend, that a regular uniform dependence of the state government upon the revenue of the general government, or an uniform expectation from the same source, would create too great an incentive to high and mequal duties, and not merely disturb the harmony of the union, but ultimately undersine and subvert the purity and independence of the

state sovereigaties.

The public welfare and the stability of the union would be more effectually promoted, by leaving all that is not necessary to a liberal public expenditure, with the people themselves. Their affection for the government would be thereby strengthened, and the sources of individual and national wealth augmented; so that when the government should have cause to increase its expenditures for public emergencies, it might rely upon a people able and willing to answer the call. While these means of the national wealth are thus cherished, the machinery by which duties upon imports are collected and brought into the public treasury may be kept in full operation, and ausceptible of greater efficiency whenever the existence whenever the existence whenever the existence was a support of the stability of the public treasury may be kept in full operation.

It is respectfully suggested, that these considerations, and others that will readily present them selves, point out the duties on imports as the best source of revenue, and peculiarly recommend that these duties should be adapted to the setual expenditure of the government.

The propriety of reasonably protecting the domestic industry is fully conceded; but it is believed that it would neither require nor justily the raising of a larger amount of revenue than may be necessary to defray the expenses of the government. Some of the evils of a surplus, which an excess of revenue beyond the expenditure would necessarily induce, have been already noticed. To these may be added the effect upon the peace and harmony of the country, and upon the safety of the union, which should certainly not be hazarded for any object not of vital importance to its welfare.

If it could be shown that the labor and capital of the United States required greater aid to shield them from the injurious regulations of foreign states, sound policy would rather recommend a system of bounties, by which the duties collected from imports might be directly applied to the objects to be cherished, than the accumulation of money in the treasury. No such necessity, however, is supposed to exist.

The amount of revenue equal to the authorised expenditures of the government, it is the constitutional duty of congress to provide; and to a tariff framed for this object, it is not perceived there can be any reasonable objection. Of this duty the constitution itself precludes all doubt, by authorising both the expenditure and the means of defraving it.

It will be difficult precisely to graduate the revenue to the expenditure. The necessity of avoiding the possibility of a deficiency in the revenue, and the perpetual fluctuation in the demand and supply, render such a task almost impracticable. An excess of revenue, therefore, under any prudent system of duties, may be for a time unavoidable. But this can be hetter ascertained by experience, and the evil obviated, either by enlarging the expenditure for public purposes, or by reducing the duties on such articles as the condition of the country would best admit.

In providing a revenue upon this principle, and for those purposes, the attention of congress will be necessarily directed to the articles of imports from which it duties should be collected, and this is a question of expediency merely, to be desided with a just regard to all the great interests involved in the subject.

To distribute the duties in such a manner, as far as that may be practicable, as to encourage and protect the above of the people of the United States from the advantages of superior skidsmerepilal, and the rival preferences of superior skidsmerepilal, and the rival preferences of superior skidsmerepilal, and the rival preferences of the states of th

The various opinions by which the people of the U. States are thirderl upon this subject, concern the peace and harmony of the country, and recommend an adjustment on practical principles rather than with reference to any abstract doctrines of political commy.

The proposed action of congress will not be directed to introduce or countenance, for the first time, the adaptation of duties for revenue to the protection of American labor and capital. The origin of that lies at the foundation of the government,—and taking root in the act of July, 1789, it has since increased and spread over our whole legislation, has quickened each branch of industry, and affected most of the important relations of the community. That it may have gone beyond the proper standard, and that the present crisis requires that it should be confined within reasonable limits, will not be denied. It ought to be remembered, however, that the amount of the revenue has not at any time exceeded the authorised object of expenditure; and that, in preserving such an equality in future, justice to every portion of the community requires that it should be accomplished without appropriate those great interests which have been providently planted and carefully nourished.

If the annuar of expenditure be regulated by an enlightened economy, and the aggregate of duties fevied on
imports be neither extravingant nor oppressive to the
consumer, it is deem'd to be comparatively unimportant
whether it be collected from many or few articles of importation. It could only become material by eausing
the duties to bear unequally upon particular classes. It
might not be practicable, however, in such a commanity as ours, and in distributing the duties with any reference whatever to the protection of labor, altogether to
avoid that inconvenience. So much of the inconvenience as may be unavoilable, might be temporarily autient of the sake of the national advantages it would
ultimately confer. It may be expected, also, that the
poorer classes, so far as any such inequality would effect
them, w.l.l be generally indemnified by the increased activity given to profitable modes of employment.

Happily for the United States the sum to which it is now proposed to limit the revenue, is not likely to be oppressive on any class, even according to the present numbers of the American population. It is also to be

of continuption, it would annually diminish; while the chespening of transportation by the means of the rapidly increasing facilities of intercourse, would constantly tend to equalize prices, and diffuse the benefits of tabor.

The objects more particularly requiring the aid of the existing duties, upon the principles of this report, are believed to be wood, woodlens, cotton, iron, henry and sugar: as comprehending those articles in which the agricultural and manufacturing industry are more particularly interested.

Upon these articles the average duty collected in the years 1829 and 1830, amounted to \$8,940,393—as is

shewn by the annexed statement.

These duties could not be materially changed at pre-No objecsent, without the effect already deprecated. tion is perceived, however to such gradual reduction of them in future, as may withdraw the aid thus afforded, as the growth and stability of our manufactures will enable them to dispense with d, -- to such a degree, at least, as will, with the aid of an increase of population, and the means of consumption, still leave a revenue adequate to the expendances, or until what may be withdrawn from them, may be levied on other articles which may be found to admit of it.

The additional sum, which, together with the amount of these duties, it may be necessary for congress to provide in a re-adjustment of the tariff will depend upon its decision as to confining the expenditures to the present objects, or of enlarging them, as herein suggested. In the former case the sum of \$4,559,607 00, and in the latter, the sum of \$6,059,607 00 will be required; and in regard to either estimate the provision should be upon a scale sufficiently liberal to guard against the chance of a deficiency. In providing for either sum, the duties may be advantageously retained upon those articles of luxury, or which are principally consumed by the weatthier classes, or upon those not abundantly produced in the United States, in preference to others. The effect of this would be to countervail to the poorer classes, by cheapening their general supply the higher duties on other articles. At the same time the duties may be removed from such raw materials as will admit of it without detriment to our agriculture; whereby the manufac-turers would be coabled to sell cheaper, and also the sooner to dispense with a part of the duties, which may be at present retained for their protection. Any amount of duty upon a raw material is, to its extent, an injury to the manufacturer, requiring further countervailing protection against our own rather than foreign regulations, and is only to be justified by the paramount interests of agriculture. In that ease it would des rve consideration whether the encouragement of an object of agriculture might not be more properly reconciled with the encouragement of the manufacturer, and with greater equality as regards other interests, by bounties, rather than by a duty on the raw materal.

White presenting these views, the burthens to which, the interests of navigation have been subjected by the existing duties on articles necessary in stop-building, have not been overlooked; and while equitably adjusting other interests, this may require from the legislature particular attention. The great importance both of our foreign and consting navigation to the country, and especially to those interests, now requiring to be cherished, cannot be doubted. In the competition which it is obliged to maintain with the commerce of the world, every where the object of peculiar aid, it would seem to demand of the government a liberal support. It is believed that the expenses of building and fitting out vessels of every description, including steamhorts, are injuriously increased by the present duties, and that a drawback of a large portion, if not the whole of the duty on all the articles compared of iron, hemp, flix or copper, whether of foreign or domestic production, used in their construction or equipment, might be authorised, under proper saleguards, with obvious advantage to other interests, and without material detriment to the revenue.

It is hoped, however, that these suggestions will be re-

observed, that relatively both to population and the means present information than is at present in the possession of the department, rather than to present a directed scheme for the fotore revenue.

The undersigned is not insensible to the embarrassments attending such a subject, both from its delicacy and complexit; and the difficulties of reconciling any system of duties, in the present condition of the public mund, with the interests and views of all, are fully appre-These can be surmounted only by the wisdom cuted. and patriotism of the people, and of congress. not doubt, however, that it will be the wish of all carnestly to endeavor to surmount them; and he confides in the forbearance and liberality of an colightened public to accomplish the task. He respectfully suggests subject is to be dealt with in the spirit of a liberal compromise, in which, for the sake of the general harmony, each conflicting interest should be expected to yield a part for the common benefit of all.

The diversity of interests which characterize different portions of the union, arising from geographical admit of that degree of favor to any particular in-terest, which in other countries, differently aituated, may be safely and wisely granted. The industry of each portion of the mion should be equally regarded and gradually fostered, by which means each would as certainly, though more slowly, attain maturity, without the aid of measures dangerous to the general peace and

harmony. Similar considerations prevailed in the formation of the constitution; and at that period the difficulty of drawing with precision the line between rights surresdered and those reserved, at all times great, was increased by a difference among the several states as to their situation, extent, habits, and particular interests. In harmonising these various objects, and conducting them to practical results, the framers of that instrument kept steadily in view "the consolidation of the union, and the general prosperity of the whole." By merging in these, all objects of interior magnitude, the constitution came from their hands "the result of a constitution came from their manus the result of spirit of amilty, and of that mutual deference and concession, which the peculiarity of our political situation rendered indispensable." "The full and entire approbation of every state was not counted upon; but it was hoped that each would consider, that had her interests been alone consulted, the consequences might have been particularly disagreeable or injurious, '

In the government thus formed, were fully and effectually vested the power of making war, peace, and treaties, that of levying money and regulating commerce, and the corresponding judicial and executive powers of expounding and executing the whole.

Upon no other principles, and in no other spirit, can the constitution be administered with safety to the The force of the government is a moral force onian. resting upon the sound action of the public opinion throughout the various portions of the country. Due respect for the rights and duties of the states, and a mild, equal, and moderate exercise of those confided to the general government, with a ready deterence to the will of the people, are believed to constitute the sound-est policy, and to furnish the best safeguards.

The observance of this policy is the duty of the government, and a patriotic sequiescence in measures calcubited to effect it, though they may occasionally act with some inequality, is not less the duty of the people. Considerations of power are not alone involved either in measures or opinions, affecting the interests and harmony of the community; and no measures can, or ought long to prevail without a broad and general support from public opinion. The obligation of laws, constitutionally enacted by the proper authorities, is not to be questioned; but, extreme measures adopted by slender majorities, and obnoxious to the interests and opinions of minorities, powerful in numbers, wealth and intelligence; cannot be persevered in without danger to the general has mony, and without undermining the moral power, not merely of the executive and legislative departments, ecived as proceeding from a sense of official duty, and but also, that of the judiciary, which may be called to intended to avite the attention of congress to the various southin the authority, without the option of decading modes of revising the existing scale of duties from which a selection may be more judiciously made with the aid of each side has important rights; and those of the magnetic process. nority consist in requiring that the power of the majority be exerted with a just regard to their interest solid person are expected. Without a reasonable deference of the property of thout a reasonable deference of the property of the pr

The real strength of the government depends not more upon a harmonious action of its various parts than in producing the same effect upon the various interests

orer which it acts.

Considering the amount of labor and capital employed in manufactures of the greatest importance to the country, and which have already contributed so essentially to our defence and safety, and to the general pros-perity, it could not be expected that they should be sufdenly abautloned. Regarding, at the same time, the diversity of interests resulting from the peculiar situation of the United States, the manufacturing interest itself should be content with a moderate and gradual protection, rather than by extreme measures to endanger the public tranquillity. The indispensable necessity of the aid of the general government for those objects of acknowledged national concern-more especially the improvement of the rivers and harbors which are the great highways of the people—and to which the means of the several states are both inadequate and inapplicatile, could not be withheld without opposition to the prinions of a majority of the people, and the interests of many portions of the union. It is at the same time admitted that this aid should be moderately conferred, and with proper deference to opinions of an opposite character. And it cannot be doubted that too extensive an exercise of the powers of the general government over these objects would ultimately subvert the constitutional sovereignty of the states. It must be acknowledged that the just medium on all these subjects is difficult of attainment; but, in the desire to seek, and in the sagneity to adopt, the best, consists the true policy of an American statesman.

If the adjustment suggested to congress by the views in zarded in this report be in any wise entitled to their respect, it is not unreasonable to hope that the various topies of national concern at pretent engaging the att into of the people, may facilitate rather than embarrass the task. The interests of agreeulture, commerce, and manufactures, and the final disposition of the public lands, are the prominent and necessary, and immediate objects of public policy. As incident, however, and, indeed, necessary to the security and prosperity of these great interests, the preservation of a sound currency cannot escape attention. On the compliess and standard the value and stability of every description of property not less than the settiny of every practic of business, and it is not to be doubted that the commercial and manufacturing industry would be most severely and intendededy affected by any derangement of this spring of their trementation.

The measures of the general government in respect to the tarift, to objects of public improvement, to the public lands, and to the bank of the United States, are the sources of the existing solicitude throughout the country. For the permanent adjustment of all, in a manner to promote the harmony of all parts of the union, and clevate the moral character of the country the windom and patriotism of the government and

the people can alone be looked to.

Independently of the considerations connected with the currency, the interests both of the government and individuals mostered in the bank at the United States, make the stability of that institution an object of great importance. No reason is perceived why this great interest should not be equally considered in the scheme of deference, and concession, and compromise, which the public salety, not less than the national prosperay, so argently recommends. While conflicting interests and opinions on other subjects are invited to meet on

middle ground, and on the alter of common good, each to offer something for the preservation of concord and union throughout this favored haul, the advocates and opposers of the existing system for regularing the currency may also be expected to join in the same patriotic sacrifice.

It is not perceived that any other satisfactory basis for a scheme of general adjustment can be devised, than that which shall pay a just regard to the interests of all, and observe a proper deterence to the public will. On this ground, mainly, one portion of the agricultoral interest has been inside to accommodate opinions, conscientiously formed and ardeatly advocated, to opposite opinions, incre successfully maintained by other and more power-ball interests. The invitation could not be more appropriately recommended than by affording an example in other cases, founded upon the same prunciple. Acquirescence in the public will is not less the duty of government, than of the people themselves. The utmost respect is left for an independent exercise of conscientious opinions; but in a country like ours, though a sense of duty authorities all lair attempts to consince the public mind, it equally distates a ready acquirescence by all, in the public will, finally expressed.

In presenting to the view of congress the means of the government, the bonds due for duties, which are now in suit, has been reserved for this place. The amount of bonds remaining in suit since the commencement of the government, may be estimated on the 50th of September last, at §6,835,821 367 of this sum it is believed that not more than one million of dollars could, under any circumstraces be recovered. The debtors, however, remain legally liable for the whole amount; and, without the hope of ever paying, are thereby kept in a state of

poverty and helplessness.

The act passed at the last season of congress for the relief of certain insolvent debtors, according to the construction which has been given to it, has afforded but little relief to those for whom it was probably intended, it will be the duty of the undersigned, in a subsequent report, in confirmity with that law, to lay before congress the principles and monart of its execution. It may not be out of place, in the mean time, when presenting a general size of the financial means of the government, to recommend that no relance should be placed on these debts.

The punctuality of the American merchant in the navment of duties, in every period of our history, and un-der the most severe vicessitudes, is descrying of the iler the most severe vicessitudes, is deserving of the greatest admiration. Of the whole amount of custom house bonds, falling due in the first three quarters of the present year, only \$46,965 76 have been unnaid. Of seven hundred and eighty-one millions of dollars secured for dates from the commencement of the government to the 30th of September fast, the while loss may be estimated to be less than six pullions of dollars. delanquencies are believed, in most, if not in all instances, to have been the result of unavoidable misfortune, involving, in the rule of the principal, the sureties required by the laws of the United States, by means of the ... isting priority acts, have obtained the benefit of whatever property the debtors possessed at the time of their insolvency. In many instances, their general creditors have either released, or would be willing to release them, if the claim of the government did not render such an act of liberality unavailing. By this means a large number of our lellow citizens, of her character and gence, and qualified by their exertinus to promote the prosperity of the country, are paralyzed in their indusmy, and deprived of the mesos of providing for their families, and contributing to the general stock of labor. It is respectfully arbuitted to the wisdom and generos. ty of congress, whether the occasion of ex inguishing the national debt and relieving the bordens of the community at large, and where the greatest amount likely to be recovered in not required for the public exigencies, is not also propicious for giving absolute relief to those enterprising men who, at tunes of deficulty and need, contributed to enrich the public treasury. The period of the total extoguishment of the national debt will be a period of national rejoicing, and might be properly signalized by such an act of grace to this unfortunate class of our countrymen.

Should congress, however, ilesire to compel the payment of any portion of these debts, or to discriminate among the objects of its clemency, it is believed that a law of greater scope than the present, authorising an in-quiry into the facts, and a discharge of the debtor where there is no Iraul, with or without payment of any parti-cular amount, and returning to each debtor a reasonable per centage of the sum paid, is recommended as expe-dient and necessary.

The secretary of the treasury also transmits a report from the commiss over of the general land office, showing the state of the affairs of that branch of the department. All which is respectfully submitted.

LOUIS McLANE,

reasury department, 7th December, 1831.

## REPORT OF THE SECRETARY OF THE NAVY.

REPORT OF THE RECEIVEMENT OF THE NATY.

Not the president of the United States:

Sir: The secretary of the usay respectfully submits a report of the transactions of this department during the past year. On the procession of our commerce, the erection of divident states of the procession of our commerce, the erection of dividents, the improvement of the navy yards, the purchase of timber and store for future use, and the preservation of live oaks, have been the most prominent objects of the this timerests of the service have received due care; and the results of the whole will be

Many minor subjects connected with the interests of the service have received use care; and the results of the whole will be presented to your consideration with all practurable brevity.

The mansi force in commission has considered of five fingures, the service of the property of the coat, and temporarily used in guarding out the only. The present of the coat, and temporarily used in guarding out lite oak, and in making surveys of the coats, can lardly be considered as a permanent portion of the establishment, while the relieving vessels successed to keep up a comprement in the different squadrons, have, in this and former years, by going out before others returned, added owner batte to the unumber and expense

fore others returned, added somewhat to the number and expense of those actually enumerated as in commission. Our force abroad has been divided between the Mediterranean, the West Indiver, Brazil, and the Pacific. From the first station, the Java, the Pairfield and the Constellation have returned, the former taking the Cape de Verd islands and Liberia in her way homeward. An account of her critice is annexed, as it may be interesting to those specially engaged in African colonization.

interesting to times specially engaged in African coionization.

The Java, on a minute survey, was found to be very defective; and, having been built of inferior materials, expensive repairs on her are not deemed judicious. As she lears the name of one of our trophics during the late war, it is recommended that an appropriation be made for purchasing imber 'to rebuild her, and another, for a similar reason, to rebuild the Cysne. A frame has hereroforce been obtained for the Marcedonius; and an intimately anocisted with our inwal glory, could be capended with much advantage the two enuity years. (1).

Last August the Constellation was ordered home from the Mrietranean after the close of the cruising season, as the usual term of absence would "apire next spring, and a large saving or expense would be made by her wintering in this country, excellent condition, and, after the discharge of erew, was immested plants of the ordinary.

The John Adams is the only vessel which has been added to that station.

that station.

The aquadron there has bern usefally employed in its ordinary duties. At this time a part of it, having lately been engaged in transporting of our former censul at Algiers to his new situation as eharge to Constantinople, is supposed to be in the Archipelage, vaning the result of the chief object of dust mission, and bances in Greece; another part is under order to carry from Gibraltar our diplomatic spent to Naples; and a part of it, as retending into the Atlantic along the coasts of Portugal and her eneighboring dependencies. In consequence of this last increase of duty, and the novel state of our relations with the Ottoman rope, it would be even expedient immediately to increase or man The squadron there has been usefully employed in its ordinary rope, it would seem expedient immediately to increase our usual force in that quarter of the world. To effect that object and others hereafter mentioned, and at the same time to ensure in our navy a continuance of the requisite skill and experience in margating ships of the line, a sum sufficient to put une in commission is included in the general estimate for the ensuing year. C. (No. 1

included in the general estimate for the ensuing year.C. (No. 1 to 13).

The squadron employed in the West Indica has discharged its to 13.

The squadron employed in the West Indica has discharged its accustomed service with fidelity and succeeds, no piraris whatever having been there perpetrated on our commerce; the slight promptly looked after; and the health afthe evens and officers in our public vess-to having been, with a few laminted exceptions, uncommonly good. The only changes in this squadron have been the substitution of the Vincenars for Eracuk, and economy in preparing the relief viscel.

The Brazilian station, notwithstanding the political commonion in its inglobehood, has presented lattle active employment four the squadron. The utmost accurity to our nasignton in that

quarter has eisited, except a recent, and, it is believed, unprecedesqued elian, which has been made to disturb our vessels segaged to seal-catching at the Falkland islands. To guard against
he ill convergences of this claim to our commercial interests,
prompt measures have been taken, so he as the subject commhe ill convergences of this claim to our commercial interests,
prompt measures have been taken, so he as the subject commhe interests and the subject commercial interests
prompt measures have been taken, so he as the subject commtered to the subject commercial interests
prompt measures have been taken, so he as the subject commtered to the subject commercial to the su

figures and recently received use assumes assumed to be possible fills leave.

Iffiliating, the first many states of surger upon the Anserican ship Priceadulity on the N. W. count of Sumarra. the Potonas was ordered to praceed to the Eartle by way of the Cape of Good Happ; and from the caution used in her instructions, and from the energy of her commander, favorable hopes are entertained of procuring some indemnity for that barbaroes and practical injury. She has also been ondered, fairly relaxing Sumarra, ratical injury. She has also been ordered, fairly relaxing Sumarra, value of our commerce in India and China, exceeding five multions annually, and its contant exposure, with many valuable lives, to insoft and rapine, farmish a strong appeal to the government for the protection of a naval force. Should appropriation be made for the ensuing year, in conformity with the estimater or in the Mediterramena, and extend its erusing ground with success, as before suggested; but to goard more efficiently our savigation on the coasts of South America, and provide as ufficient force to visit occasionally the India and China seas. Another benefits the coast of South America, and provide as ufficient force to visit occasionally the India and China seas. Another benefits the coast of South America, and provide as ufficient force to visit occasionally the India and China seas. Another benefits the coast of South America, and review service at the shortest netice, within our own waters, ready to be despatched to the work; and, when for so wated, to be employed on the home station for purposes of protection to commercer, or of discipline to

any weak or endangered point of our triations in any quarter of the workly and, when into is ownted, to be employed on the home the workly and, when into is ownted, to be employed on the home the many, as the interest of the country may appear to require.

A first of the different reseals now in commission, with their neveral stations and commanders, is subjoined. (D.) It is due to show any appear lad charge of the minuter rail duries of this department, to add, that the stretcest attention appears to have been paid it arigin stations, and that, in point of strength and perfect equipment for useful service, the vessels of the United States in commission were probably herer in superior condition.

The construction of the two day, docks has advanced win great and the states of the construction of the two day, docks has advanced win great paid to the construction of the two day, docks has advanced win great points of the past and steam machinery. They present to the eye specimens of stone masonry videom rivalled in beauty and solid, The expenditures on each have been about 500,000 dollars; and, by the dist of next July, it is hoped that some of the public venomical, and aptendid conveniences for our naval establishment. For greater detail on this subject, and on the purchase of the navy, reference can be had to the report animace. (E.)

terms unner the act of congress for the gradual improvement of the may, ref. rence can be had to the report annexed. (E.) of the dry docks, but of all of the may yards except that near Prosacella, has eased, to the head of this department, they gratification at the prospersus conclusion of most in them. The building of ster-hours and this for the respition of materials, collected formerly

house and shi do the reception of materials, collected formerly for the gredual increase, and now collecting under the appropriation for the greatest increase, and now collecting under the appropriation for the greatest behalf of the greatest commenced, with a view to settle beyond further countrested commenced, with a view to settle beyond further countreys the best mode and places in this country for depositing, avanoning and pre-serving the different kinds of timber in most general use here in insval architecture, whatever differences of opinion may once here existed in Europe, or may now prevail in America, cut this subject, it is believed we provide the manner of removing them to far as regards our own or was a subject to the country for the country f

The buildings for accommodation to the officers of the yards, reported in the surveys and plans of A. D. 1828, are in progress

navy yards, have been subjects of previous communications from this department. But no sufficient reasons can be discovered by the department. But no sufficient reasons can be discovered by measure should, in my opinion, depend much, though not entirely, on the future increase of our naval power. All observation and experience in the navy show, that in nothing does it suffer more of the bemp, in the manufacture, and in the ser, are numerous, are difficult of detection, productive of injunious dalays when detected, and, when not detected, exceedingly hexardust to the sifety of the detected, and when not detected, exceedingly hexardust to the sifety of the detected of the detecte

sites. (F.)

The vessels in ordinary have been, at most of the yards, covered, to as to abelier them effectually from sunshine and storin, and to render their security from doesy meet, greater than beretofore, and the storing of th eay in those portionals. (G. and H.)

The three new sehooners, authorised to be built under the act of congress of February 3d, 153t, were commenced, one at the second secon

Enterprise and HOMES. The whole part at stores, under the est for the The whole purches away, and which remain in depositr at the yards, are over a million and a half in value. The amount of purchases, under the act for the gradual improvement of the navy, in deposite, is nearly half a million. The amount of property and hault for repart, is almost a million than the property of the property of

lion.

The ordnaner, provisions, &c. amount to upwards of a milion and a half more. (2) will present any further detail desirable on this subject. By this, it will likewise be seen, that the property belonging to the navy has rapidly increased, and is increased, Some here regulations in respect to the accounts for property belonging to the navy has rapidly increased, and is increased, Some here regulations in respect to the accounts for provail probably be introduced into the roles for the service now wall probably be introduced into the roles for the service now undergoing a revision. The object will be to ensure ample trecurity to the government, strict care of its instruct, and the greater percention against water form accident or mighter.

grater precutions against saite from accident or nighet. The rail state, as well as the personal property, belonging to the navy establishment, is very valuable, including navy yards, hopsital grounds, sites for magazines, and their respective buildings. The titles to some of these, and to parts of others, are indeputed and the evidences of the titles to some are not collected and preserved together. It would be very conductive to the certify of this centar, and reader the transaction of business conversing it more expeditions and mistactory, if the examination if the cultivation and preservation, of all the documentary evidence of those titles, were devolved upon use of the law officers of the government.

and to those having business to tenancet with it. It is recom-nessled, for the ubvinus reasons before suggested, that the duties of new agent to the yard and to this department be hereafter separated from those of the commander of the yard; and that the separated from those of the commander of the yard; and that the small retonoshibity, and a just compensation, he anise and to the former office. (C. No. 7.) Indeed, the whole system of compensation to many agents, whether permanent or temporary half desired to the state of the

tageous to the government.

As a part of the plan for the gradual improvement of the travy, the attention of this department has, for some years, beet turned

where most needed, and, in connexion with the storehouses, shelps, where most needed, and, in connexion with the storehouses, shelps, where, walls and ship ways, equire, annually, soch approprint ions as can be expended without a neglect of more urgant dutes, to be used to be a support of the proposal of the proposal

The plantation of tree, commenced a few years since in Florida, was not decemed a proper subject of further attention by my inone-diate predeceauer, more, however, it is presumed, from doubt about the legality and necessity of data particulae measurer, than about the unity of careful attention to rither the growth or affection that yet been authorized by me, except used as seemed in-dispensable to secure the benefits of previous expenditures. A more extended plan of agents and vessels for the discovery and preservation of such live cosk as is now growing on the public lands, was devised last winer, dividing the seaboard from the St Mary to the Sahine into seven districts, with an agent in each, to add in the same object, and in the same object, and in the variety of the bays, me signals. and stationing three small reacts at proper distances on the coast, to add in the same object, and in the survey of the bays, mayigable creeks, and rive rs of that r gion. This plan had advanced to lar in May. That it could not be one dedecontinued without much loss. The measures mercuary for a fair movering original respectations will soon be developed, and, whether failing or spectations, will soon be developed, and, whether failing or success, fall, the trial, it is hoped, will lay the foundation for full informs, on as to the quantity and location of this kind of timber, will as, six the government in the reservation of those public lands where it abounds, and enable the department beraffect to recommend a substitute less expensive and equally efflications. In the paper content is a minuter detail of the proceedings on this auto-

Intimately connected with the interests of the service, are the Infimitely connected with the interests of the vertex, are the purchase and our of iron tanks in all our vessels in commission; they are now prepared only for ships of the line and fingates built out of the fund for the gradual increase of the base. The convenience derived from them in hallating, the linerased spacing by Jeace for stores, the greater security to benth in the quality of the water—all construct to render a specific appropriation for this higher tery desirable, and in the end conomical (Kb)

The hoilding of steam harteries is another subject of much interest. While such astonishing improvements are making in the application of steam, it would be improvident to overlook its the apprention of steam, it would be improvident to overlook its probable importance bereafter in martine warfare, or fail to keep pace with other naval nations in any five means of attack or defence. The experiment made here soon after the successful introduction of this power, in the building of a steam frigate, ful introduction of this power, in the building of a steam figure, was, perhaps, equal to the vate of skill in the use of the power at that period. As that fregate however has been destroyed by providing the period and perio

The improvement of the navy depends so much on the character of its officers and seament, at well as un its very is, docks, meet of its officers and seament, at well as un its very is, docks, meet circumstances calculated to exercise, in that respect, a lavorable influence. It would hardly be useful un feeder and other than the department in respect himself of the control of the The improvement of the navy depends so much on the chaservice; that the carpenters and satimakers are poid much less than those not in commission; and that the wages of gunners and boatthus not in commission; and that the wags of gunnariand beat-wains are curryl jumificient. It happens that the noncal and religious benefits anticipated from the employment of chaptions, obtained by the department, in the pre-text condition of that class of officers. This misfortune occurs, in part, from the badily in-fermits of a najority of them; but so far as it spirings from the smallness of their nu wher, and the insolequacy of their compensa-tion, it is hoped that congress will familia a generity.

using it is noper that evergees an incurrant a convey).

If gives much pleasure to observe that the occurrence of courts marital is becoming less frequent; that your resolution to prutect the uppressed, whether wanner our filters, and at the name time to carry venteurer into 16th our final cliffert against those eleasty convicted, and that the substray afterstions in particulations. recommended during the past year, are beginning to produce a beneficial influence.

Not withstanding the high wages and great demand for seasons in me chant vessels, the naval service routinues popular. No distion of the property of the property of the property of the property of the rectain time, till more men were wanted, they made reveated applications for the rendexyous to be reopered. Much earch has been exerted to promote the welfare of our seasons. Whenever their terms of service expire abroad, they have, for some years, if not consenting to re-enlist, been sett home at the public expense.

But the latter course is attended by inconvenience and cost, arising mostly from short differences in the periods of service in a line erew, and for which the most effectual remedy would be found erew, and for which the most effectual renewy would be foliated incompress authorising men to be enfliated not only for these years, but, if saining to a foreign station within the first year, then to extend three years from the time of saining. Two orders are anticexed, (M. I. & 2), which have been issued during the past season, chiefly with a view to ameliorate the condition of this least of men. chiefly with a view to ameriorate the condition of this class of men. Besides these, other attentions, of late years, to comfort in their dress, to greater dryness and warmth in their apartments at sea, to new securities against disease, and better accommodations while sick, appear to have excited increased and permanent attachment n their part to that service in which they have belped to cover

on their part to that service in which they have neighbor to cover their country with such durable gloty.

Many useful changes in the inval code, as to the punishment of officies, have before been urged; and, in addition to them, the power to order courts in yards and vessels within the limits of the United States, in the same way as on board public vessels at sea,

Would be a great convenience.

The discontinuance of the marine corns, or its transfer entirely The discontinuative of the marine corjus, or its trainfer entirely to either the amp or the navy, has been the subject of former re-condition, without any imputation on the character of the officers, of the corps, frequent difficulties in relation to pay, allowancer trials, and orders, are necessarily happening; and part of which proceeded to such an extent as to require a precal resolution of congress in 1830, and a particular provision in the appropriation, bill of 1831. But by placing this establishment, as in former years bill of 1811. But by placing this stabilishow it as in proper terms has been proposed, wholly under may discliptice said laws, most of these difficulties might, in my opinion, he obvianted, all the present benefits of its to the verse retained, its increase in numbers rendered unnecessity, its old associations preserved, and much greater economic terms of the stabilishing and self-time of the cups. Should the system recommended in the document annexed (C. No. 13) be fully adopted, the vasting it estimated at over 40,000 dullars annually. But, in that event, the officers not needed should, in justice, be transferred to the army, and the saving basyline and staff departments alone, a change of few exerts a to force of the content of muspics and san superformers more, a counge of less extent as to officers would save to the public more than 10,000 dollars annually; and a portion of the expensive call for new barracks, present d in the estimates of the present year, would be readered unnecessary.

The appropriation at the last session, for those at Philadelphia. was so expressed, that the officers of the treasury did not feel au-

was so expressed, that the officers of the treasury side not feel au-thorized to allow the expenditure.

The condition of the saxy pension and saxy bospital funds, they being under the clarge of other officers in cumeson with the se-cretary of the navy, will be made the subject of a distinct report by the commissioners, with a slive to great, and, in my opnosion, very substance of the control of the contro privateer pension fund the part year is disclosed in the annex-

The large supply of lead in the hands of the government, as retus from the public mines, being three or four militons of pounds beyond what has been used by the war department, and the great quantity needed in the may being annualty, for ten years part, about fifty thousand pounds, induce me to recommend that from those rents a quantity equal to our naval wants be yearly set apart, and placed at the disposal of this department.

The deaths, dismissions, and resignations, the past year, are detailed in the list annexed. (0,1 to 3.)

This general estimates for the enabing year are presented in the form general before effected on our name of C, No. 1 to 15). In the count before effected on our name of C, No. 1 to 15). In the country law been made, in conforming to what in bijected to be the true applied to the present with the many conforming to what is believed congress, to enable the legislative authorities to reader the appropriations more specific, and to place the enumerated contingent Control more specific, and to place the emmorated contingent and in a condition to meet more nearly or prompts those de-mards upon it so independed to the efficient operations of the may. Although the whole expenses of the Let year may not equal the whole appropriation and believe so hand for the may arrives, yet the innurated contrigual or in former years, loss after the expenses of the expenses of the property of the latter than the property of the expenses of the expenses all part deflejencies, is comided pre-brakle to my former prac-tice of rescanner to other streeting appropriation. of resorting to other specific appropriations.

tice of resoting to other specific appropriations.

In the mode of keeping accounts with persons responsible to
this department, so great lastinde was, at one time, induged in
the transfer of appropriations from one object to another, that
the dishorsing officers stand charged with large and almost imcredible sums bushry some heals, and extract with almost equal eccedites taries both a votice beam, and extention with animal equals amin under other heads, but the surgicion. As the deflicitly loss generally originated more home careferences than dishoustry made generally originated more home careferences than dishoustry and, though eccumizable in principle, has probably drawed in extensia injusy to the public, it seems indiceous to allow, under the minal grants against imposition and hos, the principle; of an advantage to the persons interested. No other course is perceised which will enable the accounting officers connected with this department will chance the accounting namers connected with the apparatum ever to close these transactions on their books, and to introduce, with full effect, an accurate and improved system. These must-tled balances now exceed seven inflicins of dollars. Again, by carrying the balances not expended from the contingent appropria

ations to the surplus fund, instead of reserving them, as in the case of pay, provisions, See, to meet future claims, (and in the necessities of the service abroad these claims cannot always be early received and adjusted), the demands on those contingent appropriate the continuent of the continuent received and adjusted), the increased on those contingent approximation in more former years have not only exceeded their amount, but caused now be discharged from any surplus of other years. Nor should the deficiency be taken, as done at some principal principal, from different lends of appropriations, without an expression of the state of respond with the estimates for the present year, by throwing so of the crumerated items upon other and specific heads, and t of the emmerated items upon other and specific heads, and then lessening the gross nominal rum for contingencies over 180,000 dollars; and that due vigitance be exercised in the department to conflice the demands on these appropriations within the limits of the sums provided. There will probably be on the 1st of January next an unexpended balance from all the appropriations of last year to the navy of nearly twenty times this \$0,000 dollars; but it may all be required when the whole accounts for the year are closed; and if not, as before remarked, it would seem, on any effect appropriations, not to be applicable to those old servenages, or to still creat heads from those particularited, without the special authority of capteres. (P.) authority of congress. (P).

If the system of making surveys of our coast by naval officer at great exposure and toil continues to meet public approbation, a specific appropriation to reward the extra acryices in that employment the last year, as well as any in future, to the amout 2,000 dollars annually, will be necessary.

It would conduce much to the convenience of officers in th It would conduce much to the convenience of officers in the may, without incurring any great risk to the public, if this de-partment were empowered to advance the allowance for travel and transportation when orders are given for duty within the United States—the authority to do it now being confined to the case of orders for service abroad.

Under an appropriation made at the last session, the mara/ monument has been removed from the mavy pard, in this city, to a site west of the capitol. The expense has not execeded the e-timate, although, in addition to the repairs, about two, bundred dollars' worth of labor, not included in the estimate, will be re-quired fully to compensate the contractor, if he proceeds to re-new the inscriptions, besides giving uniformity of color to the staturs. But this, as the appropriation is already cahanasted, must depend solely on the liberality of congress. (4)

to general appropriation for the suppression of the slave trade has had out small demands upon it, in addition to the special charges imposed by congress in favor of Armstrong and of Liv-ingston's herrs. For instamation in relation to the expenditures the past year, and to the property of the United States in Africa, acquired by former expositions on this subject, a document is property of the past year, and the property of the United States in Africa, acquired by former expositions on this subject, a document is present the past year, and the property of the United States in Africa, acquired by former expositions of the property of the control of the present past of the property of the state of the present past of the past of the present past of the past of the present past of the antexed, (fl. 1 and 2). This property may require some new lies quidation concerning its still maintained at Liberia, the report from the commander of the Java, before named, contains all the itstilligence received from the establishment at that place during the year, except a letter autounting the lows by pracy of a versel in the employ of the colosists. From the nature of the transaction it may be questionable whether any localide designs are medicated against the commerce of the United States by those who committed that outgree. But masters were timedeablety taken to obtain full have contended to have that region of country again winted by one after the opportunity will be cultured to have that region of country again winted by one after the preparent.

or public versely. With a view to a more uniform and satisfactory administration With a view to a mirer initiarm and antistatory asymmetration of both the naval and civil branches of this department, the rules of both the parallel of the properties of the assy, while other partial raises of a civil character in relation to the arrace, have been collected; in some cases amended; and in all condensed. The whole of those will soon be submitted for your approxistion, and, if receiving it, will be afterwards hid before congress. Their distribution and strict enforcement bereafter congress. Their contribution and strict enforcement percenter will, it is longed, contribute to system in bindices, harmony in the service; and renouncy in the public disturtements. This last kind of economy, and not a distinution in the gross amount of naval expenditures, is all which probably may be expected under the expecialities, is an which probably may be expected under the gastual increase of our navy, the great improvements going for-ward in our docks and yards, the wider range and exposure of our manigation, and the present dourishing resources of the country so well ad qued to make due preparation in peace for the exigen-

cees of intore wars.

In this enviable state of the confederation, the estimates for the In this envisible state of the control cratton, the estimates for the many have been in some dayere conformed to what is supposed to be the wishes of the people in respect to so important an estab-lishment; and without may augmentation of officers not before sanctioned, and without the recommendation of any doubtful no which in our expenditure, every thing has been attempted, which promises to ensure, with frugality, promptitude, and vigor, the promotion of the great ends of maral protection and defence.

With much respect,

LEVI WOODBURY.

# NILES' WEEKLY REGISTER.

FOURTH SERIES. | No. 16-Vot. V. BALTIMORE, DEC. 24, 1831. =4

[Vot. XLI. WHOLE No. 1,057

THE PART-THE PRESENT-TON THE PUTURE.

EDITED, PRINTED AND PUBLISHED BY H. NIGES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN ADVANCE.

closely printed matter, but does not get in one half the articles that had been prepared or had off for immedate insertion. Perhaps, we may find room for some of them next week-but the current of new materials is powerful! Several articles in manuscript are among those postponed.

The chairman of the permanent committee of the friends of domestic industry, raised by the conform all persons interested-that the labor and difficulty encountered in distribiting the oddress and reports of the convention, have been oppressively increased because of the early and unexpected interruptions of conveyances by water-the excessive charge made for the vey ances by water—the excessive charge made for the postage of pamphlets forbidding a general circulation of these articles by the mails. The address, however, has been nearly disposed of, and several thousand copies of the report on iron, &c. are under-way; and the best arrangements within his power has been made to distribute what remains on hand, or may hereafter be published, with all possible promptitude, reconcilable to a moclerate charge on individuals receiving those important

We had prepared, with much labor, (because of the manifest hurry and high state of excitement in which the details had been published in the Landon papers), a kind of history of the late terrible riots in the city of Bristol, as being, possibly, the commencement of a series of events which may shake the British nation to its centre, and have a mighty influence over the relations of a large part of the civilized world. But that labor is lost; we cannot insert the account, except by the omission of some articles of a domestic interest; and it is our "system" rather to regard things at home than those abroad. The latter, besides, have less of novelty in them to a large portion of our readers, being generally antice-pated by the durinal press, and aprend in all directions; and it must suffice at present to say, that on Sunday, the 30th Oct. a succession of riots took place at Bristol, of a most furious and reckless character-immediately produced by the official entry of the recorder, Sir Charles Whethell, an anti-reformer. With difficulty, he reached the mansion house-there the state couch was broken and then the house attacked-Sir Charles and his party making their escape in the rear. The people and the police many times charged upon one another, with sticks and clubs and stones—some were killed and many much injured. The military was introduced, but cheered by the mob, and much good feeling seemed to exist between the parties. They, however, pretty soon came into co-hision, and for a while the soldiers restrained the people; but, at last, the mole got the ascendancy, and the end was the destruction of the mansion house, the bridewell, the new jail, certain toll-houses, the hishop's palace, the custom house, the excise office, and 42 other itwellings or houses, by fire! The mobs plundered the wine vaults and diquor shops-thousands became intoxicated, and some suppose that hundreds of miserable we teles perished in the flomes which they themselves had kindled. In the end, the mob having seemingly exhausted itself, or because that time was allowed to collect a strong military force, order was restored, and some persons, charged with being ringleaders, arrested. All the criminals were relased from the prisons, and cheered by the mob. A relisated from me printing, and entered by the most.

All things were flone in greatest excess; and the whole presents a view of the most terrible mob that we have heard of for many years past. It is a frightful picture of what may be expected in England, if the people of that country shall break the chains that hold them in poverty ton 55, Jesse L. Holman 36, several other and submission, to the aristocracy and priesthood. The T. is said to be a friend of the president. Vol. X.I.I.-No. 21.

The present number contains twenty-four pages | bishops, by their votes against reform, appear to have offement heyout the hone of forgiveness; being before the most unpopular individuals in England.

Much feeling prevails in many parts of England. The parties for ann against reform talk openly of arming themselves. Associations of national guards are advisthemselves. Associations of national guards are advis-ed. A military hierarchy is talked of. An appeal of "physical loree" is freely mentioned. A great crists accurs at hand—whether to relieve the working people and finally redress their wrongs, or confirm their masters in the possession of their grinding powers, we shall not predict. Acts of violence, like those committed at Bristol, cannot be justified-and yet how else is it that a population conditioned like the laboring classes in Enga land, can expect to obtain their "long lost liberty The time will come-must come, just as certainly at that all men shall die, when the British systems of church and state, monopoly and exaction, inordinate luxury and linggard poverty, will terminate by peaceful interferences or ravers of blood. The artificial state of things must yield to rendities. The ultimate point of oppression seems to have been reached, and reaction must be ex-pected. "A feather will break a camel's back" says the Arabian proverb; -and there is a grade of privation when the lack of one potatoe, may raise the cry of havos and let alig the hyena-spirit of civil war.

Holland and Belgium appear to be settling down into ace. The president of Greece has been assassinated prace. the affairs of this country are in the worst state. France was quiet, and many efforts were making to encourage the industry of the kingdom. Nothing important has been received from Poland-the dominion of the autocrat, however, was fully established, and punishments were going on. The cholers was committing dreadful ravages in Egypt-nearly 1,000 person a day had died at Cairo! The harein of the pacha had been attacked to The harem of the pacha had been attacked by his son Ibrahim had retired to Upper Egypt.

MR. VAN BUREN. It has been extensively believed that certain parts of the instructions to Mr. McLane, on his mission to England, by Mr. Van Buren, while secretary of state, would become a subject of pointed dis-cussion in the senate of the United States, which we now clearly understand will take place, from the following significant paragraph in the National Intelligeneer of yesterday.

The British negotiation. - In the course of some inci-

dental debate in the senate on Mr. Holmes's resolution proposing to call upon the executive for certain further information concerning the West India trade, Mr. Webster made remarks to the following effect, the bearing of which induces us to state it, though the rest of the debate does not appear.

"From the close of the late war down to a very recent period, it has been the object of the several administrations to scenre a recupracity not only to the navigation, but to the commerce, the traffic in commodities, of the country with England. Since the recent period alluded to, that purpose has been abandoned; and an arrangement has been completed, in conformity with instructions given by the government here to the minister at the court of St. James; given, sir, in terms and in a temper which may very properly become the subject of public examination and comment here; I say, sir, of public examination and comment.

Gen. John Tipton was elected a senator of INDIANA. the United States from this state, in the place of Mr. Nobla, deceased, (whose seat has been held for the time being by Mr Hanna) on the 7th ballot. For gen. Tip-ton 55, Jesse L. Holman 36, several others 14. Gen.

"HEP-BURRAH!" By the report of the sceretary of the may, it seems that some claim has been maile "to ilisturb our vessels engaged in scal-catching at the Falktand islands." "HEP, HURRAR!"-"our naval force in that region will soon be strengthened." It is also stated that an outrage was committed on an American ship on the North West coast of Sumutra-"Her, RUBRAR," and quickly away goes an American regate to procure "indemnity." And we have long and interesting accounts of our squadrons in the West Induan and Mediterranean seas, and South Atlantic and Pacific oceans, all zealously and fauldully engaged in the protection of commerce; and the "HEP HUBBAH" is heard in thunder when a rope-yorn of a ship is telimiously touched. Very well-this is all right-let the stripes and stars protect all persons and property sading under them. But pirates at New York, and in other of our sea-ports, delraud the public revenue of hundreds of thousands of dollars, and cheat the growers and ma-nufacturers of wool out of that protection which the laws intended to give them-they large involves, make talse oaths, tear off the marks and numbers of their goods, and do more injury, in one month, than the whole trade at the Falkland Islands, or in the Mediterranern, render profit in a pear—but there is no "MER BURMAH!"—
These are "free trade" BULL's doings, and gracious in our eyes; they are things not immediately connected with property in ships—and the donest-c growth and with property in suppression the domestic growth and manufacture of wool, which have a greater annual value, as we believe, than every writtle of American product exported to all parts of the world, is quietly submitted to piracies, compared with which that happening at the distant island of Sumatra, is, as it were, only a drop in the bucket-or mere atom of wrong! The expense of the frigate sent to Sumstra, it wisely disbursed at home, would advance the profits or increase the comforts of a million of furmers and other working people, including their families-free eitizens of the United States, seek-

ing the protection of equal laws.

It is high time that this manner of proceeding was fully looked in the lace. We cannot see why the pursuits of persons abroad are sacred, and thuse of persons at home unit lended. The lex talionis was once nearly applied because of this state of things, by resolving to reluce all appropriations for the support of dis-tant expeditions of vessels of war. There is power enough in congress to do it now. If the free trade" party possessed such power, what would they do'that 'free traile' party which is always seeking, and
promptly obtains full protection, while it wants the moral sense of justice to yield it to others, ten or twenty times more numerous than thems lves, equally contributing to the public wants, and equally responsible for the

public salety.

## TWENTY-SECOND CONGRESS-1st SESSION.

SENATE. December 19. Mr. Benton, of Missouri, appeared and took his seat.

On motion of Mr. Holmes, the message and documents relative to the affair between certain American citizens and the authorities of New Brunswick, were ordered to be printed.

Several private memorials were presented.

Mr. Tazewell presented the memoral of the general assembly of Virginia, praying the payment of certain claims.

Mr. Troup presented the memorial of the surgeons and assistant surgeons of the army of the U. S. praying an increase of pay.

Mr. Chambers presented the memorial of the Columbian college, praying donations of certain lots in the city of Washington.

Mr. Kane presented three memorials of the general assembly of the territory of Arkansas, praying aid in the construction of certain roads, and for the continuation and extension of the national road.

The vice president communicated a survey of the

Wabash river.

Mr. Smith, from the committee of finance, made a re port, secompanied by a resolution, that it is mexpedient at this time to act on the subject of the memorials praying an immediate reduction of the duties on teas.

Mr. Chambers obtained leave to bring in a bill to settle the interest of certain advances made by sundry states during the last war.

Mr. Cluy inquired whether it was the intention of the chairman of the committee, to bring the report relative to the reduction of duties on teas before the senate, so that the reduction of duties on less octors are sensite, so man there might be a general expression of the whole body on the subject. He aroused himself to entertain views entirely different from those of the report.

Mr. Smith, the chairman, said a few words in reply.

On motion of Mr. Hanna, the resolution moved by him on Thursday last, instructing the committee on the militia, to inquire into the expediency of organizing the militia, between the ages of 21 and 35, and to increase the annual appropriation for arming them; was read, and

alter discussion, adopted.
On motion of Mr. Holmes, his resolution calling on the president for certain information relative to the N. E. boundary question, was, on motion, after discussion, referred to the confidential sitting.

The senate then proceeded to the election of officers of the senate, and the vice president having desired the senators to prepare their ballots for secretary,

Mr. Chamber's rose, and called upon the secretary to explain to the senate, whether he had given certain information to the president, of the probable result of one of his nominations, at the last seasion, while it was still pending before the senate. After some remarks from Mr. Brown and Mr. Hayne,

The secretary then intimating, through the president, a wish to address the senate, and the wish being accorded by the general consent of the members,

Mr. Lourie rose and stated that the specific charge he had not seen; but so far as he understood it from what had been read, he had no explanation to make further than the most indignant denial of the whole charge. Since he had held the office of secretary, he never had, either during the administration of Mr. Adams or gen. Jackson, communicated to either of them a word relative to any nomination, nor never, infleed, did either of them ask him a question on such a subject. Sell-respect as well as duty, would have prevented him. He understood the charge to be made in a letter from Mr. Lewis, that throng the last ression such a communication was received from him (Mr. Lowrie). He recollected that some time in the session-not the 2d March, however, he was confident - when going into the president's on offi-cial business, Mr. Lewis asked him if some nomination would be confirmed; but, it it were to save ny life, and Mr. Lowrie, I could not tell what non-instion it was If, however, he had asked me whether Stephen Simpson's nomination would be confirmed, I should certainly have answered no-not because I knew the opinion of any one senstor, but from the character of Simpson, answer I should have given a year before, or would give now. But I appeal to every senator who was then here, whether I ever spoke a word to one of them on the subject of that or any other nomination. It was his impression, derived from his opinion of the man's character, and would have been given as his private opinionnot as derived from a knowledge of the views of any This was all he had to say, whether it might senator. be called an explanation or not.

The senate then proceeded to the election of secreta-, when Mr. Lowrie received 40 votes-scattering 1.

Mr. Lowrie was accordingly elected.

Mountyoy Bayly was re-elected principal door keeper. Mr. Stackford, of Missours, siter six ballotings, was reted assistant door keeper. There were eighteen apelected assistant door keeper. plicants.

The rev. Mr. Durbin, of Ky. was, on the second bal-

tot, elected chaplam.
The senate spent some time in executive business, and then adjourned. December 20. Mr. Benton introduced a bill provid-

ing for mounting and equiping a portion of the army of the United States, which was read.

Mr. Smith introduced a bill to provide for the armament of certain lortifications—which was read.

Mr. Witkins introduced a bill to provide for the satis-

faction of the claims of certain American citizens for spolistions committed on their commerce prior to September, 1800-it was twice read and referred to a select

Mr. Robbins moved a resolution instructing the committee of finance, to inquire into the expediency of reviving the acts providing for the payment of the loan office and final settlement certificates, which appear by

Mr. Holmes, of Maine, rose to sail the attention of the senate to a passage of the president's message, in which the arrangement with Great Britain, in regard to the colonial trade, was referred to, and the beneficial effect of that arrangement on American navigation in the increuse of American tonnage asserted; and Mr. H. proecceled by a series of remarks, and a reference to the public documents, to show that American tonnage en-gaged in the British colonial trade half greatly fallen off, and the British tonnage admitted into our ports greatly increased, since the arrangement went into effect. He

concluded by moving the following resolutions, which were read, laid on the table, and ordered to be printed,

were read, laid on the table, and ordered to be printed, viz.

Resolved, That the prevident be requested to easue to be communicated to the senate the number of vestels and their tomage and cargees which have cleaned from any ports and the tomage and cargees which have cleaned from any ports and the continuous continu

The senate took up for consideration the report of the committee on finance, on the memorials of the mer-chants of New York, Philadelphia, and Pittaburg, pray-ing that the reduction of the duties on teas may take effeet on the first day of January, ensuing,—the report being adverse to the prayer of the memorialists. A de-bate ensued thereon, in which Messra, Webster, Clay, Hoyne, and Chambers participated. On motion, of Mr. Chambers, the report was finally laid on the table.

The senate then resumed the bill supplementary to the act for the relief of certain surviving officers and sol-diers of the revolution, together with the amendment reported thereto by the committee on pensions-which, on motion, of Mr. Poot, was made the order of the day for Monday next. The senate then adjourned.

of motors, or the sense then adjourned.

December 21. Mr. George M. Dullus, elected a senator by the legislature of Pennsylvania, attended this

day, was qualified and took his seat.

Mr. Johnston moved a resolution instructing the committee on commerce to inquire into the expediency of making an appropriation to deepen the mouth of the Mississippi-Also a resolution instructing the committee on military affairs to inquire into the expediency of building barracks, &c. for the accommodation of the troops at New Orleans.

Mr. Buckner moved two resolutions requiring information relative to the present situation and condition of the unconfirmed land claims in the state of Missouri, and as to the expediency of an adjustment thereof.

and as to the expediency of an adjustment increot. Mr. Pointecture, moved the following resolutions: 1. Resolved, That the committee of finance be instructed to in-quire into the expediency of fixing a rate of duries on foreign imports, not to exceed on any article imported into the United States, more than twenty per cent. of volcers, and not to reduce the day on any article so imported below ten per cent. of volcer-erm; and to arrange such duries, having regard to all the great

emmittee consisting of Menrs. Wilkins, Webster, Chambers, Brown and Dudley.

Chambers, Brown and Dudley.

Sunlry private memorials were presented and referred.

In the resulting of the capelinery of giving effect and operation to said system of duties on the 20th day of June next.

system of duties on the 30th day of June next.

The senate took up the resolutions submitted yester-

day by Mr. Holmes.

Mr. Webster maile some remarks to shew that there existed a considerable misconesption in regard to the effects of the arrangement with Great Britain, and suggested a modification of the resolutions, so as to render the call for information more complete; and after some cxulmatory remarks from Messrs. Holmes and Smith, the resolutions were further 1 id on the table at the request of the latter gentleman, who wished further time to look into the subject.

The bill to authorise the mounting and equipment of the army of the United States, and the bill providing for the armament of the fortifications, were seve-

rally read the second time and referred. The senate then spent some time in executive busi-

ness and then adjourned.

D cember 22. A large number of petitions and me-morials were presented, and several reports on private claims made and referred. Mr. Poindexter obtained leave to bring in a bill con-

erning Murthi Randolph, daughter and only surviving child of Thomas Jefferson, deceased.

The resolution of Mr. Holmes, relative to the West

India trade, were taken up and agreed to. The resolutions moved yesterday by Mr. Buckner re-lative to unconfirmed land claims in Missouri, was taken up and solopted-the one concerning their adjustment

was also taken up, but, at his motion, laid on the table. The resolutions submitted yesterday by Mr. Johnston,

were taken up and agreed to. The bill to enable the president to extinguish Indian titles to lands in the state of Indiana, was taken up, amended, and the bill ordered to be engrossed, and read a third time.

Mr. Holmes moved a resolution requiring a map of the disputed north eastern boundary to be made.

The senate spent some time in executive business, and then adjourned.

## HOUSE OF REPRESENTATIVES.

Monday, Dec. 19. About a hundred and sixty memorials were presented, among which was one by Mr. Burbour, of Virginia, from the legislature of that state, relative to claims for revolutionary services, which was relerred to a select committee.

Mr. Arnold presented the memorial of Sama, sun-tin, of Tennessee, praying that all actual subscribers of on, or tennessee, praying that all actual subscripers or newspapers and pamphilets not exceeding one sheet, should pass free without postage—that letters to printers be also free; that the 2 cents charged on free letters for delivering be abolished; that as soon as the national debt he paid off, the expenses of the post office department be paid out of the general fund; and that all the papers in the U. States be employed to publish the advertise-inents of the post office, and laws of congress, and be paid each \$100 per annum.

Mr. Whitteery, from the committee of claims, reported 38 bills, which were severally read and made the or-

der of the day for to-morrow.

Mr. Doddridge, from the committee for the district of Columbia, made a report on sundry memorials of citi-zens of Pennsylvania, on the subject of slavery in said district - the report concludes with a resolution, praying that the committee may be discharged from the further consideration of the prayer of the memorialists.

The resolution relative to information concerning

steamboat explosions, was adopted.

The resolution laid on the table on the 15th instant by Mr. Whittlesey, calling for information from the secretary of the treasury, concerning a claim due to the U. S. by the commercial bank of Lake Erie, was called up and passed.

A resolution relative to the boundary line between

Georgia and Florida, was taken up and adopted.

On motion of Mr. Evans, of Maine, the committee of commerce were instructed to inquire into the expediency of making an appropriation for the purpose of removing obstructions in the Kennebec river.

On motion of Mr. Duncan, the committee on internal improvements were instructed to allow the state of Illinois to apply the proceeds of a grant of land to construct a rail road instead of a canal, as heretofore authorised.

On motion of Mr. Dearborn, the committee on manufactures were instructed to inquire into the expediency of exempting from entry, teas, coffee, wines, pepper, spices, indigo, and wool, the current market value of which in the United States, at the time of importation, shall not exceed 12 cents per pound.

Tuesday, Dec. 20. A great number of petitions and memorials were presented and referred.

Mr. Clay, reported a bill authorising the sale of the nublic lamis in lots of 40 acres, which was read twice and made the order of the day for to-morrow.

Sundry bills on private claims were reported, read, and referred.

Mr. Drayton reported a bill to regulate the pay and emoloments of the officers of the army - which was reterred to the sommetee of the whole on the state of the union.

Mr. Hoffman, reported a bill authorising the construction of naval hospitals, at the navy yards at Charlestown, Mass., Brooklyn, New York, and at Pensacola, which being twice read was referred to the committee of the whole. Also a bill to provide for completing the unvy hospital at Norfolk, and the naval asylum at Philadelphia-which being read, was referred as above.

Several private bills were reported, read and referred. Mr. McDuffe, from the committee of ways and means, reported a bill to explain an act, "entitled an act to reduce the duties on coffee, les, and cocoa, passed 20th May, 1830"—which was twice read and made the order of the day for to-morrow.

Mr. Dearborn, for the present, withdrew his resolution relative to the duty on teas, coffee, &c.

The house adjourned.

Wednesday, Dec. 21. A number of petitions were presented. Several reports on private clambs were made.

A message was received from the president cancernng tonnage duties paid by American vessels in the colo-

nies of France-which was read and referred to the committee on commerce. Mr. Huntingdon, of Conn. laid the following resolu-

tion on the table.

Resideed, That the accretary of the treasury be directed to communicate to this house the amount of duirs on foreign mechanicise which may have been remirted, in pursuance of the authority wasted in him by the act entitled "an act for the relief of certain importers of foreign merchandare," approved March 2, 1831, congreter with the names of the importers of such mechandare, and whether imported on account of whiten not the United States or the same, and of the entry thereof at the custom bandsigness of the same, and of the entry thereof at the custom bandsigness of the same, and of the entry thereof at the custom bandsigness of the same, and of the entry thereof at the association of Mr. Stewart, accountion passed by the Resolved, That the secretary of the tressury be directed to con

legislature of Pennsylvania, in layor of a subscription, by the general government, of a million of dollars towards the stock of the Chesapeake and Ohio canal company, was referred to the committee on internal improvements

Mr. Carson moved a resolution, which was adopted, instructing the committee on the District of Columbia to report a bill providing for the election of a delegate, in the said district, to the U. S. house of representatives.

On motion of Mr. Wickbffe, it was

On indicate the committee on internal improvement be in-ructed to inquire into the expediency of making an appropriation money for the purpose of purchasing the nock held by indiof money for the purpose of purchasing the stock held by indi-viduals in the Louisville and Portland cannel, with a view of making the navigation of the said canal free to the commerce of the Ohio sippi rivers.

On motion of Mr. Wing, it was resolved to instruct the committee on military affairs to inquire into the expediency of constructing a public road from fort Howard, at Green Bay, to fort Crawford, on the Mississippi.

On motion of Mr. Gilmore, the committee on internal improvements were instructed to inquire into the expediency of making a national road from the city of l'itts-

ourg to the borough of Erie on Lake Erie.
On motion of Mr. Mc Carty, the committee on internal improvements were instructed to inquire into the expediency of granting permission to the state of Indiana to make certain roads through the national lands, and of granting to Indiana each alternate section of land through which the said roads, may pass, on each side thereof. On motion of Mr. Wm. B. Shepard,

Resolved, That the committee on internal improvements be directed to inquire into the expediency of confirming the meta of incorporation granted by the legislature of North Carolina to the Rossoke inite company, in 1811 and 1839. And that said committee be directed to inquire into the expediency of surveying and Rossoke inite, with a view of recogniting the same, and that the papers now before the committee of commerce be referred to the committee on internal improvements.

On motion of Mr. Duncin, the committee on ro and canals were instructed to inquire into the expediency of extending the national road from Vandalia to the Mississippi river above the mouth of the Missouri, and

of making an appropriation therefor.

On motion Mr. Drugton, the committee on naval affairs were instructed to inquire into the expediency of fixing the pay, &c. of the marine corps.

On motion of Mr. Drayton, it was

On motion of Mr. Drayton, it was Resided, That the committee on commerce be instructed to inquire into the expediency of revising the raising laws under which compensation for this review is allowed to the officers of the custom, and of so altering them, as to place these officers of the custom, and of so altering them, as to place these officers of the custom, and of so altering them, as to place these officers of the custom, and of so altering them, as to place these officers of the custom, and the custom of the

ing into the propriety of building an armory on western waters.

On motion of Mr. Vance, it was On motion of Mr. Fance, it was Residen, That he circ hondred and filly capies of the journals of the old congress, from 1776 to 1789, for the use of 15te members of the house of representatives; provided the same shall not cost more than two dollars and filly s per volume.

Mr. Carr, of Indiana, introduced a resolution inquir-ing into the propriety of reducing the price of the pubhe lands.

A large number of resolutions, of a local character,

were offered, and variously disposed of. Adjourned.

Thursday, Dec. 22. Forty-one memorials, &c. being received—Mr. Davis, of Mass. presented three resubutions of the legislature of Massachusetts, on the more efficient organization of the militis; the obtainment of restain documents in the plantation office in Great Britain; and recommending the objects of the colonization society to the lavorable consideration of congress.

Mr. Hifman, of New York, reported a bill providing for a survey of the cost of the U. States-read and reterred.

Mr. Cambreleng, of New York, reported a bill authorising \$3,000 to be distributed among the owners, officers and seamen, of the Spanish bring Leon, for services rendered the crew of the American ship Minerva, wreck-

ed on the Balbama bank - twee read and referred.

Mr. Carson, of N. C. reported a bill to establish assay offer an the gold regrons of N. Carolina, S. Caro-

, and Georgia

Mr. Mercer, of Va. submitted a resolution requiring information as to the amount of expenditures made by the general government in breakwaters, moles, the im provement of the months of rivers, &c. &c.

The resolution of Mr. Huntington, relative to the

adopted.

The resolution relative to certain surveys, &c. moved by Mr. Mercer, resterday, was adopted.
Mr. Whittlesey's resolution relative to opening a land

communication between forts Howard and Crawford. was taken up and adopted.
On motion of Mr. Hunt, inquiry was instituted as to

the propriety of dispensing with the signature of the president to patents.

Mr. Drayton moved a resolution instructing the compensation of certain custom-house officers on the northern frontiers.

Mr. Heister moved a resolution requiring certain information as to the amount of postage received on newspapers and periodicals for the five preceding years, and as to the propriety of abolishing postage on newspapers and periodicals.

Mr. Craig moved a resolution inquiring into the expetliency of increasing the pay of certain distributing post masters.

expediency of building a bridge over the Ohio river, at or near the town of Wheeling—adopted.

Mr. Bouldin moved a resolution requiring the comparative cust of production of certain articles manufactured in the United States and foreign countries, &c.

Mr. Drayton introduced a resolution adjusting into the propriety of granting compensation to the claimants for French spolintions, &c.

Mr. Blair, of Tennessee, moved a resolution imporing into the expediency of distributing the proceeds of the public lands, according to population, among the several states, for purposes of internal improvement, &c.

Various reports on private claims were made, and bills of a similar character taken up and disposed of.

Adjourned.

## BANK OF THE UNITED STATES.

From the American Sentinel. Wood Luwn, 5th Dec. 1831.

DEAR SIR-Your friendly letter on the subject of the bank of the United States, has been received by due course of mail. The opinion which I formed of the constitutionality and expediency of the bank of the United States when I was a member of the senate, was the result of a careful examination of the constitution of the United States, made without any preconceived opinions. That opinion is recorded in two speeches which I made in the senate in the year 1811. Since that time I have had no occasion of reviewing the question. My opinion remains unaltered. I was secretary of the treasury more than eight years, and during that time I had ample evidence of the great utility of the bank of the United States, in managing the fiscal concerns of the union. I am persuaded that no man, whatever his preconceived opinions may be, can preside over the treasury one year, without being deeply impressed with the expediency of the bank of the United States, in conducting the finances of the union. The provision in the constitution which gives congress the power to pass all laws which may be necessary and proper to carry into effect the enumerated powers, gives congress the right to pass the bank bill, unless a law most proper to carry into effeet the power to collect and distribute revenue, should be excluded by that provision. The opponents of the constitutionality of the bank, place great stress upon the word necessary, contained in the grant of power, and insist that no law can be necessary but such, that without which the power could not be carried into effect. Now this construction appears to me to be indefensible. It does seem to me, that the words "necessary and proper" cannot exclude a law that is most proper to carry the power into effect -Yet the unconstitutionality of the bank can be pronounced only upon that construction. It does appear to me that the framers of the constitution never could have intended to exclude the passage of a law most proper to carry a power into effect, because it might be carried imperfectly into effect by another law. My construction of the grant of power to pass all laws which may be necessary to carry the enumerated powers into effect, includes the power to pass all laws which are necessary and proper to carry the enumerated powers into effect in the most perfect and complete manner, and not in an incomplete and imperfect manner.

I have not seen a complete development of the president's plan of a bank. It is possible that by his plan the transmission of the revenue may be effected, but the safety of the public deposits cannot be effected by the safety of the public deposits cannot be effected by the safety of the public deposits cannot be effected by the safety of the public deposits cannot be effected by the safety of the public deposits cannot be effected by the safety of the public deposits cannot be effected by the safety of the safety ed by the president's plan. The advantage of this security to the public is incalculable. It ought not to be relinquished, unless it can be satisfactorily proved that the bank of the United States is unconstitutional.

This I think cannot be satisfactorily shown. My speeches are recorded and can be re-published if members in attendance, and representing seventeen states appears — They contain the result of the best in and the District of Columbia, viz: Maine, New Hamp-

Mr. Daddridge moved a resolution inquiring into the | vestigation I was able to give the subject. I am persunded I could not improve upon it now, if I had the means of investigating the subject, which I have not.

I am, sir, your friend, &c. WM. H. CRAWFORD.

Charles Jured Ingersoll, esq.

NATIONAL REPUBLICAN CONVENTION.

Monday, Dec. 12. The national republican conven-tion met in the city of Baltimore, this day at 12 o'clock. Mr. Peter R. Levingston, of New York, rose after the members had taken their seats, and remarked that he should beg leave to name a gentleman, as a temporary chairman of the convention, preparatory to its more perfect organization, distinguished for his talents, and applauded for his integrity and principles, throughout a long life of public service. He then moved that general Abner Lucock, of Pennsylvania, be appointed chairman pro tem. of the convention. The motion was

ansammously adopted.

Mr. James Barbour, of Va. moved that Thomas B. Ray, be appointed secretary of the convention, which

motion was adopted, nem. con.

Mr. Livingston then rose, and after a few remarks, respecting the delay of members on the way, occasioned by the inclement state of the weather, and the extensive prevalence of the existing epidemic, which prevented as full an attendance this day as was desirable, offered the following resolution:-

Resolved, That the delegations of the several states epresented in this convention be requested to examine the credemials (or the evidence of appointment) of the members of their respective states, and report a fist of

their names to-morrow at 12 o'clock.
Mr. Stone, of New York, observed, that in order toafford every possible facility to the gentlemen of the pross, he avoiled himself of the present early moment to offer the following resolution:

Resolved, That the editors of the several newspapers published in this city, together with all others in attend-once from abroad, with their reporters, be invited to

ance from suread, with their reporters, be invited to take seals to be appropriated for their accommodation.

Mr. Breck, of Kentucky, moved to strike out the word "breited," and insert "permitted," and expressed a hope that the gentlems offering the resolution, would

assent to the modification.

Mr. Stone replied, that he would not consent to the motion. It was no compliment to the gentlemen of the press, merely to be permitted to enter the convention. And a precedent for the phraseology was to be found in the proceedings of the late tariff convention in New York, where the resolution upon this subject was offered in the old form ol giving permission only, but was amended by substituting the word invited. Mr. S. saul, that, being himself a representative, in part, of the public press, he had some feeling upon this subject, and he could not listen for a moment to the proposed amendment.

The resolution was withdrawn by Mr. Breck, and Mr. Blunt, of New York, thereupon suggested that the resolution had best be laid over until the convention

should be completely organised.

A motion to lay it on the table was then made. A. H. Everett, of Boston, opposed this motion. If the doings of the convention were to be reported at all, the incipient proceedings might be as interesting as those to

This motion was therefore withdrawn, and the resolation manimously mlopted.

Mr. Combs, of Kentucky, then moved that when the convention adjourns, it will adjourn to meet to-morconvention sujourns, it will sujourn to meet to-mor-row at 12 o'clock; which was agreed to. The convention then adjourned. [There were between 130 and 140 members in atten-

dance this day. ]

Thesiday, Dec. 13. At 12 o'clock, the convention was called 10 order by A. Lacock, esq. and the proceedings ol yesterday having been read, the secretary called over the names of the delegates, according to the order of the several states, when it appeared that there were 156

shire, Vermont, Massachusetts, Connecticut, Rhode Issnire, vermont, massachusetts, Connecteut, trioue 11-lauli, New York, New Jersey, Pennyilyania, Del-ware, Maryland, Virginia, Olio, Kentucky, North Carolina, Inliana, Louisana, and the Dutriet of Columbia. Mr. Holmes, of Maioe, remnded the convention that the organization of yesterday having been merely tempo-

the organization of year-rary, it would be necessary to make a permanent organ-ization. He then moved the following resolution: Resolved, That a committee of five be appointed to

organize the meeting, by selecting a president, &c., and report what further proceedings they might deem necessary.

Which being read was adopted, when the chair ap-pointed Messrs. Holmes, Sergeaut, Thomas, Dearborn, and Denny, the said committee. The committee retired, and alter a short time returned and reported that it was deemed expedient that the officers of the convention should consist of a president, four vice presidents, and two secretaries; and recommended the following gentlemen as the officers to fill those stations:

For president-James Barbour of Virginia.

For vice presidents-Allen Trimble of Ohio, Joseph Kent of Maryland, Peter B. Porter of New York, and Robert Temple of Vermont.

For secretaries-Joseph L. Tillinghast of Rhode Island, and Henry Bacon of Ohio.

The report having been agreed to, Governor Barbour took the chair, and addressed the

convention as follows:-

"Fellow eitizens:—I beg you to be assured that I most highly appreciate the distinguished and unexpected most highly appreciate the distinguished and unexpected honor you have just conferred upon me. The approbation of such a body as this, under any circumstances, could not but be highly seceptable. To me, it is more precious, when I cast my eye over the assembly, even on many with whom it was my good fortune to be associatmany with whom it was no good inviting to be associated, in the public councils, in the better days of the republic. Every effort will be maile, within the reach of my capacity, to justify this mark of your confidence. I may be permitted to add, that we have convened together for su object, always an important one, but now preuliarly so, from the times in which we are called to act. The auguries proclaimed at the commencement of our political eareer, that the burden of our experiment would political career, that the oursel of our experiment, and to lond in the executive branch of our government, are, I fear, in a rapid course of infilment. As yet, we may confide in the peaceful and sure remedy of republican recurrence to the people, a majority of whom I sincerely believe, would hall with joy, the redemption of the pledge so often given by the present incumbent of the chief magistracy, to retire to private life at the expiration of his present term of service. The union and co-operation of this majority is all that is necessary to enforce, whether voluntary or involuntary, the fulfilment of his promise. I am aware that large calculations are made on our divisions; but I will not believe that there is any individual whose ambition is so unclassened as to permit himself to be the instrument of fomenting these divisions, or that to be the instrument of formenting these divisions, or that the people of the United States will become the dupes of their personal predilections or prejudices. I commune to repose confidence in their virtue and intelligence, and on that Providence who has so frequently manifested his protecting kindness to this people. It was here that the great scheme of human emancipation was first opened on an admiring world. It cannot be that it has been decreed summarily to pass away, "like the baseless fabric of a vision," leaving "not a wreck behind." Let us then, vision, teaving not a wreek bening. Let us then, coming directly from the people, the great source of all sauthority, and animated by an exclusive regard to their interests, set an example of the harmony so essential to nuccess, and indulge a hope that its influence will reach the extremities of the republic.

"My ardent prayer is, that your deliberations may be conducted in that spirit-that your decision may be made

conducted in that spirit that your occasion may be move with wisdom, and that the result thereof, may be propi-tious to the best interests of our beloved country." On motion of Mr. Sergant, it was ordered that an invi-tation be sent to Charles Curroll of Currollton, and Mesers. Howard and Thomas, to take seats within the the bur of the convention.

Mr. Holmes, as chairman of the committee appointed on the subject of the officers and business of the conven-

tion, rose to make a further report, in the shape of a mo-tion, which he was sure, would entirely satisfy the impa-tience and delight the hearts of all. He then moved— "that the convention do now proceed to nominate a candidate for the office of president of the United States, to be supported by those who are opposed to the re-election of Andrew Jackson."

The motion was agreed to.

On motion, the hon. Jonathan Roberts of Pennsylvania and governor Sprigg of Maryland, were invited to take seats within the bar of the convention.

In this stage of the proceedings, the chair laid before the convention the following letter from Mr. Clay,

Washington, 10th Dec. 1351.

MY DEAR SIRE I was extremely glad to learn that you had accepted the appointment of a member of the Baltimore convention, which is to assemble next week, to nominate, for the consuleration of the people of the United States, candulates for their president and vice-president; and that distates for their president and vice-president; and that not withstanding; the extraordinary inclemency of the weather, you had proceeded to the city where the im-portant trust is to be performed. It is to be sincerely hoped that the acknowledged patriotism and intelligence of that convention, aided by the purity of intention and practical good sense by which I have so often witecased you to be guided in public affairs, may conduct your de-liberations to results satisfactory to the community. I must have been entirely regardless of passing events, if must have been entirely regardless of passing events, if I had not observed that my name has been repeatedly mentioned as being likely to be brought before the convention, and that, in some instances, delegates have been instructed by their constituents to yield support to it, as a candidate for the preadency. This restriction, or any restriction upon the perfect freedom of deliberation and decision of the convention, is inexpedient. It would have had a more happy constitution if it had embodied the will of all who are desirous of reacuing the executive go-vernment of the union from the missule which threatens to subvert established institutions and systems of policy, long and deservedly cherished, and to bring diagrace and ruin upon the country. So constituted, the convention could have made a comparative estimate of the many citizens of the United States who are competent to discharge the duties of chief magistrate, and selected from among them that one, who, possessing the requisite prin-epiles, would probably unite, to the greatest extent, the public confidence and the public support. For one, I public confidence and the public support. For one, I auxiously wish that the convention, dismassing every feeling of previous attachment or predilection, will now make impartially such an estimate and selection; and should their choice fall upon any individual other than myself, it shall have, not only my hearty acquiescence and concurrence, but my cordial and zealous co-opera-

Inn.

I have been very desirous to lay these sentiments before the convention, but it has appeared to me that I could not tornally do it whout heuring the imputation of presumptuousness or indelessey. Will you then, my there are, with whom I have so often had the happiness to be associated in the public councils, consent to be the organ of making them known, if necessary, to the conven-tion. Should my name not be presented to its consideration for the presidency, it will not be proper or necessary to make the communication; but if it should be, I confide the manner of doing it to your judgment and sense

of propriety.

With tervent wishes for the prevalence of good feelings and harmony in the convention, I am cordially and JAMLS BARBOTR, c.q.

Alter the letter had been read, Mr. Livingston, of

New York, rose, and, after some pertment and eloquent remarks, nominated *Henry Clay*, which was received with loud and reiterated plaudits.

Mr. Dearborn, of Massachusetts, proposed that when the sense of the convention was taken on the nomination, that each member, as his name was called by the secretary, should rise and name the candidate to which he was most tavorable. Mr. Livingston having accepted this amendment, it was agreed that the acuse of the conven-tion should be taken in that manner. the members, and each rising from his seat, avowed him-well in layor of HERRY CLAY. Mr. F. H. Shuman, of North Caralina, (who was understood to say that his trained was not made up on the subject) was excused from sommating his candidate.

The chair announced that HENRY CLAY had been unanimously nominated by the convention as the smost suitable person to be recommended to the people as a candulate for the office of president of the United States.

Here the plaudits were enthusiastically reiterated.

On motion of general Dearborn, it was ordered that a committee of seven members be appointed to prepare committee of seven members be appointed to prepare an address to the people, and the chair announced the following as the names of the committee, Messes. A. H. Everett, of Massachusetts, Stanard, of Vrginis, Bodd, of New Jersey, Hosk, of Indiana, Johns, of Delaware, Cummins, of Maine, and Wilson, of New Hampstire. On motion of Mr. Sergeant, of Penn, the president was reconsidered to invested the contract of the contract of the service of the contract of the

was requested to invite one or more of the clergymen of Baltimore to open the session of the convention with

Mr. Everett, of Mass. moved that the president and secretaries inform Mr. Clay of his communition by the National Republican Convention, as a candidate for the office of president of the United States. This motion was withdrawn, and a resolution substituted, that a comunties of one member from each state be appointed for that purpose. At the suggestion of the chair, the delegates from the several states appointed each their memer of the committee, which consisted of the following iter of the committee, which consisted of the following gentlemen.—Manne, Harry Barren, New Hampshire, Leonard Jawas; Vermont, William Jarvis; Massachtasetts, H. A. S. Deurborn; Connecticut, John A. Rockswell; Ithode Island, C. E. Robbins; New York, P. R. Lavingaton; New Jersey, Job S. Hatterd; Pennsylvania, Thomas Burnande; D.I.wave, E. I. Dipont; Maryland, William Price; Virgina, William Breckensidge; Ohto, Halland, P. M. Shuman; Induna, John H. Neelty Louisiana, H. A. Ballard; Destrict of Columbia, R. S. Coze.

Some conversation having arisen relative to the wish of the convention as to the monorie which the committee.

of the convention as to the manner in which the commumention should be made to Mr. Clay, the matter was

lest entirely to the discretion of the committee.

On motion of Mr. W. L. Stone, of New York, the convention adjourned until to-morrow at 12 p'clock,

[The committee of one delegate from each state, appointed to inform Mr. Clay of his anomination by the convention, remained after the adjournment, and resolved to address him a letter, to be delivered to him by a sub-committee of five of their body. -Accordingly the sub-committee started for Washington in the afternoon at four o'clock. ]

Wednesday, Dec. 14. The convention met pursuant to adjournment this day at 12 o'clock.

Previously to entering on the business of the convention, the following prayer was delivered by the rev. Dr. Wyatt, who, uniler a resolution adopted on Tuesday,

had been invited to attend.

Oh! eternal God, wonderful in counsel, mighty in power, and of majesty incomprehensible, who hast taken thee a nation from the midst of other nations, by temptations, by signs, and by war, and by a mighty hand, and by a stretched out arm, according to all that the Lord our God liath ilone for as in this land, we, thy people, worship before thee. Thine is the greatness, and the glury, and the victory; and thou art exalted as head above all, for all that is in the heaven, and in the earth is thene. Thou hast been graciously pleased to promise thy espeeial presence wherever two or three shall assemble to call upon thy name. Mercituity regard, therelore, () Lord, our supplications this day, and bless us with all spiritual blessings in Christ Jesus. We acknowledge before thee with shame and sorrow the many offences which, as individuals, and as a people, we are guilty be-fore thee. Remember them not, we beseech thee, O Lord, neither take thou vengeance of our sins; but spare us, good Lord, spare thy people whom thou hast re-

Accordingly, the secretary called over the names of thy lamenting our sins, and acknowledging our wretchedness, may obtain of thee, the God of all mercy, perfect remission and forgiveness. And because through the weakness of our mortal nature we can do no good thing without thee, grant us the help of thy grace, that in keeping thy commandments we may please thee both in will and deed, through Jesus Christ our Lord.

O Lord, Goil of our salvation, who upholdest all thing is the word of thy power, and who hast hitherto been exceeding gracious unto this our land, bestowing been execeding gracious unto this our laud, besto-mg upon us many and precious privileges, delivering us licon all our cenemics, and granting to us singular, prosperty, we desire to offer thee that seerifice of prabet and the control of the contr gird d us with strength, and blessed the work of our hands, thou makest peace in our borders, and fillest us with the floor of wheat. Oh continue to us thy lavor and protection. Let uprightness and dilgence, unity and brotherly kindness, moderation and sobriety, so flourish among us, that they may be the stability of our times, and make this nation a praise of the whole earth. Guide, sanctify, and save the president of the United States, and all subordinate magistrates, and officers thereof. Let the spirit of wisdom, and counsel, and the lear of Gud, rest upon all legislative bodies; and may all estates of men in thy holy church cheerfully and uniformly obey for conscience sake; that thy church may increase and flourish, and every member of the same in his vocation and ministry may serve thee devoutly and faithfully, through Jesus Christ our Saviour.

Most gracious God, we humbly beseech thee, as for the people of these United States in general, so espe-cially for their senate, and representatives now in con-gress assembled, and also for this present convention; that those wouldest be pleased to direct and prosper all their consultations, to the advancement of this glory, the good of thy church, the astety, honor and welfare of thy people; that all things may be so ordered and set-tled by their cudeavors upon the best and surest foundution; that peace and happiness, truth and justice, reli-gion and piety may be established among us for all gene-rations. These and all other necessaries for them, for us, and thy whole church, we humbly beg in the name and methation of Jesus Christ, our most blessed Lord and Saviour.

Our Father, who art in Heaven, &c.
The grace of our Lord Jesus Christ, and the love of God, and the fellowship of the Holy Ghost be with us and the love of all evermore. Amen.

The president having taken his seat and called to order, it was

Ger, it was Resolved, That gov. Coles, the honorable Daniel Webster, of Massachusetts, and the hon. E. F. Chambers, of Maryland, of the senate of the U. S. be invited to take seats within the bar. On motion of Mr. Holmes,

Resolved, That the names of such members as may have arrived since yesterday's session, be called that they may give their vote to the candidate whom they may prefer.

ay preter.
The following gentlemen answered to their names.
Virginiu - 1<sup>3</sup>. J. Cohen, A. B. Spooner, James Carr.
Ohia - J. Morrow, E. Stone, R. A. Thruston, S. W.

Davis. Tennessee-Boyd McNairy

North Carolina-John Hamilton, New York-W. J. Bacon, J. H. Pierson.

The proceedings of Tuesday were then read. Mr. Somerville, from the committee appointed to wait on the hou. Charles Carrell, of Carrollion, and to invite him to a seat in the convention, presented the following answer to the invitation:

Wednesday morning, Dec. 14, 1831. Gentlemen.—The severity of the weather, and the apprehensions of my family on that account, admonish nic to be cautious in venturing abroad at this sesson. I must therefore claim the privilege of advanced age, and apologise for not accompanying you this morning to the Athensum according to the promise of yesterday.

I request, gentlemen, that you will have the goodness to convey my apology to the distinguished individuals by deemed, and be not angry with us forever. Create whom you were deputed, to propose to me so flattering and make in us new and contrite hearts, that we, worthing a compliment, and to accept, on their behalf, and for vourselves, an assurance of the regard and resmet with t which I am, gentlemen, respectfully, yours, C. CARROLL, of Carrollton.

Mr. Dearborn, from the committee appointed to wait upon Mr. CLAY, and acquaint him with his maninous communition to this effice of president of the United States, by the convention, laid before the meeting the tollowing correspondence:

Baltimore, Dec. 13, 1831.

Hou, Henry Clay:
Stn.—The undersigned have been appointed a committee, by the convention of national republican delegates now assembled in this city, to announce that you were this day unanimously nominated as a candidate for the office of president of the United States.

Entertaining the most exalted opinion of your eminent talents, colorged patriotism, and distinguished public services, we have the fullest confidence that you will receive the united, cordul, and zealous support of every friend to the constitution, the integrity of the union, all the great branches of national industry, and the prinsthe great transition in minimal fluority, and the jumperty of the general weal; and we pledige to you, in behalf of the convention, the assurance of an ardem the termination to use all honorable means to insure your elevation to the chair of chief magistrate of this republic. With the highest consultration, bot of to be, sin, your most obedient servants,
PETER R. LIVINOPTON, of New York.
Maine. With the highest consideration, we have the

LEONAND JARVIS, New Hampshire. WILLIAM JARVIS, Vermont. HENRY A. S. DEARBORN, Massachusetts. CHRIST'S E. ROBBINS, Rhode Island. JUHN A. ROCKWELL, Connecticut. JOB S. HALSTED, New Jersey. THOMAS BURNSIDE. Pennsylvania. E. I. DUPONT, WILLIAM PRICE. De laware. Maryland. JAMES BRECKERRIDGE. Virginia. Ohio. J. SLOANE. DANIEL BRECK. Kentucky. FREDERICK H. SRUMAN, N Cirolina. JOHN J. NEELY, Indiana. H. A. BULLAND, Louisiana. RICHARD S. COXE. D. Columbia Committe.

Washington, 13th Dec. 1831.

Gentlemen-I have the honor to acknowledge the reecipt of the note which, as a committee of the convention of national republican delegates now assembled in Baltimore, you addressed to me, stating that I had been this day unanimously nominated by the convention as a candidate for the office of president of the United States,

This manifestation of the confidence of a body so distinguished, is received, gentlemen, with lively sensibility and profound grantude. Although I should have been glad if the convention had designated some citizen of the U. States more competent than myself to be the instrument of accomplishing the patriotic objects which they have in view, I do not leed myself at there to de-gline their nomination. With my respectful and cortial acknowledgments, you will be pleased to communicate to the convention my acceptance of their nomination. with the assurance that, whatever may be the event of it, our common country shall ever find me lathing to the union, and the constitution, to the principles of pullie liberty, and to those great measures of national pohey which have made us a people, prosperous, respected, and powerful.

Accept, gentlemen, of my thanks for the friendly manner in which you have conveyed the act and sen-timents of the convention. I am, with high respect, your

timents of the convention. 1 am, with then respect, your obedient servant.

11. CLAY.
Messrs. P. R. Livingston, Henry Warren, Leonard Jarvis, Win Jarvis, E. A. S. Deuborn, C. E. Robins, John J. Rockwell, Job T. Hulsted, The Brownidge, E. I. Dipport, William Price, James Brecken, ridge, J. Stoane, Daniel Breck, F. H. Shuman, John T. Kachel, M. A. Bullierd Brecker, S. C. S. C.

Tage, J. Savane, Daniel Dieck, F. H. Shuman, John J. Neely, H. A. Bullard and Richard S. Coxe, &c. &c. The letter was received with immense applause, both by the members of the convention, and a crowded au-

dience.

On motion of Mr. Bradish, of New York,

Resolved. That this convention do now proceed to nominute a candulate of the national republican party to fill the office of rice president of the United States.

Mr. Boyd McNairy, of Telmessee, then nominated JOHN SERGEANT, of Pennsilvana, as a suitable candidate for that unportant station, remarking that Mr. S. was too well known to require any eulogy from him. The nomination of Mr. Sergeant, was seconded by

gen. Jones, of Washington, in a speech of considerable length.

On motion of Mr. William Halstell, of New Jersey, the same course was directed to be pursued in nonmating for the vice presidency, as was ilone yesterday in nominating for president; wherenpon,

The delegates were all called over by name, and each one rose as he was called, and significal his preference for JOHN SERGEANT, of Pennsylvania.

So, JOHN SERGEANT, of Pennsylvania, was no-minated by the convention for vice president of the U. States, with the same unanimity which had already attended the nomination of HENRY CLAY for the presiilency-160 persons this day answering to their names.

On motion of Mr. Marshall, of Virginia, a committee of five persons was ordered to be appointed by the chair, to inform Mr. SERGEART of his nomination. The com mittee appointed consisted of Mr. Lucock, of Pennsylvania, Mr. Stanard, of Virginia, Mr. Jones, of the District of Columbia, Mr. Stone, of New York, and Mr. Morrow, of Ohio.

Mr. Burke moved for the appointment of a committee to ascertain what would be the probable expenses incurred by the convention, and to make provision for paying them.

em. Upon which,
Mr. John B. Morris, of Baltimore, rose, and stated, that so far as the place of merting and other secommodations of the convention were concerned, no provision was necessary, the citizens of Baltimore having, so lar as in their power, made all the necessary arrangements for reimbursing expenses.

On motion of Mr. Livingston, it was Resolved, That the thanks of the convention be present at to those gentlemen who had prepared the accom-modations, and for the very hospitable manner in which they had been treated, and that the president be the organ of the commun cation.

Mr. Everett stated that he thought the resolution just adopted did not supercede the necessity of a committee, as certain expenses, such as printing, &c. were not taken into view. He therefore moved that a committee be appointed, which motion was adopted.

The following grademen were named members of the committee

Messrs. Burke, Somerville, Talliaferro, James, and Combs,

On motion of Mr. Livingston, it was

Resolved, That a committee of one member from each state, and one from the Destrict of Columbia, be appointed to wait open the hon. Charles Carroll, of Carrollion, the surviving patrict who signed the Declaration of Independence, to know at what time and place it would be agreeable to him to receive the members of the national republican convention, who wish to tender to how their best leelings and high sense of gratitude for his patriotic services.

The delegations of the respective states having consulted together, the following gentlemen were named as members.

Messrs. Mussey, of Maine; Win. A Kent of New Hampshire; A. H. Everett, of Massachusetts; N. F. Hickson, of Rhode Island, Joseph Trombull, of Conceitet; W. A. Grawold, of Vermont; A. R. Lowence, of New York; Wm. Halsted, of New Jersey; Joseph Randall, of Pennsylvania; Wm. W. Murris, of Mary-land; Rotert Stanard, of Virginia; R. H. Alexander, of North Carolina; L. White, of Kentucky; Boyd McNarry, of Tennessee; Jeremish Morrow, of Ohio; H. A. Bullard of Louisiana, J. J. Neely, of Indiana, Walter Jones, of District of Columbia.

Mr. Combs, of Ky, stated that he had just received a letter from two of his colleagues, Messts. Johnson and Morehead, now on their way, and who would probably and constitution of the United States, and defending the between this evening, who had been reluctually detained by the inclemency of the weather. His chief reason for these impressions, the committee are extremely solicities. by the meremency of the weather. It is emer reason for mentioning the circumstance, however, was that they both assured him they were decidedly in favor of the nomination of Hanny Clay, for the presidency.

On motion of Mr. Randatt, of Pa. it was ordered that when the convention adjourn this day, it will adjourn to meet to morrow, at 10 o'clock.

The convention then adjourned.

Thursday, Dec. 15. The convention met this day pursuant to adjournment, and the throne of grace was addressed by the rev. Mr. Nevins, of the presbuerian church.

The president having taken the chair, and called the convention to order, the proceedings of yesterday were read.

The following additional delegates appeared to-day viz: from Kentneky, Francis Johnson, and James T Morehead, who severally recorded their votes in favor of the nomination of Henry Clay and John Sergeunt.

On motion of Mr. Fairfax, of Va. the following reso-

lution was agreed to:

Resolved, That a central state corresponding committee be provisionally appointed in each state where none are now appointed. And that it be recommended to the several states to organize subordinate corresponding committees in each county and town, in their several respective states.

Mr. Blunt, of New York, submitted the following re-

solution, which was agreed to:

Resolved, That it be recommended to the young men of the national republican party to hold a convention in the city of Washington, on the first Monday of May

In offering this resolution, Mr. Blunt stated that the young men of the national republican party half it in con-templation to assemble in emvention at Washington, and he thought it right that their proposition should receive the countenance of this convention. With that view he submitted the resolution.

It was proposed that a convention of delegates appointed by the mechanics of the national republican party, to meet at Washington in May next, should be recommended, but on its being suggested that the present convention was, in fact, composed of delegates from the mechanies, as well as other classes of the party, and that, therefore, there existed no necessity for such a convention, the motion was withdrawn.

Governor Morrow, of Ohio, from the committee yes-terday appointed to wait upon Mr. Carroll, reported that had performed the duty assigned them, and that Mr. Carroll would be imppy to receive the members of the convention at his house, this day, at 4 o'clack.

The president having intimated a wish to know whether it was the intention of the convention to proceed in

a body to the residence of Mr. Carroll,

Mr. Dearborn, of Massachusetts, moved the follow-

ing resolution, which was unanimously adopted:

Resolved, That the members of the convention will meet at the saloon of the Atheneum, this afternoon, at a quarter before 4 o'clock, and proceed thence in a body to the residence of the vouerable Mr. Carroll, to pay him their respects.

Mr. Lucock, from the committee yesterday appointed to wait upon John Sergeant, of Pennsylvania, and inform him that he had been unanimously nominated to the office of vice-president, by this convention, presented the tollowing correspondence; which was read. Barrimone, Dec. 14, 1831.

Hon. JOHN SERGEANT.

Sin: The undersigned, a committee appointed by the national republican convention for the purpose, inform you that you have this day been manimously minimated by the said convention as a candidate for the office of vice president of the United States.

It gives them much pleasure to make this communication, having the stronge stassurances, from a view of your political character and conduct, heretofore, that, if elected, you will be found an able and efficient auxiliary to the enlightened statesman recently nominated for the office of president; and that you will cheerfully co-operate with him in maintaining the supremacy of the laws ed by the committee appointed to draft the address, to

these impressions, the committee are extremely solicitious that you should accept the nomination thus unanimously and spontaneously tendered you by the conventinn; in which event, the committee are warranted in pledging you the hearty and zeshous support, not only of their colleagues and themselves, but of the great constitutional party of the United States, by whom they have been delegated by this convention.

Accept, sir, the assurances of our respectful consider-

A. LACOCK, WM. L. STONE, JEREMIAH MORROW ROBERT STANARD, WALTER JONES.

Bultimore, December 14, 1831.

Gentlemen-I have received your note of this date, informing me that the national republican convention, now sitting in this city, have unan-mously nominated me as a candidate for the office of vice president of the United States.

The nomination by a body so enlightened and patriotie, for one of the highest trusts of the republic, is felt to be a very great honor, and is appreciated accordingly. It is the more gratifying, as it associates me in their esti mation and support with that ilistinguished citizen, mation and support win that management entrem, whose public lite and character, marked by undersiting devotion to the best interess of our country, and a spirat as generous as it is elevated, are a sure picalge that an administration under his guidance would be comprehensive and national, aiming uneeasingly to preserve the union, to maintain the supremacy of the constitution and laws, to keep unbroken the public faith and honor, and to regard, with becoming indulgence and respect, the hodifferences of opinion among our lellow citizens, which our republican institutions permit and invite. To co-operate with him, to the extent of whatever means I possess, in thus promoting the welfare and happiness of the nation, and rescuing the freedom of opinion and conduct from unconstitutional oppression, would be no less my pleasure than my duty.

Be pleased, gentlemen, to make known to the convention my acceptance of their nomination, and with it, to express to them the unaffected sensibility with which I have received this distinguished proof of their confidence.

I beg you to accept my thanks for the kind and flattering terms of your communication and to be assured of the high respect of, gentlemen, your most obedient servant, JOHN SERGEANT.

Messrs, Abner Lacock, &c. &c.

The acceptance of the nommation by Mr. Sergeant, was haded with enthusiasm, and drew forth three very distinct rounds of applause.

On motion of Mr. Hatsted, of New Jersey, it was

On notion of Mr. Lawrey, a way werey, a way manimonaly Resolved, That the thanks of the national republican convention be tendered to Luke Ternan, Heckiah Nies, Nathaniel F. Williams, William H. Freeman, Nies, Nathaniel F. Williams, William H. Freeman, Nies, Nathaniel F. Williams and James Harwood, members of the national republican committee, the National Lawrey V. Sameriile N.

wood, memoers of the natural republican committee, and to John B. Morris, Henry V. Somervile, N. P. Williams and James Harwood, the committee of arrangement on the part of the numerous citizens of Baltimore, for the extensive accommodations they have provided for its sittings, and the attentions and courtesies they have extended to its members, and the facilities they have afforded to the objects of the convention.

flu submitting the foregoing resolve, Mr. II. said, that in adopting the resolution of yesterday the tender of thanks was too general and indefinite. The names of the national republican committee of Baltimore were now known, and it was due to them, and every member of this convention, he was confident, would be proud of the opportunity, to tender the thanks of this body to those very respectable gentlemen who had spontaneously come forward and provided for the accommodation o the convention. ]

Mr. Livingsion, of New York, stated he was request-

purpose. He therefore moved that a recess be taken un-tal one o'clock, P. M. which was carried, and the con-

vention adjourned until that hour.

One o'clock, P. M.—The convention having assembled, a letter was read from Mr. Samuel Paruell, of Virginia, regretting the necessity of his absence, and hop-Virginia, regretting the necessity of this absence, and rep-ting that Henry Clay would be nominated by the conven-tion as the candidate for the presidency. The letter en-closed ten dullars to be appropriated to the incidental expenses of the convention. The letter was ordered to be recorded on the minutes of the proceedings.

After having agreed to assemble at four o'clock this

After naving agreed to assemble a roll of the time afternoon, to pay their respects in a body to Charles Carroll of Carrollton, the convention adjourned until 12

o'clock on Friday.

At 4 o'clock in the afternoon of Thursday, the convention again assembled, when a procession was formed at the saloon of the Athenseum, headed by the president and other officers, the delegates being arranged in the geo-graphical order of the states which they represent, which proceeded to the mansion of the venerable Charles Can-ROLL, where each delegate was introduced to that dis-

inguished patriot, whi stood to receive them.

After the introduction was over, the president of the convention, James Barbour, of Virginia, advanced and tendered to Mr. Carroll the "homage of the national republican convention." He made a very handsome allu-sion to the patriotism of Mr. Carroll in the days of the revolution, spoke of the veneration in which his name revolution, spoke of the veneration in which his halle was held by a grateful people as the list survivor of that il-lustrious band of patriots who had signed the charter of our liberties; and said that our infants were taught to lisp his name, as one of the benefactors of the republic. He concluded by observing that the prayers of the free citizens of this highly favored land were daily offered to heaven in hearty suppliestion that that life might be long pre-served which had been freely devoted to the sacred cause of liberty in the days of trial.

After partaking of some slight refreshment, which had been plentifully prepared at the hospitable mansion of the revolutionary worthy, the delegates severally withdrew to their respective places of abode.

to their respective passes of aboute.

Mr. Carroll appeared to be pleased with the attention shows him, and conversed with several of the delegates for some time. When asked of his health, he replied, "I enjoy very good health." The epidemic which so generally prevail has affected the family old Mr. Carroll, as well as others; but that venerable individual has en-

trely escapel.

Friday, Dec. 16. The convention assembled this friday at 12 o'clock, when the rev. Mr. Finley, of the Baptist church, delivered a very appropriate prayer.

The record of yesterday's proceedings was read.

Mr. Everett, from the committee appointed to pre-pare an address to the people of the United States, on the subject of the election of a president and vice preaident of the United States, reported a draft as agreed upon by the committee; which was read, and unanimously adopted.

On motion of Mr. Coxe, of Washington.

Resolved, That ten thousand copies of the proceedings of the convention, and of the address just adopted, be printed, under the direction of a committee to be appomted by the chair.

On motion of Mr. Rockwell, of Connecticut,

Resolved, That it be recommendeded to the delegates restored, I hat it be recommended to the circuits from the several states to promote among their constituents a zealous support of the principles of the national republican party, and of the candidates nominated by this convention.

Mr. Morrow, of Ohio, said the duty had been assigned to him of offering to the convention a resolution tendering a vote of thanks to the officers which had been appointed to preside over its deliberations. That duty was the more gratifying to him, as he had had the plea-sure to associate with those individuals in other times in times when the dark cloud of war lowered over the land, and when it became the duty of every patriot to stand forward for his country's salety and honor. stand forward for his country's salety and nonor. I he country was now at peace with all the world—yet, he had sgain been permitted to take counsel with those same individuals, at a moment of great interest, and

say that they would require a little more time for that, when the talents and moral powers of every friend to of its best interests. He would not take up more of the time of the meeting, but submit for its adoption the

following resolution: Resolved, That the thanks of this convention be pre-Resolved, that the towns of this convention be persented to James Barbour, the president; and Atlen Trimble, Joseph Kent, Peter B. Porter, and Robert Temple, vice presidents, of this convention, for the able and dignified manner in which they have presided over its deliberations.

The resolution was unanimously agreed to.

On motion of Mr. Deurborn, it was

On motion of Mr. Dearworn, it was Resolved, maximum N. That the thanks of this convention be presented to Joseph L. Tillinghast and Henry Bucon, for the diligent and strenties manner on which they have discharged their duties as secretaries. On motion of Mr. Bradsh, it was

Resolved, That the thanks of this convention be preented to Abner Lucock, the chairman, and to Thomas P. Ray, the secretary, who officiated on the temporary

organization of the convention.

Mr. Barbour then rose, and addressed the convention, in behalf of himself and his colleagues, for about twenty minutes, in a most able and eloquent manner, during which he was repeatedly interrupted by the cheers of the assembly.

On motion, it was

Resolved, That the committee this day appointed to superintend the printing of the address, be directed to have also printed and subjought at the end thereof, the names of the niembers of the convention, and their respective places of residence.

Resolved, That the thanks of this convention be prescuted to those elergymen of the city of Baltimore who have so kimily officiated at its several meetings. On motion,

Resolved, That the president be requested to furnish for publication a copy of the sildress this day delivered by him, and that it be appended to the proceedings of this convention.

The convention then adjourned, sine die.

LIST OF THE MENDERS OF THE CONVENTION.

Maine. Nighan Gununings, of Purthaul; George
Evans, Gardmer; John Holmes, Alfred; Charles Mussey, Portland; Henry Warren, Palmyra.

New Hampahire. Charles Barrett, New Ipswish;
Leonard Jarvis, Glaremont; William A. Kent, Concord;
John B. H. Odiorne, Daver; James Wilson, Jr. Keene,
Massachusetts. Gilcon Barstow, Salem; Ira Barton,
Oxford; Henry A. S. Deaborn, Roxbury; Alexander H.

Everett, Baton: Russell Ferenson. New Bedford: John

Everett, Boston; Russell Freeman, New Bedford; John Lowell, Jr. Boston; Ebenezer Mosely, Newboryport; Gershom B. Weston, Duxbury; Samuel Snelling, Bos-

Rhode Island. Joseph L. Tillinghast, Providence; John B. Francis, Warwick; Nathan F. Dixon, Wester-

19; Chr. E. Robbins, Newport.
Connecticut. Daniel B. Brinsmade, Washington;
Dennis Kimberly, New Haven; John M'Clellan, Woodstock; John A. Rockwell, Norwich; Joseph Trumbull, Hartford.

Vermont. Dan. Carpenter, Waterbury; Wm. A. Griswold, Burlington; Thomas D. Hammond, Orwell; Wm. Westhersfield; Robert Temple, Rutland; Phi-

Javis, Westiterstein Robert Tempre, Rutisbue, em-neas White, Patney.

Joseph Blund, ediy di New York; John G. Camp, Buffa-loy H. B. Gowles, Carmel, Putnam co.; Husm Ketch-am, city of New York, Peter R. Livingston, Rhimebeck, Dutchess co.; Chas. Ludlow, Newburg, Orange co.; Abraham R. Lawrence, city of New York; Hugh Mawull, din, Fr. derick Mason, Norwy, Herkimer co; Peter B. Forter, Black Rock, Wm. L. Stone, city of New York; Z. Barton Stout, Richmond H.il, Oniario co; Richard R. Ward, city of New York; Henry G. Wheuton, Albony; William J. Bacon, Ulton; Jeremiah H. Pierson, Ramapo.

New Jersey. Amzi Dodd, Newark; Samuel S. Doty, Baskingridge; Job S. Halsteil, Newton, Sussex co; William Halsted, Trenton; Benj. P. Lippincott, Sweden-

New Brunswick.

Pennsylvania. Samuel Alexander, Carlinle, Min B. Butler, Pittsburg; Robert Burke, do, The-as Burnade, Bellefont; Thomas B. Coleman, Leanon; Joseph G. Clarkson, Philadelphia; James (2-0000, Clambersburg; Wm. H. Dallongham, Weat or ster; William Darling, Reading; Nathl. E ving, Fution Town, Washington Mopkins, Laucaster; Thop Siar D. Lewis, Wikesbarner Lycook, Barrer Lockhard. ner Lucock, Beaver towij Sharp D. Lewis, Wilkesbar-re; William Lyon Bedford; Peter S. Michler, Easton; Calvin Mason York; Thomas McGillin, Washington; Calvin Mason Tork; Thomas McGiffin, Washington; W. A. V. etagaw, Meadville; Josiah Randall, Philadel-phias John Sergean, do; Richard Penu Smith, do; An-isony Taylor, Bristol.

Delaware. E. I. Dupont, of Wilmington; Kinsey Johna, jr. Newcastle; Richard Mansfield, Middletown; William W. Morris, Dover; William D. Waples, Mills-

borough.

Maryland. Solomon Dickinson, Easton; Joseph Kent, Bladensburg; John B. Morris, Baltimore; Joseph I. Merrick, Hagerstown; William Price, do; James Sew-ell, Elkton; H. V. Somerville, Baltimore co.; James Tho-

ell, ElkCon; H. V. Somerville, Baltimore co., James' I ho-mas, Chaptico; John Tilgiman, Centreville; William Willis, Westminster, Frederick co. Virgária. Richard Adams, Richmond; Robert Ander-son, Williamsburg; James Barbour, Barboursville; Richard W. Barton, Winchester; David Briggs, Rich-mond; James Breekenrdge, Fincaude; Robert B. Corbin, White Chimneys, Caroline eo; Wm. B. Caldwell, White Sulphur Springs; John B. Clopton, Richmond; Saml. H. Davis, Winchester; Henry Fairfux, Fairfux court house; Charles Hill, King and Queen court house; Joshus M. Harrell, Suffolk; John Marshall, jr. Oak Hill, Fauquier co.; Philip C. Pendleton, Martinsburg; Cuthbert Powco.; Pinlip C. Pendleton, Martinsburg; Cuthbert Powell, Upperville, Loudon co.; Thomasal. Ray, Morgantown; Robert Stanard, Richmond; John Talislerro, Predericksburg; Thomas Turner, The Plains, Fauquier co.; Henry S. Turner, Charlestown, Jefferson co.; Edward T. Tayloe, King George court house; William Wooda, Charlottesville; P. I. Cohen, Norfolk; A. B. Spooner, Petersburg, Diawiddie; James Carr, Deep Creek, Norfolk co.

North Cavelina. Richard II. Alexander, Salisbury, Rowan eo.; Frederick H. Shuman, Salem, Stokes co.;

John Hamilton, Concord, Cabarras co.

Kentucky. Daniel Breck, Richmond; Charles Buford, Georgetown, Leslie Combs, Lexington; James W. Denny, Frankfori; Thompson M. Ewing, Elkton; Jas. Harlan, Danville; James Hughes, Louisville; John Jennings, Laoussier; Martin P. Marshall, Flemingsburgh Wm. T. Williams, Parus Lee White, Louisville; Francis Johnson, do; James T. Morchead, Bowling Green.

Morelicad, Bowling Green.

Tennessee: Boyd McNairy, Nashville.

Ohio. Philemon Beecher, Fairfield, Henry Baeon,
Dayton, Montgomery co.; Jas. M. Bell, Cambridge,
Guernsey co.; Hez. Basell, Wooster, Wayne co.; Thomas Fianner, Zaneville, Muskingum co.; Edw. Hamiton, Portsmouth, Scioto co.; John H. James, Urbanna,
Charmetinian Lee H. Liese, Poulseide, Experiel. ton, Portsmouth, Scioto co.; John H. James, Urbannia, Champaign, Jos. H. Jims, Rushville, Parfield co.; Leicester King, Warren, Trumbull co.; George Renick, Chillicothe, Ross co.; Allen Trimble, Hilsbornogh, Highland; George Receves, jr. Zanesville; John Stoan, Wooster, Wayne co.; James Williams, Novalk, Huaron co.; Jeremish Morrow, 20 miles stand P. O. Warnon co.; Jeremish Morrow, 20 miles stand procession co.; Jeremish Morrow, 20 miles stan ren co.; Ethan Stone, Cincinnati, Hamilton co.; R. bert A. Thruston, Dayton, Montgomery eo.; Samuel W. A. Infution, Daylon, Mongomery ed., Sander V. Davies, Cincinnati, Hamilton co.

Louisiana. Henry A. Bullard, Alexandria, (M. C.);
Josush S. Johnson, do. do.

Indiana. John J. Neely, Princeton; Isaac Howk,

Charlestown Charlestown.

District of Columbia. Richard S. Coxe, city of Washington; Wm. L. Hodgson, Alexandria; Walter Jones, easy of Washington; Wm. S. Nichols, Georgetown; Edgar Snowden, Alexandria.

ADDRESS OF THE NATIONAL REPUBLICAN CONVENTION. To the people of the United States.

FELLOW CITIZENS:—The period will soon arrive when

you will be called upon to exercise a right, which, of all under circumstances more favorable to a successful dis-

borough; Henry D. Polhemus, Freehold, Peter M., 12-independent nations of considerable power on the Ryerson, Pompton, Bergen co.; James F. Randolph | globe, you alone possess—that of electing, by your own free choice, and from among yourselves, the person who is to be entrusted with the high functions of your chief executive magistrate. It is sometimes said that it is of little importance what individual is clothed with that character: that a president of the United States has no great personal influence either for good or evil, and that, in the present prosperous condition of the country the public affairs would be transacted just about as well under one president as another. Such opinions can only be entertained by persons who have reflected very little on the theory or the practical operation of our govern-The whole course of the public affairs depends, in a very considerable degree, upon the direction which is given to the influence belonging to the office of president. It is no doubt true that the political machine may continue to move on a while with apparent success under very unskillul direction by the effect of a lavora-ble impulse received at other times; but it is obvious, that if such a state of things continues long, the favora ble impulse will be lost, and the principle of prosperity destroyed, perhaps forever. It is generally acknow-ledged that the pure and lofty character of Washington contributed more than any other cause to carry our institutions into successful operation, and that the emment virtues and acknowledged talents of his successors in the presidency, have added very powerfully in sustaining and perfecting the work which he began. It is equally apparent, that if the chief magistracy should ever be committed for any great length of time to persons of an opposite character, the condition of the country must undergo, in one way or another, a disastrous, perhaps a latal revolution.

> Such being the importance of the right which you will soon be called upon to exercise, you owe it to your-selves, to your children, to your country, to the cause of humanity, which is so deeply involved in the issue of the political experiment that is now making among us, to exercise it with full and mature deliberation-without any bias from party feeling or mere personal advantage, and with a single view to the public good. You owe this, not only to the interest, but to the honor of the It is important to the preservation of the fair fame which we have already acquired throughout the world, that the seat of Washington, and his successors, should be worthily filled: that persons should be chosen to succeed these illustrious men, who shall be able, like them, to do honor, by their manner of discharging its duties, even to the high office of president of the United States: that the personal conduct of the head of the executive department should be marked, as it always was in former days, with dignity, judgment, good temper, discretion, and moderation; that the youth of our government should not be sullied by the loul stains of inmorality that disfigure the antiquated and corrupt institutions of other countries, and that our citizens and the world at large should be able to look up to the high places of this union for examples of public and private

> Under these impressions of the importance of the crisis, a numerous portion of our fellow-citizens residing in all parts of the country, and who have acted together in political affairs for some years past, under the name of NATIONAL REPUBLICANS, have directed us to meet together and deliberate upon the course which they ought to pursue, and the persons whom they ought to support for the great offices of the government at the approache ing election. In preparing to exercise this delicate trust, we have been naturally led to take a careful and delibe rate survey of the political condition of the country, and of the manner in which the public affairs have been conducted by the present administration. This survey has resulted in a full conviction that the public good imperiously requires a change; and in proposing to you as candidates for the presidency and vice presidency the distinguished eitizens whose names accompany this address, we have deemed it our duty to lay before you a concise statement of the principle circumstances which have led us to this conclusion.

No president ever entered on the duties of his office

charge of them than the present incumbent. The country president was known to be in the qualities and accom-thanks to Providence and to the ability and good fortunkly alialiments most essential to a civil maristrate, it was with which the public affairs had been carried on by preceibing administrations, was in a high state of pros-perity.—All the public establishments, and all the great branches of private industry were in the most four-sh-ing condition. Agriculture was rapidly extending itself in all directions, and particularly through the wide and fertile regions of the west-manufactures were advancing with unprecedented rapidity-commerce, internal and foreign, was animated with a corresponding vizorour relations with foreign powers were of the most amicable character-at home, tranquility and general contentment pervaded every corner of the union-the parrmerly divided the citizens and distracted the sies that fo country, had it a great measure become extinct under country, nas in a great measure become extinct unter the operation of time—the growing prosperity of the nation, and the judicious and liberal conduct of the go-wernment. In the pride and pleasure which we all left in claiming the character of citizens of the United States, we were ready to forget that our fathers had been classed as republicans and federalists. The name of AME-BECAN had, by a sort of common consent taken the place of all other political distinctions. American Prince-place had become the common creed of the high minited and patriotic adherents of all the former parties. In a wish or hope, in regard to our political attuation, than that we might proceed in the course which we were then pursuing, and remain, in every thing belonging to cha-

Were. were.
This state of things, afforded, of course, the best evidence that could possibly be had in favor of the administration under which it had grown up. Much of it could be traced directly to the character and opinions of the leading members of that administration. however, under these circumstances, that a vigorous, and, as has been shewn by the issue, successful effort was made to effect a change, and to place in the chair of the chief magistracy the present incumbent. Of the comparative qualifications of the president and his predecessor, for the high station which they have successions filled we will not here speak. We cheerfully resign a task so ungrateful in one of its divisions, to the impartial and unshrinking hand of history. Nor will we here enlarge on the means by which the change in ques-tion was accomplished—the reckless and persevering calumny, which was constantly nonred forth from hundreds of presses, on the best and the purest men in the nation .- the false pretentions to exclusive republicanism the factious clamor which was kept up in congressthe artful combination of conflicting personal and party interests for a common object, and the various other unworthy arts, that were brought into action on this occa-Suffice it to remark, that the change was effected in form, at least-in a legal and constitutional way; and, however, justly offensive the circumstances the brought it about, might and must have been to the triends of the last administration, however deficient the present incumbent might have been supposed to be in the quali ties most requisite for the station to which he had been raised, it is believed that when he entered on his office. there was no disposition in any portion of the people to commence a premature or factions opposition to his measures .-- It was alarming ruough to prudent and well caning men, that the government of the country had fallen into such hands, and far from attempting to perplex or embarrass the administration, they would rather have lent ail the aid in their nower to carry the country safely through so dangerous a crisis .- On the other hand, the military successes of the president had gamed him an extensive personal popularity, which would have enabled him, had he known how to turn it to account, to carry on the government with extraordinary facility. Under this combination of circumstances, it is believed that had the public affairs been managed with tolerable prudence and discretion, general Jackson might have gone through his term of official life without a show of opposition, and have been re-elected, had he been so in-

consistent as to decire it, by a very unanimous vote.

Nor were the friends of the country without strong hopes that such a result would follow. Deficient as the

ulishments most essential to a civil magistrate, it was Yes, anticipated that he night be found to possess the courtes, the generous leelings, the high sense of decorate and anticipated the sense of the s run and aropriety which form the appropriate orma-ments of the allitary character, and would have secured him from any obes offence against the dignity of his office. After the letter to the venerable patriot Monroe, fice. After the lettes to the venerable pair iot Monroe, in which he had so emp-pically recommended the obligation of the old party distinctions, it was confidently expected that nothing would be does by himself that should tend to revive them. He had give, on several public occasions, opinions on polets of administration which have tended to the tender of the distinction of the work of the distinction of the office; and it was perhaps not unreasonable to hope th his actions would correspond, in some imperfect degree at least, with his previous professions. Had this been the case, his administration would have given complete sa-tisfaction to the country. Whether its complete and acknowledged fadure has been owing to defects in his own character, or to the influence of evil counsels on his mind and measures, is a point which it is unnecessary, and would be ungrateful, to iliscuss. We should regret to We should regret to visit with too severe censure the last days of one who, in another line of duty, has slone the state much service, and whom nothing but the imprudence of injudicious friends, or rather the efforts of political partisans, who found it convenient to make use of his name and popularity for convenient to make use of this name and proposery ro-their own selfish purposes, has prevented from going down to posterity with a high military reputation, and filling an honorable place in our history. We are rather will any to believe that, placed in a situation for which he was by education and character wholly unfit, worn out by toils, infirmities, and the natural progress of age, he acted under influences which, morally speaking, he could not well control. However this may be, it is certain that the expectations and hopes which some persons may have been disposed to indutge of the success of his administration, have been signally disappointed, and that his failure has been more complete than even his enemies could have possibly anticipated. The political history of the union for the last three years exhibits a series of measures plainly dictated in all their principal features by blind capitlity or vindictive party spirit, marked through out by a disregard for good policy, justice, and every high and gen-rous sentiment, and terminating in a dissolution of the cabinet under circumstances more scandalous than any of the kind to be met with in the annals of the civilized world. The voluntary dissolution of the cabinet suthurises the remark which we have made above, that the ladure of the administration of gen. Jackson was not only signal and complete, but acknowledged; and it is remarkable that, after this public acknowledgment of his incapacity to execute the duties of his office, through agents appointed by hims If, even to his own satisfaction. he should deem it expedient to offer his services to the nation for a second term.

The first official act of the president indicated, in a striking and painful manner, in how small a degree any favorable anticipations, that might have been formed of his inaugural address to the people, in which he levelled against the administration of his predecessor a sweeping charge of incapacity and corruption. A charge of mea-pacity to conduct the civil affairs of the country preferred by Andrew Jackson against such men as Mr. Adams, Mr. Clay, and their distinguished colleagues in office, was of course merely ludicrous; but the imputation of corruption was of a more serious character. been the least humilation for it in fact, it is obvious that the last person who ought to have made it his business to denounce it to the public was the president of the U. States, who has no other constitutional agency in regard to such offences but the power of pardon. The indecorum of this denunciation was hardly less glaring than its essential injustice, and can only be paralleled by that of the subsequent denunciation of the same administration, on the same authority, to a foreign government,

This proceeding awakened in the mind of every good eitizen very painful forebodings as to the consequences which were to follow upon such a commencement.

These forebodings were too soon realized. The next act of the administration was a general removal of such of the public agents as were not recommended by attachment to the person or party of the president. extent to which this system was carried is strikingly evinced by the last, that within a month after the insuguration of gen. Jackson, more persons were removed from office than during the whole forty years that had elapsed since the adoption of the constitution. The moit was applied principally in states where the majority of the people were opposed to the administration, while in the others there were comparatively few removals. Such was the practical comment on the text of the inaugural address which denounced the preceding administration as having brought the patronage of the government into conflict with the purity of elections. The foreign ministers were abruptly recalled at large expense to the country, in some instances before they had reached their destination, and in all, without the observation of the common forms of civility towards them, or the governments near which they were accredited. Among the victims of proscription at home were some of the most respectable and interesting persons in the community-veterans who. after fighting the battles of the war of independence, had been placed by the justice of the government in the offi-ces they held, and were now rudely thrust out of them to endure, at an advanced age, the miseries of actual want, as a reward for the devotion of their whole lives to the public service. This was not all. This universal proscription, taken in connection with the tenor of the inaugural address, amounted to a charge of universal uption. Common justice required that the individuals against whom such a charge was brought should have opportunity to defend themselves. None was given. No enquiry was ordered. No specifications were made. No examination was had. When a public sermade. No examination was had. When a public servant of unblemished character, now a member of congress, demanded of the late secretary of state an explination of this implied charge of corruption, under which he had been removed from his place as a clerk in the department of state, he was coolly informed that no harm was meant, and that no explanation would be giv-Even this was not the worst. Attempts were made in more than one instance, under pretext of a stricter control of the public accounts, to deprive these victims of persecution of the scanty remnant of their means of subsistence. A public servant of most respectable character and venerable years, was not only removed and thrown upon the world, at the age of more than eighty, but actually had his lurniture seized, under a treasury warrant of distress, upon a false pretence of peculation, at a time when, as appears from a subsequent decree of the competent tribunal, the United States owed him the competent tribunal, the Chief cases occur-more than twelve thousand dollara. Other cases occur-red of a precisely similar character. Can there possibly he now thing behind more revolting than this? There is, In the case of the assistant post master general, there is too much reason to fear that there occurred in the post office department an actual alteration of the public accounts, for the purpose of fixing, upon that most meritorious public servant, the blame of some supposed malversation in office, which had really been committed by his successor. We cannot but hope, for the bonor of the country, that some explanation will yet be given of this transaction, consistent with the probity of the individuals at the head of the post office.

The history of the all ministration of civil need governments presents no parallel to this seene. Many of the partisans of gen. Jackson have shrunk from the task uf delending it and taken reloge in a bold slienal of the fact. Public writers of some respectability did not seruple to affirm that there had been no removals on account of political opinions, as if—to use the indignant language of a Roman historian—they thought they could blot out the record of their sloings from the memory of the human rase. After a while, the charge of corruption seems to have been abandoned, and in his first message to conserve the seems of the state of the seems of

This doctrine, which, if applied to practice in private life, would be thought to argue a degree of improvience, equivalent, in its effects, to insuity, and would immediate, by ruin the most prosperous establishments—was gravely smooneed as an acknowledged truth. It was affirmed that the natural effect of possessing an office was to ereate negligence and corruption in the person holding at that the public lost more in this way tian was gained by the additional experence and dexterty resulting from the same cause—that frequent changes in office were highly expedient—that all offices should be held lor short terms, and, in particular, that the constitution ought to be so amended, that no person be eligible a second time for that of the president of the United States.

These principles, whether true or false, are irrelevant to the subject, because the removals from office by gen. Jackson were not mule, either really or professed for the impose of change or rotation, but, professedly, because the incumbents were incapable or corrupt, and really for the purpose of "rewarding his friends and punishing his enemies." No disposition has been shewn to apply this wholesome principle of rotation to the president's partizans, and the best illustration of the real meaning of the language used on this occasion, is to be found in a letter written from the president's house, under the president's frank, to a member of the Pennsylvania legislature, requesting him to use his influence to procure from that legislature a nomination of the presi-The doctrine of rotation in office had, therefore, nothing to do with the matter. The motives assigned, in the first instance, by the president, viz: the incapacity and corruption of the incumbents, would have been sufficient had they been founded in facts but it was felt that no removal for such reasons would be tolerated by the public, unless the supposed inespable or corrupt functionary was first put upon his trial, and allowed an opportunity of defending himself against the specific charges, whatever they might be, which has been preferred against him. It was therefore found necessary to abundon this ground, and for want of a better, resort was find by the president's counsellors to the stale sophistry of rotation in office.

On the appointments which were made to fill the numerous vacancies occasioned by these removals we shall not enlarge. Among them are to be found the names of some persons very honorably known to the public; but they were made, in general, almost avowedly for no consideration but that of party, and in many instances. with so little discretion that they were rejected, in one or two cases, almost unanimously, by the senate. An occurrence of this kind is, we believe, without a paralled at any previous period of our history, and would be sufficient of itself to throw discredit on the administration. Of the persons so rejected, some were recon mended anew, under circumstances amounting to an attempt by the president to force them into office against the known opinion of his constitutional advisers. this occasion was also exhibited a striking example of the inconsistency between his professions before his election, and his subsequent practice. Although he had himsell signalized the appointment of members of congress to office as a great abuse, he selected four of the five heads of department from that body, and appointed its members to other places to an extent which had never been known before. Although he had inveighed with warmth against the supposed corruption of the public press under the preceding administration, and in his inaugural address had even denounced his predecessor for having brought the patronage of the government tors were now among the most favored classes of pre-tenders to employment. Under these circumstances the first year of the present administration presented little else than an eager and tumultuous scramble for place. The offices which were instituted for the public service and ought to be conferred with a view to no other object, were apparently, and even arowedly, treated as prizes to be distributed among the conquerors in the struggle of parties. What have we been fighting for—was the language of some of the leading administration prints—if the public offices are not to be the apoils of victory?

Such were the suspices under which the present administration commenced their career. They were not of a kind to create very high expectations from the result of their labors. The subsequent progress of events has shewn very clearly that the least lavorable expectations that could possibly have been formed of their policy were yet too sanguine—that our most important institutions are now seriously threatened, and that a continuance in the course that we are pursuing, will probably plunge the country, at no distant period, into dangerous—perhaps irrencilable confusion.

In the conduct of the foreign affairs, there has been, however, an appearance of success to each other has been the fact that several arringages at with loreign powers which had been mastered and in some instances concluded, under the preceding administration have been made public under this. Success the same the case with the treaties with Austra, with Bourst, with Donusek, and with Turkey. In anomacing the conclusion of these arrangements, an inheast of an elevated and generous dispusition to the same and the same and

The administration have, in other respects, mistaken the leading principles in the true forcign policy of the country. With Russia, our most important, powerful, and useful political ally, our relations have been which agglected. At a critical moment in the political affairs of Europe, when our influence with the emperor of Russia might have been turned to the best account in favor of the cause of free government, when the breaking out of a general war may render his influence in Europe of the highest importance to ourselves, a distinguished citizen, who had for many years represented the country with extraordinary credit and success at St. Petersburgh, and who was known to be personally agreeable to the imperial family, is abruptly recalled, and the affairs of the legation left in a wholly uncertain state.

On the great subjects of internal policy which have given rise to conflicting opinions and adverse leclings green to commenting upmains and sovere techniques among the citzens, the course of the president has been so inconsistent and vacilizing that it is impossible for any party to place confidence in his character, or to consider him as a true and effective friend. By avowing this approbation of a judicious tariff, and at the same time recommending to congress precisely the same po-licy which had been adopted as the best plan of attack the opponents of that measure: by ailmitting the conatitutionality and expediency of internal improvements of a national character, and at the same moment negativing the most important bills of this description which were presented to him by congress, the president has shewn that he is either a secret enemy of the system, or that he is willing to sperifice the most important national objects in a vain attempt to conciliate the conflicting interests or rather adverse party feeling and opinions. of different sections of the country. How can the pre-sident be regarded at the north and west as the friend of the tariff and internal improvements, when his only recommendation at the south is the anticipation that he is the person through whose agency the whole system is to be prostrated? With a chief magistrate who acts upon so temporising and uncertain a policy it is obviously impossible that any abatement can take place of the exeitement that prevails upon these disturbing topics. It is only through the intervention of a statesman, in whose known sentiments and elevated character all parties can place confidence, that a hope can be entertained of so regulating these delicate subjects as to extend a fair and impartial protection to all the great branches of indus-

Such were the auspices under which the present adinstration commenced their career. They were not a kind to create very high expectations from the reakind to create very high expectations from the re-

Next to the great measures of policy which protect and encourage domestic industry, the most important questiun, connected with the conomical policy of the country, is that of the bank. This great and benefical country, is that of the bank. institution, by facilitating exchanges between different paris of the union, and maintaining a sound, amule, and parts of the inition, and maintaining a sound, ample, and healthy state of the currency, may be said to supply the holly politic, economically viewed, with a continual stream of life-blood, without which it must inevitably languish, and sink into exhaustion. It was first concerned and organized by the powerful mind of Hamilton. Atter having been temporarily stoken by the bonest been recalled to existence by the general consent of all parties, and with the universal approbation of the peo-Under the ablest and most faithful management a pie. Under the ablest and most faithful management a has been for many years past pursuing a course of stessy and constantly increasing influence. Such is the inst-tution which the president has gone out of his way in several successive messages, without a prefence of accessity or plausible motive, in the first instance six years before his suggestion could with any propriety be acted upon, to denounce to congress as a sort of nuisance, and consign, as lar as his influence extends, to immediate destruction.

destruction.

For this ilconnectation no pretext of any adequate motive is assigned. At a time when the institution is known to all to be in the most efficient and prosperous state—to be doing all that any bank ever did or can do, we are briefly told in ten words, that it has not effected the abjects for which it was instituted, and must be abolished. Another institution is recommended as a substitute, which, so far as the ilescription given of it can be understood, would be no better than a machine in the hasds of the government for fabricating and until graper most of the government for fabricating and in this graper most of the government for fabricating and in this graper most of the government for fabrication and in the paper most of the government for fabrication and in the paper most interest in the same concepts to congress, the president declares, for the most interest in the same considering to the people that they ought to be seried on It, therefore, the president be re-elected, it may be considered extrain that the bank will be abolished, and the institution which he has recommended, or something like it, substituted in its olare.

like it, substituted in its place.

Are the people of the United States prepared for this Are they ready to destroy one of their most valuable establishments, to gratify the caprice of a chief magis-trate, who reasons and advises upon a subject, with the details of which he is evidently unacquainted, in direct contradiction to the opinion of his own official counsellors? Are the enterprising, liberal, high-minded, and intelligent MERCHARTS of the union willing to counter nance such a measure? Are the cultivators of the west, who find in the bank of the United States a never-failing who find in the saint of the United States in ever-taining source of that CAPITAL, which is so essential to their prosperity, and which they can get no where else, pre-pared to lend their aid in drying up the lountain of their own prosperity? Is there any class of the people or section of the union so lost to every sentiment of common prudence, so regardless of all the principles of re-publican government, as to place in the hands of the caecutive department the means of an irresponsible and unlimited issue of paper money - in other words, the means of corruption without check or bounds? be, in fact, the wishes of the people, they will act with be, in tact, the wishes of the people, they will act win consistency and propriety in voting for general Jac koon, as president of the United States; for, by his re-election all these deastrous effects will extend be produced. He is fully and three times over pledged to the people He is unly and three times over present to see propose to negative any bill that may be passed for re-chartering the bank, and there is little doubt that the additional in-fluence which he would acquire by a re-cleetion, would be employed to carry through congress the extraordinary

substitute which he has repeatedly proposed.

It may be said, indeed, that the Preablent's counsellors do not scree with him on this subject, and may perhaps over-rule his opinion before the time of action shall arrive. In his recent report to congress, the scretary

of the tressury has, in fact, undertaken an analogy for an entries the appeal from the state to the federal courts, the bank, which coming from him, can be viewed in properly forms the foundation of the jurisprudence of the other light than as a formal defence of that institute other light than as a formal befence of that institution against the attack made upon it by the president, amough he concludes with the intimation, that his view may be modified in compliance with those of the executive; as if he were not houself the head of the financial branch of that the partment. It is one of the "insignifierities of our present political situation, that solle we are told on the one hand, by the president-partizans, that his acknowledged incapacity may use will be remedied, by the employment of an hije cabinet, we are now told, on the other hand, by viii "able exhibite," that they cannot control the excitation's conduct, and that their sounders are the excitation's conduct, and that their sounders. onter hand, by one "able estinct," that they cannot control the resident's conduct, and that their sounder control the resident's condict, and that their sounder control the resident so as to meet the views of the notions dust be modified so as to meet the state as the notions. In what we are apt enough to consider as the ey adive. In what we are apt enough to computer as and corrupt and service courts of Europe, a cabinet minister who cannot prevail upon the "executive" from whom he was a computer to the course resignal his holds his commission to adopt his views, resigns his commission. He deems it improper to modify his opinions, in order to suit them to the views of the executive-in other words, to make himself responsible for a scheme of policy which he does not approve. But supposing that the present sceret ry of the treasury, if contiqued in place, would be able, when the time of action about arrive, to over-rule the president's opinion, substitute his own views for those of the executive, and stay this great mischief—what security can the sountry feel that he will be so continued? Who can assure us that some that he will be no continuer; Who can assure us that some explosion, resulting from eauses too brivolous to be even made, with propriety, the subject of distinct allusion in a serious political document will not scatter the present cabinet, like the last, to the four winds of licaven, and introduce into the councils of the nation a new set of advisers, still more ready than those who now occupy that place, to accommodate their opinions to the view of the executive? The only security which the country can have for the proper discharge of the duties of the executive, as of every other branch of the government, is the capacity, fitlelity, and industry of the individual who is by law responsible for that department—that is, the president; and experience has amply shown, that an individual who is unfit for the office himself, is equalty unfit to select those who are to assume his responsibility, and be virtually presidents under him.
The judiciary department, an institution still more

important than any one can be that merely affects the economiss! interests of the union, seems also to be seriously threatened by the perverse policy of the pre-sent administration. The great improvement made by the ad ption of the present constitution in the political system of the old confederation, was the extension of the power of the union over the persons of the individual citizens, through the action of the leder I courts, including, as a necessary ingredient, a right of appeal to these courts from the decisions of those of the states. The alloption of this single salutary provision raised us from the situation of a cluster of poor, imbedie, and, for all substantial purposes, mutually dependent states, oppressed with debts, disturbed by insurrections, and on the verge of absolute anarchy, into our subsequent condition of one great, powerful, prosperous, glorious, free and independent federal republic. The rejection of this wholesome principle would bring us back again to the same situation in which we stood before. Notwith-standing this, a powerful party, represented by several important states, and by a large and respectable portion of the people seem to consider the union, and the prineiples on which it is founded, positive evils. Much is said if the sovereignty and independence of the states, and of their right, as separate states, to annul the laws; while threats are held out, which have not in all eases proved to be mere empty words, that this is to be im-mediately exercised, and the union of course virtually

Under these eireumstances, it was to have been ex-Uniter these circumstances, it was to have been expected that the president, as the head of the executive department, and natural guardian of the rights and powers of the federal government, would have exerted his influence to check this slangerous spirit. Instead of this, we find him openly encouraging it, and acting under its influence. When a proposition to repeal, without a substitute, the section of the judiciary act which

union in this respect, was made in congress, it was far vored by the immediate friends of the president, and by the journals under his control; and at the recent orga-nization of the house of representatives, the member proposing the repeal was placed at the head of the judiciary committee. These proceedings seem to indicate a settled intention in the administration to shake the independence and destroy the efficiency of this most important branch of the government.

The last point which we shall notice in the conduct of

I me last point which we sumt notice in the content of the administration, as relates to the internal policy of the country, and it is, perhaps the most important of all, as far as concerns the principles involved, is that of our relations with the Indian tribes, and particularly that portion of the Cherokees situated within the territorial limits of Georgia. A series of solemn treaties conclud-ed successively by all the administrations of the general government since the period of its establishment, guaranced to these indians the possession of their lands without interference or intrusion from any quarter, their right of governing themselves according to their own laws within those limits, and their character of sovereign states. An act of congress passed in the year 1802, authorised and required the president to protect the Indians in the rights guaranteed to them by those treaties, in necessary, by the employment of the military force, in open violation to all these solemn engagements the state of Georgia has extended her jurisdiction, over the territory and persons of the Cherokees situated within her limits, interrupted them in the possession of their ther limits, interrupted them in the possession of their dwellings and plantations, and attempted to deprive them of the character of distinct communities; while the president, instead of protecting the Indians squinst the present, maked of protecting the Indians spainst these acts of wholly Unauthorised violence, has openly countenanced the pretentions of Georgia, and, instead of employing the armed force of the United States, in their defence, has actually withdrawn that force at the instance of the offending party, from the scene of action. and left the wooffending natives entirely at the merey of their enemies.

The recent inhuman and unconstitutional outrages committed under the authority of Georgia upon the persons of several unoffending sitizens heretolore re-siding as missionaries within the territory of the Cherosiding as missimaries within the territory of the Cherco-kees, constitutes, perhaps, the most unjustifiable portion of these proceedings. They have received, fike the rest, the countenance and approbation of the general executive. Few examples can be found, even in the history of barbarous communities, in which the sacred character of a minister of refigion has furnished so slight a protection against disrespect and violence to the per-sons invested with it. We rejoice to learn that this subjeet will shortly be presented to congress and to the people, in full detail, and in a form fitted to excite the attention which it so well deserves.

It appears from this concise survey of the present situation of the union, as regards the principle branches of our foreign and domestic policy, that it is the duty of all patriotic citizens not only not to aid in the re-election of the present incumbent to the chief magistracy of the union, but to use their efforts to effect a change in the national administration; and in order that such efforts may be made with success, the time has now arrived when it is necessary to designate a candulate for the succession, whose name may be a rallying point and a principle of union among the elizens who are opposed to the reelection of Andrew Jackson.

In looking around the country for such a person, it is almost superfluous to say, that the eyes of all are instinctively directed towards that illustrious citizen, who, after occupying the most distinguished places in the gut of the people; and in all the departments of the administration, has dwelt for some years just in tranquil refire-ment in the busom of the west. The qualifications and services of HENRY CLAY are too well known to require the aid of our testimony. As a statesman, alvo-cate and orator, he has been from his youth upward the pride of our courts and legislative halls. As an ardeni, tearless, and consistent friend of liberty and republican institutions, he has endeared himself to their friends throughout the world. His devotion to this great cause. furnishes the surest guaranty that he will, on all oben, and needless to disguise from ourselves, the fact that a cersions, assert the supremacy of the laws, and that execusive power in his hands, will be their buthful auxiliary. As one of the principal tounders, and supporters of the American system, he is entitled to the warm support of all who desha the prosperty of the great cause of domestic industry and internal improvement. The signal success with which he conducted the affairs of the department of state, evinces his capacity for the actual business of administration; while the generous trankness and captivating warmth of his mattuers, emineutly fit him for a station, where in order to be useful, it is necessary to conciliate the public favor as well as transact with ability the public business. He has already been designated in various ways, and in all quarters of the country, as the candidate of the opposition, and we consider it the duty of all good citizens to use all the means in their power for the purpose of securing his election.

In proposing, in connexion with the name of HENRY CLAY, as a candidate for the presidency, that of JOHN SERGEAN I as a candidate for the vice presidency of the United States, the convention offer to your suffrages a citizen of acknowledged talents, various accomplishments, large experience in the highest and most honoratrusts, unblemished reputation, and the ble public most ardent and unwearied zeal for the hogor and interest of the country. Pennsylvania has long looked up to him as one of her chief bruchients, and the estizens of other parts of the union, in placing him in the second of-fice in the executive department of the government, will be happy to shew their concurrence in sentiment with

that great and patriotic state.

Without meaning to encourage an undue confidence, which would only generate unctivity, we believe that, with proper exertion, the success of the good cause is beyond the possibility of doubt. The present adminis-tration has for some time past been justly discredited in public opinion.—General Jackson has been gradually losing, ever since the commencement of his official term, the popularity with which he entered it. Whole sections of the union have been alienated from him by his atrange and inconsistent course upon the tariff and internal improvement. Extensive interests have been thrown into opposition by his reakless and unaccountable denunciation of the bank. Many of his ablest partisans among the public writers have deserted him, and if any considerable portion of reflecting men still adhered to his standard, the wanton attacks upon the judiciary department must have driven them from it in disgust -The unity of his party is completely broken up, the and the late secretary of state; and at this moment the eitizens opposed to his re-election, constitute a large ma jority of the whole population of the U. States. these circumstances it is quite apparent, that nothing is wanted but zeal, activity and concert, to ensure success.

The aspect of this convention—the quantity and spirit which have marked its proceedings-and the favorable results which may be expected from its influence upon the community, afford ample security that these requi-

Such, fellow citizens, is the character of the present administration-such are the motives for changing it, and auch are the persons whom we recommend to you for the chief executive officers. Cumpare their qualifications with those of their competitors; and may the goodness of Providence, so enlighten your choice, that it may tend to promote the security and permanence of our excellent political institutions, and the true greatness and

glory of our beloved country.

JAMES BARBOUR, President.

ALLEN TRIMBLE, JOSEPH KENT, PETER B. PORTER, ROBERT TEMPLE, Vice Presidents. Jos. Tillingrast, & Secretaries.

NORTH CAROLINA. Extracts from the message of governor Stokes, to the legislature, delivered 22nd Nov.

In relation to our internal concerns, I have to observe, that it would be impossible to conceal from the world,

on class of the population of the state have become more dbontented and ungovernable that heretofore. Fana-tics of seer own complexion, and other incendiaries, have fomented sees discontents and have incited them in many mistances is enter into conspiracies dangerous to the ny instances — enter into conspiracies dangerous to the piece and safety of the country. To quard against these exits, which in all probability will continue, the utmost earlies predeced as necessary. Restrictive laws have been entered without reoducing the desired effects and the crimes committed in a ten insurrection in an adjoining state, would seem to review further and early attention to this subject entered to the viring severe and attention to this subject entered upon blook viring severe and and care less, about them, would it not be solve lattle and care less, about them, would it not be solve lattle. establish a more efficient and accountable police, an arm and equip one or more companies of volunteers or detached miditia in each county, to be called out when required and to be paid while in actual service? It is beleved that such a lorse, in aid of the evil authority, would effectually secure the peace of the country; and the public arms belonging to the state could not be placed in safet nauda. These state troups might be enrolled for Cac or more years, be held responsible for the arms and ammunition lurnished, and not be suffered to abandon the service during the term of their engagement.

"Another subject demanding your attention is the aitention of the fauds of the state, invested in the banks. The time is near at hand when the charters of the several banks in this state will expire. state in the state bank of N. Carolina, has for some time past only yielded an interest of 4 per et. per annum; the stock held by the state in the bank of Cape Fear has, for the last two years, yielded an interest of only three per cent, per annum; whilst the stock held by the state in the Newbern bank has not, for nearly three years, yield ed any interest. The period will shortly arrive when all these banks are authorised by law to make a division of part of their capital stock. The funds vested by the state in these banks amount to seven bundred and (welve thous and seven hundred dallars, (\$712,700). This amount ol stock, at the common interests of six per cent. ought to produce forty-two thousand six hundred and seventy-two doll-rs, (\$42,672), annually, whereas, in fact, it produces only eighteen thousand five fundred and sixty-

two dollars, (\$18,562), not equal to three per cent. "Under these circumstances, would it not be adviseble to provide for the establishment of a new bank, in which the funds of the state may be invested, under such when the third of the share may be invented, under uses regulations as to your wistom and experience shall be deemed safe and proper? Or shall the state rely, for the accommodation of its citizens and lor a circulating currency, upon that portion of the capital of the United States bank, which has already, or may hereafter be allotted to their office of discount in North Carolina?"

"I would willingly bring to your notice the important object of forming a navigable communication between the waters of the Albemarle Sound and the Atlantic ocean, north of Cape Hatteras, and would recommend the application of all the means in your power towards its secomplishment; but believing that, without the aid of the general government, the resources of the state are inadequate to the undertaking at this time, and the last general assembly having neged upon our members of con-gress the propriety of claiming that aid, we aimst console ourselves with the hope that this great national work will receive the sanction and support of the national legulature. Having bestowed such immense sums towards the construction of roads and causis in other states, it is helieved that this desirable object, so essential to the interests of North Carolina and of the union, will not long be overlooked or neglected."

"It is to me a source of much gratification to have observed, and to have it in my power to state, that the exeitement which seems to pervade a sister state, upon the aubject of the tariff, has effected little change in the opi-nions of the estizens of North Carolina. — With regard to the policy of that measure, there is, so far as my information extends, a perfect union of sentiment. All deprecate it as unequal in its operation, and destructive of the interests of the southern planter. The period, how-ever, has not yet arrived, which, in the judgment of this community, authorises the adoption of doctrines subversive, in their nature, of all order, and manifestly tending to weaken, if not destroy, our whole system of govern-ment. The state is justly proud of having given the first legislative sanction to the spirit of the revolution. same love of rational liberty which prompted this high example, induced our revolutionary statesmen to consider attentively and anxiously the form of government pro-posed for their adoption. Satisfied, after full investigation by successive conventions, that no powers were de-legated but such as were essential to the existence and preservation of the union, it is no matter of surprise that they and their children should support and defend the compact, and neither seek nor desire a remedy beyond it. A new congress is about to assemble. The same spirit of compromise which adopted the constitution, must preserve it, or the question whether man is worthy and espable of self-government, remains yet to be solved. The parriotism of the country looks with confidence to the councils of the nation for a wise and liberal system of policy, and will not leastily arrive at the conclusion that the perils of the revolution were fruitless and vain."

LEGISLATUE OF GEORGIA.

Executive department, Milledgeville, Nov. 25, 1831.
To the senate and house of representatives:
I submit to the general assembly, for its consideration, to the occumulations received yesterday, pur-porting to be signed by Henry Baldvin, era, one of the justices of the supreme court of the United States, and to be estations to the state of Georgia, to appear in the supreme court, on the second Monday in January next, supreme court, on the second Monday in January next, to show cause before that tribunal, why two several judgments should not be set aside, which have been tastly rendered in the superior court of the county of Gwinnett, against Samuel A. Worcester and Elzare Butler, for a violation of an existing Law of the state, committed within its jurisdictional limits. Also, eopy of a notice purporting to be signed by William Wirt and John Sergeant, as counsel for Samuel A. Worester and Elizur Butter, informing me of as intended application to the supreme court, for a hearing on writs of error fell, the theory opens. fil-il by those persons.

The obvious object of the proceedings to which this notice and these citations relate, is to call in question, and attempt to overthrow, that essential jurisdiction of the state, in criminal cases, which has been vested by our constitution, in the superior courts of the several coun-

ties of the state.

My respect for the supreme court of the United States as a fundamental department of the federal government, induces me to indulge the carnest hope, that no man-date will ever proceed from that court, attempting or intending to control one of the tovereign states of this union, in the free exercise of its constitutional, criminal or civil jurisdiction. "The powers not delegated by the constitution to the United States, nor prohibited by it to the states, are reserved to the states respectively. Such a control over our criminal jurnsdiction, as these proceedings indicate, it is believed, has not been dele-gated to the United States, and consequently earned be acquiesced in or submitted to.

acquiesced in or submitted to.

Any attempt to infringe the evident right of a state to
govern the entire population within its territorial limits,
and to punish all offences committed against its laws, within those limits, (due regard being liad to the cases expressly excepted by the constitution of the United States), would be the usurpation of a power never granted by the states. Such an attempt, whenever made, will challenge the most determined resistance; and if persevered in, will inevitably eventuate in the annihilation

of our beloved union.

In exercising the fluties of that department of govern-ment, which devolve on me, I will disregard all unconstitutional requisitions, of whatever character or origin they may be; and to the best of my abilities, will protest and defend the rights of the state, and use the means afforded to me, to maintain its laws and constitution WILSON LUMPKIN.

Signed, Vol. XLL-No. 22.

(corr.) UNITED STATES OF AMERICA.

You are hereby cited and add-onlined to be and appear at a supreme court of the United States to be holden at Washington on the second Monsky of January next, pursuant to a writ of error filed in the clerk's of the fise of the superior court for the country of Gwinnett in the state of Georgia, wherein Elizar Butter is plaintiff in error and the state of Georgia is delemban in error, to shew cause if any there be, who judgment rendered against Elizue Butler as in the said writ of error mentioned should not be corrected; and why spendy justice should not be sinne to the parties in that behalf.

Witness the honorable Henry Balilwin, one of the justices of the supreme court of the United States, this twenty-seventh day of October, in the year of our Lord, one thousand eight hundred and thirty-one.

HENRY BALDWIN. Signed,

Samuel A. Worcester, pit'f' in error, In the supreme Court of the ¥8. The state of Georgia defen, in error, In the supreme Elizar Butler plaintiff in error,

U. States. The state of Georgia defen. in error, U. States.
Sin - You are requested to take notice, that on the part of the plaintiffs in error in these cases, application will be made to the supreme court of the United States for a hearing at their next session, immediately after the expiration of sixty days from the delivery to your excel-

JOHN SERGEANT,

Counsel for S A. Worcester and E. Butler. Philadelphia, Nov. 10, 1831. His excellency the governor of Georgia.

LEGISLATURE OF OHIO.

LEGISLATURE OF OHIO.

We learn from the message of governor McArthur, that the aggregate amount disbursed at the treasury of this state for causla and other purposes, for the year ending 15th November, 1831, is \$256,190 31, leaving a balance in the treasury of \$6,075 33, centa—that the amount of the foreign slebt contracted on account of causla is \$2.30 (MM) having on internal of \$256 tu years of \$256 tu years. nals, is \$4,400,000, bearing an interest of \$260,000 annually—that in addition to the amount thus borrowed, \$257,128 08 cents had been transferred from the different school lumis to the use of the canals, the interest on which last som, payable to the citizens of Ohio, is \$15,427.08 ets. making the whole canal debt \$4,637,128 08, and that the entire annual interest, is \$275,427.68 The amount received into the treasury from the sale of lands granted by congress to the state of Ohio for canal purposes, during the year ending as above, was \$55,090 79 cts. The amount of tolls collected on the several canals, for the year ending on the 1st November

last, was as follows: On the Miami, Ohio

\$36,177 78 63.934 27

Making in all,

\$100,112 05 which, after deducting the expenses of collection, leaves \$94,619 15 net profit to the state,

The navigation of the Erie and Ohio canal has been opened as far south as Chilicothe, a distance of 250 miles. This, with the Miami canal, and the navigable feeders connected with the main line, make an amount of finish-ed canal, now navigable, of about 344 MILES. It is believed by the seting commissioners that that portion of the Ohio canal between Chillicothe and Portsmouth, a ilistance of 50 miles, together with the Granville feeiler, 6 miles, already in a very advanced state, will be completed in July next, when Ohio will have, of navigable canals, 400 miles.

The effect of the canals, as far as completed, upon the commerce and general interests of the state, is thus de-

commerce and general interests of the state, is thus de-scribed by governor McArthur:—
"The first arrival of canal boats at Columbus, on the 25th September, and at Challeothe, on the 23d of Cotober, inspired our fellow citizens of the Scitor val-fey with the cross lively and cheering anticipations; and

the cheap and pleasant mode of travelling thereby afforded, Its so occasioned a great increase of communication between the citizens, not only of our own state, but of those adjoining. The increase of commerce, and the vast amount of merchandise transported upon causis, have already wrought in the country through which they pass, many changes of substantial improvement; and our fellow citizens of the south western and western states, have in many instances availed the inselves of this means at convex ing their merchandise to their respective places of residence. The regular arrivat and departure of packet see freight boats in the vacous towns along the line of the count, at a season of the year-view marigation has been this text unknown, has produced a spirit of enterprise amought our citizens, which is a fixer to the country. The increased demand for the stuple products of the country, and the amoughment enhancement in the price, must assumed the farmers to impure and cultivate their lands to more advantage, and thereby place curvey creational population in that flourishing condition which is so essential to the prospectly of our state,"

In looking at the medial absence which our young size in the preference of the system of independ improvement, we feet that we should be doning injustice to her netterprise, and to our now feelings, were we not to express the pleasure which we shrink from witnessing the brill and example which we shrink from witnessing the brill and example which she has set to her ethers in the endederacy—an example so alluring and saturary, that we trust its influence will not only be fell, but serve to must be resulted by the states. In their influences upon the single permanent in their character, and so beneficial in their influences upon the single interests of the states.

[ Chron.

### LEGISLATURE OF LOUISIANA.

Extracts from the governor, message to the legislature of the state, convinced at an earlier period than thatin consequence of the events reterred to in the following passages: and slot for the purpose of populating a sinter of the United States, in place of Mr. Livingston, resigned.

"Conspiracies of slaves, instigated, most probably, by imprudent propagandits and the labse publishinousy of a certain class of persons styling themselves the hir mis of the I lacks, and who in reality are their greatest nemies, have been plotted in several of the state of the mison. These attempts at reliction have most is routed by severy where represend with the greatest lacility. In Vurgania, where these troubles assumed the most serious aspect, the revolted, who only shewed enoughe when attacking unermed men and helpless women and thickness under not store that the same of the state of the same when the same when the concession of the state of the same when they have the same are stated and tellivered over to the just vengeance of the offended laws.

"These insurrections have, with much reason, excited the serious attention of most of the states of the south .-They have taught the necessity of adopting effective measures for preventing the like scenes of disorder; and we cannot be astonished that here, perhaps, more than may where else, they have been regarded with most kendhal anxiety. It is well known that in a state, situated as we are, the will that may result from such attempts can he but very partial and momentary; - we know that we out at any time re-establish order so soon as the public treace is disturbed-we know that it would be about to adprove that a revolt of this nature could terminate defimiely in any other manner than the total extermination of those who tuok part in it. But as we are far trum desiring the destruction of those whose ignorance only can lead them into such plots, our object in taking the subrect into consideration is not so much to provide the means of arresting and punishing our guilty slaves, as it s to save them as far as possible from becoming crimi-

The governor adverts to the inequality of the two respected of population, which he considers however of less congruscequence than the frequent introduction into the state his very worst kind of the laboring sort, and in many ject, "

the cheap and pleasant mode of travelling thereby afforded, has occasioned a great increase of communication between the citizens, not only of our own state, but of these adjusting. The increase of commerce

"Hy a law of the year 1829, the legislature prohibited, under a severe penalties, the introduction into this state of "any above or slaves who have been accused of any conspiracy or materiation, or who have resided in any conspiracy or material to the property of the United States during the time of any conspiracy or insurrection in such country."

The total prohibition of slaves into this state, during a certain tumber of years, appears alone to me to be the only method of avoiding the disager with which we are threatened. All other means have been treed, and experience has proved their initidity.

"This I-w, if you should think proper to easet it, would not prevent the emigration to this state, of those of our fellow of zon of other states who might, in good lasth, with to hing their shares and establish themselves amongst us. It can be so formed as to make an exception in their favor, jet obliging them to lurnah proper and sofficient proofs as to the good character of the negroes, and security for the highful toldiment of their intention of engloping them in agriculture. They should also be depicted of the previetge of selling them during a certism tumber of years; their guarantees would prevent greedy speculators from making use of the exception to their advantage."

On the sugar-duty the message has the following re-

merks. "It would be easy to shew beyond a doubt, that the doties complained at, are of no injury to other interests, and only afford us the protection necessary to prevent us and only anded as the protection necessary to prevent as from keing crushed by fureign competition, that this protection, for from affording a local profit as advantageous to other states, as it is to Lautinous that it has occasioned a reduction of more than two thirds, in the price of sugar, that he the continuace of the duties, Louisson will soon be enabled to lurns h sugar for the consumption of the United States, and that it in contempt of the public foth, which we have reason to think pledged to the protection of a culture, into which we were induced to embark by the laws of the union, and in which we have expended immense cautal, our manufactures should be rumed, the citizens of the Un teil Sistes wonld thus hay a tax of more than three cents per jound to the pro-fits of foreigners, because the price of West India sugars would be increased much more than the amount now icvied, on them in the shape of duty."

The subject of the public lands calls forth the following observations:-

"The subject of the public lands is so painful to me, that I would willingly avoid referring to it, but I feel it my duty to call your serious attention to the sales of pretended vacent lands in this state, by which many lamilles find themselves on the eve of being stripped of the property they have possessed for several generations in virtue of the concessions granted them by the then existing the of the concessions grained them by the first charles governments of this territory. When we reflect that it is far from being proven, that the general government loud, by the firstly of easien, the right of exerving the property in lands really vacual, within the limbs of our state, and that our cause may be considered as lawing and the property of the control been decided upon without having been investigated, because in guarantering to us upon our admission into the nuion, 'all the rights, advantages, and immunities of eitizens of the Univel States, 'at would appear by the treaty that we have the same title to those hands which the original states possessed over their vacant lands, and in virthe of which they retained them; it is difficult to suppress
the expression of the feelings that naturally arise in regord to the conduct of the agents of this government, who, not satisfied that we have entirely renounced our claims to the public lands, seek to deprive us of our prinot be denied, was guaranteed to us by the treaty. A respectful but firm remoustrance addressed by you to congress, will no doubt add much weight to the represcutations which our delegation may make on this sub-

In consequence of the preceding message, a very severe law was passed against the further introduction of slaves, unless in specified cases; which those interest-

ed will refer to for their own instruction.
The New Orleans papers of the 21st Nov. contained a copy of the set in full, and it has been published extenaively in other journals, for the general mtormation of hot-lers of and dealers in slaves in other states - in sub-

stance as follows-

It prolubits the introduction of slaves into that state. except by persons emigrating thereto for the purpose of residence, and by citizens for their own use and service. provided that in the latter case they shall not be procured from the states of Musissppi or Alabama, or from the territories of Florida and Arkanasa, and provided who that in neither case they shall be sold, mortgaged or toaned, for five years after their introduction. All slaves introduced contrary to these provisions are to be made free, and then removed from the state by the executive; and all persons so introducing them are subjected to a pensity of \$500 to \$1,000 for each slave, and to imprison-ment until the same be paid, together with the cost of p. Osecution.

# ALABAMA.

The legislature of Alsbama assembled on Monday, the 18th November, at Tusc-loss. We amex two ex-tracta from gov. Moore's message, on the United States bank and the tariff; questions on which every develop-

ment of public sentiment is now interestingt in which lour-fifths of the stock is owned by individuals. There are twenty-five directors, twenty of which are chosen by the individual stockholders, the remaining five by the president of the United States; the number chosen by the individuals is at all times sufficient to control the direction of the bank. It is, therefore, a separate interest, and liable to all the objections of other company banks, and much more alarming in a government, be cause of its ramifications throughout the union, in d.f. since of state authorities. These threetors have chartered authority at their discretion, to establish at any point or points, in your state, a branch or branches of a missnonyed institution for the emolument, and under the direction of, a few individuals of different states and na-tions. Where are your state rights when twenty-five men, private citizens, have a tight thus to trample upon your authority? Collectors of tariff duties are officers of government, and the tax which they collect is for nubhe use, but the national banking tax collectors are prieo leeting a tax within the limits of your state, probably against its consent, and for their own aggrandizement. I respectfully submit to your consideration the propriety of making a strong and ilectiled expression against the policy of re-chartering the bank of the United States, especially on its present principles and with its present powers, and dissount-naming (for that is the lisuit of your state right) the establishment of other branches in the state of Alabama.

As a state, we ought to be decidedly opposed to the policy of the American System. It would seem fully to oppose argument to the abourd idea, that the imposition of a tax or duty on any species of fabric will not enhance his price to the consumer; and und this be true, we are sufferes, and cannot have the poley. There is hove-ver, much theresis of opinion on the subject of the ex-tent to which we may legitimately oppose the existing and taroff.

The constitution vests in congress the power "to lay and collect taxes, fluties, imposes, and excuses;" a se so presenties that "all duties, imposts and excuses, shall

(otherwise they had not the power to enact the law) and therefore consists ional. But the state of Alabama any a therefore the law is not constitutional. Here is the is-sue. How is it to be tried? I think not by buttle in the The judicial power of the United States is vested in a federal, supreme, and other inferior courts, and extends to "all cases in law and equity arising under the constitution, the law of the United States, &c." Hut this ease arises under the constitution, or laws of the United States, therefore this case is cognizable by the federal, supreme or orther inferior courts. But the leileral court desides the case against the state; truly, and the decision establishes a part of the constitution, which before was in dispute. But the evil still exists. And the law which oppresses us, has been determined by the proper tribusal to be constitutional. The lault is therefore in the constitution: it vests too much nower in congress. The next inquiry is how is the constitution to be amended? The instrument itself has pointed out the mode.

Having exhausted all the means known to the consti-tuinm, and consistent with the union, to obtain relief from legal oppression in van; if the evil still exist, and be insufferable, it is now the state may begin to extende e the value of the umon ( a painful reflection to a heart that has always cherished a belief that its value is incalculable.) It is now by reverting to the first principles of self protection, the state may nullity the acts of congress, by declaring them inoperative and void within its limits, and set up for itself. But before it takes this step, it ought carefully to weigh the advantages of a secessing against those of the onion, and see that the former clearly pre-

# PUBLIC DOCUMENTS

Transmitted to the congress of the U. States, Dec. 1831,

PUBLIC DOCUMENTS

Transmitted to the congress of the U. Stutes, Dec. 1831,

REPORT OF THE SECUREARY OF WAS COMMENTS.

Str. In obscience to your interest construction to the flower to be about the results of your interest construction, the product of the state of th

insent to the country. Annough some is now dishifted the fer-tion are insertished to input on the general exist, which has now rive are insertished. The country is a superior of this par-ed as an arm of national deficien, or as a depository of unliney which it was existed and it manufained. It is efficient without being expenitive, and adquate to the exigencies of our series without being dangerous. It of our presents of the year of without being dangerous. It of our presents of the year of without being dangerous. It is deportant not the year without being dangerous to the deportant not the year without being dangerous that the parameter has a sheety brough before the government the subject of devertions; and I reges to also that the present of the year of the parameter has a sheety brough the parameter of the parameter but increases. In quirts have been matinised into the transit on the old nec, and cannot have been matinised into the transit of the old nec, and cannot have been matinised into the cases of the old nec, and cannot have been matinised into the cases of the old nec, and cannot have been matinised into the cases of the old nec, and cannot have been matinised into the cases of the old nec, and cannot have been an admitted in the cases of the cases of the leaves of the cases of the and exerce, mores, mores, and exerce, it is a presented that "all distinct, migouts and exerce, at the be uniform throughout the United States." If congress, therefore, enext a law, to be an interest distinct thread therefore, make a law, to be uniform throughout the United States, the law is the exercised to be used to be uniform throughout the United States, the law is the exercised to week and funding on the tastes but if the duties be not uniform throughout the United States, the law authorizing their collection is unconstitutional and not binding on the states.

But congress by the exactement of the law have said, that the duties are uniform throughout the United States, the law authorizing their collection is unconstitutional and to binding on the states.

then theirs, as to give to this mode of ponishment any military effect upon the discipline of the army; and at all our posts, and the state of the army; and at all our posts, and a tentine to the state of the stat

	WEFE		636
1827			848
1+28			8 10
1829			1,115
1830			1,251

And in 1831 they will probably amount to 1,221 And in 1831 they will probably amount to 1,224 An estimate has been prepared at the adjustant general's office, unused upon a minute cannination and comperison of the vacuate special control of the same conservation incident to the maintenance of a soldier, and exhibiting the actual peculiary loss of the governments training from

s loss was for 1826 61.344 1>28 63,137 1829 98,345

details of the service will feel the spirit of improvement. It am satisfied that the appointment of chaplaint, and their en plety means of the gardination and their en plety means of the gardination may green to call for such a beatter, would be productive of grest advantages to the arvive; and to the scalefile for the productive of grest advantages to the arvive; and to the scalefile for individually the measure would be equally be infeat. Represends and exhortations in life; and the constitution of riligions in shouth of the control of the production of the prod

It has been rated, that the number of cadets allowed at the military academy is 900. There are in the line of the army \$15 officers of all descriptions. Of these, on the st that yo November, there we've prevent for day 903, of whom 19 were field and \$26 of the case of t

It is a consider it my duty to bring this matter before you, in the hope that it will range the attention of congress, and has a sinlar system for the preservation of the road from Cumberland to
the Obio river, will be adopted. If it were place by the general
government in proper repair, and then surrendered to the states
respectively, through whose territories it passes, under the same
conditions, as were amorated to the evention of the road in Obios,
there is weaton to believe, that the arrangement would receive the
conditions, as were amorated to the evention of the road of the
there is weaton to be lever, that the arrangement would receive the
and in a manner not burth noome to the communication upon it.
If this be not done, or some other expedient adopted, the road will
soom fall into a state of entire diapplation.

soom sail isto a state of entire dilapidation.

By an excessive regulation of the 21st of June, 1831, the topographical event was reparated from the engineer department,
are important to the country; and if it organization is trendered
commentwrate, a mass of valuable materials, exhibiting a general
and accurate view of the geographical outsines of the union, will
and accurate view of the geographical outsines of the union, will
or was. In a report from this department, of pumpore or
war. In a report from this department, of pumpore and
subject was coundered, and the incressity of the measure stated
and enforced. To that report, containing valuable suggestions, I
take the liberty of referring.

and enforced. To that report, containing valuable suggestions, I take the liberty of referring.

A minute knowledge of the features of a country is resential to any plan of military operation; and this knowledge should be gathered in a season of leisure, and deposited in our srchives. In Europe, it is considered one of the most important elements of the service of

he war.

From 1802 to 1814 there were 3,036,237 small arms of all de-reppions, procured for the French service.

And during the same period, for the British service, 3,142,366.

The average number of small arms annually fabricated in the
1002 may 18,027.

The tarenas, from 18,027,027.

The stock on hand in Great Britaio, in 1817, in depot,
18,530.

In the public service,

818,989

200,974

Total, 1,010,236
The number in depot in France, in 1811, was 600,000, not ineluding the great number in service.

The number in depot in France, int ## 11, was 600,000, not including the great number in service.

These statements may be useful in determining the proper number of small arms, which ought to be provided in this constitution. The property secured and present the property secured and present the state of our service, will be want?

Considering the nature of our service, will be want?

Considering the nature of our service will be want?

Considering the nature of our service will be want?

Which their service are regulated, and great losser consequently exception of militia we employ, and the system of rotation, by which their services are regulated, and great losser consequently exceptioned, and also the necessity of large depositer in different proportion of militia we employ, and the system of rotation, by which their services are regulated, and great the distribution of the state of the

330

be broken up.
'The United States have no armories for the fabrication of ear non. The practice for some years has been to make contracts with the owners of the four founderies at Richmond, Groupetown, Pittshurg and West Point, in the amount of the annual approprintion, allowing about an equal proportion to seek, and paying such price as the ordinance department, on the best information,

judge reasonaile.
This procedure has been repeatedly stated in the annual reports to congress, together with the reasons which led to it. These are founded in the capital and experience required to conduct this business; in the increasity of depending in some digree, upon the int girly and character of the monatharturers, as there mus be this business; in the necessary of depending in some degree, upon the sett grity and character of the mannistructure, as there must be detect in the piece not easily discoverable, owing to the necessity has desired in the piece not easily discoverable, owing to the necessity has, if a general compension for three applies were excited, the existing establishments would be broken slown and others endow to take their places, which would either fail from minitar causes, or formal cannon until for service and thos leave the government, at some critical period, without the mass of prosecution, at some critical period, without the mass of prosecution degrees of March 3d, 1403, seem, huwvers, to green section edgestion to this context and Energy the might be chost you at this time, that it may be fully considered.

It apps art to me, that a pushed armorp for the fabrication of It apps art to me, that a pushed armorp for the fabrication of the provided, and such supplies of heavy ordinates monitarined as the government might direct. The actual value of the provided and such supplies of heavy ordinates monitarined as the government might direct. The actual value of the article would be sorrained, and contrastes with individuals could be formed with a full knowledge of the excusationsees. Here article would be accurated and contraste with individuals could be formed with a full knowledge of the excusationsees. Like the supplies may be to be controlled as to leave to lear of a deficiency in the quality or quantity of this execution arm of defree.

In the report of the messail department, and the propositions of the messail department, and the proposition of the messail department, and the propositions of the messail department, and the prop

In the report of the starg on general will be found a review of the operations of the sweeting department, and the proposition inhabitive by him for its bette organization. Fourteen trousand olders are amountly a spead of the temployment of prayari-physicians, because the corps is not sufficiently numerous to disarge the dutiest demanded ut it. We have sixty four mining stations and recturing reindexworr equipment of there is a review but fifty three range one and saist-cause. There is

physicians, because the corps is not sufficiently numerous to discharge the duries demanded ut it. We have stixy lour mining stations are tree but fifty there are requiring surgeous, and we not economy in the present lifty there are greatly considered to the property of the property of the corps, as reconstantly the property of the corps, as reconstantly the present of the stationary requires it is althoughout the property of the corps, as reconstantly the tree of the corps, as reconstantly the present of the state, and the property of the corps and the property of the state of the corps and the constant of the corps and the corps a

expediency of the restriction.

These commission except in the f.w imitance traved, and those very proper, occasion no expense to the government. It by are in their operation rewards for pass good conduct, and measurements for the government. They cannot be about 3 for ten 3 are 'service certainty qualify as officer for a higher grainty and the continues of the proposed of the reads of surgelier general from the cent person. And it to this he added the tree-soary progress through the xw fower grades of first and account instance, the prospect of a young man, on certainty our erriers; in our very flustering. Not be the much hope from his pay. It is hard you discrete to enable them here they have for their children my inheritance but a good mane. It is important that a just price of character, personal and pressional, should be encouraged in a class of true, whose we folious depends essentially upon the cultivation of sects a feeting. This of its possible objects of smitting, and exampt fail to stimulate the exercisors of the officers of the army.

It is estimated that an fron cannon will not safety bear more arm 1.200 discharges with the service barge, after which it should be trainent. Owing to defects in the system itself, or in the mode of its administration, public confidence has been inspaired in the efficacy of this great branch of the actional feferee. This is to efficiency of this great branch of the national defence. This is to be regretted, it, although this force cannot be regarded as our outst important means of ability in the event of war, it is said a production of the production of the production of the con-posed as they are to a large among and disciplining the emitties in production of the production of the production of the con-tracted by the construction to congrest; and the laws upon this oditive are insidequate, or insidequately executed, it is for the worker of the production of the production of the contraction of the contract of the contra

to ship cet are institute, or instituteary accretion, it is not in whom of that body to apply the remedy.

If this great defensive force be called our under proper circumstance, it may contribute, essentially, to the accurity of the countribute, it may contribute, essentially, to the accurity of the countribute, it may contribute, essentially, to the accurity of the countribute, it may contribute, essentially, to the accuracy of the countribute, and the value of the institution, and of its power-to-distinction of the value of this institution, and of its power-to-distinction of the value of this institution, and of its power-to-distinction of the value of this institution, and of its power-to-distinction, but with a more efficient organization. By accuracy according to the contribute of the value of the institution, and the over voluntary countribute, but with a more efficient organization. By according to the value of the typic manifest to the value of the typic manifest of the value of the value of the typic manifest of the value of power of the value of power of the value of power of the value of If this great defensive force be called out under prop

In 1826, a board of officers, selected from the regular are In 1826, a board of officers, selected from the regular army and the initiate, was convered at the seal of government, and insurers the initial of the second of the selection of the second of the objects of the second of the selection of the second of the board combusted much intelligence and experience; and their re-port is an able and interesting our. I advert to it, in the large that this valid-term of copy of the attention of congress, and in the consistion, that the plan of organization recommended by that ment or efficiency, which offers any real prospect of improve-ment or efficiency, which offers any real prospect of improvement or efficency.

band is the only one, which offers any real prospect of improvement or difficiency.

The cendition and prospects of the aboriginal tribes within the limits of the United Mates are yet the subjects of antions solicitude to the control of the control of the control of the limits of the United Mates are yet the subjects of antions solicitude of the control of the control of the limits, which haven. It is not not the states, they have been brought within the operation of the endingry municipal busy, and their registations have been shoughed by legislative exactions acts of congress upon this subject inoperative; and a crisis in our Indian effects have supposed to the existing state of things and trades of the control of exertions of the luture.

The Indians, who are placed in immediate contact with the set The Indians, who are placed in lumindistic centract with the set-ted partition of the United Matter. Lawr now the alternative present-ed to them, of crossining in their present positions, or of magne-tic properties of the count consideration. They must either retain all those institutions, which constitute them a precise people, both socially and peli-tically, or they must become a proton of that great commonly have to the for refreshment of the properties to the laws, and both-ing to the for refreshment. ng to them for protection.

Can they expect to maintain that quast independence they have beretofore enjoyed and could they so maintain it, would the pri-vilege be beneficial to them?

The right to extend their laws over all persons, tiving within their boundaries, has been claimed and exercised by many of the states. The executive of the United States, has, on full consideration, decided that there is no power in that the personal control of the states. As a particularly many of the most important this co-ordinate branch of the government devolves the execution of the laws, and particularly many of the most important provisions in the various acts regulating intercourse which the bolists, after the personal control of the laws, and particularly many of the most important provisions of the laws, and particularly state of things inconsistent with their obligations. How provers after the personal conducted, treatment referred by military power, to account the conducted of the product of the property of the provision of the executive, either in their initiation or progress. The right to extend their laws over all persons, living within

Accounting, which refusion of the recognition of the accounting, either in their initiation or program. I find it determined, ont the settled policy of the government already in operation. Whatever diversity of opinion there may be open this subject those who are most appead to these twice will probably admit, those who are most appead to these twice will probably admit, and pregnant with serious consequences. The claim of exemption from the operation of the state least, which is presented in favor of the Indians, must rest upon the constitution of the U. States, upon natural right, or upon conventional engagements. If upon the former, it may be industed whether that instrument of the control of the co situations of his rude people do not give to the civilized contournities around whom and among whom they live, the right of
guardianship over them, and whether this vew us not fortified by
the practice of all other civilized vatious under similar occum
in the process of all other civilized vatious under similar occum
from the total control of the civilized vations under similar occum
from three total control of the civilized vations are similar to the civilized vations and the civilized civilized commonities have been and must be the judges. And, besides, if the Indian televaread must be the judges. And, besides, if the Indian televater and must be the judges. And, besides, if the Indian televaplaces the parties in the attitude of centir independence; for the
question them is not how we have divided our political port
pulses the parties in the attitude of centir independence; for the
question them is not how we have divided our political port
points in the control of the carcine of this uppersions; and
rity, but whether the laws of nature gave to either any attitude,
point the subset. But, if the claim rest upon alle, de curviry
topon the subset. But, if the claim rest upon alle, de curviry
topon the subset. But, if the claim rest upon alle, de curviry
topon the subset. But, if the claim rest upon alle, de curviry
topon the subset. But, if the claim rest upon alle, de curviry
topon the subset of the subset of courses, as well as that
of the respective stater, wouther any authority, the
of the respective stater, wouther any authority
topon the subset of the subset

It may be remarked that all rights secured by treaty stipulations are wholly independent of this question of jurisdiction. If the lodium are unique to the legislative authority of the U. States, tolking a state of the security of the U. States, those rights. If they are subject to the respective states, such those rights. If they are subject to the respective states, such those rights. If they are subject to the respective states, such those rights. If they are subject to the respective states, such the security of the s It may be remarked that all rights secured by treaty stipulations

at we may neither deceive ourselves nor the Indians, it be-s us to examine the actual state of things, and to view these

at they see, and as they see likely to be. Looking at the circumstances attaching this citin of exemption on the one side, and of supermany on the other, it is probable that the Indians can succeed in the establishment of their percention. The nature of the question, doubtful, to say the least of it; the opinion of the executive, the produced is the produced of the produced in the control of the produced in the control of the produced in the control of as they are, and as they are likely to be. Looking at the circum

ten their destruction.

I need not stop to illustrate these positions. They are con-neeted with the views, which will be found in the sequel of this report. And it is not necessary to embarrass a subject already too comprehensive.

comprehensive.

A change of resistence, therefore, from their present positions to the regions west of the Musicipity, presents the only hope of premanent establishment and interpresent. That it will be attended with interactionic and starfilles, no note can double—The associations, which had the Johnston to the land of their by this contraction, and they are also broken by our civitient, who every hay encounter all the offlictions of similar changes in the private of themeans of support. And the experiments, which have been made, satisfacturity slows, that, by proper precutions, and liberal appropriations, the removal and calable form of the following of the most of the following contractive transfer to them or us. Why, the proposed Theorem of the following contractive them or us. Why, the proposed Theorem of the following contractive that means the proposed Theorem of the following contractive that means the proposed Theorem of the following contractive that the contractive that the contractive that the contractive that the proposed Theorem of the following contractive that the contractive three contractive thre meaning be dissuited, are its adoption appared? The whole sur-port has marrially that e.g., even within a few y-axis and the imposing consideration it now presents, and which are very day gaining new few, cell upon the raw rimova and the contary in the recommended to the Lodice. It they remain, they must de-cline, and eventually dampers. Such is the result of all ex-perience. If they conver, they may be confortably established, and their metal and physical count in metalistics. It is exclude betty for them, to meet the difficulties of critovial, with the pra-bility of an and quarte and final reward than, yielding to their baltity of an and quarte and final reward than, yielding to their

ballity of an adquate and find roward than, yielding to their constitutional analyst, to attential and perish. The great moral light we over in this orbappy race is uni-terally list and acknowledged. Diversate is of opinion exist re-specting the proper mode of discharging this obligation, but its validity is not light. And there extrainly are difficulties which may will call for discussion and consideration.

When the following a second consideration with the policies. And if this long reserved in placed in contact

For more than two constructs are more on purpose in consect, with the Indiana. And if this long period has been froilless in soful results, it has not been to in experiments, having in view this improve mutt. Also men have been invasingsing their con-dition, and good men aircompting to improve it. But all these this interest is a supposed to the property of them.

dation, and good men attempting to improve it. But all these blazes have been an unsuredult in the same, as many of them were blazed and the progress of the property of the progress of the law, and the same time of cligion. But its limiting farmings abundant evidence of citic failure, and every thing amond an upon the fronties themeters advanced, and united their fregments with some kind drives of the progress of the progress

one of their rare's and depressed the other. Such a monument of former successful exertion loses not rais. These entarks apply to the effects, which have been beer tolive male, and whose history and fastice are known to us. But the un'yet has been larely revived with a ditional interest, and is now practicated with great got and exection; whether with equal ef-lect, time must show. That most of those engag d in the labor are actuated by pure and distinct rests of mixtures, I do not question. And, if in their extinate our recovering place how high a value good has a face dependent or culture their sympathers and a waker upon appearances, the error is natural to persons realisally enged in a task calculated to crisis their symposities and awaken their feelings, and has been common to all, who have preceded term in this labor of philastherps, and wha, from time to time, have insuliged in anticipations of the most signal success, only to be uncereded by disappointment and do uponhelony.

That these exertions have revenity been productive of some disantage, may well be admit d. A few have probably been reclaimed from abundomed habits, and some, perhaps, have really been taught them. I can speak from personal observation only of the northern and northwestern tribes. Among them, I am ap-

prehensive the benefits will be found but few and temporary. Of the condution of the Cherokees, who are used to have made to the conduction of the Cherokees, who are used to have made from such integration as I have been able to procure. Owing to the prevalence of slavery and other peculiar ensues among them, a number of the half-forced and their counts atoms, and prhapsa few others, have equived proper the great mass of the tribe in the principal men, and submitting to a state of things, with which they are distrained, and who offers them on automat prospect of they are distrained, and who offers them on automat prospect.

they are dissettified, and which offers them no rational prospect of stability and improvement.

It is not a support of the stability and improvement of the control of the stability and improvement of the stability of the stabi

dians, and partly from the mode in which the operations have been conducted.

Without entering into a question which opens, a wide field for inquiry, it is unferient to observe, that our primitive people, as offer obstacles almost insurancemental to any considerable and offer obstacles almost insurancementals to any considerable and immediate change. Indohent in his habits, the Indian is opposed to labor; improvident in his mode of life, he has intel foresight in screen his own redditions and invitations, he is a satisfield of their value, and dreads the anger of the Great Spirit, if he should depart from the customer of his fasters. Devoted to a satisfield of their value, and dreads the anger of the Great Spirit, if he should depart from the customer of his rate results of the control of t

that the government has been called upon to determine what arrangements shall be mude for the permanent exablishment of the mangements shall be mude for the permanent exablishment of the magnetic properties of the permanent of the magnetic properties of the permanent of the magnetic properties. The permanent of the magnetic properties of the magnetic properties of the magnetic properties. But, to accomplish this, they must be first pixed beyond the to hostitities as may be found necessary, and with such aid, moral, intellectual, and perenniary, as may tees them the value of our improvements, and the reality of our friendaisp. With these astrongers of the magnetic properties of the permanent of the magnetic properties of the permanent of the per

The general details of a plan for the permanent establishment of the Indians west of the Mississippi, and for their proper secu-

rity, would require much deliberation; but there are some funda-mental principles, obviously arising out of the nature of the sub-ject, which, when once adopted, would constitute the best founda-tion for our evertions and the hopes of the Indians.

1. A tolerand acclaration, similar to that already inserted as some of the treaties, that the country assigned to the Joshum shall be their as long as they or their decreadants may occupy it. some of the treaties, that the country assigned to the Jandson hall be theirs as long as they or thir decrements may occur if it is not to be a support of the property of the

to severity.

to severity.

4. Encouragement to the severalty of property, and such pre-vision for its security, as their own regulations do not offurd, and as may be necessary to its elogyounts.

5. Assistance to all who may require it in the opening of farms, and in procuring domestic animals and instruments of agricul-

and in procuring comments.

6. Leaving them in the epigrament of their preculiar institution, at far as may be compatible with their own safety and some control of their property and improvement.

7. The eventual employment of persons competent to instruct them, as far and at fast as their progress may require, and in such manner as may be most useful to them.

and with the great objects of their prosperity and improvement. 7. The evicual employment of persons competent to insurer them, as fer an aft as a their progress may require, and in Arrangement have been made upon fair and equitable interest with the Shawanes and Schreat of Lewistown, with the Shawanes and Schreat of Lewistown, with the Shawanes of Wappsphootta, and with the Ottowas of Blanchard's fork, and the Mausnee, all within the state of Ohio, for the evasion of their receivation in that state, and for their migration to the region arrangement was made with the Steness in the early part of the year, and they are already upon their journey to their new country. A deputation from the Wyandott has gone to chamse the district offered to them; and the grent of utilizes of an arrange-ed, if the report of the exploring party should prove artifactory. It has been suggested that a considerable portion of the Chren's late of the control of t

Very respectfully, sir, I have the honor to be your obedie 1.EWIS CASS.

To the president of the United States.

# NILES' WEEKLY REGISTER.

[Vol. XLI. WHOLE No. 1,055 Fourta senies.] No. 17-Vol. V. BALTIMORE, DEC. 31, 1831.

THE PAST-THE PRESENT-FOR THE FUTURE,

## EDITED, PRINTED AND PUBLISHED BY II. WILES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN ARVANCE.

## A writer in the "National Intell geneer" thinks | Various articles of clothing, including that I have been taking one of Rip Van Winkle's long | mending name, because I spoke of the dog-in-the-manger policy of the Chesapeake and Ohio canal company, in relation to the Baltimore and Ohio rail road.

I do not profess an acquaintance with the legal details of a controversy so fatal to the public interest, in its arrest of, at least, one of the great lines of communication between the east and west - for the rail road company is well known to be ready to go onward. I had reference only to what I understand to be a simple fact-the road company's proposition to pass the Point of Rocks at the joint expense of both companies, which, in its division, will much less in the cost which either, setting separately, must incur. Unless there be some reasons urged against this proposition which I have not seen or heard of-the term used cannot be withdrawn.

There appears to be a feeling about the canal which does not exist concerning the rail road. The people of Baltimore have no jealousies with respect to the canal, unless interfering in the construction of their road. Whether the canal shall be made or shandoned, enters not into our calculations of business, any more than matters of the moon. The canal is never spoken of, but with reference to its obstruction of our operations. Weirel conscious of power to make the road, and think we know what it will do for us when maile; our chief anxiety, therefore, is to march forward, not in hindrance of the canal, but side by side-il the latter company has the same faith in their improvement and leels the same nower to effect it, that we have in ours. The time has passed when unestions as to the relative utility of rail roads and canals might be discussed—at least, we believe so, and are content with the election that we have made.

The "Richmond Enquirer" thinks it very "modest" in us to express an oninion, that neither Mr Clay nor gen. Jackson, nor both together, can break down the "iron arch." of the American System, and "compromise" on the tariff of 1816.

We should have expected the commendation of our old friend. Is he immodest enough to entertain the idea of a "compromise" of what he so solemnly regards con-stitutional principles? Fig. Mr. Ritchie! If the tariff of 1816 may be submitted to on that ground, where will you stand!—Knee-deep in your own consistency—a muddy location, surely! But that's nothing—nous

But these are mere words. No one thinks of a "compromise." A reduction of taxes must be made, but the protecting principle will not, cannot be, abandoned.

Certain resolutions have passed the senate of Georgia, offering a reward of five thousand dollars for the arrest and conviction of persons who shall covulate a small paper published at Boston, called the Claherator." We regret that state of society which should have deemed a proceeding of this sort necessary to its preser-

THE CONDITION OF THE LABORING POOR OF ENGLAND. The London Spectator, of Oct. 1, has the following exhibit of the wages and subsistence of a poor family in the south of England.

One year's wages, at 8s. per week 20 16 0 16 sacks not toes, at 6s. a sack (or 6d. £. s. d. per peck) being helf a peck a day 4 16 0. Two thirds of same for wife and three children, 3 4 0 Rent (on the average) A pair of shoes 9s. meniling 3t. 0 12 0 Voz. XLI. -No. 23. 0 8 0

3 15 0 Fuel, 0.0 For tools, candles, sosp, and numerous

other latte things, with the occasion-al turney of bread and bacon, and any drank but water, 3 18 0

What a living for a family! This calculation supposes constant employment, and no sickness, and a very small They talk about the public debt and the great number

20 16 0

of stockholders having an interest in it, as a safeguard in the givernment, and bulwark against revolution. What are all these to the vast throng of the stockholders. of human misery, reduced to the extreme minimum of the means of sustaining life, and who, if one mouthful be substracted, must die, or take food with the strong hand!

First And is it with working animals, thus paid and substated, that southern "philosophers" and philanthropies would have the free people of the United States to contend? Shall they "calculate the value" of our laboring citizens, and measure rights to the enjoyment of this, liberty and the pursuit of happiness," by gellons of swest, as extracted from the bodies of white or black slaves - mere machines, fastened like cabbuges to the sud, and esteemed salely in proportion to their ability and, and extension surery in proportion to one mainty to administer to the gratification of a superior or privilegal class—though only flesh and blood like themselves? Pra-VES: thou are thousands even in this "daul of the tree," as if "aboutingly called, who have on heart for those who labor—no sympathy for the insention of the control of the contro dustrious poor no pride in the growth of a "victuous populace;" who, resist all accumulations of property by norking men, and keep back producers, that the ditinction which belongs to their own nobility may not be interfered with-the descendants of pediars talking about nateriered with—the descends to penniar taking some rack, and those of exported paupers or felons, perhaps, gathering to themselves respect because of the victue of their ancestors! It we look closely into things, we shall see that such as these constitute the "house of lords" which forbids any 'reform' that may place mechanism in the same rank with the owners of slaves. And they have admirably succeeded in bunishing the virtuous and aspiring poor to new habitations, where idleness is regarded a sm and industry obtains both respectability and wealth. Look at the census, for appalling effects of this nobday-pulicy, on certain sections of our country—some of which are going into desolation, for want of that reflectning part of the people which is as well the glory as the shield, of every enlightened and prospersus and happy community. How would these have laughed, had they heard it said of FRANKLIN, when laboring with his hard and blackened hamls at a printing press, that "he would snatch the lightning from heaven, and break the scriptre of a tyrant king;"—how would they have been surszed, it it had been prophesied of Shennay, while mending an old shoe, that he would sign the "great paper," and pleilge his honor (a cobbler's honor!) great paper, and meage an unior (a counter's noner') to ampior it is glorious declaration—sye, and that such pleake would be held valid, though the gibbet was but it to punish the colibler's presumption? Let them look to it, and find out, if in all their own generations since the flood, they have had uch a man as was that printer or that cobblet! But there was "no mistake" in these persons -they were the Almoutt's own noblemen; and extorted that homage which even the contemptible pays to administrate principle and useful talent.

Bring down the wages of a laboring man in the United States to 8s. sterling, or 178 cents per week (on which he must subsist houself and his family!) and we shall have no need of laws to protect the national industry!!! There would be nothing worth protecting—so far as such persons were concerned; not even LIFE itself, except to PUNISH such a degradation of the human A member of the house of representatives of the Kindi. A memoer of the mouse of representatives of the United States, and with reference to the tariff bill of 1824, swore "by heaven," that if that hill should pass, "Georgia would not submit to it." We shall not swear, but venture to say—that the people of the United States will not submit to a living on POTATOES ONLY, that England may have fine states. that England may have "free tratle" with us-to feed the distempered imagination, or gratify the sordid passions, of an unproductive, labor-hating few. I say "sordid passions," for it begins to be manifest that a mean am passions, for to egist to be manufactured as elf-interest is at the bottom of the opposition to the protecting principle, aided, perhaps, by "accury four tricians," with "glass eyes," "accuming to see the things they see not!" The musket bearers of the fund—the "MEN who know their rights and knowing dare main tain them," cannot submit to that legislation which shell grind themselves into poverty, th t the wild funcies, grant memserves into poverty, the title wild funces, or avaricious propensities, of a few of the nation of South Carolina, and some in lower Virginia, may be included. What would these think of subsisting themselves, with their wives and children, on 178 cents per week? Why-even a cruel master gives better provision and shelter to his black slaves, than this amount of mosau sucreer to his track siaves, than this subjunt of ino-ney purchasee in England—where providings are dear-er, though labor is cheaper, than with its. And what do these persons mean by "free trade?" It is simply this—that they may export their cotton to England, and exchange it for what is the cheaper labor of that country, though cheapened by the competition of the United States, France, Germany, &c. It has appeared to me, that the whole erop of cotton-nullificutors - (a small part, however, of the cotton-growers, as I shall mention below), are prepared to crawl beneath the throne of Englow), are prepared to evan beneat the motion of low-land, and say, "O, king live for ever!—be graciously "pleased to buy our cotton,—but probibt, if it seemeth good in thy jight, all other products of American "forests, American fields, American workshops, American recent failure actus, American workshops, American finiteries, and even, O, king, those of American failures, and the product and the plantations—slav. "Do as thou will with uff these, but let there be "free fir.i.e." between thee and us—our cotton, the product of our slaves, Seing exchanged with thee for caleous "and negro cloths, the product of thy slaves." herein, I think, if any one will look seriously into the matter, he will find the whole merit of the question which has been so violently raised in South Carolina! And what is this cotton, after all? It has hardly a greater value, (if so large a one), as its manufacture in the United States, and its culture subsists not one-third so many of the people as its munufacture plentitully feeds. In the gross amount of snumel production in the U. States, It stands about as 30 millions of dollars is to 1,200 mil-Ions! It has less value than several branches of manufacture, respectively—such as of iron, or wool, or lea-ther; and, compared with the supplies of grain and ments, raised to feed the manufacturers and mechanics,

is a pitiful concern. why all this excitement in South Carolina! I ask I his state contains less than a furtieth part of the people of the United States, and grows less than a fifth part of the whole quantity of cotton! Louisiana has a much deeper interest in this product than South Ca-rolina—but the voice of complaint is not heard from her cotton planters. No doubt, they would like a higher price; but many of the most intelligent of them into m us that they expect a yet reduced one, because of exers-sive cultivation! but say, they can "make cotton" at six cents, or less, the pound-and still ilo "pretty well"and besides, the cotton of Louisiana is worth one cent a pound more than that of South Carolina, her amail eron of Ses Island excepted. I have direct information from one of the most wealthy and extensive planters of cotton in Louisiana, (a very correct and careful gentleman too, who attends to all his own business, and adds up his own secounts of cash paid out or received), that his WHOLE PLANTATION EXPENSES, even including the abominable on cotton bagging and negro cloths, does not and that all which he receives above that price is for in-terest on capital or personal profit, for the support of

himself and his own proper family. His product is about 300,000 hs.—then if the price be only 8 cents, he gains 15,000 dollars a year; one third of which gives him 5 per cent, on his capital, and he has 10,000 for his personal profits, not counting his interest on capital as such, though it should be so regarded. Nearly the like facts occur as other states—but this example is sufficient; and, with such things before us, may we not well ask WHY this wild riot and boisterous clamor in South Carolina? the nullifiers be consoled with the certainty that cotton will descend to six cents per lb. unsided by the tariff, and not to be prevented by "free trade" — for the tich lands of Louisiana and Alabama, alone, can produce twice as much cotton as all Europe will receive from us -though our own consumption be deducted from the mighty aggregate. The sun will not retire behind a nighty aggregate. The sim will not retire befind a cloud because gov. Hamilton wills it, or grn. Hayne command it—nor will Mr. McDuffic talk day-light into darkness; and the LAWS OF TRADE, as affected by searcily and supply, will no more be set aside for the special benefit of the cutton makers of South Carolina, than the sun nullificate his benign influence over the world, on the requisition of the honorable gentlemen named.

And what is it these people seek? I have before me a lift and precise statement of all the cotton manufac-tures of England exported in 1830, to all parts of the world, with many important collateral facts. In that worm, win many important constern tacts. In that year the value, or first cost, of all such manufactures exported to the United States, (it appears by the treasury tables), was nearly six millions of dollars—but the whole quantity of cotton consumed in these manufactures, making a full allowance for waste, was equal to only about 27,000 bales of 335 lbs. each, which, I understant, is nearly the real average weight of the bales exported from the United States—about 9,000,000 lbs. and worth less to us than 900,000 dollars. What then is the English market for cotton, us dependent on her supplies of cotton goods for the United States? About that of some of the manufacturing villages to the enstward? We shall soon bring out these lasts in a way that will cause them to be fill. Aye, and they will speak—if not with the logic of a nullifier, in all the power of truth. They shall be pushed "home" upon those who decare to reduce a free white man and his family to a subsistence on 178 cents per week, including house-rent and clothing, &c. for of these we are dispused to speak plainly—
and we will! We are not of those who would reduce the laboring white men of the United States (who have to bear "the burthen and heat of the day" in peace as well as in war), to a subsistence on potatoes only (and not enough even of them), that England may glory, becaute that our prople are as misorable as her own; and 'null fiers' rejoice, that LABERTY confers no blessings, save on those who live upon the labor of others! So long as the "Father of waters" rolls one drop to the sea, so long may any compromise be rejected with such as a find and proud men;—and if they will go to— H. hf. x, as many (apponents of the majority) did in times past—let them!—for the few shall not expound the constitution and prescribe the law to the many. The majority, in self- preservation, will null-ficate null-fication-though always, we hope, disposed to listen to argument and render justice, having regard to the greater interests to be served, on all questions of expediency; but yielding no principle which shall send the free American supperless to bed, that white slaves in England may gain more to leed their king and his nobles, his armies of priests, legions of soldiers, and mighty herd of squalid namers. - mere remnants of mankind. The gift of life without the means of living, is-valueless; and we have no feeling with that corruption of mond (as made known by a high digony of the south), which prefers black slave labor to that of free white men,—As these, and such as these, "make their bed, so let them Le." It slavery pleases them best—let them have their All of it; it is not our concern. We only ask that they will suffer us to

<sup>\*</sup> Except because of foreign events—such as civil wars in Brizil, India, Egypt, and other cotton growing countries, which may, for a white, diminish supplies and advance prices.
Say two millions of persons!

prefer ourselves—but we will do that, whether they land. The stand-still policy is not theirs—forward, consent or not; and shall see the end of it-glorious or lalways forward, is their motion and forward they go. wretched, as the case may be; fields clothed with the richest verdure of nature, and the busy hum of happy industry resounding—or becoming again the habitation of the fleet and timid deer, and the voice of gladness be of the fleet and timid deer, and the voice of gladness be uttered only by the owl, as, at midnight, he rejoices in having fixed the home of his young in the former clam-ber of the wealthy and the proud: which lutter process is already going on at a rapid rate, in parts that might be numed, because that free labor has been dishonored three. The fox shall burrow in the wine walt,—the rattlesnake repose among the rubbish of the green house, and bats take possession of the ball room. It is THE

The Contract

WILL OF HEAVEN-AND JUST.
We have heard much from the south shout the "monopolists" and "nabob-manufacturers" of the north. It nopolists" and "moto-manufacturers" of the north. It was a favorite saying of president Jackson, that "the tree is known by its fruits," and—no, also, we are told on higher authority. When a traveller gets within the influence of a manufacturing establishment, he instantly discovers a change in every thing shout him-the fields are better enclosed and more carefully cultivated -- the buildings are in better repair, nest and confortable; and huildings are in better repair, neat anil conitortable; and the very animals, horse-featile or swine, seem to re-juice in their fainces—though it may only creder them more fit for the uses of man; and he will find, on inquir), that thousands of acres of farming land, within the range of the influence spaken of, bear from 35, to 30, in re-100 per cent. greater value, than equally good lands in other, though neighloring, locations. Such is the fact let sophists account for it as they please, it is sufficient to us that it is so. And, as he more nearly approaches the village or hamlet, the traveller will see many little neat and saug houses, wherein he must believe that there is comfort and peace, with small lots of land attached—the freehold, perhaps, of a spinner or weaver—fire-man, hammer-man or machinist-or of the carpenter or shoe maker, who there ever finds plentiful employment and prompt pay-and, if he enters, he will see these houses filled with children, whose rosy cheeks and spark-ling eyes will excite much pleasure, if ency has not cankered the kindness of his heart. And when arrived in the village or hamlet, he may see hundreds of soler, discreet and temperate and intelligent people, of whom unany are young women, whose personal attractions and state of health, he may wish for his own daughters, and whose moral deportment is as correct as theirs. Such is "nabobism" in the north-but what is the "nabobism" of South Carolina? There, as I am informed, the traof South Carolina? There, as I am informed, the tra-veller is warned of his supproach to the domain of a great cotton planter by the desolution and gloon that more closely surrounds him-the ruined buts and squalid poverty that here and there he meets with, for this nabob has consumed every "green thing," and filled the whole range of his influence with slave machinery, monupolizing all comforts to his own precious self. What a picture might be drawn of the facts—but I shall refrain. It was thus in France before the revolutionthe approaches to a palace were always known by the increased wretchedness of the cottages, and the lessened comforts of their inhabitants. Such are the 'fruits' of the different systems! If any prefer the latter, let them enjoy it—it they like ruined houses, and fields planted with scrubby pines and brambles, let them have them, in all atmodance: but the liberty that we give to these must be granted to others, who prefer confortable houses and hoppy faces - valleys covered with crops of golden grain and mountain, whitened by flocks of sheep-all things shewing the fulness and fatness, increased number and growing wealth, of intelligent and saucy laboring free-men. There the hand which is hardened by toil is not rejected by those whom its power might smite to the earth; nor is the young lady who spins, dishonored, hecause she does something better than strike the keys needite suc togs someting better than strike the acy-of a piano with delicere fingers. She is prized because of her industry—she knows the value of property—and her virtuous and useful life qualifies her for offices in societs further than those of "suckling fools and chroni-She looks beyond the class in which cling small beer." is placed—she sims at im, rovement, and obtains it; and itomands of "f-etory gris" are already among the most respected and worthy wees or matrons, in the

Those that were poor have become rich-and those who Those that were poor have become rich—and those who are rich do not despise labor. In the last is the "secret worth knowing"—but the "therkness comprehendeth it not." How should it? It is two lazy to investigate too proud to acknowledge; and so it lies still, and curses that prosperity which it will not strive to obtain—and prays, (il pray it can without labor!) that its own misery may be the portion of others! But the prayers of the wicked shall not prevail.

CASE OF MR. LOWHIE, SECRETARY OF THE SENATE. The practice of more than twenty years in the publica tion of the REGISTER, will relieve us of the charge of affectation when we say - that it always renders us unharpy, when the rightful exercise of our vocation, or a sense of fluty, leads to the insertion of our thing which in . propriety, when offered to the public eye and care. Some few times in self-defence, or when sinned against in that way, we have, perhaps, over-stepped the line of conduct which we had marked out for ourselves—but always made haste to regain it, wishing never to depart from it sgain: and this rule for personal proceeding we have de-sired to extend to the contents of our work, generally so far as fidelity to the record would admit-and many thousands of articles which, at the first glance, seemed proper for publication, have been rejected on a lette consideration, and the inquiry, -what will they lead to? But that spirit of inquiry was not on the alert, whi n we gave place to the justificatory remarks of Mr. Lonrie, in our journal of the proceedings of the senate last weck-and simple justice towards Mr. Simpson, so s . verely assaded, demands that we should go further into which we shall do with all nossible brevity.

Mr. Simpson had charged Mr. Lowrie with conmunicating to the president the confidential proceeding of the senate, in relation to appointments to office. In proof of this, he published a letter from Mr. William F. Lewis, 2d anditor of the treasury, and written as he [Mr. L.] said, at the magnest" of the president, in which it L.) and, at the "request" of the president, in which it is said—"He [the president] left no unexiness at your situation until the morning of the day your nonnearion was finally acted on, when he learned from the secretary of the senate, for the first time, that you were in danger." And this letter from Mr. Lewis, was "in possession of the senate"—that is, it was avowedly in the hands of Mr. Lowrie was permitted to make the remarks which we have published. Mr. Sumpson also states, that the president had personally said the same in substance to present that he [Mr. S.] saw the 'private journati' [cf the senate] in the bands of the president, who said 'it was a pare party vote," and that Mr. Sunpson hed "resecved the votes of all our friends." Among other things himsell-that he [Mr. S.] saw the "private journat" Mr. S. publishes a letter from Mr. Lowie to gen. Samet Smith, dated 11th March 1831, which runs thus— "Hon, S. Smith. Dear Sir-the vote on Stephen Simp-"son's non-instion was year 18, noes 25. You voted is "the affirmative:" and that this letter or "certificate," ou voted in as Mr. Simpson calls it, was franked by gen. Smith and sent to him [Simpson.]

Many other things are stated by Mr. Simpson, a no-tice of which would only further lead its into the difficulty we should have avoided by refusing to publish Mr. Lowrie's remarks: but having given them, we could do no less than thus notice the facts on which the charge against him was founded; and his letter to gen. Smith against tim was tounded; and his letter to gen. Shifth shews, that the rejection of Mr. Shiphon was not so much a matter of course as Mr. Lowrie makes it out to have been, seeing that the venerable senator had, after the rising of congress, asked the official testimony of the secretary, that he [gen. S.] had voted for Mr. Simpson. And here we shall leave the matter to the indement of our readers.

"THE CHURCH IS IN LACUES." Or rather that the church establishment in England bas been "wis solved." is freely said in that country, because of the votes of the bishops on the reform bill. The speech of the lord chancellor, with reference to these votes, was very sar-t castie and severe. He lashed the prelates with a whip of seorgious; and even earl Grey, a stanch churchman, in repelling something said by one of the bishops observed, "it little became the garb that he wore"— "that there was not a ward of truth in it -that it was a foul calunday," These things have the hearty approbatout cauting, " ness things have the meany appropriate ton of the prophe—their long established hatted of the benefit of bishops islighly gratified in such proceedings of distinguished men, and they begin roughly to inquire, what business have the bishops in the halt of legislation? They are called upon to "set their house in order," and we think that they may be regarded fortunate if they escane the infliction of personal minry by the people, resorting to the "law of nature" to redress their wrongs, It is said by one of the orators that "there is no better sword than that which has been made from a ploughshare"

-and resort to force is frequently intimated. As to
the bishops, they have no hold on the hearts of the people-their dominion is the dominion of the sword-their latness the fatness of protection under the bayonet. It is said of them, "where shall we find words to express our feelings with regard to the conduct of those mitred enemies of our rights and our happiness, who, rolling in wealth and lodged in princely palaces, by means drawn from our property and labor, and thus exalted as the immaculate guardians of picty and virtue, have, by their vote, stamped the seal of their approval on seenes of drunkenness, fraud, corruption, subornation, and perjury, more flagrant, more shameless, more teening with abomingtons, than were those on the actors in which God, by the mouth of Job, prononneed that the con-gregation of hypocrites should be desolate, and that fire should consume the tabernacles of bribery; more flagrant, more full of abomustions than the acts of the apostate sons of Samuel; equal in turnitude and cruelty to the despoilers and destroyers of Naboth, and yielding in noint of wickedness to the deeds of none but Judas Iscariot himsell?"

The reform bill will pass or revolution ensue. Indeed The rejorm bull will pass or revolution casue, indeed, reform is revolution, constituted as the government of England is; and this, at least, may be hoped, that the bishops will be driven from the house of lords into their own diocesses -- and, compelled to give up their enorown diocesses—ann, compensed to give up their enormous revenues, be required to attend only to concerns called sprunal. "The successors of the spostles are not to be looked for in palaces and purple." "The coil of wealth has corrupted their holy office." "They have bought and sold in the temple," and must be "scourged out!" Such are the eries against them,

The Glasgow meeting in favor of reform contained 30,000 men. The bishops were called "dumb dogs," "greedy dogs"-"who let their flocks go to the ilevil!" Thus, at many other places,—especially at Manchester.
The archbishop of Canterbury was received with a general hiss at Corydon, where he attended as president of the society for propogating the gospel in foreign parts; and when he retired, it was in the midst of fearful yeland when he retured, it was in the most of feartus yes-lings of the people, mixed with groons. He seemed much alarmed for his personal safety, and departed at a rapid rate. The hishop of Bathand Wells, retiring from service in the church, was hosed, and stones were thrown at him. The bishop of Durham has been burnt in el-figy; and the bishop of Exeter received many marks of the popular indignation. These are fair specimens of what is going on. The end is yet to be seen.

SHEEP IN THE UNITED STATES. We publish the following as a specimen of that sort of information which the committee on the growth of wool were desired to col-leet, for the public instruction. But official returns of the numbers of sheep can be obtained only in a few of the states—and individual exertions must be relied on for att information concerning the product of wool in other states. It is earnestly wished that the gentlemen to whom this subject was committed, will speedily do what they can-that the permanent committee may have the use of the facts collected.

As suggested by Mr. Wingate, we think it probable, (from several inquiries that we have made on the subject, at deferent times) that the official returns for Maine, and other states, do not nearly shew the real amount of the sheep in them, being subjects of taxation in some; and from what is called the "grand list.

those under six months old are not included. Tak in 5 these things together, the opinion was given to us at New York, by several intelligent gentlemen, that one-third should be added to such returns, to show the probable number, in the states referred to.

Portland, state of Maine, Dec. 12, 1831.
Sin-In compliance with the views and wishes of the convention which met at New York, on the 26th of Occonvention which met at New York, on the zoin or oc-tober last, "for the purpose of taking into consideration what proceedings may be necessary for the support and further extention of the American System, as it relates to the various pursuits of domestic industry," I herewith transmit you a report of the number of sheep, growth ol wool, &c. in this state.

The following table shows the number of sheep there were in the several counties in 1830, as taken from the returns on file in the office of the secretary of state, viz:

COUNTY.	No. of sheep of the native breed, over 6 months old.	No. of sheep of the Merino or mixed breed, over 6 months old.
York	43 304	1,990
Cumberland	45,281	7.939
Lincoln	58,191	4,843
Hancock	26,508	2,645
Washington	13,774	482 "
Kennebeck	39 654	36.275
Oxford	41,117	15.904
Somerset	49.372	9.069
Penobscot	23,079	6,287
Waldo	35,172	6,090
	375 452	91,548
3	ECAPITULATION.	15000

Number of Merino and mixed breed. 91.524

Total number of sheep in Maine .... 466,976 It is estimated there are 1,400,000 pounds of wool

produced, annually, in this state.

It appears by the preceding table, that four-fifths of the wool produced was from native sheep. It is, however, believed that there is a much larger number of sheep in Maine than have been returned to the seeretary's office-and that the mixed breed are in a much greater proportion to the whole number of sheep, than said returns exhibit. The cost of keeping a sheep is about one dollar and twenty-five cents per annum. I have no knowledge of any wool having been imported into this state for several years—neither have I any means of aserrunning the increase of sheep in Mame since 1828; nor of the flocks or number of sheep kept solely for raising wool for market.

I have never heard it suggested by the manufacturers, or the wool growers, that their interests were diverse. 1 am, very respectfully, your obedient servant,
J. WINGATE, jr.

Thomas Mc Giffin, esq. Washington, Hashington county, Penn.

We shall take this opportunity to add the following account of sheep in Massachusetts and Vermout. In the former, and as we suppose, also in the latter, those less than six months old are not counted, as in Mame.

Sheep in Massachusetts-A correspondent of the Hingham Gazette states the number of sheep in this state, as contained in returns to the valuation committee, to be as follows:-

Berkshire,.........90,254|Barnstable,.........10,868 Hampshire ........ 54,714 Middlesex ......... 10,777 Hampden, . . . . . . 34,820 Norfolk, . . . . . . . . 3,639 Total....360,682 Dakes,.....11,692

[Manachusetts does not graw much wool—but con-sumes vast quantities, the product of other states.] Sheep in Vermont—The fellowing, we helieve, is taken from what is called the "wand list."

Bennington county	52.416
Windham	55,542
Rutland	139,996
Windsor	
Addison	112,784
Orange	
Chittenden	55,449
Washington	40 856
Caledonia	43.748
Franklin	41,638
Orleans	23,797
Essex	6,970
Grand Isle	

798,800

BANK OF THE UNITED STATES. The Richmond Enquirer, previous to the report of the secretary of the tressury, said—that "the only chance for the bank of the United States, is the two-thirds in both houses of

congress."

The Celegraph, with reference to the report of the secretary, asked—"But what will Mr. Retchie do with the bank? What will be think of this "admirable state paper," when he learns that a bill to re-charter the back, the joint production of the treasury and of the bank, had already received the sauction of the president, before the messige was transmitted to congress."

And Mr. Ritchie, having seen that report, said—"It is with much regret that we have seen this suggestion of the secretary of the treasury to re-charter an institution, which is contrary to the federal constitution; and which, as it is at present organized, is subject to such serious

On which the "Richmond Whig" observes, that the words "as at present organized" is a "charming kole to creep through!" "As at present organized," indeed! What has its present or past, or future organization to do with the grand question of its constitutionality?

From the Globe. In the "Telegraph" of the 12th

instant, in an article respecting the bank, it was asked, what will Mr. Ritchie think "when he learns that a bill to re-charter the bank, the joint production of the trea-sury and of the bank," had already received the sauction of the president before the message was transmitted to congress?" And in the same paper of the 10th, the in-formation of the "Telegraph" is stated to have been de-rived "from a member of congress, who received the fact from the secretary of the treasury in person."

We are authorised to state that no such bill has ever been produced or projected between the bank and the treasury, nor has any understanding or negotiation for that purpose taken place between the parties, and that neither such a bill nor any project whatever for re-char-

tering the bank, has, in any manner or at any time, re-ceived the sanction of the president.

We are further authorised to state, that neither the allegation in the "Telegraph" nor any thing resembling it, is, in the remotest manner, authorised by any observation of the secretary of the treasury to a member of

congress or any other person.
On which the Telegraph explained, and said-We are informed that there was a misapprehension on the part of the member of congress, who had a conversation with the secretary of the treasury on the subject of the bank of the United States; and that the secretary, in a conversation in reply to an inquiry of what modification would be acceptable to the president, said that a toli could be prepared which would neet the approbation of all parties. We give this explanation with pleasure, in justice to all parties concerned.

A subsequent number of the Richmond Enquirer has the following half-pint of "soft corn"—It is soft enough,

indeeda

The Philadelphia "United States' Gazette" has "but little doubt, that a bill to renew the charter of the United States bank will be presented to congress early in the The object of this movement is at once avowed, vize that the bank may awal itself of the peculiar situation of the president. His election comes on next

year; and they think, rather than run the risk of encountering the odium, which it is supposed will arise from the rejection of the hill, that he will sign it .- This cunning calculation might be just in most cases and with most men. But, it there be any one quality more re-markable in the character of Andrew Jackson than any other, it is that moral lorce-that unfinching couragethat indifference to temporary consequences, which have made him what he is. What can it he expected of a man, who has said that he would searcely turn on his heel to secure his re-election, that he will sign a bill of this description? We, for one, in not believe it. If the bank is guilty of the indelicacy of placing him in this doresse, we trust that he will have the firmness to tell them so-and return it to congress without his signa-

FOP And so stands the case among the parties. This, however, is manifest, that there is a softened tone about the bank, as many predicted would be shown when congress assembled-though others confidently said that congress assembles — uning others continuing many the president would place his re-election on the question. Some evidently wish to postpone u—"until after the election!" though the president has severely pushed a consuleration of the subject.

THE WINTER. Because of the stillen stoppage of the navigation, three weeks somer at New York, and four or five at Baltimore, &c. earler than usual, an oncommon degree of privation or distress has prevailed. All the cities were exceedingly short of supplies of fueland wood and coal have advanced to enormous prices at Boston, New York, Philadelphia, &c. The stock of coal is also exhaustril in the Baltimore market, yet, because of our rail road, oak wood has not exceeded aix dollars a cord. Salt was worth 2 dollars a bushel at Albany, though located between the domestic and foreign supply. We learn that it has sold as high as five dollars supply. We learn that it has sold as man as over upone a boshel in certain parts of the Eastern Shore of Maryland, which depended on water communications—and the stocks of sugar, coffee, spirits, &c. were almost entirely consumed at many places distant from the chief cities, at which are the seats of deposit for such goods.

The wild speculations in the coal lands of Pennsylvania last season, and the rumous decline of price because of the extra supplies, paralized the industry and enterprise of many, and forced them into new employments -- and hence, though the quantity of coal brought to market was yet large, it has not nearly equalicatine extra-ordinary demains. Instruction will be obtained from this state of things, and individuals will hereafter lay in their stock of coal in the right season—thus encouraging their stock of coal in the right season must entering and the miners to supply it, and preventing such deficiency as is now felt so severely. To relieve this temporary inconvenience, a repeal of the duty on foreign coal is louilly called for at New York; the effect of which, if attended to, we apprehend, would be to render almost permanent the evils now complained of, in checking the domestic supplies, because of the uncertainty of the market that would naturally follow a proceeding of the

OLD TIMES. The late respectable and worthy Mr. Claxton, so long a door keeper of the house of repre-sentatives of the United States, used to say, that when he was first appointed to that office, it was a part of his husiness to attend the arrival of the made at the post office, and carry to the louse the letters and papers addressed to the members, which, in general, he could conveniently do in his pockets,—but, sometimes, had to put a few in his bat. We believe now that considerably more than an average of two Dearborn wagon loads of letters and papers are daily received at the house of representatives, and as many sent away.

"CIRCULATION OF VALUES." Mr. Isane McKim, of Bultimore, exports, in his own ships, large quantities of American manufactures to the Indian and Pacific oceans, freely using cotton canvas, and receives in return copper ore and pig copper, which he himself manufactures at his great establishment in Baltimore, which is again exchanged for other goods, or goes to pay for various la-bor, by which the farmer finds a market, and is enabled to come in for his share of the "circulation of values."

The "National Gazette" peremptorily denies any concert -- so far as the bank is concerned.

Our rail road. A great quantity of articles are brought to market by this road—among them 300 bursels of floor per day, and namy cords of word, &c. The demand for transportations has exceeded the shifty of the company to supply wagons and cars—going beyond their expectations; but this defect will soon be remedied. The frost, which lucks up our rivers and canals, seems railer to sail the lactities which this road affords. Enough has already been seen to assure as that no one can 'calculate the value" of this road (completed), to Baltimore, and the region of country through which it shall pass, or unite itself to. Twelve new cars, of an improved construction for passengers are about to be placed on this road, manced the Pennsylvania, Ptanpaco, Lungmore, Potomac, Monococ, Catoctor, Shenandosh, Anterian, Conocochesgue, Monongalicla, Alleghany, and Youghogany.

Ma. Grann. This venerable citizen died at Philadelphia on the 26th instant. As a philanterupts, the
chilation the 26th of the the state of the celebrated. His
personal exposure and use in general colories at the
personal exposure and use in general colories at the
central trevended in Philatel philation 1793,—bit incorruptible integrity and uniform regularity in business, is
a merchant and banker, for more than fifty years at Philatel philation with the state of the state of the state
came of the side range and Large amount of his operations; and, of later years, be tiliburated mighty sumsitionated or elegant building, and, with great freedom,
when the side of the side of the side of the side of the
colories of the side of the side of the side of the
later of the side of the side of the side of the
later of the side of the side of the side of the
line ever, that he left behind him the largest fortune in
America—He whole of which was accountiated by him-

Mr. Girard was 84 years old. The next value of the estate feb behind him is supposed to be at least ten millions of dollars.

Mr. Grand began the basiness of ble as a cabin hory, then the mate of a ressel, next the keeper of a trap-slop, selling drams and segars—then passing forward continually gathering money and callerging that trade—to which his cheef happeness seemed to consist; and, though thereal on section occasions, his disposition seemed always but upon making and heaping money. He marted his bank with a capital of \$4,300,000, and since increased it to \$5,000,000. This bank will commune its operations, under the direction of several highly respectable gentlemen, to whom he left the charge in it. The distribution of loss great wealth, in not stated. He had a brother mad sater living at Bordeaux, and his several nephews and neces in Philadelphia.

DR. Cooren. A resolution was offered in the highlature of South Garolins, that the borrd of trustees be r quested to remove Dr. Cooper from the presidency of the sollege, because that his religious tenets, held and propagated, are dangerous to the youth and abhorrent to the leelings of the mass of the community, who are by law bound to advance the money which sustains the college.

This resolution finally assumed a shape directing the trustees to inquire into the matters preferred against president Cooper; who is ultra in every thing, and seems never happy except when isling on a whirlwind,

The traveless have held a occuring on the subject, but that a fuller board might be had, postpoued the consideration of the case mith the meeting in May. The doctor, it is said, will justify hunselt on constitutional grounds.

TENTERANCE. The fine stop Matths, of Hulson, early Young, lately went to see on a whaling voyage of 18 months, with experienced officers and a crew of awenty-two fine young men, with only 4 gallons of apritts, and as minsh of wit-c, intended exclusively for gacdiead purposes. The extent of the supply was well medicational by the officers and men, and the insurance offices deducted 5 per cent. Irom the premium, because of this arrangement. The usual supply for such a voyage is from 15 to 30 barrels. But the Martha took extra quantities of coffee, sugar, tes, &c.

BOSTOR. Charles Wells, esq. has been elected mayo' of Boston by a large majority. Because of the east of several parties, this election was one of extraordinary animation.

GEORGIA. Mr. Clayton, displaced by the legislature from his judgeship, has been elected to congress to supply the place of Mr. Lumpkin, elected governor.

FATETTEVILLE. The "Observer" says—A friend has suggested to us the propriety of stating, that, in addition to the long list of contributions so liberally made for the relief of the sufferers by our great fire, there have been about \$15.000 collected for the rebuilding of the Episcopal and Preshyterian cluurches; about 1,000 sent to different individuals in town, to be disposed of at their discretion, for the relief of urgent cases of distress, and a large amount of contributions to different individuals from their respective friends abroad. The donations of all kinds probably amount to \$112,000.

TENNESSEE. Certain resolutions which passed the house of representatives of this state, instructing the senators and requesting the representatives in congress to yote against a renewal of the charter of the bank of the United States, failed in the senate of the state by an equal division of the votes in that body.

THE SMALL FOX is committing great ravages among the Creek Indians. A letter from fort Mitchell, Alshama, says that between 7 and 8,000 of them have been vaccinated at the agency alone; and aibla-"Too much praise cannot be given to Dr. Wharton who, in pursuance of his arrivous duty, travelled over a great extent of country; and had not only to encounter the fatigue incidental to such a journey, but, in many instances, to combat the prejudices and superstitions of the natives, Many melancholy, and some ludicrous events, took place during the prevalence of the disease: among the tormer, there is but a 100 well authenticated instance of an Indian woman murdering her own sick husband, with the hope of escaping infection --- poor wretch, she died in a lew days after. I knew of another action of a far nobler, but not less tragic cast, and which, in the days inflict, out not seem tages cause been deemed worthy to have been commemorated by a statue. A chief's sister, in the bloom of youth, residing in the incrior of the nation, lelt herself to be infected, she called her relatives around her, and told them she knew that she had imbibed the disease; she might recover, or, (to use her own expressive language), might soon be called by the Master of breath. She knew that it was contagious. and determined not to suffer her lite to be prolonged a few days, or as many hours at the hazard of eausing death to those dearest to her on earth; "she went and hanged The Indians almost universally abandoned the huts of those who died, and for months shanned all approach to their vicinity."

SLAYES. The legislature of Virginis passed a law in 1923, by which it was enacted that to extrain officences, in addition to other punishment, free negroes and matters might be sold for slaves. A mulatto mand-lattices might be sold for slaves. A mulatto made that we have been in the state and his mother was a free where woman. He passed into the lands of different masters, and was last purchased by a Mr. Sildle, in Tennessee, He filed his petition in a circuit court of that state for a recognition of his freedom, and the court held that he was entitled to it, as the section of the set in question was a violation not only of the hill of rights of Virginis, but of that clause in the constitution which prohibits the passes of old bill of statinder, &c.

LAW CASE. An important decision of the chancellor retusing an injunction, in the case of J. K. Beekman, vs. the Saratoga and Schenectady rail road company, is jublished in the Saratoga Sentinel.

The application for an injunction appears to have been made on the ground that the set gracting a cluster to take rail road company, and authorising them to take possession of private property, at a fair compensation, for the use of their road,—was unconstitutional; for that, 1st. Rail roads differ from other public improve-

ments, and especially turnpike roads and canals, be- | fact. cause travellers cannot use it with their own vehicles. That the company are not obliged to transport passengers or produce, and 3d that the tolls which may be exacted, are unlimited: there were also other grounds of objection. All, however, were overruled by the chancellor who decided that the company had the right to take the land in question.

AN INGENIOUS ROOUS. The Boston Traveller has this paragraph.... "An individual has been examined by the grant jury, the present week, for mutilating bank notes and dissecting 14 fifty dollar bills, in such a manper, as of the pieces to make filteen. The charge was susceptible of proof; but no indictment could be brought for the act, as we have no statute making it penal thus to multiply paper money. A similar case occurred a few years ago, in Maine, believe that commonwealth was detached from our iwn state, and the judge then auggested the introduction in the laws, of a provision touching such transgressions. But his connect passed unbeeded: and the present austince will be sezed upon by ingenious counterleiters, to drive a profitable business at this kind of money making, unless our civil le-gislators affix therefor some heavy penalty."

THE PENSION LIST. The report from the pension onioe states the number of revolutionary pensioners on the rolls of the department, on the 17th day of October, 1831, to be 11.876, and that of invalid pensioners to be \$,868. Total 14,744. office states the number of revolutionary pensioners on

The amount of warrants issued during the year 1831, for the payment of revolutionary pensioners, is \$1,005,63278, and for invalid pensioners, \$168,512 10.

Total \$1,174,144 88.

The number added to the list during the year, is of evolutionary pensioners 201, of invalid pensioners 67. Total 268.

The number dropped from the list, by ileath, and the operation of the act of March 3d, 1819 is, of revolutionary pensioners, 375; of invalids 72. Total 447.

The secretary of the treasury has transmitted to the chairman of the committee on finance of the senate the following statement, exhibiting the quantity of tea imported during the year 1830, after deducting that which was exported, entitled to drawback, and the duties thereon, calculated at the present rates, at the rates payable after the 1st of January, 1832, and at the rates proposed by certain importers. Quantity in 1830. Present duty.

	Quantity on the	
Bohea, Souchong. Hyson Skin,	16s.148 925 1,607,1:2 1,314,229	12 cents \$17,871 00 25 401,805 50 28 367,984 12
Hyson and ?	2,812,646	40 1,125,058 40
Y. Hyson S Imperul,	273,246	50 136,623 00
	164.6,156,268	\$2,094,342 02
	New duty whe imported in Am- rican vessels afte 1st January, 189:	<ul> <li>Duty proposed by r certain importers.</li> </ul>
Bohes,	4 ots. \$5,957 0	0 2 ets. \$2,978 50
Southong,	16 160,722 2	3 48,216 66
Hyson Skin,	12 157,707 4	8 4 52,569 16
Hyson and ?	18 506,276 2	
Y. Hyson 5 Imperial,	25 68,311 5	0 10 27,324 60
	4000 071 4	4999 847 68

\$898,974 46 Treasury department, Dec. 15, 1831.

THE NEW ISLAND. Sometime sluce we saw an artiele, headed "A knowy point for diplomatists," in which ete, heaned A annuy point for influences in the was stated that the question of the ownership of the new island, which has lately made its appearance in the Mediterranean, would probably occasion a diplomatic contest between the different powers of Europe. Such, contest between the different powers of Europe. Suel, ecording to a late Paris paper, has turned out to be their through the ice, by means of stram boats, were recently

It is stated that this island (the isle of Scracci as it is called by the Nearphlians, or Graham's island. by the English, after the name of its first discoverer) is at present a bone of warm contention between the kingdon of the Two Secilies and England.

UPPER CANADA. According to the returns laid before the provincial parliament, the population of Upper Canada is 234,865, as tollows:-

1	Gore	Populatio
	Gore	23 552
	Home	32 871
	Western	9,970
	Nug va	21,974
	London	26,180
	Neweastle	16,498
	Midland	36,322
	Ottawn	4,456
	Bathurst	20,113
	Enstern	11,168
	Johnstown	21,961
	Total,	234,865

It costs the king of England, or FAMILY EXPENSES. rather the people of England, for the royal lamily 's expenses, we mean the king's private household, the fol-

ving sums per annum.	
Bread,	\$12,500
Butter, cheese and eggs,	21,000
Vegetables,	3,000
Butchers' mest,	\$6,000
Poultry,	10,000
Ale and beer,	12,000
Wax condles,	19,000
Fruit and confectionary,	5,000
Milk and cream.	6,000
Wine, spirits, &c.	37,500
Lamps,	33,000
Washing linen, &co.	12,500
Fuel.	\$6,000
Linen for shirts, &c.	1,600
Liveries for servants,	37,000
Horses.	16,000
Whips	800

BRIDE HOTTOPS

The Blackstone canal has been closed by lee more than weeks. But it is stated, that the income of the canal has increased so much as to enable the directors to pay the corporation and to make a dividend of profits The traders had not obtained on the strares this year. I he trauers had not obtained their full supply of goods previous to the closing of the canal, and there would have been full employ for the boats for a fortnight longer at least. It is at this season on the shares this year. of the year, remarks the editor of the Worcester Ægis, or the year, remarks the cultor or the worcester Eggs, that the superiority of rail roads over the canals for transportation, is more fully appreciated than at any other. The ears upon the rail road are detained but a short time in consequence of a snow storm, and cold weather alone presents no obstacle to their progress.

Freights are very brisk at Savannah—and three far-things (sterling) per ib. are freely paid for the transporta-

tion of cotton to Liverpool.

The Montreal Gazette of the 22d ult. announces that it is the intention of the British government to dispose of the ships of war at the dock yard at Kingston, by public auction on the 17th January next. They consist numer suction on the 1/th January next. I hey consist of the St Lawrence, 102, Kingston, 55; Burlington, 42; and Montreal, 24; now moored off the dock yard at Kingston, and of the Irames of the Wolfe and Canada,

Ningsion, and of the frames in the Wolfe and Canada, both on the streks and pierced for 110 guas each.

A fine sti, the son of a respectable gentleman of Brooklyn, N. York, recently died of the hydrophobia.

The president's message was carried from Provisience to Boston, 42 miles, in one hour and fifty-strength of the provision of the present of the provision of the present of t A bed of iron ore has lately been discovered in New

York, fitted to be rendered into the best steel. There are several mines of like quality, and the manufacture of steel will soon be adequate to the demand.

made at Baltimore, and several vessels towed out of the harbor and others introduced. The power of these bouts, when fitted for such business, is spoken of as truly astonishing. The ice, for about 12 miles, was hard and about 8 inches thick—but the Independence broke and aunk it in her track.

History. (says the "Village Record"), does not furnish a more striking instance of republican sounders of principle and simplicity of manners, than that afforded by Mr. Adams. in accepting a seat in congress and tak-

ing his place without ostenlation.

Upwards of 5000 tons of coal are frozen up in the

canals, within 40 or 50 miles of Philadelphia.

The U. S. frigate Guerriere, and ship St. Louis, have recently arrived from long croises in the Pac fic.

The duty on advertisements during 1830, in England, amounted to nearly \$3 000,000; in Scotland, \$300,000; Ireland, \$461,478, or a total of about three millions seven hundred thousand dallarz,

A. Mr. Butler now a resident in Philadelphia, is about 100 years old. He was a soldier at Braddock's deteat, and still walks the streets with much firmness. woman living in the same city, who is 107 years old.

The tribunal of Isourion, (France), has given a deci-

sion on the much vexed question of the marriage of the priesthood. Its decision was in favor of the legality of auch marriage. Of course, this cannot affect the laws of the church, as a church, but it involves a great principle, since, prior to the revolution, the marriage of a priest was contrary to the laws of France.

One of the most sugular celebrations of the last coronation was that of Mr. Ulstone, surgeon, of Congleton, who had a tea party of staty women, mathers of eight hundred and thirty-nine children! twelve of the dames alone having given birth to two hundred and two of the number!! One of them was the mother of thirty-one children!!!-Staffordshire (Eng.) Mercury.

From some success in rusing the rinband cane, the people of Ohin are encouraged to think they can have

augar plantations in that at de.

Messrs. Ridge, Martin, Coody and Boudinot, a deleration from the Cherokees, arrived at Washington some days ago. It is estimated that 14,000 persons, (two-thirds of

them from the south and west) travelled from Albans to

them from the bound and wear of the second s

Sugar, besides one and a half thirds, of syrap.

Ohina, (says the U. States Gazeta), has received anpually from British India, 300,000 bales of raw cotton. Should the recent moundertaining between the Hong merchants and the English factures grow into any permanent rupture, there may be a demand, even in that distant region, for the staple of South Carolina, which might warrant the cost of conveyance so be.

A man, named James Sauders, is now living near Rock ingham court house, S. Caralina, whose age is one hundred and seventeen years. He has one children living -the oldest is upwards of 80, the youngest 45 years of He formerly used spectacles, but now reads the age: are cornerly usen specialis, one that had long smallest print without glasses, and his bac, that had long been white, has turned to a dark culor. He is in good ealth, and takes his walks freely.

Pennsylvania is now represented in the senate of the United States, by two brothers-in-law, Messrs. Wilkins and Dallas.

The New Orleans Courier of a late date, says: "Mr. Bertoulin, one of those gallant Frenchmen who came from Europe to this country to lend their assistance in the glorious war of our independence, yesterday morning, terminated his lung and honor-ble career. This morning a detachment of 50 U. S. truops, stationthis morning a stratement of 20 O. 3. (1901s, station-ed at this place, under the command of capitain Aileu, the staff of the legion, and a large concourse of instel-low eitrzens, followed the remains of that worthy man to

Montiort Stokes has been re-elected governor of N. Carolina, by the legislature of that state. For Stokes

Sa-Spaight 83.

The official majority of gen. Ashley over Mr. Wells for congress, from the state of Massouri, is 209.

The Pottsville Journal of Dec. 17, says-We understand that several wagons laden with coal, set out for Philadelphia during the week, anticipating return loads of merchandise. The transportation of our mineral by of merchandise. land to such a distance is, at present, a novel occurrence. Price of transportation, \$7 per ton.

In consequence of the scarcity of salt in Zanesville. and the difficulty of procuring supplies since the closing up of the river by ice, it has risen within a few days from S73 to 623 cts. per bushel by the barrel, and retail in proportion. Wheat is worth 564 cents mer basels, 1

FOREIGN NEWS.

Arrivals at New York bring Liverpool dates to the 9th November, inclusive.

ENGLAND.

Considerable excitement prevailed in England on secount of a report that the cholera had been introduced into Sunderland from Riga by a scaman's chest, on opening which an uld woman had taken the contagion illied, and that six other cases had supervened, five of which had proved fatal. The alarm seems however to have originated without just grounds, as the cases of cholera which occurred were discovered to have been of domestic and not of foreign origin. The physicians who attended the most alarming case state, that extreme cases of English cholers have occasionally proved latal even in a shorter time than that of their patient.

Tranquility had been restored at Bristol. The total damage done by the late riots in that city is estimated at £500,000 sterling. The loss of lives is less than had been imagined—the total killed and wounded does not exceed 94. The return of killed and wounded, as far as ascertained is, burnt 6; shot, 2 excessive drinking, 2; sword cuts, 2; total, 12; wounded from shots, 10; sword onts, 48; excessive drinking 2; other causes, 54; total, 94. The wounded are in general doing well.

One hundred and eighty prisoners had been commit-ed, 50 of whom were capitally charged with rioting and burning. Constables were at that time flocking in with prisoners, and the magistrates were sitting in different

The altern the charges against them.

The altern of Bristol have entered into a liberal subscription for the immediate relief of the sufferers, many of whom have last the whole of their property, and were not even in possession of a change of linen.

A meeting had been held at which a series of resolu-tions were passed, addressed to the home secretary, lord Melboorne, praying an inquiry into the conduct of the magistracy of the city, and of colonel Brereton, the

commanding officer of the district. Other disturbances had taken place at Macelesfield, Coventry, Preston and Worcester. At the latter place two of the rioters were taken and committed to prison; but, on the request of the mish, were released by the police, when the raiters became more furious, and were not dispersed until after the reading of the riot act by the mayor, soled by a troop of the 27th Hussyrs, who, on heing pelted with stones, charged on the mob, using the llst part of their swords freely on the backs of their

assailants, 29 of whom were taken prisoners.

A meeting which had been called at White Combuit Fields had caused serious apprehensions; but owing to the decisive steps of the government the meeting was prevented. The bank of England had been strongly

At the instance of his majesty, in privy council, the archhishop of Camerbury had prepared the forms of prayer to Almighty God, to be used in chareles during the contumance of danger from the cholers. A large hospital is to be fitted up for the reception of patients should the cholers reach London. In consequence of the board of physiciaus having recommended the use of campior, that article had advanced frum £4 15 to £14.

All the vessels fitting out for the expedition of Don Petiro, at Deal and Gravesend, had been seized by order of the British government.

Mr. Van Buren transacted business at the foreign office on the 5th November.

Dublia, Nov. 5 .- Mr. O'Connell entered the court of chancery to-day at half-past twelve p'clock, with a

s.lk gown and full bottomed wig, and stood at the side bar. The lord chancellor said—"Mr. O'Connell, his majesty has been pleased to issue his letters patent authorising you to take precedence next after the attorney and solicitor general, and the two schior arricants. You will therefore take your place accordingly." Mr. O'Connell then bowed and proceeded to take his seat above serjeant O'Loghlen, and next to the subcitor general, who congratulated him, and shook him by the hand,

FRANCE

The finance projects of the ministers had been carried in the chamber of peers by a vote of 67 to 8. The beerage bill was to have been carried to the chamber of peers on the 7th Nov. and from 30 to 60 new peers were to be made. The idea of colonizing Algiers had been abandoned. The Musselman phabitants of which were said to be greatly incensed against the French troops, in consequence of the sanctity of their mosques having been violated by them.

PORTUGAL.

Don Miguel had become so starmed by the apprehension of the approach of Don Pedro's expedition, that he suspended the execution of the sentence of death upon \$7 soldiers, who had proclaimed Donna Maria.

BELGIUM AND HOLLAND.

The senate had authorised the king of Belgium to sign the treaty of prace as proposed by the five powers; but the people were dissatisfied, and it was thought that Leopold would besitate before he gave it his signature. That article in the treaty which authorises the Belgians to dig canals from Antwerp to the Rhine, was not relished by the king of Holland.

GR' FCE.

The assassination of the president of Greece was confirmed, and had co. . a general thrift of horror throughout the country, as assassuations had not before been heard of in Greece since the revolution,

# TWENTY-SECOND CONGRESS-1st SESSION.

SENATE

December 23. The vice president communicated a letter from Ehenezer H. Cummins, transmitting tabular statements shewing the result of any ratio of representation from 48,000 to 55,000 souls for each representative, under the last census; and

On motion at Mr. Dickerson, 10,000 capies thereof were ordered to be printed for the use of the senate.

Mr. Marcy, from the committee on the judiciary, reported a bill entitled can set to provide for the reports of the decisions of the supreme court of the United States."

Various leaves to bring in bills for the relief of private individuals were granted, and bills of a similar cha-

racter reported.

The resolution of Mr. Holmes, relative to causing a map to be made of the disputed north eastern boundary, shew ing the territory in dispute, and exhibiting the marks, monuments, natural and artificial, and to cause lithogra phic impressions thereof to be executed for the use of the senate, was taken up and agreed to.

On motion of Mr. Kane, it was resolved to instruct the committee on public lands to inquire into the expediency of amending the set granting the right of pre-

emption to settlers on the public hards.
On motion of Mr. Hendricks, it was

Reselved, That the committee on commerce be instructed to in-Reselved, That the committee on commerce be instructed to in-quire into the expediency of making an superparation to supervie the margation of the two White ravers in the state of Indiana, from the junction with the Walsach as high up as they may be considered navigable; and also that the same committee be in greated to lungue into the expediency of authorising a survey of the reliable of the properties of the committee of the The engrowed ould to enable the precedent of extin-tion. The engrowed ould to enable the precedent to extin-

guish Indian titles within the state of Indiana, was read the third time.

The sen te then adjourned

Becember 27. Mr Frelinghuysen, of New Jersey, appeared and took has seat

On motion of Mr. Hilking, so much of the president's message as relates to insolvent debtors, was relerred to the judiciary committee.

A great many inemorials from private individuals were presented and reterred.

Mr. Benton reported the bill to anthorise the mounting and equipping a part of the army of the U. States, and the bill providing for the armament of the lorusications.

On motion of Mr. Johnston, the committee on commerce were instructed to impure into the expediency of improving the harbor of port Ponchartrain.

On motion of Mr. Buckner, the committee on commerce were instructed to inquire into the expediency of establishing a national hospital at the town of Cape Girardean, in the state of Massauri.

On motion of Mr. Smith, the committee of com-

merce were instructed to inquire into the expediency of granting an appropriation to the mayor and corporation of Baltimore, to assist them in the preservation of the navigation of the port and harbor of that city.

On motion of Mr. Buckner, the committee on roads and canals were instructed to inquire into the expediency of improving the navigation of the river St. Francois.

On motion of Mr. Hanna, the committee of roads and canals were instructed to inquire into the expediency of making an appropriation to be expended on the Cumberland road in the state of Indiana.

On motion of Mr. Hendricks, the committee on publie lands were instructed to inquire into the expediency of authorising the issning scrip receivable in the payment of public lands for money's forfeited in land purchases, it all cases not heretofore provided for by law.
On motion of Mr. Holmes, the secuetary of the trea-

sury was directed to communicate to the senate, conies of all the instructions to collectors of the customs and their officers, in respect to the British colonial trade, given or issued since the proclamation of the president of the 5th October, 1830.

Mr. Robinson, reported a bill to authorise the state of Illmois to sell certain portions of saline lands in that etate

Mr. King reported a bill supplementary to the law granting pre-emption rights to settlers on public lands.

The resolution of Mr. Hendricks, relative to the improvement of the navigation of the two White rivers, was agreed to.

The resolution of Mr. Benton relative to repealing the resolution adopted on the 14th May, 1830, directing the secretary to obtain extra copies of illieuments printed for the house of representatives, was taken up and agreed to.

The bill to revive and continue in force an act, entitled "an act to provide for reports of the decisions of the supreme court of the United States:" and

The bill supplementary to the several laws for the sale of public lands, were severally read the third time, and ordered to be engrassed.

Agreeably to the order of the day, the senate resumto the set "for the relief of certain surviving officera and soldiers of the revolution;" and

On motion of Mr. Hayne, Ordered, That the further consideration thereof be postponed to, and made the order of the day for Wednesday week. After the consideration of executive business, the

Senate adjourned.

December 28. Several petitions were presented.
Mr. Hanna reported a bill authorising the establishment of an additional land office in the state of Indiana,

ment of an adortional radio office in the state of indiana, read and ordered to a second reading.

Mr. King obtained leave to bring in a hill to lay out and construct a road from Lime creek to the Chataliooche, and for repairing the road on which the mail is now transported.

Mesers. Rubbins, Frelinghuysen and Poindexter were appointed the library committee on the part of the se-

The resolutions moved yesterday by Messrs. Holmes. Hendricks, Hanna, Buckner, Smith and Johnston, were severally taken up and agreed to; also the one submitted by Mr. Buckner, on the 22d instant, instituting an inquiry into the situation of unconfirmed land claims in Missouri, and for providing for their adjustment.

The bill to revive and continue in torce an act, entitled "an act to provide for the reports of the decisions of the supreme court of the United States;" and

The bill supplementary to the several laws for the sale of public lands, were severally read the third time and passed.

The senate resumed the consideration of the bill to authorise the mounting and equipment of a part of the

army of the United States.

Mr. Benton explained the object and expediency of the proposed measure, and moved to fill the black for the appropriation with 25,000 dollars; which, after some Inquiries by Mr. Smith, as d reply by Mr. Benton, was agreed to, and the bdl was ordered to be engrossed for a third reading.

The senate next took up the Li'l making an appropriation of 200,000 dollars for carrying on the armament of

Crifications. [The annual appropriation has here tofore been 100,000 dollars. The present bill was introduced by Mr. Smith, on leave, and was referred to the committee on military affairs, which committee reported the full with a recommendation that it be rejected. Accordingly, when the

bill came up to-day -- ;
Mr. Ben'on, (clinicum of the military committee)
moved its indefinite postponement. He stated (in the course of the debate that ensured) that the committee lad submitted the bill to the secretary of war, who returned it, with the intimation that the executive and the department made no objection to its passage, but declined re-

commending it. A debate of some length and interest ensued on the bill, in which it was streamously advocated by Mr. Smith. and was opposed by Mr. Hayne, who, with the view of giving the greatest emphasis to the decision of the question, and of placing the precise sense of the senate on record, called for the yeas and nays.

The question being taken on the indefinite postpone-

The question being laken on the indefinite postponemed, it was decided in the affirmative as follows: YRAS-M-sars, Bell, Benton, Brown, Buckner, Clay, Dickerson, Ewing, Poot, Forsyth, Freinghuysen, Graudy, Hanta, Hayar, Hill, Holmes, Kane, Mangum, Marcy, Miller, Moure, Prositis, Robbins, Robinson, Suggles, Symout, Toudinson, Trough; Tick White, Wilkins-31.

NATS-Merst, Bibb, Dallas, Dudley, Johnston, Kniglu, Silvbee,

Smith-7.

So the bill was REJECTED.

The kill to authorise the state of Elinois to sell 20,000 acres of the saline lands in said state-

The bill supplementary to an act to grant pre-enqution rights to settlers on public lands, were severally considered in committee of the whole, and ordered to be engrossed and read a third time.

Mr. Robbins submitted the following resolutions: Resolved, That the committee on navel affairs be instructed to inquire into the expediency of establishing a naval depot and port of expedition and rendezvous within the waters of the Naragan-

of expension as Actions of the report of the board of flavy com-missioners, made October 19th, 1829, and of the report of the se-certary of the navy, made D cember 6th, 1830, as relates to the establishment of a deport in said waters, be referred to said com-

After the consideration of executive business, the senate adjourned.

December 29. Among the petitions presented this day, was one by Mr. Frelinghaysen of sondry coizens of the state of New Jersey, who were officers and privates of the state troops, volunteers, and militia, of the revolutionary war, praying that such remuneration may be made to them for their toils, privations, and perils, in that war, as will afford the means of sustenance for the remainder of their lives.

Mr. Poot presented a joint resolution of the general assembly of the state of Connecticut, instructing the senators, and requesting the representatives from that state in congress, to use their exertions to procure the passage of a law for the more perfect organization of the

militia of the several states.

Agreeably to notice given, Mr. Benton asked and obtained leave to bring in a bill to abolish the duty on alum salt; which was ordered to a second reading.

The resolution offered yesterday, by Messrs. Prentiss and Robbins, were severally taken up and agreed to. The tall to authorise the mounting and equipment of

ne and to autorise the mounting and equipment of a part of the army of the United States: The bill to authorise the state of Illinois to sell 20,000 acres of the saline lands in said state:

The bill supplementary to an act to grant pre-emption ghis to aettlers on public lands, were severally read a third time and pussed.

As were some other bills of a local or private charac-

Adjourned.

Friday, Dec 23. Mr. Hoffman, from the committee on naval affairs, reported sundry bills, viz:

A bill to provide for the payment of arrearages in the naval service, chargeable to the enumerated contingent, prior to the 1st of February, 1832;

A hill to establish ropewalks for the use of the navy of the United States;

A hill regulating the enlistment of seamen, ordinary amen, landsmen and boys, in the naval service of the United States; A bill to provide iron tanks for the use of the navy of

the United States;

A bill to provide for constructing two steam batteries; A bill to provide for completing the removal and erection of the naval monument;

A bill to provide for paying certain arrearages for sur-

which several bills were twice read, and committed

to the committee of the whole house on the state of the union. Several bills of a private nature were reported and disposed of, and among these one for the relief of the re-

presentatives of David Dardin, [owner of the horse Romalus.] Mr. Dayton, from the committee on military affairs,

reported three bills, viz: A bill providing for the organization of the ordnance

department; A bill for the organization of the topographical engi-

neers; A bill for the gradual increase of the corps of engi-

neers Which bills were severally twice read and committed to the committee of the whole house on the state of the union

Mr. Carson reported a hill to compensate Susan Decatur, widow and legal representative of commodore Stephen Decatur, deceased, and others, which was twice read and made the order of the day for to-morrow.

Mr. Il ickliffe reported a bill to establish a land office lo the territory of Michigan-twice read and made the order of the day for to-morrow.

Mr. Wickliffe also reported a bill concerning land claims in Florida-twice read and ordered to be engrossed for a third reading on Monday. Mr. Verplanck, from the committee of ways and

means, reported a bill remitting a part of the duties on a cargo imported in the brig Liberator-twice read and made the order of the day for to-morrow. Mr. Washington reported a bill authorising the Che-

saminke and Ohio canal company to construct a turopoke d on the border of the canal from Georgetown to the Little Falls bridge-twice read and committed for tontorrow.

Mr. McDuffie, from the committee of ways and means, reported a bill making appropriations for the support of government for the year 1832; which was twice read, and committed to the committee of the whole house on the state of the union.

Various bills for the adjustment of private claims were reported, read, and referred.

Mr. Beardeley reported a bill altering the time of holding the suring term of the circuit court of the United States for the southern district of New York-twice read and ordered to be engrossed for a third reading on Monday.

Mr. Polk, from the committee on the fifth census, and the appointment of representatives under it, reported the following resolution; which, by consent of the house, was immediately taken into consideration and adopted, ¥17.1

VIZ:
Resolved, That the secretary of state be directed to communi-cate to this house a statement, showing the aggregate number of persons in each of the states, according to the fifth census, and distinguishing the slave from the free population in each state;

as soon as he shall have noted and corrected the elerical errors in the returns of the marshalt and their assistants, as required by the act of the 3d of February, 1831, entitled, "an act to amend the last for taking the fifth enemy." net for taking the fifth census."

Engrossed bills

For the adjustment and settlement of the claims of South Carolina against the United States.

me the relief of the president, directors, and compahy of the Miami exporting company, and 26 others for the settlement of private claims, were severally read a third time and passed, and sent to the senate for concurrence.

The bill for the relief of the heirs of general Hull was negatived by a large majority. The bill contemplated the payment to the heira of general Hull, the arrears of pay to which that officer was entitled as major general of the army of the United States and governor of Michigan, from the 16th of August, 1812, the date of the surrender of Detroit, to the 1st of February, 1813, when he was arrested.

By unanimous consent, Mr. Vance offered the follow-

ing resolution, which was adopted, viz:

ing resonation, where was autority; their be directed to Recolocs, That the committee on military ulbrits be directed to an autority of the replayment of an assistant enginer, by the repeal of a joint resolution, approved 29th of April, 19th, automiting the president to employ a skill of assistant in that corps of the army of the United States.

Mr. Hefman then moved that when the house ad-

journs to-day, it will adjourn to meet again on Tuesday next, which being sgreed to,

The house adjourned.

Tuesday, Dec. 27. Mr. Wickliffe reported a bill explanatory of the act for the rebel of the officers and soldiers of the Virginia line and navy, and of the centinental army during the revolution, approved May 30, 1830.

Mr. Drayton unde a report on desertions in the army, accompanied by a bill to improve the condition of the non-commissioned officers and privates of the army of the United States, and to prevent desertion-twice read and maile the order of the day for to-morrow.

Mr. Thompson, of Georgia, from the committee on Indian affairs, to which the subject was referred on the 12th inst. made a report, accompanied by a bill, to carry into effect the fourth article of the treaty of the 8th of January, 1821, between the United States and the Creek action of Indians, so har as relates to the claims of estates of Georgia against said linhams for injury done prior to the passage of the set regulating intercourse with Indian tribes; which bill was twice read, and made the order of the day for to-morrow.

Mr. McDuffie reported a bill concerning the accounts of the treasurer of the United States-twice read and

made the order of the day for tn-morrow.

Mr. Barrenger reported a bill for organising the mi-litia of the District of Columbia.

The bill for the relief of the heirs of the late general Hull, was reconsidered and last on the table.

The bill to authorise the president to extinguish the and me out to authorise the president to extinguish the Indian title to lands within the states of Indiana, Himois and Mishigan, was considered and referred to the committee on Indian offsirs.

The speaker laid before the house a letter from the 3d suditor of the treasury, accompanied by the papers called tor by the house on the 15th instant, on the motion of Mr. Howard, in relation to the claims of the owners of vessels sunk for the defence of Baltimore in the late war with Great Britain; which letter and accompanying papers were referred to the committee on claims.

The house resumed the consideration of the resolution, offered by Mr. Blair, of Tenn. on Thursday last, proposing the appointment of a committee "to inquire into the expediency of distribution (seconding to population), the proceeds of the public lands amongst the several states and territories - which distribution, when made, shall be expended on works of internal improvement, or to reimburse moneys already expended on such works, as the legislature of the respective states shall direct"-The question being on the amendment proposed by Mr. Hunt, of Vermont, who had moved to insert, after the words 'expended on such works," the words or for purposes of education.

Mr. Vinton, of Ohio, suggested a substitute for the resolution, which he thought would meet the views both of Mr. Blair and Mr. Hunt, and which, being read, both g entlemen acceded to it. The substitute was as follows:

"That a committee be appointed to inquire into the expediency of providing an uniform system of gradually closing up the sale of the public lands now in market, or that may be hereafter brought into market: Also, to take into consideration the expediency of appropriating the proceeds of the public lands after the payment of the public slebt to the promotion of some national object or objects.

This being accepted by Mr. Blair as a substitute for his resolution

Mr. Duncan, of Illinois, moved to strike out all of the resolution after the word resolved, and insert the tollowings

"That the committee on the public lands be instructed to inquire into the expediency of appropriating onethird of the proceeds of the luture sales of the public lands, to objects of internal improvement within the states in which said lands are sold, and that the same committee inquire into the expediency of appropriating (after the national debt is paid), one-third of the proceeds of said hand sales, for the construction of roads and causis, from the Mississippi, the Ohio, the lakes, and the St. Lawrence, to the commercial cities of the Atlantic; and of appropriating the remaining third of said proceeds for purposes of education; the works or objects of improvements to be designated or approved by congress, and the money to be expended under the authorsty of the states in which said improvements are maile,"

Mr. Carson, of N. C. made a few remarks to show that the acts of the several states ceding the lands now owned by the United States, had immovably settled the manner of distributing among the several states the procecils from them (after the payment of the public debt), and that congress could not, by any legislation, denart

from that made.

Mr. Mercer went into an argument, and referred to the acts of cession, also to show that the states which ceded the lands to the United States had prescribed the application of the proceeds from their sale, after the payment of the public debt, the objects and mode of which application he explained at large. He had, however, no objection to the second branch of the proposed ever, no objection to the second branch of improposed inquiry; but strennously opposed any new system of land laws, or new mode of disposing of the public do-main, the present being, in his opinion, the wiset that had ever been, or could be, devised by the wisdom of man-the beneficent effects of which he briefly pointed out, in contrast with the evils which prevailed in those of the new states east of the Ohio, where a different sy atem had been pursued,
When Mr. M. concluded his remarks, Mr. Blair, of

Tenn rose, but the hour for considering resolutions had expired, and the debate was an spended.

Mr. Mitchell of S. C. laid the following resolution

upon the table for consideration to morrow:

Reswed. That the versus of the travery be directed to inquire of the collectors of the ports of Boston, N. w York, Philadelphia, Ballimore and Charleton what condemnations of any gled good, and what unit had occurred between the political properties of the politica goods, and what units had occurred between the collectors of ports and the citizens of the United States, or the subjects of foreign power, in relation to frauds against the subjects note ports and the extracts of the United States, or the subjects of any forigin power, in relation to frauds practised on the revenue laws, specifying the amount of property involved, the date, the names of the partie, and the electres of the court in each case from the lat of January, 1820, to the 1st of September,

On motion of Mr. Stewart it was

On motion of MIT. SEPROTE WAS Resided, That the committee of internal improvement be in-structed to inquire into the expediency of providing for the sun-timation of the improvement of the atembora navigation of the waters of the Ohio and Mississippi, by extending the same up-th three distributions of the manufacture of the Committee of the Monongaletta free to such point as they may deem practicable and expedient.

Mr. Sevier laid the following resolution on the table for consideration to-morrow:

for consideration to morrow: Ressleed, That the president of the United States he requested to communicate to this house, (if it be not incomputible with the communicate to this house, (if it be not incomputible with the certain and establish, permanently, the boundary fine between the territory of Arkanusa and the Mexican government, Ou motion of Mr. Hogan, a was

On motion of the Tanglan, a sommerce be intructed to Resolvent the expediency of providing for the facilitation of in-tercourse between the United States and the neighboring pro-vinces of Great Britain. by land and inland navigation, and low pretenting violations of the revenue law on the Inland frontier. Mr. Boutding moved the following preamble and re-

Whereas, by the laws of the United States, ad valorem duties are laid on various articles of import, but the per centum duty required is not laid on the cut or value at the place of production, but on that cost with all charges, (except insurance), added; and with 10 or 10 per cent. added to that aggregate:

with 10 or 30 per cent. added to that aggregate:
And wherean, also, various minimum values or prices are affixed
by law; (by which to ascertain the amount of dutiee chargeable
on the same good), differing widely from the cost thereof; so that
from the law itself the rate of duty to be paid on the importation
of any given article, subject to ad valorem duries, cannot be as-

certained:—
Resolved, therefore, that the committee of commerce be instructed to inquire into the practical effect of these laws, and report to the bouse the actual per centum on the prime cost, which is imposed by them. That they also inquire how far these duties are, net doubt he actual per centum on the prime cost, which is imposed by them. That they also inquire how far there duties are, posed by them. That they also inquire how far there duties are various descriptions of import that are thus interdicted out thurry, and, so far as may be practicable, to make the costs and charges, at which such interdicted goods might be imported.

The presemble and revolution were laid on the table.

Cumbreleng laid the following resolution on the

table for consideration to-morrow:

table for consideration to-morrow:

Residend, That the secretary of the treasury be directed to furnish this house with an annual statement of the act revenue collected on woollens and cottons; on each description of iron paying a specific duty; on all manufactures of iron paying and valorem duily; on brown, white and refined sugar, discriminating between each kind; and on hemp and cordage, from 30th Expetiment, 793, to 30th September, 1931, together with a statement of the sert revenue annually collected for the last ten years, and the best of the series Adjourned.

Anjourned, Medneaday, Dec. 28. Mr. Wicklife reported a bill be give actual actilers upon the public lands, the right of pre-emption on the purchase of quarter sections, at one dollar and twenty-five cents per aere—twice read and

committed.

Mr. Hubbard, from the committee on revolutionary pensions, reported a bill to smend the act entitled "an act for the relief of certain surviving officers and soldiers of the army of the revolution;" which was twice read and committed.

Mr. Hubbard, from the same committee, reported a bill in addition to an act entitled "an act to provide for certain persons engaged in the land and naval service of the United States in the revolutionary war," approved March 18, 1818; which was twice read and committed.

Mr. Vinton, from the committee on internal improvements, reported a bill to authorise the surveying and laying out of a road from Detroit, westwardly, by way Sciawassee, to the mouth of Grand river of lake Michigan, in the Michigan territory; which was twice read and committed.

Mr. Branch, from the committee on naval affairs, reported a bill to provide for the allowance of the travelling expenses of naval officers, in certain cases; which

was twice read and committed.

Various bills for the adjustment of private claims were

reported, read and referred.

Mr. Bell, from the committee on Indian affairs, reported a hill authorising the sceretary of war to pay to the Seneea tribe of Indians the balance of an annuity of six thousand dollars usually paid to said Indians, and re-maining unpaid for the year 1829; which was twice read and committed.

Mr. Bell, from the same committee, reported the hill from the senate "to enable the president of the United States to extinguish the Indian title within the states of

Indiana and Illinois, and territory of Michigan," without smeudinent, and it was committed.

Mr. McDuffe, from the committee of ways and means, reported a bill making appropriations for the aupport of the army for the year 1832; which was twice

read and committed.

Mr. Letcher, from the committee on internal improvement, reported a bill to authorise the surveying and making a road from La Plaisance bay, in the territory of Michigan, to intersect the Chicago road; which was twice read and committed.

The house then resumed the consideration of the resolution moved by Mr. Blair, of Tenn. on Thursday last, as modified yesterday, at the suggestion of Mr. Vinton, the question being on the amendment submitted by Mr. Duncan.

A dehate ensued thereon in which Messrs. Duncan,

such discussions having now clapsed, an unsuccessful attempt was made to suspend the rules so the debute was here arrested.

The bill making an appropriation for the purpose of satisfying the claims of the state of South Carolina, for monies advanced by that state during the late war, in the purchase of military stores, and the payment of the militia called on for the defence of the state, came up as the special order of the day for this day; and the house went into a committee of the whole, Mr. Davis, of Mass. in the chair, on that bill.

The bill having been read,

Mr. Drayton, who had reported it from the committee on military affairs, called for the reading of the report of that committee, accompanying the bill; and it was read accordingly.

He then moved that the committee rise and report the hill to the house-

Whereupon.

Mr. Mc Coy called for the reading of a report made last session, by the committee of claims, (of which he was then chairman), in opposition to the claim; and it was read.

The committee then rose and reported the bill, which was amended by the insertion of the following item:

The sum of 7,500 for blankets purchased by Fifth. the state for the use of a portion of her militis, whilst in the service of the United States.

Messrs. Williams, of N. C. Drayton, Ward and McCoy made some remarks, and before Mr. McCoy Microy made some remarks, and octore air. Microy had concluded, he made a motion for alljournment—which motion succeeding, the house adjourned.

Thursday, Dec. 29. Mr. William H. Ashley, of Mo.

appeared to-day, was qualified, and took his seat.

A message from the president, concerning the boundary line between Georgia and Florida, was received, read, and ordered to be printed.

Many reports on private claims were made by different committees.

The debate on the resolution offered by Mr. Hunt, with the proposed amendments thereto, concerning the receipts from the public lands, was further considered, and Mr. Root delivered his opinions, at length, on the subject-but the hour expired before the debate was concluded.

The speaker laid before the house certain depositions in relation to the election of William Fitzgerald, returned to serve as a member of the house of representatives. from the district in the state of Tennessee lately represented by David Crockett; who contests the sent of the sitting member; which were referred to the committee of elections.

The remainder of the day was occupied with discussing the hill relative to the claims of South Carolina for military services and supplies, as noticed above, debate was not finished when the house adjourned.

MASONIC.

From the Franklin, (Pa.) Telegraph.
At a special meeting of the members of Geo. Washington lodge and George Washington royal arch chapter, ton tongs and George wannington royal area enapter, at their hall, in Chambersburg, Pennrylvania, on the 30th of November, 1831, the following resolution and declarations were adopted, ordered to be entered on

their minutes, and published,
"Resolved, That the charters of George Washington folge No. 143, and of George Washington chapter No. 133, be returned to their parent institutions on the 27th of December next, and that the said lodge and chapter

theneeforth be discontinued.

The members of George Washington ludge and Geo. Washington chapter, in dissolving their associations, have been actuated by a proper regard for the opinions of a portion of their fellow citizens. That there are many of a portion of their teriow entirems. I have there are many who believe that the institution is dangerous to society, and who apprehend the most serious consequences if it is continued, is undeniable—while there are some who avail themselves of this honest opinion to advance their private views. We do not complain of this, for so it always has been and ever will be; but we do desire, as A demic ensure intereon in south deserts. Oncour, par as we can, by removing the easie, to remove with a McDuffe and Root took part. The hour allowed to the injurious opinion that prevails against the masonia fraternity. In thus yielding deference to the community | ly in any station where Providence may place you. 1 around us, we ask leave to say, that freemasoury, as we have known it, and seen it practised, contains no obligation or injunction inconsistent with the most full discharge of our social, political, civil and religious duties-and of our social pointest, the and religious outlets that we have never known it perverted or prostituted for electioneering purposes, or the political advancement of a member of the order. Conformity with its precepts, will, as we think, promote and aid the cause of charity, morals and religion; but at the same time we do not wish to conceal the fact, that unworthy men have become members of it, and probably abused it—to say so is only to assert that which is true of every association under the

If the greatest crime has been committed in a neighboring state under the name, and by the prostitution of normal state under the name, and by the production or masonry to the most fell purposes, (and perhaps it has), no member of the community in which we live, condemns with more just indignation and severity than does each of us, and every mason we have ever heard mention it, the guilty men who perpetrated it-nor would the hand of punishment be more heavily laid upon them by any of our lellow entirens than by ourselves. We ask that we may not be contaminated by guilt, of which it is impossible we could have been personally partakers, and which we solemnly aver has not, and could not reach us by any masonic duty, obligation, injunction or connexion, with which we are acquisited. It masonry then is what it is charged to be by those opposed to it, we can only repeat, it is not the masonry we have been taught, nor that which we have communicated to others. We know no duty which requires of us to continue an association, when such continuance may distract society--- and separate those who ought to be friends; nor are we aware of any beneficial results likely to flow from an adherence to the order, that will not be more than counterbalanced by the excitement which such an adherence may perpetuate.

In this spirit we have come to the determination expressed in the forgoing resolution."

### IMPORTANT CORRESPONDENCE!

Mr. Samuel Gwin, being transferred from a clerkship in the general post office to the place of register of the fand office in Mississippi, caused the following publica-

tion in many newspapers.

Hon. Wm. T. Burry—Sir, you will please to receive this as my resignation of the appointment as clerk in the

post office department.

In thus separating myself from your employment, I hope I may be permitted to return you my most heartfelt acknowledgments for the many acts of kindness that I have received at your hands. Of the flourishing condition of the department under your guidence, though it is known and fell in every part of our happy country, it does not become me to speak, except to express my regret on leaving a department whose affairs are prosperous beyond precedent. That the same prosperity may continue, and that the meed of praise so justly due may be awarded you by your country, through a long life of happiness, is the prayer of one who will be happy to eall you friend as he shall ever be yours.

SAMUEL GWIN.

Post office department,

Washington city, Oct. 26th 1831r.
With mean aim:—My absence from this city has prevented my acknowledging sooner the receipt of your letter of resignation. I separate from you with regret. The personal regard you have shown me, and above all the personal regard you have shown me, and above all the persons are some control of the persons are some co Auc personni regard you have shown me, and above all, your faithful discharge of duty, and a havorion to the regardary, has awakened in my boson feelings of respect and friendship that will long be cherished. The manner in which you speak of the "flourishing condition of the department" is gravitying. It is the result of the joint labors of the talented and faithful agents who have co-operated with me-of whom you are one. such men I feel confident I can act safely, and I hope auecessfully. I am pleased to know that whilst the publie lose your services in the general post office, they will have the benefit of them in another department. wish you success in the new employment that you are about to enter upon, and happiness to yourself and fami- | year.

reciprocate cordially the sentiments of friendship contuined in your letter, and am happy that you call me trined in your letter, and and trappy, friend, for I am, yours, most ameerely, W. T. BARRY.

Samuel Gwin, esq.

It seems, however, that the senate refused to ratify the appointment of Mr. Gwin, as register of the land office. ]

#### NEW YORK CANALS.

From the Albany Daily Advertiser of Friday, we copy the following interesting statements—showing an in-erease of the canal tolls for the last ten years, as well as a general account of the funds. Namely for tolls

	Taningth tol. fo
In 1821	\$2,220
1822	44.486
1823	89.988
1824	319,320
1825	521,343
1826	750,759
1827	847,759
1828	897,203
1829	771,685
1830	1.056,922

The account between the state of New York and the eanals, as a matter of finance, stands thus:

\$1,05**6,923** \$379 695 Tolls for 1830 Deduct-Interest on debt

Repairs 211,044 Sundries 29,210

619,949

180 513

Surplus of tolls towards sinking fund \$436,973 The surplus of the tolls, after paying for collection, interest and repairs, is actually above 7 per cent. on the present debt!

To that are to be added the duties and other items that accrued last year, appropriated to the liquidation of the debt. Surplus of tolls 1830, brought forward \$436,973

Salt duties, 1830 Other items, 1830	154,832 40,403
Total surplus for 1830.	\$812,221
Canal fund for 1830. Tolls as above stated Auction and salt duties, &c.	\$1,056,922 375,248

\$1,432,170 The following view of the Erie and Champlain fund.

rom 1817, till January 1st, 1830, is inte	resting:
Canal tolls	\$4,244,809
Auction duties	2,257,449
Salt duties	1,035,346
Steam boat passengers	73,509
Western lock navigation company	8,738
Rents of surplus waters	4,103
Canal fund lands	10,003

Exclusive of the expense of sollection, \$7,633,957 The debts on the New York canals, was, on the 1st of \$7.825.036 January, 1831

Stuking fund as follows:-

Balance in band	\$1,481,475
Delaware and Hudson canal stock	200,000
Bond of corporation of Albany	50,000
Never-Sink stock	10.000

Total sinking fund,

Auction duties, 1830

1,741,475

Nett debt \$6,083,560

We come to the following conclusions: 1. That the debt will or may be paid off in six or

seven years.

2. That the state of New York will have a surplus revenue of a million of dollars per annum.

We are informed,

3. That our revenue from the canal during the present year, will be about \$160,000 more than during the last 90 00

FINANCES OF PENNSYLVANIA. Extract from the report of the auditor general of the state of Pennsylvania to the legislature: Summary statement of the receipts at the state treasu-

ry, commencing on the first day of November, 1830, and ending the thirty-first day of October, 1831, and and land office lees \$103,329 13

Lands and land office lees 12,100 00 Auction commissions 126,504 85 Auction duties 106,498 50 Dividends on bank stock Dividends on bridge, canal, and turnpike 34.398 12 stuck 30,572 98 Tax on bank dividends 7,464 58 Tax on offices 18,979 89 Tax on writs, &c. 448 60 Fees, secretary of state's office 40,146 94 Tavern licences 51,445 38 Duties on dealers in foreign merchandise 446 26 tate maps 19,062 81 Cullateral inheritances 81 88 1,381 41 Pamphlet laws Militia and exempt fines
Tin and clock pedlars' heenses
Hawkers' and pedlars' heenses 0 000 33

1,593 60 Eschents 38 241 20 Canal tolls 2 199 948 54 Loans Premiums on loans 103,196 91 Commissioners of the internal improvement

125,000 60 Comit 11,087 66 Old debts and miscellaneous

\$3,033,978 57 Balance in the treasury on 1st Nov. 1830 149,450 79

\$3,183,409 36 Summary statement of the payments at the treasury, commencing on the first day of December, 1830, and

ending on the this ty-first day of October, 1831. \$2,335,373 62 Internal improvementa 195,306 91 Expenses of government 24,515 72 Mildia expenses Members of courts martial 2.343 48 99 996 84 Pensions and gratuities 11,185 13 Education Interest on loans 91,525 00 362,682 40 Internal improvement fund 329 75 State mans Penitentiary at Philofelphia 3.746 53 2,624 25 Pententiary at Patisburg 1,177 96 Conveying convicts Conveying Ingitives 596 06 56 55 Pennsylvania claimants 107 50 Delence of the state Miscellaticous 9.128 94

\$3,058,926 54 Balance in the treasury on 1st Nov. 1831 124,489 82

\$5,183,409 36

# RIGHTS OF THE INDIANS.

The New York Evening Journal publishes the following proclamation of president Washington. At that time, certainly, it was supposed that the Ladians had rights within the limits of their own territory, and were entitled to the protection of the United States. By the president of the United States of America. A PROCLAMATION.

WHEREAS, I have received authentic information, that certain lawless and wicked persons, of the western frontier, in the state of Georgia, ilid lately invade, burn and destroy, a fown belonging to the Chirekee nation, al-though in amity with the United States; and put to death several liminus of that nation, and whereas such outrageous conduct not only violates the rights of lormandy, but also curbagers the public peace; and it highly bepursue all legal means for the punishment of those atrocious offenders; I have therefore thought fit to issue this my proclamation, hereby exhoring all the citizens of according to their respective stations, to use their ut-

most endeavors to apprehend and bring those offenders to justice. And I do moreover offer a reward of five hundred dollars, for each and every of the above named persons, who shall be so apprehended and brought to justice, and shall be proved to have assumed or exercised any command or authorny among the perpetrators of the crimes aforesaid, at the time of committing the same.

In testimony whereof, I have eaused the seal of the United States to be affixed to these presents, and rigned the some with my hand. Done at the city of Philadelphia, the twelfih day of December, in the year of our Lord, one thousand seven hundred and ninety-two, and of the Independence of the United States, the seventeenth.

GEO. WASHINGTON.

Bu the president,

TH. JEFFERSON.

· SOUTH CAROLINA.

In senate-report of the committee on federal relations. The committee on tederal relations, to whom was reterred that port of the governor's message which relates to a letter bearing thate the 14th of June, 1831, which the president of the United States thought proper to address to a portion of the citizens of this state, beg leave to reports

That the letter adverted to seems to your committee a manifest and must manthorised interference of the excentive of the union with the domestic parties of a separate state; attempting to give the prepondering weight of governmental authority to one of two political disputants, who might have been permitted to settle their own disputes without this intermedding of the president in a case out of his constitutional cognizance, and not

connected with any of his delegated powers. His letter contains a plain and positive threat of mili-

tury coercion against South Carolina, because her citizens are seriously but peaceably contending against an unconstitutional impost fatal to their prosperity: not by breible resistance, but by quiet and orderly appeals to the laws of the land, the tribunals of justice, and, if necessury, to such further means of self-protection which other states have not only sauctioned in theory, but have repeatedly adopted in practice, and which a true construction of the charter of our liberties no where forbids, It is admitted that the federal executive is bound to execute the laws of the land, but in the exercise of that high preregative, military force can be used only when "the laws of the United States shall be opposed, or the execution thereof obstructed in any state, by combinations too powerful to be suppressed by the ordinary course of judicial proceedings." But even in such a contingency, "the president shall first by prorlamation enmound such insurgents to disperse and retire peaceably to their respective shoths within a limited time" before the military force can be called forth, Over the militia he has no control by the constitution, the command only of such part of that arm of the national defence as by legislative provision may be called into the actual service of the union, and even this call is atterly ineffectual until the permission of the gover-nors of the separate states shall have been obtained. As commender-m-chief of the army and navy of the United States, the constitutional power of the president of the United States is altogether nominal. "It amounts to nothing more than the supreme command and direction of the military and naval torces, as first general and admiral of the contederacy "

Even if a state concerving its sovereignty to be infringed, should find it experient to resort to actual posistance, congress itself less not the authority to interpose the force of the amon, and plunge the country into civil war. The powers of congress are confined to the express delegations of the constitution. In what part of that instrument is congress authorised to make war on a sovereign state, which refuses to obey a law passed on dubious and disput d authority? Not a convention of the states is the plan and constautional mathod of ileson every state must yield, or else it must determine on a secession from the muon. But in neither case is warlike hostility called for on either side.

The general government is the agent of the states. It is not a party to the lederal compact. - The idea of the agent coercing by physical power, the parties to the compact, involves a politifical anomaly, and is based on the dangerous and slarming assumption that congress is the irresponsible judge of its own acts—a doctrine at war with the origin, practice and principles of the fede-ral government.—But if the authority of congress be incompetent to the forcible coercion of any state belonging to the American confederacy, upon what reasonable grounds can the president of the United States, on his own assumed authority, make such a threat as his letter manifestly discloses? Even though the greater part of the civizens of South Carolina should be of opinion that the crizens of Journ Caronia should be of opinion that an act passed by congress beyond the limits of its dele-gated powers is null and void—and being so persuaded, are determined to use every constitutional means of protecting themselves from the destructive effects of gross usurpation, -will this justily the invasion of their country by an hostile force, because the president of the union disagrees with them in opinion? If any doubt, however, exists as to the true construction of the federal constitution on the subject of the powers of the president, or of congress, over the military to see of the United States, that doubt is removed by reference to the journals of the federal convention.

The following resolutions, the one introduced on the 29th of May, and the other on the 15th of June, were both rejected by decided majorities:

Resolved, That the national legislature ought to be empowered to call forth the force of the union against any member of the union failing to fulfit its duty under

the article thereof.

Resolved, That if any state, or any boily of men in any state, shall oppose or prevent the carrying into execution such acts or treaties (made and ratified under the authority of the United States), the federal executive shall be authorised to call forth the powers of the con-federated states, or so much thereof as may be necessary, to enforce and compel an obedience to such acts, or an observance of such treaties.

After this brief exposition of the powers of the general government and its chief executive officer, in relation to the military force of the country, your committee would remark that the pertinacity with which congress afheres to the enforcement of laws, unwarranted by the federal compact, and the recent avowal of the president, that high and sacred duties will compel him to sustain the usurpation by physical means, constitutes a case, on the decision of which the existence of the federative feature of the government is essentially involved. If the position thus assumed by the president te true, the consti-tution of the United States is a nullity, and the people of the union are practically controlled by a military des-

The committee, in conclusion, would distinctly declare, that the threat contained in the presulent's letter is equally impotent and unwise; and that South Caroliua, regardless of menace from whatever quarter it may proceed, will persist in using such means of protecting her citizens against manifest appression, as the accessity of the case shall demand, and her constitutional rights

will justify."

Influenced by these considerations, your committee ask leave to submit the following resulutions, viz:

Resolved, That the letter of the president of the United States to a portion of the citizens of Charleston, bear ing date 14th of June, 1831, is at once at variance with his duties and the rights of the states.

Resolved, That whether the threat contained in that letter was aimed at the freedom of discussion, or at the sovereign authority of South Carolina. it is equally entitled to the decided reprehension of this legislature, and is incapable of exciting any other than an augmented resolution to maintain inviolate the federal principles of the compact. W. B. SEABROOK, chairman. the compact.

#### FRAUDS ON THE REVENUE.

UNITED STATES DISTRICT COURT, NEW YORK. Before his honor, judge Betts.

The United States vs. three bales of wooden cloths, marked S. Nos. 26, 27, and 28.—Claimant, George Adshead.

This was an action brought to establish the forfeiture of the cloths for a violation of the revenue laws, incurred by their having been invoiced below their real value, with a view of defrauding the revenue of the United States.

number of the control of the control

The claimant objected, at the time of the seizure, to the valua-The claimant objected, at the time of the seizure, to the valua-tion made by the appraiser, upon which two merchants were cho-sen to impect the goods. These gentlemen supported the opinion given by the custom house appraiser, and even set a higher value upon a portion of the goods than the officers had. The claimant gave a bond in the sum of 3.20 dollars—about 5 dollars and os cettle per yard—to the United States for the goods, in order to ob-tain possession of them.

gave a bond in the sum of 3.820 dollars—anout a unian sense occurs per yard-to the United States for the goods, in order to obtain possession of them.

3r. Danel' Jackson, who was chosen, on helialf of the chimpers of the state of the second valuation.

3r. Danel' Jackson, who was chosen, on helialf of the chimpers of the state of the state

tent micht.

The jury gave a verdiet for the United States.

David B. Ogden, esq. was associated with James A. Hamilton, esq. district attorney on behalf of the United States.

The United States vs. one truss of cloth marked X, No. 259,

eorge Shaw claimant. The ground; upon which this action was broughts, mean of the me character as those on which the preceding action was anne The difference between the pieces set down in the invoice, and

to the difference between the pieces set down in the invoice, and that fixed on the custom house appraisers, and the appraisers subsequently chosen, varied about six pence British p r yard. On both of the claims it witnesses were readment to the what appraisers will vary in the interest pence arounded to the what appraisers will vary in the interest pence arounded to the what appraisers will vary in the interest pence around the man at other The judge; in charging the jury, informed them that to justify the officers of the custom house in seizing imported goods, it was not jury as the property of the into the what they had reasonable cause of the proclass of the

believed that it was regulated at a sum to slight with a view of the more effectually carrying into slice a fauld on therevenue, they should give their verifiet in accordance. The jury gave a verifict in the case for the chainman. The jury gave a verifict in the case for the chainman control of the chainman of the establishment of the establishment of the chainman of the chainman

the invoice.

The counsel for the elaimant objected to the production of this testimony, on the ground that the amount of the turn for which he bond was given, was fact by the died that the cividence was admittable; and in his address to the jury, and that although the win fixed in the bond was not sufficient evidence of the waste, yet it might be supposed that no prodent man would give a bond or more than the value.

[Cour. & Eng.

## GEORGIA LEGISLATURE.

GEORGIA LEGISLATURE.

In senate, Friday December 9.

In senate, Friday December 9.

In senate, Friday December 9.

The committee to whom was referred the cummunication of bis excellency the portrons, tranmitting to the greenal sensibly, copies of a paper purporting to be signed by Herry Baldwin, esquit one of the justices of the superme court of the United States, to do to be a citation of the state of Georgia, to appear in the superme court on the second Monday in January Best, to show cause before that tribural, and however, the superme court on the superme of the state of the superme cut and the superme court of the second Monday in January Best, to show cause before that tribural, and however, the superme court of the superme cour

of the county of Gwinnett, against Samuel A. Worcester and Efisur Butler, for a violation of an existing law of the state, com-mitted within its jurisdictional limits, also a paper purporting to be a notice, signed by Wm. Wirt and John Sergerast, as connied for Samuel A. Worcester and Elizur Rutler, informing his excli-iency the gwernor, of an intended application to the supreme count for a bearing on writt of error field by said Worcester and

Beg leave to recommend to the general assembly, the adoption

they leave to recommend to the general assembly, the adoption of the fullwarm recolutions, views of proprentatives of the state, of Georgia in general assembly met. That the art of the last legislature, making it penal, to reside within the limits of the lands belonging to the state, in the occupancy of the Cherokee Indians, without having taken a licence from the governor, and lands belonging to the state, in the occupancy of the Chrokee Indians, without having taken a licence from the governor, and without taking the oath to support the constitution and laws of Coresponding of the Chrokee Indians, and the last state of the tendence of the Chrokee Indians, and the last state of the tendence of the Chrokee Indians, and the last state of the tendence of the federal particular of the tendence of the federal constitution.

That the state has a night of civil and criminal jurisdiction over the whole of the land within her chartered limits, and that her jurisdiction does of right, extend to the persons and things. That "the powers not delegated by the constitution to the U. States, nor prohibited by it to the states, are reserved to the states respectively." And that a cight to interfere with and control the criminal similarity of the states, has not been disgarded the constitution to the states.

That 'the constitution to the state of Georgia, final and conclusions of the serveral countrie of this state; are reserved to the serveral countrie of this state; and the presence of the serveral countrie of this state; and the presence of the serveral countrie of this state; or the serveral countrie of this tate; or the serveral countrie of this state; and the serveral countrie of the law, no court has the right to rehear, ovecrule and reverse their decisions; or in any way impede the execution of their decees.

rehear, overrule and reverse their decisions; or in any way impede

the execution of their dreeces.

That any attempt to reverse the decision of the superior court of Gwinnett county, in the case of Samuel A. Worrester and Elizar Butter, by the supreme court of the United States, will be held by this taste, as an unconstitutional and arbitrary interference in the administration of her criminal laws, and will be treated to the country of the coun

treated as such.

That the state of Georgia will not compromit her dignity, as a That the state of Georgia will not compromit her dignity, as a sovereign state, or so far yield her rights as a member of the conflectracy, as to appear in, answer tu, or in any way become a party, tu any proceedings before the supreme court, having for their object a reversal or interference with, the decisions of the

conlederacy, as to appear is, answer us, or is any way occume a party, us any proceedings before the supreme courts, larsing for their object a reversal or interference with, the decisions of the state courts in endimal matter than the state courts in endimal matter courts and the state court of the state, in hereby authorised and requested to disregard officer of this state, in hereby authorised and requested to disregard any and every madetar, order, process, or decreect, that has been on a state to the state, in hereby authorised and requested to disregard the chief joint court in the chief joint can be supported from the chief joint care and the chief joint care and any officers of the supreme court the chief joint care and the state of the state courts, in criminal care.

Cases. That his excellency the governor he, and he is herrhy authoris. That his excellency the governor he, and he is herrhy authorised and required, with all the power and means placed at his command by the constitution and laws of this state, to reject any sudvery invasion, from whatever direction it may come, upon the administration of the criminal laws of this state.

#### "THE WEST INDIA TRADE."

A"HE WEST INDIA TRADE."

The following brief skerches of the speeches of Mr. Smith, of Maryland, and Mr. Histore. of Maine, in the sonate of the United From a close interestingation of the Loudew star may be stylenged with Great Britain, concerning the colonial trade—
On motion of Mr. Smith, the synate proceeded to the consideration of the resolution of Mr. Histore, calling on the president of the resolution of the resolution on the subject of the West India colonial trade.

tion of the resistion of Mr. Holmer, railing on the president of the United States for information on the subject of the West India colonial trade.

Mr. Smith said, that he had booked over the subject, and had come to the concinion not to object to the final passage of the control of the co

The gentleman from Maine might be correct in his views on this subject, but he considered that the arrangement had not been

persisted in sufficiently long to give a decisive result. He was disposed to allow it Further time to operate, before he condemned it in stor-say till the first of March naxt, or even until next usersion of congress. Mr. S. objected to the statement of the duties made by the gentleman from Maine yesterday; the sehedule from which the statement was made, differed from the persent rate.—He should have stated from the other dogudhent. The merchants of Baltimore had not at first entered into the trade, but they were now doing so; their trade with the colonial ports was resulted to the state of the st persisted in sufficiently long to give a decisive result. He w or otherwise, and there would be more facts then than now on which to ground a report from a committee. Mr. S. animadvertwhich to ground a report from a committee. Mr. S. animadverted on the custom of prefacing resolutions with explanatory remarks, and said be could not at once recall his recollection to things which had been frogsteetic was unprepared to enter into a military of the most of the contract He said that American produce was barried to Canada and Nora-Scotia in our vestels, and from there exported in the British ves-wh without charge of duty. The British vessels gad an advantage of ours, arting form the circumstance of atoutions, they were of ours, arting form the circumstance of atoutions, they were passing it seek, that our vessels are, in a manner, excluded from passing it seek, that our vessels are, in a manner, excluded from the commerce of New York, Ohio, Michigan, See-night fine the commerce of New York, Ohio, Michigan, See-night fine and the seek of the seek as if no arrangement had been under-if there had been a loss as if no arrangement by the seek of the terests, and therefore he thought we should rest satisfied. They were not to legislate for a part of the union, but for the whole was benefited more than another, but this was benefited more than another, but this was traveled portion was benefited more than another, but this was traveled portion. S. apological for tenagers sing on the patience of the house, and resumed his result has the perfectly agreed with the gentleman. Mr. Meiner said that he perfectly agreed with the gentleman had, he was sure he would not have made the subject for if he had, he was sure he would not have made the subject for if he had, he was sure he would not have made the subject for if he had, he was sure he would not have made the subject for if he had, he was sure he would not have made the subject for if he had a sure he would not have made the subject for its had not had not have made the subject for its had not had not had not have made the subject for its had not have made the subject

arrangement, as maying occa evidently beneficial to our agricultural interest.

Interest interest in the property of the prope

they were erady and anxious to sacrifice any thing that England might demand or desire.

The gentleman from Maryland, ind objected to the document from which he had stated the duise imposed on our exports, but all the state of know what is going on, and why they have tost so much of their trade. Perhaps there may be some light thrown upon the subject, by the executive, the contons house officers or others, which will be useful, and for this reason he wished the resolution abould

The resolution was then agreed to.

# NILES' WEEKLY REGISTER.

Founta series.] No. 18-Vot. V.

BALTIMORE, JAN. 7, 1832,

[Vol. XLI. WHOLE No. 1,059

THE PAST-THE PRESENT-FOR THE PUTURE.

EDITED, PRINTER AND PUBLISHED BY H. NILES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN ADVANCE.

The editor gratefully presents the "compliments of the season" to his very numerous and respectable friends and supporters. If they have been as well pleased with him during the part year, as he has been with them-both parties may hope to jog on ideasantly together in the time to come: the editor contemplating no change in his course, desires that his friends may make none in their's. He renews his promises of fidelity and zeal-and they will do what is rightful that he may maintain them. In looking back, he sees not much to regret -- and so he looks forward with confidence, chastened, he hopes, by the fear of doing wrong, but reso-Inte in doing right.

By the free use of our small type, we have disposed of much matter for record—and, perhaps, made room for about one-half the articles that we had ready prepared for the present sheet-some of which cost us a good deal of labor, and may become useless from being deferred. Well-we "can't help it."

The report of the Battimore and Ohio rail road company to the governor of Maryland, is a triumphant exposition—and relates many facts of powerful interest exposition—and relates many lasts or powerful interest to all the people of the United States. It will be found in a subsequent page. It is thought that the travelling between this city and Frederick, will give employment to not less than twenty large stages, next spring-when steam power will be permanently introduced.

The train of wagons which leaves Frederick every day at 3 o'clock, now consists of lourteen, and will soon be further increased. It is stated that about 2500 barrels of floor, with many other heavy articles, left Frederick

for Baltimore during the present week.

The lines of rail roads, now made or making in the United States, are about eighteen humbred miles long. Those which are, with much seeming seriousness, contemplated, will extend a greater distance when located; and the joint capital of the whole will amount to a nighty sum. It is much to be regretted, that, from the want of some reasonable arrangement, a part of the surplus funds of the U. States may not be invested in such roads, or canals, if preferred. Five millions a year, abstracted from the public treasury, would probably save the people, in the cost of transportations and time, (which is "money"), at least so much every year, or yield an interest of 100 per cent. In a free government especially, the wealth of individuals may be said to pass directly into the national power—every citizen making an integral part of that power, each being expected, "at the call of the law, to rally round the standard of the law, and unite in common efforts for the common good," The plan which I had the honor to submit some time ago, that the national government should subscribe a third, or a fourth, or a fifth part of the stock in all such improvements, not to execute, however, a certain fixed amount in any one year, would greatly encourage the making of them; and be free from those objections that have been offered to the manner in which appropriations for public works have hitherto been made. There is, perhaps, no way in which the "general welfare" can be better promoted than in lessening cost and time ex-pended in transportations of persons and commod ties, and, by the plan proposed, all parts of the union, pos-sessed of a sufficient degree of public spirit, would be equally henefitted.

A rail road from take Eric, midway between Cleve-land and Eric, to strike a point on the Ohio river in the eastern part of the state, is projected, and will probably,

be commenced at an early day.

Hatti nore and Ohio rail road. On the 4th inst. the court of appeals, sitting at Annapolis, reversed the de-erce of the chancellor and dismissed the bill of the com-

Ohio canal company vs. the Baltimore and Ohio rall road company, Archer and Dorsey, judges dissenting. This decision against the rail road company was not expected. There were five judges on the bench, two of whom desented from it. It such is the fixed law of the land,-future legislatures will do well to use extreme caution in granting acts of incorporation! The power which is said to have been extended to the old Potomas company, merged in, or transferred to, the Chesapeake and Ohio canal company, remained dead for very many years—and yet it seems that such a power, once granted, may forbid improvement forever, so far as the "right of way" is concerned.

The consequences of this decision are looked to with great anxiety—for it seems that the rail road company have no appeal to the supreme court of the United States, and there are conditions in the charter of this company, by the state of Maryland, as to the line of the road, that will cause much perplexity, or involve a great expenditure of money. There would be some consolation, if that which so much injures us, benefitted others-but of this there is no present prospect.

board, however, is not discouraged.

Ruit roads in New York.—Applications will be presented to the next legislature of New York for acts of me or poration for twenty five different rail roads, with an aggregate capital of forty-one millions of dollars! Of these, however, three are for roads between lake Erie and the Hadson, with an aggregate capital of twenty-

seven mill ous.

Rail Road Journal .- The first number of a weekly publication, under the above title, has been issued at New York. It is published by D. K. Minor, esq. of that city, the publisher and part proprietor of the New York American. The Journal is ornamented with the appropriate engraving of a locomotive engine and passenger car. It is issued on a mammoth sheet in the octavo form, and contains a large mass of interesting matter on the subject of rail roads and other public improvements. We have no doubt this Journal will be ably conducted, and consequently prove a useful publication.

NEW YEAR'S DAY Imppening on Sunday, president Jackson, ex-president Adams, and Mr. Clay, received the visits of large number of persons at Washington, on Monday .

THE TABLES. It will be seen that on Mr. Benton's resolution about alum salt, a brief, but decided debate took place, and the reference of the resolution clearly shews the state of legling in the senate. Because of some things that have been stated, we quote the following from the National Gazette-

"Mr. Clay 'came out' decidedly and manfully respecting the American System. He eulogised it in warm terms, and stated, the time a suitable occasion, he would detail its advantages. His plan of action is one of compromise, as to particular points, but of unequivocal support of the principle of protection."

On the latter point, we well know that Mr. Clay will yield nothing-except to the will of the majority. He has no desire to "nullify" that-if argument and the rightfulness of the cause, shall had to support it.

5 PThe direction given by the senate to Mr. Benton's blanket-bill, leaves not the shadow of a doubt sa to the course which that body will pursue; shewing a settled determination not to sacrifice the principle protection to manufactures, and in that view is highly mteresting.

"HEP HURRAH!" The "Boston Patriot" says-Capplainants with costs on No. 274, the Chesspeake and of the U.S. sloop of war Peacock, which, with the new Yor. XLI. -No. 2. sehr. Boxer, are now fitting out at the Charlestown navy yard for the Falkland Islands and East Indics.

"PROTECTION" - or the "American Sustem." It was stated in our last, that the president, in compliance with an application addressed to him by the ladies of New bern, had given directions for a company of U. S. troops to be statumed in this place. The answer of the president to the petition of the ladies, and a letter from the secretary of war on the same subject, are as follows.

Washington, Dec. 5, 1831.

Ladies,-On the receipt of the memorial of the ladies of Newbern, North Carolina, I lost to time in referring the same to the sceretary of war, with directions, it captain Whiting's company had been removed from thence, to order another company to Newbern for their protec-tion and safety. Therewith enclose the right of the se-eretary of war. That will show with what promptness I have met the prayer and wishes of the fair permoners. Be pleased to communicate this to the memorialists, and believe me, with great respect, your most obedient ser-ANDREW JACKSON.

War departm. at, Dec. 5. 1831

The secretary of war has the honor in return to the president the letter of the ladies of Newbern, enclosing their memorial, and to inform the president, that captain Whiting's company was sometime since withdrawn, but that another has this day been ordered from Old Point Comfort to supply its place.

Newbern Sentinel.

COTTON MANUFACTURES. A South Carolina paper states that the Waltham company averages 8½ per cent. on its capital, the Merrimae 7 1-8, the Hamilton 10½ the Lowell 6. Surely, these dividends cannot be thought extravagant. For the two last years, the cotton manuhas been regarded a good husiness—three years ago it was a bad one; and now, because of over-production or the pressure for money, the profits are much less than they were. The capital vested in such factories should yield at least 10 per cent, to meet casu dies, encourage enterprise, and reward industry and talent.

COFFEE. An idea prevails that the production of colfee is not equal to the present demand, and large quanti-ties of it have been stored in Europe and the United ties of it have been stored in Europe and the United States, for higher prices. The stock in England is very large—but that at Antwerp is said to be 25,000,000 pounds less than at the same date last year? It is lively in the Wist Indies—and, at liavana, was in request at 9½ to 12 cents—equal to the price in the United States when the duty was five cents, which is now only one cent per ib. There is a great deposit of coffice at Salon, 1800to, New York, Philadelphia, and other ports, and large quantities have lately arrived from the East Indies, we were an large was fifth long in one shim, Indiest. or are on their way -600 tons in one ship. Indeed, some say that our merchants have the present command of the soffee market; and there are persons who seem to be-lieve that it will go up to 20 ceuts per 1b. We shall

How dull must be those who cannot see in such of rations the effect of scarcity and supply, on price? Had the duty on coffee been advanced to 10 cents a pound, matead of reduced to one cent, -what "free trade" muni is there who would not have asserted that the "tax" was the sause of it-and yet it might as well be said that the moon is a green cheese.

SPECIE. The Journal of Commerce says-the ailrance of about one per cent, in the price of spreie in the London market, we hear strubuted to the considerable London market, we near surmoned to the considerance purchases made by persons starmed by political coents. The advances will probably cause some singuients to be made early in January. In the meantime, the arrivale carly in January. made early is January. In the meantime, the arri-vals are more than equal to the probable shipments.— Two vessels from Vera Cruz, have brought nearly Two vessels from \$100,000.

Gozn. The business of gathering gold is greatly extending in the south, and appears to yield a fair profit on labor and capital. We have no correct idea of the aggregate value praduced, but suppose that it must be two or three millions a year. Some of the mines are said to be the richest that are known m any part of the world. The chief quantity is obtained by mining, proper; much gold, however, seems to have been deposted while in a state of fusion, and the washings of the beds of rivulets afford a considerable amount.

MR. E. EVERETT, has been presented, by the American Institute at New York, through the hands of gra. rean institute at New 101K, through the hands of gra-Tallmadge, its president, with a splendid gold mesh, in testimony of respect for his patriotic address deliver-ed 14th Oct, 1531.

REPORT OF THE SECRETARY OF WAR. We see that the ground taken by Mr. Cass, concerning the Indian tribes, is warmly contested in some of the papers. But the fate of this people is "sealed"-all on the eastern side of the Mississippi are to be hurried from the tombs of their ancestors, unless suffering themselves to be incorporated in the states; and the best efforts that can be made in their behalf, we are forced to believe, are such as shall most lessen the amount of privation and auffering to which they are exposed. It is clearly decided that they have no rights-because they have not power to defend them! They are rapidly declining in population, and will soon pass away—but history will tell the story of their wrongs, and say, that not a remnist was saved to shee the sincerity of our professions that the benefits of exsilization might be extended to them; that our system was only a system of force.

BANK OF THE UNITED STATES. From the United States Telegraph, of December 31.

"Nothing but the sign manual of Andrew Jackson himself to such a bill, can overcome the strongest conviction we entertain he will sign no such bill."

So asys the Richmod Enquirer.

Now mark what says the New York Enquirer, the spread organ of the "heir apparent?" The oracle of the dely whom Mr. R. worshops.

The New York Enquirer says:

"In the foregoing extracts we have the material parts of the several messages of general Jackson, relating to the bank of the United States. The very favorable view of the subject taken in his last message, and his wise determination to leave the subject to 'an enlightened people and their representatives', has been in a mersure rendered augutory, by an editorial article in the Washington Globe; which, by the enemies of the presdent, and those professing to be his fit ads who are interested in arraying him against the bank, has been represent il to convey the numious and views of the executive, It has always been the aim of our political opponents to hold the president responsible for the sayingt of the Globe; but that paper and all who are sinceren their attachment to the venerable chief, have taken especial pants to avert from him any such responsibility. What shall we think then of those who, from oppose tion to the bank, are industrious in pruducing the inpresson that the remarks referred to were intended to be considered expressive of the feelings and views of the The use which has been made of the artexceptive? cle in spection, and the total want of principle by those who could be induced thus in pervert its obvious meaning, compel us to say, that we know from the most in-questionable multority, the article referred to was not published with the knowledge of the president—express ed merely the private opinions of Mr. Blair-and was personal by him without knowing at the time BRAT THE REPORT OF THE SECRETARY OF THE TREASURY HAD BUT SUBMMITTED TO THE PRESIDENT PREVIOUS TO IT TRANSMISSION TO CONGRESS. Mr. Blair had an unque timbed right to say all that he did, and we doubt not be he has witnessed with regret the evident perversion his intentions, by attributing his remarks in the execution tive of the United States, or inducing the belief the they were westen at his request. Having, as we true shown that the language of the president in his last nor sage-language used after reading Mr. McLane's m

I be letter is addressed to the three first signers of the pettuon.

port-is the latest expression of his views on the subject of re-chartering the United States' bank, we will now proceed to review that language and its meaning, as compared with the opinions previously expressed by the same high innetworky."

We have waited to see what notice Mr. Ritchic would take of this official annunciation of a last which Mr. Ritwhy it is that Mr. R. ilenounces us as unworthy of all eredit, for saying that which the New York Courier as-

serts without being censured?

Is this the way to preserve the liberty and indepen-dence of the press? Does Mr. R. believe what the Gourier and Enquirer says to be true? If an, why does he denotine the Telegraph? Does he believe the state-ment in the Courier to be laise? If so, why is he sign!? Is this vigilant sentinel on the watchtner? Fir, Mr. Ritchie, hel! Is this the way that you would win a ro-BEIGN MISSION!

"THE CABINET." The "National Intelligencer" of Saturday last says-It is understood, that of the higher appointments made by the president of the United States appointments make by the president of the United States during the recess of engress, those of Mr. Secretary Woodburg, and Mr. Attorney general Taney, have been confirmed by the senate; and that the resulue have not yet been acted upon. There is much speculation as to the result on the nominations of Messrs. Living-ston and McLane; especially the latter, whose late seems linked with that of Mr. Van Buren, because of the instructions, and acts under them, concerning the British West Iulia trade. The nomination of James Buchanan, of Pennsylvania, as minister to Russia, has inst been ratified.

Wook. The New York American Advocate mentions work. The New York American Autocate incidence and esting in the price of woul—and estimates that 17,000 bales, or 6,000,000 lbs. of foreign wood, were imported into the United States in the year just ended. Such was the consequence of the speculations that we have sewas the consequence of the spectations may be and several times a loken of; they very extensively injured those engaged in them, and the public—but wisdom, perhaps, may be gained from experience, though her achool is a "dear one."

The "Advocate" says-the quantity of wool in the enuntry is believed, by those most capable of judging, to be more than enough to supply the machinery of the country until shearing. In addition to the simple supply held by dealers, much is yet in the hands of growers, who were not willing, in May, to have taken 70 to 80 cents per pound, and some even refused 94 cents, hecause they had made up their minds to have a dollar per pound.

American Saxony, fleece,	60 a 65
Full blood merino	50 a 55
Half and quarter	45 a 50
Native and qr. blood merino fleece,	42 n 45
Pulled lambs, No. 1,	44 n 48
do. No. 2,	34 a 37 h
Foreign wools.	
Spanish hat wools.	50 a 90
Saxony.	50 a 75
South Down fleece,	40 a 43
Smyrna, Nu. 1,	35 n 36
do. No. 2.	31 n 33
Mexican,	20 a 23
Buenos Ayres,	12 a 13

BOSTON. The editors of the "Courier." warm friends of the successful candulate for the office of mayor, Charles Wells, esq. saya that city "will be obliged to 'endure the disgusce of having a mechanic for its mayor' for the next year, after all the labor of the Jackson party, the free trade party, the workingmen's party, the an-timasonic party, the independent party, and the lragments of all the parties."

Baltimore has been in the same state of "disgrace" for several years-the last and the present mayor being practical enchance, at the time of their elections, and since. We do not know, however, that the public service has suffered because of these things!

The vote at Boston was for Mr. Wells 3,316, gen.

Lyman 2,389-a very worthy gentleman. The "States-

man" says that he was not the "Jackson" candidate. being decidedly apposed to the administration; but that the "Jackson democrats" preferred and supported him. with a large portion of other persons.

MANUAND. On Thesday, the 26th ult. Richard Thomas was elected speaker of the house, he receiving 43 votes, L. D. Teackle 2 votes, and 15 of the ballots (the administration votes) being blank. George G. Brewer was appointed chief clerk of the same body.

In the senate, Benjamin S. Forrest was chosen presi-

NORTH CAROLINA. From a recapitulation of the treasurer's report, which has been sent to the assembly, we find the following balances of each to have been in his hands on the 1st of last month, viz:

Amount as public treasurer, \$35,022 99 As treasurer for internal improvement, 7,944 194 75,025 964 As treasurer for the literary land,

> 115,993 15 Aggregate,

TENNESSEE STATE BANK. If the Yankees know how to get clear of their wooden nutmegs, by deceiving the senses of the purchasers, they have their match in sun dry officers of the Tennessee state bank, or some other persons who have alistracted its funds, and left no trace of them behind. The Argus says:—The affairs of the institution are without a parallel. A large amount has been substracted: - and not only have all attempts to recover it been frustrated, but even the persons who ob-tained it, and who should be accountable for its return, are unknown to the public. It is known that the money has been illegally withdrawn; but what is much to be wondered at is, that, owing to the family influence of the offenders, public sentiment and even attempts at investigation by the legislature, are successfully put at defi-

CLIMATE OF FLORIDA. The following account of the temperature of the air in Florida, during part of the late severely cold weather here, is communicated to us, (says the National Intelligencer), by a gentleman resid-(says the National Interspenses, p. 1988) at Micauopy, in that territory:

State of the thermometer at Micauopy, E. F. Morn Noon Eve

Nov. 23. 50 66 61 26, 57 71 63 27, 48 52 28. 34 55 56 72 29, 48 69 58 30. 74 70 54 64 70 Dec. 1,

For Affica. The ship James Perkins has just sailed from Norfolk for Liberia, with emigrants—eighty of their manumitted slaves from Southampton. They were well provided, and reported as being valuable persons. Their accommodations for the voyage appear to have been excellent.

THE INTERESTA has coused the loss of many valuahis lives in our chief cities. It has passed through some entire families-uone escaping. Abstmence, and a closekeeping within a mild temperature, seem to be the best remedies for this disease. Irregularities and exposures make it fatal

ORDNANCE. According to the annual report from the orduance office, the work performed at the several arse-nals and armories, in the year unding 30th Sentember last, was as follows: -110 gan carriages and equipments, 997 holsters, shout 830 setts of accoutrements for small arms, have been made at the arsenals; and that 16,741 small arms have been cleaned and repaired, and 26,481 nuskets and their appendages, have been manufactured at the national armories. Of these, the army and ma-rines have obtained 54 field gun carriages, 33 field guns, 2,209 complete muskets, and about 700 sets of accoura-ments for small arms. The militia have procured, under the act of 1808, for arming and equipping the militia, 58

six pounder cannon, 103 field carriages with equipments complete, 150 sets of timber for gun rarriages, and 10,230 stands of muskets and rifts. The total number of the militis is given at 1,262,315 [1,756 being of the District of Columbia]: and the total or arms at levered to the militis during the year, is I brass mortar, 37 foorteen pounder cannon, 22,575 muskets, 6,465 r flex, 2,913 pistols, 921 artiflery and non-commissioned officers' awards, 1,461 cavalry subres, and the necessary accompanionents of caissons, barness, accountements, belts, hotsters, and cartridge boxes.

LEAD NINES. The amount of lead made at the United States lead mines, at Fever river and Missouri, thring the year, in 6,449,080 pounds. In 1829, the amount was 14,541,310 pounds. The rents of these mines are paid in lead; and in January, 1830, they were reduced from 10 to 5 per cent. in the amount of lead made. Yet there was, last year, less made by 8,091,230 pounds, then there was m the year 1830. [Bid.]

ARMY DEATHS AND DESERTIONS. The number of deaths in the army idering last year, is 126; of which 32 were from intemperance, and 21 from consumption. The desertions during this year, amounted to 1,450.

The annual loss by each desertion, is estimated at \$81 60. It is suggested that an increase of pay to this amount might remedy this evil. [bid.]

FURTIVES. Our papers have teemed with accounts of the flight of robbers and thieves from England to the United States. These adventurers generally make a bail business of it—being caught and re-exported. We size that Mr. Bull will keep his thickets, as well as his paupers, and his furtiant and calicoes, at home. We like not "firee trade" in eather. Suppose, we send him a few cargoes of womenut negroes, in return for his many ship loads of pumpers? We don't bke to owe Mr. Bull any thing. Let there be a recurrency between Jonathan and John.

Washington. It has been observed that Washington seldom smiled and never laughed. Thus, however, is not correct. I was informed the other day, by a gentleman venerable for his sge and information, that he had seen Washington nearly consulted with laughter. One instance he mentioned with a great degree of saving four At the time that our troops were encamped at Cambridge, information was received at head quarters had been dead to be a superior of the saving for the land of the saving for the land of the saving for the land of the saving for the saving for

Washington, in a fit of laughter, throwed himself on the floor, and the whole group presented rather a ludierous spectacle. However grave the communder-inshief may have been in general, the reader will surely excuse the illustrious Washington in this deviation from his quale character. [Fermont Courter.

Mn. PLEASANTS. It will be recollected that this gentleman's ease made a large figure in the famous book on "retreuchment," concected at a late session of congress. He thus goods his accusers—and may add another like ease, if he pleases:

"We may perhaps, be anspected, and we confess and without some reason, of delending Mr. Randolp through intersted motives, accing the close affinity becomes a respective trips to St. Petersburg and Bueno Ayres! A fellow leeling makes us wondrous kind, and nobody ought to wonder, that, p. lited as we have by Jacksonians for an years, on account of that famous expedition to the Le Plats, we should wish. Teucer likes to take shelter behind the seven-fold shield of Mr. Randolph."

"CAUE OF THE GREEKS." Much is said in the piers about gathering money in the United States, to roise up a college in Greece! There are thousands of persons in Maryland, Vergina, and other states, who need education as much as the Greeks. Charity is not contrinsed—but the that provided not for his own bouched in worse than an infield. The motive, perhaps, is good, but the direction as had one.

FREE NEOROES. The somemplated arrangements in several of the slave-holding states, (without the shadow of right, or resson, on the subject, to far as we are informed), to east out the ricce persons of color reagues of the source of the states of the source of the sour

turbed parts of our country.

We relet to this matter just now because of the following proceeding in the legislature of Pennsylvania-and that, in legislating free people of color out of any of the states, some may be induced to ask, where shall they find a place of retuge? Shall they be hanted from state into state like with teasts, merely because of the unfortunate color of their skins?

In the house of representatives of Pennsylvania, on the 17th olt, Mr. Vansant offered the following resolution, which was laid on the table:

Il hereus, The states of Virginia and Maryland are about to pass some point enoughness for the purpose of expelling their tree black population from their respective states, amounting to the number of about 123,000, whereby the adjoining states, without some countervaling provision by law, mixt be over-run, by an influx of ignormat, indoicint and deprayed population, most dangerous in the peace, rights and districts of our extrangand tending to indermine the fundamental principles of the republic.—Therefore,

"Resolved, That the conmittee on the judiciary system, be instructed to inquire into the expediency of passing a law to protect the good evizons of this commonwealth against the evils arising from the emgration of free hlacks, from other states, into Pennylvana."

THE COLORED POPULATION. The best judgment of the prople of Virginia and some of the other southern states, is carnestly excited to discover what may be slone with the colored population. It is a subject that must be graphed—a refusal to consider it will not prevent its accumulating force to do evil—it "let alone." But the public attention, we think, is unfortunately shiefly called to the irred blacks. The elements of meshed, we suprement, are not so much in them as in the slaves. The first have some and powerful motives to behave well, which cannot have influence over the second, when tempted to commit outrage on white persons.

Large manters of liberated negroes have lately been sent from Virginia to Libera. The colony is not prepared to receive one half that would be sent out in the present state of the public feeling—nor can it be, wishout much increased meens.

ANOTHER INSURRECTION. The Western Freeman [published at Shelby vile, Tenn.] of the 6th ult. has the tollowing:-

"We have been credibly informed, that there has been a considerable excitement among the citizens of Fayette-ville, T. inn. within a lew days past, in consequence of the thicevery of a plot, among the negroes of that place and its vicinity, for an insurection, all the particulars of which we have not yet learned. The plot was discovered by a female slave, who, it appears, had honesty enough to communicate the in link designs of the blacks onome white person, perhaps her master. Their object was to set fire to some building, and amidst, the consistent of the citizens, to seize as morn guns and implements of destruction as they could procure, and consistent of the citizens, to seize as morn guns and implements of destruction as they could procure, and consistent of the citizens, to force the citizens of the other citizens of t

engaged in this infernal conspiracy, have been stashed with all the severity, which the iniquity of their diabolical schemes, so justly deserved."

"BLACK LIST." The New York Courier and Enquirer have a placard or broad-sheet just imported from England, which presents at one view the names of the peers who voted against "the bill," and the "samual peers who voted against "the bill," and the "annual amount of pickings," which they and their families receive. The total is £2,161,867. "We will leave the world to judge," says the handbill, "whether this way of distributing the labor of the people, is the best calculated to do good or end to the country. No doubt they dreaded the result of a reformed parliament; therefore joined heart and hand to destroy the people's rights by opposing the reform bill."

EMIGRATION TO CANADA. The following is a schedule of the arrival of vessels and passengers, from Great Britain, at Quebec, for the last 5 years:

in, or equebec,	Vessels.	Passengers
1827	602	16,862
1828	701	12 697
1829	863	13,357
1830	857	24,391
1831	962	49,062
The last year	is only brought to Oct	ober 25th.

Law case—interesting. We are indebted to a friend for the following report of a case lately decided in the supreme court of this county, which is of some import-

ance to the mercantile community. Boston Cour.
Hastings et. al. vs., Pepper. This was an action upon a bill of lading signed by the defendant, master of the brig Mexican, by which he acknowledged to have received at Philadelphia, for account and risk of the plaintiffs, a box containing a quantity of the oil of cloves, out up in a glass bottle and packed with straw into said box, and the box was marked, in addition to the initials to the plaintiff, firm, glass with cure, this side up " Said box was proved to have been delivered to the defendant at the whart in Philadelphia in good order. On the arrival of said vessel at Boston, the bottle was found to be broken and its contents had run out upon the tens whereon it was stowed in the hold of said ses-sel, and the marked side of said box was not upwards, set, and the marked side of said tox was not ujuwarits, but upon the side, so that the bottle insteal of standing upon its bottom lay upon its aide. The court deceded that as the carriage is a matter of contract, and as the owner has a right to judge for himself what position is best adapted to carrying goods of this description with safety, and to direct how they shall be carried, and the carrier has a right to fix his own rate for the carriage, or refuse altogether to take the goods with such threetion, if the carrier accepts the goods for carriage thus marked, he is bound to carry the goods in the manner and position required by the no ice mon the hox; the storage of the box, contrary to directions, is such negli-gence in the estrict that he is bound to pay the loss, unless he can prove clearly that the loss was not occadirections.

"CANTON." This is the name of a tract of lund adjacent to and S. E. of the city of Baltimore, bounding on the Patapseo river. A company, with a large capital, was sometime since formed to improve the ground, erect bushings and wharves, and sell out lots, &c. A great deal of work has been done in the way of levelling hills and filling up, or draining, swamps-and, at present, we are receiving a large supply of wood from Canton, the cutting and hauling of which employs many hundred persons.

APPOINTMENTS BY THE PRESIDENT. By and with the advice and consent of the senate.

Mosjsh T. Williams, of Cincinnati, to be surveyor general of public lands, in the states of Ohio, Indana and Michigan territory, vice William Latte, deceased. Hore Browse Trist, o! Louisians, to be surveyor general of public lands, in the state of Louisiana, vice Joshua Baker, resigned.

Edmund Christian, of Virginia, to be marshal of the United States, for the eastern district of Virginia, vice John Pegram, deceased.

Abido Sharpe, of Pennsylvania, to be marshal of the United States, for the castern district of Ponnsylvania, vice George B. Porter, appointed governor of Michigan

territory. John's Points, of Virginia, to be marshal of the United States for the western district of Virginia, vice Benisma Reeder.

Henry D. Gdpin, of Pennsylvania, to be attorney o the United States for the eastern district of Pennsylvania vice George M. Dall is, resigned.

vice George M. Dall's, resigned.
Nichidas Bidille, Joshus Eppineott, John T. Sullivan, of Pennsylvana, J. Campbell, of New York, and Hugh McElderry, of Maryland, to be directors of the bank of the United States.

John Spencer, to be receiver of public moneys for the John Spencer, to be receiver of public limited in the state of linitians, vice Jonathan McCarty, resigned.

Francis Baylies, of Massachusetts, to be charge des

affaires to Buenos Ayres, vice Mr. Forbes, deceased.

John Nelson, of Maryland, to be charge des affaires to Nantes. Davezae, of Louisians, to be charge des affaires

to the Natherlands.

COLD CHMFORT. We have heard it remarked that no winter has commenced with so much rigor as the present, since 1798. By reference to the file of our paper of that year, we find that on the 18th Nov. a violent so that year, we must not the root root, a violent show storm commenced, which continued with little intermission for four days. "The quantity of show which fell seemed almost incredible, and the oldest persons assert that they never knew such a storm so early in the season.

The country posts inform that they were obliged to ride through fields for miles together-and in some places where paths had been shovelted the snow on both sides was as high as their heads when on horseback!' In some instances arches were made under the snow for entrances to bouses.

In the paper of April 6, 1799, we find the following extract from a Portland paper of March 26, 'Here in the Dutrict of Maine we have had above for-

ly heavy snow storms, since the 18th Nov. and we yet feel all the severity of winter. A great quantity of snow covers the earth, and from appearances we may he led to anticipate good sleighing until May or June; So severe a winter has not been experienced since 1784. [ Portsmouth Gaz.

# FOREIGN NEWS.

Arrivals at New York bring Liverpool advices to the 17th November, inclusive.

#### ENGLAND.

Rumors of an intended resignation of the ministers had prevailed for several days, though contradicted by the Courier. The indecision in the policy of the ministry had, it was thought, strengthened the opposition. The indecision in the policy of the minis-The hope of passing the reform bill by conversions among the lords, is admitted by that paper to be fallacious-twelve being the largest number of changes in favor of it, and there being three or four that formerly supported the bill who will now oppose it. Further dethe measure, is condemned.

The alarm about the colera had greatly subsided, although there has been an increase of cases at Sunder-land, and one had present ditself at Newcastle—it being considered generally to be of domestic, and not loreign origin; though the London Courier has no hesitation in pronouncing it the Asiatic cholers, modified and change ed by the climate of England.

eu ny tue cumate of England.

Mr. O'Connell had proposed to form a grand national
union, with a view of giving effect to the expression of
opinion on political subjects.

#### FRANCE.

The peerage bill had not yet been presented to the house of peers. Its passage in that body was doubted, unless new peers were erested, which project presented serious difficulties. A debate recently occur-

red in the chamber of deputies on the subject of ministers having received the sons of marshal Ney into the French army, from a fereign service. The propriety of which measure was conceded by the chambers.

The minister of marine had despatched telegraphic in-

formation to all the sea-ports, directing the most rigid quarantine to be enforced upon all vessels coming from England, to avoid the introduct on of the cholera.

BELGIUM AND ROLLAND.

Some unessiness was felt in consequence of the continued silence of the king of Holland upon the subject of the approval of the trenty between these two powers, and a report that he had appealed to the emperor of Russia -it was, however, thought that he would ultimately accede to the terms of the treaty.

SPAIN.

There had been some movements in the army of Spain, which had given rise to active speculations among the political circles of Paris, as to the objects of Ferdi-

RUSSIA AND POLAND.

There is nothing from these countries, except the official report of prince Paskewasch, of the storming and capture of Warsaw. The whole loss of the Russian army is computed at 3,000 killed, including 63 officers, and 7,500 wounded, including 445 officers.

TURKEY.

There had been an extraordinary phenomenon in Con-stantinople. After an uncommonly sultry night, threatening clouds rose about six in the morning of the 5th of October in the horizon to the south west, and a noise between thunder and tempest was heard, and yet not to be compared with either-it increased every moment, and the inhabitants, roused from their sleep, awaited with anxious expectation, the issue of this threatening phenomenon—lumps of ice soon fell, as large as a man's loot, falling first singly, and then like a shower of stones, which destroyed every thing that they came in contact with. Some of these were picked up an hour afterwards, which weighed above a pound.

This dreadful storm passed over Constantinople and along the Bosphorus, over Therapia, Bujukdere, and Belgrade, and the fairest, may, the only hope of this beautiful and fertile tract, the vintage, just commenced, was destroyed in a day. Annuals of all kimis, and even able quantity are wounded, and the damage done to the houses is mealeulable. Besides that, scarcely a window masses of ice was so great that they broke to atoms all the tiles on the roofs, and shottered, like musket balls, planks half an inch thick. Since that day the rain has not ceased to pour down in torrents, and, from the slight way in which the houses are built, slinest wholly consisting of windows, and with very flat roofs that have nothing to keep off the wet besides tiles, innumerable families are not much more comfortable than in hivouse

#### TWENTY-SECOND CONGRESS-1st SESSION. SENATE.

December 30. Several petitions of a private character, and others relative to the public lands, were presented and referred.

Mr. Huyne reported a bill regulating the duties and providing for the compensation of pursers in the may, Mr. Johnston obtained leave to introduce a bill to authorise the inhabitants of the state of Louisiana, to enter the back lands-twice read and referred.

The Vice President laid before the senate sixty coples of a map of the north eastern boundary, now in dispute between the U. States and Great Britain—transmitted by the accretary of state, in conformity with a resolution of the senate. The letter accompanying the same, being read.

On motion of Mr. Holmes, it was resolved, that five bundred additional copies of the engraved impression of the disputed boundary, be furnished by the secretary of state, for the use of the senate.

The bill to abolish the duty on alum salt, having re crived its second reading, a motion was made by Mr. Benton to refer it to the committee on finance.

Mr. Dickerson moved to refer the bill to the com-

mittee on manufactures-saving:

"In relation to manufacturers, it was of high importance. It was a question whether the policy of protec-Though the bill embraced only that kind of salt which was abtained by evaporation with solar heat, yet im its effects, it extended also to that sort which was obtained by evaporation with fire. It affected the whole subject of manufacture of salt, and aimed at its total destruction.

Mr. Clay .- "This was not a time to discuss the subject of the bill; but he would remark that, in his opnion, it was inexpedient to legislate on this subject agam, without waiting to see the operation of the b. Il of the last session. It was a subject of the greatest importance; for salt, he said, belonged to those essential ticles of manufacture which it became us to foster by legislation. He was aware of the necessity of adapting the revenue of the country to the wants of the country, upon the extinction of the public slebt, and he was ready to consider the debt as extinguished, and to proceed at once to the formation of the system on which the reare taken up, and, one by one, referred to the committee on finance, it would deprive us of an opportunity to on mance, it would deprive us on a opportunity to form up, system upon a general view of the whole ground. He wished that sait, iron, molasses, hemp, cotton, leather, all the essential articles of manufacture, inight be embraced in one view."

Col. Benton "called on the American senute, who were willing to relieve the people—and, he said, no people in the world, except the English, were so heavily taxed as we were, and this was the opinion of Talleyrand-be called on every member to book at the practical consequences of this othous and oppressive cax. On the same minciple on which we retained the duty on salt, we might also retain every other duty. If it be proposed to reduce the duty on worsted stuff goods, an article of universal use, it will be objected to, because it will diminish the consumption of woollens. reduction of the duty on tea be proposed, it will be objected to, for the reason that it will diminish the consumption of mush and milk, &c. The doctrine might be carried to that execut, and the whole burden will be kept up. The greatest sensibility was felt and expressed towards the interest of manufactures. He hoped he felt a proper interest in that branch of industry; but he also felt the same interest in agricultural, commercia and mavigating pursuits. These have their degrees of importance. If he were to class them, he would place agriculture first, as the basis and source of all wealth. Manufactures, which changed the form of productions, so as to adult them to the convenience and comfort of man, he placed second; commerce, which changed the than, he placed second commerce, when charged the place of all articles of consumption, and promoted civi-tization, stood act in his estimation. They were all great interests and entitled to our support. The agricultural interests were, however, chiefly concerned in the soli duty. The salt duty was to be kept up for the benefit of a few salt-makers in North Carolina and New York, to the prejudice of the vast agricultural interests of the west. While two hundred thousand dollars a sear was drawn from the government as a drawback on fish, the west, from which ten times the value of all the fish was exported in beef, &c. was to have no relief whatever. He hoped to have an opportunity to prove whatever. He hoped to have an opportunity to prove what he had said before a select committee; for he was sufficiently experienced in legislation to know that argument was of no avail."

Mr. Ctay .- "Sir, no one is more sensible than I am, of our duty to take care of the agricultural interests; and it was because he believed the success of munulattures essential to the prosperity of agriculture, that he had endeavored to promote the interest of manufactures. The gentleman from Missouri had argued the question as if it was certain that salt would be rendered chesp by the reduction or abolition of the daty. He wishes to make it cheaper, so do I. We repealed the duty. in part, in May, and what has been the effect? The price of salt is now higher than it has been for fifteen years In this case then the reduction of the duty was mentation of duty sometimes occasions a reduction of price. Even sugmentation of duty sometimes occasions a reduction of price. The reason that the price of salt had not tallen,

was, that our paviestion had been profitably emuloyed. The Liverpool salt is introduced only as ballast; and the salt of the Bahamas is not imported, when any better the can be procured. The gentleman compares our duty with the salt tax of England. Can there treight can be procured. be any comparison between our moderate duty and the tax of fitteen shillings a hushel, which was its amount when he was in England? He knew not what might have been the oppression of the gubelle in France, to which the gentleman also compared our salt duty; but he did know that the prosperity of this country took its date from the adoption of the protective policy, of which this salt duty formed a part. To the tariff not which was now at hand. He was aware that this discus-tion was now at hand. He was aware that this discussion belonged to another time, when, an doubt, the subject would undergo a most rigid examination; but he must be allowed to comment on the remark made by the gentleman from Missouri, that alum salt is exclusively required for the western consumption. I undertake to say, said Mr. C. that not one bushel in fifty thousand of this sort of sait is used in the west. I som a harmer, and I never saw a bushel of it on my farm. He had witnessed, in the west, the reduction of the price of sult from filteen dollars a bushel to seventy-five cents, which was the present price of the Kanawha salt, in consequence of the protection which had been afforded to the manufacturers of salt in that country.

The question being taken on the first motion, (to refer the bill to the committee on finance), was decided

in the negative, as follows:

an the negative, as follows:
YEA.5—Merit Beaton, Bibb. Rown, Forryth, Grundy, Hayne,
Hill, Kane, King, Mangum, Miller, Moore, Saith, Latewell,
Troup, Tyler and Whitu-T!
NAUS-Meurs, Belt, Buckner, Clay, Dalla, Dickerson, Dulley,
Food, Freinghyusen, Hanna, Hendricks, Holmes, Johnston, Kingla,
Marcy, Frentiss, Robbins, Robinson, Suggles, S-ymour, Sinbee,
Toudinson and Wilkins-Zl.

The bill was then referred to the committee on manu-

factures.

Mr. Johnston submitted a resolution requiring the secretary of the treasury to report to congress, such further information as he may have received, since his report of Dec. 1830, relative to the claims of merchants, for return of duties paid under the law of May, 1828.

Several bills for the relief of private individuals, were received from the house of representatives—se-

verally read twice and referred. On motion of Mr. Holmes, it was ordered, that when

the senate adjourns, it be to Tuesday next. The senate then proceeded to the consideration of executive business, and sat with closed doors until 4

o'clock; and then adjourned to Tuesday.

January 3. Mr. Waggaman, of Louisiana, and Mr. Tipton, of Indiana, appeared to day, were qualified and took their seats.

Several memorials and petitions were presented— among them one by Mr. Dullas from sundry eitizens of Philadelphia, asking an appropriation for improving the navigation of Back creek—another by the same gentleman, as also one by Mr. Silzhee, from certain etiz-zens, asking for the repeal of the duty on imported coal.

Mr. Hayne reported a bill to provide for the distribu tion of the duties of the commissioners of the navyand a bill concerning navy agents-severally read and

ordered to a second reading.

The vice president communicated a report from the accretary of the navy showing the names and salaries of the clerks in his department—slao a report from the general land office on the subject of unconfirmed land claims in Missouri-severally ordered to be printed.

The vice president also communicated a report from the secretary of state, showing the names and salaries of

the elerks in his department.

The vice president also communicated a report from the secretary of the senate and clerk of the house of representatives of their proceedings under the act of congress of 2d March, 1831, directing a subscription to the compilation of congressional documents, proposed to be published by Gales & Seston—sitewing the order of arrangement of the intended publication, &c.

The report was ordered to be printed.

Several bills providing for the adjustment of private claims were reported, twice read, and referred.

Mr. Marcy reported a bill providing for the final settlement of the claims of states for interest on advances to the United States, made during the last war, without amendment.

The resolutions submitted on Friday last, by Mr. Johnston, Mr. Hanna and Mr. Hendricks, were sever-

ally considered and agreed to.

Mr. Johnston, of Louisiana, submitted the followings Mr. Johnston, of Louisiana, submitted the following Resided, That the committee on the public lamb be interrect to inquire into the expediency of granting to the territory of Arksiana, one thousand acres of the unappropriated land below and adjuning the town of Little Rock, for the purpose of building a jail and courn house, for the use of the United States and soil eterritory; and that said land be refected by the governor of said terratory, and laid off into lots, of such size as he may deem expedient, and sold when said governor may think it proper to be done; and the surplus, if any, after building said jail part to be done; and the surplus, if any, after building said jail use of the present and future governor of Arksansa.

Mr. Dutlan was amisoined a member of the commit-

Mr. Datlas was appointed a member of the commit-tee on the milita. The bill providing for the compensatiun of the pursers of the navy was taken up, and, after some remarks from Mr. Hayne, was, on motion of Mr. Dickerson, postponed until this day week.

The senate then proceeded to the consideration of executive business, and sat with closed doors for some time, when the senate adjourned.

January 4. The vice president communicated a report of the navy department, showing the contracts and purchases of that department for 1831.

The vice president also communicated a letter from Messrs. Ga'es & Scaton, relative to the American state

papers pullishing by them, under a resolution of the last congress, together with two volumes of the work. On motion of Mr. King, of Alabama, the letter was ordered to be practed, and was referred to the library. committee.

Various private memorials were presented, and amongst them one from similary lieutenants in the navy, praying for an alteration in the present organization of

the naval establishment. Mr. Grundy reported the bill, without amendment, for laying out and constructing a road from Lime creek

to the Chatahooche, &c. Mr. Hayne reported a bill to establish the office of

surgeon-general of the navy.

Mr. Benton reported a bill for the erection of barracks, quarters and store houses, and the purchase of a site, in the vicinity of New Orleans. Also the bill pro-viding for the organization of the ordance department. Mr. Benton also reported a bill to reduce the duty on

Indian blankets and certain other Indian goods, which was read.

The several resolutions submitted yesterday by Mesors. Holmes, Johnston, Forsyth and Wilkins, were considered and agreed to.

The bill providing for the final settlement of the claims of states for interest on advances to the United States, made during the last war, was taken up in committee of the whole, and after some remarks by Messrs. Chambers and Foreyth, was ordered to be engrossed for a third reading.

The bill concerning navy agents, was made the order of the day for Friday next.

After the consideration of executive business,

The senate adjourned.

The senate aujourneu.

January 5. The vice president communicated a letter
from the secretary of the treasury shewing the annual
amount of drawback, of bounties on salted provisions, pickled fish, and allowances to ressels employed in the sheries from 1792 to 1830 inclusive-also quantities of fish, pork, beef and bacon exported during the same

The bill to reduce the duty on Indian blankets and certain other Indian goods was read the second time;

when Mr. Benton moved to refer it to the committee on finance-Mr. Dickerson moved its reference to the committee on manufactures.

An interesting debate ensued, and on the question being taken to refer the bill to the committee on ladian affairs, was decided in the negetive by a vote of, ayes 17, noce 25.

The question then occurred on referring it to the committee on manufactures-when

A debate again casued-and on the question being taken, it was decided to refer the bill to the said com-

mittee, by the following voic, YEAS-Messrs. Bell, Buckner, Clay, Dalla, Dickerson, Dudley,

YEAS-Mestr. Bell, Buckner, Clay, Dalla, Dickerson, Dudky, Ewing, Foot, Freinghuysen, Hendrick, Melnots, Johnston, Kugkt, Marey, Naudain, Prenist, Robbins, Rosimon, Ruggles, Sysouar, Silbeer, Tomlinon, Waggams, Webrer and Wilkinm-25: NAYS-Mestr. Benon, Bibb, Brown, Ellis, Forsyth, Grundy, Hayne, Hill, King, Mangum, Milter, Moore, Smith, Taz-well, Tipton, Tyler and White-15. So the bill was referred to the committee on manu-

factures. The bill providing for the settlement of the claims of states for interest for moneys advanced during the late

was passed and sent to the other house. war, was passed and sent to the officer house.

After disposing of various private bilts, the senste went into the consideration of executive business.

The senate adjourned.

HOUSE OF BETBESENTATIVES.
Friday, Dec. 30. On motion of Mr. Drayton the library committee were instructed to impairing into the expediency of subscribing to the continuation of Watterston and Vanzandt's tabular statisties, and of purchasing the remaining copies which the compilers may have on bond.

Various resolutions contemplating the adjustment of private claims were presented read and referred.

On motion of Mr. Mc Carty, the committee on internal improvements were instructed to inquire into the expediency of granting an appropriation for the further extension of the Cumberland road in the state of Indiana.

On motion of Mr. Watmough, it was

On motion of MIr. II almong 6, it was Resident finath the committee on commerce be instructed to inquire into the expediency of authorising the collector at any pertore to receive the bonds of importers not resident inters, where the same shall be accompatible by a certificate from the collector of the port at which and important reside, that the bondmen of the post at which and important reside, that the bondmen of Mir. If Ming, it was

On motion of our ring, it was Resided, That the committee on internal improvements be instructed to inquire into the expediency of further extending the improvements at La Plasiance buy, at the head of lake the chippan, and of connecting, by a thort caual, the waters of the bay the river Raisin.

with the river Manino and ordered to lie one day.

By the same, and ordered to lie one day.

By the same, and orderey of war be directed to report to

the same and estimates of major Manine, of the re
the same the plans and estimates of major Manine, of the re
the plans and estimates of major Manine, of the re
the plans and the same to the same and the re
Arr. Justice reported the bull from the acuste to pro-

wide for the reports of the decisions of the supreme court, without amendment.

A number of reports, accompanied by bills for the settlement of private claims, were made, read and referred.

Mr. McDuffie reported bills making appropriations for the Indian department and for the lortheations for the year 1832, which were severally twice read and com-

Mr. Blair, of Tennessee, from the committee on in-ternal improvements, to which the subject had been referred, reported a bill to appropriate certain lands within the state of Alabama, for the purpose of improving the navigation of the Tennessee and Cooss rivers, and connecting their waters by a canal or rail road; which was twice read and committed.

Mr. E. Everett, from the committee on the library, reported a bill, providing for the purchase of critain copies of the debates on the federal constitution, which as twice read and committed.

The debate on the resolution offered by Mr. Hunt, and proposed to be amended by Mr. Duncan, in relation to the disposition to be given by the public lands,

s resumed. Mr. Root of New York, Mr. Mitchell, of S. C. Mr. Taylor, of New York took part in the dehate-and po motion of Mr. Taylor, the resolution, together with the amendments, were referred to the committee of the

hole house on the state of the union. The house then went into the consideration of private business, when eleven bills passed through committees of the whole house, and were severally ordered to be

engrossed for a third reading.

On motion of Mr. Hilde, of Georgia, the house then

increase the pay of the master armorers in the service of the United States.

On motion of Mr. Burget, Residued, That the committee on the judiciary be directed to inquire into the expediency of further catending, for the terms of two years from the expediency of further catending, for the terms of two years from the expediency of further present section of this economics, the work of Mrs 18th, 12th, providing for extending the time allowed for rectemption of tanks took of which may be wold for non-payment of laws under the law referred to these tanks.

and in manner therein mentioned.

On motion of Mr. Peurce, the committee of commerce were instructed to inquire into the expediency of making an appropriation for the creetion of spindles, on the Hall Way Rock, so called, near the south end of the island of Providence, in Narragansett bay, on the Little Line Rock, in the harbor of Newpott.

On motion of Mr. Hogan, the committee on internal improvements were instructed to inquire into the expedency of constructing a breakwater for the protection of the harbor of Plattsburg, and of erecting a light house on Cumberland Head, on Lake Champlain.

On motion of Mr. Taylor, the committee on the post office and post roads were instructed to inquire into the expediency of revising the act to regulate and fix the compensation of the clerks in the post office depart-ment, upon an equal looting with the clerks in the other

departments.

On motion of Mr. Dearborn, the committee on commerce were instructed to inquire into the expediency of requiring the sceretary of the treasury, annually to precommerce and navigation between the several states, for each preceding year, in the manner prescribed by the act of February 10, 1820, for the commerce with loreign nations.

Various resolutions were muved to place certain individuals on the pension list.

On motion of Mr. Everett, the committee on internal improvements were instructed to inquire into the expediency of making an appropriation for the improve-

ment of the navigation of the Connecticut river.

On motion of Mr. Gilmore, the same committee was

On motion of Air. Gimbre, the same committee was instructed to make a similar inquiry concerning the improvement of the navigation of the Alleghan river.

Mr. Pendleton, of New York, submitted for consideration the following resolutions:

deration the following resolutions:

1. Resolved. That it is expedient to bring in a bill in problem and declare the appellate jurisdiction of the supreme court of the Unit of State, in criminal case arising in the state court.

2. Resolved. That in the proposed bill, the provisions of the United States," possed September 24, 1785, shall be declared in apply to the third judgments in criminal tasks, which are now depending or which shall hereafter usine in the state court.

3. Resolved, That in the proposed bill, and quart printional credings in the court below to the supreme rourt of the United State.

State. A Resident, That in the proposed bill, it will be expedient up provide, that in all cases a writ of error to be allowed in pursuance of the act, shall have the effect to support of the error of the Judgment complained of, and hast adequate perablic ability of the provision any person or persons who shall, in this respect, which is the provisions of the set.

These resultions Alt. 2, moved to reler to a com-

mittee of the whole on the state of the union.

Mr. Bem daley, of New York, objecting in the phraseology of the resolutions, wished to smend them so as to limit them to an instruction to inquire into the sub-

The speaker said that no smeadment could now be made, because the pending question was on enmolment to a committee of the whole, for the purpose of being there considered.

Mr. Carson, of North Carolins, objected to their going to a committee of the whole in their present shape.

Mr. Pendleton insimated that he had no design, in the motion which he had made, to ask the housest all to commit itself at present upon the points embraced in

his proposition. Mr. Davis, of Massachusetts, not willing to set hestily in a matter of such importance as that now under consideration, moved that the resolutions lie on the table and be printed for the use of the house.

culty experienced in getting up again business once last on the table, and to the impropriety of giving the go by to a subject of such high importance as that now under consideration, wished his colleague to withdraw his motion, and let these resolutions go to a committee of the whole, as proposed by the mover.

Mr. Davis, yielding to the request of his friend,

withdrew his motion.

Mr. Wilde, of Georgia, renewed the motion to lay

Mr. Everett, of Mass, then said that this was a question so important, under the circumstances, that he left it to be his duty to ask that it be decided by year and

The year and mays were ordered accordingly; and the motion to lay upon the table not admitting of debate, the question was immediately taken up on that motion, and decided as follows:

Veas 99 pays 89.

So the motion of Mr. Pendleton was ordered to lie on the table.

On motion of Mr. Barber, it was resolved, that the secretary of war be directed to report a statement of the claims of the state of Connecticut against the United States for disbursements made by said state, and for the services and expenses of her militia, during the late war, and of such proceedings as may have been had at the department of war in relation thereto.

Mr. Mercer submitted the following resolution:

Icesolved, That so soon as the public debt of the United State shall have been discharged, or such provision made therefor as shall release the public lands from the claims of the public creditors, the nett proceeds of the sales of those lands shall be applied, under auch regulations as the legislatures of the several states and territories may respectively provide, in the propor-tion of one moiety to popular education, and the other to the removal of such free people of color, thereof, as where, beyond the limits of the United States and of their territories.

Resolved, That in effecting the preceding purposes, the proceeds of the sales of the public lands be distributed among the several states and territories according

to their respective numbers.

Mr. M. moved that it be committed to a committee of the whole house on the state of the union; when A motion was made by Mr. Clay, that it be laid on

A motion was made by Mr. Clay, that it be said on the table; upon which latter motion, Mr. Williams, of North Caralina, called for the year and mays, which were ordered; but before the question

was taken, the house adjourned. Wednesday, Jan. 4. The speaker laid before the house a report from the department of state, shewing the aggregate number of persons in each state, secondthe 5th census, as required by a resolution of Dec. 1831. Also, a report of the secretary of war transmitting a plan and estimate for fort Grawohl, on Groton Heights, in the state of Connecticut. Also, a report from the secretary of the navy accompanied by a statement of the contracts and purchases made during the year 1831, on account of the naval service.

The speaker laid before the house a letter from the secretary of the senate and clerk of the house of representatives, accompanied by a report of their proceedings under the act of March, 1831, relative to the publication of congressional documents. Also, a letter from Gales & Seaton on the subject of the documents publishing by them, together with the two first volumes of the

The house resumed the consideration of the resolutions submitted by Mr. Mercer, the question being on the motion to lay the resolution on the table, which was determined in the affirmative. Year 124, nays 54.

Mr. Drayton reported a bill to authorise the erection Mr. Drayton reported a bill to authorise the erection of an armory on the western waters of the United States. Mr. White, of Louisians, made a report on the petition of Duff Green, accompanied by a bill suthorising a stereotype edition of the laws of the United States.
Mr. Palk made a report, accompanied by documents

and a bill for the apportionment of representatives among

Mr. Everett, of Massachusetta, referring to the diffi- the several states, according to the 5th census-twice read and committed.

Mr. Allen reported a bill granting a township of land for the benefit of the Transylvania university of Kentucky-twice read and committed.

Mr. Mercer reported a bill providing for the extension through the territory of Arkansas, the road from Washington to Jackson, in said territory -twice read and committed.

Mr. Drayton made an unfavorable report on the me-

or ind of the legislature of the territory of Arksassas.
On motion of Mr. Leavitt, the committee on military affairs was instructed to inquire into the expediency of increasing the appropriation for arming the militia.

On motion of Mr. White, of Louisians,

On moreon in Mr. 17 mile, of LOUISMAS, Resideed, That the committee on internal improvements be instructed to inquire into the expediency of extending the province of the pro

On motion of Mr. Drayton,

On motion of air. III alignon, Residend, That the committee on naval affairs be instructed to inquire into the expedencey of increasing the pay and emoluments of the officers of the United States anary, so as to place them upon an equality with officers of the same rank in the army of the United States.

On motion of Mr. Lyon the committee on internal improvements were directed to inqure into the expediency of improving the navigation of Cumberland river,

On motion of Mr. Wickille.

Reserved, That the committee on military affairs be instructed to inquire into the expediency of vessiting all present, and probabiliting all future appointments in the safe of the army from the explain to the army; and to require that each captain shall be kept with and in command of the appropriate company. That non-commissioned officers of the army, when they may be found worthy of promotion, a certain portion of the second insutenants. That, in orde to enable the president to do this, the committee the properties of the army of the probability of the proposition of the president of the second insutenants. That, in orde to enable the president to do this, the committee therefore the proposition in the number of the proposition of th On motion of Mr. Wickliffe

Mr. Boone moved an inquiry into the propriety of

improving the Wabash river.

he house resumed the consideration of the resolution moved several days ago by Mr. Blair, as modified by Mr. Vinton, with amendments as proposed by Mr. Duncan, and Mr. Mitchell, of S. C. proposing certain modes for hereafter disposing of the public lands, appropriating them to the use of the several states for the purposes of education and internal improvement, which, after a slight debate, was, on motion of Mr. Wickliffe ordered to be laid on the table, by a vote of syes 109, noes 79.

A great many bills providing for the adjustment of private claims, were considered and disposed of.

The house adjourned.

Thursday, Jan. 5. Mr. Drayton reported a bill making further provision for the military academy at West Pont.

The resolution of Mr. Mercer, relative to amount of expenditures on breakwaters and moles, &c. was taken up and agreed to.

The resolution relative to newspaper postage was tsken up and alter discussion; laid on the table.

The resolution moved by Mr. Cambreleng, on the

27th ult. relative to the amount of pert revenue collected on woollens, cotton and certain descriptions of iron,

was considered, amended, and agreed to.
The speaker laid before the house a statement from the secretary of the treasury of the cases in which duties had been returned.

The bill for settling the claims of South Carolina for ailvances during the war, was considered, and, after a warm debate on a motion of reference, the house adjourned without coming to a decision.

Some particulars of this day's proceedings in both houses, will be given in our next. ]

MASONIC.

Address to the people.

While the public mind remained in the high state of excitement, to which it had been carried by the partial and inflammatory representations of certain offences, committed by a few misguided members of the masonic institution, in a sister state; it seemed to the undersigned, amount of elergymen of different persuasions, and some [residents of Boston and vicinity] to be expedient to re-frain from a public iteelaration of their principles or engagements as masons. But believing the time to be now fully come, when their fellow citizens will receive, with to the content of the relative detects and unequivo-earlor, if not with satisfaction, a soleton and unequivo-eal denial of the allegations, which during the last five years, in consequence of their contexton with the massonic frateruity, have been reiterated against them, they respectfully ask permission to invite attention to the subjoined

DECLARATION.

Whereas, it has been frequently asserted and published to the world, that in the several degrees of freemasonry, as they are conferred in the United States, the candidate, on his initiation and subsequent advancement, binds himself, by oath, to sustain his masonic brethren in acts which are at variance with the fundamental principles of morality, and incompatible with his duty as a good and faithful citizen; in justice therefore to themselves, and with a view to establish Thurn and expose IMPOSITION, the undersigned, many of us the recipients of every degree of free meaning of us the recipients of every degree of free meaning of us the recipients extended in this country, do most solemnly deny the existence of any such obligations in the massone institution, so far as our knowledge respectively extends, and we as solemnly ever that, no person is admitted to the institution, without first being made acquainted with the nature of the obligations, which he will be required to incur and assume.

Freemasonry secures its members in the freedom of thought and of speech, and permits each and every one to art according to the dictates of his own conscience in matters of religion, and of his personal preferences in matters of politics. It neither knows, nor does it assume to inflict upon its erring members, however wide may be their aberrations from duty, any penalties or punishments, other than those of admonition, suspen-

sion, and expulsion.

The obligations of the institution require of its members a strict obedience to the laws of God and of man. So far from being bound by any engagements meonsist-ent with the happiness and prosperity of the nation, every citizen who becomes a MASON, is doubly bound to be true to his Gon, to his countur, and to his FELLOW-In the language of the "ancient constitutions" of the order, which are printed and open for public inspect ion, and which are used as text-books in all the lodges, he is "required to keep and obey the moral law; to be a quiet and peaceable citizen; true to his government and just to his country."

Masonry disdains the making of proselytes. opens the portals of her asylum to those only who seek admission, with the recommendation of a character un-spotted by immorality and vice. She simply requires of the candidate, his assent to one great fundamental religious truth—the existence and providence of God, and a practical acknowledgment of those infullible doctrines

for the government of life, which are written by the fin-ger of God, on the heart of man.

Entertaining such sentiments as masons, as eltizens, as Christians, and as moral men, and deeply impressed with the conviction that the masonic institution has been, with the conviction that the mission institution has been, and may continue to be, productive of great good to their fellow-men; and having "received the havs of the cociety, and its accomblated funds, in sacred trust for charitable uses," the undersigned can neather renounce mor abandon it. We most cordially suitin with our brethren of Salem and vicinity, in the declaration and hope that, "should the people of this country become so mfatuated as to deprive masons of their civil rights, in violation of their written constitutions, and the wholesome spirit of just laws and free governments, a vast majority of the fraternity will still remain firm, confiding in God and the rectitude of their intentions, for consolation, under the trials to which they may be exposed."

The preceding declaration is signed by 1,300 or 1,400 persons. We have not exactly counted them up—but such is about their number. Among the names are many of the venerable remnants of the revolution - many sged more than "three score and ten"—with a large

of the most honored and distinguished gentlement of Massachusetts, of all publical parties, except the anti-masonic. It should be observed that the list is confined. to Boston, and its vicinity, and the Centinel says-"The number of signers could easily have been mag-mented to the number of all respectable magnitudes of the number of all respectable magnitudes throughout the state, but it was not deemed necessary to delay the publication long enough to collect their names. We invite the caudid attention of all classes of men, whether masons or anti-masons, to the decla-

The same paper adds-"It is not for the purpose of ny ostentatious display that the declaration is now made. At a time when a relentlesss persecution for political purposes has been attempted to be excited against a benevolent society, the existence of which, like all other societies, is guaranteed by our laws and constitutionsit has been deemed proper for its own members to come forth and state their sentiments and views under their own proper signatures, and to appeal to the candor and common understandings of the community, sgainst the calumnies and olloquies, which have been heaped upon them by unprincipled men for political purposes, the characters of the signers, it is needless to drinter they form a large proportion of the friends and neighbors of every reader in the community. Let them have credit according to the character of their lives."

MR. CLAY AND MASONRY.

From the New York Commercial Advertiser. We never pretended that Mr. Clay had denounced the principles of free masonry; nor did we ever believe that he would, at least under the circumstances in which he has been placed by his friends, come forth with a de-nunciation of the institution, when the only effect would be to mear fresh personal attacks, and throw his mo-tives open to suspicion. But we did believe that Mr. Clay, in common with a large portion of the best and most intelligent masons throughout the union, had ceased to have any active participation in the transactions of the society, under a conviction that all of its useful and benevolent purposes were better fulfilled by the agency of more recent and more efficient institutions; and this impression has been more strongly confirmed by the late letters of gen. Porter and judge Rochester, on this subject. Indeed, from the representations uniformly made by Mr. Clay's particular friends, as well as from the tener of his letter to the anti-masons, as one which appertains solely to our social and moral relations and appertune solety to our social and moral resistons and responsibilities, and as having nothing to do with our political duties; and that, in this point of view, he deem-ed it to be not only his right, but his duty, to resist every attempt, whether made by masons or anti-masons, to demand from any individual citizen, for political purposes, a public exposition of his sentiments on subjects which have no legitimate connexion with political duty. With these few brief remarks, intended at once as a vindieation of our former assertions upon this subject, and also as a just exposition of what we believe to be the feelings of Mr. Clay, we subjoin the following documents—the originals of which may be seen at this office.

I do hereby certify that the honoral le Henry Clay did legally and honorably demit from Lexington lodge No. 1, 500 the 18th day of November, A. D. 1824. The loregoing is truly extracted from the records of said lodge.

Given under my hand, and the seal of the lodge annexed thereto, this 25th day of November, A. D. 1831. JOHN HENRY,

Secretary Lexington ludge No. 1.

I, Harry J. Bodley, grand secretary of the grand lodge of Kenticky, do certify, that it appears from the returns of Lexington lodge No. 1, (which is subordinate to the grand lodge of Kenticky), that John Henry, whose name is attached to the foregoing certificate, is accreta-ry of Lexington lodge No. 1; and that it further appears,

\*To demit, according to Webster, is to let fall; to de-press; to submit; but is not used, excepting as a ma-sonic term. Its meaning, in free masonry, is to let fall; to relinquish; give up; or withdrawn from.

from the proceedings of said grand lodge, that Henry Clay demuted from said ladge No. 1, between August 1824, and August 1825.

In testimony whereof I have hereto set my hand, and affixed the seal of said grand lodge, this 26th November, 1831.

H. J. BODLEY, grand sec'ru.

In justice to Mr. Clay, we may as well mention the fact, that he was in no wise accessary to the obtaining the foregoing certificates by us; nor did be know that they were in our postession until we had had them upwards of two weeks, nor until the above article was prepared for the press.

The following may be added as one of the "signs of the times"-we have omitted, however, a few words be-cause of their political and personal severity, intending

only to present the fact stated:
The Morristown (N. Jersey) Palladium, a respectably conducted and well established paper, took an early and decided stand for anti-masonry, and of course for antimasons as candidates for office-this ground was pertinaciously maintained until last week-when it concluded the publication of the Baltimore pational republican convention address, with some appropriate remarks, and the tollowing declaration:

"Many of the substantial supporters of this press will, no doubt, be disappointed in the decision of the convention—indulging the hope that the opposition to would be concentrated on the distinguished individual who received the nomination of the anti-masons some months since. But it is determined otherwise, and the political influence of this state will go for CLAX-the constitution—the American System—"and the sufremucy of the tawe"-or for "Old Hickory," and the conse-

quent continuance of the abuses of his administration.

Notwithstanding our aversion to the principles of speculative freemasonry, we never can consent to pursue a course that may have a tendency to augment the miluence of We have, therefore, alter mature deliberation, and can-

didly weighing the honest scruples and objections of the friends of Mr. Wart, concluded hereafter to sail under the broad banner of "CLAY AND THE CONSTITUTION,"

#### MR. GIRARD'S WILL.

The Philadelphia (Poulson's) Advertiser contains the tollowing authentic abstract from the will of the late Stephen Girard. The editor remarks;—"There is not perhaps, an instance recorded in the history of the world, of one human being devoting such an immense amount of wealth for the benefit of his tellow man, as the venerable deceased has given to the city of his adoption, for the laudable purpose of its improvement, and for the melioration of the condition of its inhabitants."

Stephen Girard's will, Gives to the Pennsylvania hospital, subject to the payment of an annuity of \$200 to a fe-

male slave, whom he sets free To the usylum for the deaf and dumb To the orphane' asylum

To the controllers of the public schools To the city corporation, to be invested, and

the interest to be applied, annually, in the purchase of wood for the poor

To the society of ship musters To the free masons' todge

For a school to be erected in the township of

6 000

4.000

120,000

Passavunk, for noor white children Sundry legacies to individuals amounting to Several annuities amounting to about

To the city of New O leans 1,000 seres of im-proved land in the territory of Mississippi, and

One-third of 207,000 seres of unimproved Land

in the same territory, To the city of Puladelphia the remaining two-

thirds of the said unimproved lands. [ This land is said to be now worth \$500,000.] To the city of Philadelphia, stock in the Schuylkill navigation company [Worth in the market considerably more than this sum. ]

For a college for poor white male children and its proper endowments, the sum of 2.000,000 To the city of Philadelphia, for certain city

500,000

improvements, to be invested, and the interest to be manually applied

All his remaining estate, real and personal (no part of the real estate to be sold) is to be applied as follows: - in further aid of the said college-improvements of the city, and in the relief of the taxes. This estate is

very large, but not yet valued. To the commonwealth of Pennsylvania, to be applied to internal improvements by canals. provided the legislature shall, within one year from Stephen Girard's decease, pass laws authorising the city of Philadelphia to make the intended improvements—otherject

300,000 The gentlemen hereafter named are the executors of his will.—Timothy Paxson, Thomas P. Cope, Joseph Roberts, William J. Duane, John A. Barelay.

The whole amount given to his relations, appears to involved in the 120,000 dullars above stated -but be had made partial provisions for some of them heretofore.

It has been said that he gave an annuity of 1,500 to each of his sea-captains; and the sum of \$500,000 to the city of New York, where he first landed in America. We shall, probably, have particulars after a while. The manner in which this large property has been devised, renders it publicly interesting.

The total value of the dountions to the college, may

amount to twice as much as the money given.

The value of the estate of Mr. Girard is variously stated—the accounts run from six to eleven millions of dollars.

The trustees have stopped the operations of his bank, as to the reception of fresh deposits, or discounts of new

It is computed that twenty thousand people attended the luneral of Mr. Girard, in their variously associated or individual characters; and the flags of the shipping in the harbor were at half-mast for three days. These marks of respect were well deserved. Mr. Girard was a blessing to working-men, of all descriptions; and his example had a powerful effect on the conduct of other capitalists, to circuleste their money. ]
[Mr. Girard has prohibited the entry of any ecclesias-

tie, missionary or minister, of any sect whatever, even as a visiter, on the premises of the college which he has endowed. 1

# BALTIMORE AND OHIO RAIL ROAD. Office of the Baltimore and Ohio

Rat Road Combany, 20th Dec. 1831. To his excellency the governor and the honorable executive council of Maryland:

Since the last report of the president and directors of the Baltimore and Ohio rail road company to the execu-\$30,000 20,000 tive of the state, the operations of this company have TO CHIEF tive of the state, the operations of this company have been continued with unremitted activity and the rail read has been opened for travel as far as to Frederick, a distance of 61 miles from the depot of the company 10,000 a distance of or office from the depot of the company at the lical of the base in it the city of Baltomer; a sin-gle line of tracks has also been so nearly completed to the "Point of Rocks," on the Potomac river, as to af-lord a full assurance that the communication between 10.000 10,000 20,500

the tide waters of the Chesapeake bay and that river. will very soon be opened through this channel. The president and directors believe it ilue to the interests of the great work over which they preside, as well as to the legislature of the state, that they should, on this occasion, refer to some of the circumstances which led to the formation of this company.

The establishment of an efficient, speedy and economical means of intercommunication between the different sections of our country, had been for a long time deemed of such importance, as to involve, not only the well being, but perhaps the very existence of our social com-pact. The citizens of Baltimore, deeply sensible of 110,000

this truth, and appreciating the great benefits which would be derived from a participation in the commerce of the valleys of the Ohon and Upper Ministanpia, which commerce has been forced to seek an outlet through several difficult and circuitous elements, ever desirous of securing a more direct and easy means of the official with lines terrile regions. It was therefore with internse askety they award the promulgation of the official report of the U. States engineers upon the subject of the proposed canal between the tiver Ohon and the waters of the Chesspoake bys. The lasts however flaclosed in that report only served to disapare with itsmsy, that a canal encumbered with 400 locks, a considerable portion of which would be related to the proposed that the continuation of the

Abandoning, therefore, all reliance upon such an insufficient means of communication, a number of the citizens of Baltimore held a meeting on the 12th day of February, 1827, for the purpose of devising the most means of improving the intercourse between that city and the western states, on which occasion va-rious documents and statements were submitted, illustrating the efficiency of rail roads for the conveyance of articles of heavy carringe at a small expense, which being examined, and the superior advantages of this mode of transportation over turnpike roads and eanals being satisfactorily shown, the ilocuments were referred to a committee, who subsequently reported a mass of lacts, derived principally from English authorities, of a high-ly interesting character, observing in conclusion, "that the stock of information now in possession of this committee is admitted not to be very extensive, but they have gleaned from several communications and reports which they have examined upon this interesting subject, enough to leave no doubt upon their minds that these roads are far better adapted to our situation and circumstances than a canal across the mountains; they therefore recommend that measures be taken to construct a double rail road between the city of Baltimore and some suitable point on the Ohio river, by the most eligible and direct route, and that a charter to incornorate a company to execute this work be obtained as early as

The facts developed on this occasion were deemed so weighty and conclusive, that it was unanimously recolved to apply to the legislatures of the several state through which the contemplated rail road might past for acts of incorporation, authorising the company to construct such a road. The legislatures of Maryland and Virginia, then in session, with a promptness which entires them to the public gratitude, concurred in an act, incorporating a company as deared, and investigat with any let power. This act was subsequently neceded to by the legislature of Pennsylvania in the same liberal spirat.

The state of Mey land having provided, as a condition of its subscription to the way, of the company, that the road should be so located "that it shall be not on strike the Potomer is tree at some point between the mouth of the Monoescy river and the town of Cumberland, in Alighany county, and that it shall go into Frederick, Washington, and Alleghany counter." The road was located accordingly, subscquent examinations having demonstrated, that the Potomac presented the only feasible route along which it could be earried in this direction, consistently with correct scientific principles.

The commissioners appointed, having opened subscriptions for the stock, the amount required by the elanter was immediately filled; whereupon, a board of directors was elected, and the company being duly organized, proceeded without telay to cause the necessary examinations and surveys to be made for the location of the road.

On the 4th of July, 1828, the eeremony of laying the first stone was performed; but it was not until the au-

this truth, and appreciating the great benefits which tumn of that year that active operations towards the common would be derived from a participation in the commerce of the valleys of the Ohio and Upper Mississippi, riod its prosecution has been pursued with energy and the valleys of the Ohio and Upper Mississippi, riod its prosecution has been pursued with energy and

Owing to the peculiarly unfavorable topography of the country, on the first driving to the treat, the different country is the first driving to the treat the country of the treat the country of the cou

Now that the company have accomplished the more difficult part of their undertaking, and acquired, by experience, much valuable information and many facilities, which, from the novelty of the subject could only be gained from a course of practical experiments, all doubts have been removed, and they are encouraged, by the most cheering confidence, in the entire success of their enterprise; at the same time, judging from the results ascertamed since the valley of the Patapaco has been gained, they entertain no doubt but that the graduation, masoury and construction with a doubt set of tracks may be accomplished between the present termination of the road and the Ohio river, a tor nearly within the original estimated cost of \$20,000 per mile, and that in the event of the requisite funds being placed at the disposal of this company, the whole work might be completed and put i.to operation in five geers.

From the extremely uniavorable aurface over which the road was necessarily to pass for the first eight miles in order to reach the valley of the Patapace, it was early perceived that the expenses across that district would be very heavy, but it had been assertained that in adopting this route, a line of road would be secured, which, by some extensive embankments and deep cuttings near to the city of Baltimore, could be losated with but a single summit for a distance of 180 miles, and with only two sammits requiring stationary power along the entire line to the Ohio river, a result which, it is believed, has not been attained on any line of rail road projected for the same extent, in any other country. The approach to the first of these summits is by an achievity as gradual as not to exceed an average of about 18 feet to the mile, and as great as that passing sestward, this line will consequently be more althrustageous than if it were a pertect level.

is no more astrantageous than if it were a perfect level. The inclined planes over the first summit, at Parr Spring ridge, will be passed by an additional local power, said from the western side of that ridge to the coal mines near Cumberland, the route is so Isavarble as to be adapted along the whole distance to locomotive stem engines; taking therefore, the entire line together, it will be deceledly superior to a level road, since like that on the eastern side of the Parr ridge, the acclivity for a very great portion of the distance is, in the direction of the lesser tonnage which will pass upon the road.

From the eastern base of the Alleghany mountain a series of inclined planes will be required to overcome a summit of about 1,300 feet, from thence it has been secertained that the road may be conducted to the Ohio river upon a line so nearly level as to be traversed without difficulty by locomotive steam power.

Although at the time of the commencement of this great national work, the individuals who embarked in the undertaking had arrived at the conclusion that the system was espable of affording greater facilities for the transportation of both merchandine and passengers than could be attained, either by the best constructed turnishe roads or canals, yet the antieipations then formed of its capabilities have been vastly more than realized. The many important hipprovenients introduced within the last few years, both in the construction of rail roads and in the application of machinery upon them, having pirthaps doubled their effective power. It is honorable to our country that the system is indebted for several of these improvements to the genius and science of American citizens.

I fie ordinary speed now attained upon the Liverpool and Manelicater rail road, which work has not been so

well executed as that part of our road hid on stone rails. is from 15 to 30 miles an hour, according to the horiasserted, that the whole distance of 32 miles, between these places, has been run in 33 minutes, or at the rate of 58 miles per hour.

From the experiments made upon the Baltimore and Ohlo rail road, there is no reason to doubt but that the travelling on it may at least be safely carried at the rate of from 12 to 15 miles an hour by the aid of steam power, and that passengers may be conveyed from Balti-more to the Ohio river within from 24 to 30 hours, at

all seasons of the year.

The successful accomplishment of this work, to far as it has been extended and within so short a time, under the numerous and complicated difficulties which opposed its progress, cannot but yield a high gratification to the people of Maryland, and affords a satisfactory guarantee that the resources of the state, aided to the aid which may be relied on from other quarters are fully adequate to the early and triumphant completion of the magnifi-cent undertaking in which we have embarked.

Maryland has the honor of being the first state in the union to incorporate a company for the construction of a rail roud. She was the first state to embark the public resources in support of this system, and she may now boast of having within her limits the longest continuous railway in the world. It is only necessary that she should continue her patronage to this great enterprise and she will certainly secure to herself the full development of all the advantages which her geographical position gives her in relation to the vast and rapidly increasing commerce of the west-She is happily so situated as to afford the shortest and by far the most convenient route of communication between the navigable waters of the west and of the ocean, and indeed between the Alnorthern frontier, and which, at no distant day, are destined to become the theatre of an immense commerce: and although limited in her territory to a much smaller extent than some of her sister states, by securing to hermolities between the 'eastern and western states will mointies between the testern and western states will mainly pass, and which her nostion gives her an oppor-tunity of effecting, she will soon find herself in point of commercial activity and capital, second to no state in the

It is ecrtain, that whatever advantages may be anticipated from the rail road system in Europe they will be of minor importance when compared with the benefits we are destined to derive from the introduction of this aystem into our country. By the easy, convenient, and rapid intercourse which these roads afford, they are capable of placing, almost in juxtaposition the most, re-mote sections of our widely extended republic, and will thus do more to perpetuate our institutions and preserve our union than any political comparis or physical force could ever effect. The system, if advantageously ap-plied and sufficiently extended, will give to the people of the United States an identity of feeling, a barmony of interests, and a facility of social intercourse, which must long bind them logether as one great lamily; and secure to our country all the advantages resulting from the productiveness of a mighty continent, with the conveniences of communication incident to a small island.

For a full and more detailed explanation of the operations of this company, within the past year, we ask leave respectfully to refer the executive, to the fifth annual report of the board of directors, a copy of which is here-

with transmitted. On behalf of the board, I am very re-P. E. THOMAS, president specifully, &c. B. & O. rail road co.

# NULLIFICATION.

From the New York Commercial Advertiser,

From the New York Commercial Atherstser.
This nonemical tem, nonemical whether applied to malter, which man cannot destroy, or the constitution, which can only be abrogated by revolution, has puzzled the people of England a little, as appears by the following article from the London Morning Hersh!

We understand that many of our readers are greatly puzzled as errisin words recently brought into the in the United States in the discussion of the trail questions. We alticle excession of the Arming London. We alticle excession of the Morning London.

very casy to comprehend—the one signifying to the act of making null or none; and the other a none or null-maker. It is, low-in the question of the control state or the union has the right of rendering on;; and you, so far as such state is concerned, an act of the congress of the United States, providing—we believe, but we are not occasin,—such act be unconstitutional; that is, provided it oversteps she bounds preseribed to the congress, or the three estates, by the written

The foregoing is, we believe, as good a definition of the unin-The foregoing is, we believe, as good a definition of the university of the desired property of the control of

or region around the control of the state of opposition to the general air, when the associates. I am, however, free to coof is, that it is possible the general government, sustained by a mignary of the states, neight violate the constitution, or that under its form they might reinously oppose the minority. In such a case, if remonstrante shall fail, nature, the laws of society, and even the regulations of heaven, would proclaim the proper and effectual alternative. I trust this theither you mor your children's children, will ever have to resort thereto."

# LEGISLATURE OF PENNSYLVANIA.

LEGISLATURE OF PENNSYLVANIA.

Extract from the message of gev. 18-9f.

"The policy from the message of gev. 18-9f.

"The policy from the message of gev. 18-9f.

"The policy from the message of gev. 18-9f.

In the works of luternal improvement, of a naisonic character, by the general government, are favorite messures with the people of Pennsylvania, and the former is externed by them as being identified with their best interests. The constitutionality of these messages in the properties of the constitution of the message of the properties of the second obtains of the properties of the second obtain elements of the prevailing discontents are well founded; and we are admonished that in bright control of the prevailing discontents are well founded; and we are admonished text, in bright controls are well founded; and we are admonished text, in leading ourselves to add in relieving hem from an imaginary oppressed. Upon these all engrossing questions of national policy, the voice of Pennsylvania has been repeatedly expersage through the state legislature, as well as by her representatives in congress. oppressed. Upon these all engrossing questions of national policy, the voice of Pennsylvanis has been repeatedly expressed through her state legislature, as well as by her tepresectatives in congress, and so long as he shall continue to place a proper estimate upon her own prosperity and the success of her infant manufacturing establishments, the will not ease to cherish the same entiments in favor of measures indispensable to the successful fostering and encouragement of her domestic industry as do enterprise."

### LEGISLATURE OF MARYLAND.

LEGISLATURE OF MANYLAND.

Extracts from the governor's meange—lice, 28, 1831.

Extracts from the distract of the duties of chief magnituse of our states. His a teetlersy, the law governor Marrian tong extract of usefulness, was, in the saidom of Providence addenly withdrawn from the distinguished station which he filled with great hour to hinself and advantage to the public. No, manly cast of his character, was necessarily fill by all who approached him, and especially apprecised by those, who like his counsellors, saw his true spirit in friendly and confidential increasing. This berear ement imposed upon me public duties, from recourse. This berear ement imposed upon me public duties, from recourse. This berear ement imposed upon me public duties, from recourse. This berear ement imposed upon me public duties, from recourse. This berear ement imposed upon me public duties, from recourse. This berear ement imposed upon me public duties, from recourse. This berear ement imposed upon me public duties, from recourse. This berear ement imposed upon me and kindness of my countrymen, will estend to me every allowance which so unes pected an occurrence demands.

A communication was made from this department to the last general assembly, catclosing copies of a letter from the president of the United States, satiol of report to him by the their secretary of war, in answer to an application which had been made for the appointment of one or more of the United States angineers,

re make a nurrey of the coast between Cape Charles and Lewis Town creek, on the lay of Delaware. These documents were regarded as social an explicit refusal, on the part of the president, to comply with the requist of the general assembly, and the relative to the president of the general assembly and the relative to the relative to the result of the relative transfer o from the secretary of war, to the late governor of this issue, with a copy of the reply thereto, in herewith visionited for your consideration. They will apprise you of the monter and of the agency by when the absolutionent of the ground assumed in the first state of the secretary of the subject.

Javanue canage in the president's views of the subject.

I herewith transmit a communication of the president and directors of the Bultmure and Ohio rail road company, to gether with their lifth annual report, ethiciting the progress of that work. It is with much satisfaction that I am enough to that you. It is with much satisfaction that I am enough to that you have been considered to the subject of the property which is so enucuently activated to develop the resources of our state, and by its continued extension strates to our commercial metropolis the vate and rapidly increasing commerce of the western countries to the requirement of the section of the subject of the subject of the present of the subject of the subject of the subject of the arguments before the public, but having seen the force of the arguments before the public, but having seen the force of the arguments before the public, but having seen the force of the arguments before the public, but having seen the force of the arguments before the public, but having seen the force of the arguments before the public, but having seen the force of the arguments of the subject of the public fully gratified.

fully gratified. At no datant day Maryland will be highly datum-guished for advancement in internal improvement ritimphant sur-ling will be wanted to some the most ritimphant sur-ling. The surface of the surface of the surface of the surface to the surface of the surface of the surface of the surface abundantly, devoted to enterprises of real utility, we have to oc-casion for ker on that lined. The Susquelanumia rail road is progressing and promises great benefit; but its ultrifus success cannot be estimated, until a charter is granted by the state of Pennylanula to that company. There are the only payers of the measure, that are not of a busi-

or in furtherance of its objects.

These are the only parts of the message, that are not of a business character, and entirely local.

## LEGISLATURE OF VIRGINIA.

Extract From the annual message of gov. High-Dec 6.

White we were enjoying the abundance of last waxan, repairing the property of the state of of the stat even in their most revolting form.

In August last, a handitti of slaves, consisting of but few at first, and not at any time exceeding a greater number than see in ty, rose upon some of the unsuspecting and sletcher-less inhastic floorbampton, and nod recreamstances of the most shock-

sy, rose upon some of the unsuspecting and defencels inhalted and soft of Southampton, and most of Southampton, and most of southampton, and most of recentrations of the most inciding and horrid berharity, port to dearly the private of the most inciding and horrid berharity, port to dearly the private private of the southand the set of had passed.

had passed.
If given great pleasure to communicate to the general same and the properties of the properties of the properties of the great passed on the properties and despatch with which every officer duclongs de his duty, and the cherrful alacity with which every critical abeyed the call of the law.

Though the call supon the light trodps was so promptly obyy.d.

possibility of escape; some had already been immolated by an e

non-libiting of escape; some had already been immolated by an exceed people.

I feel the highest gratification in adding, that the readiest aid was afforded by consuders Elitio of the United States havy, and adetachment of sailors from the ship Natchez under his command, who, antiwhitationing they had just returned from a long and distant charge. Much is also due to the thirty of the sailor of the sailor

who has never consecuting, have been represented for reasons where were de-med saturfactory.—There is much reason to believe what the spirit of insurrection was not confined to Southampton; many convictions have taken place elsewhere, and some few in distant countries. From the documents which I berewish hay before you, convictions have taken place where he water and some few m distance that the documents have been been such that the content to be the plan of treason, where it too much reason to believe these plans of treason, there it is not much reason to believe these plans of treason, there it is not much reason to believe these plans of treason, there is no some of the might be the plans of the plans that the treason that the plans that the plans the plans amongst our proper plans of the plans that the plans that the plans the plans the plans that the plans that the plans that the plans that the plans the plans that the plans the plans that the plans that the plans the

Upon imprecing these determines, and contemplating that are of one of the property of the confidency, to preserve, a far as possible, the good understanding which exists, and which ought to be chrished, between the different members of this muon.

The result of this correspondence will be made known to you. as sonn as it is asc-rtained.

soon as it is avertained. The most active among ourselver, in stirring up the spirit of revolt, have been the mero proprieders. They had acquired great accrediancy over the minds of their fellows, and indused all their opinions, which had prepared them for the development of the intal design.—There is sho once rason to believe, those preceders have a perfect understanding in relation to these plans, the foreign of the cantern contains—and have been the channels throughout the eatient countrin—and have been the channels throughout the eatient countrin—and have been the channels there by the agents and emissaries for an apparent product of the entertained and emissaries for an apparent product of the entertained an apparent and emissaries for an apparent into a afforder for platting treason and comparent, to rebel and make insurrections, have been treat; through the indulgence of the magistrary and the laws, large collections of slaves have been permuted to take place, at any time strongly the week, for the cost-mide purpose of indulging in religious workpip, but in many instances the read place, at any time strongly the week, for the cost-mide purposes of indulging in religious workpip, but in many instances the read patternment, and constitues they also different characters. The place, which the mesk and cleartable of other starts have seen cause to situative as a freedom in the bosom of our society, have been read. What shall be thought of those fixeds, who, having an interest in our community, for verbeless seek to excite a parent. here real. What shall be thought of those frends, who, having no interest in our community, in varinless seek to excite a servise warl—a war, which valuates itself in the manuere of unoffending women and children on the one ude, and on the other, in the sacrifice of all wite have borne part in the savage unofernaking, but only should be severest punishment be influeted upon those found within our reach, but decisive measures should be adopted to make all their measures shorter. The public good required the negro prachers on be ul-treed, who, full of ignorance, are incusable of inculesting any doing but noting of the widest use pestition; thus preparing it unit oments in the hands of the Achieum and guanting against the another preparing these.

enary agregators to a extroy the public tranquisty.

As the means of guanting against the pushble repetition of these saugmany scenes, I cannot laid to recommend to your early attention, the revision of all the laws, intended to preserve in due suborduntion the slave population of our state.—In organy these substitution in post you, it is me not be understood as expressing the sightest doubt or apar limition of general results—all community a net risble to utilize from the dagger of the marder rand midnight avassin, sull it behove them to guard against them.—With us, the first returning light displicts the dauger, and soon

witnesses the munderer in chair uses the mainterer in chains.

mugh means have been taken by those of other states to age

To the end, development of light intuity from the eventh and light-south regiments, and from the Garrier geginn of cashing data fourth light artillery, under caption Harrison and Richards and fourth light artillery, under caption Harrison and Richards and Forth light artillery, under caption Harrison and Richards and report to light end of the second and the second and the second and proved in the grade and proved in the second and the second and proved in the second and the second tate our community, and discontent our slaves, and justic them to attempt an ountainable object, some proof it also furnished

was deemed prudent to arm the mitini in a manner estentiated to quiet all a payteenionis, and arm were accordingly Junished to the act of them, upon this indeen energiency was so accustly fall by those them, upon this indeen energiency was so accustly fall by those in commission of the profits as to induce commodore Varrington, it commission of the profits and the care. That gallant and particle officer did not hesitate to assure the responsibility of this step, and it is gratifying to perceive; that his conduct has met the approximation of the public functionaries. The policy of distribute as the men and officers had been ealpably negliging in perceive. As the men and officers had been ealpably negligin in the fact and the control of the profits of the control of the profits of the control was deemed prudent to arm the militia in a manner calculated to not weigh the cap-able sacrifice of life, a seenes of Southampton,

[ Next follows a great deal of matter about canals or ro ads conmplated to be made, and of the advantages that will be deriva-e from them when made—as it has been the custom to speak in Virginia for somewhere about fifty years past!

It will be necessary to call your attention to the present condi-It will be necessary to call your attention to the present condi-tion of our milita, and to recommend a thorough revision of full law on that subject.—Much of the strength and efficiency of that kind of force depends upon the promptness with which they can be ready for action, and some knowledge of the first duties of a

be ready for fectors, and some knowings of the arts nature of a solidie; light through might be intereased in except hashion and re-giment with great advantage to the service, and might to be re-couraged by privileges and exemption, asthey will alway be the first cealted into service, and unlike the inflantry of the line, they will be called out by whole companie visual of being detail-d for duty, as is now the ease, with the body of the milita. From the dexterty and skill of our critizen is the use of the rift, and a founders for that kind of arms, as well as the great ene and a founders for that kind of arms, as well as the great ene and exists of exceptions from into retirents in two services.

a fondares for that kind of arms, as well as the great ear and time it requires to dull as a gument in the rine exercise, the proEron the position in which this time is placed and the attitude occupied by her, it becomes a matter of very serious reflection, whether a force more available than the militia may not be advantable and attainable at a small expense. If you well-organized, intermediate force, even a foreign war might be sustained without intermediate force, even a foreign war might be sustained without serious and the serious serious serious serious full and strong.—Were one company to be authorized by law to be raised by robustary enlistment from such regiments of all of the regiments as well give the number of melt required, to such namber of regiments as would give the number of melt required. These toldiers might be permitted to live at home and work there could be a such as the serious of the serious ser

by the public guard now in service.
[Next we have several paragraphs on local sobjects. The university is mentioned with much approbation, and its prosperity med.]

Our treasury will be found in a highly prosporus condition; and affords proof of the energies of the state, as it maintains its position under so much marked in the government which acre the end of the fixed year 1820, was 88.941 idollars and 80 cells that which remained in the treastry at the end of the fixed year 1820, was 88.941 idollars and 80 cells—1831, was 106,495 dollars and 71 cerus. The acrual amount in the treastry on the fixed by of the present month, was 224,590 dollars and 72 cerus.

The constitution of our state has made it the duty of the governor-tre communicate to the legislature, at every session, the condition of the commonwealth. "In discharge, this duty, it will be meetary for the to call your attention to our federal relations, the state of the control of the c evinces an increasing disregard to the rights of the states, is passage of unconstitutional acts, and he propositions for other passage of inconstitutional acts, and he proportions for old its con-plaints, memorals, and protest of concerd the sources. The con-plaints, memorals, and protest of come of the sourcing wars and this confederacy have been consisted or during grade, and the constitution were about to be merg of in the wall of an uncer-arisated majority. No one can move doubt the trend-ray of that government, or the numerous calculations and the con-plaints are consistent of the contract of the contract of the con-plaints are also the contract of the contract of the con-tract of the contract of the contract of the con-tract of the contract of the contract of the con-tract of the contract of the contract of the con-tract of the contract of the contract of the con-tract of the contract of the contract of the con-tract of the contract of the contract of the con-tract of th

jority is uncestrained, and that government is suff-red to search through their own records, for pre-edent upon which to found through their own records, for pre-edent upon which to found at chain, by making that constitutional now, because heretofore the name acts have been done by themselves, it is equivalent to the actual destruction of that instrument, and the substitution of the actual destruction of that instrument, and the substitution of way. It is even now strongly insumated that the states cannot trypus to arrest an uncannitational measure; if so, there is already no limit to fed-ral power, and our short experience has a constant of the dirent.

Wirthin resisted the nurroutions of England, and encountered the loxard of war for political existence, and sought to guard against uppression, that her citizens might rajoy the liberty which belonged to them, and appropriate to their own use that which belonged to them, and appropriate to their own use that which the state of t Virginia resisted the usurpations of England, and encountered

tions, the constitution of the United States had been misunders stood, and is insufficient to accommiss the objects for which it stood is a substantial to the objects of the stood of the they are unconstitutional, the federal government has unexpel the rights of the states, and by constituting itself the solo pludge of its powers, has created a new political system, subversive of that to which allegance is doe.

to which allegiance is due.

If the legislative expediency is to triumph over constitutional rights, and the obligation of outles be disregarded, then all human means for the security of liberty will avail us nothing, and free-

rights, and the obligation of outside desire garded, then all human counting the foreign of liberty will await us nothing, and free-more in gene foreign of the counting of th change in these fust measures—But, I fear, too-med to disponiment, we must now prepare to combat a where which has be as suggested, and has enlatted, or in likely to enlist, trong interest in its support. I ref r to the scheme of distributing the terms of the support of the scheme of distributing the large systams have all rady supressed for it their approval; and the perident in the United States has recommended it to congest in his two last animal messages. No scheme could be devised more resistant to us and the other southern states, that this Shauld it be subject, all hope of relief from this appressive system of resources will have a canobid, it as each year will have results of the other southern states, that the other southern states, that the subject, all hope of relief from this appressive system of resources will have a canobid, it as each year will thow results Shand it be abapted, all hope of relief from this appressive system of measures will have available, arealy year will show results there who certificate least, will be tempted to urge forward the most oppressive a spellment, it mercar their protion of the smoll-will cluste who pay most, at best rec ive back but a small power of the protection of the smoll-will cluste who pay most, at best rec ive back but a small power of the protection of the protection of the protection of the protection of the confedence of the protection of the confedence of the protection of the confedence of the protection of

## SOUTH CAROLINA.

In the last Register, page 313 we gave a copy of the report of a commutite of the sectant of this state in federal relations; and mow present the lations; or carrait time a similar commuter of the house of representatives. The letter of president Jackson to extain statem of Chaireston of I that June, 1931-per vol. 49.

page 331) seems irrevocably to have excited the opposition of the

"No written form of government can be devised which may "No written form of government can be devised when may not be liable to various constructuon—to free government can exist without party differences. Hinhertu the wise and particular ment who have administered be general guererment have been careful—as well from a sense of official dignity, as from the more important consideration of the dangerous weight of ufficial authority of the design of Caronia has been elected for the first instance of this unauthorized intension—as the first example of an attempt to close political discussion, by the terror of executive power, or to throw into the scale of party the weight of the executive sword. While, as a member of this confideracy, and auxious for the dignity of its chief executive, the state of South Carolinia cannot but regret chief executive, the state of South Carolinia cannot but regret network of the source of the s

ston.
The committee finds it difficult to find language at once suitable to the occasion and the dignity of this house.

Is the lightlature to be schooled and rated by the president of the United States?

Is it to legislate under the suspended sword of the commander

in chief?

Is the will of one man to be substituted for deliberation—and the enactments of this body to be fashioned by an idet from a president not only avewing a right to annual a law when passed, but practically assuming a right to interpose while it is yet under discussion? The executive of a most initited government; the discussion of the executive of a most initited government; the rather of the starts, undertaken to prescribe a line of remidler or three of the starts, undertaken to prescribe a line of remidler or three of the starts, undertaken to prescribe a line of remidler or latter of the starts, undertaken to prescribe a line of the start of the starts. Under no but be externed a signal instance of forbarance, calmly to inquire into this assumed power of the president over the starts. Under no part of the constitution or perial law of congress, known to the committee, in the crime of discognization recognized or made the start of the constitution of the starts. Under no discognization recognized or made density of the starts of the starts. In chief?

therationing putitionent, the president had not used terms of mure definite import.

If, by the vague generality of the word disorganization, he included as the courtx may perhaps indexes; that a plan of distinction of the court of the court of the country of the court of the country of the unnecessary to discuss a mere hypothetical question, the possible occurrence of which, if the president has contemplated it, is the result of his entire ignorance of the feelings and porposes of this

No one denies that it is his right and duty to see that the laws the United States be faithfully excepted, and no portion of the No one denies that it is his right and duty to see that the law of the Ubited States he laishfully executed, and no portion of the of the Ubited States he laishfully executed, and no portion of the other states of the states of the lates o

LEGISLATURE OF ALABAMA.

Extract from the inaugural address of gov Gagle, of Alabama.
"The power claimed for a state to interpose its authority to prevent the execution of an act of congress within its limits, has given itse to much intemperate discussion, and produced an extinent which theratens the harmony, if not the existence of the

union. However desirable it may be to awaken the general graventiment to a sense of the hijuries which the restrictive and perhibitory system is indicting upon the southern states, it is interested in the southern states and in the southern states are southern states and southern states are southern states and southern states are southern states and southern states are southern states, it is always to the states of the republic.

On an occasion like the great and good men of our country, it will lead to the extrastepts of the republic.

On an occasion like the present, a brief outline of my opinion in all that would be proper, or outline expected.

In the southern states are separate and independent in the state manufacture of them into one undivided whole. A geverament was formed for some strainive community. The relation which the people bear to the state and general government is strikingly similar. But originated from the same source—both operated apon the people in the same amountry and the amount of the people of the tenton of the states, and the other A dissinguished patried of the ervolution, Patrick Henry, in remarking on this subject, in a public address, observed the states, have no greater constitutional right to resist the laws of a sunte being a small minority of the population of all the states, have no greater constitutional right to resist the laws of a sunte being a small minority of the population of all the states, have no greater constitutional right to resist the laws of a sunte being a small minority of the population of all the states, have no greater constitutional right to resist the laws of a sunte being a small minority of the population of all the states, have no greater constitutional right to resist the laws of a sunter being a small minority of the population of all the states, when it because necessary to resert or resistance, its justification rests slone i

atate to abrogate them.

If it be asked what means of redress are to be resorted to, in a If it be asked what means of reders are to be recorded to, in a case of usurpaint by the great government of powers not delegated! I answer to the same that are provided against the extension of the same that are provided against the extension of the same that are provided against the extension of the same that the part of the constitution of the same that the part of the constitution, but to a want of political hones;—to an absence of wirtue and patriotism, without which there is but little preference for one for one of government.

over another.

It was obviously the design of the compact by which the union It was obviously the design of the company of the control was established, to submit to the general government the control of our foreign affairs, while our domestic and internal concerns to the base who management of the states. When it is reof our farrign affair, while our domestic and innered some were to be left to the management of the states. When it is re-membered that the constitution was constantly and necessarily liable to be construed by thirteen state, all independent of each other, and acting without concert, in obtaining its sense and meaning; it cannot be supposed that the convention would over-look the cellisions which would unavoidably arise between the icleral and state authorities, concerning the boundaries of ju-riodiction. It was indispensable to the success of the cheme, that there cullisons should be guarded against, and hence the everal feature in that instruments on this subject form a promisent feature in that instruments on this subject form a promisent "The constitution and laws of the United States and treatis-

"The constitution and laws of the United States and treaties "The constitution and laws of the United States and treaties made under their authority, are declared to be the superme law of the land, and the judges of every state shall be bound thereby." The judicial power shall reason to sail case in law and equity "the judicial power shall reason to sail case in law and equity treates made under their authority."

Should these provisions in the national compact he observed with a due regard to the objects which they were designated to state, and the submitted to in the spirit in which they were adopted, occasions for complaining against the federal or state governments would is slown over.

occasions for companing against the indexa or state governments.

Give to the judiciary the legitimate participation in the operation of the government, and it will be found a wall of defencetion. It will be alike unmoved by the assaults of ambition and
the produced by the state of the state of the state of the state of the contending pointies I parties, and unconnected of by any state of the contending pointies I parties, will hold the even tenor of its way; dispersing justice with an impartial hand, and deiding upon our
rights in the very spirit of the constitution.

The produced by party, it will hold the even tenor of its way; dispersion
to the state of the state o

inflower pointing the the same disc. In the control of the control

## NILES' WEEKLY REGISTER.

Pounta sentes. No. 19-Vol. V. BALTIMORE, JAN. 14, 1832. I VOL. XLI. WHOLE No. 1.060

THE PAST-THE PRESENT-THE THE PUTCHE.

ERITED PRINCED AND OUR ISHED RESIDENCE. AT \$5 PER ANNUM, PAVABLE IN ADVANCE.

at PTo get-in a sketch of some of the leading its to speak of the wages paid to the workmen in the speeches delivered in the house of representatives, on motions to refer the memorial of the bank of the United States, [without postponing or totally rejecting much Other matter actually in type or prepared for this publi-cation, we have issued a heavy and close-printed supplement—and the present number consists of twenty-four pages. If practicable, with due attenuou to current proceedings and events, we shall publish, next week, sketches of some of the other speeches on the halk subject, which we now simply notice-for it is a question about which the people should be well advised by being placed in possession of the facts.

The late "honorable" Mr. Hill's paper - the "New

Hampshire Patriot," says "Hezekiah Niles content's that areduction of the duty on coffee has raised the price."

As the plea of stupidity cannot be offered to excuse the cunning managers of this journal—it remains only to observe that the statement is a wilful untruth. I am, however, so much accustomed to such things in that paper, that the occurrence is harrily worth this notice.

WAGES. It is well known that the price of glass and glass wares has lallen about one-third since the passage of the tariff law of 1824-and, that, though some articles are still received from England, they chiefly arrive in British ships and on Brutsh account. The general advantages derived from the establishment of this important manufacture, will be shewn in the report of the committee of the New York Convention, to whom the other states of the New York Convention, to whom the subject was referred; but, in a communication which the subject was referred; but, in a communication winch has passed through my hands for the chairman of that committee, a glass manufacturer says—'4 expend for labor 2,500 dollars a month—being double the amount paid in England, and three times the amount in Germany, for making the same quantity." And yet the price of glass has been reduced in the amount of the protecting duty imposed! There is something very important in the first constant 1 is nonlessed unified, that foreign the facts suggested. It is rendered manifest, that foreign manufacturers have speculated largely, and profitably, on our wants; and that the domestic competition may be safely relied on to reduce the cost of commodities to consumers, when duly encouraged to act against foreign aupplies. Glass and glass wares imported are subject to a duty of from 2 to 3 cents per lb. and an ad valorem duty of 20 to 30 per cent. in addition -- which duty, instead of operating as a "tax," has had the simple elfeet to furnish us with home-made glass and glass wares at less prices than we paid for them before the protecting duties were taid; and to keep within our own country five or six millions of dollars a year, which would have been remitted to pay for the glass at present con-sumed. These millions are nearly as much a clear profit as if so large a sum, in eagles, were dug up ready coined—because of the new demand for labor, the tens of thousands of cords of wood, the thousands of tons of sand, the hundreds of thousands of bushels of coal, and other ponderous articles required - such as would have no market, or, at any rate, a much less valuable one, were it not for the manufactories of glass located in the neigh-borhood where such articles abound. And it is probably in the greater cheapness of these materials, that, though the cost of labor is much higher in the United States than in England or Germany, the price of glass has been reduced one third. But my present intention

glass-houses: perhaps in part caused by the fact, that there are not yet native workmen enough to perform the labor required, and the frequent retusal of forei n the moor equinces, and the frequent return to there a resid to teach apprentices, from which much injury has resulted—but this difficulty is passing away, and has no effect upon the general remarks that I propose to make on the subject of wages.

As the price or value of labor regulates that of every thing else---even of gold and silver, (being themselves only representatives of labor)---so the amount of wages generally paid must be accepted to shew the general prosperity or general adversity which prevails in a country. I do not know that I have ever seen this broad country. I do not know mat I mave ever seen unis orous proposition so freely advanced—but there earned be any doubt of its practical soundness. Recently, when po-tatoes were only 4 cents per stone of 141bs. in Ireland, hundreds of thousands of persons were on the borders of starvation, because they could not obtain a sufficiency, even of potatoes, to support life; but at that time the with meat and bread, and the average price of potatoes here was 8 or 10 cents per 14lbs. The latter, however, because of the ability of American working men to ob tain plentiful supplies of other food, were rather used as a dish on the table, by way of variety, than as being ne-cessary to subsistence. A thousand cases might be pre-

sented of a character similar to that just given --- but this one is sufficient.

High wag s may be a burthen, under peculiar circumstances, on certain parts of the people, or some portion of a country t-but if they are general, they must be generally advantageous, and especially lin the United States—for it is their amount that really assesses the other kind of property, real or personal---even a pro-perty in slaves. Tens of thousands of persons in this country, having no other capital than labor, become annually proprietors of lands and houses -- freeholders; opening the way to new condidates for independence, through industry said economy, in perpetual and glorious succession. The factories turn out thousands of these every year; and hence we have a population such as does not exist in any other country; and, I venture to say, such as cannot exist under a low state of wages paid to working men. But separated from these creations of intelligent, prosperous and liberty-defending persons of property, and the example which their success must have upon every class of society -who would exchange the full fed and saucy laboring people of the United States, for the gaunt laborers of India and Chins—the two milfrom of squalid paupers of England, the wild and half-starved populaer of Ireland, and the miserable mul-titudes that breathe in Spain, Italy, and other countries of Europe and Asia, where wages are low?

What is it that establishes the value of money, seeing that we cannot eat or drink eagles or dollars? that we cannot eat or tirms eagles or contact as it not the labor expended in the collection and coinage of gold and silver, that determines the value of these me-tals? It they were as plenty as iron and lead, they would not be more valuable. High wages depreciate, and low wages advance, the current value of these me

Sometimes high wages give evidence of the unthriftiness---perhaps I might better say, laziness of a country.
Mechanics who obtain only one dollar a day in some Mechanics who obtain only one dollar a day in some parts of the United States, in other receive one dollar and a half or two dollars, for rendering the same ser-vices. The main cause of this is—that labor is ho-nored in the first, and dishonored in the second, but yet in the latter, the price of labor, in general, is low, and for the reason that it is degraded. But such exceptions, proceeding from such causes, are indignantly re-jected as coming within the range of my remarks.

<sup>&</sup>quot;These duties are moderate, compared with those imposed on glass imported into England, unless the duty has been recently changed. By Pope's Customs, brought down to March 1820, the duty on glass manufactures, generally, was eighty per cent. on their value in Panisma England. Vol. XLI. -No. 25,

tals. A dollar is a dollar, and weighs the same in India, England and the United States—but its operative, or enter that, is very different. It will hire a man in India two weeks, in England nearly a week, and in the United States a day. It prosperity, then, were measured by cheap wages, India would be the most prosperous country in the world, and the United States the most miserable. This shows that comparisons of price, between different nations, cannot be otherwise than absurd. Price is attogether artificial; or applicable only to things within a particular country. A learned and grave senstor of the United States was lately willing "to reflecte" one people of testes—"no people in the world, except the English, were so heavily taxel!" I like this love for the dear people; but would ask, in what country do they live half so well as in our own? Here is a practical question! The ad captandm idea of taxing the country do they have been considered to the country do they have been considered to the country do the cou tion, is oppression—and so it is in England, but not in the Unied States. There is no more an ability to equalize the sum of oppression sustained by the amount paid in taxes, in England and the United States, than to assess the value of lands by the quantity of alligators which it contains to fence it! From the pointed reference of this senator to the "consumption of much and mik." it might have been supposed that he was entirely familiar with the fact—that the 'proof of the pudding is in the eating of it." There is much wisdom in this any log! If its leadings are correctly followed, it will surely appear, y the that the amount of every burthen is graduated b capacity to bear it - that value is comparative, and that means constitute the measure of all things. A very common laborer in the United States receives 450 conts a week-such a laborer in England obtains considerably less than 200. A tax on the first of one cent per day is only a 75th part of his earnings, but on the second is a 33rd part of his wages--or more than twice as onerous, though of the same nominal amount. We hope that he will have reference to such facts, when he again expresses a willingness to "relieve" the people of the United States of a burthen which they have never complained of, being insensible that it exists-except in the speeches and writings of politicians, which they do not always comprehend, and less frequently accept, unless under the influence of a temporary excitement. The people of the United States are not the most heavily tax-I of any people in the world, except those of England. If otherwise, they are more severely oppressed than those of Ireland—but who ever heard of 150,000 persons in a state of starvacion, in one district of the United States? Hill not oppression bear the same feuits every where?\* But further—a laboring man in this republic may obtain twenty or more pounds of wholesome meat, or lorty or more pounds of good flour or meal, for one day's work-in England he cannot purchase these things at all, unless occasionally, and in small quantities. Such is the difference between high and low wages—or,

. Such was the state of things which followed the glorious financial prosperity? of 1816 and 1817, when the revenue from importations amounted to exty-three mil-lions of dollars, and destroyed those domestic manufactures and that valuable interne trade which had grown up during the restrictions on commerce and because of the war. This revenue cost the people of the United States ten times as much as the government had expended during the war. It swept the land with the "besom of desolation"-extreme suffering presaded; the attorneys and sheriffs were "as busy as Old Nick in a gale wind:" but the action was not fully left until 1820 and 1821 (in which years the revenue from importations amounted only to 28 millions of dollars, because we were unable to pay for foreign goods!) and then thousands of theretofore aubstantial men were reduced to actual poverty, and tens of thousands of respectable persons were willing to earn even 25 cents per day, besides their victuals, on the roads and highways. The amount of the revenue had cursed the land, in prostrating the value of domestic labor. I never look back to that awful pegipd, without renewing my vows to support the "Amerion System," until protection afforded shall produce essential prohibition, as has been the case in respect to American navigation. To which let all the people say AMENI

in better terms, the cheapness or dearness of what we

But there is one yet greater and more important con sideration belonging to this subject. Our government is one of the people—or as nearly so, perhaps, as it is practically possible that a government should be. The common laborer has the same political rights and power as the wealthiest landholder. How interesting is it, then, that he should be well led and clothed, and have the means of educating his children, so that they may become good citizens? Without such comforts, the right of suffrage must run into a curse-for that right, unless generally exercised with intelligence, must needs be productive of evil. The wealthy can take core of themselves-but it is the advancement of the laboring poor that I am most anxious about. With low wages, these are little better off than Russian slaves or British pampers-they are fastened to the will of their employers-must take what is offered, or suffer, but when wages are high, labor must needs be in request-and working people become parties to all agreements with persons having money to nurchase their services. What are the effects of this? Four-fiths, perhaps, of the wealth of the U. States is in the possession of the produclive classes. In England, four-little may be in the hands of the non-productive classes. I have more than once stated the fact, derived from a most respectable cuptain in the navy, that the Constitution had two bundred freeholders in her crew, when she captured the Cyane and Levent. Are there so many such seamen in the whole British navy? In England, when wages are high, we hear nothing of public distress—when they are low, musery abounds, for the "circulation of values" is diminished, and money becomes distressingly searce. Say, there are one million of persons in the United States whose labor yields what we shall eall one dollar a day the product is 300 millions of dollars a years reduce these to 56 cents per lay, and the annual oreulation of values is directly reduced in the vast sum of 150 mil-lions a year. But this is not all. The price of all things must descend with this dimmissed circulation; and the first loss of 150 millions would certainly be swelted to at least 600 millions, in the lessened values of lands and commodities. Persons cannot buy, if they cannot sell. The poor Irish would not purchase potators at one-third of a cent per lb, because they could not dispose of their labor, the noily thing which they had to exchange for money, or potatoes. Herein is the principle and operation of protecting laws. It they advance the price of labor, as I am quite willing to admit that slicy do, they must necessarily benefit every class of society, and especially those who own labor, including possessors of slaves.

These are more hints of the subject. It is one of was magnitude, and intense interest. What is the state of the poor lemales arming us, who carn from 12½ to 20, cents per day, whose cause has been so often and so feelingly advocated by my venerable friend in Philadelphia? They are almost as identitute of hope, (the grand incentive to honorable action), as the poor women who labor in the fields of the "mullifers," and they live as badly. If these earned even the small sum of 50 cents duity, what a different supect would their homes and their hidden assume! The factores, generally, afford the latter amount to tens of thousands of females, and there is yet something to lay up—something to start in the world with. I would that sil—those who are, or shall be, mothers of citizens of this republic, shall have "jewers" on the provided the silver silver in the sound of the silver in the silver in the sound of the silver in the silver in the sound of the silver in the silver in

"The nonning roller," as we see the protecting policy coded in a southern paper, must be "totally remounced?" It will be—widen free white men are souther to be ranked with black slaves; when the musket

bearers of the land shall confess a "divine right" in t slave-owners to construe the constitution and prescribe the law, in all things; when "angels" shall descend and take the shapes of hogsheads of Virginia tobacco, and archangels those of bales of South Carolina cotton, as weening ets those of bales of South Carolina collon, as being the outy things which partike of their heavenly nature, being chosen products of involuntary labor, extorted by eruelty! then—THEN, will the 'robbing policy" be abandoned, and task-masters have the honor of bringing into use a system of measures which shall render all the working-people of the United States as miserable as their own breech-elouted negroes-as wretched as English papers—stupid as Hessians, and as rude as Russian boors. Might not these enlightened and liberal lords of the south he content with the fact,that they have about twenty-two members in congress to represent the power and glory of their slaves? - though the horses of Pennsylvania, or the oxen of Connecticut, have no part in mking the law? No-they are not content with this-the yet large unjurity of power in congress must be rieled to the muority, else their Englishmen will "calculate the value of the unon? Let them "calculate," Now is as good a time as in. Let them "calculate?" Now is as good a time as any to sliew the result. If that contemptible part of the people who hold it right to make such "calculations" are to bring them into practice—the sooner they do it the better. We offer no sacrifices to fear—because of what they may do. We feel able to take care of ourselves - let them look to themselves!

But hard names hurt not. Though all the cotton bagging ever made in Scotland were used to bale-up frothy and furious denunciations, and all these were cast against the Alleghanes,—the mountains would not leave their location. It is the privilege of the improvident and the lazy, to grunt and grumble at that prosperity which attends economy and industry—and they may hate, if they please, those enjoyments in others, which they have not the virtue to carn for themselves: But here is the stopping-place. The majority, always rethey have atopping-place. The majority, always re-apectful, as it should be, of the rights of the minority, will both constructhe constitution and enforce the law. If what they believe just and most beneficial to the country may be 'nullified,' at the will of a few-let us know it immediately; for the dominion of Russia is not more severe than would be that of these men: they would graduate all things by the measure of labor contained in the muscles of their own black slaves.

We would yield much to a spirit of concilution-and respect what we esteem gross errors, if believing them to be honestly entertained: but it is not for the few to dictate conditions to the many.

CONDITION OF THE LABORING POOR IN ENGLAND. Since the publication of the article under this head in the Registra of the 31st inst, (and it was prepared about three weeks before), I have seen the following in the "New York American Advocate," extracted from an English paper. It is interesting but only goes to atrengthen the remarks made on the subject generally.

Since and a few days before Christmas, a committee of the house of lords, appointed "to consider of the poor laws," have pursued their inquiries to a considerable extent, having examined about 30 witnesses, consisting of peers, commoners, elergymen, farmers, &c., sud sat on 13 different days. After the recess their lordships will resume their labours; but though they have reported no observations on the evidence, because their investigation is not concluded, previously to the present re-cess, they reported to the house the evidence they had taken. From that evidence the following are extracts. (The marquin of Salisbury is the chairman):— The rev. James Beard, a elergy man and magistrate

of the county of Bedford, and resident at Carnfield, ex-&Drined.

The population of that purish is about 1,350, and the number of acres in it about 4,000; about two-thirds

Have you many persons out of employment during the winter?-About one-tourth in the dead time of the winter.

ing taking care of the roads.

Can you state what rate of wages they receive when so employed by the parish?—8s. per week, the married men with families; a single man, until this last week,

3e. 6d. and possibly 4s. What proportion of the able bodied laborers in your own parish were out of employment last year?-I should think from the mouth of November to the end of Janua-

ry, nearer 30 than 20 out of 100.

Have you adopted any means of providing employment for those laborers? I have endeavored to do it.

State the circumstances under which you have done My parish is an open field parish, and we have 70 or 80 seres of grass common land in it. Three years ago I called the parishioners together, being very anxions to put part of this into cultivation, for the benefit of the poor and the relief of the parish. Out of 22 occupiers 21 agree; but the 22d, having the power of turning his stock in, he declared he would, and of course put a complete in, he declared ne woming and of course put a compacts top to any thing of hishandry. However, leat week I called the parish together, and there was the same unamity, and that individual bid not disagree. The married laborers have now got a rood of bank cach allotted to them on Saturday, and the single men hall a rood, at

the rate of the an agre.

To work for the parish, or to work on their own account?

On their own account, under certain rules. Is it intended to make advances to the laborers to en able them to cultivate this land?-I have done it myself individually, out of my own pocket; that is to say, I have advanced £20 towards fencing of the land, and given every man a new spade.

Can you state any particulars as to the employment of laborers on the roads in the parish of Kempston? The last year, in the mere gravet digging, that parish expended £750; and I am sure I am not saying too much when I state I could get the same gravel dug for £50.

Can you state what the wages paid to the laborers were in that parish for that work? The married men 8s. per week; making up their tamilies to a specified amount.

If a man gets is. 10d. per head per week for his fami-ly, is it the practice of the magistrates to order further relief! I have not done so until within the last three weeks.

Are there many laborers and their families who existed previously to the last three weeks on 1s. 10d. per head? Last Wednesday I went, according to the direction of the lord lieutenant, to swear in special consta-I met ten farmers, whom I swore in; they had brought 74 laborers also to be sworn in. Upon the laborers being asked at the door, they would not come in. I went out to them, and asked them the reason; they said they wanted food; upon which I selected lour of the most intelligent of the party. I asked them to go into a private room. I inquired the character of the men from the farmers: and they said they were very honest industrious men. They gave me the earnings of them-selves, their wives, and their children they did not quite come to 2s, per head per week of the four fami-lies; they were the best and most industrious laborers in the parish. I went in to the farmers, and told them it was morally impossible to expect those laborers to go on at that rate of wages, and I trusted they would not think me unreasonable in begging of them to give them 22. 6d. a head per week; that is to say, a married labor-er to have 9s.; a single man of 20, 6s. per week; a siner to uave ys.; a single man of 30, 6s. per week; a single man of 18, 5s. per week; that if a married laborer has 9s., and has 2 or 3 children, they would make it up 2s. 6t. per heal; if there were 6 of them, that would be 15s. per week. The fariners having consented, I went out to the laborers, and spoke to them: and I never saw a body of people so thankful in my life. This is the parish of Lidlington.

I have but few additional comments to make. It is true, that the prices stated, or compensation paid, have relation only to agricultural laborers-the manufacturera, in the worst of times, (though perhaps worked harder, or at any rate, a greater number of hoors m the In what manner are the poor employed during the day), have been better past, if able to obtain full empiriser time by the pariser—in digging gravel and take ployment. But the latter are subject to great presults taking ears of the roads.

105 taking ears of the roads.

trade-for as an example before me, one house at Kid- | Adams, for the presidency. And the Scutinel, in all traue—tot as an exampte octors me, one nouse at Anderminster, manufacturing carpets, lately withdrew 1,200 pinneds, say 5,300 dollars, pand in weekly wages, and probably cast 7,000 persons out of their usual means of subsistence, though rated at more than twice the of subsistence, though rated at more than twice the amount allowed to agricultural laborers in the preced-ing statement. But it is not worth while to extend remarks on this matter. The free white laboring peoremarks on this matter. The tree wine moving peo-ple of the United States will neither agree to be placed in competition with the white slaves, or paupers of England, any more than with the black slaves of America. "This is the long and the short of it,"

PAUPERS. Of the 2,256 paupers in the alms house, at Bellevue, New York, on the 31st ult. no less than

at Bellevue, New 10ra, on the black and 1,049 were foreigners.

All our cities are severely taxed to feel and take care of the beings that are cast out of the British poor houses, or sent hither, to starve or subsist, as the case may happen. Some strong regulations on this subject should be adopted. Let those who suck the orange, not throw the peel at us.

MULBERRY SEED AND SILK. A kind friend in Connecticut has sent to me a small parcel of the white mulberry seed, for the use of those who may please to plant them. He thinks this branch of the planting interest will come into common use, and that a few trees will be worth more than a gold mine; and become blessings to the people of the United States, by engaging the slight attention and moderate labor of aged persons and young children, which is now so generally also sent a small parcel of silk, prepared for knitting sibo active sman parcer or sine, prepared for annuing stockings, which he assures me will prove the most pleasant and the best of any that I ever used—of which I have no manner of doubt, from the character of the

Tonacco. - The actual value of all the tobacco, exelusive of any portion snuggled, annually consumed in the British Kingdoms, does not exceed £350,000, while the revenue derived from foreign tobacco amounts to £2,800,000 a year-eight times the sum.

22,800,000 a year—eight times the sum. Yet there are some tolkace oplanters in Marriand and many in Vurginia, who laud England and her "free trade." How was it that we levied a "tax" of 18 dollars per ton on the entry of Freuch vessels, because France so taxed ours, - and that, though tobacco is thus taxed, and flour virtually excluded from England, except in starving seasons, we submit to John Bull? What have the people north of the Rosnoke to give the latter, (that he will condescend to take) for his fustians and calicoes? He requires that we should travel to and and calicoes: He requires that we should travel to and fro, and gather specie for him. Let him gather it for himself—and we for ourselves! If he won't take what himself—and we for ourserves: It he won't take what we have got to sell, ''hase is the slave'' that will take what he has got to sell. John would have us to ''make bricks without straw.'' And hence there arose a "Moses" in 1776. His race is not extinct—though the revolution is not yet over.

VERMONT. The official returns of votes in the 4th congressional district, on the eighth trial, leaves little hope of obtaining a representative from that district for the present session of congress.

Bailey. 2,925 Allen, Galusha 2,613 842 Scattering,

PENNSTLVANIA. The "democrats" of this state-PENNSTLVANIA. The "democrats of them), and there are some eight or ten descriptions of them), and distribute or annear so, from the noise which (and there are some eight or ten descriptions of them), are much divided; or appear so, from the noise which the different parties make. The old orthodox Jackson democrats, whose "organ" is the Philadelphia Sensinel, support "Jackson and Wolf"—the new orthodox led on by the "rewarded" Philadelphia Inquirer, hurties and "Activation and Activation and rah for "Jackson and Schulze"—the late governor, nownamed for a new election in opposition to Wolf. The now named for a new election in opposition to vvolt. I ne latter is called, by its enemies, the Van Buren-Jackson democrats. Mr. Schulze, we had thought, was not a very warm-friend of general Jackson, when opposed by Mr.

appearance, broadly supporting the re-election of pre-sident Jackson, has the following paragraph about the bank of the United States!

"The question, both constitutional and expedient, is a question of necessity: and the necessity is overbank of the United States. They will not be without one for one year. Should there be a year of such void, one for one year. Should there be a year or such your, it would be twelve months of great suffering and datress. All reflecting people, lawing no prejudees or gratify, must depresate such a crisis, and pray that things as they are may be let alone. Modify, if you not just the better, but beware how you destroy." can for the better, but beware how you destroy.

can for the better, but beware how you destroy."

This, we suppose, according to the new political ethics, is "going the whole" on the ancient democratic maxim,—"measures not men."

MARYLAND. Extract from a letter to the editor of the Baltimore Patriot, dated Annapolis. By the last annual report of the treasurer of the West-

ern Shore, it appears that the actual income of the state for the year which ended on the 1st inst. was \$239,895 19

To which being added the balance in the tressury of the Western Shore on the 1st Dec. 1830 54.106 AR

The available aggregate amounted to \$294,002 07 The disbursements for the year which ended on the 1st inst, were 216,824 43

Which, being deducted from the available aggregate, shows an unexpended balance of the state for the years then ended of

\$77,177 64 Subject to appropriations to that day then uncalled for 41,810 42

And leaving a clear unappropriated balance in the treasury on the 1st Decem-

ber, 1831, of \$35,867 22 Which will enable the Committee on ways and means to discharge the entire amount of the public debt, which is payable at the pleasure of the state.

George Howard, ean late acting governor, has been elected governor of Maryland for the ensuing year. William Potter, of Caroline, T. C. Worthington, of Frederick, Samuel Turner, of Calvett, Robert W. Buret, of Prince Georges, and George W. Purnell, of Worcester, were elected his council.

BALTIMORE—bills of mortality for 1831. Whole number of interments, 1281 males and 1027 females— 2,308; of whom 632 were colored persons-514 free Of the deaths 123 were still born, 514 and 118 stares. Or the deaths 123 were still born, 916 under 1 year; 410 from 1 to 5; 272 from 5 to 21; 473 from 21 to 40; 279 from 40 to 60; 103 from 60 to 70; 64 from 70 to 50; 41 from 80 to 90; 6 from 90 to 100 two 105, one 106, one 112, and one 120.

Diseases—apoplexy 18; easualty 33; child bed 24, cholera infantum 248; consumption 340; convulsions 78; dropyy 30; do. in the head 33; drowned 29; dysentery 24; fevers-estarrhal 24; bilious 117, acarlet 25; revers—courries 23; outdoor 117, scarrer 101, 1)— phus 39, intermittent 2; various inflammations 42; infla-enza 11; intemperance 45; liver complaint 19; mara-mus 32; mesales 25; ott age 103; pleuring 29; maril pax 25; still born 125; sudden 31; teching 15; 417 cmknown. All other diseases described were under 18.

The present population of Baltimore is about \$2,000 of whom 15,000 are free colored persons and 4,900

ARKANSAS. A memorial has passed both houses of ARRAMAS. A memorus has passed both houses or the legislature of this territory, praying the removal of gov. Popes; who seems to have made a free use of the toto. It is intended that the legislature of Michigan may prefer a like request against their governor, for non-residence. There seems to be much feeling in this latter territory, no account of those who have been appointed to "rule over them."

"Gur Faux's Day " The list anniversary (Nov. 5); was celebrated in England in a very unusual manner! A strapping fellow, dressed in bull canonicals, representing the archbishop, was parasted through the streets of Canterbury, and an effigy of "his grace" was bornt amidst the grouns and executions of the people. So it happened at several other pisces. Mock prests officiated, and gave out chaunts, which the people sung with great approbation! The tollowing verse may serve as a sample of the mad feeling that prevails.

"Remember, remember, That God is the semier 

Who rob ns of all that they can." At Huddersfield, the effigy of the bishop of Landaff, euriously fitted up, was burnt. A mock priest read an address to the multitude, concluding thus—

We commit his infamous body to the firmes, earth to earth, ashes to ashes, dust to dust, in the certain belief that eternal damnation will be his portain, and that he will never inher t a glorious resurrection!

"Good Lord, put down aristocracy, Let boraughmongers be abhorred, And from all tithes and shovel hats Farthwith deliver us, good Lord!"

THE BOBY OF CLERGY OF England and Ireland cost £8,852,000 a year, their followers amounting to 6,400,000 people. The dissenters in England and Ire-25,852,000 a year, their followers amounting to 6,400,000 people. The dissenters in England and Ireland amount to 14,600,000 people, who pay their religious instructure £1,024,000 per annum. The clergy of the whole Christian world (England and Ireland excepted), which contains about 188,728,000 people, receive altogether but £8,852,000 a year; so that the elergy of all descriptions in Great Britain and Ireland. which have a population of only 21,000,000, actually are paid more than that of the whole Christian world are paid more than that of the whole Christian websides, by the sum of £1,098,000 per annum. Vide Mr. Coventy's work 'On the Revenue of the Church of Eogland.'

[England may well be called the paraduse ut priexts.]

"BURKING." New Zealand savages are said to eat the bodies of their enemies slain in battle: but persons the bodies of their enemies slain in battler but persons in Great Bristian are charged with slaying inoffensive persons and eating them—or, what is the same thing, of selling their bodies to the surgeons, that they may obtain food for themselves. "Burking," which is the term used to describe the isamable offence, seems to make some progress, or, at least, to cause much alarm in certain parts of Evgland, and some particulars are given that have terrific appearances. If there is truth in these things, the people ought to "lotter" the surgeons.—They are worse than the half-starved wretches who commit murder that their own families any lawe food. commit murder that their own families may have food, Among the "Burkeil," is supposed to be the mate of an American vessel at London.

EXPORT OF FEMALES. The British government 11 now devising plans to send out to the colonists unmarried females between the ages of 18 and 32. Money to pay their passage is to be furnished. As the export is only contemplated to the colonies, we do not know that this country is particularly interested in the scheme; but the ease may easily be imagined in which a "protective daty" would be necessary, if many of the unmarried lemales should find their way to this country. It is probable that this shipment of females is to be made to supply the distant colonies with wives, as it is obvious that in all new settlements the number of tonles greatly exseeds that of lemake. The idea is, nevertheless, somewhat laughable, and if we were among the colonists, and a score of years younger, we should inquire closely whether the consignments equilied the warranty of

the bills of lading, viz:- "in good order and well conthiowed."

[This is sound policy—if it be desired to keep popu-lation 'in cheek." and such as we must resort to, it it ever shall be seriously determined to keep down the amount of our people of color.

BRITISH NOTIONS. Mr. Bulwer, in an editorial arour literature, expresses kindly feeling towards this country. The time is last coming, he says, when America will be a country whose triendship, above all others, England must cultivate, and whose manners and institutions she must accurately know.

In a late number of Blackwood's Noctes, North, after

in a lace number of Diskwood s Nottes, North, Siter expressing his conviction that a revolution in England is approaching, adds:

"Tis as well to be prepared." To which Tickler replies "Inter nos, I have stready put aside £10,000 in the American funds, my cock; and moreover, I have maile a conquest, as we parliament house lads say, of a small croit of some fitty thousand acres, about forty of them cleared, towards the Alleghany region. Omni forti salum patria-that is to say, it you knock my friend John Buil on the head, I mean to take un with brother Jonathan-who, after all, is a very decent fellow, and in my opinion, more likely to have peace and quiet under his own fig tree, by and by, than any other A late number of the London Literary Gazette has the

tollowing: -

"America is the Utopis of our pseudo politicians; and so, 100, it seems to be of our poets, judging by the fol-lowing monical observation by the author of 'Corn law Rhymes,' in his introduction to 'the Village Patriarch. just published: "The unlumpy people of the United States cannot bear to read Crabbe; they think him unnatural, and he is so to them; for in their wretched country, cottagers are not paupers-young men are not compelled to marry or become preachers-marriage is nat synonymous with misery-and partendge shooting is not religion to the elect."

POPULATION OF THE CANADAS. The returns of the population of Lower Canada, as ascertained by the censua of 1830 are nearly complete. They are as follows:

District of Montrest, 287,119 Quebec. 151,167 Three Rivers, 56.279 Gaspe, 1,003

In the returns from the district of Montreal 17,000 are included for the Seignorial part of Beautiarnais and for the county of Stanstead, from neither of which have returns been received. In the district of Gaspe, also, the population of the county of Bonaventure is conjectured merely, being estimated at 500,

The population of Upper Canada, according to the returns laid before the provincial parliament, is 234,865.

Maxico. We learn that the conducts from the cities of Mexico and Puebla, reached Vera Cruz on the 25th of Navember, with \$1,126,834 62, escorted by 70 sol-

diers only.

The English packet Calapso sailed from Vera Cruz
for England on the 21 Dec. having on board \$900,000;
of which sum \$125,000 were destined for the payment of dividends on loreign losus.

PATENTS. The number of patents issued from the beginning of the present year to the 1st December, is 540; and from the establishment of the patent office in 7-90; and from the establishment of the patent of mother in 1790 to the same date, 6,911; of which number 5,931 remain unrecorded. To bring up these arrears, says the secretary of state, would require the labor of five elerks for three years; and to keep up the current business of the office, and record, agreeably to the existing laws, the patents to be issued in future, would require two competent clerks in addition to the present number, He recommends an appropriation for this purpose, He siso suggests the propriety of increasing the fee for obtaining patents, in order to check the numerous ap-

<sup>\*</sup>A person, when resident in a certain part of the United States, which is receding into a wilderness, used to say—that he must seck a new location; for that, a while ago, he made out by eating one negro, but was then compelled to devour two yearly. That is, sell two, that the demands upon him might be satisfied.

National Gazette.

THE AMERICAN NATION. The nature of our political system is well described in the unitexed passage of the oninion of the sunreme court of the United States, in the case of Cohen vs. Virginia, as delivered by the chief instice

"That the United States form, for many, and for most important purposes, a single nation, has not yet been denied. In war we are one people. In making peace, we are one people. In all commercial regulawe are one and the same people. In many other respects, the American people are one. And the goverament, which is alone capable of controlling and managing the interests in all these respects, is the government of the union. It is their government, and in to be, in many respects and for many purposes, a nation; and for all these purposes, her government is complete; and or as ones purposes, are government is complete; to all these objects it is competent. The people have declared, that in the exercise of all powers given for these objects, it is supreme. It can, then, in effecting these objects, legituately control all individuals or governments within the American territory. The coustie tution and laws of the state, so far as they are repugnant to the constitution and laws of the United States are absolutely void. The states are constituent parts of the United States. They are members of one great empire; for some purposes sovereign, for some purposes subor-

THE CHOCTAMS. Fulsom's party of emigrating Choctaws, 500 strong, arrived at Port Arkansas early last month, in a steamboat.

VALUABLE DISCOVERY. From the Franklin, (New York), Republican. A bed of fine steel ore has recent-Jork), Republican. A ocu of the steel ore mastreement by been discovered by James Dianes, Franklin county. It is said to be of a quality superior to that of the best Englash bilater steel, and competent judges have pronounced it capable of being manufactured into the finest

edge tools.
The above article from the Keesville Herald would, it appeared to us, irresistibly lead to the conclusion that the discovery alluded to is wholly fabrilous. The very time to heavery annued to is wholly isolinous. I he very limited knowledge we possessed of mineralogy inclined us not to believe in the existence of steel ore. In a recent conversation with Mr. Dunne he informed us that the ore is of a species denominated carbonated iron ore. the ore is of a species uncommutated carbonated from ore. The knowledge of its valuable properties were in some urgree accidentally discovered. When first found it was supposed to be of lattle or no value, having an unusually dark appearance, and failing in other respects to give the usual indications of good from ore. He was induced to the control of the control ed, however, to give it a trial in the ordinary manner of working iron ore in forges, and found it easily wrought into a handsome smooth bar, which had the appear-ance of fine steel. This led him to try its qualities and it has been proved to possess all the qualities of the best steel. Chissels have been manufactured from it best steel. Chissels have been manufactured from it which prove equal to the best east steel, and a cutter or shear for a nailing machine was also made of it which answered an excellent juriose. Should this ore, inpon further examination, invoe as valuable as present appearances indicate, it must undoubtedly be a source of immease wealth to the owner.

Manta Louisa, arch duchess of Parma, has filled up MARIA LOUISA, STEEL QUEENER OF THE HOLD, THE STEEL OF CROSS OF THE PROPERTY STEEL STEEL OF THE S of major domo of her household and court, with all the of daylor come or ner nousenoid and court, will all the honors, all the attributions and prerogatives enjoyed by her late Chevalier d'Honneur, Comite de Niepperg. What a falling off for the willow of le grand Napoleon!

plications from persons whose alleged improvements course of this year. In presenting the annexed extract and discoveries have not the slightest claim to origin on this subject, we would remark that it has been the topic in Europe, and the people of France having been somewhat alarmed, the French philosophical academy sometime ago, caused calculations to be made on the subject and published a report to allay the alarm which had seized the minds of the ignorant classes on the octhat no sort of langer was to be apprehended on the ap-proach of this comet. The following we find in a pa-Boton Cent. per before us-

> The European papers speak of a comet that will appear within 60,000 miles of the earth's orbit, some time in the year 1832. If the earth should happen to be in that portion of its orbit, nearest the path of the comet, is approach to the sin, they say its motion will be much disturbed, and acrious consequences may reasonably be apprehended—M. Lalande has computed that comets may pass within 30,000 leagues without sensibly deranging the motion of the earth. The comet of 1470 approached so near the earth as to increase its periodical time upwards of two days; and hall its mass been equal to that of the earth, it is commuted by La Place, the earth's motion in her orbit would have been equally retard d, and consequently have increased the length of the year nearly forty-nine hours. As no such effect was produced, the disturbing love of the comet was was promeen, the disturbing force of the comet was considered insensible. The mass of the comet was 1-500th part less than that of the earth. In 1454 the moon was cellipsed by a comet which must have passed within 200,000 miles of the earth—and it is known that no effect was produced by its attractive force, either on the earth or moon. The immense velocity of comets muy be a principal reason why they do not sensibly effect the niction of the planets. That of 1680 was calan hour, and Brabone observed one at Palermo in 1670. whose velocity he computed to be equal to 2500,000 indes an hour. The comet of 1450 is best known by astronomers. Its period is computed to be about 76 years, though from its motion being disturbed by the planets it is sometimes longer. It appeared in 1632 very bright; and was looked after with very great anxiety in 1758;—but Clairault determined from calculation that it would not appear till April, 1759. The increased length of its period he attributed to the influence of Jujuter and Saturn, near which it would pass. It accordingly approached nearest the sun on the 12th of March, 1759. It this is the conset to which the European papers refer, it will not appear till 1834 or 5. The dishers refer, it will not appear till 1834 or 5. The dis-tance of this comet from the sun, when in the extreme end of its orbit, is about 82,000,000 miles; yet it re-turns regularly, and its period has been calculated by the mathematicians within 30 days!

[A paragraph in one of the French papers postpones to lated visit of the comet of 1832 to the year 87,832! Whether it is the one above alluded to or not-we are uninformed. ]

### FOREIGN NEWS.

An arrival at New York brings advices to the 23d No-

vember from France.
A courier arrived in Paris from London, the evening of the 18th of November, bringing the tresty, signed on the 15th of that month, between the five powers and king Leopold, incorporating the 24 articles of that between Belgium and Holland, with three additional clauses. Art. 25 places all the preceding articles under the guarantee of the five powers. Art. 26 declares that there shall be peace and amity between the king of the French, the emperor of Austria, the king of Great Britain, the king of Prussia, and the emperor of Russay, on the one part, and the king of the Belguan on the other. Art. 27 prescribes that the treaty shall be ratified, and the ratifications exchanged within two months at latest. The king of Holland still relused his sanction to the treaty.

A tiot took place at Rioupeyroux on the 7th November, owing to the opposition of the people to pay the consolidated duties. The mayor, though supported by THE CORET. There has been no little speculation on the subject of a comet that it is supposed will appear in it. On the arrival of the prefect, the president of the

promised to pay, forthwith, the demands against them.

The discrining of the garrisons of Pictional were rapidly going on, and those of Savoy, Chambery and Auncey are merely kept up in sufficient number to mount guard; the army of the north were quitting the frontier and returning to their garrisons and quarters. ters - this dispersion of armies and disseming of garrisons, is hailed as a sure indication of continued peace.

Several journalists in France had been prosecuted and finest.

The widow of the late autortunate lord Edward Fitzgerald died at Paris, about the middle of Novem-

A large number of new peers, for life, had been crested, and many officers, who had been deprived of their cery, and many onneers, who can need up revent of their commissions under former dynastic, restored to com-ensual. Several of the newly created peers had taken their seats in the clamber of peers. The creation of these peers has given great offence, and some of the journals, which had before supported the ministry, had turned round and joined the opposition.

The secounts from Poland are filled with gloomscarcely a family that has not lost some relative by the war; prosperity is destroyed, and trade is in a wretched atate of depression.

The emperor of Russia, muon whom a demand was made by the Prussian government, has refused to may the expenses of the Polish army in passing through Prussian he has also forbidden the officers of the several corps who sought refuge in Prussa, from either returning to Russia or Poland.

The brave Schryznecki, Dembinski, and a number of other Polish generals, together with the countess Plater, had determined on seeking an asylum in Paris. The first named had reached Berlin on his way thither.

ENGLAND. The cholera, in England was chiefly confined to Sun-derland, though there had been new cases at Stockton and New Castle, and these caused but little havos. The Paris Constitutionel states that letters had been receiv-

ed from London, containing the intelligence of the cho-lera having made its appearance on board of vessels in the docks—the silence of the London papers on this head are considered as conclusive that this information is The reform question, and the meeting of parliament, were the engrossing subjects of interest. A further pro-rogation of parliament had been determined on. The

plan of creating new peers was gaining additional strength. TWENTY-SECOND CONGRESS-1st SESSION.

SENATE. January 5. The bill to reduce the duty on Indian blankets and certain other Indian goods, was read the blankers and sertam other income goods; was reasoned to second time; when Mr. Benton moved to refer it to the committee on finance. He thought, in justice, the bill ought to go to the committee on Indian affairs, for consideration; but he yielded to the opinions of others, and consented to refer it to the committee on finance.

Mr. Dickerson moved to refer the bill to the committee on manufactures

Mr. Benton said, that he perceived that the gentleman was disposed to have the present bill to take the same course that the salt bill heretofore introduced had taken. He was of opinion that there was another committee besides that of finance, that should take preeedence of the committee on manufactures. He allusted to the committee on Indian affairs. That committee had the concerns of the Indians, and the trade of the United States with them, unifer their supervisions and as the present bill proposed a measure calculated to affeet that trade, it more properly belonged to that committee, than the committee on manufactures.

Dickersan said, that in the case of the bill to repeal the duty on salt, and also on the present oceasion, he thought that gentlemen were disposed to have

tribunal, the procureur du Roi and the general in com- the subjects referred to that committee which had the mand of the district, the mal-contents submitted, and least concern, and felt the least interest in them. The argument of the gentleman went to show that the reference should be to the committee on the affairs of the Indiana, because it might have some connexion with them-while he was opposed to its reference to the committee on manufactures, although its atoption would evidently, as in the case of the salt bill, have a more decided and important bearing on the manufacturing interest than upon any other in the country. Both bills, Mr. D. contended, had it in view to remove the pro-tection which the government had deliberately extendeil to the domestic industry of the country.

The question was then taken upon the reference to the committee on Indian affairs, and decided in the

negative, yeas 17, nays 25. The question then occurred on referring the bill to

the committee on manufactures. Mr. Benton objected to this reference. He observed it was the apparent intention of certain gentlemen to give every thing to the hamls of the committee on manufactures-implying that they alone were compe-

tent to examine and report on questions of great na-tional interest or importance. The course proposed tional interest or importance. by the gentler or importance. The course proposed by the gentleman from New Jerscy he considered a violation of the established course of all legislative proceedings, and contrary to all parliamentary rules, relative to the reference of bills.

Mr. Dickerson replied to Mr. Benton, and maintwined that the committee on manufactures was the proper one to refer a bill of the character of the present one to, tending as it did to strike at an important branch of manufactures.

Mr. Brown, of North Carolina, protested against the practice of referring bills to a committee hostile to their provisions. He had always understood that it was incumbent upon them to refer bills which were introduced, to the friends of the proposed measure. He referred to the practice in the British parliament to sustain less position, and asked if the American senate would deny them a privilege granted in that boily—a body not so favorable to liberty as it was. He wished the subject to undergo a proper examination and there-fore opposed its reference to the committee on manufactures.

Mr. Buckner, of Missouri, said, that his col-league, (Mr. Benten), had made the reference a question of order, and had appealed to the rules of the house to sustain his motion for a reference to the committee on finance.—He did not pretend that his experience in the rules of legislation was equal to that gentteman's—but he had always understood that the rule which the gentleman had just read in support of his argument, applied exclusively to select committees,— and could not be made to apply to the present proposed reference to a standing committee. But it was mainreference to a standing committee. But it was mainmittee not hostile to the measure. He would ask that gentleman how it could be ascertained whether a committee was hostile or otherwise, before it had express-

ed an opinion upon the subject.

Mr. B. wished to know how far this bill would clash with the manufacturing interest; and, to ascertain this, it would be necessary to refer it to that committee whose time and attention were devoted to the examination of measures relating to the interest of manufactures. He was of a stifferent opinion from the gentletures. He was of a surferent chanton from the gentle-man from Missouri, and should be opposed to the de-structive inroad which this bill was calculated to make upon domestic manufactures. He felt anxious to as-certain how far this measure would affect the manufacturing interests of the country, which could be done only by a full investigation by the committee charged with that object. He should therefore vote for its reference to that committee.

Mr. Smith and Mr. Tyler both opposed the refe-

Mr. Clay said, that he slid not rise to enter into a discussion of the question of reference, but in coasequence of information given by the chairman of the committee on finance, some ten days ago, in relation to a report which that gentleman had stated it was the in-tention of that committee to submit to the senate before

<sup>\*</sup>To obtain a majority in the house of peers, to de-strey the peersge. A good example to England, at the present origis.

this time. He rose to inquire whether that report might be expected? He had understood the gentleman mignioe expected. He has understood the gentleman to say, two weeks since, that they might expect, on the Monday following, a general scheme of imposts, adapted to the wants of the country, when the public debts

should be discharged.

Mr. Smith replied that he did, at the time referred to, hope to be able to submit the report before this time; but that there were some of the committee who were not willing to submit it, until they had received further information on the subject; to obtain which, they had addressed a letter of inquiry to the secretary of the treasury; and they also expected a report from the convention of New York. He could not tell when the required information would be received, and consequently did not know when the report would be ready.

The question was then taken on the reference to the committee on manufactures, and agreed to, yeas 25,

nays 18.

January 9. The vice president communicated a letter from the secretary of state, transmitting, in pursuance of a resolution, Greenlead's large map of the state of

Maine, of the year 1828.

A number of petitions and memorials were presented, and among the rest one from the inhabitants of the northern part of the state of New York, praying that a break water may be creeted in Plattsburg bay, and a light house on Cumberland head—referred.

Mr. Dullas presented the following memorial from the president, directors and company, of the bank of the United States:

To the senate and house of representatives of the United

The memorial of the United States, in the name and in behalf of the stockholders of the bank, respectfully represents-

That the charter of the bank being about to expire, on the 4th of March 1836, your memorialists ileem it their duty to invite the attention of congress to its re-

newal.

The general considerations which caused the establishment of the bank, the manner in which it has executed the duties assigned to it, and the reasons which recommend its continuance, your memorialists forbear to discuss, since, of these subjects, your honorable bodies are more competent and appropriate judges. They will, therefore, merely state the views which induce their ap-

plication at this time.

Unless the question is decided by the present congress, no definitive action upon it can be expected until within two years of the expiration of the charter-a period before which, in the opinion of your memorialists, it is highly expedient, not merely in reference to the institution itselt, but to the more important interests of the nation, that the determination of congress should be known. Independently of the influence which the bank was designed to possess, and which it necessarily exercises over the state of the currency, by which all the pecontary transactions of the community are regulated, its own immediate operations are connected intimately with the local business of almost every section of the United States, with the commercial interchanges between the several states, and the intercourse of them with all foreign nations.

Of the value to the community, of the system which, after long and anxious efforts, and at great pecuniary sacrifices, sacrifices, your memorialists have at length succeeded in establishing, it is not for them to speak; their more immediate purpose is to represent, as they do, most respecifully, that the continuance or destruction of that system, thus widely diffused through all the avenues of the productive industry of the country, affecting all the relations of public revenue and private income, and contributing to give stability to all the rewards of labor, is an object of general solicitude. If, satisfied with the practical operations of the institution, your honorable body shall deem it worthy of continuance, it seems expedient to relieve the country, as soon as may consist with mature deliberation, from the uncertainty m which all private transactions, and all public improvements, dependent on the future condition of the currency, and amount of capital disposable for those objects, must ne-

cessarily be involved until your decision is known. M. on the other hand, the wisdom of congress shall determine that the bank must cease to exist, it is still smore important that the country should begin early to pre-pare for the expected change, and that the institution pare for the expected change, and that the institutions should have as much time as possible to execute the duts, always a very delicate and difficult one, of saiding the community to seek new channels of business, and, by gradual and gentle movements, to press with the least inconvenience on the great interests connected

Under these impressions, they respectfully request

that the charter of the bank may be renewed. By order of the board of directors:

N. BIDDLE, president.

Mr. Dallas said, that being requested to present this document to the senate, praying for a renewal of the ex-isting charter of the bank, he begged to be indulged in making a few explanatory remarks. With unheastating frankness, he wished it to be understood by the senate, transacis, he winted it to be understood by the good commonwealth which it was alike his duty and his pride to represent with fidelity on that floor, and by the people generally, that this application, at this time, had been discouraged by him. Actuated mahily, il not exclusively, by a desire to preserve to the nation the practical benefits of the institution, the expediency of bringing it forward thus early in the term of its incorporation, during a popular sensation in congress which must cease to exist some years before that term exuires, and on the eve of all the excitement incident to a great political movement, struck his mind as more than doubtful. He felt deep solicitude and apprehension, lest, in the progress of inquiry and in the development of views, uniter present circumstances, it might be drawn into real or imagined conflict with some higher, some more invorite, some more numediate wish or pose of the American people.

And from such a conflict, what sincere friend of this useful establishment would not strive to save or resea it, by at least a temporary forbearance and delay? Nevertheless, his conscious mexperience in the forms and contingencies of legislation, inspired a distrust of his own judgment on this merely preliminary point. The determination of the parties interes el, may be, nay, roust be, wiser and better; and he could not but feel strongly impressed by the recollection that the legislature of l'ennsylvania, recently, and in effect, unanimously had recommended the renewal of the charter of this bank. He became, therefore, a willing, as he was virtually an instructed agent, in promoting, to the extent of his humble ability, an object which, however, dangerously timed its introduction night seem, was in itself, as he conceived,

entitled to every consideration and favor.

Mr. D. concluded by moving that the memorial be read, and be referred to a select committee of five in number, and that the committee have power to send lor per ous and papers.

The memorial having been read, and the reference

acreed to-

Mr. Dallas moved that the appointment of the committee be postponed till to-morrow.

Mr. Bell said he was not aware of any reason for the postporement; and as none had been assigned tor it, he could perceive no propriety in the postporement. It would, also, be a thing unprecedented in the senate; and unless some reasons were adduced in favor of the postpowement, he should prefer that the senate should, secording to its usage, proceed at once to the appointment of the committee

The question being put on the postponement, it was

negatived. Ayes 15, noes 24.

The senate then proceeded to ballot for the committee, and the following gentlemen were chosen to compose it, viz. Mr. Dullas, Mr. Hebster, Mr. Ewing, Mr. Hayne and Mr. Johnston.

Mr. King reported a bill to grant a lownship of land to the French college of St. Louis; which was read.

The vice president communicated a report from the secretary of war of the expenditures of moneys spproprieted for the contingent expenses of the military establishment, for the year 1851.

Various private bills were reported, read, and re-

ferred.



Mr. Clay laid on the table the following resolution: Resolved. That the criticity during monomic in imported from foreign countries, and some principal monomic in foreign countries, and some principal monomic interactives made or produced within the United States, ought to be forthwith abolished, except the dutter upon wines and silks, and that they ought to be reduced; and that the committee on finance be instructed to report a full accordingly.

The bill for the erection of harracks, quarters, and store houses, and the purchase of a sue, in the vicinity of New Orleans, was consulered as in committee of the whole; the blank in the bill was, on motion of Mr. John-ston, filled with the words bone hundred and twelve thousand dollars," to carry the provisions of the act into effect: it was then reported to the senate, and ordered to be engrossed for a third reading.

Considerable debate on this bill ensued, in which Messra. Forsyth, Benton, Johnston, Clay and Waggamen participated; the three latter strenuously support-

The senate then resumed the consideration of the bill regulating the duties and providing for the compensation of pursers in the navy-postponed to Thursday next.

The senate then resumed the consideration of the bill providing for the pay of navy agents. The bill makes a specific allowance to these officers, instead of a per centage as heretofore. After some conversation respect-ing the details of the bill, it was ordered to a third reading.

The senate then resumed the consideration of the bill to provide for the distribution of the duties of the commissioners of the navy, and for other purposes.

After some discussion of the details of this bill ion the part of Mesers. Hayne, Chambers, Foot, and Webster, the hill was, by consent, postponed to Friday next, and

The senate adjourned. January 11. Mr. Smith presented the memorial of the Biltimore and Ohio rail road company, praying for such a subscription, on the part of the United States, to its stock, as will enable the company either to comadvance it is to make the completion easier to individual or cornorate enterprise. Referred to the committee on roads and canals.

Mr. Tipton offered a resolution to inquire into the expediency of improving the navigation of the Wabash.

Mr. Eveng moved a resolution requiring 50 lythographic copies of Matchell's map of the British proinces in North America, as includes the territory northwest of the river O da, as designated by the ordi-

nance of 1787, &c .- which was agreed to. The following resolutions moved yesterday by Mr.

B-nton, were taken up and agreed to. Bellion, were that the acceptive of the freezing be directed to furnish the senate with the names and filled of the foreign stock-holders of the bank of the United States, if any document in his office with afford that information; and if both or do do avor to obtain that information from the sank affordation from the thing affordation from the sank affo the senate as shou as possible, with the amount of stock held by

Resolved, That the secretary of the treasury be directed States, and of the several transhes, and a statement of the state held by citizens of the United States, with the number of shares held by each, and the state or territory of their residence; also, the amount of species according to the last return, in the wauts of the bank and its branches, if itogeneing the part which b longs to the bank, the portion which belong to individuals, and to the by citizens of the United States, with the number of shares

to the bank, the portion which belong to individuats, and to the United States.

Resolved, Than the secretary of the treasury be directed to lay Resolved, That the excensive of the treasury be directed to lay before the some information, first, of the amount of debt due from individuals, and toolier corporate, to the bank of the United States and its branches, dismignishing the amount security by morrage from that accured by presonal security alone, and what portion of said debts are counted of as standing accommodation in the customers of said native and in branches. Resolved Tax the vertexary of the treasury be directed to lay before the evolute for the year 1851.

The projection mount of the March 2001.

The resolution moved by Mr. Cay, on Wednesday

relative to instructing the committee of finance, to report a hill repealing certain duties, was taken up, and on motion of Mr. H:was, made the order of the day for Monday next.

Mr. Clay addressed the senate at considerable length, in support of the reso ution.

"In consequence of the expectation that Mr. Clay decisive in the maintenance of would speak, the galleries of the senate chamber were that of internal improvement.

He was followed by Mr. Hayne, who in a few remarks, prefaced his motion for a nostponement.

The senate then adjourned.

January 12. The vice president communicated a renort from the secretary of the treasury, containing a at of annicants for the U.S. insolvent act—the nature and amount of the debts due to the U. States from each, also the names of those who have obtained a release, together with the terms of compromise in each

Mr. Sitabee presented the petition of the merchants of Hoston, praying in the event of a modification of the tariff, that certain regulations as to the granting of debentures may be adopted.

A number of private memorials were presented.

Mr. King reported a bill, concerning the price of cer-Louisiana to enter the back lamis.

The resolutions moved vesterday by Messrs. Foot, Moore and Dallas, were severally considered and agreed to, that of the first named gentleman so altered as to request the information of the president instead of the secretary of war.

Mr. Ruggles moved a resolution relative to the man of the north western territory, ordered to be lurnished on the 11th inst.

The bill authorising the making of a road, &c. from Line creek to Chatahooche, was read the third time and passed.

The bill for the organization of the ordeance department, was considered, amended, and ordered to be engrossed for a third reading.

The senate went into business of a confidential nature, and after spending some time therein, the doors were opened, and the senate adjourned.

HOUSE OF REPRESENTATIVES.

Friday, Jan. 6. Micajah T. Hawkins, from North Carolina, appeared, was qualified, and took his seat.

Mr. Wickliffe reported the bill from the senate, sup-

plementary to an act granting pre-emption rights to settiers on the public lambs, with an amendment, which was concurred in by the house, and it was ordered that

the said amendment he engrossed and read a third time. Mr. Hickliffe also reported a bill authorising the sale of 20,000 seres of the saline lands in the state of Illi-

Mr. Vance reported a bill for the relief of Nathan Towson, paymaster general of the army of the United States-twice read, and ordered to be engrossed and read a third time on Monday.

Mr. Kerr made a report, accompanied by a bill establishing a territorial government north of the states of Illinois and Missouri, and west of lake Michigan, to be called the territory of Ounconsin—twice read and committed.

Mr. Davis, from S. C. reported a bill to authorise the president to run and mark a line dividing the territory of Florida from the state of Georgia-twice read and committed.

Mr. Taylor reported a hill concerning the issuing of patents to sliens for useful discoveries and inventions twice read and ordered to be engrossed for a third reading on Monday next.

Mr. Alc Duffie reported a bill making appropriations for the naval service for 1832-twice read and commit-

Mr. Cooke, of Ohio, instituted an inquiry into the propriety of granting an appropriation for the examinaa view to the improvement of the navigation thereof.

crowded to excess, at an early hour-and, finally, the floor of the second was invaded by a dense crowd of fair auilitors—the very area being taken pussession of by them! It is spoken of as one of the most brilliant gatherings ever witnessed on a like occusion.

Mr. Clay spoke about two hours. His remarks cannot be received in time for the present sheet. He was decisive in the maintenance of the protective policy, and that of internal improvement.

En. Rue. duals were offered and adopted.

On motion of Mr. Barber, the committee on military affairs were instructed to inquire into the expediency of improving the construction and repairing Fort Griswold, on Groton Heights, in the state of Connecticut.

On motion of Mr. Bates, the committee on manufactures were instructed in impure and report to this house, as near as may be, what amount of hemp has been produced in each of the United States, in the years 1828,

1829, 1830 and 1831, with the average price at which it has been sold in the market.

On motion of Mr. Ashley, of Missouri, an inquiry was instituted as to the propriety of granting an appropriation for the purpose of improving the navigation of the Mississippi river, from the junction of the same with the river Missouri, to the town of Galena, in the state of Illinois .- Also, as to the expediency of making a suffieient appropriation for the purpose of locating and constructing the national road from St. Louis, in the state of Missouri, to the seat of government in that state,
Mr. Mc Kennan moved the following resolution:

retr. PREACTMEN HOVER THE SHEWING PERSONNESS.

Resolved, That the secretary of war be directed to report to this house an estimate of the sum which will be necessary to make a thorough repair of the national road from Cumberland to Wheel-

Mr. Whittlesey moved a resolution calling upon the secretary of war to report a copy of the survey and estimate of cost made for a canal, by the corps of engi-neers of the United States, from Portage Summit, to intersect the line surveyed in Pennsylvania by col. Kear-

Mr. Barber, moved a resolution requiring informanate, Baroer, moved a resolution requiring informa-tion of the secretary of war, relative to the claims of the state of Connecticut for disbursements made by that state, and for the services and expenses of her militia

during the late war.

Mr. Sevier offered the following resolution:

Mr. Sepicer offered the following resolution:
Resolved, That the commissioner of the general land office be
requested to furnish this house, for the use of the committee on
the public lands, with a copy of all the instructions given by said
territory of Arkamans, of a data subsequent to the 17th of October,
1722, respecting the proof to be received by said officers in superior
of domaions to land granted to make pricing to a fact, assam, by an
at of congress of the 38th day of Mrs. Sec. Lie or Assams, by an
at of congress of the 38th day of Mrs. Sec. Lie or observed that
the hoped the house would austain linn in the call. He
had been long endeavoring to set at this information is

had been long endeavoring to get at this information by correspondence with the gentleman referred to in the resolution, but without success. He wished to bring that gentleman to his senses—he wished him to understand that in seeking the information he desired, he was supported by the votes of this house. If the gentleman unable from sickness or any other cause to attend to the duties of his office, let him give it to some one who would attend to them. He wished to bring the gentle-man to reflection, and if he found that when backed by this house, he was still unable to get any thing out of him, he should then know it was time to go elsewhere,

him, he should then know it was time to go cisewhere, and apply to the head man of the manger.

Mr. Nickiffe suggested the propriety of modifying the resolution so as to make the inquiry from the head of the department, and not a subordinate officer; and he therefore moved to substitute "the secretary of the treafor "the commissioner of the land office."

Mr. Sevier replied that he had no objection so to modily the resolution. He had great respect for the secre-tary of the tressury, and so he had for all the other offieers of the depastment, except that one, and perhaps he was giving him too much consequence by naming him in the resolution.

The resolution as modified was then agreed to. Mr. Bates Cooke, of New York, offered the follow-

ing resolution:

Residution:
Residu

Several resolutions concerning the claims of indivi-| committee of claims, respecting property destroyed in the last war. The whole subject had been fully descussed in 1824 and '25, and a law passed, alluwing an investigation of cases, which had been before the commissionr of claims, and had been referred to the third and itor. er at claims, and had been reterred to the third absence. He beheved that law had gone as far as my law on the subject ought to go, and the \$250,000 appropriated to satisfy claims arrang andier it, were nearly exhausted. He objected to the milefinite phrasology of the resolu-

He objected to the inneume phrascougy of the resonan-tion, and warned the house against rashly adopting it. Mr. Johnson, of Kentucky, spoke at considerable length in reply. The full of 1816 providing for these length in reply. The bill of 1816 providing for these claims, bad been reported by the military committee, its provisions continued only for eighteen months or two years. Since theo all individual cases had come up to the house by petition. The consideration of these cases in iletail occasioned much delay, and he argued to show that it would be better to have a general provision cover-ing the whole. He gave an arousing account of a correspondence between himself and his constituents, respecting horses lost, and though he admitted that all the desolations of war could not be paid for by government, yet where claims for losses could be distinctly ascertained and reduced to a general principle, they ought to receive a general provision by law.

The debate was further proceeding, when it was ar-

Mr. Hubbard, of New Hampshire, who moved that the house ile now proceed to the orders of the day.

The house then resolved itself into a committee of the whole, on sundry bills for the relief of thirteen in-dividuals, which bills were severally twice read and or-

dereil to be engrosed for a third reading on Monday next. The speaker land before the house a letter from the first compareller of the treasury, transmitting a statement of the accounts which have remained unsettled more than three years on the books of the fourth audi-

tor of the treasury-laid on the table, The house then proceeded to consider the following resolution, moved by Mr. Heister on the 22d December.

ult. and laid on the table;

All that has the case of the second of the s

pers and periodicals, or either of them. At the instance of Mr. McDuffe, the latter clause of the resolution was modified by substituting for it, "and also what will be the effect of abolishing such postage on the revenue and operations of the post office department." and also by macring "three" instead of "five" years, as the period of inquiry.

Mr. Mc Diffic allocated the resolution in its motion

fied torm; he thought it important to have the judgment of the officer at its head, whether the department could sustain itself, should the postage on newspapers and

periodicals be abolished,

Mr. Everett thought letter postage was one of the heaviest taxes paid by the people of the United States. heaviest taxes paid by the people of the Content State It was more universal than any other, and in its practical operations exceedingly unequal. The requiring double postage, ou double letters, was not regulated on equal principles. The postage was sloubled for the smallest and slightest enclosure—a bank note or a receipt paid as much as the largest letter; and also in apportioning the postage to the distance, the law was very unequal and oppressive. He did not wish to embar-rass the operations of the department so as to make it a charge upon the revenue, nor did he think that such would be the result of the measure proposed. He thought by decreasing the postage, the number of letthought by decreasing the possage, the hannel of there would be increased,—and, consequently, that the revenue would not be diminished. He, therefore, movel that the resolution be inclied modified, by adding

Mr. Arnold moved to extend the inquiry, so - 10 in- the presentation of the present memorial, he trusted clude the amount of costs which the department pain that he, at least, would be free from the suspicion of for publishing its advertisements throughout the United States, and sho the total number of newspapers published in the union.

States, and sho the total number of newspapers published in the union.

So far, however a presented the president displaced in the union.

Mr. Carson sail that the gentleman from Tennessee, (Mr. A.) had presented a memorial upon the subject which had been referred to the proper committee, and he inquired whether the report of that committee would

not embrace the subject of the inquiry.

Mr. Anssell, the charman of that committee, nodding assent, and observing that he had asked the information required, of the post master general—
Mr. Caron then mived that the resolution lie on the

Mr. Carson then mived that the resolution lie on the table—which motion prevailed.

The house then adjourned.

Monday Jan. 9. Mr. McDuffie presented the memorial of the president and directors, on behalf of the stockholders, of the bank of the United States, asking for a renewal of their charter.

After the memorial had been read, --

Mr. McDuffie moved to refer it to the committee of ways and means.

Mr. Davu, of South Carolina, moved to refer it to

Mr. Davis, of South Carolina, moved to refer it in a committee of the whole house, on the state of the union.

A motion was also made to refer it to a select committee.

Mr. Wayne, of Georgia, said, that he had on a for-mer occasion expressed his objection to the reference of this subject to the committee of ways and means; and he should not trouble the house by repeating now, what he had advanced at the commencement of the session in layor of the appointment of a select committee; but he called upon gentlemen to consider what was the attitude of the committee of ways and means or reference to the bank question, and to compare it with the attitude in which that question had been presented and he would ask whether it was not maintestly proper to submit the memorial to a committee entirely uncommitted upon the subject. But this was not the object for which he had risen—the present question had not come upon him unexpectedly—he had been aware before he entered the house that a memorial of this kind would this morning be presented, and when he looked back upon the occurrences of the last four weeks, and remembered what had taken place at a late convention in Baltimore, and the motives which had been avowed for bringing forward the subject at this time-he must say, that gentlemen ought not to permit a petition of this kind to receive the attention of the house. Who could doubt that the presentation of that memorial was in fact a party measure, intended to have an important operation on persons occupying the highest offices of the government? If, however, it should be consulered necessary to enter upon the subject at the present time, Mr. Wayne said he was prepared to meet it. But when gentlemen saw distinctly before their eyes, the motive of such a proceeding, he hoped, that not withstanding there might be a majority in the house in favor of the bank, gentlemen would not lend them-selves to that kind of action. Could it be necessary to take up the question of re-chartering the bank at the present session? Gentlemen all knew, that four years must pass, before its charter would expire, and congress had nower to extend the period, it farther time was necessary to wind up its affairs. It was known that other subjects of an exening character must come up during the present session, and could there be any necessity, or propriety, in throwing additional matter into the house calculated to raise that exertement yet higher? He trusted some individual would follow hun who might be able to present the subject to the house in a stronger light than he could. He should be willing in the very outset, to meet it by a motion to lay this memorial upon the table; but he would not make that motion at present, mannuch as it would preclude a discussion which he wished to see proceed. He would, therefore, reserve himself for such ultimate action in reference to it as he might consider proper.

Mr. Mc Duffie said that if he even could suppose that the Baltimore convention had had any thing to do with

in the United States could be free from such a suspicion. So far, however as regarded the president, directors, and company of the mother bank, he must say, that, so far as his situation had given him as apportuni-ty of having any knowledge of them, (and he had had much to do with those gentlemen), he did not believe that there existed within the limits of this union, an organized body more perfectly exempt from any just linbility to the charge of acting from political consideraion with any political movements either at Baltimore or clsewhere, he should rather come to the conclusion that the present memorial had been presented after a conthe present memoral had been presented after a con-sultation with the party to which the gentleman from Georgia, as well as himself, belonged, than with those of opposite party-opinions. He regretted exceedingly that this should have been regarded as a political questinn; but it was the misfortune of our country, that no subject of any kind could be started, which had reference to the general interests of the people, but it must instantly be converted into a political question, and connected with that all absorbing topic, a topic which he feared would one thay prostrate the liberty of the countrythe election of a president. Could not the consideration of any question, referring to the interests of the country, be entered upon, but it must be to put this man into office and that man out? Could no question of any kind be stirposed of with a calm impartal judgment? He should deeply regret if any gentleman, in acting on the present subject, should be influenced by the question, how its decision would touch the election of this man or that. He could not pussibly see how it could have any thing to do with the matter. Why must this be made a political question at this time more than at any Dal the gentleman from Georgia suppose that the progress of purification would be such that at any inture time personal consulcrations would cease to operate? If, while the present incumbent occupied the presidential cliair, the bank question must of necessity have a political aspect, was it to be supposed that two years hence, when there were two or more gentlemen, cand dates for that situation, the discussion of it would be any more disinterested? No! cried Mr. McD., it is the imperiorion of man that presents the difficulty; and until that shall cease, the gentleman from Georgia will never get out of it. The president and directors of until that shall cease, the gentleman from Georgia will never get out of it. The president and directors of the mother bank had been governed, not by political or party motives, in presenting this memorial, but by the party notices, in presenting this memoran, out of the obligation under which they lay, not only to the stock-holders, but to the government of the United States. What would be the effect of refusing to renew the charter, or to act upon the subject, till two years, or till a sugle year, before its expiration. Could the gentleman single year, neuron as expiration. Could the gentleman from Georgia have reflected upon the consequences? That bank had given a credit of 50,000,000 to the peo-ple of the United States. What did he suppose must be the effect of suidenly withdrawing that credit? Its effect, not only to the individuals to whom the credit had been given, but to all others connected with them? It would be nothing short of utter desolation. Whether the charter were to be granted or refused, the house was bound in every view of the subject to act upon it now, and to act definitively. A period of four years was not more than was indispensably requisite to wind up the concerns of such as instruction. It the consideration of the subject at this time was necessarily attended with any embarrassment, he should regret it; but still be must hold the great leading inferests of the country to be paramount to all political and party considerations. If it was in the nower of gentlemen to diseard all such feelings in consulering the great question to which this memorial referred, his earnestly hoped that it might be

AIr. Cambreleng, of New York, said that he heartily joined in the wish just expressed by the gentleman from South Carolina, (Mr. Atc. Duffie), that the subject might be approached without any thing like political existement; but that gentleman and himself must live far beyond the ordinary length of man's lafe, if they ever lived to see that question separated from party consistent of the property of the propert

derations. If his recollection did not very much deceive him, that gentleman, in the beginning of the session, had expressly said that the bank question should sleep in his committee throughout the residue of the

Here Mr. Mc Duffie interposed, and said that the gentlemsn had cutirely misunderstood him-that he had never made any such assertion.

Mr. Cumbreleng said he stood corrected. He concurred with the gentleman that the subject ought to be met, but he hoped that in considering it, the house would deliberate long, and reflect maturely. They would thodeliberate long, and reflect maturely. They would tho-roughly examine the great question, whether any bank in the country could have the power to issue a currency from all its branches in every part of the country-payable nowhere.

Here Mr. Mc Duffie was about to interpose, when Mr. Cambreleng said he was not going to enter into the merits of the general question; but had risen for the purpose of suggesting to the gentlemsn from Georgia, ( Wayne), not to move to tay this memorial on the table, Wagner), not to more to my this memorum on the more. He was for himsell willing and ready to meet the sub-ject. He wished also to make an appeal to the gentle-man from South Carolana, (Mr. McDuffic), whether he would persist in his motion to refer the memorial to the committee of ways and means, seeing that if it should go to a select committee, that gentleman would occupy in such committee the same station he held in the standing committee to which he belonged, and whether he would committee to when he belongers and when the bank not consent that the subject of re-chartering the bank should go to a scheet committee, as at isal herectofore done. He had jound with that gentleman in referring so much of the message as related to this subject to the committee of ways and means. But, the consideration of a memorial which would require the whole subject to be sifted to the very bottom, was, of itself, sufficient to occupy a committee during the whole session of con-The committee of ways and means was charged with the revenue of I finances of the country, and could not give it that attention which it required. He therefore auggested to the gentleman from South Carolina, whether he ought not, in justice to others as well as to bimself, to move the reference of the memorial to a select com-

Mr. Mc Duffie replied, that to do so would not be to comply with the order of proceeding in the house, inasmuch as the subject appropriately belongs to the committee on finance.

Mr. Cambreleng, thereupon moved that the memo-

rish be referred to a select committee.

Mr. Coulter, of Pennsylvania, said that he had not been so fortunate as the gentleman from Georgia, [Mr. Wayne,] inasmuch as he had not heard that such a memorial was this day to be presented to the house, and the only reason he left any particular interest, as to the the only reason he left any particular in cress, as to the disposition of it, was, that many of the petitioners resided within the state from which he same. He had the same interest in the general subject with other citizens of the country. What was the subject before the house A petition had been presented from a number of highly respectable e tizens on a subject small interesting to nation. Had they not a right to address this house? Had they approached it with an address upon a light and frithey approached it with an anticess upon a right anning y slows subject? A subject improper too comp the atten-tion of the legislative body? No. It was a subject which claimed the attention unit only of that house, but of the whole union. A subject which must undergo the action of the legislature, at some period not far distant. And how was it proposed to treat these ediz as? If he had n t misunderstood the gentleman from Georgia, that gentleman had proposed that these edizens, together gentleman had proposed that these conzens, together with the subject on which they pe I inned, should be contemptuously thrown under the table, and that on the ground that it was a subject not fit at this time to occupy the attention of the representatives of the United What were the reasons advanced in support of this position? Why that the subject of the petition partook of a pacty character, or that the presentation of the petition was connected with certain other political movements in the country? This might be a good reason with

representative of the people-prepared to set on the him. He was governed by no such considerations—he knew of no connexion of the memorial with any party or other proceedings at Baltimore. All he knew was that the petitioners resided in the state of Pennsylvania; that they had a right to present the memorial, and had acted properly in doing so, and a mere allegation that the paper was connected with political movements at Beltimore, formed no reason why he should not exercise the re-sponsibility which had been committed to him. It had been said that the bank question always would be connected with the politics of the country. If that true, it was an objection that would apply equally at all times. But such was not his view of the subject. He hoped that the great experiment of a representative government had not so completely lailed that a legislative assembly could not pronounce upon a great subject connected with the interests of the country, without being governed by preddections for men and by feelings of mere party politics. The moment he should be cem-pelled to believe that, he should conclude that the great republican experiment had failed; for it was the same to him whether a despot on the throne domineered over the country, or some demagogue who issued his procismations, from a committee room, or elsewhere, controled public opinion, and ruled the country. If great questions of national policy were to be settled on the paltry politics of the day, or by a more preference for indivi-duals, the people ought to know it. It was because he helieved that that house was capable of deciding such a question as this of the bank on purely national principles that he believed that the present memorial ought to receive the setion of that house. He should not enter upon any considerations which touched the merits of the question: he would only say, in general, that the paper before the house was a respectful petition on a subject every way lit lir the action of the house, and ought to receive its action. Were gentlemen to be deterred from the consideration of the memorial by such reasons as had been offered by the gentleman from Georgia? He hoped that every man who left in his own bosom higher and nobler principles of action than that gentlems had alluded to, would not be deterred from the discharge of his duty; that the man who stood there as a representalive of the people, and felt that he was worthy so to stand, would get in such a manner as to show that he was above the reach of such motives. Let him suppose that this house was to be wrested from the course of iluty and patriotism and perverted and debased into a mere party machine, what, he asked, would be the most direct mode of accomplishing such an end? He knew of none more directly calculated to effect it than that which had been now joursued by the gentleman from Georgia. If any gentleman on that floor chose to become the If any gentienian on that moor chose to become the trumpeter to blow the rivily of party, he might perhaps succeed in earrying a portion of the house with him; yet he must still believe that house capable, in spite of all such efforts, of deciding national questions on national principles. He had no idea that the gentleman from Georgia intended to rally a party; but whatever were the gentleman's intentions, such alone would be the effeet of his remarks; nor could be have devised a fitter mode to effect such an object. He had no doubt the gentleman really felt all the boding lears he had expressed, but he could not but consider them as entirely premature. As to the committee to which the memorial might be sent, it was to him a matter of no very grest consequence. The only difference between sendgreat consequence. The only difference between send-ing it to a select committee, and sending it to the committee of ways and means, is this: that in the commit-tee of ways and means, he had the urmost confidence, but he might not feel quite as much in a select committce. He saw no reason why the subject should not take the same course which it had hetherto done. The committee of ways and means was raised expressly to consaler questions connected with the revenue; and he asked whether this subject did not naturally connect itself with the duties of such a committee? None could ments in the country? this might occagnot reason with the gentleman from Georgia, as he very possibly was in that day, they had been closely connected—so closely the secrets of the party that had met at Baltimore, but that, to use the cloquent expression of the gentleman as for himself he was not. He stord on that floor as a I from South Carolina, the one might be called the body

and the other the soul. Why should not the memorial morials. Why vary the mode sow? The subject was go to the committee of ways and means? It belonged to to a magnitude to entitle it to a special committee. As that committee by the rules of the house, and it had always been referred to them as a preparatory step. Why should it not be now! He could see no valid reason.
It had, to be sure, been objected that that committee had
already expressed an opinion on the general subject.
Very true; and that was the very reason why he wished
to send it there. It was parliamentary to refer subjects to committee whose views were favorable;
and should not a great question, on which the wisest statesmen of the country had bestowed their thoughts, and expressed their opinions, go to a committee whose views were in its favor, when matters of the most trivial moment were subject to that rule? The object in that very proper parliamentary rule was that a measure pro-posed might be presented in the most favorable man--that it might, so to speak, have a fair chance; and in the language of the books on parliamentary law, that it might not be committed to a nurse who would be sure to atrangle it. He did not wish to see this memorial atrangle d. He wished it to go to a committee where it would receive the consideration which it meritable. ed, in order that it might afterwards receive the judg-

ment of the house, unprejudeed and fairly expressed.

Mr. Appleton said that the subject-matter of the petition was one of the deepest interest to the community. It was most intimately connected with the commercial it was most inmact; connected with the commercial interest, but not exclusively so. Every class and every section of the country were interested in the question whether the charter of the bank of the United States should be renewed. He thought that the importance of the interests involved made it proper that the petition should be referred to a select committee, who would give to the subject their undivided attention. The appropriate duties of the committee of ways and means had reference to the finances of the country, which were eertainty connected to a certain degree with this interest.

tion---but, in his opinion, its bearing on the general prosperity was a matter of greater and paramount interest.

Its relation to a sound currency involved, perhaps, the most important question in our whole internal policy. He supposed there was no doubt that, whether referred to the committee of ways and means or to a select committee, according to the principles usually adopted in the appointment of committees, a report would be made in favor of renewing the charter. But it was of the ut-most importance that a careful and thorough examination should be had, whether some modifications of the existing charter should not be made on its renewal; and should ibe the terms and conditions, He believed it to be susceptible of improvement, and hoped a committee would be appointed who would examine the subject thoroughly, uninfluenced, if possible, by party con-siderations, which certainly ought not to be connected with this subject.

Mr. Archer, of Virginia, said he did not rise to extend, but to make an effort to repress the discussion. tend, but to make an effort to repress the discussion. He had doubted the propriety of swothing discussion, the portion we had just heard, would be sufficiently instructive on that point. It had shewn, that in the event of its protrastion, we should have prematurely, not only the controversy on the main subject, but the party afteration supposed to be mixed up with it, which, if displayed here, could bring no credit to the house. His (Mr. A.'a) object in rising was principally to make a suggestion to his friend from Georgia (Mr. Wayne) in relation to his own suggestion, that he might be induced to make a mo-tion to lay the memorial on the table. He (Mr. A.) should regret to see this course pursued. Like the gentleman from Georgia, he was the determined adversary of re-incorporation, in every form in which the proposi-tion for the purpose could be presented. He could not consent, nevertheless, to meet the memorial by a motion to lay on the table, as that would not be the mode of encounter to which he was disposed, and which was slone correspondent with the character of his friend from correspondent with the character of the friend from Georgia; that is to say, a direct mode. If such a motion were maile, adversary sa he (Mr. A.) was, to the object of the memorial, he should vote against the motion. As regarded the disposal of the memorial, it appeared clear to him, that a select committee would be the proper one. This had been the disposal adopted with all former me-

of a magnitude to entitle it to a special committee. regarded the committee of ways and means, with its important lunctions were not its hands to be regarded as too full, for the great attention which this matter must demand? It was to be comarked, too, that this commitdemand? It was to be remarked, to, that this commo-tee, at a fermer session, with little variety in its compo-ation, vail, in the most formal manner, expressed its opinion on the great question involved. We ought not, opinion on the great question involved. opmiss of the great question involved. We observe as tool been said, to just the memorial to a nurse which would strangle it. Neither would it be proper to send it to an inquest in which its late had been prejudged. Let it go to either the committee of ways and means, or a select committee; the chairman of that committee the last disposal were adapted, too, the majority of the committee would consist under the usage in that respect, of friends of the measure. The recommendation of this mode was, that it would present the nearest approach to equality in the contrat, of which the case admitted

Mr. Mercer, of Virginia, said, it had been considered by all who had spoken that it was necessary a masure referred to it. All that was contended for was, a minority adverse to it. He thought the object as likely to be gained in the committee of ways and means, as by the appointment of a select committee. The fact that, two or three sessions ago, a report favorable to the measure had been made by that committee, he looked upon as no argument against referring the subject to it now. He wished it to go to the committee of ways and means; and he had looked pretty deeply into the subject. He thought it should go to that committee, because the terms on which the charter should be renewed, if it were renewed, should accord with those matters and measures of revenue which that committee had under consideration. Whatever might be his opinion, generally, as to the present administration, he could salely say, he had as little to ilo with party politics as any member in that house: but when he saw an opinion upon this question prematurely obtraded upon them, as it had been by the chief magistrate, he must condemn him, as he had done his predecessor, when he in advance declared his opposition to measures of internal improvement. The chief sized to measures of internal improvement. In eclinet magistrate never ought to make public his opinion as unfavorable to a subject, (ill breaght before him as a matter of legislation. If ergenfect the bank as a pub-le mutitution, and not in reference to its stockholders. The subject of a national bank had been thrite discussel by men of ability-in time of peril, and in time of peace; after which it could hardly be said that the house now required additional illumination on the subject from the researches of a select committee. He toped therefore that the memorial would be referred to committee of ways and means.

Mr. Davis, of S. C moved to refer it to a committee of the whole on the state of the union.

Mr. Ingersoll urged the propriety of referring it to

the committee of ways and means.

Mr. Carson laped his friend from Georgia, Mr. Wayne, would not move to lay the memorial on the tabler he was for meeting the question, and preferred a select committee. He deprecated mingling party feelings in the question.

Mr. Wilde was favorable to its reference to the committee of ways and means; he thought the question of vital importance to the country, and a decision on the application required by the general interests. He be-lieved the charter of the bank of England would ex-pire before that of the bank of the United States; and he conjured the house to reflect on the effect which its expiration might have upon the capital and currency of this country.

Mr. Mitchelt considered the application for a renewal of the charter premature; that there was another and more important question, the tariff, to come before the

Mr. Root preferred a reference to the committee of ways and means -- in his opinion the committee which managed the fiscal affairs of the nation was the proper one to take charge of the memorial.

Mr. Dearborn thought the presentation of the me-morial not at all premature—the president had, for

the last three successive years brought the question to the attention of the house the attention of the house and it blame was to be at-tached any where for the astation of the question, if

was to the president, not to the back
Mr. Johnson, of Va. and Mr. Howard, of Maryland preferred referring the memorial to a aclest committee. Mr. Jenifer said the committee of ways and means

was the appropriate one to take charge of it.

Mr. Wayne again allusted to the interference of the convention at Baltimore, acknowledged he was actualed by party spirit. He insisted that there was no gentleman who would tell them, that a circumstance which had occurred within these five weeks, had not had an influence in bringing this measure before them at the present time. He avowed that the bank had brought the subject before the house now, with a view of bringing odium on those who should oppose it.

Mr. Sutherland thought the memorial before them should be relerred to the committee of ways and means, should be referred to the commutee of ways and security.

He wished it to be confilled to friends, to united, not divided councils. Parliamentary usage required its reference to a committee which was lavorable to it. He asked if the gentlemon from Georgia meant to say that the president and directors of the bank had been influenced by a political party, in bringing this measure forward?

Mr. Wayne said, he must first understand if the affinities to which the honorable gentleman had alluded

authorised him to ask that question.

Mr. Sutherland said, he would put the question then in another form, and ask how as a gentleman, his

meaning in what he had said.

Mr. Wayne said, that he could easily answer this, but it was not his purpose to let the ingenuity of the bonorable gentleman bring him into collision with persons for whom he had a high cateem.

Mr. Sutherland saul, he was sati-fied; the gentleman had given a reason why he did not answer the

Mr. Elleworth denied that the presentation of the memorial was either political or premature.

Mr. Davis withdrew his motion to refer the memo-

rial to the committee of the whole house.

Mr. Hoffman advocated a reference to a select committee.

Mr. L. Condict said, that with a view to prevent the infliction of more speeches, he should move the previous

question.

The call for the previous question was seconded by a

vote of ayes 96-noes 84. The main question was then ordered to be put.

Mr. Foster asked for the year and mays on the main question, which were ordered. The main question was on referring the memorial to the committee of ways and Upon this the vote were as follows:

meants. Upon lins the vole were as inflows; YEAS—Means: Adams, Chitton Alian, Alixon, Armstrong, Ar-modd, Ashry, Babewock, Banks, Noy, Babber, Johns. Barbour, And-Berger, Calmon, Choair, Calley, Lewis, Counset, Sains Couniet, Kleutheron Gooke, Batas Cooke, Looper, Corwin, Counter, Crisg, Crans, Crawford, Ceregitton, John Davis, Darsborn, Denny, Dres-son, Doddridge, Drayton, Dunnan, Ethworth, George Event, Al-Evans, Edw. Evereth, Morace Evereth, Ghomer, Grimmth, Histor,

sen, Dobboule, Derjien, Danion, Eliwarth, George Frank, Sch. Krenk, Edw. Everett, Horsee Everett, Ghorne, Gro mill, Histor, Renn, Kolw. Everett, Horsee Everett, Ghorne, Gro mill, Histor, Rughes, Hant, Humington, Ingrend, Irrin, Isaseks, Jenier, Rd. Johnson, Keidalk, Kenmen, Henry King, Leither, Lyon, Marshalling, Schidalk, Gennen, Henry King, Leither, Lyon, Marshalling, Muhichlerg, Kewton, Paarer, Pendieton, Pitter, Potta, Ramolph, John Reed, Root, Rusell, Win. B. Shepard, Southard, Baedghi, Stanbery, Stewart, Sutherland, Taylor, Philimon I homas, Tompkins, Tarzy, Yanev, Perplank, Yusion, Washington, Washington, Washington, Tarzy, Yanev, Perplank, Tulon, Washington, Park, Alexander, Anderson, Angel, Appleton, Archer, Banwell, James Baire, Beachdey, Rergen, James Biair, John Flair, John Flair, Boon, Bouck, Garine, Chandier, Chinn, Clinoiree, Clay, Cake, Comnet, Dannel, Davenport, Warren R. Davis, Deyan, Dewart, Davis, Carlor, Commercial Charles, Charles, Caller, Grotter, Gratter, Gratter,

Mr. Ihrie requested to be excused from voting on secount of being interested in the result of the question. The house agreed to the request.

Adjourned,

Wednesday, Jan. 11. Mr. Fance, from the committee on military affairs, reported the following joint reso-

teeon mining among reporter in the fortowing joint reac-tion, which he a one slay on the table.

I have been a supported by the property of May next, the plant resolution approved 50th April, 1816, authorising the pres-tected of the United States to cupiloy a skilled assistant set-cupy of engineers, he and the same is hereby repealed. Mr. Cumbrieling required a built to extend the pro-

visions of the act, entitled an set regulating commercial intercourse with the islands of Martinique and Guadahouse, and to relund the tomage duty on the French shin Victoire-twice read, &c.

ship Victoire—twice read, &c.
Mr. Burges reported the following resolution which was adopted.

was souption.

Residued, That the committee on invalid pensions be instructed to inquire into the expediency of providing by law, that all lovaid pensions shall commente at the time of the disability received, of at the time of such also happe from the service.

On motion of Me. Herzen, the committee on naval

On motion of Mr. Hergen, the committee on naval affairs were instructed to inquire mo sho supported to constructing a diy dock for the use of the United States navy, at the usays part as throoklyn, New York. On motion of Mr. Hard, the committee on revolu-

tionary pensions were instructed to inquire into the expediency of reporting a bill allowing all persons to he placed on the pension list, under the sers of 1818 and 1820 whose property does not exceed a thousand dollars, or such other sum as the committee may deem

expedient.

Mr. Branch reported a bill re-organising the navy of the U. States—twice read and committed to a conmittee of the whole house on the state of the union.

Mr. Cooke, of New York, submitted a resolution to inquire into the expediency of making further provision for extending, and the more effectually carrying into ellect, the provisions of the act of congress, entitled an act authorising the payment for property hist, captured or destroyed by the enemy while in the service of the United States, during the last war. The committee of claims were charged with the maury.

The bill granting compensation to N. Towson, paymaster general of the army of the United States, was read a third time, and passed.

Several bills for the adjustment of private claims were read a third time and passed. Also a bill to amend the several acta establishing a territorial government-a bill granting pre-emption rights to certain settlers on the public lands-and also a bill authorising the state of Illinois to sell 20,100 acres of salme lands within that state. The house then adjourned.

Thursday, Jan. 12. Mr. Archer, from the commit-Travatay, Jan. 12. Mr. Archer, from the commit-tee on lorsign affairs, which was instructed to inquire into the expediency of reducing the number of our ministers resident abroad above the grade of charge des affaires, to three, viz: to England, France and Rusade a report, which was read and laid on the ta-51R, 11 ble

Several reports on private claims were made, read, and disposed of,

Mr. Millegan moved a resolution to inquire into the expediency of allowing to the clerk of the circuit and district court of the United States for the district of Delaware, and the marshal thereof, additional compensa-

Mr. Jenifer moved the following resolution, viz:
Reselved. That a committee be appropriated to inquire into the
expediency of making an appropriation for the purposes of removing from the United States and her territoris, the free people of tolor, and colonizing them on the count of Artice, or the-

In supporting the resolution, Mr. Jenifer observed that the state of Maryland was deeply interested in the subject of the resolution, masmach as the possessed a greater actual amount of the population referred to than any other state in the mann. Vugina, be believed, to her while population, had possibly still more than to her white population, par possing star more than either. Maryland left severely the evils resulting from the presence of a population of this these existed within the power of the government a con-

attutional remedy, she believed it ought to be applied for her relief. If there was any subject in which that state might be said to feel a more lively interest than in order as soon as possible. Mr. Gallon has summore almost any other, it was this. It was expedient, and rery descrable, that if any legislation took place on this subject, it should be haif at as early a period as possible. The legislatures of several of the states were now in session, and some of them would be looking to the general government for its co-operation. If, on deliberation, it should be concluded that there was no provision in the constitution, and no means in the hands of the go-vernment, then the states would have to look to their own resources; and they ought to know this as early as practicable. He had proposed a select committee on this subject, only because there was no standing committee to whom it seemed to belong.

Mr. Speight said that the subject embraced in the resolution was one of great importance, and he wished the gentleman would consent to deler the reference for a few days. It was one on which he had himself received many communications from his constituents, and he was desirous that some farther time might be allowed him before any action of the house was insisted upon. Mr. S. said he was in favor of the policy which dictated the resolution, and could be be satisfied that the general government possessed the power referred to, he should be very glad to see such a measure adopted. He would suggest to the gentleman from Maryland the expediency postponing the measure until Monday next. He wished the gentleman distinctly to understand, that he was not against the resolution, but was in favor of the principle contained in it.

Mr. Jenifer said, that he should have no objection to

the proposed postpinement, ilid the resolution contain principle at all, but it contained none. It was a mere proposal for enquiry, and as some of the legislatures of the states were now in session, he was very desirous that the house should go into the consideration of the subject in time to act upon it before those legisla-

tures should rise.

Mr. Archer said, that the objection of the gentleman from North Carolina involved the question whether the house could constitutionally inquire at all into such a subject. If the gentleman from Maryland should refuse to acquiesce in the proposed mathonement, Mr. A though rejuctant to do so, should be competled by duty to move to lay the resolution on the table, in which case, the gentleman would find it a more difficult thing to get his resolution up again for consideration than if it had been pastponed.

Mr. Jenifer thereupon agreed to the postponement

of his resolution until Monday next.

On motion of Mr. Thomas, of Mil. it was On induor of Mr. 21091-18, of Min. I was Resolved, Thus the committee on military affairs be instructed to inquire whether any, and if any, what turther allowance ought to be made to the state of Marjaind, on account of the especialistic of said state for the public decience during the last wir. The insues then, by a vote of 113 to 70 sgreet of to constitute of the said of th

sider Mr. Bouhlin's resolutions relative to ail valorem duties. Mr. Stewart moved to refer the resolutions to the committee on manufactures, instead of that of commerce, whereupon a debate ensued, but before the question was taken, Mr. Polk moved that the house proceed to the consideration of the apportionment bill, which motion prevailed. The committee after spend-ing some time in the consideration of the bill, and after considerable debate thereon, rose, &co.

The bill relative to the erection of barracks at New

Orleans was twice read and referred.

The speaker laid before the house sundry communieations from the several departments, which were severally read-and then the house adjourned.

#### THE "FREE TRADE" MEMORIAL.

The "Richmond Enquirer" of the 30th uit, contained the article which follows. It is probable that the editor was advised of the points that "it is probable" will be made. The concluding paragraph of Mr. Riteine's own remarks will strike some as being peculiar. Visitivita hope that every man may !- that's all.

Free trade memorial to congress. We inderstand We resp. (f.d) think, that more than \$10,000,000 that the committee appointed by the convention of my be stocked from the smooth of the public rese-

tary of the treasury, to prepare and transmit their me-morial as soon as possible. Mr. Gallatin has summon-ed the committee to meet at New York on the 4th January. The memorial will therefore, probably be laid before congress by the middle of the month. impossible at this time to state specifically the contents of the paper-but it is probable that the committee will ask -

Ist. "That after the payment of the slebt, the revenue be bons file reduced to the sum setually wanted to defray the expenses of government, according to their present scale, and without providing a surplus income for other objects not yet authorised by law. 2dly. That, allowing a reasonable time for the grainual reduction of the present exaggerated duties on some articles, all the duties shall be ultimately equalized; so that the tluty on no article shall, as compared with the value of that article, vary materially from the general average, or in other words, from the ratio of the whole amount of duties on importation, to the aggregate value of the imported articles subject to the payment of duties. Silty. That, as a consequence of this principle, whees, tens, coffee, and other similar articles, shall not be all-ded to the list of articles imported duty-lice, but shall, on the contrary, be subject to duties nearly equal, in proportion to their respective value, to those laid on other articles."

It has been ascertained, "that the true value of the average annual amount of the imports paying duties, deducting exports, and making several necessary corrections in the official returns, is for the years 1824 to 1829, \$58,300,000; and the average annual gross re-venue on merchandise, deducting the debentures and drawbacks, amounts, for the same years, to \$23,124,000. Deducting from this last sum, the appropriation of \$10,000,000 for the public debt, leaves \$13,124,000 for the revenue wanted alter the extinguishment of the pulslie debt; or a sum equal to an average duty of 222 per cent, on the abovementioned value of the important paying duty, actually consumed in the U. States. If the artieles now duty-free were added to the list of those now liable to duty, the average duty would be reduced to 214. it would be raised to 25%, il wines, teas, coffee, cocos, truits and spices, were made duty-tree. Allowing largely for errors of calendation or mistaken views of the sub ject, it may be asserted with confidence, that under any modification of the tariff which may take place, the average duty will be from 20 to 25,"

It is said that "the propriety of adopting, as a fundamental principle, the reduction of duties on all the imports to an equal rate according to the respective value of the several articles, independent of its great amplicity, is recommended by the following considerations:
"It will be a rallying point for all our friends, re-

quiring no departure from principle on the part of those who believe the present tariff unconstitutional, and ancording with the views of those who object to it as unequal and oppressive.

"It is, after all, and considering the difference of habits and local ties, the plan most equal on all consumers, and one of which no one can complain.

"It affords the most equal protection to every branch of industry, sufficient to encourage those for which the enuntry is nearly ripe, and gradually every other in proportion to the increase of our capital and popula-

"It embraces at once all the mechanics, and every manufacture or other domestic produce, in lavor of which, no extravagant duty has been last, leaving for our opponents those only who are interested in iron, wool and woollen goods, hemp, cotton goods, below the minimum, and sugar.

"In short, it reduces the question to that of equal and not less efficient, though mentental protection to was in unmitty, in apposition to the present assumed a belong, to the full purpose same become framelies to steep set assumed noisy of all those which of a method and occupied an order to obtain an acti-ficial togeth.

We resp. willy think, that more than \$10,000,000

nues—judging at least from the late expose of the secretary of the treasury—and of course, that the prospective rate of reduction of duties may be brought down lower than an average duty of 22 1-2 per cent.

It is said, that the constitutional question, as such, will not be presented in full—but that such a view will be taken of the tariff, as will show its inquitous and oppressive effects upon the minorsty, and therefore it deplorable departure from the equal spirit of our political institutions.

Mr. Galbitn will be unable to attend the presentation of the memorial, on account of the serious indisposition he has lately experienced. Judge Harper, iron South Carolina will attend—probably Mr. Dew ot Virginia—or, if his engagements torbid, then some other sitzen of the state will attend in his place. We hope that some of the northern members of the committee will also appear in behall of the rights of free trade.

The devoted friends of the true principles of the government entertain the hope, that on this question and at this moment Virginia will be true to herself. A correspondent reminds us that she is the frontier state in the anti-tariff system—that she has yet made no imprudent movement—that she has done nothing to disguat the one party or to lose the confidence of the other—that she has stand to the continue to th

## MR. GIRARD'S WILL.

We shall take the first suitable opportunity to publishe entire the long and Important will of the late Stephen Girard—for it will often be needled for reference, its details are very minute and extensive. As to the college which he has ordered to be bull, and endowed with a probable fund of much more than the two milions of dollars directly applied—all the chief parts of its structure are established—the sizes of the rooms laid down, and the thickness of the walls prescribed, bc. The following is that part of his will which has excited most attention, and is inserted to gratify the curiosity of such of our readers as may not before have seen it:

"In relation to the organization of the college and its appendages, I leave, necessarily, many details to the mayor, aldermen and citizens of Philadelphia, and their successors; and I do so, with the more confidence, as from the nature of my bequests and the benefit to result from them, I trust that my tellow citizens of Philadelphia, will observe and evince special care and anxiety in selecting members for their city councils and other areast.

with the series of the series

versity of opinion amongst them, I desire to kee the tentler minds of the orphans, who are to derive advantage from this bequest, free from the excitement wife's clashing doctrines and sectarian controversy are so apt to produce; my desire is, that all the instructors and teachers in the college shall take pains to instill into the teachers in the college shall take point to install into the minds of the scholars, the purest principles of morality, so that, on their corrance and active life, they may, frame inclination and habit, evinese betweence towards the fellow creatures and a love of trath, sobriety and industry, adopting at the same time such religious te-nets as their mattered reason may enable them to prefer. If the income, arising from that part of the said aum of two millions of ilotlars, remaining after the construc-tion and furnishing of the college and out-buildings, shall, owing to the increase of the number of orphasa applying for admission, or other cause, be madequate to the construction of new buildings, or the maintenance and education of as many orphans as may apply for admission, then such further sum as may be necessary for the construction of new buildings and the maintenance and education of such further number of orphana as can be maintained and instructed within such buildings as the said square of ground shall be adequate to, sh. Il be taken from the fiscal residuary fund hereinafter expressly reterred to for the purpose, comprehending the indelphin, and the dividends of my stock in the Schuylthat the benefits of said institution shall be extended to as great a number of orphans as the limits of the said square and buildings therein can accommodate."

THE COLORED POPULATION OF THE SOUTH. The following strucks, and especially that which a copied from the "Richmond Enquirer," though there subject is always important, have a special interest at the greacet time. The grand discovery, it access, has been made, that the "difference—nothing short of light "full—between all that exists on one side of the Poisson, and all on the other, is owing to That cause "ALONE—the excess of the colored population; and a "subject, at the ignorance and folly of the politicism, who "nacribes that to an act of the government (the table) "has the increased effect of the eternal laws "of nature."

I sincerely rejoice that the people of the south have begun to look at a subject, about which a feverish sensibility, and ratter rude spirit of domination, has generally prevailed among them. It these would have checked the progress of what every one, individually, pronounce ed an evil, but which all, collectively, adhered to with the grasp of a ilrowning man, and relused to consider, (as silly persons decline making their wills, because they would not think of that which must happen), it might have been well-but the elements of depopulation, poverty and weakness marched onward. Herein are the causes why "the whites are moving westwardly why enterprising and industrious laboring freemen, (the salt of every land), abandon the places of their nativity, in old Varginia capecially, "in greater numbers than we [Virginians] like to hear of." But how could it be expected that these would remain to be placed only a litthe higher than the grade of the colored population—dishonored in peaceful times, yet compelled to fight the announced in peace of the experience to get the bettles, or guard the property and persons of those who distincted them,—when the slaves might "erp lawce," and let loose the foul demons which shewed themselves at Southampton? The power to resist the evil has, (as it ever will), iliminished in just proportion to the increase of the evil itself; such, "are the eternal laws of nature"—soil they are just. The fury of party, and that holish pride which rejects experience, and entitle which rejects experience, and entitle which rejects of the pride who have the pride who with a spirit of boasting, and blindness to decay - would rather attribute the down-hill course of old Virginia to rather attribute the down-init course or old vigina to the opening of a read in Arkansas, or the protection of a button factory in Connecticul, than to the real cause which has converted tens of thousands of acres of once productive lands into coverts for such wild animals as possessed them, when Powhatan held savage dominion

over the regions now blackened with slaves. And men ascribes that to an act of the government, which is the lave not been wantong in Virginia—men high in authorized the state of the eternal laws of nature. What is try and possessed of powerful influences, that would be clone? Oh! my Gol—I don't know, but something rather argue and settle the difference "betwit the north in must be lione." and north east side of a hair." than digest the plan and execute a public work, such as the Eric cand or Balti-honest more and Ohio rail road. And these with talk; but eval it. they cannot reason white working men, gitted with sires to attain independence, to remain in a state of degradation, nor will the severest "chopping of logic," repair the damages inevitably sustained from the emigrat on of these. Quibblers about words, and sawyers of doctrinal points, must give way to practical minds and doers of things-men less from the people, not straid If as much money had been expended to improve Virginia by roads, bridges and canols, as has been spent in wages paid to members of the legislature for spent in wages paid to members of the legislature for talking about them, works equal to a junction of the east-ern waters of Vargioia with her waters of the west, might have been accomplished. I think that even Mr. Ritchie will agree with me in this!

I have always opposed that mistaken humanity, or wild enthusiasm, with which some individuals have been affected in regard to the slave population, though as devoutly hating slavery as may one of them. But on the other hand, slave-holders have treated even rightful and proper suggestions on the subject, with a most exceptionable rudeness. It is a matter in which, add on several secounts, the people of all the states in the union have an interest; and the rudeness just spoken of has induced some to say, "we shall laugh at your calamity and mock when your lear cometh." But this disposition is entertamed only by a few-nine-tenths of the estizens of the non-slave-holding states are willing to assist—to lollow the leadings of those of the slave-holding states, in any reasonable plan that may be adopted to relieve the pressure of the colored population; they are willing to put their hands into the common purse of the nation, and will be really glad to find that Virginia shall again think that the general government has some constitu-tional power in relation to the subject. Nine-tenths of all the had dispositions that prevail between inhabitants of different districts of the United States, have their origin-and nine-tenths of all the party strifes and bittermeas that exist, because of the resolution of the free white laboring people to protest their own industry, and of the efforts of the slave-hulders to reduce that industry to the grade of that of their slaves. Тиз 18 тик тичти. And but for the matters just stated, the idea that pro-teeting laws—such as are established by every civilized nation under heaven, are unconstitutional or inexpedient, would no more be entertained-than any one suppose ent, would no more be entertained—than any one suppose it immoral to boll a viper, that had coded himself up and flattened his head, to destroys and the thing which is called "free trade" would be entertained only by British agents and others sleeply interested to British commerce, located in our principal cities-and these would soon retire by the force of public opinion, if not compelled to cease their operations by public justice. From the Richmond Enquirer.

The two great subjects before the committees are those which relate to the colored population of the state, and to its internal improvements. Upon neither of these is the committee yet prepared to report.

It is probable, from what we hear, that the committee on the colored population will report some plan for getting rid of the free people of color-But is this all that can be stone? Are we forever to suffer the greatest evil, which can scourge our land, not only to remain, but to increase in its dimensions? "We may shut our eyes and avert our faces, if we please," (writes an eloquent South Carolinian, on his return from the north a few weeks ago)-4 but there it is, the flark and growing evil. at our doors; and meet the question we must, at no dismen to do on that momentous and appalling subject. Of this I am very sure, that the difference-nothing short of frightful-between all that exists on one side of the Potomae, and all on the other, is owing to that cause adone. The discase is deep-seated—it is at the heard's acre—it is consuming, and has all along been consuming or vala, and I could laugh, it located laugh on such as subject, at the ignorance and folly of the politician, who court of appeals had reversed the decision of the chan-

Yes-something must be done-and it is the part of no honest man to sleny it-of no free press to affect to con-When this dark population is growing upon use when every new census is but gathering its appalling numbers upon us; when within a period equal to that in which this federal constitution has been in existence, those numbers will increase to more than 2,000,000 within Virginia, when our sister states are closing their doors injun our blacks for sale, and when our whites are moving westwardly in greater numbers than we like to hear of -- When this, the fairest land on all this contment, for soil and climate and situation combined, might become a sort of garden spot, if it were worked by the h mils of white men slone, can we, ought we, to sit quicily down, fold our arms, and say to each other, "well, well; this thing will not come to the worst in our day. We will tavo it to our children and our grand-children, and great-grand-children, to take care of themselves—and to brave the storm?" Is this to set like wise men? Heaven knows! we are no fanaties—We detest the mad-ness which actuated the .Imis des Noirs. But something ought to be done—Means sure, but gradual, systematic, but discreet, ought to be adopted, for reducing the mass of evil, which is pressing upon the south, and will still more press upon her, the longer it is put off. We ought not to shut our eyes, nor avert our faces. And though we speak almost without a hope, that the committee or that the legislature will do any thing, at the present session, to meet this question, yet we say now; in the ut-most sincerity of our hearts, that our wisest men cannot give too much of their attention to this subject-nor can they give it too soon.

From the Richmond Whig.

The following project was submitted yesterday to the committee on free negroes, &c. for consideration, by Mr. Faulkner:

Resolved, That it is expedient, as early as possible, with their assent, to remove the free negroes and mulattoes, from this commonwealth.

Resulved, That the colony now established at Liberia, on the coast of Africa, presents the most desirable territory to which the said free negroes and mulattoes shall be transported.

That this state will annually appropriate Resolved. the sum of \$100,000 towards defraying the costs of the transportation of said free negroes and mulattoes to the coast of Africa; which sum shall be raised by a tax upon tanil, slaves, and other property now declared taxable by law.

Resolved, That it is expellent to constitute a board, which shall have authority to draw for such sums as may be necessary for the purposes aforesaid; whose duty it shall be to select from among such as may present themselves as candidates for emigration, under the limi-tations hereafter mentioned, and to do all other acts and things properly appertaining to such board.

Resolved, That for the purposes herein contemplated, the state of Virginia shall be laid off in sections, corresponding with the divisions established by the constitution of the commonwealth—that is to say \_\_\_\_\_\_ a fair and equal annual appropriation of the fund before mentioned, for the relief of the several divisions of the state, according to the number of free negroes and mu-

lattors in each. nattons in each.

Resolved, As an inducement to emigrate, each emigrant shall be provided, at the public expense, with agreeultural and planting implements, clothing, and other necessary articles, not exceeding in value dollars.

BALTIMORE AND OHIO RAIL ROAD. In consequence of the decision of the court of appeals, the following proceedings took places

January 5th, 1832.
At a special meeting of the board of directors, held

cellor, in the case of the Baltimore and Ohio rail road | company, against the Chesapeake and Ohio canal company by which the rail road sompany might be ef-fectually excluded from the route that had been selected, and obliged to seek another size for the continuation of the road westward, beyond the Point of Rocks. Whereupon, the following resolutions were unanimously

adopted.

Resalved. That, although the company should be exeluied from the route, which had been selected for the construction of the rail road, on the north bank of the Potomae, in compliance with the condition annexed to the subscription of Maryland to the stock of the company in 1827, yet the directors have an undiminished confi-dence in the practicability of constructing the road to the west, within the time originally contemplated, and with results not less beneficial to the state of Maryland, the union, and the site of Baltimere, than profitable to the stockholders; which confidence is founded upon the well-known character of the country, admitting of the construction of the road in Virginia, with all the advantages of close connection with the rich valley of that state, —upon the now conlessed superiority of the rail road over all other known modes as a means of intercommunication, both with regard to time, economy and commercial advantages,—and upon the strong conviction which is rapidly gaining ground in the public mind, that this claim of superiority is placed beyond doubt by the experience of this country and of England,
Resolved, That the president be directed to take the

most efficient measures to ascertain the best route to the Ohio river that may be still left open to this com pany; by sausing examinations to be made by the chief pany; by sausing examinations to be made by the chief engineer, with a view to this object, and that he report thereon at the earliest practicable date. Recolved, That this board cannot too highly estimate

the support that it has hitherto received from the stockthe support that it has hakerto received from the stock-holders, and holds itself pledged to omit no measures that may in any way asonduce to the accomplishment of the great object in view—an object, national in its every aspect; and which, when completed, must be of incalcula-ble advantage to our country, and place Baltimore, in wealth and reputation, upon the vantage ground which her admirable situation entitles her to hold.

P. E. THOMAS, president Bultimore and Ohio rail road co.

In reference to the decision of the court—judges Buchanan, Earl and Stephen concurring, and judges Dorsey and Archer dissenting, and judge Martin baving requested that the case might be deferred, because that indisposition prevented him from attending-the editor of the "Baltimore Gazette," whose opinion on such matters is entitled to the highest respect, tells us that this decision, which reverses that of the chancellor, is not, in itself, final; and that the legislature of the state may order a re-hearing of the argument and trial before a full court—in which, should the judges be divided, the decree of the chancellor would stand confirmed. He decree of the enacetor would stand combrided. He says that the rail road company has not yet received "all the benefit of the constitutional tribunal to which they were and are entitled;" and that the proceeding suggested has been ordered by former legislatures, in

many instances, &c.
We are not advised of the course that will be parsaed-but in a matter so interesting to Baltimore, and important to multitudes of persons in Maryland and other states, even the far west, -we hope that the last le-gal appeal will be made, before the 'right of way" is sub-mitted to, under a claim that was practically 'dead as a door nail" for very many years—and which, we cannot believe, will now render any public service, though cal-culated to produce much public injury.

## FOREIGN MISCELLANIES.

The famous O. P. Q. correspondent of the London Morning Chronicle, has addressed one of his letters to king William IV—from which we extract the following paragraphs:

influence, and wealth, and courtiers, and creatures about them, to keep their heads above water, during the last quarter of a century, and I am much disposed to believe that your majesty, as an honest British sailor, has very often been as disgusted with the absolute or dissobute conduct of kings, as any of your majesty's present subjects, or as your majesty's most humble correspon-

"And perhaps your majesty is also aware, that the example of the United States of America has been very dangerous to absolute monarchs and absolute governments; for those Atlantie republicans have shown no ments; for those Atlantic republicans have shown an that men can eat, and drink, and sleep, and have chil-dren and homes, and firesides, and Christmas roass beef, and acwappers and trade, and commerce, and agriculture, and a navy, and an army, and great roorad, and intellectual, as well as political weight in the world, and can be religious and moral, and literary, and enand can be religious and moral, and literary, and en-courage the arts and sciences, and have pleasures anal amazements, and the joys and delicasies of rational, and intellectual, and aveilized society—and yet have no national debt, no king?! If any courtier from Canada, or any traveller from the back settlements of Americas, shall whaper in your majesty's ear, that in the United States the people are not so happy as I represent tham, and that one day or another the Americans will have a king, or many kings, and that the republic will become amp, or many range, and that the reputing will become a monarchy, treat such a man as your enemy, as one who would insult and deceive you, and do by him as your late accomplished brother did by a person named Brumwell, ring the kell and order his carriage."

Because of apprehensions from the near approach of Because of apprehensions from the commond to the cholers, the king of England issued his commond to the archbishop of Canterbury to prepare forms of prayer suitable to the occasion—and the archbishop, asprayer autable to the occasion—and the archbishop, as-sisted by the bench of hishops, adopted the following prayers, to be read in all the authetrals, sollegiste, and parochial aburches and chapels throughout the king dom

"Most Granious Father and God! who has promised forgiveness of sins to all that with hearty repentance and true faith turn to thee, look down, we beseech thee, from heaven, thy dwelling place, upon us, My nawar-thy servants, who, under an awful appreheasion of thy judgments, and a deep conviction of our sintulness, prostrate ourselves before thee: We acknowledge is prostrate outerview octors ince: we atmosphage at to be of thy goodness alone, than, whilst thou hast vasit-ed other nations with pestilences, thou hast so long spared us: Have pity, O Lord, have pity on the people, both here and abroad; withdraw thy heavy hand from both here and anorous wineraw my newy nano from those who are suffering under thy judgments, and turn away from us that grievous calamity, against which our only accurity is thy compassion. We confess, with shame and contrition, that in the pride and hardness of our hearts we have shown ourselves unthankful for thy mercies, and have followed our own inclinations instead of thy holy laws: Yet, O Mereitul Father, suffer not of thy holy laws: Yet, O Mercitul Father, assfer not thy destrojing angel to lift up his hand against as, but keep us, as thou hast heretolore done, in hesith and acty; and grant, that being warned by the sufferings of others to repent of our sins, we may be preserved from all avil by thy mighty protection, and capy the sontinoance of thy mercy and grace, through the merits of our only Mediator and advocate, Jesus Christ. Amen."

"O, Almighty God! who by the many instances of mortality which encompass us on every side, does all upon us seriously to consider the shortness of our time here upon earth, and remain us that in the midta of lide here upon earth, and remain us that in the midta of lide

here upon carth, and remind us that in the midst of life we are in death, so teach us to number our days that we may apply our hearts unto wisdom. Give us grace to may appry our nears a unto wassom. Larse us gives to turn unto the with timely repeatance, and thus to ob-tain, through the merits of our Savior, that perdon to-day which to-morrow it may be too late to seek for; that so being strengthened by thy good Spirit against the ter-rors of death, and deliy advanting in goodlease, we may at all times be ready to give up our souls into thy heads, O Gracious Father, in the hope of a bleased immortali-ty, through the mediation and for the merits of Jesus Christour Lord. Amen."

We have mentioned that there was a great fright in England, because of some cases at Sunderland, thought to be the eastern cholers—but the alarm pretty some subsided, and the people of that town maintained their usual health. More recent accounts, however, shew fresh al arma

This fearful disease had nearly ceased at Cairo-but was terriffic white it lasted. It visited 2,962 towns in Hungary, in which there were 335,734 eases and 151,734 deaths. It had not been very general in Visua-2,084 eases and 1,297 deaths were reported up to the 21st Oct. and 56 new cases on the 22ml. At Berlin, in a certain very thickly peopled part of the city, about 1 person in 18 was struck with the disease. At Humburg only from 10 to 15 had died daily, and these were chiefly of the lowest class of the people, especially hard-drinkers—the fear of the disease had nearly subsided in this city. It was raging decaduly at Baneres, in the East Indies, and it is said that—"At Mecca and the Hadjee country, 45,000 souls were carried off by the cholers, in about The violent rams have produced great daone month. range in Arabin. Half of Suez is washed away. The locusts covered the water for miles and miles: so that it was literally the red sea."

The faculty of Germany have come to the unanimous enaclasion that the disease is not contugious, after very close examinations of its progress—so also the whole body of the Polish physicians. They state that there were about a hundred physicians, French, English, and German, employed about the sick in Warsaw, not one of whom caught the cholers. Ten of them even inocu-Orthman, empirored about the steek in Varaw, not once of whom eaught the cholers. Ten of them even inoculated themselves with the blood of cholers patients, without success. The perters, the nurses of the hospital, and the undertakers, were equally exempted from

disease.

To this, is added the testimony of Mr. Scarle, who went to Warsaw and sojourned in the hospitals there, during the epidemic—a gentleman who setually suffered in persua from the cholera in India, and who wrote a treatise on the disease, before it visited this part of Europe. His words are these, dated as War-aws——A Rer all I have leard, either in Judio or Polsual -after all I have read, seen, or thought upon the sub-ject-I arrive at this conclusion, that the disease is not coningious."

The following is a copy of a handbill published in England by sir Henry Halford, president of the board of health, and extensively circulated—

Cholera morbus .- Advice to families for the prevention and cure of this dreadful maledy, as extract the London Guzette, the 20th October, 1831. eted from

"It is important to point out the instant measures while in important to point out the instant measures while may safely and beneficially be employed where medical sid ensured immediately be procured. All means tending to restore the circulation and maintain the warmth of the body, should be had recourse to without delay. The patients should always immediately be but to bed wrapped up in hot blankets, and warmth should be sustained by other external applications, such as repeated frictions with flannels and camphorated apirits; poultises of mustard and linseed (equal parts) to the stomseh particularly where pain and vomiting exists; similar poultices to the feet and legs, to restore their warmth. The returning heat of the body may be moted by bags containing hot salt or brun applied to different parts of it. For the same purpose of restoring and sustaining the circulation, white wine whey with spice, hot brandy and water, sal volatile in a dose of a spice, hot brandy and water, sal volatile in a dose of a tea-spoonful in hot water, frequently repeated, or from five to twenty drops of some of the essential oils, as perpermint, clores or esjeput, in a wine glass of water, say be administered, with the same view, where the stomesh will bear it, warm broth with spice may be employed. In very severe cases, or where medeal and is difficult to be obtained, from twenty to lorty drops of laudanum may be given in any of the warm drinks previously recommended.

Syrade

Signed,

HENRY HALFORD. President of the board.

This treatment is within the means of every family; all that is required being that they should provide themselves with the following simple medicines.

Pint spirits of wine and complier.

I or 2 lbs. nonstard and linserd powder. 2 mg. oul vol tile.

tor. essential oil of peppermint, cloves or cajeput. All which may be procured for a few shillings.

It is seriously recommended, that every person should be prepared with the prescribed remedies, so that noboily shall have to attribute to his want of eaution the spread of a malady so terrible and overwhelming.

It appears from a senses lately taken, that the number of the inhabitants of Warsaw is now 115,945, not including the persons who arrive dally. The population has therefore been diminished in the course of this year by 25,000 - namely, 15,000 males and 10,000 females. Among the present population are 28,214 Jews; in the third quarter of the city they are most numerous, and exceed the Christians. The number of females now exceeds the males by 7,423.

The l'olish reiugees who have been able to reach Paris have found an asylum, chiefly through the efforts of general Lalayette. They exhibit letters which reach them every post from the Prussian frontier, describing the cruel treatment of their unfortunate brethren by the Russian athorities. Those who, after the fall of Modlin, returned to seek their former homes and families, and who relied upon the amnesty of the Russian generalissimo, have been, according to these letters, treated with the utmost harshness when they sought the restowill the utilist interest of the spoliation perpetrated upon their property while in the occupation of the Russian soliliery. Indeed, generally, all who have not protrated themselves before the conqueror, have been treated with distain and contumely.

Address to the Poles by their countrymen in England and France.

Poles!-Confident in the enlightened spirit of the Polest.—Confident in the enlightened spirit of the sage, and in the sanetity of your cause, you rose to throw off the yoke of the oppressor. The world, in attonishment, has winessed your scheterements but nations whom honor, duty, and even interest, commanded to assist you, have pushlaminously betrayed the common cause. Future ages will show how base the significant that it is not to the same than the significant that it is not to the same that is not the same that is not to the sa was their conduct, how short sighted their policy. The contest is at an end: the sword of the Autoers I he contest is at an entit the sword of the Autooras has triumphed. Europe, by her callous indeference to your misfortunes, participates in the unhallowed act. Poland is no more: erased from the list of na-tions, she is doomed anew to a long slavery.

Countrymen!—What can we expect from the con-queror? His rage and lury we have already defied, and if an unexpected effort of humanity should attempt to spare our sufferings, feelings of patriotism would be more deeply wounded than they have ever been by every crucky and torture formerly devised to suppress them; for what, short of the independence of Poland can satisfy men who have aworn to die for her freedom?
Poles!—You have hitherto done all that became a

Poles:—You have mineric done an trust became a great and noble nation. You have spared no sacrifica to attain your great object thousands of your brave brethren have already scaled with their blood their greatest compact with heaven to die for their country, But if the sword of the enemy has spared our lives, let us remember that we are bound to devote every hour that remains to us to emulate the heroes that have fulles, and whose honor and glory are our most sacred trust. No inducement of fortune, rank, or interest trust. No inducement of fortune, rank, or interest shall betray us into any act unworthy of our most solemn vows; these must be guarded as apolless as the name of Pole, which will henceforward be left to Europe as that of patriotism and devotion.

Polezi let us leave that wretched country, now no more our own, though soaked with the best blood of her

delenders-let us leave Europe, a heartless spectator of our struggle and our despair. America is the only country worthy of affording an asylum to men who have sacrificed every thing for freedom; there Poland will be enshrined in our hearts, and heaven will perhaps bless our devotion.

Duke Constantine. - We have seen some attempt to resule the character of the late duke Constantine from

the charge of barbarity towards the Poles. A recent work of authority, however, states that his temper was truly ferocious. He was known to have ordered a soltruly ferocious. dier 500 lashes for having the seams of his gloves sewn maide instead of outside. A lady and gentleman having passed him one day in their carriage without recog-nizing him, were forced to labor on the public works, trundling a barrow along with convicts and deserters. An officer of lancers was commanded to perform some manœuvres of great difficulty, which his horse's went of training prevented him from executing. Constantine cursed both man and beast. He called for muskets, and had a pile of them with bayonets fixed, set upon the ground, of the width of twelve feet, and then ordered the lancer to leap over them. He succeeded in accomplishing the frightful task, only to be compelled to do it a second and a third time, to the astonishment

of all present. One of the generals then interfered, representing the exhaustion of the officer and animal. Constantine, in a rage, again commanded the leap to be made.—The noe animal cleared the bayonets with the fracture of two of his legs; the lancer escaped unhart. He advanced to the duke, and thanking him for the honor he vanced to the duke, and tranking time for the monor he had hitherto enjoyed as an officer in the emperor's army, tendered his resignation. He was ordered to the guard house, and was never seen again, doubtless assassinated, as others had been before, by order of the grand duke. This was the rule, this the government which the heroic Poles attempted to overthrow; and which they would have succeeded in overthrowing, it the treachery of their late commander had not rendered their valor unavailing. To such oppression they To such oppression they are again doomed, since, in the memorable language of the French minister, "onnen" again reigns "in War-[Albany Daily Advertiser.

There are in France \$8,888 Catholic clergymen, of various grades.

were before the restoration, 1,533 religious There asylums for temales-or maisons religieuses de femmes; and, from that epoque to 1820, \$611 more were authorised-making a total of 2,144 capable of receiving legacies, donations, &c. Besides these more than 880 exist without any direct authorny-making 5,024, containing 24,257 females. These have 5,500 pensioners or dependents, not forming a part of the communities.

Religious communities of men are not authorised, although many exist in different parts of France containing about 20,000 - making the whole personnel de elerge Catholique in France, of 121,125.

[U. S. Gazette.

Canton, May 13th, 1831 .- The foreign society of Canton has been recently enlivened by the residence of catton has been recently enlivened by the residence of a lady, who remained about a week, without interruption or annoyance of any kind; the authorities, who were well awars of the fact, remained satisfied with the assurance that she had only come upon a visit, and would remain but a few days.

It is with regret we announce that Woo-Yay, manageing partner, of Gow-quays, hong, expired on the lat-inst. in the prison to which he had been consigned, about five months before, on the pretext of traitorms intercourse with foreigners. When a man dies, either in prison, or in the house of an officer in whose charge he may have been placed, the custom of the Chinese lorbids the corpse being taken out by the door, and a hole must for that purpose, be made in some part of the dwelling, unless a sufficient sum of money is paid, in which case, the body may be carried to the top of the house, and lowered down into the street. In the present instance, the coroliant sum of seven thousand present instance, the exorbitant sum of seven thousand present instance, and of this honorable distinction; this are the sanded for this honorable distinction; this are the sanded playing, wheely maintaining this are the sanded playing, wheely maintaining that, since the body is dead, it can import but little in what direction it may be conveyed to the place of interment. It was in consequence, we are told, passed, after the ignominious fastion, through a hote maile in the wall, highly mortifying, no doubt, to the disappointed expectations and cupidity of the merciless

#### UNPROFITABLE EXERTIONS.

An Englishman named Osbaldestone, beited large soma of money that he would rife two hundred miles in ten successive hours - but without limitation as to the numsuccessive nours—out without immatten as to the num-ber of horses that he might use. The match took place late in November last, and, though the day was stormy and wet, he made new bets that he would perform the distance in less than nine hours-and accomplished it in right hours and forty two minutes, without much seeming fatigue, and in high spirits, and it does not appear to have injured him at all. Mr. O. weighed 157 lbs. was 47 years old. He employed 29 horses, some of which he used several times. The distance performed on a horse was four miles, which, in some cases, he made in eight minutes—generally in about nine—the longest period was 10m. 15 sec. and allowing for the stoppages, it is estimated that he made on an average 25 miles an hour, when riding. He mounted and dismounted 100 times! He had trained himself for this undertaking-by travel-

ling great distances daily at a rapid speed. This exploit brings to the recollection of the London

editors others of a like nature, as follows:

lu Oct. 1741, at the Currogli meeting, in Ireland, Mr. Wilde rode 127 miles in six hours and 21 minutes, with The time stipulated was nine hours. 10 horses. Ju 1745 Mr. C. Thornfull rode from Sulton to London

and back again to Stilton, being 213 miles, in 11 hours and 34 minutes.

In 1762, Mr. Shaftoe rode 50 miles and a quarter in one hour and 49 minutes, with 10 horses, 5 of which were ridden twice.

In 1762, the same gentleman undertook to ride 100 miles a day for 29 days together, on any one horse each day, the number of horses not to exceed 29. He secomplished it on 14 horses, and on one day rode 160 miles, on account of the tiring of the first horse.

In 1758, Miss Pond rode 1,000 miles in 1,000 hours. at New Market.

In Dec. 1810, Mr. Milton, the horse dealer, who weighed 15 stone, rode from London to Stamford (starting from the corner of Dover-street) in four hours and 25 minutes, using 18 horses.

#### MR. BERRIEN.

A partial extract from a speech delivered by Mr. Berrien, at Miledgeville, had materially injured his character, in the opinion of a large portion of the American people-no matter of what political party they were—lor it much reduced the high r-potation which he had had for consistency and independence. Hence the following letter from him.

From the United States Telegraph.

From the United States Leaguagn.

Mr. Berrien-11 will be seen, by a latter which we this day lay before our readers, that this gentleman repels, in a becoming spirit, the construction which has been given by the Giote, and the affiliated presses, to the speech which he delivered in M hedge-

spirit, the construction which has been given by the Glote, and the filling prieses, to the speech which hed illiered in M ltedgradue filling prieses, to the speech which hed illiered in M ltedgradue filling prieses, to the speech of the cone stoon between himself and general Jackim he the considered the question between inputed to him. Upon this subject, the letter before us it explicit. TO THE ANGULAN FELLIN.

From the beginning of the present mouth, I have been confined to my route the regioning of the present mouth, I have been confined to my route the principle of the present mouth, I have been confined to my route the principle of the present mouth, I have been confined to my route the tenders and the principle of the present mouth of the principle of the present mouth of the principle of ling to any man.

I perfected the allution to the dissolution of the cabinet, by the declaration, certainly not complimentary to the president, that not reference in time the public service, was the resident of a course used the languages.—It against duty. In reference to this certain, and this languages.—It against duty. In reference to this certain to the cause of public morals—to your nost sarred rights—to the sanctity of demerate life—and to thuse household affections which consists at ource, the charm and safguard of society, will forcid which I not not seen a sentiment which I not a niep which I have taken—to silve a sentiment which I not show the sentiment of the sentimen prefaced the allusion to the dissolution of the cabinet, by the

NILES' REGISTER—JAN. 14, 18:

tained in my two addresses to the public—re-stabilising their positions—re-affirming their sentiments—and renewing the declarations—re-affirming their sentiments—and renewing the declarations—re-affirming their sentiments—and renewing the declarations—and sentiments—and sentents—and sentiments—and sentents—and sentents—

MR. McLEAN.

Entract from judge Metters, on the late Mr. Monroe, When the circumstances which caused the judge to retire from the charge of the post-office department are recollected—the force of this extract will fully appear.

In the sex of patronage, most delicate and importance of the control of the

The na magnetic transfer of the property of th

man area executed commone to concrust character man more way as all more concrust character man more way are all more control to the control to which we are all more control to the contr

SAXON SHEEP.

The following communication, with the accompanying ease, was handed wing communication, with the accompanying ease, was handed with the accompanying ease, was handed with the accompanying the same account a

farmers. Whether the cause ungastron.

Now Tork, December 1, 1821.

My dear sir—In performance of my promise, I send you enclosed a copy of a late trial contained in the Reports of Ryan & Moody, vol. 1, page 136, while contains matter, at least cursous, in relation to sheep; and I think tully soutants the opinion I can or the relation of sheep; and I think tully soutants the opinion I can or other kinds of sheep, might be attributable tulindent causes, rather than to any finit fronty of that particular species. It should be remembered, that when the merino sheep were first introduced into this country, an opinion prevailed some time attributable and the second contained to the stream of the second contained to believe prevails, and is generally entertained in resonance of life of the second contained to the sec believe prevails, and is generally entertained in regard to the Saxon therp. It is said the baths are tender, and more difficult pose to admit any of these objections against the Saxon therp. It corpers a doubt, whether a better case will not be found for any alleged weakness or intrinsity of Saxon lambs, in the known usage in most cases of "breedings in and in, or from relations," as

any all gen we want of "breeding in and in, or from relations," as using in most cases in each sea, as "The supposed superiority for fine "wool of the imported Satorel heep, and the great cost of purchase, has in most cases induced larmers to continue to rear their flocks from the same stack, wither the same stack, with the same stack, with the same stack, and the same stack indicated by the eyes and bead—the English farmers call it "the gaggler." An easy remedy is at hand. Those who have not other flocks with which they can exchange, may exchange with other their continues of the same stacks and the cause of any alleged degeneracy in the offspring.

JAMES TALLMADGE.

Nathaniel P. Tallmadge, esq.

1. Ryan & Moody's Reports, 136-summer assizes-5 Geo, 1V.-Western circuit, Wanchester.

1. Ryan & Mondy's Reports, 150-remainer arises—5 Ges. 17;—
Gerom Mobert, Lord chird pastice, (August 3, 1324)

Joliff vs. Be-deli-—Anaumpst on a warnary of crain scepe sold by the defendant to the planniff. The first count stated the theorem of the control of t

ved. For the defendant it was contended, that the sheep having been For the defendant it was contended, that the sheep having been healthy and throwing at the time of, and for two months silter the sale, must be considered as sound at that time; that instruch as sale, must be considered as sound at the time; the disease of which there were previous improved extensive and which there were previous improved as the sale of the disease of which the disease existed at the time of the sale; and that an show that the disease existed at the time of the sale; and that an instruct to be capable of proof, and could not be legally considered as an unconsidered extensive at the time supplicated for in the war-

ranty.

Abbott, lord chief justier, left it to the jury to say "whether, at the time of the sale, the sheep had existing in their blood or constitution the disease of which they afterwards died; or, whether it Verdiet for the plaintift 1306, the value of the sheep which had died, the defendant agreeing to take back the remainder.

DECREASE OF DUTIES.

From the New York Courier and Enquirer.

Wa publish the following rates, which go into operation from the 1st inst. together with a statement of the probable effect the the same will have upon the recease of the past and present

4 cents. Southong and other black Campuy or Congo, (considered as Sou-10 chang). 25 chung),
Gomee, gunpowder or imperial
Hyson sud young hyson
Hyson skin and other green
Teas.—From say other place then Chi
or in vessels of or in any other th
vessels of the United States— 50 98 12 any other that Southong and other black 18 34 Campoy or Congo, (considered as Sou 18 chong; Gomee, gunpowder or imperial nd young leyson 86 27 Hyson skin and other green per lb. 2 1 u-per bushel, weighing

Exhibit of the decrease of revenue growing out of the lesser duties amout of the uccrease of revenue growing out of the sesser outres on coffee, eccos, salt and molassis, for the year [35], and also on tea, coffee and salt, for 1832—the calculation predicated upon the net quantity imported in the fiscal year, commencing 1st Oc-tober, 1889, and ending 30th September 1830, as per the ufficial

document of the secretary of the treasury.

Coffee-Amount of net duties, deducting exports entitled to describe the above year, (130),

On same quantity for the following year at
the reduced duties

782.144 00

Decrease of duty	dolls. 1,152,217 20
area—As above At the reduced duty	dolis. 19.842 60 9,421 30
Decrease of duty	delis. 9 921 30
init-As above At the reduced duty	dolls. 3,057,179 20 792,884 40
Decrease duty	dolls. 264,294 80
folasses-As above At the reduced duty	dolls. 835,212 30 417,546 15
Decrease of duty	dolls. 417,546 15
Total decrease of duty in 1831	dolls. 1,843,979 45

Decrease of revenue arising on the lesser duties on teas, coffee and salt, for the year 1832-predicated also upon the imports and exports of the above fiscal year, (1800) 7/ar-Amount of net duty the above fiscal

At the reduced duty		1,010,459	
Decrease of duty	dolls.	1,293,073	70
Coffee-Duties as above, at the rate of 2 cts. Duties in 1832 at	1 et.	. 768,144 384,072	
Decrease of duty	dolls	. 284,072	40
Salt-Duties as a bove, at the rate of 15 ets. Duties in 1832, at 10 ets.	dolls.	792,884 528,589	
Decrease of duty	dolls.	264,294	80
Total decrease in 1831 Total decrease in 1832		,843,979 3,785 420	

Total decrease 1931 and 1832 dolls. A,509,309 to The preceding statement is made up from the official documents of the fixed year, commencing in October, 1830, and end-active the fixed year, commencing in October, 1830, and end-active compared to the experiment of the fixed active compared to the experiment of the compared to the co Total decrease 1831 and 1832 dolls. 5,629,399 80

Decrease of duties on teas, coffee and solt from and ofter the 1st January, 1812.

Teas-From China, in vessels of the United States
Low Laty, Bohra

Bohra

Decrease of duties on teas, coffee and solt from an offee the 1st January, 1812.

In iou existing with many experienced and reflecting merchants, that there was a redundancy of imports the past, which will call for a mine limited operation the present part and constitution of the constit

FACTS FOR THE FIRE SIDE.

We commend the following article to the attentive persons of all who believe that impost duties operate as a tax upon the comaumer.

From the New York Commercial.

We have been favored by Mr. Edwin Wilsiams, with the following table, prepared for the next volume of his Annual Register.

ing table, prepared for the next volume of his Annual Register I is particularly inter-tring at this period.

Price of cool, sail, eaffer and malarses.

The following table xhabits the price in the Now York market on the 11 Now 10 No

		ren.	bus	hel.	- Dec		gali	on.
Dec. 1.		duty.	price.	duty.	price.	duty.	price.	etra
1815	d.23	d.3 co	90c.	20c.	25c.	10c.	70c.	100
1816	14	1 80	60	do	21	8	50	
1817	11	do	60	do	24	do	60	do
1818	11	do	70	do	30	da	83	do
1819	14	do	do	do	24	do	40	do
1820	-	do	63	do	29	do	30	do
1821	14	do	69	do	28	do	33	do
1922	-	do	do	do	25	du	do	do
1823	12 75	do	87	do	20	do	26	de
1824	15	2 16	50	do	17	do	28	du
1825	14	do	88	do	16	do	33	do
1826	10	do	49	do	15	do	30	do
1827	12	do	62	do	14 1-8	do	33	do
1878	13	do	52	do	13	do	28	10
1829	11	do	45	do	12 1-2	do	25	do
1833	8	do	55	do	12	do	30	do
1831	13	do	62	15	121-2	2	30	

It will be seen, from this statement, that the prices of these important articles have not varied in proportion to the aherstion of the tariff. In most cases, the effect produced has been in direct contradiction to the common theory that the prices are regulated by the duties to are the prices are regulated.

contradiction to the common trewy time, use pro-try the duties psyable on Importation.

Thus coal in 1841, was 14 dollars, daty 1 dollar 10 cents—in 1820, 8 dollars, duty 2 dollars 16 cents. Bath, in 1820, was 45 cts. duty 20 cents—in 1811, 62 cents, duty 16 cents. Coffee, in 1820, was 12 cents duty 2 cents—in 1831, 18 1-2 cents, duty 2 cents. duty 5 cents.

THE COAL TRADE.

Memorial to congress for a reduction of the duty on coal.

To the senate and house of representatives of the United States. in congress assembled.

The memorial of the undersigned, citizens of N. York, respectfully

The memorial of the undersigned, extraors of N. York, respectfully reperson; That

A large portion of the reperson of the relate of individuals referred to comprise very many industrious and merisonious cuttients. They derive list is support principally from the produce amultaneously with the receipt of the receipt o

their own.

of their own.
Until of last years, the principal sources of fuel for this community were word, brought by a ser communication from forests and reserved wood lands, in the interior, and bituminous cust, and reserved word lands in the interior, and bituminous cust, and reserved word from Ongland and Sectional, and more recently from Noneth Chain the last this or eight years, various descriptions.

some very from England and Sections, and more area we will be the Section Section. Within the last the relight years, around descriptions of anthresic coal, the produce of the years around the section of anthresic coal, the produce of the section of anthresic coal, the produce of the section of anthresic coal, the section of the secti

the miners. All the other authractic costs are held at prices believed to be equally high in proportion to their relative value. The high rate of duty on foreign costs has almost entirely excluded them from the chances of liberal competition. Liverpool cost, which has been usually sold at from mue to levelve dollars the chaidron, can now with difficulty be powered at twice the chaidron, can now with difficulty be powered at the chaidron, can now with difficulty be powered at the chaidron, can now with difficulty to this and the neighboring eities, much inconvenience is already experienced, and great and catterned distress anticipated. It is the biref of those competent to form opinions, understandingly, on this subject, that if the day on foreign costs were repeated without diskay, a sapply sufficient for the present emergency would speedly be coals would betreafter be proportioned to the wants of the inhibitants, without interfering with a successful development of native resources.

manner mental interfering with a successful devilopment of maitry feesomeres.

Your memorialists believe that it is not the policy of the provenance, at a period of unexampled national prosperity, to continue such restrictions upon cummerce as are assettially operous to the people, and prevalently operous to the people, and prevalently operate to the poor, respectfully solicited to the subject of the property o

New York, December 23d, 1831.

Statement of the Metriculte, Pa. paper.

Statement of the Quantity of foreign coal imported into, and exported from the United States for each year, ending on the 30th September. From the year 1800 to 1831 inclusive, both taken from the manual free part 1800 to 1831 inclusive, both taken from the manual free remaining for communition reduced into tons of 38 bushels each—with the aggregate amount of leadings. Schulyfull and Lackwama, (authractle, coal mined and brought to market at ide water from the commencement of that business in the year 1800, taken from the statement compiled and percented to the convenience of the friends of domestic industry, held in New York, in October last:

Years.	Bushels import- ed.	Bushels exported.	Bushels remain- ing for consump- tion-	torn of 28	Anthracite tons of 28 bush, each	Total.
1820					365	365
1821	627,737	8,318	619,419	29,122	1,073	23,195
1822			966,061	34,523		36,963
1823			852,137	30 433	5,823	36,256
1824	764,815	2,414	768 401	27,228	- 9,542	36,709
1885	718,355	4 140	718,075	25,015	33,393	59,838
18 26	970,021	1,000	968 911	34,605	48,047	82,652
1827	1,127,388	180	1,127,208	40,257	61,661	101,918
1828	905,200	1,743	904,477	31,302	77,395	100,607
1829	1,274,970	4,758	1,268,212	45,293		
1830	1,640,995	12,480	1,627,815	58 136	174,925	433,061

For 1831, up to the 22d October, 140,948 tons of anthracite had seen brought to tide water. In consequence of the stoppage of smal manigation by ice a mouth earlier than usual, it will pro-ably not exceed 180,000 tons.

canal merigation by tee a month earlier than usual, it will pro-bably not creed 180,000 tons.

From the New Terk Commercial Advertiser.

Fuel—I observe in your paper of Satueday last some observations on the same subject have also appeared in other manifestions on the same subject have also appeared in the present server of the present of the present of the present of the present duty on coal. More importance has been given to this deep from the fact of a resolution having been brought before the band of sidermen to take into consideration the propercy of applying to congress for a repeal of the day. To those sequentially problem. It has not arisen from a want of competition in the propercy of a present of the presen

the centre of the soal region and utter ruin naered the miner in the lace. The population was scattered, and capital withdrawn as fast as possible, verty one anticipating the most unfortunsite discovered, that, instead of withdrawing capital and labor in the spring from this business, that time would have been the fortunate one to have added at least 50 per cent. of both to it. Toward the into the summer orders came in from most of the eastful there most the summer orders came in from most of the eastful three months of the season had passed without any trade, and the unmost capital capital and says that the season had passed without any trade, and the unmost capital capital three months of the season had passed without any trade, and the unmost capital capital three months of the season had passed without any trade, and the unmost capital ca

The Miners' Journal counsels all consumers of coal to be admonshed by the present difficulty of procuring fuel, and to lay in their stocks for water consumption in due season. A very excellent piece of advice—for all who have the measu. It informs a also that contracts are now in progress by the coal desiers in this city, for next season's supplies. It is stated in the same print that the corporation of New York were officed 1,000 tons of coal that the corporation of New York were officed 1,000 tons of coal live white to be fact, or very heavily so; and that the corporation, by their act of reformal, deserve the centure of every first of of suffer-heavily of the contract of sufferfor the use of the poor, at 4 dollars and 50 cents per ton. We be-lieve this to be a fact, ur very nearly to, and that the corporation, by their act of retonal, deserve the censure of every friend of suffer-ing humanity. Every man who voted against the measure should lorthwish contribute out of his own pocket, his share of the 6,000 ollars thus lost to the city. [N. T. paper.

#### BALTIMORE CITY COUNCILS.

BALTIMORE CITY COUNCILS.

The annual address of the mayor, William Stewart, esq. presents a very interesting account of the condition of the city-the details, however, are not important, except to its inhabitants. The total of the city debt, December, 31, 1931, was 681,037 88. This includes the subscriptions to the rail road stocks which amount to 295,000 dollars.

The following paragraphs have some general justresting the comparation of the experience that we have obtained in nying the stone raise strongly not street, must satisfy every mind, that a comparatively small appropriation, would have enabled the eity commissioners to reset the curb stones, and repare those parts of the streets which were left by the rail road company unstouched, but appropriation for such cases, sufficient to enable the city commissioners to make a thorough repair of such streets, as the rail roads may be carried through hersafter.

"The enterprise in which many of our citizens are engaged, winter, by means of a steam road of section roads. There would in the city every encouragement from your hands. There would in the severest weather of winter, all the advantages contemplated by our rail roads, and it in the particular, even more than was only our rail roads, and it in the particular, it is not to be a sufficient of the particular particular particular particular will patronive the undertusing, as it will be a public benefit to our city, to keep the taxigation open to the sea throughout the year."

year."
"The vigilance of our fire companies continues unabated, and their usefalues must be acknowledged by all, yet there are some irregulative among them, which should be corrected. I alloud particularly to the practice of running part of their apparatus

on the foot parements, to the great annotance of the passengers on the streets, and the injury of private property, by breaking and mutitating it.—They should be probabled from running their apparatus on the foot parements under exerce penalties."

"I would respectfully call your attention to the practice of ariting and shouting crackers within the limit of our city—I am as

return and months crackers within the limits of our city—I am ma-tified myself that the only preventive with be to prohibit their tale within our city, under heavy penalties. Those who shoot them off, are frequently too young to be aware of their pernicious consequences, or regardless of the evil resulting frue its indulecuce.

#### LEGISLATURE OF INDIANA.

Extracts from the innugural address of gov. Noble.

Among the prominent measures and the important duties that
will annually claim a share of our deliberations, is that enjoined
the resultation to nearlies a second extension of education. Extracts from the immigrant another of governous.

Among the prominent measures and the important dataset that allowed the prominent measures and the important dataset that the prominent of the provide a general system of education by the constitution to provide a general system of education 1n a short time the ream of government will pass into other hands, and the phases we occupy, must be filled by the youths of the land. "Now-ledge in power; and all power rightfully derivations may be perpensively, if it is proposed to the properties of the pr

to the subprising care of the national Ligitature, and it are that a unce we must look for the improve neart of our natural, and the opening of tew and artificial chonicle of commercialization theorems are the several states, the creation of home markets for the varied products of the country, by the produced of the country, by the product of the country of the co

At a crisis, and with an opportunity, like the present, it may be expected 1 will bestow a passing remark on the subject of "stare rights." that fruitfol theme for derlamation, exist must, and I might add, self-aggrandisement in certain sections of the estate rights. "that frontfol thome for derianation, axife must, and I might add relig agrandsement in certain sections of the union. Having no inducednent to conceal my sections of the union. Having no inducednent to conceal my sections advantage of the control of the tastes, and which I am however with a share in the administration of public affairs. I will not tanely or identity our flook any enerachment up on the rights recreved to the state, by the deviard constitution. But which I am thus explicit, I most also deviard constitution. But which I am thus explicit, I most also federal constitution. But which I am thus explicit, I most also federal constitution. But which I am thus explicit, I most also federal constitution. But which I am thus explicit, I most also federal control of the mine, not also decided to the control of the mine, nor anything to justify the energy of the dependent of the mine, nor anything to justify the noise, nearly of the control of the mine, nor anything to justify the nearest of consistent of the control of the mine, nor anything to justify the nearest of enembered, that this ple jungify of the noise consistent of my larger and happiness as a maion. It is despress to tribe with mine the ratios practice of my speaks if dispersion is that which the constitution of the federal constitution? As to be bland to the dangers of the opposite extremy, as fairly the properties of the federal constitution of the federal constitution. The the regard for that which the constitution of the federal constitution of the federal constitution of the federal constitution.

stitution, manifest to fittle regard for that which the constitution was designed to preserve—the union of the states.

We all know g-uileman, that the violent, contest for power, mader federal authority, waged the last half dozen years, has tarned out to be into eight that a mere stuffle for office, and in tarned out to be into eight that a mere stuffle for office, and in the present of the state of party shall be found, nor shall my publical friends induce the inquiry or apparently and the state of the st

fiel the smart of this party violence, its influence is now a stranger to my bosom, and shall be lost to my memory.

E. H. Cummin, et al. (\*Mahington, has furnished to the bosse of representatives in congress, a set of tubles exhibiting the results of the face centus, and the number of representatives which tubles to the congress, a set of tubles exhibiting the results of the face centus, and the number of representatives which timents, from that of one representative of appear to that of one to every \$5,000. The document, lawing been patient by order of the liouse, we are enabled to subjum the following extracts. RATIO OF CONGRESSIONAL REPRESENTATION.

ZETOXIEZZONZZZENYY

2008-5116-7	4.7	No. of m 81,000 14 468 14 153 15 1679 16 201 16 201 17 20 400 18 15 17	- 27	P. N. 9 rgs. 1 ratio gf rat 81,000 7 35,468 7 35,468 9 35,73 8 90,573 8 90,573 1 45,90 4 1,470 5 7,880 6 7,817	7 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10	
Patio 9/1 is revite 9/1 48,000, 49,000, 49,000 8 15403 8 7,40 5 39,533 8 94,53 5 40,070 5 33,63 18 34,014 18 22,0 18 34,014 18 22,0 18 34,014 18 22,0 18 34,014 18 22,0 18 34,014 18 22,0 18 34,014 18 22,0 18 34,014 18 22,0	5 Tatle of 1 to rail  6 7,403 7  8 7,403 7  8 44,533 5  5 33,570 13  5 3,570 13  6 3,701 5  1 43,00 1	## retts ## 1	## retts ## 1	mile of 110 mile of 110 mile of 100 mile o	Territo (1) To revise (1) To r	The state of the s
	6 7410 of 10 7411  6 1000  8 7403 7  8 84.533 6  8 12 21,016 12  6 3,701 6  6 3,701 6  11 45,201 11  6 85,800 6  85,800 68			1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1		THE OF THE OWNER OF THE OWNER OF THE OWNER
	2000-52007	7 49,463 5 19,533 5 19,533 5 19,533 6 30,679 13 10,014 5 47,701 14 17,314 38 11,484 6 10,809 26 47,517		THE STATE OF THE S	7 0.00 7 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10	10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 10 1

# NILES' WEEKLY REGISTER.

POURTH SERIES.] No. 21-Vol. V. BALTIMORE, JAN. 21, 1832. [VOL. XLI. WHOLE No. 1.061

THE PAST-THE PRESENT-FOR THE PUTURE.

BRITER, PRINTER AND PUBLISHED BY H. NILES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN ADVANCE.

We had intended, this week, to continue the de- ing toasts may show the bearing and the apirit of the hate in the house of representatives on a reference of the memorial of the bank of the United States—that the views of the several gentlemen might be the better presented to their constituents, and preserved—but, per-tiaps, the general scope of the discussion has stready theen sufficiently shown; and the great length to which any thing like a full view of the remainder of the debate would extend, riterly forbuls its present insertion in our pages. We must, in some degree, keep page with the current of events. The speech of Mr. Clay, because of the absorbing interest of its subject, demanded a place—and Mr. Hayne's reply shall be also inserted, though its greater length will subject us to considerable inconvenience, just now.

In the other house, Mr. Cambreleng threatens the bufliction of another series of high pressure statements. There are some who learn nothing from experiencedisregard the most complete refutations of their propositions, and are insensible even to unpleasant expusures of flagrant-mistakes. And, whatever Mr. Cambreleng, or Mr. Any-budy-else, may assert, in the way of speculation, we stand prepared to prove—that the practical duty imposed on whollen goods, and actually paid—does not average 45 per centum on the real cost of such goods, in foreign countries: and are well informed, that our one dullar minimum is the standing toost in Yorkshire, where cloths and OATHS are chiefly manufactured and prepared for the American market.

SUPREME COURT. We amitted to mention in our last, that the supreme court of the United States is now in session—the venerable chief justice Marshall, with judges Daval, Thompson, Story, McLean and Baldwin, attending.

THE PRESIDENT. The "Globe" of the 14th inst. informs that the president list had a ball extracted from his arm, which has oftentimes caused him much pain, and threatened a mortification. The operation was pertormed by Dr. Harris, of Philadelphia. He received this ball in the rencontre with the Bentons, at Nashville.

"THE CABINET," It is announced that all the new nominations to the "cabinet proper," have been enn-firmed by the senate. That of Mr. Van Buren, as minister to Great Britain, is suspended; and, as it appears, secidentally by the easting vote of the vice presielent. The ilebates in the secret sessions concerning him, are uniterstood to have been able and pointed, and the idea that his instructions to Mr. MeLane will become a subject of public discussion-as they aught to be, gathers strength. If they shall be-it would repay the labor of travelling five lumitred miles to hear some of the speeches that may be expected on a subject so well fitted for severest reprehension. Our local dif-ferences must never be plead, to obtain rayons of foreigners.

PENNSYLVANIA. The 8th of January happening on Sunlay, a convention was held at Harrishourg on the 9th, George D. Faulke, of Cumberland, president, George D. Faulke, of Cumberland, president, George Weiser, of Northumberland, and John Morgan, of Chester, and Thomas W. Lloyd, of Lycoming, secretaries.

Among other proceedings, they nominated John Andrew Shulze for the office of governor,-a "Jackson electoral ticket" for the state, and appointed delegates to attend the national convention which is to be held at Baltimore to nominate a vice president of the United They also appointed a committee of correspondence, &c.

The convention also supped together to eelebrate the anniversary of the battle of New Orleans. The follow-Vol. XLL -No. 27.

members-

The governor of Pennsylvania; -Elected, not elevated, by fraud and corruption; he may read his fate in the inequivocal expression of public opinion.

The late and the present national cabmet: The one, distracted by the intrigues of faction; the other, united by a harmonious and patrintic desire to promote the public weak The discrimination of president Jackson was never more worthdy exercised. -6 cheers.

By the president, Dr. George D. Foulke. President Jackson: His true friends will support the convention of the eighth; his professed friends will denounce its members and advocates.

By George Washington Barton, Martin Van Burens Threatened with the proscription of the scuate, but shielded by the affection of the people, he may well

- Sinde on the drawn dagger,

And slely its possi!!

By R. R. Hestier. The governor of Pennsylvania:
A Wolf by name and in principle.
By John Johnson. John H. Estin, an lionest and The governor of Pennsylvanias

patriotic main his persecutors have failed in their efforts to injure him in the estimation of the American people. By Samuel Wyant. Samuel D. Ingham, late seeretary of the treasury: wonder how he relishes a hickory broom.

The 'Jackson and Wolf' papers—(who are anti-Jackson-Van-Buren-'democrats') make out this con-vention to have been a very small affair—one account says that only 34 persons were present as delegates, though some were made on the shot, and ten were at-tending from Philadelphia county, only. Several of the persons nominated have already retired from the honor conferred, &c. The 'Jackson and Wolf' men are to hold a convention on the 4th of March, and it is plainly intimated that all which the Jackson-Van-Buren-demoerats have done, will be resisted.

THE SUSQUEHANNAH. As there is a prospect that a bill to incorporate a company to make a rail road from a certain point on this river to the Maryland Inc. may pass the legislature of Penusylvania—a meeting has been held at Philintelphia to remoustrate against it, and it is said that "Baltimore desires to make a rail road that will intersect the canala and rail roads of Pennsylvania. and divert the trade from Philadelphians, who pay the taxes."

But the southern enunties of Pennsylvania are as much interested in this matter as Baltimore, and the citizens thereof quite as zealous for the passage of the bill. it shall not pass-we propose that a meeting be held in Baltimore to take into consuleration the propriety of closing the navigation of Back Creek—by which, and the Chesapeake and Delaware canal, the trade of our river, the Susonelannah, is diverted from Baltimoreans "who pay the taxes" of the state in greater proportion than the Philadelphians do those of Pennsylvania!!! I call the Susqueliannah "our river"-because that we have unsloubted jurisdiction over it, (as a sovereign state!) where it reaches the tide, and Buck Creek surely as much of reactes the fue, and Face. Creek surely as much belongs to mass any part of York county, through which we wish to pass, belongs to Pennsylvania. "The rule must work both ways."

THE RAIL ROAD. The Gazette of the 13th inst, had the following pleasing paragraph:

It will be gratifying to the triends of the Baltimore and Ohio rail road, and more especially to the stockholders of the company, to learn, that the receipts for travelling and transportation have been continually and rapidly increasing, since the opening of the communica tion with Frederick—the average of the daily receipts only about twenty-two butthen cars pass dudy in each direction—additions to the number are making every week, and we are assured that, by Monday week, forsy cars for the transportation of produce, merchantic and other articles, will be regularly passing every day in each direction between Baltimore and Fri deraik.

The Frederick Heratid of the 14th saxs, that within eleven days, 5.997 bilds, of floor, with a large amount of miscal housing (articles, which a manimum,) hid left the depot in that day, on the real mod. The samp on the real of each place of the miscal to Baltimore is the first of the form of the transport.

The Frederick Herald of the 14th save, that with eleven days, 5.99 hilds, of floor, who a large monoid eleven days, 5.99 hilds, of floor, who a large monoid mixed latenus (a tacles, which of monitous,) hid left the depot in that sity, on the rad rook. The saving on the cast of every bornel of floor sent to Boltomers in 50 entires of the transport of the save a clear gain of 2,000 hillers to the brances, on floor slone. The charge stage as that, of the class of floor, in addition, would have been interactled, if cars and have been procured but of these there will be no deficiency hereafter, many new mess having just been put upon the road, for the transportation of passengers and goods.

BATTINORE. A passage being cut through the ice, for upwards of six miles, more than one hundred said inward and outward bound vessels passed each other on Sunday evening and Monday morning, and there is now a pretty easy access to most all our wharves. Great activity in business has followed, and we have had acceral days that would be seasonable in April.

THE SLAVE QUESTION. The tongue and the press in Virginia, which had been as it were scaled against a discussion of the slave-question, have been relieved, and the whole matter concerning absency is now fully before the people and the legislature of this state. This is one of the wonders of the times—and we hope that good will result from it. That which cannot be avoided, should be resoluted met.

"A stan!" At the citizens' celebration of the 8th January, at Harrisburg, the hilliaming toost was given by gov. Wolf-in aliuson, doubtless, to the tariff and bank questions:

"Our delegation in congress - A crisis is approaching when Pennsylvania will expect every man to do his duty."

TREMENDOUS! Mr. John S. Ingram has lately become one of the eddors of the "Union Tames," published at New Berlin, Pennsylvania, at the head of which is placed the name of "Andrew Jackson," the "democratic rejudition cambidate for persolin-election in 1832." All, Ingram lately published the "Jind Manonto Star," at Gettysburg, and sasgast the following, among other reasons, why he has basical down the anti-masonic flag—with which we have no part, except in shewing another "agn of the times." We give the timise and capitals, just as the hinself presented them. "Consistency is a jewel!"—a previous ornament to any "Consistency is a jewel!"—a previous ornament to any

"Consistency is a jewel!"—a precious ornament to any man or any party. A iterogation from at, evences a want of merit, and fully identifies a steparsity and rottenness either in the cause or its advocates. It Autimatoory needed no aid but her lumest arguments and the uprofitness of her cause, to gain the support of a Republican people: Il Anti-masonry was supported by men whose primary olicit was the externantion of Freemasonry; It they were determined to make Masons seek strette under the banner of "the Islay cause of Anti-masonry"—why did they not adhere to this original and all, ged determination to "oppose every almost more Convention nombate as since candidate for President the PREE MASON, William Wilst? "Oil same—where is thy blush?" A United States ANTIMASON Convention nombating AN OPEN AND AVOWAIN AND ISLAY OF the Popple! Yes, this same Wist. Will, who are soft of the people! Yes, this same Wist. Will, who are now before the public as the Auti-mason's condidate for President, for a rank and adhering MASON?! Shall we take this as a sample of the hom sty and consistency of Anti-mason? Fines are the acts of her conning and temograpmining? Tealers. Do such men mert applause for honesty of intention or stability of purpose; if the proper proper is not be the marthems of every pergit man in the commonity! This report arth?" trekery—this "passed degree" of meters.

trigue and corruption, has no equal on the records of our political history; and makes the stain upon the reputation of Henry Clay appear but as a "fee-bite" to their emirmous "wonderworkynge."

Sinster motives produced the nomination of Amos Ellmaker; and with the neighborance of his reputation, it may be as well in het him reguse in his well known character of a broken down holitician.

WEST INDIA TRADE. By statements recently published, it appears, that among the arrivals at New York and Boston, during the year ending 31st ult.—there were

British vessels S66 And during the preceding year 110

Increase 256
It is presumed that there has been an increase abso, in a similar proportion, of British vessels, at Padadelphia, Baltimore, Norlolk, Charleston and Savannah.

Baltimore, Norlolk, Charleston and Savannah.

There has been a decrease in the number of arrivals of American vessels, in the two ports above mentioned,

for the same period, of 57.

The entries of the Brutish vessels have been principally from the British columns of New Brunswick, Nova Scotia, (a few from Newfoundland), and the British West India islands.

The conclusion we draw from these facts is, that whatever other advantages the country may derive from what is usually termed the "West India arrangement," the mattention interest has been seriously injured.

in usually termed the "West India arrangement," the marigation interest his been seriously byjuerd.

[Such was the result which every practical man expected, from the langua arrangement made by Mr. McLauer, the facts belonging to which will soon be calabiled in such a manner that he who ross may understand them.]

"The sundar quitarion" has been decided at New Orleans says the "Free Press" of that eat, of Monthly the 2d unit — and proceeds to inform us that the American theatre was "threazed again has night"—Sunday evening. The French theatre has always been shadowed on that evening. This question appears to have excited a great deal of interest in New Orleans.

THE CHILERA is certainly in England, and appears to be extending med from Sund-rhand. There is every resum to believe that this assurage will visit us also. Being superadded to the other present als of England, a has remiered the state of things exceedingly distressing in that country.

ECONOMY. Give seven dullars to pay three; or, sell the stock in the bank of the United States to pay off the three per cent. stock.

COAL. We see an interesting synopsys of the several seams of end in the New Castle district, England. The thickest of the seams does not exceed six lest ay unches, and the average is not more than three feet. A few of the nunes are at the slepth of about 20 fathoms (120 feet), from the surface—but the majority will average 100 tathoms, and one more is worked at the depth of 185 fathoms, or 1,110 feet—several at from 700 feet to the

The coal mines of Pennsylvania, as well anthreite in the castern or bituminous in the western part of the state, very generally lie near the surface, and their thekmests is from six to twenty-five lett above the water level, Only one more, and that by way of experiment, has been worked below that level, and the result proved satisfactory. It is stated that, at the mount of the pairs in Schuj Rell county, coal may be had for one follow per ton. Thus seems cheap enough. The only thing then that appears necessary, is to reduce the cost of transportation; and that this will some he accomplished in its full ist extent, commit be durabled. If anthreatic coal could be furnished at 5 dollars per run, it would be the cheapest their that can be used, even in Baltimore, or about the same as oak would at 3 billiers a cord. That it will be fermanently sold for less than that price at

is yet much cheaper at the mouth of the pits than the anthracite. The quantity of either may be contained with haustible. Baltimore will be plentifully supplied with haustible. both-by the rail road proceeding to Cumberland, and the Susquehannah river, or rail road-if permitted to extend the latter into Pennsylvania.

COARSE WOOL. The New Hampshire Statesman conthe duty on coarse wool, and will, no doubt, receive the attention of those who may be sonn called to set upon the subject. The system must be preserved. The duty on such wool was forced into the bill of 1828 to destroy it-but, if the practical operation of the law has rendered good out of an intended evil, it is well. And time enough, perhaps, has not yet elapsed to ascertain the practical effects of the duty on coarse wool.

VIRGINIA. We have had on our desk, for several weeks, an account of the proceedings of a convention of delegates from various counties of the western district of Virginia, which met at Lewisburg on the 31st Octoirginia, which met at Lewisburg on the 31st October last, and of which Charles A. Stewart, esq. was president, and John A. North, secretary. Alleghany, Augusta, Cabell, Fayette, Greenbrier, Logan, Mason, and Monroe counties were represented at this meeting—the object of which was to consider what measures should be adopted "in relation to the opening of a line of commercial intercourse between the Ohio river and the Chesapeake bay, through the central sections of the state."

The proceedings make a manifelet of 36 pages—and chiefly consist of a memorial to the legislature, and an address to the people of the state, both which are able and spirited papers. The advance of other states in population and improvement, and the effects of the stand-still policy of Virginia, are well set forth; and the legislature, and the people earnestly exorted to action. Various important suggestions are presented for ennsi-deration, and the golden harvests which must follow their execution, clearly pointed out. We cannot go into details. They contrast the state of things between the north and south of Mason and Dixon's line, (which in the southern line of Pennsylvania extended westward) -with respect to population and wealth, commerce and navigation, &c. and, do it with a strong hand-and deacribe the present and ultimate effects that have followed or must succeed the let-us-alone system. We most heartily wish that these things may excite a new spirit nearthy was that these things only exerte a new spirit in Virginia to do something worthy of her resources and great national advantages; but fear that the herd of politicians is too strong to permit the wholesomes, if not vital, operations of practical minds and working men.

GIRARD'S BANK. The closing of this bank has caused the projection of several others, and brought out much management on the part of certain speculators in Ptuladelphia, always on the alert to make profits on their money or credit. To check such management, it their money or create. In the cases and management, in proposed, by another party, to incorporate a new bank, with the provision that the privilege of subscribing to certain numbers of shares of its stock, shall be solid at public suction, to the highest bidders, and that the premium shall pass, at once, into the treasury of the state.

RIVER NAVIGATION. In the house of delegates of the state of Maryland, on the 7th inst-Mr. Teackle, submitted the following preamble and resulutions.

Whereas, the entrances of the rivers Nanticoke, Maokin, Annamassex, Pocomoke and Wicomico, in the collection districts of Snowhill and Victima, common to the navigation and commerce of more than one thousand registered and licensed vessels, and affording a nursery of acamen of inealculable value, are difficult of access by of aramen of incateurable value, are minimized through ex-reason of narrow or meandering channels through ex-panded flats or shallows, in consequence whereof the owners of vessels, properly belonging to those rivers, al-though lew in comparison to the number who resort or trade therein, have long been, and now are subject to an annual tax for staking out and designating the said chanand on state of the state of th

which abounds on the waters of the Potomao, Ohio, &c. | are entirely divested of all its resulting revenues; and considering further, the numerous sailors and watermen employed in the navigation of the said rivers, are subject in a monthly imposition, under the denomination of the hospital money, without an equivalent benefit, as very lew of those sailors and waterinen are ever admitted into the marine hospital. Therefore,

Resolved, That the senstors and representatives of this state, in the congress of the United States, be instructed to use their exertions to procure appropriamarked out, and maile easy of ingress and egress, by the establishment and support of proper buoys, at the charge and expense of the United States.

Further resolved, That his excellency, the governor, be requested to communicate a copy of the foregoing preamble and resolution to each of the senators and representatives of this state, in the congress of the United States.

BRITISH MONEY-MARKET. A letter from a respectable American gentleman dated London, Nov. 22, pub-lished in the New York Mercantile Advertiser, says-"Some lew months since the bank of England, or its directors, perceived that specie was much wanted on the continent, to pay the armies, and the exportation at length became so great as to compel the board of directors to curtail their circulation £12,000,000. The rate of interest with the bill brokers rose from 21 to 42 per cent.; since which the title has changed, the exchange has turned in favor of England. crased, and money for the armies is no longer wanted.

A general peace on the continent is now considered eertain,-The exportation of specie has pretty much eertsin.—The exportation of specie has pretty much stopped, and Spanish ilollars are in fact a drug, even 4s. 10d. cannot be realized; the importations by the last arrivals from New York, although landed, are unsold, and no offer is yet made for them. Robbschild, who has always been the most prominent man in the market, declines buying. From all these circumstances, many weeks before the winter expires with you the money market will be perfectly easy, and coof-dence, as usual, with the moneyed institutions, be restored to a wholesome footing.

BRITISH ATFAIRS. A piece was recently performed at one of the London theatres, in which these lines

"Take back the foul reproach, unmanner'd railer, "Take back the foul repressed, unmaner'd rester, Nor urge up rage too lar, lent thou shouldn't failed. I have as daring spirits in my blood. As shou or any of thy race e'er boasted; And though no gaudy title grace my birth, Yet Hawen that made me bones, made em nore Than ever king did, when he made ster, when the According to the London Courter, when the three

last lines were repeated, the shouts of the audience were almost deafening, nor were these demonstrations confined to the galleries. The lecling was equally strong in the pit and boxes.

strong in the paramo observable for the lawyer of Kikkenny, Ireland, have refused to undertake the recovery of titles for the elergy. It is stated in the Cork Reporter, that in three parishes of that eity there have been found no less than 25,000 paupers, and the whole eity is supposed to present an aggregate of 60,000, without the means of

present an aggregace of 00,0000 without the means of providing for themselves.

In the present state of the refresentation in parliament—34 persons, editely peers, send 155 members, 48 persons send 90, and 89 persons 90 mirror—total 340 persons are of the commons of England appointed by 171 persons! This is "humbug No. 1." One of the lords makes as many as eleven members; several of these fellows send six or more. They own the boroughs-and so own the rights of the people!

The house of lords is made up of 23 dukes (4 of them "royal"), 26 marquesses, 129 earls, 25 viscounts, 143 barons, 16 Scotch and 28 Irish peers, 30 archbishops and bishops.

The following extract from a vehement speech of

as using unconstitutional means to impede the progress of this measure. Would to God, he knew the foul slanderer of that illustrious female; would to God, he could discover the anonymous calumniator. If he could discover him, either that vile wretch or the humble individual who then addressed their lordships, should not survive another night, to utter, publish, or repeat another sight, to utter, publish, or repeat another sight, to utter, publish, or repeat another sight, to utter, publish or repeat the invader of his country—willing as he should raise it in defence of his country's rights and liberties, -so willingly should be lift it against the cowardly calumniator, who could attack an innocent and illustrious lady, whose conduct in this country had been trious lady, whose conduct in this country had been marked by the practice of every virtue, and who showed in her life an example well worthy of imitation, an example of those virtues on which a nation's happiness might so much depend."

The following is from a late English paper.

On Salurday night some urchins paraded the effigy of a bishop about the streets of Canterbury. Little interruption took place until the approach of the figure to-wards Burgate, when another effigy representing his sawards Burgate, when another emgy representing his sa-tanic majesty, seized the bishop, and a terrible seuffle ensued, which ended in the former being idealared the vistor. The authorities caused the image to be seized, the parties resigning it without opposition.

B. CONSTANT. The following paragraphs extracted from the writings of M. Constant, are pointed and pow-

"The Spartans complained of their helots: the Roman patricians of the plebeians: the feurlal lords of their serfs: the colonists complain now of their slaves. I have seen in the General History of Voyages, compiled by La Harpe, the following passage: - The sea-wolf is an animal of such ferocity, that it always defends itself when attacked.

"There are in the world two principles, force and rea-They stand in an inverse proportion to each other. When reason advances, force must give way, for reason cannot recede. When force resists, disastrous strugeannot recede. When force resists, disastrous strug-eles follow. This is not the fault of reason, but of force. cannot receue. When force resusts, unsastrous strug-gles follow. This is not the fault of reason, but of force. It would be contrary to the nature of reason not to ad-vance, or to return to that which it has discovered to be vance, or to return to that when it has already care up we unreasonable but it is not contrary to the nature of force to be convinced; it always will be so ultimately, however it may resist for the time. At first the particular cans of reason are called seditions, but it is afterwards discovered that its enemies are the rebels."

THE POLES. At a meeting of the Americans in Paris on the 22nd October, J. F. Cooper, esq. in the chair, a letter was read from gen. Lalayette, asking advised an assistance in the disposition of the money which had been remitted to him from New York, &c. for the relief of the Poles and a committee of twenty, of which Dr. How was made the chairman, was appointed to act in this matter, under the revision and approval of gen. Lafsyette. This committee has addressed a circular to the citizens of the United States, contributors in favor of the Poles, informing them that the fands will be distributed for the present relief of the "barefoot and hungry" Poles who have already arrived at Paris, or are begging their way thither. Their number is not nungy: Fores who have aircany airravel at Faris, or are begging their way thither. Their number is not stated—but they have formed a national re-union, and "Leonard Choulzto, member of the Polish committee," will give a list of their names, and of such as may hereafter arrive, to the American committee.

UPPER CANADA. Mr. Mackenzie, who, after being UFTER CANADA. Mr. MBEKERIZE, WID, after Deing expelled from the house of assembly of Upper Canada, was re-elected, (only one vote in York being polled against him) has been again declared unworthy to hold agaths ame) has over a gam uccarred onworms to non-relation as seat in that house, by a vote of 37 to 19, passed on the 7th inst. The new offence of Mr. M. was the publica-tion of tweiteles of impeachment or public accusations against the leutenant governor of the province, and the advisers of the crown,? in which he charges the house commission will expire.

question of national reform." The duchess of Kent is, of assembly with sycoplancy; and also a publication in the lady referred to:—

"An illustrious laly had been held up to the country listed the thirty members who voted for his first expulised the thirty members who voted for his first expulsion, as "tyrants!"

> LACE WORK. An establishment called the Rhode Island lace school has commenced at Newport. Not-withstanding its recent origin, no less than seven humdred females are netively employed by its proprietors. The style of lace work is said to be the most ingenious of its kind, and of that particular description with which the English dealers in lace have lad to supply themselves in France, in consequence of the superior excellence of execution of their Gallie competitors. Several Englishmen are now settled in France, where they employ people to work upon lace for the American markets, and it is calculated that the people of the United States pay foreigners in this way not less than 6 or \$700,000 annually, for what can as well be performed by themselves. A regular and habitual occupation in these deliente fabrics, must eventually lead to that beautiful state of perfection at which they have arrived in France, and some of the females engaged in the "lace school" have already attained a high degree of excel-

[This elegant branch of business may be yet much extended, and there are yet various employments fitted for women who must, (on one account or another), make their livings at home, that would produce several mile lions a year, which are yet untouched. Some branches lions a year, which are yet untourned. Some branches are much needed that will occupy the time which poor women can spare from indispensable attentions to their children, and ordinary domestic concerns. The wearing of stockings would be a capital employment, were

not the cost of the frames so large. ]

NAVAL. List of vessels belonging to different foreign etations-Mediterranean. Frigate Brandywine. Sloops John

Mediterranean, Frigate Bransy size. Stoops Sould Adams, Ontario, Boston and Concord.

West Indice. Sloops, Pairfield, Eric and Vincennes.
Schooners Porpoise, Shark and Grampus.

Coast of Brazil. Sloops Warren and Lexington.
Pacific. Frigate Potomae, cloop Falmouth and sehr. Dolphin.

APPOINTMENTS BY THE PRESIDENT, by and with the advice and consent of the senate.

S muel A. Morse, to be collector of the customs for the district, and inspector of the revenue for the port of Machins, in the state of Maine, from the 28th of Janua-

Machines in the state of maine, truth the again or annuary, 1839, when his present commission will expire.

Nathaniel Bullock, to be collector of the enstons for the district of Bristol and Warren, in the state of Rhode Island, from the 2d of January, 1832, when his commis-

William Halloway, to be surveyor and inspector of the revenue for the port of North Kingston, in the state of Rhode Island, from the 15th of February, 1832, when his present commission will expire.

H. G. S. Key, to be surveyor and inspector of the revenue for the port of Llewellenburgh, in the state of Maryland, from the 19th of February, 1832, when his

Mary land, from the 1916 of February, 1025, with the present commission will expire.
Francis B. Armstead, to be surveyor and inspector of the revenue for the port of East River, in the state of Virginia, from the 9th of January, 1832, when his present commission will expire.

Dunean McDonald, to be collector of the customs for the district and inspector of the revenue for the port of Edenton, in the state of North Carolina, from the 29th of February, 1832, when his present commission will

James R. Pringle, to be collector of the enstoms for the district of Charleston, in the state of South Carolina, from the 29th of January, 1832, when his present com-

John Shellman, to be surveyor for the district and inspector of the revenue for the port of Savannsh in the state of Georgia, from the 2d of January, 1852, when his

Thomas Eston Randolph, of Florida, to be marsh 1 of the United States, for the district of Florida, vice Alexander Adair, deceased.

Samuel Blair, of Florida, to be marshal of the United States for the eastern district of Florida, vice Waters

Smith, deceased,
John K. Campbell, of Florida, to be attorney of the
United States for the middle district of Florida, vice

James A. Dunlap, ileceaseil. George Walker, of Florida, to be attorney of the U. States for the western district of Florids, vice John K. Campbell, transferred to the middle district.

Matthew Hall McAllister, of Georgia, to be attorney

of the United States for the district of Georgia. Diniel S. McCauley, of Pennsylvania, to be consul of

the United States, for the city and kingdom of Tripoli, vice Charles D. Coxe, deceased.

Samuel I. Carr, of South Carolina, to be consul of the United States, for the empire of Morocco, vice John Mallowney, deceased.

John Martin Baker, of Pennsylvania, to be consul of the United States, for the port of Rio de Janeiro, vice W. H. D. C. Wright, removed, at the request of the Brazilian government.
George Strobel, of Pennsylvania, to be consul of the

United States, for the port of Bordeaux, in France, vice Daniel Strobel, resigned, Frederick E. Bunker, of New York, to be consul of

the United States, at Constantinople.

James C. Cole, to be collector of the customs for the

district and inspector of the revenue, for the port of Newbern, in the state of North Carolina, vice Francis

Hawks, deceased.

[We have another long list of approved nominations, among them those of the "cabinet ministers"—but have not time and room to give it this week.]

FOREIGN NEWS.

An arrival at Buston, brings intelligence from London to the evening of 30th November, inclusive,

ENGLAND. The Burking cases continued to excite much alarm in London: one of the offenders, by the name of Shields, had made a confession which led to the arrest of several persons. There had been an affair in the county cal p:rson'. There had been an affair in the county of Kulkenny in Ireland between a body of soldiers and

some peasantry.

The London Courier of the 30th November contained the daily report of the eases of cholers at Sunderland, Nov. 28. Remained at last report 32-new cases 46--recovered 6-died 8-remaining 90 14-total 46-recovered 6-died 8-remaining 52, There had been 291 cases there since Oct. 26, 1831; deaths 86. It is now admitted by the government physicians to be the Asiatic disease. Out of 10 new cases reported on the 27th Nov. 8 died before the ensuing morning: the disease was evidently on the in-crease and had extended its ravages to New Castle.

PRANCE A letter from Lyons, of Nov. 21, states that drendful riots had taken place between the manufacturers and the workmen. Several thousand workmen had assembled on one night, and burning and pilage had been earried on to a dreadful extent. The number of killed and wounded of the riok rs was very large. The work-men collected in the night, and made themselves mas-ters of all the bridges and cut off all communication with the Swiss side of the Rhone. A sharp cannon-ading was going on at the writing of the letter from the ating was going on at the writing of the fetter from the eBy, as also itom the Crox Rouse, which had not been taken at the latest advece. About 300 of the troops had been killed and wounded, among the former was reported a colonel of the line and six officers. The Hotel de Ville had been taken by the rioters, as also the powiler magazine, the whole city was at the power of the mob-who had commenced the firing of houses in all directions. In the streets large fires were built, into which they threw all the books, stock and furniture which they pillaged. The number of workmen en-greed in these riots at Lyons, was estimated at 60,000, and it was supposed, if government attacked them, the eity would be reduced to ashes. The cause of these disturbances was occasioned by the manufacturers refasing to jield to a demand for higher wages.

The duke of Orleans, the eldest son of the king, had proceeded from Paris to Lyons to adjust matters. atest accounts, however, say that the shops and theatres had been opened, and that tranquility had been restored.

POUTUGAL. An account had reached London that there had been an insurrection in Lisbon and Don Miguel had fled.

THE REEL The cholers was making the most frightful ravages in Smyrns, business had been entirely suspended.

TWENTY-SECOND CONGRESS-1st SESSION.

SENATE.

January 13. The vice president communicated a re-port from the secretary of the treasury, in compliance with so much of the resolution of the senate of the 11th instant, as requires the monthly statements of the bank of the U. States for the year 1831; which was referred.

Various petitions were presented.

Various petitions were presented.

Mr. King reported a bill granting a lot of ground to the town of Columbus, for the abutment of a bridge over the Chataloochee river; which was read.

Mr. Hendricks submitted a resolution to inquire into the propriety of providing by law for the permanent preservation and repair of the Cumberland road east of the Ohio.

Thirteen bills were received from the house of representatives, severally twice read and referred to appropriate committees.

The senate then spent a considerable time in the consideration of executive business, and Adjourned to Monday.

Junuary 16. Mr. Clayton, of Delaware, appeared to day, and took his seat.

The vice president communicated a report from the secretary of the navy, of the contingent expenses of that catablishment for the year 1831.

If also communicated a report from the secretary

of the treasury, transmitting copies of the instructions to the collectors of the customs and other officers, in respect to the British colonal trade, given or issued since the proclamstion of the president of the U. S. of the 5th Oct. 1830.

Various petitions were presented, among them three by Mr. Dallus, of sundry merchants in Philadelphia, praying for an amendment (specified) to the 3d section of the act of May 28, 1830, relating to the average va-lue upon which the duties on imported woollen and cot-

the upon which the duties on imported wooden and col-ton goods are to be charged—which were referred. Mr. Hendricks reported a bill providing for the con-tinuation of the Cumberland road, through Ohio, Indiana and Illinois; which was read.

The resolutions submitted yesterday by Messrs. Hendricks and Moore, were severally considered and spreed to. The bill providing for the organization of sgreed to. the ordnance department was read the third time, pass-

The senate then on motion of Mr. Ewing, took up the following resolution, submitted by Mr. Clay on the

10th instant:

10th instant:
Residved, That the existing duties upon articles imported
from foreign countries, and not coming into competition with
smilar articles made or produced within the United States,
ought to be forthwith abolished, except the duties upon wines
and sitia, and that those ought to be reduced. And that the connites ou finance be instructed to report a hill accordingly
Mr. Hoyne proposed the following modification of

the resolutions

Strike out all after the worll "countries," and insert as follows: "be so reduced that the amount of the publie revenue shall be sufficient to defray the expenses of government according to their present scale, after the payment of the public debt; and that, allowing a reaable time for the gradual reduction of the present high duties on the srtieles coming into competition with similar articles made or produced within the United States, the duties be ultimately equalized, so that the otates, the duties be ditimately equalized, so that the duty on no article shall, as compared with the value of that article, vary, materially, from the general average."

Mr. Hayne then addressed the senate nearly lour

hours in support of his proposition in opposition to the original resolution, and in reply to Mr. Clay. When he concluded,

Mr. Dickerson moved to postpone the further consideration of the resolution to Monday next.

Mr. Clay was opposed to so distant a postponement. He wished an early decision of the question, that if the resolution was sustained by the senate, it might go soon

to the committee.

Mr. Forsyth, thinking the present debate on the merits premature, was in favor of deciding the question at once, as the merits of the proposition would come up again, if a bill was ordered, and the whole debate would probably be repeated if the resolution were now discussed.

Mr. Tuler concurred in this view and supported it at

some length. Mr. Dickerson thought as Mr. Hayne had gone so largely into the merits of the question, gentlemen on the other side should have an opportunity of replying to him before the resolution went to a committee; and another reason for the postponement was that he exthe New York convention.

Mr. Wilkins supported the postponement, and Mr.

Smith opposed it; when
The question being taken, the motion for postponement prevailed, without a division.

And the senate adjourned.

January 17. A message was received from the president, transmitting the annual report of the director of the mint, exhibiting the operations of that institution for

the year 1831. [The report states that the coinage of the past year [The report states that the coinage of the past year amounts to §3,923,473 60; comprising 714,270, in gold coins, §3,173,600, in silver coins, and §33,605 60, in copper—counsting, altogether, of 11,792,284 proces, vizz half eagles, 140,594; quarter eagles, 4,520; half idollars, §473,660 quarter dollars, \$98,800; dines, 771,550; half dimes, 1,242,700; cents, 3,359,260; and half cents, account of the control o 2,200. \$26,000 worth of the gold coined was received from Virginia; \$294,000 from North Carolina; and from from virginii 32245,000 from 2007th Caronina and renessee also Georgia, \$776,000 worth. Alabama and Tennessee also furnished gold bullion to the amount of about \$1,000 acch, "modeating (as the report remarks) the progressive development of the gold region." The coinage of copper yielded a profit of about ten thousand dollars, the last year; and in consequence, reduced the expense of the mint establishment, for that time, to \$28,000.]

A number of petitions were presented, and among the rest, one by Mr. Dallas from sundry inhabitants of Philadelphia, traders to the western country, and others, praying for the renewal of the charter of the bank of the United States—referred.

On motion of Mr. Dallas, all the memorials on the abject of the improvement of the navigation of Back Creek, and not acted upon, were referred to a com-

On motion of Mr. Ellis, an inquiry was instituted into the expediency of providing by law, for the exemption from postage of all letters conveyed on board of steamboats, relating to the cargo and enclosing bills of lading or invoices addressed to the owners or consignees of said cargoes.

On motion of Mr. Dallas, the committee on military affairs were instructed to inquire into the expediency of

organizing the topographical engineers.

Mr. Bibb submitted the following resolution: MIT. DIO Submitted the following resolution:
Resolved, That the committee on Indian affairs be instructed to
inquire anto the expediency of supplying the Indians inhabiting
the territory of East Florida, with corn for their subsistence, until
the ensuing crop is fit for use.

the ensuing erop is it for use.

Mr. Sprague submitted the following motions:

Resolved, That the president of the United States he requested
to communicate to the sense all the correspondence between the
executive of the United States and Great main relative to the
selection of an athier, under the conventional September (1871) and, also, the correspondence between the article of the colimited States and the king of the Netherland, relative to the acexpanses, by the latter, of the office of arbiter, under said currention.

relation thereto. And to inform the smate when, and in what manner, said "strangement between the two mations" was made, and when, and its what manner, it was to make a governor of Maine, as mentioned in the said letter of the ac-critive of state.

The senate after considering some local bills, went

into executive business; spent two hours therein, and then adjourned.

Various petitions and memorials were January 18. presented.

Mr. Robinson introduced a bill granting a quantity of land to the state of Illmois to aid in making a canal to connect the waters of the Illimnis river with lake Michigan-twice read and referred.

The resolutions submitted yesterday by Messra. Ettis, Tipton, Robinson, Dallas and Bibb, respectively, were

considered and agreed to.

The resolution submitted yesterday by Mr. Sprague, relative to the north eastern boundary correspondence. was, after debate, adopted.

Mr. Benton submitted two resolutions, the one con-

cerning the topographical engineers, and the other for increasing the number of army surgeons and assistant surgeons.

The bill to establish the office of surgeon general of the navy, and the bill for fixing the compensation of pursers was postponed till Wednesday next,

The senate allourned.

January 19. The resolutions yesterday submitted by
Messrs. Benton, Ruggles, Tipton and Foot were cousidereil and agreed to.

Various petitions and resolutions relative to private claims were presented and acted upon.

At about hall past 12 o'clock the senate went into secret session, and sat with closed doors until 4 o'clock-

The senate adjourned.

HOUSE OF REPRESENTATIVES.

Friday, Jan. 13. Several bills and reports were se-

verally reported.

Mr. Vance asked the unanimous consent of the house, to offer a resolution, granting the use of the hall to the Colonization society on Monday evening next. Objection being made, He moved to suspend the rule which prevented the

motion, and the question being put, it was carried. Ayes 104, nocs 45. Mr. Vance then moved a resolution to that effect,

which was agreed to.

Mr. Clay reported a bill authorising the inhabitants of Jackson county, in the territory of Florida, to dispose of the funds arising from the sale of a quarter section of land reserved for the use of schools in Florida.

Mr. Clay explained the circumstances referred to in the bill, and moved for its engrossment.

Mr. Vinten said the bill contained a new principle.

which required examination, and moved that the bill be committed.

Mr. Clay replied, and denied the existence of any such new principle.

Mr. Vinton rejoined, affirming that the bill did contsin a new principle, and set an alarming precedent, likely to be very injurious to the interests of common schools.

The question was thereupon put, and the bill was committed.

The house resumed the consideration of the resolutions offered by Mr. Bouldin, relative to ad valorem duties.

Mr. Davis, of Massachusetts, proposed an amendment to the resolution.

Mr. Stewart of Pennsylvania, (who hall moved to amend Mr. Bouldin's amendment, by striking out the preamble, and also striking out "commerce" and inpreamore, and also striking out commerce and in-serting "manufactures,") expressed his willingness to adopt the amendment, as a modification of his own. But the chair decided this not to be in order—as

there was nothing in his amendment to which this could adhere; but if his were withdrawn, it might be

considered.

Mr. Stewart consented to withdraw so much of his amendment, as went to strike out the preamble of Mr. Rouldin's resolution—but not the residue. amendment to strike out "commerce" and insect "manufactores.

Mr. Cambreleng observed, that he was very sure, to whichever of the committees the resolution should be referred, the committee would do its sluty. But he begged to state, for the benefit of the two gentlemen from Pennsylvania, (Mr. Stewart and Mr. Denny), and to allay their very lively sensibility, that a majority of the committee of commerce were, unfortunately, of the same views with themselves on the general subject to which this resolution referred. The nature of the inquiries in the resolution was strictly and properly commercial. But the gentlemen were very much straid (and there lay the point of anxiety about the matter) leat the people of the United States should discover how far they had been deceived by the substitution of the system of minimums for ad valorem duties. C. said he was not at all surprised that gentlemen should be extremely anxious to hide from the people the fact that, instead of 45 per cent, ad valorem on certhe tack that, instead of a per cent, an variorem on cer-tain descriptions of woollen goods, as laid by the law, they were, in fact, paying from 75 to 100, and 150 per cent. Nor was he surprised that they should be equalby anxious to conceal another lact, visit that persons purchasing articles whose original cost was \$1 and i cent, were obliged to pay the same dities as upon those whose cost was \$2 50. The effect of the system went to reverse every rule of taxabon; it was adverse went to reverse every rule of taxation; it was adverse to every principle of republicanian, and every rule of justine. For himself, he was indifferent to which of the committees the resolution should go, he had all confi-dence in the justine, candor, and fidelity of the gentle-man (Mr. Adam) at the head of the committee on manufactures, and he was user the facts would be brought out. But he could tell the gentleman, that whatever disposition should be made of the resolution, the inquiries contained in it should be answered, in spite of all they could do to smother the information. He should, himself, lay on the table statements conthe aboutd, inmeet, tay on the table statement con-taining all the facts the gentleman wished to cheit, and then he should see, by taking the year and mays, who would vote to refuse the printing of them, and withhold the information from the American people.

The fact ought to be perpetuated by an official record, that duties varying from 25 to 150 per cent. ad valorem, were paid where the law intended 40 and 45; and none knew the fact better than the gentleman who wished to stifle the inquiry. All he askel, at this great and important crisis, when those who had had the beneand important criss, when those who had had the bene-fit of this system of duties for forly years were not content, but sought to impose it for forly years more inpon the people, was, that the American people should know how far they had been deceived.

Mr. Dearborn rose in reply, and said that the gratte-man from New York, had made an averment to the house which was variant from the fact. The gentleman had said, that those who opposed the reference of the resolution to the committee on commerce, did not desire the information it sought should be obtained. The gentleman was much mistaken if he supposed that those who were favorable to the protecting system, desired mode of laying duties was at first proposed, it had indeed been predicted that the practical effect would be such as the gentleman from New York had asserted it now to be; but, in practice, so far from this proving to be the result, the very reverse took place; so that, instead of paying 100 or 150 per cent. as the gentleman said, the importer more frequently paid no more than 15 or 20 per cent. The importers, (Mr. D. observed), knew perfectly well how to quadrate their prices in the invoice, to the minimum duties, and he asserted that no gnods, since the minimum system had been enacted, had been invoiced more than from one to two pence sterling below each of the points of minimum value fixed by law, I'hey took very good care not to be eaught importing goods charged midway between those points.

If the investigations which had been made were enti-

tled to the least degree of credit, the duties sotually paid, so far from being exorbitant, were far beneath what the law intended. All the friends of the protectng system were well acquainted with the fact, that by

The question thereupon recurred on Mr. Stewart's the intervention of fraudulent invoices, goods were nendment to strike out "commerce" and insect "manu-brought down under minimums to which they did not belong, and thus made to pay a duty far less than that " provided by the law. All who were concerned in manuactures were perfectly willing, nay, they expected, that the ridiculous system of minimums should be abolished. It gave little or no protection to the manufacturers its operation was operous and oppressive. He was sur-prised that the gentleman of New York should venture the declaration that on certain descriptions of woollen goods 100 and 150 per cent. dry was paid. This might in theory appear to be true; but in practice and in fact, it was far hom being so. For himself, he was very in-different to which committee the resolution was sent. The information might be obtained in various ways; from the committee on commerce, the committee on manufactures, or the secretary of the treasury. He had no doubt that the information was all, at that moment, within the city of Washington; and he cared not how it was reached. He thought, indeed, that the committee on manufactures was the most appropriate source from which to seek it; but he felt very indifferent as to the direction of the reference.

Mr. Davis, of Mass. observed, that no great benefit could accrue either to the house or to the country from the inquiry proposed by the resolution. The committee of commerce were to inquire and report to the house, as to what? the rate per cent. actually paid on certain descriptions of goods designated in it, and, whether eershores. Now, if the information sought were in the de-partment, if it was in the possession of the proper organs of the government, the proper course were to apply there. Had the committee of commerce any official statements to make to this house which were not in the department? Had that committee any mode of obtaining statements sanctioned by official authority, which was not in the department! No: they had none: none at The application to them was, therefore, of lattle But it had been said by his worthy friend from New York, (Mr. Cambreling), that it was very indifferent to him where the resolution was sent; the infor-mation was at hand, and it could and should be brought into this house. It was a proverbial remark, that it was the list bird that fluttered; and when he saw that gentleman spring from his seat the moment it was proposed to transfer the reference of this resolution to ano committee, he could not but think of that saying. Why was the gentleman so uneasy? What inspired him with was the gentleman so uneasy? What inspired him with such a heat of zeal? He would state the reason to the ouse. At this point of the debate, house.

business on the speaker's table, and to the orders of the

The motion was carried, ayes 85, noes 54.

Mr. Fance called up the second reading of a joint resolution, abolishing the office of an assistant in the corps of engineers.

The resolution, he stated, had received the unanimone assent of the committee who reported it; and farther he would state what might appear very extraordinary, the resolution had the assent of the individual himself (gen. Gadsden) who now filled the office which it was proposed to abolish.

The question being put, the resolution was unani mously ordered to its third reading to-morrow.

Mr. Polk now moved to suspend the rule of the house which appropriates this day to the consideration of private bills, in order to move to take up the apportionment bill.

Mr. Hickliffe said he wished to understand from the friends of the number 48,000 in the apportionment hill if they would allow a motion to be made for discharging the committee of the whole from that bill.

Mr. Adams said he hoped the gentleman from Kentucky would have permission to make the motion he de-The house had spent two days in very unprofinsired. ble debate upon that bill, and he wished to see it brought to an emil, and the bill reported in blank.

The question being taken, it was lost, less than two-thirds being in its favor. Ayes 94, Noes 56. A bill for the relief of George Junius, of New York, was debated, and refused a third reading—or rejected.

A motion was made by Mr. Dearborn, that when they be, he knew, to the committee on Indian affairs, but house shall adjourn this day, it will adjourn to meet again on Monday next.

Mr. Whitterey, of Ohio, demanded the year and mays on the question, which being taken, the motion prevailed, Aves 105, Noes 73.

Two private bills being disposed of-the house adourned to Monday.

Monday Jan 16. Mr. McDuffie reported a bill making appropriations for certain improvements for the year 1832; which was twice read and committed.

Mr. McDuffie, from the committee of ways and means, reported the following resolution; which was

read and laid on the table, viz:

sens and mass on the table, vizi

Besolved, That the secretary of the treasury be requested to
collect such facts and information as may be in his power, of the
extent and condition, generally, of the manufactures of wool,
contain being increased. extent and condition, generally, of the manufactures of wool cotton, bemp, from, sugar, salt, and such other articles as at manufactured to a considerable extent in the U. States, and remanufactured to a considerable (Airlet in the U. States, and re-port the same to this house as early as may be practicable during the present season, for the use of congress; and that he be also requested, in transmitting the alorenal information, to accom-pany it with such a tariff of duties upon imports, as in his opinion any be best adapted to the advancement on the public instruction.

may be best adapted to the advancement of the puote impropri-Mr. Drayton reported a bill making an appropriation towards the expense of laying out and opening a military road from fort Howard at Green hay to fort Crawford, on the Mississippi-twice read and commit-

ted. He also reported the hill, from the squate, for the erection of barracks, quarters and store houses, and tor the purchase of a site at New Or, rans, without

emendment. Mr. Evans reported a bill converning invalid pen-

sions-twice read and committed. Mr. Irvin reported a bill authorising the governor of Arkanses to lease the salt springs in said territory.

Mr. John S. Barbour made a report in part, accom-panied by a bill to provide for liquiditing and paying certain claims of the commonwealth of Virginia-twice read and committed.

The resolution offered by Mr. Bouldlat, some days since, and on which a debate was had last week, was

taken up.

The question before the house was the amendment proposed by Mr. Stewart, of Pennsylvania, to send the moury to the committee on manufactures, instead of the committee on commerce, as proposed by the mover.

[Mesers Duris, of Massachusetts, Cambreteng und Boutdin spoke on the subject. Their remarks were rasy and interesting—but must be deferred. We expest to give them in our next. The question was not decided.

Twisday, Jan. 17. Various memorials were presented; among them, two from Philodelphia, on the subject of the tariff, and one from the Chesapaske and Dela-

ware canal company, praying an appropriation for improving the navigation of Back Creek.

Mr. Branch presented a memorial and reconstrance of the special agent, and the chiefs, headmen and warriors of the Creek nation of Imbans, now in the city of Washington, remonstrating against the passage of a hill reported on the 8th not, and now pending before this house, to carry into effect the 4th section of the resity of the 8th of January, 1821, between the United States and the Creek nation of Indians, so tar as relates to the claims of citizens of Georgia against said hid ans, for injury done prior to the passing of the act of congress, regulating intercourse with holen traces, and praying that an act may be passed, directing the payment to the said inton of the sum of money proposed by said bill, to be paid to entzens of Georgia.

Mr. B. asked that the memorial might be read. The reading of the document having proceeded for

8011

Mr. Speight inquired whether his colleague intended to move for the printing of the theument? Because, if it was to be printed, the time of the house need not be wasted in Instrume to the reading, since he conjustured, from its size, that it would occupy an hour, at least.

Mr. Bunch renied, that it had been his wish to have it referred to a scheet committee, and if he could not succeed in such a motion, then to a nd it to the commit-The ordinary course of reference would tee on claims.

such a reference of it he must protest against, inasmuch as that committee had prejudged the question.

Mr. Bell, chairman of the committee on Indian oflairs, said that he did not know that it was any valid objection against referring the memorial to the committee on Indian affiors, that a majority of that emmittee diflered in opinion from the Creeks on the subject to which this memorial referred, and preferred the claim of the people of Georgia to that of the Creek mitton on the lund in question. A bill had already been reported on the su' ject, and the larest and most proper reference of this memorial would be to the same committee of the whole house, which had charge of that bill.

Mr. Branch expressing his assent to this arrangement.

the memorial was referred accordingly, Os motion of Mr. Stewart, it was

Resolved, That the committee on internal improvements be in-Resolved, that me commutee on internal improvements be a structed to inquire into the expediencey of making provision for the completion of the survey and location, and for opening the road connecting the Cumberland road with the northern lakes from Uniontown, with Circuland, in the state of Ohio, by way of Pataburg.

On motion of Mr. Jarris, it was

On motion of Mr. Javras, it was Resident, That the committee of commerce be instructed to inquire into the expediency of amending the act entitled "an act to provide for obtaining accurate statements of the foreign conserved of the United States" so as to procure a more prumpt exhibition to this house of the information required by and act.

Mr. R. M. Johnson reported a bill abolishing imprisonment for slebt-twice read and committed

Mr. It win reported a bill, to amend the bill, for the relief of the purchasers of the public lands that have reverted for the non-payment of the purchase money twice read and committed.

The report from the mint was received. The bill authorising the governor of Arkansas, to sell the salt springs in that territory and for other purposes, and the resolution to repeal the resolution of April 1816, authorising the president to employ a skilful assistant in the curps of engineers-were severally read The speaker laid before the house sundry communica-

tions, viz:

I. A letter from the secretary of war, transmitting a copy of the papers in the case of Ephraim Shuler, called for by the house on the 11th inst.

II. A letter from the secretary of the navy, transmitting a statement of the contingent expenses of the many for the venr ending September 30, 1831.

III. A letter from the secretary of state, containing information in relation to the execution of the act for taking the 5th census, and accompanied by a corrected return of said census.

The two first of which were referred, and the last laid on the table.

The house, on motion of Mr. Polk, went again into committee of the whole, on the apportionment bill, Mr. H. ffmun, of New York in the chor.

A debate ensued.

Mr. Paik advocated the number 48,000, though be expressed a hope that the question might be taken on sirking out that number,

Atter Messrs, Craig, Burges and Burringer hast spoken, the question was taken on Mr. Siconor's amendment to meet the number 46,000, and decided in the negative.

After some remarks from Messes, Stewart, Root and Polk, the question was at length taken on the motion of Mr. Craig to strike out the number 48,000 from the bill; which motion was decided in the inganic-ayes 84, nors 93.

So the committee determined that the number 48,000 should be returned. Mr. Clay the reupon moved that the committee rise,

and report the bill w thout amendment; when the nucs-Mr. Hubbard, of N. H. moved to amend by striker

out the number 48 and macring 44,000. Mesers, Johns, Hubbard, Mercer, Dearborn, Bates and Jenifer supported the proposition of Mr. Hubbard;

Mr. Corson and Mr. Polk were in favor of 48,000.

Mr. Wayne moved that the committee rise-Mr. If ayne's motion prevailing, the committee rose and reported progress, and the house adjourned.

Wednesday Jan. 18. The house resumed the conaderation of Mr. Bouldin's resolutions.

Mr. Stessart resumed the course of his remarks, which had been suspended yesterday. Before he had concluded, the chair declared that the discussion was taking too wide a range.

Mr. Cambreleng protested against any remarks of teis, in reply to Mr. Davis, being made the pretext for

a long tariff debate.

Mr. Stewart concluded by offering an amendment to the amendment of Mr. Davis, which he supposed to be before the house.

The chair having declared this not to be the case. Mr. Davis thereupon moved his amendment in the

words followings

Strike out all before and all after the word "resolved," and insert the following: "That the committee on manufactures be instructed to inquire into and report to this house, (if they possess the information), the prac-tical effect of the revenue laws upon the commerce, agriculture and manufactures of this country. Also, whether frauds are not perpetrated in the importation of goods, and the revenue thereby reduced, and how auch frauds may be suppressed. Also, whether the statute value of the pound sterling ought not to be so modified as to conform to the actual value in the United States, and to accompany their report, if they shall make one, by the evidence upon which it shall be predicated."

The amendment being read-

Mr. Wickliff's, after expressing his gratification that his friend from Pennsylvania, (Mr. Stewart), had yielded to the indication of the will of the house, declared himself to be in favor of obtaining as much information, on both sides of the tardl question, as could be got: and has conviction that the resolution of the gentleman from Virginia had been honestly offered-and would a beit facts important as well to the opponents as to the advocates of the protecting system, with whom he had beretofore acted, and with whom he expected to act again, though not to the extent that they might desire, proceeded to move the previous question.

Mr. Davis requested that he would withdraw his motion, that he neight offer some remarks in support of his amendment-but Mr. Wickliffe telusing to do so, the question was put, and the motion for the previous question was seconded—nyes 96; 113es 77.

Mr. Vance thereupon demanded that the previous

question should be taken by year and usys, which was

ordered.

The speaker then propounded the previous question in the words following: "Shall the main question now be put?" N. B. The main question was on agreeing to Bouldin's resolution without smendment, and it was decided by year and mays - Year 93, mays 96.

So the house decided that the main question should not be put, which decision, according to a rule of order, removes the subject to which it relates from the consider ration of the house for one day.

The engrossed bill for the relief of the officers and soldiers of the Virginia line and navy, and of the continental army, during the revolutionary war, was read the third time and passed.

The house then proceeded to the consideration of the orders of the day, and on motion of Mr. Polk, went into committee of the whole on the state of the union, Mr. Hoffman in the chair, and remmed the consideration of the apportionment bill; the question being on the motion of Mr. Hubbard, of N. Hampstore, to amend the bill by striking out the number 48 and inserting the number 44.

Mr. Speight of N. Carolina addressed the house in opposition to the amendment.

Mr. Grennell, of Mussachusetts, and Mr. Lecompt, of Kentneky, were in favor of it.
Mr. Doubleday, and Mr. Chitton Atlan, Mr. Elle-

worth and Mr. Clay were in lavor of the larger num-

Mr. Trucy and Mr. Thomas and Mr. Burd of l'ennaylvanis, also spoke, the latter at length in favor of the amendment.

Mr. Briggs, of Massachusetts, next obtained the floors but, it being now past 4 o'clock, after a lew prefatory words, he moved that the connectee rise.

rose accordingly, and reported progress; when the house anmediately adjourned.

Thursday Jan. 19. Mr. Burgess reported a bill for the bracht of certain invalid pensioners—also a bill regulating the commencement of invalid pensions which bills were severally twice read and committed.

Mr. Adams, front the conmittee on manufactures. reported the following resolution:

reported: the following resolution:
Resided, that the scretching of the irresury be directed to obtain
information as to the quantities and kinds of the several priceles
information as to the quantities and considerable the following the same perior, and that he lay the same pleaffer this house as early as may be practicable during the prevent sension of
congress, toget clear with such minds therefore the following the congress, tuge ther with such information as he may occur material, and such suggestions as he may think useful, with a view to the adjustment of the teriff, ofter the payment of the public debt,

Mr. Adams stated that he had been nestructed by

the committee to ask of the house, that the rule which requires that calls on the department should lie for one day on the table, should in this case be suspended, in order that the resolution might be acted upon without

delay.

The question being put, the house agreed to suspend the rule, and to consider the resolution at this time. After some debate, as to the identity of Mr. Adams' resolution with one moved some days since by Mr.

Mc Duffie, calling for adormation of a similar character, the house agreed in Mr. A's resolution.
The house then took up the resolution of Mr. McDuf-

fit, and agreed to it.

Mr. Jarvis onwed the following resolution:
Resolved, That the committee on the library be instructed to inquire into and report to this house the causes of the delay in the

printing of the reports of war, navy and treasury departments, and uf the journal of the house-

A debate ensued 1 Mr. Carson and Mr. Daviel, treated the resolution as an extraordinary one. Mr. Jarvis supported it.

The bill empowering the secretary of the treasury to percial bank of Erie, came up as the unfinished business of yesterday morning, and the debate upon it was resamed.

After Messrs. Cambreleng, Ingersoll, Whitteery, Heffman and Mc Duffie had spoken, the further consideration of the bill was postponed till Tuesday next.

The apportionment bill was taken up in committee of the whole, and after debate, the committee rose, and reported progress—when the house adjourned.

#### MR. CLAY'S SPEECH. In senate, Wednesday, January 11, 1832. REDUCTION OF DUTIES.

The following resolution, submitted by Mr. Clay on Monday last, being the special order of the day, was taken up for consideration.

heselved. That the existing duties upon articles imported from foreign countries, and not coming into competition with similar articles made or produced within the United States, aught to be forthwith abolished, except the duties upon water and sicks, and that those ought to be reduced. And that the committee on finance be instructed to report a bill accordingly.

The resolution having been read, Mr. Clay rose and addressed the senate, in substance, as follows:

1 have a few observations, Mr. President, and only a

few, to submit to the senate, on the measure now before you; in doing which I have to ask all your indulgence. I am getting old; I feel but too sensibly and unaffectedly the effects of approaching age; and I have been, for some years, very little in the habit of addressing deliberative assemblies. I am told that I have been the cause—the most unwilling cause, if I have been, of exciting expectations, the evidence of which is around us. I regret it; for however the subject on which I am to speak, in other hands neight be treated to gratify or to reward the presence and attention now given, in mine, I have nothing but a plain, unvarnished and unambitious exposition to make.

It forms no part of my present purpose, said Mr. C. to enter into a consideration of the essablished policy of protection. Strong in the convictions, and deeply seated in the affections of a large majority of the people of the United States, it stands self-midicated, in the general prespective, in the rich frinds which it has acutered over the land, in the experience of all prosperous and powerful nations, present and past, and now, in that of our own. Nor do I think it necessary to discuss that policy on this resolution. Other gentlemen may think differently, and may choose to argue and assail it. It they do, I have no doubt that, in all parts of the senate, members more competent than I and, will be ready to defend and support it. My object now is to limit my self to a presentation of certain views and principles connected with the present financial condition of the sountry.

A consideration of the state of the public revenue has become necessary in consequence of the near approach of the entire extinction of the public debt; and I concur with you, sie, in betieving that no season could be more appropriate than the present session of congress to enesvor to make a sutesfactory adjustment of the tariff. The public debt chiefly arose out of the late war, justly denominated the second contest for national independence. An act, commonly called the sinking fund act, was passed by congress ocar fifteen years ago, providing for its reimbursement. That act was prepared and proposed by a friend of yours and mine, whose premature death was not a loss merely to his native state, of which he was one of its brightest ornaments, but to the whole nation. No man, with whom I ever had the honor to be associated in the legislative councils, combined more extensive and useful information, with more firmness of tensive and userd information, with more firmness of judgment and blandness of manner, than did the lament-ed Mr. Lowndes. And when, in the prime of life, by the dispensation of an all-wise Providence, he was taken from us. los country had reason to anticinate the greatest benefits from his wisdom and discretion. By that act, an annual aupropriation of ten millions of dollars was made towards the payment of the principal and interest of the public debt; and also any excess which might yearly be in the treasury, beyond two millions of dollars, which it was thought prudent to reserve for unforeseen exidencies.

But this system of regular and periodical application of public revenue to the payment of the public debt, would have been unavading, if congress had neglected to provide the necessary ways and means. Congress did not, however, neglect the performance of that duty. By various acts, and more especially by the tariff of 1824—the abused tariff of 1824—the public enffers were amply replenished, and we have been enabled to reach our present proud eminence of financial prosperity. After congress had thus abundantly provided funds, and directed their systematical application, the duty remaining to be performed by the executive was one simply ministerial. And no executive and no administration can justly claim for diself any other merit in the discharge of the public debt, than that of a faithful execution of the laws. No other merit than that similar one to which it is entitled for directing a regular payment of what is due from time to time to the army and navy, or to the officers of the eight government for their salarjes.

The operation of the anking fund act commensed with the commensement of Mr. Monrue's administration. During its continuance of eight years, owing to the embarraments of the treasury, the ten millions were not regularly applied to the payment of the delit, and, upon the terministion of that administration, the treasury stood argely in arrivation of son years, not only was the ten millions faithfully applied during each year, but those arrears were brought up and all previous deficiences made good. So that, when the present administration began, a plain uninsumbered and well defined path by directly before it. Under the measures which have been devised, in the short term of fifteen years, the government has paid nearly one hundred millions of principal and about an equal sum of interest, leaving the annual remanant behind of twenty-four mill-leaving the annual remanant behind of twenty-four mill-

Of that remeant, birteen millions consist of the 3 percent, stock, created by the act of 1790, which the government does not stand bound to redeem at any prescribed time, but which it may discharge whenever at suits do some convenence; and when it is discharged it must be done by the payment of dollar for dollar. I cannot think, and, I should suppose, congress can hardby believe, with the secretary of the treasury, that it would be wise to pay off a stock of thirteen mildons, emtangle its holders to but three per cent, with a capital of thereen mildons worth an interest of air per cent. In other words, to take from the pockets of the people two dollars to not one, in the hands of the stockholder.

stollars to psy one, in the hands of the stockholder. The most ratice of the payment of a national debut, enasits in the demonstration which it affairls of the abbit of a contry to meet, and its integrity in loffilling all its engagements. That the resources of this country, increasing as it constantly is in population and wealth, increasing as it constantly is in population and wealth, are abundantly sufficient to meet any debt which it may ever prodectly contract cannot be doubted. And its expensively and prototy, from the person of the assumption, in 1790, of the debt of the revolution down to the present time, rest upon a solid and uncontentable formalistion. The danger, perhyles is not that it will not fair-day, arising from temporary causes, it may bring discredit upon itself by improviding strangements, which in prudent mon, in the management of his private offsire.

Of the residue of that twenty-four millions of debt, after deducting the thirteen millions of three per cent., less than two millions are due, and of right payable within the present year. If to this sum be added the moise which the present year. If to this sum be added the moise which becomes due on the 31st of December next of the laxe but a sum of about four millions which the public erecitor can lawfully demand, or which the government is bound to pay in the course of this year. If more is paid, it can only be slove by anticipating the periods of its payment, and going into the public market to purchase the stock. Can it be doubted that if you do so, the vigilant holder of the stock, taking advantage of your anxiety, will demand a greater price than its value? Already we perceive that the three per cent, have ruen to the extraordinary height of 96 per cent. The difference between a payment of the inconsiderable portion remaining of the public detai, in one, two, or three years, is certainly not so important as to justify a resortto highly disadvangeous terms.

Whoever may be entitled to the credit of the payment of the public debt, I congratulate you, sir, and the country, most cordially, that it is so near at hand. It is so near being totally extinguished, that we may now safely inquire whether without prejudice to any established policy, we may not relieve the consumption of the country, by the repeal or reduction of duties, and curtail considerably the public revenue. In making this inquery, the first question which presents itself is, whether it is expedient to preserve the existing duties in order to acexperient to preserve the examing access in order to ne-complate a surplus in the treasury for the purpose of subsequent distribution among the several states? I think not. If the collection, for the purpose of such a surplus, is to be made from the pockets of one portion of the people, to be ultimately returned to the same pockets, the process would be attended with the certain loss arising from the charges of collection, and with the loss also of interest while the money is perforing the unnecessary circuit; and it would therefore be unwise. It it is to be collected from one portion of the people and given to another, it would be unjust. It it is to be given to the states, in their corporate capacity, to be used by them in their public expenditure, I know of no princi ple in the constitution whick authorises the federal government to become such a collector for the states, nor of any principle of salety or propriety which admits of the states becoming such recipicute of gratuity from

the general government.

The public revenue, then, should be regulated and adapted to the preper service of the general government. It should be ample; for a deficit in the public income, always to be deprecated, is sometimes attended, as we know well from history, and from what has hopened in our own time, with fatal consequences. In

country so rapidly growing as this is, with such diversi- (son of peace, to some great object; and when war does fied interests, new wants and mexpected calls mon the public treasury must frequently occur. Take some examplea from this session. The state of Virginia has presented a claim, for an amount but little short of a million, which she presses with an excuestness demonstrating her conviction of its justice. The state of South Carolina has also a claim for no inconsiderable sum, being upwards of \$100,000, which she urges with equal earnestness. The gentleman from Pennsylvania, (Mr. Wilkins) has brought forward a claim, arising out of French spolutions previous to the convention of 1800, which is perhaps not short of five millions, and to some extent I have no doubt it has a just foundation. In any provision of a nubbe revenue, congress ought so to fix it as to admit of the payment of honest and proper demands, which its justice cannot reject or evaile.

I hope too that either in the adjustment of the public revenue or, what would be preferable, in the appro-priation of the proceeds of the public lands, effectual and permanent provision will be made for such internal improvements as may be sanctioned by congress. is due to the American people, and emphatically due to the western people. Sir, temporary causes may exact a reluctant acquiescence from the people of the west, by the suspension of appropriations to objects of internal improvement, but as certain as you preside in that chair, or as the sun performs its diurnal revolution, they will or as the sun performs its distribution, they will not be assisted with an abantonment of the policy. They will eame here and tell you, not in a tone of me-nace or supplication, but in the language of conscious right, that they must share with you in the benefits, as they divade with you the burthens and the perils of a common government. They will say that they have no direct interest in the expenditures for the navy, the fordirect interest in the expenditures for the navy, the for-tifications, nor even the army, those greatest absorbants of the public treasure. That they are not indifferent, indeed, to the safety and prosperity of any part of our common country. On the contrary, that every portion of the republic is indirectly, at least, interested in the welfare of the whole; and that they ever sympathise in the distresses and rejoice in the happiness of the most distant quarter of the union. And to demonstrate that they are not careless or indifferent to interests not disrectly their own, they may triumphantly and proudly sppeal to the gallant part which they bore in the late war, and point to the bloody fields on which some of their most patriotic sons nobly fell fighting in the comtheir most pariotic sons nony ien againg in the com-mon cause. But they will also say that these fraternal and just sentiments ought to be reciprocated by their Atlantic bretiren. That these ought not to be indiffer-ent to the welfare of the west, and that they have the same collateral or indirect interest in its success and adnot ask internal improvements to be exclusively confined to itself, but that it may receive, in common with the rest of the union, a practical benefit in the only form compatible with its interior condition.

compatible with its interior condition.

The appropriation of the proceeds of the public lands,
or a considerable portion of them, to that object, would
be a most natural and suitable disposition. And I do hope, sir, that that great resource will be cherished and dedicated to some national purpose worthy of the repub-Utterly opposed as, I trust, congress will shew to be to all the mad and wild schemes—and to that itself to be to all latest, but maddest and wildest of all, recommended by the secretary of the treasury-for squandering the pub-lis domain, I hope it will be preserved for the present generation and for posterity, as it has been received from our ancestors, a rich and bountiful inheritance. In stom our ancestors, a rich and pounted ninernance, these baleyon days of peace and plenty, and an over-flowing treasury, we appear to embarrass norselves in devising visionary schemes for casting away the bounties with which the goodness of Providence has blessed us. But, sir, the storm of war will come, when we know not; the day of trial and difficulty will assuredly come, and now is the time, by a prudent foreast, to husband our resources, and this, the greatest of them all. Let them not be hourded and hugged with a miser's emthem not be howed and hugged with a miser's em-brace, but liberally used. Let the public lands be ad-ministered in a generous spirit, and especially towards the states within which they are situated. Let the pro-eeeds of the sales of the public lands be applied in a ses-

come, by suspending that application of them, during its continuance, you will be at once put in possession of means for its vigorous prosecution. More than twenty-five years ago, when first I took a seat in this body, I was told, by the fathers of the government, that, if we had any thing perfect in our institutions, it was the avatem for disposing of the public lands, and I was eau-tioned against rash innovations in it. Subsequent expersence fully satisfied me of the wisdom of their counsels, and that all vital changes in it ought to be resisted.

Although it may be impracticable to say what the exset amount of the public revenue should be, for the future, and what would be the precise produce of any given avstem of imposts, we may a dely assume, that the revenue may now be reduced, and considerably reduced This reduction may be effected in various ways, and on different principles. Only three modes shall now be noticed

1st. To reduce duties on all articles, in the same ratio, without regard to the principle of protection.

2d. To retain them on the unprotected articles, and augment them on the protected articles.

And, 3d. To abolule and reduce the duties on unpro-

teeted articles, retaining and enforcing the faithful collection of those on the protected articles,

To the first mode there are insuperable objections. It would lead inevitably to the destruction of our home manufactures. It would establish a sort of beil of Proerustes, by which the duties on all articles should be blindly measured, without repect to their nature or the extent of their consumption. And it would be deroga-tory from every principle of theory or practice on which the government has hitherto proceeded.

The second would be still more objectionable to the loes of the tariff than either of the others. But it canloes of the tarin than entire of the coners. But it can-not be controverted that, by augmenting considerably the duties on the protected class, so as to carry them to the point, or near to the confines of absolute prohito the point, or near to the connect of absolute proba-bition, the object in view, of effecting the necessary re-duction of the public revenue, may be accomplished without touching the duties on the unprotected class. The consequence of such an augmentation would be a great diminution in the importation of the foregoing article, and of course in the duties upon it. But against entire prohibition, except perhaps in a few instances, I entire promotion, except perimps in a lew instances, I have been always, and still am, opposed. By leaving the door open to the foreign rival article, the benefit is secured of a salutary competition. If it be hermetically closed, the danger is incurred of monopoly.

The third mode is the most equitable and reasonable, and it presents an undebateable ground, on which I had hoped we could all safely tread, without difficulty, It exacts no sacrifice of principle from the opponent of the American system; it comprehends none on the part of its friends. The measure before you embraces this mode. It is simple, and free from all complexity. It divides the whole subject of imposts according to its nature. It settles at once what ought not to be disputed. and leaves to be settled hereafter, if necessary, what may be controverted.

A certain part of the south has hitherto complained that it pays a disproportionate amount of the imposts. If the complaint be well founded, by the adoption of this measure it will be relieved at once, as will be hereafter shewn, from at least a fourth of its burthens. The measure is in conformity with the uniform practice of the government, from its commencement, and with the professions of all the eminent politicians of the south, until of late. It assumes the right of the government, in the assessment of duties, to discriminate between those articles which sound policy requires it to foster, and those which it need not encourage. This has been the invariable principle, on which the government has proceeded, from the act of congress of the 4th of July, 1789, down to the present time. And lins it not been admitted by almost every prominent southern politician? Has it not been even acknowledged ed by the lathers of the free trade church, in their late address promulgated, from Philadelphia, to the people of the United States? If we never had a system of foreign imposts, and were now called upon. for the first time, to originate one, should we not discriminate between the objects of our own industry, and those produced by foreigners? And is there any difference in its application, between the modification of an existing system and the origination of a new one? gentlemen of the south, opposed to the tariff, were to obtain complete possession of the powers of government, would they hazard their excreise upon any other principle? If it be said that some of the articles which would, by this measure, be liberated from duties, are luxuries, the remark is equally true of some of the articles remaining subject to duties. In the present advanced stage of comfort and civilization, it is not easy to draw the line between luxuries and necessaries. will be difficult to make the people believe that bohea tea is a luxury, and the article of fine broad cloths is a necessary of life.

In stating that the duties on the protected class ought to be retained, it has been far from my wish to preclude inquiry into their adequacy or propriety. It it can be ahown that, in any instance, they are excessive or dis-proportionately burthensome on any section of the union, for one I am ready to vote for their reduction or modifi eation. The system contemplates an adequate protecits operation will be injurious to all parties.

The people of this country, or a large majority of them, expect that the system will be preserved. And its abandonment would produce general surprise, spread desolation over the land, and occasion as great a shock as a declaration of war forthwith against the most power-

ful nation of Europe.

But if the system be preserved, it ought to be honestly, fairly, and faithfully inforced. That there do exist the most scandalous violations of it, and the grossest frauds upon the public revenue, in regard to some of the most important articles, cannot be doubted. As to iron, objects really belonging to one denomination, to which a higher duty is attached, are imported under another name, to which a lower duty is assigned, and the law thus evaded. False invoices are made as to woollens, and the classification into minimums is constantly eluded. The success of the American manufacture of cotton bagging has been such as that, by furnishing a better and cheaper article, the bagging of inverness and Dundee has been almost excluded from the consumption of the states bordering on the Mississippi and its tributa-There has not yet been sufficient time to labriate and transport the article in necessary quantities from the western states to the southern Atlantic states, which therefore have been almost exclusively supplied from the Scottish manufactories. The payment of the duty is evaded by the introduction of the foreign fabric, under the name of burlaps, or some other mercantile phrase, and instead of paying five cents the square yard, it is entered with a duty of only fitteen per cent, ad valorem. That this practice prevails, is demonstrated by the treasury report of the duties accruing on cotton bag-ging for the years 1828, 1829, and 1830. During the first year the amount was \$137,506, the second \$106,068, and the third it sunk down to \$14,141!

The time has arrived when the inquiry ought to be seriously made, whether it be not practicable to arrest this illegimate course of trade, and secure the faithful execution of the laws. No time could be more suitable than that at which it is contemplated to make a great reduction of the public revenue. I wo radical changes have presented themselves to my minil, and which I will now suggest for consideration and investigation. On such a subject, I would, however, seek from the mercantile community and practical men, all the light which they are so espable of affording, and should be reluctant to act on my own convictions, however strong.

The first is to make a total change in the place of valua-Now the valuation is made in foreign countries. We fix the duties, and we leave to foreigners to assess the value on articles paying ad valorem duties. That is, we prescribe the rule, and leave its execution to the foreigner. This is an inomaly, I believe, peculiar to this country. It is evident that the amount of duty payable on a given article subject to an ad valorem duty, may be

ascertainment of the value, and leave to the foreigner to prescribe the duty, as it is to reserve to ourselves the right to declare the duty and allow to him the privilege to assess the value.

The effect of this vicious condition of the law has been to throw almost the whole import trade of the country, as to some important articles, into the hands of the fe as to some important writers, into the manus of the re-reigner. I have been informed that seven eighths of the importation of woollens into the port of New York, where more is received than in all the other ports of the United States together, are in his hands. This has not proceeded from any want of enterprise, intelligence, or canital, on the part of the American merchant; for, m these particulars, he is surpassed by the merchant of no country. It has resulted from his probity, his character. and his respect to the laws and institutions of his country-a respect which does not influence the foreigner. I am aware that it is made by law, the duty of the appraiser to ascertain the value of the goods in certain cases. But what is his chief guide? It is the foreign invoice, made by whom he knows not, certainly by no person responsi-ble to our laws. And, if its fairness be contented, they will bring you ca - on is of certificates and affidavits from unknown persons to verify its exactness, and the first

cost of the article. Now, sir, it seems to me that this is a state of things to which we should promptly apply an efficacious remedy, and no other appears to me, but that of taking into our own hands both parts of the operation, the ascertainment of the value as well as the duty to be paid on the goods. If it be said that we might have, in different ports, different rules, the answer is, that there could be no diversity greater than that to which we are liable from the fact of the valuation being now made in all the ports of foreign countries from which we make our immade by persons, responsible to our own government, and regulated by one head, than by unknown forcigners,

the other change to which I allude, is to reduce the credits allowed for the payment of duties and to render them uniform. It would be better, if not injurious to commerce, to abolish them altogether. Now we have various periods of credit graduated according to the distance of the foreign port, and the nature of the trade. These credits operate as so much capital on which the foreign merchant can sometimes make several adventores before the arrival of the day of payment. There is no reciprocal advantage afforded to the American merchant, I believe, in any foreign port. As we shall probably abelish or reduce greatly the duties on all articles imported from beyond the cape of Good Hope, on which the longest credits are allowed, the moment would seem to be propitious for restricting the other credits in such menner, that whilst they afforded a reasonable facility to the merchant, they should not supply the foreigner at the instance of the public, with capital for his mercantile operations. If the laws can be strictly enforced, and some such alterations as have been suggested, can be carried into effect, it is quite probable that a satisfactory reduction may be made of the duties upon some of the reduction may be made of the duties upon some of the articles falling within the system of protection. And, without impairing its principle, other modes of relief may possibly be devised to some of those interests upon which it is supposed to press most heavily.

There remains one view to present to the senate in respect to the amount of reduction of the revenue which will be produced by the proposed measure if adopted, and its influence upon the payment of the public debt within the time suggested by the secretary of the treasury.

The estimate which I have made of that amount is founded upon treasury returns prior to the late reduction of duties on tea, coffee, and occoa. Supposing the duties on wines and silks to be reduced as low as I think they may be, the total amount of revenue with which the proposed measure will dispense will be about \$7,000,000. The sceretary of the treasury estimates the receipts of the present year from all sources at \$30,100,000, and he supposes those of the next year will be of an equal amount. He acknowledges that the past year has been effected as much by the fixation of the value, as by the precipies one of extraordinary commercial activity but on what specification of the duty. And, for all practical purprise does he anticipate that the present will also poses, it would be just as affe to retain to ourselves the be? The history of our commerce densities that it is not one of extraordinary commerce densities that the present will also poses, it would be just as affe to retain to ourselves the be? The history of our commerce densities the present will also possess. alternates, and that a year of intemperate speculation is usually followed by one of more guarded importation. That the importations of the past year have been excessive I believe is generally confessed, and is demonstrated by two unerring facts. The first is that the imports have exceeded the exports by about seventeen millions of dollars. Whatever may be the qualifications to which the theory of the balance of trade may be liable, it may be safely affirmed, that when the aggregate of the importations from all loreign countries exceeds the aggregate of the exportations to all foreign countries considerably, the unfavorable balance must be made up by a remittance of the precious metals to som extent. Ac-cordingly we find the existence of the other fact to which I allude, the high price of bills of exchange on England. It is, therefore, fairly to be anticipated that the duties accuring this year will be less in amount than those of the past year. And I think it would be nowise to rely upon our present information as to the income of either of these two years as furnishing a safe guide for the future. The years 1829 and 1830 will supply a surer criterion. There is a remarkable coincidence in the amount of the receipts into the treasury during those two years, it having been the first from all sources \$24,827,627 38, and the second \$24,844,116 51, differ-

ing only about \$17,000.

The mode recommended by the secretary, for the modification of the tariff is to reduce no part of the du-ties on the unprotected articles, prior to March 1833, and then to retain a considerable portion of them. And an to the protected class, he would make a gradual but prospective reduction of the duties. The effect of this would be to destroy the protecting system by a slow but certain poison. The object, being to reduce the revenue, every descending degree in the scale of his plan of gradual reduction, by letting in more of the foreign ar-ticle to displace the domestic rival fabric, would in-crease the revenue and beget a necessity for further and further reduction of duties until they would be earried so low as to end in the entire subversion of the system

of protection.
For the reasons which have been assigned it would, I think be unwise in congress at this time to assume, for the future, that there would be a greater amount of nett annual revenue, from all sources, including the public lands, than \$25,000,000. Deducted from that sum the amount of seven millions which it has been supposed ought to be subtracted, if the resolution before you should be adopted there would remain \$18,000,000 as the probable revenue for future years. This includes the sum of three millions estimated as the future annual reeeipt from the sale of the public lands—an estimate which I believe will be demonstrated by experience to

be much too large.

It a reduction so large as seven millions be made at this session; and if the necessary measures be also adopted to detect and punish frauds, and ensure a faithful execution of the laws, we may safely make a temporary pause, and await the development of the effect upon the revenue of these arrangements. That the authority of the laws should be vindicated, all ought to agree. Now, the fraudulent importer, after an exposure of his fraud, by a most strange treasury construction of the law, (made I understand, however, not by the present secretary), eludes all punishment, and is only required to pay those very duties which he was originally bound for, but which he dishonestly sought to evade. Other measures, with a view to a further reduction of the revenue, may be adopted. In some instances, there might be an augmentation of duties for that purpose. I will mention the article of foreign distilled spirits. In no other country upon earth is there so much of the foreign article imported as The duties ought to be doubled, and the rewe under the dates ought to be udotted, and the re-veame thereby further reduced from \$600,000 to a mil-lion. The public morals, the grain growing country, the fruit-raising, and the cancelplanting country, would be all benefitted by rendering the thity prohibitory. I have not proposed the measure, because, it, perhaps, ought

to originate in the other house.

That the measure which I have proposed may be adopted, without interfering with the plan of the seere-

The secretary estimates that the receipts of the present sine secretary estimates that the receipts of the present year, after meeting all other just engagements, will leave a surplus of 14 millions applicable to the payment of the principal of the debt. With this sum, 8 millions which he proposes to derive from the sale of the bank stock, and 2 millions which he would anticipate from the revenue of the next year, he suggests that the whole of the debt remaining may be discharged by the time in-dicated. The 14 millions, I understand, (although on this subject the report is not perfectly explicit), are reecipts anticipated this year from duties which accrued If this be the secretary's meaning, it is evident that he wants no part of the duties which may seerue during the current year to execute his plan. But if his meaning be, that the fourteen millions will be composed in part of duties accruing and payable within the present year, then the measure proposed might prevent the payment of the whole of the remnant of the debt by the exact day which has been stated. If. however, the entire seven in liens, embraced by the resolution on your table, were subtracted from the lour-teen, it would still leave him seven millions, besides the bank stock, to be applied to the debt, and that, of itself, would be three millions more than can be properly applied to the object, in the course of this year, as

I came here, sir, most suxiously desiring that an arwithout sacrificing any of the great interests of the counwithout secricing any of the great interests of the country, would reconcile and satisfy all its parts. I thought I perceived in the class of objects not produced within the country, a field on which we could all enter, in a true and genuine spirit of compromise and harmony agree upon an amicable adjustment. Why should it not he done? Why should those who are opposed to the American System demand of its friends an unconditional Our common object should be so to reduce surreniler? the public revenue as to relieve the burthens of the people, if indeed the people of this country can be truly said to be burthened. The government must have a certain amount of revenue, and that amount must be collected from the imposts. Is it material to the consumer, wherever situated, whether the collection be made upon a few or many objects, provided whatever be the mode, the amount of his contribution to the public exchange remains the same? If the assessment can be mad objects which will greatly benefit large portions of the union, without injury to him, why should he object to the selection of those objects? Yes, sir, I came herein a spirit of warm attachment to all parts of our beloved country, with a lively solicitude to restore and preserve its harmony, and with a firm determination to pour of and balm into existing wounds, rather than further to lacerate them. For the truth and sincerity of these de-el-rations, I appeal to HIM whom none can deceive. I expected to be met by corresponding dispositions, and hoped that our deliberations, guided by fraternal sentiments and feelings, would terminate in diffusing contentment and satisfaction throughout the land. such may be the spirit presiding over them, and such their issue, I yet most fervently hope.

When Mr. Clay took his seat-

Mr. Hayne rose. He did not rise, he said, to enter at this time into the discussion of the question. Perhaps he should not, at any time, be disposed to follow the gentleman through the wide field which he had occupied, He certainly had no such intention now; he rose merely to make a motion, and should, in the fewest words possible, state the reasons which had induced him to ilo so.

The question presented by the resolution, Mr. Hayne said was not only one of deep interest to the whole country, but he was persualled it was, by far, the most important that could command the attention of congress The period so long and so during the present session. anxiously looked for and desired, had at length arrived. The public debt was paid, for so gentlemen on all sides had agreed to consider it, and the question necessarily arose, what adjustment of the tariff of duties was to be made in this new and most gratifying condition of our affairs. Upwards of 12,000,000 dollars per annum, neartary of the treasury for the payment of the public debt, by one half of the entire amount of the public debt, will, by the 4th of March next, I will now proceed to show. (when the debt is paid), cease to be a charge upon the

country, and to this extent at least, the people have a right to expect an immediate reduction of their burdens. But what does the resolution now before us propose? That duties to the amount of only six or seven nullions should be taken off, and that the reduction shall be exclosseds confined to actuales which do not enter into competition with similar articles produced at home; in other words, sir, that articles of universal consumption, and, in relation to which, every class of the people, and every portion of the country, contribute equally, should be relieved entirely from all taxation, while the high duties on the protected articles were to remain intouched, In a word, that the bands of that mammoth system of injustice and appression, (he meant no offence, but he snoke as he left) were to remain unrelax d-a system which was left and acknowledged in one quarter of the country as a bone and a bonery, and in an-other as an insupportable burden—a system which (if in the language of the senator from Kentucky), at it had "scattered its rich fruits" over any portion of the hand, had visited others with its consuming curses.

It enabl not be denied that the true question here presented was, whether the protecting system was to be wholly untouched, and to be rivetted upon the country beyond all hope of relief? And, in this aspect of the question, he must solemnly declare that he considered it as one involving the prosperity, he could say, pregnant with the luture destines of this country; lor, ever this system may have operated elsewhere, it was the deep and settled conviction of those whom he represented, that it had acted upon them as a blight and pestilince, blasting the fairest fields on which the eye

of man had ever rested.

The gentleman from Kentucky had intimated that he had hoped that his proposition might have presented a common ground on which all parties might have met. But, how was it possible for gentlemen to suppose that we should meet on ground which involved no concession whatever to our views, but which proposed to smaintain the protecting system in all its unmittgated rigor, thus aggravating instead of diminishing the me-quality and injustice of which we so strongly and so justly complament. The gentleman had, indeed, and that the property of some reduction might, perhaps, hereafter be consulered, not may, however, when the debt was about to be poid, and the twiff re-adjusted and fixed on a permanent basis, but at some future and "inore convenient season." But what hope is it to be built on this declaration, when the gentleman, in the very same breath, tells us that no considerable or sudtlen reduction could ever take place. No, that would be destruction; and as to the gradual and moderate redoction recommended by the secretary of the treasury, that would be even worse than the other-it would that would be even worse than the other-it would, rank the gendeman, be a slow and sure purson, leading to mentable destruction. It follows, then, clearly, that we are to have no reduction of the protecting disties, whatever, either now, or at any future permit this view of the question, he must repeat, he emisilered it the most awto ly momentum subjet that had ever been presented in the course of the thistory of this goe vernment; and believing that it required the greate-t deliberarum, be wished the attention of the senste in be scriously called to a, that it might be maturely considerable dereil, and wisely decided. In the presence of this august built, and before his Goit, he would remai has therp conviction that the consequences to grew out of the adjustment of this great question involved the his ture destines of this country; and in order that we should approach it with wary steps, and becoming eaution, he woold now move that the burther consideration of the resolution should be postponed to, and made the order of the day for, Mum'ay next.

The motion was served to.

#### GIRARD'S COLLEGE.

From the American Durly Advertiser. The property absolutely settled by Mr. Girard upon the college, will produce an income of \$150,000 a year.

This will not be diminished by the buildings, or by the purchase of a library, or philosophical apparatus for the interest of the capital will pay for all the buildings, &c. &c. while they are in progress.

Suppose there be 1,000 punils. They will be sometimes employed in farming and other labor, toward their own subsistence—and it is probably a full estimate to set thinks, for all the expenses of feeding and clothing and statumery, \$75 each per annum \$75.0W

Suppose there be appointed 1 Provost, with a salary of \$ 5,000 1 Vice provost, do 10 Professors, \$3,000 each 3 000 SH DUO 19148

40 Tutors, \$300 each Balance unexpended 25.000 \$75.000

\$150 mm My object is not to sketch a plan for the college, but by a few calculations to show what great room there is to make this college (so manificently endowed) the best to make this energy to monitoring continuently no best in the United States. It is empalle of supporting 1,200 pupils, and liberally providing the best talent in the country for the professorship, &c. Let us take another view of the matter:

Supposing the college fairly in operation, with 1,200 pupils. They remain, on an average, 8 years. There will be every year 150 thoroughly educated young men, (except so far as regards Greek and Latin), sent into the population of Philadelphia, to become mechanics, or to earn their bread by their own industry some other war.

In 14 years there will then be 2,000 chizens of 30 years old and under, from this college. How great will their influence be at elections! This will not be a class of persons to be made use of by trading pulsteians, or designing men, of any other stamp. These will not be nersons who will run themselves by aspiring after fashion. It is probable that there will be many Girards. and perhaps some Franklins among them.

How great will be the influence of their example upon the under-educated persons in their own rank of life! What improvements in the arts! What discoveries in science may we not hope for from them!

How much depends upon the manner in which the from much nepents upon the manner in which the princely bequest is expended? Crozens of Philadelphia, it is a subject that should dady necessy your thoughts.

[The value of the estate left is variously stated. Some

estimate it as high as filteen millions of dollars-which, at 6 per cent. would be equal to 900,000 dothers a year? But the real amount is not ascertsined. We have bewe cannot give the details, at present. It contains consubrably more than one hundred houses, and a large number of tracts of Isads, adjacent to the city, making borhood o' 900 acres! We must suppose that his doof taxes forever, -nay, allow large soms to be expend-ed in improvements, if the legacy be managed with ordmary prudence.]

#### FINANCES OF NEW YORK, From the Atheny Argus. COMPTHILLIR . HEP. DT.

CONFIDENCE OF THE CONFIDENCE OF THE ANGELOW occupied by the other figurative proceedings. We therefore make from it the following biref aboract, as presenting in a small compass the most interesting lacts in relation to the finances of the state.

The compact capital of the general fund, as exhibited in the report, is Dolla, 1,131,026 os

By a law of the last session, the comptroller was directed to ascertain, from an actual examination of the securities in his office, the amount of the actual value of the capital of this fund, separate from those porwhich are supposed to be doubtful, or are known to be bad. The report exhibits the real value, thus ascertained, to be

803 201 69

Leaving a difference between the nominal and real value of the capital of the fund of This difference is accounted for principally by a detailed statement unnexed to the report.

The capital of the ethool fund is represented as being entirely sound and productive, with the exception of 306.8.50,00 Solided distincts bank stock, and is stated at 2061s. 1,174,100 or

NILES' F	REGISTER-JAN.	21, 1852—THE NAVY BILL.	591
The capital of the literature fund	d, devoted to the aid of scade	-   Receipts.	
The capital of the literature fund	ouls, is represented to be also	Canals-tolls, revenue, &c. dotls.	1,202,531 61
aound and productive, and is stated. The capital of the lank fund in	at Dolls. \$63,407 94	Principal and interest on bunds for lands of the ge-	
The capital of the lank fund it	only the contribution of the	peral famil.	72,017 MC
first year after its establishment, on	d when but a very small por	Principal and interest on do, common school fond	35.263 09
tion of the capital now contribution provisions of the law establishing the stated at	cloud, and is		29,312 90
stated at	Dolls. 24,498 7	First payment on tales of lands of the general school, his rature and canal totals	47,895 18
The total receipts into the trust by the report, as stated as follows:	ary during the time covered	Pets from state offices	1,658 78
For acet, of the general load Dalla.	249.367 82	l Bould Inget	27,1-84 70
For acer, of the general food Dolla. do Eric and Champlain caust		Ba & dividends	18.1(3.80
fund 1	,250,573 05	Principal and interest of the loan of 1792	39,001 35
do. Oswego canal fund do. Cayuga and Scheen esnal	19,014 44	Ditte of the loss of 1608	40,616 35 30 279 HZ
do. Common school fond	10,4.3 94	Arrars of county taxes and interest Tax on foreign tourance companies	2 567 16
do. Literature lund	19 309 12	Balance due from individuals	4,158 95
do. Bank fund	27,084 70	Sale of revisal statutes	6,006 07
m	Dells. 1,740,530 96	Military fines Resemption of lands sold for county taxes	1,147 26
The whole amount of warrants if	Tawn upon	Sales of bank stock	42,098 24
s follows:	I are given	luterest on causi stock, belonging to school fund	15,262 50
For account of the general fund		In full of the band of the corporation of Albany	51,598 98
Dells.	343,521 31	From New York health commissioners for mariner's	12 197 68
do Erie and Champlain canal	250,:23 05	Various miscellaneous sources	22,447 95
do Oswego canal fund	19 019 44	various intechancous sources	22,041 93
do, Cayuga and Seneca canal	10.043 91	dolls.	1,740,531 16
do. Common telioni lund	104,759 39	Payments.	
do. Literature fund do. Bank fund	5,651 56 14,966 33	For salaries, governor, judicial and state officers, &c	. 28,413 17
do, Bank fund	11,900 33 Della, 1,748,087 02	Clerk hire in all the public offices	7.076 49
_		12cg stature, inclouding contingent expenses	75,006 80 3,987 80
Excess of warrants drawn over the s	receipts of	State prison at Sing Sing	33,090 19
the year, as shown by the above.	7,556 06	Transportation of convicts	9,602 00
The lollowing is given as the state	of the treasury on the 30th		100 000 19
day of September last, that being the Balance in the treasury on the 30th !	Nov. 1830. 69,893 84	Indian annuitees to tribes	17,763 95
Receipts into the treasury from the	last date to the	Country to country	9,214 70 46,123 43
20th Sept. 1831,	1,740 531 16	live at al the aniversity	5,613 16
	Dolls. 1810,425 00	Hospital at New York	16,875 60
During the same p-ried the payment	77003. 1810,423 00		3.153 02
surv have been as follows, vez.		Central asylum Foreign poor in New York	1.440 90 5,000 00
Amount of warrants outstanding 30	Otla	State fibrary	1,002 38
Nov. 1830, Amount of warrants drawn from 3	790 45	Postske	1997 51
Amount of warrants drawn from 30	Dilla	Appr heusion of criminals	2,000 00
November, 830, to 30th Septemb	1,748.017 02	Recoing and publishing laws	5,014 46
,		Commissioners of the canal fund	13,714 46
	1,748,877 50	A barry fraun company for tulls	2 823 37
Deduct amount of werrants outstand	ago os	Hantity att balk	3 798 71
on the Join September, 1831	1,747 987 45	Rich appions of lands for county taxes refunded Bank tond, for purchase of stocks, salaries of com-	11,111 91
		i interiorers, Sec.	14,966 33
Leaving a balance in the treasury or 1831, applicable to the ordinary exp	the 30th Sept.	Secret count in the Morean affair	8742 30
veriment, and to meet the claims	of the constant	Witnesses in the Spat ing case Investigation New York hospital	3. +3 12
schools, literature and bank lunds	on the treasury.	Trusters seamen's band	1518 89
of	dulls. 62,437 55	Various stead of expenditure	30,091 92
Amount due from the general fund	to the common set of the		
rature and bank lunds, as follows viz	to the common sensor, the	dolls. I	747,997 45
rature and bank funds, as follows, viz To the common school fund, capital	dulls: 61,887 64	The balance in the treasury on the 1st December dollars 69,890 84: so that the account with the treasure	r that was
Reven	tue 8/,662 33		
To the literature fund, capital	dolls, 16 083 75	Abraham Keyser, in account with the state of New Yor 1830, Dec. 1 To balance due the mate duban	k DR.
Rryen	ue 10 905 67	1831, Sept. 30. To receipts from the 1st Die, 1230,	69 843 84
	25,989 42	to date,	,740,531 16
To the bank fund, espital	12,118 37		
	dullars 181 657 70	dulis, 1,	410,425 00
From which deduct the balance in the 30th September, 1831, as above,	the treasury on 62,437 55	1331, Sept. 30. To belance brought down dulls.	
And there will remain a deficit of me-	ans in the tree	find to k	28,103 97
surv to meet the debt to specific lust	nds of dolls, 119 220 2;	" une rufied deposits in Manhat-	1710 89
		ten bang	7710-39
parate from the canal debt. The canal debt is stated in the report		dolla	. 92 252 11
I ne canal debt is stated in the report	dulls. 2,943,500 00		
Loaned at 6 per cent.	f.112.145 B6	CR. 1831, Sept. 30 By payments from 1st December, 1830, to date inclusive 1.	
		1630, to date inclusive	747 097 64
Making a total of	dolls. 8,055,015 26	La ance	62,437 35
The estimated ordinary expenses of t	the government		212.121.12
for the current year, as exhibited in The estimated income from the gen	the report, are \$.9,967 36	dol'are 1	810,421 10
The estimated income from the gen	ieral tund, com-	1831, Sept. 30. By balance in commercial bank,	
pored butti of capital and revenue,	and applicable	1831, Sept. 30. By manner in commercial bank, in which the public moneys and are diposited, dulls.	
to these expenses, is unly	111,100 00	are di postied, dulls.	67.459 65
Leaving a deficiency in the income,	from the fund	do, in Manhatten bank	24.792 46
applicable to it, to meet the ordina	iry expenses, al	dollars	91,258 11
	dulls. 187,867 36		
_		THE NAVY BILL.	
Treasurer's report. The annual re-	eport of the treasurer of the	The following is the project of the marat commit	tee of the

Treasurer's report. The annual report of the treasurer of the latter was under to the same blog as Surday, We shall take an early opportunity to lay it before our readers. It contains a unumnary of the receipts and payments of the last official year, someoning December, 1, 1320, and ending 30th September, 1821. Be it neared &c. That the officers of the tany of the United States.

But the contains a better the many of the United States. But the content of the tangent of the United States. Set it neared &c. That the officers of the tany of the United States.

rals; thirty captains; thirty masters commandant two bundred rali; thirty captains; thirty masters commandant two lumbred and thirty licettenants; four hundred midshipmen, including those who have passed examination; thirty-five surgeous; fifty suitants surgeous; thirty-five queriers; twelve chaplains; twenty-five sailing masters; twenty schoolmasters; twenty-four bout-vains; twenty-four guancies; wenty-four expeniers; wentysailma ers.

usilmakers.

And the president of the United States is hereby authorised and required to appoint the admiral and vice admirals hereby created, by and with the advire and consent of the senate; and the other officers shall be reduced to the number above mention-

the other offlers shall be reduced to the number show mentioned, so soom as vacancia shall occur from death resignation, or remaral; and until the number shall be so reduced, no promotion shall be and the the number shall be so reduced, no promotion shall be and be it further enough, the president of the United States be, and he is hereby authorized, whenter the public service may, in his judgment require it, to increase the number of each of the classes of offlers below the rask of rear admiral; Provided, The number of the respective rlasses in no case d the following, that is to say:

exceed the following, that is to 18; "Design and the following that is the forty expansion filty, married minimum and the following without any other pay, allowance or condument, thall be the share pay of officers when not employed on actual service at each that is mmandant; two bundred and

Dolls, 4,000 per annum ch admiral.

Each rear doiners, 2,500
Each master commandant, 1,000
Each master commandant, 1,000
Each shoolmaster engaged at a yard 720 doilars, and not at a serd, 330 doilars per annum; and the pay of all other officers hall be as heretofore fixed by law.

snan or as nervotors navel by law.

Sec. 4. And be it further enocted, That the following, without
any other pay, allowance, or emoluments, shall be the sca pay, or
the pay of officers when employed in actual service at sea, that

to say: Each admiral 5,000 dollars. Each rear admiral, 4,500 dollars. A captain commanding a squadron of 150 guns and upwards n commanding a squadron mounting less than 150 A captr

A captain commanding a squadron mounting less than 130 guns, 3,500 dollars pr. a nanum.
A captain commanding a ship of the line, 3,800 dollars.
A captain commanding a frigate of the first class, 3,800 dollars.
A captain commanding a frigate of the second class, 2,800 dol-

A master commandant, 2,200 dollars.

A master commandant, 2,200 dollars.

A lieutenant onmanding, a brig or selsoner or acting as first lieutenant of a ship of the lice, 1,200 dollars per annum.

A first lieutenant of a firspace, 4,000 dollars per annum.

A first lieutenant of a sloop of war t,200 dollars per annum.

A first lieutenant of a brig or schooner t,200 dollars per

annum.

A sailing master of a ship of the line 950 dollars per annum.

A chaptain at sea 1,000 dollars per annum.

A chaptain, gunner, sailimsker, or earpenter, of a ship of the line 700 dollars; of a frigate, 600 dollars; of a sloop, 500 dullars

A Schoolmaster 850 dollars per annu

A Schoolmaster \$10 dollars per annum.

Sec. 3. And bet I further content, That the president of the United States shall be, and he is hereby authorized to cause useh rules and regulations, not incomisient with existing laws, as he promotion of distription and economy; and for the observance of duty in all classes; and for securing the faitful application of the funds appropriated for the navy—to be prepared. And such rules and regulations, when approved by him, and sanctiumed by congress, shall have the force of law.

The bill was read wive and ornomitted.

#### LEGISLATURE OF GEORGIA.

LEGISLATURE OF GFORGIA.

On the 22d December the house of representatives took up certain resolutions reported by Mr. Howard, from the committee on the republic, as follows:

"The committee to whom was referred sander resolutions from

the republic, as follow:
"The committee to whom was referred under resolutions from
the state of Delware, in relation to the tariff of 1828, have given
the state of Delware, in relation to the tariff of 1828, have given
commend the aloption of the following resolutions:
Resolved by the senate and house of representatives of the state
of Georgia in general assembly met, That the sairff of 1828, does
not second with the spirit of the constitution of the United States
but (when the object and effect of the set in runnidered) is a polbut (when the object and effect of the set in runnidered) is a poltion.

nt (when the object and effect of the act is runsidered) is a pubble violation of it.

That it is inexpedient, oppressive, nnequal, and destructive to be great leading interests of the south—peruniary and political.

That cach state of the confederacy is in the full exercise of all the of sovereignty, except such rights as have been granted to United States, in the lederal constitution.

That the right to impose duties upon articles of trade, for the protection of domestic tidustry, has not been granted to the federal government, by the states, in the federal constitutions or can such right be yielded, so lar as the people of Georgia are

at in case of a palpable and dangerous violation of the ed stitution, each state, in its soverrign capacity, has a right to judge for itself, and pronounre upon the constitutionality of the acts of the congress of the United States; and each state in its suvereign

capacity, has the right to judge of and act upon the mode as "ell

the measure of its redress.

That when in the course of federal legislation, it becomes no cenary for a state to pronounce upon the constitutionality of an act of congress, and to prescribe to herself the mode, as well as the measure of her redress, it is a question not of right, that quetion being settled, but a question of expedency, having exclusive reference to the consequences which may grow out of the exercise of that right."

The first resolution was adopted, year 92, navs 11. adopted without The second, third and fourth resolutions wer

When the 5th water rad, a motion was made to lay that, and the 6th on the table for the remainder of the vestion, and after discussion between Nears. Hemard, Pyon, Hopkins, and Glescek, the question was taken and decided, year 17, may 28.

In the control of the nullification.

This body adjourned on Saturday tright, Decemorr 24, after passing a great number of acts, incruding the bill to aboish perincituary imprisonment except in certain cases, and two bills for The report and resolutions against the re-chartering of the book of the United States, which passed the rate unanimously, were on the 22d, in the house, faid on the tolde for the remainder of the serion. The bill for the call of a convention shared a

of the session. The bill for the call of a convention shared a similar fate in the senate, 37 to 31.

The first set in relation to the Cherokre lands, provides for The first set in relation to the Christice lands, provides for their distribution, by lottery except the portions actually occupied by the Chriskes, and except the sections supposed to be the richest in gold mines. Thise last, about 1,500,000 acres in extent form the subject of the second act, which throws them into extent form the subject of the second act, which throws them into a separate luttery, to be drawn at the same time with the other. Says a correspondent of the Savannah Georgian, "it divides the Georgia cover 18 years of ace, who has readed here three years, one draw, whether he has drawn a lot previously or not, and to very macried man an additional draw. The number of tract will be about 60.00, and the price of the grants 10 dollars. All chance for a large of the 18 Dorado, and the number of grants at 10 dollars while the state of the 18 Dorado, and the number of grants at 10 dollars will produce for the greatest backful after deducting the captures, a fund estimated at above 30,000 dollars. This bill passed the vante by a majority of one vote only; the house by a "suporty of 77 to 30.

With reference to the leading subject mentioned above, we copy the fullowing from the "National Intelligencer" of Sagurday

copy the following from the "National Intelligencers" of Saturday in the legislature of the state of Georgia has adjourned after a temperature session. The must important act of the session is one providing for the survey and occupancy of the land belonging to and occupied by the Cherokees. The Recorder, a journal of high standing in the star, holdly survages this set as "surject high standing in the star, boldly survages this set as "surject diagreems to the harmony of the winon," and, what seems to be considered an almost equally important objection, as "calculated to embarrant the president of the Utiled States. The Recorder further state is that "the more predent and respectable portion of the sittens of Georgia, with but I've exceptions, are decidedly all which, listered of transiting to the stress of honer and to the hemisture, and a retocation of this unjust, unwise and unkind-temperature state, what does not recorder propose? The residential will see by the animeted extract. This set is unjust, impolition, most of the survey of the state of the state of the properature of the survey of the survey of the most of the survey of

ments up an act y congress. As it the inguer wong wouls with this issue of things, would it too be proper for the present congress to arrest the evil by saying to the Cherokees you must and sholl self to the United States, for the use of Gorgia-we will give you not merely a lair price, but a librard over we will remove all who choice to emigrate, at the public exercise with the privilege of selling to the whiter, and the government will pay into the treasury of Gorgia the fair value of all tuch reserves. This is, in our opinion, a most proper sub-let for the action of congress lor it is gordy and effectived section. It is morely better that congress should compet the Indiana to the condition of the condition of

apprehend strious thapper." [Recorder.]
It is no more than due to the editor of the Recorder to start that, not withstanding this suggestion, he follows it with a vigorous manly and cloquent appeal to those principles on which, for ourselves, we are willing to rely for a genedy for whatever with registrature has just done.

# NILES' WEEKLY REGISTER.

BALTIMORE, JAN. 28, 1832. [VOL. XLI. WHOLE No. 1,069 POURTH SKREES.] No. 22-Vol. V.

THE PAST-THE PRESENT-FOR THE PUTURE.

# BOITED, PRINTED AND PUBLISHED BY IL NILES, AT \$5 PER ANNUM, PATABLE IN ABVANCE.

regily to Mr. Clay, has hardly left room even for an abbreviated journal of the proceedings of congress, and competied me to omit, (among many other interesting ar-ticles), certain speeches of Messrs. Davis, Cambreleng, Appleton and Hantington, of the house of representatives, on matters not less interesting than Mr. Hayne has preon inatters not tess interesting tions. Air. Havine not presented. An effort, however, shall be made to bring-up the lee-way as soon as possible.

It will be observed, that Mr. Hayne has made a

"lame and impotent" attack upon mer not because the distinguished gentleman, (like others who have introduced my humble asme on the floor of congress), lacked ability to enforce against me the most ample pressure of any wrong committed by me, -kut for the reason that, like others, he had misapprehended and misstated me in his speech in the senate, and had not the Ty as it would have done, had not that misappretension or mistake have happened. Every carcini reader will observe a patch on what is said about me, or discover a rent in the argument; and for what I am charged as having uttered, I shall give Mr. Hayne the first rate anti-tariff authority for having said it rightfully. But room caunot now be obtained to reader justice either to my-neal or Mr. Hayne. He has left it theorous to introduce me to the senate, -and must be supposed the best judge of what is due to the dignity of that body, which should be the most honored of any legislative assembly in the world, -and will not have reason to congclain, if I shall do more than delemi my self in the matters stated.

As by Mr. Hayne's own shewing, it is possible some may be led to believe, that, by the simple act of publishing his speech I adopt his opinions-it may be proper to warn my readers against an impression so errolleous! -for, however incomprehensible it may be to Mr. Hayne, my object in publishing his speech is that the people may have both sides of the argument. If I teared his logic—that object would still be pursued. But I have no more fear that his argument will capsize the American System—than that his witness, John Sarchett, a British subject, will be accepted by the American people, as their dictator in questions of national policy.

The nomination of Mr. Van Baren, as minister to Great Britain, has been rejected by the senate, (lorty-six members being in their places), by the casting vote of the vice-president. After the tatification of certain other nominations of extraordinary ministers, there is no doubt that Mr. Van Buren's instructions to Mr. MeLane led to this very uncommon act of the sense. The whole merits of the case will, however, soon be made known—us the injunction of secreey has been removed from all the proceedings. Messrs. Prentiss and Bibb were the absent members-the former confined by indisposition. Had both been present, the cesult would have been the same

DRIFE NOTICES-THINGS IN GENERAL.
On Tuesday last there arrived at Baltimore on the rail road, 51 wagons, lailen with 982 bbls. flour, 46 bags wheat, 14 tons wood, 66 tons nails, 3 tons bark and 15 tons granter—and 60 passengers. Departed 46 wagons laden with coal, iron, brick, lurniture and merchandise, and 55 passengers. During the week ending January 23, the flour received on this road, amounted to 4,462 barrels, on an average of 634 barrels a day.

Another revolution appears to have taken place in Central America—a col. Dominguez was at the head of the new party.

Several vessels lately passed through the Chesapeake and Delaware canal. It was expected that the ateam boats between Baltimore and Philadelphia would resume

Vot. XLI. -No. 28.

The excessive length of Mr. Hayne's speech in business on Monday next-but the cold weather has unllified that expectation.

The slave question is yet in full debate before the Virginia house of delegates. It seems probable that "something will be done." The declining condition of the state is plainly seen, and the real cause of a freely acknowledged, by many. The tariff has nothing to do with it—an the contrary, in the eastern demand for the products of the agriculture of [Virgina, impedes the progress of emigration from the state,

We have awful accounts of the ravages of the cholera at Smyrna. Persons are attacked in the streets, and sometimes dead in 15 minutes? The physicians had fleit, and business was suspended. The lowest classes of society and especially the intemperate, had suffered most.

There has been a serious movement among the slaves of Jamaics, and martial law hast been proclaimed. Many plantations were destroyed by fire; on other estates, the slaves had refused to work. A negro charged with being at the licuit of the plot. A negro preacher is

A terrible fire has taken place at the island of St. Thomas. It was computed that 1,200 buildings had been desirnyed, and that the loss of property amounted to twa millions of dollars, much of which was American. It was thought to have been the work of an iocendiary

### TWENTY-SECOND CONGRESS-1st SESSION.

SENATE.

January 20. Among the petitions presented this day was one from sundry merchants, &c. of Philadelphia, praying a repeal of the duty on indigo.

Mr. Clay submitted the following resolutions

Resolved. That the secretary of the tressury be directed to some Resolved. That the secretary of the treasury be directed to 88th, municate to the senate any correspondence which may have passed between the treasury department and the collectors of the earlier and the collectors of the earlier of them, showing the construction which has been placed by that department upon the act entitled "an act to amend the secretal sets imposing duties on imports," approved the 24th May, 128t, or upon any other are of congress, imposing duties on May, 130th, (Agreed to the 3th day) of the section the 15th day of May, 130th, (Agreed to the 3th day) of the section the 15th day of May, 140th, (Agreed to the 3th the best since section the 5th day of the section of a Schich the best since section contains a section of a Schich the best since section contains a section of a Schich the best since section to section the section of a Schich the best since section is contained as the section of a Schich the best since section is contained as the section of a Schich the best since section is contained as the section of a Schich the best since section is contained as the section of a Schich the best since section is contained as the section of a Schich the best since section is contained as the section of a Schich the section of the se

ing resolution, of which he had given notice some days

A joint resolution declaratory of the meaning of the

A joint resolution declaratory of the meaning of the charter of the leark of the United States, on the subject of the paper currency to be issued by the bank. Be it resided by the sende and house of representative of the United States of America in congress assembled, That the paper currency, in the torm of orders, drawn by the presidents of the officer lof discount and deposit, on the cashier of the bank of the United States, in not authorited by any thing contained in the charter, and that the said currency is, and is hereby declared to be, this gai, and than the said currency is, and is hereby declared to be, this gai, and than the said currency is.

chirter, and that the 1870 Canard, to be suppressed.

Mr. Henton canneatly supported his resolution—for statched the opinion oil judge Baldwin, lately the livered on the subject. He was followed by Mr. Dallas and a general debate ensured, Messrs. Dallas, Huckner, Chambers, Webter, Wilkins, Clayton, Bibb and King opposing, and Messrs. Benton, Foreth, Miller, Marcy and Kone supporting the resolution. Finally, between 4 and 5 o'clock, the question was taken on grant-muleave in introduce the resolution, and it was decided now have to introduce the resolution, and it was decided. ing leave to introduce the resolution, and it was decided

ing leave to introduce the resolution, and it was decided in the negative, by the following vote: 
Head of the new temperature of the following the state of the

So even the leave was refused, and then the senste adjournded to Monday.

adjournmen to montay.

January 23. A good deal of current husiness was altended to. Mr. Benton submitted a new set of resolutions about the bank of the United States. Certain resolutions were also offered by Mr. Foot and Mr. Moore.

The senate then proceeded to the consideration, as the special order of the day, of the residution offered by Mr. Chip, on the subject of the tariff, the question being on the motion submitted by Mr. Hayne; when

Mr. Dickerson rose and addressed the senate in an argum-nutive speech of considerable length, in reply to Mr. Hayne, and in apposition to the amendment.

When Mr. Dickerson had concluded,

Mr. Smith said, that he was perfectly ready to go on with the debate, should the senate so determine; but, as another subject had been set apart for to-morrow, and the general attentiance of the sensions requested for d, he thought it would be better to postpone further properedings, with regard to the resolution number consideration, to Wednesday next. The resolution was then postponed to, and made the order of the day for Wednesday text. The senate then adjourned.

January 24. Petitions were presented by Messrs. Clayton, Sprague, Rell, Chambers, Robbins, Dallus and King.

Mr. Havne presented the memoral from the mem bers of the South Carolino leg islatore, opposed to sul-lification, against the tauth-read, ordered to be printed, and referred to the commutee on finance.

Several reports were made on private claims.

Several reports were made on private claims. Mr. Claybra unbinisted the following resolution: Resolved, That the committee on commerce be instructed to in-quire into the resp. intensy of enhanking the preef of tan's eeded at the mouth of Methon's river and the waters above of the lawre bay; and of appropriating the unexpended balance of the sum formerly appropriated for the erection of said house, for the construction of a road iter from to the fort land.

Mr. Sitabee submitted the inflowing resolutions

Resolved. That the committee on commerce be instructed to inquire into the expediency of discontinuing some of the custom house charges to which vessels and merchandise upon their entry and clearance are now subjected.

The resolutions moved yesterday by Mr. Benton relative to the United States bank, were considered and agreed to—as also those moved by Mr. Moore.

Mr. Tipton submitted the following resolution, which

Mr. Tiplon submitted the following retoration, which was read and is-id on the table:

Resideed. That the whet committee to which was referred the memoral of the periodes and directors of the bank of the United States, persying for a renewal of these charter, be instructed to inquire into the sip ducty of restricting the bank, if re-chartered, from holding, or it say way acquiring real custor, to a greater execution than in necessary for banking pure actions to a greater execution than in necessary for banking pure and the proceeded to the constitutional of executive business, and, when the

doors were opened, the senate adjourned. Various petitions and memorials were January 25.

presented and appropriately referred. Mr. Benton lant on the table several resolutions calling for various information respecting the management and operations of the bank of the United States.

The resolution offered some days ago by Mr. Foot, to amend the rules of the senate to restrain delaste in certain eases, was taken up, and after debate, at the instance of Mr. Benton, was laid on the table, and ordered to be printeil.

The resolution submitted heretofore by Mr. Class. proposing certain modifications of the tariff, coming up

as the special order-

Mr. Foreyth moved I s postponement to Monday next, in order to go into executive business - Some conversadrawn, passing by the resolution; a motion to that effect prevading.

The squate proceeded to executive business, and sat till near six o'clock with closed duors, and then adjourn-

Mr. Murcy, of N. York, presented the Januar y 26. memoral of David Haushaw, and others, ciozens of Massachusetts, praying that when the present charter of the bank of the U. Sister expires, that they may be permitted to establish a smiler bank, with certain specfied conditions, &c. - ordered to be printed.

Mr. Ewing land the following resolutions on the table

or consideration:

Mention, That the preside of remoting public officers by the president, for any other projects that these is accoung a faithful recention of the laws, it housts to the sprint of the constitution of was never contemplated by its framen-is a during extension of executive induces: — it projects to the public service—and dan-gerous to the bientless of its people.

Resolved, That it is expedient for the senate to advise and con-sent to the appointment of any person to fill a supposed waeane; in any office occasioned by the romoval of a prior beauthers unless such prior incumbent shall appear to have been remove

On motion of Mr. Benton, the resolutions were or dered to be printed.

The senate then proceeded to the consideration of executive business; and after some time spent, adjourned.

HOUSE OF REPRESENTATIVES.

Friday, Jan. 20. Mr. Drayton reported the bill from the senate, without amendment, entitled "an act for the organization of the ordnance department."

Mr. Wicklife, from the committee on public lands, reported the following resolution:

reported the following resolutions. Resalved, That he persistent he requested to communicate to this house; if in his power to do so, the number and probable value of the Indian reservations make by the treaty coveriended he/www the United States and the Choctaw rasion of Indiana on the purchase of the States and the Choctaw rasion of Indiana on the purchase of said reservations have been made; by whom made, and the sum paid; whether any contracts made for the purchase of said reservations have been made; and whether any terrations have been made; and whether any taxee or authority has been given by the executive to any person or person to miske purchases for said reservations, and the names of such authority protons.

Mr. Roof from the committee on agriculture, to whom was referred a letter from Peter S. Dopomeracy of the I delphia, on the culture and manufacture of silk, made a report thereon, accompanied by a bill for promoting the growth and manufacture of silk; which bill was twice

and committed.

Mr. Archer, from the committee on foreign affairs, to which was referred the memorial of the board of health of the city of New York, made a report thereon; which was read, and the resolution therein recommended was concurred in by the house.

The house resumed the consideration of the resolution moved by Mr. Bouldin, on the 27th ult, the question being on the amendment moved by Mr. Davis, of Mass.

on the 18th inst.

Mr. Mitchell, of S. C. rose to address the house in support of the resolution, and in opposition to the amend-He had said but a few words, when

Mr. Davis stated that it was his purpose to modify the amendment he had offered, and he modified it secordingly.

So as to make the whole amendment when modified.

read as follows:

Strike out all before and after the word "resolved, and insert the following, v.z-"That the commutee on manufactures be instructed to inquire into and report to this house, (if they possess the information), the practical effect of the revenue laws upon the commerce, agriculture and manufactures of this country. Designating the manner in which the sum upon which the duties are asmanner in which the sum upon which the turies are as-sessed is made up; and, also, the per centage assessed upon goods subject to the square yard duty, and whe-ther any goods are prohibited by the amount of duties; ther any goods are pronounced by the amount of duties, also, whether figures are not perpetrated in the importa-tion of goods, and the revenue thereby reduced; and how such frauds may be suppressed; also, whether the statute value of the pound sterling ought not to be so molified as to contorm to the actual value in the United States and to accompany their report, if they shall make one, by the evidence upon which it shall be predicated."

Mr. Mitchell then resumed, and auntinued to occupy the floor until the hour having expired, he was arrested by a motion from

Mr. If hittlesey, that the house proceed to the business on the speaker's table.

The speaker presented a memorial from the bank of Pennsylvanus in favor of re-chartering the bank of the United States.

The memorial was read; when

A motion was made by Mr. Wickliffe, that the said memorial be referred to the committee of ways and means, with instructions to report a bill to incorporate a new hanking company, to take effect and go into operation after the expression of the cluster of the bank of the United States, reserving one third of the capital in said bank for the United States, together with a sufficient bonus on the sharter; onesthird to be subscribed for by ; such of the stockholders in the present bank as may be citizens of the United States as may desire so to invest their surplus capital. That they also inquire into the expediency of prohibiting the bank from dealing in, or holding real estate, except for the mere purposes of banking houses and houses necessary for the transaction of the business of the company: of prohibiting the loention of any branch in any state without the consent of the legislature of such state. And also, of so forming the charter that the legislatures of the several states shall and may exercise the power, when they deem it expedient to do so, of imposing a fair and reasonable tax upon the capital employed in any bank or branch of said bank within the jurisiliction of such state; and also to subject the said corporation to be sued in the district or circuit court in any state where they may have a branch located, and the cause of action accrued.

Some deliate followed, in which Messes. Carson, Wicklife and McDuffie took part. The resolution The resolution

was sgreed to.

Saturday, Jan. 21. Mr. Clayton, member from Georgia, appeared, was qualified and took his seat.

Mr. Hubbard, reported the bill from the senate concerning revolutionary pensions, without amendment.

The house then proceeded to the consideration of the

resolution moved by Mr. Bouldin, on the 27th ult.

The debate was resumed and continued with much spirit until the hour at which the house usually adjourns, the house having, in the course of the debate, negatived a motion of Mr. Whitterey, of Ohio, to proceed to the orders of the day.

[A pretty full report of this debate, (now excluded by the great length of Mr. Hayne's speech is laid saide, and shall be registered. Mr. Dates' speech is very able and highly interesting.

The question recurred on the amendment moved by Mr. Davis, of Massachusetts, as modified yesterday; and, after debate, the question was put that the house do agree to the said amendment, and passed in the affirmative-Yeas 100, nuys 81.

Adjourned to Monday.

Monday, Jan. 23. Mr. Draylon presented a memo-rial from the members of the legislature of South Caroline opposed to nullification, praying relief from the tariff -referred to the committee on manufactures.

After attending to much current business, the house again took up the resolution of Mr. Bonlden, in the course of which a spirited debate took place, Messra. Combridge, Appleton and Huntington, &c. taking part. [We have laid tim debate saide for merrion.] Finally, Mr. Buddin's resolution, as amounted by Mr. Duvis, by striking out all before and if after the word "resulve", as a greed to by year and mays for it 127, against it 59.

Tuesday, Jun. 24. The following resolution, suba uceasity, since the bit of the continuing resolution, suin-nited on the 2th inst. by Mr. Jenifer, was considered. Resolved, That a select committee be appointed to inquire into the expediency of making an appropriation for the purpose of removing from the United States, and her territories, the free people of color, and colonising them on the coast of Africa, or

Mr. Alexander moved to lay the resolution on the table.

On this question, the year and mays; were ordered. The motion was then negatived; year 71, mays 104. Mr. Jenifer explained the object of the resolution, but the crowded state of our columns only permits us to give a very brief synopsis of his remarks, and of those made in reply. He said, this population was considered both in the slaveholding, and the non-slaveholding states, as a great evil—that it endangered the public tranquillity, and that the preamble to the constitution of the United States, containing the reasons for adopting it, seemed outers, commining the trasons for adopting it, seemed to contemplate such a sea—that the action of congress was impatiently expected upon the subject, both by the citizens in public meetings, and by the legislature of the state of Maryland. The present time was favorable—that of the present time was favorable the interest and happiness of the slave population rethe interest and nappiness or the nave population of quired it—the cords of disciplina were obliged to be drawn harder about the slaves, from the presence of this population among them. This population had now

no privileges but that of mere existence. If nothing was done by congress, the states would be obliged to prohibit emancipation—and pass laws expelling them from the states having slaves. Would they be patiently received by the non-slaveholding states? He hoped measures would be adopted to place this section of our population in a situation to rise above their present debased and depraved condition.

Mr. Coke suid, the gentleman might feel justified in his own mind for presenting this subject to the linuse, by the measures adopted in his own state-but he thought many considerations might have induced him to a different course. He was ready to go into a consider. ation of the constitutional right of the United States to remove this population; and made some remarks upon the extension of powers derived from that instrument. the did not profess to understand the gentleman's hus manity when he proposed to exercise it by tearing these persons from their connexions and native soil, and bringing what they regarded as punishment and rule upon them for no offence but being born in a civilized commisnity. He thought there were already a sufficient stock of exciting questions before the house, without the add tion of this, which could not fail of raising a strong feeling when it was proposed to appropriate money for the exclusive benefit and security of eight or nine states in the union. He pointed it out as an extraordinary fact that the members from those states had mostly voted against taking up the subject-while those who had no interest in the subject, had as generally voted in favor-He thought there must be some mistake as to the interon account of the slave population. No man who did his duty to his slaves had any real ground for lear. Virginia had been settled two centuries—there had been but one insurrection—that in Southampton, which was excited by a single individual-a religious lanatic-and there was no apprehension of the renewal of those He said the legislature of both the states from Scenes. which the gentleman and himself came, had commensed their sessions since they had left home. For himself he was at this time uninformed of the wishes of his constituents-and was opposed to the taking up the subject except at the desire of those most interested in it. When Mr. Coke concluded his remarks,

Mr. Polk moved to proceed to the consideration of the business on the speaker's table, and the orders of

the day; which was agreed to.

The bill authorising the secretary of the treasury to compromise the claim of the U.S. on the commercial bank of lake Erie, was read the third time and passed. The apportionment bill was taken up, and Mr. Wade spoke in favor of a small ratio. The commit-

tee ruse before he concluded, and the house adjourned. Mednesday, Jun. 25. Mr. Whittlesey reported with-out smendment the bill from the senate providing for

the final settlement of the claims of states for interests on advances to the U. States during the late war.

Mr. Ellsworth reported a bill for the relief of certain insolvent debtors of the United States, twice read

Mr. McDuffie reported a hill to authorise the presis dent of the United States to direct the transfers of certan appropriations in the naval service; under certain circumstances-twice read and committed,

The house resumed the consideration of the resulution moved by Mr. Jenfer, on the 12th inst. in relation to colonizing the free persons of color of the U. Stateswhich, on motion, was postponed until to-morrow.

Mr. E. Everett reported a bill making an appropriapublic offices in Great Britain-

On motion of Mr. Wing, it was

On motion of Mr. Wing, it was Reastead, That a select committee be appointed, whose duty it shall be to inquire into the expediency of providing by law for payment of properly destroyed by the British troops and their savage allies, during the late war, in violation of the artiest of captitulation, entered into between ginerals Hull and Brock at the surrender of Detroit; and that said committee be surrender of the property of the committee of t

The following resolutions were offered, and lie over one day.

one day.

By Mr. Huntington, of Conn.
Reselved, That the previolent of the United States be requested to inform this home of the United States be requested to inform this home of the hundred thousand dollars, appropriated by the act, approved May 25, 1830, entitled \*an act to previde for an exchange of lands with the Indiana residing in any of the states or territories, and for their reme particular observer Mississippi, abaryoned the states of the remember of the states who have been employed in the execution of the aforesaid act, the duties specifically required of and the justice them respectively; also the terms of the course and, or to be paid to them respectively; also the terms of the course and of the control of the control of the course of the paid to them made, for each of the persons with whom such control act the course of the persons with whom such control and the time when and the place where made.

By Mr. Everett, of Mass.—
Resolved, That the president of the United States be requested to communicate to this house a copy of the treaty negotiated with the Chickaraw tribe of Indiana in the year 1830.

By Mr. Jurvia.

Resolved, That he accretory of the navy be directed to in

Resolved. That he accretory of the navy be directed to in

service of the control of the seamen, and advance the good of the service, by reducing the seamen, and solving control of the c

By Mr. C. P. White,
Resideed, That the secretary of the treasury be directed to communicate to this house the invoice of prime rost in the countries
from whence imported, of each and svery article of goods, ware
out of merchandies, (and as far as is practicable the invoice toot of the
various descriptions of the same article or article, but in the countries
the United States, paying, and article aforesaid, for the years ending
amount of duty paddon esharticle aforesaid, for the years ending
1002, 1303, 1364, 1417, 1818, 1819, 1828, 1826, 1827, 1219, 1830,

1831. Resolved, That the secretary of the treasury be directed to e

mounted to this hours the aggregate invitor or prime tent in the countries from whe nee inported, of all the goods, ware and merhandles, insperted into the Chinel States, pashing at valorem or perfide dulles, or free of duty, in each year, from the 50th States of the States of the

A motion was maile by Mr. Pendleton, that the house do now proceed to the consideration of the resolutions submitted by him on the 3d January, instant, relative to the judiciary; and, pending the question on this motion, the house, on motion, proceeded to the orders of the day; and

An engrossed bill, entitled "an act authorising a revision and extension of the rules and regulations of the

soon and excession or the rures and regulations of the tawal service," was read the third time and passed.

The house on motion of Mr. Polk, again went into committee of the whole, Mr. Hoffman, of New York, in the chair, and resumed the consideration of the apportionment bill,

After several gentlemen hall spoken on the amendment of Mr. Hubburd, to insert 44,000 instead of 48,000, as the ratio of representation, which motion was negatived by a vote of, ayes 81, noes 105.

Mr. Wickliffe now moved that the committee rise and report the bill to the house.

Mr. Howard, of Maryland, said he had an amendment which he felt constrained to offer, however reluctant to detain the committee. He then moved to strike out the 3d, and insert the 6th of March, in the bill: the effect of which amendment, if adopted, would be to give to the several states at the next presidential election, the weight they possess at present, and not that to which they will be entitled under the new census.

Mr. Howard commenced a course of remarks in sun port of his motion; but very shortly yielded to a motion that the committee rise. So the committee rose, &c.

Thursday, Jan. 26. Mr. Archer reported a bill for giving effect to a commercial arrangement between the U. States and the republic of Columbia—twice read and

Mr. Jenifer's resolution relative to colonizing free persons of color, was taken up and postponed until tomorrow.

The resolutions of Mr. White, of N. Y. moved yes terday were considered, modified and passed.

A message was received from the president concern ing the amount of expenditures for breakwaters, &c. The house refused to consider Mr. Pendleton's rest

lutions relative to the powers of the supreme court.
The apportionment bill was again considered in cot mitte of the whole-the committee finally rose and reported the bill to the house-the house then adjourned.

## DEBATE ON THE TARIFF.

In senate, Monday, January 16, 1832. The senate resumed the ennsideration of the special order of the day, being the following resolutions submit-

ted by Mr. Clay.

Resolved, That the existing duties upon articles imported from foreign countries, and not coming into com-petition with similar articles made or produced within the United States, ought to be forthwith abolished, except the flaties upon wines and silks, and that those ourh t to be reduced.

Resolved, That the committee on Spance be instruct. ed to report a bill accordingly.

Mr. Haune moved to amend the first resolution, by striking out all after the word "countries" in the secon

line, and insert the following:

"Be so reduced that the amount of the public re venue shall be sufficient to defray the expenses of government according to their present scale, after the payment of the public debt; and that, allowing a ressonable time for the gradual reduction of the present high duties on the articles coming into competition with similar articles made or produced within the United Sintes, the duties be ultimately equalized, so that the duty on no article shall, as compared with the value of that article, vary, materially, from the general average. 12

Mr. Hayne addressed the senate in support of his pro-

nosition as follows:

The senator from Kentucky, (Mr. Clay), commence his remarks a few days ago, by complaining of the advances of age, and mourned the decay of his eloquence, so eloquently as to prove that it was still in full vigor. He then went on, sir, to make a most able and ingenious argument, amply sustaining his high reputation as an accomplished orator.

With this example before me, Mr. President, (said Mr. H.) I am almost deterred from offering any apo lest I should create expectations which it will certainly not be in my power to gratify. And yet, perhaps, it may be permitted to one so humble as impact to say, that it belongs not to me at any time, or under any ein cumstances, and, least of all, at this moment, and on th occasion, to satisfy the expectations of those, if any such there be, who may have come here to witness the graces of oratory, or to be delighted with the charms of eloot oratory, or to be neighbed with the charms of elo-quetter, I would not sir, on this necasion, play the ora-tor if I could. I came here to-day for higher and far nobler purposes. I stand on this floor as one of the representatives of a high-minded, generous and confiding people, whose dearest rights and interests I am now to vindicate and maintain. In such a situation, it would lose every thought of myself in the greatness of the scause. Confidulg in the indulgence of the secost, and deeply sensible of my inability to to justice to the inportant subject embraced in these revolutions, I shall proceed at once in the plain, unadorned language of soberness and truth, to the examination of the question before us.

The gentleman from Kentucky set out with the declaration, that he did not deem it necessary to offer any arguments in favor of the American system, "that the protecting policy stands self-vindicated—that it has senstered its rich fruits over the whole land, and is sustained by the experience of all powerful and prosperous nations." Sir, we meet these positions at once by asserting, on our part, that the protecting system stands self-condemned; condemned in our own country, by the desolution which has followed in its train, and the discontents it has produced-condemned by the experience of all the world, and the almost unanimous opinion of enlightend men in modern times. And now, having

ourselves upon the country, and submit the case, with out argument, nor should I have any lears for the result, it the issue was to be tried and decided by an im-partial tribunal, free from the disturbing influence of partial tribunat, free from the distancing manenees or popular prejudice and delasion, and the strong hias of talercate, personal, pecuniary and political. But situa-ed as we are, I feel and acknowledge the necessity of making out our case to the consistion of this assembly, maxing out our case to the constrtion of this assembly, and the satisfaction of the country. We are seeking relief from an abiding evil—redress from an existing wrong. We cannot stand where we are. We cannot stand where we are. We cannot stand supported assertions. We must adount our proofs and maintain our positions if we can. It is greatly to be regretted, however, that the gentifeman insa not seen fit to greatly an area of the contraction of t present some of the strongest arguments in lavor of his policy, as such a course might have directed our inquiries to a few leading points, instead of making it ne-cessary for us to wander at large through the wide field of argument presented by the protecting system. The man, however, has so far favored us as to specify two of the advantages which he asserts have been ilerired from it in this country, and in our day, and I am perfecty willing to try the ments of the system by these tests which he has himself proposed. They shall—if the gentleman pleases—constitute the standard by which ts true character shall be determined. In the first place, then, the gentleman asserts, "that the much abused po-lies of 1824, (the protecting tariff o' that year), has filled our coffers and enabled us to pay off the public lebt," a debt of \$100,000,000 of principal, and \$100,000,000 of interest. Now, s.r., if any thing is eapable of demonstracould not, by possibility, have contributed in the slightest degree to produce this result. One would suppose, in-deed, that the very last merit which would be ascribed to this system, was its tendency to fill the "public cof fers." It is unquestionably to a tariff, an anged and ailjusted with a single eye to revenue, that we are to look for such a result. The object of a protecting tar ff, as such, certainly is to dimmish or exclude importations, and of course to lessen the amount of revenue derived from duties. from duties. The very end and aim of such a system is, to substitute for the imported article, paying taxes to government—the domestic article paying none—to transmute the duty into a bounty to the manufacturers; and, just so tar as this end is attained - that is to say, just so far as the tariff is protective, must it cut off the public fevenue. Do we not all remember, that the leading atgument in favor of the protecting provisions of the tariff of 1824, was, that they were necessary, "to put down a ruleous foreign competition:" and did not one of the fathers of that bill publicly declare, "that the vital principle of the system was, that the nation should communit its own consumption, and that when the nation dal command its own consumption, importations and imposts would cease." Sir, there are two distinct features in the tariff of 1824—revenue and protection. It is the former that has filled your coffers and paid off the public debt; and, so far as the latter has operated at all, it must have dimmished the revenue, and delayed the extinction of that debt. Sir, I will put it to the candor of the gentleman, whether, it the protecting duties under the tart of 1824, had been less, the revenue would not have been areater, and been tess, the revenue would not now teen greater, and that, too, without adding to, but on the con-trary, diminishing the burthens of the people, times they would have obtained the articles of their consumption, in increased quantities, and at a cheaper rate, and been re-lieved from the heavy tax which they have been compelled to pay to the American manufacturers? Why, sir, the policy of 1824 actually taxed to prohibition a large amount of goods formerly imported. From a report made by the secretary of the treasury, in January, 1830, it appears that these prohibited articles amounted to

fairly joined issue with the gentleman, we might put I is it in the WEST? I appeal to the gentlemen from that quarter. We have heard a great deal of the flourishing condition of the manufacturing establishments elsewheres but where are the manufacturing villages, the joint stock companies, the splentid dividents, and other evidences caralor of the gentlemen, whether the benefits of the protecting system, so far as the west is concerned, do not still rest in hope—whether the system would be sustained a day, if it were not for its supposed connection with INTERNAL IMPROVEMENTS-whether it is not indebted for its popularity, in that quarter, to the unhappy, the tatal marriage between the tariff and internal improvements-a union which I yet hope to see dissolved. It was a t-ft handed-an unlawful marriage, and surely those whom Goil hath not joined, man may put asunder. Sir, there are shubtless some flourishing manufactories scattered here and there throughout the western coun try-chiefly confined, however, to situations beyond the reach of foreign competition, and owing nothing to the protecting system. But the west has not been rendered protecting system. Dut the west has no section by these establishments. I appeal confidently to these actual condition at this time. With regard to the gendeman's own state, I will apply a test which cannot deceive us. When the policy of '24 was before congress, the senator from Kentucky stood forth as its champion, and it was my lot to attempt to answer his arguments. It is true, air, that his speech was made in ment had been sent forth as the manifesto of the partyit was printed in pamphlet and laid on the tables of the it was printed in pampinet and usin or the tariles of the serial pampinets of the tarill party, it was impossible for inc to pass it over. I well remember, therefore, that, on that occasion, the gentleman argued, that Keniucky was to participate in the protecting system by raising large quantities of hemp, and supplying the southern states with cotton bagging, -and he atrongly insisted that she was then only prevented from so doing, by the ruinous competion of the inconsiderable Scotch towns of Inverness and Dundee. And what is it, ar, that we hear now-after the lapse of eight years? The old story repeated. Kentucky will deprived of the benefits of the protecting system by those formulable rivals, Inverness and Dundee. They still constitute will be "a lion in the path" to those whose prosperity depends on the protecting system. We know that the manufacture of cotton bagging is a simple process, requiring hardly any skill or capital, and yet the great state of Kentucky cannot get along with it, in conse-quence of the formidable rivalship of two miserable Scotch towns, the inhabitants of which are said to be so poor and destitute, that they are obliged to import their tuel, and send to Dantzie, twelve hundred miles up the Baltie, for their hemp, paying a freight equal to the first cost. It is perfectly clear, therefore, that Kentucky has not realized the promised blessings of the protecting system; and, I am told, this is substantially true of the whole west. But, sir, if the west has gained nothing by the system, she has had her share of the taxes which it imposes—she has paid her proportion of duties to the government, and bounties to the manufacturers; and, in consequence of the thre culamities which the system has inflicted on the south-blasting our commerce and withering our prosperity - the west has very nearly been deprived of her best ensumer. When the policy of 24 went into operation, the south was supplied from the west, through a single avenue, (the Saind Mountain Gap), with live stock, horses, entite and logs, to the amount of considerably upwards of a million of dollars a year. Under the pressure of the system, this trade has regularly been diminishing. It has already fallen off more than one half, and from an authentic return, now hefore me, it apppears that it has been further diminished near one hundred and fifty thousand dollars during the last year. So much for the rich blessings bestowed

it appears that these probabited articles amounted to each articles around about \$5,000,000 per annum, being near one sixth part of the whole of our imports. Has this part of the policy contributed to fill your conferes? Sr., the ease is too plain for further argument, and tried by this test, the policy must be utterly condemned.

The next test by which the genileman proposes to try the rest test by which the genileman proposes to try this system, is "the rich fruits which it has scattered the supposed, however, that we are test found?" It may be supposed, however, that we are too full of prejuction over the country." Sir, where are they to be found?

having honor thrust upon them, and perhaps there may be such a thing as having benefits thrust upon an unwilling people: yet I should think, that even in such a case, they would soon become reconciled to their fot, and submit to their fate with a good grace. But, I assure the gentlemen, that the condition of the south is not merely one of unexampled depression, but of great and all-pervaling distress. In my own state, the unmappy change when has within a tew years hast taken place in the public prosperity, is of the most appalling character. If we look at the present condition of our cities, (and I will take Charleston by way of example), we find every where the mournful evidence of pryma-Sir, the crumbling memorials of our former wealth and happiness, too eloquently teach us, that, er weatti and inspiritess, too conjugatly teach us, that, without some change in your policy, the lays of our prosperity "are numbered," Sir, it is within my own experience, that, in the devoted city in which my lot has been east, a thriving foreign commerce was, within a few years past, carried on direct to Europe. We had a new years past, carried on direct to Europe. We had native merchants, with large capitals, engaged in the foreign trade. We had thirty or lorly ships, many of them built, and all owned in Charleston, and giving employment to a numerous and valuable body of mechanes and tradesmen. Look at the state of things now Our merchants bankrupt or driven away-their capital sunk or transferred to other pursuits—our shipyards broken up—our ships all sold!—yes, sir, I am told the very last of them was, a few months ago, brought to the hammer-our mechanics in depair; the very grass growing in our streets, and houses falling into ruins; real estate reduced to one third part of its value, and rents almost to nothing. The commerce, which we are still suffered to enjoy, diverted from its proper channels, estried on with borrowed espital, and through agents sent among us, and maintained by the tariff poliey, bearing off their profits to more towored lands, ing out our substance, and leaving to our own people the miserable crumbs which fall from the table of their prosperity. If we fly from the city to the country, what do we there behold? Fields abandoned; the hospitable mansions of our fathers deterted; agriculture drooping; our slaves, I ke their masters, working harder, and faring worse; the planter strating, with unavailing efforts, to avert the ruin which is before him. It has often been my lot, sir, to see the once thriving planter reduced to despair; oursing his hard fate, gathering up the small remnants of his broken fortune—and, with his wife and his little ones, tearing himself from the scenes of his childhood, and the bones of his ancestors, to seek, in the wilderness, that reward for his industry, of which your fatal policy has deprived him.

Bir, when we look at our fertile fields, and consider the genul climate with which God has blessed the south -when we contemplate the rare felicity of our nosition. as the producers of an article, which, under a system of free trade, would command the markets of the world-is it not enough to fill our hearts almost to bursting to find the richest blessings that an indulgent Providence ever showered down upon the heads of any people, torn from us by the cruel policy of our own government—to man. Sir, I will not deny that there are other causes besides the tariff, which have contributed to produce the evils which I have depicted. Trade can, to some excotton may be raised more profitably in Alabama; but, these advantages would not have broken up the commerce or depressed the agriculture of South Carolina. while an unrestricted intercourse with foreign nations, enabled us to realize the most moderate profits! Men do not quit their accustomed employments, or the homes fathers, for any small addition to their profits. It is only when restriction has reached a point which leaves the door still open to one, while it closes it against the other, that this result is produced, and, therefore it is, that a rapid transfer of expital and population is now added to the other evils with which the old states are afflicted.

In this sondition of the country, where is there to be found a fulfilment of the promises held out to the south in 1824? We were then told that we had mistaken the

has bestowed upon us. Sir, we have heard of men true character of this system. We were entreated only imposed on foreign articles would be but temporary that the manufactures would want protection but for short time-only to give them a start-and that they would soon be able to stand slone. We were to have had a double market for our cotton—high prices, reviv-ing commerce, and renewed prosperity. Sir, after the experience of four years, the tariff of '28 came up for consideration, by which the protecting system was to be further extended and enlarged. And what was found to have been the result of tour years' experience at the outh? Not a hope fulfilled, not one promise performed

-and our condition infinitely worse than it had been
four years before. Sir, the whole south rose up as one man, and protested against any further experiment with man, and protested against any intriner experiment was this fails system. The whole of the representatives of seven states, Virginia, North Carolina, South Carolina, Gongia, Al-Dahma, Mississippi, and Tennessee, with, I believe, but three dissenting voices), recorded their voices, against that bill. Sir, do not gentlemen find in this fact, some evidence of the dangerous character of that legislation on which this system is based. Can it be wise-can it be just-can it be pruilent-to adopt and enforce a pulicy so essentially sectional in its ch racter? Can we hope for harmony, peace, and concord, while enforcing a system against which an entire section of your country so strongly revolus? - It is the essential principle of the representative system, that a mutual sympathy of leeling and of interest, should bind together the people and their rulers; and it may be worthy of prolound reflection how far that principle is essential by preserved by a scheme of legislation, under which the feelings and interests of so large a portion of the country are outraged and trampled on. When taxes are imposed, not by the representatives of those who are to bear the burthens, but of those who are to receive the bounty.

Now, sir, let us turn our attention to the NORTH. And here I cannot speak from my own knowledge, but I am free to confess, that if we are to credit the accounts we have heard, the rich fruits of the system have been sest nave iter(d, itter item runts of the system nave ocen scale tered in this quarter with a profuse hand. We are told that manufacturing catablishments have sprung up eve-ry where as if by enchantment. Thriving towns and beautiful villeges over the whole face of the land. Mul-lions of capital have been withdrawn from other pur-lions of capital have been withdrawn from other pursuits and invested in manufactures. Joint stock com-panies are receiving enormous dividends; and the people, (at least in the neighborhood of the establishments built up and sustained by the system) are rejoicing in a prosperity unexampled in the history of the world. But sir, in the midst of this universal joy, we hear oc-casionally the voice of lamentation and complaint— There are those north of the Potomac, wise and ex-perienced, and patriotic men, well acquainted too with the actual condition of things, who tell us that this apone securities condition of things, who tell us that this apparent prosperity is in a great measure delusive; that the system has operated in building up a favored class at the expense of the rest of the community. That it has, in lact, made the "rich risher, and the poor poorer." I have before me several statements, all going to prove these assertions, as to several of the most flourishing manufacturing establishments of the north. I will trouble the sensite with but one of them and that I will trouble the senate with but one of them, and that merely by way of illustration. The article is from the pen of one of the ablest political economists in the union. one who has laid his country under a lasting debt of grat tude.

Mr. Hayne here read a statement from the Banner int. Hayne here read a statement from the Danner of the Constitution, proving that a flourishing cotton manufactory at the Falls village, in New Hampshire, was, from their own showing, maintained by a tax on the community; exceeding the entire profits of the esta-blishment, by \$101,000 per annum; and that, if a purse was made up, and every operative man, woman, and child paid \$100 per annum, for standing title or turning grandstones, the public would be gainers by \$101,000

annualty.]
It will be seen, therefore, that, with regard to some, at least, of our most flourishing manulacturing extensions at least, of our most flourishing manulacturing extensions, and the post-source of the post-sourc

in which the south participates in the bounty; here is a | Sir, what will it profit you, if you gain the whole world, home market found for three thousand bales of Carolina cotton." Sir I seize the opportunity to dispel torever the delusion, that the south can derive any compensation in a home market for the injurious operations of the protecting system. The ease before its affords a strik-ing illustration of this truth. The value of the raw material is about one-fourth part of the manufactured artiele. Now if the cotton goods manufactured at the Falls willage, were imported from Engiani inates of being marie in New Hampshire, we should find a market for twelve thousand bales if our cotton instead of trees so that instead of gaining a market for three thousand bales of cotton, we have just a market of nine thousand bates of cotton, we have not a market or more thousand. The home market for our cotton is not a new, or additional, but a substituted market. If the trade were free, the goods manufactured in this country would be imported from England, and paid for mour cottons but in cutting off the imports, you, of course, to the same extent, diminish our exports. Now suppose, to make this matter too plain for cavil or dispute; that we exported to Great Braitain one hundred thousand bales of cotton, worth, (at thirty Hollars a bale) three millions of dollars, and that we received in exchange three millions of dollars worth of British cotton goods. three millions of itollars worth of British cotton goods. How much of our cotton would it take to manufacture these goods? Why, just twenty-five thousand bales, while the remaining seventy-five thousand would be disposed of on the consinent. But suppose the importation of these goods prohibited, in order that they should be made at home, what portion of this cotton would find a home market? Only twenty-five thousand bales, and the remaining seventy-five thousand nut be left upon our hands. Thus, it will be seen, that the effect of our instituting a home market in the piace of a foreign market for our cotton, would be to also left upon our five or cotton, would be to also left upon our hands. foreign market for our cotton, would be to deprive us corego market for our cotton, would be to deprive us entirely of a market for three-fourths of our productions. This result is inevitable, unless the domestic manufacturer can enter into competition with the British in foreign markets, an idea sitogether too extrausgant to be worthy of serious notice; for surely, if any thing can be considered acrtain, we may safely assume that articles which cannot be manufactured at home without a protecting fluty of from fifty to one hundred per cent., cannot enter into competition with foreign manufactures in the markets of the world, where they will, of course, have no protection whatever. But to return to the condition of the north under the protecting policy. If the rich fruits of the system in that ing poley. If the rich fruits of the system in that quarter were greater even than they are alleged to be, I should still think that they have been purchased at too dear a rais. It has even there depressed our commerce, disturbed all the relations of society, and had a tenden-ey to produce that inequality of fortunes, which may, one day or other, be stall to the liberties of this coun-

Surveying with the feelings of an American the actual condition of things, I should certainly be disposed to exchange all the blessings which the protecting system has produced, even in New England, for those which it has pronuccu, even in New England, for those which it has destroyed. In the place of the splendid villages, flour-ing manufactories, joint-stock companies, and lordly proprietors, clothed in fine lines, and laring simptu-ously every day, as a patriot, I should be disposed to asy, give me back the ships which have been distroyed say, give me back the ships which have been nestroyed the merchants which have been reduced to bankruptey, the sailors that have been forced into foreign service, the injundered ploughmen and beggard yeomanry; who have been driven from the pursuits of their choice into the gloomy walls of a manufactory; give me back these; and above all, give me back content-restore the e and harmony which this system has destroyed, and peace and harmony which this system has destroyed, and I will consent that every manufacturing establishment shall be razed to its foundation, which has been built up, and can only be sustained, by this secursed system. Sir. if wealth were the highest good of a nation, and pecuni-ary profit the only standard by which a wise policy could ary profit the only standard by which a wise policy could be measured, it would even then be more than question-able, how far this system could be justified. But there are higher and more sacred principles involved in this question, which cannot be safely disregarded; there are considerations of justice, and political equality, which rise far above all calculations of mere profit and loss.

and lose the hearts of your people? This is a confederated government, founded on a spirit of mutual conciliation, concession, and compromise, and it is notifier a just, prident, nor rightful exercise of the high trust with which you are invested for the common good, to with which you are invested for the common grou, to resort to a system of legislation by which benefits and burthens are interposity distributed. See, can any gen-tleman look this subject fairly in the face, and not perceive that such a government as ours (instituted for a few definite purposes, in which every portion of the union must, from the very nature of things, have a common interest) cannot form ande from their high duties, and undertake to control the domestic industry of indi-viduals, without undermining the very foundations of our republican system. It is contrary to the whole genius and character of our institutions; the very form and structure of our government, that it should undertake country. A perseverance in this course will sow the seeds of dissention broadcast throughout the land, and let it be remembered, that discord is not a plant of slow growth, but one that flourishes in every soil, and never growth, but one that nonrisines in every and, and never hals to produce its fruit in the season. What a specta-cle do you even now exhibit to the world? A large pur-tion of your fellow eitigens believing themselves to be grievously oppressed by an unwise and unconstitutional grevously oppressed by an unwise and uncunstitutional yystem, are clamoring at your doors be justice, while snother eclamoring at your doors be justice, while snother portion, supposing that they are enjoying rich bounties under it, are treating their complaints with scorn and contempt. God only know where all this is soon and contempt. God only know where all this is to end. But it will not, and it cannot, come to good. We at the south still call you our brethern, and have ever cherished towards you the strongest feelings of af-lection; but were you the brithers of our blood, for whom we would coin our hearts, it is not in human nature that we should long continue to retain for you undiminished affection, when all hope of redress shall have passed away, and we shall continue to believe that you are visiting us with a hard and cruel oppression, and en-

oreing a cold, heartless, and selfish policy.

I shall now proceed, Mr. President, to examine the character of the protecting system. And here, I shall assume, that the protection it extends to the American manufactures is something substantial, and affords some advantage, be it more or less, to the protected interests. I shall take it for granted, that it is intended to enable the American manufacturers to enter into that successful competition with the foreign, which they could not do without such protection; that the effect of the ayatem is to enable the American manufacturer to obmore for his goods than he could otherwise command. In a word, that it affords substantial projection, and is not like that extended to cotton-a mere name. Por on this latter nont, let it be remembered, that the first ection produced in this country found a market abroad; and that, even now, nearly the whole of it is disposed in in Europe, where it maintains a successful competi-tion against all the world. It is idle, therefore, to talk tion against all the world. It is safe, twerefore, to talk of the benefit of a protecting fluty to cotton a home, It is beyond all dispute, sir, that, if any duty be necessary to protection, it can only be, because it enables the manufacturer to sell his goods for more than he could otherwise obtain for them. Now, in this view of the subject, let us see how the question will stand. How must such a system operate, FIRST, on the different interests, and seconner, on the different sections of the country? We will assume, that a particular manufacture cannot be produced in the country, within fifty per cent. as cheaply at home, as the same article could obtained from alroad, and that a duty which, with charges, should be equal to about fity per cent, was absolutely necessary to introduce and to sustain it. Such a fluty must operate as a fux on every other class in the community, for the benefit of the manufacturer; and supposing it to be imposed, not for revenue, but for protection, would be a double tax. Suppose the value of the imported article to be a million of dollars, the duty would be half a million; and if the protection amounted to an equal sum, here would be a tax of a million of dollars imposed upon the whole people, to secure a bounty of half a million to one portion of them. But it is said the bounty is not confined to the manufacture

ers-that other classes participate. I admit that there | But if the profits should be thus ultimately equalized is a circle embraced within the range of the monutace in a perticular community, yet if the layored pursuat turing influence, that particle of the hemelits of the sys was only rendered profitable by the protection extend-Farmers, in the neighborhood, who supply the operatives with food-mechanics, who construct the huddings and machinery-elergymen, physicions, lawyers, and others, who make up a manufacturing village, all come in for a share of the gains, and constitute, in fact, the protected class, which enjoy the benefits of the but all other classes in the community most obviously be laid under contribution, to make that a profitable, which would otherwise be an improfitable nursuit, and, in the case assumed, would be taxed to the amount of one million of dollars, to secure to the favored class a bounty of half a nullion. Now suppose, sir, such a system as this to be extended to all the cottons, woollens, iron and sugar, made in any country, and we will take that country, to be the United States We will suppose, further, that cottons could not be profitably manufactured without a protecting duty of from twenty-five to an hundred per cent.—woollens from forty-five to two hundred per cent,-iron from one hundied to two hundred per cent.—sugar from one hundred to one hundred and fitty per cent.; and that these duties were accordingly imposed on these several articles, (annualing in the whole to the sum of mine millions of dollars annually); that, in consequence of these duties, the protection on all the cottons manufactured in the country was equal to three cents a yard. and amounted to six millions of dollars per sunum woollens to eight mallions—iron to one million—and sugar a million and a half—producing, as the result of the whole system, a tax of nuce millions on the foreign article to secure a bounty of system millions and a half to the home manufacturers. I have supposed protec-tion to be the exclusive object of this system, and it then clearly follows, that all other classes would be taxed twenty-five millions of dollars per sunum, in order to secure to the lavored class a protection of sixteen millions.—The government would, indeed, receive its pine millions; but it would be an aggravation of the evils of the system, that this amount should be levied when it was not wanted, in order to secure the protected classes in their monopoly. The rates of duties which I have here assumed, are those now actually im-The rates of duries posed on the protected articles: (and which it is proposed to retain as essential to protection), and the amount of the protection enjoyed by the manufacturers is stated at the very lowest that has ever been estimated by any person who has undertaken to examine this sub-ject. If you suppose half of the duty here stated to be necessary for revenue—this would not dominish the weight of the burden, though it would lessen to that extent the injustice of the tax, - and let gentlemen make what deductions they please, either from the duty imposed or the bounty received; and it will make no in-ference whatever in the principle. Whether it be one pollion or twenty, just so far as the system is protective in its character, and imposes any tax open the toreign price, and affords any protection whatever to the do-mestic, is the system a tax maposed upon the other classes to render profitable the addustry of the manufacturers. And when this tax amounts, as it moquestionably does in the case before us, at the very lowest estimate, to twenty or thirty millions a year, it becomes a scheme of monstrous injustice and oppression - Now let us trace this system one step larther. Suppose such a system applied to a country of a homogeneous such a system applied to a country of a homogeneous character, with the same expectly for manufacturing every where, and that manufacturing establishments should consequently be equally diffused through every section. The benefits and the burthers of the system would, in such a case, bill equally upon every portion of the country, though not upon the different interests of the state. It has been said that if the profits of reandfactures were raised by such a system, above the average of the profits of the whole community, that the lanot and eaplier asserted in other pursuits would now into the new employment; and that the whole would altimately be equalized. Admit that in process of time, this might be the result; yet it could not take place at once, because men cannot transfer at pleasure their lapor and capital from their customed pursuits to others.

ed to it -it is clear that the scheme would result in an aggregate loss to the whole community-equal to the full aggregate toss to the whole community—equal to the ball smooth of the bounty. I have assumed the case of an unprofitable pursuit being rendered profitable by the protecting system—for to any other case the system is wholly inapplicable. If the domestic manufacturer can make his goods as cheaply and supply the domestic market on as favorable terms as they could be obtained from abroad, then it is clear that no protection whatever would be necessary. It may be that in the very infancy of a manufacture, on its first introduction in country, a small protection for a short time might hassuch protection could have no other effect than to delay its introduction for a lew years—for the existence in any country, of unemployed capital, and individual sagnetty country, of themproyed expense, and enterty, would and enterprise, sufficient to direct it prudently, would soon lead to the introduction of every branch of manufactures, for which such country was really prepared .-But this stage of inlaney once passed, it is preposterous to talk of the necessity of protecting any article that tained from abroad -and to assert, that to reduce such protection to twenty or thirty per cent., would be rumons to any manufacture, is to admit at once, that such article cannot be profitably made at home, and consequently that it can only be sustained at the expense of the other interests in the community. Now sir, let us suppose another case, and it is unluppily the very case which now exists in the U. States. We will summore which now exists in the U. States. We will suppose an extensive country, of which one portion is exclusurely agricultural, and incapable of changing its pur-suits, and that the other portion embraces within its sints, and that the other portion empraces want in limits, all the manulactures and manulacturing capoci-ties of the whole country. The bounty would then be exclusively enjoyed by one section, and the other would share only in the hurthens of the system. To make the inequality still greater, it is only necessary to supnose that the agricultural section is not only incapable of manufacturing at home, but is prevented by insuperable obstacles, from enigrating or removing their pro-perty to the manufacturing region—that their milustry can only be profusely employed in exchanging their agricultural productions, for the very foreign articles which enter into competition with the domestic manufactures, and which are heavdy taxed for the protection of the latter, -that the effect of such tax is not only to interrupt the intercourse and impair the profits of their industry, but that the agricultural section is thereby exposed to the imminent hazard of having the market for their productions entirely cut off, and finally, To CAP THE CLIMAX OF THIS INJUSTICE AND OPPRESSION, that the taxes levied on the foreign arrieles, are ix pended almost exclusively in the favored region, and you then have, Mr. President, the whole case of the south spread open before you. Their pursuits are slsouth spread open beture you. Their pursuits are stogether agricultural—they cannot change them—they cannot transfer their labor and capital to the favored region-they cannot find a market for their productions, except by exchanging them for the very foreign manufactures which are taxed almost to probibition, and the taxes thus resised are expended in other sections. Is there a man in this assembly who can lay los band upon his leart, and say that it is a just and equal sy-tem? It may be said, however, that all this is merely the result of our peculiar condition, and the nature of our pursuits. It is not so, sir. All we sik, is to be LET ALCNE. Leave us to the free enjoyment of the bonn les of heaven, and the advant ges of our situation, and we ask no more. But where is the justice and equality of a system of legislation which is to make profitable the industry of others by the destruction of our own? And by what right is it that we are to be made victims to the prosperity of others? I will here borrow an illustration, to make this matter plain. southern states supply themselves with woollens, cotton, and fron, by raising cotton, rice, and tobacco. Now, suppose we should exchange a bale of cotton for a bale of coarse woollens, for the use of our slaves, containing, we will say, a hundred pieces. This bale of cloth

manufactured it, not with the spindle and the loom, but with the plough and the hoe. Now, air, we will sup-pose that a northern manufacturer has by the application of an equal amount of labor and capital, produced a similar bale of woollens, of precisely the same quality and value. In what respect is the manufacturer entitled to be regarded with more layor than the planter? Does the freight which we may have paid to the ship owner, and the employment given to navigation, entitle us to less tavor in the eyes of the government. Are the plough and the hoe tess lavored instruments of production than the spindle and the loom! Perfect equality, sin, would seem to require that we should stand, at least, on the same footing, and that, whether these woollens were wanted for consumption, or for sale, woollens were wanted for consumption, or for sale, they should be subjected to exactly the same tax.—But how are we treated by a just and paternal government, who caretts, we are told, equally for all her children? Our bale of woollens is stopped at the custom-house, and forty pieces are taken out, as a tax to the government, whereby our stock is reduced to sixty pieces, while the bale of the manufacturer is free from all tax-If these articles are wanted for our own consumption, we can consume but sixty pieces; while the manufacturer retains his hundred pieces. If the goods we want do r sale, we have but sixty pieces to be con-verted into muney, or to be exchanged for other com-modities; while the manufacturer has his hundred pieces for the same purposes; and if we should happen to reet at the same market, as the two articles must sell at the same price, being of the same quality, the manufacturer will, of course, realize lurty per cent. more than the planter. Now, sir, what are we to do in this dilemma! How are we to escape this unequal hurden! The senator from Kentucky (Mr. Cluy) on a former occasion taxed his ingenisty to provide us the means of re-cape; and I must pressure, that if his ingenisty haled, the case is altogether without hope. There are four the case is attogener winder nope. I here are low ways, said the senstor, by which the couth may avoid the tax. First, "by abstaining from the purchase of the foreign articles." But, sir, we cannot do without them; and this traite, moreover, lumishes the only market for our productions. To adopt this alternative, would be to seal our rum. Secondly, and the gentleman, "em-ploy the rival American fabric." But, sie, if the manufacturer would take our cotton in exchange for his productions, (which he eannot do, except to a very limited extent), we should pay as heavy a tax in the price of the domestic, as in the duty on the toreign labric; fur no one will pretend, that if the quality be the same, there would be any difference of price in the American mar-ket. Thirdly, "manufacture for ourselves" Sir, we cannot manufacture. Except as in a few coarse articles, slave labor is utterly incapable of being applied to such an object. Slaves are ton improvalent, ton incapable of an object. Survey as to improve the continuous mapping to that minute, constant, deficate attention, and that persevering industry, which is east to the success of manufacturing establishments. It was but the other day that some of our New England brethreng of it into their heads that they uniterstand our institutions better then we did uurselves, and undertook to create a spienand manufacturing establishment in the district represented by my distinguished and valued friend, (Mr. McDuffe.) It was accordingly put into operation, but had gone on but a short time, when one of the slaves was tempted to make free with the goods, and, to present detection, turnt up the whole establishment. It might be supposed, sir, that the people of South Caralina would not have been melmed to punish such an oftence with great severity; and it the culprit had escaped, I presume we should not soon have heard the end of it, Not so, s.r, however. We have a law which punishes arson, whether committed by a black, or a white man, with death.—The offender was brought to this, and being convicted on the electest proof, suffered the penalty of the law. And, sir, to shuw how little justice is sometimes meted out to the south, I will state the fact, that times mered out to the todal, I will state the race, that same I arrived here. I have seen an account of this demonstrates, I think till me replainly, the inequality of transaction in print, headed, with large capitals, "CRU-the system. I allude to its effect upon the people of the ELTY TO SLAVES," and representing that a poor amount of the property of the propert

is ours. It is the fruit of our own labor, of American prolins, for burning down a building by accident. I capital, and home industry. We may be said to have blink, ar, the gentleman will now himself admit, that, to embrace this proposition, would only be, to use an uld adage, "jumping out of the Irying pan into the fire." The last remedy suggested by the gentleman, is, that we should "supply ourselves with household manufacdon our agricultural pursuits, and involve the whole southern country in desulation and ruin? Are we to be driven from the pursuits of our choice, in order to promote the industry of the manufacturers?
The case which I have stated, of the bale of woollens,

illustrates the unequal operation of this system upon the agricultural industry of the south, and the manufacthe agricultural industry of the south, and the mannature turing industry of the north. What is true of a single bale, is true of the whole amount all foreign importations which are taxed for the protection of the domestic manufacture-true of the eight millions of imports received in exchange for the productions of South Carolina and of the lorty millions received in exchange for the productions of the plantation states, or at least of so much thereof as embrace the protected articles. Our northern briends say, however, that part of our cotton and tice belongs to them. Be it so. Whatever remains to us, and is rightfully ours, is subjected to the unequal system which I have above described. Sir, it is put beyond all dispute, that the agricultural industry of the south is taxed, unequally, unjustly, enormously taxed in its foreign exchanges, in order to render profitable the manufacturing industry of the north. Taxed, I will not say to what extent—but precisely to the amount of the duty imposed for protection, and the price aided to the domestic article, whatever these may be. It is said, sir, that the consumer pays the tax, and that the tariff states pay their full portion of the tax on their consumption. Sir, I think this may be well doubted—our habita are different. A South Carolina farmer, whose crop is worth a thousand dullars, sends, perhaps, the whole of it to market, and exchanges it for loveign productions, paying, it may be, a duty of filty per cent. His tax would be five hundred dollars, a northern or western farmer raising produce to the value of a thousand dollars, will consume nine hundred of it on his larm, and ters, will consume one monured of it in his harm, and exchange but a hundred for foreign articles, and be sub-jected to a duty of only fifty dollars. This difference of habits between the different parts of the country, is or many between the unification pursues the country, in greater than would be supposed possible. I have known a wealily planter in the neighborhood of Charleston, that did not raise a single article that was not sent to lurelgn maskets, and who purchased every thing that was consumed by kinned for his slaves. Its cloth from England, his wines from France, his horses, mules and hogs, from the west-his corn from Maryland-wooden ware, putatoes, and other notions, from New England; and I assure our New England Irrends, that although we do not relish all of their notions, there are some that we prize very highly. But, see, if the consumer did, in every case, jusy the whole amount of the tax, and the consumption was in exact proportion to population, could gentlemen even then but in see the wide difference in the operation of the protecting system on the two sections, when they consider that the tariff states are remunerated, and more than remunerated, for any tax reminerated, and more than remunerated, for any tax which they may pay, in the bounties they receive, while we receive to remineration whatevir. If this be doubted, I will apply a test, which, I think, cannot possibly decrive us. Do our New England by three not uniterast. Do your think, sir, that they would be very spit to, fall in luve with taxation and court the impositions of burthens? How comes it, then, that they have been taught to believe that "taxation is that they have been taught to believe max "uxauon mon tyranny," but on the contrary, the greatest of earth-ly blessange? Why is it, that they would regard as the heaviest of calamities, the reduction of the public burthens? Is it nut clear, then, that they regard the duties as a bounty to their industry, and that they know that they have the power to indemnify themselves for all that they pay in duties.

But, sir, there is another view of this matter which

who have undertaken to prove that we suffer from this system chiefly in our character as producers. To no mind, it is morally certain that the people of the south either as producers or consumers, support a hurthen nearly, if not entirely, equal to the whole amount of the The precise manner tax levied on their importations. in which this operates, is a problem not so easy of solution. I will collenvor to explain, however, very brief-

ly, my conception of the process.

We will suppose a perfectly free trade to be carried on between the southern states and Great Britain—that is to say, that the articles on both sales are admitted duty free, In this state of things, a progressive fax equal to five per cent, per annum, is imposed on British manufactores for the protection of our own. The first didy of five per cent, would, doubtless, be sided to the price. Before this progressive duty had advanced many steps, herever this progressive out in an animal man in equa-however, the period would strive when no additional charge could be austained by the consumer without a reduction of his consumption. The next five per cent, then imposed, would have to be austained by the merchant, or the foreign manufacturer, or the producer of the cotton, and would most probably be divided among them. In this manner, as the system progressed, the profits of the merchant would be reduced to the lowest scales those of the manufacturer would also be brought down, and the southern producer would, in his turn, compelled to submit to a reduction in the price of his productions. Each successive step in the further progress of the system would sink lower and lower the price of his cotton, until it was reduced to the very lowest sum that would pay the expense of its production. The very next step must, of course, annitolate the trade by reinlering it unprofitable to all concerned. Sir, there may be a difference of opinion as to the point to which have now arrived in the progress of this system; (for let it be remembered that the system is still progressing ). but to my nimil it is clear that we have long since passes the point at which any turther reduction of profits could possibly be extorted from the merchant or the manufacturer; and that every successive increase of the tax, for years past, has fallen almost exclusively upon the producer.

The proof of this is to be found in the fact that cotton has, within a lew years, been gradually falling, until it has lost more than two-thirds at its value, and now barely pays the expense of its production, bringing down with it the wages of our agricultural labor and capital to the very lowest point. Some gentlemen insist that the southern producer now bears nearly the whole of the tax; while the gentlemen on the other side contend that it is a maxim universally true that the Consumer pays the tax." I am included to think that the truth has in the middle. I can certainly conceive a state of things in which the producer would, as such, pay nearly the whole of the tax; but, except the tax is a very moder te one, or is imposed upon the absolute necessaries of life, it is impossible that the whole of the weight could be thrown upon the consumer. No one, surely would contend that if any community were in the habit of consuming filty militions of foreign goods, imported duty free, they could afford to consume any thing like the same amount under a duty of 50 per cent., if the whole duty were added to the price. But whether the tax he in general paid by the producer or the consumer, or he divided between them, to my mind it is clear, that in the actual condition of things, the burden falls most unjustly and anequally on the southern states. I will illustrate this. We will assume that South Carolina sunually exchanges eight millions of dollars' worth of cotton and rice for eight millions of dollars worth of cotton and rice for foreign goods, paying a duty of filty per cent. equal to four millions of dollars. Now, suppose the consumer to pay the whole tax, how would the account stand? Assume that no more than one half of our importations are consumed at home, say \$4,000,000

The tax, at 50 per cent. would be 2,000,000 Suppose two millions exchanged with our upppose the intrion of actioning with our morthern brethren for protected articles, the increased price of which would be equal to the duty, this would be

1,000,000

Making

The remaining two miltions being exchanged for unprotected articles, a tax of one million would be paid on the consumption by our southern and western brethren-From this state of the case it would follow, that, if the consumer pays the whole tax, we would pay as consu-mers three mittions out of these four imposed upon the foreign articles received in exchange for our productions, though we should consume only half of them. But if we take it for granted that the tax cannot be added to the price, we would of course get back no part of the duties poil at the custom lunge; and in that case we should bear the whole burthen. It has been said that the duties on imported articles tall chiefly on the merchants and the foreign manufacturer, but I hold this to be impossible, for surely two or three per cent. is the utmost reduction that can be made from the profits of the mercloud, and not much more could be taken off from those of the manufacturer. Indeed, how could it be expected that the American demand for Bruish manufactures would materially effect their price, when not more, probably, than a twentieth part of the whole finds a market usory, man a (weathern part of the whole fields a market in this country? It is on the American producer, therefore, that this tax must chiefly fall. Sir, the duties upon imposts are either paid by the consumer or they are not. It they are paid by him, I have shown that the far greater purson of the duties on the goods received in exchange for our cotton falls upon the planter, and that for this he receives an renuneration whatever. If the duties are not paul by the consumer—that is to say, if they are not added to the price—then it is manilest, that the whole amount of duties falls upon us without the possibility of relieving ourselves from any part of the burden. As to the popular notion that all consumers must pay equally, I will ask any gentleman to tell me how it is with those who consume the tax? Here is a tax of sixteen nullions imposed directly or indirectly upon southern production. Fourteen millions of this amount are transferred to the north, and there consumed. Are the consumers of these fourteeen millions taxed on their consumption paid as highly as those who have the whole amount?

Sir, I have done with this branch of the subject. Great as are the present evils of the system to the south, there are greater still - in prospect. We are seriously threat-ened with the entire loss of the loreign markets for our productions. All trade is but an exchange of equiva-lents, and is founded on the maxim of "give and take." It you exclude British goods from our market, you, in effect, exclude our cotton from their markets. vam to tell us that England must have our cotton. may lorce her to do without it. Even now she supplies hersell, to a great extent, from other countries; from her East Initing processions, Egypt, Brazil and chewhere; and you will make it her interest, in the end, to give up the American trade entirety. Even now she is looking to this as a possible event. You find her encouraging the production of cotton in the East Inities, by a discriminaling duty to which you have forced her, and stimulating the production of the article in South America, where she is furnished with a market for her manufactures, almost duty free. Can we then, he blind to the fate that awaits us when the American System shall be consum-mated, and we shall be cut off from a market for seven hundred thousand bales of our cotton; an event that is hardly necessary for me to say would involve the whole south in irretrievable ruin. It is idle for gentlemen to pretend that the north can ever furnish a home market for all the cotton of the south. Two or three hundred thousand bales is the utmust extent to which we could find a market in that quarter. The eatalogue of the evils of this system, however, is not yet completed. It is not merely the muchicf it has done, and the still greater evils which it threatens, but it has arrested our march to greatness, and prevented us from fulfilling our high destines. What would have been the condition of this country now, if we had never been deprived of the blessings of free traile? Why is it that our tonnege and our exports have not grown with our growth, and strengthout exports nave not grown a win oir grown, natu strength-entel with our strength? It is because our prosperty has been blasted by the restrictive system. Lock, sr, at this picture. In 1810, with a population of seven millions, we had a tonnage of one million four bundred tlousand. In 1831, with a population of thriteen millious,

our tonnage is reduced to one million two hundred thousand; and, going still further back, in the year that reduction in the protected articles has not been so 1800, our exports some millions, under great as in the others. But the reduction has not been now, with a population of thirteen millions, our exports are reduced to severity-two millions.

Thus, while our population has increased nearly threefold, our foreign commerce has not advanced at all. Su, if Washington's free trade system had continued unto this day, (for be it remembered that Alexander Hamilton's protecting system was essentially a system of free trade, imposing fluties only of from five to seven and a half per cent.) can it be sloubted that we should now have had a tonnage of two millions and a half, and that our exports would have amounted to one hundred and fifty millions. I am told that one of the ablest financiers in this country has recently declared that he should consider an average duty of twelve or filteen per cent. ad valorem, as abundantly sufficient for all the purposes of revenue; and that, under such a system, our imports and exports would, in his opinion, exceed a hundred millions of dollars the very first year. I knew, Mr. President, that it has sometimes been said that the evils under which the south is suffering arise true the ever-production of cotton; but this is not so. Cotton is an arriele, the production of which cannot be overdone. It is the cheapest of all known raw materials. It is last superseding sitk. wool, hemp and flax, all over the world. As a proof of this, I will advert to the last, that, during a period, in England, when her woollen manufactures silvanced from rangiann, when her wonten manufactures alreaded from five millions of pounds sterling to six, the cotton manu-factures progressed from one million to more than thirty. If you would take on your duties, and throw open to us the markets of the world, American cottons would, to a great extent, supersede all others, and we should find a market, not for one, but two millions of bales. The whole south would then, indeed, become a "garden spot," But it is insisted by the supporters of the proteeting system, that its only effect is to make our goods come cheaper. Sir, if this were true, I will venture to assert, that the manufacturers themselves would be the assert, that the manufacturers themselves would be the wery first to abandon the system. Their object, certain-ly, is not to lessen, but to increase their prices. Even this were the case, however, I am unable to discover how the cotton planter could be compensated for the loss of his market. How is this supposed reduction to be brought about? By competition, say the gentlemen, between the British and the American manufacturer.
But if it is competition that is to produce this reduction of prices, the manufacturer, on both sides, must be put on an equal footing. What sort of competition is that which is founded on a discrimination of fitty per cent, in favor of one of the parties—and if, in spite of such a dis-erimination, the contest can be maintained at all, is it not, erimination, the contest can be maintained at all, bit tond, by that fast, put beyond dispute, that but for the tax, the prices would be still further reduced? Gentlemen take if for granted that the competition among the foreign manufacturers is not sufficiently great to reduce the price to the very lowest rate. They even tell us of combinations among them to keep up their prices. Sir, such combinations are utterly impossible. How are the manufacturers of iron, in Sweden, Russia and England, or the cotton and silk manufacturers of France, to enter into a combination? The thing is radiculous. No, sir, the distribution of the price of t if the duties were taken off, the prices of goods would be reduced to their minimum, and much lower than they are now in this country, and it is for this reason, and this only, that the manufacturers are protesting against it. But, s.r., where is the evidence to be found that the tariff has produced any reduction whatever, in the price of the protected articles. Is there any other foundation for the assertion than this: that the prices of cottons, woollens and iron, have actually fullen since But all other articles have likewise follen, protested and unprotected. Real and personal estate, cot-ton, flour and tobacco, all—all have gone down; and most of them have fallen in a much greater degree than woolens, cottons and iron. Has the tariff ilone all this?
What say the gentlemen? I have here a price current containing the prices of 250 articles, in 1816 and 1831. From this it appears that there has been an universal redusting in the price of articles of every description, and that those admitted duty free have been reduced, at least, in an equal ratio with those paying duties. Indeed, sir,

great as in the others. But the reduction has not been confined to this country. It has taken place in England, and all over the world, in an equal, may, in a greater de-gree. The very articles most highly protected in this country, cottons, woollens and iron, are now selling in England much lower than they can be obtained here. This is a fact perfectly notorious to every importing overchant, and I have abundant evidence of it now in my hands. Here are statements shewing that such goods have actually been imported within the last year, in Philadelphia, New York and elsewhere, and after paying duties of from 50 to an 100 per cent, have been said as low as the domestic manufacture. Sir, I ascertained, before I left home, that the whole quantity of cotton goods imported into Charleston during the last year paid an average duty of filty per cent, and then they were sold as low as American cottons of the same quality. But I low as American cottons of the same quantity. But I am really ashumed to argue a question so self-evident. How can taxes possibly lessen prices? How can protection aliminath the cost of production. What are the elements of price? Are they not the cost of the raw material—the wages of the flow—and the interest of capitaly and how can these be leasted by a loss on the article? I'm say so, is to reverse all the rules of proportion. themen might as well contend that two added to five make three, as that fifty per cent, added to the cost of an imported article, lessens its price. It gentlemen can bebest this, they may believe any thing. But the truth is, Mr. President, this whole matter of the reduction in the price of goods is very easily explained. It depends the price of goods is very cassif capitalien. It depends on general causes, which have operated to a certain ex-tent all over the world. From a thurough investigation of the subject, which has taken place in Great Britain, it is lound to have resulted from the appreciation of the currency, improvements in machinery, and the general restoration of peace. The resumption of specie pay-ments, and the dominished supply of the precious metals, is calculated to have lessened the circulating medium to the amount of upwards of £500,000 000. this single cause has been, within the last ten years, the reduction of prices in that country to the amount of thirty-five per cent, to which filteen per cent, may be adiled for the other causes above mentioned-making in the whole a reduction of almost fifty per cent, in the money price of all articles. The same thing has taken place in this country, and, therefore, when gentlemen allege that the price of manufactures has tallen, the naked fact proves nothing, unless they can show that they have fallen in a greater degree than other articles in this country, and similar articles abroad. But this is so far from being the fact, that the truth is, that the protected articles have fallen less in proportion than those which rewhich has, in a few years, fallen to one-third of its value, while no protected article has, in the same period. tallen one hall.

I trust, sir, that we have now made out our ease; that we have shown the impirst and unequal operation, in early point of view, of this system, and that, as far is the south is concerned, and the west also, though not in the same degree, it is an unmitigated system of burdens. And, even with regard to the lavored section, I would subout, low far it is vies to mint upon a system which can only be maintained at the expected of other sections. Sir, I feel too much confidence in the justice and magnanismity of our northern brethern to suffer my self to doubt their willingens to abandon this system it they could see it in the light that we do. It may carried them for the moment, but the prosperty of creates as srtificial, and will assured be emotionated. No country can be permanently benefitted by a system of bountes. This system may destroy the south, but it will not permanently advance the prosperity of the hordle. It may depress us, but common the prosperity of the hordle. It may depress us, but common televate them. Besides, sir, it persevered in, it must annihilate that portion of the country from which the resources are to be drawn, that are to enrich the northern manufacturers. And it may be well for gentlement to reflect, whether adhering to this policy, would not be acting like the man who "killed the goode which laid the golden eggs." Let genitemen be assured, that his is a system which cannot possibly last. It will, soon-

this branch of the subject, I must take the liberty of pre-senting a few general considerations. In a broad view of the question, it never can be expedient to introduce into a country the manufacture of any article that cannot be produced as cheaply at home as it can be obtained from abroad. There are some such now made in this country, and their ability to sustain themselves, without protestion, is unquestionable. The only exception I would admit to the rule I have laid down, relates to articles strictly necessary to national delence. I do not allude to the habiliments of a soldier, or to articles necessary to his consumption, but to arms and munitions of war. It is the true policy of all nations to "hay where they can buy cheapest." This is the very instinct of our mature, and when we depart from it in national concerns, we violate the soundest principles of political economy, a science which is in fact but the lessons of wisdom and a source which is in fact out the tensions of wiscom and an enlightened experience applied to the effairs of nations. Sir, the restrictive policy is founded on the triumph of the settinh principle. It assumes that the matural position of nations towards each other is one of enmity and rivalship, tounded on a supposed opposition of The doctrine of the old school was, that, what was gained by one nation, was necessarily lost by another.

The plain and seemingly obvious truth, that in a lair in e pian and seemingty obvious truth, that in a lair and equal exchange of commodities, all parties gained, is a noble discovery of modern times. The contrary principle naturally led to commercial rivalries, wars, and abuses of all sorts. The benefits of commerce being regarded as a stake to be won, or an advantage to be wrested from others by fraud or by force, governments naturally strove to secure them to their own subjects; and when they once ret out in this wrong direction, it was quite natural that they should not stop short till they ended in binding, in the bonds of restriction, not they ended in binding, in the bonns of restriction, not only the whole country, but all of its parts. Thus we are told that England first protected by her restrictive policy her whole empire against all the world, then Great Britain against the colonics, then the British isles against each other, and embed by vainly attempting to protect all the great incress and employments of the state by balancing them against each other. Sir, such a system, earlied fully out, is not confined to rival nations, but protects one town against another, considers villages, and even bimilies as rivals; and cannot stop short of "Robinson Crusoe in his goat skins." It takes but one step further to make every man his own lawyer, doctor, farmer and shoemaker-said, if I may be allowed an Irshism, his own seams'ress and washerwomen. The doctrine of tree trade, on the contrary, is founded on the true social system. It looks on all mankind as children of a common parent—and the great family of nations as linked together by mutual interests. Sir, as there is a religion, so I believe there is a politics of nu-ture. Cast your eyes over this various earth-see its surface diversified with hills and valley s, rocks, and fertile fields. Notice its different productions - its infinite varities of soil and elimate. See the mighty rivers winding their way to the very mountain's base, and thence guiding man to the vast ocean, dividing, yet con-necting nations. Can any man who considers these accting nation. Can any man who considers these things with the eye of a ph.losopher, not read the de-sign of the great Creator (wr.t'en legidy in his works) that his children should be drawn together in a free commercial intercourse, and murual exchanges of the various gdts with which a bountiful Providence has bits. ed them. Commerce, sir, restricted even as she has been, has been the great source of civilization and refine-ment all over the world. Next to the Christian religion, f consider FREE TRADE in its largest sense as the greatest blessing that can be conferred upon any people. sir, what Patrick Heary, the great orator of Virginia, whose soul was the very temple of freedom, says on this subject-

"Why should we fetter commerce! If a man is in chains, he drooms and bows to the earth, because his

er or later, be utterly overthrown. Would it not be well, therefore, for them to acute this lavorable occasion to make some ascrifice of their peculiar interests to the general wellare?

In concluding, Mr. President, what I have to say on bless the band with plenty."

But it is the band with plenty."

bless the rand with pienty.

But, it has been said, that free trade would do very
well, it all nations would adopt it; but as it is, every ustion must protect itself from the effect of restrictions by countervailing measures. I am persuaded, air, that it is a great, a most latal error. If retaliation is resert it is a great, a most intal error. It retailation is reserved to for the honest purpose of producing a redress of the grievance, and white adhered to no longer than there is a hope of success, it may, like war itself, be some-times just and necessary. But if it have no such objeet, "it is the unprofitable combat of seeing which can jeet, "It is the unpromisone compar or seeing without con-do the other the most harm." The case can hardly be conceived in which permanent restrictions, as a measure of retaliation, could be profitable. possible situation, a trade, whether more or less restrictpossible situation, a trace, whether more of its reserve-ed, is profitable, or it is not. This can only be decided by experience, and if the trade be left to regulate itself, by experience, and it incurred or left to regulate itself, water would not more naturally seek its level, than the intercourse adjust itself to the true intercourse district the parties. Six, as to this idea of the regulation by government of the pursuits of men, I consider it as a remnant of barbarism disgraceful to an enlightened age, and inconsistent with the first principles of rational lib hold government to be witerly incapable, from its position, of exercising such a power wisely, prudently or justly. Are the rulers of the world the depositories of its collected wisdom? Sir, can we forget the advice of a great tatesman to his son-"Go, see the world, my son, that you may learn with how little wisdom mankind is governed." And is our own government an exception to this rule, or do we not find here, as every where else,

"Man, proud man, Robed in a little brief authority, Plays such fantastic tricks before high Heav'n, As makes the angels weep."

The gentleman has appealed to the example of other nations. Sir, they are all against him. They have had restrictions enough, to be sure; but they are getting restrictions enough, to be sure; but they are getting heartily sack of them, and in England, particularly, would willingly get rid of them, if they could. We have been assured, by the declaration of a minister of the crown, from his place in parliament, "that there is a the crown, from the piece in particular, find there is a growing conviction, among all men of sense and reflec-tion in that country, that the true policy of all nations is to be found in unrestricted industry." to be found in investment industry." Sir, in England they are now retracing their steps, and cultavoring to relieve themselves of the system as fast as they can. Within a few years past, upwards of three hundred Within a few years past, upwards of three hundred statutes, imposing restrictions in that country, have been repealed; and a case has recently occurred there, which seems to leave no doubt that, if Great Britain has grown great, it is, as Mr. Ituskisson has declared, "not in congreat, it is, as an interest and in an occiated, not in con-sequence of, but in spite of, her restrictions." The silk manufacture, protected by enormous bounties, was found to be in such a declining condition, that the vernment was obliged to do something to save it fr vernment was congen to no sometning to save it from total run. And what dol they do? They considerably reduced the duty on foreign silks; both on the raw material and the manufactured article. The consequence was, the immediate revival of the silk manufacture, which has since been nearly doubled.

Sir, the experience of France is equally decisive. Bonaparte's effort to introduce cotton and sugar has cost that country millions; and, but the other day, a foolish attempt to protect the iron mines spread devastation through half of France, and nearly ruined the wine trade, on which one fifth of her cititizens depend for subsistence, on which one min or ner chargens depend for subsistence. As to Spair, unhappy Spain, "fenced round with restrictions," her experience one would suppose, would convince us, it any thing could, that the protecting system vince as a language of the protecting system in politics like bigotry in religion, was utterly at war with sound principles and a liberat and collightened powhite a state in incipies and a interact and enlightened po-licy. Sir, I say, in the words of the philosophical states-man of England, "leave a generous nation free to seek their own road to perfection." Thank God, the night is passing away, and we have lived to see the dawn of a glorious day. The cause of free trade must and will glorious day. The cause of free trade must and will prosper, and finally triumph. The political economist is

abroad; light has come into the world; and, in this in- we will not ask that northern manufactures shall be taxstance, at least, men will not "prefer darkness rather than light." Sir, let it not be said, in after times, that the statesmen of America were behind the age in which they lived-that they initiated this young and vigorous coun try into the energating and corrunting practices of Enropean nations-and that, at the moment when the whole world were looking to us for an example, we arrayed ourselves in the cast-off follies and exploded errors of the old world, and, by the introduction of a vile system of artificial stimulants and political gambling, impaired the healthful vigor of the body politic, and brought on a decrepitude and premature dissolution.

I had intended, Mr. President, to have said something of the constitutional question, but have already taken up so much of your time, that I shall not now enter into it.
I must be permitted, however to remark, that the gentleman is mistaken in supposing that this objection to the protecting system is of recent origin? Up to 1824, the question had not been much considered, simply because the protection which manufactures had derived was mereacidental to iluties imposed for revenue. The act of 1790 was surely of that character; and even the act of duties. But when, in 1824, the true character of this system was developed, the constitutional objection was plainly and strongly insisted upon. Here is the language, air, that I, my self held on that occasion, on this floor.

Will gentlemen point out to me, it they can, the power which this government possesses to adopt a sys-tem for the avowed purpose of encouraging a particular branch of industry. It is my sober and deliberate opi-nion, that the congress of the United States have no more power to pass laws for the purpose of directly or indireetly inducing any portion of the people to engage in manufactures, than they have to abolish trial by jury, or establish the inquisition."

Since that period, the legislatures of every southern state have denounced this system as a violation at their constitutional rights. It was but the last year, that S. Carolina recorded on the journals of the senate, her solemn protest against it "as utterly unconstitutional, gross-ly unequal, and oppressive, and such an abuse of power ly unequal, ann oppressive, and sich an annac or power as is incompatible with the principles of a free government and the great ends of civil society. I do not know, air, where the constitutional objections to this system are better summed up, than in the very soldress of the free trade convention of Philadelphia, to which the gentleman has reterred for another purpose. gentleman certainly is mistaken, when he relies in that exposition as an authority in his layor. Sir, as I under-stand the argument, it is only admitted incidental protection may be afforded by iluties imposed only for revenue, but that the right is expresly denied of "imposing any additional duty for the purpose of affording that protection." I dismiss this branch of the subject, with protection." the remark, that whether we be right or wrong in our views on this question, the opinion is conscientiously and almost universally entertained throughout the whole south, that the protecting system involves a gross violation of the solemn compact which is the bond of our

I some now, sir, to the question of the policy which ought to be adopted at this important era in the history of our government. We have arrived at a most interesting crisis in our national affairs - one to which the people have been looking up with intense anxiety for several years past. They have enutemplated the extinction of the public debt as the great day of jubilee, when they were to be relieved from the outpressions which they have so long patiently endured? The people of the south, so long patiently endured? The people of the south, through the wilderness, and are now in sight of the pro-mised land. They stand on the top of Mount Pisgah, and look, with delight, at the goodly prospect before and look, with deright, at the goody prospect of them—and it is for you this slay to determine, whether they shall perish in the widerness, or be permitted to possess and enjoy their rich inheritance. Ser, I have shewn that the whole system of duties is oppressive and unequal - that the very action of the government is soyet! do not wish, gentlemen, to suppose that we are dis-posed to push our claims to an immeasurable extent. No, it proposes therefore, to create an annual surplus of

ed, because duties, to whatever extent imposed, operate as a tax upon our industry. We are willing to agree that the revenue necessary for the ordinary purposes of the government shall be levied by duties upon imports, The lacility with which indirect taxes may be collected affords an argument in their favor to which we are willing to vield, though we well know that they must operate most injuriously on our interests. But, in yieldi money shall be levied in this way than thall be absolutely necessary. We think we have a right to insist, that on the extinction of the nublic debt, the twelve millions of the extinction of the public deep, the twelve minions of dollars heretofore annually appropriated to that object, should an longer be levied; and, further, that no more money shall be raised than may be necessary to meet the ordinary expenditures of the government. Any other basis of reduction than this must be founded on the idea of a contemplated increase of the public expenditures. [And why should they be increased! We have rather a right to expect that they should be diminished. The principal objects of expenditure, for many years past, have been connected with preparations for warr, but, with the progress of our works of defence, and the note, with the progress of our works of detence, and the increase of our population, the necessity for this expenditure with he agreed measure mann. Indeed it does appear to me that it will be hardly necessary, hereafter, to seek other security against invasion that will be found in the strong arms and stout hearts of our fellow-citi-zens. But the gentleman misits that nur revenue shall not be reduced below eighteen millions of dollars, while we all know that twelve millions have heretofore furnisked an abundant supply for every purpose, including a million a year for internal improvements. The gena million a year for internal improvements. ileman admits that we ought not to provide for a sur-plus, and says, with great lorge and truth, that a division of it among the states would be a departure from all sound principles of government. For, said the gen-deman, "to give it back to the states or the individuals from whom it was drawn, in the same proporit in different proportions, would be an act of gross injustice." I submit whether this argument is not equally applicable to internal improvement. But, waving this point, I would ask, if we are to have no surplus, why raise eighteen mithens of dollars—six millions more than the ordinary expenditures of the government? provide, says the gentleionn, for contingencies? But, sir, is it not morally certain that your receipts must exeeed your estimates—the reduction of duties will irmy life upon it, we shall have a surplus, and not a deficit, inless gentlemen mean to provide for some new grand scheme of national expenditure. Besides, against secidental deficiencies, a sufficient provision will be found in the uncalled for appropriations, always to be found in the uncalled for appropriations, always to be found in the treasury. Having shown the extent to which the revenue ought to be reduced, I proceed to empider the mode in which that reduction ought to be effected. The first scheme suggested by the gentleman, is a continuance of existing plates on the unprinceted articles, and earrying up the duties on protected articles, to prohibition. The gentleman says, however, that he is not in tavor of this scheme, because he would put the manufacturers on their good helaviour, by exposing them to foreign competition. But what sort of compe-tition is that to which they are exposed, when enterents tition is that to which they are exposed, when entrenched behind a protecting tariff, ranging from fitty to two bundred per cent? I have shown that the existing duties are, to a certain extent, prohibitory; and when the gentleman declares himself against prohibition, he seals the condemnation of his own resolution, which proposes to retain the existing system untouched, prohibitions anit all.

I come now to the schemes advocated by the gentle the unprotected articles, except wines and silks, and leave them as they are upon the protected articles.

The first objection to this scheme is, that it is proafter the treasury is to be relieved from a charge of

tain effect of changing the character of your govern-ment, and corrupting the people. Why is this surplus to be created? Has the gentleman given a single reademnation of his own proposition, when he alimited that no surplus ought to be created for distribution; for it is not to be in some shape distributed, for what purposes is it to be raised? The next objection to this scheme is, that it proposes to relieve luxuries from all taxation, while the taxes on the necessaries of life are to remain just as they are; subject to duries of from 50 to 100 per cent. It is true that the gentleman, seeing, I presume, the enormsty of the proposition in its original may be leved on wines and sitks. But, sir, I should be glad to know, in what wines and alks ilifer from the numerous other articles which, by the gentleman's scheme, are to come in thity free. Here is a list of some of them, and it will be for the senate and the country to say how far it is reasonable or just, that the consumers of these articles shall contribute nothing to the public revenue, whole the honest laboring man is to be taxed from S0 to 100 dollars on every bondred dolhers which he expends on the westlens, and the llannels, the arm and the sugar, which are indispensable to the health and comfort of himself and family.

"It is one of the grandest farces ever attempted to be played off upon a tree people, to see an attempt made to reduce the taxes on clives and capers, anchoves and bramly fruits, mace, cloves, nutnegs, precious siones, slabaster prasments, coulds, pertunery, artificial flowers, billiard balls, battledores and shuttlecocks, coral beails and gold snuff-buxes, silver spectacles and ivoryheaded canes, velvets and lace, mull muslims and gros de Naples, camel's hair shawls, morocco and prunchla shoes, fine cambries, plated chafug-flishes, porcelain and china dinner and tea set, gold watches, Cologue water, Channagan and Burgundv wines, oranges and pine-spiples, embroidery, ivory fans, fine Irabi linens, parasols, extric tables, gill books, puer looking glasses, vermically, and macarons, Italian murble, mantel ornements, rouge, essences and court phaster, chessmen, sweet scenied soap, silk stockings, gold and silver thimbles, mantel time-pieces, tooth-powder, wax dolls, We 803, and a hundred other things used by the rich. it is one of the grandest (arces ever played off upon a free people, that such articles as those we have enumerated, should be exempted,"

I ask for the reason for this distinction which relieves luxuries from taxition, and throws them upon the ne-cessaries of life; which burdens the poor and exempts the rich, and I am told it is necessary to protection, Whose protection? Why, the wealthy proprietors of manufacturing stock; men who are realizing enormous dividends, drawn from the pockets of the people. Sir, no other reason for this distinction has been, in can be given; for it is acknowledged by all the world, that inxuries are the proper subjects for taxation, and ought rightfully to be taxed higher than the necessaries of life. But here the manufacturers interpose their risins, the, but here the manulacturers interpose their rishins, and the element justine ero disregarded. Again, or, these are articles of general consumption; at least among the wealth; and consumed equally, too, all over the country; and yet they must come in duty free, and the whole revenue of the country be levied on articles, in relation to which, the dunes operate most unjusting and unequally; being in truth a bounty to certain portions of the people, and a hurden upon others; and yet the senstor telia us he had hoped that such a proposition as this would not only have met the approbation of all parties, but would have been received as a con-cession to the complaints of the south. How it was possible for the gentleman to have indulged such an expectation, I am utterly unable to comprehend. Sir, what single concession, or the slightest approach towards it, is made by such a proposition? Dues it con-sist in agreeing to take off six millions of taxes, when the demands on the treasury are to be reduced to double that amount? It is the south ever uttered one word of complaint against the duties which it is proposed to

\$6,000,000 beyond the wants of the government, not reduce? No. These were imposed for revenue; set only without the smallest necessity, but with the certain effect of changing the claracter of your govern never complained. It is against duties a gainst duties a gainst duties a gainst duties and the proposed not be a gain of the gain o revenue, but protection, that they have been so long and so earnestly remonstrating; and, to quiet their do contents, the proposition is gravely submitted, to take off all the revenue slutter, and to leave the protecting deties untouched. See, it is not so much the amount of this tax, as its inequality and injustice, which has roused the whole south to determined opposition. And how is it proposed to relieve our complaints? By aggraveting that inequality, and extending and perpetuating that ininities. We tell you that the protecting duties ting time incurrence. We tell you that the protecting which operate as a tax upon us, and a bounty upon the tare states. We insist that it is a violation of the principles states. a state of cultinial vassalage; and this it substantially does, if we are not mustaken in its operation, and Mr. Gratian's definition of a colony is the true one-"s country governed in reference to the interests of another.

> Sir, if we are right, this scheme amounts to neither more nor less than a proposition to relieve the tard states from all taxation, and to throw the while bur-den of the government upon the other states. It is admired, that the protection enjoyed by the torror, even now exceeds the amount of the taxes which they pay, but still they do pay their equal portion of duties on the unmitteered articles. But when these are taken off, they will be relieved from taxes altogether. tlemen who now hear me, well remember, that when the tariff of 1828 was under discussion here, a senstor from a tariff state rose in his place, and supported the from a tarm mate rose in its place, and supported the bill on the single ground that a operated as a bounty of a million of dollars per annum to the state he reper-sented. Let us assume that calculation to have been correct; and that the siste in question now pays half a mother in taxes on the unprotected settles. When you onices, and that the state in justices in what has been sentially in takes on the unprotected settles. When you take off the tax and leave the boundy, the boundy will obviously be increased by just half a million, and the state in question will be relieved entirely from toxation, Such is the compromise proposed to the south. The evils of which we complain are to be increased—the protecting system is to be rivetted upon the country beyond all timpe of reliet; and, we are told, we might to receive all this as a conversion. S.r. we say to you, we are willing to animit to have the foreign manufactures we exchange our productions taxed for revefor which nue, though we know that such tax must operate as a bonnty to the domestic manufacture; and so I r dirainuli the value of our productions, but we invoke you not to aggrerate the minimize and necessity of this sys-tem, by extending the tex beyond the just revenue standard, and by so arranging the duties as to throw the buriler entirely upon the protected articles to relieve the sardf states from all taxation, and to throw the burdens entirely on us. Above all, we call upon you to remember, that the British manufactures on which you propose to throw almost the whole burden of the government, are those which we receive in exchange for our made tons-that to burden them is to burden us, and that the end of all this may, and probably will be, that we shall be denrived of our best customers, and be on off from the only sure market for our cotton,

> The policy proposed in the amendment which I have submitted, is bounded on the just principles I have ad-vocated. The arrangement of the details we are willing to leave to the committee. We do not propose to de-stroy, or even to injure, the manufacturers. We are willing they should have the incidental protection affordeil by a lair revenue system, suil on any plan of reduction, the duties and charges on the toreign manufacture will not fall much short of 39\frac{1}{2} per cent.; and surely, sir, if, with a protection equal to one-third of the cost of the article, our manufactures cannot be maintained, they ought to be abandoned at once, since nothing can be clearer than that they would then be austained at a certain loss to the country. We do not insist on an immeiliate reduction, to the lowest revenue standard. As the public debt is not yet paid, we are willing that the reduction on the protected actueles should be gradual

and spread, if gentlemen please, over two or three years; and, if they desire it, we will not object to making an immediate reduction on the unprotected articles, of 10 or 15 per cent. The immediate effect of this plan, so far from being injurious in the manufacturers, will, I am persuaded, serve rather to strengthen them, and even in its ultimate results, no manufacture will be injured that does not depend on protection for its exist-ence, and is not sustained at the public expense. Sup-pose the duties on the protected articles were now reduced ten per cent. below their present rates, and by subsequent steps carried flown gradually to the true revenue standard, what would be the effect of this first reduction of ten per cent. Ha yard of English cloth cost a dollar, paid a duty of filty per cent., and, with the addition of charges, enuld be retaded at two dollars, the effect of this reduction would only be to reduce the price to one dollar and ninety cents. So that the protection to the American manufacturer would be leasened only five per cent. Now if this provision were accompanied by an immediate reduction of the duties on the unprotected articles from fifty per cent, to fifteen, would not the manufacturers derive some commensation would not the installmenters derive some compensation in the diminished cast of every article which enters into their consumption? and if, in addition to this, there should be a consumption? and if, in addition to this, there should be a consultation of dulies on the raw material, I would admin to their serious consideration. whether their condition then would be worse than it is now. The true policy of the manufacturers, it appears to me, consists in obtaining their raw materials cheap, and having their expenses dunioished by taking off onneecssury taxes on their consumption. Sir, it this is to become a manufacturing country, we must look to the markets of the world. A feeble and ankly existence may be preserved at home by a system of predection and of bountee—but to be put on a sure boundarion, and to acquire that vigor, a rength and caregy, which will them to enter into successful competition abroad, with the manufactures of other countries, it is necessary they should be prepared for the contest, by being left, in a great measure, to their own unsided efforts. In one respect, the U. States possesses an infranting over att the world, of which it seems to me, it would be madeess not to avail ourselves. We can reduce the cost of production in every department of industry, to east of production in every negative to amounty, to the very lowest rates. Our people are not necessing borne down by an almost insupportable weight of lax-ation. We have no it but which can never be paul - no burthensome establishment -- no kings, lords and commons, to eat out the substance of the peuple. In this if we do not avail ourselves of it to the fullest extent. This, are, as out only the laworable moment for adjusting this great question, but if the suffered to pass a say, it can never be recalled. The monitoriners now con be let slown without a shock, from the position to which they have been so unjustly clevated. They will must be remunerated for any domination of their protection; but if the plan proposed in the gentleman's resolution should prevail, the immethate effect will be an increase of their protection, an enlargement of their bounty, and of inter-protection, an entargement of their protection, of convex, it these are in be reduced herester, the shock will be much greater than that to which that, in which they would now be subjected. Sr., I do consider that, in making my proposition, I am proving mysels a true friend to the monutacturers—and that they are their results of the monutacturers—and that they are their worst enemies (whatever flow now themselves believe)
who would adopt the policy embracied in the gentleman a resolution. In this epinion, or I find 1 am not amgular. The manulacturers themselves, and some of their ablest and most zeslous advocates, have avowed the same antiments. Is a work just put into my bands, containing an exposition of evidence, about to be submitted to congress, in support of the intenorial of the free trade convention, lately convened at Philadelphia, (a work to which I earnestly myste the attention of every member of this body,) I find some extracts from the Register of Heackish Niles—certainly one of the most uncompromising champions of the protecting system which furnishes decisive authority in favor of my oninion. I there find a letter from a person who is repre-sented to be an extensive manufacturer, in which he ....

"The only true friends of the manufacturers are those who now seek to repeal the value dues using of 1828, and a dity of revenue atone on cloths, and remove the duty on wool. It would be much better to us, if we were placed in England; for we could there, with our present hands and advantages, make cloth, send it to New York, pay the dutes, and take mire minest than we do now. The difference is in the stocky and this difference is not a stocky of the American System, as it stands. The duties on dies stuffs, oil, and such a stands and wool, take in come xon with the decrangement of trade, by in Asing the manufacturer are apparts, amounts to a much higher protection to the beregoer, than all the toriff allors to us. Such are the facts, and anch the fronts, of the 'system' which the American manufacturer are toded to anyport."

Thus, air, a will be seen that we who propose to repeal the tariff of '28, 'size the only true trends of the manufacturers,'' and that they are their worst enemies who are sitving to represente the "shaundines of the American System,'' Next we have the opinions of Mr. Niche himsh, ''that the next of 1823 was the result of a political bargain, and passed on principles disreputable to a congress of the United Sistes,'' in which the enlightment author of the exposition very justly adds, 'that no him good be more observations the total of pretending to encourage manufacturing inclusing, soft at the same time to tax the raw materials, iron, herap, flax, wool, lend, indign, and other component parts of monifactures, and constituting the principal side of them, from flutter two hundred per cent.'' And here I am willing to

The set of 1828, Mr. Niles affirms, "was the result of a political burgam, and passed on principles disreputable to a congress of the United States."

The gentleman complains of framts upon the revenue—and Iranduli at mysices, and sanugging—but it is his system which has produced these evils. Sanugging, from the very nature of things, must exist, when the duties exceed the risk and expense of the discit intercourse. For a reason, sir, the high inoral sense of a young and For a reason, see, the high moral sense in a young and uncorrupted people, may uppose some obsorbe to these practices. No government on corril can prevent them, expedient, in the plentumbe of his power, was unable to maintain his continental system. His problemious and restrictions were constantly volated with impinity,ed thrones on the rains of enquies, and appointed the officers of his household to fid there; whose armes were his custom house officers who strew his corrlors around the nations which he emignered, was atterly mable to put down the great principles of free trade. It has been will soil, sir, "that when all Europe was obedient to will sail, sry 'that when all Europe was obselient to his nod—the smoggler responsed his commands, set at nought the which chapted to score his power, and over-ther whis policy." How is it will England, that sea girt als surrounded with a thorsand stape, and thirty thousand grandons of her revenue? Sur, do we not all know that smoggling is there a profitable trade, and that the revenue laws of England are constantly violated with impunity? And how is it in Spain? A mothern travel-I r unserts that there are a hundred thousand persons in that unlooply country who live by sinugging, and that there are thaty thousand others, pad by the government, to det er their practice, but who are m with the offenders; and as to the condition of things in our nwn country, the gentleman has told us a fule this day, which, if he be not himself deceived, stows what tearful progress these practices have slready mode. The time was when smuggling was shadotely unknown any where, in this country, as it still is in the southern any where, in this country, as it with is to the continen-states. It is your protecting system which has intro-duced it. It is the natural consequence of high duties— the evil was loretoid, and, as we predicted, it has come upon us. The protecting system has already, in the nuon us. ed on this practice. It was but the last year, that a distinguished sensior rose up in his place here and held this language: "Your tariff policy compels respectable men to violate your laws you force them to disregard its injunctions, in order to clude its oppression. It was his perfect conviction, that there was not a virtuous mun throughout the union, who would not think it criminal to amurgle into the country every article consumed in it—and why? Because you force them to it in self defence." Sir, when these sentiments shall become prevalent, what think you will become of that system? How long will it last after the payment of duties shall come to be considered as a budge of servituale?

Mr. President, the proposition of the senator from Kentucky is, that the protecting system, as it now stands upon your satute-book, shall remain untouched—that all its contradictory provisions, its absurdities, injustice and inequality, shall be maintained involute. Let us look, then, at some of the existing provisions of this system. Some of them, it the exposition to which I have before referred, are detailed with a clearness to which mothing can be addled by me. Here are tables of the duties on woollens, flannels, baizes, and earpeting, ranging from forty-five to upwards of two bundred pre-cent. I will read a few extracts in illustration of the effect of three duties.

[Here Mr. Hayne read several extracts from the work in question, showing that the duties on coarse woollens, such as are used by stage drivers, watermen, and other laborers, for great coats, hea-jackets, &c. are so exorbitantly taxed, as to raise the cost of the articles to about "three times the price which the English la-borer has to use for the same bind of startings"—that the western farmer, in consequence of the high duty, the western farmer, in consequence of the figh duty, in compelled to pay four dollars a yard for cloth which costs the English farmer but one dollar seventy-five cents; that flauncls, so indispensable to all the women and children in the country, are subjected to a duty of from ninety to a hundred and fifty per cent., whereby an article which cost in England from eight to nine cents, is salil here for twenty cents, and that which cost in England twenty-nine cents, our manufacturer can obtain fifty cents for; that cottons are charged with a duty of from twenty-five to two hundred per cent., whereby the cost to the American consumer is, in many instances, increased one hall; and that the duty upon iron is from an hundred and fifty to two hundred and eighty per cent. On this point, Mr. Hayne read from the report on the blacksmith's petition, made to the senate during their last session, and quoted the testimony of John Sarchet, a witness examined on oath before the com-mittee, from which it appeared, "that under the existang rate of duties, a tou of hummers and aledges can be imported, for the use of the American manufacturer of those very articles, at a less cost than the bar from from which they are made; that wheel-tire has actually been imported, in a finished state, for about forty-seven dollars a ton, while bar iron, sutable for the purpose, is selling for about ninety dollars the ton; that ten-trays can be imported for halt the price of the raw material out of which they are manufactured; knitting needles for a hundred and forty-three dollars a ton less than the raw materials out of which they are made; that a ton of chain cables can now be imported into this country at a less cost than the rods out of which they are made; and that the necessary consequence has been, that a number of workers in Iron, and of mechanics, estimated at one hundred thousand, had their profits so diminished, that Mr. Sarchet had declared, that he had never seen any blacksmiths so poor, or carrying on a less prosperous business, than those of the United States, owing as he believed, to the high flutics they are compelled to pay on the raw iron.

Look, continued Mr. Hayne, through your whole protecting system; your duties every where are so afranged as to lail most heavily upon the poor. The poor man is taxed five dollars upon a coat, which cost him ten, and a rich man ten upon one whell cost him lorty—a tax of eight dollars upon coarse cottons for his wife and chidren, which cost no more tinsue eight; and the rich man but eight dollars, for what costs him upwards of thirty. Can say thing be conceived more monstrous than the system of minimum, to impose a duty of twenty-five percentum and valorem nn cotton goods, but provide, that, it they should cost less than thirty-five cents per square yard, they shall be deemed and take to have cost thirty-five ents and pay duty accordingly—to provide that a duty of forty-five per centum and valorem shall be imposed upon woullens, but provide that goods which cost more than one dollar, shall be deemed and taken to have

cost two dollars and a half. This is like imposing as income tax of fifty per cent, and then providing that every man's income shall be deemed and taken to be three thousand dollars; or a tax of fifty cents per gallow upon stills, and providing that every all shall be considered as containing fifty gallons. Now, are gentlement prepared to say that such a system as this, with all its imperfections on its head, is to be held as sacred as the laws of the Medes and Persino? I trust not.

Let not gentlemen so far deceive themselves as to suppose, that the opposition of the south to the protecting pore, that the opposition of the south to the protecting system is not based on high and lofty principles. It has nothing to do with party politics, or the mere elevation of men. It rises far above all such considerations. Nor is it influenced chiefly by calculations of interest, but is founded in much nobler impulses. The instinct of selfinterest might have taught us an easier way of relieving ourselves from this oppression. It wanted but the will, to have supported ourselves with every article embraced in the protective system, free of duty, without any other participation on our part than a single consent to receive them. But, sir, we have scorned in a contest for our rights to resort to any but open and fair means to main-The spirit with which we have entered into tain them. this business, is akin to that which was kindled in the boson of our fathers, when they were needs the treatment of oppression, and if it has not displayed itself in the same way, it is because we have ever cherished the atrongest feelings of confinternity towards our brethern, and the warmest and most devoted attachment to the union. If we have been in any degree, divided among ourselves in this matter, the source of that division, let gentlemen be opinion, as to the true character of the oppression, as from the different degrees of hope of redress. All parties have for years past been looking forward to this crisis. for the fulfilment of their hopes, or the confirmation of their fears. And God grant that the result may be sus-

pictons.

Sir, I call upon gentlemen on all sides of the house to meet us in the true spirit of conciliation and concession. Remove, I carnestly besech you, from among us, this never hilling source of contention. Dry up at its source this fountain of the waters of bitterness. Restore that harmony which has been disturbed, that mutual affection and confidence which has been impaired. And it is in your power to do it this day—but there is but one means mader heaven, by which it cam—by doing aqual lurantee. To all. And be assured, that he to whom the country to the consideration of the republic. He will be regarded, in all after times, as the ministering angel visiting the troubled waters of our political dissentions, and restoring the first paths of the selections.

Ironause values and the property of the elements its heating virtues.

I will conclude by invoking the authority of one whose name is deen rereily dear to the American people; whose constantly flowed the lessons of political winds of the whose example will be to the remotest generations a light to our feet, and a lemp to our path. The restorer of that liberty which Washington schwerd; the man "who saved the constitution even at its last gasp"—I mean THOMAS JETTERSON.

In Mr. Jefferson's inaugural address, he bears the following strong testimony in layor of the true American System:

"Entertaining a true sense of our equal rights to the use of our own liceulties, to the sequisitions of our own industry enlightened by a beingn religion with all these blessings, what more is ne-

cessify to make us a happy and a prosperous people. "Still one thing more, fellow-eitzens—a wise and friegal government, which, restraining men from injuring one another, skall leave them otherwise rars, to sacutars trais nows privative of unitary and imposement—sud shall not take from the mouth of labor, the bread if thus earned. This is the sum of good government and thus is necessary to close the circle of our

That God may inspire us, gentlemen, and all who are entrusted with the administration of our public affairs, with such dispositions, is my constant prayer to Him who holds in his hands the destinies of nations.

# NILES' WEEKLY REGISTER.

FOURTH SERIES.] No. 23-Vol. V. BALTIMORE, FEB. 4, 1832. [Vol. XLI. WHOLE NO. 1.063

THE PAST-THE PRESENT-FOR THE FUTURE.

EDITED, PRINTED AND PUBLISHED BY H. NILES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN ADVANCE.

We must do, as they do in Holland-as well as we can. 'The "manopoly" of the last number, by Mr. Hayne's "free trade" speech—(for he is an "over-grown "Trighte's "Tree trade" speech—(for he is an "over-grown capital'st" in his ways)—threw out of their regular, and perfusps, rightful place, nony articles not less interesting than that which he supplied us with; and now we have the long and exciting speeches delivered in the senste, when the nomination of Mr. Fan Buren was under consideration. We have dropped every thing that we could, to make room for some of these speeches; and so much do we suppose that our readers would wish speedily to have them all, that a supplement would have issued, had not the early water, walt the late new edition of intensely cold weather, nutlified our usual supply of ha-These speeches are so arranged that there will be to break in the matter, when the volume is bound - provided, that we can get into the next number the balance of them. We publish those of Messrs. Chambers, Clayton, Foot, Webster, Clay and Holmes, and have on hand Messrs. Frelinghuysen, Paindexter, Miller, Welster (\* second speech), Ewing, Moore and Marthe nomination, if furnished. And there are many my pendant or dependent papers and cheumstances, that should be noticed—for reference. We shall do what we can to present the facts to our readers; for they are, or will be, subjects of much and ardent popular discussion.

The current proceedings of congress are entitlown to the lowest minimum, compatible with a record of the clinef things happroing. We shall have to go back to them, and especially in insert the sketches of certain apecietics of Messrs. Benton and Buckney, and others, A forcible cutty however has been made into this

A foreible entry however has been made into this sheet, for an exposition of the proceedings of the executive committee of the New York convention, and an exhortation to all who support the American System, that important lasts may be collected. For several works we have deserted to insert something of this kind—and hence the resolution to postpone it no longer; yet in truth, there is enough matter on hand almost to produce in the processing style of the processing the processing the product of the processing t

\$□□P. S. When the preceding article was just making-up for the press, the Washington papers of yesterday, (at a much later how than mual), were received; and the manly and generous ilinatows of Mr. Hanne, with respect to certain errors into which he had been inadvertently led concerning the editor of this paper, (see page 414), has caused the withdrawal of a paragraph of some length, excusing the delay that had unavoidably taken places, in noticing his speech as it then appeared to "mern"—from which we are quote willing to be excused, such things being always unpleasant; and our thanks are due both to Mr. Happer and to Mr. Clay for the brief proceedings rated on the occasion.

A short sketch of the opening of Mr. Clay's speech is given in our account of the proceedings, and the National Intelligencer says—An immense crowl attended the senate yeareday, to hear Mr. Clay's second speech on his resolution, in reply to Mr. Hayne. Not only with the senate year of the senate without the bar, but all the space within, not actually occupied by the senators, was filled with ladies; and every part of the lobbies and galleries was packed with eager auditors. It is our custom, not to describe speeches, or to speak of their merits; but to report them, and let our readers judge for themselves. We shall be pardoued, however, on this occasion, for departing from our usual reserve, so far as to express the general opinion of the speech of yesterday; and that is, that it was equal in all points—in power, in cloquence, and effect—to any of Mr. Clay's best efforts of former days.

Vol. XLI. -- No. 29.

[A call of the house of representatives was made because of the absence of the members to hear the speech of Mr. Clay.]

FT General Smith, of Maryland, in his speech in the senate last Monday, on Mr. Cluy's resolution, among office rather strange things, is reported to have said, "there was, at the commencement of the session, a disposition, on all lands, to lessen the excitement attending this subject [the tailf]; but since the arrival of the lobby members that disposition had now partly declined." "He now saw very little reason to believe that any thing would be done, at this session, to relieve or conclinite the south."

Gen. S. does not say what "lobby members" have brought about a siste of things which he so much deplores; but it would seem that he had opened only one of the system of the size of the system of the size of the system of the size of t

We have not the pleasure of an acquaintance with the gentlemen composing the "free trade" delegation-yet dare say they are innorable men; but well know those who represent the interests of the free working people of the United States, and will do all that they can to oppose a placing of these in competition with the white slaves or pumper-laborers of England. They need not the certificate of gen. Smith for good conduct and sten diness to principle; nor will his assaults affect them; but we leave it to the senstor to pronounce on the magnanimity of attacking private gentlemen, who have no means of repelling his bitter effosions. Time was when a senator of the United States would not have thought of such a thing-but the new practice takes date from the entry of Mr. Ritchie's "nuisance and curse" into that body -and the senare is no longer what it was. Such is a common remark of every one capable of making just comparisons of the present with the past. This is not written in soreness, because of any attacks that have heen made upon myself, in either house of congress-1 have a machine in my hands, and it is my own, as powerful as the tongue of the best of them, and care not "who cries aloud and spares not," as the "honorable George Kremer" tried, and then-died.

As to the matter stated, perhaps I know a little more about it than gen. Smith. If the change that he speaks of has taken prace, it is no the reason that the minority demands on absolute surrender of the principle of protections, and then, and not till then, will they render any good feelings into a consideration of the subject at large, and the moderation and moderal of this proceeding, may have had effect to call up the resolution of the majority to pursue at so wan purposes. Our friends, if we understand them, have no indisposition to inquire into the expediency of any of the duties assessed, at a proper time for it—but they cannot believe that there is or constitutional power to preserve the independence of the United States, and promote the "general wellare" of the American people.

When correcting the proof of the preceding remarks for the press, we first saw a full report of the speech

of general Smith. It appears that his reference was special and direct, to "those interested men (who) hang upon the committee of manufactures like an incuupon the committee of manufactures sace an incu-bus," as he says; and he exhorted the committee to "depend on their own good judgments!" &c. He also gives us to understand that the hatters and workers in leather, &c., have "excluded foreign importations"-but does not tell the people why. It is for portutions.—but does not tell the people why. It is to the reason that, at an early period, the country was blessed by an efficient protection of their businesses, which remains to this day—such protection as was asked for by "the tradesmen, mechanics, and others of the town of Bultimore," in April, 1789—being the first petition for protection ever presented to songress, signed by the venerable senstur, among others - though now he has, in a note, expressed a doubt of the "consti-tutionality" of the tariff of 1828.

The undersigned, chairman of the permanent committee of the New York Convention, believing that a statement of the proceedings, prospects and designs of the executive branch of that committee (which is located at Baltimore), is due to the members of the convention. and their constituents, the friends of domestic industry in every part of the United States, has prepared the following exposition.

The address to the people, agreed upon at New York, and the following reports of special committees, have

On the manufacture of iron and steel

On frauds on the revenuer

On the manufacture of sail:

On the manufacture of hats:

on the latter.

On the currency, as affecting or affected by the protecting system;

On the manufacture of cabinet wares:

On the manufacture of sugar and molasses; On the tariffs of Great Britain, France and Russia; On the coasting trade and interior commerce of the

United State sa" On the subject of chemistry, as connected with munu-

factures and the mechanic arts; And a general report, or rather estimate, concerning the growth and manufacture of wool, from the committee

They also published the journal of the proceedings of the convention, containing several reports on different aubicets.

Two other reports have been received -one upon othe effects of the existing tariff upon agriculture and manufactures and the mechanic orts," &c.; and the other, concerning the product of silk, hemp and other serieultural materials; but these have been suspended by the executive committee, because of important additional information expected to be derived from the reports of other committees, - and without which, the first especially, they thought, could not be regarded as meeting the any, they thought, coold not be regarded as meeting the wiew of the enviention. It will, however, be prepared as soon as the nature of things will permit, with much zeal to bring out the facts which belong to a subject so interesting.

Reports from the following committee are yet to come in, and we know that carnest efforts have been made, and are mobile, and or continued the facts appertaining to several of these important concerns:

On the growth of wool;

On the manufacture of wood: On the manufacture of cotton:

On the manufacture of paper;

On the manufactures of glass, porcelain, &c. On the manufactures of leather;

On the manufactures of lead;

On the preparation of madder woad, weld, &c.

The executive committee are also advised, that the the executive committee are also advised, that the memorial to congress will be forwarded by the committee appointed on that subject, very soon after the jubilication of the memorial of the Philadelphia "Free Trade

Convention." As our course was rather defensive than otherwise-this delay has been considered indispensably necessary, for me have not agitated a general revision of the tariff, so far as its protecting principle is involved, at the present time—though hoping that some improvements of existing laws may be made, to assure the payment of such duties as have been imposed for the encouragement and support of American industry.

The said committee have also the pleasure to say, that a vast amount of general statistical information is being collected, by industrious and intelligent friends in many parts of the United States—to shew the intimate connex-ton that exists between all the great branches of production, and how the population, wealth and power of our country is advanced, and its independence made sure, by happy combinations of the interests of sericulsure, by happy communities of the interests of agreem-ture with those of all the rest of the arts or employ menta of labor, skill and capital. All these things will be di-gested and prepared for publication—and, with the statisties already collected, or being collected, by the chairman and his colleagues, perhaps, present one of the most interesting views of our national affairs every et offered to the American public. The labor, truly, is great—but the purpose may well be called a noble one. It is—that we may know hur own resources and our own atrength; in the knowledge of both which we are miserably deficient. Without this knowledge, it is impossible that we can successfully meet the "regulations of trade" of other councersfully tries, or perfect a system for the permanent good of our

he delays that have occurred were, or are, insepaparable from the exceeding difficulty that attended, or attends, the gathering of facts desired. Those concerning iron, so ably set forth in the report on that subject, were the fruits of several months previous application of those interested in that leading branch of manufacwhich will put the public in possession of all the information concerning it which can be hoped for at the present A variety of circumstances - chiefly originating m, or dependent upon, the long and disorganising wars of the French revolution, had eaused a general looking to things abroad, and disregard for things at home. Hence ' we have none of those official statistics which are so important in the legislation of other countries; and licuse the advantages which they have constantly held over us—such as would have beggared a nation leas ta-vorably conditioned than we are. Except as to the geography, population and history of the United Statesthe government, and the annual treasury tables, (meagre and imperfect as they are) relating to our foreign gre and imperfect as they are) relating to our foreign commerce and domestic toninge, we have nothing whereon to build a sound legislation. The products of whereon to outs a sound registron. The product of our soil, factories, workshops—forests, mues and fisheries—miland and coasting trade, i.e. i.e. though having a general agregate value of at lenst tract, if not fifteen hundred milions of dollars a year, are all else. speculation, or individual opinion, to be ascertained only by individual efforts in the cause of political science, and the collection of hundreds of thousands of individual items, requiring no small degree of seal, talent and time. No other prosperous country is thus situated -no other so deficient in the knowledge of its means of greatness; and hence none have been so negligent to

§ This mighty turn will startle all persons who have not reflected upon the subject, and yet I stand prepared to reflected upon the subject, and yet I stand prepared to content that it is a moderate one. It takes in all the subsistence, clothing, and shelter of thirden millions of persons—all the building and repair of mosts, vessels, i.e. all the labor expended in every soon of public or private improvement or secommodistic bursel, all the articles supplied for the use of man, involving the the articles supplied for the use of man, involving the business of every individual who does any thing which gives value to lands and all other sorts of property. We must believe that their united values exceed 100 dollars for each individual per annum. The mere animal cost of a slave is about half this sum.

<sup>&</sup>quot;It would, perhaps, be more correct to say that these are in type, and will be published in a few days.

<sup>†</sup> This memorial has just been presented.

invigorate its matural or artificial resources, as our own. I might not the patriotic rightfully encounter, in this great Had one hundred thousand dollars been applied, in a series of years, to collect authentic statistical information, it is very possible that one hundred millions would have been saved to the nation in the last war; and if the public expenditure and private loss by that war be estimated at 400 millions-that large sum would sink into insignificance, compared with the wide-spread ruin that followed the prace, and proceeded unward with terrific force, more than twice as long as the war had continued when the products of our fields were without a market, and hundreds of thousands of worthy persons were violently cast from the productive into the consuming classes of the people, because of the want of a DEMAND FOR LABOR, the parent of wealth and surety of abundunce. The domestic industry was laid prostrate at the teet of foreign producers—an awful appreciation of the rate of the currency tollowed, and valuable estates were sold for "pepper curus." Who can look back to the sold for "pepper carns." Who can look back to the state of things in 1820, 1821 and 1822 (long before which we ought to have recovered from the effects of the war, we origin to increase the peace), without shuddering as well as the effects of the peace), without shuddering without having every faculty within him aroused to prevent a recurrence of the withering and blasting teachlation then fet? Freedom from adversary cannot be expeeted-but Provincace has granted the use of means to mitigate what cannot be altogether avoided-and we caunot besitate to believe, that a chief part of the evils just and necessaltheir origin and existence in the want of the prolound ignorance that prevailed as to the means and resources of our country-or a printigal disregard of its vital interests. And as to this wildly looking abroad for prosperity! It is like to the abandonment of one's own wite and children, to find comfort in gambling-houses and grig-ahops—a giving up of domestic enjoyments for ruinous excitements! The whole foreign consumption of our great staple cotton, bus no more value than the home manufactures of that material; the aggregate value of the cotton, tobacco and rice exported, is less than that of leather manufactured; and the whole loreign demand for flour does but produce a sum equal to the straw hate and bonnete and taces usual by our lemales, which are, however, chiefly supplied by the appropriate and profitable employment of others of our lair country women. Thus we might proceed with many other like comparisons-but these are sufficient. And these atatements are certainly, in general, correct; yet, while every pound of cotton, pound of tobacco, pound of rice, or barrel of flour-nay, every alligator skin or bunch of onions exported, has a record, and is rung in the public ear and made consequential by a thousand repetitionsnot one line, as it were, is officially written to show the mighty values created and used at home-of that inealculably important inter-national trade which, in its first exchanges only, is twenty times greater than all our foreign commerce. The government is as ignorant of all these as of the interior concerns of Kamschatka. When the present writer first began to publish essays in favor of domestic industry -and when he afterwards first attempted to grapple with the gigantic values produced and consumed in the United States, -thousands thought that "depletion and a straight jacket" were necessary for him-but now believe that the words which he uttered were those of truth and soberness. But yet we are far distant from the whole truth. The subsistence, and clothing, and shelter-necessaries, comforts and luxuries-business and concerns, of the thirteen millions of persons who inhabit the United States, have an aggregate value far beyond the most sanguine calculations that have been made of them; and it to be hoped, that, (though nothing more than an approximation to real values can ensue from the present labors of the friends of domestic industry), a sufficiency of facts will be ascertained, to fill the mind of every lover of his untry, and his kind, with delightful astonishment. What averifices of time and talent, and even of health,

Our twriff is spoken of as excessive-but its general r centum on the necessaries, comforts and luxuries of life, is very small, compared with the general rate of duties levied on importations of foreign commodities, by the leading nations of Europe.

and glorious exertion!

But our present purpose is not to discuss the great principles and mighty operations of the American Systems the preceding remarks, however, naturally occurred, when there was necession to speak of the want of statistical knowledge. Hundreds of millions might have been saved, (as hundreds of millions would yet accrue,) were the people of the United States well acquainted with the resources and the wants of their own country. Then would a moral power be exerted that must re strain members of congress from adopting the wilful falsehouds or gross blunders of questionable persons then would drivedling speculation and contemptible theory he loreed into submission to practical truthsfor it would be written as with a sun-beam on the minds of the people, that profitable employment, or high wages paid to the working classes, (if the phrase suits better), is the best possible evidence under beaven of a cation's prosperity—unless the nation be made up of MASTERS and sLAVES; senseless producers and prodigal consumers of values.

To proceed with the details of our business. Of the address to the people, and report on the manufacture of iron and steel, large cilitions were published, and have been widely distributed-though at much increased labor and trouble, because of the early and sudden close of the navigation; and it is contemplated to publish heavy cultions of some of the reports yet expected, if, because probable than they cannot dithe reports, generally, from 4.000 to 6,000 copies have been printed, and of these 3,000 have been laid aside, that the members of of the convention and others, savic, that the members of the convention and others, may be furnished with some plete sets, in book-form,—and the rest be placed in the lands of members of congress, and other persons, whose particular duty, or business it may be, "to promote the general welfare"—and to these reports, it is expected that the executive committee will add a large quantity of more general matter, or interesting facts. They are aware of the extent of the arduous and responsible duties that have been assigned them by the convention, but are entirely willing to execute them, as soon and as well as they can.

In consequence also of the excessive tax on the postthe labor of distributing the reports has been increased. Yet the desired result has been nearly brought about, through the aid of numerous friends. But more fully to accomplish this great object, an arrangement has been made by which the undersigned, as editor of the REGISTER will, (without profit to himself), publish all the reports as addenda to his work, and thus give them a great circulation, at a cheap rate, to all parties. A whole sheet of them, in small type, would have been forwarded this week, but on account of a deficient supply of paper in season for it. Hereafter, there will be less complaint, with reference to any of the matters now alluded to - whether because of postage, to which persons may be subjected, or for neglect, in not forwarding the reports; so that between the two, and the careleasness of some who ought to have taken a part in this business, certain districts have not been so well supplied as it was desired that they should be, yet the general distribution has been satisfactory, except that it has been secomplished with too much personal trouble.

The executive committee have not been unmindful of that important part of their duty which respected pro-ceedings at Washington, during the session of con-gress—and delegates also have been appointed to attend, to make such explanations, or enforce such arguments, as the good of the common cause might seem to re-quire; and they will be strengthened as need shall demand-arrangements having been made to keep a close mand—arrangements naving ucer make (a keep a close) and intelligent view of the proceedings had, or expected to take place—for our opponents are fairly in the field. It may be well, perhaps, to observe,—that present prospects justify a belief, that the protects

. Which has been much complained of by some, as unjust, as it is, and not a little embarrassed our opera-

ing system will be preserved and extended, as the supmg system will be preserved and extended, as the sup-ply of materials and perfection in the manipulations of them shall rendre the latter necessary. For one exam-ple—the late crops of woll are estimated as hisving been worth 20,000,000 dollars each, and its various manufactures, (including other materials), at 20 millions more-together 40,000,000 dollars. The supply of domestic wool has now probably reached about seveneighths of the whole quantity required for the woollen cloths consumed. This product of agriculture, directly employing a capital, in sheep and lands to feed them, to an estimated amount of 145 millions, is protected by an average duty of about 65 per cent, on its foreign value—and this duty, because of the specific nature of the commodity on which it acts, is paid, to secure the Ameriean market for wool to American farmers-unless the price of domestic wool be raised so high by speculation, or from other causes, as to compel the payment of the high duty just stated. In this state of the case, so interesting to agriculturalists, it would seem absolutely necessary that the domestic manufactures of wool shou'd obtain all the protection designed for them, and frauds out the outer broceron to agent for time, and frauds and found in market abroad, except at prices which would prolibe the exportation of ap—and the good of the American wool-grower ean only be secured in the protection of the monafacturer. Mr. Cumbreleng, and others, (on the same high-pressure principle that induced him to put down the coasting tonnage of Great Britain, at extreme statements, as to the duty imposed on foreign woollens. It may be possible, that the high du-ties put down, can accrue—but that they do accrue, (unless in solitary cases, like atoms compared with elephants), no reflecting man will helieve; and the beggar-ly case made by certain lawyers at Charleston, (recordly case many by certain lawyers at Onarresion, (recon-ed in page 68, of the current volume of the REGISTER), got up for the purpose, proved too much. It proved, that certain cloths imported, and sold at the 'market that certain enous imported, and som at the market price," yielded only a profit of six cents a yard, rank or burr. And, while, the duty paid on wood is 65 per cent. ad valorem, we are entirely astisfied that the duty really paid on woollen goods does not amount to duty reasity paid on wooden goods does not amount to 45 per cent. the very minimum of protection which it was designed by the law to extend to the domectic manufacturer of cloths; and without this protection, it would seem impossible that the growth and manufacture of wool can be successfully followed. The deep interest that agriculture has in this matter, will cause it to be respected. One of the most successful and venerato be respected. One of the most successful and venerable farmers of Penns Ivania, asys, in a letter to the present writer, that in every hundred dollars worth of woollen eloths manufactured in the United States, from dollen eloths manufactured in the United States, from domestic wool, the farmer has seventy-five dollars for materials and other supplies furnished to the manufacturers—and such is, doubtless, very near the truth. ludged, the manufacture of woollen goods is rather an agricultural interest than any other, and as such and on extended or other account, has atrong claims to the support of patriotic statemen. Some like remarks might be made on fraudulent importations of iron, &c. but the one case

Because of the near approach to a final redemption of the public debt, by the steady and powerful operation of the sinking fund established in 1816, a reduction of the revence, derected in 1816 a reduction of the revence, derected in 1816 as a few letter of the revence, derected in superiously called for, and short for promptly be made. It is our opinion, that a law will be passed at the present assists to abolish or reduce the time on all imported commodities which do not interfer with the pursuits of American industry; and also, that no other general alteration in the tariff laws will just one the made. If so—time will be allowed to test the corrections of a reduced revence, and to estimate the corrections of a reduced reprotecting system, as at present earlished—as well as to collect facts and interchange opinions, with reference to all such articles as may yet need the paternal care of an enlightened government, that the paternal care of an enlightened government, that the plenty may abound, and prosperity bless the republic.

in conclusion, we would carnestly exhort every member of the late convention, as his especial duty and every friend of domestic industry whithersoever located in the United States, as a patriot-to vigilance in the collection and transmission of statistical lacts, relating to the interests of agriculture, manufactures and the mechanic arts, and navigation and commerce, coasting, in-terior or foreign—with the number of persons variousterior or foreign—with the number of persons various-ly employed, and subsisted, designating their ages and sexes in all possible cases, with the amounts carned by labor and capital, and such other particulars as may suggest themselves as being proper to guide the public judgment to correct conclusions, as to the real state of our domestic resources. The aggregates given in the note which is added, concerning Hampden county, Massachusetts, will serve as a general instruction on this subject. If we had such a report from every county of subject. If we had such a report from every county or every state in this union, and the whole were patiently and faithfulls summed up—opposition to the American system would have no resting place among us, unless in the bosoms of the envious and the lazy, misguided politicians, or unprincipled foreign adventurers. wans, or unprincipled foreign auventurers. The force of the facts would be overwhelming—and "the boasted famegyricks on foreign trade, (as the great calculator, Dr. Cooper, said in his better days) dwindle into insignificance when set in competition with this!" We stand not opposed to foreign trade-it is a branch of the system, and claims equal protection-no more. Buc se reports can hardly be hoped for from every county-let us have them, so far as is practicable; and on those may us have them, so far as is practically in and shew what be founded certain catimates that within, and shew what our country is—and what it may be. We repeat our be founded certain country on the may be. We repeat our call for help, that we may accomplish all the good that tail for help that we may accomplish at the good that has been enjoyed in prospect from the meeting of the friends of domestic industry, in general convention acambled at New York.

H. NILES.

N. B. A regard to economy should be observed—but the postage on all communications on the subjects mentioned, addressed to "Hezekish Niles, Baltimore," will be paid by him, as chairman of the permanent committee, until otherwise stated.

The preceding, except as to its narrative of the business of the committee, it is desired may be considered as the individual opinions of the writer—for of such it is composed.]

A statistical view of the arts, industry, and products of the count of Hampden, Massachusetts, 1881.

POPULATION 31,640.

Carriages, wagons, &cc. 23,550 Looms Leather, 120,900 Artisans Distilleries	- 30	36
trunks, &c. 121,882 Spindles employed Carriages, wagons, &c. 23,550 Looms Leather, 120,000 Artisens Clocks, watches, jewel- Untilleries	- 30	36
Carriages, wagons, &c. 23,550 Looms Leather, 120,000 Artisans Clocks, watches, jewel-		
Leather, 120,900 Artisans Clocks, watches, jewel-	**	
Clocke, watches, jewel- Distilleries		711
		.004
		34
	-	124
anneries .	•	20
a in ware, combs, norn- Grist mills	-	42
Work, 12,372 Carding machines	••	20
	**	32
	••	93
13,208 Iron works furnaces	••	3
t- Breweries	•	
Arers of tillages	37	901
		790
		066
muchinery, 50-500 Corn	135	
Distince spirits, 41 490 Oats do	67,	
raper, spines reams 150 000 Grain granted buch	136	
	,	2.5
	34,	
		739
Cattle		172
85,050 Cawa		047
	34	
	796	
10,000 Cheese sent to market	4,201	
	\$32,	
	D341	
	643	7/0
	000,	ave.
Cotton and woollen clath		
	90,2	20
yards (1) Osland - In the lacto-		
Fire arms manufactured	115,4	35
21,500 ne.		
n ool carded		
	180,0	70
2,191,002 besides those apprintly		
2,191,002 besides those specialty mentioned		
with the first	31,2	57

scattement of the annual expenditures of the U. S. armory of plotting field. Mosachuetts, as furnished by the superintendent, the small amount of 4,099 persons in manufactures as furnished by the superintendent, the small amount of 4,099 persons in manufactures; inthe statement of the appro
There are employed in

Allotment of the appro-priation for semorits, 180,000 Of which about two-third of the amount is paid for labor, and one-third for stock and macrisit. Of the latter the following com-prise the most important items, viz.

205 tons of iron, at 140 dollars per ton is. 49,500 ibs. of steel, of va-rious kinds, averaging 23,100 16 cts.
16,500 files, at 20 cts.
16,500 files, at 20 cts.
160,000 bushels chercoal, at 5 t-2 cents
10,000 bushels pit coal, at 35 cents 7.890 9,100

100 tors Lehigh coal, at

There are employed in the estimate 275 men, whose monitally pay amounts to 10,000 doi-lars, and for the year Lawing for stock and 120,000 spate rinte 60.000

Total
The number of arms manufactured per year,
with all appendages, is
16,500. Amount of premanent improvements, 180.000 miscellaneous expenses &c. say 12,000

Leaving for the manufac-ture of arms, gun boxes, Lechigh cost, at 1,000 crew drivers, wipers, bell serews, pring view, and silt the appearance of the value of the 5,804,542 yard of cloth is not

given in the tabular statement-but is estimated by us, in doubling the value of the wool consumed and an domaing the value of the word consumed and quadrupling that of the cotton—which pretty nearly approaches the real sum. Another cotton factory with 9,000 spindles, was soon to go into operation, and would

snake a large increase of the aggregate—requiring about (2) This amount is, in part, estimated thought very nearly correct. In some cases, the pounds of cotton consumed, and in others the value,

are given in the table.

GENERAL RECAPITULATION AND REMARKS.

The preceding abstract is made from a large table, eovering a whole printed sheet, and giving particulars, as to the things mentioned, in every township of Hampden county. It is not, in all respects, exactly as we would that it should have been-but, as a whole, is an admirable specimen of what adividual industry may ac-complish, and is respectfully offered as a guide to other seekers after statistical knowledge. A few remarks may serve to shew the general purposes to which such statements would be devoted, for public instruction. \$2,191,002 The value of the manufactures is

Deduct-value of wool

180,000 cotton rugs, &c. iron, &c. 90,720 47,820 miscellaneous 21.267 475,332

Leaving

Now, as 4,099 sertizans, or working people, were em-ployed in manufacturing the preceding amount of artiproject in minumentaring the precenting statem of a rate of edge, (less the cost of the raw materials), it is shewn that the average production was 425 dollars for each person, including interest on capital, tenr and wear of raschinery and buildings, and the other heavy incidental expenses which belong to establishments of the kinds stated.

The 4,099 working people probably subsisted, (including themselves), 16,396 persons, or more than half the population of the county, some of them, perhaps, also beld small farms—but this does not affect a general

application of the lacts.

These 16,396 persons cannot have cost less than 25 dollars each for articles of food, or 409,890 dollars. leaving, if we suppose all the flour imported (9,346 bbts. worth \$56,076) to have been consumed by the manufacworth 350,000 to nave been continued by the manufactures and their families, say 350,000 dollars, but adding 43,500 dollars for the value of their woot, say 400,000 dollars, to be divided among the remaining 13,244 hisbatants of the country, being chiefly agreeafturalists or, at the rate of more than 26 dollars for each person, be the rate of more than 20 onlines for each person, besides their own subsistence—to say nothing of the value of lumber, fuel, &c. &c. supplied by the land-holders. What a sarket for the products of the land, reclusive of wool, cotton, iron, flour, coal and many other articles imported, is here exhibited! The entire aggregate cannot have fallen much short of a million of who, if not so employed, must have been producers, instead of consumers, of the fruits of the earth.

In 1830 the whole value of our domestic exports

o Russia Prussia Sweden and Norway Denmark Portugal Spaia	\$35,461 16,501 181,353 76,292 43,408 684,512
	084,512

All these powers-to which we send ministers plenipotentiary, and ministers resident, &c. at an average cost of from 50,000 to 60,000 dollars a year, accept the products of the United States, say only 50,000 dollars more in value than 4,099 domestic manufactures loeated in Hampden county, Massachusetts, require!

We have only spoken of the value of food and other agricultural supplies, accessary for the 4,099 manufacagreement supplies, necessary for the 4,099 manufac-turers. It appears from the table, that 643,998 dollar worth of merchandize, such as coffice, sugar, tes, cloths, ealisces, &c. were also imported for the use of the peo-ple of the county named.\* But we cannot carry out all the operations just now. Referring the probable of the land, and of the land only, it appears probable lawLJass when 33,000 manufacturers or mechanics, lo-sanual value as the great state of 18 of the products and the construction and all the Terrinas exports to loreign countries-cotton and all!

ANECDOTE. During the restrictive laws in Mr. Masdison's administration, preceding the war, a then highspirited and patriotic merchant of Baltimore, (now deecased, having lost his life in the Pacific)-at a public ceased, naving tout this line in the resemey—at a public place in this citty warmly, if not violently, spoke of the president, to whose politice he was decidedly opposed. Whereupon a foreigner—a transition person, took up the subject, and rederated, in other terms, the same things that had just been uttered by the gentleman al-luded to. The latter gathered up himself in a moment, and, without any prefatory remarks, knocked the foreigner down-proclaiming that no other than an American citizen should, in his presence, abuse the government of his country!—giving a practical commentary, (in advance!) on Decarua's famous toast, "our country, right or wrong"-as it regards the opinions of foreign nations; and "base is the slave" that will not say AMEN. We will right our own wrongs—not ask any boons of foreigners, nor allow their interference in our family

BRIEF NOTICES-THINGS IN GENERAL

Preparations are making at Baltimore and other places for a grand celebration of the 22d February, the centennial anniversary of the birth of WASHINGTON.

The New York Journal of Commerce states "that the amount of iluties accrued at the New York custom house during the year 1831, was upwards of twenty million dotlars.

"It is an assertained fact that 225 persons, employed in a certain cotton lactory near Baltimore, perchased, list year, for the supply of themselves and their families, xis thousand dollars worth of "taxed" articlesnet, as mousand dollars worth of "issee" articles— that is, articles of such kinds as are subject to what are called high duties, especially tea, sugar, calicoes, &c. &c. The proprietor, on one occasion visiting the city, was commissioned to purchase eight merine cloaks for was commissioned to purense egal merino clears for eight young women employed by him. Agricultural pursuits present no perallel for these things—and the planting interest, especially, is far, very far, behind. But we shall bring out this case at length, on some fa-ture occasions and the mill referred to, because it has no looms, yields a much less proportionate amount of wages than others which have them.

It may be here stated, and it is said deliberately, that the general amount of value added by the cotton consumed in Baltimore county, is equal to the selling price of 170,000 barrels of flour a year. Look at it!

<sup>&</sup>quot; Used at the armory.

The garrison of Vera Cruz has demanded the nulli- | three hours in conclusion of his speech which he con fcation of the present ministry of Mexico. Gen. Santa Anna is at the head of this proceeding.

Many valuable steam boats have been destroyed on the western waters, because of the violent and sudden breaking up of the ice. The New Jersey, lady Washington, Chesspeake, Emigrant, Potomae, Whig, Western Virginia, Pittsburg, Glesser, and Resper, are among

There are rumors in some parts of Virginia, of fresh movements among the slaves-perhaps, chiefly because of the fears of the people.

TWENTY-SECOND CONGRESS-1st SESSION. SENATE.

January 27. Mr. Frelinghuysen presented certain resolutions of the hank of New Jersey, recommending the renewal of the charter of the bank of the United States.

Mr. Benton rose to ask the attention of the senate to a paper communicated to the senate yesterday, by the chairman of one of the standing committees—the letter of certain salt manufacturers on the Kenawha, on the subject of the alum salt bill.

After some remarks upon certain reflections contained in said letter, he moved that the committee on manufactures be empowered to send for persons, and to take their examinations, in writing under oath; and to report the minutes of the evidence so taken, to the sensie.

To the buquity ufion them. Mr. Clay could not perceive the utility of the proposed measure, and wished to know whether the evidence of one state would satisfy the gentleman from Missouri, (Mr. B.) or was he desirous of obtaining the information from all sources in the country. He moved to lay the motion on the table.

Mr. Benton rose to give notice that the subject could not be got rid of without there being something said The debate could not be ent off.

The vice president said the motion did not admit of

Mr. Clay did not wish to restrict the gentleman, and withdrew his motion to lay on the table.

Mr. Benton said the information contained in the letter in question was inconsistent with that in his posses-

sion, and wished an opportunity to meet it by counter-

. Buckner replied to Mr. Benton in an animated speech, controverting the statements of his colleague in clear and forcible manner. After he had concluded, Mr. Clay said the committee on manufactures were willing to take up the whole subject of the tariff, or confine themselves to the favorite articles of the gentleman from Missouri.

[We have laid the sketch of the debate aside, and may hereafter insert it.]

The senate then proceeded to the consideration of executive business, and after sometime spent therein, adjourned to Monday next.

January 30. After the disposition of the morning business, the senate proceeded to the special order of the day, being the resolution offered by Mr. Clay, for a modification of the tariff, and Mr. Hayne's aniendment thereto.

Mr. Smith, of Maryland, having the floor, midressed the senate an hour and a half on the subject of the reso-

Mr. Holmes, of Me. followed, and spoke till past 3 clock, when he gave way lor a motion to adjourn; and the senate adjourned,

January 31. The resolutions submitted by Mr. Benton, calling for a variety of information touching the administration of the bank of the United States, were

taken up to day and agreed to.

Mr. Benton submitted resolutions to obtain various information respecting salt and its prices, &c.

The resolution of Mr. Ewing respecting the impro-

er removal of public officers was taken up; and, at the astance of Mr. Grundy, made the order of the day for Monday week.

The resolution of Mr. Clay respecting the tariff was tranmed, when Mr. Holmes spoke between two and cy, menced yesterday; after which the senate adjourned. February 1. Mr. Frelinghuysen submitted the fol-

lowing resolution: Resolved, That the government of the United States is h

by the terms and stipulations of several treaties made with the Chreckee nation of lucians, and also by the provisions of the in-tercourse act of 1802, and to protect said nation from all intra-

servourse act of 1807, and to protect said nation from an anti-sion upon their servicity.

United States does not possess the constitutional power of dispensing with the execution of the in-tercourse act of 1802, and of 3 and treaties, and that until the said act shall be repeated, and while the said treaties rermain, it is the duty of the president to enforce the provisions and stipula-ber of the president of the protect of the provisions and stipula-Some private bills were matured. The bill to grant

a township of land to the French college at St. Louis, was, after some discussion, laid on the table for the present. Mr. Sprague's resolution, calling for the publication of the names of the owners of unclaimed dividenils, was agreed to, then reconsidered on motion of Mr. Clay, and made the order of the day for Monday next.

The resolution, for the reduction of certain duties, and the abolition of others, with the amendment offered by Mr. Hayne was taken up.

Mr. Hill, of New Hampshire, took the floor, and spoke about three hours in apposition to the resolution. Mr. Holmes maile some remarks in reply to some por-Mr. Holmes made some remarks in representations of the speech of the senator from N. Hampshire. On motion of Mr. Clay, who expressed the sub-

ject, the senate then adjourned,

February 2. After the transaction of the ordinary business, the senate proceeded to the consideration of the resolution of Mr. Clay, for the modification of the tariff-together with the amendment of Mr. Hayne,

Mr. Hayne asked permission (Mr. Clay being entitled to the floor) to explain that certain extracts which he had quoted from Mr. Niles's Register and inserted in his speech, were not in fact Mr. N's own sentiments, but those of some commentator upon the opinions of Mr. Niles. Also that he slid not intend to embrace in his amenilment to the resolution, the precise views which might eventually be subscribed to by the members from the south. He wished to have that part of the resolution struck out, and afterwards it might be so modified as to meet the views of the majority of the senate. He thought it due to himself as well as to Mr. Niles, to explain that he had not read the paper alluded in-and which he had commented upon; but that his attention had been called to the subject, and he had made the extracts without a knowledge of the fact now communicated.

[Mr. Clay said he was glad the gentleman from S. C. had made the explanation, which was alike justly due to his worthy friend Mr. N. and manly, frank, and honorable on the part of the gentleman from S. C. him-

Mr. Clay then proceeded to address the senate in vindication of invision, and of the protecting system, and in reply to Mr. perceivable proceedings system, and in reply to Mr. proceedings of the meaning, the following outline of his agreement will convey to the reader an idea of its course and change in the meaning.

ment will convey to the reader an idea of its course and character.

After an impressive exerdium, he alluded to the distress of the country after the war. The period of greatest distance was a never years pressions to the year 1824—the period of greatest prospective presents of the country. He minimised that all the predeficions of the country. He minimised that all the predeficions of the country. He minimised then Islaided by experience—that all not be tariff in 1826 and been Islaided by experience—that all not be tariff in 1826 and soutieparted had been realised. He alluded the sufficience of the country respectively. The sufficience is a sufficient to the first of the first of the first country in the country that the country had not of the eminent stationary that the country real that it in infancy, but the tower from the day. The country was then in it infancy, but tell tower from the day. The country was then in it infancy, but tell country required. But that set established the interests of the country required. But that set established the interests of the country required. But that set established the interests of the country required. But that set established the interests of the country required of consideration, and it was accordingly extended or dimminished from time to time, according to the view of practical men.

Mr. Ziau them traced the history of the country down to 1816.

it was accordingly extended or animitated from time to time, according to the view of practical men.

Mr. Clay then traced the history of the country down to 1816;
commented on the tariff of that year, its object, extent, and poiscy, Then the tariff of 1824. He then alluded to the circum

stances under which the tariff of 1828 was adopted. He said that tariff was made as lad as possible by its enemies, in order to ren der it odious, and destroy the system. He declined to speak of the

territ was made at all as a possion of virture was to the constitutional question.

He then alluded to the object of those who proposed to destroy all these great interests; and the rain and destruction it would produce. He dwelt upon the general dortrine of free trade, which he contended could not casts in the present state of the district of the contended could not casts in the present state of the force of the contended could not cast in the present state of the force of the contended could not cast in the present state of the force of the contended could not cast in the present state of the state of the force of the contended could not contend the force of the contended could not be contended to the fact of everal foreigners in this construct, which they move seed on. In pastice, English state-reads, which they move seed on. In pastice, English state-reads, which they move seed on. In pastice, English state-reads, which they move seed on. In pastice, English state-reads, which they move seed on. In pastice, English state-strictive trade at home against the world. He meant security the world to English manufacturer. In fact, free trade, in this country, was another name for the British colonial system. He read to the senate the system of England for regulating of any articles, except some of the raw materials of their manofactures.

feetures.

He gave a pieture of the effect of manufactures upon the western states. He tested that the culture of corton was the tested that the culture of corton was the resistors of the feet. He divergence that it is more of flowth Carolina and her refuning to take the productions of Kentucky, and the consequences and result of that act of non-intercourse. The loss of the shipping of South Carolina was to be attributed, no contended, to be effect of free trade. Half her shipping is

ving apoken two hours and upwards, with great animation, Mr. C. said he was about now to enter into the main argument, but it is a side of the serious last, and he somewhat exhausted, he asked the indugence of the serious.

what he wished to say; and the sensite adjourned. The residue of what he wished to say;

#### HOUSE OF REPRESENTATIVES.

Friday, Jan. 27. Among other resolutions offered-by Mr. Thomas, of Maryland, referring an act pas-ed by the legislature of Maryland, relater to the pre-servation of that part of the Camberland road within

servation of that part of the Cumberland road whitin asid state, to the committee of internal improvementa. By Mr. Thomas of Lundians, providing for the appointment of a joint committee to inquire into the extendency of celebrating the centennial birth day of Washington.

By Mr. Denny, inquiring into the expediency of erect-ing a marine hospital at Pittsburg, in the state of Penn-Ivania.

By Mr. McKennan, an inquiry into the propriety of a declaratory set with regard to the postage on pample-

Mr. Nuckells moved the following resolution:

Mr. Nuckolls mived the following resolution:
Residued, That the committee on manuferture be instructed
to inquire and report to this house a manuferture paid in the United
States for cutton, woodless, irond other manufactures, but the
tariff act of 118, the whether the prices for articles not 118, the
whether the prices for articles and protacted in this country have not fallen in an equal or greater ratio
than those which are protected, whether the prices thereof
the price of a price of the price of the

By Mr. Lecompte—
Restord, That the committee on the judiciary be instructed to
Restord, That the committee on the judiciary be instructed to
Inquire into the expediency of amending the constitution of the
United States, so that the judgers of a response court, and of the
inferior courts, shall hold their other to a limited term of year, Mr. Wayne moved a resolution requiring the scere-

tary of the treasury to report such an arrangement as he may deem best calculated to compensate the officers

ne may deem best calculated to compensate the officers of the customs, by substituting salaries for fees.

The resolution offered by Mr. Jenifer, on the subject of the removal and colonization of the free colored persons, was further considered—a motion being sade by Mr. Been, to refer it to the 2d of December, a lebate ensued, but before it had concluded, the house the contraction of the first the concluded of the contraction of the fact that the contractio proceeded to a consideration of the bill to give effect to the commercial regulations between the United States and the republic of Colombia, which, after debate,

passed by a large majority. The rest of the day was occupied in the consideration of a bill to pay for David Darden's horse.

The house adjourned.

Monday, Jan. 30. Mr. Johnston, of Ky. reported a bill to reduce the postage on periodicals and pamphlets, and for other purposes. Several other bills were also reported.

Among the numerous memorials presented yesterdsy, was one by the speaker from the free trade convention,

recently assembled in Philadelphia, on the subject of the tariff. It was laid on the table, and 5,000 copies, in addition to the usual number, directed to be printed.

Mr. I. Condict moved the consideration of a memorial presented by him yesterday, praying an appropria-tion for the removal of free persons of color. Its reading being objected to, the year and nays were ordered on the question of reading and determined in the affirmative, by a vote of, year 100, nays 80.

Several motions were made with regard to its reference, the memorial was, however, after debate, referred to a select committee of acven.

Mr. Jentfer presented the resolutions of the general assembly of Maryland, in favor of the renewal of the

charter of the United States bank. The house then took up the consideration of the ap-

portionment bill. The question being on the motion of Mr. Hickliffe to refer the bill to a committee of 24, consisting of one member from each state.

A slubate ensued thereon, when the motion was negatived by a vote of yeas 76, nay a 116.

After some conversation between Mr. Hubbard and Mr. Wickliffe, the latter moved to strike out the words "forty eight" wherever they occur in the bill. Before any action being had thereon, the house, on motion of Mr. Burges, adjourned.

Tuesday, Jan. 31. After verious reports on the claims of imbratuals had been made, and disposed of,

The resolution of Mr. Jenifer, on the subject of the to the select committee raised on the select committee raised on the New Jersey, upon the same subject.

The speaker laid be ore the house sundry reports from the several departments, made in obedience to

previous calla. By consent of the house Mr. Archer submitted the following, which was read, and also referred to the committee on the memorial of the Rahway coloniza-

committee on the memorial of the Kanway coloniza-tion speedy, viti:

Residend. That a select committee be instructed to inquire into the rapediency of recommending for adoption an amendment of the constitution of the United States, by sensiting or derivable have power to appropriate the the public loads, in aid of the from the proceeding the works of internal improvements as may be constituted, commenced, or sucronical by the states, respectively. authorised, commenced, or patronised by the states, respectively, within which the same are to be executed; and shall in like manautoritiest, commoneed, or patronue d by the tateler respectively, minim which the same are to be accusted; and shall in hise manner have power to appropriate the same fund of revenue in an of the removal of such particular of the colored population of the states as they may respectively as the substitute of the states as they may respectively as the substitute of the states as they may respectively as the states as they may respectively as the states as they may respectively as the states and the states as the states and the substitute of the states are now governed, for such in the states and to govern such states are now governed, for such in the states which the states are now governed, for such in the states which the states are now governed, for such in the states which the states are now governed, for such in the states which the states are now governed, for such in the states which the states are now governed, for such in the states which the states are now governed, for such in the states which the states are now governed, for such in the states are now governed for the states and the states are now governed for the states are no

tion to read as follows:

Resideed, That the president of the United States be requested to communicate to this home a copy of the treaty negotiated with the Chirkasaw tribe of minimum the type 1130, and of such portion of the journal of necessarial communications are related to the subject matter of said article then with the copy of the lease or the two which the article of the commissioners of the U. States was given; and, also, of these executed under the 4th article of a treaty negotiated with the Chickasaws, October 19, 1818. tion to read as follows:

negotisted with the Unitable way, october 19, 1619.

Mr. Everett explained and advected his resolution, at considerable length. Among other facts he stated within the very day on which the Chicksaw treaty was negotisted, in 1818, a lease of a reservation of a tract of land containing four miles agrare, which had been by the irresty reserved for the poor and warriors of the said nation, was leased by the Indian chiefs, Colbert and Brown, in whose names the grant was made for the benefit of those just enumerated, to the present second auditor of the treasury, who attended as a confidential agent to the negotiation, and as a witness of the treaty. This lease was for a term of 199 years, and on a rent of 750 bushels of salt annually, provided salt water should be found upon the reservation, This lease was for a term of 199

That in the summer of 1830, a negotiation was entered into by John H. Eaton and John Coffee, with the Chickness tribe of Indians, for the cession of their lands in Mississippi and Afabama; fands be it observed far distant and totally disconnected with the reservation in West Tennessee. The treaty is negotiated in the osuat manner, and a conditional cession obtained. The following day certain supplementary articles were negotasted in addition to the main treaty and at the heel of all of them, an article agreed upon of a most extraordinary characters by which substantially the reservation of which I have been speaking, was sold for \$2000, to the second auditor and a person associated with him. I say, sir, in substance, this reservation was sold to these gentlemen for \$2000; although the form given to the transaction is that of a change of the lease. consists in reducing the rent from 750 bushels of sait to 4 bushels, or the value thereof, and a payment of \$2,000 down."

Mr. Wickliffe, and Mr. Mitchell, of S. C. followed with some remarks, the latter gentleman in desided upposition to the resolution-when the debate was arrested by a successful motion made by Mr. Potk for the

order of the day,

The apportionment bill next came up for consideration, and the question being on the motion of Mr. Wickoffe to amend the bill by striking out the words "forty eight"-and after debate, the question was taken on striking out, and determined in the negative-Avea with a view of inserting "forty-four," but before the question was taken, the house adjourned.

Wednesday, Feb. 1. Mr. Drayton, from the committee on military affairs, reported a bill authorising the secretary of war to compromise and secure to the government the title of an island in the state of Delaware, upon which fort Delaware is situated. The resolution, heretofore proposed by Mr. E. Everett, calling on the president for a copy of a part of a treaty with the Chickasaw tribe of Indiana, was further debated by Messrs. Huntingdon and Polk. The debate was arrested by a call for the orders of the day. The apportionment bill was ngain taken up, and discussed at great The motion of Mr. Hubbard, to strike out 48,000 and insert 44,000, as the ratio, was finally agreed to—yeas 98, toys 96. The house then adjourned.

Thursday, Feb. 2. The reaclation of Mr. E. Everett.

calling for a copy of an article of the treaty of 1830 with the Chickaraw Indians again coming up for con-

Mr. Clay, of Alabama, addressed the house in opposition to the call, consulering it as a violation of the constitutional powers of the house and an insult on the executive. He argued to fix inconsistency on the mover and supporter of the resolution, and warmly vanilicated the character of general Coffee, one of the commissioners who had negatiated the treaty, and whose integrity he considered to have been assailed.

Mr. Clay had just closed, when,

The house then proceeded to the consideration of the

apportionment bill.

The house reconsidered the vote by which it yesterday agreed to strike out 48,000 and insert 44,000, as the of representation—and before the blank in the bill was filled up, the house adjourned.

# PROCEEDINGS OF THE SENATE,

ON THE NOMINATION OF MARTIN VAN BUREN. December 7, 1831. A message was received from the president of the Unded States, nominating Mantin Van Burken, of New York, to be envoy extraordinary and minister plenipotentiary of the United States at the court of the United Kingdom of Great Britain and Ire-

The message was read.

Tuesday Dec. 27. Ordered, That the nomination of Martin Van Buren be referred to the committee on foreign relations.

Tuesday, January 10, 1832. Mr. Tazewell, from the animittee on foreign relations, to whom was referred the nomination of Martin Van Buren, reported.

Tuesday, Jan. 17. The following motion, submitted by Mr. Holmes, was taken up for consideration: Resolved, That the nomination of Martin Van Suren

be recommitted to the committee on foreign relations; and that said committee be instructed to investigate the causes which produced the removal of the late sceretaries of the treasury and the masy departments, and of the attorney general of the United States, and also the resignations of the secretaries of the state and war departments; and report to the senate whether the ouls couses of that novel and important political movement are given in the letters of the president of the United States, addressed on that necasion to the several officers above enumerated; and, if not, what were the causes to which these removals and resignations ought to be aseribed. And also, whether the said Martin Van Buren, then secretary of state, participated in any practices disreputable to the intional character, which were designed to operate on the mind of the president of the U. States, and calculated to smooth the way to his appoint-

ment to the high office to which he has been nominated.

Resolved, That for the purpose of carrying into effect the objects of the preceding resolution, the said com-mittee be turther authorised to send for persons and papers, and to compel the attendance before them of such witness or witnesses as they may desire to examine on outh, touching the matter submitted to their investigation; and to report the same to the senate, with sheer on into the control aforesaid. A delate ensured and on making the hard senature and on the control aforesaid.

nsued; and, on motion by Mr. Hotmes, Ordered, That it lie on the table,

The senate then proceeded to consider the nomination of Martin Van Buren.

On motion that it lie on the table,

It was determined in the affirmative year 21, mays 21, follows: YEAS-Messra. B. H. Bibb, Chambers, Clay, Ewing,

Foot, Fre Lughuysen, Hayne, Hulmes, Johnston, Koigte, Miller, Muore, Naudain, Prentiss, Robbins, Ruggles,

Symmur, Silsher, Tominson, Tyler, Nats-Messra, Benton, Beown, Buckner, Dallas, Dickmon, Ellis, Forsyth, Grundy, Hendricks, H40, Kane, Kag, Mangum, Marcy, Robinson, Smith, Tazewell, Tutton, Troup, White, Wilkins.

The senate being equally divided, the vice president

determined the question in the affirmative. Tuesday, Jan. 24. On motion by Mr. Marcy,

The senate resumed the consuleration of the nomination of Martin Van Buren; and after debate, The senate adjourned.

Wednesday, Jan. 25. The senate resumed the consideration of the nomination of Martin Van Buren, and after debate.

The question was taken-will the senate advise and consent to the appointment of Martin Van Buren?-and was determined in the negative, year 23, nays 23, as tollows:

Jows: Yeas-Messra. Benton, Brown, Buckner, Dallas, Dickerson, Dudley, Ella, Forsyth, Grundy, Hendricks, Idl, Kane, King, Mangum, Matey, Robinson, Smith, Tazeserll, Tipton, Troup, Tyler, White, Wikins, Nats-Messra, Hell, Chemberts, Chay, Clayton, Farther Engl. Engl. Benton, Hearth Haller, Johnson, Particles.

ing, Foot, Frelingthoysen, Hayne, Holmes, Johnson, Knight, Miller, Moore, Nambain, Pomlexter, Robbins, Ruggles, Seymour, Silsbee, Sprague, Tomlinson, Waggaman, Webster. The senate being equally divided, the vice president

determined the question in the negative. So it was Resolved, That the senate the net advise and consent to the appointment of Martin Van Buren.

BEHATE IN THE SENATE

On Martin Van Buren's nomination. Remarks of Mr. Chambers.

Mr. Chambers said there were lew occasions which could accasion with him a more painful struggle between personal inclination and official obligations, than the one on which he was now called toact. With the moninee, said Mr. C. I have for years enjoyed personal and social relations that have lett impressions which it would gratify me to indulge by an expression of their kindest recollection, and this equanderation, with the fact of his frequent elevation to offices of high honor and dignity, and his

distinguished position in relation to the political parties | of a party amongst us, and has disclosed a total ignorance in the country, will connect with the subject an interest rarely occasioned by the nomination of an individual to The office itself to which he is nonmated is one so intimately affecting the peculiar duties and responsi-bilities of the executive magistrate by whom we are invited to confirm the appointment, as to require on the part of the senate a peculiar degree of indulgence. Reg-rding a diplomatic functionary as the confidential organ of the president, as selected with a previous knowledge of the particular duties to be performed by him, and with reference to his especial fitness for those duties, it is undoubtedly proper that the executive will, in regard to the agent, should not be controlled but from the most ing obstacles: to oppose it for light causes would lessen the weight of his responsibility and greatly inat home or abroad, can, in my view, be defensible only upon the atrong grounds of principle, having direct and immediate reference to considerations of a public nature.

In the deliberate counsel and advice which the constitution requires to give to the president, there is no proper place for the exercise of personal favoror ill will, for party prejudice or partiality. Sir, as one of the hum-blest members of this body, I can fearlessly appeal to my course here on all firmer occasions, and to the course of those with whom fusually act, with the most entire conence that it will evince a liberal charity toward the officers nominated, and a magnanimous surrender of peraonal and political prejudices on the alter of the public good, and a just regard to the prerogatives of the presi-dent.

With these opinions, Mr. President, it is searcely necessary to affirm, that in the vote which I shall give on this occasion, I have obeyed no other impulse than that of my judgment; but it will be permitted me to assert, as I do with the most unaffected sincerity, that my personal inclinations have rejuctantly witnessed, and gladly reverse the sentence which a high sense of official duty will compel me to record, with a deep and abiding conviction of its justness. I am altogether aware of the danger to which my vote may expose me from the malignant virulence of those who, themselves insensible to the honest and honorable feeling which subilues the petty passions of a contracted and factious partisan, are on all occusions inclined to attribute the conduct of others to the narrow minded policy which governs themselves.

Sir, I should be an unfit him servant of my state, treacherous to the high trust which I am charged to execute, and destitute of the courage necessary to protect the in-terests confided to my guard miship, if apprehensions like these could for a moment divert me from the path to which duty points. It would have afforded me great gratification to have listened to some more able advocate of the nation's honor, and to have been able to repose my vote on the causes more satisfactorily assigned by another. But the question is about to be taken, and I will not consent to allow an occasion to pass, without raising my feeble voice to redeem the tarnished reputation of my country. If other senstors accord with my opinion, it is essential, sir, that the vote of rejection shall go forth, associated with the reasons which influence it. Yes, sir, the honor and the dignity of this nation has-(and I think it demonstrable)—the heretofore ansullied diplo-matic character of the American republic has been stained, its lofty price has been humilisted-unnecessarily, wantonly humbled-by the man who is proposed as its guardian, and protector, and advocate; and as an American senutor, I am not content barely to put upon him the seal of reprobation in a secret session of this body. No, sir, let the American government-let the American people, proud of their national honor, know that no ruthless hand shall descente it with impundy; and let foreign nations, and all the world know, that even an American sceretary of state dure not pollute its ermine, Mr. President, I mean to resist the confirmation of

Mr. Van Buren's appointment exclusively on the ground that in his instructions to Mr. MeLane, on the subject of the colonial trade, he has violated the honor of the nation, has wounded its high and elevated character, has evinced a disregard to the interests of the American people—nay, has insulted that people in the person of their government, has attempted to promote the objects

of the proper principles and feelings which should adorn the diplomatist. For proof of these assertions I mean to rely exclusively on his own words, deliberately embodied in a state paper, and on those to which he has himself alluded, and found amongst the archives of the department of which he was then the head.

In directing the attention of the senate to a particular part of the letter of instructions from Mr. Van Buren to the American minister then at the British court, I disclaim the inference, that the residue of that letter, or that other letters of instruction contain no exceptionable matter. There are many positions which, on another occasion, it would be proper to dispute, and the whole temper and tone of the despatches breathe an air of humdity and concession, and conviction of error, and a suppliant entreaty of favor and notice, which no American citizen, who thinks and feels as I think an Ameriean freeman should do, can regard as the appropriate language of his government, pledged as it is "to ask nothing but what is right, and to submit to nothing that is

wrong, The portion of Mr. Van Buren's work, however, to which I will more particularly allude, is a part of his letter of instruction to Mr. McLane, dated 20th July,

1829. He uses this language:
"The opportunities which you have derived from a participation in our public councils, as well as other sources of intermation, will enable you to speak with confidence (as far as you may deem it proper and useful so to do) of the respective parts taken by those to whom the administration of this government is now committhe administration of this government is now commin-ted, in relation to the course herctofore pursued upon the subject of the colonial trade. Their views upon that point have been submitted to the people of the United States; and the counsels by which your conduct on the conduction is now directed are the result of the judgment expressed by the only earlily tribunal to which the late administration was amenable for its acts. It should be sufficient that the claims set up by them, and which caused the interruption of the trade in question, have been explicitly abandoned by those who first asserted them, and are not revived by their successors. If Great Britains deems it adverse to her interests to allow us to participate in the trade with her colonies, and finds nothing in the extension of it to others to induce her to apply the same rule to us, she will, we hope, be sensible of the propriety of placing her refusal on those grounds. set up the acts of the late administration as the eause of forfeiture of privileges which would otherwise be ex-tended to the people of the United States, would, under existing circumstances, be unjust in itself, and could not fail to excite their deepest sensibility. The tone of feeling which a course so unwise and untenable is calculated to produce, would doubtless be greatly aggravated by the consciousness, that Great Britain has, by order in council, opened her colonial ports to Russia and France. notwithstanding a similar omission on their part to accept the terms offered by the act of July, 1825.

You cannot press this view of the subject too earnestly upon the consideration of the British ministry. It has learnings and relations that reach beyond the imme-

date question under discussion."

Now, sir, when stripped of its verbiage and reduced to its plain import, what does the secretary of state here press so earnestly? That Mr. McLane, the minister, who had been a member of the political party of which the then president was the nominal head (and the secretary of state a most conspicuous supporter, with impoted anxiety to claim a reversionary interest in the chieftainship), that the minister, who had been a member of this schate, and in that character informed of the conflicting views of the different political branches or aubdivisions into which the great American lamily had been arranged, should stoop to avail himself of this personal intimacy with our family dissensions, to bress eur-nestly upon a foreign government the misconduct of one part of this family in the relations of our government with that foreign power, and the more amiable and kind feelings of another division of it. But is this all? No, see, it is earnestly pressed that the American government-the concentrated will of the whole American family, the only legitimate source of access to foreigners; ministration," should be bowed down in dishonor and in degradation at the feet of lord Aberdeen, the delegated but humble personation of the British monarch. Yes, sir, the unheard of, unparalleled, and most revolting experiment was to be made, (other supplications having failed to move the royal sympathy), how far an naving inited to move the royal sympathy), now har an unsparing combemnation of ourselves would disarm a British throne of its haughty, supercilious disdain of a just and an honest demand. I say, sir, it was novel and just and an honest demand. I say, sir, it was novel and unheard of. I repeat it. Let the past history of this proud republic be minutely interrogated-Ay, in the many political changes of its agents, which by the terms of its organization, it must witness, let it be sought; let the days of Adams, of Jefferson, of Madisun, Monroe, and the last Ailams, be dil gently inquired of. Sir, no voice responds to countenance this degrading, this disgraceful operation by which the government is humbled into a penitential confession of its transgressions to appease a loreign king or to moderate the wrath or concili

Not only, Mr. President, do the fair and unablulter-ated pages of American diplomacy refuse countenance to such miserable self-abasement, but, sir, the history of all the civilized nations of the earth stamp upon it the indelible character of gratuitous prostitution, unaided by precedent, unwarramed by any parallel. Sir, it adds to the deep condemnation which belongs to this subject, that it was as uscless and unproductive of gain as it was disgraceful in itself. Can the imagination conceive how benefit could possibly arise, or be supposed to arise, from an abject confession of "wrong," by repudsiting the claims of the government as "American pretensions" "explicitly abandoned by those who first asserted them" "not revived by their successors," who are directed by counsels that "are the result of the judgment expressed by the only earthly tribunal to which the late adminis-tration was amenable for its acts?" what possible advansration was ameniore for its acts: " what possible advan-tage, I ask, could be anticipated by the position of a prostrate suppliant, who, from the depths of degralation and abasement, should thus beseech a foreign diploma-tist, that would not be accorded to a civil and high minded application, based upon the suggestion, that however the American government was convinced of its claims to higher and other terms, it was yet willing, in a spirit of Irankness, and in an anxious desire to terminate old and sgitsted questions of disagreement, to waive the further prosecution of those claims, and thereby to evince the sincerity of its desire for an amicable adjustment? But, sir, I come now to that consideration which stamps upon this subject its peculiar character, which sets it off in colors of a still darker shade, and which must leave us to infer, that no mere want of manly, stern republican feeling of self-respect, not the unobserved prostration or careless disregard of national dignity and character, not alone a cold and callons insensibility to those feelings of cherished pride, of nice and delicate honor which kindles into active resistance at even the appearance of rebuke, but that some more latent motive of proposed effect, has caused this deep-dyed stain were not enough to how down the knee and supplicate forgiveness in terms of doleful regrets for wrongs, and anxious solicitude to repair them, as if it were not enough to open to a foreign power the history of our in-ternal disputes and political divisions, and to ask them to consider one party here as more kind in their feelings, more reasonable in their demands, more conciliating in their tone, and, therefore, more entitled to hope for the favorable notice of England, -as if the measure of our degradation was not to be accomplished by a graof our degradation was not to be accomplisated by a gra-tuitous concession of acknowledged injustice of "Ame-rican pretensions" "abandoned," the secretary has re-sorted, in the absence of other provocations, to misstatements of fact to create a condition of things, for the purpose of giving color to the fierceness and uncovert wrath which he aims at his political adversaries.

Sir, I say, and the diplomatic history of the nation Sir, I say, and the diplomatic instory of the national will prove, that the statement made in this particular charge of the secretary is false in fact,—yea, sir, doubly false. What is it? "The claims set up by them, and which caused the interruption of the trade in question,

the only authorised organ of communion with other na- have been explicitly abandoned by those who first as-tions—that this government, in the person of its ' late ad- seried them." Now, the first branch of the position is serted them." Now, the first branch of the position is utterly without foundation we sil know. The last setministration explicitly abandoned no claims which it set up, nor did any claims set up by it cause the interruption of the trade. The last administration was willing to negotiate on the subject of the trade, but the British government relused to meet their proposal, although made in the most extended and liberal feeling of compromise. Let the correspondence of our secretary of state, and the message of the president prove this. But unfounded as is that branch of the assertion, how manifestly and obviously more so, how profoundly destimte of even the shadow of correctness is the other, which declares that the miscalled "American pretensions" were first asserted by the last administration. Why, sir, does not every one know that in this respect the last administration did but pursue the settled and fixed purpose of the administration that preceded it, and that these "pretensions" did not even commence then? sir, all administrations had indulged these presentions. sir, all authinistrations had mindiged tilese preferables. The last administration, the first to assert them! Truly, this must have amused the intelligent diplomatist to whom the envoy was directed to make the communication.

No, I am wrong in this conjecture, for I believe from my reading of Mr. McLane's letters to his lordship, that the experiment was not made upon his ignorance of what every page in the diplomacy of his own country would have taught him. No, sir, this notion of their being first asserted by the late administration did not. I believe, find place in those letters. What "bearings and relations that reach beyond the immediate question" were in the view of the secretary, it is not for me to di-vine. He speaks in another part of these instructions of "the impropriety of suffering any feelings that find their origin in the past pretensions of this government, their origin in the past pretensions of this government, to have an adverse influence upon the present conduct of Great Britain." Sir, I do not mean to follow the secretary in his dark and mysterious language. The plain and undoubted import of that which unfortunately for the nation's character, can admit of but one reading, for the nation's character, can admit of out one reading, is enough for me. No man in my poor judgment can ask us to confide to his care the dignity of the nation and its honor, who has arrayed one political division of our people against the government. Sir, what is to be the result? How may this very doctrine recoil on himself? In the same terms may a British secretary for foreign affairs now say to him, "I do not respect your opinions as those of the American people; your president is about to witness the termination of his period of office; a new election is to be made; the people, the proomee; a new erection is to be mane; the people, on portional to pass upon his measures, may not soutain him. I appeal from your judgment, and submit the matter to their's, and until their sentence is recorded, I can only regard your administration as you have regarded the late administration." Yes, sir, these are legitimate consequences of such doctrine, involving a perfect and entire surrender of all consideration abroad. periest and entire surrenter of all consideration abroad, and all national pride at home. To an individual who has thus outraged the character properly belonging to a great and high-miniled nation of freemen, who has prostrated its dignity, and brought disgrace and dish upon its diplomatic reputation, I never ean advise the president to confide the preservation of its respect abroads and this first assertion of a course pregnant with every thing that threatens the pride, and dignty, and honor of the American republic, will, I trust, be marked by the most decisive reprobation of an American

Remarks of Mr. Clayton.

Mr. Clayton, of Delaware, rose to reply to some remarks of Mr. Smith. He said he rose under a deep sense of the responsibility which he owed to the senste and to the country on this question. He owed it to himself, to the people whose representative he was, and to the body of which he was a member, to state briefly the grounds upon which he should render a vote, withholding his advice to the president to make this appoint-

I agree, said Mr. C. with my friend from Maryland. (Mr. Chambers), in the view which he has taken of the instructions given by the late secretary of state to our

negotiation respecting the West India trade with the negotiation respecting the treat initial trace with the English nations, as the most humiliating to our national pride, that has occurred in the annals of our diplomacy. The minister was sent with instructions to fawn and beg as a boon, at the footstool of a foreign power, what we were entitled to as a right, and to abandon and denounce, as untenable "pretensions" what had been always before insisted upon as a matter of justice to our country. He was positively directed to consider his own government as justify available for "too long and too ten-erously resisting the rights of Great Britain," and par-ticularly for omitting to seept the terms offered by the set of parlament of July, 1825. He was directed to speak with confidence "of the respective Parla taken to speak with confidence of the respective parts that by those to whom the administration of this government is now committed," to lay before Europe the state of parties in this country, and to degrade and disgrace all the former administrations of our government, during which this right had been insisted upon, by entirely and uneconditionally withdrawing all our claims for justice on that country. He was told, in substance, to press upon England the state of our domestic and party differences at home, and he was admonished that this subject had bearings and relations which reached beyond the immebearings and relations which reached occount the imme-diate question under discussion. Sir, this minister did as he was ordered to do. He "entreated," and "app-pealed," and "begged," and "prayed," "regretted," and "solicited," and "hoped to be excused," and con-fessed we had been in the wrong, instead of repelling with dignity the insolence and sarcasm of the British with dignity the matterner and sarcasm or the present ministry, until the contemptible boon was "granted," and the national character effectually degraded. Let him take his place in the treasury for this but let not him who gave these instruction, succeed him at the court of St. James, again to "beg," and "solicit," and degrade us in the eyes of Europe, by laying before the world the state of our domestic differences at home. Let us say to the British government this day by our vote, that we never consented to the disgrace which has befallen us, and that we prefer to recall the minister who has dishonored us, to all the pretended benefits of this miserable negotiation. On this ground alone I will this day condemn this appointment, so far as my vote will go to effect it; and in so doing, as an American senator I say to England, that we will never consent to crouch for favors; and to all our ministers now and forever, that we will condemn every attempt to carry our family divisions beyond our own household.

Sir, the gentleman from Maryland, who last addressed us, (Mr. Smith), replied to similar objections made by colleague, that the president was alone responsible for these instructions, and not the secretary whose name was signed to them. Such has been the pretence for exonerating from all responsibility other persons charged with mal-administration of the government. Eith by preventing the disclosure here of impeachable mator by presenting the president as a shield to the party ter, or by presenting the pressurem as a since when ye charged with it, the responsibility of every inferior public agent is melted away to nothing. The gentleman, without defending the secretary or the minister in this negotiation about the West ludia trade, feels safe if he ean interpose the president as the party chargeable with the whole matter. But I will do the president the justice to say, that I cannot believe that he had read these instructions when they were given; and I hold the secretary answerable to his country for every public act per-

There is another topic, closely connected with the honor and interest of this nation, upon which the nominee before us has been strongly charged, and in relation to which I confess the wish that an investigation, lustituted before I took my seat this session, had been prosecuted to its termination before this day. I refer to the causes which produced the disruption of the late cabinet. I view that event as highly disreputable to our country; and I find that, according to the declarations of a gen-tleman who formerly edited a paper in the state of New York, advocating the president's administration, Mr. Van Buren privately informed him "that it, (the dissolution of the late cabinet), was eaused more by the conduct of the vice president and Mr. Ingham, who desired the retirement of gen. Jackson from office at the expi-

minister at the enert of St. James. I consider the late; ration of the first four years of his term of service;" thus in effect charging a conspiracy between these gentlemen to traduce the character of a chaste and virtuous woman, in order to produce the destruction of the eabi-net; and, (stating), that he Mr. V. B. had thought it better to retire in time, knowing that if he led the way, "the rest must fullow." This information is, I believe, now in the hands of a senator from Mississippi near me, (Mr. Poindexter), and it is said that the author present in the city, ready to bear testimony to the traith of it. However this may be, I must be permitted to say, the bean plain—having had (Mr. Poindexter), and it is said that the author of it is as one whose course here has been plain-having had nothing to do with either of the contending branches of the party in power-that I consider such a charge against the vice president as unjust, and utterly without foundation; while I hold that the declaration containing the charge contains also an unconivocal admission as to the true agent, and the motive of that agent, in the trans-action to which I have alluded. But, without reference to this, and many other matters which might be fairly pressed into this discussion as reasons for the vote which lam about to render, I content myself by resting that vote on the ground of the instructions given by Mr. Van Buren to our late minister to England, and the consequent dishonor to our diplomatic intercourse with that

Mr. C. coneluded by observing that on some more suitable occasion he might give his views on the sub-ject of that negotission; but he would prefer doing so in the face of the country to a secret discussion in the executive session of the senate.

Remarks of Mr. Foot. Mr. Foot said, since the ayes and noes are ordered, and our votes are to be recorded on this question, and especially after the friends of the nominee have opposed a resolution of inquiry into the conduct of the late se-eretary of state in the discharge of his official duties, and have desired the members to examine for themselves, I feel it a duty and exteem it a privilege that I may state in a lew words, and in plain terms, the grounds on which my vote will be given against this nomination.

Sir, the evidence of my own senses, of sight and hearing, since the commencement of this administration have ang, since the commencement of this authinistration have produced a thorough conviction in my mind, that, upon the true Jeffersonian principle, viz:—'18 he honest? Is he capable? Is he faithful to the constitution?—an imperious sense of duty on the question which will be proposed, viz "Will the senate advise and consent to the nomination?" will compel me to answer in the negative.

A resolution has been offered, to instruct a standing committee of the senate to inquire into the conduct of the nominee in relation to certain very singular and extra-ordinary occurrences. This has been opposed by his friends. It has been stated on this floor, that there are papers in possession of senators really to be presented note the senate, or to a committee, sufficient to convince any committee or any member of the senate, that the nominee has stated to some of his friends and partizans certain facts in relation to the causes of the explosion of

certain lets in relation to the causes of the explosion or the late cabinet, which, if percent is admitted, ought to prevent the confirmation of this nomination. The sensor irom New York, (Mr. Marey), states that "he does not believe these statements entitled to eredifi he does not believe that Mr. Van Buren has exer made such remarks or admissions to any person." senstor from Delaware, (Mr. Clayton), proposes to introduce the witness on this floor if desired. I shall not look for any admissions or confessions of this nominee to his friends or elsewhere which would eriminate himself. Since all these offers have been rejected, I ask no lurther evidence. In fact, for myself, no evidence of what my duty would require on an occasion like the present has been wanting since the letters of instruction to our minister to England were read in this body nearly two years since, and which I then pronounced diagraceful to the country.

The senator from Maryland, (Mr. Smith), has said "that for the instructions given by the secretary of state to a foreign minister, the secretary is not to be held responsible, the president alone is responsible." Sir, whatever may be the views of that senator, it is no rule for me. I hold a very different doctrine. In my opi-nion, there is not a senator on this floor, or any other this administration from its commencement, who is not fully convinced that there had been "behind the throne a power greater than the throne itself," which has directed most of its movements. I will not say there is legal evidence sufficient to convict a man before a court of justice; but there is enough to produce conviction in my mind, and I sincerely believe that general Jackson came to this place fully determined to remove no man from office, but for good cause of removal. I am fully convinced that the whole "system of proscription," owes convinced that the whole "system of proscription," owes its existence to Martin Van Buren! That the dissolu-tion of the cabinet was effected by his management and for his benefit! and that the hand of the late secretary of state may be traced distinctly in another affair, which has produced an alienation between the first and second of-ficers of the government; and also in relation to the present "improved condition of the public areas," and for the great abuse of the patronage of the government! sir, I hold him responsible for many acts which I can never approve. But, sir, this is not the first time that I have pronounced the instructions given by the late secretary of state, to Mr. McLane, then minister to London, and the negotiation with the court of Great Britain, on the subject of the colonial trade, to be degrading and disgraceful to the nation. Sir, it has ever been our pride and our glory, that in all our diplomatic intercourse with foreign mations, we have never admitted our country to be in the wrong! nor has she ever been proved to be in the wrong, before the late humiliating and disgraceful correspondence with the British government. This is the first time dence with the brising government. This is the with the in her whole history, in which she has ever begged favors of royal bounty. And holding, as I do, the author of those instructions responsible for this disgrace, I can never advise the president to send the author of such instructions, as a minister to represent the interests of this nation at the same court where she has been so disgraced-and I must record my vote against the nomina-

Remarks of Mr. Webster.

Mr. President: as it is highly probable that our proceedings on this nomination will be published, I deem it proper to state shortly the considerations which influenced my opinion, and will decide my vote.

I regard this as a very important and delicate ques-tion. It is full of responsibility; and I feel the whole force of all that responsibility. While I have been in the senate, I have opposed no nomination of the president the wate, there opposed no nomination of the president except for cause; and I have at all times thought that such cause should be plain, and sufficient; that it should be real and substantist, not unfounded or fanciful.

I have never desired, and do not now desire, to eneroach, in the slightest degree, on the constitutional powers of the chief magistrate of the nation. I have powers of the chief magistrate of the nation. I have heretofore gone far, very far, in assenting to nominations which have been submitted to us. I voted for the ap-pointment of all the gentlemen who composed the first cabinet. I have opposed no nomination of a foreign minister, and I have not opposed the nominations recently before us, for the re-organization of the administration. I have always been especially anxious, that in all ranters relating to our intercourse with other nations, the utmost harmony, the greatest unity of purpose, should exist between the president and the senate. I know how much of usefuluess such harmony and union are calculated to produce.

I am now fully aware, sir, that it is a serious, a very serious matter, to vote against the confirmation of a minister to a foreign court, who has already gone abroad; and has been received, and accredited, by the govern-ment to which he is sent. I am aware, that the rejec-tion of this nomination, and the necessary recall of the minister, will be regarded by foreign states, at the first minister, will be regarded by foreign states, at the first blush, as not in the highest degree favorable to the claracter of our government. I know, moreover, to what injurious reflections one may subject himself, especially in times of party excitement, by giving a negative vote, on such a nomination. But after all, I am placed here to discharge a duty. I am not to go through a formality, I am to perform a substantial and responsible duty. I am to advice the president in matters of appointment. This is we constitutional obligation, and I shall needer.

careful observer, who has noticed the proceedings of then, sir, that for one, I do not advise nor consent to this nomination. I do not think it a fit and proper nomination; and my reasons are found in the letter of instructions, written by Mr. Van Buren, on the 20th of mons, written by Mr. van Buren, on the 20th of July, 1829, to Mr. McLane, then going to the court of Eogland, as American minister. I think those instructions derogatory, in a high degree, to the character and honor of the country. I think they show a manifest disposition, in the writer of them, to establish a dutinetion between his country and his party; to place that party above the country; to make interest, at a foreign court, for that party, rather than for the country; to persuade the English ministry and the English monarch, that shey had an interest in maintaining, in the United States, the ascendancy of the party to which the writer belonged. Thinking thus of the purpose and object of these in-structions, I cannot be of opinion that their author is a proper representative of the United States at that court. Therefore it is, that I propose to vote against his nomination. It is the first time, I believe, in modern diplomacy, it is certainly the first time in our history, in which a minister to a foreign court has sought to make favor from being the representative of the whole country, to trom being the representative of its water country, to be the representative of a party. And as this is the first instance in our history of any such transaction, so I intend to do all in my power to make it the last. For one, I set my mark of disapprobation upon it, I contribute my voice and my vote, to make it a negative example, to be shunned and avoided by all future ministers of the U. States. If, in a deliberate and tormal letter of instructions, admonitions and direction are given to a minister, and repeated, once and again, to urge these mere party considerations on the foreign govern-ment, to what extent, is it probable, the writer himself ment, to what extent, is it probable, the writer nimsen will be disposed to urge them, in his one thousand op-nortunities of informal intersourse with the agents of that government?

I propose, sir, to refer to some particular parts of these instructions; but before I do that, allow me to which those particulars relate. That subject was the state of our trade with the British West India colo-I do not deem it necessary now to go minutely nies. I do not deem it necessary now to go minuser, into all the history of that trade. The occasion does not call for it. All know, that by the convention of 1815, a reciprocity of intercourse was established between us and Great Britain. The ships of both countries were allowed to pass, to and from each other respectively, with the same eargoes, and subject to the same duties. But this arrangement did not extend to the British West There, our intercourse was cut off. discriminating and retaliatory acts were passed, by England and by the United States. Eventually, in the sumnand and by the United States. Eventually, in the sum-mer of 1825, the English parliament passed an act, of-fering reciprocity, so far as the carrying trade was concerned, to all nations, who might chuse, within one

year, to accept that offer. Mr. Adams's administration did not accept that offer; first, because it was never officially communicated to it; secondly, because, only a few months before, a negotia-tion on the very same subject had been suspended, with an understanding that it might be resumed; and thirdly, because it was very desirable to arrange the whole matbecause it was very desirable to arrange the whole mat-ter, if possible, by treaty, in order to secure, if we could, the admission of our products into the British islands for consumption, as well as the admission of our vessels. This object had been earnestly pursued ever since the peace of 1815. It was insisted on, as every body knows, through the whole of Mr. Monroe's administration. He would not treat at all, without treating of this object, He thought the existing state of things better than any arrangement, which, while it admitted our vessels into which, which, while it aumitted our bester into West India ports, still left our productions subject to such duties there, that they could not be earried.

Now, sir, Mr. Adams's administration was not the first

to take this ground. It only occupied the same position which its predecessor had taken. It saw no important objects to be gained by changing the state of things, uny; I am to perform a substantial and responsible duty. less that change was to admit our products into the Brian to advise the president in matters of appointment. this West Indies, directly from our ports, and not burfulis is my constitutional obligation; and I shall perform dende with excessive duties. The direct trade, by Engit conscientiously and fearlessly. I am bound to say, I ish enactments and American enactments, had become closed. No British ship came here from the British; West Indies. No American ship went from us to those places. A circuitous trade took piace, through the is-lands of third powers; and that circuitous trade was, in

many respects, not disadvantageous to us.

In this state of things, sir, Mr. McLane was sent to
England; and he received his instructions from the seeretary of state: In these instructions, and in relation to this subject of the colonial trade, are lound the sentiments of which I complain. What are they? Let us ex-

amine, and see.

Mr. Van Buren tells Mr. McLane "the opportunities which you have derived from a participation in our pub-tic councils, as well as other sources of information, will enable you to speak with confidence (us far as you may deem it proper and useful so to dy), of the respective parts tuken by those to whom the administration of this government is now committed, in relation to the course heretofore pursued upon the subject of the colonial trade."

Now, this is neither more nor less than saying, "you will be able to tell the British minister, whenever you think proper, that you, and I, and the leading persons in this administration, have opposed the course heretolore this administration, have opposed the course hereconcepursued by the government and the country, on the subject of the colonial trade. He sure to let him know, that, on that subject, we have held with England, and that, in the our own government." Now I ask you, sir, if this be dignified diplomacy? Is this statesmanship? Is it patriotism, or is it mere party? Is it a proof of a high regard to the honor and renown of the whole country, or is it evidence of a disposition to make a merit of belonging to one of its political divisions?

The secretary proceeds: "Their views (that is, the views of the present administration) upon that point have been submitted to the people of the United States; and the counsels by which your conduct is now directed, are the result of the judgment expressed by the only earthly tri-bunal to which the late administration was amenable for

its acts."

Now, air, in the first place, there is very little reason to suppose that the first part of this paragraph is true, in point of fact. I mean that part which intimates that the change of administration was brought about by public disapprobation of Mr. Adams's conduct, respecting the subject of the colonial trade. Possibly, so much was then said, on a subject which so few understood, some degree of impression may have been produced by it. But be assured, sir, another cause will be found, by fubut be assured, any another cause will be found, by the three historians, for this change; and that cause will be the popularity of a successful soldier, united with a feel-ing, made to be considerably extensive, that the preter-ences of the people in his behalf had not been justly regarded, on a previous occasion. There is, sir, very lit-tle ground to say that "the only tribunal to which the late administration was amenable" has pronounced any judgment against it for its conduct on the whole subject of the colonial trade.

But, however this may be, the other assertion in the paragraph is manifestly quite wide of the facts. Mr. Adans's administration did not bring lorward this claim. I have stated, already, that it had been a subject, both of negotiation and legislation, through the whole eight years of Mr. Monroe's administration. This the secretary knew, or was bound to know. Why then does he speak of it as set up by the late administration, and afterwards abandoned by them, and not now revived?

But the most humilisting part of the whole follows:—
"To set up the acts of the late administration, as the cause of forfeiture of privileges, which would otherwise be extended to the people of the United States, would under existing circumstances, be unjust in itself, and could not fail to excite their deepest sensibility."

So, then, Mr. President, we are reduced, are we, to the poor condition, that we see a minister of this great republic instructed to argue, or to intercede, with the British minister, lest be should find us to have forfeited our privileges; and lest these privileges should no longer be extended to us! And we have forfeited those privi-teges, by our misbehaviour, in clusing rulers, who thought better of our own claim, than of the British! Why, sir, this is patiently submitting to the ilomineer-ing tone of the British minister, I believe, Mr. Huskis-son-[Mr. Clay said, "no, Mr. Canning."]—Mr. Can-

ning, then, sir, who told us that all our trade with the West Indies was a boon, granted to us by the indulgence of England. The British minister calls it a boon, and of England. The British minister calls it a 500m, and our minister admint it is a privilege, and lopes that his royal majesty will be too gracious to decide that we have forfeited this privilege, by our mishchaviour, in the choice of our rulers! Sir, for one, I reject all idea of holding any right of trade, or any other rights, as a privilege or a 500m, from the British government, or any other government.
At the conclusion of the paragraph, the secretary says,

"you cannot press this view of the subject too curnestly upon the consideration of the British ministry. It has bearings and relations that reach beyond the immediate

question, under discussion."

And adverting, again, to the same subject towards the close of the despatch, he says, "I will aid nothing as to the impropriety of suffering any feelings that find their origin in the past pretensions of this government, to have an adverse influence upon the present conduct of Great Britain."

I ask again, Mr. President, if this be statesmanship? if this be dignity? if this be elevated regard for country? Can any man read this whole despatch, with candor, and not admit, that it is plainly and manifestly the writer's object to gain credit with the British ministry for the present administration, at the expense of the past? Certainly, this object appears to me as plain and visible as

the sun at noon.

Lest I should do the sceretary injustice, I will read
all that I find, in this letter, upon this obnoxious point.

These are the paragraphs:

"Such is the present state of our commercial relations with the British colonies; and such the steps by which we have arrived at it. In reviewing the events which have preceded, and more or less contributed to, a result so much to be regretted, there will be found three grounds upon which we are most assailable; 1st, in our too ong and too tenaciously resisting the right of Great Britain to Impose protecting duties in her colonies;

2nd, &c.
"The opportunities which you have derived from a sources of information, will enable you to speak with confidence, (as far as you may deem it proper and useful so to do), of the respective parts taken by those to whom the administration of this government is now committed, in relation to the course heretofree pursued upon the subject of the colonial trade. Their view upon that point have been submitted to the people of the United States, and the counsels by which your coulout is now threeted are the result of the judgment expressed by the only earthly tribunal to which the late administration was amenable for its acts. It should be sufficient that the claims set up by them, and which caused the inter-ruption of the trade in question, have been explicitly abandoned by those who first asserted them, and are not revived by their successors. It Great Britain deems. it adverse to her interests to allow us to participate in the trade with her colonies, and finds nothing in the ex-tension of it to others to induce her to apply the same rule to us, sie will, we hope, be sensible of the propriety of placing her refusal on those grounds. To set up the acts of the late administration as the cause of forfeiture of privileges which would otherwise be extended to the people of the U. States, would, under existing circumstances, be unjust in itsell, and could not fail to excite their deepest sensibility. The tone of feeling which a their deepest sensibility. course so unwise and untenable is calculated to produce, would doubiless be greatly aggravated by the conscious-ness that G. Britain has, by order in council, opened her colonial ports to Russia and France, notwithstanding a colonial ports to Russia and France, notwithstanding a similar omission on their part to accept the terms offer-ed by the act of July, 1825. You cannot press this view of the subject too carnestly upon the consideration of the British ministry. It has bearings and relations that reach beyond the immediate question under discussion."

"I will add nothing as to the impropriety of suffering

any feelings that find their origin in the past pretensions of this government to have an adverse influence upon the present conduct of Great Britain."

Sir, I submit to you, and to the candor of all just men, if I am not right in saying, that the pervading topic,

of past pretensions of our own country, reflections on the past administration, and exultation, and a loud elaim of merit, for the administration now in power. Sir, I would forgive mistakes; I would pardon the want of information; I would pardon almost any thing, where I saw true patriotism and sound American feeling; but I eannot forgive the sacrifice of this feeling to mere party. I cannot concur in sending abroad a public agent who has not conceptions so large and liberal, as to feel, that in the presence of foreign courts, amidst the monarchies of Europe, he is to stand up for his country, and his whole country; that no jot nor tittle of her honor is to some to harm in his hands; that he is not to suffer others to reproach either his government or his country, and far less is he himself to reprosch either; that he is to have no objects in his eye but American objects, and no heart in his bosom but an American heart; and that he is to forget self, to lorget party, to forget every sinister and narrow feeling, in his proud and lofty attachment to the republic, whose commission he bears.

Mr. President, I have discharged an exceedingly unpleasant duty, the most unpleasant of my public life. But I have looked upon it as a duty, and it was not to be shunned. And, sir, however unimportant may be the opinion of so humble an individual as myself, I now only wish that I might be heard by every independent freeman in the United States, by the British minister, and the British king, and by every minister and every crowned head in Europe, while standing here in my place, I pronounce my rebuke, as solemnly and as de-eisively as I can, upon this first instance, in which an American minister has been sent abroad, as the representative of his party, and not as the representative of his country.

Remarks of Mr. Holmes.

Mr. President: In offering these resolutions, [proposing an inquiry, &c. ! I am governed by the expectation that the inquiry proposed by them will lead to disclosures in regard to transactions which are still involved in considerable mystery. Public opinion is not yet settled down as to the true causes of the late explosion in the cabinet. That a cabinet of the president's own selection, and whose official duties hail, by his own ailmission, been performed to his entire satisfaction, should so soon be dispersed, is an event so extraordinary in the history of this country, that the public, and especially the senate, have a right to be informed of the causes which led to, or operated in, producing such a strange The people, whose money has been squandered to derange, and re-organize this cabinet, are interested in this inquiry. If the gentleman whose nomination is now the subject of consideration, has in any way contrived or contributed to bring about the event, it would go far to disqualify him for the office to which he has been nominated, and if not, it is due to him that the in-quiry should be had. Suspicion rests heavy on him, and, when that is the case, it is always good ground for investigation. I did expect that his friends, instead of investigation. I did expect that his frience, instead of objecting, would have consented to, and insisted upon the investigation proposed by the resolution. Is it because they fear the result? They say not—but the inquiry proposed is not in terms what it should be, I, air, have never insisted that the form of the resolution should be preserved. It I can obtain the object, I will put them in any shape which may be agreeable to a majo-rity of the senate. That this must be an ex parte inquiry, and when Mr. Van Buren is absent at such a distance that he cannot be informed of the investigations which affect his character, I can only say, that it a man will consent to take an appointment in the recess, knowing that the senate must pass upon him in his absence, he takes the hazard of an ex parte investigation, or is willing to trust his case in the care of his friends. Sir, if it be otherwise, the senate is entirely precluded from any inquiry into his merits until he chooses to return, or the president is pleased to recall him.

For myself, sir, I am opposed to this nomination on other grounds, and I propose this inquiry rather to sa-

through the whole, is, not American rights, not Amer- in the eyes of foreign nations. He has surrendered the rican interests, not American detence, but denunciation rights of this country to Great Britain to sustain his parrights of the country to dreat or than to statum its graced, and I would it should be the last. And, if had no other reason, his appointment in the recess, to fall a vacancy created in the recess, is enough for me. I have always disapproved sending off a minister in the recess of the senate, without the most imperative reasons. It is competling the senate to approve the sppointment, or subject us to the loss of the outfit. I would at that expense, break up the practice-it would be an essential saving. It is, moreover, evading that constitutional check which the senate were designed to have in the appointment of ambassadors, and in our foreign negotiations. I would protect the exercise of this power by the senate, and never surrender it.
It is objected to these resolutions that they are not

sufficiently specific. Sir, it is not expected that a motion for inquiry will be drawn with the same precision as an indictment. If you can designate the acts precisely, there is no necessity for inquiry. It is for want of a full knowledge of the particular acts that inquiry has become necessary. We know full well that the political movement referred to in the resolution has been differently explained. Mr. Van Buren himself could not remain without a diefranchisement. What particular disfranchisement that was; the public has not yet learnt. We would like to know what privileges of a free citizen he was compelled to surrender, as the price of his office, and whether that surrender was any way connected with the removals and the other resignations. Will any one say, or pretend, that a participation in that extraordinary affair would not affect his qualifications as minister? Sir, who ever brought about that explosion, is unfit for any office. The whole nation was convulsed by it, and a stain is east upon this administration which can never The exchange of officers, too, by the late be effaced. minister, and the appointment of Mr. Van Buren to minister, and the appointment or mr. von sures or succeed him, and so soon after this explosion, farmishes a sufficient ground of inquiry. The late minister had been out but a short time: he had searcely become semantical at the court where he was sent. There should be strong reasons for recalling a minister, and supplying his place with a new man, and the expense should never be incurred unless the public good manifestly demanded it. This looks much like making provision for a man who, from mysterious circumstances, had been compelled to quit the office which he had held; and I know no principle in this government, which will justify creating offices or vacancies to provide for favorites, or to reward a partisan.

Do the friends of Mr. Van Buren object to the inquiry? They say not it is the resolutions to which they object. And yet their reasoning goes against any inquiry. But if the objection is to the manner or extent of the inquiry, why not propose to amend the resolutions, or offer one of their own! Indulging in objections which go to the form, and which seem to be captious withal, indicates strongly a wirh to suppress all inquiry. It is objected, that the investigation proposed may disclose impeachable matter. This is always the bugbear to impleatance mister. This is slawly at the outgoon to frighten us away from all investigation into the conduct of any man, and to place every officer of your government beyond the reach of responsibility. But really it seems to me to be exceedingly out of place here. We may find matter that would impeach Mr. Van Buren! How? In what office would be be imprachable? Not as secretary of state, for he is out of that office. Not as minister to Great Britain, for in that office he, as yet, has done nothing. How, then, I repeat, can we possibly be in any such danger? It does appear to me, that ther, in answer to this hackneyed objection, as to impeachable matter. The senate have a present executive duty to perform: to ascertain whether Mr. Van Buren is a proper person for minister to Great Britain, in order to determine whether we can give the president our advice and consent to his appointment; and in this we are told that we are restrained from inquiry, lest this executive duty which we are now to perform, shall conflict with a future judicial duty which we, by possibility, may tins others, although on this point I should prefer to be have to perform! Sir, it is enough to state the objection satisfied. I am against him, because he has humbled us to show its manifest absurday. And where does this

argument of the gentleman lead us? It shuts the door of inquiry forever, and every man, now in office, nominated for another, must be "taken and deemed" worthy, lest the senate should stumble upon impeachable matter!

I find, therefore, that senators who profess to court inquiry, urge objections, which would defeat all investigation. It must be impossible, then, to frame any reso-lutions, which would meet their views; and why should I further modify these to please them, when they are de-termined to be satisfied with nothing?

Sir, as to the disgrace attached to these resolutions, I allow no man to judge for me, what is honorable or dis-graceful. That they refer to a disgraceful transaction, I readily admit. But I have yet to learn, that, if the administration descend to scandalous transactions, that it is beneath the dignity of this senate to call them to actount

Note .- It is, perhaps, due to the public, that I should, to prevent false impressions, explain the reasons why the resolutions which I offered, were laid on the table, and not afterwards taken up and acted on. The resolutions were objected to by some of Mr. Van Buren's friends, and the form of them by some of those who eventually voted against him. But several of his friends had in debate urged arguments which would go greatly against any resolutions of inquiry upon this nomination. Such as the absence of the person nominated, and the danger of finding impeachable matter, &c. To these senators I realily perceived that no inquiry would be acceptable. Of those who finally voted against the nomination, some wished the resolutions modified. give time to frame them so as to suit all who wished inquiry, I moved to lay the resolutions on the table.— Whether any resolutions of inquiry could have been framed that would have met the approbation of the friends of Mr. Van Buren, is not for me to say. After this, I was asked by a member, if I intended to call up the resolutions, or "bill of indictment," and if I did, whet! My answer was "Not till the grand jury is full, if at all." Then, turning to a senator from New York, I informed him shatinetly that I would let him know to-morrow whether I should call up the resolutions or not; and, if it should be my determination to call them up, he was to move to go into executive busi-

ness, for the purpose of discussing and deciding them. The next morning I drew a substitute for the first resolution, as follows:

5. That the nomination of Martin Van Buren, as minister to Great Britain, be referred to a select committee; and that the committee be instructed to inquire what were the causes of the removal from office of the late secretaries of the treasury and navy, and the attorney general, and of the resignations of the late secretaries of state and war; and whether Mr. Van Buren had any, and, if any, what agency, in bringing about the change of the late cabinet.

"And, also, to inquire whether Mr. Van Buren did resign his office as secretary of state, under a promise, or understanding, that he was to be appointed minister to Great Britain; and with a further understanding with the late minister to Great Britain, that he was to be provided with the place which he now enjoys."

I showed this to several of my friends, who were satisfied with it. But others preferred the original resolutions; and, believing no lorin could be ilevised by me which would be acceptable; and that the facts sought to be disclosed by them, might be ascertained without the intervention of a committee, I informed the senator that I should not call them up, in these words, which I wrote down at the time: "I am satisfied that the lacts to be inquired into by the resolutions which I offered on the nomination of Mr. Van Buren, can be ascertained without a committee; and, therefore, I shall not eall them up." Thus leaving the friends of Mr. Van Buren to prosecute the inquiry by a committee, or to permit the facts to be ascertained by each senator for J. HOLMES. himself

Remarks of Mr. Clay.

Mr. Clay said, after the most deliberate consideration, I regret that I find myself utterly unable to reconcile with the duty I owe to my country, a voic in favor of this nomination. I regret it,

because in all the past strife of party, the relations of ordinary civility and contrety were never interrupted between the gentleman whose mane is before us, and myself. But I regard my control to the people of the United States, and to the honor and character of the fire government, as paramount to every private conditions to the people of the United States, and to the honor and character of their government, as paramount to every private conformation of the control of the contro ant of the senar, I do not admit that if err ought to be does with our the existence of some special sease to be communicated to the senate. We have received no communication of the existence of any auch special cause. This view of the matter might not have any such special cause. This view of the matter might not have it is sufficient to authorite by a rejection of this nonination; but it is sufficient to authorite by a rejection of this nonination; but it is sufficient to authorite by a repeated on the form of the senate. I consider the properties of the senate of the senate is a sufficient to authorite by the senate of the senate. I consider myself, therefore, not committed by the separate and united myself, therefore, not committed by the separate and united myself, therefore, not committed by the separate and united myself, therefore, not committed by the separate and united myself, the senate and not a very long time before it was to ascemble.

My main objection to the confirmation of his appointment, My main objection to the confirmation of his appointment, arises out of his instructions to the late minister of the United States at the court of Great Brianis. The strenttion of the sensite has been atcready called to parts of those instructions; but there are other parts of them, in my opinion, highly reprehensible, we called the parts of them, in my opinion, highly reprehensible are other parts of them, in my opinion, highly reprehensible vents which have preceded, and more or less contributed to execute which have preceded, and more or less contributed to events which have preceded, and more or less contributed to one which we are most arealistic. First, in our test long and the owner of the right of Great British to impose protections of the property of Great British to impose protection of July, 1823, after the subject had been brought before Company, and deliberately acted upon by our government.

\* You will therefore we the property of powersing yourself fully of oil of July, 1823, after the subject non over ormages area. "You and deliberately acted upon by our government." "You will therefore see the propriety of possessing yourself fully of all will therefore see the propriety of possessing yourself fully of all the explanatory and mitigating circumstances connected with them that you may be enabled to obvine, as far as practicable, the understood the propriety of the property of the propriety of the property of the pr

toin."

On our side, according to Mr. Van Buren, all was wrong, on the British side, all was right. We brought forward noshing has right to the British government asserted no the other hand a clear and incontestible right. We erred in too tenaceusly and too long insiting upon our pretentions and not yield at once to the force of their just demands. And Mr. McLane was considered to the street of the party driven from power, to have an adverse influence to wards the American party now in power. Sir, was this becoming language from one independent nation to another! Was it promises the high, unsulfied, and dignified character of our previous with the high, unsulfied, and dignified character of our previous diponary! Was it not, on the contrary, the language of an humble vasail to a proud and haughly lord? Was it not provided and degrading the American eagle before the British land. American government so unjustly put forward and so pertinant American government so unjustly put forward and so pertinant of the British Massiend. The Americans government to ought to be admitted into the British Massiends, on the street create as similar produce of the British Massients and the street create as similar produce of the British Massients and the street create as similar produce of the British Massients and the street create as similar produce of the British Massients and the street create as similar produce of the British Massients and the street create as similar produce of the British Massients and the street create as similar produce of the British Massients and the street create as similar produce of the British of the street create as similar produce of the British of the street create as similar produce of the street create a

tained. The American government contended that the produce of the United States ought to be admitted into the British West Indies, or the United States ought to be admitted into the British West Indies, or the tenter as a timing produce of the British American Control of the British produce of the British Indies of the British West Indies's fair competition with the produce of Canada; and that British preference given to the Canadian produce in the West Indies would draw from the western part of New York and the norshern part and Quebex, and grining employment to suggranding Montreal and Quebex, and grining employment to suggranding Montreal and Quebex, and grining employment to the granding Montreal and American shipping.

This was the offence of the American government; and we are at this moment realizing the critis which it foresaw. Our produce at this moment realizing the critis which it foresaw. Our produce the state of the American granting the state of the American product from the Atlantic ports, arrives at the British West a shipped from the Atlantic ports, arrives at the British West and the control of the Atlantic ports, arrives at the British West and the produce, freely admisted.

The general rule may be desired, but make the exercise a single admitted that every nation has a right.

lations; but, like all general rules, it must have its exceptions.

And the relation in which Great Britain stands to her conjuguals. and West India colonies, from which she is separated by a vast sea, and the relations in which the United States stand to show colonies, some of which are in juxtaposition with them, constitute eolonies, some of which are in ju

It is true that the late administration did authorise Mr. Galakie to treet with Great Britain upon the basis of the rule which as been stated, latt it was with the expers understanding that some competent provision should be mode in the treaty to guard against the Britain monopoly of the transportations and the Britain monopoly of the transportations are supported by the Britain monopoly of the transportation and the United sing through Camanopoly of the transportation and which they have heretoffer made of the admission of their productions into Britain colonies at the same, and no higher rate of doty, as similar production are chargeable with when imported more descending the St. Laukender and the Servet,"

There was no abundanced of our right, no condemnation of the

There was no absorbers of our right, no condemnation of the There was no absorbers of our right, no condemnation of the There was no absorbers of the transport of the transport

friendly disposition."

Now, sir, keeping sight of the object which the late secretary of state had in view, the opening of the trade with the British colonies, which was the best mode to accomplish it? To acid our minister, to prostrate himself, as a supplicant, before the British himself, as a supplicant, before the British himself, which was a supplicant, before the British the best considered to the second section of the British himself, as a supplicant, before the British himself, as a supplicant, before the British himself, as a supplicant, before the British himself, as a supplicant which we cannot sustain, and they too long and too tennecissally adhered to them. Your majesty was always in the right law we hope that your majesty himself, which is the supplicant of the American power, but those how we had not not in presention of the American power, but those how we will be reactionally and the supplicant of the property of the supplies o your majesty; and that we when out of power, were on the side of your majesty. And we do humbly pay that your majesty, taking all mitigating circumstances into consideration, will graciously go conderend to extend to us the privilege; of the Rritish act of parliament of 1825, and to grant us the boson of a trade with your factors, the privilege of the Rritish act of parliament of 1825, and to grant us the boson of a trade with your factors, the British monster in the manly and digminder attitude of a minister of this republic, and, abstaining from all endemnation, to have place of the withdrawal of our former demand upon the ground of concervion, in a spirit of annity and compromise.

But the late were tary of state, the appointed organ of the American people to unificate that in the state of the state were the state of the state, the spinit of origin and the American pools to unificate that in the state of the state were the state of the s

own country in the wrong and the British government in the t. He endeavored to attach to the late administration the disright. right. He endeavore to attach to the late administration the ore-eredit of bringing forward unfounded pretensions, and, by declaim-ing them, to propisitate the favor of the British king. He says that the views of the present administration, upon the subject of the colonial trade, "have been submitted to the people of the U. that the views of the present administration, upon the subject of the colonial trade, whave been submitted to the people of the U. States; and the counted ready, where her submitted to the people of the U. States; and the counted by which your conduct is now directed, are the result of the judgment expressed by the only centrally trade and the people of the people ree's administration, when Mr. Rush was our ionister at London. He opened a long and protracted negotiation upon this and other topics, which was studended in the summer of 1824, principally because the parties could not agree on any satisfactory arrangement of this very colonial question.

ment of this very colonial question.

Thus, at least, to a administrations, prior to that of Mr. Adams, bad brought forward this identical claim or preferrition which his was the property of the property of

our government." Never was there a more unfounded charge brought forward by any native against his own government; and never was there a more unwarranted appleay set up for a Joergin government; and a plain historical narrative will demonstrate the

government; and a plain historical agreative will obemoantate to truth of both these proposition. It has be a siready suited the negotiation of Mr. Rush. It has be a siready suited the negotiation of Mr. Rush is the best of the negotiation of Mr. Rush product in 1848, with an understanding between the two governments that it was to be recommended to the recommendation of Early in July, 1821, which a government for Early in July, 1821, which government have the recommendation of Early in July, 1821, which government have the recommendation of Early in July, 1821, which government have the recommendation of the following the similar to the following the similar to the American government; during the late adoministration, the the American government; and we only obtained it through other channels. Now, if it had been the production of the government, but recommendation in ought to have communicated that purpose to this government, and, at the same time, the set of parlament, a supplanting and substituting the agreement. But it were did communicate such purpose. The set itself definition of the supplementation of uth of both these propositions. It has been already stated that the negotiation of Mr. Rush

tion as to the meaning or intent of the act of July, 1823.

Mean time, in March, 1825, more than its Gontha after the passage of the act of parliament, Mr. Vaoghan notified the department of state, that he had "received intrinctions from his majesty's government to acquaint you that it is until the parliament of the control of the con thems. If it had been intended to withdraw that, no since could have been more suitable to sumonnee that intention; but no such annunciation was made. Mr. Vaugham was informed that we also would prepare for the negotiation, (including, of course, the colonial queriend), and Mr. Gallatin was recommended that the colonial queriend, and Mr. Gallatin was the compared that the colonial queriend, and the colonial queriend, and the colonial queriend that queriend that queriend. On his arrival in England, in a new part of 18th, he was told by the Birtish government that they would not negton the passage of the act of July, 18th, not to negotiate about from the passage of the act of July, 18th, not to negotiate about it; and he was informed by the voreatie Mr. Cambing, that as we had then offered, we were then too lard.

Such is the state of the case on which the late secretary of ate so authoritatively pronounces judgment against his own go Such is the state of the case on which the late secretary of state to authorisizely pronouncer judgment against his own of vernment for "amilting to accept the terms off-red by the set of parliament of Lhy, 1823". He and desired, yet of the set of own government." It was brought before congress in the session of 1823-6, not at the instance of the American executive, but upon the upontaneous and ill-judged motion ut the gentleman from M-yrland, (Mr. Smith), and Mr. Gallatin was notomed that if the bill proposed by that gentleman had been passed, it would have been usualisationty to the Briting povernment.

only proposed by that generation on every parsec, it was as to be a considered by the control of the control of

to Mr. McLane, stained the character of our co derived from his negotiations, whatever they may have been inte

# NILES' WEEKLY REGISTER.

[VOL. XLI. WHOLE No. 1,064 FOURTH SERIES.] No. 24-VOL. V. BALTIMORE, FEB. 11, 1832.

THE PAST-THE PRESENTS FOR THE FUTURE.

## EDITED, PRINTED AND PUBLISHED BY H. NILES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN ADVANCE.

For miscellaneous articles, see page 434.

The report made to the N. York convention by the committee on the manufactures of iron and steel, was published as an ADDENDUM to the present volume of the REGISTER, and we now forward a whole sheet of other reports to be ailded to that—and next week exneet to issue another sheet that will conclude the report on sugar, and get-in all the rest of the reports which have passed through the hands of the executive committee.

We continue the debate on Mr. Van Buren's nomination, and regret our inability to conclude it-for every boily will desire to see the whole discussion and all persons want it for reference; not because of any intringic importance in the matter strelf or the object of it, but on secount of the high prevailing excitement among political parties, and the general ducussions or proceedinga that will follow the rejection by the senate. We now publish the speeches of Messrs, Smith, Poindexter, Forsyth, Frelinghuysen and Moore, and have yet ter, rorsyin, rreungaugers and Moore, and have yet on hand those of Messrs. Marcy, Ewing, Miller, Web-ster, (2d speech), Brown and Hayne. If more are not furnished, we shall conclude the debate in our next, none of them being very long, except Mr. Miller's.

A very curious last is stated by Mr. Poindexter—that

Mr. Van Buren was fixed upon as the successor of Mr. McLane, before the dissolution of the old cabinet,

PROCEEDINGS OF THE SENATE.

ON THE NOMINATION OF MARTIN VAN BUREN.

Remarks of Mr. Smith.

Mr. Smith had spoken in the debate on the nomination of Mar-

tin Van Buren several times. The whole of his remarks are, however, embraced in the following speech:

Mr. President,—I have said, "that the secretary of state is not Mr. President—I have said, "that the secretary of state is not reportable for instructions given by order of the president;" that the president is the only responsible person known to the conditation. In England, agreeably to its constitution, the king can do no wrong, and his advisers are held responsible to parliament. Our constitution is different, as I understand it. The law which every secretary has different and it continue to activate the continue to activate

which every secretary has sated, and must continue to act. This law says, "the secretary for furging affect sellowed on, and ascending the president of the United States, (egreen) and ascending the president of the United States, (egreen) to the constitution), relative to correspondences, commissions or instruction to or with public ministers or counsistens from the United States, or to regularize recovery the state of the said department, in such manner as the president of the States of the said department, in such manner as the president of the United States shall, from time to time, "serder or instruct." Such, Mr. President, is the land draft, and whatever he direct, (of agreeably to the constitution), the secretary, under the oath takes, must perform. What is the cash! Well and faistfully to execute the frast committed to him." What is that trust, Of decease the states of the president in all cases where I have, Mr. President, been thirty-nine years in congress, and his is the fair to easier that we were heard any other construction arisasily urged, than, "that the instructions group of the constitution arisasily urged, than, "that the instruction group of the constitution arisasily urged, than, "that the instruction group of the constitution arisasily urged, than, "that the instruction group of the constitution arisasily urged, than, "that the instruction group of the constitution arisasily urged, than, "that the instruction group of the constitution arisasily urged, than, "that the instruction group of the constitution arisasily urged, than, "that the instruction group of the constitution arisasily urged, than, "that the instruction group of the constitution arisasily urged, than, "that the instruction group of the constitution of the president, of the president, of the president, of the secretary int, and how could in otherwise be considered? I come, and the secretary, from Mr. Adam, to request you to say, that he discover, it, and how could in otherwise be considered? I come, and the secretary, from Mr.

port, as everely as the report reflected upon Mr. Gerry for re-maining in France. I was called to order three times. I their saked the speaker in what respect I was out of order. He repli-ed, "you must consider the report as the act of the presiden-fur the executive had made it his by sending it to the house." I answered, that the president disavoxed it, and therefore I could fog the executive had made it his by sending it to the house."

I answerd, that the president disavowed is, and therefore I could not treat the report as the president. I look my seat. An appeal from the speaked whereign sending the speaked with the president and the president and president and the speaked whereign sending the speaked whereign sending the speaked with the speaked whereign sending the speaked whereign sending the speaked whereign sending the speaked whereign sending foreign relations.

to be particularly well informed in every thing that relates to our foreign relation. Maine [Mr. Helmer] has said that "Mr. McLand was sent to bow and erringe at the freet of the British minister."

A senstor from Maine [Mr. Helmer] has said that "Mr. McLand was sent to bow and erringe at the freet of the British minister."

American, the son of a distinguished offleet of the revolution, bow and cringe at the freet of any man. I can saure that sensitor that Mr. McLand is not made of such plaint materials. Not, we have a considered what this country required. The ministry tried to avoid a negotiation as they did with Mr. Gallatin. But, it, his firmness good frashiness conquered the reluctance of the ministry to enter into a registration as they did with Mr. Gallatin. But, it, his firmness and frashiness conquered the reluctance of the ministry to enter into a registration. It is not to the sain of partiament of July, 1885, in the cases of France, Russia, and Spain; they could not, therefore, in justice, he assured, reluce a similar departure, in the deemad of equal justice to the United States. It is frashly told them that the sain in the sain of the sain and that if not indeliged in a negotiation, he would return home. Call you this, bowing and erringing at the feet of the British and that if not indeliged in a negotiation, he would return home. Call you this, bowing and erringing at the feet of the British ministry. It is there any cringing in the feet of the British for the sain and that if not indeliged in a negotiation, he would return home. Call you this, bowing and erringing at the feet of the British for the sain and the sain of the sainter of the sai A senstor from Maine [Mr. Holmes] has said that "Mr. McLand

"Since the above speech was delivered, I have seen and converned with the president, and have been authorized to any control of the president of the president of the president of the president of the set of th

<sup>&</sup>quot;We have also a second speech of Mr. Clay, in reply to Messra.

Ferzyth and Smith. It would have been preferred as a reply,
had it been received in time.

Vol. XLI.—Nu. 30.

there were, no town and a private them as a part of the control of

and a green by mu of an induce. In recept of the actuary and merci.

The senator from Kentucky, (Mr. Clay), has charged Mr. McLane with having done injury to the institution of the Mr. Clay of the Mr. Clay in the process of the control of the Mr. Clay in the process of the Mr. Clay in the process of the Mr. Clay in the American in the Control of the Mr. Clay in the American in the Mr. Clay in th The senator from Kentucky, (Mr. Clay), has charged Mr.

as a grievence.
The sensure, (Mr. Clay), also complains that the instructions state, 'that the late administration had obendoned certain pretensions." The sensor administ that these preterisions had been walred. The senstor strong Grorgia. (Mr. Forsyth), has contended that there is no difference in substance between these words. Heave this grave question to be actively by those learned sensor, and will proceed to show what those pretensions were, and which, I can hardly restrict nayed! from protouncing, were purifie in the cutterior.

[322] concrete was informed, that an

tora, and was present an appell from pronouncing, we which, I can hardly retrain myself from pronouncing, we which, I can hardly retrained to the commerce of the United States. In consequence, and expassed, understand to the colonial ports to the commerce of the United States. In consequence, and expassed, understand the president, in case the act of parlia-states to British versels, by his proclamation. The act of parliament was decorded studies of parliar, as tensor of the commerce, and I thinks, contrary to patient, as tensory circular issued, ofference with the commerce, and thinks, contrary to patient, as tensory circular issued, ofference with the alien tomage and discriminating duties. This corder was remonstrated against, (I thinks, by Mr. Vaughan. The trade, however, went on uninterrupted. Congress met, and a bill thanks, and the state of the contrary of th soids was remonstrated against, (I think), by Mr. Yaughan. The trade, however, went on unitorrupted. Congress met, and a bill was drafted in 1823, by Mr. Adams, then secretary ut state, and passed both busses, with little, if any drafter—I voted fur it, te-passed both busses, with little, if any drafter—I voted fur it, te-tral than the state of the state of the state of the state of the completely of feated all our expectation. It was noticed by noone. The senator from Masanchusetts, (Mr. Webster), may have under-stand its effect. If the did so understand it, for was silent. It alloaded to fit the instructions. What were they? "That the pro-duce of the United States should be received in the West Indica, on payment of the same duties, as were payable on the produce of the North American colonies." The United minutes and, "as

charge seted, he told me, as a private friend of the agent, and well might we ask that our sugar should be received free of durg. The result was, that the British government shut their colo

as is the sugar of Louisians."

The result was, that the British government sbut their codesing ports immediately, and thence forward. The act of 1923, gave on ports immediately, and thence forward. The act of 1923, gave on the control of the con

larryms.

The dissolution of the late eabinet, Mr. President has been charged upon Mr. Van Buren; and what is there at home are glowal that we have in the heard charged to him! The client Adams changed all his cabinet except the secretary of the navy. The change was approved by the democratic perty, and disapproved by the continuous perty of the last proved by the continuous perty, and disapproved by the continuous perty of the last perty o exbinct certainly was such an once, as did not need the views or approximation of the friends of the administration. They regretted in situes the selections which the president had made. The major of the friends of the administration of the selection of the selection which the president had made. The major of the selection of t eminent de gree.

emine at degree.
The sentant from Mass. (Mr. Webster), says, that "instructions she wing a difference of opinion in the dominant party, with this of the default party, had never hene given by any government." I seriously the seriously s a general peace.

a general prace.

Mr. Van Bussilo bereitharged, with britische father.

Mr. Van Bussilo bereitharged, with britische father.

Mr. Van Bussilo intergence that the properties of in other, and more appropriate language, "the removal from office." Where is the proof? None can be produced—all in surmise and conjecture. I set on no such ground. When an assertion such as this in mode, I want proof of its being well-foundationable proof of the correctives of the denial—The charge earned to the proof of the correctives of the denial—The charge earned possibly be substantiated, unless the sensor who made it not assist this senate, that Mr. Van Boren could be at Altany and Latt. Mr. Van Buren was at Albany action at the senate met on the 4th March. At this extra session of the senate met on the 4th March. At this extra session of the senate met on the 4th March. At this extra session of the senate met on the 4th March. At this extra session of the senate met on the 4th March. At this extra session of the senate met on the 4th March. At this extra session of the senate met on the 4th March. At this extra session of the senate met on the 4th March. At this extra session of the senate met on the 4th March. At this extra session of the senate met on the 4th March. At this extra session of the senate met on the 4th March. At this extra session of the senate met on the 4th March. At this extra session of the senate senate met on the 4th March. At this extra session of the senate met. The senate met of the senate senate met. Van Buren has also been charged, with being the father well remember that I saw Mr. Van Buren in Baltimore after my return bone, and therefore conclude that it must have been at least a must be tween the time of his appointment, and by a so-cleast a facilities. I think, Mr. Peredeta, but I have proue that Mr. Van Buren would not have been the father of what

is improperly called the "proscriptive system,"—a system adopted by some of the states of this union both before, and after this administration came into office. For nyself, I son opposed to removal from office for positions declared. But, sir, I would remove any officer, who made use of his office to force in window, the convergence of the control of the control

passed a mmh my remarks, Mr. President, I will notice what passed between the then secretary of state, (Mr. Clay), and myself, in relation to the act of parliams not of July 1805. I first saw a copy of that act in Baltimore, and neutroned it to the secretary of the said that he land the act in his possession, over satisfactors? He said that he roundered different that the control of the same that the control of the same that the roundered different same that the control of the same that the same that the control of the same that the same trade of Before I finish my remarks, Mr. President, I will notice what observed why not issue a proclamation under our acts and thousen the trade. He replied, that he would prefer negociation. I maked,—shy! for what will you negotiate? We have nothing to do, but to give our assen, and the trade is a tonce uponed. He was not to be a superior of the contract of the contrac where of the general and fashbild whether it might be correctly brawn, as a to riften my object, I so it it to the time secretary of attac [Mr. Clay], with a r-quest that he would correct it it necessary. He replied in writing to this effect: "that the bill was drafted to meet my object, that it was so doubtful whether it were best, to act by a law, or by negotiation, that it was indifferent which course though be adopted."—The fidelines of the executive high course though be adopted. The fidelines of the executive Lifetile of the become a law. I believe from wast of time to act upon it. The senator, [Mr. Clay], has said, Mr. Canning had bobserved, that even if the bill had passed; it could not lave been admitted as assisfactory. This observation may have arisen from the belief prefered by drawn, nor from some other cause. Perhaps the British minister expected that the president work, knew, that the president possessed full juver to do so, under our act of 1820 and 1824, both of which we know, had been drafted by Mr. Adams when a wreterly of states.

Adams who servetary of state.

I have deemed it necessary, Mr. President, to make these remarks, in relation to the colonial tiade as a reply to the observations on this subject which have fallen from the senator from Kentucky, [Mr. Clay.]

(NOTE.)

(NOTE.)

The following letter, and accompanying extract from another letter, on the same subject, have been received from the secretary of state:

tary of state:

Department of state, Washington, January 30th, 1834.

Samuel Smith, eeg. excate of the United States:

\$\frac{3}{1}\text{Tr} - I have the home to state, in answer to your inquiry of yesterday, that the reconst containing the instructions of the department to Mr. Christopher Hughes, when formerly charge of affaires of the United States in Sweden, have been carefully examined, and that all which is jound in them, in redainon to the them claims of our citizens upon the government of that country, is given in the subjoined extract of a letter from Mr. Adams to him, dated 17th June, 1810. ted 17th June, 1819. (Signed) EDWARD LIVINGSTON.

Extract of a letter from Mr. Adams, secretary of state, to Mr. Hughes, charge d'affaires of the United States at Stockholm:--

Hughes, charge d'affaires of the Chirel Street at Stockholmer.

"The president has been absent from the seat of government, on a tour to the south and w-st, since the 20th March. His return to this place, in the course of two or three weeks is expected. Since his departure Mr. Russell's latest correspondence with the Sweding port-muent, on the state of two or three weeks is expected. Since his departure Mr. Russell's latest correspondence with the Sweding port-muent, on the subsel followed Mr. Russell's taking have of the court. It is psinful to perceive the perseverance of the Sweding port-ment, in witholding the indentuity, so justly and indisputably due to our fellow entizens, who suffered by those rejamers, for which not even a plausible pretext is alleged. It is till more psinful to find this denist of justice, accompanied by the contract of the subselling of the president properties of minimating, with Sweden, the most friendly and harmonious relations, I shall reserve, until after the president's return all further remarks on the subject."

Remarks of Mr. Poindexter.

Mg. Poindexter order, and said, that as absence of several weeks from the senate, occasioned by indisposition, had, as he was informed, been the cause of some delay in the final section of the

remain, next the trade of note dearly and the second service of the service of the service of the service of the detect, and even now that he was enabled to resume the dischurge of his duties, he could but ill requite the kind indulgence of the senate, in postponing the question on

\*Mr. Poindexter desires us to state, that some of the remarks contained in his speech, which we this day publish, were noted by Nr. Barren, in the sensite, but that the difficulty of standing on his feet, for any great length of time, note his recent fall from his carriage, prevarted his going minutely through all the notes he had taken; but that the additions do not materially vary the substance of his remarks, on that occasion. [Nat. Int.

his account, by any efforts of his, to investigate the plaims of his account, by any efforts of his, to investigate the craims of the numiner to public coulfidence, insaminch as the delicate state of his health would not permit him to enter at large into the va-round interesting topics which had been adverted to in the remarks of the homosable semators who had preceded him in the debate.

debate.

Sir, said Mr. Poindexter, I have risen to perform an unpleasants but an imperative duty, from which I cannot without we without tubercing my notives to minemershalon, or minemershalon, tubercing my notive to minemershalon. Having the most of the mos people, free from the stant of that moral torbutuse and visious intrigue, which cover the corroup Revenuents of Europe with infany, and disgrace. For this purpose, and for no other purpose whatever, either of a personal or political character, I have the deavored to inform myself, by all the means within my reach, of whatever, either of a personal or policical classector, I have the de-worded to inform myself, by all the means within my reach jub the faces and circumstances touching the ments of the individual widea norm aid on in two under counideration. I have adopted where no the country of the property of the nomines, in preference to a full and forms investigation by a committee of the sense, which had been proposed by an homorable matter from Mainer (Mr. Hutters). Mr. Nan Byren has been attained and the property of the property

event, he had lest ins intuitive to a candidate netween whom and general Jackson three existed the most deadly busility. This administration of Mr. Adams had no charms for Mr. Van Buren, and after due deliberation, and a "judicious" estimate of the pro-bable results, he became the advocate of general Jackson for this bable results, he became the advocate of grarial Jackson for this presidency, in opposition to the invanibent whose prospects for re-election were overcast with doubt and uncertainty, and from whom he could expect no favors, either for himself or his friends The capital which he brought into the stock of political influence ane capital which is orough into the stock of political influence then operating on the presidential election, was supposed to give him a claim to the highest distinction, in the event of the suc-cessful termination of the truggle. Accordingly, he was placed by general Jackson at the head of bit constitutional advisers, pre-ferring him to other distinguished gradienters, whose support was ferring him to other distinguished gentlemen, whois support was of longer duration, and, to say the least, equally efflicient, and whose talents would bear an advantageous comparison with the most enlighteened statement in the world. Thus promoted shad flames are supported with the statement of the mation, which is a support of the mation of the control of the support of the department of state? Was the houser and welfare of the country or the purity of its character, objects trearest to this heart? Was his mind free from the bias of undisciplined annihilation; or was be exclusively deroced to his own elevation, two gardless of the memor, or of the bonor of his venerable cheft, and experience of the memor, or of the houser of his venerable cheft, and cannot answer these grave questions by any thing which falls which seeped only only prepared to the state of the transit. the scope of my own personal knowledge; but if there be truth iff lacts which have been detailed to me by men of the lirst rank in the nation, and which I am bound to believe, until contradict ed by evidence still more imposing, his whole course was thatked by a systematic tissue of dark and studied intrigue, which, in its consequences, swept into chaos the elements of that pariotic band consequences, sweps into shaos the elements of that pariotic band who longht the whole the pariotic band who longht the state of the late of the pariotic band who longht the state of the late of the pariotic band when the pariotic band weath of this graeful country. Discarding all personal consists of the pariotic band who when the pariotic applications to graitly, and if I land, this would not ester these wish, to influe the highest of truth, to guide me to a decision which shall accord with strict and impartial justice, and accord to me the appropriation of an entilistence for polyment of the pariotic band which shall accord to the particle of an entilistic and impartial justice, and accord to me the appropriation of an entilistence for polyment of the particle and what is still more precious. the smiles of an approving counciency

the smiles of an approxing conscience.

If, then, the lineats of the nominee deem the information which I have received, and on which, for the present, I must rely, links, and the present, I must rely, links, I may be a supported of a straightful end of the present of a committee, to be chosen by the allowed for supporting which may be east on him, by the appointment of a committee, to be chosen by this homerable body, win shall be be siduled of supporting which may be east on him, by the appointment of a committee, to be chosen by this homerable body, win shall be be siduled, the days of each considerable body, win shall be be siduled, and the days of each clearing all the textinous which can be supported by the state of the top of the committee; and if the result should be such as the support of the top of the submitted of the property of the submitted to him, my vote, wither given in favor of his nomination, with more real pleasure that worthy conduct when has one agreed to him, my voice will be given in favor of his momination, with more tral pleasure than I can feel in obeying the dictates of duty, by draying to him my apport. To such a committee I am authorized to burnish the masset of several gentlemen, high in the confidence of the could

try, who are ready to testify, on oath if required, to all the facts which they have authorized me to communicate to the sense on the present occasion, in a much more enlarged and satisfactory manner, than it is in my power to give to them. The property of the property the subject of opening the West Timus Irade. The News preseared of the namere and character of these instructions, by other
seared of the namere and character of these instructions, by other
deep regret, that under any crecumstances, the secretary of state
deep regret, that under any crecumstances, the secretary of state
setting, either under the influence of his own passions or prejudices, or by the instructions of the president, should deen it conpatible with the dignity of his vation, or the elevated character
of his country, to approach the throne of a foreign monrech in
the style of a primer to which be belonged, everening the powers of government, were bester entitled to his tender mercia,
than their prefectivors in office, wha, it seems had been goilty of
the crime of demanding, under color of right from his majesty,
concessions in favor of American commerce, which a more of
ightened administration recently brought into power by an overightened administration recently brought into power by an overdefined "Specialization". But has appeal was unnecessary, and
unworthy of a state-man representing the interests and honor of
a great and powerful nation in its intercourse with flor-ign powers, and merits the expressor for this houseable body as an integral
part of the executive.

agreat and powerful nation in its intercourse with for time powerful nation in its intercourse with for time of the care and merit the reproof of this hourable body as an integral pact of the extensive.

But, Mr. President, what is the history of the conduct of Mr. Van Buren in reference to his intercourse with the chief maginests of the national government. He cattered the councils of periods in the national powerment and the control of the concaved all his uponion so the great questions which agitated the nation. He sayed on circumstances which pre-existed his uponion so the great questions which agitated the nation. He sayed on circumstances which pre-existed his uponion of the control of the nation. He sayed on circumstances which pre-existed his uponion of the control of

scale of political profit and loss.

An ellort to restore the ancient usage of cabinet councils, made
by a few of the most devuted friends of gen. Jackson, was cepelled with indignation, and the friendly interposition fallely ascabled to personal hartility, to a particular member of his cabiment. These gentlemen have ever since been looked on with dis-

net. I brie grintenen nave ever inter been looked on with out-trust and susprious by the prediction.

The property of the property of the part of his associated in power, and from public animadvesion, Mr. Van fluren shaped his course to suit the erisis, keeping steadily in view his mitimate elevation to the first office in the gitt of a free people. Powersed, as he was, of the unbimited conditioned of gen. Jackson, aditionate elevation to the first office in the gitt of a free people-Powersed, a he was, of the unimisted confidence of gen. Jackson, Vances, led him into excesses and ercors, latal to the tranquisity vances, led him into excesses and ercors, latal to the tranquisity of the country, without affording the slightest evidence that he in any manner, participated in producing the results which he anxiously desired to accumplish. The prostrajive policy, pushed anxiously desired to accumplish. The prostrajive policy, pushed require, and lac keyond the practice of any other their magic require, and lac keyond the practice of any other their magic require, and lac keyond the practice of any other their magic rounce, and the late of the practice of any other their magic rounce of Mr. Van Huren. This system, combined with the whole past tion. He made himself almost the sole advice of the president, during the first two years of his administration, and every one who stood in his way was need to feel the power of executive dependence of the transport of the proposed of the protection of those noble and high-minded frends to whose the protration of those noble and high-minded frends to whose the protration of those noble and high-minded frends to whose the protration of those noble and high-minded frends to whose the protration of those noble and high-minded frends to whose the protration of those noble and high-minded frends to whose the protration of the dissolution of the cabinets, and the court of London.

I have, Mr. President, been put in possession of a communication tracing, with great misuteness, and I have no doubt, necurately, the mean returned to by Mr. Yan lineret, nor no who had securately the mean returned to by Mr. Yan lineret, nor no who had secepted his invitation to become members of his political family. I forehear to read this paper to the senate, because of the peculiar matters of which it treats, but I hold myself ready to deliver it, which may be appointed to enablely the evidence on this million. I have also received, from a gentleman now in this city, a statement of a conversation held with the late severity of state, after he had surrendered the wait of office, which I beg leave to by the conversation which have a causing the late of the conversation held with the late receiving of state, after he had surrendered the wait of office, which I beg leave to by the conversation which have accusived to large a share of the on the table, as the fact it details are initimately connected with those transactions which have occupied to large a share of the public attention, and which I regret to say have never been ex-plained in a mather commission. The experiment of the public of the property of knowledge; but he has the most respectable testimorish of his good character and conduct; and I amigniformed, has been favor-ably known as the editor of a Journal in New York, friendly to the present administration of the government. For myself, I do not doubt the verity of his statement, and I sabmit it, without comment to these who drive information on the matters to which

Mr. Periolect, in addition to the subroken current of sestimony to which I have already adverted, showing most clearly the food means employed by the late secretary of since, to appropriate the non-and well-related fame of geta-Jackson to the advancement to the properties of the party of the sentence of a convertation which took place the centre the substance of a convertation which took place therein the party of the sentence of the party to prive to the senter the substance of a convertation which took place therein the party of the sentence of the party of the party of the party of the party of party of the party of party of the party of the party of the party of the party of making lance to his present on the president invited this gentleman to a private suddence, for party of making lance to his married to the party of the party of making lance to his interface of making lance to his married the party of the party of making lance to his married the party of the party

delings in Friend, clather, "with the passphy of power, are imperent and harmoles, when the intender, vettin in protected by the mild redaince of virtue, and the shield of imperuhable hones, when the intender vettin in protected by the mild redaince of virtue, and the shield of imperuhable hones. The protect of making know no to him the new arrangements on which he had determined. He commenced with an air of diplomatic action, and studied precision. "Sir, I submit to you better, which I have received from the secretary of inte, and the them your serious consideration." "Sir," replied the astandard executery, "I am a plain man, and you know that diplomacy is an part of my character or yours. Be su good, therefore, as to reli say, I, I will inform you that I mean to recripative my enhanced in the protection of th

Lane in Regland?" "Mr. Van Buren." Sir, the time at which this declaration was made is very eens skable; it preceded the publication of the moder diplomater better of resignation, in which the state of the properties of the prop mony in his councild. No sinster motives lingered in the d of the unbought patriot—no mission to London in the vista at the noble snerifice is magnanimously offered up on the attar want of the knowing particles on mission to Janobaus in its him-but the noble-sarrifee is magmanimously offered up on the star of public good, with the reservation of such future rewards of grateful people might between, on one whose merits could only be excelled by the putrity of his intentions! Sir, would it be ex-ted by a virtuous and entitylishered propie, that, at the very mo-sted by a virtuous and entitylishered propie, that, at the very mo-

as pulse good, with the reservation of such loster wards and any been excelled by the puting of his intention, the such any time the property of the such and the property of the puting of his intention, a particular preferation were unblankingly through by the puting of his intention, a particular preferation were unblankingly through before worth, the individual who ment when these high-boulded sentiments and particular preferations were unblankingly through before his worth, the individual who the office which he resigned, he should furthwish be cristed early of the office which he resigned he should furthwish be cristed early extended and the office which he resident, had yet the fact is established, he he conversation that the state of the previous state o

Washington (tip. Jon. 34, 1832.

Sir: I have the honor to acknowledge the receipt of your note, bearing date this marring. It was this moment handed me, and, although it is by no means desirable to stand in the attitude of a public accuser of any man holding a high and responsible standar of your inquiry as being one of no small degree of importance. I do not really all although the shirtly from the desirable of the shirtly and the shirtly as the shirtly and the shirtly and the shirtly as the shirtly and the shirtly and

or withhold from an isonorable tenator, approaching me in this anatorial capacity, any information which I may be in posterion of touching the subject of his enquiry. Nevertheless, I regret had I am thou realized upon to repea any remarks which may be a more subject to the subject of his enquiry. Nevertheless, I regret had I am thou a subject to the dissolution of general Jackson's first estimate the dissolution of general Jackson's first estimate the accrete of the subject of the subject of the subject to the subject of the

ed to consummate their designs by traducing the character of a charte and virtuals vermen. On remarking to Mr. Van Buren that I though the had managed well to pass uneashed through the first orderal, he langhingly replied, "Es, I had seen for some two or three mounts the approach of trouble, and that a dissolution of the exhibit and counce—the materials of which it was composed being too discordant to consinte too; the in harmony—and, to design oo discordant to consinte to the internal constraints of the constraints of the internal constraints of the internal constraints of the internal constraints of the internal constraints of the when high and responsible men call on me, and duty demands a compliance with their call, mine is not the province to refuse. I have the honor to be, most respectfully, your obedient errant, How. C. Pointlexter.

SAMUEL E. CLEMENT.

Remarks of Mr. Foreyth.

Mr, Forsyth makes no spinlings for the rough sketch he presents of the remarks made by him in the secret sessions of the senste, on the nomination of Mr. Van The speeches against a nomination having been, for the first time in the history of this government, thrown upon the people, it is due to the person assoled, that what was suggested on the other side should be known. Mr. Forsyth is well aware that, in executing his part of this duty, he has done justice neither to the subject nor to hims If.1 I regret Mr. President, that the senator from Missis-

sippi, [Mr. Poindexter], has been so long absent from his sest, not only because he has been suffering pain, but because had he been here, he could have escaped the commission of numerous errors into which he has been led. The friends of Mr. Van Buren have not obstructed inquiry into his conduct; they have challenged investigation, offered it in every and any form consistracter. The senator from Maine, (Mr. Holmes), shrunk from his own resolution. It was laid saide by the votes of those approsed, contrary to the votes and wishes of the friends of those friendly to the nomination. That senator was distinctly invited by one of the senators of New York, (Mr. Marcy), to specify any act dishonora-ble to the character of Mr. Van Buren, and a pledge given that the inquiry into it should be made in the amplest manner by a commutee having all the powers netrum Maine was distinctly told by the senstor from S. Carolina, (Mr. Hayne), on what terms he could coinmand his vote. He was told to cover the ground indi-cated, by proof, and he would join in the condemnation of the choice of the president. The senator from Maine deliberated on this offer, and, after deliberation, abandoncil his resolution, leaving all to grope their way to a conclusion, as accident or prejudice might direct them. A promise was maile, that he should have a committee if he would venture upon it, and the offer was deliberate. ly and most unequivocally declined. Yet, after all this, at this eleventh hour, the senator from Mississippi says, if the friends of Mr. Van Buren will solicit a committee, he will give us what he has collected, while confined to his sick chamber, and on which his own opinion is formed, and if the committee is not raised, he will, with this matter in his pocket, tote against the nomination, in order to preserve the morality of the nation, endangered by the heatowal of a new office on a gambling politician,
As the friend, personal and political, of Mr. Van Bu-

ren, I reject the liberal offer of the senator, in defisince of his threatened organize upon the nomination .-Let him unite with those who, like him, are so anxious to preserve the morality of the country by rejecting a man whose most odious crime is his rising popularity and transcendent ability. The friends of Mr. Van Buand transcendent ability. The friends of Mr. Van Bu-ren will not degrade him by asking a committee, to free him from the suspleions engendered in the senator's mind, in his search after correct information, from sources within his reach. His character wants no such justification. Does the gentleman wish to justify his vote? Let him propose a committee; he shall have our concurrence. Does he desire to convince the senate? Let him produce the private source. Information which, I venture to say, like the only one he speaks of openly.

is worthless in the eye of any man who is not embittered by prejudice that he can not see truth. This letter, by a former partizan, a patry editor of a patry news-paper, and to prove what? that Mr. Van Buren said that the late calmet was dissolved by the conspiracy of the vice president, to drive nonj. Exton from the cabinet, and that he withdrew to escape the consequences of the dissolution. Sir, Mr. Van Buren holds no such converactions with persons who were once his partizant, and now his enemies.

But supposing he had declared, or does entertain, the that supposing he had declared, or does entertain, the pinnion imputed to him. Is it a crime which dispushible, then for a high office, that he believes the charge made and sought to be established by the late sceretary of war. If such he the senatur's opinion, can be tell us how far the exclusion extends? The senator's letter tory is contradicted by his previously expressed opinion. What, sir, the most artful man in the world, proclaim to a paltry editor that he neted in the manner indicated. to escape the storm consequent on the dissulution of the If it had been true-il such had been his mocabinet? tive, he would have sought to conceal it from himself. No degree of confidential intimacy could have tempted aga artiul intriguer to such a disclosure. The story if true, proves a man, whose extraordinary prudence, under all circumstances, through a long life in the stormy polities of a vexed and turbulent state, has gained him the confidence of his friends, and called down unon him the charge of consummate artifice from his enemies, to be a silly diveller—a simpleton, opening his hudget of petty motives to one whose trade was, to thrive by making himself important by confidential and oracular disclusures in his nuknown journal.

Mr. Van Huren stands in a strange condition before us; from the beginning of this administration, before he came to the post assigned to him, until the present hour, he is held accountable by a certain description of political men in this country for all the evil that has been dinne

and all the good that has been mutted,

Now, sire-il he is accountable for every thing, if his band is to be traced every where, let him have credit top the good that has, and the evil that has not, been done. Balance the account of the admitted good and evil imputed, and the result will fill the hearts of his enemies with the bitterest disappointment. But, sir, this is not the justice intended for him. He is responsible for all that is complained of. Let us see the senator from Mississippi (Mr. Poindexter's) estalogue. were no cabinet councils—Did the country suffer from this failure to follow the example of late administrations, from this aither ence to the example of gen. Washington. But there was one cubinet council called to set on a lady's reputation. Indeed; and this Mr. Van Buren is also answerable for; and is it true, sir, that the honorable mempers of the late calinet, who remained so tranquilly at their posts enjoying all their emoluments and honors with becoming gratification, suffered themselves to he deprived of their accustomed rights of a seat and voice at the council board of deliberations on great matters of vital interest to the public, and yet obeyed the beck and eall of Mr. Van Ruren, to set upon a lait's reputation? Of what stuff were they made, that they did not distmetly ascernia if this restriction of claimed right, and this insulting call upon them to step out of their appropriate spheres, was the work of Mr. Van Buren or the act of the president. If the first, why did they not demand his dismission, and, it refused, indignantly throw their commissions in the teeth of the chief magnitude. The omitted cabinet councils, and the single call, were no such dreadful offences until obliged to follow Mr. Van Buren's example and resign. The history of last year espalishes the wislom of the president in calling no cabines engaged to deliberate, as there could have been no harmony in their consultations, and on the single question said to have been submitted the ex-cabinet have shown themselves incompetent to decide. He is not competent to decide on a lady's reputation, who throws pompeters to decide on a may a replaction, who introduced on the question of how she should be treated, her grant or intocence. I will not condessed further to refer to the trash with which the public press has heen losted and polluted for months, and unless the sepator from Mississippi has better evidence than the public has yet seen, the hope of implicating Mr. Van

Buren in the disturbances that preceded the dissolution of the calinet, is forlorn. Let us see the next crime in the eatslague of the senstor from Mississippi (Mr. Poindexter), Mr. Van Buren intrigued the dissolution of the late calinet, taking care previously to secure a safe and prominent retreat in the mission to England. It is known to every well indormed man in this district that Mr. Van Buren, by his admirable temper, his conciliating manmrs and unwearted exertions, kent the cabinet together long after its discordant materials were so well ascertained that its dissolution somer or later was a matter of common speculation. Sir, nohody doubted that the parties could not get on together, and the only surprise was, that the president did not proceed to restore harmony by the removal of those whose disagreements produced the discord. But Mr. Van Buren had the unparalleled effrontery to resign on mutives of delicacy and disinterestetlness, and as this mode of conduct was so unusual it has excited a vast deal of surmise and wonder. The senator from Mississippi (Mr. P.) has bowever satisfactorily to himself solved the mystery. Mr. Van Buren arranged himself into a prominent place before he resigned, and a new cabinet to suit his ambitious views. Now, sir, as to the proof of this pre-concerted arrangement for his accommodation and elevation. The president told somebody who was a late secretary, that Mr. Van Buren was to go to England, and named to him the secretaries, who were to come in; but this was infter Mr. Van Buren had resigned. In the interview, it is acknowledged that Mr. Van Buren's letter of resignation was handed to this volunteer repeater of confolential conversation with the chief magistrate."

"Since the preceding was in type, the following has been re-ceived, and we cannot well do otherwise than publish it, "that a fair view of the case may be presented, without comment." From the U. States Telegraph of Fobruary 9. The subjoined are copies of nutes which have passed between governors Branch and Foreigh, through our hands as the freedo thoug gettlement. SAMUEL P. CARSON,

Washington City, Feb. 5th, 1832

Sir. I have read the printed report of your prech, prepending you for the press, purporting to be the remarks which you for the press, purporting to be the remarks which you must meet a serious on the normalism of Martin Van Buren as envoy extraordinary and minister plenipotentary to the court of \$1. James. The 1 other althely out take of a conversation retred to in the delate by Mr. Poindexter, sensitor from pricingly, whether you did red do not know, or had reason to be ture, at the time you wrote out your speech for publication, that I was the "immediady, one of the late serectaries" to whom you refer as the volunteer repeater of confidential conversations with the chief magnitude. You reply to this communication will regulate my tuture action on this subject. I am my JOHN BRANCH.

Hon. John Forsuth.

Hashington Feb. 8tb, 1822.

Dear Sir. Although perfectly salished with your verbal decision, on reflection since we separated this morning. I think it indispensable that the concluding paragraph in the enclosed letter should be omitted, or that your remarks to me on the subject of it should be in writing before an answer to it is transmitted to you. I return it to you to adopt-rather course that may be most agreeable to you. I am, dear sir, very sincerely.

JOHN FORSYTH.

Bear Sir: If the simple interrugatory contained in the letter of governor Branch, would be more acceptable to you without the paragraph with which it concludes, I am authorised as his friend, from his note, not deeming it essential to the substance of his inquiry. Very respectfully, BAML P. CARSON. Hon. John Fortyth.

P. S.—Your note was not banded me till this day, since the meeting of the House,

Sir. I have received your note by col. Caron. As we want for the remarks of mine, to which you point my attention, were made in answer to Mr. Pointester, and intended to apply to the person referred to by him, without Amoulodge of that person, on y pars, then, or at the time my remarks were prepared for the press. I am, very respectfully, joan, &c. OHN FORSYTH.

Hon, Mr. Branch.

Washington, Feb. 7, 1839.

Sir: In your answer to my note by col. Carson, you state that you did not know that I was the person referred to by governor Poindexter as having held a conversation with the president. It

the senator says it was before the letter was publishedthence he concludes Mr. Van Buren had made a cut's paw of the president, for the promotion of his own views: a most logical inference, truly. And this new calcinet Is there man, woman, or child in the country, who does not know and leel that the change has been beneficial to the public, that there is now more strength, more virtne, and more harmony than there was before? Is there man who will hazard his reputation, by asserting that the present secretaries are causble of being mad the instruments of any man's ambition, or so subject to the undue hiss of individual influence, as the late? Partizans are not substituted for pare, disinterested patriots; than lawe come in. But this musion to England was not sought by Mr. Van Buren: his friends know that it was pressed on him by the president, and that it was reluctantly accepted at the carnest soliciations of friends who were satisfied it would promote his own reputation, and redound to the honor and welfare of the nation. will not follow, further, the senatur's lead. Long known to me as a politician and as a man, acting together in the hour of political adversity, when we had lost all but nor honor—a witness of his movements when elevated to power, and in the possession of the confidence of the chief magnitude, and of the great majority of the people, I have never witnessed night in Mr. Van Buren which requires concealment, politation or coloring-never any thing to lessen his character as a patriot and as a mannothing which he might not desire to see exposed to the scrutiny of every member of this body, with the ealm confidence of unsulfied integrity. He is called an arttul man-a giant of artifice—a wily magician. From whom does he receive these unurabrious names? From open enemies and pretended friends. In the midst of all the charges that have been brought against how, in ahapea more varying than those of Proteus, and thick as the autumnal leaves that strew the vale of Valambrows. where is the late friend or malignant enemy that has fixed upon him one dishonorable or degrading set? If innocent of artifice, if governed by a high sense of honor, and regulating his conduct by clevated principles, this is not wonderful; but, if the result of skill, of the are celare artem, he must be more cuming than the devil himself, to have thus avoided the source of enemies and the treachery of pretended friends.

It is not possible, sir, that he should have escaped, had he been otherwise than pure. Those, ignorant at his unrivalled knowledge of human character, his power of penetrating into the designs, and deleating the purposes of his adversaries, seeing his rapid advance to public honors, and popular confidence, impute to art what is a natural result of those simple causes. Extra-ordinary talent, inturing industry, necessart vigilance, the happenst temper which success cannot corrupt nor disappointment sour; these are the sources of his onexampled success,—the magic arts-the artifices of intrigue, to which only he has resorted in his eventful Those who envy his success, may learn wisdom trom his example.

Having disposed of the estalogue of the senstor from Mississippi, let me advert to the grounds occupied by a

being now made known to you that I was the person, I wish to inquire whether you feet yourself at liberty to disavow the appli-cation of those remarks to me. I am, respectfully, &c.. JOHN BRANCH,

Hon. John Forguth

Washington, Feb 7th, 1832 Sir: Your note of this morning informs me that you were the erson referred to by Mr. Poindexter in the observations although

Siri Your note or time owners, the diservations altitude to in our former more, and inquier whether I fee I tiberty to to in our former more, and inquiers whether I fee I tiberty to live the property of the

Mr. Carson respectfully requests those editors who have published the remarks of gov. Farsyth on Mr. Van Buren's nomination, to publish, also, this correspondence.

little army of objections on the other side of this chamherr-llow many sacrifiers of leeling to duty? are we not about to witness it all? the honorable senators of Mary Land, Connecticut, Delaware, Massachusetts, Ohio and Kentucky, are constrained by duty to vote against and Actionary, are constrained by duty to vote against his nonimation—and oil, on public grounds—no private techniqs; oh no! nothing like it; public duty against private feeling, is the order of the day. And what is the dreadful public crime he, Mr. Van Buren, los committed? Hear-sir, hear. He has degraded the country by giving instructions to the late minister to Great Britam, Mr. McLone, about the West India trade. of 1830 passed—those which have been among our printed documents for these twelve months, torming part of the president's communication to congress of Jan. 1831? Have those hon rable gentlemen who are now so shocked at the public degradation, so eager to punish the author of this national disgrace, been sleeping at their posts? - no one to cry out to ring the alarm at the dangers to which the public honor was exposed? no one to interfere to prevent the United States from being placed at the foot-stool of the British throne? Quietly witnes ing the consummation of the crime, passing an act with the knowledge of these instructions, to secure the boon, which they now see was begged in the name of party from the British crown; we are now electrified by bursts of indignation at this first act of degradation in the history of American diplomacy. What a spectacle is here!—How long is it since he who was the instrument to bow us down before Great Britain, was unaniminally confirmed to a post of honor and important trust? But the instrument by whom he was ordered to act, is to bear the punishment. The author of the instructions, he by whom they were given, is too high to be reached at present; the author of the crime, he who ordered it, escapes -he who commits it, by order, goes free; he who conveys the order, answers for both, and upon his head falls all the indignation of these incensed senstors, acting upon public grounds, and re-

incensed sensions, acting upon public grounds, and re-luctantly performing a PAINFUL—PAINFUL—duty!!! Well, set, to this degradation. It is found in the in-structions of Mr. McLane; and to make out their case, the honorable senators from Massachusetts and Kenmeky have given us a sketch of the history of the West ladas negatistion. Both brought down their parratives to the tsunting reply of Mr. Canning to Mr. Gallatin, given during the late administration. From this point, both these honorable senators found it convenient to slide-no, sir, to leap over all intervening events to the instructions to Mr. McLane. With permission, I will fill up this little unimportant clasm. The terms of the British set of parliament not having been accepted by the United States, American vessels were excluded, by an order in conneil, from the British West India ports. Why this important interest was neglected, we lisve been just told by the senator from Kentucky, "the late administration were ignorant of the act of parliament until it was casuall, seen by them." "It was not officially communicated by the English government to our government " "Even when we were colonies, we were not bound by British acts of parliament, suless specially named in them." Indeed! is it possible that specially named in them." Indeed! is it possible that the late administration hid not know an act of parlia-ment affecting important interests? Where were all our accretived ministers and commercial agents in Great Britain, that this government was not informed measure, known to all Europe, and taken advantage of by most of the powers interested in it? But it was not officelly communicated to us. Well, sir, was it officeally communicated to any other government, interested in its contents as we were?

The British government, I apprehend, would have considered such a communication a gross reflection upon our accredited agents. It would have compelled them to say, in effect, we communicate to you an act, supposing your agents are too negligent of their duty to send it to you. What were our ministers and agents What were our ministers and agents about; how were they employed, that they did not send to their government this important information?

But the last excuse is worse than all, even when colonies, we were not bound by acts of parliament in which we were not named specially.—What a discovery!

and it is concluded from this wise recollection, that we are not now bound to take nonce of acts of parliament not specially and officially communicated to us. I musgine we are not bound by them, communicated to us or not, but we are bound to know all those torothing our interests, and any administration is severely reprehensible for ignorance of them, and for lading to attend to those that bear injuriously upon the interests of the peo-The act was, however, at last known, and when ple. The act was, however, at last known, and when Mr. Gallatin presented himself to negotiate, with me structions to waive all claims that were fore cry pre-sented, and had prevented an arrangement, he was tauntingly told, you have lost your day in court—the privilege, the boon, offered, had not been scenred by accepting the conditions; we have taken our course, negotiation is not our plan. Well, sir, what said the administration, of which the honorable senator, from Kentucky, formed a part. There was an net of congress, requiring, on the shutting of the British West India ports against us, an interdict by proclamation. Smarting under this tounting refusal to regotiate, what was done? the execution of an act of congress positively directing the proclamation, was suspended by executive authority for two months before the meeting of congress and during the whole succeeding session, to see it con-gress, who had been prevented the preceding session from legislating—the administration preferring the echat of a negotiation-could not legislate the executive out of the difficulty into which he had placed the country by negligence, or, d the sensor from Kentucky pleases, ignorance of the act of parliament. We all know how that effort terminated .- The two houses disagreed about the mode of effecting the purpose; both, however, willing to take the privilege on the combitions proposed by Great Britain. The acrase passed a bill - the house, under the influence of the acrastor from Massachusetts. smended it, and the question was, whether one or the other oblique path should be troilden. The acasion terminated without legislative enactment, and then, and not till then, the programation of interpation was usu-Thus, sir, smarting under the taunt of the Brati h minister, our ailministration left the whole trade in the hands of Great Britain for six or eight months, - sought to cover uself from censure by invoking legislative interposition, and then, was compelled to act on the suspended statute. The interdict being proclaimed, the trade stood upon the very advantageous looting, according to the senator's judgment, which we have lost by the negotiation. Notwalistanding we were enjoying such eminent advantages, the late administration, in spite of the taunt, directed Mr. Gallatin to try again to procure what is now disparaged, by opening the door of the negotiation after it had been shut in his face. He was again repulsed. But this hundrishme was not enough; Mr. Barbour was sent to London, and he too had his instructions, and went, cap in load, knocking at the closed door for negotistion. Sir, he knocked at the door of the British ministry, under circumstances lu-milating in the extreme. It a gentleman should go a second time to a house, the proprietor of which, speaksecond time to a nouse, the properties of which, speak-ing from his window, had directed his porter to deny him to the visiter, his visit would have been somewhot like Mr. Barbour's second call.—Yes, sir; yet the humiliation was vain-the second as fruitless as the first. Such was the combition of this question when general

Jackson was placed at the head of the country. One of the Drst objects of his administration was the recovery of the British West India trade, an arrangement of it upon terms of just recoprocity, satisfactory to both par-ties, and, therefore, promising to be permanent. Mr. McLane was selected to go to England, and these much abused instructions prepared by the late secretary of state. Let it be remembered, sir, these are instructions from the president of the United States, to the Ameri-Let it be remembered, sir, these are instructions ean meister, never intended for the eye of the British government, and which in no other country but ours,

would ever have seen the light

The opening of this negotiation was the chief difficulty. To remove it, two grounds are taken. It will be remembered that our retusal to accede to the terms of the set of parliament, was made the ground of re-fusing to treat with Mr. Gallatin and Mr. Barbour,

by reciprocal legislation; taking the act of parliament as the British legislation. To obviate the difficulty, after a fair and full history of the transaction, these aggrestions are presented to Mr. McLane to be pressed suggestions are presented or Nr. Michael to be present so bar as he might deem it useful and proper so to dis. If the British persist in returning to hear you, on this subject, remnid them of the circumstances that have occurred of the difference of opinion among ourselves on it; of the abandonment by the administration of those pretruces that had prevented an adjustment of it; that they are not to be again brought lorward; that the pass administration was not amenable to the British government, nor to any other, than the people of the Unsted States, who had passed upon all their acts. Say to the British, d it makes pretensions formerly advanced the pretext for still declining to negatiste, the sensibility of the American people will be deeply awakened. - That the tone of public feeling, by a course so unwise and untenable, will be aggravated by the known fact that Great Britain had opened her cotlonal ports to Russa and France, notwithstanding a similar omission on their parts to accede in time, to the terms offered by the act of parliament. And this, sir, is represented as the language of entresty, as the begging of a boon. This nienace of the public indignation; this declaration that the late administration was neither to be censured or protect by foreign nations; was amenable for their conduct to no earthly tribunal but the people of the U. States, is tortured into a claim of privileges, on party grounds for party purposes, and as a disgraceful attempt promise our party purposes, and as a ungracerus attempt to throw upon a previous administration unnersteed diagrace, for the sake of currying favor with a loreign power, and that power of all others, Great Britain could not revise this frank and open and manly appeal. Committed by their concession in favor of France and Russis, and the ministry distinctly told by Mr. McLane, that he would not remain if they declared negotation, or placed their relusal upon any other ground than an open declaration, that their interests ment with the United States, the English cabinet re-luctantly yielded; and then came the most odious feature in this transaction, that which has sharpened the intellect of the opposition to discover dishonor, in truth, and a want of dignity, in a frank exposition of facts, its crowning success. Mr. McLane and Mr. Van Buren, under general Jackson, succeeded in effecting an object of jubble solicitude, that Mr. Adams, and Mr. Clay and Mr. Gallstin and Mr. Barbour could not obtom. The country was buildisted by the preceding administration without success; hence the charge against Mr. Van Buren; hence, the overwhelming anxiety to prove, that the success of the late negotiation has been purchased by landdation. The British cabinet desired not to make the arrangement, it interfered with great local interests, and it they could, without a manifest and unjust distinction to our prejutice, they would have de-clined admitting the United States to the privileges granted to the other maritime powers. Not satisfied with his condemnation of Mr. Van Buren's instructions, the senator from Kentucky attempts to show us, by referring to another letter of instructions, how this affair should have been conducted consistently with his ileas of national honor and dignity. The letter from which he has real, to the semile, extracts, is, I think, signed Will the senatur tell us, who is responsible H. Chry. It he is, then he exhibits himself in the singular position of a man transplaintly contrasting the work of his own hand, with that of a rival author. I he senator knows that there were two other instructions, writen by himself, of a subsequent date, one to Mr. Gallatin after congress failed to legislate, and another to go-versor Barbour, neither of which is before us, and therefore, not to be contrasted with Mr. Van Buren's work. I am content to abide by the result of a contrast of the instructions he has condemned, with those he has quoted. Let us see how the gentleman's letter will stand the test of examination. 'Mr. Gallatin, he says, was not instructed to abandon a right; we were to be at liberty at a more convenient season to resume it. Mr. Gallatin was to give a strong proof of our desire fasing to treat with Mr. Gallatin and Mr. Barbour, to conciliate by a temporary concession of what we had apply of whom went prepared to offer an arrangement previously claimed throughout the whole negotiation.

Was Mr. Gallatin instructed to say to the British gowas authorised to waive the claim and make an arrangement on the British basis. Put this into plain language, and what was it? strip it of its diplomate drapers and verbinge, and it is neither more nor less than an abandonment of a pretension which, though we had supported by argument, we were resolved not to entorce by Sir, this covering up of a plain truth is the power. Sit, this covering up of a plain truth is the common trick of diplomacy; it deceives no one, and had Mr. Gallatin presented these conciliatory concessions, they must have been received as a virtual and toand the state of t cial—artificial smile of a——thoroughbread dydona-tist. The senator insists, however, it was a right and not a pretension. If it was a right, why was it Why, sir, we were the offended party-England had taunted us. England had refused once, twice, thrice to negotiate, and yet to conciliate England, we were waiving a well grounded right. For what purpose were we thus con-citiating? To place the traile on its present footing, to the great injury of the navigation and commerce of the United States .- Such is the view now taken by several honorable senators who have favored us with their opinions on this subject. The present administration waived no right for conclusion's sake, sacrificed no principle. It stood upon the truth, and the truth only; and whatever may be the custom of others, and the ordinary usages of diplomacy, the administration was ood, and swell and strut in vain-to preserve an air of dignity and decorum. No nation ever was just to its own character, or preserved its dignity, that did not stand at all times before the world, in the sober and simple garb of truth. Sir, the character of our diplo-macy has undergone a marked change; we are no longer pretenders to skill and artifice; all our wiles are sets and reasons, all our artifice, truth and justice. The honorable sensior tells us that this instruction is talse, or else it proves Mr. V. B. to have been criminally ignorant of what it was his duty to know.

How does he make this appear? he alteges that Mr. V. B. charged the late administration with being the first to advance the pretention it subsequently abandoned-and this he declares is untrue, the pretension was set up before the late administration came into power. Now, sir, as I read this paragraph, Mr. V. B. does not charge the late administration with being the first to silvance this pretension. The senator will recollect this is a letter to Mr. McLane, whose personal knowledge is appealed in, and who must have understood the writer as alluding to a fact of general notoriety, the words are "those who first advanced, &c." have subsequently abandoned. Can any man matake the meaning—the meaning is perfectly in accordance with the fact? The pretension was advanced by the use of the lamous elsewhere in our act of congress. An act known to have been penned by Mr. Adams, who had previously occuneed beened by Mr. Adsons, who had previously occu-pied the ground covered by a m his matructions to Mr. Rush. It was Mr. Adsons who first advanced and absor-doned this ground. The credit or the odman, which-ever term belongs to justice to the set, attackes to Mr. Adsons, and si Mr. M.L. could only have understood it, and so must the senstor from Kentucky, if he examines with a desire to understand it of the spirit of the author. There are considerations connected with Mr. V. B. if I deemed it consistent with his honor, that I could present to those that hear me, that would not tail to make a deep impression upon their minds. But I ask no remembrance of his forbearance, no recollection of his magnanimity, I appeal to no one to imitate his mildness and court sy and kindness in his deportment here, nor to jodge him, as he judged his ravals for fame and power. I demand for him, nothing but jus-

tice-harsh-harsh justice.

Remarks of Mr. Frelinghuysen.

public man, and my reasons for withholding my advice and consent to his nomination are public reasons. They are purely national, in which neither party nor prejudice have place. I feel the weight of all that responsibility. to be increased by the impurtant measure of recalling a foreign minister for causes that implicate him in public censure; but I also feel fully sustained by the considerations that shall influence my vote.

Sir, the true interests of the nation require a minister that will represent his country, and not merely advance his party. We want a minister of that lofty character, who will the moment his mission commences. drop the habiliments of party, and robe himself in the nure and loval vestments of his country-his undivided country. I desire such a man to go forth, forgetting all the strifes at home, and remember only that he is an American minister, and to act upon American principles. But, when we perceive the gentleman, now before us, deliberately at his bureau, instructing our minister to a foreign court to call to his aid in conducting our negotrations the results of our political contests. I have good cause to fear that he does not possess those elevated principles, that will dispose him to reject the counsels which he so freely and so surjously communicates to others.

In the instructions prepared and given by Mr. Van Buren to Mr. McLane, we have evidence not to be mistaken, of Mr. Van Buren's policy. And it is so purely selfish, as to absorb all considerations of country. It is so devoid of American spirit and character, that I am compelled, by a high and solenin sense of duty, to bear a decided protest against it. What is the scope of these instructions? As I under-

stand them, they distinctly direct our minister to employ the influence of party, and of his party too. commission him to apprise the British court of the character of our political collisions, and especially to let him know who triumphed and who were defeated. Sur, it is humidiating to think of it. These instructions urged our minister to put his party in the right and the treed our minister to put his jury in the right and the country in the wrong—to refer the British minister to the results of the ballot box here, and to press upon that cabinet the vicissitudes of our nolitical controversies—our own domestic differences, as motives to per-suale them—to what, sir? Why, plainly, to grant that summe mem—to what, sir? Why, planny, to grant that favor, to extend that privilege, to his now dominant party, that was refused to those in whose keeping the arrangement of American interests had theretofore been confided. This is the first attempt, in our dinlobeen confided. This is the first attempt, in our diplo-macy with foreign states, to separate the administration of the country from the country. How wanting in all justice, as well as magnaniantly, was it, to make this dangerous and inswerrantable assumption, a plea, with any loreign court? Sir, who is, by our constitution, who alone can be our public organ, but "the administration?" And yet hear a clause of these instructions. Mr. Van Buren really argues the point: "to set up," he proof the forestine of predeger, which would otherwise be extended to the people of the United States, would, under existing carcumstances, he unjust in itself," &c. Wherefore injust under existing circumstances? Because, as before stated, we, that is we, the new men, now in power, did not participate in the acts of the late administration, and, therefore, we humbly hope, that we may be spared the forfeiture of these privileges. ment, is so humiliating to our national character, that I cannot consent to enumerance it by advising the president to appoint Mr. Van Birch to the vecy court at which he has humbled us. No, sir; let us rather meet the case at the threshold, with our inqualified disapprobation, and never suffer it to grow into the authority of

precedent by our acquiescence.

Why, sr, the consequence of such a course of diplomacy would be most disastrons—it would perpetually distract our public counsels on every change of adminstration-nay, on every prospect of a change-on every commotion in the country that might indicate it, we should be driven by such measures, to entertain a I beg the indulgence of the senate, barely to state should be driven by such measures, to entertain a the reasons of the vote, that I shall give on the nominassity of our diplomatic functionaries abroad, time before us. In this, I regard Mr. Van Buren as a than of the courts and nations to which they were sent.

Are we prepared to axt, sir, and have a understood, that our political conflicts are to leave our own shorter, and cast their influence abroad? That our ministers are to become the agents of a porty, and thive its purposes in such manore and by such mann as they demft? I trust not. Let us preserve the honorable and manly character of our foreign intercutives; and expect and require that our ministers shall, in their discussions and conduct, act for their country; and not noke a foreign court the areas on which to play off the intrigues or just the interess of a party.

Remarks of Mr. Moore.

Mr. President: I do not now rise for the purpose of prolonging this debate. Under all the circumstances of the case, notwithsianding the able views which have heen presented, and the impatience of the senate, I feel it a duty incumbent upon me, not only in justification of mysell, and of the motives which govern me in the vote which I am about to give, but also in justice to the free and indepresent, that I should set birth the reasons which have reluctantly compelled me to oppose the confirmation of the present nominee. Sir, it is proper I should declare that the evidences addinged against the character and conduct of the late sceretary of state, and the sources from whence this evidence emanates, have made an impression upon my mind, that will require of me, in the con-scientious, though painful discharge of my thity, to record my vote against his nomination. But, let it not be understood, that I am opposed to the executive, or his administration. On slight grounds I am incapable of assuming such an attitude; for, sir, I have the honor of having been associated with my fellow-citizens in elevating general Jackson to the presidency; and the broad les which elevated him to office continue the bear principles when elevated into conice continue the bea-con lights of my political course. And, sir, it must be remembered, that the proud people whose representa-tive I am, are too patriotic to wink at the compromise of the nation's honor, too virtuous to encourage intrigue and corruption, and too honest to withhold their approname of this people, then, whose servant I rejoice to call myself, as far as my vote may go, I shall protest call mysell, as far as my vote may go, I shall protest against that highly repredensible course of confinct which has been pursued by the nominee. I repeat, sir, that the vote I shall give does not proceed from hostile, to the executive. I came here prepared, and am now disposed to give a liberal and generous support to the great leading measures of his administration. It is, therefore, with no small degree of satisfaction, that I can recor to my cordial support of most of those measures and nominations which have possed in review before the senate; and especially the nominations of neture the senarcy and especially the normalicions of his calified ministers; and I am nors, sir, free to state, that my vote shall be given for Martin Van Buren, as minister to England, if the charges which shall have been preferred against him shall by any means be weakened, or done away. As the friend of Andrew Jackson, I have been, and am still, disposed to prosecute this inquiry into the truth of the charges, besee, that every gentleman present should be fully nationed, that every gentleman present should be mily satisfied on boast sincerer friendship for the executive than Loan; no man in the dark hour of trial was more sname a common in the cark nour of trial was more ferrent in his support, (for I was an original allocate of his claims.) But, air, I cannot obey the slavish tistates of party discipline. I am constrained to yield to the delinerate convictions of my conscientions judge-When my reason is convinced, I dare not disment. When my rec

Sir, as has been remarked by the honorable gentleman from Maryland, (Mr. Chambers J. I too, am ware of the danger to which my rote may subject me.—For, ar, it is my fate to have bitter enemes; but, air, it is my preculiar fortune to be able to heast of the most sincere and warmest friends. I am also aware that the malignity of those who cannot appreciate the obligations of an honest metrice, may cause them to hurl the shafts of calcumy against me, and attempt to prejudice the minds of my constituents. I am aware, too, that there are those whose minds are narrowed to the confines of party predictetions, on whom those avaults may prove

successful. I am also aware of my majoritum in difering with my homosable colleague, and that the motrees which have induced me to assume my stand, may be utterly misrepresented. However, after due deliberation and reflection, and under a strong impression of my high responsibilities, and with a perfect conviction of the approbation of my conscience, and my constituents, no satisfactory explanation of the weighty charges alteged against him having been given, I am compelled to record my vote against the nomination.

MISCELLANEOUS ARTICLES.

The corrent column of the REDISTER will close on the last Saturday of the present month, when a good opportunity will be afforded to those who may be willing to assist in giving it a new dicess, as is intended, or in defiavaing the extra expenses that must be incurred to keep up the record of important things, as well as to discuss general sabjects, as usual.

Mr. Vax Burax. Some of the facts brought ost, in consequence of the late rejection of this gentleman by the senate of the United States, have uncommon interest, because of the excitements of party; but we cannot attend to them until our columns are reliered

of the debate; and then they may be registered.

Meritogs have been held in Albany, New York and
Philadelpian, disapproxing the rejection of Mr. Fan
Bitten. There was no meeting held in South Carolina
or Ohio to disapproxy of the receil of Mesars. Michael Merrian, and the supply of their places by
Mr. John Randolph and Mr. Thomas P. Morre. And
a meeting has also been held at New York to support
the "cunstitutional right of the senate," as to the rejection of Mr. Van Buren.

There were 1200 meetings at New York against the senste, and both are called "failures." The "Sensteel" states that that at Philadelphia tild not exceed four hundred persons, "at most"—and decideally says that Mr. Dalitas or Mr. Hikkin swill receive the Pennsylvania nonumation for vice president, by the convention that a to assemble on the 5th of next month.

Mn. Haywe, in his explanation about the editor of his purp, skee, note the upportunity to modify his proposed amendment to Mr. Cho's resolution. In a more supportunity to the proposed amendment to Mr. Cho's resolution. In a more editor, the supportunity of the resolution of the supportunity of the resolution of the supportunity of the Free Trade Convention. He had understood, however, since, that it varied somewhat from that proposition; and when he should be made acquainted with the precise character of the views presented in the menoral of that convention, he should probably modify his amenulment as as to could probably modify his amenulment as as to could probably modify his

We only ask that Mr. Hayne will not object to the proposition of any gentleman who shall model his plan after the views of the New Fork Convention—because thinking it wrong that the opinions of that body should be plainly introduced to the consideration of the senate; We make this remark, because general Smith could see "lobby members" from the latter, but none from the former body of individuals. So wide is the difference between mem and tunns.

What we said of the set of 1828, shall not be retired from. It was intended by many that no traff bill should be passed at that ression, though they qualted at the responsibility of the yeas and may, and made reward calculations that the eastern members would reject a, because they had remieral to offinaire to them—and so it nearly happened. We refer Mr. Hayne to the opinions of his lireals, Messrs, Gimer, Cambrelarg, and others, on this point. They are on record. We saw the wand of the "magician" at the time alluded to—and well knew the game that was playing to deleat the passage of any ball concerning the tarift, while pretending to an ardent zeal for the support of domestic industry; thus to rickle the people, but perfect the "combinations" which gov. Floyil spoke of. Most of the puppets used on this co-casion, are heard of no more. They served the purpose, and have been east aside among the old rubbishing discounting the said, all the discarded cups and balls of the wire-workers of that

have been; and we doubted whether there was not more evil than good in it, but it was thought best to take it, with a view to future amendments, and it was improved in the senate. But in certain respects, (such is the clas-ticity of the American people) that they have partially accorn modated themselves so as to reduce the evil, -and make the most of the good; and after a while, perhaps, the law of 1828, with a few exceptions, and new enactments to prevent frauds, may do very well.

CHARLESTON. Mr. Hayne's remarks on the reduced tonnage owned at Charleston, and Mr. Clay's reply, give more than usual interest to the following facts de rived from an official account of the loreign arrivals and departures of vessels, at that port, for the last three months of 1831

			To	tal
Arrivals.	Ships.	Brigs.	Am.	Br.
Octuber-American	3	3	5	
British	3	7		10
Novem American	8	8	7	
British	4	1		5
Decem,-American	1	4	5	
British	3	3		
Departures.				
October-American	1	5	6	
British	0	3		3
NovemAmerican	4	0	4	
British	2	8		7
DecemAmerican	6	6	12	
British	7	2		9
			-	-
	Totals		39	39
And there were strive	is and departs	ares of oth	er	
foreign ships and b	rigs			12
	-			-

30

12

Balance in favor of foreign vessels 12

The preceding is abstracted from the official report of "Samuel Alexander, harbor master," of Charleston, and presents a beautiful specimen of "free trade!" Yet Mr. Hayne complains of the decline of Charleston,— and that her last ship was sold, sometime ago,

JOURNEYMEN TAILORS. Among the laughable move-JOUNNIAN ATAINANA THOUGH THE STATE ATAINANA THE STA When we shall agree to reduce the duty on cloths, to the ruin or loss of the wool grower and manufacturer, and the sacrifice of scores of millions of dollars vested by them, we shall certainly take off the duty assessed on British ready-made cloths. If right to pay the taxes and tythes of British tarmers, and manufacturers of clothsit must needs be right also to employ British tailors.

MB. CLAY'S SPEECH. The "National Intelligencer"

Ma. CLAY'S SPENCE. I BE "National Intelligencer" of Tuesday last says.—

Nearly the whole of yesterday's sitting of the senate was occupied by Mr. Clay in the conclusion of his argument on the tariff. He spoke more than three hours, and was briefly replied to by Mr. Smith, of Maryland, between whom and Mr. C. some passages followed, of so warm a character as to call forth the interposition of

We should have supposed that the public appetite for the debate had been in some degree sated by the previous displays, but vesterday the crowd which pressed into the senate chamber was even greater than on any lormer day. Indeed, the jam exceeded any thing of the kind which we ever before witnessed. In the galleries, it seemed to us that men literally stood on others' shoulders. Below, the chamber was almost entirely filled with ladies—not scated, for the greater part of them it was impossible to furnish with seats-but standing, in compact mass—and this for four or five hours. Truly, one knows not which most to admire in the fair auditory-their intellectual relish or their power of en-

[We shall insert this speech, of course, when receivet, and would gladly give place to Mr. Dickerson's very sensible and strong remarks on the same subject,

The act of 1828 was not such as we wished it should and shall do it, as well as bring up the lee-way made as to other matters-if there sh all be a brief cessation of exciting subjects in congress.]

> Wool. We mentioned in our last that the farmers were protected by an efficient duty of 65 per cent. on wool, and have before us an invoice of three bales of wool received at Baltimore, from Germany. The cost of this wool, as ascertained at the custom house, was \$463 40, and the duty and other charges, exclusive of commissions, made an aggregate cost of \$791 32, which sum was pa d by the importer—or say seventy per cent. sdvance on the cost.

The natural effect of such protection will be-the abundant growth of wool in our own country, if its manufacture is also efficiently protected; otherwise wool cannot be grown as a "crop." England has nursed her woollen manufactures for more than a century, and they have become strong; but the "free trade" folks will not allow our's even to "cut their eye-teeth," before they would turn them defenceless on the world. As things stand now-it would be a suicidal act to disturb the duty on wool, and nobody thinks of it, except those opposes to the system; even the duty on coarse wool, imposed by the enemies of protection to sink the bill of 1828, has found friends, in the belief that its effect will be a full supply of better spiteles in lieu of those hitherto made caclusively from it.

COTTON. During a late week, the elearances of cotton at New Orleans amounted to 8,422 bales—of which 3,620 were for Laverpool, 1,106 Grenock, 328 N. York, 1,951 Boston, 396 Baltimore, 713 Portsmouth, N. H. and 303 Providence, R. I. Total to foreign ports 4 706 —to domestic ports, and chiefly for the factories, 3,716. This is a pretty little item.

"SAXON SHEEP." The letter of general James Tallmage, and the case stated by him concerning the fine-woolled Saxon sheep, inserted in the REGISTER of the 14th ult. page 373, has caused the receipt of two cominunications from practical men, contesting the principles laid down in the article referred to. We desire to give them a speedy insertion, and shall make room for them as soon as we can. The subject is highly inte-resting, but will not suffer by a little delay.

IMPRESSMENT OF SEAMEN! It is gravely stated in the "Globe," that Mr. Van Buren was commissioned to negotiate concerning the impressment of seamen. We thought that question had been smik in the ocean with the hulk of the Guerriere, or snugly buried in the swamps of Louisiana: and that the people had fully determined that, on the high seas, the stars and the stripes should protect all sailing under them—and that a search shall not, under any circumstances, be permitted, unless by civil process in British ports, or "fresh pursuit" of deserters. The proposition to negotiate about impressment would seem partially to admit the "right" as claimed by the British—which we regard as altogether inadmissible, and will not agree to consider.

THE CHICKASAW TREATY. The debate on this treaty THE CHICKASAW TREATY. In eleosite on this treaty has been exciting. We intend to publish some of it. The facts disclosed, it they had happened in other times, would have caused no small stir among the people.

THE CHOLERA. The mayor of New York has ordered that, in consequence of the spread of the cholers in Europe, all vessels arriving from ports in the Mediterranean, or the western coast of Europe, including those of Great Britain, shall anchor at quarantine until ex-amined by the health officer.

A summary notice of the spread of the cholers in England, will be found under the head of foreign artieles. It has appeared also in the neighborhood of Edinburg, and fears are entertained that it will become general.

THE SEASON, A letter to the editor from Vermont. dated Jan. 17, says—there had been a severe thaw, which had almost spoiled the sleighing—that the green award was then being ploughed up for the spring erops; for it had not been frozen in the pastures and meadows under the snow, though the preceding month had been chett), no other worker in iron being capable of getting-the coldest within the recollection of the oldest inhabi- up the thing so handsomely. tants.

THE MAJORITY SYSTEM. There are yet two vacant acats in the house of representatives-one for a member from Massachusetts, and the other for a member from Vermont—because that, as three candidates were voted for in each district, no one had a majority of the whole number of votes, as is required in these states, though some six or eight trials to elect have been made in each, at a great waste of time and money, and excessive harrassing of the minds of the people; who are friendly to certain great interests, but cannot agree on the person who shall represent them. It is possible that such vacancies might be the ruin of those interests.

"A RASCAL!" A piece of paper was sent to us the other day from the "lar west," very prettily grou-mented and marked as a five dollar bank note. It purported to have been manufactured at the Salem and PHILADELPHIA MANE's co. New Jersey—the word "Salem" being printed in small letters, "Phila-delphia" in large ones, and the "Mant" so flourished that they might be taken, on a slight observation, for the letters BANK; and the whole for a note of the Philadelphia Bank.

phia Dank.
This paper bears evidence on its own face of a design deceive. We sent the rogue back from whence he me. Whether the vagahoud is from an old swindto deseive. ling shop at Salem, or a new usue, we do not know.

THE SLAVE TRADE. Some of the British vessels on the coast of Africa, being in pursuit of a slave vessel, the villains on board of her threw 180 slaves into the sea, manucled together, four of whom were picked up and saved. We hope that all nations will soon agree to regard this trade out-lawed, so that the simple fact of being caught with slaves on board shall cause the death of every person engaged in the business. A few well-armand it must be seized with a strong hand.

TAXES-BUINOUS TAXES! Mr. senator Benton, in a report of the debate upon his salt bill in the United States says: -

"The agricultural interests were, however chiefly concerned in the salt sluty. In the great reg on which is watered by the king of rivers, whose essential intethe port of New Orleans, we send three millions of bushels of satt into this region. For the salted provisions put up by the western farmers, the salt which is made by solar heat can alone be used."

Thirteen millions of bushels of salt! which, until very lately, paid a duty of 20, now 10 cents a bushel, a tax, of two millions six hundred thousand dollars upon the people of the valley of the Mississipul—who never use any Kenhawho, or Sandy, or Goose Creek salt, to cure their meast? The sension, of course, speaks of the consumption of a year, for if he talks of the possible consumption of ages, or of a century, he talks nonsense. The whole amount of salt, imported into a tax, of two millions six hundred thousand dollars nonsense. The whole amount in sain, imported and all the ports of the union, during the year 1830, according to this year's treasury report, (pamphlet p. 84) was five millions, 374 thousand and 40 business. Less than one tenth of which, in all probability, was received at New Orleans. But what will the farmers of the west New Orients. But what will the farmers of the west think of the senste's being told, by a western senator, that they use no salt for provisions, but the alum, or hard coarse salt of the West Indies—when they know that there is not one bushel in a thousand of what they use which is not made at some of the works in the Frankfort Com. western country?

The preceding is not quite equal in "magnitude" to Mr. Cambreleng's creation of 8,648,868 tons for the coasting trade of Great Britain—heing, perhaps, the amount of tomage in all the world—hom that of the but runs a parallel with some of the famous and "honor-able" gentleman's calculations as to the duties that are paid on foreign woollens; and is exactly fitted to some of the statements furnished to the semite of the U. States by an impored friend of American interests, (Mr. Sar-

PENNSYLVANIA. The Gentire" Democratic conve tion, which assembled at Harrisburg on the eighth of January, to nominate a governor of the state, electors of president and vice president, &c. and consisting of about, or less, than torry persons, as heretofore mentioned, seems to have entirely failed, by the declination of most of the persons honored with a nomination on that occasion. though regarded as "whole-hog" men—to use the late-elegant term of furious party. Among the resigned in the celebrated George Kremer! He "could not go it." The 'inflicial course." for Bernard in The "official organ" for Pennsylvania, the "Inquirer" at Philadelphis, says—"It is only necessary for us here directly to state, that all the resignations that have taken place from either of the tickets nominated by the state convention, have been made by the friends of the governor-men who would rather sacrifice the pre-

sident than peril the re-election of George Wolf."

The Iriends of gov. Wolf, however, give us to understand that their opposition is mainly against the succespears was the real object of the abortive convention to promote.

On the 2d inst. Dr. Burden offered the following resulution in the senate of Pennsylvania

Resolved, by the senate and house of representatives. &c. that the senators from this state in the congress of the United States be instructed, and the representatives requested to use their exertions to obtain a renewal of the charter of the bank of the United States during the present session of congress, with such alterations, (if any be necessars ), as may secure the rights of the states.

When this resolution came up, the speaker of the seuste offered the following substitute-

Whereas, the charter of the United States bank will not expire till the year 1836," and, whereas in re-chartering an institution so important, the utmost circumspection should be used with regard to its provisions, and whereas those provisions would not, in the opinion of this legislature, be well adjusted during a period of

high party excitement. Therefore,
Resolved, That in the opinion of this legislature the present session is not a propitions period for seting on this question.

Resolved, That the attempt by the bank to connect this matter with party politics, is unwise and ought to be repulliated.

Debate followed, and the substitute was lost, only two or three voting for it-and then the resolution passed unanimously; and, being sent to the house of repre sentatives, it was promptly agreed to-77 for, 7 against

The following resolution, which had sometime previous passed the senate, if we recollect right, unanimous-

ly, was before the house of representative aon the 3d inst.
Whereas, protecting duties are in strict conformity to the spirit and letter of the constitution of the United States, tend eventually to lower the price of goods, enconrage agriculture by creating a home market, give employment to our own citizens in our own country, instead of maintaining the subjects of foreign nations, in crease commerce by extending internal trade, and, by affording articles of export, preserve public morals by substituting industry for idleness. And, whereas, under the operation of the tariff, the nation has enjoyed an unexampled degree of prosperity, which can only be perpetuated by a steadfast support of the system:

Their for e, resolved, by the senate and house of repre-sentatives of the common wealth of Pennsylvania, in general assembly, met. That it is the opinion of this le-gislature, that any reduction of duty on articles which enter into competition with such as are produced or ma-

"It has been contended that is a censure on the president, for agitating the question more than two years

The senate of New York, 20 to 10, have passed a vote against rechartering the bank. It was yet pending in the other house. All the banks in the city of New York have united in a memorial praying that the charter of the bank may be renewed.

Several amendments were proposed and put down.
One was "that the protection of American manufactures should be fostered as far as is compatible with the peace and harmony of the union," but it was not supported by any other than the mover and seconder. The resolution

was passed.

CANADA appears to be very considerably excited. The people are getting warm in several parts of the provinpeople are getting warm in several parts of the firstin-cea, and the government in exerting a high hand over them. Mr. Mackenzie, twice elected to the legislature of Upper Canals, has been twice expelled, for alleged libels on the legislature and government, many exciting questions are before the people, contending for more liberal opinions and just practices; and Mr. Mackenzie was about to proceed to England to lay them before the government at home. In Lower Canalla, the editors of the Montreal "Vindicator" and of the "Minerva," have been arrested, and, without a jury trial, condemned to imprisonment by the legislative council; and in the house of assembly of this province, it is stated that Mr. Auditor Young threw a candlestick at Mr. Solicitor-general Ogilen's head!

Canada contains a large share of the elements of revolution, and they will assume a form and substance at au early day. The officers of the state and in the church, sent out to make money, are, as such persons generally must be exceedingly offensive to the settled popular

JAMAICA was in great alarm and confusion because of insurrectionary movements among the slaves. Martial law had been proclaimed, and the troops were ordered to about down all who did not immediately surrender at discretion. Arms had been found in some of the huts, and to a considerable amount. Many plantations had been destroyed. The following proclamation had been issued-

Montego bay, head quarters, St. James' Jan. 2, 1832.

To the rebellious slaves,

Negroes-You have taken up arms against your masters, and have burnt and plundered their houses and buildings. Some wicked persons have told you that the king has made you free, and that your masters withhold your freedom from you. In the name of the king, I come among you to tell you you are misled. I bring with me numerous forces to punish the guilty, and all who are found with the rebels will be put to death without mercy. You eannot resist the king's troops. Surrender yourselves and beg that your crime may be pardoned. All who yield themselves up at any military post immediately, provided they are not principals and chiefs in the burnings that have been committed, will receive his majesty's gracious pardon. All who hold out will meet with certain death

WILLDOGRAY COFTON maj, gen. commanding.

The period may be a little delayed—but nothing is more settled in our judgment, than that a black belt will extend from Cape Antonio, in the island of Cuba. to the southernmost point of Trinidad. "It is as fixed as fate"-and this result had better be culculated than

the value of our union!

One account says that the negroes, 15,000 strong, had possession of the interior of Jamaica—if so, and they are resolute, it will be hard to dislodge or destroy them. The history of the Marcone is familiar to every boily.

#### FOREIGN ARTICLES-BRIEF NOTICES. GREAT BRITAIN AND IRELAND

The British kingdoms are much sgitated-to an uncommon degree of privation and suffering and acts of violence, in some parts, are added territle apprehensions of the cholera, and fearful considerations concerning reform. If the house of lords shall again reject the bill, serious disturbances are expected. The British people were never, perhaps, more excited than at the present time; and it seems very possible that many of their artificial institutions, such as the corn laws, tythes and other monopolies, must soon give way -and "great will be the fall thereof."

We have a long list of places in the vicinity of Sun-derland, at which the cholera was raging, though de-clining in the town just named, seeming to have neverly

nufactured in the United States, would be inimical to expended itself. These are the chief places mentioned — New Castle, North Shields, Gateslead, Tynemouth, Several amendments were proposed and put down. South Shields, Houghton te Spring, Pensher and Haddington—and in Wales. The whote amount of cases, recoveries and death is not easily ascertained—but the reports would show the probable amount of cases up to the 31st Dec. at not less than 1,500, of which more than one-third ended in death. It was observed by a French physician, who had been sent to examine this disease at Sunderland, that "it begins where other diseases end-in death." At Gatesbead the disease appeared all at once in the attack of 39 persons-59 new cases were reported on the next day, and about 90 more in two days—of the latter 42 died within these days and 13 recovered. It is insisted that, in one instance, the disease was communicated by rags, &c. Persons of all ages and conditions are attacked -but the chief victims of the cholera are the intemperate, and its favorite places of resort in filthy streets and among fittly persons.

The British king's speech on the opening of parlinment re-urges the reformation of the commons-speaks of the "discress that prevails in many parts of his domiuions," and it is severe—acknowledges, with great conees afflicting results in Ireland, because of opposition to the payment of tythes, and suggests that, while the church is protected, something may be done to remove the cause of complaint-mentions the late scenes of violence at Bristol-and throws out a general idea that the peace of Europe will not be interrupted.

Dollars at London, Dec. 30-4s, 94d. per oz.

The reform bilt again passed the British house of commons on the 16th Jan. For it 324, against 162.

There has been a dreadful explosion in a coal mine The depth of the coal from the surface, near Wigan.

was 1,245 leet. Twenty-eight persons were killed. Two ruffians named Bishop and Williams were lately convicted at London of "Burking"-that is murdering three persons to self their bodies to the surgeons; and execution swiftly followed their condemnation. practice was to stupity their victims with rum and laudanum; and then put them head-foremost into a wellwhen the "business was soon over," and the run and laudanum discharged, to prevent suspicion. Every thing belonging to these fellows is detailed with John Bull length and eagerness. Tens of thousands attended their trial, tens of thousands their execution; tens of thousands examined their bodies exposed after death,

ty, the seenes of their atmesties. Five gumens were paid for good seats to see the hangings.

Ireland is in a terrible state, because of poverty, oppression and violence. The payment of tythes is re-sisted in many places. At Waterford, a mob of several thousand persons, many armed with pitchforks, after receiving the fire of the pulice, which killed three of them, rushed forward and slaughtered fourteen of their enemi-s, and so badly wounded several others, that they would die. The people seemed converted into savages, from their manglings of the bodies of the police men.

and tens of thousands have visited, with intense euriosi-

There has been a great riot at Aberdeen, in which an anatomical theatre was destroyed as a "Burking shop." O'Conneil was attempting to get up a sort of a par-tiament for Ireland, to meet at Dublin on the 9th Jan. The following is given as an extract from one of his

late harangues; he seems resolved to nutlify England: England, strong as she is, with Scotland and Wates ouring in on her-I will give them France too-patry pouring in on her-1 will give them France too-patry Spain, Portugal, the states of Italy, and they may add the Russian autocrat; and in opposition to these, let only all the Catholies, Protestants, Presbyterians and Dissenters of Ireland, put shoulder to shoulder in the field. and we will dely them -- (Tremendous cheering.) Every mountain in l'eland is à fortification-every roud is a defile-(Query, Kuncklopher!)-and, in fact, such militury positions and advantages no country ever had; and il agreed amongst themselves, what country ever had such a garrison?"

French chamber of peers, 103 against 70, have passed the law which abolishes hereditary peerage in France. This has added fresh fuel to "reform" in Eng-

There was tumult at Grenoble, but soon suppressed t by the military, because of supposed over charges of a

tux patherer. The French troops on the Belgie frontier are held ready to marely at a moment's notice. It is thought that

ready to march at a moment's notice. It is thought that the king of Holland will again appeal to arms. The proposals of gen. Lelayette to grant civil rights to the Polish refugees in France, had been rejected by an immense majority in the buresu, and will, therefore, not be read in the chamber. Algiers is to be a French colony.

WISCELLANEOUS.

The whole loss of the Russians in the late campaigns in Poland, is put down at 180,000 men—of which the capture of Warsaw cost 30,640. The Russian army in Poland is 150,000 strong. The Poles are governed with a high hand.

Gen. Torrijos, and his party of about 50 men, having left Gibraltar, and being toliowed by a Spanish at med vessel, were compelled to throw themselves on the coast of Malaga,—where they were captured and shot, amidst the shouts of the people, excited by the monks. There is a report of a revolution at Rome, in which the

pope lost his life, and great excesses were committed. The cholera had entirely subsided in Egypt. An Egyptian fleet, of seven heavy frigates, seven corvettes, meven brigs and schooners and twelve gun-boats, with many transports, and 3,000 infantry and 1,200 artiflery, had sailed for the reduction of St. Jean d'Acre, and expected to proceed to Damaseus.

Gen. Bermudez has been assassinated in Cumana by eneral Carrera, and the people are called upon in a furious handbill to take a general oath to revenge him.

"Ferdinand 2nd, by the grace of God, king of the Two Sicilies, of Jerusalem, &c. &c." has conflemed a number of his subjects to death, because of a riot that took place in Palermo. The charge against them was that they had conspired to overthrow the public peace to enrich themselves.

The bank of England had notes amounting to upwards of eighty millions of dollars in circulation, in the year 1830.—This circulation was much contracted in 1831. The loss by the fire at St. Thomas' is estimated at be-

tween 2 and 3,000,000 dollars. The light was seen 72

miles. The cholera has committed dreadful ravages in Arabia-its victims are said to have been 45,000, in one

The new volcanic island in the Mediterranean was rapilly diminishing, and it was thought would soon disap-

Pear.
The number of Poles at present in banishment amount to 62,000.

The lace trade at Nottingham is at the present mo-

ent, depressed beyond all parallel. Several ladies have been thrown into convulsions on hearing the unknown tongues at Mr. Irving's Scotch church, and at the present moment there is a young lady laboring under mental decangement from the same

cause! use: London was lately enveloped in a fog as dense as any ith which it has been visited for years. The mails and with which it has been visited for years. other coaches were conducted out of town by men with torches.

### TWENTY-SECOND CONGRESS-1st SESSION. SENATE.

February 3. A report from the navy department concerning seamen on foreign service, was ordered to be printed.

The committee on public lands were discharged from further considering the memorial of the assembly of indians, praying that ten years actual settlement on, and cultivation of, lands, should entitle such settlers to the same.

Mr. Hayne reported the bill providing for a revision of the rules and regulations of the naval service, without amendment.

The bill authorising subscription to the Baltimore and Ohio rail road company; and the bill to give effect to the commercial arrangement between the United States and the republic of Colombia, were severally read the second time and referred.

On motion of Mr. Foot, the senate resumed the cossideration of Mr. Chay's resolution on the subject of the tariff-when

Mr. Clay resumed his argument, and continued speak-ing until 3 o'clock, when, being exhausted, he asked the further indulgence of the senate—and

The senate adjourned to Monday.

The senate adjourned to Monday.

February 6. Mr. Smith presented the memorial of Charles Carroll, of Carrollton, and about two thousand others, praying for the renewal of the charter of the U. States bank -- referred.

Mr. Webster presented a similar memorial from sun-

dry citizens of Massauhusetts.

Mr. Chambers presented the resolutions of the legist lature of Maryland, recommending the erection of light houses on certain points on the Chesapeake bay.

Mr. Hilkins presented the memoral of the Chesas peake and Ohio canal company, praying an enlargement

On motion of Mr. Chambers, the resolution relative to the celebration of Washington's centennial birth day, was taken up; and agreed to--and

On motion of Mr. King, the vice president was unanimously authorised to appoint on the part of the senate, a committee of five members.

The senate then resumed the consideration of Mr. Clay's resolution on the tariff --- when Mr. Clay, sddressed the senate for about three hours, in conclusion of his sneech.

Atter some remarks from Messrs, Smith and Clay (which eaused the intervention of the chair), Mr. Hill gave notice of his intention to address the sense, and moved an adjournment. Adjourned.

The journal having been read, February 7.

Mr. Tuzewell rose and asked to be excused from serving on the committee appointed in conjunction with the committee of the other house, for the purpose of making arrangements for the celebration of the centen-nial birth day of George Washington, the first presideut of the United States. He had opposed the resolution, though his own vote, and that of two others, who with himself had given dissenting voices, had, from the condition of the senate, not been observed by the pre-siding officer. He considered that the deputation should express an ununimous opinion in relation to the busidifferent views, was compelled to ask the senate to ex-cuse him from serving. Man-worship, how great socuse him from serving. Man-worship, how ever the man, Mr. T. said, he would oppose.

Mr. Tazewell was excused.

Mr. Troup, for similar reasons, was also excused. Mr. White, of Tennessee, said precisely the same rea sons as influenced the gentleman from Virginia, also disqualified him from serving. He had opposed the re-solution, and asked to be excused; and was accordingly excused from serving.

Mr. Smith, of Maryland, made a similar request, and was also excused.

The vice president communicated a report from the navy department, and one from the treasury department; the first transmitting a statement of the appropriations for the service of the navy lor the year 1831; and the other a statement relative to the affairs of the Bank of the United States, in answer to Mr. Benton's resolution of the 24th ultimo.

Mr. Poindexter presented a memorial from the legislature of the state of Mississippi, praying for a grant of land for purposes of internal improvement.

Mr. Smith, of Maryland, presented the memorial of the Marine Bank of Baltimore, praying for a renewal of the charter of the United States Bank.

Mr. Dallas presented a similar memorial from the Commercial Bank of Pennsylvania. Also, a memorial from sundry citizens of Pennsylvania, praying for legislative interference in behalf of the Cherokee Indians.

Mr. Bell, of New Hampshire, presented a memorial from the Exeter bank of New Hampshire praying for the renewal of the charter of the bank of the United States.

Mr. Hayne made a report recommending surveys to be made of the Narragauset bay, with a view of ascer-taining the practicability of establishing a naval depot and expedition post thereon.

The vice president communicated from the war department abstracts of the militar returns for 1831. for the last year.

The bill from the house for the relief of David Darden, was ordered to a second reading.

Mr. Dickerson reported the bill for the reduction of the duties on ladma blankets, and recommended its mdefinite postpinement.

The senate then proceeded to the consideration of Mr. Clay's resolution on the subject of the tand, and Mr. Hitt addressed the senate at length, in reply to Mr. Clay. He was followed by Mr. Mangun, in op-position to the resolution. At a late hour Mr. Mangreen, who had not concluded his argument, gave way to a motion to adjourn; and the senate adjourned,

Februar v 8. Mr. Dickerson who had been appointed in the place of Mr. White (excused) on the junt committee to take order for celebrating Washingron's centenpial birth day, asked to be excused, and was excuscil accordingly.

The said committee, on the part of the senate, now consists of Mr. Clay, Mr. Hebster, Mr. Poindexter,

Mr. Chambers and Mr. Bibb. Mr. Spragne submitted the following resolutious:

Resolved, That the late "arrangemem" made between the executive of the United States and Great Britain, relative to a trade entire of the United States and occas Detain, celative to a trade between this country and her culomal possessions, gives to British vessels an advantage in transporting articles to their West India culomics girater than is secured to American viscels, and violates that principle of reciprocity in marginion, which our government has heretofore sudulously and Bruly sudcavored to

maintain. Resolved, That said "arrangement," and the president's pro-elamation of the 4th of October, A. D. 1836, spenning the ports of the United States to Bittish reasels, was not authorized by the act of congress of 30th May, 1830. Mr. Bitkins submitted a resolution relative to appeals

to the supreme court of the U. States, in certain cases. Mr. Datias moved that the report received yesterday from the secretary of the treasury, in reply to Mr. Benton's resolution relative to the currency of the U. S. bank, be printed and referred to the select committee

on the bank. Mr. Benton had drawn a resolution which he submitted, for referring this report, with instructions to into the legality of the orders, issued as curren-

by the bank to the committee on the judiciary.

A debate ensued, in which Mr. Benton, Duttar, Smith

and Johnston took part.

After despatching some morning business, the senate resumed the resolution of Mr. Clay, relative to the tardf-when

Mr. Mangum rose and addressed the senate about two hours in conclusion of his speech. When he had finished,

The senate spent some time in the consideration of executive business. And then adjourned.

February 9. After the despatch of some morning business.

The senate resumed the consideration of Mr. Clay's resolution respecting the tariff.

Mr. Tyler, of Va. rose and soldressed the senate for two hours against the resolution-when being much exbauated from feebleness of health, he gave way to a motion to proceed to the consideration of executive bus-iness—and the senate, after spending some time therein, adjourned.

HOUSE OF REPRESENTATIVES,

Friday, Feb. 3. Atter various reports from com-

mittees,

Mr. Thomas, of Lou. moved a joint resolution proposing the appointment of a joint committee to inquire into the expediency of celebrating the centennial birth day of general George Washington.

Mr. Adams suggested the propriety of moditying the resolution by striking out the word "general."

Mr. Thomas accepted the modification.

Mr. Taylor suggested another verbal amendment;

which was also accepted. Mr. Adair, thought it would have been better to re-tain the word "geocral" and inserted before it the word

"major," so as to read "major general"-as in his opi- | worth---when

nion the fame of general Washington rested chiefly on his inditury services.

Mr. Adams replied-be considered the services rendered to the country by general Washington in a civil canacity, quite as important and worthy of commemoraeaphenty, quite as impression and that the simple name "George Washington," expressed more than if it were accompanied with a whole volume of titles, civil or military.

The resolution was amended so as to read as follows: heselved, That a joint committee of the two houses be appointed, for the purpose of making arrangements for the celebration of the ceutennial birth-day of George Washington

On motion of Mr. Wickliffe, a committee of twentyfour members, one from each state, was appointed on the part of the house.

Mr. Davis, of Mass. moved a resolution relative to the claims of that state for military services rendered durmg the late war.

The house then resumed the consideration of Mr. Everett's resolution relative to the Chickasaw treaties-

Mr. Evans, of Maine, addressed the house in reply to Mr. Clay, of Ala. and Mr. Polk, of Tennessee. The debate was cut short by a mution to proceed to

the orders of the day.

The engrossed bilt to pay for David Darden's horse

Ronnilus, was read the third time and passed.

Several private bills were then severally taken up and disposed of-and the house adjourned.

Saturday, Feb. 4. The resolution relative to the Chickasaw treaty was again taken up.

Mr. Cave Johnson, of Tennessee, addressed the house

in explanation of the circumstances of the transactioncondemned, in the most explicit terms, the conduct both of the commissioners who negotiated the trenty, and of the lessees to whom the reservation of the Chickssaws was leased -vet he declared himself opnosed to the

mquiry.
Mr. Pendleton, of N. Y. advocated the resolution.

Mr. Clayen, of Georgia, was opposed to the form of the resolution—said offered an amendment denying that treates made with the Indiana do come within the meaning and i tention of the constitution conferring the treaty making power on the president and senate; but that they are more compacts or bargams made by the autho-

rity aforesaid,

Mr. Whittlesey then moved the house to proceed to the orders of the day, which motion prevailing,

Fourteen private tills were considered and severally

ordered to a third reading; and then the house adjourned. Monday, Feb. 6. Sundry memorads favorable to the renewal of the charter of the United States Bank, were presented and referred.

The speaker presented a memorial from the Creek Indians-referred.

The supplement to the act to provide for certain persons engaged in the land and naval service of the United States during the revolutionary war, was made the order of the day for Monday next.

The act relative to the cultivation of the vine and the olive was twice read and committed,

The bill making further provision for the West Point military seademy, was committed to the committee on military affairs. The house adjourned.

Thereday, Feb. 7. Mr. Sevier moved an inquiry as to the qualification of voters in the territory of Arkansas. On motion of Mr. Wardwell, the committee of miernal improvements were instructed to inquire into the

expediency of reporting a bill for the survey of the entrance of Catfish creek, in the state of New York. Mr. Anderson submitted a resolution to inquire into

the propriety of amending the law relative to the return ol destitute scamen.

A message was received from the president on the subject of the regulations of England, France and the Netherlands relative to their fisheries The house resumed the consideration of Mr. E.

Everett's resolution relative to the Chickamw treaty. Mr. Fuzgeruld, of Tenn. delivered a short speech against the resolution --- and was replied to by Mr. Ella-



On motion of Mr. Polk the house proceeded to the consideration of the apportionment bill. The question being on atriking out "48,000 and inserting "45,000." On taking the question the motion was lost—yeas 68, of representation.

The yeas and nays being ordered,
Mr. Watmough, of Pa. addressed the house in favor
of the low ratio---when he had concluded, a call of the house was ordered --- and on the year and nays being taken, there were, yeas 88 nays 102. So the proposed

amendment was rejected.

Mr. Clay, of Ala. moved to strike out "forty-eight" and insert "forty-seven" --- determined in the negative

by a vote of yeas, 65, nays, 127.

Mr. Kerr, of Mil, then moved so to amend the bill as to strike out "forty-eight" and insert "forty-five," but before the question was taken, the house adjourned.

Wednesday Feb. 8. Mr. Drayton made a report accompanied by a bill to prevent the separation of captains in the line of the army from their companies, for the better organization of the United States' military seademy, and for other purposes; twice read and committed.

Mr. McDuffe, from the enumittee of ways and

A bill to reduce and equalize the duties on imports.

Re it enacted, &c. That from and after the Soth day of June next, there shall be levied, collected, and paid, on all iron aml steel, salt, sugar, cotton-bagging, hemp, flax, and manufactures of iron, cotton, and woul, imported into the United States, flutics of 25 per centum ad valorem, and no more, until the 30th of June 1833; after which the said duties shall be 183 per centum ad valo-rem, and no more, until the 30th of June, 1834; after which the said duties shall be 123 per centum ad valorem, and no more.

And be it enacted, That from and after the 30th day of June next, there shall be levied, collected, and paid on all other merchandise imported into the United States, 121 per centum, ad valorem, and no more; except such articles as are now ununried free of duty, or at a lower rate of ad valorem duty than 123 per centum.

The above bill (which was twice read and committed) was accompanied by a report of considerable length.

When it was announced,

Mr. Ingersoll said he would avail himself of the present moment to state, that he differed toto calo from the majority of the committee by whom the report had been It was true, he stood in a small mmority in the committee of ways and means on this question, only one gentleman (Mr. Gilmore) agreeing with him in committee, in regard to the protective policy of the country. He had heard the report read but once, and had no opportunity to examine it before its introduction, and further time would be necessary before the minority would be able to prepare a counter report. He considered the report and accompanying bill as aiming at the subversion of the manufacturing interests, the great mechanical interests, and, he might add, the navigating interests too. at least so far as the fisheries are concerned.

Mr. Verplanck elaimed the right to express his own dissent to the report of the chairman of the committee; he occupied a singular and solitary position, neither agreeing with the views of the majority nor minority. The report contained many principles and arguments with which he agreed; but he protexted against much of it, which represents the great burden of the existing tariff laws as falling almost exclusively in heavy taxation upon the planting or cotton exporting states, whilst the northern and middle states received from it anthing but benefits. He made his personal protest now, and should hereafter make a more formal one, by a more formal report. He objected also to the expediency of intro-ducing the bill in its present form; from the sweeping reduction of duties, it offered no satisfactory basis for the final adjustment of the present question.

Mr. Mercer offered a resolution authorising the printing of the report of a select committee of the house of commons of Great Britain on the use of steam carriages on common roads, with the mutues of evidence and ap-

pendix attached thereto.

The house then proceeded to the orders of the day, and after passing a number of private bills, took up the

nays 118.

A motion to insert "46,000" was also lost.

Mr. Fance then moved that "44,400" be inserted in lieu of "48,000."

Mr. Hickliffe moved a call of the house, which was sustained. Mr. Adams advocated the amendment in an earnest

appeal to the large states, and particularly to Penusylvania, to sustain the proposed ratio, which would retain for the old states their present number of representa-

Mr. Coulter replied at some length, and submitted his reasons for resisting the appeal of Mr. A. Mr. Clay and Mr. Polk apposed the amendment, and Mr. Wayne, Mr. Letcher, Mr. Carson and Mr. Slade, advocated it.

The question being taken by year and nays, there appeared 97 for, and 97 against the amendment.

The house being equally divided, the speaker voted in

the affirmative, and decided the question in lavor of the ameulment.

A motion was then made by Mr. Taylor to recommit the bill, with instructions to strike out "44,400" with a view of userting "53,000," which was finally negatived by a vote of, yeas 66, nays 129.

The house the adjourned.

Thursday, Feb. 9, Mr. Davis, of S. C. reported a bill making turther provision for the naturalization of

aliens, twice read and committed.

On motion of Mr. L. Constict the committee on internal improvements were directed to inquire into the propricty of making an appropriation to ilelray the expenses of a survey of the river Delaware, with a view to the improvement of its channel from Trenton falls downwards. &c.; for the survey of the river Rantan, with a view to the improvement of the channel from the city of New-Brunswick to Perth Amboy, and for the survey of the Passaic river.

On motion of Mr. Doddridge it was resolved to inquire as to the expediency of improving the navigation of the Monongalia river.

Mr. Davis, of S. C. moved the following resolution;

which was read, and laid on the table, viz:

Resolved, That the president of the United States he requested Resolved, That the president of the United States he requested to lay before this house any corrasponds nee or intormation in his postersion, which mary, in his opinion, be communicated without injury to the service, showing the actual condition of our tingury to the service, showing the actual condition of our continuous control of the service, showing the actual conditions; the present tituation of that government, to what can tent and on what provisions it authority is recognized, and such other information as may be requisite to direct the judgment of his flower in relation to the estimate for the diplomate service which the control of the control of the distribution of the distribution, the communities on making of a charge deep making the communities on making on the flower of the control of the distribution, the communities on making the communities on making the communities on making the communities on making the control of the distribution, the communities on making the communities on making the communities on making the communities on making the control of the distribution, the communities on making the communities on making the communities on making the communities of the control of the distribution, the communities on making the communities of the control of the distribution of the distributio

On motion of Mr. Holland, the committee on public lands were instructed to inquire into the expediency of

lands were instructed to inquire into the expedience of celluling the unimuou prize of theren lands in Plotida.\* On motion of Mr. C. P. While, it was Reselved, That the committee of commerce be instructed to inquire into the expediency of providing by law, that the ship and vessels of the United State may be rejustered, excellent of its construction of the United State may be rejustered, excellent owners of such ships or vessels. And also, that and committee operation of such ships or vessels. And also, that and committee in the hospital money receivable from the enrolled and licenced vessels into the expediency of providing by law, that the account of hospital money receivable from the enrolled and licenced vessels July, 1709, for the velicy trace, pursuant to the set of the 16th July, 1709, for the velicy trace, pursuant to the set of the 16th Verified by the oath of the matter or commander of said vesselome. Mr. Mercer's resolution offered yesterday, was taken up, and a debate of an hour ensueth the resolution

ken up, and a debate of an hour ensuelt the resolution was supported by Messrs. Cambreleng, Mercer, and Davis, of Mass., and apposed by Messrs. Mitchell, of S. C. Drayton and Barnwell.

The resolution was adopted by a vote of, ayes 120, mays 61.

Messages were received from the president relative to the ratification and exchange of the convention be-tween the United States and France, and the treaty between the United States and the Sublime Porte.

The house took up the apportionment bill, and various amendments were suggested as to the ratio of re-presentation, and arguments had thereon—the house, without coming to any decision, however, adjourned.

# NILES' WEEKLY REGISTER.

FOURTE SERIES. No. 25-Vol. V. BALTIMORE, FEB. 18, 1832. [VOL. XLI. WHOLE No. 1,065

THE PAST-THE PRESENT FOR THE PUTURE.

### EDITED, PRINTED AND PUBLISHED BY H. NILES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN ADVANCE.

BE I We have thought it absolutely necessary to the per nod of the volume, that a considerable part of this shoret should be yielded to notices of lately passed or ourrent events, anxious as we are to dispose of the debate on the nomination of Mr. Van Buren-this, however, must be concluded with the volume, which will end on To effect this, we shall issue a sup-Saturday next. plement, and present the remainder of the discussion—presuming that every reader wishes to have and preserve it entire, because of peculiar circumstances be-longing to persons and parties concerned. For our part, we have had much recent occasion to wonder at the manner in which this subject has been presented to the public, in many of the newspapers, certain replies to appeaches being often given, while the speeches themselves were suppressed! These things chiefly belong to persons who have according to the speeches. persons who have entered into the business of publishing, unworthily. The regular-bred printer will not chishonor the press in this manner, unless he has received the "pieces of silver" to betray TRUTH—and then will ele "by authority," and to any amount agreed upon, so far as the means are supplied.

In the sheet of the ADDENDUM to the current volume issued with the present number, will be found, among many other valuable articles, an account of certain manufactures in Rhode Island, which will astonish even those who are lamiliar with the progress and ex-tent, product and importance of the "American Sys-tem,"—and how that it appears tem, "-and how that it penetrates and gives life to all the leading employments of the American people-interlocking one interest with another, and binding all in a common prosperity—even the cotton planting! We earneatly invite a careful examination of all the reports made to the New York Convention. Such a body of momentous facts have never been laid before the public, as flow from that assembly.

Anil, as chairman of the Permanent Committee of the New York Convention, the editor of the REGISTER has received a copy of the report of the committee on the cotton manufactures of the United States, and it shall be published, at full length, as soon as possible. It is a most able and faithful paper—the result of a great ex-penditure of labor and time, and will reflect lasting honor on the chairman and his valuable colleagues and contributors of information. We shall give the results below: they will startle the opponents of domestic in-dustry, and cheer the hearts of the friends of a system which yields so rich a harvest of prosperity to countless thousands of the free laboring classes, and confers such incalculable benefits on the American nation. It should measurance centric on the American mators. It should be observed, however, that the returns are only from twelve states—Maine, New Hampshire, Masuchusetts, Rhode Island, Connecticut, Vermont, New York, New Jersey, Pennyiyania, Delaware, Maryland and Virgi-nia. It is known that there are many establishments in other states; but no returns having been made of them, they are not at all regarded in the aggregates; and these, with respect to the states named, are, no doubt, short of the real amounts.

AGGREGATE RETURNS.	
Persons employed-males 25,25	51
Females	8
Children under 12 5,15	21-no. 67,550
Total dependents	" 131,489
Wassannid per annum	de. 12.155.723
Annual value of products	32,036,760
Capital d	ols. 44,914,984
Mills n	0. 193
Spindles	1,246,503
Ditto, (building)	172,024
Looms	33,506
Vol. XLINo. 31.	

Cotton fised	, ba.	
Varn sold	**	10,642,000
Cloth made	yels.	230,461,990
Weight of cloth	tbs.	59,604,926
Starch used	6 5	2,070,878
Flour for sizing	bbla.	17,245
Wood	cord	8 46,519
Coal	tone	43.770
Oil	gali	. 500,338
Other articles	dels	. 3,880,385
1911		

The preceding includes the work, working people, and the materals consumed, in the machine shops, bleache-

cies and printeries.

The equital above reported, for good reasons assigned, if thought to be from one-fourth to one-third short of its real amount—the floating capital, in numerous cases, not being added to the cost of lands, improvements and fixtures: so the real capital vested, in the states named, may be nearly sixty millions of dollars.

The spindles reported "building" are manifestly short

-for there are no returns from Rhode Island, Pennsylvania, Delaware, Maryland and Virginia-the machine vania, Delaware, Maryland and ving man to the sup-shops of Rhode Island, only, are competent to the supply of 50,000 annually, unit there are other large estab-lishments in Pennsylvania, &c. The operating spindles will be greatly increased in the present year—unless be-cause of adverse events; for many new and large lacto-

ries are preparing.

The quantity of cotton returned as consumed exceeds our previous catealations, bring 77,757,316 lbs. or 259,000 bales of 300 lbs. each, or 214 832 bales of the average weight of 361 86-100 lbs, as the committee has, no doubt, correctly estimated them, by actual purchases; for we are told that the bales are better packed than they used to be. The committee has a knowledge of thirty mills not included in the returns, because they had no accurate report from the states in which they are located, and it is possible that many more exist. So it would seem reasonable to believe that the amount of cotton consumed in our own factories, last year, was not less than eighty millions of pounds.

ie whole export	of cotton was	
In 1809 .	53,210,000	1
1810	93,874,000	i
1511	62,186,000	Before the war.
	3)209,270,000	,
Average	69,756,000	
1815	82,998,000	1
1816	81,747,000	i
1817	85,649,000	After the war.
	3)250,394,000	}

83,464,000 The first period of years 10 millions less, and the last 34 millions more, than the present amount consumed in the American factories! It would not be rash, we think, to say, that the consumption of the present year, (except because of adverse events), the domestic market, will take off 100,000,000 lbs. cotton! But the present accounts are sufficient to gratify the most sanguine friend of domestic industry, without regarding what they will

9 be. It may here be well added -- that, for the last (wo years, or more, the demand for cotton for the American factories, has established the price of crops then coming in, and at higher ratea than foreign orders were limited at-some gentlemen of New Orleans say from 1 to 2 and cents per ib. and we are told that, in numerous cases, and the same to the hone market. the carliest supplies are taken up for the home market. the earliest supplies are taken up for the month of 1s this nothing?--And American cotton goods are sold

But we have not room for further remarks. We recommend this birdy of facts, now for the first time firesented to the American publicato the serious and sidema consideration of southern gentlemen-while tearing that they are two much heated, or too far committed, to believe, "though one arose from the dead," to show the folly of the conclusions they have arrived at, of respect to a protected industry. We see that almost 150,000 of the five people of the United States are subsisted by a manufacture which consumes nearly one-lourth of the whole product of cotton, and gives a value to that fourth almost equal to that of the entire crops so that the interest in cotton spinning is equal to the interest in cotton planting, to say nothing of the market which the manufacture affords to the farming interest, which is so restricted, if not absolutely denied, in all parts of the old world.

We shall conclude this brief article by giving the names of the committee on the manufactures of cotton, and the states allotted for their enquiries. They need not say man's emlorsement.

For Maine and New Hampshire-Lloyd W. Wells and John Williams. For Vermont and Massachusetts-Robert Rogerson

P. T. Jackson, chairman. For Rhode Island-James D'Wolf, James F. Simmons and Charles Jackson

For Connecticut-J. H. De Forrest.

For New York-E. B. Shearman, James Wild and Richard P. Hart.

New Jersey, Kentucky, Ohio, Indiana, &c.-David Holsman and Mark W. Collett. Peonsylvania, Delaware and Tennessee-Lewis Waln

and A. Brackenrulge.

Aluevisud and Virginia—Columbus O'Donnel and James W. McCulloh.

No returns from the states printed in Italic.

IT We have a copy of the memorial of the "Free Trade Convention," tield at Philadelphia in September last. It tankes fifty five pages of large octave! What can we do with d? It must, at least, be land over for a considerable time—because of many previous engagements.

1 have an exceeding strong desire to take up the "Exposition," and the "Exposition of exidence!" which have been published at Philadelphia and Boston, respectively - and never were papers presented that might be more completely keel-handed, or better pessenven a for mistakes committed or willul errors made -- but a is not possible that time or room should be given to this matter now. The chief boundation of all that is said about fron, is from the statements of an Englishman, Mr. Sarchet, -- no native American dures onke any movement on that subject, but as he leads-being a fine specimen of a free trader—the sulphineous Pathia of thursty of inspiration in an American senate, invited in a consuleration of American interests and American feelings:—the points made concerning the wooden manufac-tures appear chiefly such as Mr. Cumbreteng has aften presented, and especially when he CREATED, by a congressional report, nearly nine millions of tons of vessels for the British coasting trade, that that it his own country (though larger than the British), night appear magnificant! - and what is said about the domestic production of sugar seems mandy to rest upon the opinions of a West India sugar planter, and so on, perhaps, with respect to every other leading subject touched. It those concerned in the latter have any leeling, they will feel much ashamed of themselves on seeing a they will teel much annumer of themselves on seeing a review of their "evidence" by a writer in the "Na-tional Intelligencer," who signs "Hampden." He has rendered that part of the "exposition" a thing only to be laughed at-and so will other parts of it be speedily rendered.

How WILL IT WORK? It has been generally stated, that the price of every atticle, the manufacture of which is protected by our tariff, has declined-sometimes said boldness and self-collectedness in the orator, a daring

for a little more than one-third of what the foreign cost that other manufactures pretty nearly retained their us in 1818. old prices; the object of which --- tendency to reduce price in the first class of serticles, while the want of com-petition kept up the former value of the latter. We hope soon to publish an extensive and enrious table, that will show these operations with irresistible power.

We meet with the following in a furious southern three trade" paper, as enpied from the "Salem Garette," a thorough-going allocate of that visionary thing—a creature of theory, found only in the books—and unpractised by any civilized nation in the world, having sea-ports and ships,

Mesers. Editors,-To show the entire absurdity of the idea that the protective system of this country has been the cause of the great reduction in prices, which has taken place since that system went into operation, please publish the following list of prices of articles before that period and at the present time, upon which it cannot be pretended that the tariff has had any effect:

	38	16.		31.
Mess heef, per bbl.	\$13	50	\$ 8	62
Coffee, short price, per lb.	•	20	-	71
Cotton, per lb.		29		9
Codfish, per 112 lbs.	5	00	2	75
Mackerel, per bbl.	14	OO	5	62
Hog's lard, per 100 lbs.	17	60	10	00
Pork, mess, per bbl.	23	00	13	75
American brown sonp, per lb.		15		5
Pepper, black, per lb.		29		15
Tallow, per 1b.		18		8
Tobacco, Kentucky, per lb.		14		44
Tea, sonehong, per lb.		8.5		65
Wine, Malaga, per gal. short pri	ce	97		35

This is on the "high pressure"-but it is no matter. The first column, added up, is \$75 37, the second \$42 25-and it seems that the prices in 1816 were eighty-five per cent. ligher than in 1851. Very well. But the south contents, and most decidedly, that it is the tariff which has reduced the price of cotton. Let us see. In 1823, the year before the "abominable ta-riff," according to the treasury tables, we exported 173,723 (No lbs. cotton, valued at 20,445,000 dollars, or shout 114 cents per lb.; and in 1830, no less than 298,459,000 lbs. cotton, worth 29,674,000 dollars, or 10 239, 439,000 lost cotton, wern appropriately the cents per lb. Now, if the facts intended to be so gravely set forth in the "Salem Gazette," are worth one straw, they will shew that the present price of cotton, which is about 10 cents, should be only a lettle more than air cents per lb. But being ten ents, it is manifestically appropriate that the present of the propriate that the present of t test that cotton, though such a mighty advance in its quantity has happened, instead of declining 85 per cent. lins had a rate of depreciation at only 174 per cent.

But will the amnipotent cotton interest PERMIT it to be believed, that cotton should be subject to the same laws which regulate the price of all other commodities We have taken the value from the year before the tariff which was to have destroyed every thing, and two years after the second turiff which was to have been much more waked than the first. How does it work?

The sariff of 1816 had nothing to do with the price of articles, even if others have had, because of its limited operations, and the business of nations had not then settled down into a peace-establishment.

MR. CLAT'S SPEECH ON THE TARIPP. The public en riosity is greatly exosted to see Mr. Clay's late speech in support of his resolution concerning the tariff, and in reply to Mr. Hayne. Those who heard it, and of either party to the question, speak of it as an unsurpassed dis-play of argument and oratory; and, perhaps, have raised the public expectation too high-for, though all the argument of Mr. Clay may be retained and given on paper-it is impossible to present any thing like a correct view of the eloquence and power, the clear and harmonous voice and energetic manner, by which that argument was lorced on the minds of a dense and delighted audience, and driven home to the oduds of all persons open to an examination of the great truths expounded-for the words which he uttered caused the bearts of many to burn within them; and there is a

trankness and freedom of remark, that are peculiarly his own—which must be zeen and heard, if appreciated justly; heightened by flashes of wit, promptness in reply, and a countenance that no one can look upon without catching some purtion of the zeal with which he supports the great "American System." For instance—m alluding to the government persecutions he had suffered, he exclaimed—'I neither expect the justice of this administration, nor lessue its merg. I zeron its weath, and I dely its power." And when he had spiken of Mr. Calhoun's opinion in 1816, and the latter replied, "that was a tariff for revenue, not protection; the constitutional question was not do butch." "No, sir," rejoined Mr. Clay, "far it was not than considered debate-able."

And when he referred to the natives of loreign countries, who had taken such a leading part against the system, he said "the Irish maile the hest true hearted Americans. So naturally indeed do they fall in with us, that he had been sometimes tempted to helve that Irishad tid not caturally belong to the dominions of Great Brian, but that having been struck from this contient by some convulsion of nature, it had drifted into the views

ity of England, and there held fast to her government?

As the speech abounds with statistical matter, all purparation of a report of it requires considerable time; but we learn that it will probably be ready for publication in the course of the enuing week; and we shall take the first opportunity of presenting it, entire, to our readers, as we did that of Mr. Hajue.

MR. McDurrie's REPORT, &c. In our congressional journal last week, we inserted Mr. McDuffie's bill for reducing the tariff, and have since received his report, which shall have a place when permitted to make room for it. It that bill should pass, there would not be one apecie paying bank in the United States, in three months a er the period of its prospective effect should reach Liverpool. That is, on the 30th September next, every dollar, accessible through the banks, would proceed to micht be the last, but would surely stop payment. At present, because of the excessive importations of last year, a greater degree of distress, for the want of money, prea greater argice of interest in the want of money, pre-vails, than has been experienced for many years. The enterency has, probably, been contracted more than \$20,100,000 within the last six months, and is still contracting—as it must, so long as bills on England bear their present high rate of advance; because that specie, the basis of our currency, is exported, and the quantity of the United States showing a reduction of nearly five milions—or more than one third of its coin, in the time just stated; and hence thousands of projected imtime just stated and nene thousands in projection in provements are stopped, and the mechanics feel that pressure which bears down the dealers, which must soon reach the furmers, and afflet every class with its pestilerous influence. There is no escaping it. It is probable that the reduced value of property, on account of these things, lar exceeds the whole cost of our foreign importations of last year; and yet the influx of British goods continues. Where this deranged state of business is to stop, no one can tell -it cannot, until by the ness is to stop, no one can tell—at cannot, unit by the powerty of lite people they shall be unable to pay for foreign goods, or there shall be some revived themand for the products of their own labor. Such is the result of a full public recausy—such, in a great tigere, the effect of fraults at the euton-houses, encouraging for reign productions and diminishing the demand for one own. We repeat it—the want of money is most seriously telt-the banks cunnot relieve it; because that, to pay for English goods, the foundation of the currency is drawn from them. Large sacrifices of property are craws from them. Large sacrates of property are every day making, and credit is pushed to the utmost extent that it will bear. Many must become bankrupts, that would have been entirely competent to meet all their engagements under ordinary encounteres—for there is not nearly money enough affort to meet the general dreamid for at. In the present state of the country, hundreds will be forced to feel the unportant

frankness and freedom ôf remark, that are peculiarly his own—which must be zen and heard, if appreciated instruction which must be zen and heard, if appreciated instruction to the free per the properties of the period of the zen and a countenance that no one can look upon with the properties are more than the properties are the properties are more to such as the properties are the properties and the properties are the properties and the properties are the properties and the properties are the properties are the properties and the properties are the properties are the properties and the properties are the propertie

THE PRESIDENT. There are frequent and rather strange accounts in the papers as to the real state of the health of the president; while, on the one hand, he are presented as very hale and hearty—hall of life and spirit and zeadously attending to busness, it is said on the other that he is rapidly tailing, and shewing many marks of indeeding in body and mond. The "Richmond Enquirer" has almost as many bulletias of his health, as Mr. Alichie smelt to great a about Mr. Cramford's in 1824; and in a late number publishes two letters from Washington, the first of which, after reporting "lavorably of the health and spirits" also should be considered as a strange of the said of

But the Philadelphia "Sentinel" decidedly says, that if the bank bill shall pass, the president will not reluse his specion to it.

As to the president's health, the United States' Tele-graph says --

"There never was a time when the people were so gulled; so betrayed; so deceived. They are made to believe that they are about to eloone a president for the uext lour years, in the person of Anorew Jackson, when, in point of fact, every sensible man here, of every perty, knows that, instead of choosing the next president in gen. Jackson, for the next term, as the people suppose, they will eloose him in the person of the vice president, whoever he may be! So infirm is gen. Jackson tow; so lattle prospect is there of this living through the next term; that the profigate erew who are living upon his influence, and are controling the movements in the election of the president and vice president, are trembling leat he should expire before the period of the election arrives.

"We feel it our duty to speak boldly. Every one who visits him, is struck with the lact, that he is last sinking; and that, if 'possible, his mental laculties are giving way faster than his physical strength."

"Who shall decide when doctors disagree?" While some assert that the whole object of the general is to secure the successor to Mr. Fon Buren, and that he would retire immediately after the result of the election, if lavorable to his views; others speak holdly of the firmness of his boddy health and intellectual vigor! But this is certain, that there is a very unusual anxiety about the vice preadency, on the part of the friends of the administration; an honorable office, truly—but not hitherto regarded so one of sufficient political importance to divide a parity—or to call a convention to select a candidate. The latter is, for the first time, arranged. Why?

Ms. Morno's pressure of 1823. The "New York Journal of Commerce", gives aurious extract from the "man of Commerce" gives aurious extract from the "commerce" to January, being a review of a commerce by Mr. Stapieton, who was the confidential sceretary of Mr. Canning, which states as a lactified that Mr. Monree's famous protest against the interference of the "holy alliance" in the affairs of continential America, or rather the Internet Committon of Spain, was sent forth wider a "infl inderstanding between him and Mr. Canning, that the graund sanned, was to be unsintated, it necessary, by the combined force of the British and American erms."

It is a currous paper, and should have a place, had we lit is a currous paper, and should have a place, had we little room to spare from entrent matters. That part if the message of Mr. Monroe was received with the highest approbation by all the liberal portion of the

<sup>&</sup>quot; Unless this bank, and the rest, should make ruinous importations of coin.

people of the old world, and they thought that it was a land have a direct, it not inevitable tendency to dissolve death-blow to the progress of despotism in the new.

the confederacy, which is represented in the sense.

GROBER WASHINGTON. In regard to certain proceeding at Alexandria, preparatory to a celebration of the centennial anniversary of the birth day of Washington, it appears that the charter of Alexandria ludge of ancient York Masons, was granted, in his name, as it first matter in 1798, by the grand lodge of Virginia.

We have been compelled to abridge the interesting proceedings had in congress, in relation to this anniversary, to a simple notice of the results agreed upon; but have laid them saide for lutre preservation in this work. It was suggeed to deposit the remains of the "father of his country," with those of his lady, in a rault which had been prepared in the centre of the great rotunds of the capital, (on the responsibility of the architectly, but Mr. John A. Washington, the proprietor of Mount Vernon, declines his consent to a removal of the remains of his honored relatives, &c.

COLONEL BENTON. We do not mean to say any thing personal of this gentleman—but the following remarks have so much queerness in them, that, perhaps, we shall be invited in preference them.

nave so much queriess in tuern, mas, perhalis, we hant be justified in presenting them:
The Village Record, with reference to the frequent and sometimes peremptory deleats of his propositions offered to the senate, asy—"He labors like a man at a pump, without any valve to the bucket; ever and aye with mightly diligence, and accomplishes—nothing.

with mighty diligence, and accomplishes—nothing.

And a correspondent of the Pennsylvania Wing, noticing one of his many speeches about the U.S. bank,

says—"sol. Benton is now currycombing" the bank!"

In one of these speeches, as we observe by the reply of Mr. Dallar, the colonel bad said that the issues of the checks or drafts of the offices of the bank of the United States amounted to thirty or forty millions of deltars. Now the whole circulation of the bank—(as every body ought to know who say any thing about 11), was only 22,300,000 in August, last—and has been much diminished lines, as it needs must, because of a subsequent abstraction of several millions of dollar-trom its vanits, to pay for English goods, and embarrass every branch of business in the United States, by a sudden and severe contraction of the currency. But Mr. Hallas said that the amount of these checks or drafts did not exected five millions. In another point, as to the draft of speece from the west, the colonel was country in the consumed in the west, and the more willingly submitted to these knock-ings-off of seven eighths or nine-tenths of his magnificent agreement speech seven significant.

THE CONSTITUTION. Among other proceedings had to set against the senate, is an attempt to shew that the members of that body, who voted for the rejection of Mr. Van Buren, represent a much less number of the people than those who voted for his nomination. It a "reform" of the senate is desired,—there can be no objection to such a statement of facts; but their influence would over-turn a leading principle of the constitution,

\*"Curry combing!" It is a word happily coined to suit a particular state of things, and applicable to the following extract from one of the colonel's speeches about the pank:

"th carries all before it! It bestrides, as a colorsus, the prostrate cluster whish congress gave it. It claps a foot upon a word here, and a phrase there—rear for gignate form above all law—and boldly places an empre at defiance! And yet there are people to talk about new restrictions to bind this gignatic power; as if it was in the desiny of man that the weaker should ever bind the stronger party! No, sir! We are engaged with the real presence of that fabled monater—once believed to be the tabulous creation of frenzied poets—that monater which no art nor power can ever bind!—Which changed his form, at will, from bird to bests—from lion to serpent—from serpent to water—lrom a river of flowing water to a column of bluzing fire! and thus cluded, in the act of receiving them, the grasp and eath of every chain that was thrown upon him."

and have a direct, it not inevitable tentiency to disserve the confederacy, which is represented in the senate, having no manner of regard to the people, except of those particular parts of them located in the several states,—to the legislatures of them located in the several states,—to the legislatures of them located in the several states,—to the legislatures of them located in the several states,—to the legislatures of them located in the several states are instituted in the legislatures of the people, may not enset the laws or presente the conduct of government. One of the most powerful causes that led to the election of general ackson to the presidency in 1828, was, that name in 1824, the obtained a greater number of electoral votes than Mr. Adams, who was chosen president by the house of representatives, voting by states; and yet the house of representatives, voting by states; and yet the cleatoral vote of gen. Jackson, as will soon appear. And, though the general had 178 electoral votes in 1823, and Mr. Adams only 83, there was not a large bal-snee of the people in his lavor—for we must deduct 37 or 38 electoral votes because of the representation of slatves, (who are not of the "people"), and then 6 or 8,000 votes, changed in Ohio, Kentucky and New York, would have given Mr. Adams a majority of the electoral votes in 1828. And, on secount of the slaves, a law may pass the house of representatives by a majority of twenty votes, and yet be passed in sheer opposition to the will of a decided majority of the people of the U. State, it is not worth while to make any comments on these things. The constitution was, of necessary as a some processing the continual government might be built up, for the "common defence and general westers."

By the constitution, the senste have, (and ongle to have), the same right to reject that the per adent has to have, the same right to reject has the per adent has to have, the same right to reject has the per adent has to have and kingly power. The senste has seldom exercised its authority in wantonners, or on mere party grounds—and it may not be presumed that it ever will. Very develope we the leading nominations of the present president have been strongly opposed, though the expediency of many of the removals night well have been questioned; and in general, it can be easily conceded, that the president alone may be more liable to mistake the character and enduct of individuals than a majority of the senate, men as well capable of judging as innsetly, and of as loty standing. The body representing twenty-four states may as rightfully complism of improper nominations, as the president of improper rejections. The right and the power, and the responsibility in either, is exactly the same. Years ago, the senate unanimously rejected that the president was treated with "contempt." The result shewed that, he had made a had selection.

It is proposed in the official paper, the "Globe," and, of course, louding followed in many others, to cut down the senate to two years, and strip that body of the person of confirming or vipiciting nominations—for the sole cause that Mr. Van Buren has been rejected. So the constitution is to be changed, and a toveregin power given to the president, because one man has been disposinted! It is like the lable of the wield, who surpointed! It is like the lable of the wield, who surpointed and the fiercest spirits from the lowest depths of landermonium, to letel per to find a lattle dog that whe had lost. But is it forgotten that gen, Jackson, being a member of the sweater, orded against the nomination of Mr. Clay, as accretary of state, a hen offered by president Adama, and would have rendered to Mr. Clay the same cault! But, and it is be said, that general Jackson suspected believed in a "bargain" made for that office between the president and Mr. Clay—his Barcon, as minister to England? Mr. Pointers visited the same and the tween himself and Mr. Barcon, as minister to England? Mr. Pointers visited to the sense and a fact which had long been understood by the people, that, previous to Mr. Van Buren's resignation of the office of secretary of state, a "bargain" had been made

<sup>\*</sup>Mr. Jonathan Russell nominated by Mr. Madison, was rejected in 1813—Mr. Gites being one of the majority against him.

for the English mission,—which the late enrrespon-tience between Messrs. Branch and Forsyth estab-lishes. If right to oppose because of one bargain, it must be right to oppose because of another.

But there were other reasons. It is not our design to go into the merits of this case; but the preceding lacts struck us so foreibly that we thought it right to men-

It is very severely charged in certain newspapers, that Mr. Calhoun has coalesced with Mr. Calay, to reject Mr. Van Buren: but when the thousand times more important vote on Mr. Clay's resolution as to the tashall be taken, that "condition" will not appear: but a new one become manifest between Mr. Clay and Messra. Wilkins and Dattas, of Pennsylvania, drawing in also, perhaps, Messrs. Dudley and Marcy, of New

Having mentioned that meetings had been held at Albany, New York and Philadelphia to condemn the senate, we should also state that great assemblies of the people have heen held in the two last office to support the senate, and deny any privilege or prerogative in the president to make appointments without the consent of that body!

THE TRUTH. The Richmond Whig, when adverting to the speech of Mr. Hayne, says: "In reading Mr. Hayne's speech, let the reader set down half the dis he enumerates as the effects of the tariff, to rhetorical flourish, and a southern imagination—and three-fourths of labor degrading in the eyes of those who consider themselves well born, eauses southern youth to be brought up in idleness, and of course in habits of dissipation and extravagance. Trace the principle in its operation to extravagance. Trace the pranciple in its operation to encourage idleness and worthlessness, and repress exer-tion, and it is plain enough why, in the south, we see so many once opulent lamilies in ruins, so many gentlemen of pedigree in penury, and the absence of that general prosperity so conspicuous and remarkable in every nonslave-holding portion of the United States-every porton, we say, without exception. This is a truth which every man in his own bosom acknowledges. But for its existence, we should never have heard a murmur against the tariff, upon which is poured all that discontent which the pressure of misfortune engenders, and which naturally seeks to vent itself upon something, which it calls the cause, which treals to the cause, which treals the cause which the most exaggerated estimate of the tax which Virginia is supposed to pay under the tariff, divide it per capita, and it will be found most inconsiderable, most captus, and it will be found most inconsiderable, most insufficient to account for a nation's decay. It is not a political, but a moral cause, which is at the bottom of southern decline."

PMore important truths were hardly ever before compressed in a less number of lines. We have often compressed in a test united to that a vertical that appleasant feelings when such men as Mr. Hayne and Mr. McDuffe, (of vivid imaginations, but, as we would think, incapable of persisting in manifest error), L. v. a ributed the dos award course of some parts of the southern states to the oppressions of the tariff. The grouns of the people of these states were as melancholy, and their screams of distress as piercing, before the pas-sage of the tariff law of 1824, as they have been sinec; and we shall, some of these days, extract the lugulerious passages from the late speech of Mr. Hayne, and contrast them with the speeches of other southern gentlemen in congress in 1822, 1823 or 1824. The facts, as stated, are precisely the same! Mr. Hayne may have dressed up the tales of misery in better words; and, perchance, there has been an accumulation of causes for them-for things have been getting worse and worse in certain parts of the south-but the substance of all that he said has been "many a time and olt" delivered on the floors of congress. It is slavery that has pulsied and half depo-pulated lower Virginia, South Carolina, &c. and it will most assuredly render them as "desert places," unless something is done to arm at this overwhelming evil. How is it now? The deer has been hunted for many years in is it now? The deer has been hunted for many years in 26,000 such since 1820—Alabama contained 190,171 of parts of Virginia that once had a thrifty population, and the people of the United States in 1830, showing an in-

palaces have long been abandoned to bats and owls.\*
The tariff, with all the powers of mischief ascribed to it, has never yet been accused, (nor has it had time, ) with growing forests of pines, and dilapidating substantial brick The productive people, the thoughtful and the enterprizing, have field from the desolution that they saw before them, and abandoned the places of their na-tivity to the masters who own, and the slaves who disgence, the industry of freemen. The late debates in the bigislature of Virginia concerning their colored population, has brought out a mass of facts which the auto-crat of Virginia, and all who wear the "collar" that he assigns them, and changes at his own good pleasure, were willing to have sent me to the having dured to hint st, a lew years ago; but now Mr. Richie has been gracumsly pleased to admit that "some-thing must be done!" We are glad that even now he thing must be none?" We are glad that even now he is brought to a confession of the retrograde movement of the "Ancient Domonion," and partially admitted the real cause of it. The truth is—the poor free white man is an ass, if he remains in a district of country in which he is dishonored, and where he is, as it were, daily called upon to defend that interest which depresses him to a rank only one degree removed from that of the negroes rank only one degree removed from that of the negroce who surround him; but he seeks a new home, where labor is respected and rewarded, and he feels himself to be a citizen. There is hardly say part of Europe in which the poor are more ignorant than in certain old instructs of our country, which abound with slaves. But we shall, as soon as we can, take up the debates in Virgon. ginia, and hold up these things fully to the public admonition.

And how is it, that Eastern Virginia is so prostrate and distressed, and Middle and Western Virginia so erret and thriity? The laws of the state, and of United States, which affect either, are the same! tariff is as much a "curse" beyond the reach of tidewater, as upon the lower rivers of the state: but in one we see population declining and wealth disappearing, and in the other population advancing and wealth acceu mulating—fichls are not deserted nor palaces turned into owl-roosts. The last number of the "Genius of Liberty" says-"but lour suits have been brought by the office of the Valley Bank at Leesburg, within two years last past, although the bank has done an extensive and profitable This is as it should be." And we hear of business. This is as it should be." And we hear of this people wishing to make roads and causts, and know that they live on the lat of the land—and in peace. Are these different conditions the result of chance? No -the farmer of western Virginia holde his own plough, and the planter of eastern Virginia drives his by deputy. The same things exist in the western and eastern parts of North and South Carolina and Georgia. The people of the two parts are as essentially different as if they or are two parts are us vast manly discrett as it they belonged to widely separated states; the one is bold, hardy and industrious—the other rash, inefficient and lazy. The strength of all the southern states is in their western districts, in which there are few slaves.

western districts, in which there are few slaves.

And how is it that we have so many doleful accounts about the cotton planters of South Carolina? Is not the product of Lousinns, Alabama and Mississippi, &c. the same in its general character, and as likely to be affected by the tariff? But it is well known that in these states the cotton-planters are among the wealthy and thrifty of the people: they say that they can make cotton for five cents, or even less, per pound, while the planters of South Carolina are starving at nine and tenents. Alabams, but yesterday a wildeness, contains 309,206 persons, and is mercasing mightily in wealth and power. Her great product is the same as that South Carolina. We do not hear of misery in this

<sup>\*</sup>There are, probably, more ruins of houses to be seen in lower Virginia than in all the New England states, and New York! It is, indeed, rare to meet with a heap of ruins there. Houses deesy in the first as well as the last mentioned section of our country-but in the one the remains are gathered and preserved for new buildings-in the other they are not wanted.

<sup>+</sup> South Carolina contains only 257,898 of the people of the United States, and shows an increase of only 26,000 such since 1820—Alabama contained 190,171 of

state. The other day, 90 negroes belonging to the state of a person deceased, old and young, sick and well, males and females, were sold, and in lamibes, for wen, mates and remaies, were soin, and in lamities, for the great aum of \$41,031 dollars, near Tuscaloosa. The cotton-planting then, cannot be a bad business in Ala-bama! But there are good reasons for this. Alabama is peopled by enterprizing and industrious persons, who have been cast out of other southern states by the fear of poverty, and the examples of prodigality and waste set before them, (which they must have mitated or wasse set setore utem, (which they must have unitated or have lost their grade), and they do not waste millions of their earnings in the north, as the planters of South Carolina do, nor load themselves and their wives and children with foolish things. I once saw a puny little girl, and imbecite, as it appeared from refined laziness, so decked out, that a person said she had one hundred bales of cotton round her neck!—alluding to the cost of the jewels that agreed not with the color of her skin: and, as, perhaps, that exhibition cost her lather \$5000. which he ought to have expended on his own plantabe could not pay, but to carse the tariff, and declaim against the high price of negro cloths and cotton bag-

ging!
But to return a moment to the point from whence we started-the complaint of "hard times" is an old one from the south, as we shall take an opportunity to show—and the cause of complaint will go on to increase show—and the cause of complaint will go on to increase in the parts of the country referred to, until, we do not know what shall happen—unless "something is done" to prevent free laboring white men from abandoning it. It is the amount of these which, like the overfloy of the Nile, fertduces the soil, and keeps the and of the desert at buy.

SUBSISTENCE. In all questions of political economy, the past of subsistence is an important consultration. We see it stated that returns from all the counters in the state of New York, except one small one [Queen's] give an aggregate of 15,564 persons relieved or supportgive an aggregate of 15, 300 persons returned or supported as paupers, last year; of these 2,705 were foreigner, 419 lunatios, 224 infoits and 50 mates. The entire average expense of supporting each person in the poor houses was \$33.28 a year; or 64.8-10 cents a week; but this does not include the value of their own labor, for there are attached to the poor houses a considerable quantity of land. One sholler a week, then, would appear to be about the average personal cost of the paupers. The total value of the poor mouse committees have in the state is \$830,350; but many of the counties have been stated above. not yet made such establishments, though a great sav-

ing is shewn because of them.
The report of the trustees of the poor of Baltimore city and county show that the cost, per head, was 37 dollars 63 cents in 1826, and has been reduced to \$25 92 in 1831. This includes all charges, except interest payable on monies due for the property on which the poor

house is located.

This great reduction has been caused by the increased productiveness of the farm, and the quantity and vaand the product of many articles sold. Those able to work are fully employed, and various branches of busiwork att this employed, and various or matters of usar-ness are fitted to all able to labor, without oppressing them. The idle and the lary find no resting-place in this establishment, The monthly average of the city paupers for 1831, was 433 nearly.

THE SUPPRESSIO VERY. Whenever certain persons have occasion to speak of the negotiations of Mesars. Van Buren and McLane about the British colonial trade, they always refer to THE West India trade. In a late they always reter to 112 yest industriate. In a late number of the "New York Evening Post," it is proudly sadd that \$20 American and 70 British vessels arrived at that port from the West ladies. Why not tell how many of them were from Brillish West India ports, and how many of these were uniler the American flag? Such facts would be "secrets worth knowing." But we shall

erease of about 105,000 since 1820. And the growth of cotton in the latter is rapidly gained an equality with the crop of South Carolina, and will soon have the greater product.

have them by and hye-and it will surely appear that our navigation has received much injury from the bousted arrangement of the gentlemen named. On this subject we meet with the following, as extracted from the

London Morning Herald"-"One attention has been called to an article in the New Branswick Herald, on the West India trade. The writer, who is evidently well acquainted with his subject. ener, who is evidently well acquainted with his subject, em-deavors to show, and we think does show; that white the trade with the United States was indirect, the mavage-tion was in the hands of the American, and that our government, in concluding the treaty with America, have forced the trade from American hands into those of Bittish ship-owners. Our government appears to have had another object in view-namely that of imposing such additional duties on the direct trade to the West Indies, with certain exceptions, as in effect to be prohibitory. By this means the United States' produce is forced into our North American colonies, whence it is torsed into our North American colonies, whence is transported in British bottoms, duty free, to the West limites. It appears, indeed, pietty ctear to us that brother Jouathan has been, for once, overreached by father Bull, who, as Mr. Niles, in his Reguster, observes, has aimed a blow at the prosperity of the navigation of the nation, and at the prosperity of the state of New York, so far as it is to be effected by a dimmu-

tion of its revenue from the canal." A reference to the treasury tables may throw some light on this subject, as to past times—and it we had those for the year ending the 30th Sept. last, the value of this trade would be clearly discovered. That it has of this trade would be clearly discovered. That it has remiered injury to the United States, we have no monner of doubt; and are assured that those who have teen engaged in the general West India business in Bulumore have found it so. A call for the arrivals and elearances, shewing the character of the vessels, and the quality and value of their ergoes, for the year ending 31st December, 1831 (if made by the senate), as to the principal ports in each state, would afford the means of principal ports in each state, would short the means of preparing important comparisons, as to the trade with the West Indies, at large. Before this arrangement, 110 British vessels arrived at Boston in one year—and in the last year 566 such foreign vessels arrived. We suppose that the life has happened at nearly all our principal ports, though we see it said, under the head of "West India trade," that "a writer in the Norfolk Herald, states the elegrances to have been at the port of Norfolk-

For 1829, .

in 1831, they were opened, and of the 157 clearances of this last year, seventy-nine were to British West India ports; if these ports had been closed, there would not have been much difference between the two years."

But this-like the statement at New York, leaves us in the dark. We know not if all the eleurances are included in hoth years—nor is the amount of American and British years—stated, as to the clearances for British West hills ports. Why conceal that very thing which it is the most important to know?

The New York Whig, in reference to this subject,

"In order to correct some of the lalse impressions, which the statement in the Courier and Enquirer is

Again-and just fitted for the occasion. The New York Courier and Enquirer lately published the following in justification of the instructions of Mr. Van Burca to Mr. McLane, about the West India trade:

That is, the statement as to the arrival of 520 American, and 70 British vessels from the West Indies, which we met with in the "Evening Post" but seems properly to belong to the "Courier and Enquirer." We say it properly belongs to the last named paper-win which a certain thing charged against "senator Benton," of Massouri—the affray between himself and his brook ther, with general Jackson and his party, at Nashville, if we remember correctly, was peremptorily denied, because that "senator Benton," then in New York, had pledged his honor, or something else, that he did not do that thing. And the "rewarded" editor, perhaps, did not tell a lie-lor the "senstor Benton", that he meant was a member of the legislature of New York!

on documentary evidence, in which the proper discri-minations are made, and which are calculated to lead

our readers to a right judgment in this natter.

Our ing 1835, 24, 25 and 26, four years, direct traile with the British islands was open, and the value of it

was as tollows: 1823. 1824. 1825. 1826. \$1,617,845 \$1,750,703 \$1,635,574 \$2.078,871 During the same lour years, the whole West India trade including the preceding, was as follows:

\$8,984,299 \$9,270,642 \$9,863,172 \$10,808,376 · I has shows an average amount of our whole West In-

"In a most an average amount of our smoot view, the die trade for long years, of \$9.731,724 a year, when the trade with the British islands was open and direct.

(1) puring the next tour years, 18.77, '\$8, '29, '30, the direct trade with the British islands was suspended; but jet us see what the whole or our West Judia trade

sex us see what the Santa of our rects states and and sex sex our rects states and rects states are rects states and rects states and rects states are rects states and rects states and rects states are rects states and rects states are rects states and rects states are rects and rects states are rects and rects states are rects states and rects states are rects and rects are rects and rects are rects are rects and rects are rects and rects are rects are rects and rects are \*This shows an average, for these four years, of \$10,033,048 a year, while the direct trails with the Briislands was suspended, which is an average of \$301,324 a year more during these four years, when the West India trade was lost, as the Courier and Enquirer would fain have it supposed, than during the four years

when it was possessed.

\*Now, what does all this show? Why, clearly, that while the direct trade with British islands was suspended, they did, nevertheless, continue to draw their supthee from this country, through the neutral ports of St. l'nomas, St. Bartholomew's, Martinique, &c &c., and our West India trude was increasing in value.

But this is not all. While, during the suspension of the direct trade with the British islands, our whole West lude commerce was growing in value, it was ulterarted in our own vessels. By the new arrangement, British vessels now purncipate in the earlage of this commerce; British merchants take a large and growing portion of the freights that were, during the "loss" of the trade, paid to our own merchants; and British sec-men are taking wages that would, otherwise, be paid to our own hardy mariners. The Courser and Empurer any sworty" 70 of the arrivals at this port during 1831, asys worty to the actives a time port curing 1831, are British, and 520 are American. It it had not been for the arrangements made by the Jackson eabinet, there would not have been one British arrival; the whole 590 would have been American. Our own vessels soo would nave been American. Our own vessels would have all the carrying. It is in this view, that the triends of Mr. Adams' administration consider this Vian Buren arrangement, "an injury to the country." Van Buren arrangement, "an injury to the country."
It is an injury to our country. It has not colarged our
commerce, while it has diminished our carrying trade;
and in reference to the higher interests of national

"A case in point.-When England negotiated for a peace with France, during the time of the first consul, the proposal failed. When Pitt was left out of the sinisistry and Fox succeeded, he sent an ambassador to France and instructed him to say that a change of minis-try having taken place, the French government must not allow the errors of the late ministry to affect the not allow the errors or the sate infinity to succeed the present negotiations. The treaty of Amiens Iolioweil. This was done by the products taxion on earth, and no one complained. See British state papers."

On which the "National Intelligencer" of the 13th

Now, the truth is, Mr. Fox was not minister of England at the time of the treaty of Amiens, nor until four or five years afterwards. The treaty of Amiens was negotiated under the ministerial auspices of lord Sidmouth, (Mr. Addington,) Mr. Pitt being then not in the immis-(Mr. Adungton, ) Mr. rate being then not in the ininstry, but not being considered as in opposition. If ford Sidmonth gave any such instructions to the British ambassador at Paris, we would thank the author of the paragraph to tell us where they are to be found. Let us see

ragram in sen in where mey are to be monus. Let us see the particulars of his 'esses in point.'
The neglect to give the volume and page, satisfies us that the case in point was manufactured for the occasion. It was too important a matter to have been inserted so slightly-if genuine 1

ealculated to produce; we will fate a few facts, resting honor, while it has restored nothing that was lost, it an documentary evidence, in which the uname district has lost what nothing can restore?"

"THE CABINET COUNCIL." The Harrisburg Intelligencer of the 9th list. (Feb.) contains a long account of the proceedings said to have been had at a certain cabinet council held at Washington, when the rev. Dr. Ely and the rev. Mr. Campbell were present. It is a bold statement, and, surely, a very strange one, if true.

THE MAILS have been much interrupted on the road between Philadelpha and Baltimore during the present winter, and this always will be the case, when the water winter, and the alreage will be the care, when the water comminication is stopple, unless the power shall be discovered, and the will exercised by the government of the United States, to make certain parts of the road; which passes through a poor and thinly settled county, unable to make and keep up a good road—and the gene-ral traveling upon it would hardly preserve it in repair, it made.

Doos AND SHEEP. The "Village Record" contains a full statement of the amount paul for the dog-tax in everull statement of the amount paint for the log-tax in every township of Chester county, Pennsylvana, and of the damages paid for sheep killed by them. The account, in the whole, is in favor of the receipts. In Brandywine in the whole, is in tayor of the receipts. In Brandy wine township the damages paid were \$275 87-received \$72 85; in Uwchland 179 15 paid, and 87 49 received, and so on. The sum of the payments, for the last year, were \$2.542 06\frac{1}{2}, and of the receipts from the dog-tag \$2,622 19.

PITTSBURG. The Gazette enumerates Iwenty-ons steam vessels which have been built and fitted at Pittsburg, and its vicinity, in the last season, and furnished by the intoviers and work shops of that building cays and yet the list is not believed tuil! The editor thinks that the great sum of five hundred thousand dollars was last year expended at Pattsburg, in building and fitting steam bosts, only!

bosts, only!

In the list, the 'Mohawk," of 555 tons, is the largest, and cost 33,000 dollars; but the 'Henry Clay" of 482 tons, cost 35,000 dollars. The length of the keel of the tons, cost 35,000 dollars. latter is 164 feet-her cabins are splentidly furnished; she has a bust of the man whose name she bears, and is ornamented with emblems of the "American System."

CINCINNATI. Five hundred new buildings were erected in this city last year-and 13 steam boats, measuring 2,333 tons, and costing \$184,500.

LOUISVILLE AND WHERLING are also going a-head, with as much proportionate rapidity as Cincinnati and Pattaburg. They are also great seats of internal commerce and manufacturing industry.

Nawa! A late English paper, noticing the arrival of a vest-lirom New York, says that the ballotings for a new president were going ou, the majority of the suffrages being for Mr. Hirt.

A COLORED MAN, named Thomas Mitchell, had resided some time at D.yton, Onio. He was arrested as a runaway slave from Kentucky, but released by the justice, because of some defect in the proof offered; but being arrested a second time, he was given up as claimed: on which a project was set on foot to purchase enamed: on which a project was set on root to porchase him, he himself contributing fifty dollars which he had savetl—but the master would have him back again. He saven—out the master would have him once again. The was secured and carried to Cincinnati, and deposited in the fourth story of an hotel; but he jumped out of the wantow and was killed. His master took the remains of poor Tom to Kentucky that they might have, as he said, a decent burnt in his own church yard."

DRY GOODS IMPORTED AT NEW YORK. A New York paper publishes a comparative statement of dry goods exported from Liverpool to New York, from the first of March to the thirteenth of November, 1830, and for March to the unfreenth of November, 1990, and nor the same portion of 1831, from which it appears, that of cotton stoffs, in 1830, the number of pieces was 985,810; and in 1831, 756,889; showing a decrease last year of \$26,921 pieces, and in the number of yards a pieces. Of woollens there were imported in 1830, 107,834 pieces, and in 1831, 190,324; showing an increase for the latter year of 82 469 pieces. Of woollens the importance of the latter year of 82 469 pieces. Of woollens the importance in 182 469 pieces. leu-ends, the importation in 1830, was 33,333, in 1831, 38.327; allowing an increase of 4.995. Of woollon yarn there was imported in 1830, 3,120 cwt., and in 1831, 73,900 cwt.; showing an increase of 70,780.

LIBERIA. The "Herald" gives cheerful accounts of this colony. A school for females on a liberal looting, had just gone into operation, through the liberality of had just gone into operation, through the liberator of Mrs. Sanson, of Philadelphia, who had sent out teachers and books, &c. The ethior of the "Herald" bughs at a report that he intends to leave the cotony—and says on his personal knowledge, as well as by the information of the cotony physicism, Dr. Todson, that only two of the emigrants by the Valador, from Baltimore, had died, though Mr. Garrison, of the Laberator, has kittled-off many of them in his paper. Judging by what we see in the "Herald," the "Liberator" seems opened to get this who may had out the property we see in the "ticraid," the "Liberator" seems op-posed to every thing which may hold out the prospect of benefit to the colored population, unless accomplish-ed in violence; and he listely got up a petition to the legislature of Masseduseus to legalize marriages between white and black persons. A law forbidding such marriages, we think yought not to have been passed—
Mr. G. and others should have bleep passed—
Mr. G. and others should have bleepty to include their sacey, to the fullest extent; but as it is—so let it remain, for the present.

MISERIES OF THE IRISH POOR. We would hope most ardently hope, that the following picture from the \*\*Kikenny Journal is exeggerated, whist learning that it is not. It is horrible! But here is the application—shall abe labor of the people of the United States, for the love of "free trade," be placed on a par with that of the wretched beings described? Shall we relieve the miscry imposed on the English and Irish population, because that royalty, nobility, and the priesthood, eat up their substance, and take a part of that misery on nurselves? This is the question. When these "reform" themselves -it will be time enough to think about so splended a generosity.

"We shall again and again turn our thoughts to this subject, and, it possible, enlist public and private sym-pathy, in behalf of the most wretched and forlorn of our fellow christians, whose state of destitution is beour lellow christians, whose state of destination is be-yond description—waning all the necessaries of life, food, lucl, clothing, and bedding. What is to become of them? Are they, in a christian land, to be allowed to prish unanticed and unknown? Let those who are incredulous as to the existence of this large mass at miser, but visit sny of the lance and alleys of this exty, and they will be a concern understinate. and they will be at once undeceived; even those parts of it where the wheel and the shuttle were once busily employed, are now the abodes of equalid poverty and disease. What think you, fathers of families, to see a family of nine persons sitting down to a scanty meal of wet, not dry potatoes, in four and twenty hours? think you, mathers, of the mother of six children being found engaged in stirring a pot of water in a corner where a fire was not, (using maternal deception), to silence the erica of hunger, until, weary with waiting, her chil-dren fell fast asteep? - of a man burning old shoes, to dren lett tast asteep; -ot a man burning out shoes, to produce a smoke, as he told us, to keep out the damp? These are only specimens, selected from a dense mass of misery which now pervailes this once prosperous, but now ruined and neglected city,"

CUBA, It is officially notified that gen. Vives has, at his own request, been relieved of the captain-generalship of Cuba, and will be succeeded by gen. Don M. Rienforte.

JAMAICA. Late accounts inform us that the rebellions slaves had been nearly reduced, and that a large number had been hung and shot. A Baptist missionary is loudly sharged with having promoted these disorders, which are sad to have been "upparalleled in the listory of any country"—a "flourish," perhaps, about what has pappened, but sufficient to shew that the outrages com-

decrease of 2,632,412. Of worsted stuffs there were imported in 1830, 118 561 pieces, in 1831, 142,356 pieces; showing an increase for the latter year of 23,795 in the wrong action of the owners of the slaves. The that the charge against the missionary was founded only in the wrong action of the owners of the slaves.

The gambler, on losing his money, abuses the cards, base does not reform his use of them. "Tranquility", it more not rejorm on use or time. Tranquisty on the hoped would now be restored -tranquistic on the snoking embers of desolated plantations, and smidst be carcasses of men. "The fulness of time" we lear is near at hand—in the West Indies.

The accounts say, that the excitement among the slaves was general—half of the estates in some of the parishes were destroyed by fire; the slaves also mur dered many persons in the outset. About two thousand of them had been shot down or hung; and a large body were "so hemmed in that they could not escape," at the last accounts.

DUKE DE BOURBON. A most interesting investigation was going on before a tribunal at Paris, relative to the decease and distribution of the vast property of the late duke de Bourbon, one of the branches of the old royall family of France, and related to the present king. It was given out that the duke had committed suicide, soon after the revolution of the "three days"—but many circumstances led to a strong suspicion that he had been murdered, and that the chief agent in his death had been muritered, and that the citel agent in his death was a certain woman of English extraction, named Sophia Dawes, alias the baronness Feucheres, the duke's concubine; and it is charged that previous to elestroying him, she had forced him to make a will, giving two millions of france and a splendid landed prop ing two millions of trance and a splendid landed property to herself, but his imanense fortune to the duke d'Asmalle, one of the sons of the present king. The developments made are very curious. The enquiry is instituted by the princes Rohan, to obtain the property, and a strong disposition is manifest to implicise Louis Philip with Sophia Dawes, in the murder of the old dake, having obtained such a will as they wished. The ease was not yet decided—but the chief ground of sumicion arainst the king stems to have been in sumpicion against the king seems to have been in some and it appears also that he had been on most friend-ly terms with the duke; but there was nothing strange in the direction which the latter had given to the honors and estates of Conde.

A Paris paper relates as a fact that two students in Berlin having quarrelled, agreed to kiss the lips of a person mortally affected with the cholera, and that the dispute should terminate with the death of either. Each of them kessed the lips of a man in the last stage of the disease, but neither dying within twenty-lour liours afterwards, their "mutual friends" declared that they should be reconciled.

A duel was fought on the banks of the Potomae Port Tobacco, on the 7th inst. between lieut. H. Ma-thews, of that place, and Dr. G. W. Jewson, of Virgium, in which the former was shot through the heart, and died instantly, and the other received a dangerous wound

thed instantly, and the other reserved a unigerous would in the abdomen, but it was thought would recover. And at Fort Mitchell, Georgia, gen. Sowell Worlichk was shot through the heart and instantly killed, by maj. J. T. Camp, who was also wounded in the abdomen.

And again, in Georgia, a Mr. Fair was shot through
the heart by a Mr. Gist. Three brothers of the dreess-

ed were on the duelling ground!

These may be called sharp shootings, indeed!

LONGEVITY—England and America. The London bills of mortality for the last year, in a population of about 1,300,000, show 28 263 christenings, and 28,337 burnds; of the deaths 4,807 were of consumption, 1,061 by astlima, 48 suicides and 563 of the small nox. three persons exceeded the age of 100 years.

The returns of the late census of North Carolins, the whole population of which is 738,470, shows 58 white persons and 247 people of color, aged more than 100 years. Massachusetts has only 55 persons in her years. Massach 603,259, so aged.

MISCELLANEOUS ITEMS-HOME.

The splendid bridge on the Monongaheta, which cost 140,000 dollars in 1818, at Pittsburg, gave way on the

21st January last. No lives lost, except that of a horse ! though two persons and five horses descended with the

ruins.

The rev. Dr. Wilson, of Albany, N. Y. has published a sermon entitled "Prince Messiah's claums to dominion over all governments, and the disregard of his authority by the United States, in the lederal constitution." The reverend gentleman might have been better em-

ployed than in making this sermon.

Very great damage has been sustained by the break-ing up of the Susquehannah. The neews piled up in some places filly teet high. Several of the bridges have been mjured, about a quarter of mile of one of them is said to have tallen; the Muncy dam has been carried away, and the Shamokiu much injured these dams were made to feed causls, but have perilled the navigation of the river.

A liberal appropriation has been made to repair the statue of WASHINGTON, belonging to the state of N. Carolina, which, it is stated, may happily be accomplished.

A fire painting of the state, as it was, has been preserved.

An increase of attention is paid in many places to the breeding of alk worms. We hope that it may become general. Light labor and tune now lost will produce

millions, if applied to this object.

A large business continues on the Baltimore and Ohio rail road-more than righty cars sometimes arrive in a day, with more than 1,100 barrels of flour and great quantities of other articles. When this road shall reach the Ohio, we may expect the arrival of a thousand ears, some days, and the departure of as many. Three hundred cars are now employed on the road.

A rail road is talked of from Richmond to York-the ground is said to be excellent for one, and materials abundant. With such road, persons may breakfast in Richmond and sup in Baltimore, and a vest saving of value of internal improvements, and is worth millions annually to England.

It is proposed to make a rail road from Brooklyn, opposite New York), to the eastern end of Long Island If ever the shall be accomplished, the journey from N. York to Boston will be a short me-as to time.

The legislature of Virginia has passed a law concerning the radition, which, smong other provisions, has one limiting the fine for non-attendance at any "company, battalion, regimental, or other nurser," to seventy five cents. During the ilebate in the legislature on this subject, Mr. Goode, one of the members of that body, obacred that perhaps he ought to be the last to interfere, being, as he presumed, the only private present!
Letters have been received at New York from Ray-

mout, the officer who pursued Rounsge, who escaped with a part of the princess of Orange with a part of the princess of Orange's jewels, whom he caught and carried to the Hague. The jewels now recovered are valued at 45,000 pounds sterling. The my stery about these jewels remains as it was

There is a Girard Journal at Philadelphia-and a Girard bank, a Girard rail-road, Girard square, Gi ard

street, &c. &c. may be expected, besides the Girard college, Girard school, &c. &c.

At Bangor, Maine, the thermometer on the 27th Jan. ult, is said to have stood at 35 degrees below zero. This was a "endd Friday," over the greater part of the United States. We thought that, in Baltimore, we never felt

such biting cold.

We learn from the Tallahassee Floridian, that Achille Murat, who recently received a nultury commission from the Belgian government, but was deprived of it by a demand made by the French government, is expected shortly to return, with his lady, to his residence

At the Hotel Dieu, in Montreal, on the 28th ult. Mr. At the Hotel Dieu, in Montreal, on the 28th ult. Mr. Louis Gandry dit Bourbonniere, agel 84, and Mrs. Geleate David, aged 74, ecclerated the 50th anniversary of their marcage. The bride's mail aged 70 years, was the same who assisted at their marrange, 50 years ago. The fine brig Amanda, captain Harvey, arrived at Baltimore on Sunday afternoon, on 66 days from Val-

paraiso. - This is the shortest passing which has ever been made between the two norts.

A Nova Scotia paper says that "one Charles Carroll" is not the only surviving signer of the declaration of in-

dependence-but that Alexander Robertson, then living

at Shelburne, N. S. lead also signed a!

A woman in North Carolina stands charged with having murdered her husband, and burned the greater part of his body and bunes to ashes, in the fire place of her house. He seems to have been a bad man-but she is the mother of two children.

#### TWENTY SECOND CONGRESS-1st SESSION. BENATE.

February 9. A message was received from the pre-sident of the U.S. transmitting a report from the secretary of war, relative to the fur trade, and the number illed and wounded while engaged in it-refered.

Also a message communicating the ratifications of the

treaties with France and Turkey.

Mr. Chambers submitted a resolution Instituting an inquiry as to the propriety of allowing defendants, triminally charged in the courts of the United States, additional means to procure testimony and compel the attendance of witnesses.

Mr. Poindexter submitted a resolution relative to the reservation of Choetaw lands in the state of Mississippl.

Mr. Dickerson submitted the following resolution: Resolved, That the scretary of the treasury be requested to communicate to the senset copies of all instructions to collectors of customs, and other officers, on the subject of iron and manufac-tures, since the 20th of April, 1818.

The vice president presented the free trade memorial, as also a supplemental one from two members of the committee, praying for a repeal of the protecting duties.

The resolutions submitted yesterday by Mr. Sprague,
Mr. Benton and Mr. Wilkins, were considered and

adonted. Adjourned.

February 10. Mr. Tazewell of Va. presented a petition from sundry citizens of Chesterfield county, Virginia, against the reduction of the duty on coal.

Several memorials from banks, lavorable to the re-newal of the charter of the United States bank, were

presented.

The resolutions moved yesterday by Messrs Chambers, Poindexter and Dickerson, were severally considered and agreed to. The resolutions relative to the arrangement of the

West India trade, submitted some days since by Mr. Sprague, were taken up, and at his instance, postponed. The senate then proceeded to the consideration of the

special order, being Mr. Clay's resolution on the sub ject of the tariff.

Mr. Hayne said, that he had received a communication from the gentleman who had, as charman, signed the memorial of the late free trade convention, ( Gallatin.) giving the inhurmation that an erroneous impression had been created elsewhere, as to the prayer of that petition, from some remarks which had lallen from him (Mr. H.) on that subject, and which had been erroneously reported. Mr. 11. said he rose to correct that misapprehension, and would do so by simply reading that part of the memorial which related to the sub-

ject. It was in the following words, viz:

"Your memorialists respectfully pray the extinguishment of the public debt, only that amount of revenue which may be necessary to meet the ordi-

nary exigencies of the government,

reduction of the present exaggerated duties on some articles, the duties on all the imported articles, not free of duty be ultimately equalized, so as that the luty on any auch articles shall not vary materially from the gen-eral average rate of all the duties together, or in other words, from a uniform duty ad valorem on all imported articles subject to fluty.

"3d. That wines, tess, coffee, and similar articles, be not added to the list of those now free of duty, but may, on the contrary, be subject to duties corresponding in proportion to their respective value, with those laid on other imported articles, subject to duty."

Mr. Anight took uccasion (telore Mr. Tyler, who was entitled to the floor, proceeded,) to read to the sease statement, to show the great amount of corn, flour, &c. imported from the southern states, into the Mindel shad, for the consumption of the manufacturing districts.

Mr. Tuter, in allusion to this subject, said he had; by the following bill, to renew and modify the charter that morning received a letter from a neighbor and friend with whom he had had many good tempered controversies respecting the tariff-who wrote him thus: "1 have just sold my crup of corn to a Yankee, to be earried by him to leed the New England manufacturersrascals, who, if it were not for the abundable tardf, would make corn for themselves." Mr. T. in reading this letter, declared his belief that it evinced the greatest delusion of mind on the subject. He then resumed his remarks in opposition to the resolution, and continued until the usual hour of adjournment, when not having concluded, the senate adjourned over to Monday.

February 13. Mr. Chry, from the joint committee sppointed on the subject, made a report relative to the washington. It provides for an adjournment of the ode of celebrating the centennal birth day of Grouge two houses from the 21st to the 23d instant, but of respect to his memory; divine service by the two chanlains of congress, that an oratum he delivered, and that the remains of GRONGE WASHINGTON he removed, on his coming birth-day, from Mount Vermin, to the capitol at the City of Washington, for interment, agreeably to the resolution of congress, of December 24th, 1799

According to the report of Mr. Clay, the chief justice of the United States had been requested to deliver the oration; but owing to official engagements and phy-

sical causes, had declined.

The report being read, Mr. Clay offered resolutions relative to the removal and deposit of the remains. A debate ensued on the resolutions. They were advocated by Messrs. Cluy, Webster, Sprague, Bibb, and Holmes, and opposed by Messrs. Forsyth, Tazewell, and Tuler. The resolutions finally passed by a vote of, ayes 29,

pays 15.
The senate then went into the consideration of exe-

entive business; and having spent some time therein, adjourned.

February 14. After the disposal of some morning mainess-

The senate resumed the consideration of Mr. Cluy's resolution respecting the tariff.

Mr. Tyler rose, and, in a speech of an hour and a half, concluded his argument against the resolution.

Mr. Knight followed in layer of the resolution. When Mr. Knight had concluded, On motion of Mr. Grundy, the resolution was then

postponed until to-morrow.

The senute took up the joint resolution from the other house in regard to the removal of the remains of Mrs. Washington, and the invitation of certain officers, ke. to unite in the ceremony of removing the remains of Gen. Washington. After some discussion, the re-solution was agreed to. The senate then aljourned. Pebruary 15. The joint resolution from the house of

representatives, relative to the invitation of certain distinguished individuals, to attend the ceremonies of the

22d February, was taken up; and

On motion of Mr. Forsyth, the names of all except that of the president of the U. States were stricken out,

and the resolution thus amended agreed to.

Mr. Holmes submitted resolutions calling upon the secretary of the treasury, to inform the senate why the statements of the foreign commerce of the U. States, required by the act of the 10th February, 1820, have not been transmitted to congress—and why he has not reported an answer to the scoute's resolution of the 22d December, 1831, calling for information relative to the British colonial trade, and when the answer is to be expected.

The senate resumed the consideration of the resolution of Mr. Clay, relative to the tariff,

Mr. Grundy spoke two hours against the resolution, when he gave way for a motion to that effect, and the senate adjourned.

HOUSE OF REPRESENTATIVES.

Friday, Feb. 10. Mr. Mc Duffie, trom the committee of ways and means, to which was referred the memorial of the president, directors and company, of the bank of the United States; also, sundry memorials from other sources, relative to the renewal of the charter of the said bank, made a report thereon, accompanied

the bank of the United States: A bill to renew and modify the charter of the bank of

the United States. Be it enacted, &c. That the set entitled "an set to

incorporate the subscribers to the bank of the United States," approved the 10th day of April, 1816, shall be continued in force for the period of twenty years from the 3d of March, 1836, and that the power shall be reserved to congress to repeal this act at any time after ten years from the 3d of March, 1836, upon giving three years notice of such intended repeal to the president and directors of the said bank.

And he it further emotted, That the president of the United States, after the 3d day of March, 1836, shall appoint one of the directors of each of the branches of said bank, in the same manner as he now appoints a nortion of the directors of the mother bank, and wash the some limitations as to their eligibility and term of

And be it further enacted, That any officers of the mother bank who may be selected by the board of di-rictors, and designated to the secretary of the treasury of the United States, shall be authorised to sign and countersign notes, which shall be builting and obtestory on the said corporation, in lake manner, as if the same were signed and countersigned by the president and principal colher or treasurer.

And be it further enacted, That the said bank is hereby prohibited from issuing any notes which are not upon the face of them declared to be payable at the office from which they may be issued; and also, from

smaller sum.

And be it further enacted, That it shall be the duty of the bank to turnish annually on the first day of Jacuary, to the chief officer of the treasury of each state, a list of the builders of stock, in said bank, who are resalents in such state, with the amount of the stock held by each stockholder; and nothing contained in the charter of the said bank or in this set, shall be deemed to restrain the several states from taxing the real estate of the sand bank, situated therein, respectively, or the proprietary interest of their respective citizens in the stock of the said bank, to the same extent that they may tax other real estate within their jurisdiction, and like interests in the stock of other corporations, or money lent

And be it further enacted, That in consideration of the exclusive privileges and benefits conferred by this act upon the said bank, the president, directors, and company thereof, shall pay to the United States, out of the corporate funds thereol, on the 3d day of March, 1837, and on the same day of each year thereafter, during the continuance of the clierter, an interest at the rate of per centure upon the deposites from time to time to the credit of the treasurer of the United States in the said bank and its branches, during the preceding year.

And be it further enacted, That, after the 3d day of March, 1836, the said bank shall not establish any ad-

ditional branch thereof, without the consent of congress. Mr. Huyne and he understood that there was a counter-report to be presented by the members in the reading of the bill to be postponed until Monday next, that both reports might be printed together.

After some explanation Mr. Mc Duffic moved that the bill be referred to a committee of the whole on the state of the union, and that the hill and report be printed. Ordered, and, on motion of Mr. Ingersell, an aiblitional number, vizi

5,000 copies were unlered to be printed.

Mr. Al xander, from the mountly of the committee of ways and means, on the question, in that committee, of a renewal of the charter of the bank of the United States, made a counter-report containing the views of the said monority in relation to a renewal of the charter of an il bunk.

Ordered, That 5,000 copies of said report of the minority be printed for the use of this house.

Mr. Cambreleng moved certain resolutions relative to the semi-annual statements of the bank of the United

States-the statements of its branches, and as to its ! dealings in foreign bills of exchange, &c.

Mr. Letcher reported a bill to construct a road from Zanesville in Olso, to Florence in Alahama—(wice read and referred.

A measage was received from the president communicating surveys of the Savannah and Tennessee rivers. Mr. Everett's resolution, relative to a call on the pre-

sident for the 4th article at the Chickson trenty, came up for the consideration of the liquie-when, Mr. Hogan addressed the house against the resolution.

When he had concluded.

Mr. Wilde moved to refer the resolution to the committee of the whole. The year and nays were ordered on this motion; but before they were taken, the house proceeded to the orders of the day, and after the transaction of some private business, adjourned to Monday DESI.

Monday, Feb. 13. A number of memorials favorable to the renewal of the charter of the bank of the United States, were presented.

A resolution providing for the surveys of Green and

Big Barren rivers, was taken up and passed. Mr. Lyon presented a resolution to inquire as to the

propriety of adopting a more uniform mode of computng the mileage of members of congress. Mr. Carr moved a resolution to inquire into the pro-

priety of paying for certain ludian depredations in the Mr. Thomas, of Louisiana, from the joint committee

appointed on the subject, made a report on the celebra-tion of the centennial anniversary of George Washing-TON's birth day.

The question of concurring with the report of the sommittee coming up, an animated debate ensued, which

occupied the house until half just six.

The report was finally agreed to, by a vote of ayes 109, nays 76,

Tuesday, Feb. 14. Mr. Jarvis presented a resolution authorising the painting of a full length likeness of Washington, to be placed in the hall of the house of representatives.

representatives.

Mr. Adair moved a resolution inviting the president
of the United States and the heads of departments, to attend at the ceremonies of the 22th inst. The resolution was afterwards amended by including the names of James Madison, Charles Carroll, of Carrollton, the judges of the supreme court, the post master general, and the re-

the supreme court, the post master general, and the re-latives of Washington-passed.

Mr. Hutes, of Maine, offered a resolution providing for the removal of the remains of Mrs. Martia Wash-

INGTON. Agreed to.

The house resumed the consideration of the apportionment bill—the question being on Mr. Cluyton's motion to reconsider the vote, by which the ratio of "48,000" was stricken out and "44,400" inserted in lieu thereof; Mr. Cianton afterwards withdrew his motion.

The question was then taken on Mr. Evans' motion to insert 44,300 in lieu of 44,400, as at present in the bill—decided in the affirmative; year 108, nays 80.

After various motions as to the ratio, on motion of Mr. Polk, the bill was recommitted with instructions to insert 47,700 in lieu of 44,300. The house then adionraed.

Wednesday, Feb. 15, Mr. Drayton reported a bill for autistying certain militia claims of the state of

Mr. Washington reported a bill for improving Pennsylvania avenue, supplying the public buildings with water, &c.

After various propositions as to the number of the ratio of representation, the house concurred in 47,700, and ordered the bill to a third reading to-morrow; and then adjourned.

Thursday, Feb. 16. On motion of Mr. Letcher, a resolution was adopted calling on the secretary of war for a statement of certain contracts made for cannon and shot.

A message was received from the president relative to the migration of the Indians.

The speaker laid before the house certain correspondence relative to the remains of Washington.

The apportionment bill was read a third time and

passed. Ayes 130, mays 58.
The bill to settle the military claims of South Caroling, was ordered to a third reading, by a vote of year 130, navs 47.
A bill making appropriations for the revolutionary

and other pensioners of the United States for the year 1830

A bill making appropriations for the naval service for the vest 1832

The full to provide for the payment of arrearages in the naval service, chargeable to the ennoverated contin-gent; prior to the first day of January, 1832.

A bill making appropriations for fortifications for the ear 1832; were severally read and concurred in by the house, and ordered to be engrossed for a third reading.

MESSRS, POINDEXTER AND MOORE, OF THE SENATE. &c.

From the National Intelligencer, of Feb. 10,

The "card" which appears in our columns to-day is inserted refuctantly, but maler a sense of duty to the senators of the United States by whom it is authorised. sensions of the United States by whom it is suitorised; injunn whom an stack has been made in the N. York Courser and Enquire of a little three threship to be answer-ed by argument. With less provocation than has been given for it, we should have it closed publish-ing the eard. Were it unerely personal in its close-sector, we should have declined it. But it concerns grave, deliberate clusteges of subcornation and corrupt sickedness against two members or the senate, are erimes are alleged to have been consummated on the floor of that body.

We have no disposition to copy the ways we work maner, (of Feb. floor of that body. We have no disposition to equation of the article in the N. w York paper, (of tence or two to shew the aggravated considerations which influence us to yield our melination in this matter to a sense of justice.

The subject of the article is Mr. Clement, whose tter, it may be recollected, accompanied the speech of Mr. Poindexter on Mr. Van Buren's nomination. Retercing to Mr. C. the Courier and Enquirer says-

"It now appears that this adventurer has found his way to Washington and there been retained by the honorable Mr. Moore, of Alubuma, and Mr. Paindexter, of Mississippi, to som intschoods, and do such other dirty work as the new triumvirate may carve out for

The article in question further says-

"We pronounce the whole statement to be without the shadow of foundation-a wilful talschood burchased by those who used it."

"We cannot youch for the truth of his statement: but

taking it in connexion with his letter, which must have been paid for-and believing as we do, that any persons who would vote as these gentlemen did on the nomination of Mr. Van Buren, would not hesitate to buy the

"It it be true-and we do not doubt it-then have these men disgraced themselves and the senate by as corrupt and unprincipled a purchase of fabricated charges as ever has been exposed to the just indignation of an insulted people.

A CARD.

It must be obvious to every honorable man, that Mr. Poindexter, of Mississippi, and Mr. Moore, of Alabama, cannot stoop to notice the infamous latselipoils which appear in the columns of the New York Courier and Equiprice, relating to their recent vote in the nomina-tion of Martin Van Buren. The editor has been regu-lally purchased, and pand for, by a legrative office which he holds in the edy of New York; it is his business to erculate through his columns lies to order - wholesale or retail; and no one can doubt that he, as in duty bound, faulifully performs his contract.

This king of the Jews, who has sold his character, and his conscience, and, like Judas, would sell his God for thirty pieces of silver, cannot be made to feel the influence of truth, or the reproaches to which his vile calumnies subject hims he is safe behind the mud-wall which he has erected as a secure battery, to protect him

from all the approaches of virtue and honor. But as he ; alleges, and it cannot be doubted, that the infamous slan-ders which he publishes are manufactured for the oceasion, and forwarded to him by members of either house of congress from New York; such member or members are thus publicly notified that if they dare to show their faces, and advance from behind the dark curtain which conceals them, they will meet with the most prompt and respectful attention from those whom they seek to calumniate through a corrupt, irresponsible iournal.

## TO THE PUBLIC.

I have read in the New York Courier and Enquirer, or the 7th instant, an article headed Samuel E. Clement, containing, among other things, an affiliavit of John H. S. Browere, and alleging, upon the authority of two members of Congress, that I had informed the gentlemen referred to, that I what been engaged to edit a newspaper in the state of Mississipping. Poindexter, of that state, and Mr. Moore, of Alabama; that Mr. Poindexter had agreed to contribute his portion of the expense of establishing the paper in cash, but that in consequence of Mr. Moore being somewhat embarrassed in his circumstances, he had proposed giving an endorsed note for filteen hundred dollars, that being his portion of the sum required." The same article alleges that my letter, addressed to Mr. Poindexter, by him submitted to the senate, and afterwards appended to his speech delivered on Mr. Van Buren's nomination, was as wilful listehood purchased by those who used it; and that I had been retained by the honorable Mr. Moore, of Alabama, and Mr. Poindexter, of Massissippi, to coin laisehood, and do such other dirty work as the new triumwards may carve out for him.

For the libel on myself, contained in this publica-tion, I deemed it my duty to arrest James Watson Webb, the editor of the Courier and Enquirer, who is Webb, the control the course and bugainst, and now in the custody of the marshal. In reply to the statement of John H. J. Browere, and the allegation that I had been removed from office by Mr. Barry, give the most unqualified denial, to sustain which, I will, in a few days, submit proofs the most unquestion-

able. The statement relative to governor Pointexter and governor Moore, is a base and infamous fitsehood. The Courier quotes the conclusion of my letter in these words: "I regret that I am thus called upon to repeat any remarks that may have been inadvertently made to a friend," and applies the word FRIEND to Mr. Van Buren. This is a deliberate misrepresentation. I never claimed Mr. Van Buren as my triend. I was the friend of the administration, not the partisan of Mr. Van Buren. The 'remarks' referred to, were those maile to another individual in the course of a casual observation the evening before Mr. Van Buren's rejection. The substance of those remarks were by him communicated to Mr. Poindexter, and his note, with a memorandum by Mr. Poindexter, asking that the facts might be communicated in writing, was all that ever passed between governor Poindexter and myself upon the sub-ject. Governor Moore was not consulted, and could bot have known of the letter until it was submitted to the senate. SAMUEL E. CLEMENT.

#### A CARD.

Washington city, Galdby's hotel, Feb. 11, 1832.

Na "carl" published in the National Intelligence and United States Telegraph this day, Gov. Pointexter of Mississipp, and Gov. Moore of Alabama—both members of the senate of the United States, charge the surveyor of the port of New York, with writing the article which appeared in the editorial columns of the New York Courier and Enquirer, on the 7th instant, and of which the following is an extract:

"What we have stated as to Mr Clement's know-ledge of Mr. Van Buren, and the circumstances under which he became the depository of Mr. Van Buren's confidence, we have from two members of congress from this state, whose verseity never has been questioned; and on their authority we make the following statement, for the truth of which we are ready to vouch."

"Mr. Clement informed the gentlemen referred to, its see

he had been engaged to edit a newspaper in the state of Mississippi, by Mr. Poindexter of Mississippi, and Mr. Moore of Alabams—that Mr. Poindexter had agreed to contribute his portion of the expense of establishing the paper in cash, but that in consequence of Mr. Moore being somewhat embarrassed in his circumstances, he had proposed giving an endorsed note for fifteen Aundred dollars, that being his portion of the sum required."

"Thinking as we do, that Clement is an unprincipled fellow, and has written what he knows to be false in relation to Mr. Van Buren, we cannot vouch for the truth of his statement; but taking it in connexion with his letter, which must have been paid for-and believing as we ter, which must have been paid for—and believing as we do, that any person who would vote as these gentlemes did on the nomination of Mr. Van Buren, would not hesitate to buy the falsehoods of such a man as Clement, we give to the statement full eredence. If it be true, and we do not doubt it, then have these men disgraced themselves and the senate, by as corrupt and unprincipled a purchase of fabricated charges, as has ever been exposed to the just indignation of an insulted people. To that people, and to their own consciences, we leave them and their resurrection man, Samuel E. Clement.

"The undersigned does not deem it necessary to comment upon the undignified character of the "card" of the honorable senators, but hegs leave respectfully to as-sure them, that the entire article referred to, was written by him, and forwarded for publication from this city.

The two material facts alleged in that article, are—first, that the disclosures said to have been made by Mr. Van tinat the disclosures said to have been made by Mr. Van Buren to Clement, were, according to Clement's own admission, made at his first interview with Mr. Van Bu-ren, which was purely accidental, and never but once reren, which was purely according an after out once re-peated. Second, that Clement had asserted that gov. Poundexter and gov. Moore offered to furnish him with funds for the establishment of a newspaper in the state of Mississippl. These two charges are now repeated, they are susceptible of proof at any moment, and for their truth, as well as for whatever opinions or sentiments are contained in the article alluded to, the undersigned holds himself personally responsible. He would further are contained in the article minuted to, the undersigned holds himself personally responsible. He would forther inform these honorable senators, that the members of congress from New York referred to in the foregoing extract, do not seek concealment "behind" a "dark curtain," and that an application to the undersigned for their names, or for any other purpose, "will meet with the most prompt and respectful attention from" their obedient servant,

# JAMES WATSON WEBB.

#### TREATY WITH FRANCE. From the National Intelligencer.

From the National Intelligencer.
The treaty with France, recently rathed by the senate of the United States, and the ratifications of which were exclanged with the French minister (M. Serrurier), on the 2d instant, was yesterday transmitted by the president to congress; and we had an opportantly of Instity running over its contents. The first article, which is the most important to claimants at least,

is in the following words:

"Article 1. The French government, in order to liberate itself completely from all the reclamations preferred against it by the citizens of the United States, for unlawful seizures, espures, sequestrations, confisa-tions, or destructions of their vessels, eargoes, or other property, engages to pay a sum of twenty-five mil-lions of francs to the government of the United States, who shall distribute it smong those entitled, in the manner and according to the rules which it shall deter-

Art. 2 provides that the above sum is to be paid at Paris in six annual instalments, with interest at the rate of four per cent. on each of the instalments.

Art. 3 and 4 provide that the government of the Art. 3 and 4 provide that the government of the United States, on its part, for the purpose of being liberated from all reclamations, &c. is to pay to the govern-ment of France the sum of 1,500,000 tranes, in six annusl instalments, &c.

Art. 5 provides that this treaty will not preclude the prosecution of claims, other than those coming within its scope, in the courts of the two countries respec-

Art. 6 provides that the two governments shall reciprocally furnish any documentary evidence in their possession to facilitate the abjudication of claims.

Art. 7 is in the following words:

The wines of France, from and after the exchange of the ratifications of the present convention, shall be al-mitted to consumption in the states of the union at duties which shall not exceed the following rates by the gallon, (such as is used at present for wines in the U. States), to wit: six sents for red wine in casks; ten cents for white wine a casks; and twenty-two cents for wines of all sorts in bottles. The proportion existing between the ducies on French wines thus reduced, and the general rates of the tariff which went into operation the lat of January, 1829, shall be maintained in case the povernment of the United States should the

"In consideration of this stipulation, which shall be binding on the United States for ten years, the French government adaptions the reclamations which it had termed in relation to the 8th article of the treaty of cersion of Louisiana. It engages, moreover, to establish on long stable cottons of the United States, which, after the exchange of the ratifications of the present conven-tion, shall be brought directly thence to France by the vessels of the United States, or by French vessels, the same duties as on short stuple cottons."

Art. 8 provides for the exchange of ratifications.

## THE RUSSIAN TARIFF.

From a London paper of December, 23.

The accounts received yesterday from St. Petersburg, bring a copy of the new tariff of duties, which had been issued by order of the emperor of Russia. The document occasioned much surprise among the merchants and others connected with the Baltic trade. On the 19th ult. (O. S.) the order was put into force at the eustoms; an additional duty of 12} per cent. on all imports, not entered before the 19th, with the exception of brimstone, corks, and corkwood; besides which, the duty is increased for the importation of 1832, on the un-

dermentioned articles, as follows:				
O	d duty		New du Add the 2 1- and th 12 1-2 per	2 pet.
Wood, all foreign used by joiners and turners	R. C	Co.		Cu.
for dying, such as St. Martin's, Bra-	, 1	80	9	00
zil, &cpr. bergu	et S	60	5	40
ground & warped,		40	21	
wood, fustic, in logs,	1	80	3	60
and warped	7	20	1.4	40
Indigo per poor	d 9	0		40
Cocoa in beans,	16			60
Quereitron bark,	1	80		70
Madder, ground	î	80		88
Dato, unground,	1	8		80
Cochineul	27	0	26	0
Nutmegs	54	0		80
Mace,	81	0		20
Wine and porter, per hhd.	126	o	129	
Cinnamon, cassis, lig-				
nea, cassia flower, per pood,	36	0	43	20
Olive oil, in casks,		50	5	40
Ditto, in earthenware &				
bottles,	10	80	12	60
Coffee,	18	C	21	60
Turmerie,	0	90	1	44
Annatto,	1			60
Ostrich feathers, per lb. Herrings, Dutch and	36	0	54	0
English, per barre	1, 5	40	9	0
all others,		44	2	16
Sago, per poor	1, 14	40	21	60
Safflower,		80	3	60
Sugar, raw,	9	0	10	8
Ditto, syrup,	5	40	5	94

Turpentine,	per pood,	3 60	6 30
Whalebone,	per lb.	0 21 3-	5 0 72
Artificial flowers,	per pood,	21 60	32 40
Thistles		0 0	1 80

NEW PRUSSIAN TARIFF.

The new tariff for the years 1832, 1833, and 1834, has just been published at Berlin. It is nearly the same as last, but the allowance of 33 per cent. discount upon the goods sold at the Prussian fairs of Franckfort and Naumburg has been discontinued. The following is the scale of duties upon the principal articles imported into that counter

Cotton and lmen goods, without silk, Ot.	. 18.	64	per lb.
Lace, (of linen,)0	1	6	do
Silk goods 0	3	0	do
Woollen and worsted goods 5	0	0	per cwt.
Carpeting 3		0	do
Goods manufactured of fine leather 3		U	do
Morocco leather, 1		0	do
Butts and common leather 0			do
Steel and iron goods 0		6	do

# PROCEEDINGS OF THE SENATE.

PROCEEDINGS OF THE SENATE,
ON THE NOMINATION OF MARTIN VAN BUREN.
Remarks of Mr. Marcy.
Mr. Marcy said, that he had inimated heretofore, more than
once, that it was not his intention to offer to the senate say
observations upon the main question now before them. What
was better understood by other members, and what was to be
said in explanation or vindication of it, would be better said and
better received from most of them, by reason of their great experience in public affairs, and their particular hawledge of the
transaction which have been brought under review in this discussion. He had determined that it would be hin they to trapible

seen in expension of stouchastion in a wood of otter and allow perience in public affairs, and their particular knowledge of the transaction which have been brought under review in this discussion. He had determined that it would be this duty to trouble the early of the stouch of t

ders of a most extraordinary character flooded the land. When

dera of a most extracedinary character flooded the land. When the present chief angiturate mot upon himself the administration of the povernment, he found almost at the offices, front the highest componed to his friends on one will couplish. The reasons for thus componed to his friends not one will couplish. The reasons for thus componing it will apply with counsiderable force to oany of the officers under the hash of the reveal departments. It is me obscinate to the avoidance officer in these departments are of the obscinate of the obscinate of the reveal of partments. It is me obscinate to the avoidance officer in these departments are obscinated by the obscinate of the avoidance of the obscinate obscinate

tieal supporters of the honorable's naive from Kentireky.

I have good reasons—very good reasons, for behaving, that it is
the gentermatic rule of constact, to take eare of ins fire ids when
the gentermatic rule of constact, to take eare of ins fire ids when
the state of the shall constant to the constant
french, and if he due, I can assure him, I shall not complain
to shall be in the least surprised if he initiates the example
which he now so emphasically discourances.

Now I am op, I will off, a lew words relative to the much

ensured Intercetions to our farmer manter to Eugland. I must say, I have discovered in them nothing to merit or prorofectule harsh stretures bestowed on them. They do not, in my opinion, turnish all occasion for the snater from Kenturky, to impose to Mr. Van Buren, as he has done, with payamoute emploish and frequent n'erestin a charge it falls had or emploish and offer the longuage, with it he distred might be taken down it, "follow?". For Buren stated who was false or her was colopidly ig-lege, that those who first ascribed certain claims to interfree with the regulation of Great Bratin, sato the colonial trade, dominal them, &c. The secano from Kenturky chooses to consider this a declaration, that the late administration first ave-tred teck claims, er naured instructions to our former memster to England. 1 11111181 Barth, &C. I he sensitor from Acoucky chooses to Consider this and declaration, that the late administration fifted asserted the claims, and then abandoned them. If we admit his co-struction to be the true one, to what does it amount? He does not deep sindeed it is expressly admitted, that the late administration asserted the claims, and then waited them.

enions, and then waited them.

What is then the mighty difference between the assertion in the interpretions, and the fact as adoutted here? We are tout that the last adoutted here? We are tout that the last adoutted interious were not the first to assert them—that they take a distinctions were not the first to assert them—that they tended fairehood is of such a flagition; character as has been given it, it is notical to expect that it would be rope very most creatly the meaning of the sectomer. It there he the last error in the interactions, it is in the use of the word flarge rathe out that word character as that word character in the touch the calonian and then give then out of a sected them after they had been previously asserted by Mr. Mource's administration. If he e was any thing wrong our reprehensible in susceing claims the last administration to so doing, it int much mitigated by the or pricentions, and turn give them mp, the emore metered by the late administration has a doing, it not mouth mitigated by the elision or pretentions. It appears to me that if a cause of remained and not feel very match wanted, such an one as this word not bave been binded up and per forth so prominently. The manure in which our feel minister to London was instruct-

ed to conduct the negotiation, may, for ought I know, be unusual, but it does not appare to me to be centurable. The whole affair present itself to me as a very plain natter. The litrid present itself to me as a very plain natter. The litrid prevents at the verning at, by their act of paralament of 12.5, off r to the littled bits as participation in the trade with her American colomes on extension colomics on the paralament of their but at all necessitions.

now to const h r.

sary now to consider.

The administration, for some reason or other—probably in the hope of getting better—reload the terms offered, and claimed hope of getting better—reload the terms of right; but alterwards. Bure advantageous ones as a matter of right: but alterwards, flooing, I presume, that better terms could not be obtained, and floring, I, pressure, that is liter terms could not be obtained, and their claim of right could much be somained, concluded to take those that were first off red and had been refused. When they prepared to lake those that were first off red and had been refused. When they prepared to lake these terms, the Brinds preventment shall them between effects of. The culomial trade was lost to the country. The between effects of. The culomial trade was lost to the country. The first proper and the season of the second of the season of the second of the season of the trade of the very terms on the situation of affairs when that redundant went out of the state of the season of affairs when that redundant when the state of the season of the situation of affairs when that redundant on the situation of affairs when that redundant of the British government, who thought the terms off-red by the British government, who thought the terms off-red by the British government, who thought the terms off-red by the British government and have been exceeded, should on also an effort to return the state of the regain and influenced trace. As negretation has expression, repressing the second of t

say, that he intended to move to have the injunction of securary removed, with a view that the public might be informed as to the grounds upon which this momination had been opposed and support that the public might be informed as to the grounds upon which this momination had been opposed and support that the public might be informed as to the ground upon the public there are the theory of the situation in which it stand in relation to the parties here, a did not more than the public the most perfect respect to the public that is not to the public the most perfect respect to the public public that is not to the public the seater, and my constituents, the ground on which I stand. I trust if any thing create it is not to the public that the public that is not to the public that the publi

dering a very repertable portion of the people of South Ca-olina directly repertable portion of the people of South Ca-rolina directly repertable portion of the people of South Ca-rolina directly rectly repeated by the south Ca-rolina directly rectly repeated by the south Ca-rolina directly repeated by the south of the south of the have formerly held in the highest estimation, as well for his pub-lie services as for his sopposed sound political principles. For my own part, I was hered up with a personal regard for the cha-

racter of the president—he'was the native of my own district, reared up by one relation, and himself the patron of another. My father was his friend—he tought my elder bruthers and sixters the first rodiments of their education. I hope the senate will parket

father was his friend-he taught my, bler brushers and sister in friend tendents of their decisions. I happe the entare will purson me for reading a sentence or two, a tracted from an address model by myself persistent to his relection, as injuriance how far I southern the persistent of the relection as injuriance how far I southern the relection of the relectio and the 4th of Match next shall give us Jackson as our president, the triumph with one of magniferne and grandent. It will be a triumph of the people, over the power and parsonage of the government—it will be a triumph of the spring of the constitution over its loose and perverted exposition. We may then hape? to ease, and to let, a practical and common news administration.—No light house in the takes—no splinded ministon—no entange.

No light house in the takes—no splinded ministon—no entange.

No begit house is the skier-on splendid missions—no entanging allanaes—on governmental extrint to bring out the espablishes of the nation, by perial, on just, and oncomitational legistions. Brid opin the Jeff remains school-elevated by the delty and economy. We shall see a pure partial, who, having power-rises to use in, when it adds not to the prosperity of the onion. It has been supported by the desirable power at the lutrition. It will be enquired by a great field reported at the leaves of the constitution be confounded, and its friends reported at the lutrition. It will be enquired by great Now, say, it will, I think, by almost tviry one who hears me, Now, say, it will, I think, by almost tviry one who hears me, be admitted that the events of the present administration have not entitled me to much consideration as a prophet. Indeed, immediately after the address a very distinguished and highly valored elimination of the present as a summand of the present administration have not entitled me to much consideration as a prophet. Indeed, immediately after the address as silinded to General Jackson, was ad capta-dam he presented. But I replied, with the greatest usering, that I did hope and believe it he were sketch, should appoint a trial continuous of rharester and purity of purpose, sind by sound constitutional advises, used predetions which the the third that the property of the third of the property of the prop

mongen more or ner commen, or or never and Gistorbing character in testa-in to "historhing" and Mr. Eaton, had taken hold of the public mind, his appointment was unspecially. And the chief of her had not undered as any on the objection taken to the cobinet by some of the distinguished extracted of Charleston, not mow my publicated friends. It was neged that Mr. Eason had neight for the clears, the weight of character, or wice-tifte information, to make this cried and successful the administration.

Although it was much record into more responsibility was much record in the more responsibility when the control of t

Powering tile

on any reward out an injuried and state of accommission of the verificette. It was supposed by us at home that their claims ould not be overlooked.

1 believe the president did go so far as to tell, the eminent and I hairer the product did go to far as to tell the evident and accomplising guidrman now which magnetare al South Cardina, but for his violent and decided and tariff sentinguist, he would have make him secretary of wars. Sir, I regge the did not send I think the American people regget It. I here were counderstoon of a political matric, aligh wouth have most this a must beletion to the product of the product of the product of the send to believe bests. The manners, and a must be rong, might have staidfule ration decrease of public confidence in the administration of the national algory entirely in general, and furnished a butter ground for his friends at home to suppose their oppressions were less substantial if he peritripated in their perpetuation. Sir, the organization of the exhibit war, no administration of the properticipates. the enomet was, no doubt, the result of an incipient and precon-ceived scheme, to make the noniner the streessor, and Mr. Ea-ton was the instrument through which it was effected. Mr. Branch from North Caroling Resonance.

the was the instrument through which it was effected.

Mr. Branch, from North Cardona, Bernen, from Georgia, and
Rives sent to France, from Vergrous, were introd-d to consulting the thore states. South Cardona was skipped in the arrangement, and why? It was because you resided there. You were the observed to the approach of popular torw with the administration at introduced into North. Cardona—upon the adjustment of conjugate, 1830, no doubt the result of a preconcert by a leak from the mountaint, and a wave from the shores at the same time. From that time, the claims of our citizens were, for the first time, taken notice of. Thus only confined to the party who now favor the one of the configuration to Belgium, from those who, par excellence, claim to be the union party—one every way wor-

thy of the trust as I have stready borne testimony to, and I a told we have another arrival to-day from the same quarter quest of executive favor.

that we have another arrival to-day from the same quarter is used in factors and the property of the property of the minority the attendency in South Carolina. Every man of the minority the attendency in South Carolina. Every man of any consequence among them has a right to expect something—bee president; covernor of a territory, minuster, or charge different to notething clear. And who are they? We are informed of their existence by their memorial presented against the tariff and millifectation. As they have come into the sensite as a party, I shall speak of them as such. The great body of this party, troitent in Christenton, took it unto their beads, on the last this of land to exchange the day as a party, and sent for foreign and a such and the continuous c

party, I shall speak of them as such. The great body of this party revident in Charleton, took at that the first, on the last 4th of July, to cell-brate that day as a party, and sent for foorigin side, and the control of the contro

who here it be an attempt of origination in South Casolina to en-list in their easuse the green's government, or accretary of state of the United States, to promitiate Great Hilliams. My participar prompts one to go for South Carolina against the United States, and the United States against the world. No statement of carreet for the United States against the world. We also common Stately, feeling or correct principles would ever as it as lorsing government put his own in the wrong. I know it is after the practice of secondary men, those who find thems leves in the back ground at home, to take such a position as will make them popular simusal. I do not easy such men their regulations distinction; at itself, it is not easy such men their regulations distinction; at itself, it is not easy such men their regulations distinction; at itself, it is limited by a find any one setting hume it up against public opinions at language and the secondary of the se

I have understood upon the best authority, a member of con-I have understood upon the best authority, a member of ear-great then, not tow, that this robust terril act of 182b, because a law owing to Mr. Van Buren's failure to redeem a predict to wate a property of the state of the state of the state of the state of the correst to accritism extext, whough for the source-thereby, alter pust-ting his southern portional briends in a worse situation than they would have been, had they have trasted him as insmiral. With these evidence so if faithest conduct towards the outhern interests, the state of the ball deep view. had dee ived.

had dee ived.

Sr, one of the most decided objections I have to the confirma-tion of this appointment, is, that the most serve influence of the properties of the properties of the present incumbent's term of ser-vice, the president. I believe this power was exercised for this purpose, to a criminal and corrupt extent. I have been informed

by a gentleman of the most unquestionable integrity and high character, that the post office patronage was avowedly lent to this purpose; and that within une month after the late secretary of character, that the post office pairrhage was anowerly lett to this pripose, and that within une month after the late secretary of separations are considered to the secretary of the property of the secretary in the secretary of the secretary of the secretary of the secretary of the secretary in the secretary in the secretary in the secretary in the secretary of the secretary in the secretary of the secretary of

trust, and abounting on yourself.

In the south the protective system never was adopted, nor could it be. It is so odious—so much at war with the principles of justice, that no administration could venture to adopt it in S. Cardina. For my wan part I do not think the power tuture out one main and put in another, as a mere arbitrary exertion of executive authority does exist. I think the residence of the production of the p cutive authority, does exist. I think it it violation to the contri-centre can adopt to reprint his use of such power. It is the re-sence of tyrainty, and the precedent on which it rests is to be found in those gloony days of determine and consolidation, when those of the convention which formed our constitution, who wished the convention which formed our constitution, who wished as the french of the contitution; when the pramble to the first revenue law was interpolated with an inhibited power; when the judiciary act was enected; when the alien and redution laws were considered constitutional; when, in fact, it was thought nothing but fair by the advocates of monarchy and executive power and but fair by the advocates of monarchy and executive power and what they failed to get in the convention. I am perpared to put my negative not it exercise. It is at was with civil liberty and the genus of our institutions, and ought to be abandoned or pro-bibited. I am perfectly astirtled his practice has been introduced president by a regency left here to the interest of the nomines. Again, set: It in pretty generally admitted that the court paper

president by a regency left here in the interest of the nummer. Again, set: In pretty generally admitted that the court paper was established under the auspices of the late secretary of state, and speaks his sentiments, and acts under general instructions to pursue such a policy as will bring him into power. One of the mean recorded to, to effect this purpose in the south, is to strengthen the northern or union party in South Carolina, who are supposed to be irrendy to thin, and use up the love of minon with the lawe of peace; transfer through the sifection the to widel and accretate the president towards his old Carolina friends, hence, when no hope exists for whipping in any one into the views of the central regiency, the most better demountations are friends; hence, when no hope exists for whipping in any one into the view of the central reguery, the most bitter denunciations are pronounced on them. by authority. "Thulwhen Branch, lugham and Berren, honest and knoorable men who know the intrigues of the court party, even express a wildinguess to act on principle with the administration nowithstanding their personal weight, the understrappers of the nominee tell them they are influenced to havility, to exact the continued of the intermediate with, while this nomination is pending, the losiowing article appears in the Globe.

"It is evident that the political leaders of the nullifiers are not ready to come out in open houtility to the president, because that

ready to come out in open hostility to the president, because that would go tu defeat their own efforts to control the state of South emind go to defeat their own efforts to curred the state of South Carolina, and while they cunningly contrive to keep a footing among the South Carolina (and the state of South Carolina to the rest of the union that they tracterial teching and granification in considering the late message of the president as a flording indications of a change more favorable than beretoforce to the principles maintained by them. Thus, it is hoped, will operate against him in the other states. The Columbia school of politicians would do honor to such a master as Machiareth.

chareful."

I submit whether I do not stand justified in the opinion of the senate, in pronouncing this a wanton and unwarrantable calumny. Look at the measage. It is skilfully Iramed to please the sort with general phrases, suited to the tariff interests. Look at the trainty report, in which a seeme it restablished on the bank with the message; and I may ask where it the strongest proof of Ma-chavicism to be found in the federal papers or the state resolu-tions. [Here M. Miller read carrects from papers from Pennayi-vania, to show that the message was understood there as in S. indifferent and well secured supporters, by a rule resorted to among farmers or hunters, to select from a redundant keenel what supernumeraries can be drowned by holding up by the ear. For my part, I am determined not to place myself in the power of such pointeal friends as will attribute my support shall be told I dare not do otherwise, your friends at home attempt to break down the president by praising him, and they dare not treasury report, in which a seesaw is established on the bank with shall be told I dare not do otherwise, open fine, and they dare not do treak down the president by any they have for and do it openly, and you vote for Mr. Van Burrn to injure him, not form any principle of attachment to the president; but because you want to make the trariff states believe he is anti-tariff, and thereby break him down upon the Machavel plan. We are told we date unt oppose the president. Sin, the people I represent dare do any I fing that force and generous men dare dej and dare do any I fing that force and generous men dare dej and

standing here I dare speak the truth and vote against the pri-cipal, who uses such agents to represent therm at the count St. James. I believe, sir, the statement read by the senator fro rt of Mississippi, as to the nominee's reason for the dissolutions of the late cabinet, to his friends in New York; I believe he did say that

St. James. I believe, air, the statement resulty the tersalor fresults of the calbert, to his freeds in New York; I believe be did say that it was owing to a comparay formed by the vice president, secretaries of the nay and tresoney pricera, to exclude a virtuous woman from society, and it do believe that it making the calbert of the new order of the calbert of th

in the Seminole war; and I am at a loss for any good reason to result at the bazard of differing from the senator from Georgia, I declare the bazard of differing from the senator from Georgia, I declare hold any one as criminal who boddy, openly, and indecently invades public sentiments and public morals. As the guardians of irmale character, we must sustain the majerty and supersisting of irmale strater, we must sustain the majerty and supersisting of irmale strater, we construct the seal of condemnation on him who half attempt, knowingly, to marrow in transactions of the party, a not copy to plut the feath at the control of the

rymen.

I may do injustice to the state department on the question of real of Mr. Middleton, Mr. Pointett, and Mr. Watta. I do not mow whether they desired to be recalled or not, but presume they did not.

Sir, I do not complain that our favorite sons are unrequited for their faithful services, or turned out of office. It is not this which calls forth my censure and indignation. It is the belief that my friends and tellow citizens are hunted down with anyage

which calls forth my ceinsure and indignation. It is the belief that my friends and fellow citizens are hunted down with sawage feroeity, not for political opinions, but because they are supposed to be your friends—that we will not task war on you, is the the property of the transposed of the uncredermed pledges he made to the public, pending the last his breach in our ranks. Nay, mover, both him responsible for the uncredermed pledges he made to the public, pending the last projection of the transposed of the transposed of the uncredermed pledges he made to the public, pending the last projection of the transposed of transposed of the transp care of themselves.

In closing my remarks on this somewhat exciting topic, an county my remarks on this somewhat exeiting topic, permit me to express my acknowledgments to the sender for their consideration, while I have stated in a hasty, imperfect, and unpremeditated manner my opinions of the claims of the nomineer to public confidence, and the reasons of my refusal to vote for his confirmation. Remarks y Mr. Freych in reply to Mr. Miller, Mr. Prevident We are told by the visition who has just concluded, in the bignings of his extraordinary speech, that he intended to publish his remarks for he was vanidation. No friend of Mr. Van Barren will complain of the fullisecut of this intention. Of the long into of officers committed by Mr. Van Barren it was

Of the long fixed of off-trees committed by Mr. Van Buren it was satural that the senton should begin with hose at home. He says ageneral Jackson has heen separated from him and his freith by the artificer of Mr. Van Huren, and het ells us of his own acal and devation to the hero of New Orleans, and read extracts from his own speech at the Waxwas, shen he assired his sudious that "the philosophy of nature" was "a sofficient guaranty" for the general; "inead autachiment," How does it appear that Mr. Van Buren produced this deradful uppration? Not sidence of it is exhibited, and with due televence in the sentor, I would sugis exhibited; and with due stelerence in the senator, I would sug-gest that he was only mission, in his theory; the pitiouphy of nature? was not so strong a guaranty as imagined. But, is what is instituted, late? Has geveral Jackson forgotts in local at factments, the had of his birth and of his sarkest affections, where he has so many devasted and dustrested framble. No, sir, it is not possible general Jeckson has not separated from South Carolina, no the South Carolina yet withdrawn from him, although the senator scens to be earnestly hunting up causes for a

The radical party in South Carolina-the unionists-have the senatoe says, given in their adhesion from interested motivis to Mr. aenatoc capt, given in their adherion from inters sed motivs 10 Mr. Am Buren for the sincersion to the presidency—and this is another of his crimes. New, sir, t do not know that it is true that they desire the succession for Mr. You Illuren; critainly they might go further and fere ware, and fare much worse and not signatused here by one of this criments. I am from gr. Mr. President, upon almost turbidden ground; travelling site a swight boring state to numgle in its party strick put. If feel for these radicals—these unionists, we acted together in by-gone times; we chink alike tallifiand of I were not to say a word in their behalf, as the two senators from the state are of the party opposed to brom at home. One for implication to be condemned to return of the many and home. One implies the next to be condemned to return of the plea of not guilty to the charge exhibited against them. Under these circumstances, I stand bound to repel the imputations east thrise circumstates, I stand formind to repet the imputations can upon the anti-multifers of South Carolina, and taking not the evidence, shall prove that they are mijustly charge of the quistion of the Sentinole war, study by the general with firmness and zeal, defended him right or zerong. The rationals were among his recisions. fended him right or average. The radicals were among his ecua-ers, and the question is emphysically asked, where was Googia then? Georgia from was where the 11 mars, and where 1 trust site will ever ue found, by the side of the minimus, standing on hor will ever ue found, by the side of the minimus, standing on the imagine that the true patients meaning in layer of one's friends, in econing to discreminate between truth and error. Such is not our theory—for violated laws, we hold all responsible, friends and focs. It is endergoing the side when that general Jackson had focs. It is not development have thewn that general Jackson had means of teleproced induced to use, but if there is one Georgian, one radical, who rigrets the part he took on that transaction, I thank God, to me, he is miknown. I trust, sir, that to atome for his own error in defending what he now insingular treat wrong, he does not, under the power of some master feeling, intend to

censure every thing that is right.

Mr. Cobb and Mr. Crawford have been named by the senator. Mr. Cobb is nu longer among us to answer. He did his duty, according so his conception of that duty, in this and every other cording to his conception of that duty, in this and every other act of his public life. His friends know that his conduct was open, and his motives pure. The ground he stood upon here, he never abundouted while he high. Sr. Crawford [Joseph and Joseph and Joseph and his formation of the house of preparatives when Crawford [Joseph anember of the house of preparatives when the property of the prop

Vol. XLI.-No. 32.

This union party, which seems to haunt his imagination, it I am nut strangely mintaken, had the honor, a short time since, tu number him as a member of it, (Mr. Miller denied that he had to number him as a member of it, Mr. Miller denied that he had were beens! Well, sir, the sensor ought to know but in this fact, I cannot be missisce—the renator was a candidate, brought for postpoining but two years the i-vastion of the secomplished gen-tleman who trow standard the him of her afford. The recolve-tion of that fact thould have prevented a charge against them of being, from within motives, over of office, devoted to the domi-mant power, following the time sun-flower, the mitions of the reconant power, following like the sun-flower, the unctions of the reset unit. To this tail charge, I do not pead for them, not guilty—they do follow, like the sun-flower—the time flower than not change; its variety to the sun-flower—the time flower than not change; its variety its bund here to the light of lines in the second not considered, and is found when he sets in the western, as it stood when he case in the eastern sky. Poetically understood, at Ovid describes the heliotrope, the resister is right, what is good in poetry is not always good in prote, and the charge is, that for interest sake the South Carolinans, unfriendly to the senator, know no will but the presenting and are obesiden in his whitelet.

the president's and are obed, in 10 his while.

We are taught to expect shoals of them here, socking as the rewards of devotion, hours, and trusts, foreign missions, &c. &c. one of them being already before us, as the avantacourier of a thousand more! No allusion could have been more unfortunate. Who and what is the gentleman at whom this urrow has been east, the first of the shoal of office seekers! Why, sir, the senatur himself speaks highly of his character. Discrebed by his culteague the urts of the shoat of office seckers! Why, it, the senaminable behavior and the seckers! Why, it, the senaminable is a bught-minded man, of extensive information, and unmitted integrity, in whose bands the best and dearest interests of the people may be talely confided. And are such men office seckers, and tatterested devotes to existing power in South Carolinai? His on, what

are the patriots? They must be angels. They cannot be men-the s-nator may eulogize his triends to the utmost of his power valt them in the scale of talent ambintegrity to the highest pitch, T secture to place his opponents by their side, and challenge com-parison without fearing or intending to depreciate in the dightest degree the honor of any of S. Carolina's distinguished sons.

The grangement of the first calouet did not please the tenstors

South Carchea was neglected. Governor Hamilton was told he might have been sceretary of war, but for his violence against the tariff, and what scenned to have added vettom to the sting. South tariff, and what seemed to have added ventom to the string. South Carolina was volumly passed over, but an atterney general was looked for in Georgiej and all this was the work of Dom Daniel of New York. The remater is difficult to phase. He liked not the first, and like a less the second catanet. But how was the fact in regard to governer flamitude. If my memory decives me not, he has publicly declared the might base had office, had be desired, he do not denie it. In this, and in all other things, the is incapathe dal not desired. In this, and in all other things, he is liceape, ble of decent. Passing over the unjuredualished offence of going to Georgia for a member of the list cashinet, does the settator really support the choice of the late attorney general was the work of Mr. Van Burer! (Mr. Miller modded an assent.) The senator next commuted amore gengious mistake. Of all the min of the Mr. Van. Buren! (Mr. Miller, modded an assent.) The sentator nearst committed amore eggingous mistakes. Of all the min of the day, his quals in prof. smonar attainments, and talouts, admitted to be great. I think he is the last man who would have been select-ed by Mr. Van Buren, and aurel, ann, Mr. Van Buren, is the last man on earlitto whose influence the attaintry general would have been willing to owe his place.

Considered as the originator and the fostreer of the diagrees

between the first and second officers of the government, Mr. Van Buren is to bur the extremity of the austur's wrath. On this subject, Mr. President, I can only refer the senate to the expli-cit and prompt denial of the justice of the charge by the party accused, long time publicly made, and never yet impeached any one having a claim to character. The facts before the pu his prove that the charge is the coinage of a distempered brain, baseless as the fabric of a sision. If the senator has any desire to enter into firther enquiry, I repeat here this explicit and positive enter into further enquiry. I repeat here this explicit and positive ilenial, in the name of an absent friend; and if he ventures upon the investigation, I pledge myself to satisfy even his pre-occupied mind, that not a shadow of suspicion ran rest upon Mr. Van Buren's lame. I speak on the highest authority, when I state to the senate, that his deportment in relation to that controversy, deserves the respect and admiration of every bonorable and deli-

The Globel the Globel the official paper, has abused the sensto Gross, the Gross the only a process has a water to sense the read bit friends. The editor was brought here by Mr. Varf Buren, and he is accountable for all it contains—all that is bad, I meant be gets credit form ing ond, appear where it may.

This charge is made because the Globe is called the government

neath or gets cream for hing son, appear wherein may, happen, Mr. Nan Born and the government to hing pressurely stated in Japan, Mr. Nan Born and the government to hing pressurely stated in must not be minumerstood as defenders the electronic of the Globe. I see with r. grey many attacks on persons for matters that ought not to be brought before the public. I detect all investigation of the private transactions, all malagnant security into the every day buttiest of pulitical apprints. In the property of the property of the state of a newspare, is responsible for its elospitation of a newspare, is responsible for its enormities of the state of a newspare, is responsible for its enormities? Will the sentance consent that his trends and all his appointent shall by judged by the same rule! I ask has to glance his eye back over judged by the same rule? Take that to gainer mis eye back over the thistory of the press in this district for a few past years. Does he remember the Federal Republican, the Washington City Gazette, the Washington Republican? Does he know any thing of the National Journal and the United States Telegraph? Has be the National Journal and the United States Telegraph! Has be present to his reedlection the arocious calumines by which they have been politude—their dark minutations and open listehoods by which the reportation of the Month o

friends to the application of his own rule? [The wize president asked if the senator from Georgia 1 and animion to the occupant of the chair.]

Mr. Euraph. By what anthonity, sir, do you ask that quere, on, Mr. Euraph. By what anthonity, sir, do you ask that quere, on, the distribution of the senator of the senator.

Mr. Foreight. I dony the right; and if it is considered as a question of order. I appeal to the judgment of the senator.

The vize precioust and it the aluston was directed to him, there

was no foundation for it.

as no roungation for it.

Mr. Miller rose and addressed the chair.

Mr. Forsyth claimed the floor, which he said he was in some anger of forming between the chair and the senator.

The vice president said the center from Grorgia is entitled to

Mr. Forsyth. That being understood, I give way with pleasure

Mr. Porsym.

In the tenine for any explanation he may desire to make.

Mr. Miller explain, d. and concluded by saying—as to the rule
by which he judged others in relation to the official press, he was

by when he process out in the state of the s

those who patronize and support, in times of high party strife, a, of the colonial trude, under the arrangement which has been thorough herd particals newspaper. Leaving to others to adopt or made, and its effects upon our navigation and commerce. I hope, reject the rule, and to aply it or not to the patrons and supporters; that an opportunity for an ample discussion of them will occur, of the Journal and Telegraph, and to the former patrons of the when it will not be difficult to show that what has been done is Washington (say Washington (say Gazette and Fed-decidedly more disadvantageous to us than the previous uses of earl Republican, I deny, explicitly, Mr. Van Burch's responsibility trade. But what is the arrangement? There is no treaty, if for any articles of the Globe. I this ensure will purpose as in one on part, nothing obligatory upon Great British. The open tisfactors proof that he has been instrumental in establishing a press here or elsewhere, tor the purpose of dragging down by calom-nies any good man's name, my vote shall damn him here—my

nies any good man's name, my vote shalf damin him here—my voice very where.

In the spirit of manly frankness, not in the spirit of this discussion. I appeal to the senator to reflect upon the irreconcileable con-tradiction between all his conclusions to Mr. Van Buren's prejudice, and the character of the chief magistrate-not the char of the president with his present friends and the people, but ac-eording to his own conceptions of that character before the president had the misfortune to think that the senstor and his friends dent may the misfortune to think that the senstor and his friends were pursuing a poley daugrerous to the union of the States. He was, described by the senstor, all that was good and great, and performed with the purest patriolism more important services than any man since the days of Washington. His known firmness has topmen and the purely neutron more important receives the been called obtainate self-will, by his afterware, and he has been held up by his reumies as a roating lion, requiring implicit obtainee from all who ventare to approach his deet. Take the good or the bad of this destription—Judge this matter by the opinion of the president's frends, by the sensor's, or by the president's enemies, and the part albutted to Mr. Van Burent could not have been mice, and the part albutted to Mr. Van Burent could not have been fetter—the ell-will de, abuntue man-the light great public benefictor—the ell-will de, abuntue man-the light great public benefictor and every shape by Mr. Van Burcur's finger? If the sensor will calmiy reflect, he will be compelled to acknowledge that he is on the benefit and the light great public destroyed to the light great public chaire. He may take eith e branch of the alternative. He cannot hold both.

The formidable acray of feet in sunners of this charge of every

not quarrel with the senator's chuice. He may take eith rbranch of the alternative. He cannot hold both.

The formidable array of facts in support of this charge of corrept managements against Mr. Van horen, reminds me of an occupied management of the control o being in her detail of all the tacts. Pouting and prinlant she left the advocate to his books and briefs. The whole affair war left the advocate to his books and brieft. The whole affair was freegeten by him but in the course of a few day, the lacky burst freeget and the state of the sta

Mr. Clay, (in reply to Mr. Forsyth and other gentlemen), ob-served that a doctrine limb been advanced much more important in its consequences, than the nomination under consideration. It had been maintained, that the institutions, so often adverted It had teen maintained, that the instructions, so our anterests of the control of It he periadre to government, from the highest to the lowert, introduced with the represents to be an extract. H. C.

It he periadre the extent of state, undoubtedly he also is re-possible for them, and the perpension to be an extract. H. C.

The periadre describes the extent of state, undoubtedly he also is re-possible for them, and the perpension of the claimants with the periadre described by the peria

when it will not the difficult to show that what has been done is decidedly more disadvantageous to us than the previous state of detidedly more disadvantageous to us than the previous state of that trade. But what is the arrangement? There is no treaty, no co npact, nothing obligatory upon Great Britain. The operation of an act of the littin partism in his been simply extended proceeds from the breath of a British parliament, and the same breath can take it away, whenever they plays. Let us look at the other vasured instructed of the diplomacy of his administration. The render of our claims on Demnatk, for which indemnity was not obtained under the late administration, have been sarisfied. Int. Mr. Whenom was engaged in negotiations represents them The residue of our claims on Denmark, for which indennity was not obtained under the late administration, have been startsfeed. In the control of the contro

Mexico, the latter of which ren sincel to be ratified by the Mexican perpolide. It adjusted the difficult subject with England relating to astolaction for slaves taken during the late war. During that the state of the state of the state of the desired of the state of the desired of the state of the indemnity from Russia, I request permission of the strate to relate an autofoto which reflect to much honer upon the emperor Abander. Baron Malitiz Leing one day in the department of itact leavantly observed to him that I thought

There is a statement in the published speech of gen. Smith which, if he made it in the senare, did not attract my attention, the syst he asked me whether the terms proposed by the British level and the statement of the system of the statement o There is a statement in the published speech of gen. Smith added any information as to the act of parliament. That very authority, vested in the king, demanstrates the necessity there was for forther explanation, if not negotiation.

for forther explanation. If not negotiation.

With respect to the note from me to the senator, which he says
he received accompanying the draft of the bill introduced by him,
it would be more satisfactory if he would publish the note itself,
instead of what he represents to be an extract.

H. C.

Russian government had not treated us well respecting that claim; that it had been repeatedly, during a long course of years, brought before that government; that we could get no answer to representations; nd that we were at least entitled to a decision one way or the other. He communicated this conversation to his one way or the other. He communicated this conversation to my government, the emperor Alexander, as I was subsequently in-formed, sent fur the papers, personally inspected them himself, and directed the payment of the claim. It was accordingly ad-justed and settled by baron 'luyll and myself by an exchange of

and orecase more by baron. Tuyll and mysell by an examination of the property onfidently anticipated, it is not now proper should be cum-icated to the British government. Respect for ourselver, no than for that government, forbids that we should obtrude so confidently anticipated, it is not now proper should be counmusicated to the British government. Repect of swarcives, noless than for that governments, forbids that we should obtracle
it proper to should be supported by the state of the state of

vision for our trade on the St. Lawrence and the Sorrel. Itsul when the demand is abundanced, as an usuasimable pretension, in when our government is denounced for lawing brought forward produced and the state of the state of

ed is a nephew of the gentleman from Maryland, (general Smith) ed is a nephew of the gentleman from Maryland, (general somity) and although highly respectable and eminent in his profession, he is not more so than twenty office lawyers in the state belonging to the upposite party. The governor slav craiseved the appoint-ment, or commissioned several gentlemen opposed to him is poli-tice, as automesy for the commonwealth. And recently, the legisties, as amorneys for the commonwealth. And recently, the legi-lature appointed a president of one of the banks from the ranks of the friends of this administration, and several other officers.

Mr. Brown said, that unwilling as he had been to participate in this discussion, he could not, in justice to his own feelings, and to the distinguished individual, whose nomination as minister to England was then before the senate, refrain from giving utterance to the mingled sentiments of indignation and regret, at the course which the debate had taken—a course which atrack him as at least extraordinary, and extremely unjust towards the nomince.

The actimony with which Mr. Van Buren had been assailed, the epithets which had been as liberally bestowed on him, required some vindication at the hands of those who were tavorable to confirming his nomination, against the injurious, and as he believed, unwar-rantable charges which had been preferred against him. He would here take leave to remind grutlemen, that reproachful epithets afforded but a poor substitute for argument, and more especially when addressed to a body whose deliberations should be governed by calm

and dispassionate consideration.

The senate had been told by the honorable gentleman Mr. (Clay), who had preceded him in this debate, had disgraced his country, by certain expressions contained in his instructions given to Mr. McLane, late minister to England, in relation to the negotiation beminister to England, in relation to the degotation between the United States and Great Britain, on the subject of the West India trade. Waiving all discussions as to whom the responsibility should attach, for instructions given to our loreign ministers, whether to the president of the United States or to his secretary of state, he would concede to those opposed to the nomination the principle contended for by them, that the secretary of state was responsible for his official conduct, to the believe, for a moment, that he would desire that any shield should be interposed to screen him from a proper responsibility; he believed he would sooner court the s rictest inquiry, than endeavor to escape from it. But to return to the instructions: What was the language which was deemed so exceptionable? In order to remove the impression, that a feeling of hostility was left in this country towards Great Britain, which the improvident course of the late administration, in relation to the West India trade had produced, the lite secretary of state had alluded in his instructions to the change which the people of the United States had made, in those who administered our government, in the following language:-"The opportunities which you have ilerived, trom a participation in our public councils, as well as other sources of information, will enable you to speak with confidence (us fur as you may deem it profor and neeful to to do) of the respective parts taken by those to whom the administration of the govern-ment is now committed, in relation to the course heretofore pursued upon the subject of the colonial trade. Their views upon that point have been submitted to the people of the United States, and the counsels by which your conduct is now directed, see the result of the judgment expressed by the only carthly tribund to which the late administration was amenable for its soin. "It in making this suggestion, Mr. Van Buren had asserted what was most true; public opinion had discarded the late administration from power, and the party to whom the people of the United States had committed the rems of government, had been, and were then, iavorable to the proposed arrangement, he could therefore recognise in this no solid objection; but to his mind, it had more the appearance of the capationeness of verbal criticism, than any thing class. It there was any thing in the language which he had noticed of a submissive tone, as gentlemen had supposed, by proceeding a little guage which would effectually have removed all their apprehensions, and shows if the late secretary of state knew how to use the language of conciliation, he also

urging the just chains of his country.

That part of the instructions to which he had reference was as lollows: "It Great Brusin deems it adverse to her interests to allow us to participate in the trade with her colonies, and finds nothing in the extension of it to others to induce her to apply the same rule to us, she will, we hope, be sensible of the propriety of placing her refusal on those grounds. To set up the acts of the late administration as the cause of forcentre of privileges which would otherwise be extended to the people of the United States, would, under existing encumstances, be unjust in itself, and could not fail to excite their deepest sensibility. The tone of beling which a course so unwise and untenable is calculated to produce, would doubtless be greatly aggravated, - Here was language firm and spirited, and indicating any thing else but a disposition to yield or compremit the honor of the country, and he could but consider it as extremely unjust on the part of the opponents of the nomination to single out iletached parts of the instructions, without adverting to their general tenor, and viewing them as a whole; the only fair rule to be resorted to, in the exposition of public documents,

But to come back to the charge of disgrace which had been so strongly urged and reflect upon. How, sur, has the minister to England disgraced his country? Where was the evidence of the imputed disgrace to be tound? Was it to be found in the lact, that an arrangement had been made between the United States and Great Britain, in relation to her colonial trade, substantially on the very same basis as that proposed under the administration of Mr. Adams, and were gentlemen who then approved that measure, now prepared to condemn the present administration for having succeeded in wain embeavored to effect for several years.

name stood more honored abroad? Under what ad- with Mr. Adams. It had a much earlier origin. of the highest panegyre, and in none more than in major in a min ne would be treat in the groundering of a country, with whom this dishonarshed transaction is ject of the colonial trade, without considering it, and to have taken place. The lively sensibility which in his maturities to Mr. Morris, under his own hand, the president had on all occasions shown to the honor; in October, 1789, president Washington as year. Let it That he had authorised the language of conpromised. ediction to be used, in the instructions to the immister to Figland, was most honorable to him. From what prearten: could a spirit of conciliation and courtesy towards ford ad, come with more propriety than from him, by valor in the field her pride had been bumbled?

In 'e is no mark more infailable, as regards the dete of wisdom with which a nation is governed, than the respectability of that nation in other countries All restory will testify to the truth of the remark, that

vigor, never hals to scenre respect. Mr. Brams said, he would not institute a comparison between the management of our diplomatic affirms, under the present administration, and that which had preseded it, and it would be from no apprehension that the result would not redound greatly to the credit of the

Mr. Van Buren had, he believed, while acting as seeretary of state, accomplished more m less time than

knew how to speak in a tone of manly firmness when, the ease with which he had adapted himself to it, the rapidity with which he had comprehended the arduous and difficult duties of secretary of state, bore honorable testimony to his abilities as a statesman.

It had been objected to the nominee, that he had introduced into the government of the United States, the party intrigues and discipline said to prevail in his own state. Without stopping to notice what he considered an unjust reflection, on the public character of a great and patratic member of this confederacy, he called upon those who made the charge to support it by proof. It was honorable to the reputation of Mr. Van Buren, both public and private, that when his enemies were asked to turnish evidence in support of the charges arged against him, that they were unable to fix upon him any one of them by the semblance of proof. sessing talents of a high order, and rapidly growing in the esteem of his countrymen, it was not a marter of surprise that he had been marked out as the victim of unmersted persecution.

Mr. Hrown could conceive of no adequate reason or motives for rejecting the nomination of the manater to England. He was peculiarly fitted for the statum which be then filled. His thorough and intimate acquaintance with the commercial relations of the two countries pointed him out as a fit and proper representative of our interests at the court of Great Brusin. The state of New York had repeatedly vouched for his character and standing, by hestowing on him the highest civil honors waturn her gitt. Mr. Brown said, he therefore con-sidered it a duty which he owed to the country, and to the individual then representing us at the court of Great Brusin, to vote for confirming his nomination.

Remarks of Mr. Hebster -on the second day. Mr. Webster said, in reply to some remarks of Mr. in forming such an arrangement with the British govern-ment, as the late administration had proffered, and had to say, that what was now called the American "prefailed to accomplish? Ser, and Mr. Brown, it appears tension," originated with Mr. Adams, either as presi-to me that there has the rub; the objection to Mr. Van dont, me secretary of state. By the way, it is singular to me that there has the rub; the abjection to Mr. Van dont, or scentary of state. By the way, it is singular Buren, he leared, with some gentlemen, was not that enough that the American side of this question, is called, done too hitte, but, that he had done too much in the instructions before us, a pretension, too long per-Umler his auspices, as secretary of state, a restoration sisted in; but the British side of it is called a right, too of the West India trade had been effected, which the long, and too tensciously, resisted by us. This courte-late administration had, by several successive missions, our mode of speaking of the claims of a foreign govern-This courtement, and this reproachint mode of speaking of the the called on gentlemen who had spoken so patheti- claims of our own, is certainly somewhat novel in dieally of their country's disgrace to adduce some proof planacy. But, whether it be called, respectfully, a in support of the charge. When had the American claim, or reproachiully, a pretension, it did not originate ministration, from the origin of the government to this "pretension," now abandoned, with so much scorn, or ministration, from the origin of the government to this "pretension," now abundance, with so much score, or case, had the national character held a more folly cle-tation? There was no civilized country, but what is the late administration, originated with George American character, American institutions, were themes. We shington. He put me own hand to it. He insisted of the highest panegyrie, and in none more than in that on it; and he would not treat with England, on the sub-

of his country, lorbade the supposition that he would be strongly impressed on your mind, that the previlege ever have sanctioned instructions to a foreign minister, of carrying our productions, in our vessels, to their by which the character at his country was to be comestands to our own ports and markets, is regarded here us of the highest importance; and you will be careful not to countenance any tilen of our dispensing with it in a tremy. Ascertain, if possible, their views on the sub-ject for it would not be experient to commence negotiations without previously having good reusens to expect a

satisfactory termination of them."

Observe, sir, that president Washington, in these instructions, is not speaking of the empty and futile right of sending our own vessels, swithout cargoes, to the Briant act unistration conducted teebly, is contemptable tab West Indies; but he as speaking of the substantial and consumption there. And whether these products were shut out by positive act of parliament, or by a tariff of duties, absolutely and necessarily prohibitory, could make no difference. The object was to provide by treaty, if it could be done, that our products should find their way, effectively and profitally, into the markets of the British West Indias. This was general Washington's object. This was the 'pretension' which he set up.

any of the producessors. Comparatively inexperienced it is well known, sir, that no satisfactory arrangement to the ucw station in which he had been called to set, was made, in general Washington's time, respecting our

trade with the British West Indies. But the breaking | any tolerable acquaintance with the history of the nego out of the French revolution, and the wars which it occasioned, were causes which, of themselves, opened the ports of the West Indies. During the long contaminer of those wars, our vessels, with cargoes of our own products, found their way into the British West India Islands under a practical relaxation of the British colonial system. While this condition of things lasted, we did very well without a particular treaty. But when the Euro-pean wars, and our war all ceased, then Great Britain returned to her former system; then the Islands became shut against us; and then it became necessary to freat on the subject. And, sir, we proposed to treat; our ministers were, successively, instructed to treat, from that time forward. And, sir, I undertake to say, that neither Mr. Madison, who was then president, nor his successor, Mr. Monroe, gave any anthority or permission to any American minister, to abandon this pretension and give it up, or even to wrive it, or postpone it, and make a treaty without providing for it. No such thong. On the contrary, it will appear, I think, if we look brough papers which have been sent to the senate, that, ander Mr. Madison's administration, our minister in England was fully instructed on this subject, and expected to press it. And as to Mr. Monroe, I have means of being informed, in a manuer not liable to mistake, but he was, on this subject, always immovable. He would not negotiate without treating on this branch of he trade: nor did I ever understand, that, in regard to his matter, there was any difference of opinion whatever, among the gentlemen who composed Mr. Monoe's cabinet. Mr. Adams, as secretary of state, wrote the despatches and the instructions; but the policy was he policy of the whole administration, as far as I ever inderstood. Certain it is, it was the settled and determined policy of Mr. Monroe himself. Indeed, str, so ar is it from being true that this pretension originated with Mr. Adams, that it was in his administration that, for the first time, permission was given, under very peuliar carcumstances, and with restrictions, to negotiate treaty, waiving this part of the question. This has been already alinded to, and fully explained, by the ionorable member from Kentucky.

So then, sir, this pretension, asserted in the instrucions to have been first set up in the late administration, s shown to have had president Washington for its auhor, and to have received the countenance of every president, who had occasion to act on the subject, from 1789, down to the time of the present administration.

But this is not all. Congress itself has sanctioned his same "pretension." The act of the 1st of March, 1523, makes it an express condition, upon which, and mon which alone, our ports shall be opened to British tessels and cargoes from the West Indies, on the same luties as our vessels and eargoes; that should be admitted into those islands, without puring ing other or higher duties than shell be paid on similar roductions coming from elsewhere. All this will be seen by reference to the third section of that set. Now, emember, sir, that this act of congress passed in March, 1823, two years before the commencement of Mr. Adams's administration. The act originated in the The honorable senator from Maryland who has spoken on this subject to day, (Mr. Smith) who was hen a member of the senate, and took part in the dis-:ussion of this very bill; and he supported it and voted or it. It passed both houses, without material opposion m either. Now, m, how is it possible, after refer-ing to this law of 1823, to find any apology for the assertion contained in these instructions, that this claim is pretention first set up by Mr. Adams's administra-How is it possible that this law could have been overlooked, or not remembered? In short, sir, with

tistions of the United States, or their legislation, how are we to account for it, that such an assertion as these margations contain, should have found its way into them?

But the honorable member from Georgia asks, why we lay all this to the charge of the secretary, and not to the charge of the president? The answer is, the presi-dent's conduct is not before us. We are not, and can-not become his accusers, even if we thought there were any thing in his conduct which gave cause for accusation. by any act of ours, he is placed before us by the presicline to set. We must either confirm, or reject it. As to the notion that the secretary of state was but the m-stroment of the president, and so not responsible for these instructions, I reject, at once, all such detence, excuse, or anology; or whatever else it may be called. It there be any thing in a public despatch derogatory to the honor of the country, as I thank there is in this, it is enough for me, that I see whose hand is to it. If it be said, that the signer was only an instrument in the hands of others, I reply, that I cannot concur in conferring a high public diplomatic trust on any one who has consented, under any circumstances, to be an instrument, in such a case.

The honorable member from Georgia asks, also, why we have slept on this subject, and why, at this late day, we bring forward complaints. Sir, nobody has slept up-Since these instructions have been made public, there has been no previous opportunity to discuss them. The honorable member will recollect, that the whole arrangement with England was done and completed, before ever these instructions saw the light. The president opened the trade by his proclamation, in October, 1830; but these matroctions were not publicly sent to congress till alterwards, that is, till January, 1831. And were not then sent, with any view that either house strould act upon the subject, for the whole business was already settled. For one, I never saw the instructions, nor heard them read, till January, 1831; nor did I ever hear them spoken of, as containing these obnoxious passages. This, then, is the first opportunity for considering these instructions.

That they have been subjects of complaint out doors since they were made public, and of much severe ani-malversion, is certainly true. But, until now, there never has been an opportunity naturally calling for their discussion here. The honorable gentleman may be assured, that it such occasion had presented itself, it would have been embraced.

I cutirely lorbeur, Mr. President, from going into the ments of the late arrangement with England, as a measure of commercial pulsey. Another time will come, I trust, more suitable for that discussion. For the present, I confine mysell strictly to such parts of the instructions as I think plainly objectionable, and reprehensible; whatever may be the character of the agreement between us and England, as matter of policy. And I repeat, sir, that I place the justification of my vote on the party tone, and party character of these instructions. Let me ask, if such consulerations as these are to be addressed to a loreign government, what is that foreign government to expect in return? The lavors, nor even gratuitous smiles, on American parties. What, then, I repeat, is to be the return? What is party to do here, for that have government, which has done, is expected to do, or is asked to do, something for party What is to be the consideration paid for till toreign favor? Sir, must not every man see, that any mixture of such estises, or motives, in our foreign inter-course, is as full of danger, as it is of dishmor?

I will not pursue the subject. I am auxious only to make my own ground fully and clearly understood; and willingly leave every other gentleman to his own upicomes. And I cheerfully submet my own vote to the opinion of the country. I willingly leave it to the peoopinion of the country. I writingly leave it to the people of the United States to say, whether I am acting a factious and inworthy part, or the part of a true hearted American, in withholding my approbation from the nomination of a gentleman as minister to England, who

<sup>&</sup>quot;The circumstance did not occur to Mr. Webster's recollection at the moment he was speaking, but the truth is, that Mr. Van Boren was himself a member of the senate, at the very time of the passing of this law; and Mr. McLane was at the same time a member of the house of representatives. So that Mr. Van Buren did himself, certainly, concur in "setting up this preension," two years before Mr. Adams became presi-

ned, arready, as a appears to me, instructed his prede-cessor at the same court, to carry party considerations, to orge party merets, and solicit party layors, at the loot of the British throne.

Remarks of Mr. Ewing.

Mr. Ewing, of Ohio, and he rose for the purpose of replying to the honorable senator from North Carolina, (Mr. Brown), and with a view also to add something to what had been said by the honorable senator from Massschusetts, (Mr. Webster), who had placed the ques-tion before the senate, in nearly all the aspects in which it had presented itself to his (Mr. E's) mind.

The hon, senator from North Carolina has said, that the treaty negotiated by our minister at London, under the instructions which are now the subject of animadthe instructions which are now the subject of animal-version, is a splendid treaty—that it has yielded, and will yield a golden harvest to our people; and that it is the success of the negotiation, casting all others in the shade, which has excited envy and animosity against the arties concerned in that brilliant transaction. Sir, said Mr. E. it is the common resort of all men, when brought to answer for a misslemeanor, to retort the charge of envy, or enmity against their accusers. Pretences of this kind can always be advanced—though not always sustained; and when supported by evidence, and not resting on mere assertion, they are entitled to no weight, except in those cases in which the accusation to be repelled, rests for its support upon he evidence of the envious and ma-What has it to do with the question lignant accuser. before the senate, whether the nominee is the subject of love or hatred; of malice or good will? Here is no room for falsehood, and little for misconstruction. have before us, under his own sign manual, the very paper on which we must acquit or condemn him. We have it before us here, sir, it will go sbroad to the na-tion and the world, with the sanction or censure of the senate stamped upon it. Friendship cannot brighten, nor envy deepen its shades. Before us, and before the American people, upon its own merits must it stand or Nor does the hon, senator touch the question under discussion, when he tells us that an arrangement effected pursuant to these instructions, is advantageous to the United States; that it adds to our commerce, and puts money in the pockets of our people. I neither not now a proper time for the discussion of that subject. On another day, on a fit occasion, and with open doors, shall (I trust) this matter be investigated, and then, perhaps, their golden visions will vanish into air. But it is not the arrangement to which I now object, but the manner in which it was sued for. Let it be, if gentlemen please, a splendid boon, a golden gift obtained from Great Britain, by the superior talents and favor of this aubtle secretary; that gold is bought too dear, which is purchased at the expense of our national honor; which is sued for, begged for of a British minister; knelt for, prayed for, before a British, or any earthly throne.
But, sir, said Mr. E. this tone of submission, of sup

plication and apology, is not to my mind the most ob-justionable characteristic of this paper. We have, it is divided into parties at home. Our povernment, been divided into parties at home. Our people have differed in the choice of their rulers. Sometimes on principle, sometimes merely as to men; but heretofore, whether in peace or war, ubroad we have presented an undivided in our country, when our dissensions linve been sent shroad by the secredited agents of our government, and arged as argument for the consideration of a foreign But, by this despatch, sir, our family quarrels, our private animosities, which, in common decency, ought to die within our own doors, are presented in bold relief, and made the subject of earnest representation to the British crown. For what honest purpose is this thing done? Does any man suppose that the British minister or the British monarch cares who is at the head of our goverament, unless they expect to profit by the ascendancy of some individual or party? If it were "the country, the of one normonal or party? It it were "the country, the whole country, and nothing but the country," which the secretary sought to benefit by this official act, why did he urge to England, (for it mattered not to them), the apinions of the dominant party la this country? Sir, the British ministry? Because, adds the despatch, it has the American republic—the nation, is lost sight of in bearings and relations which reach beyond the immediate

has, already, as it appears to me, instructed his prede- | this despatch, and the minister is instructed to present himself at the British court as the emissary of those who had come into power as he assumes, because they subported British claims against American pretensions. once more ask the attention of the senate to a paragraph of this abspatch.

"The opportunities which you have derived from a participation in our public councils, as well as other sources of information, will enable you to apeak with confidence (as lar as you may deem it proper and useful so to do) of the respective parts taken by those to whom the administration of this government is now committed, in relation to the course heretofore pursued upon the subject of the colonial traile. upon the point have been submitted to the people of the United States; and the counted by which your conduct is now directed, are the result of the judgment expressed by the only earthly tribunal to which the late administration was amenable for its acts. It should be sufficient that the claims set up by them, and which caused the interruption of the trade in question, have been explicitly abandoned by those who first asserted them, and are not revived by their successors. Great Britain deems it adverse to her interests to allow ns to participate in the trade with her colonies, and finds nothing in the extension of it to others to induce the same rule to us, she will, we hope, be her to apply sensible of the propriety of placing her refusal on those grounds. To set up the acts of the late administration as the cause of forfeiture of privileges which would otherwise be extended to the people of the United States, would, under existing circumstances, be unjust in itself, and could not fail to excite their deepest seasibility. The tone of feeling which a course so unwise and untenable is calculated to produce, would doubtless be greatly aggravated by the consciousness that Great Britain less, by order in council, opened her cotonial ports to Russia and France, notwithstanding a similar omission on their part to accept the terms of-leved by the act of July, 1825. You cannot press this view of the subject too carnestly upon the consideration of the British ministry. It has bearings and rela-tions that reach beyond the immediate question under discussion."

"I will add nothing as to the impropriety of suffering any feelings that find their origin in the past pretensions

of this government to have an adverse influence upon the present conduct of Great Britain." Can any one read this minerable paragraph, mystified and involved as it is, and doubt for a moment as to its interpretation? You will be able to speak with confidence (as far as you may think it proper and useful so to do) of the course pursued by those now in power, in relation to the colonial trade. What is this but saying, in other words, to the American envoy—tell the British minister that we, who are now in power, anpported British claims, and opposed American prelensions, as to the colonal trade; our opinions upon that subject were submitted to the American people, and, because we entertained views favorable to British claims and hostile to American pretensions, the people placed us in power, and prostrated our opponents? This is the plain reading of that part of the despatch, when stripped of its circumfocution. Is this true, sir? And, if it were true, is it, I ask, the kind of message with which an American minister is to be sent to a loreign court-thus to humble and debase himself, and degrade, if not libel his cour try men-especially to the haughty court of Great Bri-

But this is not all. Warmed with his subject, and new light breaking in upon him as he proceeds, the senew ight breaking in upon thin as he proceed, the se-cretary closes this paragraph in his despatch with this special injunction: "You cannot press this view of the subject too currently upon the consideration of the Briush ministry. It has bearings and relations that reach

tan minery. It has ocavings and relations that reach beyond the immediate question under discussion.

'You cannot press this wire of the subject too carnestly.' What view? Why, that those who favored American pretensions, have been put down—and me, who support British claims, are lords of the secendant. But why press this carnestly upon the consideration of the British ministry? Because, adds the despatch, it has question under discussion. And what were these bear- | as quite respectful in its character; and also, because, ings and relations? On what did this view of the subject bear-to what did it relate, beyond the simple question of the question of the colonial trade, it indeed it could have borne on that? Sir, the motive lurking in the heart of the writer of this despatch, is here disclosed. He stands the self-declared representative of a purty-holding out, as a partizan, professions of sub-mission and subservience to Great Britain—and claiming, as the reward of his adherence to her interests, the concession of privileges which had been withheld when treated for in the name and behalf of the untique concessions on the one part, and the boons and privileges on the other, were not intended to terminate in the matter then under discussion. No, they had bearings and relations which reached beyond, very much beyond them. Why? to convince the British ministry that the secretary is devoted to their will! would they not lend their aid to elevate him in his turn to the highest station in our republic? Have they not the same motive in giving a president to the United States that Russia once had in giving a king to Poland! In his view, it was easily done. Let the ministry yield to his solicitations as a partizan, what they had refused to the manly diplomaey of the nation; and let the American people leel, or be persuaded that they felt, pecuniary benefits resulting from these concessions. Then let the British presses be made to teem with praises of the candor, skill, and telent of the American dinlomatists. The weight of foreign influence, with political tactics and party organization at home, he might reasonably suppose to be irre-sistible. And then, sir, having reached the summit of his ambition, could be not reward his august friend and ally, by yielding up other American pretensions to other British claims? Sr. the British pation has for a contra Ser, the British nation has for a century past held a controlling influence over the politics of Europe. It has been the "setter up and putter down of kings." States and nations have received their gold. become their pensioners; and it is not probable, if the lure is thus held out to them by our men in power, that they will be slow in seizing an occasion to control also our destmies.

It is for these reasons, in mildition to those already urged, that I have made up my mind to vote against this nomination. I have reflected on the subject, deliberately, calmly, and I hope impartially. The office is high and responsible. The stations which the nomine has beretolore filled, have been elevated and conspicuous. I have felt, sir, and still feel, the responsibility under which lact in refusing my assent to this nomination; but I refuse it without hesitation or doubt. Sir, if a man without lortune and without name, an officer holding some humble nost, had singed as deeply in his sphere as did this nominee in his, he would have been suffered, by common consent to sink into oblivion, perhaps into infamy. And surely our consure should not tall with less weight on the political sins of the high, than of the humble in station.

In coming to this conclusion, I, for one, have given little weight to the many reasons which are rife in the land touching the political character and conduct of this nominee in other matters than that here sleveloped. Something, indeed, it has weighted opon my mind, that he is now, by an arrangement which appears to be his own, our accredited minister at that very court to which he thus pressed his partizan claims; and where, if he chose to do it, he could best matter a project for bringing foreign influence to bear upon his political fortunes at home. But chiefly I rest my censure upon the iles-patch which is before us, and in which I cannot be deceived.

Remarks of Mr, Hayne.

Mr. President: Before the question is taken on this nomination, I desire merely to state the grounds on which my vote shall rest. I do this as an act of justice to myself, without desiring or intending to influence the vote of any gentleman here. When the resolution on ren by the senator from Maine (Mr. Holmes), was before the senate a few days ago, proposing, among other things, an inquiry into the conduct of Mr. Van Buren, I took occasion to say, that though I could not vote for that resolution, be-

even in relation to Mr. Van Buren himself, it was alto gether too vague and indefinite to lead to any practical gener too vague and indennite to lead to any practical result; yet list, if any senator would move for an inqui-ry, in proper form, I would not only vote for it, but cheerfully abile by the result. The Iriends of Mr. Van Buren, while opposing the resolution of Mr. Holmes, had not themselves thought proper to institute any such inquiry. I do not mean to censure them for this, nor to draw any interence from their course in this respect, un-favorable to Mr. Van Buren. They believed the charges against him requires no investigation, and for my own part I was willing to acquiesce in the suggestion which had been thrown out, that from the nature of the case it was peculiarly proper that each gentleman should make the necessary inquiries for himself, and having satisfied bis own conscience, set accordingly. I have Mr. President, porsucal this course, and by the result shall my conduct, on it is occasion, he governed. From the time when Mr. Van Buren took possession of the department of state up to the moment of his departure for England. I have been an attentive observer of the passing events here. I have, also, since this nomination came before the senate, taken mains to inform my sell, from the very best sources. as to the correctness or incorrectness of my first impressions with respect to the conduct of Mr. Van Buren while secretary of state, and the result has been, a firm connection that I ought not to give my advice and consent to his appointment as minister to England. From lacts and encommances which have fallen under my own observation, many of them notorious to the whole country, as well as from information derived from sources on which I implicitly rely, I have arrived at the following conclusion: that when Mr. Van Buren came into the cabinet, he found a state of circumstances here that opened a door to the establishment of an influence favorable to his personal views; that, instead of exerting himself to oranice the causes of discord and dissension by which the executive was unhappily surrounded, he dexterously oranied himself of them, and wielded them for the promotion of his own personal and political interests, and for the advancement of his triends and supporters to office, to the exclusion of almost all others. It is known to all who hear me, that gen, Jackson came into office under most auspicious circumstances, which, properly improved, could not have faded to secure for his admipistration the highest honor, and as I still believe lasting

benefit to his country.

It is notorious that the fruits of the great notitical viory which brought him into power, have been, in a great measure, lost. The expectations of the country have not been fulfilled. Dissussions and discord have divided a party who were once cemented together by the strongest ties. Men who espoused gen. Jackson's cause at the est ites. Men who espoused gen. Sackson a cause at the servicest dawn of his political fortunes, who stond by him in the heat of the contest, have been discarded from his confidence, and runscattern, while those who came in (I ke Mr. Van Boren himsell) at the eleventh hour, who never lifted a finger in his detence, or raised a voice in his favor, now have undisputed sway. Sir, I have no doubt whatever, that, for all this, the country is chiefly included to the influence of Mr. Van Boren, successfully, though cautiously, directed to the single object of advancing himself, at the expense of all who were supposed to stand in his way; and what is worse, at the exnense of the success of the administration, and at imminent hazard to the best interests of the country

I firmly believe, sir, that it was not until Mr. Van Buren discovered, in the course of the last winter, that, by creating a unity of interests between the president and himself, and altenating him from his faithful and true friends—instead of elevating himself, he was pulling his benefactor slown—that he determined to break up the cabinet, by withdrawing himself, and driving his colleagues from their stations; taking care, however, to provide a safe retreat for himself in this mission to England. I think the dissolution of the cabinet, under all the circonstances which attended it, was most unfortunate for the executive, and disreputable to the country; and such, I am persuaded, is the opinion of the great body of the people, of all parties, throughout the U. States. From cause, in the form in which it then stood, it proposed to all that I have seen and heard upon that subject, I have make a call upon the president, which I did not consider not the shadow of a doubt that this event would not have taken place, but for the firm and manly resistance made 10! New York, but only to the dominant party there-the Van Buren. If they had exlisted under his banner, and consented to follow his lead, all would have been well. I believe, moreover, that Mr. Van Buren, white secretary of state, used the influence derived from his high office, for the purpose of controlling, injuriously, the domestic and social relations of this community; and that his conduct was, in other respects, inconsistent with the dignity of his station and the character of the country. Having arrived at these conclusions, after a careful and deliberate examination of the whole case, my duty is, of course, made plant. We are called upon to give our artvice and consent to the appointment of Mr. Van Buren to a high and most responsible office. I know that a decision in his favor will be regarded here, soil bold up elsewhere, as a trumphant acquatal from all the charges that have been preferred against him. I cannot consent to be an instrument in producing such a result, believing, as I ilo, that these charges are true.

Allusion has been made to the strong prejudices which are sail to have followed Mr. Van Buren through his whole political course, and of which it is said he is now to be made the victim. For my own part, I am unconscious of being under the influence of any such feelings. Though I have never had the honor to be clossed among the personal and political tri-mis of this gentleman; yet so far from having ever indulged any projudice against him, my feelings towards him have been of an opposite character. Up to the time of his going into the cabinet, but a single circumstance had necurred to shake my confidence in him as a jobbic min; and not withstanding this, be went into the department of state with my "advice and consent;" and I should have continued in the same relation towards him to this day, but for a course of con-duct while in that office, which I how stly believe has brought meatentable evils upon this country. In coming to these conclusions, I have not been governed, as My has been supposed, by "vague rumors merely." opinions have been made upon facts and circumstances which are notorious, some of which have fallen under my own observation, and upon information derived from the most unquestionable sources. It is possible I may be deceived, but if so, I can only say, that so strong are the convictions under which I am netting, that if I were a juror in the box, sworn to give a true verdict in the issue now made up between Martin Van Buren and his country, I should leel myself constrained to give that verifiet against him. On this conviction I shall act, the consequences what they may, I shall do what I behere to be my duty, in recording my vote against Mr. Van Buren as minister to England.

Mr. Brown, on the conclusion of Mr. Havne's remarks, adjusted parties not to pursue this discussion; it could lead to an good. Every one's mind no doubt was made up. Let us vote, and avoid any further irritation,

already too great on his subject.

Mr. Forsyth said, I am aware of the propriety of the suggestion of the gentleman from North Carolina, and not rise to emitame the discussion. The gentleman who has just taken his seat (Mr. Hayne) has expressed his opinion-he will of course act itam it-that is his affair-he has founded it on sources within his reach: these sources are not disclosed-we cannot sneak of them. No evalence other than that already before the public, has been referred to by him. We cannot exainne w at we do not see. All this is for the judgment The honorable senator has said, that the of oil...s. course he has taken in coming to his conclusion, was sugget day the friends of Mr. Van Buren. This I must deny. The suggestion of that course was made by the senator from Massachusetts, (Mr. Webster) who is not to be numbered among the friends of the person nominated, either politically or personally. Atthough believing investigation unnecessary, we have stood ready at all times, to vote for it in any term but disgraceful to the secute. The whole quest on will soon be before the the seaste. The winte quest in which result, public, and we are ready to abole by the result.

Mr. Murcy's remarks in reply to Mr. Clay.

Mr. President, 1 will trouble the scuate with a few

by certain members of the estimet to the views of Mr. political triends of the minister to London [Mr. Fant Buren. But, sir, the state of facts relative to the conduct of parties in that state, will not allow of such a restricted application. If there has been any thing consorable in that respect, the honorable sonator's own political friends must come in for a full share: if any distraction is to be made, it cannot be in layor of those whose good opinion he enjoys. A recurrence to facts will show, that proscription-il it is to be exiledenters more deeply into their practice when they get power, than it does into the practice of those who are selected as the particular objects of attack. I could refer to recent instances to verify the assertion. Give them specess only in a single city, and the work of re-moval from office at once begins. They have very few "snared monuments;" almost all are swept off-from the highest to the lowest-down even to the lamp-lighter. The truth is, sir, the political friends of the senator from Kentucky are not converts to the liberal doctrines he has avowed on this occasion. It they have ever head of them, they held them not.

Atter all, Mr. President, it is quite evident from what we have heard, in relation to the conduct of parties m Maryland and elsewhere, that New York does not differ from other states. Political men in all of them have the some passions, and are secusted by like motives, and only differ a conduct by reason of some difference in their circumstances. Where there is alternation of success and defeat, there will be removals-called restoration or retaliation, by those who use power; and proscription

by those who feel it.

If the honerable senator understood me to speak of only one office-holder; a single spared monument, as he called it, friendly to the late administration, being retamed, he had misapprehended me. The number of changes made in that state is small; and I can assure him, that notwithstanding the ferocious and proscribing policies ascended to us, he has many friends now enjoying offices under both the general and state governments: by some of his own political friends, for having counteracted, as they suppose, the efforts which have been made, in some instances, to effect changes,

So far as my observation has extended, I can discover an sort of resemblance between the condition of actual office holders opposed to the administration, and that which has been described? They were pourtrayed as a class of men in the most abject state of fear and trembling, not daring to speak but in whispers on public aftairs, and even under restraints in their social intercourse. They may present themselves, or be presented in this light to the honeratle senators; but I am sure they are not so presented to others, for that is not their true condition. Their political preddections and semiments are not restrained by lear or expressed in whispera-their opposition is open and active, and sometimes nessy, and yet they remain in undisturbed possession of their offices.

I must again allude to the grounds of the removal of some subordinate officers by the present administration, in order that it may be understood upon what principle the set is vimiliesterf, and to repel the charge of proscription. The necessities of the late administration were such that it compeled these officers to become partizans in the struggle. Many of them mingled in the noticed of the fight; they were paragraph writers for the newspapers, and the distributors of political handbills, and thereby exposed themselves to the viewsitudes to which those are always exposed, for whom the political contests in free governments are waged. 11 among this class of officers there was more mortality attendant upon the fare conflict, it was because there was more discase.

The senator from Kentucky has denounced removals from office as a violation of the freedom of opinion, and the liberty of speech and action, the advocates the liberty of speech and action, He advocates a course of conduct towards political opponents, characterised by great moderation and torbearance, and what is more, words in asset to shat has just falls a lour the honor-lie problems to have continued his sections to his pre-able senator from Kentucky. He had not intend, he as- bept. We add of a<sub>3</sub> I believe, admire these liberal surers us, to apily his sunmadversions to the whole state lentiments, and feel disposed, in our abstract specula-

# NILES' WEEKLY REGISTER.

POURTH SERIES. No. 26 -Vos. V. BALTIMORE, FEB. 25, 1832. IVOL. XLI. WHOLE No. 1 066

THE PAST-THE PURSENT-FOR THE PUTURE

EDITED. PRINTER AND PUBLISHED BY H. NILES, AT \$5 PER ANNUM, PAYABLE IN ARVANCE.

tions, to adopt them as the rule of our conduct. The theory is, indeed, beautiful; but, sir, do we put them in practice when brought to the experiment? I would ask practice when brought to the experiment? the honorable senstor, if he has himself practised them? I will not say be has not, because he atsures us he has; but I will say that some part of his public conduct has exposed him to a strong suspicion of having departed from the path which he now points out as the true one, and of having wandered into that which he now thinks it is so consurable for others to have pursued.

It will be recollected, sir, that there is considerable patronage attached to the department of state. appertains the selection of the newspapers in which the laws of the United States are published. I well remember that while that honorable senator was at the head of that department, and when the fortunes of the late administration began to wane, the patromage of publishto instration began to water, me precorage in postorium githe law was withdrawn from certain public journals, which had long enjoyed it. What was the cause of this stonge—this removal from effice, I believe I may call it. It was not a subtain and violetive opportunities of the existing administration. Some of flowers of the criming administration. Some of flowers journals had searcely spok n in whispers against it. No. air, it was for loke wormness - for neutral ty -a want of zeal in the cause of the administration was alleged to be the off-neet proscription was the punishment. Where was then that sucred regard for the freedom of opinion and the liberty of sperch and action which we now hear so highly extelled? Was not this an attempt to control public opinion through the medium of the press, and to bring that press into a subserviency to the views of the men in power?

Sir, I wish not to be misunderstood. I have not alluded to these things for the purpose of accusation. I do not even complain of the manner in which the honorable senator used the patronage entrusted to him; but I do complain that he has seen fit to bring before this body the conduct of a political party in New York as a theme of reproach and annualversion, when its conduct is not distinguishable (except for some moderation and tolerance) from that of his own personal and political friends in that state—when its conduct does not differ from that pursued by political men mother states; and when it has a justification, if it needed one, in the honorable sensior's own example.

Remarks of Mr. Miller in reply to Mr. Foreyth. Mr. Miller kept no note of his rejumler to Mr. Forsydth. He replied at the moment to such suggestions as seemed to require notice at his hands. The publication of Mr. Porsyth's speech in reply, renders it proper that the rejonder by Mr. Miller should be published to correct and explain portions of Mr. For-

such's reply. Mr. President, I will trouble the senate with only a few observations in reply. The gentleman from Georgia has asid that I seemed earnestly hunting for causes for a divorce from the president. This is not so, I mean in this case to vindicate the character of my constituents from servile devotion to an administration that shows no respect to their leelings and their character. Upon every point connected with the interest and principles of South Carolina, and the correct policy of the nation, it shall have my support. The senator seems to south Carolina as identical, and as well versed as he may be in our local politics; he will permit me to just him right. The union party in South Carolina cannot be said to have had an existence unteccdent to 1830, onless they may be considered in fact and principle the old federal party. Taking this for granted, the gentle-man knows how far back he may be able to establish a "by-gone" fraternity with his anion friends. I do not know more than one of the old radical party who ever acted with the gentleman, and he will scarcely be Vol. XLI.—No. 33.

pregarded sufficient to give a party name to a very respeciable portion of the population in South Carolina. The gentleman admits that his friends, as well as himsell, stood up for principle, and against general Jackson, on the Seminule war. He says Georgia was then where she is now, beside the mitonist, standing up for the right,

and reprehending the wrong,

I am inclined to believe that if the gent'eman would retrace the history of his own state, he would find himself and his friends occasion-lly as much at war with the mount, as ever the South Carolina multifers have been. Upon the whole, one remarkable difference is found in the honorable gentlemen's course and more. I am content with my postion. He consured general Jacksun when he was out at power, and I sustained him; and he sustains him in power, while, in the case now believe the senate, I do not, for the reasons detailed, which he affects to consuler most extramdinary. He must not adulge in visionery apprehensions as to what I shall do-Sufficient for the day is the evil thereof. He says the muon party brought me forward for governor and thereby postposed the present incumbent. The gentleman here falls again into an error; the same persons who brought me torward for governor, brought me torward for the post I now fill; and I consider myself here representing in the senare the principles of the old radie cal party, which is another name with us for the old republican or State Rights party.
The gentleman says that I liked not the first cabinets

and less the last, This last assertion is not warranted by any thing which has fallen from me. It is not true that I like the second cabinet less than the first. I have voted to confirm the appointment of all the latter, and I would not vote for all the first il they were before us

now for confirmation.

The gentleman denies, with great emphasis, the fact of the nominee having any agency in the rupping up the calmet transactions in relation to the Sentinole war. stated my belief from the lacts before the public, and the gentleman and myself draw different inferences from those feets. He says the facts before the public prove that the charge is the "collage of a distempered brain, and baseless as the tabric of a vision." [Mr. Miller did not understand Mr. Forsyth, as using in the debate, such strong language, and will now repeat his belief, as he heretotore has done, and further his impression that he could, upon the evidence, convict limb before any impartial jury, unless the gentleman should lurnish to such jury other information than he has done to the senate. If he mustake not, the gentleman had something to do with this matter, and his opinion may be entitled to a consideration which Mr. Miller's does not possess. The high authority referred to, together with the personal knowledge of the senator, may consince him, but

not others, who are less informed on this subject. I shall not take any step to prove the goalt or innoconce of the nominee, as requested by the gentleman. It does not concern the public or myself faither then it constitutes a feature in the history of the gard life, and I am at liberty to state my belief and

when called on to give my vote. The gentleman misunderstood me, if he supposed to objected to the establishment of the Globe, as the government paper, by Mr. Van Buren, or any one else. I concede the right of every man, public or private, to establish presses; but in doing so, they must take them It they abuse me and my friends, by their cum quere. express or implied authority to obtain favor with others, they must look to those who they themselves desire to propotate for support.

Now what are the tac's here? Pending the nomination, a majority of the legislature, constituting the en-tire mass of my political friends, pass a resolution approving of so much of gen. Jackson's late message, at sure, and the most disingenious and base motive is attempted to be fixed upon them, by an administration print, which is the mouth-piece of the nominee and his party. In this matter, I put myself on my reserved right, and if I had no other ground to stand on, I would substitute my will for the reason, and reject the patron of such a press. It is one of the sovereign rights of a freeman to put those who ask his vote for office, at least upon terms of respect.

Mr. Marcy's remarks on the resolutions offered by Mr.

Holmes. When the resolutions offered by Mr. Holmes were under consideration, and towards the close of the debate, Mr. Marcy observed that he bail not intended to make a single remark upon the subject then before the senater yet he was unwilling to give a vote, from which it might be inferred, unless it was accompanied with a word of explanation, that he wished to suppress inquiry. That was very far from his intention. If any honorable senator has reason to believe that the person whose contination is now under consideration, is chargeable with improper conduct, and will introduce a resolution speeifying the charge, and asking for inquiry, he would give it his support as resultly as any member of that body; but the resolutions offered by the senator from Maine, (Mr. Holmes), were of an exceptionable character; for in addition to impeaching, indirectly, if it may be so considered, the integrity of the president, by proposing to ask if he had stated the true reasons for the dissolution of his late enbinet, it will bring before the committee, if it should be adopted, a mass of matters very difficult to be inquired into, and not at all connected, as he conceived, with the vote to be given on the nomination of Mr. Van Buren. No commutee to which these resolutions will be sent, will voluntarily enter into the various matters which some gentlemen may suppose to be within the scope of the inquiry into the causes of the dissolution of the late cabinet, and the senute ought not to impose that labor on them, unless it be proposed to show that Mr. Van Buren had an agency in that affair. It is not pretended-certainly not by the resolutions—that he was connected with the event. It is true, that the resolutions, after the introduction of much irrelevant matter, propose to inquire whether Mr. Van Buren had not participated in practices digraceful to the national character, &c.

Let any senator, who believes such practices ever hail' in point of fact, any existence, put them forth specifically in a resolution, and he would, he said, vote to send it to a committee for investigation; and if they were found to be true, let the nominee be rejected. The designa-tion of offences by the terms of "practices disgraceful to the national character," was very vague—quite too vague. The nature and character of these practices should be defined, that the senate may know the duty they impose, and the committee the duty they are required to perform.

The proposed resolutions, as now shaped, make no specific charge, and give no certain direction to the inquiry. them, or to vote for laying them on the table; but when a case for inquiry was presented, he would vote for going into it. Indeed, he wished to be distinctly understood as inviting inquiry; but in lairness, it should be on spesified charges.

to some of the practices intended probably to be d in the resolutions, we have, he said, the sowith a challenge to all the world for proof and no man had yet been found to accept that challenge and come forth with proof. Those who best know the character and conduct of the nominee feel the fullest confidence that nothing dishonorable or degrading in the slightest degree, can be substantiated. So far, therefore, from closing the door of investigation, they are willing to be instrumental in opening it.

We have now given, we believe, all the speeches concerning the nomination of Mr. Van Buren that have concerning the nomination of Mr. Fan Burch that have been reported and published, whether delivered by his supporters or opponents. As it has been several times asked, what did Mesars. Tuzewell and Tyler say—it

recommends a reduction of the tariff to a revenue mea- | may be proper to add, that, so far as we are informed, they only said yea, when the question on ratification was put to them, though a writer in the Richmond En-THUNDER " Mr. Mangum is said to have offered a few remarks, in which he objected to the tone and tenar of Mr. Van Buren's instructions, but thought that they did not call for, or justify, his rejection.

> The present number completes the 41st volume of the REGISTER. It contains 480 pages-and the .fddendum of reports made by the committees of the New York Convention makes 64 pages more, in all 544 pages of close matter; besides the title page and table of coutents which we expect to publish this ilay fortnight, This volume and the last, perhaps, contain a greater amount of reading and record matter than ever was published in book-lorm for the same money, under the observed as to the selections. The extra expenses of the year now ended, to give value to the REGISTER as a book of reference, have exceeded one thousand dollars -and yet other grutaitous sheets would have issued, if the cost of them could have been afforded. The new year, it is hoped, will give increased means, and the quid pro quo shall be furnished with as much pleasure as it is received. "

There are very few copies of the present and last volumes more than must be laid aside for the whole sets of the work kept full-and these volumes will not be sold separated from a regular subscription for the com ing year-or the payment of ten dollars, for the past and running year.

Several reports of committees of the New York convention are yet to be circulated as added to the Rants-TEN; but those to issue will be annexed to the ensure volunie-some of them will not be ready for a considerable time; and a great deal of labor in statistical matter must have to be delayed until alter all the reports are in. The whole, however, shall issue with all possible despatch, for the public information.

There was a great meeting of the employers and juurneymen liatters held in Bultimore on Thursday evening last, and a committee was appointed to remosstrate against the principles of the bill reported by Mr. McDuffe, or any other proceeding which shall have a tendency to reduce the amount of wages paid to working people in the United States. We have not time or room to give particulars. It may be expected that like proceedings will be had by the manufacturers and workers in leather, cabinet wares, and the many other trades which have reached a high degree of perfection, through the paternal care of a wise and endightened government. It is unreasonable to expect that these should be placed in open competition with the pauper laborers of Europe-for they have to bear "the burthen and heat of the day"-they are the rank and file of the country; its glory in prosperous peace, and sure defence in war.

THE CENTENNIAL BIRTH DAY OF WASHINGTON Seems to have been very generally celebrated by processions, orations, and social and convivial meetings of the people ot the United States-by the firing of cannon, ringing of bells, display of flags-by civil, religious and military ceremonies -- and by shows and exhibitions, plays and sports of various kinds; a relaxation from business having generally taken place to honor the memory of the "tather of his country"—"first in war, first in peace and first in the hearts of his countrymen;" whose example is precious to America, but whose name is the property of all who love, or shall love, bherty in every clame and every age, and will endure—nutil "chaos shall come again."

The proceedings had in engress, in preparation for the day and on the day itself, shall be laid aside for preservation-lor they will be much-looked to in times to come, and persons will wonder at some things that hap-pened! We are also specially desirous of giving place to the thrilling speech of Mr. Burges, of Rhade Island, m support of the proceedings suggested to honor the me-mory of the "mighty dead," It is one of the best fluish-

At Washington, divine service was performed by the aplains to congress in the hall of the representaves-there was a military procession, a large dising arty and two public balls. The vice president, speakof the house of representatives, &c. attended services the capitol and the ball at Carusi's saloon: the predent is not mentioned as attending either. Mr. Hebor presided at the dinner party, assisted by gen. Mer-er, of Virginia, gen. Janes, of Washington, and gen. ance, of Ohio. Mr. Webster pronounced a speech of a hour's length, in which he is said to have "excelled maself'—and gen. Mercer, gov. Barbour, Mr. Hun-ngton, Mr. Newton, Mr. Holmes, Mr. Stoter, Mr. prague, Mr. Pendleton, Mr. Robbins, Mr. Coze, and Ir. Crane, also addressed the company. All the adresses were reported, and will be published.

The ceremonies of the day were rendered more inresting by the presence of the "Washington Grays,"
Philadelphia, an elegant company of volunteers,
ho had made the journey to visit the tomb of Washington on the anniversary of his hundredth birth-day.
We desire also to give some account of the proceed-

g in our own enty and at other places. The proceson at Philadelphia was so large that it required two ours for it to pass, and from the preparations made at outon, New York, and many other eties and towns, at Wednesday, the 22d inst. would seem to have been day of general rejoleing.

STATISTICS. We have often complained of the want f statistical knowledge. Few nations called civilized ave such beggarly accounts of their affairs as our own, xeept as to the ordinary operations of government. rept the population tables every ten years, and the amu-l treasury reports concerning navigation and con-cerce—miserable and meagre enough in themselves, hile the little practical good that might be in them, rendered valueless by the delay that attends their pub-cation. Let this be "reformed."

With respect to this subject, the committee of the lew York convention to which was referred "the sub ect of the mistry as connected with manufactures and the mechanic arts." have the following strong and hauy remarks:

"Statistical facts are valuable in proportion to the rountiness with which they are known. When delayed, hey are more a matter of curiosity than of practical

infulness.
"A well organized system of statistics would not only ea guide to the statesman, enabling him to legislate in the intricate subject of trade understandingly, but t would inform the merchant on the important matter if consumption and supply, and save him from the nany errors into which he is simble to be led, by reaon of his unavoidable ignorance in this particular. Such intelligence often, and promptly, communicated, would, in a great measure, prevent the occurrence of hat scarcity and consequent enhancement of price, which so frequently taken the consumer by surprise: ind, on the other hand, would guard against that excesnive glut and consequent ruinous reduction of prices, thant, and injure the manufacturer, than all the foreign competition that can be combined against them.

Under the impressions so well expressed in the prebeding extract, we were much pleased to observe the following proceedings in the senate of the United States, on the 13th inst. and tender to Mr. Holmes our hearty thanks for the resolution that he offered:

Mr. Holmes rose to offer a resolution calling for information according to the set of congress, 1820, requiring the secretary of the treasury to lay before congress, at the opening of the session, a statement of the commerce of the United States with all countries. Mr. Holmes said that, as the provisions of the act have been made particularly to enable congress to obtain information that would enable them to set understandingly on questions which might arise relative to commerce, the importance of the resolution would be seen at once. By the act, the secretary was requested to make the re-

I culogiums that we ever met with-and among the turn as soon as possible after the 1st of December, at appliest efforts of that learned and powerful orstor. near the 1st of September, December, March and June The last year, this document, which should have come in early in December, was withheld until after the blose of the session; and at the first of March the senate were informed that the sceretary would not be able to make it out during the session of congress; and it was not until eight weeks after the members had returned home that the statement made its appearance. very extraordinary that the statement was not maile out on the 1st of March. We know that it was not received until eight weeks after congress adjourned, and the senate will see that it is important to ask the reason why the statement was not given before the close of the session, in order to apply the proper remedy, if there was in fact any reason why this could not be done. We are how far advanced in the present session—the subject of our commercial relations with the British colonies has come up before congress, under peculiar circum-stances—information has repeatedly been sought for from the executive, and yet this document is withheld, which all must see to be important and necessary to enable congress to act understandingly upon this ques-

The document referred to should have been communiested to the senste near the 1st of Decembermore than two months have elapsed since the time which the secretary is required by the set of congress to present it, and yet nothing has been seen or heard of The request might be made and the returns given all within the space of six days, and yet for seven weeks it has not been done, and the duty has been ne-glected. He wished also to know what had become of the answer to the resolutions that were long since submitted by himself and his colleague relative to the traile between the United States and the British West India colonies calling for important information, most of which could have been given long before now? Some it have been necessary to spend two months in collecting it? In order to know the reason why this information had not yet been received, and why documents so important to the senate were withheld-

Resolved, that the secretary of the treasury be threeted to inform the senate why the statements of the foreign commerce of the United States required by the reign commerce of the United States required by the act of the 10th February, 1820, have not been transmitted to compliance with the provisions of that act, what legis-

Resolved, That the secretary of the treasury be directed to inform the senate why he has not reported in answer to their resolution of 22d December, 1831, calling for information in regard to the British colonial trade, and when the answer is to be expected.

Surely, time enough has elapsed to obtain and prepare the facts belonging to the business of the year which ended five months ugo, on the 80th September 1831. Millions have been lost to the prople for the want of statistical knowledge. They, only get sequentied with commercial facts when they are "more matters of euriosity than of practical usefulness," and the labor and cost of preparing and publishing them is whitnest as if wasted.

OUR RIVERS. There was a tremendent many of the waters of the Ohio and its tributaries on the 9th and loth inst. On the latter day it was forty feet above low water mark at Pittsburg-many points of the eity were overflowed, and Alleghany-Town was under water. Houses, barns and stacks of hay and grain, were instantly passing slown the Ohio-fifty houses are said to have been swept away, or turned over, on the Alleghany river alone, but the noble bridge and aqueduct resisted the flood and stood fast; among other things, 16,000 barrels of salt were carried off by the rise of waters in the Kiskeminitas. At Wheeling, the flood was 5 or 6 feet A Wheeling, the mood was 5 or 6 leet higher than ever known belore; 42 houses were swept away from South Wheeling—35 houses were seen pass-ing down the Ohio on the morning of the 11th, and a large warehouse, filled with flour, lodged on the upper port of the island! A gentleman who accorded the tiver in a steam boat, says that they met two hundred bouses descending with the torrent. The amount of damage austained must be, indeed, beasy—for all the town and villages, on the whole cours of the river, must have partially self-real, and the low lunds have been swept of every thin, that was noveable. The line of devolation is several hundred, when however the great of devolation is several hundred, when however the devoted on the property of the same person had been lost.

The floods in the Susquehannah have, also, been a wful. In some places the ice was piled up fifty feet high.—
The bridge at Columbia, perhaps the greatest structure of its kind in the world, has been nearly extrict away.

It is stated that the Indians from the Rocky mountains, who some time since arrived at Washington, spike of the present as a season of floods—because that the beavers had built their houses much higher than usual!

"Passixo STRADO!" The editor of the "Harrisburg Intelligencer" of the 17th inst. expresses "regret, the ditor to whom was entrested, by the tardl convention in New York, the dissemination of the reports of the several committee, should have been so negligent of the daty. We have yet seen no report of the committee in temporary who have yet seen no report of the country who has. Why is this?"
We sisk, how is this? The report on iron was prompt-

We sit, Jose is that? The report on iron was prompting published—and safely distributed early in Dicton expand a package containing nearly 1000 topics was sent, carriage paid, to two menthers of the convention resident at Harrisburg—the report was published as an "addendum" to the Register on the 17th of December, (as have all the reports yet in, two or three just received excepted), and so distributed far and wate—and further, 2000 onjies of this report on iron were deposited at the lodgings of the gendelmen composing the Pennsylvania delegation in congress, for general circulation—as upposing they would feel a deep interest in this instern and yet many copies have been variously sent into Pennsylvania, st no small expenditure of labor and time. How then it has happened, as stated in the "Harrisburg Intelligence," in whelly past our finding out—for the editor receives the Ricots ran, and should, at least, have seen one copy of all the reports that have been publishes each one copy of all the reports that have been publishes.

MONEY. The pressure for money continues—for large quantities of apece are exported; and the effects on persons extensively engaged in business are rifictives in general many cases, the sequisitions of an industrious and useful life are awept away in a moment, by the bank-rupties of industrial hought solvent, and who, most probably, would have faithfully met their engagements, had the usual landities been extended to them. Powerful efforts have been made, however, to encourage or asstain worthy men—but we should be glad to believe that the "worst is over." Specie has rapidly departed from us, and us business is doing to bring much of it miss our country—it is deficient in quantity, and an alarming contraction of the currency necessaryly follows.

A NEW LEAF PROM THE BOOK OF CONTROVERSY!
The National intelligencer of Tuesday last contains four closely pented columns of letters given to the pulby Charles A. Wickliffe, esq., one of the Kentucky

postpone - becomes that our present number terminates a volume, and the insertion of many articles belonging to its period is required; and besides, it is most probable that this new matter will beget other statements, and it is best that every particular subject should be confined within a volume; if practicable.

The general lacts are these: It has been repeatedly stated in the "Globe," soul by Mr. Eulon, in certain of his addresses, appeals, See, that, during the session of congress 1829-30, a meeting of members of congress, friends of Mr. Calhonn, was held, for the purpose of forcing Messey. Van Buren and Enton, but especially the latter, out of the cabmet; and the names of individuals, particularly that of Mr. Vickliffe, have been bandled about as connected with this "CONSPIRACY." hence the present exposition.

Mr. Wickliffe states, that in March, 1830, Mease, Hugh L. Whote, Felix Grondy, Rubert Desha, Cave Johnson, and James K. P.-Ik, of Tennessee, and George M. Bibb, and Henry Doniel, of Keniucky, met him, at his request, in Mr. Bibb's room, with a view to consider the propriety of urging on the prevalent the necessity of hadding cabinet connects, which had then recently been thosontuned; that all the gentlemen presently to the state of the states of his triends to the president of the United States—which was stone recordingly. That this was the only subject consist of the most firm and resolute of the triands of the presiden, and the laxed kely of any to enter into a "conspiracy" to layor Mr. Cultonn, or embarrass the administration of general Jackson.

general Jackson. In consequence of the charges preferred, as briefly stated above, Mr. Wickliffe sulfressed letters to all the gentlemen named, "requesting they would state what hoppened at the meeting in March, 1830, at Mr. Blinb, promin. Mess. Danct, Johnson, and Bibb, have freely and fully replied to Mr. Wekkiffe, entirely sustaining and the proceedings had on the objects of the meeting and the proceedings had on the objects of the meeting and the proceedings had on the objects of the meeting and the proceedings had on the deciment of firmuch statements of what passed in Mr. Bobb's nonn—into being satisfied of the necessary or preparety of any exposition of the subject, they would "not keep above this consumit from which, (as Mr. White as 19), no public goot can re-

Mr. Daniel says, that a resumption of the practice of holding cabinet councils was wished, because that the advice of the irresponsible swarms of individuals who surround every executive." Mr. Johnson says to Mr. Wickliffe, "I then and still believe that your motive for getting up that meeting was pure and patriotic, to advance the interest of the country, and the fame of the administration," and that the proceedings had relation only to the holding of calmet councils. Mr. Overton, (one of the oldest and firmest friends of gen. Jackson, being then on a visit to him), was invited to attend. though not a member of congress-but slid not. Its purposes and proceedings, however, he says, (in reply to Mr. Wickliffe), were made known to lim; he heard of nothing that he thought nurricedly to the president or major Eaton; but gives it to be u derstood that if he had attended the inccome, he should have agitated the removal of the latter; and says that he had advised the president to dismass major Eaton, as well as major Barry. Mr. Bibb's letter is long, and very particular as to the points charged against the persons who strended the meeting, and peremptorily ilenies all the allegations made as to a subservency to Mr. Calhoun, a desire to "dispose of" Mr. Van Buren or major Eaton—or to ilo any thing more than recommend weekly meetings of the cabinet, in council. His letter concludes in the tol-

11 regret that you should have been driven to the pecessity of delending yourself against the accussion sontained in those publications—an accusation lounded on a total pet version and distortion of your motives and conduct. This you may look upon as springing from that curse to which mee in power are modern—to be attended of by those who seek to ingratuate themselves by minrepresentation and deteretion; whose self-ths aims rup thrive by falsehood and the passions, but sicken and the little support that the passions, but sicken and the little support that the support th

lowing strong terms:

Mr. Blarr, eddor of the "Globe" refused to publish the statement of Mr. Wickliffe and the letters noticed above, though his paper first published the strickles which rendered the exposition necessary. Hence its appearance in the "National Intelligence Intelligence."

The whole shows a strange state of things. We feel it more necessary to publish this correspondence, bor the reason that the refusal of the "Globe" to meers at, will probably be tollowed by that of all the editors appointed to publish the laws, "by authority."

Except Mr. Desha, who had already vindicated himself on the points made against the meeting.

"A TOUCH OF THE HOMANTIC." The following is an extract from a grave report of the commune on com-merce of the house of representatives of the United States, presented by Mr. Cambreleng, Feb. 3, 1830which, because of the importance of the facts that it contained, some six or ten thousand copies were

ordered to be prosted!

"Of the consting tonnage of Great Britain, there was no account authorised till 1823; in that year it stood at 7,527,827, in 1827, it was 8,648,868 tons. Part of this increase is owing to the inclusion of the Irish tonnage; but it is principally to the rapid morease of her navigation in the coasting trade. The mere increase in coasttag tonnage for five years, is more than equal to the whole emolt d and licensed tonnage of the United States, whether employed on our coast, on the Mississipps, Messours, Ohio, on our northern lakes, or in the fisherica."

f21st con. 1st session. Rep. No. 165, page 22.

The time was, when congressional reports were regarded as solumn assuments of ascertained truth, ile-liberately weighed by the committees, and they were held responsible for the lacts set forthe the time is, when reports of committees are amuggled into the house, and no responsibility is encountered because of the contents The preceding extract shews an enormous of them. devotion to error, or an extraordinary amount of stu-pidity. On one of the horns of this illemma, the "honorable chairman" of that committee must rest. sertion as to the increase of the British consting tonnage, plainly shows that he himself was silly enough to be-lieve, or wicked enough to impose that belief on others, that Britain really employed \$,648 868 tons in her coasting trade! IT IS A THUMPER! The best tale of "Mendez Pinto" was but a type of this giant afficial-MISTARE!

The forthcoming volume of Mr. Williams' truly valumble work, the "New York Annual Register," has the tollowing stem:

Tonnage of Great Britain and Ireland.

From an abstract of returns made to parliament, it appears that the number of ships and vessels belonging to the different ports of the British Empire, in 1829, was as follows: Ships and Vessels. 

Isles of Jersey, Guernsey &	Man, 49231,603
Grand Total,	19.1102.199 959
Entered the Ports of the	United Kingdom in 1829,
Vennela.	Tons. Men employed.
British, 13,659	.2 184,535 122,185
Cleared.	710,303
British, 12 636	.2,063,179119,262
Foreign, 5,094 .	the United Kingdom. Vessels. Tons.
	Vessels. Tons.

England,		241	20,611
Sen I nd		75	5,953
Ireland,		26	4 791
		-	-
	Total,		31,358
The Tonnage	of the United	States of Ame	rica in

The amounts of the tounige of the principal ports

are as tottows:	Ships and Vessels.	Tons.
London		572,835
Newcastle.	987	202 379
Liverpool.		161,780
Bristol.		.49,535
Hull		72 248
Sunderland.	624	.107,628

So, the whole tonnage of England, Scotland and Ireland, and of the adjacent isles, was only 2,199,059 tons, in 1829, or two years after Mr. Cambreleng said that the seasting tonnage, alone, of the United Kingdom was with.

8.648,868 tons. What a rapid decreuse there must have been in these two years, being no less than in the sum of nearly six millions and a half of tons, or about three times as much tonnage as the United Kingdom ever pos-This is not easily reconciled-but the lacts are scarel! "officially" stated, and what free trader dures dispute them?

SOLEMN -AND IMPORTANT! It will be recollected that lientenant Webb, the colleague of major Mordeen Mamassah Noah, (who is also tigh-priest and king of the Jews, by his nwn proclamation), in the editorship of that most versions and voracious journal, the "N. Y Courier and Ecquirer"-(in which "democrats" are made by new nithings of the pen, or turned into "ledershats" at the good pleasure of these omoiputent politicisms, though good pleasure of these omolpitent politicisms, though both have been burled out of the great manufactory of "patent republicans" at Tammuy Hall)," a good while agu journied from N. York to Washington, (venting bis rage along the road, and telling every hody what he would the), for the express purpose of cow-hiding general Green & Summilays after his arrival, the gallant lieutenant met the gallant general, and, bravely presenting his cow-hide, politely requested that the latter would take a little of its oil! But the general thought that two were necessary to an arrangement of that sort, and ilrew from his breeches pocket a mahogany-locked pistol-of which the lientenant took a close observation, and ascertained that the stock and barrel were exactly eight inches and three quarters long; but tearing that it might "go off," he lowered his cow-hide and made a learned speech at the general, who laughed for a while, but, being in a horry, he politely requested the heutenant to ing in a norry, he pointer) requested in electronic values and saide, which he hid—liaving the fear of the percusaion-stock before his eyes —— and then the frutenant went back to New York, taking the cow hide with him, to be laid up, with major Nosh's title to the kingship of the Jews, in perfetuan rei memorion of the rideulous and sublime. And so that matter ented. But this same beutenant Wobb, now made into colo-

nel Wibb-("son of the late general Samuel B. Webb, of the army of the revolution and aid de-camp to general Washington"), recently addressed a very modest letter to some person unknown to us, who gave it to the pulhe, as a specimen of the beautiful in politics +- and general Green made certain contemptuous remarks on that part of the letter which related to himself. Then was the anger of the colonel rouseit! He received the blessing of the high priest of the Jews and surveyor of the port of New York, and was again off to Washington, breathing gunpowder and proclaiming death! Having arrived, he sent a Mr. Barrell to general Green with a bit of paper Fready cut and dry," which he was required to sign. But when it was presented, the general enquired of Mr. Barrell if he was the representative of colonel Webb, and the latter assenting—the general went to his desk, and, taking a cow-skin in one hand and a pistol in the other, said to Mr. Barrell, Carl am going to cow-skin and he did it. ! Some persons interfered and not much damage was done-and Mr. B. regaining possession of his hat and spectacles, which had been knocked off in the scuttle, returned to make a report of what had happened, bringing with him the "apology" that g neral Green would'ut make. Then the colonel knowing not exactly what he ought to do-consults "nearly thirty

"Yet sometimes at the head and sometimes : of that thistinguished society. Like one of Voltor's beroes, he sallied forth-

Pour faire voir 4 tous les potentits Ce qu'il peut faire, et ce qu'il ne fit pas." †That the people might see how detestable are the

means by which the wires of party are worked, and how despicable are those who pull these wires, we should publish this letter of James Watson Webb"-but it would give the thing a greater degree of importance than it deserves; -and error enough has been committed in this way, perhaps, by inserting the present article.

# Mr. Green seems to have regretted that he felt it necessary so to treat Mr. Barrell, who seems a worthy man; but had he been a thanking one, we would have calculated the effects of the message that he was charged, gentlemen of standing and respectability," as he says, and "at four o'clock on the alternoon of the same thay iosted up, in front of Gadshy's and Brown's hotels, the posted up, mar-following carda"

"TO THE PUBLIC. I publish general DUFF GREEN to the world, as a

SCOUNDREL and a COWARD. JAS. WATSON WEDB,

of New York.

Washington, February 6, 1832.

But this was not all. The colonel, for the amusement of the public, (and we assure him it has caused many a laugh), went to work, and prepared a full account of the whole affair, telling many queer things, which he published on a broadside of large foolscup paper, favoring us with two copies; and we would advise, in return for this compliment, that it he tramed in vise, in return lor this compliment, that it be framed in leather, and placed at the left hand of the entrance into Tammany Hall—the right, for all that is contemptible and reliculous, being appropriated to the proclamation of major Mordecai Manasseh Noah, high priest and king of the Jews, grand suchem of the make tribe, and surveyor of the port of New York-once rejected by the genste, but re-nominated and "rewarded."

HOT TIMES AT WASHINGTON! The "Telegraph" of the 22d, distinctly, and without ecremony, charges "John H. Eaton, secretary of war, and gen. Coffee, the pephew by marriage of gen Jackson," then being comnephew by marriage of gen Jackson," then being com-missioners, on the part of the United States, to conclude a treaty with the Choctaws in Mississippi, with having 'twrote a great number of letters to the most influential officers," urging the rejection of the governor of Missi-sippi's appointment of Mr. Poindexter, as a senator of the Mississippi's appointment of Mr. Poindexter, as a senator of the United States; and as a, "if the president will authorise any one to deny" the lacts stated, they "can be proved, according to the strictest rules of law," &c... And adds, that notwithstanding this interference—and Apid adds, that not with standing this interier con-the fact, that though Mr. Pointlexter was far distant from his state at the time and his health such "that many be-bis state at the time and his health such and of any kind," he was elected with only five dissenting voices, &c. are bold charges-and, if true, of most extraordinary character.

And the "Telegraph" and "Globe" contain many letters which have passed between Mr. Pointlexter and his friend, Mr. Warren A. Davis-and Mr. Moore, of Alabama, and his friend Mr. Miller, of South Carolina, with Mr. Hoffman, Mr. Angel, and on the part of Mr. Soule, and Mr. Bergen, members of congress, from New York, because of the matters referred to in the "cards" published in our last. It is probable that we might have made room for the several notes of the persons named —but colonel Webb, of the 'New York Courier and Enquirer," bad a part in the correspondence between Mr. Moore and Mr. Bergen, and the excessive length of his statements and remarks would forbid a present insertion of the whole, if we could reconcile ourselves to copy from the "Globe" so coarse an article.

"A TOUGH OF THE RESIDENCE." An essayist in a New York paper speaking of the cost of ship bushling in England and America, alter going into some very nice and sepurate colculations, makes it out that, because of dearer lober, and the extra price of iron, hemp, and sail cloth, a strip of 500 tons costs exactly 9,147 dollars

more in the United States than in England-which more unterbalances the increased cost of wood, in the

in proof positive that this 'free trade' gentleman is right, we offer this smaple fact—that ALL the magnificost packets and other first rate ships that ply regularly between Boston, New York, Philadelphia and Balti-more, and Liverpool and Lundon, are American built, and navigated by American scamen, though British built and navigated visualization accounts, integral printer out and navigated vessels may enter our ports on the same terms as our own!!! But this, by the *Ricense* which the traders? use, perhaps will be ascribed to the want of capital and enterprize in Englishmen to interfere in that important and profitable branch of navigation!

The result of this tale is like a certain discovery of the perpetual motion. It was beautiful in its theory, but had one practical lault-IT WOULDN'T GO. "Nothing else was the matter with it!"

Rumons. It is said that Mr. Rives is to be transferred from France to England, with an outfit of \$9,000that Mr. Livingston is to succeed Mr. Rives-that Mr. Tazewell is to succeed Mr. Livingston-that col. R. M. Johnson is to succeed Mr. Cass, who is to succeed somebody else, not named. These things have been repeated several times, and it is possible that some of the changes are contemplated.

"FREE TRADE." From a late Landon paper. It is remarkable that, white the silk weavers of England are all complaining, and not without cause, of the wretched condition to which their trade has been reduced by the competition between them and the French, the weavers of France are absolutely in a state of insurrection in consequence of the low rate of wages to which they have been ground down, in order to enable their masters-or rather, their masters' masters, to undersell the British manufacturers. There must be something radically bad in this state of things. Silks of all descriptions are in great demand, yet those who live by manufacturing them can scarcely procure the means of existence. It appears to can scarcely procure the means of extreme. It appears to state the competition now existing between the French and English silk manufacturers is injurious to both parties—though not, nerhans, in equal proportions. The English certainly suffer the most by it. At any rate, we are of opinion that if French silks were prohibited to morrow, the French manufacturer would not be injured by the measure. As it is, the French and English mae nufacturers are set to knock each other down, like two jugilists at a prize fight, for the benefit of the standers by. As a proof of the mischievous effects of this state of things, with regard to the English riband weavers, we have only to state that the poor rates of Coventry have nave only to state that the possage of the act admitting the importation of French goods. The following resolutions, which were passed at a public meeting held last week at Coventry, sufficiently illustrate this lact:-

"That the poor rates in this city have nearly doubled since the passage of the act. They amounted for the year ending the 12th lay of April, 1826, to £11,232 14s. 43d. and for the year ending the 19th day of April last, to £20,314 5s. 63d.

"That the jusyments to the easual poor, (consisting mostly of persons requiring temporary relief for want of employment in the parishes within the city), for the year ending the 12th of April, 1826, amounted to the sum of £2,069 2s, 3d. and for the year ending 19th April last, to £4,087 4s. 10d.

That the poor rates for the parish of Foleshill, in the county of the said city, containing about 7,000 inhabitants, principally employed in the manufacturing of silk ribands, amounted in the year ending the 25th March, 1826, to £1,819 8s. and in the year ending the

25th of March, 1830, to £3,462 18z. 4d.

That the payments to the casual poor in Foleshill, for the year enling the 25th of March, 1826, amounted to £527 6s. 11\frac{1}{2}d. and for the year ending the 25th of March, 1830, to £1,538 2s. 10d."

Here is a practical dinstration of the benefits of "free trade." Il England will aimit American breadstuffs on the payment of a small duty, such as is assessed on our cotton, her great landhottlers and fat nutional friests would be "REFORMED," alies broken down, in less than two years, and there would hardly be enough

less tian two years, and there would havily be enough of tax-naying people left to supply money for the poor rates alone; for these would be yet mightidy increased because of our interference with the agricultural labor of England: and on the other hand, if we almitted freely the cheaper products of British labor in manufactures, (and so generally they now are, because of the wretch edness of the working people), we should not have one dollar to jingle against another in six months, and the hundreds of thousands of persons dependent on manufuctures and the mechanic arts would hardly obtain a sufficiency of bread to keep soul and body together. The cheup price of provisions has only a distant relation to the facts auggested. When industry was prostrate in 1821-22, though bread was "cheap"; it was hard to purchase enough of it, in many parts of the U. States, for

labor was not in demand, and money was wanting wherewith to pay for it. Thousands have miserably died in Ireland because of the lack of food, though notatoes were at less than one-third of a cent per ib. for that third of a cent could not be earned. And it is a strange fact—one indeed of most solemn importance when considering auch subjects, that, when money has been raised in Eng-land to releve the starving population of Ireland, a large part of it has often been disbursed at Liverpool, in the purchase of provisions which had just been received from IRELAND, to liquidate the "balance of traile" which is continually grinding the latter to the bone. and perpetually heaping one privation on another, until the poor laboring classes in Ireland are always in a state of semi-starvation; or directed of those comforts which render life descrable. What would WE think if English charity should be expended in the purchase of American flour at Liverpool, to leed the people of Maryband?-But such is exactly the case in which Ireland is placed by her "free trade" with England-in which also her nobles and wealthy men expend the money which they wring from their tenants and other dependents; every new dram of value creating some new suffering for this unfortunate people. If "cheap" labor is beneficial, how prosperous ought Ireland to be-if "dear" labor is injurious, how great should be the amount of individual suf-fering in New York and Pennsylvania. If slave labor is desirable, how happy must be the people of lower Virginia and South Carolina, - and it saucy and well-fed labor is ruinous, how deplorably conditioned are the in-habitants of the New England states! Pshaw!—we have no patience with that breed of scurvy politicians that would put the free laborers of the United States, the farmers, mechanics and manufacturers, on a level with English paupers or Irish peasants—which, as to sub-sistence, is below that of the slaves which blacken so many parts of our own country.

e shall add a few extracts from late English papers

on this subject.

Mr. Edward Gibbon Wakefield has lately published Mr. Estward Gibbon Wakefield has lately published at London a pamphlet entitled "Swing Unmasked." The following are extracts. It is not easy to believe that the facts set forth exist—but there is no manner of

doubt that they do,

"What is that defective being with calfless is go and "Versa is that detective being with callfess legs and stooping shoulders, weak in body and nind, iner; pu-sallantinous, and stupid, whose premature wrinkles and furtire glance tell of misery and leggeslation? That is an English peasant and pauper, for the words are sy-monymous. It is sire was a pauper, and his mother's milk wanted nourishment. From infancy his food has been bad as well as insufficient; and he now feels the pains of unsatisfied hunger nearly whenever he is awake. But half clothed, and never supplied with more warmth than auffices to cook his seasily meals, cold said wet than sumees to cook his seanly means, cold must be come to him, and stay by him, with the weather. He is married of course; for to this he would have been drivers by the poor laws, even if he had been, as he never was, sufficiently comfortable and prudent to dread the burden of a large family. But, though instinct and the overseer have given him a wife, he has not tasted the highest joys of husband and father. His partner and his little ones being, like himself, often hungry, seldom warm, sometimes sick without aid, and always sorrowful without hope, are greedy, selfish, and vexing; so, to use his own expression, he 'hates the sight of them,' and resorts to his hovel only because a hedge alfords less shelter from the wind and rain. Compelled by parish laws to support his family, which means to join them m consuming an allowance from the parish, he frequently conspires with his wife to get that allowance increased, or prevent its being diminished. This brings begging, trickery, and quarrelling, and ends in settled erait. Though he have the inclination, he wants the courage to become, like more energetic men of his class, a poscher or smuggler on a large scale; but he pilters occasionally, and teaches his children to he and steal. His subdued and slavish manner towards his great neighbors shew that they treat him with suspicion and harshness. Consequently, he at once dreads and bates them; but he will never harm them by violent means. Too degraded to be desperate, he is only tho-roughly deprayed. His miserable career will be short;

rheumatism and asthma are conducting him to the workhouse, where he will breathe his last without one pleasant recollection, and so make room for another wretch,

sant recollection, and so make room for another wretcu, who may live and die in the same way."

The picture irrawn by Mr. Wakefield of the relation in which the rich and the poor stand to each other in England is a most bideous one; but who will say that it

is not a faithful one?

is not a faithful one?
"Is nothing done by the 'nobility, clergy, and gen-try,' to concilinte the affections of the pauper mass, by whose toil all their own wealth is produced? Charity! The charity of the poor laws, which paupers have been taught to consider a right, which operates as a curse to the able bodied and well-disposed, whilst it but just enables the infirm of all ages to linger on in pain and sorrow. Soup! Dog's-ment, the paupers call it. are very ungrateful; but there is a way of relieving a man's necessities which will make him hate you; and it is in this way, generally, that soup is given to the poor. Books, good little books, which teach patience and submission to the powers that be! with which such paupers ansation to the powers had be; with which such paupers as obtain them usually boil their kettles, when not deterned by lear of the reverend donor. Of this gift the design is so plain and offensive, that its effect is contrary to what was intended, just as children, from whom obedience is very strictly exacted, are commonly rebels at heart. What clse? Is nothing clse done by the rural rich to win the love of the rural poor?
"Speaking generally, since all rules have exceptions,

the privileged classes of our rural districts take infinite pains to be abhorred by their poorest neighbors. They enclose commons. They stop toot-paths. They wall in their porks. They set aping-guas and man-traps. They arend on the keeping of high-bred dogs what would support half as many children, and yet persecute a laboring man for owning one friend in his cur. They make rares of wages, elaborately eachigating the mini-mum of food that will keep together the soul and body of a clothlopper. They breed game in profusion for their own anuscement, and having thus rempted a poor man to knock flows a hare for his pot, they send him to the treadmill, or the Antipodes, for that inexpiable of-They build goals, and fill them. new crimes and new punishments for the poor. new crimes and new punishments for me poor. I may meteriere with the marriages of the poor, compelling some, and forbidding others to come together. They shat up prupers in workhouses, separating husband and wife, in pounds by day and wards by night. They has nees poor They superintend ale-houses, deery skitmen in carts. ties, deprecate beer shops, meddle with fairs, and oth-erwise curtail the already narrow amusements of the poor. Even in church, where some of them solemnly preach that all are equal, they sit on cushions, in pews, present that all are equal, they all on custions, in pews, boarded, matted, and sheltered by curtains from the wind and the vulgar gaze, whilst the lower order must put up with a bare bruch on a stone floor, which is good put up with a bare brack on a stone floor, which is good enough for them. Every where they are ostentations in the desplay of wealth and enjoyment, whilst in their intercourse with the poor they are suspicious, quick at taking offence, vindictive when displeased, haughty, overbearing, tyrannical,"

The tollowing is an extract from a letter from Mr. G. Fordham, jun. to the editor of the "London Morning

Forman, jun. to me center of the "London arrange Chronicle," and published in that paper.

"Sir.—The letters in your lively correspondent, (0. P. Q. 'are read with great interest by many of your readers. Prephtul as is the picture which he depended in the surface our own country presents at the present time. In every point of view, the comparison is in force of Feature, The distress in Feature is cheekly confined, 1 suppose, to the memployed in cities and some large magnificture ing towns; but in our own country, the distress extends over the whole surface. The numbers of unemployed and distressed manufacturers in Great Britain and Ireland must be much greater than the number of the same class in France, in comparison with the whole po-pulation. Then we must add to this evil the state of the farming poor, who are still employed on the roads, in gangs of twenty to forty, plotting the destruction of their masters' property by mudnight fires. It there are men in Paris who must support themselves out of a shilling per day, there are many thousands in Ireland who are

obliged to live, (or rather to starve), on two price a day, The comparison must be greatly in favor of France, hecause the causes of distress are much less in that coun try. Compare the debts of the two countries, and the general expenses of carrying on the respective govern-Then look at the comparative costs of established religions. What an immedse difference in this single nem! The clergy of England and Ireland cost the country more than the clergy of nil Christendom besides .-Perhaps you think the comparison might stop here; but that must not be the ease, for, to quote your own words, "Tax-tion in this country is much heavier than is usually thought, immense sums being levied in the country tor local purposes, to which, in other countries, the taxes are assigned." Under most of the governments of the continent, the church, education, the administration of justice, the maintenance of the poor, the police, &c. are panl by the state. For all these objects morning aums are separately paid by the people of England; the county rates alone equalling the whole revenue of many a continental king dom."

It is enough—and these things are true. Such are the fruits of "cheap" labor—such the inevitable progress of a society wherein the people are divided into masters and states, great proprietors or wrethed dependents. The modifie class, that was the glory of England when the phrase "tree born Egishman!" mean something, hos nearly haspipeared; and the cold-blooded aratociats of our own land will so "rade rough-shoul" over our, at present, free and happy working people, a they are asses enough to permit it; and throw up they hast sold hazed for a pury that would send them and their children suppression bod. In the awhili presence of the SUPKEME JUDGE of all timps, let it not be imputed to me, that I wave had any part in such degradation of HS creature man?

ABOMINABLE. We copied into our last an account of a duel near Port Tobacco, in Maryland, in which one of the parties was said to have been kited and the other hally wounded. It seems that there is no manner of truth in the story.

ABOLITION OF SLAVERY. We have received from New York a well written pamphlet on this subject .-The plan of the wrater is the purchase and colonization of two mittons of persons, by the government of the U. States! It so disposed, it is, perhaps, within the means of the national government, and the range of circumstances, to keep the colored population in check; but stances, to keep the colored population in checky but even that would require a brige expenditure of monty— if practicable to colonize and provide for them, as we must need suppose would be tone. But the southern people will not spree to be "tiseed" to pay for what they regard as their own property—and will, indeed, Renerally resist the adoption of any measure which looks to a final excinction of negro slavery in the United States. They love their slaves, and say that their slaves love them. We do not see any reason why those who are not stave-holders abound gress this subject, in separate persons so much exteched to one another—so mutually advantageous—as a ppy and contented. We only inruste, by sofferage or lectings to enter into this quesbrought start, me at work their own way; and the time " 19 Wt n "samething MUST be stone," At that . . . southern gentlemen can find constitutional Sower by which hose of the non-slaveholding states may east, t them no doubt the latter will cheerlolly ile so but until then, we are not for obtrucing our services on those who scormoly reject them, and would wish them to "manage their own concerns in their own way," We shall do the same. They delight in slave workers—we love white and happy and saucy working people. De guatibus non disputandum. But in those states wherein emanop tion and colonization are sincerely desired, let the work go on-as in Maryland for example; and it sannot be complained of by Virginia and the states fire-ther south, that Maryland, or the non slave-holding states, small decidedly throw back any part of their colorad population which they are disposed to hurl from them, an matter on whom the muchiet, that they apprehend to

themselves, may fall! We have enough already of said burthers in hear, for others; and will not consent to receive "foreign" persons of color; to be fed at our capense. It "charity begins at home" with them—so a does with us.

THE CHOLKHA. We have accounts from England to the 14th January. There are no official statemans of the progress of the children; but 66 new cases were reported at Newquale on the 8th and 9th Jan. and some at other places. It would seen that the alarm had rether subsided, and as of the threase was assuming a feal tool character. It has been computed that annextue first appearance of the children fourteen years ago, a has bestroyed firly militious of persons. But that cannot better the substitution of t

"NULLIFICATON!" At Saco, Maine, on Christmas eve, the rev. William Jenkors married Mearrs Theopholis, Redard, Thomas, Titus, Jonathan, Ebenezer and John Hutcheson—to Missee Martha, Etzas, Serven Ann, Mary, Judhk Viginia and Pegg Wells. So serven Wells were "millificated" in one evening! A pre-fixed affair for the parson, unless he worked by the job, and at wholesale prices.

THE RALL ROAD. The business on this road is going on to increase. On Monday last 1,466 bbls. flour, 10 tons pig irou, 66 tunbels of 17e, 300 do, shorts, 29 tons grante and 48 thus wood, reached Baltimore: 98 useum arrived and 40, laden with various merchandise, departed.

MARTLAND. It may be expected, we think, that the legislature of this state, at the present season, will pass a strong law to prevent the introduction of slaves and the ingress of free persons of color, and also making inheral provisions for the colonization and comfort of such of the latter as shall be willing to remove to Africa.

Bartinors. The board of directors of the Cheuspieake and Delaware canal, having refused to suffer the barges attached to the steam-boat line pass, onless 10,000 dollars (the demand for a whole year) was panipasangers now princeed, by land, by way of Frenchtors and Newcastle, as herectoire. They will very soon be conveyed on the rail road. It is well made a question, whether the cound company has not lardicided as charter, by refusing a passage to a boat, (troperly fitted for the canal), on paying the hardful toil.

The rail road is so nearly really that a cer has passed the whole distance, from wharl to wharl. If the weather is good, it will be in use next week.

Dien, at Annapolis, on the 17th inst. John Edelen, eap, a member of the house of delegates from Charles county—one of the most upright and estimable sons of Maryland—intelligent and honorable.

NAME. Some Pennsylvanian at Washington, who, among other things, has complimented the people of his state instead of the completed man, a native of Pennsylvania, as the complete and a native of Pennsylvania, as the complete of the matter of

"Economy." There have been extensive dissentions among the "Harmonists," at Economy, in Pennis Vanhamad 217 persons, makes and lemels, have agned and published a paper whidrawing all authors; from the Mesars. Rapp, as to the management of their concerns, ke. Mr. Frederick R-pp replics, and states that of the squers 55 are minors, and 32 not reprincembers of the society—and that a large majority of the members are satisfied that they, [his father and himself] should continue as heretofore. The controversy has led to the

ivastitution of legal proceedings - those who have withctrawn demanding their share of the property accomulated, and the whole facts will, at due time, be before the public. As the property of the society is exceedingly valuable, it is berilly to be expected that the suits will terminate speedily. There will be causes for the "law's delay," on one side or the other.

DELAWARE. The legislature of this state recently adjourned. Among the acts passed was one probabiling the use of fire arms to free negroes and hee mulattoes. regulating their meetings for public worship and for other purposes.

VIRGINIA .- The bill relative to the removal of the free color of population of that state was possed to a vote of 79 to 41. Its feating features, according to the Retemond Wing, are as follows:-

The full excludes correnn except as to those Free Negroes who remain in the state commany to the law of 1806 (a numerous class). It makes an appropriation of \$35,000 har 1832—and of \$90,000 for 1833, tor the deportains of Free Negroes willing to go, of the class show mentioned who are compelled to go, and of such as may be emincipated, the owners not providing the enesis -to some place beyond the limits of the U. States. left to the discretion of the Central Board, This hourd deft to the discretion of the Gentral Board. This hand is to consist of the Governor, Treasurer, and Auddur, exoficio, who are clothed with the power of appointing agencies at Norbolk, Petersburg or other places.

ALABAMA. Among the acts passed at the late session of the legislature of this state was one relating to "mcendary publications " It requests the governor to open a correspondence with the governors of those states in which such aublications have been or may be usued. for the purpose of procuring their suppression, or at feast of preventing their being sent into the slave-holding feast of preventing their neutron states. It further declares that the relival of any state to make use of the means which it possesses, for the anpuression of such publications, will be regarded by thanin "as evineive of a spirit hostile to that Grendship and good understanding which should characterise auster states, and as minuted to her peace and salety."

NEW ORLEANS. Bernard Marigny has been elected a member of the legislature of Lou suns, from this cit, after an ardent contest, beating Samuel J. Peters 130 votes. Mr. M. is said to be a "Jackson man," and Mr. a friend of Mr. Clay-but the contest [much to bregrested] was more between the American and French population, then political parties; and the latter suceseded.

TEXAS. The introduction of slaves, by emigrants from the United States, in definee of the laws of Mexico. seems to have excited the attention of the governmentbut the coloursts, for the sake of their negroes, talk of resus the community, for the same of their negroes, talk if re-sisting! We have that the settlers will be compelled to obey the laws, or quit the country. The conditions on which they might occupy it were well known before they entered upon it—and, on every account, should be respected.

EUROPE. The leading powers seem to have one com-mon fear of the effects of a general European war, and bence have resorted to all soits of management to preserve an armed peace. Each seems jealous and tear-ful of the other—and no one has confidence in his neighbor, though much coursesy is extended in their relations one with another. A disarming has been repeatedly spoken of-but every thing remains on the war establishment. The latest accounts would show some gathering of the elements of discord. An arment some gathering of the elements of this ord. An arment interference in the questions depending between Holland and Belgium, would now probably lead to important events; and if Don Pedro shall get a footing in Portugal, and Don Ferdinand, of Spain, interfere, is prebable that he will, in behalf of the ilearly beloved Don Miguel, England will probably have something to say about the matter. So much, we think, may be assumed—that the affairs of Europe are very unsettled and lateresting; and England and France are exceedingly ginia" Reporter, calls the rejection of Mr. Van Buren,

liable to internal commotions, at the present time. In the first, the poverty and wretetedness of the people seem nearly to have reached that point at which resistation must been.

TUMBLE IN THE PRENCH CHAMBERS. The late papers contain a report of some exceedingly violent proceedlogs in the French chamber of deputies. of public instruction, having appeared at the tribune to detend a larger vote of money for the civil list than had been proposed by the commission, and having uttered occu proposed by the commission, and faving uttered the sentiment in reply to a deputy,—"Il you banish luxury from the polace of the king, it will soon be banish-ed from the houses of has subjects" the deputies of the extremes of the chamber rose and cried sloud - "Louis Phit p has no subjects." M. M. Caler, Chre, Louise. Labore iere and others exclanned, the king los not subjeets. Order, order! let the minister be called to order! M. Marchel-Those who make kings, are no lunger subjects, but causeus. During five number unt a word was board except personal and outrageous cries against the justiculien. The tomult and disorder continued was in a very previous and intergeous error against the justimities. The trained although the remainder of the string. Although the president night to seen ringing with violence his great bell, yet it could not be heard. No one paid any atten-tion to the president, and the most tunnultuous and violent observations were made by all parties, one against the other, in various parts of the chamber. At half past six the sitting closed in the midst of noise, menace. and againtion.

This qualter assumed so much importance that 164 members of the chamber have signed a formal protest session the use of the word "subjects," as applicable to the people of France; and even Lafayette, whose health permitted his attendance in the chamber, requested that his colleagues would receive his adhesion to their protest.

JAMAICA. We have awind details of the late proceedings of the slaves in this offend. One hundred and fifty extents had been laid waste by fire—some of them the most extensive in the island—and the whole damage, from this cause, is put down at fifteen millions of dothers.

More than two thousand slaves had been killed or executed-bung ap by scores, and without much ceremoeconic among proy scores, and without much eeremony, or shot down, at sight; and a great number lad been thogged a In militaria. The number of white persons keled, is not stated. At one time it is said that thirty thousand negrees were embodied, some of them armed. They had been dispersed, but many were thought to have resired to the mountains. The governor usued a proclamation denousing the punishment of death on all who dal not surrouter before the 10th of February, and orders were issued against the publication of the confessions of any of the "rebels, relative to the conspinacy." The "Maroons," appear to have rendered most important service to the white population, in this great emer-gency. We thought that all of this class of persons had been expelled by one of the grassest vallations of the liath of treaties which had marks a modern times; and yet the remnant combats on the see of those who so much wronged their fathers and the colored

A Kuigston paper of Jan. 27, our latest date, sas s-"It is evident that the neck of the rebeltion is broken but whether the measures which have been purposed will induce the rebels who have taken shelt-r in the

A le ter from the head quarters of mej. sen. Hilton. dated Jan. 24, 8ay 8--

"We are here in the midst of but it estates, but you must not suppose that the whole country looks bl and burnt. With the exception of the works, the whole country is green; lew of the canes have been burns, and those which have, still show green tops. "

Martial law would be continued until late in the preonce decisive, and justice summary, as well as punish-ment severe, be not pursued, the country will be ruined long ere the last head of the hydra is cut off. It the bu-smess be not done immediately, we shall be undone,"

QUEER THINGS. The editor of the Danville, "Vir-

"unbrecedented and factious!" One similar case appeared in the administration of Mr. Jefferson, and a secoul in that of Mr. Madison, and perhaps there were others, and a "factious" proceeding was not then on-The senators thought, as they had a right to think, that the presidents had not selected proper men as nonsters to foreign courts-as they think now.

At the late "Jackson Convention" held at Columbus. Ohio, a "whole" blockhead offered the following reso-Onto, a whole blockhed olicret the following resolution—but somehody halphened to recollect that the present president had, in his own person, established the precedent of the very proceeding which the principle of this resolution was wisely designed to condemn -

and so it was not agreed to!
"Resolved, That we consider a candidate for the presidency of the United States opposed to the incumb of that station, disqualified for the proper discharge of the duty of a senator in congress, and inexpable of per-forming justly the constitutional functions of an adviser and executive comsellor."

That convention, however, passed the following reso-Intion-which exactly chimes with the one offered by Mr. Clay to the senste, and which has been so ably discussed by himself and others-

"Resolved, That we approve of reducing the revenue of the general government to a conformity with our expenditures. But by such an adjustment as will operate to the protection of our domestic industry."

A late number of the "Richmond Enquirer" contains a long essay signed, "A voice from the country." a long casmy signed, "A voice from the country." It speaks of "the prostration of the dignity and integrity of the senate of the United States, by the coalition of Clay, Calhoun, and Webster—who, with their united forces, have accomplished one of the darkest and foulest decils that ever disgraced the annals of any country."

"That this triumvirate have leagued together to aim a blow at the president, will not be demed; and at the same time, to gratify their malignity and hatred towards a man-to borrow an expression from a great writer-the daily beauty of whose character makes them ugly and whose magnanimous conduct forms a happy and striking contrast to those desperate in-

triguers."
"The ground which this party in the senate took for rejecting Van Buren's nomination, is a deliberate insult to the people. That an administration, of which, you might say Clay was at the head, had lost entirely the ed from their service in consequence of the mismanavement of their affairs-that in order to secure, by negotution with a loreign power, an important interest of the nation, Messrs, Clay and Webster should think that it was improper and highly dishonorable that any allusion in the instructions given to Mr. McLane, should be made to this defunct-this puritan and black-legged administration, so justly termed by Mr. Randolph-upon which the people had passed their verifier, and upon which they had stamped the seal of their eternal disgust and disapprobation."

"Let me now ask, my lellow-citizens, where were the senators trom Virginia when this foul plot was hatching and brought to consummation in the senate? Her voice was dumb-silent us the grave. She should have been aures should have proclaimed this dark deed, and held R up to the execution of the people. That the senate etamber should have been made the seene of such an inferious cabul-a place hitherta deemed sacred and inviolable from all political intrigue, is mortifying and

dingraceful."

D

"Mr. Clay was aware of the keen and canine appetite with which Mr. Calhoun was prepared to devour his victim, and therefore insuliously contrived to place the banquet before him. With what eager delight he seized upon it, we have already seen,"

There is a great deal more of such matter-but these brief extracts are sufficient,

The "official" of New York, the "Courier and Enquirer," whose senior editor holds a profitable office, speaks of the senate in the following terms.

"If combinations and coalitions, not to say consessacits, in the senate, to abuse a high trust—shall be made manifest, the people in their sovereignty must interfere and amend the constitution for their own safety. The period is not, in our minimum, remote, when the constitution will undergo revision on the following points:-"Ist. An apportionment of senators according to po-

bulation-their election by the people, and for a shorter period.

"2d. Limiting their powers to purposes wholly and exclusively legislative."

This is going the "entire swine."

Sometime ago-just before the rejection of Mr. Van Buren, the "Richmond Enquirer" said-

"We are not aware of there being a single man who is now importuning him to offer or accept [of the no minution for the vice presidency. For ourselves, we firmly believe that his nomination is not the object of the Bultimore convention. We have disclaimed every the first to desire no such convention to be called.

The "Albany Argus" has a foul quarrel with the "New York Courier & Enquirer." The editors have called one another almost every thing but honest men—though on some points they harmonize. The former quotes the

some points they harmonize. The former quotes the latter, when speaking of the president, as follows:

"We know the general—his merits and well carned reputation. We love him for his kindness to ourselves we honor him for the honor he has added to his country -we rejoice at his success, for it has been sought an obtained by enlarging the happiness and prosperity of the union-we will support him in the coming conflict, the union—we will support aim in the country control in the model of t popular career, and raising their voices in clamorous praise, are found scattered over this fair state, and reaping a golden harvest, while their profligacy is undis-It is time that the people should awake from their lethargy. We loose nothing by unmasking and thriving from our ranks those who proclaim themselves advocates of general Jackson, for the money which is to be made." The itatics are given as we find them in the "Argus. "

The "New Hampshire Patriot" thus speaks of the

"Courier & Enquirer:"

"There is searcely a doubt remaining on our minds, that the New York Courier & Enquirer is owned, soul and body, by the United States bank, and that before long it will be arrayed in open hostility to the administration and general Jackson, either by a nominal transfer to other proprietors, or by a bolt outright of its editors. Then there will be another great cry raised of 're-action.'
Duff Green and Stephen Simpson, we fear, are not the only editors who have supported the cause of democracy from motives exclusively selfish."

The New Hampshire Patriot says that seareely any less liveling is manifested among the democracy of that state, on the occasion of the rejection of Mr. Van Buren, "than was manifested on the rejection by the same senate of the honorable Isaac Hill."

The "Globe" publishes the following as a letter writ-ten in Prince William county, Va. Atter assailing the vice president for forgetting "what was due to the administration of Andrew Jackson," the writer says-"As to the Messrs. Miller, Chambers, Poindexter, Moore, Foot, Freinghuysen, and all THE GANG of liegemen and deserters-they deserve pity or punishment, according to the strength of their capacity to understand right from wrong. No doubt many thought that whatever Mr. Clay and Mr. Calhoun done must be right—and they merit pity, while others, with understanding enough to know what was right, were worthless enough to do what was wrong, 'Verily, verily, they shall have their reward.'

## BRIEF NOTICES.

A panther, nine feet long, from the nose to the tail, was lately shot in the Alleghany mountains, near Schellsburg, Somerset county, Pennsylvania. - Animals of this kind were numerous in these mountains fifty years agobut an "armed people" has rendered them scarce. Pyrennees would soon be cleared of wolves, it such a population as we have inhabited the parts adjacent, for they have nearly cleared our own mountains, already.

he importance of the establishment of the American colony at Liberta appears to be justly appreciated by some of the British writers. The Westminster (London) Review says, in reference to it:-"The Americans are auccessfully planting free negroes on the coast of Atrica; a greater event possibly, in its consequences, than any that has occurred since Columbus set sail for the new world,"

The culture of the plant from which onium is derived has lately been introduced into Egypt, where it has perfeetly anececifed. It has been productive the past year of a profit of more than three millions of Iranes. Egyptian opium is now in greater demand than that from

Levant and Asia Minor.

We lorget to mention that Anderson, the English singer, was announced to perform at the Adelphi theatre, in Baltimore, on a certain night last week-a most humble apology having been made for him in the papers; but before he appeared on the stage, the house was attacked from without-the green room invaded, the windows broken, and a good deal of other damage done, and the design to introduce him abandoned. The man is made too important-but it now seems settled, that his "occupation's gone" in the United States.

The first volume of the new edition of Marshall's life of Washington-written over by the celebrated judge, its author,—has just been completed by the publisher at Philadelphia. The National Gazette states that the portrait of Washington, engraved for this work, by Mr. Longacre, is one of the finest specimens of American advancement in the art. In Europe, it would be deemed worthy of the reputation of any engraver of London or

Capt. Ross, who sailed from England three years ago to discover a North West passage, has not been heard of since. It is feared that the ship's company have perished.

The theatre at Providence, R. I. has been sold to be

converted into a place of worship.

It is stated that a navigation round or through the famous raft in the Rest river will soon be made, in purnamous rais in the act of congress appropriating money for the purpose; the work being much advanced under charge of lieutenant Sewall, of the engineers.

A large party of very respectable gentlemen, of New York, lately gave a public dinner to general Santander, late vice president of Colombia, in testimony of their

respect for his public and private character. A man of the name of Sovereign appears to have murdered his wife and six children, in London district, Upper Canada. The description is horrible. Sovereign has since confessed the fact, and starved himsell to death!

The ship Dee, of Liverpool, having 300 casks of gunpowder on board, was struck with lightning and blown All the ship's company, 40 in number, were lost.

up. All the ship's company, so in manager, are the The brig Java, of Salem, from Batavia, was recently wrecked on our coast during a snow storm, and went to pieces. She had 600,000 lbs. of coffee, and 14,000 lbs. of nutmers or board.

Protessor Ifare, of Philadelphia, was lately badly wounded by the explosion of a small bottle of fulminating silver, containing about two ounces. It was at first feared that his haud would have to be amputated-two persons, at the distance of ten feet were knocked down, and two other persons wounded.

#### TWENTY-SECOND CONGRESS-INSESSION.

SENATE. February 16. Mr. Troup presented the memorial of the corporation of Savannali, praying for the erection of barracks in that city.

Mr. Foot reported a bill relative to pensions-read

and ordered to a second resding.

Mr. Kane moved a resolution inquiring into the proriety of making an appropriation for the improvement of the navigation of the Kaskaskia river in Illinois.

Mr. Foot submitted the following resolutions: Mr., Fost submitted the following resolutions: Resolved, That the committee on mark affairs be instructed to inquire into the expediency of regulating and fixing, by law, the compensation of the officers of the narry, with a riwe to regulate the compensation of the officers of the army and narry, agreeably to their relative rank in the service.

Resolved, That the committee on military affairs be instructed to imprire ion the expediency of regulating and fixing, by law, the compensation of the army, with a view to equalize the compensation of officers of the narry and army in a peace establishment.

Mr. Holmes' resolutions calling on the secretary of the treasury for information as to the delay in the pub-

lication of the statements of our foreign commerce, and of his not having complied with the call of the senate for information with respect to the British colonial traile, were taken up.

Mr. Forsyth opposed the resolutions, and Mr. Web-

ster and Mr. Holmes replied to him.

Mr. Farsyth moved to lay the first resolution on the table, which motion was decided in the negative, as fol-

10ws; YASS-Mesuri, Benion, Buckner, Dallas, Dickerson, Dudler, Ellis, Forsyth, Grundy, Hill, Kaste, King, Mangom, Marey, Foisedester, Robinson, Smith, Troup, White, and Wilkins-19. NAYS-Mesur, Bell, Chambers, Ewing, Foot, Frehinghupen, Hendricks, Holmes, Miller, Moore, Premis, Robbins, Huggles, Seymour, Sistbee, Sprague, Tazewell, Tomlinson, Waggaman, and Webtser-19.

The year and nays being equally divided, the chair

decided the question in the negative.

The question was then taken on laying the second resolution on the table, and it was decided in the affirmative by the following vote:

ute or the following rote:

"KA 3—Mexas: Benton, Bushner, Chamber, Dalla, Dicker,
"KA 3—Mexas: Benton, Benton, Freinghorea, Greinghorea, Greinghorea, Greinghorea, Greinghorea, Greinghorea, Greinghorea, Greinghorea, Greinghorea, Greinia, Holinia, Robinson, Sibber, Smith, Tipton, Tomhuon, Troup, Weber, White, and Wilkins-30.

"NAYS—Mexas: Bell, Holleng, Ruggles, Seymour, and Taze-Nay-Greinghorea, Greinghorea, Greinghore

well-5.

After some further debate, by Messrs. Tazewell, Chumbers, Webster and Holmes in favor of the first resolution, and Mr. Forsyth, in opposition, the first resolution was adopted.

Mr. Clay's resolution relative to the tariff was then taken up, when Mr. Grundy, in a speech of two hours, concluded his remarks in opposition to the resolution.

Mr. Ewing having expressed a desire of addressing the senate, on to-morrow, on the subject, moved an adjournment. The senate then adjourned.

February 17. Mr. White, presented the pelition of a number of the citizens of Jefferson county, Tennessee, in favor of re-chartering the bank of the U. States. The resolutions submitted by Mr. Fool, yeslerday, relative to the pay of the officers of the army and navy, were amended by adding the marine corps, and then adopted.

The apportionment bill from the house of representatives was then taken up, and read the second time, and referred, at the instance of Mr. Webster, to a select committee.

Mr. Clay's resolution relative to the tariff was then

taken up, when
Mr. Ewing addressed the senate two hours in favor of without concluding, when the senate adjourned to Monday.

February 20. Mr. Silebee presented the netitions of the banks of Newburyport, Massachusetts, priving that the charter of the bank of the United States 140) bridge

newed. Referred,
Mr. Moore presented a similar memorial from the

bank of Alabama. Referred.

On motion of Mr. Ellis, the sense proceeded to the consideration of executive business; and when, after the lapse of an hour, the doors were opened,

The special order of the day, Mr. Clay's resolution, relative to the tariff, together with Mr. Hayne's amend-ment, was taken up; and Mr. Eming resumed and conchalled his speech in lavor of the resolution.

Mr. Miller expressed a desire to address the senate on the subject to-morrow.

The appropriation bill for fortifications was taken up, read twice, and referred to the committee on finance. The bill making appropriations for revolutionary and

other pensioners for the year 1832; and the bill making appropriations for the naval service for 1832, were respectively taken up, read twice, and referred to the same committee.

Also, the bill from the house, for the payment of arrearages of the naval service charged on the contingent

funil, prior to Jamary, 1852.

The vice president communicated a letter from the secretary of the treasury, in reply to Mr. Holmes' resolution, calling for the reasons of the delay in the transmission of the annual commercial statements, secretary recommends that collectors, hereafter, be the rected, under proper penalties, to make their returns monthly instead of quarterly. ]

The bill for the adjustment of the claims of South Carolina, was twice read and referred.

The senate then adjourned.

February 21. The vice president presented the me-moral of Joseph Nowice, late register of the treasury, praying that his claim against the United States, ascered by judicial decision, may be paid. Referred.

Mr. Juller presented the memorial of the citizens of Camdon, S. Carolina, praying for an examination into the causes of the bulare of the mail between that place and the city of Washington, and also for the reduction of the postage on letters. Referred

Mr. Bell, of N. H. and Mr. Ewing, of Ohio, presented somery memorials from the banks in their respective states, praying for the renewal of the charter of

e Bank of the United States.

Mr. Webster, from the select committee, reported the bill for the apportionment of representatives, without amendment.

Mr. Smith, from the committee of finance, reported the several appropriation bills referred to that committee yesterday, we haut amendments, which were severally read, passed and returned to the other house.

The vice president communicated a report from the secretary of war, shewing the number of licenses granted to traile with the Indians,

The senate resumed the consideration of Mr. Clay's

resolution relative to the tariff, &c.

Mr. Mi ler, ot S. C. spoke two hours in support of Mr. Hayne's antendment; when he gave way for a mo-February 23. Several memorials w

Several memorials were February 23. Several memorials were presented from the states of N. Hampshire, Ohio, and Kentucky,

favorable to the bank of the United States. The bill for the adjustment of the claims of South

Carolina, was reported without amendment. Mr. Benton reported a bul to repeal so much of the laws relative to brevet rank, as authorise the president to conter that rank on officers who may have served

Mr. Holmes submitted a resolution inquiring into the propriety of providing by law for a more permanent

tenure of office for judges of territories or for a dilderent mode of appointment. Several bills for the relief of private individuals were

Mr. Miller concluded his speech on Mr. Clay's resolution—and was followed by Mr. Dallas—when the senate ad ownered.

ROUSE OF REPRESENTATIVES.

Friday, Pro. 17. Mr. Irwin reported a bill to aid in the edite ction or draf and dumb persons.

Sever I bals and reports on private claims were re-

reduction is dol.

Mr. Brunch reported a bill for the regulation of the pavy and pr . fee, and navy hospital funds-twice read and complete d.

ir. A clas reported a resolution for the reference, to the committee on loreign affairs, of that part of the president's message to the last congress relative to the contingent expenses of fureign intercourse. Mr. Blair reported a bill to construct a road from

Portsmouth Oino, to a point south of the Linden mountams in North Carolina -- referred to the committee of the whole.

Mr Juvis reported a bill making appropriations for the public buildings.

The resolution moved some days since relative to the painting of a full length likeness of Washington was taken up, and, after an animated debate, adopted.

The house then proceeded to the orders of the day, and took up the engrossed appropriation bills, That for the naval service having been read a third

time, and the question being on its passage,

Mr. Pearce, of Rhode Island, moved is re-commitment, with instructions to strike out the appropriation of seventy-two thousand dollars for the navy yard at Bronklyn. He supported his motion in a speech of length and aum tion. Mr. McDuffe opposed his motion as flid Mesers. Ferplanck, Cambreleng, H hite and H. Iman. Mr. Burger supported it in a speech of much The bill was finally passed. power.

The last for arrearages in the naval service, and the bill for fortifications, were then severally taken up and

The house then adjourned,

Saturday, Feb. 18. Mr. Drayton reported a bill for the reliet of certain officers whose property was de-stroyed at fort Delaware-twice real soil committed.

Mr. Watmurgh moved a resolution minimum into the propriety of in king an appropriation for the constitues tran of piers in the Delaware river, at the mouth of the Chesap ake and Delaware emal.

The house proceeded to the consideration of the following result ion, reported by Mr. Jurus, from the

commutee on the public huddings, on the 14th inst. committee in the pointe amongs, on the test make. Readed, That he precident of the United States be authorized and the property of the property of the property of the marche a full length prediction statue of Washington, as placed in the center of the Rottondo of the expirite; the head to be a copy of Houston's Washington, fin the capitod at Richmond and the accessives to be if it is the judgment of the artist. After a desultary debate, the resolution was adopted by a vote of ayes 114, nays 50,

The house then took up the bill for the relief of Some san Decatur -- A debate ensued, but before any decision was had, the house adjourned.

Monday, Feb. 20. Mr. McKay, of N. C. appeared, was quadrical and trok his seat.

S. veral memorials from different parts of the union favorable to the renewal of the charter of the Bunk of the United States, were presented and referred.

Mr. Drayton, from the committee on military affairs, reported the bill to authorize the secretary of war to relinquish the title of the United States to the sile of fort Gansevoort, in the harbor of New York, which bdi was read a first and second time, and committed.

Mr. Cambreleng made the following reports

"The committee of commerce, to whom was referred the petition of Moses Smith, has examined his improvement for adjusting the polarity of the necille in the marmer's compass. Though simple in its character, they have no doubt of its great utility to marmers, and that the discovery is worthy the patromge of the navy department."

The report was read and concurred in.

Mr. Thomas, of Louismas, in fulfilment of one of the items contained in the report of the joint committee, spinointed to make arrangements for the celebration of the centennial birth-day of George Washington, moved the following resolution:

the following resitution:
Resolved by the senate and house of representatives, That, in respect to the centimist birth day of George Washington, the two houses will adjourn from the 21st to the 23a of the present o home; with an open from the rest to the sound the presentable, deers of the two houses be receively authorized to adjourn them accordingly. Agreed to, Mr. Howard's motion for a reconsideration of the month; and that the

vote ordering the printing of certain documents on the subjects of exnals and rail rouls, came up for consideration; and, on motion of Mr. Mercer, was so amended as to include the printing of that part of a document, shewing the relative utility and cost of rail roads and causis, and cert-in other patts of said document, to be selected by the committee on roads and canals. The resolution, as amended, passed.

The bill, in addition to the act granting relief to certam insolvent debtors of the United States, eame up for consideration, and, after discussion, was postponed unid to-morrow. The house adjourned.

Tuesday, Feb. 2t. Mr. B ion reported a bill to graplante the price of public lands-twice read and commarked.

Mr. Irwin presented the memorial of the inhabitants of Zanesville, Ohio, in favor of the renewal of the char-ter of the bank of the United States-referred.

Mr. Wickliffe reported a bill making provision for the sale of the public granuls in the cities of Pensacuta and St. Augustine, and to reserve certain lots and build-

ings for public purposes.

The spenker presented a communication from Michael Noncse, praying a subscription on the part of congress to a fac simile cibtion of the accounts of general W 100 ron during the resultitionary war. [General Washington received no compensation for his services infor than his actual expenses - and these accounts, it appears, were kept in his own hand writing]

Mr. E. Everett's resolution relative to the Chickasaw treaty came up incremsideration, and was amended so

as to read as follows:

no to read at initions; Resolved, That the committee on one public lands be instructed to funquire to whom, and one out randitions, the tract of land reserved by the other arrival feet feet with the Chicksaw tribe of Indiana of October 19 of the same three failing of the conditions, the reverted to the White same three failing of the conditions, has reverted to the civited States in the failure of the conditions, of the res remain. While rea say clamps than been made, or attempted to se made, in the lease aforeasid, inconnictent with the conditions and object with the conditions and object with the conditions and object with the water effects and change was made, or attempted to be made: By whom the tract aforeasid is now occupied, pointwisted, or claimed: What was its reputed value in 1816, and what to its value, as far as the same can be averained; with power to a ind for persons and papers, and with a two to report what measures, (it any) it is proper for this house to adopt a the premier.

A great deal of desultory discussion followed, and many questions were started and decaded—one between the speaker and Mr. Wickliffe, on a point of order, in which the hummer gave way. The previous question was called for and not sustained, and motions to postpone, &c. lost. At last, the previous question was again moved and carried-and the year and mays on the resolution

being ordered, they stood thus-

being ordered, they atool Buss—
YEAS—Menra Adom, C. Alian, Allion, Appleton, Archer,
Arnastrong, Bakocak, Banka, Noyes Barber, John S. Barbour, Barnedt, Barrison, Isaac C. Baris, Branch, tinger, Backer, Busner, Busser,
Burger, Caboon, Crangle, S. Branch, Burger, Backer, Busner,
Burger, Caboon, Crangle, Crighton, Daniel, Davenpert, John Davis,
Deraburth, Denny, Dewart Divkon, Doddrege, Deryton, Danien,
Elisworth, Gro. Evan, J. Evann, Edw. Everest, F. Ider, F. Gregorid,
Ford, Gremuch, Gofflin, Hestier, Hodger, Burson, Hoghe, Kreddi,
Remuch, Adam King, Letther, Marshall, Maswell, McDuffle,
Rey, McKernan, Silligan, Newan, Parce, Poulieton, Pitther,
Potti, Randolph, Roos, Rouell, Win, B. Shepard, Smith, Saulard,
Saubert, Storik, Leplan, Cam, Wilkin, Wester, Ekish Mint

Nay, Nexerman, Sungan, Aswinn, Traffer, Frinneton, 2004, Pott, Randolph, Roue, Russell, Win, B. Shepad, Smith, Southard, Spainery, Storrs, Iraylor, Fin William, Wheeler, Elsha White, William, Storress, Stabe, William, Storress, Stabe, William, Stabe, Stabe, Stabe, William, Sand, Fallar, John Rusr, Hones, Bouldin, John Brudhead, John C. Brudhead, Cambrid in, Carson, Chinn, Clay, Cisyon, Comme, Corig, John Rusr, Hones, Bouldin, John Brudhead, John C. Brudhead, Cambrid in, Stabe, St

So the house agreed to the resolution, and the unjury was referred to the committee on the public lands, with

power to send for persons and papers.

The house then siljourned.

Thursday, P.b. 23. Mr. Branch moved certain rey department for informaolutions calling upon the tion relative to the live oak lands belonging to the United States in Plurida.

Mr. Clayton offered, by leave, the following resolu-

Resired. That a select committee be [appointed to read for processing the shank of the U. States, with power to send for persons and papers, and to report the result of their enquires to this house.

Mr. H. King submitted a resolution inquiring into the mode of appointing lieutenants of the usvy to vessels of war, &cc.

The bill defining the qualifications of voters in the ter ritory of Ackansas, was read a third time and passed.

The speaker laid before the house communications from the war department, showing the claims of Connecticut for military services; the number of licenses granted to traile with the Indians, and two other reports on the claims of certain individuals.

The bill granting patents to certain aliens, was read a second time, and ordered to be engrossed for a third property in as high a degree. reading to-morrow.

The house then took up the appropriation bills for the support of government, and amended the same, and then adjourned.

FINE WOOLLED SHEEP.

Mr. Niles.-When the wool-growing branch of American industry has become of such great importance to several sections of the unmi-and when every experiment which has been judiciously made, demonstrates that it would prove equalty so to the central and westerly parts of the numble states, and to Ohio, limbana and Himnis, nwing to the small expense of transporting wood emphared with the value of the articlet which remarks, I think, will equally apply to the westerly parts of Virginia and North Carolina, and the easterly parts of Kennicky and Tennessee-duty com-pels me to reply to Mr. Tallmange's letter which appeared in No. 1160 of your very useful and ably conflucted Register, lest his observations may prove tletrimental to the extension of the breed of that useful animal. I have been an attentive breeder of Merino sheep for twenty-two years, and six years of Saxonyand my own experience, as well as that of my neighbors, has proved, that the Spanish merino has a more vigorous constitution, is a harder animal, and much less liable to discusses, than is the Saxony. As the first less liable to dim ases, than is the Saxony. fine wondled sheen were introduced into Saxony from Sp in in 1765, this assertion may appear somewhat extra-ordinary, but Mr. Tallmadge admits the fact; although, so far as my observation extends, the cause he assigns for it is not apported by experience. In 1826, a greater number of S xuny sheep were unported than I believe were belare, or have been since, all put tagether. cargoes were sold at Brighton, in May of that year, containing mearly 500, which I closely examined, and think there were not twenty among them of any one flock; which was readly determined by the ear marks. I surchased fifty-four-four of which only were from the same flock. I put 8 bucks out of those to 300 merino ewes; and the progeny was more leeble than I had ever witnessed from merino bucks. I d.d not raise more than 3 lambs from 5 ewes, for two successive years, and, in putting full blooded Saxony bucks to the ewes thus erossed, I have not raised more than two lambs to five ewes. I have been still more unsuccessful in raising lambs from the full blood Sexony ewes and bucks, although they have been rather better kept than my other sheep. From my full blooded nierno stock my other sheep. From my full blooded nierno stock my meresse was commonly 9 lambs to 10 ewes, and never less than 4 lambs to 5 ewes; and those mermo bucks had slways been selected for fineness and weight of fleece and shape, from my own flock. A more distant cross could not have been made than between the Saxony and merino-and yet the same ewes which commonly raised nine lambs from ten ewes, and I believe never less than lour lambs from five ewes when put to merino bucks of the same stock, only raised three lambs from five ewes when crossed with the imported Saxonies. Hence it is evident that the lesser increase, on the part of the Saxony breed, must be attributable to some other cause than breeding "in and in." The form of the sheep alone will satisfy an experience il agriculturist of the true cause. They are long legged, thin quartered, flat sided, narrow loined not sufficiently deep chested, and long necked. All domestic animals of this shape have feeble constitutions. But it may be asked, how does it happen that those sheep which are descended from the Spanish. The most probable are so interior in form to them? solution of the question is, that the persons who were sent by the elector of Saxony into Spain to select, were not aware of a fact known to every attentive breeder, that individuals of the some flock which have the most feeble constitutions generally, have the finest and lightest flecees; and as fineness was their principal objeet, they selected the facest woolled sheep, without reference to form of carcass or weight of fleece. In this they have succeeded-for the Saxony wool, is certainly finer than the Spanish; but the latter will, sleep for shrep, at least, yield one third more in. weight of wool, and it possesses the felting or tulling A WOOL GROWER,

FRAUDS ON THE REVENUE.

U. States' district court, N. York. Refore judge Betts. The United States, vs. six cases woulden cloths, Nos. 179 to 184, marked F. Joseph Roberts, claimant. This was an action brought to establish the fortesture of the cloths, on the ground that they were invoiced below their real value with the intention of detrauding the

United States' revenue.

On behalf of the Univel States, it was shown that the goods were brought to this port from Liverpool in the ship Napoleon last February. The goods were invoiced at various prices, from 52.94. to 63.84, per yard. The costom house appraisers valued them at 22 1-5 per cent. above that rate—an amount which brought them within the \$2.50 minimum. Subsequently the goods were appraised by two nerechants, closes in the manner directed by law, and they also estimated their value far above the invoice, but yet exempting one piece of cloth from the \$2.50 min. According to the avoice the duty would amount to \$53.815 cents, while, according to the valuation baid by the nerelunts who made the second appraisement, the duty amounted to \$2.148.90, making a difference to the revenue of \$1.200.51.

Mr. Ernstus Ellsworth, one of the gentlemen who made the second appraisement, textified that clott costing in England about 6s. 8d. is worth in this market about 25.75, and several witnesses textified that they saw the goods, in question at Mr. Hone's auction room, where they were sent by the marisal for sale, and they believed the cloths worth from \$3.25 to \$4.25 per yard. The bond which the clalimant filed in corrt, binding himself, in the event of condemnation, to pay a sum above the amount of the apprissement with the duties, was

also read in evidence.

The claimant did not give in any testimony.

From the Baltimore Republican.

At the late December session of the district court of the United States for the district of Maryland, before his honor judge Glenn, came on trial, on an information—

United States vs. Seven bales of merchandise. Jabez Stead, claimant.

This series is the control of the co

The goods, not having been taken on stipulation, were add by agreement, at auction—and the gross sales of the three bales, overvalued, amounted to \$5,105 72, and also goods and the four bales, undervaised, amounted \$5,216 05 producing a loss on the three first, which were overvalued, and a great profit on the lour last, lowering reference to the invuice. The overvaluation was intended, probably, in part to make the whole invoice hear a fair proportion to the actual value of the goods; but, this fly, to procure a larger advance, from the consquees.

The jury, without leaving the box, returned a verifict

BANK OF THE UNITED STATES.

We find the subjoined letter in the New York Courier and Enquirer on Friday last. It was written many months ago, and intended to remain, as it is marked, private; a copy of it was sent to Washington not long sance, and probably obtained there for publication at New York. It serves to retute the charge which has

been preferred against the president and directors of the Bank of the United States of intertering in party politics; and to exemptly the plan of tutal abstinence, which has been jursued by that institution.

[Nat. Gaz.

(PRIVATE )
Bank of the United States, Sept. 27, 1830.

Think by the Child States, Sept. 2, 1850.

Dear art: I have recently received a pamphiet entitied "Proceedings and the Recolations and Address
obspleed by the State Rights party in Charleston," which
contains the Inflowing passages: "We had arrayed
here state of Source or the prestocity throat back,
who was among the next realists in the form back,
who was among the next realists in the form back,
who was among the next realists in the form back,
who was among the next realists in the form back,
who was among the next realists in the form back,
who was among the next realists
and in the case of each
war, though and revolution. The president of the boad
which presides were this givent few and the head
which presides were this givent few and initiation was
near superintending with an unxious strong; the pulle
at the election." And again: "But, if Char-ston be
federal jointiesty, ension officers and officers of the
federal jointiesty, ension officers and officers of the
Clusted States' bank, we know," &c. And further:
"All the power of the custom house, and of the bank
of the United States, all the power of the federal judicinty, and even to a certain extent, of the bank of our
own state, may be arrayed against as."

However unwilling to interpret very literally, expresions provoked by the ardor of political controversy, there is yet in these extracts a direct assertion of facts, which, unless the highly respectable gentlemen who make it are entirely misinformed, is calculated to excite extreme regret. In the administration of the bank of the United States, no principle is more lundamental than its total abstinence from politics. Its uniform object has been to devote itself exclusively to its own concerns, leaving public affairs to the public conteils; to belong country, not to any section of it; to be true to every administration of the government, yet subservicut to none; and, while composed of lellow-citizens of all parties, to be wholly unconnected with any. You know that during the many years in which I have enjoyed the pleasure of your correspondence, I have never made a single inquiry into the political opinious of any individual attached to the branch. I am at this moment equally ignorant and indifferent, and my only anxiety is, that they should so exercise their own rights as not to violate those of the institution. Undoubtedly, the officers of the bank are still curzens, retaining all their provileges of free thought and free action, nor would the directors presume to control the notitical opinions of the bumblest individual in their service. Yet it is not an unreasonable expectation that they who voluntarily engage in the sential policy, and cautionsly abstain from any conduct which may bring upon it undeserved adams. Now, there is nuthing more adapted to offend and estrange the community than an active and ostensible participation in popular elections by the officers of the bank. they are in the right or in the wrong, whether the occasion be great or small, whether they succeed or fail, are matters of not the slightest consequence. All parties think themselves slways right. To all parties all con-tests seem important; and all, if they do not succeed, are sure they ought to succeed; so that, whether victorious or deleated, each party retains a feeling against its pronument adversaries, which it inevitably transfers to

The board of directors are therefore extremely unwiting that the officers of the bank should be zealous or compicuous at elections, and the reproach thus publicly vouched is of a character to exist great sensitivity. That feeling I trust you will be able to remove or allay, so as to relace the institution from the imputation of political interference, and I therefore take the earliest operational of inviting you to turnsh me with the meant of portronary of inviting you to turnsh me with the meant of picture of the political interference, and I therefore the board in a satisfactory light. This will be very exceptable to them, and particularly gratifying to yours, with great respect.

N. BIDDLE, president.

Joseph Johnston, esq.

President of the office of the bank of the United States, Charleston, South Carolina. A PROCLAMATION

By the president of the United States. Whereas a treaty of commerce and navigation between

the United States of America and the Ottoman porte, was concluded and signed at Constantmonde by the respective plenipotentiaries of the two nowers, on the seventh day of May, in the year of our Lord one thousand eight hundred and thurty, and the said treaty was this ratified, by the president, on the part of the said United States, on the second day of February, in the year of nur Lord one thousand eight hundred and thirty-one, in pursuance of the advice and consent of the senate, as signified by their resolution of the first day of that month; and whereas the ratification by the president, of the said treaty in the Turkish language, and in a translation thereof into the English, annexed thereto, was exchanged at Constantinople, on the fifth day of October, 1831, by David Porter, the charge d'affors of the United States near the sublime porte, and Nedjab Effendi, Reis Effendi of the porte, for the ratification of the sultan: which convention, as ratified by the president, in the English veraion, ia, word for word, as follows:

The object of this firm instrument, and the motive of

this writing well drawn up, is, that-

No treaty or diplomatic and official convention, having heretofore existed, between the sublime porte, of perpetual duration, and the United States of America; at this time, in consideration of the desire formerly expressed, and of repeated propositions which have lately been renewed by that power, and in consequence of the wish en-tertained by the sublime porte in testify to the United States of America, its sentiments of friendship. the undersigned, commissioners, invested with the high office of chief of the chancery of state of the suldime porte, existing forever, having been permitted by his very noble imperial majesty to negotiate and conclude a treaty, and having thereupon conferred with our friend, the honorable Charles Rhind, who has come to this imperial residence, furnished with full powers to negotiate, settle and conclude, the articles of a treaty, separately and jointly with the other two commissioners, commodore Biddle and David Offley, now at Smyrua, have arranged, sgreed upon and concluded, the following articles:

ARTICLE I. - Merchants of the subline porte, whether Mussulmans or Rayahs, going and coming, in the countries, provinces and ports, of the United States of Ameries, or proceeding from one port to snother, or from the ports of the United States to those of other countries, shall pay the same duties and other imposts that are paid by the most favored nations, and they shall not be vexell by the exaction of higher duties; and in travelling by sea and by land, all the privileges and distinctions observed towards the subjects of other powers, shall serve as a rule, and shall be observed towards the merchants and subjects of the sublime norte. In like manner, American merchants who shall come to the well defended countries and ports of the sublime porte, shall pay the same duties and other imposts, that are paid by merchanta of the most favored friendly powers, and they shall not, in any way, be vexed or molested. On both sides, travelling passports shall be granted.

ART. II.—The sublime porte may establish stisliben-dera (consula) in the United States of America; and the United States may appoint their citizens to be consuls or vice consuls, at the commercial places in the domanous of the sublime porte, where it shall be found needful to superintend the afficirs of commerce. These consuls or vice consuls shall be furnished with berats or firmons; they shall enjoy suitable distinctions, and shall have no-

cessary aid and protection.

ART. III .- American merchants established in the well defended states of the sublime porte for purposes of commerce, shall have liberty to employ semirars (brokers) of any nation or religion, in like manner as merchants of other friendly powers; and they shall not be disturbed in their affairs, nor shall they be treated, in any way, contrary to established usages. American vessels arriving at, or departing from, the ports of the Ottoman empire, shall not be subjected to greater visit, by the officers of the custom house and the chancery of the port, than vessels of the most favored nation.

ART. IV. If litigations and disputes should arise be. By the president, tween subjects of the sublime porte and citizens of the

United States, the parties shall not be heard, nor shall judgment be pronounced, unless the American dragoman he present. Causes in which the sum may exceed five hundred mastres, shall be submitted to the sublime porte, to be decided according to the law of equity and instice. Citizens of the United States of America, questly pursuing their commerce, and not being charged or convicted of any crime or offence, shall not be molested; and even when they may have committed some offence they shall not be arrested and put to prison, by the local authorities, but they shall be tried by their minister or consul, and punished according to their offence, following, in this respect, the usage observed towards other Franks.

ART, V. American merchant vessels that traile to the duntinions of the sublime porte, may go and come in perfect safety with their own ling; but they shall not take the fing of any other power, nor shall they grant their flag to the vessels of other untious and nowers, nor the vessels of rayabs. The minister, consuls, and vice consuls of the United States, shall not protect, secretly or publicly, the rayabs of the sublane porte, and they shall never suffer a departure from the principles here land flown and agreed to by mutual consent.

ART. VI. Vessels of war of the two contracting parties, shall observe towards each other, denumstrations of friendship and good intelligence, according to naval

the same kimt and courteons manner.

ART. VII. Merchant vessels of the United States, in like manner as vessels of the most lavored nations. shall have liberty to pass the canal of the imperial residence, and go and come in the Black Sea, either lailen or in ballast, and they must be laden with the produce manufactures and effects, of the Ottoman Empire, excepting such as are probabited, as well as of their own

Anr. VIII. Merchant vessels of the two contracting parties shall not be forcibly taken, for the shipment of troops, munitions and other objects of war, if the captains or proprietors of the vessels, shall be unwilling to

treight thens.

Aur. IX. It any merchant vessel of either of the contracting parties should be wrecked, assistance and protection shall be alfurded to those of the crew that may be saved; and the merchandise and effects, which it may be possible to save and recover, shall be conveyed to the consul nearest to the place of the wreck, to be, by him, delivered to the proprietors.

Conclusion. The foregoing articles, agreed upon and concluded, between the masset (classeery of state) and the above mentioned commissioner of the United States, when signed by the other two commissioners, shall be exchanged. In ten months from the date of this temes. euck, or instrument of treaty, the exchange of the ratifications of the two powers shall be made, and the articles of this treaty shall have full lorer, and be strictly observed by the two contracting powers.

Given the lourteenth day at the moon Zileasde, and in the year of the Hegira, 1245, corresponding with the seventh day of May, of the year one thousand eight hundred and thoriv of the Christian Æra. MAHAMMED HAMED. (Signed)

Reis-ul-knub. - (reis effenth.)

Now, THEREFORE, to the end that the said treaty may be observed, and performed with good fasts on the part, of the U. States, I have caused the pre-more to be made public, and I do hereby enjoin all persons bearing office, civil or mileary, within the United States, and all others, citizens or inhabitants thereof, or being within the same, lauthfully to observe and fulfil the said treaty, and every clause and article thereof.

In testimony whereof, I have caused the seal of [t., s.] the United States to be hereunto affixed, and have signed the same with my hand,

Done at Washington, this houth day of January, in the year of our Lord one thousand eight himdred and thurty-two, and of the independence of the United States the fifty-sixth.

ANDREW JACKSON.

EDW. LIVINGSTON, secretary of state.

#### THE CHOCTAW'S FAREWELL.

THE CHOCTAW'S FAREWELL.

In our paper today, will be loand an others to the American people, by George W. Hackink, the present close in the Chieve people, by George W. Hackink, the present close in the Chieve and Carlon and Loan and Loan

to the speculators and land juthers, whose grasping avaries to the speciasors and faind joiners, whose grashing avenue force this people from their fonces and the graves of their force failures, the longuage of this address will be unimericallie; but there are others, who, we previoue, are just entirely dynaid of abains, and to whom, some albums is made, who will less the fall force of its mild, but pointed it bukes.

full force of its mide, but pointed it bulks. PACHE.

It is with considerable difflement has I attempt to address the American pougle knowing and feeling canality my incoming target and believing that your log; I) and well outcreased unit to small not well enter trained by the address of a Chostaw. His having distributed to entergate we are the feel of the Chostaw. His having distributed to entergate we are the feel of the Chostaw in the American pour logs of the Chostaw in the American pour logs of the yet a rect notes as a Checkw. Logica a notific experience of the fine testing, (will to the Chi-etsay) all important subject. We were listed in the two voits, and we close that which we thought the feast. Y-t we could not r engine the first that the same of Ministripi had assumed, to, beginner for inthat me more of mississippi had assumed, to legislate 1.5 to a Although the gistatore of the state were qualified to make laws for their own circems, that did not qualify them to become tax makers to a people that were in distribute in manners and cas-toms as the Chockawa are to the Missistimium. Admitting that toms as the choctaws are to the Maxistonian. Admitting that they understood the proble, rould they remote that monetoin of prejudice that has ever obstructed the atreams of justice, and prevented their salutary influence from reaching my desired countrymen. We as Conctaws rather chose to unfler and be free. countrymen. We as Chietan's rather chose to suffer aid to free than live under the degrading influence of laws, when our voice

could not be heard in their lurenation.

Much as the state of Missispin has wronged us, I cannot find
my heart any other sentiment than an ardent with for her
prosperity and happiners.
I could herefully hope, that those of another age and genera-

in my herst any other sentiment than an ardent with for her properly and haspiners. I would electrially hope, that those of another age and generation may not feel the effects of those uppressive measures that me may not feel the effects of those uppressive measures that the measurement of the effects of the end of the effects of the property of th

the litera, and the rest the stake and wiped out all traces of the litera, lived in the real from you my lears, that the present grounds sust be recorded. I have my forebodings who of us can tell effer arterating wout has already-here done, what the next force may be. I sake you in the name of justice, for report for my spilling leophe. Let us alone—we will not have my our we want test. We hope, in the name of justice that the least my our we want test. We hope, in the name of justice that the least my one of the committed against us, and that have the most constant of the least my one of the committed against us, and that about a beauty, which are breefitted by a change of pasture.

Taking an example force the American government, and

we may for the fastire be cared for as children, and not drawn about an exact, which are benefitted by a change of pasture.

Taking an example from the American government, and have the properties of the proper

leys with echo, and say stop, you have no power, we are the over-ign people, and our red fresults shall no nore be diest bel. We ask you for suthing that is incompatible with your other

We go forth sorrowful, knowing that wrong has been do Will you extend to us your sympathing regards until all two if disagreeable oppositions are obliterated and we again the have could use in the professions of our white brethress. It of disagreeable oppositions are ubliterated, and we again shall have could have in the profession of our white betters. Here is the land of our processors, and here are their bonest they list here as watered aleposis, and we have been compelled to sense the treat, it is deed in an array of the control by our great father, it should then be unwortey the goater, by our great father, it should then be unwortey the name of a Checawa, and be a diagrare to not flood. I most go with them, my detection, and the a diagrare to not flood, I most go with them, my detection, and the all granter of the control of

From the Manigonery (Alo., Panners' Gazette.
Sone of Albohuma Car., 1841.
The Alabama Depirt association to the engigess of the U States.
Whi rea, undry portions have been per and in your bounded by body, craying the ampenium of transportation of the mad afthe updoming of the post office on the wish with and whereas, we have reason to expect a continuous of cross persistent when the expectation of the control to the product of the control of the contro

we make reasons of the per a frontinuous of time per littless until We, therefore, as a religious, body, in our associate capacity, and in the nome and vehicle of the churches and brethers we repre-sent. In the thought it meet says to exercise that right which we had in common with all citizens of this government, to reen sent and the common ways of the common of the per littless of the approxime to it the non-annex soled for. And, Freet. We odly of the the measure, because it would be a solution of the first vitance of the first arrive or the san induces to a solution of the first vitance of the first arrive of the san induces of a precinity of the same of the same of the same added to a precinity of the same from must not only decide which is the ashbath day by law, the same few must not only decide which is the ashbath day to the control of the same few must not only decide which is the ashbath day to the same few must not only decide which is the ashbath day to the same few must not only decide which is the ashbath day to the same few must not only decide which is the ashbath day to the same few must not only decide which is the same day of the same few must not only decide which is the same day of the same ashbath day. The same ashbath day is the same ashbath day to the same few must not only decided which is the same ashbath day. arove quoted.

tiy. We object to the measure, because it would pro-

arouse quotest.

Secondly, We chiper to the measure, because it would procate adviay of intelligence, both religious, political, and summercial, of one eventh part of the time, and would desirely, in
the pre-portion, the importance and value of the institutions—in
the pre-portion, the importance and value of the institutions—in
the pre-portion, the importance and value of the institutions—in
the propertiest of the properties of the institution of the propertiest of the institution of the propertiest of the institution of the propertiest of the propertiest of the institution of the propertiest of the institution of the propertiest of the institution of the propertiest of the properties of the propertiest of the properties of the properties of the properties of the propertiest of the properties of the propertiest of the properties of the

savite any gestleman to show that the christian region, or any article there of love a Christian palbath, was every established by law beautiful controlled the controlled

and raised them to influence the ruler's to such ages of warmer centelly; nor do we process includes the file consequences to torat but our object is, to assid the file consequences by reject-ing the principle—for persecution follows in the train with law cataloised selegon. These certain process is a selection of the consequence of the secretary objections we respectfully submit to the widom of the secretary objections we respectfully submit to the widom

Three several objections we respectfully submit to the wisdom of your hours, is body. Praying that they may be heard, and that tablishments in any along or regers, and that religion may be seen marked of hours trumperly. Has its vergen beavy may appear. (Singuel)

I AMES M'LEMORE, moderator.

Dec 17.1831

# NILES' WEEKLY REGISTER.

# ADDENDUM TO VOLUME XLI.

# GENERAL CONVENTION

OF THE

# FRIENDS OF DOMESTIC INDUSTRY.

ASSEMBLED AT NEW YORK OCTOBER 26, 1831.

#### REPORTS OF COMMITTEES.

# ON THE PRODUCT AND MANUFACTURE OF IRON AND STEEL.

In Convention, Oct. 27.—It was resolved that a committee of fifteen be appointed to report on the production and manufacture of iron.

The committee was afterwards charged to report on the production and manufacture of steel, and enlarged. And, in its final arrangement, consisted of the following gentlemen:

Messrs. Dunlop, (chairman), S. Richards, Valentine, Jones, Haldeman, Henry, Pennsyivania, J. Richards, Scott and W. Jackson, N. Jersey, Newell, R. Island, E. T. Ellicott, Boyle, Maryland, B. B. Howell, Murray, Ross, J. Townsend, New York, Holley, Connecticut, Leech, Massachusetts, Philips, J. R. Coats and Chambers, Pennsylvania, Hammond, Vermont, and J. H. Pierson, New York.

# REPORT ON IRON AND STEEL.

The Committee on Iron and Steel respectfully Report :-

That in discharge of the duties assigned to them, they have availed themselves of the information obtained by the convention of the manufacturers of iron, recently assembled at Philadelphia (of which several of your committee were members), which information was originally collected for the purpose of answering the call made upon the secretary of the treasury, at the close of the last session of congress—and is, they have every reason to believe, as precise and accurate, in all its parts, as any body of facts, of equal magnitude and importance, which, under similar circumstances, has ever been submitted to the public.

From abstracts of statements made to that meeting [annexed and marked A] it appears that at 202 furnaces, known to have been in operation, there were made in the year 1830, 155,348 tons of iron. This iron, further investigation enables your committee to say, is converted into 90,768 tons of bar iron, and 28,273 tons of castings, as there also set forth, which with the

bar iron made at the bloomeries, amounting in that year to 5,853 tons, and making a total of bar iron of 96,621 tons, will, if estimated at the average wholesale prices of the principal markets of the country, as therein more particularly detailed, give an aggregate value for the production of that year of eleven millions, four hundred and forty-four thousand, four hundred and ten dollars.

The same statements exhibit for the three years ending with 1830, (when the bar iron made at the bloomeries is reduced to pig iron, and added to that made at the furnaces), the following results—

```
For 1828. Iron 130,×81 tons. Value 10,861,440 Dollars.
4 1839. 4 142,870 4 11,528,134 4 11,528,134 4 11,444,410
```

Increase in quantity in two years very nearly 25 per cent.

Increase in market value not quite five and one half per cent.

It will be perceived in examining the last statement, that the increase in value does not keep pace with that of quantity—and your committee would here, for a moment, call the attention of the convention to this fact, to which they shall have occasion to allude more particularly hereafter, as affording a practical refutation of the doctrine, that an increased impost necessarily enhances the price to the consumer.

Fig. In this instance the average price of bar iron in 1828 was \$118\frac{1}{3}\$. In that year an addition to the duty on hammered iron was made of 4 40-100 per ton, and on rolled of 7 dollars. In the following year the price fell to 1142-3, and in 1830 to 96 2-3; showing a decline in two years of 21 2-3 dollars per ton, in the face of the increased duty above mentioned—a decline effected exclusively by domestic competition, inasmuch, (as will hereafter appear) no corresponding diminution of price took place abroad, and the fall here, was greatest in those markets which are inaccessible to foreign iron.

In making these statements, your committee have been careful to found them upon data which they believe will bear the test of the most rigid scruinty. They have been particularly cautious to guard against exaggeration. They believe the cause they desire to sustain needs no aid beyond the simple truth, and, when that is made known it will require no extraneous support, but may safely rest its claims to the favour of their fellow citizens, upon their sense of justice and expediency, and its own intrinsic merits.

Notwithstanding their own convictions on this subject, however satisfactory to themselves these statements certainly are, yet, as they are so much at variance with others which, having been extensively spread before the public under the sanction of a select committee of the senate of the United States, are, on that account, entitled to the most respectful consideration,—your committee will, in this place, submit some additional facts and statements in proof of what they have already adduced.

In 1810 the quantity of bar iron made in the United States was, agreeably to Cox's tables, - - Tons 27.05 t

This quantity was probably short of the truth, as the tables are known, when they err, to err in this particular, excess never having been attributed to them.

We have no account of the quantity imported before 1816. It was then, of all kinds of bar iron, agreeably to a return made by the register of the treasury, upon a call by congress. 21,537

tons. If the importation of 1810 be estimated at three fourths of that of 1816—it cannot be far from the fact, and would be 16,152

Giving a total for the consumption of 1810, of bar iron-tons 43,208

Our population was then seven millions—it is now thirteen. If the consumption of iron be estimated at only the same rate, it would require for the year 1830 - - 80,236 tons.

The importation of foreign bar iron for 1829, (the last return in possession of the committee) was 32,750—exported 260—for consumption

\$2,190

Leaving a void to be supplied by the domestic article of 47,746 tons.

But if the consumption be estimated not only by the ratio of increase of the population, but also by that of the vast increase of every branch of industry requiring the use of iron, it cannot be doubted that the consumption of 1830 was fully three fold that of 1810; it is probable that it was even greater, but equal at that rate to 129,609 tons; from which deduct that part imported, estimated as of 1829, (from which it cannot materially vary), and the result is 97,119 tons, instead of 35,000 tons, as asserted in the statements referred to—corresponding in a remarkable manner (the difference being less than 500 tons) with the estimates of the committee founded upon the facts now collected; believed still to be under the truth, and shewing the extraordinary errors into which the most enlightened and intelligent may be betrayed, by adopting the conjectures of others without due investigation.

Your committee have already referred to the fact of the decline in the prices of iron from 1928 to 1830, as establishing the doctrine that a duty on a foreign article, which can be abundantly produced at home, does not necessarily enhance the price to the consumer. In further illustration of that part of the subject, and of other beneficial consequences flowing from the system of protection, they beg leave now to refer to the accompanying statements marked B and C. By the one it will be seen, that while iron in some foreign markets advanced from 40 to 50 per cent. from 1822 to 1825, and from 1822 to 125 experienced fluctuations amounting to nearly 75 per cent. on the lowest cost—our own varied but about 17 per cent. including an additional duty of about fire, and actually receded at a subsequent period, although sustained by a second addition to the duty, to prices below what had prevailed ten years before, when the existing duty upon hammered iron was but nine dollars, or less than one half of that now levied

This comparative stability, so important to the success of all well regulated industry, was due, exclusively, to the domestic supply, which effectually protected the consumer from the foreign speculator, who could otherwise have controlled this market, and produced here the same disastrous conscience.

quences that ensued in his own.

If such has been the result of protection upon the general market of the country, its effects have been still more striking, when examined with reference to particular, but most important districts. Our western brethren, the hardy pioneers of our country, were restrained and limitted, in their contest with the wilderness, by the difficulty of obtaining, on almost any terms, this article so indispensable to their success, in every stage of their ardinous on-

terprise. The second statement exhibits the prices of iron of various descriptions at different periods, at Pittsburg and Cincinnati, the great marts of the west. Comment can scarcely be necessary upon the facts there disclosed. The decline in price (in some instances more than one half,) has been in exact proportion with the stability given to the domestic manufacture, by additional impost on the foreign, until it has reached a point that now enables the mechanics of the first mentioned city, that Birmingham of America, to enter into successful competition with those of almost any other quarter, in the fabrication of nearly every article of necessity, and in one, justly esteemed the proudest effort of human ingenuity, they have attained a degree of perfection which enables them to challenge comparison with the skill and experience of any nation whatever.

As your committee are assured that contracts can be made for any number of engines at the prices indicated in the table referred to, it cannot be

necessary that they should press this point further.

Here, your committee might perhaps leave this branch of their subject, satisfied with having, as they believe, demonstrated, that protection to the manufacturer, when effectual in amount and connected with such an assurance of permanence as stimulates enterprise and excites skill, does not operate as a tax on the consumer, but the reverse. But they believe that facts will justify them in going even further; and will enable them to maintain the position, that an impost may, under some circumstances, operate as a tax, not upon the consumer of the importing country, but upon the producer of the foreign article, compelling him, for the purpose of preserving even partial possession of the market, to reduce his own profits in proportion to the increase of impost, which reduction is, in fact, a contribution to the treasury of the importing country, and may relieve its citizens from the burthen of taxation to that extent.

The circumstances under which this may occur are two.—First, where the importing country is the only or the principal market for the article in question, and that article one which the exporting country unaevidably produces in the manufacture of some other of greater value. Second, where there is an increasing surplus of production in the exporting country, and an extensive and growing manufacture of the same article in the country where this surplus has theretofore sought a market.

Without detaining the convention longer than to make a passing reference, as an example of the first case, to the additional duty laid by the tariff of 1932 (since repealed) upon molasses, which duty was exclusively paid by the foreign planter, who thus contributed, during its existence, more than half a million of dollars per annum to the support of the government of the United States,—the committee will proceed, in proof and illustration, at once of the second, again to refer to statement marked B, and to that marked D, where, among other facts, it will be seen, that in July 1828, after the intelligence of our additional duty reached England, iron fell at once 4 44-100 per ton, and that in the following year a further reduction of 50-100 was submitted to. Our additional duty gave additional confidence to the American manufacturer—he extended his operations and increased the supply, without advancing the price. The foreign manufacturer coult only reach the market by the payment of the additional impost. Americas competition prevented him from charging this to the consumer and he was

therefore compelled to diminish his profits by this much, and to the same extent to become a contributor to the treasury of the United States.

An examination of the last mentioned statement [D] will shew that, by this means, through the instrumentality of American manufacturers, their foreign competitors have been made tributary to the public treasury, upon the article of iron alone since that article has been really protected, more than two millions and an half of dollars, while the consumer, as has been already shown, has been benefitted to an amount even greater than this.

If it be alleged that the same benefits would have resulted to the consumer—that the same decline in prices would have occurred without this competition—we answer, that such allegation would be contrary to all experience, which has taught all who have given attention to the subject, to know, that, while we are dependent, exclusively, upon foreigners for any article of consumption, they are enabled to prescribe their own terms, and that these always include a large profit to themselves. But the moment it is discovered that domestic ingenuity is at work to produce the same article, that moment their prices are reduced, and often to an extent that excites astonishment, when it is accompanied with the knowledge that no

sensible change in the cost of production has taken place.

But it may be asked-if additional protection, by exciting domestic competition, invariably brings down prices, of what benefit is this protection to the domestic manufacturer? To this we reply—that permanence and stability, NOT high prices, are our objects. American manufacturers are not so blind to the constant and inevitable course of events, as not to foresee that, as these objects are approached, they must expect a more active competition from their fellow citizens, as well those who are already engaged in the same pursuits, as from others who may be induced to enter. But for this they are prepared—they can calculate its extent, and its effects are wholesome and salutary upon all. It stimulates to greater care, economy, industry and skill-profits are reduced, but they are stable; and the prudent man looks forward, with confidence, to realizing a fair reward for his Against foreign competition there is no guarding, because the manner of its approach can never with certainty be foreseen, nor can its extent be calculated. The ordinary production of foreign industry, in any particular branch, may be estimated with some accuracy; but the extraordinary fluctuation, to which their markets are liable from great political convulsions and from other causes, cannot with any. Every violent change there, invariably forces upon our markets their vast accumulations, which, easily breaking down the feeble barrier of a mere revenue protection, involves in ruin all who have essayed competition in the same branch. The consumer may be benefitted for the moment, but a re-action certainly follows-great fluctuations engender a spirit of speculation; and mere gambling is substituted for all regular traffic. The frequent recurrence of these evils, (every where acknowledged to be such), is only to be prevented by a system of protection, which, when efficient for the main purpose, is, as has been proved, abundantly so for this also.

Having, as they believe, satisfactorily shewn the beneficial effects of a system of real protection to the consumer of iron, your committee will proceed with a few brief remarks upon its influence on the agriculture, labour

and internal trade of the country.

From a critical examination of the returns from 73 furnaces and 152 forges, in a great variety of situations, the details of which are more particularly stated in the paper annexed and marked E, they find, that in the manufacture of the iron, in its first stages only, made in the United States in the past year, agricultural produce to the amount of nearly three and an half millions of dollars has been consumed; which vast.sum has been paid by the manufacturers, and those employed by them, to the farmer, shewing how completely his interest js identified with their's, and furnishing him with the means of estimating the probable consequences to himself of the destruction of this branch of industry, and the conversion of so large a body of consumers into cultivators and producers.

By the same statement it appears that nearly twenty-five thousand workmen are constantly employed, receiving annually the sum of seven millions four hundred and ninety three thousand and seven hundred dollars; making, with their families, nearly one hundred and twenty-five thousand persons

directly dependent upon this manufacture.

For transporting this iron to the markets where it is sold to the consumer, it is calculated that about one million and a quarter of dollars are annually

paid, being a further contribution to labour and agriculture.

These facts, your committee believe, sufficiently shew how completely interwoven are the interests of agriculture and labour, with those of manufactures. They think, and they hope hereafter to demonstrate it, that those of commerce are not less so; but, for the present, will refer to one fact frequently alleged and recently and triumphantly reiterated, in support of a different view of the subject-namely, that every ship of the burthen of 560 tons, is subjected to a tax, occasioned by the duties on the foreign articles entering into her construction, of two thousand dollars, of which that on iron forms a large proportion. Without wishing to detract in the slightest degree from the merits of a branch of our industry that has secured so much of glory to our national character, as well as profit to our country, it must not be forgotten that this interest, which was one of the earliest subjects of national regard, has, for a long period, enjoyed a protection in the discriminating tonnage duty of 94 cents per ton, which, on a vessel of 500 tons, amounts to 470 dollars on every voyage; and, admitting the supposition that she makes three voyages yearly, such protection amounts to 1410 dollars per annum. And inasmuch as it is understood to be a principle of mercantile calculation, that a new outfit is to occur every five years, there is a protection amounting to seven thousand and fifty dollars against the tax of 2000-and if it be true that the community suffers by protecting our domestic industry, it would seem not politic for those interested in navigation to appear as complainants. And this, it must be observed, is independent of the 10 per cent, discriminating duty on all merchandise imported in foreign bottoms, imposed solely to foster the shipping interests

It may be argued that this system of discriminating duties is disappearing before the reciprocities offered and embraced in many of our commercial treaties. But let it be remembered, that these reciprocities have been
the fruit of a rigid adherence to the protecting system, to which even the
"mistress of the ocean" has been compelled to succumb, affording a perfect
illustration of the efficacy of those principles for which we contend; and
which will eventually oblige the manufacturing nations of Europe and else-

where, either to extend the right hand of reciprocity to our agriculturalists, manufacturers and mechanics, as they have done to our merchants, or to sink before the unequal conflict with American ingenuity and American enterprise.

The committee deem it here proper to advert to the attempts which have, for some two years past, been made to array the interests of the manufacturers of iron, in its higher stages, to wit—hardware, &c. against its primary manufacturers, and the efforts which have accompanied these attempts to obtain a large reduction of the existing duties upon some descriptions of iron, and a total abolition of those upon others, for the alleged purpose of placing these two branches of industry upon an equal footing in the home market.

Fully to counteract such efforts, your committee believed it would only be requisite to ascertain what proportion of the value of the manufactured article consisted of the duty on the bar and sheet iron entering into its composition; and what, of that, upon the value given abroad by the subsequent elaboration. To determine this, they took a lock, called a Scotch spring lock, which weighed two pounds—they supposed that half a pound of iron was lost in making—total weight, 2½, deduct half a pound of brass—weight of iron 2 pounds, which, at the highest duty of 3½ cents per lb. is seven cents. The sterling cost of this lock, with charges subject to duty, was twenty three pence, and the duty, as calculated at the custom house, very nearly twelve cents.

In this case, if the American manufacturer of locks had imported his iron at the highest rate of duty, he would have paid a tax (if the duty be a tax) of seven cents, and would have received a protection of twelve cents, as against the foreign manufacturer of hardware.

Another lock called a closet lock, cost, with charges, two shillings and three pence; duty as above nearly 14 cents, and weighed, with the same allowance, \( \frac{3}{4} \) of a pound—duty, at the highest rate of \( 3 \frac{1}{2} \) cents, is 2.5-8 cents. Here the manufacturer of hardware would receive five times more protection on the same article than the iron manufacturer.

A third lock, called a mortice lock, cost, with charges, five shillings—duty as above 30 conts, and weighed, with the same allowances and deductions for brass, 2 pounds—which, at the highest rate of duty as before, is 7 cents.

Here the protection to the hardware manufacturer, as compared with the iron maker, is nearly four and an half to one. In all these cases the highest duty is taken on iron and the lowest on hardware.

The inquiries of the committee having, so far, exhibited results so entirely at variance with statements which had been widely circulated under high authority, they became apprehensive that it would be alleged these examples had been purposely selected with reference to such result; and, although they were, in truth, taken entirely at random, yet they believed it to be their duty to pursue the investigation on a more extended scale, and, if possible, to embrace the entire importations of the country—a course, the perfect fairness of which, they think, cannot be called in question.

It was known to one of your committee, that, when the applications already referred to, were before congress, a highly respectable house of this city, engaged both in the manufacture of iron and importation of hardware, had taken up the memorials and statements upon which the subsequent report of the select committee of the senate was founded, and examined them in

detail. They were, accordingly, invited by the committee to assist them in the investigation-their aid was cheerfully and promptly furnished, and the result will be found in the document annexed and marked F.

To refer particularly to every part of this elaborate and most valuable paper, would occupy too much of the time of the convention, and would swell this report beyond all reasonable limits. Nor could justice be done it, by any reference, however particular. It is respectfully, but carnestly, recommended to the careful perusal of every member.

Your committee, however, solicit the attention of the convention to a few remarks upon some of the most striking errors of fact contained in the memorials, statements, and report already alluded to, which they

deem too important to pass without such notice.

One great object of the memorialists was to obtain the importation of English iron at a very low rate of duty, on the alleged ground that it was superior to other iron for many, and equal for most purposes, for which iron is used.

In answer to this it is shewn that, although this iron can now be imported in every required form of bolts and bars, at full twenty per cent, less than other iron, yet, such is the character which experience has stamped upon it, that only one seventh of all the iron imported is of this kind, and, of the entire consumption, it forms but one thirty-ninth part! To admit the statement of the memorialists, in this respect to be true, would therefore be to suppose an ignorance of their profession and interests, on the part of the American blacksmiths and others, workers in iron, which your committee cannot for a moment sanction.

The memorialists stated that the duty on iron was from 159 to 282 per cent. or from 6 to 11 times the duty on hardware. The want of candour manifested by the general character of this statement, is fully exposed in the examination, where it is shewn that the quantity paying the duty of 37 dollars per ton, is but one seventh, and that paying 78 40-100 but one thirtieth of the whole importation, and but 1-39th and 1-112th parts of the entire consumption.

Your committee have already had occasion to advert to the extraordinary error committed by the memorialists, when they fixed the manufacture of iron in this country at 35,000 tons. They now beg to call the attention of the convention to an error as remarkable on the other hand.

For the apparent purpose of exhibiting, in mortifying contrast, the insignificance of the domestic manufacture, when compared with the foreign importations, the entire consumption is assumed at 116,844 tons. Leaving, after the deduction of the above 35,000 To be supplied from abroad the quantity of

81,344 tons. Of this last quantity it is stated that 47,798 tons were imported in the form of hardware, at a duty varying from 5.50 to 8.25 per ton, and that, in this way, this large quantity of iron was introduced at

an aggregate duty of 284,293 17-100 "while the same weight of iron imported in its raw state

"of var, sheet, rod, or hoop iron, estimating the duty at "only 37 dollars per ton, and leaving out of considera-"tion the duty of 31 cents, would have paid"

1,568,526

"At this rate," they say—"the discriminating duty in favour of the British manufacturer (of hardware) was actually 1,284,232 88-100 dollars, for the fiscal year 1828-29."

The above weights it is admitted are obtained by estimates—that is, by assuming one third of the gross value of the hardware imported to be the cost of the raw material of iron, and then bringing that third into tons at 23 33-100 per ton. The experiments on a small scale, already recited in this report, shewed the error of these estimates:—When brought to a practical test, on a scale embracing every article in the whole range of importation, their true character was made even more manifest. The committee again refer to the examination of Messrs. Green and Wetmore, by which it will appear that the whole weight of the above hardware (including brass, horn, and all other materials) was but 9,763 tons, instead of 47,798 tons, and that the duty actually paid was rather more than one hundred and four dollars per ton. That if the American manufacturer of hardware had imported the iron and paid the duty mentioned by the memorialists of 37 dollars per ton, he would have paid the sum of - \$861,231

And would have been protected by a duty on the manufactured article of - - - - - - - 1,003,843

Making a discrimination, for the fiscal year 1928-9, in favour, not of the British manufacturer of hardware of one million two hundred and eighty four thousand two hundred and thirty-two dollars and eighty three cents—but in favour of the American manufacturer of hardware, over both the British hardware manufacturer and the American manufacturer of iron, of six hundred and forty-two thousand six hundred and twelve dollars.

Here your committee might, they believe, safely rest this part of the subject, deeming their duty in relation to it fully discharged. They will detain the convention only while they present a brief summary of the different, and, in some instances, opposite conclusions, to which a careful examination of the same subject has brought them, when compared with those
put forth by the memorialists

They (the memorialists) say that the entire consumption of iron in the United States, is - - - - 116,344 tons.

Your committee have shewn that, in domestic and imported bar iron, taking the imports (with the exception of hardware) as stated by the memoralists themselves, and in castings, it amounts to

158,280 tons.

If the estimates of the memorialists, as respects hardware, had been retained, the quantity would have been swelled

196,315

instead of 116,344, and it is with reference to that quantity that the comparison of statements should be made.

The memorialists say that of this quantity consumed but \$5,000 are made in the United States.

Your committee have shewn that of bar iron there is produced 96,621 tons. And of castings - - - - - 28,273

Together - 124,894

but if reduced to pig iron, the mode of computation always adopted in Great Britain, the quantity would rise to 163,542 tons, instead of 35,000.

Of the quantity made here, the memorialists say but 10,000 tons reach ne seaboard.

Your committee, upon what they deem good authority, believe that one third of all the bar iron, and more than two thirds of all the castings, pass through the markets on the seaboard—they shall have occasion to netice this item more particularly hereafter. For the present, they will only remark, that more than 10,000 tons are annually made in New Jersey alone, all manufactured within a few miles of the seaboard and nearly all sent to the markets there.

The memorialists say that of rolled iron ten-elevenths are imported in the manufactured state, and the remaining eleventh in the raw state.

Your committee have shown that the actual proportions are a little more than two to one instead of 11 to 1.

They say that the quantity of rolled iron, in all its various forms, compared with hammered iron, is nearly in the proportion of two to one.

Your committee shew that the true proportion is but a little more than

one to nine.

They say that of 90,000 tons of iron sold in the markets of the seaboard,

but one ninth, including all descriptions, is American.

Your committee have shewn that of about 95,000 tons sold in those

markets, about 52,000 tons, or *four* ninths, are of American manufacture.

They say that the American iron, compared with foreign iron imported in

1 ney say that the American fron, compared with foreign fron imported in the shape of hardware, is in the proportion of one to six, or, out of 60,000 tons but 10,000.

Your committee have shewn that the true proportions are as nearly as possible the reverse—namely, as six to one, or but 9,763 tons imported in hardware against 52,000 tons American brought to the scaboard.

The memorialists allege that 47,798 tons of iron, in the form of hardware, were imported in one year. Your committee have shewn that the real amount was 9,763 tons.

The memorialists assert that the duty on iron is from 6 to 11 times that on hardware. Your committee shew that the duty on hardware is 3 to 4 times that on the iron entering into its composition, even if that duty be estimated at 37 dollars per ton, which is 11 dollars per ton more than the average rate.

The memorialists assert that sheet iron, in the form of tea trays, can be be introduced at a cost of 83 72-100 per ton. Your committee shew that the true cost is 396 22-100 dollars.

They assert that but eleven thousand persons are employed in the United States in the manufacture of iron. Your committee have shewn that the number is nearly twenty-five thousand.

Finally, the memorialists complain of the oppressive burthen which the protection afforded to this inconsiderable quantity, as they call it, of American iron, has been to them in their business. To show the extent of this burthen, they had previously asserted that the existing laws had operated, in a single year, in favour of the British manufacturer of hardware over the American, to the amount of one million two hundred and eighty four thousand, two hundred and thirty two dollars and eighty three cents.

Your committee have shown that the actual discrimination in favour of not the British but the American manufacturers of hardware, that is of all of the petitioners themselves who are such, was, in that same year, at the lowest computation, very nearly six hundred and fifty thousand dollars.

Your committee earnestly invite every practical American mechanic to examine this subject for himself—to look well into their statements, and ascertain to what extent his interests are guarded by existing laws, and having done so, they cannot doubt an unanimous opposition on the part of that respectable and valuable class of our citizens, to any such suggestions as those embraced in the concluding prayers of the memorialists which have been under examination.

Your committee feel that they ought to apologise for having occupied so much of the time of the convention in the examination of this memorial, which might be thought not strictly within the range of their duties. would seem that errors of such magnitude must be self-evident, and could require no exposition. Your committee would willingly have adopted this opinion-but the importance that had been given to this document, by the course pursued in the senate of the United States, forced them to a different conclusion In that venerable body it was referred to a select committee of its most distinguished members-a majority of whom, by adopting all its statements as facts, and its opinions and arguments as just, re-affirming them, indeed, after they had been questioned in counter memorials, have thereby changed their character, have lent to them the high authority of their names and station, and stamped them with an importance which they did not originally possess. They have been widely and industriously circulated under the imposing sanction of a report of the senate, and so much have they been relied on, that it has been triumphantly asserted they would "break the iron arch" which supports our system, and thus bring the whole fabric to the ground.

These were the considerations that governed your committee in the course they have pursued, and they hope to find in them a sufficient excuse for their trespass upon the time and attention of the convention. In the performance of this duty they have found it impossible to be brief—where so many assertions were to be met and refuted, this was out of the question. The same allegation met them again and again, in some new form, varied to suit the occasion—hence repetition was unavoidable. They trust their apology will be found in the necessity of their situation.

Before dismissing this subject, your committee owe it to justice and themselves to say, that they entirely acquit the distinguished gentlemen, composing the majority of the committee of the senate, of even a suspicion of any intention to mislead. They cheerfully concede to them the same sincerity and singleness of motive and purpose which your committee claim for themselves; while they regret, as they do most deeply, that they should have been made the instruments of so extensive a dissemination of error.

In the preceding examination your committee had occasion to notice and refute the statement, that but a small portion of American iron reached the markets on the coast. In a communication addressed to the convention recently assembled in a neighboring city, which derives importance from having been adopted by that respectable body as a part of its proceedings, it is, among other things asserted, that but 430,000 dellars in value of all the iron manufactured in this country, including duty or bounty reaches the seaboard. The presumed object of this assertion, as well as

those in which the quantity was stated at 10,000 tons, is to make it appear that the abolition of the duty on foreign iron would affect but a small number of the manufacturers of the domestic article; while it would relieve the mass of the consumers on the sea board from the supposed tax upon the foreign.

To show the value of this assertion your committee beg leave to refer again to statement A, where it will be seen that, in a small district of West Jersey, alone—iron amounting to more than half a million of dollars, is annually made, the whole of which finds a market in the neighboring sea ports.

Your committee were instructed to report upon cutlery, and the manu-

factures of iron in its higher stages.

They have found it impossible, in the limited time allowed them, to do more than ascertain that they are numerous and of great extent and value. They annex two statements marked G and H—the one exhibiting the annual amount of manufactures in a single county of Connecticut, the value of which is nearly nineteen hundred thousand dollars—iron constituting one-fourth, and those of that material in its higher branches nearly one-tenth. The second shews the value of manufactures for one year in the small county of Delaware, in Pennsylvania, amounting to nearly fourteen hundred thousand dollars, of which those of iron form more than one-seventh. These two instances, taken at random, may serve to convey some idea of the vast amount and value of the manufacturing interest of the entire country.

The committee have deemed the article of steel of sufficient importance to merit a distinct report which will be found annexed, marked I, and is respectfully recommended to the particular attention of all those who take

an interest in that valuable branch of our industry.

The last consideration that occurs to your committee as properly within their duty to notice, is the capability of the United States to furnish a supply of iron equal to their own wants. Of this the committee cannot entertain the smallest doubt. The tabular statements heretofore referred to, shew that, in two years, from 1828 to 1830, the supply has increased very nearly twenty-five per cent, and it is known that old establishments, in many situations, are enlarging, and new ones erecting, giving assurance that this increase will be progressive, until not only the domestic market will be fully supplied, but a surplus remain for exportation, creating thereby a new source to meet the demands of foreign commerce and additional means of employment for our navigation.

If we compare our situation with that of Great Britain, in this particular, less than a century ago, we shall see abundant reason for self-gratulation. Ninety years since, her entire production of iron did not much exceed that which is now made in the state of New Jersey. In 1802, within the limits of a single generation, her furnaces were less in number than those now existing in the United States, and their production not more than will be made here during the present year—and this without availing ourselves of the means to which she is indebted for the extraordinary change which this comparatively short period has effected. We have the benefit of her experience—we can command her skill, if it be necessary—we have the minoral fuels, which have done so much for her, in unlimited abundance, when our forests fail—our citizens yield to more in enterprise and inge-

nuity, when adequate rewards for the exercise of those qualities are held out—and knowing this, with the experience of our rapid progress in the last two years, furnishing, as we now do, more than three-fourths of the entire consumption, is it, we repeat, extravagant to assert, that we are fully competent to supply our own wants, and furnish a surplus to minister to those of our neighbors?

In conclusion, your committee cannot refrain from the expression of the gratification which the result of this investigation has afforded them. Deserted by the government, and denied that protection, which, at the close of the late war, was freely granted to almost every other interest, this important branch of domestic industry, so essential to the prosperity, if not to the existence of all others, and so closely allied to real national independence, seemed threatened with absolute extinction. A wiser policy, adopted at a later period, aided by the unconquerable spirit of American enterprise, has raised it from comparative jusignificance to the elevated rank which it now holds; and to maintain it in which, it asks, as it believes, no sacrifice from its fellow citizens, engaged in other pursuits. Grateful for the consideration which its well founded claims upon their justice, after years of delay and suffering, at last obtained, it is now returning to them the full measure of benefit which it has received at their hands, and will continue to protect them, as heretofore, from speculation and monopoly from abroad, should it not a second time become the victim of that unnatural policy, which cherishes foreign while it neglects and destroys our native industry.

By order of the committee,

B. B. HOWELL, secretary.

### SUPPLEMENTAL REPORT.

Before separating, the committee instructed the secretary to make a further report of any facts that might be received in time, for the permanent committee. In conformity therewith he has now to state, that Mr. Peter Townsend, who was delegated by those engaged in the manufacture of iron in this city, to visit all the establishments in this state and those east of it, has returned, and reported the result of his examination—by which it appears, that in New York there are in operation, of blast furnaces not included in the estimates of the above reports

8
In Connecticut

8

And information, from various other places, enumerates furnaces

not before known, to the number of

26

In the whole 37 additional furnaces, making of pig iron and castings 25,250 tons, and a large number of forges employed in converting the pig into bar you.

There are returns also of 32 bloomery fires in situations where it was not before known that any existed, making 30 tons each per annum, or nearly 1,000 tons yearly of bar iron, by this process—and the returns brought by Mr. Townsend shew that the committee estimated this kind of iron nearly 1,000 tons too low in the districts which he visited.

The result of the whole would be, if 20,000 tons of the above pig iros be converted into bars

Bar iron,	14,285
Bloomed bar iron as above,	1,960
Bar iron, per former statements,	96,621
Total of bar iron made in the United States to the information received by the co this date,	s, agreeably 112,866
Stated in pig iron, it would be-	
Former statement,	163,542 tons.
Pig iron and castings as above,	25,250
Bloomed bar iron equal to,	2,744
Total of iron equal to pig iron,	191,536 tons.

The value of which, according to the mode of estimation already explained, would be thirteen millions three hundred and twenty-nine thousand seven hundred and sixty dollars.

It is hardly necessary to add that these additional facts strengthen all the inferences and calculations heretofore made by the committee.

B. B. HOWELL, secretary.

NEW YORK, November 1831.

## Appendix to the Report on Iron and Steel.

## STATEMENT A.

The committee of manufactures of iron appointed by the convention assembled at Philadelphia, to examine the returns received in answer to the circulars addressed to different individuals engaged in that branch of industry; report the following tabular statement, as the result of their investigations:

			1828.			1829.			1830.	(1
STATES.		No. of	Tons of pig iron.	Tons of	No. of furnaces.	Tous of pig iron.	Tons of	No. of furnaces.	Tons of pig iron.	Tons of
Pennsylvania, New Jersey,		44	24 822							
Maryland,		5	2,247	6,264		1,941	5,998 1,065		3,163	
Virginia,		2	400	50		702	72		538 5,400	43
Delaware, Missouri,		1	450	350	1	450	350		450 590	
		63	29,652	10 840	63	32,233	12,049	73	42,868	13,273

One furnace creeted in Pennsylvania in 1830, will, in 1831, make 1,100 tons of pig iron.

In addition to the seventy-three furnaces mentioned in the preceding table, from which detailed returns had been received, the committee had information of one hundred and twenty-nine furnaces, in the states of Pennsylvania, New York, Vermion, Massachusetts, Cooncettent, Fennessee, New Hampshire, Virginia and Olin, in actual operation; but from them had then received no returns. Taking the production of the seventy-three turnaces, from which returns have been received, as the rule for estimating the whole, and the full-wing would be the result:

YEARS.	Furnaces.	Tons of pig fron.	Tons of castings,	Total of prg from and cast- togs.
1828	10.3	00.000	20.010	410.404
	192	90,368	33,036	123,404
1829	192 -	98,234	36 720	134,954
1930	505	118,620	36 728	155.348

But as the greater part of the furnaces not included in the returns, are situated in districts where but few distings are made, the committee have not felt authorised to estimate the quantity of eastings made at them at more than about 5 per cent, of their entire production, which would give the following proportions and results:

YEARS.	Fornaces.	Tous of pig iron.	Tons of castings	Total of pig iron and cast- ings.
1828	192	109,564	14,840	123,404
1829	192	118,405	16,549	131,954
1930	202	137,075	18,278	155,348

From the best information the committee have been able to collect on this subject, they estimate that of the pig iron made in these years, about ten thousand tons per annum, have, upon an average, been converted in the air furnaces and cupolas into castings, leaving to be manufactured into bar iron.

```
In 1828, of pig iron 98,564 tons, making of bars 70,403 tons.
1829, "108,405" "77,432"
1830, "127,075" "90,768"
```

And which quantities severally correspond with remarkable proportional accuracy with the returns from 132 forges, which accompanied the returns from the 73 furnaces first mentioned.

In East Jersey—in a part of Connecticut—in a large district of New York, and in Vermont, bar iron is extensively made by the process technically denominated blooming—or by a single operation from the ore, without the intervention of the blast furnace.

The returns already received justify the committee in putting down this description of her iven for the

Year 1828 1829 1830	at at at	5,341 tons, 5,654 " 5,853 "}Of	which 2,197 tons in East Jersey.
Making a total of bar	iron		
For	1828	of	75,744 tons,
	1829	of	83,086
	1830	30	06 691

And the entire quantity of iron in its first stage, as shewn in the following table:

	1828.	1829.	1830.
DESCRIPTION OF IRON.	Tons	Tons.	Tous.
Pig iron, Castings from blast furnaces, Bloomed bar iron, for the years respec-	108,564 14,840	118,405 16,549	187,075
tively, reduced to pig iron, at 25 cwt. to the ton of bars.	7,477	7,916	6,194
Total iron in pigs and castings.	130,881	142,870	163,542

Total increase of all kinds of iron in two years, very nearly, 25 per cent.

For the purpose of determining the value of the above iron, the committee have taken the average prices of the principal sea ports, and those of Pittsburgh and Cincinnati, and have estimated that two-thirds of the bar iron made in the United States, is sold in the western markets—the proportion may be greater, which would increase the entire value.

In 1828, the average price of American hammered iron, in the principal cities cast of the Susquehannah, was 105 dollars, and at Pittsburgh and Cincinnati 125 dollars, the average, estimated as above, would be 1183. In 1829 the prices were 100 and 122, giving an average of 1143, and in 1830, 90 and 100 dollars, average 984. Castings, from the blast furnaces, are valued at 60 dollars, although many sell higher, and from the sir furnace and cupola, at 4½ cts per lb.—which is certainly not above the average rate.

At these prices, the aggregate value of the iron made
In 1928 would be 10,861,440 dollars,
1829 "11,528,134 "
1630 "11,444,410 "

Increase in market value in two years less than 5½ per cent.—decrease in value from 1829 to 1830, nearly three-fourths of one per cent.

STATEMENT B.

Prices of iron in England, taken from the invoices of the importers in New York.

	F	lat.							R	oun	ds.									Sq	uar	8.			
Years.		nmo	'n		mm ize.			5-8			1-2		9	-8	1-	-4	-	Com			1 - 8				_
1806	1.20	6	0	22	6	0	23	6	0		0	0	-		-	_	19	6	0			7			_
1808				14	5		15	5		1			1		ı										
1809	14	0	0	15	0	0	16	0	0	ł					l		14	0	0	17	0	0			
1810		0	0	14	0	0				17	0	0					13	0	0	16	0	0			
1815	11	0	0	11	0	0	11	0	0	16	0	0			1		11	0	0	13	0	0	,		
1816	10	0	0	10	0	0	10	0	0						ł		10	0	0	12	0	0	1		
1819		6	0	12	6	0	12	6	0	1.			1				12	6	0				ł		
1820	9	16	9	10	0	0	10	6	0	11	6	0	12	. 5	1					11	6	0	1		
1821		15	6	8	15	6	8	15	6	9	5		11	14	13	13	8	15	6	9	15	6			
1822	8	0	0	8	0	0	8	0	0	10	3						8	0	0						
1823	8	4	0	8	4	6	8	4	6	9	4	6			1		8	4	0	9	4	0	11	4	(
1824	9	2	0	9	9	0	9	2	0	18			11	6			9	2	0						
1825	13	15	0	13	15	Ü	14	6	0	1					1		14	6	0	15	6	0			
1826	10	6	0	10	6	0	11	6	0	12	3	0	14	3	1		10	6	0						
1827		13	0	9	13	0	10	0	0				11	7	13	7	9	13	0	10	7	0	11	7	1
Feb'ry 1828	8	9	0	8	9	0	8	9	0	1			1		13	0	8	9	0	9	10	0	11	0	
uly 1828	7	9	0	7	9	0	7	9	0	1			1				7	9		1			10	5	-
1829	6	0	0	6	0	0	6	0	0				1				6	0					l		
1830	6	0	0	6	0	0	6	0	0	8	0	0	1	0	11	0	6	0					i		
1831	55	10		1	am	e	81	me	,	7	10	0		10	9	10	13	5 l to 6	0						

The above prices are pounds, shillings and pence, sterling, per ton.

In 1806, the difference between common sizes and half inch, was nearly 71. ster-ling per ton. It required twenty-five years to bring it down to the present difference of 2 pounds.

B. B. Howell, esq.

Six—I have the honor to hand you the following prices of iron in Sweden, from 1815 to 1831—and you may consider the Russian new sable was at the same prices, and P. S. L at 20s. sterling, per ton, higher, at the same periods.

		(Signed)						N.	SALTU	s.	
March	1815	£ st.	12	0	0	September	1824		£ st. 10	7	6
July	1816		13	10	0	December	1524		11	5	0
October	1816		12	10	0	April	1825		14	3	0
March	1817		13	10	0	September	1825		14	19	0
June	1817		14	0	0	June	1876		12	0	0
February -	1819		16	10	0	July	1827		12	9	0
December	1819		13	3	0	October	1827		13	5	0
January	1820		14	10	0	December	1827		13	5	0
June	1621		13	5	0	September	1828		13	15	0
September	1821		11	14	0	May	1629		13	15	0
November			11	10	0	June	1829		13	9	0
April	1823		12	4	0	Scotember	1829		12	19	0
August	1823		11	10	0	December	1829		12	0	0
December	1823		11	0	0	April	1830		11	0	0
March	1824		11	5	0	May	1831		10	10	0
Americat	1094		10	71	0	1					

Wholesale prices of hammered bar iron in the sea-ports of the United States.

1793	90 to 95 dolls. per ton.	1813	115 to 125 dolls. per ton.
1794		1814	125 to 145
	11 11	1815	130 to 150
1795	19 19	1816	110 to 120
1796			
1797	100 to 105	1817	90 to 100
1798	,, ,,	1818	19 19
1799	95 to 100	1819	11 11
1900	" "	1820	11 11
1801	110 to 120	1821	85 to 95
1802	105 to 110	1822	19 19-
1803		1823	90
1804	"	1824	**
1805	11 11	1825	105
1806	11 11	1826	105
1807	110 to 115	1827	100
1808		1929	105
	1) 11	1829	100
1809	. 11		
1810	115 to 120	1830	90
1811	110 to 115	1831	75 to 85
1812			

## STATEMENT C.

Shewing the effects of a tariff of protection on the article of iron at Pittsburgh and Cincinnati:-

In the years 1818, '19 and '20, har iron in Pittsburgh sold at from 190 to 200 dollars per ton. Now the price is 100 dollars per ton.

In the same years, boiler iron was \$50 dollars per ion. Now at 140 dollars per ion. better iron was but little made in those years, and sold for 18 dollars per cwt. Now made in abundance and sold at 84 dollars per cwt.

Hoop iron, under same circumstances, was then 250 dollars, and is now 120 dolls.

Axes were then 24 dollars per doz. and are now 12 dollars.

Scythes are now 50 per cent. lower than they were then—as are spades and shovels.

fron hoes were in those years 9 dollars per doz. Now a very superior article of steel hoes at 4 to 44 dollars.

Socket shovels are made at 4½ dollars by the same individual who, a few years ago, sold them at 12 dollars per doz.

Stater's patent stoves, imported from England, sold in Pittsburgh at 350 to 400 dollars.—A much superior article is now made there and sold for 125 to 150 dollars.

English vices then sold for 20 to 22½ cents per lb. now a superior article is sold at 10 to 10½.

Brazier's rods in 1824 were imported, and cost 14 cents per lb. or \$313 60 per ton. Now supplied to any amount of \$ to 3-8 diameter, at \$130 per ton.

Steam engines have fallen in price since 1823, one-half, and they have one-half more work on them.

The engine at the Union Rolling mill. (Pittsburgh), in 1819, cost \$11,000—a much superior one of 130 horse power, for Sligo mill, cost, in 1826, 3,000 dollars.

In 1830, there were made in Pittsburgh one hundred steam engines.

In 1831, one hundred and fifty will be made, averaging 2,000 dollars; or 300,00 in that article alone.

A two horse power engine costs 250 dollars; six horse 500 dollars; eight to nine horse 100 dollars. These last are the prices delivered and put up.

At least 800 lons of iron made in Pittsburgh are manufactured into other articles before it leaves the city, from steam engines, of the largest size, down to a three-panny anil.

Eight rolling and slitting mills of the largest power, are in the city of Pittsburgh—five of which have been erected since 1828.

Thirty-eight new furnaces have been erected since 1824 in the western parts of Pennsylvania, and that part of Kentucky bordering on the Ohio river, most of them since 1828.

The quantity of iron rolled at Pittsburgh was in

1828	tons	3,291	19	0	0
1829	21	6,217	17	0	0
1830	**	9,282	2	0	0

Being an increase of nearly 200 per cent. in two years.

The above facts were furnished by members of the committee residing at Pittaburgh, who vouch for their accuracy.

One fact there stated, suggests the following remarks to the committee:

To the report of the select committee of the sense of the United States, on the subject of iron, is appended, among other papers, one in which it is stated, that "it wis now ascertained that the superiority of England over France is entirely due to "the cheapness of iron: a six horse steam engine, for instance, in France, costs on "the average, at least 500 dollars more than in England, owing to the cheapness of iron "in Great Britain— It is still dearer in the United States than in France."

Here it is asserted that a six horse power steam engine costs 500 dollars more in France than it does in England, and that it is still dearer in the United States than in France. Now it so happens, that in the United States, at Pittsburgh, a steam engine, of that power, can be put up, ready for action, for the identical sum of 500 dollars.

## PRICES OF IRON AT CINCINNATI.

1814 to 1818, bar iron 200 to 220 dollars per ton-now 100, 105, 110. The fall in prices has been nearly as follows:

1826	bar iron assorted	125	to	135	dollars.
1827	44	120	to	130	44
1828	44	115	to	125	**
1829	44	1124	to	1221	4 -
1830	- 16	100	to	110	66 .,

1831 " 100 to 110 " Castings, including hollow ware, 1814 to 1818, 120 to 130 dollars per ton: present price 60 to 65, and the quality much improved.

## STATEMENT D.

The following table shows the operation of the additional duty levied since 1816 on hammered iron alone.

				Tons.	Duties.	
1818	imported of l	ammered	iron	13,931	208,950	dollars.
1819	,	11		16,160	242,394	
1820	"	"		19,531	272,877	
1821	"	"		15,374	230,413	
1822	1)	11		26,373	378,641	
1823	"	"		29,014	435,210	
1824	"	29		21,298	353,364	
1825	19	,,		23,085	428,490	
1826	**	13		23,837	427,066	
1827	"	37		21,718	390,924	
1828	11	79		33,153	663,100	
1829	"	,,		29,202	654,141	
1830	37	22	estimated.	29,202	654,141	

Tons S01,880 = 5,369,711 dollars.

Duties at \$9, the rate per law of 1816, 2,716,920

Gain in the treasury, at the expense of the foreign manufacturer \$2,652,791

## STATEMENT E.

The following calculations were made by Hardman Phillips and George Valentine, estimate and are derived from the average returns submitted to the committee from two counties, (those most extensively engaged in the manufacture of iron in Pennsylvania), namely, Centre and Huntingdon, and have been carefully verified by a comparison with returns from 73 furnaces and 182 forges.

For each ton of bar iron and castings, made, the following agricultural produce is found to be consumed:

20 bushels w	heat	and	ry	e , 1	aver	rag	e at		-				-		75	cte.	\$15	00
57 lbs. pork		-	-			•		-		•		-		-	5	**	2	85
43 , beef		-	-		-				-		•		-		4	11	1	72
10 ,, butte	г					-		•		•		•			121	**	1	25
2 bushels p	otato	es			-										30	**		60
i ton hay		-		-		•	-					•		-	7	, 21	3	50

For every ten tons of bar iron one horse is employed one whole year, worth \$100—and experience shews that the mortality among horses so employed is per annum one in seven, and constitutes a charge of, per ton of

For fruit and vogetables, of which no roturn has been made, we feel justified in putting down

27 35

Which multiplied by the quantity of bar iron and castings, will give the sum of 3,415,850 dollars, paid by the iron manufacturers and those employed by them, to the farmers.

The same returns enable them to state, that every five tons of iron, as above made,

- The same returns enable them to state, that every nive tons of iron, as above made, requires one able bodied man throughout the year, or, in the whole, 24,973; and, as it appears that, upon an average, each one of these has four dependent upon him, it follows that 124,895 persons are supported by this branch of industry, in its first stages; and the average of the wages of the workmen being fully one dollar per day, or say 300 per annum, they receive for wages, in the whole, the large sum of 7,483,700 dollars, for the labor of one year.

The expense of transporting this iron to the different markets, by land and water, may be estimated at an average of §10 per ton—amounting to 1,248,940 dollars; the whole of which is distributed among those engaged in the transportation and coasting trade of the country, and sub-divided among those who furnish subsistence to the many persons employed, and in furnishing means for this branch of the business.

[4Since ascertained 30,973 tons—of which only 439 tons were British. The small own to the latter importation, is the best possible evidence of the bed quality of English iron, as stated in subsequent pages, and of its unfitness for the usual purposes to which hammered iron is applied. All such iron pays the same duty.

Permanent Committee: 1

ermanens Communee.

## STATEMENT F.

New York, 29th October, 1831.

To the committee on iron and steel, appointed by the convention of the friends of domestic industry, now in session in that only-

The following examination of the memorial of the workers of iron, and others, in Philadelphia, presented to congress in January, 1831, we submit to you for the use of the convention.

1st. Under their first head the memorialists embrace two subjects: first, the high duty on English iron, and secondly, its quality.

With respect to the rate of duty, we will answer when we review what is said on

the same subject, under their 6th head.

With respect to its quality, the memorialists contradict the report of the committee of the sente,\* which pronounced it "bad"—and say that "English iron is prefered for various purposes, on account of the decided superiority it possesses in various qualities—for its strength of cohesion, its excellence in welding, surpassing severy other iron as in chains and anchors, in rails for railways, solkes and bolts; on

rious qualities—for its strength of cohesion, its excellence in welding, surpassing every other iron as in chains and anchors, in rails for railways, spikes and bolits, on account of the superior manner in which it is prepared in all the various forms required, as well as from its acknowledged superiority in durability; and for wheel tires for the same properties, as well as from the greater evenness with which it is always drawn,—and concludes by saying, that the American, Swedish, Russian and English from all sell it: the Phitadolphia market at about \$100 per ton.

In answer to the above we would remark; that the small quantity of English iron

In answer to the above we would remark, that the small quantity of English 170n imported, in comparison with the total imports of iron, itself confutes their statement as to its superior quality; and conclusively shows that the properties it possesses are not in great requisition here. The ratio of English iron imported, being less than 1 to 7, notwithstanding the advantage it has over other foreign iron of being

procured of any size, and at a cost of 20 per cent. less.

The little use to which this Iron is put will appear more manifest, when compared with the total quantity consumed—as will be seen by refering to our statement under our 6th heast; being only 1-39 of the total consumption; and this too with its advantages as to size and price, above mentioned. These facts show incontestably in what repute this iron is held by consumers. We have been importers, and wholesale and retail dealers in the article, for many years, and/our experience is,—that the united testimony of all consumers is in direct variance to the statement of the memorialists, as to its good quality: the low price and the convenient size in which it may be obtained, is, as general remark, the only reason why it is sold at all.

The memorialists particularize for what purposes this iron is decidedly superior: first, as for chains and auchors on account of its strength and echosion and excellence in welding. If it has more strength of cohesion than other iron, it is new to us, as well as to all the workers of iron, that we have enquired of on the subject. We have no facts before us of the strength of English iron; but we have a certificate from commodare Hull, commandant of the navy yard at Washington, giving the strength of chain iron lately supplied by the New Jersey Iron company. The 14 inch round, broke with 60 tons weight on it, the t 1-8 inch round, broke with 41 inch sweight on it, if it is memorialists have any Irish to show that English iron has more strength of cohesion than this, they are right; but we have no idea that the English iron sent to this country will bear any comparison with the above. As to its superiority in welding, we have enquired of several blacksmiths as to the facts—and for anchors in this country, we have made enquiries, and cannot ascertain that any is used for that purpose in the anchors that come to New York. It appears very strange that American iron for anchors should be sold at \$115 per ton, and prefered that the price, while English iron can be bought at \$12-if the English is superior.

attange that American from for anchors should be soon at a server of an analysis at that price, while English is no can be bought at \$72—if the English is superior.

With respect to its being superior for railways—we cannot conceive how the fact could be ascertained, as an experiment, we think, could not have been made, in this early stage of railways in this country. But as to its superiority for spikes and bolts, we positively deny it. Being sellers of both English and America iron, we know

\*This refers to a report of a committee of the senate made at the previous session adverse to the memorialists.

The proof required by government for 14 inch round from is 35 tons; for 1 1.8

that the American Iron is always prefered, as to the its quality. The English is only used in small vessels of 70 tons and under; while in larger vessels the American iron, at 20 per cent. bigher price, is universally prefered.

As to the "superior manner in which it is prepared in all the various forms required, we would reply—that the rolling mills in this country make all the sizes re-

quired quite as handsome, and far better in quality, than the English.

Lastly, with respect to its "superiority for wheel tires,"—the experience and information of the memorialists is in direct opposition to ours; nor can we conceiva how persons would continue, for years, to purchase Swedish and American iron for that purpose as they do, at 25 per cent. higher price-if the English was superior. It is, without question, the poorest iron for that use that can be purchased, and is only used on account of its low price; which, instead of being \$5 per cwt. we sell by the

single ton at 25 per cent. less, viz: \$3 75 per cwt.

2nd. The second head of the memorial speaks of the manner of making iron in

England, which requires no answer.

3rd. Under this head the memorialists speak of the hardships of purchasing imported iron, of small size, at a high price-in consequence of the duty being 34 cents per lb. on it. That difficulty is now in some measure removed, as one factory in New Jersey is prepared to supply the United States with a better article, and at less price, than it can be imported; and the rolling mills now erecting in different parts of the United States, will be able, from next spring, to furnish all the iron that pays a duty of 34 cents per lb. at less price, and better quality, than it can be imported for.

The following statement will show the comparative price of common bar iron and

inch round in England, from 1806 to 1830.

Common bar i	ron, cost			1	inch round, cost			
1806	£20	10	0	1806	£27	0	0	
1809	14	0	0	1809	18	0	0	
1815	11	0	0	1815	16	0	0	
1822	8	0	0	1822	10	5		
1830	6	0	0	1890	7	0	n	

From the above it appears that the cost in England, as late as 1806, of common bar fron was 1.20 10-and at the same time the price of 1 inch round was 1. 27, or 1.6 10 higher, which is a greater difference than is now made by our rolling mills; and we do not doubt but that the difference in price between bar iron and small round, made by our mills, will be reduced as the quantity made is increased, and our factories become more perfect, as has been the case in England. From 1806 to the present time, the price of iron in England has been gradually reduced in proportion to the increase of the rolling mills, perfection of machinery and skill of workmen. The present difference between bar iron and i inch round is but it per ton.

The quantity made in England in 1787 30,000 tons. ,, nearly 700,000 ... 1796 1830

4th. Requires no answer.

5th, 6th, 7th. Under these heads, the memorialists state that the present rate of duties on the raw material being so much higher than on the manufactured article, gives a decided monopoly to the manufacturers of hardware at Sheffield and Birmingham, that many articles can be imported at or under the present cost of bar iron-that they "have no other object in the relief they now pray for, than to enable them to bring their own industry into fair and equal competition with the foreign manufacturer." Here rests, the whole ground of complaint of the memorialists, viz: on the inequality between the duty on what they call the raw material and on the manufactured article. In order to substantiate the above they instance a number of articles of hardware, which they endeavor to show can be imported cheaper than the raw material itself. We will first gramine their statements of the articles particularized, and endeavor to show that they do not prove the point they wish to establish, and then show the true proportion between the duties on hardware and on the raw material; and we think it will be made to appear, that the manufacturers of hardware, in this country, instead of being less, are protected to a much greater extent than those of iron—which, if proved, will show that the whole ground of their complaint is without foundation. The first articles they instance are hammers and sledges for blacksmiths, which they say "are imported at \$4 66 er ewt. which is 33; cents below the cost of the bar iron in this market, exclusive f duty." We have imported hammers and sledges regularly for many years. Tha of duty."

poerest article we swer heard of being sent to our market, cost 7½ cents per lb.—
these we import are of a quality fit for use, and cost 8½ cents per lb. which is §9 25
per cwt., while we sell English bar iron at retail, for §3 75—leaving a difference of
§5 30 per cwt. in favor of the manufacturer of these articles in this country. The
next article they instance is wheel tire, which they say can be imported at less
cost than bar iron. We have never known of its interfering with the sale of iron
for that purpose. There has, indeed, been two lots of it imported into New York—
but the house who had it, found a difficulty in selling it, and told us, to-day, that
they would have no more.

The next article they advance is frying pans, and state that they are, and ever have been imported, at a less price than the cost of sheat iron, meaning to draw a comparison between the cost of iron in sheets and in its manufactured state. This comparison is evidently unfair, and calculated to deceive. Frying pans are not made of sheat iron only, but partly of sheat iron and partly of bar iron. We import the sheat iron part of frying pans, viz: the bowls, separate from the handles, and they cost, by an invoice dated January, 1831, 10 cents per lb. to import, while the sheet iron part of frying pans, viz: the bowls, separate from the handles, and they cost, by an invoice dated January, 1831, 10 cents per lb. to import, while the sheet iron in a manufactured state. Frying pans, at the same time, cost 6 cents per lb. the state per lb. the sheet iron in a manufactured state. Frying pans, at the same time, cost 6 cents per lb. The next article presented by them is tea trays.—They state that tea trays, with one cost of japan, can be imported at §83.72 per lon, while the iron required for the same purpose is selling at from 160 to 170 dollars per ton. We have imported tea trays for many years, and are totally unable to devise how this can be done. The largest tray ever imported, or, if imported would be used, is 30 by 22 inches; and the poorest article that we ever saw cost 52 cents each tray to import, and weighed 4 lbs. which is 13 cts. per lb. or \$290 per ton, instead of \$83.72, as sated by the memorialist. If tea trays were imported to cut up for stove doors, blowers, &c as stated in the memorial, the edges, which are turned up, must be cut off, or flattened to a plain surface. And unless the memorialists should be more successful than ourselves in an experiment made to ascertain whether it could be flattened out, as it was before it was made into a tray, that business would not amount to much. The smith into whose hands we put it, gave it is proper heat, and endeavored to flatten it under his hammer—but the edges

One ton of trays as above, cost	6291	00
Loss in rims cut off, 37 per cent.	109	
Labor in cutting, one cent per tray	δ	60
Deduct 74 cwt. scrap iron worth \$25 per ton	405	60 38
Making the cost of sheet iron imported by this process, per ton,	\$396	22

The cost of importing sheet iron of the thickness of tea trays is \$135 per ton, in stead of \$180 to 170—as stated in the memorial. We do not say that what the memorialists state is untrue—but we do know the above statement to be correct, and cannot conceive how it could be reduced to \$33 72 per ton, when we make them to cost \$396 per ton.

The memorialists next show that iron knitting needles can be imported, cheaper than wire No. 18. This is true, because there is so little leber in cutting wire into knitting needles. The amount of this article sold per annum, we think, may amount to \$200—leo hundred dollars.

The memorialists next proceed to show that the duty on wrought nails preclude all possibility of competition between the domestic and foreign manufacturer. "The fact about the nail making is, that the manufacture of nails (whether cut or wrought, it matters not) has been brought to such perfection in this country, that 40,000 tons are annually made here, while only 266 tons are imported.

It matters not has been prought to seem perfection in the country, that we you can be are annually made here, while only 266 tons are imported.

The memorialists further state, that the duly on wire being high, operates against the manufacture of wire seives and fenders. We think they are unhappy in their selection of these articles also, to prove their point—as from all the information we

are able to collect, there are no wire seives nor fenders imported into New York-

but that market is supplied exclusively by the domestic labor.

The next article they bring forward is horse shoes—which they say can be imported at the price of but iron, and have become an article of import. This might have been said for many years past, as attempts have been made, from time to time, to import them to advantage-but all experiments, within our knowledge, have fail-We ourselves made the attempt about three years since-but could not do it to aprofit; and are perfectly willing that others should purchase experience at the same cost. Common English iron would not answer for horse shoes. We have in ported best English iron in bars for that purpose—but never could get any good enough. The American and Swedish are exclusively used.

The last article they instance is hoops for coopers, bent and rivetted, ready for use-which, they say, can be imported cheaper than the hoop iron. This may be true, for aught we know; but we have never heard of any having been imported, yet are in the practice of importing and selling hoop iron; and if there had been any competition from that quarter, we think we should have known it. For our part, we do not feel disposed to enter into the import of finished hoops, and it apears that others in the trade have a similar indisposition. We leave the reader to judge whether on the few articles they have selected to show that the manufactured article can be imported cheaper than the raw material, they have proved the point, which, if they have proved, would establish the principle as to a few articles only, and not on hardware in general.

We now proceed to show the true relative proportion between the duty on iron is hardware and on the raw material. The memorialists say that "the duty on iron is hardware and on the raw material." The duty on hardware." When they We now proceed to show the true relative proportion between the duties on from 159 to 282 per cent. or from 6 to 11 times the duty on hardware." When they say the duty on iron is from 159 to 282 per cent. they speak in such general terms as to convey the idea that the duty on iron, generally, is that much. We will first We will first show what is the average duty on imported iron.

The quantity of iron annually imported, as stated by the memorialists, is as follows:

	Tons.	Duty p	er ton.	Total duty paid.		r ton, in-	Total cost including duty.
Swedish and Russia	p 29,486	\$22	40	4660,486		00	2,801,170
English bar Iron	3,3321	37	00	123,302	75	00	249,938
Sheet, rods, &c.	1,168	78	40	91,571	130	00	151,840
	33,986			\$575,359			\$3,202,948

By the above statement it appears that the average duty on all the iron annually imported, is less than \$26 per ton.

The following statement shows the annual consumption of iron in this country, as per report made to the convention of manufacturers of iron, lately held in Phila-

In 1830 there was made at 202 furnaces. Of which was made into castings	155,348 28,273
Tons	127,075
Which rendered into bars, at 28 cwt. per ton, would yield There was made of bloomed iron	90,768 5,853
Total bar iron made annually in the United States Add the quantity imported	96,621 33,986
Annual consumption of bar iron, in the United States Besides what is made from the blast furnaces into castings	130,007 28,273
Iron consumed in the United States annually	158,280

Though the duty on a small portion of the iron imported is high, yet, as we have shown that the average duty is less than \$26 per ton-while the proportion of the ron imported that pays \$37 per ton duty is less than one-seventh of the total imports, though it sells at 20 per cent. less than any other iron, and that part which pays a duty of \$78 40 is only one-thirtieth of the entire importation.

But when we compare the quantity of iron consumed in this country that pays a duty of \$37 or \$78 40 per ton with the total consumption of bar iron, to say no-thing about iron made into castings - it sinks into insignificance. The proportion of that paying \$37 duty being only 1-39th part, while that paying a duty of \$78 40 is only 1-112th part: to which if we add the iron made from the blast furneces into eastings, it will sink still lower.

In order to ascertain the actual duty paid per ton on iron, in the shape of hardvember this year, as well as those of another hardware house for the same time. viz. Messrs. Hyers:-the result is as follows-

cost stg. tone and parte. £4,314 59 15 1 6 5,710 69 19 1 4 duty paid. \$6,180 24 \$103 40 G. & W. imports Heyers 7,112 02 104 50

The approximation of the duties paid per ton, by the Messrs. Heyers and ourselves, renders it certain that the above is as correct a view of the average duty paid on

hardware as could be obtained -from which we draw the following results: There was imported of hardware in 1828-9 \$3,346,146

The duty upon which, estimated as paid in the two importations above mentioned, is 30 per cent.

The weight of which, taking the two imports above stated as the data. 1,003,843

was 9.763 tons.

If the American manufacturer of hardware had his iron at the average rate duty paid on iron, it would have been, on 9,763 tons, at \$26 per ton

And he would have received a clear protection of \$749,995

That is, the importer of the manufactured article would have had to pay four times as much duty as the manufacturer who imported the raw material and worked it up here-or, if the manufacturer of hardware had imported his iron, and paid the duty as on English iron, of \$37 per ton, as calculated by the memorialists, he would have paid 4361.231

And received a clear protection of

\$642,612

253,849

That is, the importer of the manufactured article would have had to pay nearly three times as much as the importer of the raw material, who worked it up here.

From the above statement of facts, the reader can judge how much weight should be given to what the memorialists say, as to the exclusive protection given to the raw material over the manufactured article.

8th. Under this head the memorialists recommend that pig iron should be admit-ted free of duty. They exhibit a calculation, to show that if pig iron was admitted free, that bar iron could be made here at \$40 per toon. We will examine the correctness of these statements upon their own ground. We imported a parcel of pigs from England about the time the memorial was written, and so have the expenses of importation, which are as follows: There are two iron districts in England—Wales and Staffordshire; we will take the price of a ton of pigs in Wales, as it is less there, and more favorable to the memorialists.

Cost of 1 ton pigs in Wales	£3 5 0
Freight and insurance to Liverpool	0 8 0
Charges at Liverpool	 0 1 8
Export duty	004
21 per commissions for purchasing	0 1 9
	5 16 9
Exchange, insurance, \$4 per cent.	0 6 6
Freight to New York	 0 10 0
	£4 13 3

It included every article usually imported, subject to specific as well as ad valorem duty, anvils, &c. &c. No part could probably be a more fair specimen of the whole imported.

£4 15s. 5d.	la \$20	70
Cartage in New York to store		50
Merchant's commission and storage 54 per cent.	1	05
Transportation to nearest works	3	00
	-	
	25	25
28 ewt. to make 1 ton bar iron		11
		-
Cost of pigs to make 1 ton bars	35	56
200 bushels of charcoal to convert pigs into blooms, at 5 cents	10	-00
Labor on do.	7	00
175 bushels of charcoal to convert blooms into bars	8	85
Labor on do.		
Re-transportation to market	3	00
Water privileges, dam, and overseeing		00
	-	_
	\$71	21

Cost of bar iron made of imported pigs, free of duty, and this the memorialists say could be made for \$40 per ton, and if puddied, less. We have shown that it could not be done for any thing like the money with charcoal; neither could it be puddled, as we know by experience. The consequence of a repeal of the duty on pig iron would be, not that we could make har iron here at \$40 per ion, but it would cost us \$71 21, which is more than we now pay for iron imported from England, made of the same material, and, in doing so, would destroy all the furnaces within the influence

of the imported pig iron.

That pig iron could be imported, free of duty, cheaper than we can make it in this country with charcoal, is without question; but suppose it to be admitted free, who would be the consequence? From these pigs we could either make an iron that would suit our wants, or we could not. If it were good enough for general use, all the furnances within the reach of its influence must stop, of course, because they would be undersold, the selling price of American pigs being from \$28\$ to 40. If it would not make a better article than we now import from England made of the same pig iron, we should not want more than we now take; for if the quality was adapted to our wants we would consume it now, its price being a sufficient inducement. By granting the prayers of the memorialists to admit pig, boiler, scrap, blooms, &c. free, and bar iron 25 per cent. ad vad. duty, it is manifest that we must either substitute an inferior article of English iron in place of that made in this country; or, if we can make a better article from the pigs than they do, we will cause a considerable portion of our furnaces to stop, which would destroy more capital and throw out of employ more individuals than would be employed in manufacturing hardware, in very many years.

By granting the fourth, you would destroy those manufacturers of wire who have commenced since the tariff of 1923, in the faith of the government; one of whom told us that he can make this year wire enough to supply the United States, and sell it at

a less price than it can be imported.

By granting the last, you would cut off all inducements to the manufacture of steel, which we think (and we have given the subject some investigation with a view to manufacture), can and will be successfully accomplished. Lastly, what would be the state of our country in case we had to depend upon a foreign supply for so necessry an article as iron, and especially when our main dependence would be upon England, who, in time of war, could blocked our ports, stop supplies, and cause greater evils than the nation we think is willing to expose itself 10?

From the preceding statements it is manifest, that the quantity of iron manufacturad in this country is not inconsiderable, as the memorialists call it—but is about four times as much as is imported in any shape, which is more than is made in any other country excepting England, more than 2½ times as much as is exported from Sweden, and as much as was made in England at the beginning of this century.

The amount annually manufactured in the United States is tons 159,280

While the amount imported in bars, &c. is 33,968
Imported in hardware 9,763
43,731

The value of American iron, as per report of the committee on the subject of iron appointed by the convention lately held in Philadelphia, is

\$11,444,419

While the value of that imported in bars, &c. Including 5,202,948 the duty is

Value of the iron in 9,763 tons, imported in the shape of

- hardware, estimated at the same rate as the above

678,670

\$3,881,618

From which it appears that the total quantity of iron imported in every shape, is

about 1-4 of what is made here, and its value about 1-3

It is incumbent upon the memorialists to show whence we are to get a supply to meet the deficiency occasioned by the suspension of a large portion of our furnaces. For our part, we do not see how we could get a supply, unless we could make a bet-ter article out of English pigs, than they send to this country. Any one who is acquainted with the situation of Russia, with respect to the quantity we could get from thence, and the practicability, under the existing state of society and civil government, would think an increase of 10,000 tons a large calculation. Sweden exports only 50,000 tons per annum, that being the total quantity the law allows to be made for foreign consumption, as each factory is confined to a certain quantity in proportion to the wood land owned; and the wood land that is proximate enough to be used for iron making, has been brought into use for that purpose long since. Of that 50,000 tons we take 20,000, and a considerable portion of the remainder, say 10,000 tons (including the steet iron which the English monopolise), goes to England; the remaining 20,000 tons goes to the continent; so that we cannot get much more from thence without paying more for it than others can pay. But suppose we can get from Sweden dan an increased supply of 12,000 tens; there remains unsupplied yet upwards of 71,000 tens, which the memorialists will please inform us where to obtain, unless the price should advance enough to enable our own manufactories to go into operation again? In which case the proposed change would be of no avail.

We will conclude with showing the comparative value to the country of the pre-sent manufacture of iron and of hardware. If we should make all the hardware we consume and import the iron for it, as proposed by memorialists.

Made in the United States 158,230 tone iron value

\$11,440,410

Total amount of bardware imported, value

The value of the 9,763 tons iron to be imported to make

390,520

2 955 626 They would, therefore, nearly destroy the manufacture of an article valued at \$11,440,410 to establish one valued at 2,955,626, even if we allow that all the hardware now consumed could be made in the United States.

We think we have proven in the foregoing statements -

1st. That the quality of English iron, instead of being good as the memorialists re-

present, is the worst iron in use.

this hardware, would be, free duty

2d. That the duty on iron in bars, &c. instead of being from 6 to 11 times higher than the duty on iron imported in the shape of hardware, as stated by the memorialists, is but 1-4 as high, inasmuch the average duty paid on iron in bars, rods, sheets, &c. is \$26, and that imported in the shape of hurdware is \$104 per ton.

3rd. That the quantity and value of iron, actually manufactured in this country, is not insignificant in amount, as there is made here per annum 158,000 tons 411,440,410 While that imported in the shape of bars and hardware is 43,731 tons,

value, including the duty

3,881.618

And of course the statement made by the memorialists is not true, that there is only made in the United States 35,000 tons, and imported 81,000 tons.

4th. That by granting the prayer of the memorialists you would almost annihilate the manufacture of an article which has grown up under a protection to the value of \$11,440,410, to establish one of \$2,955,626. Yours respectfully,

GREEN & WETMORE.

# STATEMENT G.

New York, October 31st, 1831.

B. B. HOWELL, ESQ.

Dear sir-In conformity with your request I herewith give you a statement of the iron produced in Litchfield county, Connecticut, with the manufactures of iron and steel, in said county; to which I have added the other productions of the county, as estimated by the delegates to the convention from that county. It may not be perfectly accurate, as a portion of it is founded upon conjecture; but the total will rather fall short of than overrun the true amount, as a very considerable list of articles, each of small comparative value, are entirely omitted.

## I am, very respectfully,

Your obedient servant, .

JOHN M. HOLLEY.

	Value.		1	Value.	
Pig and bar iron, &c.	\$293,000	00	Brought forward	\$451,700	00
-		_	Shoes and boots	112.000	00
Manufactures of iron &c.			Carriages and wagons	38,000	00
Scythes	\$56,000	00	Clocks	382 000	00
Hoes	7.150	00	Leather	161,000	00
Axes	26,500	00	Cabinet work and chairs	27,000	00
Rat and mouse traps			Cordage	500	00
Shoe tacks and sparables	40.000	00	Machinery, part wood and	part	
Shovels and spades	6,500	00	iron and steel	19,000	00
Augers	200	00	Brick, clay furnaces and n	nar-	
Steel	8,000	00	ble	38,200	00
Pitchforks	20,000	0()	Rakes and brooms	5,000	00
Ploughs	3,800		Lime	5,000	00
-		_	Musical instruments	2,200	00
	\$177,650	00	Buttons	20,000	00
			Cheese	115,000	00
Other productions.			Butter	17,600	00
Wool	\$151,000	00			_
Woollen cloths	215,000			\$1,414,200	00
Cotton do.			Pig and bar iron	293,000	00
Hats	70,700	00	Manufactures of iron, &c.	177,650	00
Carried forward	\$451,700	00	Total	\$1,884,850	00

## STATEMENT H.

## MANUFACTURES OF DELAWARE COUNTY, PENNSYLVANIA.

To the delegates to the convention to be held at New York-

The committee appointed, in pursuance of a resolution adopted at a meeting of eithers of Delaware county, convened agreeably to public notice, in Chester, on the 17th Inst. "to ascertain the number and extent of the different manufacturing "establishments in the county; the quantity of manufactures produced; the quantity of raw material consumed; the number of hands employed," &c. &c. Report—That, from the short time to which they were necessarily limited, they have been unable to collect that foll and complete information on the subjects committed to them which the importance of these interests require. But referring the delegates for more minute details of the distribution of our manufacturing and mechanical industry, to a printed report (a copy of which is enclosed), taken by Benjamin Pearson, esq. under the direction of a committee appointed for the purpose in 1828, your committee offer the following statement, made up of such details as they have been able to procure, in addition to their personal knowledge of facts, and they believe it will prove in the aggregate not far from correct.

JOHN P. CROZER, Chairman.

October 22, 1831.

\*This small county contained 14,810 inhabitants in 1820.

[Per. Com.

Mills and Factories.	Quality manufac- tured per annum.	Kind.	Value per annum.	Persons employ- ed.	
4 Rolling and slit- ting 2 Nail factories	}1,400 tons	300 tons sheet iron 600 ,, nails 500 ,, hoops	\$45,000 81,000 60,000	205	
4 Tilt mills	1	edge tools, spades	21,178	30	
13 Paper mills	41,000 reams	various	215,000		
13 Cotton spinning		yarn	300,000		17,350 sp.
3 Cotton weaving mills Woollen mills	into	ticking, muslin, &c. flannel and sati-	350,000	400	er looms.
y vonon minia	wool	netts	300,000	350	
		Totals	\$1,372,178	2,185	

## STATEMENT I.

## REPORT ON STEEL.

On the subject of steel, your committee reports, that, as no preparation whatever had been made for collecting information antecedent to this convention in New York, they are not able to supply it from any other source than what is attainable in this city. They have no time left for collecting and collating tabular statements, or statistical reports, of the quantity of steel imported, and manufactured in this country: nevertheless, enough information has been acquired in the course of a day, to satisfy the committee, that the article in question is one that requires the continued protection of government. The committee assume the principle, that, if steel can be manufactured now, or within a few years, to supply the wants of our own citizens at a reasonable price, it cannot be an object towards which the legislature will be indifferent, and it is deemed expedient that even the limited information now produced, should be disclosed, in order to encourage reflection and secure that consideration which the article of steel unquestionably merits.

Without seeking further, the members of your committee are enabled, from their recollection, to enumerate fourteen steel furnaces in the following places, viz.

Pittsburg 2; Baltimore 1; Philadelphia 3; New York 3; York county, Pa. 1; Troy 1

New Jersey 2; Boston 1.

These furnaces are known to be now in operation, and of a capacity sufficient to supply more than 1600 tons of steel, annually; an amount equal to the whole importation of steel of every kind. But it should be observed that steel for common agricultural purposes, is not the best, although it is most used; and that American is guite quad to English steel, used for such purposes in England. American competition has excluded the British common bluster steel altogether. The price of blister steel is less than it was before 1828, and probably as low as it ever will be:-certainly as low as it ought to be, having a just consideration for the manufacturer and his customer. The only steel now imported from Great Britain is of a different and better quality than that just mentioned. It has been the laudable pride of American legislation to advance with the increasing enterprise of the people, and to encourage discoveries of those mineral treasures, towards which that enterprise might be profitably directed. The committee having shown the result of such countenance from government in the instance of common blister steel, may be allowed, to anticipate the effects of its continuance; and that protection will be hereafter acknowledged as the parent of perfection.

"Including families.

† Mr. Coates has subsequently requested the chairman of the permanent committee to add the following note:

This calculation is believed to fall far short of the quantity of steel made in the United States. It appears that the 14 furnaces have only one batch, or blast, in a month, whereas two weeks are sufficient for conversion of iron into steel.

Steel imported here from all parts of the world, except Eugland, (although the German steel is freely employed in some branches of manufactures) amounts, to so inconsiderable a quantity that the competition for ascendency in our own market must rest between that nation and this. We already supply ourselves to her exclusion, with common steel, and to give some idea how extensively it effects our manufactories, the committee will state two or three striking facts. The iron of this country, when properly made, has been found equal in quality to the Russian and Swedish from used in England for conversion into steel, and being so converted, is employed in making large and rough implements of manufacture and agriculture. It is used in the fabrication of plough shares; it is worked up by shovel makers, among whom one in Philadelphia uses note than fifty tons a year. Seythe makers are among the best customers of a steel furnace, and cross-cut and mill saw makers use more than any other manufacturers. One factory of this kind in Philadelphia, requires a ton and a half of steel per diem, for every working day of the year. These isolated instances may give some idea of the vast consumption of seel in the numerous factories of the United States, and for this purpose alone they are stated.

The English however, continue to supply us with the superior qualities. These are

1st. Blister steel, from iron of the Danamoura mines in Sweden.

2d. Sheer steel, of the same origin.

3d. Cast steel.

As to the first, being the best quality of blister steel. A house in Hull monopolises all the iron made from Danamoura ore, under a contract by which the parties in Sweden are to forfeit 10,000f, sterling, if they sell to any body else—so that no other European country can furnish a good file without resorting to England for the steel that is made of Danamoura iron; this excelling all others in Europe for files and many other instruments. The British manufacturers, aware of the advantages of their monopoly, continue to exact the same price for their steel delivered in America, that they did before the duty on the Swedshi iron was reduced in England from 25 88 to 56 66 per ton—thus proving that an article whose low duty approaches nearest to no duty, (almost "free trade") is charged to this country at a rate no less than before the reduction of duty took place in England.

It is, however, a cause for congratulation here, that iron of similar or equal quality to that which has thrown all the advantages of manufacturing the best articles of ouldery into British hands, has been made recently by improved processes from the ore of Juniata, and both sides of the line between New York and Connecticut. The latter denominated the Ancrum, the Livingston and the Salisbury ore. Steel is now made at Pitsburgh, and may be made in New York and Connecticut, bearing a fair comparison with the best loop L (L) or Danamoura steel, that comes from England. No difference is observed where trials have been made without disclosing to the judges the origin of either. Two establishments, one in New York, and another in Pittsburgh, have justified this statement, and encouraged a hope that the products of our own mines, smelted by means of modern improvements in the construction of furnaces and application of the blast, and elsborated by machinery lately introduced, will rivel the best quality of steel that England can furnish

The second kind of first quality British steel is called "sheer steel." This is nothing more than bister steel drawn under a tilt-hammer into bars of the various sizes used in the fabrication of some articles of cutlery, and the finer kinds of edge tools. England has hitherto monopolised this branch also, from being in possession of the only European steel that would bear the expense of preparation; and from the perfection of her machinery. She has now the honor of transfering a portion of her experience and skill to the United States. Her workmen in steel, wanting employment or adequate recompense for labor at home, continually seek them among us; and it is believed that these may be afforded to such an extent as to yield them support commensurate with their industry—and that ingenious men, who, under other circumstances might have been compelled to pursuits not congenial with their education, or to be dependents upon public bounty, will become useful eitizens, instead of idlers and beggars in the land.

The third kind of steel, best quality, is called "cast steel," and this is made from the best bister steel, only. There is none made in the United States. Several stempts to make it with profit, have proved unfortunate.

The causes of failure were-

Pirst.—The want of best quality blister steel (of which only it can be made), at a reasonable price.

Second—The want, or expense, of crucibles of proper quality, wherein the blister-steel is to be melted and smelted.

The first difficulty may be surmounted by the discovery that iron, well made from the ores of Juniata, New York and Connecticut, may be converted to the best bister-steel: and the second difficulty is believed to be at an end, since the explorations of the present year have disclosed the existence of clay analagous to that of Stroubridge, which is considered the best in the world for crucibles. Centre, Clearfield and Lycoming countles, (Penusylvania), have yielded large specimens of clay that satisfy geologists, mineralogists and chemists, of the identity of its properties with those of Stourbridge. Clay, in the vicinity of Baltimore, has been successfully employed in the manufactere of fire brick, and may probably be used for the manufacture of crucibles for cast steel, if properly prepared. The great impediments to the making of cast steel has not arisen from any mystery in the art, but the want of strength in the crucibles. Black lead, and a variety of clays, have been tried, but the weakness of these materials have bitherto caused a loss to the manufacturer, because the crucibles made of them would not bear moving when the melted metal was in them, (generally about 28 lbs.) The Stourbridge was the only kind of clay that possessed the requisite qualities of preserving its shape and soundness when exposed to the greatest heat, and its strength and tenacity when moved for the purpose of discharging the melted metal. Capital, enterprise and perseverance will be engaged to bring this desirable material, so indispensable to the finer arts of cutlery and machinery, into market—if protection be continued to the efforts which our citizens are willing to make.

If these views are correct—we have steel for agricultural purposes in the greatest abundance:—We have steel, (sheer steel), for nicer purposes, and we may have est steel for the most refined articles of manufacture, among ourselves. But this is not all, we may export our steel to Ressia, Prussia and France, in competition with England herself; and thus justify the further importation of foreign commodities which we can have the means of paying for. The subject of steel becomes more interesting as our investigation of it advances; but it is believed that the facts and inferences now set forth, will suffice to continue the protection already granted, and to procure time for more extensive practical development, which, if realized, will add to the means of domestic employment and beneficial intercourse with fo-

reign nations.

The preceding report on steel was presented by Mr. John R. Coates, of Philadelphia, to whom this branch of the subject had been specially referred, for a collection and arrangement of the facts; as was that on iron, proper, to Mr. B. B. Howell, of New York, by the general committee on the manufactures of iron.]

## GENERAL RECAPITULATION.

[By the Permanent Committee.]

	By the re-	Supplemen- tary returns.	Total
Bar iron made in the United States, ton	96,621	16,245	112,866
Pig iron, the whole quantity made being computed as such	163,542	27,994	191,536
Value , dollar			13,329,760
Men employed number	r. 24,979		29,254
Persons subsisted	124,895	1	146,273
Appual wages dollar	1,493,700		8,776,420
Paid for food furnished by farmers . "	3,415,850		4,000,480

FRAUDS ON THE REVENUE.

The committee, to whom was referred, the resolution "to inquire and report upon any evasion of the existing revenue laws,"

RESPECTFULLY REPORT:

That, in attending to that duty, they have found a difficulty in obtaining as complete a statement of facts, as it is desirable to present. Full and satisfactory evidence, has, however, been produced, to satisfy their minds of the existence of extensive frauds; but from the nature of the subject entrusted to them, few facilities were afforded to substantiate, at this time, by direct testimony, all the various decies which are resorted to for the purposes of eading the payment of the full amount of duties extained the payment of the full amount of duties extained by the posterior of the continuous c

The principal evasions of the revenue laws have been made in the importation of broad cloths. By the law of 1828, every yard of imported woollen cloth, six quarters wide, costing six shillings and nine pence, sterling, may be legally entered at the dellar minimum. Every yard 6-4 wide, costing six of 104. must, in conformity to that act, be entered at the two dollars and fifty cents minimum. In the first case the duty is 67½ cents per running yardin the second case the duty is \$154 cents. This part of the law is thus particularly stated, in order to show the manner in which it is evaded. The law of 1830, passed expressly for the purpose of enforcing that of 1828, has hitherto but partially effected that object; it has been the means of developing the extent of the evil, rather than of arresting it.

This has been owing, in some degree, to the American opponents of the protective system—who have endeavoured to render that law as odious as possible; in which they have received material aid from those foreigners who are extensively engaged in importing—and from the agents of foreign manufacturers resident in this city. Some of the journals, opposed to protection, have also lent their aid to disparage the law; denying the existence of frauds, and thereby rendering the execution of it unpopular. Even some of the persons whose duty it was to enforce the law, joined in the cry that it was oppressive, and spoke openly of it as inliquitous and unjust.

Your committee are informed, and believe, that fourfifths of all the importations of dry goods into this port are on foreign account; and in the particular article of woollen cloths, seven-eighths of the whole amount are thus imported.

The value of the importations of broad cloths by four of these foreign agents, amounted, in the last twelve months, to one million and a half of dollars. Either from the force of public opinion, that no fraude existed, or from the ingenuity and management of those who committed them, but few frauds were discovered during the first year of the operation of the law of 1830. But little variation from the former practice of sending cloths to the public stores for appraisement, was adopted by the collectors for appraisement, was adopted by the collector of this port. As formerly, and in general, only one package out of each invoice was sent for examination—which package, your committee believe, was properly examined; but singular as it may appear, that one package of cloths was generally invoiced at a price which made it liable to the duty on the two

dollars and fifty cents minimum—at which price there was little or no inducement to defraud. since eloths, costing and entered under that minimum, are consumed in much smaller quantities, and because these must produce, on the average, five dollars per yard to pay cost of importation.

It is obvious from this circumstance, that the attempts at fraud were almost wholly confined to cloths at the lower, or one dollar minimum .- few of which were sent to the public stores for examination. To explain this more fully, it is important to state, that invoices were made up abroad to complete this mode of evading the examination of the cloths at the dollar minimum, by sending to the consignee, here, one case in each invoice of the higher priced cloths already named, or one that was fairly charged at 6s. 9d. and managing to have that alone selected as the one case out of the invoice to be sent to the public store, in compliance with the law and the practice above mentioned: - keeping back the other packages which, although invoiced at a price that would admit them to entry at the one dollar minimum, but which had actually cost from 20 to 50 per cent. higher, and ought to have paid duty on the two dollars and a half minimum. Thus it has been escertained, that, in six months immediately preceding the first of April last, one foreign concern entered, at the custom house in this port, more than four thousand pieces, or about eighty thousand yards of broad cloths, which, with the exception of about three hundred pieces, were entered at a value, per invoice, not exceeding 6s. 9d. sterling, and those, for want of a thorough examination, were allowed to be entered at the one dollar minimum. These cloths produced, in this market, from three dollars and a These cloths quarter to four dollars and a quarter, per yard; while cloths, honestly invoiced and legally entered at the one dollar minimum, it is well known, did not bring more than from two dollars seventy-five cents; to three dollars per yard-thus satisfying your committee that the government must have been defrauded of more than thirty thousand dollars on these importations; -and proving that the cloths which were sold at from three and a quarter to four and a quarter dollars per yard, were fraudulently introduced into the country; unless we are willing to admit the absurdity, that this market was kept fully supplied with cloths during a whole season, either at an enormous loss to the importer, or else at an extravagant profit, varying from thirty to seventy-five per

Your committee are the better satisfied of the fact that these cloths were fraudulently entered, from the knowledge they have obtained, that, as soon as they were put into the possession of the parties entering them, all the marks and numbers by which they might be identified, were generally removed. In a late instance, a number of pieces of cloths were seized in an auction store in this city, under infor-mation given to the collector that they had been falsely entered; and when they were examined, it was found that the original marks and numbers, by which they might have been identified, had been taken off and others substituted. What the object of such practices are, your committee leave the public to judge. In further proof of this allegation, the collector of this port, being fully convinced that these modes of evading the revenue laws were carried on to a great extent, and being urged to adopt. as the only method of correcting the evil, the examination of entire invoices, has, during the last five or six months, caused all the cloths invoiced and attempted to be passed at the dollar minimum, to be sent to the public stores for examination:—the result of which has been, that about three thousand pieces of these cloths have been adjudged by the appraisers to have been undervalued, and to have cost from 7s. 6d. to 8s. sterling; consequently rendering them listed to the duly on the two dollars and a half minimum:—and, extraordinary as the fact is, in all hut a few cases, the importers, after detection, have been permitted to enter their goods on paying only the duly under the advanced minimum, instead of being subjected to for feiture, according to law.

One house, alone, has paid about fifteen thousand dollars additional duties on cloths thus put up; others five and six thousand dollars,—others smaller amounts; and only the very trifling and inconsiderable amount of about a dozen packages, during the past year, has been libelled,—and but one adjudicated on, which was condemned. Your committee feel themselves hound to express, in the strongest terms, their disapprobation of such an execution of the laws. Can stronger evidence be adduced of the intent to defraud the revenue by such importers, than the fact, that they will and do pay, when so detected, one dollar and sixty-seven and a half cents the running yard duty on cloths, which they have just sworn that the cost in England entitled to entry at 674 cents per yard?

Your committee not only believe the intent to defraud the revenue is thus apparent—but they are further convinced, that PERJURY is thus frequently committed with the greatest impunity!

Your committee take the liberty of pursuing this particular subject a little further. The investigations made have convinced them, that, notwithstanding the quantity of cloths thus found undervalued by the appraisers and put up by them, to the next highest minimum was very great; yet many hundreds, if not thousands of pieces have heen allowed to pass as correct, in consequence of the standard of value, at the custom house, of the dollar minimum cloths being from 6d. to 2s. sterling per yard, below the value of said cloths, in the market from whence they This has been (as your committee believe), one of the principal causes why the collector has preferred the course of enforcing the payment of the extra duty of one dollar the yard, rather than libelling, and taking the risk of condemnation, when the appraisers had only estimated them at 6d. or 1s sterling undercharged-although, in fact, from 2s. to 4s. sterling undercharged; and had they been so put up, by the appraisers, the intent to defraud would have been so manifest that there could have been no hesitation, on the part of the collector, to libel; hut as, in most instances, they were only raised a few pence, the intent to defraud was less visible, and might not, in his opinion, be sufficient to be relied on for condemnation.

Among the evidences that have produced conviction on the minds of your committee, that the statements above made are true, the following are submitted:

In May last, two of your committee, with one of the most extensive American importing merchants, made application to the collector of the port, to be shown any cloths that were then in the public stores, that had been stopped by the appraisers as undervalued—he promptly and politely acceded to their request, and accompanied them to the stores where a number of bales were shown to them, and they examined five or six, which they estimated to have cost as follows:

1	package	7s. 9d.	to	10s.
1	41	9s.	4.6	10s. 6d.
1	66	98.	44	9s. 6d.
9	44	10s.	44	10s. 6d.

Supposing that, as the appraisers are bound by law to estimate the value of the cloths in each package, by the best piece in it, and as the whole were much

above the standard of the dollar minimum cloths, or 6s. 9d. and the hest pieces full fifty per cent. Ligher, they took it for granted that all would be libelled and condemned. It has, however, now come to the knowledge of your committee, that none of them were libelled (although all of them were marked up, as they were estimated by the appraisers to have cost but 1s. 6d. except one which was estimated at 7s. 9d.) and the whole were permitted to be entered and the duties paid, under the two dollar and fifty cents minimum. Here is, certainly, a very strong case, proving the very low standard by which the appraisers must have been governed, it being from 2s. 6d. to 3s. per yard, (nearly fifty per cent), below the judgment of one of the most extensive American importers in the United States. The appraisers being bound by law to take the hest piece in the package as the value of the whole; but there were two packages, in which there was but little variation of price, estimated as above at 10s. to 10s. 6d. the yard, which the appraisers only rated at 7s. 6d. to 7s. 9d.

Stronger presumptive evidence could not readily be adduced, that the prices affixed to the above named cloths by the appraisers, were much lower than their actual cost. It is not probable that the mere difference of 9d. sterling the yard, which brought them under the higher minimum and subjected them to the payment of one dollar the yard additional duty, would have been submitted to by all the consignees or owners, when they could have heen returned to England, from whence they came (as has been permitted, though contrary to law), at a much less loss than to have paid the extra duty and sold them here—as 6s. 9d. cloth would pay cost and all expenses of importation, if it brought two dollars and seventy-five cents per yard; but a 7s. 6d. cloth (and only 9d. more cost), if entered according to law, must bring four dollars the yard to pay the cost and charges. That it would not bring any such price, by at least seventy-five cents the yard, is well know to all buyers;—the loss would therefore be seventy-five cents the yard, is well know to all buyers;—the loss would therefore be seventy-five cents the yard.

If a cloth that cost in England 9: to 10s. is only estimated by the appraisers at 7s. 6d., it is a fair, and in the opinion of your committee, a pretty cosclusive evidence, that the cloths that really cost 1s. 6d. to 8s. and invoiced at 6s. 9d. would be allowed an entry at that price, without being detected; and that they have been, in hundreds of instances, there is not a shadow of doubt, or this market would not have been so liberally supplied with cloths selling at from three to three and a half dollars per yard.

Your committee deem it important to state further, that, in their opinion, the greater part of the cloths which have been raised by the appraisers from about 6s. 9d. the dollar minimum, to from 7s. 6d. to 8s. have subsequently been allowed an entry by the officers of the revenue, at the two dollars and a balf minimum, have been admitted to entry in direct violation of the law of 1830.

This opinion seems fully confirmed by the circumstance, that, although this mode of raising the valuation of them was allowed by the law of 1823, that law subjected the cloths to fifty per cent. additional duty, while the law of 1823, evidently substitutes seizure and confiscation in case fraud shall be detected. It is evident that so long as the practice prevails of only marking up goods that are found undervalued, the greatest possible inducements are held out to attempt frauds; since, in case of discovery, the particular production of the control of th

histration of the law prevails, attempts will be continged to evade it.

That the evil now exists is established by the fact that, of the numerous cases in which attempts to enter goods at an under valuation have been detected by the appraisers, but in a few instances, as before remarked, have the goods been libelled; and, in but one instance, have the penalties of the law, by forfeiture been enforced.

While the statements already made by your committee, prove the great cause they have to complain of the manner in which the revenue laws have been administered, another cause of complaint arises from the established mode of computing the rate of duty. By instructions from the treasury department issued to collectors, immediately after the tariff law of 1828 went into operation, the duties which by that act were required to be assessed on woollen goods were diminished, and the practice of charging a less amount of duty than is required by law, has been continued to the present day. In the attempt to find analogy between those sections of the law which impose duties on cotton cloths, the secretary of the treasury gave what your committee deem an erroneous construction to the law.

The terms of the law are explicit, and require the collection of forty-five per centum ad volorem on and it goes on further to state, that, on all ad valorem duties, 10 per cent. additional shall be added thereto, if the importations are on this side the Cape of Good Hope, and twenty per cent. additional if beyond it. But the practice has been, under this false construction of the law, to omit this addition of ten or twenty per cent. intended to be levied, thus abandoning the ad valorem principle, as relates to woollen goods, whilst adhering to the principle on the raw material, wool. As the duties are now levied, wood pays sixty-five per cent., and cloths forty-five.

The late secretary of the treasury, not being satisfied with the construction which had been given to the law by his immediate predecessor in office, as related to the ten per cent., made a report to con-gress in which he suggested the propriety of a declaratory act on the subject, by that body.-The committee do not perceive the necessity of legislative instruction on this point, as the secretary of the treasury is bound to administer the law according to the meaning of the terms in which it is expressed. The evil of the present construction of the law is so great, and, in the opinion of your committee, the construction given so erroneous, that they cannot but hope that the interpretation which to them seems correct, may also soon be adopted by the present se-cretary of the treasury.

In respect to frauds on the importations of silk goods, a description of merchandise of small bulk, extensive variety and great value, according to the statements made to your committee by respectable American importers, great evasions of the revenue laws have also taken place; but as the prices of the various fabrics of silk, so essentially depend on the peculiar diversities of fashion and manufacture, it is more difficult to ascertain the actual cost, or market value, of such fabrics in foreign markets, than of any other of the staple imports of the country.

From the collector, as well as many other highly respectable individuals of this city, your committee are informed of numerous and extensive evasions of the revenue laws in the importation of iron. a trifling variation in the form of the imported article, or under the names of scrap iron, railing, pallisading, &c. large quantities of iron have been in-troduced, which paid a duty of only eight or ten dollars per ton, when the duty, as it has been stated,

would have been as high as from thirty-seven to seventy-eight dollars per ton, if it were imported under the proper names of rolled or hammered iron, braziers' rods, &c.

It has appeared to your committee, that a public inquiry, by order of congress, into the mode of administering the revenue laws at the different custom houses, would afford such information as to lead to the enforcement and better execution of the laws. No seaport of this country has afforded so favorable an opportunity for executing fraudulent designs as the city of New York, where from twenty to thirty ships, from foreign ports, frequently arrive in the course of one week, and greater expedition is de-manded in their unlading, and passing their entries through the custom house, than is consistent (as at present organized), with the just and careful execumittee believe, are made out with fraudulent intent, and the amounts carried out designedly wrong, in the expectation that in the hurry in which they are passed, they may escape detection.

All of which is respectfully submitted.

PETER H. SCHENCK, chairman.

New York, November, 1831.

The committee on frauds consisted of Messers. P. H. Schenck, E. Elsworth, and J. B. Murray, of New York; J. B. Brown, of Boston; Z. Allen, of Providence; L. Waln and B. Reeves, of Philadelphia, and J. T. Barr, of Baltimore.

## MANUFACTURE OF HATS.

Mr. Crelius from the committee appointed "on the subject of the manufacture of hats, and the materials used in the production of the same"-

## REPORTED:

That, although the committee had not been able in so short a time, to collect all the materials which so extended a branch of manufacture requires that its importance may be made manifest to this convention and the people of the United States, they ask leave to present the following summary views, which, they are entirely satisfied from the testimony before them, are within the amount of production and employment caused by this manufacture. The home consumption of hats made in

the United States, is per annum, equal

Exported

\$10,000,000 500,000

\$10,500,000

Say, ten millions five hundred thousand dollars, as the annual value of the manufacture of hats.

And, on the information of practical men, extensively engaged in this business, they have reached the conclusion, that eighteen thousand persons are directly employed in this business, viz:-

15,000 men and boys, 3,000 women.

18,000

Who receive, in money, paid for their labor, the sum of four millions, two hundred thousand dollars a year-4,200,000.

The materials used in the manufacture of hats consist of wool, of various qualities, and of furs, which are of domestic and foreign production; also gums shellac and seed lac, glue, sulphuric and nitric acids, copperas, verdigris and dye woods—with trimmings of leather, cloth and silk, of foreign or domestic manufacture.

It is now about thirty years since the first duty was laid on imported hats; and since that time, (that the domestic manufacture might be encouraged and thereby established), the original duty has been considerably increased, by which American hatters were first enabled to make a stand against foreign manufacturers, and finally to drive them out of the market, by furnishing better and cheaper hats than the people of the United States had been supplied with, before an adequate protection was afforded in the duty levied on hats; the exports of which now make a handsome item in the treasury statements. A foreign hat is rarely seen in our country, except in the use of persons just arrived from foreign places, because of the imposing fact, that American hats, regard being had to their quality, are manufactured at a less price than must be paid for them elsewhere. Such are the results of protection extended to the hatters of the United States, that it directly employs 18,000 persons, who earn in wages 4,200,000 dollars, or, at an average of nearly 240 dollars for every person, per annum—and subsists, in the whole, from 50 to 60,000 individuals; and all this, while the consumer receives a better article at a reduced price.

But, to guard against foreign speculators and excessive supplies of foreign hats, your committee consider it essential to the interests of American consumers as well as manufacturers of hats, that the present duty should be fully maintained. Though not very high in its amount, it is effective in its operation, and the consequences have been as just stated—the principle of which your committee believe is equally applicable to other important branches of domestic industry: But do away that protection, and the irregularity on the home market would throw thousands of hatters out of employment, who, with their families, are now comfortably subsisted by the labor of their hands.

The committee would in conclusion remark, that the duty on foreign wool (which is extensively used by them, certain kinds being much better fitted for the manufacture of hats than our own), is equal to 55 per cent. on its cost, while the duty on hats is only 30 per cent, and the excess duty on wool, so only 30 per cent, and the excess duty on wool, so ear as it goes, has an injurious effect; they therefore would suggest such increase of duty on hats, and especially on hat-bodies or hat-felts, made in whole or in part of wool, as may meet the duty imposed on the material used—which they believe would be advantageous to the American people in general. All which is respectfully abmitted.

CLARKSON CROLIUS, chairman.

The manufacture of caps is also a very extensive and important interest in the United States. There is one factory at Albany which, in dressing and preparing fors and skins, and in the making of caps, amploys about six hundred persons, on an average, throughout the year, and pays out 2,000 dollars in weekly wages, or 100,000 dollars per annum, for labor only. There are two or three other factories of such articles at Albany—and several in other places.

The whole value of the manufacture of hats and caps in the United States, (for men's wear) may be put down as equal to about \$15,000,000—fitteen millions of dollars a year. [Permanent committee.]

# ON THE MANUFACTURE OF SALT.

The committee on the manufacture of salt, beg leave to REPORT-

## A

STATES.	Fixed enpital, lands, furnaces, rats, Oc.	No. of bushels an- mually produced.	Average cast per	Average price per bushel of the ma nufactory.	Cals, weter per	probable quantity of prought iron used per annum.	Probable quantity of cast from used per annum.
Maine N. Hampshire Massachusetts Rhode Island Connectieut New York New Jersey Pennsylvania Delaware Maryland Virginia Nurth Carolina Ohio Kentucky Tennessee	Dellars. 22,000 3,000 1,754,576 8,400 8,000 3,077,000 2,750 20,000 1,000,000 66,600 9,000 3,4702 150,000 3,000	90,000 1,200 567,239 1,600 2,000 1,291,228 7,000 600,000 7,506 38,000 1,061,000 31,860 3,000 440,336 137,386	34	Cente. 37 1-2 40 n 50 39 n 48 50 45 45 50 n 75 30 37 1-3 30 n 78 50 37 n 56 50 n 71 75n166	45 70 91 91	29	*340
Alabama Illinois Arkansas Florida Indiana Missouri	53,000 3,000 7,600	138,000	3	40 a 75 75a10	80		,
	0,964,98	4,644 92	-	1	1	196	301

Key West is a new source for the production of salt. Ponds have been made, the production of which, in a year or two, will supply, if the expectations of the owners are not greatly disappointed, from five to eight hundred thousand bushels per

Prices of Salt in the city of New York. Year. Turks Island. cents. 1806 50 a 55 1807 18081 60 72 a 100 1809, '10, '11 and '12 75 a 1813 100 1314 fine \$2 a 2 75 per bushel. 1815 various. 1816 65 a 70 60 a 62 1917 1818 68 a 70 1821 58 1894 53 a 35 1825 50 1826 49 a 50 1827 \$5 a 57 1828 48 a 50 1829 47 a 48 42 a 45 1830

1831, October 29, 58
[This table, as reported by the committee, contained returns of the prices of Liverpool and Lisbon salt, in a few of the years stated; but as that of Turks laland is complete for every year, and is, itself, the best scale whereby to form a correct judgment of the value of salt, we have taken it alone—and it is fully sufficient for the purposes intended.]—Per. Com.

A statement shewing the condition of the salt business in the United States, in 1829 and 1830.

To many of the wells is annexed a steam engine of about two tons weight.

<sup>†</sup>From 1808 to 1815 inclusive, the foreign comgree of the United States was much interrupted by European orders and decrees, with our embarge and non-intercourse laws, and the war; and the prices is those years are not intended to come into an exact and fair comparison—though it was proper to state them. Early in 1815 the price at Baltimore was as high, for some time, as six dollars per bushel. Pr. Committee.

Salt imported into the United States from the 1st of September, 1825, to the 30th of September, 1826, and from the 1st of October, 1823, to the 30th of September, 1829.

RTED.	Fre	m Oct. Sept. 3	1, 1925, 1 0, 1926.	0	From C Sept	oct. 1, 182 30, 1829	8, te
	Ou	entite.	False.	Cost	Quantity 1	Value 1	Cost
						dollars.	cents.
						212	-10.0
				10.3		13,770	8.6
rican colonies					08,221	6,902	10.1
					2.985.215	455,743	15 3
							18.8
			8 090	11.9			10.4
			108 304	11.1			9.2
							50.0
mane .	.   -	5,000			2,000	-,	
	. 1	000			49.640	4 278	8.7
rican colonica					40,000	,,,,,,,	
rican colonica							
			5 9 2 0	9.0	120 914	12 658	7
			1 900				6.
					17 368		
					0 498		8.3
					1 000 615		8.5
	7.5	3 : 014	84,160	7.0			6
	.   '				03,050	4,440	-
0118							
					7 010	870	11.
					1,000	0 /9	41.3
					1		
		1,656	115	10.6			
	1			1 1			
	.			1 0			
	- 1						
	- 1			1			7.5
				1 1	4,102	324	7.1
Total	4.5	54,720]				-	
							Duties
•		P					
		From	1 st Jan. to		. 1796 3,6	70,077	443,550
3,533,796 cost		From	1 st Jan. to		1796 3,6 1797 2,9	70,077 77,902	443,550
3,533,796 cost	564,757 102,201	From	1 st Jan. to do do		1796 3,6 1797 2,9 1798 2,7	70,077 77,902 55,534	443,55 391,13 544,20
3.533,796 cost 1,030,924 "	102,201	From	1 st Jan. to		1796 3,6 1797 2,9 1798 2,7 1799 2,5	70,077 77,902 55,534 13,411	443,556 391,13 544,20 488,61
3,533,796 cost		From	1 st Jan. to do do do		2. 1796 3,6 1797 2,9 1798 2,7 1799 2,5 1800 3,4	70,077 77,902 55,534 13,411 21,819	443,55 391,13 544,20 488,61 687,38
3.533,796 cost 1,030,924 "	102,201	From	1 st Jan. to do do do do do do		:. 1796 3,6 1797 2.9 1798 2.7 1799 2,5 1800 3,4 1801 3,6 1802 3,8	70,077 77,902 55,534 13,411 21,819 08,948 72,905	443,556 391,13- 544,206 488,61 687,38 686,45-
3,533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720	102,201	From	l st Jan. to do do do do do		:. 1796 3,6 1797 2.9 1798 2.7 1799 2,5 1800 3,4 1801 3,6 1802 3,8	70,077 77,902 55,534 13,411 21,819 08,948 72,905	443,556 391,13 544,206 488,61 687,38 686,45 702,83
3.533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720	102,201	From	1 st Jan. to do do do do do do		:. 1796 3,6 1797 2.9 1798 2.7 1799 2,5 1800 3,4 1801 3,6 1802 3,8 1803 3,5	70,077 77,902 55,534 13,411 21,819 08,948 72,905 42,872	443,55 391,13 544,20 488,61 687,38 686,45 702,83 721,35
3.533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720	102,201	From	1 st Jan. to do do do do do do do do		2. 1796 3,6 1797 2,9 1798 2,7 1799 2,5 1800 3,4 1801 3,6 1802 3,8 1803 3,5 1804 3,4	70,077 77,902 55,534 13,411 21,819 08,948 72,905 42,872 33,996 82,328	443,550 391,13 544,200 488,61 687,38 686,45 702,83 721,35 686,79 765,80
3.533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720	667,058	From	1 st Jan. to do do do do do do do do do		2. 1796 3,6 1797 2,9 1798 2,7 1799 2,5 1800 3,4 1801 3,6 1802 3,8 1803 3,5 1804 3,4 1805 3,7 1806 4,2	70,077 77,902 55,534 13,411 21,819 08,948 72,905 42,872 33,996 82,328 62,704	443,550 391,13 544,200 488,61 687,38 686,45 702,83 721,35 686,79 765,80 862,69
3.533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720 2,502,872	667,058	From	1 st Jan. to do do do do do do do do do do		2. 1796 3,6 1797 2,9 1798 2,7 1799 2,5 1800 3,4 1801 3,6 1803 3,5 1804 3,4 1805 3,7 1806 4,2	70,077 77,902 55,534 13,411 13,411 121,819 08,948 72,905 42,872 33,996 82,328 62,704	443,556 391,13 544,200 488,61 687,38 686,45 702,83 721,35 686,79 765,80 862,69 731,50
3,533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720 2,502,872	667,058	From	1 st Jan. to do do do do do do do do do do		2. 1796 3,6 1797 2,9 1798 2,7 1799 2,5 1800 3,4 1801 3,6 1802 3,8 1803 3,5 1804 3,4 1805 2,7 1806 4,2 1808 5	70,077 77,902 575,9534 13,411 21,819 08,948 79,905 42,872 33,996 82,328 62,704 97,033 48,954	443,55 391,13 544,20 488,61 687,38 686,45 702,83 721,35 686,79 765,80 862,69 731,50 6,01
3,533,796 cost 1,030,924 " 4,584,720 2,602,872	102,201 667,058 462,456	From	I st Jan. to do do do do do do do do do do do do		2. 1796 3,6 1797 2,9 1798 2,7 1799 2,5 1800 3,4 1801 3,6 1802 3,8 1803 3,5 1804 3,4 1805 3,7 1806 4,2 1807 1808	70,077 77,902 55,534 13,411 21,819 08,948 72,905 42,872 33,996 82,328 62,704 97,033 48 954 360	443,55; 391,13; 544,20; 488,61; 687,38; 686,45; 702,83; 721,35; 686,79; 765,80; 862,69; 731,50; 6,01; 4
3,533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720 2,602,872 4,114,047 cost	102,201 667,058 462,456 566,537	From	1 st Jan. to do		2. 1796 3.6 1797 2.9 1798 2.7 1799 2.5 1800 3.4 1801 3.6 1802 3.8 1803 3.5 1804 3.4 1805 3.7 1806 4.2 1807 5 1808 1809	70,077 77,902 55,534 13,411 21,819 08,948 72,905 42,872 33,996 82,328 862,704 97,033 48 954 79,112	443,55 391,13 544,20 488,61 687,38 686,45 702,83 721,35 686,79 765,80 731,50 6,01 4
3,533,796 cost 1,030,924 " 4,584,720 2,602,872	102,201 667,058 462,456	From	1 st Jan. to do		: 1796	70,077 77,902 55,534 13,411 21,819 08,948 72,905 42,872 33,996 82,328 62,704 93,62,704 93,60 71,12	443,55 391,13 544,20 488,61 687,38 686,45 702,83 721,35 686,79 765,80 862,69 731,50 6,01 75,81
3,533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720 2,602,872 4,114,047 cost 1,831,600 "	102,201 667,058 462,456 566,537 148,081	From	1 st Jan. to do		: 1796	70,077 77,902 575,534 13,411 21,519 08,948 72,905 42,872 33,996 82,328 662,704 97,033 48 954 360 79,112 11,763 667,470 1,	443,55 391,13 544,20 488,61 687,38 686,45 702,83 721,35 686,79 765,80 862,69 731,50 6,01 4 75,84 853,44
5,533,796 cost 1,030,924 "' 4,564,720 2,502,812 4.114,047 cost 1,831,500 " 5,945,547	102,201 667,058 462,456 566,537	From	I st Jan. to do		2. 1796 3,6 1797 2,9 1798 2,7 1799 2,5 1800 3,4 1801 3,6 1802 3,8 1803 3,5 1804 3,4 1805 3,7 1806 4,2 1807 1808 1809 1814 3,3 1815 4,3 1816 5,3 1815 4,3	70,077 77,902 77,902 75,534 13,411 21,819 08,948 72,905 42,872 33,996 82,328 62,704 97,033 48 954 360 79,112 11,763 175,995	443,55 391,13 544,20 488,61 687,88 686,45 702,83 721,35 686,79 765,80 862,69 731,50 6,01 475,8-8 855,44
3.533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720 2,502,812 4.114,047 cost 1,831,500 " 5,945,547	102,201 667,058 462,456 566,537 148,081	From	I st Jan. to do		2. 1796 3,6 1797 2,9 1798 2,7 1799 2,5 1800 3,4 1801 3,6 1802 3,8 1803 3,5 1804 3,4 1805 1,806 4,9 1805 1,807 5 1808 1,807 5 1814 3,8 1815 4,3 1816 5,3 1817 2,9 1818 3,5	70,077 70,007 755,534 13,411 21,519 90,948 72,905 42,872 33,996 82,328 662,704 97,033 48 954 79,112 11,763 67,470 1,755,995	443,55 391,13 544,20 488,61 687,88 686,45 702,83 721,35 686,79 765,80 862,69 731,50 6,01 4 75,8: 855,49 9731,446
3.533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720 2,502,872 4.114,047 cost 1,831,600 " 5,945,547	102,201 667,058 462,456 566,537 148,081	From	I st Jan. to do		2. 1796 3,6 1797 2,9 1798 2,7 1799 2,5 1800 3,4 1801 3,6 1802 3,8 1803 3,5 1804 3,4 1805 4,2 1807 5 1808 8,2 1807 5 1818 8,3 1819 3,8 1819 3,8	70,077 77,902 77,902 77,903 13,411 21,819 21,819 21,819 21,819 21,819 22,816 27,905 42,872 33,996 82,328 662,704 97,033 48 934 360 79,112 11,763 11,763 11,763 167,470 17,5,995 167,470 175,995	443,55 391,13 544,20 488,61 687,98 686,45 702,83 721,35 686,79 765,80 862,69 731,50 6,01 475,82 855,44 076,93 714,46 765,53
3.533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720 2,502,812 4.114,047 cost 1,831,600 " 5,945,547	102,201 667,058 462,456 	From	I st Jan. to do		2. 1796	70,077 77,902 555,534 13,411 21,819 08,948 72,905 33,996 82,328 662,704 97,033 48,934 560 77,111 360 77,117 360 77,175,995 167,470 175,995	443,55 391,13 544,20 448,61 687,38 686,45 702,83 721,35 686,79 765,80 862,69 731,50 6,01 4 75,8: 855,44 076,93 594,44 7765,53
3.533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720 2,502,872 4.114,047 cost 1,831,600 " 5,945,547	102,201 667,058 462,456 566,537 148,081	From	I st Jan. to do		2. 1796	70,077 77,902 55,534 13,411 21,519 08,948 72,905 42,872 33,996 82,724 97,033 48,954 360 70,112 11,763 67,470 175,995 123,410 110,559	443,55 391,13 544,20 488,61 687,38 686,45 702,83 721,35 686,79 765,80 862,69 731,50 6,01 475,82 855,44 076,93 594,45 714,46 765,53
3.533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720 2,502,812 4.114,047 cost 1,831,600 " 5,945,547	102,201 667,058 462,456 	From	I st Jan. to do		:. 1796 S. 6 1797 2.9 1798 2.7 1799 2.7 1890 3.4 1801 3.6 1802 3.8 1803 3.5 1804 4.2 1805 3.7 1806 4.2 1807 5 1818 3.8 1815 4.3 1815 4.3 1815 4.3 1815 4.3 1817 2.9 1818 3.5 1819 3.8 1819 3.8 1819 3.8 1819 3.8 1819 3.8 1819 3.8 1819 3.8 1819 3.8 1819 3.8	70,077 77,902 55,534 13,411 21,819 08,948 72,905 72,905 82,328 662,704 97,033 360 79,112 11,763 67,470 1,763 67,470 11,763 67,470 11,763 11,76	443,55 391,13 544,201 488,61 687,38 686,45 702,83 721,35 686,79 765,80 862,69 731,50 6,01 475,84 676,93 5714,46 765,53 803,91 694,36 6707,66
3.533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720 2,502,812 4.114,047 cost 1,831,600 " 5,945,547	102,201 667,058 462,456 	From	I st Jan. to do		. 1796 3,6 1797 29,1798 27,1799 2,5 1800 3,6 1801 3,6 1802 3,8 1803 3,5 1803 3,5 1805 3,7 1806 4,2 1807 5,1806 4,3 1818	70,077 77,902 55,534 13,411 21,519 08,948 72,905 42,872 33,996 62,704 97,033 48,934 560 79,112 11,776 11,75,995 17,75,995 11,75,935 11,7	443,55 391,13 544,201 488,61 687,38 686,45 721,35 686,79 765,80 87,31,50 6,01 47,58 885,44 076,93 594,48 776,53 803,91 624,36 7889,94
3.533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720 2,502,872 4.114,047 cost 1,831,600 " 5,945,647	102,201 667,058 462,456 	From	Ist Jan. to do		. 1796 3,6 1797 29,1798 27,1798 27,1799 26,1890 3,4 1890 3,4 1891 3,6 1892 3,8 1805 3,7 1805 3,7 1806 4,2 1807 5,1804 3,4 1818 4,3 1818 4,3 1818 4,3 1818 3,1 1818 3,	70,077 77,902 55,534 13,411 908,948 12,819 908,948 42,872 33,996 82,328 662,704 97,033 48 9360 79,112 11,763 667,470 11,765 975,595 123,410 110,569 21,847 318,523 49,740	443,55 391,13 548,81 548,81 687,38 686,45 702,83 721,35 686,79 765,80 862,69 731,50 6,01 75,8: 855,44 076,93 714,46 765,53 8803,91 624,36 707,66 889,94
3.533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720 2,502,872 4.114,047 cost 1,831,500 " 5,945,547 ef salt imported	102,201 667,058 462,456 566,537 148,081 714,518 418,456	From	I st Jan. to do		. 1796 3.6. 1797 2.9. 1798 2.7. 1799 2.5. 1800 3.4. 1801 3.6. 1802 3.8. 1804 3.4. 1805 3.7. 1806 4.2. 1808 5.8. 1804 5.8. 1804 5.8. 1814 3.4. 1814 3.4. 1816 5.3. 1816 5.3. 1816 5.3. 1818 3.5. 1818	70,077 77,902 55,534 13,411 13,411 13,411 14,619 08,948 42,872 33,996 82,328 662,704 97,033 366 97,112 11,763 67,470 111,763 67,470 111,567 123,410 110,567 138,523 49,740 192,092	443,55 391,13 448,61 687,38 686,43 7702,88 7721,35 686,79 7731,50 6,01 4 75,8 855,4 4 75,8 855,4 714,4 6 75,6 889,9 6 6 1889,9 6 1889,9 1894,5
3.533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720 2,502,812 4.114,047 cost 1,831,500 " 5,945,847 of salt imported namemement of th	102,201 667,058 462,456 566,537 148,081 714,518 418,456	From	I st Jan. to do		. 1796 3,6 1797 29,1798 27,1798 27,1799 26,2 1800 3,4 1801 3,6 1802 3,8 1803 3,7 1803 3,5 1804 3,4 1805 4,7 1807 5,1 1814 3,1 1817 2,9 1818 4,3 1818 4,3 1818 4,3 1818 3,1 1818 3,1 181	70,077 77,902 55,534 13,411 13,411 19,515,534 42,872 33,996 82,328 682,704 882,328 682,704 97,033 48,936 79,112 11,763 667,470 11,763 1	443,55 391,13 544,201 488,61 687,98 686,45 702,83 721,35 665,79 765,80 862,69 731,50 6,01 75,81 855,44 976,93 594,49 771,46 676,53 803,91 6707,66 889,94 618,41 915,71
3.533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720 2,502,872 4.114,047 cost 1,831,500 " 5,945,547 ef salt imported	102,201 667,058 462,456 566,537 148,081 714,518 418,456	From	I st Jan. to do		. 1796 3.6. 1797 2.9. 1798 2.7. 1799 2.5. 1800 3.4. 1801 3.6. 1802 3.8. 1804 3.4. 1805 3.7. 1806 4.2. 1805 3.7. 1806 4.2. 1807 3.8. 1814 3.4. 1814 5.3. 1816 5.3. 1818 3.5. 1818 3.5. 1818 3.5. 1818 3.5. 1818 3.5. 1818 3.5. 1818 3.5. 1818 3.5. 182 3.4. 1824 3.1 1824 3.1 1824 3.1 1824 3.1 1824 3.1 1824 3.1 1824 3.1 1824 3.1 1824 3.1 1824 3.1 1824 3.1 1824 3.1	70,077 77,902 55,584 131,411 13,411 131,419 08,948 42,872 33,996 82,328 682,704 360 97,033 360 97,112 111,763 67,470 111,563 67,470 111,563 175,635 175,635 117,763 18,5323 189,740 192,092 178,578 189,740 180,778 189,740	443,55 391,13 544,201 488,61 687,98 686,45 702,83 721,35 665,79 765,80 862,69 731,50 6,01 75,81 855,44 976,93 594,49 771,46 676,53 803,91 6707,66 889,94 618,41 915,71
3.533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720 2,502,872 4.114,047 cost 1,831,500 " 5,945,647 of salt imported numericement of the er, 1829.	102,201 667,058 462,456 566,537 148,081 714,518 418,456	From	I st Jan. to do		. 1796 3.6 1797 2.9 1798 2.7 1798 2.7 1800 3.4 1801 3.6 1802 3.8 1803 3.7 1805 3.7 1805 3.7 1805 3.7 1805 3.7 1805 3.7 1814 3.4 1817 2.9 1818 3.8 1819 3.8 1	70,077 77,902 55,534 13,411 21,819 08,948 72,905 42,872 35,996 88,228 862,704 97,033 862,704 97,031 11,763 11,757,625 123,410 110,569 21,847 138,523 149,740 1992,092 21,847 138,523 149,740 1992,092 18,538	443,55 391,13 488,61 686,48 6702,83 686,79 765,80 6,01 75,8 855,44 771,46,55 803,91 618,41 9912,94
3.533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720 2,502,812 4.114,047 cost 1,831,500 " 5,945,847 of salt imported namemement of th	102,201 667,058 462,456 566,537 148,081 714,518 418,456 into the e govern-	From	I st Jan. to do		. 1796 3.6. 1797 2.9. 1798 2.7. 1799 2.5. 1890 3.4. 1801 3.6. 1802 5.8. 1804 3.4. 1805 3.7. 1806 4.2. 1808 5.8. 1804 5.8. 1814 5.8. 1816 5.3. 1816 5.3. 1816 5.3. 1818 3.4. 1818 3.5. 1818 3.5. 1818 3.5. 1818 3.5. 1818 3.5. 1818 3.5. 1818 3.5. 1818 3.5. 1818 3.5. 182 3.4. 1824 3.1 1823 4.4. 1824 3.1 1823 4.5. 1823 4.5. 1823 4.5. 1823 4.5. 1823 4.5. 1823 4.5. 1823 4.5. 1823 4.5. 1823 3.5.	70,077 77,902 55,534 13,411 21,819 08,948 72,905 42,872 35,996 82,328 82,328 82,328 62,704 77,033 48,736 11,737 11,737 11,737 11,737 14,740 1992,092 11,847 138,323 149,740 1992,092 1984,738	443,55 391,13 488,61 686,48 6702,83 686,79 765,80 6,01 75,8 855,44 771,46,55 803,91 618,41 9912,94
3.533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720 2,502,872 4.114,047 cost 1,831,500 " 5,945,547 of salt imported numencement of the er, 1829. Buch. imp.	102,201 667,058 462,456 566,537 148,081 714,518 418,456 into the e govern- Dutice.	From	I st Jan- to do		1796 3.6 1797 2.9 1798 2.7 1799 2.5 1800 3.4 1801 3.6 1802 3.8 1804 3.4 1805 3.7 1805 4.2 1805 3.7 1806 4.2 1814 4.3 1814 5.3 1814 5.3 1814 5.3 1815 3.4 1816 5.3 1818 5.3 182	70,077 77,902 55,534 13,411 21,819 08,948 72,905 42,872 33,996 82,328 82,328 82,328 62,704 97,033 48 994 360 79,112 11,763 667,470 11,763 667,470 11,763 67,470 11,763 68,533 48,94 360,92,992 778,598 64,720 192,092 778,538	443,55 391,13 488,61 686,45 702,83 668,79 667,721,33 668,79 765,86 682,69 7731,50 6,01 4 75,8-8 883,91 667,74,46 765,35 889,91 6,01 915,77 912,9-1
3.533,796 cost 1,030,924 "4,564,720 "4,564,720 "4,114,047 cost 1,631,600 "5,945,547 "4,114,047 cost 1,631,600 "5,945,547 "4,114,047 cost 1,2,282,547 "4,114,047 cost 1,2,282,547 "4,114,047 cost 1,2,282,547 "4,114,047 cost	102,201 667,058 462,456  566,537 148,081 714,518 418,456 into the e govern- Dutice. 630,895	From	I st Jan. to do		1796 3.6 1797 2.9 1798 2.7 1799 2.5 1800 3.4 1801 3.6 1802 3.8 1804 3.4 1805 3.7 1805 4.2 1805 3.7 1806 4.2 1814 4.3 1814 5.3 1814 5.3 1814 5.3 1815 3.4 1816 5.3 1818 5.3 182	70,077 77,902 55,534 13,411 21,819 08,948 72,905 42,872 33,996 82,328 82,328 82,328 62,704 97,033 49,740 49,740 1902,092 21,847 318,523 49,740 1902,092 21,847 318,523 49,740 1902,092 21,847 318,523 49,740 1902,092 21,847 318,523 49,740 1902,092 21,847 318,523 49,740 1902,092 21,847 318,523 49,740 1902,093 21,847 318,523 49,740 1902,093 21,847 318,523 49,740 1902,093 21,847 318,523 49,740 1902,093 21,847 318,523	443,55 391,13 488,61 488,61 686,45 702,83 686,79 765,80 6,01 40 75,82 803,93 670,73 6,01 4076,93 803,93 6707,60 889,94 6707,60 889,94 690,94 915,70 912,94
3.533,796 cost 1,030,924 " 4,564,720  2,502,872  4.114,047 cost 1,831,500 "  5,945,547  g of salt imported numeric ment of the er, 1829.  Buth. imp.  1 5,927,456  2 1,779,510	102,201 667,058 462,456		I st Jan. to do	31st Dec	. 1796 3.6. 1797 2.9. 1798 2.7. 1799 2.5. 1800 3.4. 1801 3.6. 1802 3.8. 1804 3.4. 1805 3.7. 1806 4.2. 1805 3.7. 1806 4.2. 1808 3.8. 1814 3.4. 1815 3.7. 1816 5.3. 1818 3.4. 1818	70,077 77,902 55,534 13,411 21,819 08,948 72,905 42,872 33,996 82,328 862,704 97,033 48 994 560 79,112 11,763 667,470 11,765 667,470 11,765 11	443,55 391,13 391,13 448,61 448,61 6667,38 66867,38 6702,83 6686,79 721,35 6686,79 731,50 6,01 47 75,82 75,82 75,82 75,82 75,84 618,44 915,70 912,94
3.533,796 cost 1,030,924 "4,564,720 "4,564,720 "4,114,047 cost 1,631,600 "5,945,547 "4,114,047 cost 1,631,600 "5,945,547 "4,114,047 cost 1,2,282,547 "4,114,047 cost 1,2,282,547 "4,114,047 cost 1,2,282,547 "4,114,047 cost	102,201 667,058 462,456  566,537 148,081 714,518 418,456 into the e govern- Dutice. 630,895	• N	l st Jan. to do	Stat Dee	1796 3.6 1797 2.9 1798 2.7 1799 2.5 1800 3.4 1801 3.6 1802 3.8 1804 3.4 1805 3.7 1805 4.2 1805 3.7 1806 4.2 1814 4.3 1814 5.3 1814 5.3 1814 5.3 1815 3.4 1816 5.3 1818 5.3 182	70,077 77,902 55,534 13,411 21,819 08,948 72,905 42,872 33,996 82,328 82,328 82,328 62,704 97,033 48 934 360 79,112 11,763 367,470 11,763 11,763 167,470 11,763 167,470 110,569 110,56	443,55 391,13 391,13 488,61 488,61 686,43 7021,33 686,79 765,88 62,69 77,86 862,69 77,86 855,44 60,99 71,48 81,99 61,90
	rican colonies  nany ie Mediterranea: rican colonies  orts	rican colonies  5 2.55 9 6 9 7 3 nany 11 rican colonica  7 7 orts  Total  4.5	Sept. 3   Quantity   bushels,   6,493   4,638   4,638   9,508   9,5066   69,173   919,906   33,903   62,51,549   63,740   9,506   63,74   9,759   63,756   20,050   6,334   2,168   7,150   6,681   1,367   1,056   1,367   1,056	Comparison   Com	Quantity   bushels.   6,482   1,221   58.6   4,658   4,658   6,167   11.5   6,254   6,167   11.5   6,254   6,173   6,167   11.5   6,254   6,173   6,	April	RTED.   Sept. 30 , 1826.   Sept. 30 , 1826   S

4,113,000

An exhibit of the quantity of salt imported into the United States in 1826 and 1829; also the quantity re-shipped during the same, with the quantity of salt manufactured in the United States in those years.

Bushels. Imported from the 1st of October, 1825, to the 30th September, 1826, 4,564,720 Re-shipped during the same period 30,680

Consumed

Quantity of salt manufactured in the United States in 1826, taken from document No. 47, of the senate, printed January 21st, 1828,

Total 8,647,040 From the tressury report of the 5th of

February, 1829, the importations of the year ending the 30th of September, amounted to 5,945,547 Re-shipped during the same period

44 390 5 901,157

Quantity of salt manufactured in the United States in 1829, as shewn by table A. 4,444,929

Total

10,346,086

The importations of 1831 is estimated at about five and a half millions of bushels. By comparing the present price of salt, with a duty of 10 cents per bushel, it will clearly be seen, that the con-sumer was supplied with this important and neces-sary article of consumption, taking the years 1824 to 1830, at 50 cents, when the duty was 20 cents per bushel. By the prices current of the present year at a duty of 10 cents, the consumer will pay an advance of 20 per cent, See B. This establishes one plain fact, that instead of the reduction of the duty on salt, supplying the citizens of the United States at a lower rate, it has had the effect, from the vacilating policy of the government, to discourage the necessary exertions of those who are concerned in this important branch of American industry, which, of course, has produced the difference in price. Your committee think they hazard nothing in saying that if the duty on salt was entirely taken off, the price would increase in the ratio of the present year, to at least seventy-four cents per bushel, as in former years when no duty existed.

As a source of revenue, and as an encouragement to the domestic manufacture, the first congress which assembled under our present constitution were induced, on the 20th July, 1789, to pass an act imposing a duty of six cents per bushel on salt imported into these United States. At the next session, 1790, it was increased to 12 cents per bushel.

These enactments operated as a bounty for individual enterprise. Not, however, in the estimation of congress, equal to the hazard of investment. In 1797, the duty on foreign salt was augmented to 20 cents per bushel. This proved insufficient to call forth the capital and enterprise of our citizens: necessity seemed to require that congress should act on every article that appeared to languish, under what was then called a protecting duty. Despairing of its ultimate success, on the 3rd March, 1807, salt was declared free of duty from and after 1st January, 1808. This continued until 1st January, 1814. During these years, as per appendix B. salt ranged from 50 to 100 cents per bushel higher than at any other period from or since the formation of the government, (the period of the war, excepted). It may be worthy of remark, that the same act which renewed the duty for the

encouragement of our own manufactories of salt. gave the bounty or drawback on the fisheries. war of a second independence brought forth the energies of the country, and, from the close of that struggle down to the repeal of the last aet laying a duty on salt, it ranged lower than at any other period since the adoption of the constitution.

General Washington, in December 1796, used the following language-

"Ought our country to remain dependent on fo-4,534,040 reign supply, precarious because liable to be interrupted?"

Mr. Jefferson, in 1808-

"The suspension of our commerce, produced by the injustice of the belligerent powers and the con-sequent losses and sacrifices of our citizens, are subjects of just concern. The situation into which we have been forced, has impelled us to apply a portion of our industry and capital to internal manufactures and improvements, and little doubt remains that the establishments formed and forming, will, under the auspices of cheaper materials and subsistence, the freedom of labor from taxation with us, and of protecting duties and prohibitions, become permanent

In 1816 he wrote thus-"That to be independent for the comforts of life we must fabricate them ourselves. We must nov place the manufacturer by the side of the agricul-turist. The grand inquiry now is, abell we make our own comforts, or go without them, at the will of a foreign nation? He, therefore, who is now against domestic manufactures, must be for reducing us either to a dependence on that nation, or be clothed in skins and live like wild beasts in dens and caverns.

I am proud to say I am not one of them." Mr. Madison in 1809, says-

"That it is not unworthy of reflection, that the arbitrary edicts of contending nations, to obstruct our trade with them, have so far abridged our means of procuring the productions and manufactures of which our own is now taking the place."

In his message of 1815, he said-

"There is no subject which can enter with greater force into the deliberations of congress, than a consideration of the means to preserve and promote the manufactures which have sprung into existence in the United States during the European wars."

See Mr. Monroe's message 1821-

Again 2d Dec. 1823:-"I recommend a review of the tariff, for the purpose of affording such additional protection to those articles which we are prepared to manufacture, or which are more immediately connected with the defence and independence of our country."

Your committee have no means of ascertaining the number of persons employed in the manufacture of salt. Judging, however, from the amount of capital as per schedule A, which is seren millions of dollars, the number must be very considerable. It is a remarkable fact, as far as comes to the knowledge of your committee, that in no one instance has the people petitioned congress for a repeal of the sait duty. They are satisfied with obtaining this article onecessity at the lowest possible price. All of which is respectfully submitted. M. BRUEN, chairman. A delegate from the country of Kanancha, state of Firginia. New York, 31st Oct. 1831.

The Permanent Committee believe that some additional statements concerning the manufacture of sait, may be useful.

A petition to congress, on behalf of the manufacturers of salt, in the county of Kanawha, Virginia, signed Lewis Summers, Joel Shrewsbury, son. Lewis Ruffner, James Bream, Joseph Lovell, A. Donnally, and Isaac Noyes, dated 9th Jan. 1828, and published by order of the senate, Jan. 21, 1828—stated, among others, the following facts, which are briefly condensed, for common reference.

In the early settlements of the western country, salt was as high as \$6 per bushel, and for several years it fluctuated from 2 to 3 dollars; but the works at Kanawha, being commenced, it felt to 1 dollar. And, even during the last war with Great Britain, such was the domestic competition, that it averaged less than \$74 cents—though selling at \$0 of 6 dollars on the seaboard. In some instances, it rose to one dollar, fat the works) because of the great demand for the northwestern army, and the operations of speculators—but increased production enabled the manufacturers to extend their supplies to new customers, and considerably checked a general increase in price. At that time 12,000 bushels were made weekly at Kanawha.

Since this period, the salt works in the western country have been much increased-and so great was the competition, and large the supply, that salt was sold as low as 15 or 20 cents per bushel, in casks ready for shipping, in 1825—and in 1826, even at 12½ cents. This necessarily caused a stoppage of many of the works. There were 61 wells, of a capacity to supply 100 furnaces, but only 56 were in operation. The average price of 1827 is stated to have been 241 cents, and the actual cost of manufacturing, including barrelling, &c. 194 cents. The salt made, was 787,000 bushels, employing 471 regular laborers, using 1,695,000 bushels of coal in the evaporation of 64,000,000 gallons of water. The capital employed was estimated at \$548,000, and the agricultural products annually consumed by the working people valued at \$47,600—using 241 tons wrought iron and 1084 tons cast iron, and paying for mechanics' bills 7,950 dollars a year. We recite these particulars to shew how one branch of industry interlocks itself with others. And further, should be added the labor and cost of transportations, in making barrels," and build ing wagons, boats, &c. employing many and various other persons. In this petition, the whole products of the salt works of the United States, for 1827, were estimated at 4,113,000 bushels-one half of which were in the western country. By the returns of the marshals in 1810, the quantity of home-made salt reported was 1,238,365 bushels, worth 1,149,725 dojlars; or almost one dollar a bushel in that year, when there was no duty on salt .- See the table of average prices, marked B—and it will appear that the duty has not had any apparent effect on prices—nor do we believe that it has had any real one; for a brisk domestic competition acts against the foreign supply, and reduces cost to consumers, and so it has been in respect to every class of protected articles.

Of the 4,564,720 bushels imported in 1826 no less

Of the 4,564,720 bushels imported in 1826 no less than 3,533,796 bushels were from Great Britain and her dependencies—2,354,549 from England, direct.

The patition above referred to, contains some powerful reasoning against the then apprehended reduction of the duty on sait; but the Permanent Committee believe that their present business is confined to the facts as stated; and do not wish to pass from them into argument just now.

On the 22d day of October 1830, the salt manufacturers of Kanawha again petitioned congress for a restoration of the duty on salt.† They estimated the capital vested in this manufacture at 6,964,958 dollars, and shewed the capacity of the United States to increase domestic supplies: they computed that 3,553 persons were directly employed in the busimess,† who, among a multitude of supplies from the farmer, required about 600 tons of iron annually. They state a fact of ordinary occurrence, though seldom sufficiently noticed by political economists and statesmen - that, on a failure of supplies from Kanawha, (which had kept down the prices at from 45 to 50 cents), foreign salt, at Cincinnati and Louisville, immediately advanced to 75 cents. But the extraordinary exertions of the Virginia manufacturers, (stimulated by the high price), soon brought it down again. They say that the protection given to domestic salt has not diminished the foreign trade in the articleas the tables shew. Its chief effect has been to reduce the price of salt; the diminished price being the loss of profit to foreign manufacturers. A large part of the salt brought to the United States is imported in lieu of ballast. The price of iron, salt or molasses, for example, has never risen, (unless for a moment) because of higher duties imposed—nor the price of molasses, salt or coffee permanently declined, because that the duties have been lessened. Practical results are decidedly against the theory, that duties must needs be "taxes." It is the force of the domestic competition, which settles that question; as is fully shown in the report of the committee on the manufactures of iron; and other facts known to every man of business, who has examined the subject.

A memorial to congress from sundry inhabitants of Massachusetts, published by order of the house of representatives, Jan. 23, 1827, presents the following facts:

That, during the revolutionary war, salt was sold for three or four silver dollars per bushel-that after the war, the manufacture increased, until the duty was taken off; but the state of Massachusetts, (recollecting "revolutionary sufferings"), to aid the manufacturers, exempted the salt factories from taxation. In 1813, the duty of 20 cents per bushel being laid, the manufacture revived, and became extensivegreat improvements being made in it, to save labor as well as advance the quality of the article. ter is pumped into vats from the ocean-and the vats are covered to avoid the effect of rains, or of dews, In Barnstable county, only, there were then at night 15,000,000 feet of such vats, worth \$1,300,000, and having more than 1,000 owners. The price of salt which had been as high as 60 cents, having fullen to 33 cents at the works, the competition between the domestic and foreign supply, in the language of the memorialists, became "severe" -and they asked congress "what good reason there could be for destroying their only manufacture?" &c.

MISCELLANEOUS ITEM?.

In the year ending Nov. 1828, 1,160 000 bushels of salt were made at Salina, Syracuse, Geddes and Liverpool, in the state of New York. This paid a revenue to the state of 124 cents per bushel; and left a clear profit for the year of \$138,620. From March 1827, to June 1829, the monthly pro-

From March 1827, to June 1829, the monthly product of salt at Kanawha, was 75,000 bushels—inspected.

specter.
In 1829 the Kiskeminetas salt works in Pennsylvania, employed two hundred road wagons.

At the beginning of the year 1831, there were 17.545,760 square feet of salt works in Massachu-

The following brief notices of the salines on the Kanawha, as generally applicable to those west of the mountains, are interesting.

At the point where the salf factories are established, the Kanawha river is about 150 yards wide. The "salt region" extends 15 miles along the river, and the quantity of salt manufactured may be extended to an indefinite amount.

The salt water is obtained by boring through a great rock, to the depth of from 300 to 500 feet Copper or tin tubes are introduced to keep out the fresh water, which lies above the salt,—and the latter rises as

<sup>\* 130,000</sup> barrels, costing 32,000 dollars, were required.

<sup>†</sup>Alsw with a prospective effect having passed to reduce it.

<sup>†</sup>They, and their families were estimated at 14,612 persons—subsisted by the manufacture of salt:

high as the surface of the adjoining river, though all communication with it is cut off. The salt water is then raised to the top of the bank of the river, about 40 feet, by forcing pumps, and conveyed to the fur-naces, as required. Bituminous coal abounds on the spot, and is used for the purpose of evaporating the water. Some of the salt water thus obtained, is so strong that it will hold very little more salt in solu-

These works at present, employ about 800 men, as salt makers, coopers, boat-builders, &c. The average price of salt has hardly exceeded 30 or 35 cents per bushel, at them. By means of the Baltimore and Ohio rail road, and other channels of cheap transportation, supplies of salt may be obtained from the west in future emergencies-such as happened in the last war.

The Kanawha salt is purer than the Liverpool. Prices of Salt at Bullimore.

	A	lar	ch	April	Dec.
	27,			19, 1831.	9, 183
		uty		Duty 15	Duty 1
		te to t		cents.	cents.
Turks Island	45	to	47	50	53
St, Ubes	44	66	45	none	53
Cadiz	40	14	41	42 to 43	none
Lisbon	43	44	44	43	44
Liverpool, (ground)		40		not quoted	40
to (contr) o	208 4		6.10	000 . 011	

" (sack) 205 to 212 200 to 215 200 — The fishing business in the waters of the Chesapeake, failed last year, and there was some excitement, because of the stock of salt on hand, and its anticipated fall in price, on account of the reduced duly to take place on the 1st January last-but the salt in the hands of the fishermen rather made a profit than a loss, when the duty retired five cents a bushel! And now, (Dec. 9) we see, that though the duty will be only 10 cents on the 1st of next month, the price of Turks Island salt is six cents higher than it was in March 1830, when the duty was 20 cents, and 3 cents higher than when the duty was 15 cents. which duty will be only 10 cents, three weeks hence. There has been a small decline in the price of Liver-pool salt, in sacks of 4 bushels, since March 1830 but all other salts show no other change since that time except against consumers.\*

. When it was proposed to repeal the duty, Mr. Vinton, of Ohio, stated, in the house of representatives of the United States, that a reduced duty would not affect the cost to consumers, though destroying a large amount of domestic capital and employment.

Mr. Doddridge, of Virginia, said that he had seen 612 given in his county for a bushel of alum salt, and recollected when it was reduced to \$5, because of the improvement of the mountain roads-but that the price remained at three dollars until the Kanawha works displaced the foreign article. He had seen the time when 24 bushels of wheat would not pay for one of alum salt - and, at the same place, he had seen salt so reduced in price that a barrel of it would not pay for a barrel of flour. He supposed that a bushel of foreign salt had not been consumed in more than half of his (congressional) district for the fifteen preceding years; and thought if such salt was wholly excluded, the whole quantity required would be furnished without inconvenience.

Mr. Reed, of Massachusetts, referred to many proceedings of the revolutionary congress to encourage the manufacture of salt, and at the date of these resolutions, he said that the business had been commenced in his neighborhood—by evaporating sea-wa-ter. That the capital now vested in the manufacture in Massachusetts amounted to 1,754,576 dollarsmaking unnually 503,686 bushels of salt, equal to the best alum or Turks island. That the rapeal of the duty in 1807, though almost ruinous to manufacturers, rendered only a small and temporary benefit to

The salt made at the factories in Massachusetts weighs about 75 lbs. per bushel; and in 1828, sold for 38 cents. The capital vested in them was estimated at about two millions of dollars,

The duty on salt.	Price-Turks Island.
In 1789 64 cents	2 1 100 3 11 K 2 20 10 10 10
1790 12	
1798 20	67
1807 duty take	
1813 20 cents rene	ewed* 50 to 100
1816 20 cents-ac	extended 65 to 70
1830 20 from Jan	. I, and 45 to 47
1831 15 from Jar	1 50 10 50

The duty on salt.

1832 10 [to be] from Jan. 1. 53 [Dec. 9, 1851.
The whole facts shew—that the amount of the duty had no apparent effect on price, and favor the opinion, that a diminished duty has rather had a tendency to increase the profits of foreign manufacturers and embarrass the operations of home manufacturers, by rendering the market uncertain, than to diminish cost to consumers.

To exemplify this we shall state the duties upon, and prices of molasses, at different periods-the supply of that article being also of domestic and foreign production.

827 828	duty	5 cents.	price		to		less	the	duty	29	
829		10				27				164	
830		10		30	to	31				201	
831		5		29	to	30				241	

The preceding are taken from the Baltimore prices current of Dec. in each year given, and have reference to the same quality of West India molasses; the price of which declined in the West Indies when our duty was increased, and advanced there when the duty was reduced. Such are the operations of trade; which we expect to show hereafter in numerous instances, and offer the reasons for them. sufficient to observe, for the present, that such they

## NEW YORK PRICES.

In support of the opinions just advanced, we shall add the following statements, derived from Mr. E. Williams' valuable work, the New York Annual Register, given in anticipation of the volume for 1832, which is speedily to be published.

Prices of Coal, Salt, Coffee and Molasses.

The following table exhibits the prices in the New York market on the 1st December in each year (except those of 1820 and 1822, from which returns have not been obtained) since the last war, of Liverpool coal, Turks Island salt, West India coffee and molasses, (average price), with the duties payable on the same articles

	dr	er chal-	bus	per hel	Coffee	per lb.		ises pes llon.
Dec. 1.	price.		price.	duty.	price.	duty.	price.	duty.
1815	d.23	d.3 60	90c.	200.	25c.	100.	70c.	10c.
1816	14	1 80	60	do	21		80	
1817	11	do	60	do	24	do	60	da
1818	11	do	70	do	30	do	5.3	do
1819	14	do	de	do	24	do	40	do
1820	_	do	62	do	29	do	30	do
1821	14	do	60	do	28	do	33	do
1824	-	de	do	do	25	do	do	du
1 . 23	12 7	8 do	82	do	20	do	25	do
1884	15	2 16	50	do	17	do	28	de
1825	14	do	58	do	16	do	33	do
1889	10	do	49	do	1.5	do	30	do
1837	13	do	62	do		2 do	33	do
1838	13	do	82	do	13	do	28	10
1829	11	do	45	do	18 1	2 da	23	do
1830	8	do	55	do	12	do	30	do
1831	13	do	62	15	12 1	3 3	30	

That there were more than 800 small factories in his district-whose competition had reduced the price to 30 cents for 56 lbs. of salt,--[the duty then being 20 cents on that quantity]; and he estimated the whole capital employed in the domestic manufacture at eight millions of dollars.

\*Limited to the duration of the war.

## REPORT ON THE-CURRENCY.

The committee charged by the convention of the friends of domestic industry, assembled in New York, in the month of October last, to "report upon the currency of the country, as affecting or affected by the protecting system," beg leave to present the following report-

That to render clear and intelligible any statement they may make in relation to the "currency" of our country, as it may affect or be affected by the "protecting system," it is necessary to give to those terms a definite and distinct meaning, that will be recognized at once as just, when applied to the system of trade and political economy existing in the United States.

By the term "currency" they understand the me-dium of exchange used by contracting parties, in the interchange of commodities which are the produet of labor, when direct barter or the exchange of one commodity for another, of supposed equal value, does not take place: But where time or space intervenes between the delivery of articles, that are the subjects of a contract, the written evidence that is given of the contract is the medium of exchange, and its transferable quality gives to it the character of currency.

By the term "protecting system," the committee understand such regulations of foreign commerce as shall protect our country from purchasing and importing, either voluntarily by its own citizens, or having forced into it by foreigners, an amount of the product of the labor of other countries, for which the product of the labor of our own will be insufficlent to pay, when sold in foreign markets; and thereby prevent the accumulation of a balance of trade against the United States, that, if paid at all, must be paid by gold and silver: articles of commerce, the value of which is regulated like the vatue of all other articles of commerce-by demand and supply.

However some modern political economists may attempt to ridicule what is termed the "balance of trade," the committee do not entertain a doubt of its existence, as certainly between nations and communities of people, as between individuals of the same community;—nor that the amount of this ba-lance determines as certainly the amount of gold and silver which a nation can retain, as it decides the amount that an individual can hold. Every person knows that the effect of contracting debts to an amount that his own income will not pay, must create a balance against him, to pay which he will first have to part with his money; secondly, with whatever other articles of value he may possess; and if these be insufficient to satisfy his engagements, that nothing but the humane policy of our institutions will save him from becoming the slave of his creditor, and being compelled to earn the amount of his contract by the sweat of his brow :- The bond hav. ing been fairly given, nothing but the inability of the debtor can release him from the fulfilment of his contract; and so with a community of debtors.

The committee are aware that our custom-house entries do not furnish any rule that can be relied upon to determine whether a balance of trade exists against this country or not. They furnish a tolerably accurate account of the quantity of the product of our labor exported, but give no data by which to ascertain the amount, in money, which that product of labor has sold for in foreign markets. The custom house entries probably, do furnish a reasonably correct mode of ascertaining the cost, in foreign countries, of the product of foreign labor, imported into the United States. The difference in amount, in money, between our exports and imports, as as-certained by their sale and purchase in foreign mar-kets, is the true balance of trade.

To these preliminary remarks the committee will add what they suppose will be admitted by every one-that the product of labor alone is wealththat all exchanges of the product of labor are commerce-that gold and silver are products of labor, to which coinage adds no increased value-that coined gold and silver alone are money-that money is but a legal measure of value possessing the peculiar quality of expansion, in the same proportion that the material of which it is constructed is diminished in the market-that currency is but the evidence of debts-that one hundred days' labor employed in Carolina, in extracting from the earth two thousand and treenty-five grains of gold, worth seventy-five dollars; and one hundred days' labor in Pennsylvania, employed in extracting from the ore one ton of malleable iron, worth seventy-five dollars; and one hundred days' labor employed in New York, in cultivating the soil and producing one hundred bushels of wheat, worth seventy-five dollars, have each contributed to the common stock of wealth an equal amount, and that the relative quantity of gold. iron, or wheat produced, at each of these places, by a given quantity of labor, establishes the value of labor or its product, at the place where it is rendered.

From the definition which has been given of currency, it will be perceived that the committee confine this term to such a medium of exchange as possesses merely the character of a representative of vahie-and that nothing else can be considered cur-rency. In conformity with this opinion, money, or coined gold and silver, is not currency, because it is composed of the product of labor; and, as such, is an article of commerce, in even more universal demand than any other article which is the product of labor, because any other product of labor will, in every country, be given in exchange for it: but this is barter, and requires no medium of exchange. It is a mere exchange of one product of labor for another, and is made in the same way and governed by the same principles, that one bushel of wheat is given for two bushels of Indian corn, or five pair of shoes for one hat -No medium of exchange, or currency, is used in such transactions-one article of the product of labor being directly exchanged for another of equal value.

It has been already said that the currency is but the evidence of debts-and that it consists of contracts to pay, or deliver, at some stated time and place, a stipulated quantity of wealth, or the product of labor, and most commonly money; the quantity of which is defined by the number of grains of gold or silver which the laws require shall be contained in dollars or eagles; a certificate of which number is impressed upon each, by coinage; and,

that these coins alone are money.

To give contracts promising the delivery of wealth, or payment of money, the character of currency, they must be transferable, so as to invest the holder with the right to demand and enforce a fulfilment of the contract. Bonds, notes and bills, whether payable to bearer, or to any one or his order or assigne, on demand, at sight, or at some future period of time, or at some distant place, and certificates of stock, constitute currency—which is not money, as used in the United States, but consists wholly of contracts to pay money. It is not the product of labor, and therefore has no intrinsic value. It is, however, an article of commerce, because a product of labor has been given for it; and because it is to be redeemed with a product of labor. -But there is the same difference between currency and money, that there is between the evidence of a fact and the fact itself.

As an article of commerce within our country, (and it is not an article of commerce elsewhere, with the exception of some of the public securities) currency has its value defined by the price it will sell for, in gold and silver; and this is ascertained, first by the degree of confidence which is reposed in the ability of the party contracting to pay; secondly, by the opinion entertained of the moral sense which will induce him to comply with his engagements; thirdly, by the certainty with which the laws will enforce a compliance, if his moral sense shall fail to effect this object; and fourthly by the place where the nayment is to be made.

place where the payment is to be made.

Currency is the aliment on which banks, brokers
and dealers in money subsist. They affix a value thereto at their own discretion—as for instance, to on demand or at sight, for one thousand dollars, they would attach the value of one thousand dollars, less the expense of transporting the money from Philadelphia to New York, and the interest on the money for two days, the time that would be occupied in obtaining payment; or if it be a bill or note, payable twelve months after date, they would attach a value of less than nine hundred and forty dollars to it, and so in proportion for any greater or less time that might exist between the date of the note or bill, and the time it would become due. But a bill drawn at New York, payable at sight in Lon-don, for the equivalent of one thousand dollars in the currency of London, would at this time be worth in New York about eleven hundred dollars, exchange on England being ten per cent. above par. Whereas a bill drawn for one thousand dollars, paysble in some other foreign place, might be worth not more. In nine hundred dollars-exchange on auch place being as much below par. Thus the currency of the country is of innumerable degrees of value, and worth just what it will sell for, when brought to market for money.

Contracts promising the payment of money, are in fact, bills drawn upon the gold and silver that may be at the place where they are made payable. And gold and silver being articles of commerce, the value whereof depends like that of all other articles of commerce, upon demand and supply, the value of currency must always fluctuate in the same ratio that gold and silver fluctuate in value, when these are measured by other descriptions of wealth or products of labor. As an example of this kind, we will suppose that a bill of exchange had been drawn in the United States, and made payable sixty days after sight, in London, for a gold sovereign, which, at the time the bill was drawn, was worth but four dollars and forty-four cents in London; or an equivalent that we will call Sive days' labor; and that when the day of payment arrived, one half the gold that was in England had been, during the Interval between the date and maturity of that bill, transported to the continent, in consequence of an adverse course of trade; then the same sovercign which, at the date of the bill, would have commanded but five days' labor, would, at its maturity, command ten days' labor—for in this ratio the value of money would rise and labor fall, in pursuance of immutable principles in the laws of trade, which regulate values by demand and supply, of universal and invariable application.

Currency that is based upon wealth, to be ascrtained and measured by articles of commerce, such as gold and silver are, must fluctuate, as we have shown, in the same degree that the articles upon which it is based shall augment and diminish in value. In further illustration of this position, we will approse that when a country contained thirty millions of dollars, in gold and silver, and one days, labor would purchase one dollar, a man contracted to pay one hundred dollars, at twelve months after date; and that between the date and maturity of such contract, fifteen millions of gold and silverwere transported to other countries from that inwhich the contract had been made, then, the money that remained would increase so much in value, inconsequence of its diminished quantity, there being no diminution in the demand, that it would require two hundred days' labor to saisfy that contractwhereas, one hundred days' labor would have discharged it, when the contract was made—the value of labor, in relation to articles uninfluenced by the foreign market, having fallen precisely in the same ratio that the value of money had advanced.

Still it must not be supposed that the fluctuations in the value of currency, caused by its being based upon an article of commerce, or the product of labor, present any argument against that basis; for the fact of its being based upon an article of commerce alone imparts any value to our currency. If it were not based upon aomething of intrinsic value; that is, upon something into which labor has entered, it would possess no value—for what would a contract to pay nothing be worth, even if the contract be fulfilled to the letter? It would still command nothing, and would not exchange for any thing that could add to the comfort or happiness of man: the whole object in the acquisition of wealth.

It would be impossible to state with any degree of accuracy, the amount of wealth which has ac-cumulated in the United States since the first settlement of the country; which should be estimated by the quantity of labor that has entered into its construction, including both the wealth which is attached to the soil, and that which is floating and might be transported to other countries. Nor is it important that a conjectural estimate should be offered—for it is upon that portion only which is in the possession of the debtors of the country, that our whole currency is founded. And this portion of wealth, under the due execution of the laws, is pledged for its redemption, in money—and whilst our laws are duly executed, if the property of debtors will not purchase money at one price, to fulfil their engagements, it must at another. The general currency cannot therefore depreciate until that security shall be exhausted, or until the laws which enforce the obligation of contracts shall be impeded in their operation-contingencies not likely to take place, whilst the state governments are prohibited from passing any law that would impair the obligation of contracts, and the government of the United States shall protect the industry of this nation.

As currency is but the representative of value or wealth-in order to render its character still more clear, let it be supposed that a person has employed one thousand days' labor to construct a house; and that his necessities required, after he had constructed this house, that he should have one thousand articles, each of which it had cost one days' labor to create, at a time when coined gold and silver, or money, was so abundant that one days' labor would exchange for or purchase one dollar—and that, to obtain these articles, the owner of that house entered into one thousand separate written contracts to pay to one thousand different persons, or to their order, one dollar each, which he gave for the one thousand articles which his necessities required, and that he thus transferred his property in that house into currency—and so gave to the holders of this article of commerce a claim upon his house, by which they might become its legal owners, if he should fail to redeem his contracts in the time and manner stipulated. But, as these contracts for one dollar each may have been made payable at sixty days after date; and as the holders of these contracts may wish to exchange them for products of labor, they may effect this indirectly by selling them to banks, brokers or dealers in currency, for other

contracts; which will enable the holders to obtain, promptly, such products of labor as they may want, even money itself, if they choose to call for it, in dollars or parts of dollars.

In such transactions the house, or the value thereof, represented by the original contracts, performs the functions of currency; whereas under a sys-tem of barter, or mere exchange, without the employment of currency, the property vested in the house could not become a circulating article of value. In the case we have stated, the security given by the owner of the house to the holders of his original notes, that had entered into the general currency, consists of the house itself, and such other contracts, or articles the product of labor, as he received in exchange for the notes or contracts that he had made; and this security is worth precisely what, under any circumstances, it could be sold It might happen that the value of money would for. It might happen that the value of non-by-whole be double, before the day of payment arrived, by reason of the quantity being diminished one half, and then the value of the house, which it occupied one thousand days' labor to create, would be diminished. nished one half, and would sell for but five hundred dollars. Yet the products of one thousand days' labor, which the owner received in exchange for his notes or contracts, being still in his possession, would also be worth five hundred dollars-but not more. And although these two resources would en-able him to redeem his one thousand original contracts for one dollar each; he, nevertheless, would lose his estate, in consequence of the rise in the value of money, caused by the diminution of its quantity, between the date of his contracts and the time they became due—and hence the appelling effeets upon the debtors of a community, by a contraction of the currency arising from a diminution in the quantity of legal money.—His situation would be very different, however, if during the same pe-riod the value of labor had increased, owing to a fall in the value of money, caused by its having been doubled in quantity. In this case, the house been doubled in quantity. which was originally worth one thousand dollars, but which under adverse circumstances might be sold for only five hundred dollars, would be worth two thousand doilars; and the products of labor, other than money, which the owner of that house had received in exchange for his one thousand contracts for one dollar each, would also sell for two thousand dollars; so that after he had redeemed his contracts, he would be in possession of wealth, which, if measured by the standard of money, would be worth three thousand dollars.

Your committee will not attempt to make any estimate of the amount of contracts, at any time, existing in the United States constituting its currency. That portion however of our country which consists of contracts to pay money on demand, whether issued by individuals or corporate bodies, such as bank notes, and which properly constitutes the circulating medium, of the country, may be estimated with tolerable precision, by ascertaining the quantity of coined money in the country, and then computing this description of notes as four times greater in amount-for this calculation is more than justified by the general statements of the most cautiously conducted banks, exclusive of deposits and bank credits. An estimate thus made will be sufficlently accurate to settle principles-and, if it be admitted that, six months ago, there were thirty millions of metalic dollars in the country, there was then, according to the above rule for computing the same, a circulating medium of bank notes, payable on demand, amounting to about one hundred and twenty millions of dollars-which being used as money, by couriesy, in the interchange of wealth, caused the products of labor to be then estimated

by this standard. But if the amount of metalic dollars has since been diminished to twenty millions, by exportation, to pay a balance of trade against this country, which may be stated as a fact of recent occurrence, the quantity of notes pay-able on demand, or circulating medium, must have been diminished to eighty millions of dollars-and if the amount shall not be speedily augmented, the value of the products of labor must be adjusted by this standard

Again, let it be supposed that the wealth of the country was twenty four hundred millions of dollars on the first day of June last, measured by the then currency—now, it would be worth but sixteen hundred millions of dollars, as measured by the considerations in contracts constituting the present currency of the country—which shows a loss of eight hundred millions of dollars by this standard, that is primarily referable to the abstraction of only ten millions of money, to liquidate a balance of trade with foreign countries, created by excessive importations of the products of foreign labor, which could have been better supplied by our own industry, as far as our necessities required them.

How many men of wealth have been reduced to

poverty by this unfavorable balance of trade-How many children will remain uneducated by reason of the adversity it has occasioned-and how many fathers will be required to labor twelve hours in the day to earn the same amount of money, that, six months ago, they could have earned in eight hours, can only be answered by the records of courts and

the registers of asylums for the poor.

The committee would, however, do in latice to themselves, if they did not declare it to be their settled conviction, that gold and silver are the only safe commodities of which to constitute money; and they are persuaded that they are supported in this opinion by the great mass of the American people, that to abandon the principle of making these the basis of contracts, would break up the foundations of society and disorganise all our civil institutions. Yet they are equally bound to declare their conviction, that there can be no security that this basis of our currency can be maintained, unless the power of congress to regulate commerce shall be so exercised, as to prevent the introduction of the products of foreign labor into our country, for which our surplus labor will not pay, when sold in foreign markets-a regulation, that can alone prevent such balance of trade accruing against us as would withdraw the foundations on which our contracts rest.

A guide to national prosperity and safety more true and unerring cannot be found then a favorable balance of trade, sustained by such a regulation of commerce; nor one more fallacious, than that furnished by a tariff graduated by the mere calls of the government treasury, to defray ordinary or current expenses. A treasury, made to overflow by imposts on foreign goods, is but an evidence of great importations of the product of foreign labor; and shows clearly, that great exportations of the product of our labor must follow, to balance the purchases made in foreign countries; whilst it warns us that, if all other descriptions of the products of our labor are insufficient for this object, our money must disappear.

If an ample security against this state of things can only be obtained by a tariff of protecting duties, and these produce a surplus revenue, would it not be better to appropriate this surplus to any national object, rather than to pursue a different course, that must paralyse the industry of the people? Certainly, it would be better so to dispose of a surplus, thus created, than to permit the general wealth of the country to be diminished some hundreds of millions of dollars, when measured either by the standard of labor, or by contracts existing for the payment of money. Far better would it comport with the interest of the nation, to regalste commerce in such a way as shall increase our currency, by increasing the means of its redemption, to an extent, that day's labor will produce so much more wealth here, than it will elsewhere, that emigration will flow to us from all parts of the civilized world, to assist in subduing our boundless forests, and render our waste lands, which are now tenanted by wild beasts, tributary to the happiness of the human family.

The events that preceded the late war furnish a lesson which ought always to be held in remembrance. Between the time when the embargo was laid in the year 1907, and the time that it was raised in the year 1809, the importation of foreign goods was permitted, and exchange on England rose in the U. States, 9 per cent. above par, payable in the currency of England, which was then 10 per cent. below metalic money. But after the embargo was raised and the non-importation act substituted, our exports became so large and our importations were so small-those from England being prohibited, that exchange on London fell, in 1811, in the U. States, 20 per cent. below par, and coin flowed into the country from every quarter: then the currency ex-panded to a degree that induced improvements in the soil, in manufactures and houses, to an extent that had never before been equalled. Let it also be remembered, that, when war was declared, and exportation nearly ceased, the precious metals left us with as great rapidity as they had previously sought our shores; and continued to do so, until contracts could no longer be satisfied in money; until the government Itself could not comply with its engagements-in fact, until it could not even pay the interest of its debt in money. If it be asked why could it not comply with its engagements to pay money?-it may be answered, for the plain reason that money is an article of commerce, and, as such, had left the country to pay debts, which other pro-ducts of labor could not be exported to discharge. The embargo of 1807 was a regulation of commerce that depressed the value of labor, and the non-importation act of 1811 was a regulation of commerce which augmented the value of labor. The one, suppressed our whole exports-the other, a part of our imports. The war too of 1812 destroyed our entire commerce with the enemy-yet it was declared and prosecuted to protect our foreign trade, and thereby to promote the general welfare. Assuredly, these positions will be admitted by the strongest advocates of free trade. And is not congress still charged with the duty of promoting the general wel-Or, by what means can this be more effectually done, than by regulations of commerce that will promote the industry of our own citizens-enable them to comply with their contracts to pay gold and silver, when they have contracted to pay money, and also to use and expand the resources which a bountiful Providence has placed so abundantly within their control; and thus diffuse the greatest possible degree of benefit and happiness through the whole body of the people?

It is not contended that the trite remark, "that trade will regulate itself," is not in the abstract true; nor that money, will not, like all other articles of commerce, seek the best market: but admitting these axions to be true—how are these ends accomplished?—Sometimes trade will regulate itself by means that must bring ruin upon a whole nation. It may regulate itself by permitting products of labor to be imported from countries where a day's labor can be obtained for twenty cents—where the laborer is but half fed and half clothed: and these products may be imported to an extent that would draw from our country such a proportion of our money, as

would enable the possessors of that which remains to purchase a day's labor for eighteen cents. Then, and not till then, would money come, by the ordinary laws of trade, to us, in payment for the products of our labor; because these would then be cheaper here than elsewhere.

Though the committee entertain no doubt but that the maintenance of a balance of trade in favor of the country, is not only essential but absolutely necessary to preserve a general advancement in pros-perity and wealth, in which each member of the community is interested, be he rich or poor, be he a possessor of houses or lands, of manufactories or mechanic arts; or be he the possessor of the elements by which wealth is acquired in any other way-all are interested in their respective degrees, according to their stake in the common family. But while the committee wish to express in the most unequivocal way their opinion upon this point, they must not be understood as advocating an exercise of the power of congress in the regulation of commerce, that will keep this balance of trade in favor of the country beyond the extent of a decided but moderate amount. which will augment the quantity of gold and ailver brought into the country, and retain it in about the proportion that the population will increase in number.

The committee suppose it will be admitted, that stability in the value of all products of labor would be a desideratum in political economy, more desira-ble than any other; but that this is altogether unattainable, as long as diversity of soil and climate exists-causes producing effects against which the wisest legislation cannot effectually provide. As for instance, what would be the effect upon our country if an unseasonable frost in the month of June or July, should destroy our grain crops, by which the community would have to purchase their bread in foreign countries for one year—or, if by the same means in the months of August or September, the cotton and tobacco crops should be destroyed and their value as exports be lost to the country? A balance of trade would be immediately created, which could drain the legal money from the country, to an extent that would either suspend the laws enacted to enforce the fulfilment of contracts, or would pass all the property of the debtors of the country into the hands of their creditors, for nominal considerations, at forced sales.

But these are contingencies which no legislation can guard against, more than it can against war, postilence, or other means used by the great first cause to arouse men to a reliance upon him for all their blessings—while the same evils, brought upon other nations, which would render a reliance upon us exclusively for the necessaries of life, at our own prices, would bring to our country gold and silver in such quantities, as would augment the value of the products of labor here, when measured by this standard, so high, that no tariff of duties or any thing short of total prohibition, would prevent the products of the labor of countries thus impoverished, from being brought to us, with which to draw back our surplus treasure.

If then it be impracticable by any regulation of commerce, to produce stability in the value of labor; and stability, if attainable, would conduce to the general prosperity, it would seem clear that the nearest approximation to this point which can be sttained, ought to be sought in all legal restraints upon commerce.

Nor must the committee be understood as advocating a general system of high duties, unders such duties be indispensable to produce, under ordinary circumstances, a balance of trade in favor of the country—that system of duties which shall operate as a positive and ample protection to our own industry, in developing to the greatest extent the elements which we possess within ourselves to supply in the greatest measure possible our own wants, and add to our own security, must be the most judicious system which can be devised in any regulations of commerce, intended to promote the general wellare—and this may possibly leave exempt from duty, altogether, many product of the labor of foreign countries, which are either necessary to combine with our elements in developing our own resources and augmenting our wealth, or which are necessary to did to our comfort, happiness or national protection and defence.

In conformity with the views of the committee, all contrasts for the payment of money, which in their nature are transferable, either by assignment or by delivery, are currency, and as such, pass for just as much as they will sell lor, in the market; pet all currency is

not "circulating medium."

Circulating medium consists exclusively of that portion of the currency which approximates in value so mear to gold and silver, that, by common consent, it is, in the ordinary transactions of society, accepted and used as money, at its nominal value - But the moment curas money, at its nominal value. But the moment cur-rency ceases to pass at its full nominal value, it assumes the character of any other article of commerce, and ought to pass for only as much as it will command in If it pass for more than it will sell tor in momoney. If it pass for more than it will sell for in mo-ney, the party who has issued the contract, if he has received a full consideration for it, gains the difference between the nominal and actual value at the expense of the public, if it be that description of currency which enters into the transactions of society as circulating me-dium or a substitute for money. The principle is the same, whether its value be one per cent. or ten per cent. below par: it ceases to be "eirenlating medium" equal in value to legal money. It is a depreciated circulating in value to regal money. It is a depressible feelisting medium, and the circulating medium which existed in the United States during the late war, is an illustration showing how far such a medium may be permitted to depreciate, when the operation of laws for enforcing the obligation of contracts shall be suspended, either by common consent or from necessity, as was the case then, and will for the same reasons be the case again, if the country shall become involved in a war with a nation aufficiently powerful to prevent the exportation of all other products of labor except gold and silver, because the immutable principles upon which the laws of trade are founded, cannot be controuled by municipal regulations-If the stock of gold and silver on hand at the commencement of the war shall be drawn or said ex-hausted, contracts payable in these materials cannot be fulfilled a "eye! the ordinary intersecurse of society re-formed of contracts to pay gold and silver, they are contracts of perform impossibilities—they cannot be paid in that which cannot be obtained—they cannot be circumstants, if the opposition of the law be not sus-terounstants. pended either by common consent or otherwise, a general bankruptcy of debtors must take place, including not only individuals but corporations, and especially banks, as their notes payable on demand would first some under the provisions of law, and be first rendered liable to its operation—No bank, whatever its power might be, under ordinary circumstances, could maintain might be, under orthing preumstances, could maintain apenie payments, and continue to prosecute business and issue notes payable on demand, if gold and silver be ex-ported and cannot be imported—For such contingencies an exercise of sovercign power is necessary, which would be highly inexpedient, it not illegal, under other circumstance L

As the portion of our currency that, from the facility with which it is convertible into legal money, is by courtesy used as money, and constitutes the circulating medium; and as this medium consists principally of bank notes, it may not be improper for the committee to present their views in relation not only to banks, but the effect which they have upon the industry and prosperity of the community, for the purpose of dispelling an opinion, too often entertained, that they possess a controlling power, at all times, over the property and wealth of a nation—and excress that power, by making money plenty or scarce, at their pleasure.

Banks are nothing more than associations of individuals, who have joined their funds together in one common stock, to be employed by the agents of the proprietors, in the purclase of that portion of the currency which consists of bonds, bills and notes of other companies or individuals—and which are mere contracts to pay money, at some future time or place: and such junctions and the proprietory of the propri

In the United States, companies, generally, are in-corporated by laws, under which the corporators surrender some of their natural and undentable rights for the purpose of procuring a legal exemption, for each in-dividual stockholder, from liability to a greater extent, on account of the acts of his copartners, than the amount of funds he has placed in the joint capital; and for the purpose slao, of obtaining in law, the character and benefits of individuality in conducting proceedings in courts of justice. The public security is not perhaps so great in such companies, as it would be if they were not incorporated—lor, without an act of incorporation, each copartner would be liable for all the debts of his company, to the extent of his whole estate. These banking pany, to the extent of his whole estate. companies however, have become very numerous, under the sanction of law; and they are all employed in buying or discounting currency that is payable at some future time; and giving for this currency their own notes, payable at sight or on demand. The quality of the currency brought to them for sale or discount, is judged of by them, according to the same rules that govern purchasers That which they consider good is of any other arricle. secepted, and that which is doubtful they reject. tracts made by persons who are supposed to possess such an abundance of wealth, that, if it were brought to sale, even under the operation of law, would perchase as much legal money as would redeem all their con-tracts, are considered fair articles of commerce with a bank; articles, which it will purchase, and on such terms as the parties can agree upon, if bills of exchange; but if they are promissory notes, then the purchasers cannot legally buy them at a lower rate, in some of the United States, than six per cent. per annum, deducted from the nominal amount of such notes or bonds, without subjecting the purchasers to the operation of penal laws.

It has been supposed by persons well informed upon the subject, that there are in the United States about three hundred and thirty banks, in which capital has been vested to the amount of one hundred and forty-five millions of dollars. If this estimate be correct, it will follow that there must be now in the United States will follow that there must be now in the United States as many millions of dollars—provided however, that the capital of those banks was all paid in gold and silver and still remained in their vaults; but a supposition so prestdl remaneu in their vautivit out a superstoom of posterous as this will not be entertained by any one. For, in the first place, bank capital never was all paid in gold and silver, with the exception perhaps of the first bank which was established in this country: and secondbank which was been and were still in bank, it would have been wholly useless to the owners. money was paid in to constitute the capitals of our banks. has not only all been paid out for the contracts of individuals, based upon the products of labor, owned and pos-sessed by those individuals—but the banks themselves have, in addition thereto, issued their own notes to an amount varying perhaps from one hundred and twenty millions of dollars down to sixty or eighty millions of dollars. It will thus appear that, if the bank capitals amount to one hundred and forty-five millions of dollars and they have issued their own notes to the amount of one hundred millions, which, in addition to their capi-tals, are invested in individual contracts or general currency - the banks have the power to call upon the community for two hundred and forty-five millions of dollars; or one hundred and forty-five millions more than the community can demand from them. If therefore, the banks were to decline jurclassing currency, and that which they held would all fall due in equal proportions daily throughout one year, their calls upon the debtors in the community would be, daily, for the payment of about four hundred thousand dollars; but if it would all fall due within six months, which is perhaps nearer the

time limited for its payment, their average daily calls, for legal money, would be at the rate of eight hundred thousand dollars.—These demands could not be paid; the money could not be obtained by their debtors—here cause there is not, and probably never lass been, more than one-fifth part of this grous sum of money in the U. States, at any one time. Nevertheless, should the operations of law bring to sale, for such prices as it would command, a sufficient quantity of the property of debtors to liquidate these claims, it must be self-evident that it could not sell for more money than the country contained; indeed, that it would sell for just as much believe that sum as the possessors of the money might choose to receive it at—unless, money should be brought choose to receive it at—unless, money should be brought or sent by its owners from loreign countries to exchange for the products of labor here, by reason of these being on much lower in this country than cleawhere as to hold out a sufficient inducement to foreigners to emigrate to the United States—or make purchases therein.

It is evident, therefore, that a combination of a few banks could monop, for a time, the whole legal money in the United States, and thereby temporarily remove, in the United States, and thereby temporarily reduced to what the other than the United States, and thereby temporarily reduced to the United States may extend the United States and standard than the states and the United States and th

The committee consider banks, whether incorporated or un-incorporated, as not differing from other private compunies, whose operations are confined to a particular branch of commerce; and bank notes as not differing in any degree, either in their nature or in their effects upon society, from the notes of any other corporations, companies or individuals, whose ability and will to comply with their engagements, are unquestionable. It has en remarked too, that it is their business to trade in the currency of the country, and that the currency of the country resis for its value upon the amount of wealth in the hands of debtors, who are the parties that have issued the surreney; and that, the banks themselves lawe, as debtors, issued from saxy to eighty or one hundred millions of dollars of that portion of the currency, which is the most speedily available in obtaining money; and that after they shall have pand the amount of their debts, they can call upon the community for the production of one hundred and forty-five millions more, at such times as their discretion might dietate. It thus appears, that the power which the banks possess over the wealth of the country results from the fact, that the amount of specie therein is much less than the amount of bank caspream materials in materials are made to a substitute of the pital, and that the chief security which we have against an injurious exercise of that power for the benefit of their stockholders, is to be found in the moral sense and patriotism of bank directors.

It is now proper to show that it is not in the power of banks to relieve the community from a pressure for money, when a balance of trade exists against the country, however desirous the directors of banks may be to do so. These institutions are the principal depo-

sitories of the gold and silver of our country-and their notes form a circulating medium payable on demand.

Any person who can possess himself, be he a foreigner
or circen, of these notes, can therefore, at a moment's notice, demand that the vaults of the banks at ment's notice, demand that the vaults of the banks as which they are payable shall be unlocked, and these oin paid out, to be put on ship-board for exportations. Few banks, if any, is this country, have more than one half as much coin, at any time, in their vaults, as they have notes in circulation. They are, therefore, lished they possess. The security they feel that this will not be the case, springs from the expectation that the coin will not be wanted; or, if wanted, from a knowledge that their notes are seattered and distributed into the hands of so many persons, that they cannot be cultected. hands of so many persons, that they cannot be sulfected and brought in for payment except in small quantities, and during many days, and, that while this operation is going on, they can collect as great as amount of mo-ney from their debtors as will be draw from the banks in coins provided, they purchase no more currency and in comit provided, they purenase no more currency and do not re-issue their own notes. Banks, it thus ap-pears, must first feel the pressure of a call for money to pay a balance of trade due in a foreign place; and they, in turn, produce, not from choice, but from necessity, a corresponding pressure upon the debtors of oceany, a contraportum present apply the country; and these, under such circumstances, resort to a sale of the wealth they possess, in the shape of products of labor or articles of commerce, to procure money, with which to redeem the currency they have issued, and which is held by the banks. At such times, legal money, or gold and silver, will be more in demand than other articles—and such demand will beuemand than other articles—and such utemand with open come more urgent and pressing in proportion as the quantity of money diminishes; until, by the ordinary operation of the course of trade, which adjusts prices by demand and supply, the value of gold and silver is of wealth or products of labor, that these will here sink so low, when compared with the products of labor elsewhere, that gold and silver will come to us, to purchase labor or its product; because it can be purchased here, with gold and silver, cheaper than in other countries. When this state of things takes place, the balance of trade will be in our favor, and remain so, until lance of trade will be in our layor, and remain so, wath as much gold and silver shall come to us as will, when measured by that standard, raise the value of labor higher here than in other places, when the tide will again turn.

But a every turn of the commercial wheel which produces an unfavorable balance of trade, is attended by devastation and ruin to the debtors of a community, who at ways constitute the great body of the people in all commercial nations; said as great portions of the property of these must pass, at such times, into the hands of the end of the commercial nations; such as forced sales—the rich then become more rich, but all others suffer; a paralysis takes place in commerce; the relations of society and disturbed—and, as the whole economy of the nation has to be re-organized, a new generation must arise before general prosperity can again pervade the land. To guard against such estationphies in the United State, it would seem that the power to regulate commerce was wisely and necessarily bestowed on congress.

Finally, your committee wish to be understood as being of the opinion, that the powers and operations of banks upon the weath and prosperity of the nation, when their powers are used with sound discretion and in good faith, are highly salutary; provided their espitals, be moderate in amount—and a fair competition in their trade is maintained.

If incorporated banks did not exist, unincorporated banks would undoubtedly be established; and individuals would here perform all the functions of banks—as they do in England, by desling in the currency, and issuing notes which would constitute a circulating medium. For if they did not, the same system of barrier would, from necessity, have to be adopted in the interchange of commodities of value that exists in some other usions, and this could only be done by one being in poscasion of so much of the precious metals that an exchange of the product of one day's labor in silver or

gold sould always be made directly for any other product of labor, of equal amount or value—and into which an equal quantity of labour had entered. A state of things a under which commercial prosperty could never be experienced, because the cost and value of the eapital employed must always be equal in amount to that for which it would be exchanged; and lience no profit could accrue to either the buyer or seller, except what would arise from any difference in the value of the articles exchanged, that might happen from subsequent alterations between the demand and supply.

It will be perceived that the committee have confined their remarks upon the effects of the balance of trade, to the commerce of this with foreign nations. have so done because it is this balance, alone, which operates upon the whole mass of the people of the United States. But balances of trade also exist between different portions of our own country, and between individuals of the same vicinity—as is evident from the pros-perity of certain towns and districts and decline of others; and from the prosperity of some individuals and adveraity of others. These are matters which may however, be asiely left to regulate themselves, under our happy constitution-which guarantees a free trade between the equality wise laws, which, by destroying the right of primogeniture, have eaused the wealth of this country to be diffused in as many hands as possible. Under such circumstances, the enterprise of our fellow citizens will regulate our home trade better than any regulations of the states respectively, could govern it. The people of this union are one commercial community—and, whilst the purchases and sales made by its members are made exclusively amongst themselves, this community cannot over-trade itself-for all its wealth will remain in the possession of some of its members, should it change hands every day: and to the community, as such, it will be im-material whether it were chiefly in the hands of A and B, or C and D; as A, B, C and D, would have the whole of it.

This committee would certainly fail if they attempted to shew that any system can be provided, in relation to our general currency, that would be more advantageous to the community, or perfect and simple in its operation, or one, which is better calculated to afford every attainable facility in the interchange of wealth, and at the same time be so free from all tendency to vitiate the public morals, than that which now exists.—Based upon the product of labor, and relying upon the integrity of the laws of the states, for the erramty with which the fulfilment of contracts can be enforced—we regard it as a system commended to our approbation, not less by experience than by sound reason. But, let it be also remembered, that not only the stability of the system, but likewise its attlify to the public, depends upon the power of congress to regulate commerce, being exeressed in such way as will protect the industry of our citizens to an extent that shall, at all times, maintain a balance of trade in favor of our country; which is the only means by which gold and silver can be retained, or contracts payable in these commodnes be fulfilled-or those rumous depressions prevented in the value of property, which always brong distress and adversity upon

the most enterprising portion of our citizens.

The committee feel that some apology is necessary for the length of this report, notwithstanding that they have perhaps sacrified clearness to their deare to reduce the subject within a moderate limit; still they hope it will be acknowledged, that the importance of the question will furnish a justification, for the indispensable details into which they have been led. All which is respectfully submitted,

THOMAS ELLICOTT, chairman.

- The state of the state man

REPORT ON SUGAR AND MOLASSES. Mr. D. W. Coze, of Pennsylvania, in behalf of the sommittee to which was referred the subject of the production, manufacture and consumption of sugar and molasses in the United States, made the following reports

That, like other manufactures of the United States, those of the south claim the support and protection of the general government. Although sugar and molasses do not some within the ordinary acceptation of the term,

yer they are in reality, like the fabric of cotton, deriv-ed from the produce of the soil, and that too by a most laborious, delicate and expensive process. Sugar, more-over, has become by long habit a necessary, and not a luxury of life in this country, where it forms an indis-pensable part of two of the daily meals of its most mdigent inhabitants. The policy, therefore, of seeing a cheap and certain supply of so important a conder to every family, cannot be denied. In examining the subject of the protection of sugar and molasses, your committee assume as an incuntrovertible maxim, advanced in the selebrated report on manufactures by Alexander Hamilton, that, in all cases, where a country possesses an ample supply of any raw material, full and entire protection, against rival toreagn articles made from that material, will in time invariably reduce price, by home competition, to the lowest rate at which they can be atlorded; to which may be added, that the examples of Great Britain and France fully confirm the truth of this axium in relation to all their staule manufactures. Conelusive proof, however, is found in the experience of our own country upon this point, and the following ap-posite cases may be adduced. Coarse cotton cloths now sell for 6 to 7 cents the yard, the protective duty as 83 cents the square yard. They were formerly worth 20 to 25 cents. Protection, therefore, has brought the price below the duty. Lead is now at 34 cents per its. in Missouri—the duty is 3 cents. It was formerly worth 6 to 8 cents. Common window-glass is now 4 to 41 dollars the box-duty 31 dollars per 100 feet-it formerly solil at 10 to 14 dollars. Cut oads now 6 cents per to .duty 5 cents—formerly worth 10 to 12 cents. Copperss is now worth 24 cents—duty is 2 cents—before the late war it was 3 cents, but rose, during the war, to 20 cents. The same remark applies to various manufactures of leather, to coarse hats, to all cabmet and other wares of wood, to carriages, to the soal of Pennsylvania and other states, which bids fair to rival the fisheries and coasting trade in the employment of shipping, and as a nursery for scamen. Seven hundred sail of sloops and schooners were loaded at Philadelphia alone the last schooners were loaded at Philadelphia alone the last year with this article. To these, among many others, may be added sugar and molesses. The aggregate quantity of the former consumed annually in the U.S. is estimated at about 150 millions of pounds weight, and already do we make, under the influence of the duty of 3 cents per lb. imposed in 1816, 100 millions of pounds, equal to two-thirds of the whole consumption of the country, which is now worth in Louisiana 5 cents per 1b. The duty, as before stated, is 3 cents, and the former price, for many years, varied from 8 to 12 cents. Refined loal sugar, manufactured from domestic and foreign brown augur, is largely consumed at home, and beginning to be extensively exported. It contributes, consequently, to increase

the denand for, and outlivation of, the former.

It as outliny of special observation, thus Great Britain process her colonial brown sugars by distry of 122 cents per lb. on the foreign article, Paris of the distribution of the colonial brown sugars by distry of 123 cents per lb. on the foreign article, Paris of the content of the modern economists very unreasonable for impossing and 3 cents for the same purpose. The composition of the British policy is, that she supplies once, however, of the British policy is, that she supplies once by all the world with her refined loaf sugar, excepting only France and Ru-say, sho, it is believed, products the introduction of foreign load sugar altogether. The U. States ought to become the greatest ugar refining country, as they possess within their metropolitan limits as extensive sugar region, and allow, moreover, a draw-back of 5 cents per lb. on their load sugar exported to foreign countries. Thus, the continuance of the 5 cents duty must ere long accure to this country a large share of the refining business.

Total, 34 P. S. There are eight refineries in Baltimore. H. N. Of molasses, the quantity made at the rate of 60 gallons for every 1,000 lbs. of sugar, is from 90 to 100,000 casks, of 60 gallons each, worth 14 to 16 cents per gallon, and of a quality very superior to any imported. This article was protected by the tariff of ported. Into article was protected by the tautif of 1828, by a duly of 10 cents per gallon, but it was last year reduced to 5 cents, which is sufficient. Should the duties, however, on these two articles be now reduced, the consequence must, in the opinion of your committee, be most dissistents to the planters of the committee, be most dissistent to the planters of the count, in which may be included the infant establishments of Georgia and Florids. The number of sugar plantations, large and small, in Louisians alone, exceeds, from the best information, 500, half of which are supposed to be worked by steam, the remainder by cattle and horses

Of the vast amount of capital employed in buildings, lands, slaves, steam engines, and other machinery, iron boilers, eattle, horses and implements of husbandry. clothing, the purchase of slaves, every thing except bricks, wood and mortar, are supplied from the other Dricks, wood ann morror, are supplied non-tine ounce states, including those bordering on the Ohio and its tributary waters to which may be added, the annual demand for corn, flower, states, house, beef, park, bacon and lard, required for the use of these catates, which, if ruined by a reduction of even one cent per lb, of the duty of loreign sugar, must cease to consume them, and thereby seriously injure those who depend on Louisiana for a vent for those at tickes, while the United States, deprived of her sugar culture, will again be at the mercy of the foreign sugar growers, who would then recover and hold a monopoly of the supply, and be enabled to dictate prices, as Great Britain assuredly would do, were the cotton, woollen and iron manufactures of this country overwhelmed by a similar impolitic reducthis country overwheather by a similar imposite truc-tion of the protecting duties; presenting a practical il-lustration of free trade doctrine, which sanctions the admission of foreign rival commodities without duty, and does not object to the exclusion of our own from the ports of that rival, or deem it a grievance requiring correction. Another infallible consequence of a repeal or reduction of the duty, would be again to lorce the whole of the sugar country into the cultivation of cotton, whereby 100,000 additional bales of cotton would be brought annually into the market, and thereby tend to augment the evil effects of over production. These are not all the disadvantages that would be experienced from even a partial repeal of the duty on sugar. received from even a partour repeat of the unity on sugar, at this crisis of depression in prices. The co-sting trade of the country would be seriously affected 100,000 tons of shipping and steamboats, now annually required to transport the sugar and molasses of Louisiana to the northern and western states, would be thrown out of employ. In fine, the strong tie of interest and dependency of one pursuit of industry on its correlative branch for employment, now existing between the sugar planters and those whose wants they supply, and by whom they also are supplied in return, would be rent saunder and dissolved, and our former condition of a reliance on foreign supplies, and a precarious foreign vent for the articles now consumed by the sugar growers of Louisians, would naturally return.

There is yet a remaining consideration connected with this interesting subject, which your committee feel they ought not to unit to notice. The enterprising sport of our southern brethren has, within a few years must, stimulated them to scalt extraordinary exertions in opening new augar plantations and extending the old ones, that their pecuniary engagements and debts, contracted on the faith of a continuance of the present protection, have been greatly augmented in expectation of ultimate remuneration; and it is a lamentable truth, that the sugar planters of Louisiana are at this moment indebted to the extent probably of one-third of the value of their entire estates and slaves, and are paying an interest of 8 to 10 per cent. on loans that can only be extinguished from the avails of their future crops. Meanwhile these bold and adventurous undertakings are producing for the community at large the most beneficial results, and bid fair, by the reclaiming and draining of the rich allo-vial lands of Louisians, (formerly deemed of no value) to spread the cultivation of the cane over all that country, so as, in a few years, not only to place beyond all tual cost, independent of the slaves and land, and

n<sub>mag</sub>

contingencies the future supply of the United Stated, but to add a new and important item to the list of exports. Believing, moreover, that it has been satisfactorily demonstrated that the price of domestic sugar has been reduced by protection, to the savantage of all, especially the poorer classes, your committee feel satisfied in expressing their decided opinion, that sound policy requires the present duty on foreign sugar should be allowed to remain undisturbed.

Appendix to the report on sugar and velasses.

The Permanent Committee of the New York Convention believe that many useful remarks and facts may be added to the report of the special committee, to whom the subject of the production, manufacture and consumption of sugar and molasses was referred-to shew the intimate and important connection of this branch of industry with others, and its general and powerful tendency to enlarge the internal trade of our country, and increase the com-mon stock of national wealth. Certain facts collected by the planters of Louisiana, with the statements made by Mr. Johnston, one of the senators from that state in congress, and many other valuable papers are before us—of which we propose to offer a condensed view, and apply the date obtained to bring out probable aggregates.

At the time of the eession of Louisiana (1803) there was a revenue duty of 21 cents per lb. on augar. The great influx of capital and enterprise which followed the cession, caused a much increased application of labor to the cultivation of the cane. For many years, the experiment seemed a doubtful one; but the cane gradually adapted itself to the climate, and rendered the crop more certain, though still a precarious one-skill, also, was acquired by experience, and scientific power brought into use; and, in about twenty years after the eession, the product amounted to 40,000 hogsheads per annum, and began to afford a profit on the large capital that had been employed in this business. In 1816, an additional half cent per lb. was added to the duty, to protect the cultivation; and, from that time, confidence in ultimate success being entertained, capital was freely vested in lands and slaves for the manufacture of sugar; and the present result is, a yearly product of about 100,000,000 lbs of sugar and 5,000,000 gallons of molasses, worth about six millions of dollars: of which amount at least four millions are annually paid by the planters to the people of other states, for provisions, manufactures and labor supplied.

Speaking with reference to the foreign demand for the agricultural productions of the United States. Mr. Johnston, in his letter to the secretary of the treasury of the 31st December 1830, says-

' It is very doubtful whether it is possible, from any increase of agricultural products, to increase the value of the export. It will be seen, then, what proportion this will bear to the whole export, what amount of labor it will divert, and what interchanges it will create.

I refer you to the answer of the Central Committee of Louisiana, in which they present you the result of the operation of 20 plantations for five years, in the parish of Plaquemine, and in the most favorable position.

The capital of 20 plantations	\$2,028,000	
Gross revenue	274,818	86
Per cent. per annum		55
Expenses	171,650	
For the furnishers of objects of	on-	
sumed-per cent.	8	46
For the planters-per cent.		09
Total, equal to (gross re	evenue) 13	55
Cost to the planter, (expenses)	3.63 per lb	
profit on capital 1.87	per lb. 5.50	
It may be, therefore, eafely as	sumed that the	e ac

fixtures, is not less than 34 cents a	pound, and the
profit not more than 2 cents.  Of the 100,000 hogsheads estimated at	\$5,500,000
And 5,000,000 of gallons of molasses	1,000,000

Of the 100,00 And 5,000,00	O hogsheads estimated at O of gallons of molasses	1,000,000		1
		6,500,000		1
Actual exper	se, (at 3½ cents) (2 cents)	4.136,363 2,363,636		
		\$6,500,000	00	

"It is extremely difficult to estimate the profit upon capital: the value of property which constitutes the capital, depends, in general, upon the interest it produces. There is loss of time and capital in making the establishment. The first four years will probably yield no actual profit, but the labor is employed in making valuable improvements, which add to the value of the estate and become capital. Besides, when in the most successful operation, the crop depends upon the seasons, and somewhat upon the acil, state of preparation, skill, and other causes. Thus a plantation with 99 slaves yielded --

In 1826	250 hhds
1826	350
1827	600
1628	550
1829	174
	5)1,924

394 4-5 General average Which is less than 4 hhds. to the hand.

"This is an established plantation in successful operation: and the result greatly exceeds the other plantations in the neighborhood. This crop is made by 67 working hands. In some favorable scasons, as '27-'28, they made eight or nine hogsheads to the hand; and in others from 2 2-3 to 3. When one of these favorable seasons occurs, and an extraordinary crop is produced, it becomes a matter of great notoriety, is published in the papers, and thus the impression is made that the profit is immense, that the duty is unnecessarily high, and ought to be repealed or reduced. Under this false view of the subject, it has been brought before congress, and many members have meditated the reduction of two cents a pound, equal to the whole profit upon the labor. 1 cannot believe that the southern states, with a correct view of this great concern, will consent to destroy this national object; one essential to our independence and our comfort; to destroy the whole value of slave property; to ruin the people of Louisiana, now in a course of experiment; to strike out from the protection of government the only great object in which the south can feel any interest; an object which will be a full equivalent for all the south pays under the tariff system."

The twenty plantations, on an average for five years, yielded 4,379 hhds. of sugar or 4,379,000 lbs and employed 1,086 working hands, requiring, in all 1,674 staves. The whole product of sugar being taken at 100 millions of pounds- the following results appear:

As 4,379 hhds. are to 2,028,000 dollars, so are 100,000 hhds. to 46,300,000 dollars, the whole capital vested in the sugar estates of Louisiana.

And-as 4,379 bhds. are to 1,674 slaves, so are 100,000 to 38,200 slaves, the aggregate required on the present sugar plantations.

The following extract from the appendix to the same letter of Mr. Johnston is highly interesting-

The capital invested in a plantation capable of producing, by the best management, 400,000 pounds of sugar, and 10,000 gallons of molasses, worth on the plantation 29,000 dollars, must consist as follows:

·	
1.500 acres of land, at \$50 per acre	75,000
90 hands, at 600 dollars each	54,000
40 pair of working oxen, at 50 dollars	2,000
40 horses, at 100 dollars	4,000
Horizontal sugar mill	4,000
2 sets of boilers, at 1500 dollars each	3,000
Buildings of all descriptions	25,000
12 carts	1,200
30 ploughs	500
All other utensils, such as timber whe	els,
hoes, spades, axes, scythes, &c.	1,500
	120.000

The annual expenses on the above plantation, cost the following items 10.

. 700 dollars in the lollowing items.		
Provisions of all kinds	3,500	
Clothing of all sorts,	1,500	
Medical attendance and medicine	500	
Annual losses in negroes	1,500	-
Taxes	500	
Horses and oxen	1,200	
Repairs of buildings	700	
Ploughs, carts, &c.	500	
Overseer	1,000	

\*\$10,700

Two crops of cane are generally made in succession on the same land, one of plant cane, the other of the second year's growth; it then lies fallow two years or is planted in corn and beans.

Gross proceeds	\$23,000
Expenses	10,000
Net proceeds	12,300

Being about 7 per cent. on the capital inves The preceding facts, subject to the rule adopted above, might be used to bring out many important results. We shall only take one-the amount of provisions annually purchased by the sugar planters

As 400 hhds, of sugar are to 3,500 dollars paid for provisions, so are 100,000 hhds. to 875,000 dollars, annually paid for pork, corn, and other supplies, chiefly furnished by Kentucky, Ohio, &c. and it should be observed that the supplies of clothing, mills, boilers, carts, ploughs, and other utensils, and of horses and exen, as well as of slaves, are all derived from other atates of the union. We say all-for the foreign products or manufactures which enter into the consumption of the Louisiana sugar planters, are of small importance or value.

" It should be observed, that only 2,000 dollars, of the 10,700 expended, can be brought into those classes of articles on which dutles are payable-to wit, for clothing and medicine, being less than one fifth of the whole expenses, which expenses are less than one half the ultimate value of the crop.

We contend that negro clothing, generally, has not advanced in price because of the tariff-nay, are prepared to say, that protection has reduced the selling value of goods required for the use of slaves: but admiting that prices are increased because of the tariffis there not an increased ability to pay them?

On this subject, and with reference to the "taxes" paid by cotton planters, we shall have something to say on a future occasion. The whole cost of such commodities as are "taxed" by the tariff, and used in South Carolina for the supply of slaves and plantations, producing crops worth eight millions, cannot exceed 800,000 dollars. Then she may pay, let us admit, a tax of 400,000 dollars a year on these things. Her proportion of a revenue of \$5,000,000 is thus determined-

As 213 representatives in congress are to 25,000,000 dollars, so are 9 representatives in congress from S. Carolina, to 1,050,000 dollars—the just proportion which South Carolina ought to pay, and, possibly, may pay, on her general consumption.

The statement just given has reference to one of the best managed estates in Louisiana. With sugar at 5 cents per lb. on the plantation, its late price, it is stated that the capital employed does not yield 6

per cent. per annum.

The present consumption of sugar in the United States may be put down at 150 millions of pounds—one-third of which is imported. In 1840 it is estimated that 200,000 hogheads of home made sugar will be required, employing or subsisting about 75,000 slaves, and go on to uncrease, if the production be protected. Mr Johnston says that Louisiana, alone, can supply the whole demand for sugar in the United States for 25 years to come. But there are large tracts of land fitted for the cultivation in Mississippi. Alabama, Georgia and Florida—epecially the latter.

In 1829 there were 725 sugar plantations in Lonisiana, and we have seen it mentioned that they have increased to more than 800. Many of them, however, are small estates, or not yet producing much sugar, It requires four or five years to bring them

into a state of profitable production.

If all the sugar and molasses consumed in the United States were of foreign product, nearly 10 millions of dollars would be required to pay for these commodities. It would be difficult to find new articles for exportation to meet the smount. At present, the sugar planting in Louisiana, in supplies of food purchased for and consumed on the plantations, in horses and oxen required, in the subsistence of the iron and other manufacturers employed by it, furnishes a home market worth more than two millions of dollars a year to the agriculturalists of the United States. For it must be observed, that the planters, generally, purchase nearly all the corn, pork, oats, flour, horses, mules, oxen, and beef-cattle, which they need. The market thus afforded is incalculably important to the western states.

There are now from 130 to 150 steam engines on the sugar plantations. Their number would bave been greater, but for the frequent agitation of the question

concerning the duty on sugar.

Of the 100,000 hhds. of sugar made, about 50,000 passes up the Mississippi in steam boats—thus shewing, (in the returns added), an interior trade of five millions a year. The remainder of the crop is for the local consumption, or sent to the northern ports—employing a large amount of tonnage.

Mr. Johnston expresses an opinion, that when the estates are paid for, and a general diminution in the value of other things takes place, &c. sugar may be made for four cents a pound. But this low price can

be obtained only by continued protection.

We shall say nothing about the reduced value of property in slaves, if the planters are forced to give up the cultivation of sugar; but, if the present value of slaves be about 450 millions of dollars, the want of the Louisiana "market" for them would directly reduce that value not less than 200 millions-and it may be added, that the slaves on the sugar estates are generally better fed, clothed and provided for-than other field slaves-if for no other resson, because they are more valuable. But this is not all. A letter from a gentleman of Louisiana, which Mr. Johnston has approved by publishing it, says that if the labor and capital now given to the cultivation of the cane were transferred to cotton, the increased quantity would be three hundred thousand bales! What would be the effect of this excess in an already over-stocked market-what the effect on real and personal property in South Carolina, &c. where an inferior srticle These things are merely suggested but they involve consequences of the greatest importance to a large portion of the United Statesand are deeply interesting to the union at large.

We meet with the following statement as to the amount of sugars imported and consumed in the U.

The statement just given has reference to one of States—otherwise, the amount of the importations to best managed estates in Louisiana. With sugar less the quantities exported in the years given:

	White sugar.	Brown sugar.
1821	1,884,701	37,597,072
1822	5,241,622	68,617,248
1823	977,019	38,553,551
1824	8,475,772	71,484,960
1825	890,477	49 044,478
1826	4,747,304	59,008,795
1827	3,270,912	58,093,707
1828	3,367,866	42,687,059
1829	3,020,101	47,953,715
1830	4.857.131	71 900 123

The great fluctuations in the quantities stated, were probably chiefly caused by the fulness or deficiency of the crops in Louisiana. And, as the do, mestic supply has been large, so has the price of segar uniformly declined. This is the natural effect of competition.

AVERAGE	PRICES			R A	T PHILAI	DELPHIA.	
Years.		Co	st.		Years.		leo!
1818	cwt.	\$14	00		1825	9	00
1819		12	50		1826	8	18
1820		10	50		1827	8	75
1821		10	37		1828	8	00
1822		11	50		1829	7	50
1823		9	50		1830		62
1824		8	20			-	
					BOSTON		

Brown St. Porto N. Orleans. Croix. Rico. Harana. 1894 100lbs. 8 624 8 75 7 75 7 621 10 624 1825 10 50 9 874 9 50 9 874 1826 9 75 8 50 8 624 1827 10 50 9 624 8 75 8 62 1928 10 624 9 624 9 374 8 371 1899 9 50 9 121 7 75 7 50 1830 8 374 7 875 8 75 7 50

It thus appears that the general price of brown sugar has declined from 14 dollars to 73 dollars since 1818. That this reduction has been mainly induced by the domestic supply, we think cannot be doubted—seeing that this supply has increased to two thirds of the whole quantity consumed, and is continually pressing itself forward to meet the entire domestic demand.

The treasury tables of 1829 rate the brown sugar imported as costing 5½ cents per lb.—in those of 1830, the cost of such sugar is put down at 5.7 cents per lb. If these sums are truly stated, the "tax" imposed for the protection of the sugar maker of Louisians does not amount to much! The Havana and St. Croix's sugars, however, appear by the tables given above, to be worth more in the market by about one cent per lb than the N. Orleans. There are inferior sugars in the W. Indies which cost less than 5 cts. per lb "—but

\*It is often proclaimed, by the opponents of the "American System," that sugar may be purchased for two cents per lb. in the W. Indies. A false impression is thus made in the words of truth. We see that the average cost (at the tréasury) of all the sugar imported in the years 1829 and 1830 was 32 cents per lb. This was very nearly as high as the average price at New Orleans in those years. The best Louisiana sugars, having large grains, that seem alive or moving, were worth from 5 to 54 cents, and their quality is superior to the general run of foreign may be purchased at the cents per lb. in New Orleans as well as in the West Indies. The quality regulates the price from two to 54 cents, or higher, according to supply and demand.

It is a fact that Porto Rico sugars have not netted one cent. per tb. in the New York market, in the list summer. A removal of the duty then might not have affected the price: it would only have afforded a profit the treasury tables, which are our best and safest guides, shew that the average price of sugar in the W. Indies, (port charges, &c. included), was not one cent less than the price at New Orleans, regard being had to the respective market values of the several productions. It would then conclusively appear, that the real amount of protection, (admitting that the domestic supply has no effect to reduce the price of the foreign article), is only one cent per lb. which cent employs 46 millions of dollars in capital and 38,000 laborers-causes a consumption of between two and three millions worth annually of the products of American farmers and manufacturers, and checks the growth of cotton in the amount of 300,000 bales a year-which excess, if cast upon the demand, would reduce cotton to 6 or 6 cents per lb. and diminish present profits in its cultivation not less than 12 miltions of dollars; or twelve times as much as the protection afforded to sugar apparently amounts to. say "apparently," for we have no doubt that the cultivation of the cane in Louisiana has a perpetual tendency to reduce the price of sugar in the West Indies. It cannot, indeed, be otherwise.

The large tracts of land that may yet be brought into the cultivation of the cane, forbids the idea of a "monopoly" for at least fifty years to come. Continued protection will yet further reduce price. Domestic competition, though sometimes in jurious to individuals, is always asfe to the people at large.

Statement of the quantity and value of molasses imported annually, from the 1st October, 1320, to the 30th September, 1829, together with the average cost per gallon, in each year.

YEARS ENDING.		Quantity.	Value.	Average cost per gallon.	
		Gallons.	Dollars.	Cents.	Mills.
30th Sept.	1821	9,086,932	1,719,227	18	9
14	1822	11,990,569	2,398,355	20	
**	1823	13,019,328	2,634,222	20	2
6.6	1824	13,117,724	2,413,643		3
46	1825	12,535,062	2,547,715	20	3
6.6	1826	13,843,045	2,838,728		5
6.6	1827	13,376,502	2,818,982		
4.4	1928	13,393,651	2,788,471	20	G
14	1829	10,150,224	1,484,104		8
44	1830	8,374,139	995,766	12	nearly.

We have the following statement of the cost of molasses in the West Indies—expenses of the cask 7 cents per gallon, leakage and small charges S, eriginal cost S—total 13. This is considerably lower than the average value put down in the treasury tables, thou, h I cent more than the cost per gallon last year. Freight and duty are to be added to make up the value in the U. States. The cost of freight on molasses from New Orleans to the Atlantic ports, is about the same as

to the importer. Yet this sugar came partially into competition with our own-though nearly its whole value was made up of duty, freight and charges, leaving but one cent per lb. to the producer. Had not the domestic supply been large enough to determine the general value of sugar in the New York market it is manifest that the American consumer must have paid a price that would have allowed a profit to the Wast India producer, or American importer— but the home supply caused a loss to both, and pro-tected the consumer. This is an operation which oftentected the consumer. This is an operation which often-times takes place—and must, because that increased supply necessarily affects price. There is no manner of doubt, but that the protection of domestic industry has reduced the general cost of foreign commodities, in almost every instance, and with special reference to every leading manufacture which has had time sufficient to become established amongst us.

from Havana, but employs more tonnage, reference being had to the quantity transported.

We do not admit that duties must needs be "taxes" nor shall we contend that they always reduce the price of those foreign commodities on which they act but it is pretty well ascertained that such reduc-tions have happened. The price of molasses in the United States averaged 37½ cents a gallon for the 12 years from 1816 to 1827 inclusive, when the duty was five cents a gallon; but for the three years 1828, 1829 and 1830, when the duty was ten cents a gallon, the average price was only 27 2-3 cents per gallon. A reduced price in the U. States, certainly, succeeded an increased duty: and a reference to the table inst above presented shows, that the cost of the foreign article was 19.6 cents from 1821 to 1927 inclusive, the duty being 5 cents, and only 15 3 cents in 1828, 1829 and 1930, when the duty was 10 cents per gallon.
And this it was that brought down the first cost of molasses to three cents per gallon, as stated in a pre-ceding paragraph. It had been much more, and is now, at the latest advices about il cauts per gallon, exclusive of the cost of the cask, duties and all other charges—the whole cost being about than 21 cents per gallon. The price at New Orleans, on the leves, that is, ready for shipping, all charges paid, is 26 This molasses is 2 or 3 cents per gallon better than the Havana, generally. The middling and inferior qualities of the New Orleans, we see in the prices current, are worth five cents per gallon more than the like qualities of Havana molasses, in the Baltimore market. Thus the duty on the latter would appear practically inoperative; and so, indeed, it is partially rendered by the better commodity of domestie product.

In support of the probable facts just suggested, in may be mentioned—that sait at Turk's Island, was 10 cauts a bushel, when our duty was 20 cents,—but now 20 cents, the duty being 10 cents. May we not believe that this advance in price has been, more or less, caused by our increased demand? Can we do otherwise than spprehend, that that demand will reduce the domestic manufacture of sail? The present price of Turk's Island sait at Baltimore is 43 cents per bushel—duty 10 cents. At this time in 1850, it was about 47 cents—duty 20 cents. We shall set if this sail does not hold an increased price compared with the amount of the duty. Such has been the result of past experience—and like causes have not failed to produce like effects.

Good Louisiana sugar sold at Louisville, Kenlucky, in January 1829, at 7½ cents by the barrel. 39,063 hids. and 1756 bbls. of sugar and 18,429 hhds. and 2,505 bbls. of molasses were sent to the northera ports of the United States from New Orleans in tha year ending 30th September 1825—the up-river trade was about the same. In 1829, the whole product was 37,965 hhds. of sugar, and 39,874 hhds. molasse:—208 additional plantations were commenced in this year; that of 1830–31 has been computed at 100,000 hbds. sugar and about 45,000 hbds. molassed.

We shall conclude by offering the following exhibit of the

	Consumption of			
in	1700 it was only	10,000 tons or	22,000,000	16
	1710	14,000	\$1,360,000	
	1734	42,000	94,080,000	
	1754	53,270	19,320,000	
	1770 to 1775 average	72,500	62,500,000	
	1786 to 1790		81,500,000	

During the first half of the last century the consumption of sugar increased five fold.

The duty on foreign sugar is a prohibitory one of \$8 shillings a cwt. On East India sugar \$7 shillings, or 10 shillings more than on West India sugar. From the Mauritius, it is, by a special provision, allowed to be imported at the low duty.

At present (1831) the revenue derived from sugar and molasses in Great Britain and Ireland may be estimated at about 5.000,000l. Thus.—

160,000 tons consumed in Great Britain

at 27s. per cwt., duty is 4,320,000l.
16,000 do. in Ireland at do 430,000l.
20,000 do. molasses at 10l. per ton, converted into coarse sugar, bas

tards and treacle.

200,0001.

4,950,0001.

The price of sugar, exclusive of the duty, may be taken at an average of the last few years at from 30 to 35 shillings.

This small table is presented to show the extent to which Great Britain proceeds to defend her West India colonies. She prohibits foreign sugar, and levies an extra duty of 10s. per cwt. (or more than two cents per lb.) on the produce of her own East India colonies; but the whole duty that we impose on foreign augar to protect our own production, is no more than 3 cents per lb. And this strong fact further appears, that sugar in England, at the average of 32s 6d. exclusive of the duty, but taking into consideration the general rates of exchange, or actual per of the value which we place on the dollar, measured by that which England places on gold, or her pound sterling, is very nearly eight dollars per cwt. or as dear as our sugar at Boston, though "taxed" three cents per lb. as we are told that it is! There is much matter for reflection in the facts just stated.

### REPORT ON FOREIGN TARIFFS.

The committee appointed to prepare and report a schedule of rates and duties exacted on the principal exports of the United States, in the ports of Great Britain, Holland and Belgium, France and Russia; and the duties levied on some of the exports of those nations, when imported into the United States, beg leave to report:

That they have no data to enable them to comply with the instructions of the convention, so far as regards Holland and Belgium.

BRITISH DUTIES.

The duties on bread stuffs are prohibitory, unless in times of dearth.

For example-

When the quarter of wheat, of 8 Winchester bushels, averages 45s, the duty is 41s, or about 90 per cent. and in that proportion for flour.—When the price of the quarter of wheat is 50s, the duty is 36s, 3d., or about 70 per cent. When the quarter is 62s, the duty is 24s. 8d When the price of the quarter is 68s, the duty is 16s, 8d.

When barley is 16s. per quarter, the duty is 37s. 10d., or nearly 240 per cent. When the price is 24s. the duty is 25s. When the price is 35s., the duty is

13s. 4d.

When rye is 19s., the duty is 40s. When the price is 16s., the duty is 22s. 9d.

The duty on rice is 15s, sterling per cwt. being somewhat more than 100 per cent.

On manufactured tobacco per lb. 9s. sterling, or about 2,000 per cent.

On leaf tobacco 3s. per lb. or 1,200 per cent.

The duties on our lumber and some other articles, are from 400 to 1,500 per cent. more than on similar articles imported from British colonies. The difference is so great, that if the articles were procured here gratis, and transported free of freight, they would not in many cases be worth shipping.

We annex a few instances, out of above fifty, enumerated in a recent British publication.

Fir quarters per 120, Wainscot logs, From the From British U. States. Colonies. 362s. sterling 65s. 55s. 12s.

Olive wood, per ton,	1698.	6d	124.	4
Oars, per 120,	2991.	3d	19s.	84
Spermaceti oil, per ton	532s.		ls.	
Un-enumerated timber, per	ton 28s.		51.	
Castor nuts, per cwt	18s.	8d.		64
Lath wood, above 12 feet				
long, per fathom	272s.		254.	
Hemp seed	401.		ls.	

In consequence of the difference, so far as regards lumber, the whole amount of the various species of this staple, which we exported to Great Britain in 1829, was \$23,565.

FRENCH DUTIES.

The regulation of the duties on the importation of bread stuffs into France, are somewhat complicated. There are four classes of departments, in which the averages, whereby the duties are ascertained, vary considerably. It is not necessary to go into detail of the whole, and we shall therefore confine ourselves to the third class in which Havre and Rouen are situated.

When the price of the hectolitre (two Winchester bushels and seven-eighths of wheat, at Havre, is below 20 francs (3 dollars 69 cents), the importation is prohibited; when the price is above 22 francs, the duty is 25 centimes per hectolitre, when at 22 francs the duty is 2 francs 25 centimes; when at 21 francs, the duty is 2 francs 25 centimes; when below 21 francs, the duty is 8 francs.

N. B. A new system of duties on bread stuffs is at

present before the chambers.

When the price of wheat at Havre is above 22 francs the hectolitre, the duty on rice is 50 centimes per hectolitre; when at 21 francs, the duty is 2 francs 50 centimes; when at 21 francs, duty 4 francs 50 centimes; when at 20 francs, duty 6 francs 50 centimes; when below 20; duty 9 francs 75 centimes.

Manufactured tobacco is prohibited altogether. Leaf tobacco can only be imported for consumpties by the regie. The fabrication and sale are a government monopoly. Individuals may, however, import leaf tobacco, to be stored, and re-exported within eighteen months, unless purchased by the regie. Tobacco stored for the purchase of the regie, or for exportation, pays no duty.

Duty on leaf tobacco, per lb. about 2 cents.
Tobacco in rolls, or cut, and of all kinds of smoking, per lb. 294

Cigars and snuff,
Fish, salted, smoked, or prepared in any
way
Bowsprits, yards, masts, and ends of masts

per peice 64
Spun cotton, per lb. 8
Colored cotton, 91
Wheat, per bushel, 25
Flour, double the duty on wheat

Russia does not depend for the protection of her manufactures on prohibitory duties. She prohibits, under penalty of confiscation, nearly all the articles with which she can supply herself. There are in her tariff from forty to fifty prohibitions, many of them geners, embracing various species—for instance, all kinds of skins, all manufactures of iron, of fine steel, wood, leather, gold, silver, platins, &c. &c. &c.\*

## On British merchandise.

It would extend this report too far, to notice the various articles imported from Great Britain; we

\*We stop the press to say, that, by a new Russian tariff just received, an additional duty of 12 1-2 per cent. has been laid on add imports, exercising brintmene, corks and cork wood, and the duty on certain specified articles has been further increased. Permannt Committee. shall therefore confine ourselves to the principal ones iron, woollens, and cottons.

The duty on iron in bars or bolts, \$37 per ton. fron in pigs, 624 cents per cwt.

Vessels of cast iron, 14 cent per lb.

Castings not specified, I cent per lb. The duty on woollens below four dollars per yard,

is 45 per cent. - above four dollars, 50 per cent. But cases occur in which the duty is much higher: as woollens below 50 cents, pay duty as if they cost 50 cents; above 50 cents, and below one dollar, they pay duty as if they cost one dollar; above one dollar, and below \$2 50, they pay duty as if they cost \$2 50; and if above \$2 50, and below \$4, as if they cost Thus a yard of broad cloth that cost \$3, is rated at \$4, and pays \$1 80, being 60 per cent. But the importers here, and the shippers in Europe, knowing the state of the tariff, regulate their orders and supplies accordingly; and it is believed that the quantity imported that pays higher duty than 45 or 50 per cent, bears but a very small proportion to the great

Cotton goods below 35 cents the square yard, pay 25 per cent. on 35 cents. Those at and above 35 cents, pay 25 per cent. duty on the actual cost. This duty is almost as prohibitory of all the very low priced cottons, as the British corn laws are of our

mass of our importations of woollen goods.

bread stuffs.

On French merchandise. The principal articles imported from France are silks, brandies. wines, and cambrics.

The duty on French silks, is-20 per cent. On brandy, according to proof, per gal. 53 to 63 cts. Wines. 10 cents. 25 per cent.

Cambrics,

On Russian merchandiss.

The principal articles imported from Russia are iron, hemp, flax, cordage, and sail duck. The duty on iron is already stated under the head

of the duties on British merchandise.

Tarred cordage is 4 cents, and untarred 5 cents

per 1b. Sail duck, 104 cents per square yard. It is to be

raised half a cent a year till it reaches 124. Hemp, 60 dollars per ton.

Flax, 50 dollars per ton.

It cannot be irrelevant to state, that on all the merchandize rated ad valorem, imported into this country in 1830, amounting to \$45,230, 926, the duties averaged only 25.78 per cent.—of the whole amount \$12,618,862 were below 25 per cent.—23, 168,079, at 25 per cent —and only \$9,443,995, above 25 per cent. The total importation of that year was 25 per cent. \$70,876,920, of which \$12,746,245, were free of duty, leaving about \$12,909,749 for teas, coffee, cocoa, wines, sugar, salt, coals, spices, and all manufactured articles subject to specific duties.

All which is respectfully submitted

MATHEW CAREY, ABBOT LAWRENCE. J. W. McCUI.LOH. Committee.

New York, October 31, 1831.

REPORT ON WOOL AND WOOLLENS.

Report of the committee on the manufacture of wool-The committee directed by the convention of the friends of Domestic Industry, convened in New York in October last, represent to the permanent committee, that the committee on the manufacture of wool forthwith issued circulars, with various interrogatories, to the manufacturers of wool, in the several states represented in the convention. That they have as yet received but partial returns, and ask leave of the permanent committee, for further time to complete their report. It is much to be regretted, that the requisition of the permanent committee cannot earlier be complied with, in submitting the actual returns. But when it is considered over what an extent of country these inquiries reach, it is not surprising that information of such magnitude should require more time for the actual returns. From information already received, and from calculations based upon that information the committee are justified in submitting the following as general results:-in thus doing, they, with much confidence, believe that the amount will fall short of the actual returns, as to the ultimate value of the manufactures of wool.

All which is respectfully submitted. E. H. ROBBINS, chairman. (Signed)

No. 1.

The probable number of sheep in the United States is 20,000,000, and worth \$40,000,000 on an average \$2 per head,

The sheep farms generally do not support three sheep to the acre, summer and winter, though the land be pretty good and well managed. Of the 20 millions of sheep, it is supposed that about 5 millions are in the state of New York, having had 3,496,539 in 1825, the latest returns at hand; and it is known that many of these sheep are fed upon lands worth from 15 to 30 dollars per acreand in Duchess county, in which are over 500,000 sheep, the lands on which they are fed are worth about \$25 per acre. It is then probable, that the average worth of farms in the United States, capable of supporting three sheep to every acre, throughout the year, are worth \$10 the acre: 20 millions of sheep will require 6,666,666 acres-say 6,500,000

65,000,000 acres, at \$10

Capital in sheep, and lands to feed them \$105,000,000

The 20 millions of sheep produce 50 millions of pounds of wool, annually, the average value of which, for three years, 1829, 1830, 1831, exceeded 40 cts. per 15. or \$20,000,000. (The crop of 1831, was worth more than \$25,000,000.) The crop of wool, having reference to the whole quantity made into cloth of various qualities, is worth \$40,000,000, which is about the gross annual product of wool and its manufactures in the United States. If the woollen goods imported, valued at 6 millions of dollars, be added, there will be allowed for each person in the United States, 34 dollars worth of woollen goods per annum, including blankets, carpets, &c.

as well as clothing. The fixed and floating capital vested in the woollen manufactories in the United States, such as lands, water rights, buildings, machinery and stock on hand, and cash employed, may be estimated

40,000,000

Capital directly vested in the growth \$145,000,000 and manufacture of wool

nt.

The proportion between the amount of weol used in the factories and worked up by household industry, are as 3

to 2; and on the average, it will employ one person to work up 1,000 lbs. of wool annually, or 50,000 persons in the whole.

It is reasonable to suppose that each laborer subsists two other persons:-

say 150,000 in all, deriving a direct support from the woollen manufacture, whether household or otherwise.

Each person will consume at least twenty-five dollars worth of agricultural products annually, or \$3,750,000 worth of subsistence.

The average products of farms, cultivated for the supply of food, does not exceed \$2 50 per acre yearly, after subsisting the cultivators and those dependent on them. It will therefore require 1,500,000 acres of land to feed those manufacturers and their dependants-worth, say \$15 per acre,

22,500,000

Capital involved in the growth and manufacture of wool in the U. S.

\$167,500,000

3,750,000

500,000

The annual value created by, or accruing to agri-culture, because of the growth and manufacture of wool, may be thus shown: Wool, \$20,000,000

Provisions to manufacturers, Fuel, timber, and other products of the land, supplied,

Charges for transportation, and food of

horses and other animals employed, because of the factories, 500,000

\$24,750,000

The following should rightfully be added, to show the whole operation of the woollen manufactures in the U. States:

For avery 100,000 lbs. of wool manufactured, there is a constant employment, equal to the labor of six men, in the crection and repair of buildings, mill wrights and blacksmiths' work, and in the building and repairing of machinery, whether for wool worked up in the factories or in families-say 3,000 men, whose labor subsists at least 9,000 other persons -12,000 in all, and consume each \$25 worth of agricultural produce, annually, is

300.000

\$25,050,000 Making the whole number of persons employed, because of the manufacture of wool, 162,000; and requiring of the product of agriculture, for materials and subsistence, the very large amount, per annum, of twenty-five millions and fifty thousand dollars.

And it should be observed that there is no foreign market to which we can send our 25 millions worth of wool and bread-stuffs and meats. It would all be as if annually lost to landholders and cultivators were the home-market destroyed, in abandoning the manufactures of wool; and those who are now consumers of the products of agriculture, must, of necessity, become producers, and lessen the prices of grain, &c.

No. 2.

The subject of the woollen manufacture might be much further pursued, as to the employment of peraons and capital in various other branches of industry connected with it. Making of iron, mining coal, the whale fishery, the foreign and coasting trade, and all the dependent interests. The woollen manufacture is a great stimulant to the whale fishery, consuming annually about 180,000 gallons of oil.

The following statement will show its benefits to the navigating interest alone, independent of the coasting trade and fisheries.

A woollen factory, manufacturing 100,000 lbs. of wool per annum, into 40,000 yards of 6-4 wide cloths, will require of the productions of foreign countries, on which freights would accrue, as follows:

20 pipes of olive oil from Leghorn, a \$10 per pipe 100 boxes (of 100 lbs. each) of oil soap

a \$1 100 4,000 lbs. of Bengal Indigo, at 3 cents per lb. 120

15 tons dye wood a \$6 90 3 tons madder, a \$10 (Holland) 30 600 gallons sperm oil, 200 Other articles of foreign production 10

\$750

500

\$250

The freight on the above 40,000 yards from Europe to the United States, is known to be, and is so set down at

Gsin to our navigation in freight on the manufacture of every 100,000 pounds of wool.

NOTE BY THE PERMANENT COMMITTEE. It is worthy of remark, as shewing the great international exchanges of value caused by manufac-tures—that, though New York probably produces one-fourth of all the wool grown in the United States, Massachusetts manufactures one-fourth. The first exports large quantities of wool and flour and eattle, &c. to Massachusetts-so does Pennsylvania and the far-west. The wool sold by the farmers of the small state of Vermont, last year, is estimated as having been worth \$1,200,000.

COASTING TRADE AND INTERNAL COM-MERCE.

Mr., D. W. Coxe of Pennsylvania, in behalf of the committee to which was referred the subject of the coasting trade and internal commerce of the United States, and the inquiry how far the protection of American manufactures had tended to improve them, made the following REPORT:

That these great interests are so intimately connected with each other, and with the foreign relations of the country, that it will be necessary to examine the entire ground in order to understand the

subject in all its aspects and bearings. The exports of domestic produce and manufactures for the year ending the 30th Sept., 1830, sre divided according to the treasury report as follows:

Of the sea, \$1,725,270 Of the forest, 4.192.047 Of agriculture, 46,917,332 Of manufactures, 6,567,383 Amount of domestic produce, \$59,462,032

Exports of foreign produce and manufactures during the same period, 14,387,479

Making the total amount of exports for that year, 673,849,511

The imports from foreign countries, during the same time, were 70,876,920

The exports employed of domestic tonnage, 971.760 tons. of foreign do. 133,436

Aggregate tonnage employed in exporting for the year, 1,105,196 tons. The real aggregate amount of Ame-

rican registered and coasting tonnage for the year ending the 31st December 1829, was 1,260,798 tons.

Whereof the registered employed in foreign trade, was enrolled, and licensed coasting tonnage, 610,655

1 coasting tonnage, 610,655

To which add vessels sold to foreigners, lost and condemned, in 1829. . . . 43,240 tons.

Also add the difference during a period of many previous years, arising from sales, losses, and condemnations, never before corrected. 514 452

557.692.

The apparent aggregate tonnage before the account was corrected, thus appears to have been

thus appears to have been 1,818,490 tons.
The apparent aggregate of the year
1828, was 1741,391 "

The increase in 1829 over 1828,

77,099 tons. was therefore It appears, by the foregoing statement of the ton-nage of the United States, that there has been a misconception in regard to its real amount, arising from the omission until last year, to credit the tonnage account kept by the treasury department, with the accumulated list of losses, sales, and condemna-tions for many previous years. It must however be recollected, that many vessels owned in the United States, trade under foreign flags, and therefore do not appear in the tonnage account. It is also well known, that the great improvements made in shipbuilding of late years, by combining the carriage of large burdens with fast sailing, have given this country a decided advantage over all others in the despatch of business; whence it may be inferred that the United States gain in celerity—in the performance of effective duty, and the preference obtained in the freighting business, at least one-fifth over their most judicious competitors (the B itish), so that it would not be extravagant to estimate the 1,260,798 tons of American shipping as equivalent, at one-fifth gain, to 1,512,957 tons of that of other nations. It may be here remarked, that the magnitude and extent of the American bays, rivers, and lakes, call into existence two descriptions of boats, unknown in Europe, which navigate the Mississippi, Alabama, Tombigbee, and other large rivers of the west and south, with their tributary waters. These boats, carrying 30 to 50 tons, are to be seen in countless numbers, on the Mississippi and Ohio especially, and are not licensed, or noticed in the custom house reports. By a conjectural estimate they amount from 150 to 200 000 tons, on the various waters of the U. States. To these may be added, the coal-boats of the Susquehannah, Delaware, Lehigh, Schuylkill, and Lackawaxen, which this year delivered 200,000 tons of coal at Philadelphia, Balti-more and New York. This single item employed last year 1,172 coasting vessels, measuring 100,966 tons, and will, when coal becomes more generally used for steam engines and domestic purposes, require probably more tonnage than the entire present amount of our coasting trade, and ere long will far outstrip the fisheries, which in 1828 employed 100,796 tons The steamboat tonnage is now about 75,000 tons, having greatly increased within the last two years. By means of steam the transfers and exchanges of merchandise are now effected with a celerity that can only be compared to the remittances of bank notes and drafts by mail, or to the circulation of the blood through the arteries and veins of the human body. It is a truly national vehicle, the practical and political benefits of which, by bringing distant points of the union into closer contact, will soon receive a more thorough development by the completion of the system of rail-roads and canals, now in a course of execution.

In approaching the consideration of the value of the annual internal commerce of this great and growing country, the committee are aware of the difficulty of ascertaining its precise amount and extent, there being no fixed and determined data to aid their investigation, as in the case of imports and exports passing through the ordeal of the custom house. They have however essayed different modes in order to approximate to something like a satisfactory result. 1st. Estimating the average annual exports and imports at only 70 millions of dollars each, employing about 1,100,000 tons of American and foreign shipping, and supposing those two sums quadrupled, as well as the number of voyages or trips made by the tonnage employed in the coasting and internal communications of the country, it gives a gross sum of 560 millions of dollars, as the value of the floating mass of property annually changing hands and in a state of transit through the United States. 2d Test, the population of the United States States, 20 lest, the population of the order states is now 13 millions of souls; one fifth whereof, or 2,600,000 persons, are probably of a productive age and capacity, earning for 300 days in the year, seventy-five cents, as the estimated value of their labor to the country, which would produce a sum of 585 millions of dollars. Now, this would appear a moderate computation on Adam Smith's principle, that "the gross revenue of all the inhabitants of a great country, comprehends the whole annual produce of their land and labor." 3d Test. Suppose the daily expense of 13 millions of inhabitants for food, raiment, repairs of and replacing implements of labor, education, amusement, and all incidental expenses, equal only to twelve and a half cents each. it gives a fraction less than 587 millions of dollars, Again: 4th Test. France, according to high authority, with a population of 32 millions of souls, derives from agriculture, commerce and manufactures, an annual income of 7,000 millions of france, equal at 5 france to the dollar to 1,4(0 millions of dollars, which in the ratio of the population of the United States, gives 570 millions of dollars gross revenue. These various comparisons seem to justify the conclusion, that 700 millions of dollars are not too large an estimate for this country, where labor is better rewarded than in the old world . The composition and details of this sum, it would, however, be im-possible even to surmise, until the reports of the different committees, appointed on the various branches of manufacturing industry, shall have been completed. Thus it appears, that the 70 millions of dollars exported from the United States, form only one-tenth part of their aggregate annual income, and as the greater part of the roturns or imports consist of articles manufactured by machinery from wool, cotton, silk, flax, hemp, wood, iron and other metals, it follows that the United States exchange their rude products and manual labor against commodities which they might with the aid of that machinery,

<sup>\*</sup>The whale fishery employed by the last returns 290 ships, measuring 102,500 tons, valued at \$7,500,000, and their fishing avails at \$3,540,000.

<sup>\* &</sup>quot;It will be found on a calculation, that if only \$100,000,000 of accumulation or profits, were added energy year to the fixed engind, improvements and money investments of a country, they would, either on the principle of compound interest, or by the simple effect of an ennual addition, so augment in value, as greatly to resemble the fable of the barley-corn or horse-shoe nails.

and a small addition of manual labor, manufacture just referred to. State banks soon multiplied throughat home. Considering trade, therefore, as but an exchange of commodities, it is evident, that the nation whose labor is so divided and applied as to produce the greatest variety and value, exchanges with others to the greatest profit; and the country which gives its rude materials in return for manufactures, labors to a disadvantage proportionate to the multiplying power of the machinery used by the other party—that is, the labor of one man in the United States is given in payment for the 100th to a 300th part (as the case may be) of one working in Europe. his is partially exemplified by the improved spinaning frame, which produces, with the accompanying apparatus, and the sid of a boy, as much yarn as 460 common spinning wheels. These inferences are corroborated by the fact, that the cutton, which coats here ext millions of dollars, is worth, when manufactured in the United States, by machinery, thirty millions of dollars; but in England, where finer goods are made, the same quantity of cotton produces about sixty millions of dollars. This corresponds with Mr. Huskisson's general estimate of the aggregate value of the cotton manufactures of Great Britain, which he stated in 1826 at 37 millions sterling, equal to 180 millions of dollars-that is, the 18 millions of dollars cost of 250 millions of pounds weight of cotton annually consumed in Eng-land, is multiplied tenfold in value by machinery.— Here, then, is a solution of the problem of British wealth and power, the foundation of which is manufactures, considered as the creation of the inventive power of man.

The effect of adequate protection to this most important branch of industry, may be made intellegible to the plainest understanding, by the following statement:- The one million of bales of cotton grown annually in the United States, would produce, with the aid of machinery, and a small proportion of their population, (five-sixths of which might be females and children, as in Great Britain), the amazing sum of three hundred millions of dollars. The spindle and the loom, put in motion by steam and the extensive waterfalls so common in this country, would equip fleets, pay armies, build cities, sustain agriculture, pourish commerce, and spread their influence over the multifarious arts of civilized life.

Immediately connected with this immense mass of floating property, estimated at seven hundred dollars, and with the fixed capital and real estate of the nation," is a uniform and sound currency, as the instrument of circulation and distribution by means of which sales, purchases and exchanges are effected. Emerging from the war of the revolution, deeply impressed with the baneful effects of a depreciated paper currency, the framers of the present constitution saw the necessity of a fixed national standard of money, and accordingly the sole power to regulate commerce, levy duties and taxes and coin money was vested in congress, and the states prohibited from emitting bills of credit, coining, or making any thing but gold and silver a tender in payment of debts. The first bank of the United States and the mint were established at the same session. Although the restricted power of the states might fairly have circulating paper in the nature of currency, yet the circumstance of the existence of the bank of North America at the period of the adoption of the federal constitution, furnished the states a pretext for extending those institutions, to the manifest perversion of the spirit and meaning of the limitation of power

. The capital invested in manufactures alone, is estimated at 250,000,000, and it is worthy of remark, that the annual consumption of cotton, estimated at 200.000 bales, exceeds all that S. Carolina exports of that article, which last year was but 185,166 bales

out the union, in many of which the states themselves became partners, and thereby more directly violated the prohibitory clause. The expiration of the charter of the first bank of the United States the year previous to the war with Great Britain in 1812, excited a powerful feeling among the state institutions against its renewal, which only failed in the senate by the casting vote of the vice president, so that with the fall of that important institution at the approaching crisis of hostilities with England, all check and control over the issues of notes by the state banks ceased, and the subsequent suspension of specie payments was followed by further and yet more extravagant issues. The effect of those measures it is well known was so to deluge the country with bank notes as to cause their depreciation, and contributed to give that fictitious value to property of every kind, which five years after led to the necessity of chartering the present bank of the United States as the sole means of compelling a return to specie payments. The sacrifice by which this important event was preceded and followed, conveyed a salutary lesson both to the states and the general government, which cannot be lost to the nation. the principle is to be considered as now settled by long usage, that the state bank notes are henceforward to constitute a part of our circulating medium, experience has also demonstrated the paramount necessity of a great national institution to manage the fiscal concerns of the nation, collect and dis-stribute its revenues, control and regulate its currency, give security and stability to property, and support and assistance to those banks which are prudently managed. Without a national currency, receivable at the most distant points, the union itself would be insecure, and its money concerns with the whole business of sales, purchases, exchanges, and remittances, liable to be again thrown into utter confusion, by the fluctuating and uncertain value of state bank notes, for which no other remedy can be suggested than either a circulating medium exclusively metalic (as in France), or a great national institution, administered on the liberal and comprehensive principles of the present bank of the United With a view to some ulterior deductions, the committee present the following comparison between the currencies of the three principal commercial nations in the world, Great Britain, France and the United States.

That of Great Britain and Ireland, consisted of about \$320,000,000, half of gold and silver, and half of bank notes.

That of France of about \$450,000,000, all specie,

excepting about one-tenth. That of the United States consisted on the 1st of January, 1830, of the bank notes of 330 banks, including that of the United States, the aggregate espitals of which amounted to \$145,000,000, their joint circulation in notes to \$62,500,000; and their de-\$55,500,000; making a total of \$118,000,000, which is sustained by a sum of only \$22,000,000 in specie, deposited in the different banks, making no part of the circulation. It is also conjectured that the silver coins actually circulating in the United States, and which form no part of the above \$22,000,000, amount to about \$10 000,000. This sum of \$10,000,000, is supposed equivalent to the bank notes on hand, and not circulating when the specie is out, so that the aggregate currency is as above stated, about \$118,000,000. From these estimates, drawn from Mr. Gallatin's considerations on the currency and banking system, it apppears that the currency of the United States is greatly inferior in point of metallic security to that of France, and even less solid than that of Great Britain. Hence the obvious prcessity, owing to our intimate relations with those countries, and the multiplication of state banks in this country, connected with the misjudged opposition of some of the states to the bank of the United States, of observing a greater degree of caution in a paper circulation now consisting of the notes of 330 banks, and which are going on increasing. A currency so diversified, extending over 24 states, can with difficulty be maintained in a sound condition, by even the controlling influence and vigilant precautions of one great federal institution, which has the arduous duty to perform, of aiding and supporting all the sound state banks, with a view to its own security and the maintenance of public and private credit. The prodigious extent and magnitude of that system, may be inferred from the foregoing data, and the additional fact that during the year ending the 30th June last, the bank of the United States and its branches purchased bills amounting to \$44,053,520, and furnished drafts to the amount of 42,123,161, besides transferring \$12,460,000, for the government, from one point to another of the Union, and exchanging nearly \$100,000,000 with the state banks, constituting an aggregate of about \$200,000,000 in the nature of circulation, besides its discounts and loans. In these operations the people of the United States have the satisfaction to behold the security afforded by a sound currency, regulated and sustained by an institution truly national in its origin, its purpose and its management, to the immense mass and value of property constantly in motion, in addition to the fixed capital and real estate of the country. There are however, some highly disadvantageous circumstances connected with the exchanges with foreign countries As already rethat require particular notice. marked, France and Great Britain, with which the foreign trade of this country is chiefly carried on, possess a more solid metalic currency than the United States, and are therefore less liable to be affected by a free issue of bank notes or a sudden withdrawal of specie, as often occurs here by over importations, or an unfavorable state of the foreign exchanges. These over importations are the natural consequence of the long credits given on duties on imports, coming of late years principally from England, which on certain go ds are equivalent to the first cost; thus a person obtaining a credit in England of twelve months for \$10,000, and ten months (the average credit) on the duties here, acquires the use of \$20,000 to speculate or trade upon for nearly twelve months. So that if a house in England or the United States becomes embarrassed, relief may be obtained by this easy method, as is well known to the government, which has sustained heavy losses on duties bonded, but never paid. With such inducements and facilities to overtrading, the country is constantly inundated with a flood of goods from England, which being thrown immediately into the hands of auctioneers, are instantly sold, and bills or specie (as may best suit) forthwith remitted. Importations rapidly succeed each other, and the obvious result is, that exchange rises, the banks are drained of their specie to ship to Europe, discounts are cur-ta lad, circula ion is diminished, pecuniary distress follows, goods fall for the moment, a deep wound is inflicted on domestic industry, especially on the manufacturing classes, and for this evil the country demands a remedy. Fortunately it is not difficult, and consists in the adoption of the same warehousing system practised in Europe, with the abolishment of all credits on duties. There is yet another evil which contributes with the foregoing to the frequent and sudden disappearance of specie. The gold coins of the United States are rated about four per cent. below the British standard, and consequently, whenever the state of exchange favors the

operation, gold a sent in preference to bills, and in truth this inequality of comparative value with silver, furnishes a never reasing inducement to collect and hoard it up with a raw to the European demand.

From this cause the gold coins anish as fast as they issue from the mint, or what is the same thing, the gold bellion is shipped without being coined. This inconvenience admits of as speedy a semedy as the other. Congress has only to enset a law, raising the value of gold to the same relative portion to silver that it bears in England. Indeed is of the highest importance that the standard of value of the precious metals should be the same throughout the commercial world.

Your committee next proceed to the consideration of other points affecting the prosperity and internal commerce of the United States, which though of a less specific character, and not coming strictly within the terms of the resolution under which they act, appear to fail within its general scope and intention.

It is obvious that the unrestricted intercourse among nations, recommended by modern economists, can only be the result of conventional stipulations between the parties, in the form of treaties, or the reciprocal abolition of duties or interdicts on each other's industry, and that such relaxation, if beneficial as a general measure, ought to commence with the governments whose capital, skill, and low rate of wages, place them on the vantage ground. and not from one yet in a comparative state of infancy, and deficient in those essential prerequisites to a perfect equality in the proposed liberal competition for the benefits of free trade. A reference, however, to the actual condition of the commercial world, will show that no such changes have taken place, or are in contemplation, and indicates better than abstract reasoning or theories, the true position of the United States. This will appear to be marked by numerous peculiarities, distinguishing it in a remarkable degree from that of the old world, requiring a distinct policy, and that its industry and efforts should be directed rather into the new channels opening throughout the western hemisphere, than confined to those long clogged and obstructed by the restrictive measures of Europe.

The artificial colonial system of that portion of the globe, can furnish no just rule of conduct for a nation, which having burst the fetters which bound it originally to that system, now finds itself occupying rival and opposite ground, connected with the principles on which that separation was accomplished. A very superficial glance at the origin and progress of commerce and manufactures elsewhere, may serve to elucidate this subject, and fix our contemplation on that new era and condition of the civilized world, in which it found itself placed by the prominent events of the last few centuries, and more especially of the last forty years. After Europe had begun to emerge from the barbarism and ignorance in which it lay buried during the long benighted period of the middle ages, one of the incidents which accidentally contributed to the advancement of civilization and industry, was the chivalrous fanaticism that led to the invasion of the holy land. The return of the crusaders, especially the Venitian and Genoese vessels, from that distant expedition, first introduced into Italy the fabrics of Asia and the East. Manufactures of silk and cloth were thus established in the Italian cities, and an inland intercourse commenced with India. A taste for these luxuries soon communicated itself to Spain. Portugul, Flanders, the Hanseatic towns, and subsequently to France and England; each alternately became the seat of trade, and the rising arts, which changed their abode, or fixed their residence, as ad-

ventitious causes happened to attract them.

ambition, rivalry, and competition of the world, have since driven them to and from as the winds impel the currents, the clouds and the tempests. It may here be remarked, the this fact is at variance with the supposition that nature designates by soil, climate, or other marked preferences and Indications of superior fitness, the exclusive occupation and desting of every nation. The error is yet more signally a flored by another remarkable fact. The signally exposed by another remarkable fact. countries, with their vast mines and foundris of iron, produce notwithstanding its superior quality, no fine cutlery or hardwares, like Birming-ham or Sheffield. Spain, with the finest merino fleeces, is not distinguished for her cloths; while England, on the contrary, originally importing her iron, without the fine wool, or cotton of more favored countries, rivals them all in those important branches, and in spite of her inability to propagate the silk-worm, now competes successfully with France in the substance and quality of her silken fabrics; and as if to baffle and refute all calculations on the advantages of original possession, Italy, Spain and Portugal, which took the lead in the discoveries and commerce of India and the Americas, have lost their consequence, and sunk into inactivity and indolence. Finally-manufactures, like commerce, have taken deepest root and flourish most in those countries which were the last to introduce them, and where they seemed likely to abide, until driven or attracted into some new channel.

Your committee cannot here refrain from adverting to that period when England, from whose good stock the American people are chiefly descended, planted this favored land with her discontented sons, who fleeing from political and religious oppression, during the reign of the house of Steuart, with them that knowledge of their natural rights and the principles of the British constitution, that hatred of tyranny, which laid the foundation of civil liber-ty in these States. The circumstances connected with the first settlement of this country, and which attended its subsequent career until its final separation from Great Britain, were so peculiar and auspicious to the inculcation and establishment of constitutional freedom, as to authorise the presumption, if not belief, that no nation in the lapse of ages can ever again arise, uniting so many and such perfect materials with which to build a great and imperishable political fabric. The abolition of the rights of primogeniture—equality of property, allodial or free-bold tenures of land, are precious ingredients in the composition of its government, and with the wise and general provision for education, are sufficient to and general provision for coucation, and authorities canare its permanence and security, whilst the greater part of Europe, on the contrary, presents the sad spectacle of a population debarred by its institutions and the feudal origin of its titles, from any prospect of bettering its condition-hence, they feel a stronger interest in the overthrow, than in the maintenance of the peace and order of government-while here, on the contrary, every individual has a direct interest in its support. There is one remarkable differ. ence between this country and the maratime powers of Europe. They possess colonics, the commerce of which they claim a right to monopolize, to the exclusion of American navigation, except as a matter of favor or concession, while the United States, without colonies, have the superior advantage of an extensive yet compact territory, embracing all the varieties of soil and climate, with most of the productions of the temperate and torrid zones. distance moreover, secures to them all the benefits of an insular position, free from the dangers of too close a proximity to those who are now more powerful than themselves. This circumstance of situation, which has in latter times materially influenced and even determined the fate of many of the weaker pow-

ers, is impressively exemplified in the arrangements of the congress of Vienna, and the important events now passing in regard to Holland, Belgium and Poland, as well as the constant struggle for the maintenance of the balance of power, wherewith the U. States have heretofore avoided any connection. With a territory equal in extent to four-fifths of all Europe. comprising most of its productions, and those of its extensive colonies, with a common language, govern-ment and laws, encircled and intersected by the ocean, lakes and rivers affording a connected chain of inland navigation, this country is literally, as to all the benefits of agriculture, commerce and manufactures, a world within itself; and were Europe tomorrow sunk in the ocean by a convulsion of nature. these states would flourish with even accelerated rapidity, by the mere intrinsic force and influence of their own internal elements of prosperity. The contiguity of Mexico and the Canadas, the vicinity of South America and the West Indies, with a decided superiority over them all in wealth and intelligence, place their destinies in the hands of the United States. whose distance from the old world renders their navy powerful, in proportion to that distance, for all the purposes of defence at home or annoyance abroad. It is an ominous presage in regard to the future prospects of this hemisphere, that it is equal in size to about one-third of the habitable g'obe, is the richest in its productions, and more capable of sustaining a numerous population if an Europe and Africa combi ed, at d that the population of the U.S. progressing in the ratio of 334 per cent, as it has done every ten years since 1790, will in twenty years be twentytwo millions, in forty years, thirty-nine millions, and in sixty years will reach the amazing number of seventy millions.

It is a remarkable feature, which greatly fortifies the protensions of the United States to future greatness among the powers of the earth, that they endrace within themselves all the substantial elements of a separate and independent existence. No other country com-bines all these advantages within its metropolatan limits. Here, cotton, sugar, rice, wool, flax, hemp, hides, iron, zinc, lead, copper, and coal, and even gold, abound, beside all the grains, roots, vegetables and woods of Europe, with many others neculiar to this region. Salt and saltpetre, now extensively made, with indigo, and raw silk, the olive and vine, may be added to the list, whenever the necessary stimulants are applied to their

production and propagation.

It is a consideration of vital importance to this country, that nations whose exports consist almost exclusively of rude materials, and which have no manufactures; must not only remain dependent on others for many of must not only trained repetures on offers for many or the necessaries and even condurts of life, but force all the advantage of multiplying their value by machine ry, and of a profitable exchange and commerce win other countries, especially with this portion of the world which is yet their inferior in point of skill, ingenusty, and knowledge of the mechanic arts. Such is, in some respects, the condition of the United States. It is moreover notorious, that a determined and unrelenting spirit of monopoly and exclusion from its colonies, had been originally engrafted on the commercial system of Europe, and has since continued to signalize its measures and conduct. Great Britain, especially, had early taken decisive ground, and lissing wrested the trident from Holland in the war of 1652, the island of Jamaica from Spain, and subsequently the Canadas from France, and thus being mistress of all North America, except Louisiana, she extended her rigorous interdiets even to her own infant colonies, and prohibited their making any article which her own workshops could supply. Even the eattle and salt provisions of Ireland were not allowed to be carried to England. Her legal enactments abound with proofs of an illiberal spirit which suffied all her measures, and finally compelled this country to deny her constitutional right of taxation

Great Britain consumes raw silk annually, of the value of \$17,000,000, and France double that sum.



without representation, and to break the chains of its colonial vassalage.

The want of power and utter incompetency of congress, under the old confederation of 1778, to regulate commerce with foreign nations and between the states, by a uniform system of revenue, and a tariff of duties for the purpose of defence and the protection of domestic industry and the shipping interest, was felt severely on the return of peace with Great Britain in 1783. Although the states enjoyed free trade and uninterrupted foreign intersourse, as respected the mere privi-lege of importing goods and buying in the cheapest market, they were not withstanding going rapidly to decay, and tending towards dissolution. The government could neither countervail the injurious restrictions of, nor treat for terms of reciprocity with foreign powers; they had no equivalent to offer, nothing to concede in return for the privilege of trading with the ports of Eu-rope and its colonies. In this condition of affairs, after a fruitless experiment of three years, a convention of consultation assembled at Annapolis in 1786, where the seeds of the present constitution were sown, which soon resulted in its successful establishment, and laid the foundation of the protective system in the tonnege and impost acts of 1789. From that period till the year 1793, a prosperous and increasing commerce, springing from the simultaneous occurrence of the war of the French revolution and of the new constitution, raised the tonnage of the United States from 205,000 tons, in 1789, to 627,000, in 1793; but England, jealous of the resperity of its enfranchised colonies, a med a blow at prosperity of its enfranchised colonice, numeo a wow at their navigation by her orders in council of the latter year, which swept it from the ocean, and eventuated in the treaty of '94, granting partial indemnity for her par-spoliations. France next took umbrage at the reconsispoliations. France next took umbrage at the reconci-liation with her enemy, which gradually ripened into partial hostilities; but scarcely was this wound healed, when both belligerents sought fresh pretexts for insuling and violating the American fisg; for although the United States enjoyed, on the whole, a highly lucrative trade from that time down to 1806, yet it was insecure, and in a constant state of proparay as the premama of insurance sufficiently prove throughout the entire period. Finally, the affair of the Chesapeake and the vir-tual blockade of the coast by British erulzers, aggra-wated by insult and blood, followed by the orders in council, and Berlin and Milan decrees, produced the council, and Berlin and Milan decrees, produced the embargo, non-intercoives, and non-importation mea-sures, which finally resulted in loutilities with Great Britain, On the return of peace in 1815, a more deter-mined policy of protection of manufactures, (the want of which, during the war, had been severely felt), was commenced in 1816, and subsequently confirmed by the acts of 1824 and 1828.

Your committee here resume the course of their explanstory remarks. In the rise and progress of Great Britain herself, originally a Roman colony, afterwards conquered alternately by the Saxons, Danes, and Normans, we behold the phenomenon of a nation advancing through all the subordinate grades of civilization, to the louiest eminence of power and dominion. She now presents the most extraordinary instance of productive industry in every department of labor, of which the world furnishes any example, all the result of protections of the control of th tion. To comprehend her system in all its aspects, is perhaps the most instructive lesson that history affords, to either the statesman or philosopher. With institudom, which furnish altogether the best model of human greatness, that the most refined and polished ages can ast; yet is she at this moment so excited and convulsed by attempts to reform the abuses of her complicated political system, as to involve the issue of the conflict in great doubt and uncertainty. If wars of ambition, congreat doubt and uncertainty. If wars of ambition, con-quest, and monopoly, in Europe, lave led to oppressive taxes, public debts, and all the train of evils that are now undermining its initiations, will the American people consent to contribute and pay a quota of those expenses? Such, however, would be the effect of not considerabiling the restrictions and prohibitions of other autions—of refusing full protection to domestic industry!

The colonial system meanwhile is fast erumbling to stoms—Spain and Portugal have lost their most important possessions; St. Domingo is independent; the Caand possessions, or Downing on independent the Con-nadas will in time probably follow our example; the British West Indies, deprived, by the regulations of the mother country, of a cheap supply of provisions and lumber, have become almost valueless; British India, more remote, is temporarily secure, but will ultimately shake off its allegance. The tendency of all these changes is highly advantageous to the United States, by giving greater scope to their commercial and manufac-turing operations. The governments of the continent are intent on protecting and etcouraging their own in-dustry, as essential to their existence; while Great Britain, whose prosperity and power have hitherto been sustained, as regards her external relations, by a monopoly of the supply of others with her fabries, fostered by her maritime ascendancy, now begins to experience a decline; that is, numerous competitors, and this country among the number, claim the privilege of supplying emselves, as well as a share of the business and profit of the trade of the world. In its present condition, no nation can possess a permanent and lucrative commerce, unless based essentially upon manufactures, and it is equally true, that the constrict whose exports are confined to raw materials, are generally poor. The examples of Spain, Portugal, Russan, Poinad, Donmerk, Sweden, and Torkey, amply justify this assertion. Who are the real receivers of the precious metals, and have been so for more than a century? Not the owners have been so for more than a century? Not the owners of the mines, surely, but Great Britain and France, who have paid for them with their fabries, extensively introduced into the mining regions. To the question, have these countries been enriched by that traffic, or has their industry been smothered in the embraces of the mistress of the tessay? Their poverty furnishes an impressive answer. Let the United States take warning from these fatal examples. If the supendous capital and resources of Great Britain are not the offspring of the principle of protection and approximents of the the principle of protection and encouragement of her internal industry, the effect of which is seen in the application of the steam engine to labor-saving mechinery, whence are they derived, or what nourishes and sustains ner agriculture and wide-spread commerce? It is well known that the astonishing discoveries and improve-ments made within the last half century, have effected an entire revolution in the appeliance. The mind of man has penetrated and analyzed the long concealed properties of matter. In the arts of peace, as in the science of war, genius, skill, and intellect, commands success, when and wherever they have chosen to assert their sway. A wise and provident government, by rewarding and protecting the meritorious efforts unil exertions of its people, can awaken and direct at pleasure, its energies and enterprise, and teach it to triumph over obstacles formerly decined insurmountable. Identity of language and habits with the great and powerful nation from which we sprang, has rendered its knowledge and experience common property for every practical and useful purpose, and both its skill and capipractices and users polyosyamic out it is and capi-tal domesticate themselves among us, almost as natural-ly as in their native soil. The manifest tendency of the whole protective policy is to augment the induce-ments to emigrate to the United States, for just in pro-portion to the reduction, in the price of goods in England, and difficulty of selling, from the operation of our turiff, is the motive strengthened for removing hither. Its repeal would therefore produce the louble injury of erippling the infant establishments of this country, and preventing the transfer of theirs.

Although your committee have extended their re-

of preventing the trainer of theirs.

Although your committee have extended their remarks further than they at first intended, yet the great interests involved in the subject embodden them to trespass somewhat longer on the patience of the convention. The phlashiropie theory of free trade can only rest on a pre-supposed equality and reciprocity of benefits in the intercourse between nations, and the opinion that man, if left to himself, knows best how to take eare of his own interest. If this principle however is analyzed, it will be found as difficult of execution as it is unphilosophical in reference to human nature. In a civilized state man gives up a portion of his liberty the better to secure the remainder—but why restrict liberty

and not regulate his conduct in the social compact? Why leave his great and vital interests to shift for themselves, and struggle against rivals who are constantly plotting their rum? Why guard and cherish the liberty of the subject, and leave his labor unprotected? the duty of government towards both is equally imperative and obligatory. Where both are thoroughly secured, there will they establish their dominion, and exert their infinence for the benefit of man; where either is neglected both will perish, for the end and object of hebrty is accurate to the and property—it is to feel, clothe and shelter the people. Not to protect your own industry, is virtually to abandon and subject it to the tyranny and control of foreign nations. The exertions of each to promote and stimulate the energies and enterprise of its inhabitants, augments production, and causes the greatest aggregate prosperity. It the weaker nations neglect this duty, they confer in reality a mono-poly on the strongest, who, in that event, impose their own terms and conditions. Each government can enjoy free trade, equality and reciprocity within its own jurisdiction, so far as qualified liberty will allow. The constitution of the United States for instance, provides that all taxes and impost duties shall be uniform throughout the states; but this uniform principle is totally imapplicable to nations in their intercourse with the rule can never be obtained. But its impracticability as well as its impoticy is demonstrable on other grounds. Nations, like men, have their periods of youth, maturity and old age, and the same unbending rule is no more applicable to every stage of their advancement, than a particular food and raiment to the different periods of human life. An old manufacturing country like England, and a young agricultural one like the United States, in its colonial condition, derive mutual United States, in its commiss continuon, derive mutual benefit from the interchange of the products of their industry—their wants are different, and their traffic re-ciprocally convenent. In like manoer England and her colony of New Holland exchange to mitual advantage, they are both gainers, but this will not continue. New Holland, like the United States, will improvenew interests and wants will spring up as she advances, and she will finally manufacture for hersell, and covet indipendence. Old nations, on the contrary, circumatanced as France and England, have little to gain from each other. They are now friends, but unable to agree on the terms of a treaty of commerce. The French on the terms of a treaty of commerce. The French mainter lately told the British ambassador that the theory of free trade was very good, but as France was behind England in capital, skill and machinery, there was no equality in it at present, but it might perhaps and there for the present it might perhaps suit them fifty years hence. So the negotiation proved sbortive.

As between the United States and Great Britain the case is nearly the same—fifty years hence, the United States will number fifty-three millions of souls and will then be able to compete with her on even terms. At present England wishes to exchange the labor of her machinery against Aucrican manual Libor, being in the ratio of its productive powers more than two hundred to one against the United States. This country cast, however, exchange advantageously with Span, Portugal and their former American colonies. They are all yet in a comparative state of infancy as to the progress of industry, manufactures and the mechanic arts, so that both parties will gain by the intercourse.

England (rays Mr. Robertson in a late speech in parliament) derives more benefit from her exports of manufactures to Portugal with its two and a half millions of people, than from all their trade with France, Denmark, Sweden and Norway with their lotts-five millions unted, an apopplies her with nearly all her cod-fish at hiteen per cent, duty, while the United States pay thirty duty, while these cretices from Canada are freely admitted, both into the British ports and West Inda colonies.— The American government is, however, endecatoring to effect a reduction of the luty on fish by a treaty with Portugal, and may succeed if not prevented by British portugal, and may succeed in our prevented by British interference. The plain solution of the Briendship of Great Britain for that wretched country is, that she tevies five dollars per bead on its aggregate population in exchange for annual supply of manufactures and salf fish, and receives payment in some wine and truit and the balance in species. Alr. Robertson went on to state withat it was able to endeavor to persuade other nations to join them in adopting the principles of what was called free trade—they knew that free trade ment nothing more nor less, than by means of the great advantages Great Britain capord, it get a monopoly of all the markets for their manufactures, and prevent them one and all from becoming manufacturing nations.

Chaptal remarks, that the long wars of Europe have taught nations to cultivate their own resources, and rely less on loreign supply and consumption. A temporary sacrifice in order to secure the acquisition of a valuable manufacture, is as wise and prudent as to expend a few years labor in bringing a farm under proper cultivation with a view to luture profit, or to plant an orchard, a nursery or a forest, which is to yield remote benefit. The coincidence of natural and artificial advantages has never before been so strikingly marked as in the United States. The great agents in manufactoring operations of fire and water, with the most important raw materrals and unrivalled mechanical genius, are here concentrated, and constitute, as your committee believe, an anomalous case in history. Here moreover, man labors for his own benefit, is lord paramount of the soil he cultivates - is at once sovereign and subject, the governing and the governed—a principle which imparts an elastic energy to the mind, known only in this land of liberty. It knowledge is power, then also is it a more efficient capital than the mere precious metals can supply. It germinates in the mind. Home industry is more em-phasically the patent right, the exclusive privilege of every country, but peculiarly so of the American peo-ple—it is the very essence and vitality of wealth and nower, and let it never be forgotten, of morality and appiness likewise. With a juilcious system of roads and causis, it becomes the surest pleage of union and independence,—the sacred link which holds the states together by the ties of one common interest. As well might government infringe and violate the vested right that every man holds in his own invention and discoveries, as permit the interference of foreign with domestic labor, identified as that foreign labor is, with the creations of machinery constantly working in its exchanges against the manual production of raw materials in this

In conclusion. As the final extinguishment of the public debt will necessarily lead to a reduction of the revenue with a view of accommodating it to the diminished expenditure of the country, much caution will be required to effect it in such manner as not to lessen the accurity which it has been the constant policy of government to afford to domestic industry. The cotton and sugar planters, the wool growers and the iron masters have been adequately protected, as well by the duties originally imposed on the raw material, as on the toreign manufactures made thereform, but your committee are not aware that say thing has been done for the great grain growing region of the United States, as both justice and so enlarged policy would seem to demand. Ree finds a market at all times in Europe, but wheat, corn and flour, are virtually prohibited.

In submitting the annexed schedule of duties, which might not only be repealed without might not office the might not only be repealed without might not office industry, but even beneficially as regards commerce and navigation, they have added the amount of duties which accurate in 1828 on spirits of all kinds, whicher made from grain or other materials. Should congress deem it expedient to raise the duty on the last mentioned article to the rate now people in Great Britains, (that in five dollars per gall, it would be nearly probabitory, though not so much a to preclude the opitient and the luxirious from industry in the use of the Even England levies 8d. 6a. aterling per gallon on rum from the American colouies, and 20; sering from the East Industry, a striking exidence of the windom of that government in protecting her own gram, with the double view to stap or the striking exidence of the windom of the green with the double view to stap or the striking exidence of the windom of that government in protecting her own gram, with the double view to stap or the striking exidence of the windom of that government in the striking exidence of the windom of that government in the striking exidence of the windom of that government in the striking exidence of the windom of that government in the striking exidence of the windom of that government in the striking exidence of the windom of the striking exidence of the windom of the government in the striking exidence of the windom of the government in the striking exidence of the windom of the great exidence of the windom of the government in the striking exidence of the windom of the great exidence of the windom of the

2,231,847

cultivators of its own soil, and leave them dependent O tor a sale of their grain on the precarious and uncertain demands of foreign nations? Your committee would further remark, that if a repeal of the duties on wines, fruits, olive oil and silks, should be decided on by government, an opportunity would be afforded for obtaining some corresponding relaxation and benefit by ne-gotiation from France, Spain, Portugal, Sardinia and Italy, which produce these articles.

Sweet or olive oil is the basis of the finest soaps, and its exemption from duty would therefore aid an important manufacture, and not interfere with the fish other oils of this country. All which is respectfully submitted.

STATEMENT exhibiting the amount of duties which acerued on the following articles between 30th September 1830, deducting what was exported, and showing the probable annual consumption.

N. B. As the partial repeal of the duties on ten and coffee, did not take effect till after September 1830, it

ot reduce this estimate

Camphor,

does not reduce th	is estimate.			
		Duty.		
Silks from India \$1	.000.000		.\$360,000	
	1,000,000	24	880,000	
Watches & parts				
of watches	310,000	124	38,750	
Pearls, precious		-		
stones, &cc.	65,000	**	8,125	
Tin and plates	361,000	15	54,150	
Opium	37,000	44	5,550	
Raw silk	10,000	64	1,500	
	,		1,3	48,075
	Gall	. Duty		
sarr - Madatas	166 000	. Day		
Wines-Madeira	48,500	50 cts.	117,250	
Sherry	48,300 3			
Red,				
France &	*** ***		*** 000	
	,110,000	10	111,000	
not enumerated	1,180,000	15	177,000	
Sicily and other			0.000.0	
	300,000	30	90,000	
enumerated J				lot orn
				195,250
	Pounds.	Duty.		
Teas-Bohea	149,000			
Southong	1,676,000	25	419,000	
Hyson skin	.,			
and other				
green	1,685,000	28	471,800	
Hyson and	.,,			
young hyson	3 140 000	40	1,256,000	
Imperial	280,000	50	140,000	
ampera.	200,000	-		304,680
	Daniela	Photo		,
~ ~	Pounds.	Duty.		
	38,500,000		1,925,000	
Cocoa	1,000,000	2	20,000	
Almonds, eur-				
rants, prunes,			01 000	
figs,	3,160,000		94,800	
Raisins in jars	3,260,000	4	130,400	
other	2,700,000	3	81,000	921 000
				251,200
	Pounds.			
Spices-Ginger	2,000	2	40	
Nutmegs	54,250	60	32,550	
Cinnamon	4,000	25	1,000	
Cloves	38,000	25	9,500	
Black pepper	1,100,000	8 .	88,000	
Pimento	1,340,000	6	80,400	
Cassia	100,000		6,000	
Books not Eng-				
lish, Latin or				
Greek	90,000	vol 4	3,600	
				221,090
	n	uty.		
Brass in plates	\$10 60K	95 ne	r et. \$2,652	
	32,214	121	4,027	
Saltpetre, crude,	107 000	Illa Pata	pan 158 560	

107,000lbs 8 cts per lb8,560

live oil vielded in	1828	39,477
ristles, do	do	10,727
inegar of wine,	do	3,162
		-

\$6,689,200 The quantity of spirits of all kinds whether made of grain or other materials was 4,446,698 gallons, the duty on which at

50 19-100 cents was

\$8,921,047 N. B. Indigo in 1828 produced on 1,084,491 pounds at 15 per cent. ad valorem a duty of \$162,673, but as it will next year pay the full duty of 50 cents per pound, which will fall principally on the manufacturing interest, its continuance, unless the southern states intend to undertake its cultivation, presents an interesting question of policy in which the feelings and wishes of the south ought to be consulted.

If desirable, a reduction of the postage would further

lessen the revenue.

## RHODE ISLAND MANUFACTURES.

The following - (though a mere abstract of the reports of the central committee of Rhode Island to the s men of committers selected by the Now Von vention, who have not yet reported to the Executive Committee—is published, to show the important facts and mighty results which are expected to flow from our gatherings of statistical knowledge. Providence, February 9, 1832.

To H. NILES, ESQ.

Sir: The following are copies of the reports of the state central committee to the chairman of each of the committees of the New York Convention, upon the manufacture of cotton and wool, and also of the reports upon several other branches of manufactures, in the state of Rhode Island, condensed from the actual returns of the sub-committees.

### MANUPACTURE OF COTTON.

In this state there are 116 establishments for the manumeture of cotton, containing 235,753 spindles and 5,763 looms, with all the necessary apparatus and preparation for the same. Cost of the establishments, including land,

water power, buildings, improvements

and machinery Floating capital employed, or stock in \$4,617,340 trade 1,645,000

\$6,262,340

These establishments consume annually 10,415,578 a nese estatisments consume annuary 10,419,578 pounds of cotton, produced in the United States, and spin from it 9,271,481 pounds af yarn, from number 6 to 50, which is woren mito 37,121,561 yards of cloth, from 2 to 5-4 wide, which sells at an average of about 10 cents per yard, four-fifths of it in the United States, and one-fifth in foreign markets.

Of the other leading articles used in these establishments are,

264) tons of iron and steel of foreign and domestic 2043 tons of fron and steet of foreign and domestic manufacture, (used for repairs) 61,407 gallons sperm oil from the Pacific ocean; 41,299 pounds leather from New England, N. York

and Pennsylvania

1,673 barrels starch from New York and Pennsylvania

Besides these, are a great variety of other articles of foreign and domestic growth and manufacture, amounting to a very large sum, which is annually expended in manufacturing the above cloth.

These establishments are mostly located in small villages, (which have been built up by them), in different parts of the state, and 17,567 persons reside at and are supported by them; 8,500 persons are constantly em-ployed in them, consisting of 1,731 men, 3,297 women and 3,472 children.

The aggregate annual amount of their wages is \$1,177,527, of which they save 25 per cent. over and 15,539 above their expenses of living.

CONSUMPTION OF PROVISIONS,

By the people residing at and supported by these establishments, viz:

12.718 bbls, flour received from the middle and southern states;

90.501 bushels corn received from the middle and southern states;

3,203 bbls. pork our own farms, Connecticut, N. York and Ohio;

2,446 bbls. beef our own farms, Connecticut, New York and Massachusetts:

371,375 pounds butter our own farms, Connecticut, New York and Vermont;

820,525 pounds cheese our own farms, Connecticut, New York and Vermont; 141,132 pounds lard our own farms, Connecticut, N.

York and Ohio; 1,176 fihds, molasses N. Orleans and West Indies; 356,764 pounds sugar New Orleans and West Indies; 617 chests tes, East Indies;

2,158 quintals fish, from the ocean; 7,163 bushels salt, of domestic and foreign manu-

facture. In addition to the foregoing there are many articles of provisious, and a general assortment of both foreign and domestic manufactured goods, to the amount of \$1.500 her every 1,000 spindles, amountly sonsumed by the peo-ple residing and supported at these establishments.

#### CONSUMPTION OF FUEL.

Factories, contaming 141,000 spindles are warmed by 1,410 tons anthracite coal from Pennsylvania—and factories containing 95,000 spindles are warmed by 1,400 cords of wood, from the forests of this state, at the average cost of \$4 per cord, at the place of consumption.

18,880 cords of wood are also consumed by the families residing at these factories, viz: 8 cords of wood by each family, and 10 tamilies for each 1,000 spindles.

Computation of the materials and labor for erecting the buildings for the manufacture of cotton, viz.

An establishment of 1,000 spindles requires 200 cords building stones;

35,000 bricks

125 casks lime 25,000 feet of timber

Procured within 4,000 " roof boards the state. 12,000 \*\* " under floor boards

12,000 .. " lathes

20.000 .. " white pine boards from Maine; " white pine planks from Maine; 7,000 "

12,000 " floor boards from North Carolina; 40,000 shingles from Maine and North Carolina;

20 tons wrought and east iron;

steels

4 nails;

85 windows, 24 lights, 7 by 9 glass, each.

Labor in creating the buildings amounting to \$3,000. It is also computed that 1,000 spindles, in the manufacture of cotton, will constantly employ 50 tons shipping through the year.

#### BLEACHERIES.

Immediately connected with, or dependent for employment upon, the foregoing establishments, are 5 bleacheries, the cust of which, including land, water and steam power, buildings, improvements and \$208,000

machinery Floating capital, or stock in trade

20,000 \$228,000 These bleacheries constantly employ 300 persons, two-thirds of them men, one-third boys and women.

aggregate amount amount of their wages \$69,500-PRINCIPAL ARTICLES CONSUMED IN BLEACHING.

241,586 lbs. pot and pearl ashes from New York and

Maine; 153,730 \*\* chloride of lime or bleaching salts, from

Scotland: 130,691 sulphuric acid, or oil of vitriol, from New York and Massachusenis;

231,929 " starch, from New York and Pennsylvania; 121 casks lime, from this state;

730,000 lect white pine boards, from Maine;

5,250 lbs. mails, from this state and Massachusetts;

675 reams paper, from the same; 1,335 gatlons sperm oil;

2,525 tons anthracite coals 320 cords of wood;

Other articles of stock amounting to \$6,210,

PRINT WORKS. There are also 2 establishments for printing calicoes in this state.

Cost of land, water power, buildings, improvements and machinery \$62,000 Plouting capital, or stock in trade 150,000

\$212,000 186 persons constantly employed; their aggre gate annual wages \$40,000

Principal articles used in printing calicoes Indigo, madder, copperas, barks and other dye stuffs

\$47,375 Chemicals, &c. 18,000 Cost of grey cloth printed 239,000

Also, 22 casks lime, 80,000 feet boards, 1,500 pounds anthracte cost and 1,400 octal wood.

Cloth annually printed 3,100,000 yards.

MANUPACTURES IN IRON AND STEEL

Connected with the establishments for the manufacture of sotton, (principally), are-

10 foundries and 30 machine shops-

Cost of land, water power, buildings, and machinery

\$602,000 Floating capital, or stock in trade 200,666 \$802,666

1,242 men are constantly employed—and a much larger number indirectly occupied and supported,

Aggregate annual wages of the tormer \$453,203-Principal articles consumed-

4,468 tons iron and steel; 2.958 " authracite coal;

1.000 cords wood; 350,000 feet lumber;

\$18,060 worth of charcoal and many other articles.

PRODUCTS.

Principally, machinery for manufacturing cotton, equivalent to 50,000 spindles, preparation and looms, value \$927,000also, 67,400 seythes;

2,000 doz. hoes;

700 " axes;
The foregoing does not embrace several hundred blacksmiths shops and other small establishments, which manufacture a variety of articles, of which iron and steel are the principal materials.

MANUFACTURE OF WOOL.

Cost of establishments for the manufacture of wool in this state, including land, water power, buildings, improvements, machinery, and floating capital, or in trade, \$263,000

These establishments annually consume-425,000 pounds of wool, costing 123,750

Also 545,000 do. cotton for warps, cost'g 70.850 383 persons are constantly employed in these establishments-their aggregate annual

wages amount to 68,500 Besides the above, 612 persons belong to the families of the above and are maintained by

their wages. Value of the cloth annually manufactured, 572,000

For particulars of the various articles used in the above establishments, see the original returns.

The same statements, computations and remarks, made with regard to the several articles consumed in the cotton manufacturing establishments, and in relation to the people connected with and dependent upon them, and the consumption of provisions, &c. by these people, 69,500

apply in proportion to the magnitude of the establishments, respectively, to the bleacheries, print works, mu-chine shops, and foundries, and also the woolten fuctories-but it is deemed superfluous to repeat them.

MANUFACTURE OF JEWELRY AND COMBS

In Providence there are 27 establishments for the manufacture of jewelry: Capital employed, \$100,200

282 persons employed-aggregate annual

wages. Value of manufactures, 228,253
In Pravidence and Scituate, (Clayville), in the same county, are 1200 establishments for the manufacture of

combs:

Cost of stock annually used-153 persons \$ 31,000 employed. Aggregate annual wages, Value of manufactures, 31,128

The following is a valuable report from Mr. Whita-ture, the owner of the principal comb factory, showing his estimate and views of the manufacture of course, on the United States.

Provulence, Jan. 12, 1834.

To the chairman of the state central committee: Sir,—Enclosed, I hand you a statement of the Claywille comb manufacturing company, up to the 31st December, 1831. is, an increasing business in the United States. were but few combs made previous to 1820, and these were of the most ordinary quality. From the best in-formation I can obtain, the amount now manufactured annually-

From horns, exceeds Tor oise shell. " Ivory,

\$ 850,000 250,000 250,000

1.380.000

The above stock costs over 600,000 dollars, all of which pays an ad valorem duty of 15 per cent. and the same duty is payable on combs imported. The Clay. ville manufacturing company paid, in the two last years, over 4,000 dolls, in duties on the horns used by them. Above 200 000 dolls, worth of combs of all descriptions, but principally horn combs, are annually exported from cuted large orders for the Cuba markets, which shews that we are competing with the European manufac-turers, who have been in the habit of shipping combs to those places.

manufacture of shell has risen to the highest state of perfection; the finest work is done by females, and they are more profitably employed in the wrought shell and born comb manufacture, than in sny manufactures that I am acquainted with.

The duties on tortoise shell, ivory, horns and sponge, ought to be taken off. Neither of these articles is produced in this country, except horns, and of them, not half the quantity consumed.

JOSIAH WHITAKER. Yours, respectfully, JOSIAH ! All which is respectfully submitted.

BENJ. COZZENS. Yours, truly, BENJ. COZZENS, of the Permanent Central Committee.

WHALE FISHERY.

The following communication, forwarded to the chairman of the permanent committee, by the member to whom it was addressed, was laid before the executive committee, and ordered to be published. H. NILES, chairman.

Boston, Nov 11, 1831.

Sin:-I noticed among the statements made to the tariff convention recently held in N. York, that every branch of American industry was protected, with but few exceptions; and among these exceptions the fisheries were mentioned. This would appear to be the case to most persons—but to a practical man, to the continuance of the indirect protection with deep solicitude, (so far as regards the whale fishery),

it appears quite the contrary; and from the following statements it will be made manifest, that, if the cot-ton and wooden factories are not sustained by an adequate protection, a large proportion of the ships engaged in the sperm whale fishery must go out of employment, or be thrown upon the freighting business-thus destroying a vast nursery of seamen, and, at the same time, creating a ruinous competition in a branch of industry already represented, by many who are engaged in it, as not worth pursuing. It is a well established fact, that from one-fourth to onethird of all the sperm oil imported, is used in the factories of cotton and woollen goods-averaging about half a gallon to each cotton and woollen spindie; besides what is used by the numerous mechanics connected with factories. By the statement here-with handed, you will perceive the vast increase in the importation of sperm oil since 1815; and the continued increase or diminution is entirely dependent on the protection efforded to the manufactures of the country, and the duty now existing on the importation of olive oil. Of the last mentioned oil, considerable quantities are used in the woollen factor ries, giving employment to a considerable amount of tonnage—which quantity, no doubt, would be much increased if the duty were taken off-but this reduction of duty on otive oil would be very fatal to a considerable portion of the interest engaged in that valuable branch of domestic industry, the sperm whale fishery, supposing that protection to the woollen manufacture is continued. If, however, that protection be withdrawn, the duty on olive oil may as well be removed as not, as but little will be wanted well be removed as not, as but into will be wanted in the country, (excepting saliad oil,) and the law will be a dead letter. To give you an idea of the value of the protecting laws to the ship builders, rope makers, sail makers, coopers, consting trade, farmers, &c. as well as to the country generally, i herewith furnish you with some of the principal ar-ticles which are used by the present fleet of three hundred ships, as often as they are fitted for sea -

36,000 barrels of flour, 30,000 barrels of beef and pork, 18,000 bolts of duck, 3.000 tons of iron boops,

6.000,000 staves, 2,000 tons cordage and whale warp,

with large quantities of iron for harpoons, lances, apades, blubber-hooks and camboose grates; much molasses, rice, beans, peas, corn, tea, coffee, sugar, &c., and not less than 6,500 officers and men to man the ships. These ships give more employment to me-chanics, of various descriptions—I should think twice as much, as the same number of tons engaged in any other trade. The sperm oil ships require to be coppered every voyage, and the quantity of copper consumed by the 300 ships, will average annually 700,000 pounds, which, with the nails used to put it on, will be equal to three quarters of a million pounds annually. The quantity of sperse oil imported for 1815 was 3,944 bbis. of 311 gal. each.

7.539

1817 \$2,650 1818 18.625 1819 21.323 1820 34,708 1821 48,000 42 900 1822 87.230 1823 1824 92,380 1825 62,240 1826 32,840 93,180 1827 1928 73,077 79,840 1829 1830 106,829

1816

and, for 1831, the import of sperm oil will be about one hundred and ten thousand barrels, and the consumption is equal to the supply; ninety-seven thousand barrels have already arrived. The quantity of the common whale oil, annually reported, has been about equal to the import of sperm oil, till this year, when it will exceed that of sperm oil. The whale oil already imported, since January 1, 1831, is one hundred and twelve thousand barrels, and there probably will be a further import of 5 or 6 thousand barrels before the 31st December, 1831. The whale oil is aniefly experted to Europe, as well as the whale hone—the latter amounting to our one hundred thousand pounds. This article is taken exclusively from the common or black whale. The sperm cil i consumed within the United States, as no other country excepting Great Britain, makes much use of it, and she, by hee protective laws, excludes the sperm cell from this country by a duty of about 45 cts. on the gallon. But for such duty we should drive the British from the whole fishery, [generally] selwithstanding the bounty paid by their government for its Pateclani, 17370 reactions. Five allows also used by the fishery, but for the prefection adorded by the French government, in duties and bounters.

French government, in duties and bounters where the people are extensively engaged in the whole

fishery which does not encourage this branch of in-

dustry by a bounty.

I have not been able to condense my remarks on this very important subject, within a narrower com-It is a branch of great magnitude in a national point of view; but, I regret to say, that it is very imperfectly understood. It is a better nursery for seamen than any other; as almost every ship carries out from 5 to 10 green hands-whereas, in the merchant service, the ships carry so few men that they are necessarily obliged to take able bodied seamen, to the exclusion of green hands. Yours, very respectfully, C. W. CARTWRIGHT.

The quantity of sperm candles, manufactured from 100,000 bbls. sperm oil, is rising two and a half millions of pounds. This part of the business came near escaping my recollection. C. W. C.

The editor of the REGISTER takes leave to add a few particulars and remarks.

Great Britain allows a bounty of one pound per ton on every vessel that shall proceed and return from the whale fishery in the Greenland sea or Da-

vis Straits, or the seas adjacent.

Special bounties, some as high as six hundred pounds on a vessel, engaged in the southern, or sperm whale fishery, and bringing home not less than 30 tuns of oil, or head matter, have been allowed. The details are too extensive for insertionbut the preceding shows the spirit of the British laws, as to bounties on the whale fisheries.

The protection is in the duties imposed on oil. Train oil, &c. if imported in British vessels, owned in Europe, and navigated according to law, pays a duty of 5s. per tun of 252 galls.—if in vessels owned in certain plantations, from 13s. 4d. to 51 10s. 10d. per tun-but if the product of foreign fishing, 221 3s. 4d. per tun. And on sperm oil, there is paid on the first class of British vessels, 8s. 3d. per tun, and, if of foreign fishing, 341 18s. 3d per tun. So that the British market is completely shut against American competition. There is no doubt, if the trade were free, that no British ship would be employed in the whale fishery. The industry and perseverance, economy and skill of our fishermen, is without rivalry.

Another gentleman computes the annual product of our whale fishery at 3,500,000 dollars, and the

value of the ship at \$7.500,000.

The importance of this employment, as a nursery for scamen, may be partially conjectured from the fact-(communicated soon after the event by a distinguished officer of the navy), that among the crew of the constitution frigate, when she captured the Cyane and Levant, were more than two hundred fres-holders. They had been fishermen; and the matter stated shows the character of this people.

The communication of Mr. Cartwright passed to the permanent committee through the hands of a woollen manufacturer. He says that he uses 4,000 gallons of olive oil annually, and that, if the duty on that article be a tox, he would save \$1,000 a year by taking it off. But he regards such duty as is indispen-sable to the success of the whale fishery, and will

not agree to abandon it.

But, if the writter of these additional remarks is not misinformed by those who ought to know all the facts, (and he hopes to show thou by sescrences to prices current, at a future period), the price of plive oil has always advanced or declined with the reies of sperm cil; the competition of the latter han ig the usual tendency of increased supply, to hear; nown the coat of the former.

MANUFACTURE OF CABINET WARE

The committee to whom was referred the sub an of manufacture of cabinet ware, and the mate, ale employed in the same, 071-

That from the limited time for making the nece: sary inquiries, (as the article is manufactured in almost every part of the United States), they find it impossible to offer such a report as might be con-But from the best information they have clusive. been able to obtain, - they give the following as the

result: That from the encouragement already afforded by the protecting system, which gives a fair competition with the imported article, the latter has been

almost entirely excluded from our market. article is now manufactured at 30 per cent, less, than for several years past. It is ascertained, from statistical examination, that there is manufactured in the United States to the

amount of \$10,000,000 Foreign materials, on which duty is

paid

Foreign and domestic, on which duty is not paid

4.500,000 Number of men employed 4.700,000 Amount paid for labor

The article, has become one of considerable export. It is carried in American ships to Canton, in China, South America and the West Indies. There are also a number of vessels, from our principal ports, constantly employed in bringing mabogany to this country.

It has also become one of the principal articles of the manufactures of the country, for the employ-

ment of vessels in our coasting trade.

Under the existing duty, the committee are satisfied, that this branch of our manufactures will continue to be prosecuted to advantage, to all engaged therein; as also to the interest of the country at large.

They therefore hope, that no diminution of the present duty may be made, as, under the present protection, it affords only a moderate compensation to the manufacturer-the domestic competition reducing profits to the lowest point at which the manufacture can be sustained. Should, however, any reduction be made-the business will be, in a great measure, abandoned, because of the want of certainty in the market, and that distress ensue to the poorer classes of citizens employed, that has already been mentioned in the report on the subject of the manufacture of hats. Respectfully submitted.

CLARKSON CROLIUS, Chairman. New York, Nov. 1, 1831.

800,000



RETURN TO ---

## MAIN CIRCULATION

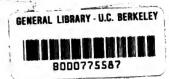
ALL BOOKS ARE SUBJECT TO RECALL RENEW BOOKS BY CALLING 642-3405

# DUE AS STAMPED BELOW

AUTO DISCORE	28'93	
MAY 3 1 2005		

UNIVERSITY OF CALIFORNIA, BERKELEY BERKELEY, CA 94720

FORM NO. DD6



THE UNIVERSITY OF CALIFORNIA LIBRARY

